स्व. पं. हरगोविन्द दास त्रिकमचंद सेठ कृत

पाइअ-सद्द-महण्णवो

किञ्चित् परिवर्तित आवृत्ति

प्राकृत-हिन्दी कोश

सम्पादक

डा. के. आर. चन्द्र

एम. ए., पी-एच. डी.

प्रकाशक

प्राकृत जैन विद्या विकास फण्ड

अहमदाबाद-१५

सहप्रकाशक

पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान

वाराणसी-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्व० पं० हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ कृत

पाइअ-सद्द-महण्णवो

की

किञ्चित् परिवर्तित आवृत्ति

प्राकृत-हिन्दी कोश

नम्र सूचन
इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें. जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

।4R
'ctary
is Jain
kas Fund

सम्पादक

डॉ० के० आर० चन्द्र, एम० ए०, पीएच० डी०

अध्यक्ष

प्राकृत-पालि विभाग

भाषा-साहित्य भवन

गुजरात युनिवर्सिटी

अहमदाबाद–९

प्रकाशक

प्राकृत जैन विद्या विकास फण्ड

७७/३७५, सरस्वती नगर, आजाद सोसाइटी, अहमदाबाद-१५

सह प्रकाशक

पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान

आई० टी० आई० रोड, वाराणसी–५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक
डॉ० के० आर० चन्द्र
मानद मंत्री
प्राकृत जैन विद्या विकास फण्ड
७७/३७५, सरस्वती नगर
आजाद सोसाइटी
अहमदाबाद-३८००१५

प्रथम संस्करण : ई० सन् १९८७
प्रति : ११००
मूल्य : रु० १२०-००

प्राप्ति स्थान

(१) पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान
आई० टी० आई० रोड, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी,
वाराणसी-२२१००५;

(२) श्रीपार्श्व प्रकाशन
निशा पोल, जवेरीवाड,
रीलीफ रोड,
अहमदाबाद-३८०००१;

(३) मोतीलाल बनारसीदास
चौक, वाराणसी-२२१००१

मुद्रक :
रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स
बी० २१/४२ ए कमच्छा
वाराणसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभार

प्रस्तुत कोश के प्रकाशन-व्यय का वहन

श्रेष्ठी श्रीकस्तूरभाई लालभाई स्मारक निधि

बी. ११, न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद-१

ने

किया है

एतदर्थ

हम उक्त ट्रस्ट एवं उसके उदारमना ट्रस्टियों—

श्री अरविन्दभाई नरोत्तमभाई

श्री आत्मारामभाई भोगीलाल सुतरिया

श्री रसिकलाल मोहनलाल शाह

श्री कल्याणभाई पुरुषोत्तमदास फडिया

श्री रमेशभाई पुरुषोत्तमभाई शाह

के प्रति

हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

— **प्रकाशक**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठ श्री कस्तूरभाई लालभाई

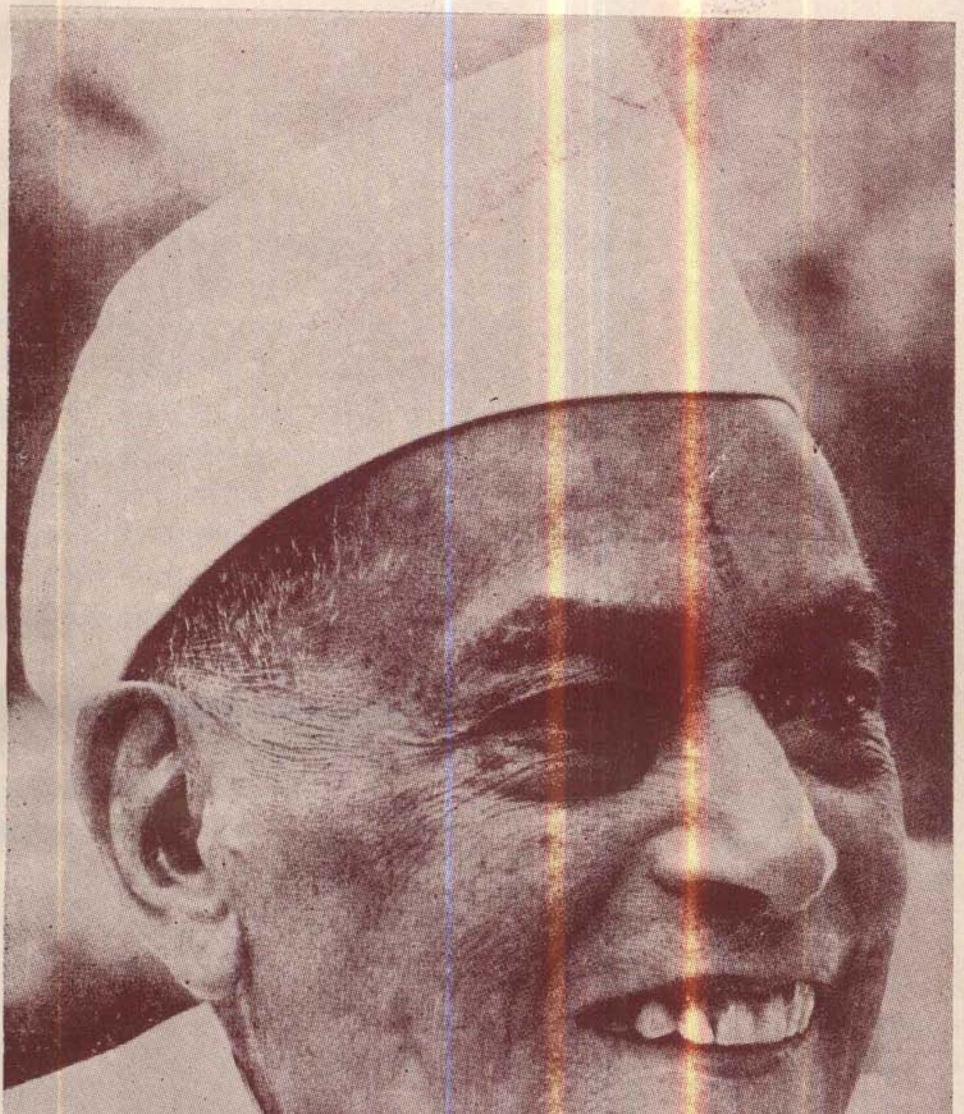

जन्म—ई० सन् १८९४ स्वर्गवास—ई० सन् १९८०

अहमदाबाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठ श्री कस्तूरभाई लालभाई

(१८९४-१९८०)

सेठ श्री कस्तूरभाई लालभाई के जीवन काल का विस्तार उन्नीसवीं शती के अंतिम दशक से लेकर बीसवीं शती के आठ दशकों तक रहा। गुजरात के श्रेष्ठी-वर्ग की परम्परा के अंतिम स्तम्भ के रूप में उन्होंने न्याय-नीति एवं प्रामाणिकता के साथ अपने व्यावसायिक आदर्शों का निर्वाह किया था। औद्योगिक क्षेत्र में वे आधुनिकीकरण की प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले एवं युगप्रवर्तक माने जाते हैं। कला एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी दृष्टि प्रगतिशील रही। व्यवसाय के क्षेत्र में भी निजी लाभ की अपेक्षा राष्ट्र-हित की भावना ही उनमें प्रमुख रही। भारत के गिने चुने उद्योगपतियों में उन्होंने प्रशंसनीय स्थान प्राप्त किया था। विदेशी कम्पनियों के सहयोग से उन्होंने भारत में रासायनिक रंगों का उत्पादन प्रारम्भ किया और अपनी अनोखी सूझ-बूझ से वे भारतीय अर्थनीति के आधार-स्तंभ बने। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक विकट आर्थिक और व्यावसायिक समस्याओं को सुलझाने में उनकी विवेक बुद्धि को अद्भुत सफलता मिली। विश्व के वस्त्र उद्योग के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। अपने उद्योग-संकुल के किसी भी व्यक्ति के सुख-दुःख के प्रत्येक प्रसंग में उसकी पूरी मदद करते थे। यह उनके व्यक्तित्व की उदारता और मानवीय गुणों की विशेषता थी।

उनका जन्म १९ दिसम्बर १८९४ को अहमदाबाद में सेठ श्री लालभाई दलपत-भाई के घर हुआ जो सुशिक्षित, संस्कार-सम्पन्न और समाज सेवा की भावना से ओतप्रोत थे। एक बार लार्ड कर्जन ने माउंट आबू के देलवाडा के मन्दिरों के शिल्प-स्थापत्य से प्रभावित होकर उन्हें शासकीय पुरातत्त्व विभाग के द्वारा अधिगृहीत करने का प्रस्ताव रखा तब सेठ लालभाई ने सेठ आनंदजी कल्याणजी की पेढ़ी के अध्यक्ष की हैसियत से उसका विरोध किया और आठ-दस वर्षों तक अनेक कारीगरों को काम में लगाकर यह सिद्ध कर दिया कि पेढ़ी की तरफ से मन्दिरों के संरक्षण में कितनी सुव्यवस्था है। अनेक विद्यालयों, पुस्तकालयों एवं संस्थाओं के निर्माता के रूप में उनकी उदारता की सुवास सम्पूर्ण गुजरात में फैली हुई है। उन्होंने १९०८ में सम्मेतशिखर पर व्यक्तिगत बंगला बनाने के शासकीय आदेश को निरस्त करवाया था। वे जैन श्वेताम्बर कॉन्फरेन्स के महामन्त्री भी थे। ब्रिटिश शासन ने उनकी सेवाओं की सराहना की थी और उन्हें सरदार का खिताब प्रदान किया था।

सेठ लालभाई के सात संतानें थीं। तीन पुत्र और चार पुत्रियाँ। श्री कस्तूरभाई उनकी चौथी संतान थी। पिता के अनुशासन और माता के वात्सल्य के बीच इन सातों संतानों का लालन-पालन हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री कस्तूरभाई ने प्राथमिक शिक्षा नगरपालिका द्वारा संचालित एक शाला में प्राप्त की और वे १९११ में आर० सी० हाईस्कूल से मेट्रिक्युलेशन की परीक्षा मेंउत्तीर्ण हुए। जिस समय वे चौथी कक्षा में थे उस समय चल रहे स्वदेशी आन्दोलत का उनके चित्त पर गहरा प्रभाव पड़ा। मेट्रिक के पश्चात् उन्होंने गुजरात कालेज में प्रवेश प्राप्त किया किन्तु कालेज जीवन के प्रथम छः महीने में ही सन् १९१२ में पिताजी का देहान्त हो जाने से मिल की व्यवस्था में अपने भाई की सहायता करने के लिए उन्हें अपना अध्ययन छोड़ देना पड़ा। उन्होंने अपने चाचा के मार्गदर्शन में अपने हिस्से में आयी रायपुर मिल में टाइमकीपर, स्टोरकीपर आदि से कार्य प्रारम्भ किया और बाद में मिल के संचालन विषयक सभी कार्यों में योग्यता अर्जित करके अपनी तेजस्वी बुद्धि एवं कार्य कुशलता से उसे भारत की प्रसिद्ध एवं अग्रगण्य कपड़ा मिलों की श्रेणी में लाकर रख दिया। उसके बाद अशोक-मिल, अरुण-मिल, अरविंद-मिल, नूतन-मिल, अनिल-स्टार्च और अतुल संकुल आदि अनेक उद्योग-गृहों की सन् १९२१ से १९५० के बीच स्थापना करके लालभाई-ग्रुप को देश के अग्रगण्य उद्योगगृहों में प्रतिष्ठित कर दिया।

व्यावसायिक कार्यों के साथ-साथ कस्तूरभाई ने अपने पूज्य पिताजी की तरह लोक कल्याण के कार्यों में भी बड़े उत्साह से भाग लिया। सन् १९२१ में अहमदाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष के निर्देश से उन्होंने और उनके अन्य भाइयों ने नगरपालिका की प्राथमिक शाला को ५० हजार का दान दिया था। सन् १९२१ के दिसम्बर माह में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ तब पंडित मोती लाल नेहरू के साथ उनका मैत्री सम्बन्ध हुआ। १९२२ में सरदार वल्लभभाई पटेल की सलाह से वे भारतीय संसद में मिल मालिकों के प्रतिनिधि के रूप में चुने गये। १९२३ में जब स्वराज पक्ष की स्थापना हुई तब अहमदाबाद तथा बम्बई के मिल-मालिकों की ओर से उसे पाँच लाख का दान दिलवाया था। संसद में वस्त्र पर चुंगी समाप्त करने का प्रस्ताव कस्तूरभाई ने रखा था और शासन की अनेक विघ्न-बाधाओं के बावजूद भी उसे स्वीकार करवा लिया। स्वराज पक्ष के सदस्य नहीं होने पर भी कस्तूरभाई को पं० मोतीलाल जी ने स्वराज-श्रेष्ठ की उपाधि प्रदान की थी। लम्बे समय से चल रहे मिल-मजदूरों के बोनस एवं वेतन सम्बन्धी वाद-विवाद को निपटाने के लिए सन् १९३६ में गाँधी जी और कस्तूरभाई का एक आयोग बनाया गया। प्रारम्भ में दोनों के बीच मतभेद उत्पन्न हो गया परन्तु अन्त में दोनों किसी एक विकल्प पर सहमत हो गये। इन सब कार्यों में कस्तूरभाई की निर्भीकता, साहस और योग्यता के दर्शन होते हैं।

सन् १९२९ में उन्होंने जिनेवा की मजदूर परिषद में मजदूरों के प्रतिनिधि के रूप में और सन् १९३४ में उद्योगपतियों के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भी इसी प्रकार के अनेक प्रतिनिधि मण्डलों में उन्होंने भाग लिया था। इन सब प्रसंगों पर देश के हित को ही सर्वोपरि मानकर वे विदेशियों के साथ की चर्चाओं में विलक्षण बुद्धि और कुशलता का परिचय देते थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। अहमदाबाद की एजुकेशन सोसायटी के आयोजक वे ही थे जिसकी स्थापना सन् १९३४ में हुई थी। नगर के भावी शैक्षणिक विकास को लक्ष्य में रखकर उन्होंने ७० लाख रुपये व्यय करके छ सौ एकड़ जमीन संपादित करवाई थी जिसके परिणामस्वरूप गुजरात विश्वविद्यालय का भव्य और विशाल संकुल अस्तित्व में आया। उनके परिवार की ओर से एल० डी० आर्टस् कॉलेज, एल० डी० इन्जिनियरिंग कॉलेज तथा एल० डी० प्राच्य विद्या मन्दिर को लाखों रुपये दान में दिये गये। विगत तीस-पैंतीस वर्षों में लालभाई दलपतभाई परिवार, ट्रस्ट की ओर से दो करोड़ पचहत्तर लाख का और अपने ही उद्योग गृहों की ओर से चार करोड़ का दान दिया गया। कस्तूरभाई को शिक्षा के प्रति कितनी रुचि थी इसका अनुमान उनके इन सब कार्यों से लगाया जा सकता है। यदि ऐसा न होता तो अटीरा, पी० आर० एल०, ला० द० भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, इन्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ डिजाइन और विक्रम साराभाई कम्युनिटी सेन्टर जैसी ख्याति प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ अहमदाबाद में कैसे निर्मित हो सकती? यह उद्योगपति कस्तूरभाई और युवा वैज्ञानिक डॉ० विक्रम साराभाई के संयुक्त स्वप्न की ही सिद्धि है।

भारतीय संस्कृति के प्रति उनके प्रेम का परिचायक है विश्वविद्यालय-संकुल में स्थित जहाज के रमणीय आकार में निर्मित ला० द० भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर जो सन् १९५५ में बनकर तैयार हुआ था और उसका उद्घाटन प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने किया था। मुनि श्री पुण्य विजय जी ने उस संस्था को १०,००० हस्तप्रतों एवं ७००० पुस्तकों का अत्यन्त मूल्यवान भेंट अर्पित की थी। आज इस संस्था के पास ३०,००० के प्रायः प्रकाशित ग्रन्थों का एवं ७०,००० के प्रायः पाण्डुलिपियों का संग्रह है। उसमें से दस हजार पाण्डुलिपियों की सूची केन्द्रीय सरकार की सहायता से एवं ७००० पाण्डुलिपियों की सूची गुजरात सरकार की सहायता से प्रकाशित हो चुकी है। अद्यावधि इस संस्था की ओर से १०० से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। ४८०० पाण्डुलिपियों की ट्रान्सपेरेन्सी एवं दो हजार मूल्यवान हस्तप्रतों की माईक्रोफिल्म भी कर ली गयी है साथ ही साथ १००० से अधिक पुराने सामायिकों के अंक भी संग्रहीत हैं। इस संस्था का मुख्य आकर्षण सांस्कृतिक संग्रहालय है। कस्तूरभाई एवं उनके परिवार के लोगों की ओर से भेंट में दी गयी बहुत सी पुरातात्त्विक वस्तुओं को इस संग्रहालय में संग्रहीत किया गया है। सुन्दर चित्र, कलाकृतियाँ, प्राचीन वस्त्र-आभूषण, सजावट की वस्तुएँ, हस्तप्रत एवं बारहवीं शती की चित्र युक्त हस्तप्रत आदि प्रायः चार सौ से अधिक वस्तुएँ इस संग्रहालय में प्रदर्शित हैं जो प्राचीन भारतीय जीवन और संस्कृति की मोहक झलक प्रस्तुत करती हैं। पुराने प्रेमाभाई हॉल का स्थापत्य कस्तूरभाई को कला की दृष्टि से खटक रहा था। उन्होंने लगभग छप्पन लाख रुपये खर्च करके उसका नव संस्करण करवाया जिसमें बत्तीस लाख का दान कस्तूरभाई परिवार एवं लालभाई ग्रुप के उद्योग समूह ने दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विख्यात इन्जीनियर लूई साहब ने कस्तूरभाई को कुदरती सूझ वाले इन्जीनियर कहा था। उन्होंने अपनी स्वयं की निगरानी में राणकपुर, देलवाड़ा, शत्रुंजय और तारंगातीर्थ के मन्दिरों के शिल्प स्थापत्य का जो जीर्णोद्धार करवाया है उसे देखते हुए लूई का कथन सही मालूम पड़ता है। सेठ आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अनेक जीर्ण तीर्थस्थलों का कलात्मक दृष्टि से जीर्णोद्धार करवाया। उन्होंने उपेक्षित राणकपुर तीर्थ का पुनरुद्धार करके उसे रमणीय बना दिया। उन्होंने बहुत ही परिश्रम उठाकर पुरानी शिल्प कला को पुनर्जीवित किया। देलवाड़ा के मन्दिर के निर्माण में जिस जाति के संगमरमर का उपयोग हुआ है उसी जाति का संगमरमर दाँता के पर्वत से प्राप्त करने में बहुत ही अवरोध आये थे। कारीगरों ने जीर्णोद्धार का व्यय पचास रुपये घनफुट बताया था, किन्तु उसका खर्च बढ़ते-बढ़ते पचास की जगह दो सौ रुपये प्रतिघनफुट आया फिर भी प्रतिकृति इतनी सुन्दर बनी कि कस्तूरभाई की कलाप्रेमी आत्मा प्रसन्न हो गयी और अधिक व्यय की उन्होंने तनिक भी चिन्ता नहीं की। शत्रुंजयतीर्थ में उन्होंने पुराने प्रवेश द्वार के स्थान पर नया द्वार बनवाया और मुख्य मन्दिर की भव्यता में अवरोध करने वाले छोटे-छोटे मन्दिर और उनकी मूर्तियों को बीच में से हटवा दिया।

जिस प्रकार धर्मदृष्टि उद्‌घाटित होते ही जीवन दर्शन के क्षितिजों का विस्तार होता है उसी प्रकार जीर्णोद्धार के बाद इन धर्मस्थानों के क्षितिज भी विस्तृत हो गए।

एक अमेरिकन यात्री ने एक बार कस्तूरभाई से पूछा ! यदि कल ही आपकी मृत्यु हो जाय तो········ !

कस्तूरभाई ने सस्मित कहा : मुझे आनन्द होगा।

किन्तु बाद में क्या ?

बाद में क्या होगा इसकी मुझे चिन्ता नहीं है।

आपका क्या होगा उसका विचार नहीं आता है क्या !

मैं पुनर्जन्म में आस्था रखता हूँ।

उसका तात्पर्य ?

जैन तत्त्वज्ञान के अनुसार ईश्वर जैसा कोई व्यक्ति विशेष नहीं है। प्रत्येक प्राणी और मैं स्वयं भी ईश्वर की स्थिति को पहुँच सकता हूँ अर्थात् मुझे मेरे चरित्र को उतना ऊँचा ले जाना चाहिये और यह विश्वास उत्पन्न करना चाहिए कि मैं क्रमशः उस पद के लिए योग्य बन रहा हूँ। इस विचारधारा में मुझे आस्था और गौरव है। उस स्थिति तक कैसे पहुँचा जा सकता है ? उसके उपाय भी हमारे दर्शन में बताये हैं :—सत्य बोलना चाहिए, धन के प्रति ममत्व नहीं रखना चाहिए, हिंसा नहीं करनी चाहिए, आदि। इतने उच्च आदर्श शायद ही दूसरी जगह पर देखने को मिले।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन धर्म क्या है ?

सत्य तो यह है कि जैन धर्म एक धर्म नहीं अपितु जीवन जीने की कला है जिसका आचरण करने से मानव इसी जन्म में उच्च आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त कर सकता है।

क्या जैन धर्म में धन संचय न करने को कहा गया है ?

नहीं, उसमें कहा गया है कि निश्चित मर्यादा से अधिक धन-सम्पत्ति नहीं रखनी चाहिए।

क्या आपने उसका व्रत लिया है ?

नहीं, किन्तु स्वयं प्राप्त धन का कुछ हिस्सा सार्वजनिक कल्याण के लिए खर्च करने का मेरा नियम है।

दिनांक ८ जनवरी १९८० को कस्तूरभाई बम्बई में बीमार पड़े, डाक्टर ने उनके स्वास्थ्य को देखकर पन्द्रह दिन बिस्तर में ही आराम करने की सलाह दी। किन्तु कस्तूरभाई ने कहा मुझे अहमदाबाद ले चलो मैं वहीं आराम करूँगा। डाक्टर ने प्रवास नहीं करने की सलाह दी किन्तु कस्तूरभाई के मन में अहमदाबाद के प्रति ऐसी आत्मीयता थी कि उन्होंने अपने अंतिम दिन अहमदाबाद में ही बिताने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। उनको बेचैन देखकर डाक्टर ने अंत में अहमदाबाद जाने की सम्मति दी। वेदना होने पर भी कस्तूरभाई के मुख पर आनन्द छा गया एम्ब्यूलेन्स-वान द्वारा स्टेशन लाए गये। दूसरे दिन सुबह जब अहमदाबाद पहुँचे तब मन प्रसन्न हो गया, मानो सारी पीड़ा समाप्त हो गयी हो, परन्तु १९ जनवरी को दिव्यधाम के आमंत्रण को शान्ति पूर्वक स्वीकार कर उन्होंने उसके लिए प्रस्थान कर दिया।

कस्तूरभाई मानते थे कि व्यक्ति की मृत्यु से देश का उत्पादन रुकना नहीं चाहिए। उनके अनुसार व्यक्ति को सही श्रद्धाँजलि तो उसको भावनानुसार काम करके ही दी जानी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया था कि मेरे अवसान के शोक में एक भी मिल बन्द नहीं रहनी चाहिए। उनके पुत्रों ने उनकी यह इच्छा लालभाई ग्रुप की नौ मिलों के सभी कर्मचारी-गणों को सूचित कर दी। 'कार्य करो' इसे सेठ का अंतिम आदेश मानकर काम पर लग गये। सारा अहमदाबाद शहर जिनके शोक में बन्द रहा वहीं उन्हीं की मिलें उस दिन कार्यरत रहीं यह एक अपूर्व घटना थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत संस्करण के विषय में

स्व० पं० हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ कृत पाइय-सद्द-महण्णवो का द्वितीय संस्करण आज से २३ वर्ष पूर्व ई० सं० १९६३ में छपा था और अनेक वर्षों से यह कोश उपलब्ध नहीं हो रहा था। इससे प्राकृत भाषा के विद्यार्थियों को कठिनाई अनुभव हो रही थी। इस कमी की पूर्ति के लिए हमारे सामने तीन विकल्प थे—

१. अद्यावधि प्रकाशित सभी नये प्राकृत ग्रन्थों की शब्दावली का समावेश करके एक संवर्धित संस्करण प्रकाशित करना।

२. पाइय-सद्द-महण्णवो का ही पुनः मुद्रण करना।

३. मूल पाइय-सद्द-महण्णवो को ही संक्षिप्त और लघुकाय बनाना।

प्रथम विकल्प अत्यन्त खर्चीला और दीर्घकालीन था एवं अनेक विद्वानों के सहयोग के बिना यह शीघ्र कार्यान्वित भी नहीं हो सकता था। द्वितीय विकल्प भी खर्चीला था और उसमें कोई नवीनता नहीं थी। तत्काल इन दोनों में से एक भी विकल्प की पूर्ति करने में हमारी संस्था असमर्थ ही थी। अतः हमारे लिए संभव यही था कि तृतीय विकल्प चुना जाय। तदनुसार प्राकृत और जैन विद्या के सुविख्यात और माननीय विद्वान् पं० श्री दलसुखभाई मालवणिया और डॉ० श्री ह० चू० भायाणी के साथ इस बारे में विचार-विमर्श किया गया। उन्होंने फिलहाल इस योजना को ही उचित समझा और अपनी तरफ से पूर्ण सहयोग देने की उदारता दर्शायी। उनके इस प्रोत्साहन के फल-स्वरूप ही यह कोश अपने परिवर्तित एवं संक्षिप्त रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो सका है।

यहाँ इस किञ्चित् परिवर्तित आवृत्ति की आवश्यकता और महत्व पर कुछ प्रकाश डालना जरूरी है। पाइय-सद्द-महण्णवो में प्रत्येक शब्द के साथ प्राकृत ग्रन्थों से संदर्भ दिये गये हैं और अनेक स्थलों पर मूल ग्रन्थों से उद्धरण भी दिये गये हैं। उनकी अपनी उपयोगिता है परन्तु सबके लिए इनका महत्व एक समान नहीं होता है। विद्यार्थियों के लिए ऐसे संदर्भों और उद्धरणों की उपयोगिता कम ही होती है। अनेक जगह ग्रन्थों की हस्तप्रतों से उद्धरण दिये गये हैं और उन हस्तप्रतों को प्राप्त करना भी दुष्कर ही होता है। ई. स. १८४२ और उसके पश्चात् अधिकतर ई. स. १९२४ तक प्रकाशित संस्करणों में से दिये गये उद्धरणों की बहुलता है और ये संस्करण आज सब जगह उपलब्ध भी शायद ही हों, अतः उनकी उपादेयता अल्प रह गयी है। मूल पाइय-सद्द-महण्णवो को पुनः प्रकाशित करने के लिए यह आवश्यक था कि उसमें दिये गये उद्धरणों के साथ नये संस्करणों के संदर्भ जोड़े जाय परन्तु ऐसा शीघ्र संभव नहीं होने के कारण यह किञ्चित् परिवर्तित आवृत्ति तैयार की गयी। इसमें पा.स.म. का एक भी मूल शब्द या अर्थ छोड़ा नहीं गया है, मात्र उद्धरण निकाल दिये गये हैं। अर्थों की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनरावृत्ति करने वाले शब्द, अर्थों के साथ लगे संख्यावाची अंक और अनावश्यक वर्णनात्मक विस्तार निकाल दिये गये हैं। तत्सम शब्दों के सामने कोष्ठक में दिये गये संस्कृत शब्द भी निकाल दिये गये हैं। अन्य जो भी परिवर्तन किये गये हैं उनके विषय में आगे नियम प्रस्तुत किये गये हैं उन्हें देख लेना पाठकों के लिए उपयोगी होगा। इस आयोजन से कोश का महत्व भी नहीं घटा और मूल कोश जो भारी और दीर्घ-काय था वह हलका, लघुकाय और संक्षिप्त बन गया तथा स्थानान्तरण के लिए वह सुग्राह्य और सुविधाजनक हो गया। अर्थ लाभ की दृष्टि से प्रकाशित नहीं किये जाने के कारण इसका मूल्य बाजार-भाव से कम ही रखा गया है, ताकि यह सर्वजन सुलभ हो सके। लगभग तीन-चार वर्ष पूर्व जब इस आवृत्ति की योजना बनायी गयी उस समय हमारी नवोदित इस संस्था के पास इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए भी पर्याप्त रकम नहीं थी अतः इस दिशा में प्रयत्न किये गये। पू. आचार्य श्री भुवनशेखरसूरिजी, अहमदाबाद पू. आ. श्री विजयसुशील सूरिजी, सिरोही, पू. मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल', आबू पर्वत, पू. गणिवर्य श्री प्रद्युम्नविजयजी, अहमदाबाद और पू. मुनि श्री धरणेन्द्र सागरजी, अहमदाबाद की प्रेरणा से हम कुछ संस्थाओं और सद्गृहस्थों से आवश्यक रकम दान के रूप में प्राप्त कर सके और उससे इस संस्करण का सम्पादन हो सका। पुनः इस संस्था के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कितने ही नये सदस्य भी बनाये गये। इस कार्य में मुख्यतः मद्रास से श्री सी० आर० जैन ने प्रशंसनीय परिश्रम किया और वहाँ से इस संस्था के लिए अनेक सदस्य बनाये। एतदर्थ हम उन सबका हृदय से आभार मानते हैं।

इस कोश का सम्पादन-कार्य हो जाने के बाद कठिन कार्य तो उसे प्रकाशित करने का था जिसके लिए एक बड़ी रकम की आवश्यकता था। यह संस्था इतनी समृद्ध नहीं था कि प्रकाशन का खर्च उठा सके। योगानुयोग साहित्यिक कार्य की यह बात मैंने आदरणीय एवं सौजन्यशील श्री आत्मारामभाई भोगीलाल सुतरिया के ध्यान में लायी तब उन्होंने ज्ञान-प्रचार के कार्य में अपनी रुचि बतलायी और हमारी इस योजना की पुष्टि की। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस कोश के प्रकाशन का पूरा खर्च उनकी संस्था '**श्रेष्ठी श्री कस्तूरभाई लालभाई स्मारक निधि**' वहन करेगी। दीर्घ काल से प्रतीक्षित आर्थिक सहायता के वचन पाकर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ और इस कोश के प्रकाशन का कार्य आगे बढ़ाया। एतदर्थ इस 'स्मारक निधि', उसके ट्रस्टियों एवं श्री आत्माराम भाई का हम सहृदय आभार मानते हैं।

इस कोश के सम्पादन के कार्य में पं. दलसुखभाई मालवणिया और डॉ० ह० चू० भायाणी का जो मार्गदर्शन मिला है उसके लिए मैं उनका अन्तःकरण पूर्वक आभार मानता हूँ। इस कोश की मुद्रण के योग्य प्रति तैयार करने में मेरे विद्यार्थियों डॉ० कु० गीता पी० मेहता, श्रीमती संगीता पी० देसाई एम० ए० और श्री दीना नाथ शर्मा एम० ए० ने जो कार्य एवं सहायता की है उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। श्री धीरू भाई ठाकर ने सेठ कस्तूरभाई का जीवन-परिचय गुजराती में लिखा और उसका हिन्दी अनुवाद श्री जितेन्द्र शाह ने किया एतदर्थ हम उनके आभारी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थ के प्रकाशन की इस वेला में सहयोगी संस्था पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी और उसके निदेशक डॉ० सागर मल जैन का हम आभार मानते हैं, जिन्होंने प्रस्तुत ग्रन्थ के मुद्रण सम्बन्धी सम्पूर्ण व्यवस्था की। मात्र यही नहीं इस ग्रन्थ के रख-रखाव और विक्रय का दायित्व भी स्वीकार कर उन्होंने हमें व्यवस्था सम्बन्धी सभी चिन्ताओं से मुक्त रखा।

रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी ने इस कोश को अल्प समय में सुन्दर ढंग से मुद्रित किया है इसके लिए उसका एवं उसके व्यवस्थापक श्री विनयशंकर जी का भी हम आभार मानते हैं। प्रूफ संशोधन का बड़ा ही दुरूह कार्य सुचारु रूप से करने के लिए डॉ० श्री रविशंकर मिश्र, सह-शोधाधिकारी, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान का भी आभार मानते हैं। श्री महावीर बुक बाईंडिंग वर्क्स, वाराणसी के श्री मोहनलाल जी के द्वारा सुन्दर पुस्तकावरण बाँधने के लिए हम उनके भी आभारी हैं।

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद एवं श्री यशोविजय ग्रन्थमाला, भावनगर द्वारा प्रकाशित पाइय-सद्द-महण्णवो का उपयोग करने के लिए उनका एवं उनके ट्रस्टियों का भी आभार मानना हम अपना कर्तव्य समझते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा
वि. सं. २०४३

के० आर० चन्द्र
मानद मंत्री
प्रा. जै. वि. वि. फंड अहमदाबाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत-हिन्दी कोश का सम्पादन

'पाइअ सद्द महण्णवो' की इस किञ्चित् परिवर्तित आवृत्ति में अपनाये गये नियम।

यदि मूल शब्दों के वर्णों अथवा अर्थ में किसी प्रकार का भेद, परिवर्तन या विशेषता नहीं हो तो निम्न प्रकार के शब्द एवं उनके रूप निकाल दिये गये हैं।

१. प्राकृत ग्रन्थों में से उद्धृत अवतरण
२. अर्थों के साथ दिये गये संख्यावाची अंक
३. भेद न रखने वाले एक से अधिक अर्थ, जैसे :—
मस्तक, सिर; हस्त, हाथ; हस्ति, हाथी
४. अनावश्यक वर्णनात्मक विस्तार
५. सादृश्यता बतलाते हुए आधुनिक भाषा के शब्द
६. प्राकृत शब्द के सामने कोष्ठक में दिया गया संस्कृत शब्द यदि वह तत्सम, है, जैसे—उत्ताल, काम, ताल, वायस, समूह
७. 'आ' या 'ई' प्रत्यय लगाकर बनाया गया स्त्रीलिंगी शब्द यदि उसका अन्य लिंगी शब्द आ गया हो, जैसे—पुत्त (पुत्ती), अणुमासण (अणुमासणा) अमर (अमरी)
८. कभी-कभी आवश्यकतानुसार ऐसे शब्द जिनमें 'न' या 'न्न' हो जबकि 'ण' या 'ण्ण' वाला वही शब्द आ गया हो, जैसे—मणुस्स (मनुस्स), पुण्ण (पुन्न)
९. शब्द में तृतीया या पंचमी विभक्ति लगाकर बनाये गये अव्यय, जैसे—अइर (अइरेण), अग्ग (अग्गओ)
१०. मूल शब्द आ जाने पर उसमें स्वार्थ 'अ', 'य' अथवा 'ग' लगे हुए शब्द, जैसे—अगुरु (अगुरुअ), अर (अरग), अंगुलीय (अंगुलीयय), भद्द (भद्दअ)
११. इ (इन्) प्रत्यय लगाकर बनाये गये शब्द जो धारण करने, प्रवृत्ति करने या स्वामित्व के अर्थ वाले हो, जैसे—अणुभव (अणुभाव) अक्खा (अक्खाइ), संसय (संसइ)
१२. 'इर' प्रत्यय लगाकर बनाये गये शीलवाची शब्द, जैसे—अणुगम (अणुगमिर) मुअ (मुइर), भी (भीइर)
१३. 'इल्ल, इल्लग, इल्लय, उल्ल, एल्ल, एल्लग' प्रत्यय लगाकर बनाये गये स्वार्थ शब्द, जैसे—पुत्त (पुत्तिल्ल, पुत्तुल्ल), बाहिर (बाहिरिल्ल), सच्च (सच्चिल्लय), भंड (भंडुल्ल), अंध (अंधिल्लग, अंधेल्लग) हिअअ (हअउल्ल)
१४. मूल धातु के साथ दिये गये उसके अनेक कालवाची एवं कृदन्त रूप
१५. अलग-अलग स्थलों पर आने वाले कृदन्त रूप जिनका मूल धातु आ गया हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. मूल धातु के आ जाने पर लिंग-सूचक प्रत्यय लगाकर नाम के रूप में अलग से दिया गया वही शब्द, जैसे—आढा (आढा) हक्क (हक्का), अभिक्कम (अभिक्कम) समीह (समीहा), सलाह (सलाहा)

१७. 'धातु या नाम शब्द में मात्र इअ, इय (इत) प्रत्यय लगाकर बनाये गये कर्मणिभूत कृदन्त या विशेषण, जैसे—भज्ज (भज्जिय), पाव (पाविय) अंकुर (अंकुरिय) विसेस (विसेसिय), भी (भीइय), कंडू (कंडूइय), मा (माइअ), पुंज (पुंजिअ), संकेअ (संकेइअ), संजोअ (संजोइअ), अंधयार (अंधयारिय), अंध (अंधिय)

१८. धातु में 'ण' 'णा', या 'णया' जोड़कर बनाये गये नाम शब्द, जैसे—पुच्छ (पुच्छण, पुच्छणया), समप्प (समप्पण), सिणा (सिणाण), विसोह (विसोहणया) संथव (संथवणा), अभिवंद (अभिवंदणा)

१९. शब्द के प्रारम्भ में उपसर्ग 'अ' जोड़कर बनाये गये मात्र निषेधवाची शब्द, जैसे—कप्प (अकप्प), जयणा (अजयणा), खज्ज (अखज्ज)

२०. शब्द के प्रारंभ में 'सु' उपसर्ग जोड़कर निम्नार्थबोधक शब्द, (१) सुन्दर, अच्छा, भला (२) अच्छी तरह, सुखसे, (३) शुभ प्रशस्त, उत्तम (४) अति, अत्यन्त, अतिशय, बहुत (५) दृढ और (६) बिलकुल, जैसे—(१) सुकुसुम, सुतवस्सि, सुपहाय (२) सुचरिय, सुलब्भ (३) सुपह, सुजाइ, सुगुरु (४) सुगरिट्ठ, सुपसन्न, सुदुक्कर, सुदिप्प (५) सुनिच्छय और (६) सुणिस्संक, सुविणट्ठ।

२१. मध्यवर्ती अ, आ, इ और उ के स्थान पर य, या, यि और यु परस्पर क्रमशः समझ लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत–सूची

अ	=	अव्यय।	(पै)	=	पैशाची भाषा।
अक	=	अकर्मक धातु।	प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा।	ब	=	बहुवचन।
(अशो)	=	अशोक शिलालेख।	भक्र	=	भविष्यत्कृदन्त।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक धातु	भवि	=	भविष्यत्काल
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य।	भूका	=	भूतकाल।
कवक्र	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त।	भूकृ	=	भूत-कृदन्त।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त।	(मा)	=	मागधी भाषा।
क्रि	=	क्रियापद।	वकृ	=	वर्तमान कृदन्त।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण।	वि	=	विशेषण।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा।	(शौ)	=	शौरसेनी भाषा।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग।	स	=	सर्वनाम।
[दे]	=	देश्य-शब्द।	संकृ	=	संबन्धक कृदन्त।
न	=	नपुंसकलिङ्ग।	सक	=	सकर्मक धातु।
पुं	=	पुंलिङ्ग।	स्त्री	=	स्त्रीलिङ्ग।
पुंन	=	पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग
पुंस्त्री	=	पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग।	हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संक्षिप्त प्राकृत-हिन्दी कोष

अ

अ पुं प्राकृत—वर्ण-माला का प्रथम अक्षर। विष्णु, कृष्ण।

अ देखो च अ।

अ [दे] देखो इव।

°अ अ इन अर्थों का सूचक अव्यय—निषेध। विरोध, उल्टापन। अयोग्यता, अनुचितपन। अल्पता। अभाव। भेद। सादृश्य। बुरापन। लघुपन।

°अ पुं [क] सूर्य। अग्नि। मोर। न. पानी। शिखर, टोंच। मस्तक।

°अ वि [°ज] उत्पन्न।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा।

अअर देखो अवर।

अअर देखो आयर।

अइ अ [अयि] संभावना और आमन्त्रण अर्थ का सूचक अव्यय।

अइ अ [अति] इन अर्थों का सूचक उपसर्ग। अतिशय। उत्कर्ष, महत्त्व। पूजा, प्रशंसा। अतिक्रमण। ऊपर, ऊँचा। निन्दा।

अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अव्यय।

अइ सक [आ + इ] आगमन करना, आ गिरना।

अइइ स्त्री [अदिति] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव।

अइइ सक [अति + इ] उल्लंघन करना। गमन करना। प्रवेश करना।

अइउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिगत, प्राप्त।

अइंच सक [अति + अञ्च्] अभिषेक करना, स्थानापन्न करना। उल्लंघन करना। आकर्षित करना। अक. दूर जाना।

अइंछ देखो अइंच।

अइंत वि [अनायत्] नहीं आता हुआ। जो जाना न जाता हो।

अइंदिय वि [अतीन्द्रिय] इंद्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह।

अइंमुत्त देखो अइमुत्त।

अइकम्म अक [अतिक्रम्] गुजरना, बीतना। देखो अइक्कम = अति + क्रम्।

अइकाय पुं [अतिकाय] महोरग—जातीय देवों का एक इन्द्र। रावण का एक पुत्र। वि. बड़ा शरीरवाला।

अइक्कंत वि [अतिक्रान्त] अतीत। तीर्ण। जिसने त्याग किया हो वह।

अइक्कम सक [अति + क्रम्] उल्लंघन करना। व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना।

अइक्ख वि [अतीक्ष्ण] तीक्ष्णतारहित।

अइक्ख वि [अनीक्ष्य] अदृश्य।

अइगच्छ, अइगम अक [अति + गम्] गुजरना, बीतना। सक. पहुँचना। प्रवेश करना। उल्लंघन करना। गमन करना।

अइगमण न [अतिगमन] प्रवेश-मार्ग। उत्तरायण।

अइगय वि [दे] आया हुआ। जिसने प्रवेश किया हो वह। न. मार्ग का पिछला भाग।

अइगय वि [अतिगत] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ।

अइगय वि [अतिगत] प्राप्त।

अइचिरं अ [अतिचिरम्] बहुत काल तक।

अइच्च अइइ = अति + इ का संकृ।

अइच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना।

अइच्छ सक [अति + क्रम्] उल्लंघन करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अइच्छा स्त्री [अदित्सा] देने की अनिच्छा। प्रत्याख्यान विशेष।

अइजाय पुं [अतिजात] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] जो न देखा गया हो वह। न. कर्म, दैव, भाग्य। °उव्व, °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न देखा गया हो वह।

अइट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रिय। खराब, दुष्ट।

अइट्ठा सक [अति + स्था] उल्लंघन करना।

अइट्ठिय वि [अतिष्ठित] अतिक्रान्त, उल्लंघित।

अइण न [दे] गिरि-तट, तराई।

अइण न [अजिन] चर्म।

अइणिय वि [दे. अतिनीत] लाया हुआ।

अइणिय } वि [अतिनीत] फेंका हुआ।
अइणीय } जो दूर ले जाया गया हो।

अइणीअ वि [अतिगत] गया हुआ।

अइणीय वि [दे. अतिनीत] लाया हुआ।

अइणु वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से उतरा हुआ।

अइतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा।

अइतेया स्त्री [अतितेजा] पक्ष की चौदहवीं रात।

अइदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य।

अइदुसमा }
अइदुस्समा } स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो दुस्समदुस्समा।
अइदूसमा }

अइद्दंपज्ज देखो अइदंपज्ज।

अइधाडिय वि [अतिध्राटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ।

अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करनेवाला, रोकनेवाला।

अइन्न न [अजीर्ण] बदहजमी। वि. जो हजम न हुआ हो वह। जो पुराना न हुआ हो, नूतन।

अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ। °याण न [°दान] चोरी।

अइपंडुकंबलसिला स्त्री [अतिपाण्डुकम्बल-शिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला।

अइपडाग पुं [अतिपताक] मत्स्य की एक जाति। स्त्री. पताका के ऊपर की पताका।

अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करने वाला।

अइपाइअ वि [अतिपातिक] हिंसाकरनेवाला।

अइपास पुं [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकरदेव।

अइपास सक [अति + दृश्] खूब देखना।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बड़ी सबेर।

अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] तृप्त न होता हुआ भोजन करनेवाला। न. तीन बार से अधिक भोजन।

अइप्पसंग पुं [अतिप्रसङ्ग] अतिपरिचय। तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अतिव्याप्ति-नामक दोष।

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सबेर।

अइबल वि [अतिबल] शक्ति-शाली। न. अतिशय बल। बड़ा सैन्य। पुं. एक राजा, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्वीय चतुर्थ भव में पिता या पितामह था। भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र। भरत क्षेत्र में आगामी चौबीसी में होने वाला पाँचवाँ वासुदेव। रावण का एक योद्धा।

अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास नामक ग्यारहवें गणधर की माता।

अइभूइ पुं [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पंचम वासुदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] परम प्रकर्ष। बहुत जमीन। गृहस्थों के घर का वह भाग, जहाँ साधुओं को प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मिट्टी।

अइमत्त } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाण
अइमाय } से अधिक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अइमुंक / **अइमुंत** / **अइमुत्त** पुं [अतिमुक्त] स्वनाम ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र था और जिसने बहुत छोटी ही उम्र में भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी। कंस का एक छोटा भाई। वृक्षविशेष। माधवी लता। न. अन्तगड़दसा नामक अंग-ग्रन्थ का एक अध्ययन।

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त, करनेवाला, प्राप्त।

°**अइय** वि [दयित] प्रिय, प्रीतिपात्र। दया करने योग्य।

अइयच्च देखो अइगच्छ

अइयण न [अत्यदन] अधिक भोजन करना।

अइयय वि [अतिगत] गया हुआ।

अइयर सक [अति + चर्] उल्लंघन करना। व्रत को दूषित करना।

अइया सक [अति + या] जाना, गुजरना।

अइया स्त्री [अजिका] बकरी।

°**अइया** स्त्री [दयिता] स्त्री, पत्नी।

अइयाण न [अतियान] गमन, गुजरना। राजा वगैरह का नगर आदि में धूम-धाम से प्रवेश करना।

अइयाय वि [अतियात] गया हुआ, गुजरा हुआ।

अइयार पुं [अतिचार] उल्लंघन, अतिक्रमण। गृहीत व्रत या नियम में दूषण लगाना।

अइर अ [अचिर] शीघ्र।

अइर न [अजिर] आंगन, चौक।

अइर पुं [दे] आयुक्त, गांव का राजनियुक्त मुखिया।

अइर न [दे. अतर] देखो अयर = अतर।

अइर वि [दे] अतिरोहित।

अइरजुवइ स्त्री (दे) दुलहिन।

अइरत्त पुं [अतिरात्र] अधिक तिथि।

अइरत्त वि [अतिरक्त] गाढा लाल। विशेष रागी। °कंबलसिला, °कंबला स्त्री [°कम्बलशिला, कम्बला] मेरु पर्वत के पांडुक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है।

अइरा / **अइराणी** स्त्री [अचिरा] पाँचवें चक्रवर्ती और सोलहवें तीर्थंकर-देव की माता।

अइराणी स्त्री [दे] इन्द्राणी। सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री।

अइरावण पुं [ऐरावण] इन्द्र का हाथी।

अइरावय पुं [ऐरावत] इन्द्र का हाथी।

अइराहा स्त्री [अचिराभा] बिजली।

अइरि न [अतिरि] धन या सुवर्ण का अतिक्रमण करनेवाला, धनाढ्य।

अइरिप पुं [दे] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी।

अइरित्त वि [अतिरिक्त] अवशिष्ट। अधिक। °सिज्जासणिय वि[शय्यासनिक] लम्बीचौड़ी शय्या और आसन रखने वाला(साधु)।

अइरूव वि [अतिरूप] सुरूप, सुडौल। पुं. भूत-जातीय देवविशेष।

अइरेइय वि [अतिरेकित] अतिरेक-युक्त, अतिप्रभूत।

अइरेग पुं [अतिरेक] आधिक्य, अतिशय।

अइरेय देखो अइरेग।

अइव अ [अतीव] अतिशय।

अइवट्टण न [अतिवर्त्तन] उल्लंघन।

अइवत्त सक [अति + वृत्] अतिक्रमण करना।

अइवत्तिय वि [अतिव्रतिक] जिसका उल्लंघन किया गया हो वह। प्रधान। उल्लंघन करनेवाला।

अइवय सक [अति+वृत्] उल्लंघन करना।

अइवय सक [अति + व्रज्] उल्लंघन करना। संमुख जाना। प्रवेश करना।

अइवय सक [अति + पत्] उल्लंघन करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्बन्ध करना। प्रवेश करना। अक. मरना। गिर जाना।

अइवह सक [अति+वह्] वहन करने में समर्थ होना।

अइवाइ वि [अतिपातिन्] हिंसक। विनश्वर।

अइवाइत्तु वि [अतिपातयितृ] मारनेवाला।

अइवाइय वि [अतिपातिक] ऊपर देखो।

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु**।

अइवाय पुं [अतिपात] हिंसा आदि दोष। विनाश।

अइवाय पुं [अतिवात] उल्लंघन। भयंकर पवन, तूफान।

अइवाह सक [अति+वाहय्] बिताना, गुजारना।

अइविरिय वि [अतिवीर्य] बलिष्ठ, महा-पराक्रमी। पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा। नन्दावर्त नगर का एक राजा।

अइविसाल वि [अतिविशाल] बहुत बड़ा, विस्तीर्ण। स्त्री. यमप्रभ नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी।

अइस [अप] वि [ईदृश्] ऐसा, इस तरह का।

अइसइ वि [अतिशयिन्] अतिशय वाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक।

अइसंधण देखो **अइसंधाण**।

अइसंधाण [अतिसंधान] ठगाई।

अइसक्कणा स्त्री [अतिष्वष्कणा] उत्तेजना, प्रेरणा, बढ़ावा।

अइसय सक [अति+शी] मात करना।

अइसय पुं [अतिशय] श्रेष्ठता। महिमा, प्रभाव। अत्यन्त। चमत्कार। वैशिष्ट्य। °**भरिय** वि [°भृत] पूर्ण।

अइसरिय न [ऐश्वर्य] संपत्ति, गौरव।

अइसाइ वि [अतिशायिन्] श्रेष्ठ। दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री. °**णी**।

अइसायण न [अतिशायन] उत्कृष्टता, उत्कर्ष।

अइसार पुं [अतिसार] संग्रहणी रोग।

अइसेस पुं [अतिशेष] महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य। बचा हुआ। अतिशय वाला।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] महिमान्वित। समृद्ध, ज्ञान आदि के अतिशय से सम्पन्न।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ज्ञात, जाना हुआ।

अइहर पुं [अतिभर] हद, अवधि।

अइहारा स्त्री [दे] बिजली।

अइहि पुं [अतिथि] जिसके आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु। °**संविभाग** पुं साधु को भोजन आदि का निर्दोष दान।

अई सक [गम्] जाना।

अईअ पुं [अतीत] भूतकाल। वि. जो बीत चुका हो। अतिक्रान्त। जो दूर हो गया हो।

अईअ, **अईव** अ [अतीव] बहुत, विशेष, अत्यन्त।

अईसंत वि [अ+दृश्यमान] जो दिखता न हो।

अईसय देखो **अइसय**।

अईसार पुं [अतीसार] संग्रहणी रोग। इस नाम का एक राजा।

अउ देखो **आउ** = स्त्री।

अउअ न [अयुत] दस हजार की संख्या। 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।

अउअंग न [अयुताङ्ग] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।

अउंठ वि [अकुण्ठ] निपुण।

अउचित्त न [औचित्य] उचितपन।

अउज्झ वि [अयोध्य] युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह। जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि।

अउज्झा स्त्री [अयोध्या] नगरी-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अउण वि [एकोन] जिसमें एक कम हो वह। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५९।
°त्तरि स्त्री [°सप्तति] उनसत्तर, ६९।
°त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २९।
°सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५९।
°पन्न, °वन्न स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनपचास, ४९। देखो एगूण।

अउणतीसइ स्त्री देखो अउण-त्तीस।

अउणप्पन्न देखो अउणापन्न।

अउणासट्ठि देखो अउण-सट्ठि।

अउणोणिउत्ति स्त्री [अपुनर्निवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष।

अउण्ण न [अपुण्य] पाप। त्रि. अपवित्र। पापी।

अउम देखो ओम।

अउमर वि [अद्मर] खानेवाला, भक्षक।

अउल वि [अतुल] असाधारण, अद्वितीय।

अउलीन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुजाति, संकर।

अउव्व वि [अपूर्व] अनोखा, अद्वितीय।

अउस पुं [दे] उपासक, पुजारी।

अए अ [अये] आमन्त्रण-सूचक अव्यय।

अओ अ [अतस्] यहाँ से लेकर। इसलिए।

अओ° [अयस्°] लोह। °घण पुं [घन] लोहे का हथौड़ा। °मय वि लोहे की बनी हुई चीज। °मुह पुं [°मुख] इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी। वि. लोहे की माफिक मजबूत मुंह वाला। °मुही स्त्री [°मुखी] एक नगरी।

अओग्ग वि [अयोग्य] नालायक।

अओज्झा देखो अउज्झा।

अं अ [दे] स्मरण-द्योतक अव्यय।

अंक पुं [अङ्क] उत्संग। रत्न की एक जाति। नौ की एक संख्या। संख्या-दर्शक चिह्न; १, २, ३। नाटक का एक अंश। सफेद मणि की एक जाति। चिह्न। मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणों में से एक। आसन-विशेष। पुंन. एक देव-विमान। °कण्ड पुंन. [काण्ड] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अंक रत्नों का है। °अरेल्लुग, °करेल्लुअ पुं [°करेल्लुक] पानी में होनेवाली एक जाति की वनस्पति। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] अंक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में से एक कला। °धर पुं चन्द्रमा। °धाई स्त्री [°धात्री] पाँच प्रकार की धाई-माताओं में से एक, जिसका काम बालक को उत्संग में ले उसका जी बहलाना है। °लिवि स्त्री [°लिपि] अठारह लिपियों में की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष। °वणिय पुं [°वणिक्] अंक-रत्नों का व्यापारी। °वालि, °वाली स्त्री [°पालि, °पाली] आलिंगन। °हर देखो °धर।

अंक [दे अङ्क] समीप।

अंककरेलुअ देखो अंक-करेल्लुअ।

अंकण न [अङ्कन] चिह्नित करना। बैल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना। वि. अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला।

अंकदास पुं [अङ्कदास] बालक को उत्संग में लेकर उसका जी बहलानेवाला नौकर।

अंकवाणिय देखो अंक-वणिय।

अंकार पुं [दे] सहायता।

अंकावई स्त्री [अङ्कावती] महाविदेह क्षेत्र के रम्य नामक विजय की राजधानी। मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत।

अंकिअ न [दे] आलिंगन।

अंकिअ वि [अङ्कित] चिह्नित।

अंकिइल्ल पुं [दे] नट, नर्तक।

अंकुडग पुं [अङ्कुटक] नागदन्तक, खूँटी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताख।

अंकुर पुं [अङ्कुर] प्ररोह, फुनगी।

अंकुस पुं [अङ्कुश] आंकडी, लोहे का एक हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं। ग्रह-विशेष। सीता का एक पुत्र, कुश। नियन्त्रण करनेवाला। अंकुशाकार खूँटी। पुंन. एक देव-विमान। पुंन. गुरु-वन्दन का एक दोष।

अंकुसइय न [दे. अंकुशित] अंकुश के आकारवाली चीज।

अंकुसय पुं [अङ्कुशक] देखो **अंकुस**। संन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देवपूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवों को काटता है।

अंकुसा स्त्री [अङ्कुशा] चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी।

अंकुसिअ वि [अङ्कुशित] अंकुश की तरह मुड़ा हुआ।

अंकुसी स्त्री [अङ्कुशी] देखो **अंकुसा**।

अंकूर देखो **अंकुर**।

अंकेल्लण न [दे] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कोड़ा, औंगी।

अंकेल्लि पुं [दे] अशोक-वृक्ष।

अंकोल्ल पुं [अङ्कोठ] वृक्ष-विशेष।

अंग ब. पुं [अङ्ग] इस नाम का एक देश, जिसको आजकल बिहार कहते हैं। राम का एक सुभट। न. आचारांग सूत्र आदि बारह जैन आगम-ग्रंथ। वेद के शिक्षादि छः अंग। कारण। आत्मा, जीव। पुंन. शरीर। शरीर के मस्तक आदि अवयव। अ. मित्रता का आमन्त्रण, सम्बोधन। वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय। °**इ** पुं [°जित्] इस नाम का एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी। °**इसि** पुं [°र्षि] चंपा नगरी का एक ऋषि। [°**चूलिया**] स्त्री [°चूलिका] अंग-ग्रन्थों का परिशिष्ट। °**च्छिहिय** वि [°छिन्नाङ्ग] जिसका अंग काटा गया हो वह। °**जाय** वि [°जात] लड़का। °**द** देखो °**य** = °**द**। °**पविट्ठ** न [°प्रविष्ट] बारह जैन अंग-ग्रन्थों में से कोई भी एक। अंग-ग्रन्थों का ज्ञान। °**बाहिर** न [°बाह्य] अंग-ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आगम। अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन आगमों का ज्ञान। °**मंग** न [°ाङ्ग] अंग-प्रत्यङ्ग। हर एक अवयव। °**मंदिर** न [°मन्दिर] चम्पा नगरी का एक देव-गृह। °**मद्द**, °**मद्दय** पुं [°मर्द, °मर्दक] शरीर की चम्पी करनेवाला नौकर। वि. शरीर को मलनेवाला। °**य** पुं [°द] वाली नामक विद्याधरराज का पुत्र। न. बाजूबंद, केहुंटा। °**य** वि [°ज] शरीर में उत्पन्न। पुं. पुत्र। °**या** स्त्री [°जा] पुत्री। °**रक्ख**, °**रक्खग** वि [°रक्ष, °रक्षक] शरीर की रक्षा करनेवाला। °**राग**, °**राय** पुं शरीर में चन्दनादि का विलेपन। °**राय** पुं [°राज] अंगदेश का राजा। अंग देश का राजा कर्ण। °**रिसि** देखो °**इसि**। °**रुह** वि देखो °**य** = °**ज**। °**रुहा** स्त्री पुत्री। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] शरीर के स्फुरण का शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या। उस नाम का एक जैन ग्रन्थ। °**वियार** पुं [°विचार] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °**संभूय** [°संभूत] संतान। °**हारय** पुं [°हारक] शरीर के अवयवों के विक्षेप, हाव-भाव। °**ादाण** न [°ादान] पुरुषेन्द्रिय।

अंग पुं [अङ्ग] भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम। न. लगातार बारह दिनों का उपवास। °**ज** देखो °**य**। °**हर** वि. [°धर] अङ्ग-ग्रन्थों का जानकार।

अंग वि [आङ्ग] शरीर का विकार। शरीर-सम्बन्धी। न. शरीर के स्फुरण आदि विकारों के शुभाशुभ फल को बतलाने-वाला शास्त्र, निमित्त-शास्त्र।

°**अंग** वि [चङ्ग] सुन्दर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगइया स्त्री [अङ्गदिका] एक नगरी, तीर्थ-विशेष।

अंगंगीभाव पुं [अङ्गाङ्गीभाव] अभेद भाव। अभिन्नता।

अंगण न [अङ्गण] आंगन।

अंगणा स्त्री [अङ्गना] औरत।

अंगदिआ देखो अङ्गइया।

अंगवड्ढण न [दे] बीमारी।

अंगवलिज्ज न [दे] शरीर को मोड़ना।

अंगार पुं [अङ्गार] जलता हुआ कोयला। जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष। °**मद्दग** पुं [°मर्दक] एक अभव्य जैन-आचार्य। °**वई** स्त्री [°वती] सुंसुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम।

अंगारग } पुं [अङ्गारक] ऊपर देखो।
अंगारय } मंगल-ग्रह। पहला महाग्रह। राक्षस-वंश का एक राजा।

अंगारिय वि [अङ्गारित] कोयले की तरह जला हुआ, विवर्ण।

अंगाल देखो अंगार।

अंगालग देखो अंगारग।

अंगालिय न [दे] ईख का टुकड़ा।

अंगालिय देखो अंगारिय।

अंगि पुं [अङ्गिन्] प्राणी, जीव। वि. शरीरवाला। अंग-ग्रन्थों का ज्ञाता।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है।

अंगिरस वि [आङ्गिरस] अंगिरस-गोत्र में उत्पन्न। पुं. एक तापस।

अंगीकड } वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत।
अंगीकय }

अंगीकर } सक [अङ्गी+कृ] स्वीकार
अंगीकुण } करना।

अंगुअ पुं [इङ्गुद] वृक्ष-विशेष। न. इंगुद वृक्ष का फल।

अंगुट्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] अंगूठा। °**पसिण** पुं [°प्रश्न] एक विद्या। 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन।

अंगुट्ठी स्त्री [दे] घूँघट।

अंगुत्थल न [दे] अंगुठी, अंगुलीय।

अंगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] संतान।

अंगुम सक [पूरय्] पूर्ति करना।

अंगुरि, °**री** स्त्री [अङ्गुलि, °ली] उंगली।

अंगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्यभाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष। °**पोहत्तिय** वि [°पृथक्त्विक] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिमाण वाला।

अंगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उंगली। °**कोस** पुं [°कोश] अंगुलि-त्राण, दास्ताना। °**प्फोडण** न [°स्फोटन] उंगली फोड़ना, कड़ाका करना।

अंगुलिअ } न [अङ्गुलीयक] अंगुठी।
अंगुलिज्जक }
अंगुलिज्जग }

अंगुलिणी स्त्री [दे] प्रियंगु, वृक्ष-विशेष।

अंगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो अंगुलि।

अंगुलीय } पुंन [अङ्गुलीयक] अंगुठी।
अंगुलेज्जक }
अंगुलेयय }

अंगुलेयग देखो अंगुलेयय।

अंगुवंग } न [अङ्गोपाङ्ग] शरीर के
अंगोवंग } अवयव। नख वगैरह शरीर के छोटे-छोटे अवयव। °**णाम** न [°नामन्] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष।

अंगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोड़कर बाकी शरीर का स्नान।

अंघो अ [अङ्घ] भय-सूचक अव्यय।

अंच सक [कृष्] खींचना। जोतना, चास करना। रेखा करना। उठाना।

अंच सक [अञ्च्] पूजा करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंच सक [अञ्च्] जाना।

अंचल पुं [अञ्चल] कपड़े का शेष भाग।

अंचि पुं [अञ्चि] गमन, गति।

अंचि पुं [आञ्चि] आगमन।

अंचिय वि [अञ्चित] युक्त। पूजित। प्रशस्त। न. एक प्रकार का नृत्य। एक बार का गमन। °यंचि पुं [°ाञ्चि] गमनागमन। ऊँचा-नीचा होना।

अंचियरिभिय न [अञ्चितरिभित] एक तरह का नाट्य।

अंचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण।

अंछ सक [कृष्] खींचना। अक. लम्बा होना।

अंछिय वि [दे] आकृष्ट। खींचा हुआ।

अंज सक [अञ्ज्] आंजना।

अंजण पुं [अञ्जन] कृष्ण पुद्गल-विशेष। देव-विशेष। पर्वत-विशेष। एक लोकपाल देव। पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है। वृक्ष-विशेष। न. एक जाति का रत्न। देवविमान-विशेष। काजल। जिसका सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य। आंख को आंजना। तैल आदि से शरीर की मालिश करना। रत्नप्रभा पृथिवी के खरकाण्ड का दशवाँ अंश-विशेष। °केसिया स्त्री [°केशिका] वनस्पति-विशेष। °जोग पुं [°योग] कला-विशेष। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °पुलय पुं [°पुलक] एक जाति का रत्न। पर्वत-विशेष का एक शिखर। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरकपृथिवी। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] इन्द्र-विशेष। °सलागा स्त्री [°शलाका] जैन-मूर्ति की प्रतिष्ठा। अंजन लगाने की सलाई। °सिद्ध वि आंख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्तिवाला। °सुन्दरी स्त्री एक सती स्त्री, हनूमान् की माता।

अंजणइसिआ स्त्री [दे] श्याम तमाल का पेड़।

अंजणई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष।

अंजणईस न [दे] देखो अंजणइसिआ।

अंजणा स्त्री [अंजना] हनूमान् की माता। स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी। एक पुष्करिणी। °तणय पुं [°तनय] हनूमान्। °सुन्दरी स्त्री हनूमान् की माता।

अंजणाभा [अञ्जनाभा] चौथी नरक पृथिवी।

अंजणिआ स्त्री [दे] देखो अंजणइसिआ।

अंजणी स्त्री [अञ्जनी] कज्जल का आधार-पात्र।

अंजलि, °ली स्त्री [अञ्जलि] हाथ का संपुट। एक या दोनों संकुचित हाथों को ललाट पर रखना। कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम °उड पुं [°पुट] हाथ का संपुट। °करण न विनय-विशेष, नमन। °पग्गह पुं [°प्रग्रह] नमन, हाथ जोड़ना। संभोग-विशेष।

अंजस वि (दे) ऋजु।

अंजु वि [ऋजु] सरल, अकुटिल, संयम में तत्पर, संयमी। स्पष्ट व्यक्त।

अंजुआ स्त्री [अञ्जुका] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या।

अंजू स्त्री [अञ्जू] एक सार्थवाह की कन्या। 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन। एक इन्द्राणी 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन।

अंठि पुंन [अस्थि] हड्डी, हाड़।

अंड, अंडअ, अंडग न [अण्ड] अंडा। अंडकोश। 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का तृतीय अध्ययन। °कड वि [°कृत] जो अण्डे से बनाया गया हो। °बंधु पुं [°बन्ध] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला। °वाणियय पुं [°वाणिजक] अण्डों का व्यापारी।

अंडग, अंडय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होने वाले जंतु; पक्षी, सांप, मछली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वगैरह। रेशम का धागा। रेशमी वस्त्र। शण का वस्त्र।

अंडाउय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होनेवाला।

अंत पुं [अन्त] स्वरूप, स्वभाव। प्रान्त भाग। हद। नजदीक। भग, विनाश। निश्चय। प्रदेश, स्थान। राग और द्वेष। रोग। वि. इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस वस्तु। सुन्दर। नीच, क्षुद्र, तुच्छ। °**कर** वि. उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला। °**करण** वि नाशक। °**काल** पुं मृत्यु काल। प्रलय काल। °**किरिया** स्त्री [°क्रिया] मुक्ति, संसार का अन्त करना। °**कुल** न क्षुद्र कुल। °**गड** वि [°कृत्] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला। °**गडदसा** स्त्री [°कृद्दशा] जैन अंग-ग्रंथों में आठवाँ अंग-ग्रंथ। °**चर** वि भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला।

अंत वि [अन्त्य] अन्तिम। °**क्खरिया** स्त्री [°क्षरिका] ब्राह्मी लिपि का एक भेद। कला-विशेष।

अंत न [अन्त्र] आंत।

अंत अ [अन्तर्] मध्य में। °**उर** न [°पुर] देखो **अंतेउर**। °**करण**, °**क्करण** [°करण] मन, हृदय। °**गय** वि [°गत] मध्यवर्ती। °**द्धा** स्त्री [°धा] तिरोधान नाश (आचू)। °**द्धाण** न [°धान] अदृश्य होना, तिरोहित होना। °**द्धाणी** स्त्री [°धानी] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या। °**द्धाभूअ** वि [°धाभूत] नष्ट। °**प्पाअ** पुं [°पात] अन्तर्भाव। °**भाव** पुं समावेश। °**मुहुत्त** न [°मूहूर्त] न्यून मुहूर्त। °**रद्धा** स्त्री [°धा] तिरोधान। नाश। °**रद्धा** स्त्री [°अद्धा] मध्य-काल। °**रप्प** पुं [°आत्मन्] आत्मा, जीव। °**रहिय**, °**रिहिद** (शौ) वि [°हित] व्यवहित। गुप्त, अदृश्य। °**वेइ** पुं [°वेदि] गंगा और यमुना के बीच का देश। °**अंत** वि [°कान्त] मनोहर।

अंतअ वि [आयात्] आता हुआ।

अंतअ वि [अन्तग] पार-गामी।

अंतअ वि [अन्तद] शाश्वत। जिसकी सीमा न हो वह।

अंतअ } वि [अन्तक] सुन्दर। अन्तर्गत,
अंतग } समाविष्ट। पर्यन्त, प्रान्त भाग। यम, मृत्यु।

अंतग वि [अन्तग] पार-गामी। जो कठिनाई से छोड़ा जा सके।

°**अंतगय** देखो **अंत-ग्गय**।

°**अंतण** न [यन्त्रण] बन्धन, नियन्त्रण।

अंतद्धाण वि [अन्तर्धान] तिरोधान-कर्त्ता।

अंतब्भाव देखो **अंत-भाव**।

अंतर न [अन्तर] मध्य, भीतर। भेद, विशेष। अवसर। समय। व्यवधान, अवकाश, अन्तराल। छिद्र। रजोहरण। पात्र। पुं. आचार, कल्प। सूत के कपड़े पहनने का आचार, सौत्र कल्प। °**कप्प** पुं [°कल्प] जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण। °**कंद** पुं कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष। °**करण** न आत्मा का शुभ अध्यवसाय-विशेष। °**गिह** न [°गृह] घर का भीतरी भाग। दो घरों के बीच का अन्तर। °**णई** स्त्री [°नदी] छोटी नदी। °**दीव** पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। लवण समुद्र के बीच का द्वीप। °**सत्तु** पुं [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि।

अंतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना।

अंतर वि [आन्तर] अभ्यन्तर, भीतरी, मानसिक।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष।

अंतरपल्ली स्त्री [अन्तरपल्ली] मूल स्थान से ढाई गव्यूत की दूरी पर स्थित गाँव।

अंतरमुहुत्त देखो **अंत-मुहुत्त**।

अंतरा अ [अन्तरा] बीच में। पहले, पूर्व में।

अंतराइय न [आन्तरायिक] कर्म-विशेष, जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दान आदि करने में विघ्न करता है। विघ्न।

अंतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला भाग।

अंतराय पुंन. [अन्तराय] देखो **अंतराइय**।

अंतराल पुं [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग।

अंतरावण पुंन [अन्तरापण] दूकान।

अंतरावास पुं [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश। °**जाय** वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु। °**पासणाह** पुं [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के पास का एक जैन-तीर्थ और वहाँ की भगवान् श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति।

अंतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] आकाश-सम्बन्धी, आकाश का। ग्रहों के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र।

अंतरिज्ज न [अन्तरीय] वस्त्र। शय्या का नीचला वस्त्र।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटिसूत्र।

अंतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वैशवाटिक गच्छ की एक शाखा।

अंतरित / **अंतरिय** } वि [अन्तरित] व्यवहित, अंतरवाला।

अंतरिया स्त्री [दे] समाप्ति।

अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोड़ा व्यवधान।

अंतरीय न [अन्तरीप] द्वीप।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बिना, सिवाय।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बीच में, मध्य में।

अंतलिक्ख देखो **अंतरिक्ख**।

°**अंति** देखो **पंति**।

अंतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य।

अंतिय न [अन्तिक] समीप। अंत। चरम।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती।

अंतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला।

अंतेउर न [अन्तःपुर] राजस्त्रियों का निवास-गृह। रानी।

अंतेउरिगा / **अंतेउरिया** / **अंतेउरी** } स्त्री [आन्तःपुरिकी, °री] अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री, राज्ञी। रोगी का नाममात्र लेने से उसको नीरोग बनाने वाली एक विद्या।

अंतेल्ली स्त्री [दे] मध्य। उदर। तरंग।

अंतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य।

अंतेवुर देखो **अंतेउर**।

अंतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर। °**खरिया** स्त्री [°खरिका] नगर में रहनेवाली वेश्या। °**गइया** स्त्री [°गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना। °**गय** वि [°गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट। °**णिअंसणी** स्त्री [°निवसनी] जैन साध्वियों को पहनने का एक वस्त्र। °**दहण** न [°दहन] हृदय-दाह। °**मज्झावसाणिय** पुंन [°मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद। °**मुहुत्त** न [°मुहूर्त] कम मुहूर्त, ४८ मिनिट से कम समय। °**वाहिणी** स्त्री [°वाहिनी] क्षुद्र नदी। °**वीसंभ** पुं [°विश्रम्भ] हार्दिक विश्वास। °**सल्ल** न [°शल्य] भीतरी शल्य, घाव। कपट, माया। °**साला** स्त्री [°शाला] घरका भीतरी भाग। °**हुत्त** वि [°मुख] भीतर।

अंतोहुत्त वि [दे] अधोमुख।

अंत्रडी (अप) स्त्री [अन्त्र] आंत, आंतो।

°**अंद** पुं [चन्द्र] चन्द्रमा। कपूर। °**राअ** पुं [°राग] चन्द्रकान्त मणि।

°**अंदरा** स्त्री [°कन्दरा] गुफा।

°**अंदल** पुं [कन्दल] वृक्ष-विशेष।

°**अंदावेदि** (शौ) देखो **अंतावेइ**।

अंदु / **अंदुया** } स्त्री [अन्दु] शृंखला, जंजीर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंदेउर (शौ) देखो अंतेउर।

अंदोल अक [अन्दोल्] झूलना। कंपना, हिलना। संदिग्ध होना।

अंदोल सक [अन्दोलय्] कंपाना, हिलाना।

अंदोलग पुं [आन्दोलक] हिंडोला।

अंदोलण न [आन्दोलन] हिचकना, झूलना। हिंडोला। मार्ग-विशेष।

अंदोलय देखो अंदोलग।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलानेवाला, कंपानेवाला।

अंदोलिर वि [आन्दोलितृ] झूलनेवाला।

अंदोल्लण देखो अंदोलण।

अंध वि [अन्ध] अन्धा। अज्ञान, ज्ञानरहित। °कंटइज्ज न [°कण्टकीय] अंध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना। °तम न [°तमस] निबिड अन्धकार। °पुर न नगरविशेष।

अंध पुं [अन्ध] पांचवाँ नरक का चौथा नरकेन्द्रक, एक नरक-स्थान।

अंध पुं. ब. [अन्ध्र] इस नाम का एक देश।

अंध वि [आन्ध्र] आन्ध्र देश का रहनेवाला।

अंधंधु पुं [दे] कुँआ।

अंधकार देखो अंधयार।

अंधग पुं [दे] वृक्ष। °वण्हि पुं [°वह्नि] स्थूल अग्नि।

अंधग देखो अंध। °वण्हि पुं [°वह्नि] सूक्ष्म अग्नि। °वण्हि पुं [°वृष्णि] यदुवंश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि का पिता था।

अंधय पुं [अन्धक] अंधा। वानरवंश का एक राजकुमार।

अंधयार पुंन [अन्धकार] अंधेरा। °पक्ख पुं [°पक्ष] कृष्णपक्ष।

अंधरअ } वि [अन्ध] अन्धा।
अंधल }

अंधलारल्ली स्त्री [अन्धयित्री] अंध बनानेवाली एक विद्या।

अंधार पुं [अंधकार] अंधेरा।

अंधार सक [अन्धकारय्] अन्धकार-युक्त करना।

अंधाव सक [अन्धय्] अंधा करना।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] द्यूत-विशेष।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति।

अंधीकिद (शौ) वि [अन्धीकृत] अंध किया हुआ।

अंधु पुं [अन्धु] कूप।

°अंप पुं [कम्प] कंपन।

अंब पुं [अम्ब] एक जात के परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को दुःख देते हैं।

अंब पुं [आम्र] आम का पेड़। न. आम्र-फल। °ट्ठिया स्त्री [दे] आम की आँठी, गुठली। °चोयग न [दे] आम का छिलका। आम की छाल। °डगल न [दे] आम का टुकड़ा। °डालग न [दे] आम का छोटा टुकड़ा। °पेसिया स्त्री [°पेशिका] आम का लम्बा टुकड़ा। °भित्त न [दे] आम का टुकड़ा। °सालग न [दे] आम की छाल। °सालवण न [°शालवन] चैत्य-विशेष।

अंब न [अम्ल] तक्र, मट्ठा। खट्टा रस। खट्टी चीज। वि. निष्ठुर वचन बोलनेवाला।

अंब वि [आम्ल] खट्टी वस्तु। मट्ठे से संस्कृत चीज।

अंब वि [ताम्र] लाल, रक्तवर्णवाला।

अंबग देखो अंब = आम्र °ट्ठिया स्त्री [°अस्थि] आम की गुठली।

अंबट्ठ पुं [अम्बष्ठ] देश-विशेष। जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह।

अंबड पुं [अम्बड] एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मोक्ष जायगा। भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौबीसी में २२ वाँ तीर्थंकर होगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंबड वि [दे] कठिन ।

अंबधाई स्त्री [अम्बाधात्री] धाई माता ।

अंबमसी स्त्री [दे] कठिन और बासी कनिक।

अंबर पुंन [अम्बर] एक देव-विमान ।

अंबर न [अम्बर] आकाश । वस्त्र । °तिलय पुं [°तिलक] पर्वत-विशेष । °वत्थ न [°वस्त्र] स्वच्छ वस्त्र ।

अंबरस पुंन [अम्बरस] आकाश ।

अंबरिस पुंन [अम्बरीष] भट्ठी । कोष्ठक । पुं नारक-जीवों को दुःख देनेवाले एक प्रकार के परमाधार्मिक देव ।

अंबरिसि पुं [अम्बऋषि] ऊपर का तीसरा अर्थ देखो । उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण ।

अंबरीस देखो अंबरिस ।

अंबरीसि देखो अंबरिसि ।

अंबसमिआ, अंबसमी } देखो अंबमसी

अंबहुंडी स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी ।

अंबा स्त्री [अम्बा] माता । भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी । वल्ली-विशेष ।

अंबाड सक [खरण्ट्] लेप करना ।

अंबाड सक [तिरस् + कृ] उपालंभ देना, तिरस्कार करना ।

अंबाडग, अंबाडय } पुं [आम्रातक] आमला का । न. आमला का फल ।

अंबिआ स्त्री [अम्बिका] भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी । पाँचवें वासुदेव की माता । °समय पुं गिरनार पर्वत का एक तीर्थ स्थान ।

अंबिर न [आम्र] आम का फल ।

अंबिल पुं [आम्ल] खट्टा रस । वि. खटाई वाली चीज । नामकर्म-विशेष ।

अंबिलिया स्त्री [अम्लिका] इमली का पेड़ । इमली का फल ।

अंबु न [अम्बु] पानी । °अ, °ज न [°ज] कमल । [°णाह] पुं [°नाथ] समुद्र । °रुह न कमल । °वह पुं मेघ । °वाह पुं वारिस ।

अंबुपिसाअ पुं [दे] राहु ।

अंबुसु पुं [दे] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ ।

अंबेट्टिआ, अंबेट्टी } स्त्री [दे] मुष्टि-द्यूत ।

अंबेसि पुं [दे] दरवाजे का तख्ता ।

अंबोच्ची स्त्री [दे] फूलों को बिननेवाली स्त्री ।

अंभ पुं [अम्भस्] पानी ।

अंभु (अप) पुं [अश्मन्] पत्थर ।

अंभो पुं [अम्भस्] पानी । अ° न [°ज] कमल । °इणी स्त्री [°जिनी] कमलिनी । °निहि पुं [°निधि] समुद्र । °रुह न पद्म ।

अंभोहि पुं [अम्भोधि] समुद्र ।

अंस पुं [अंश] भाग, अवयव । भेद, विकल्प । पर्याय, धर्म, गुण ।

अंस पुं [अंश] विद्यमान कर्म । °हर वि [°धर] भागीदार ।

अंस, अंसलग } पुं [अंस] कान्ध, कंधा ।

अंसि स्त्री [अश्रि] कोण, कोना । धार ।

अंसिया स्त्री [अंशिका] भाग, हिस्सा ।

अंसिया स्त्री [अर्शिका] बवासीर का रोग । नासिका का एक रोग । फुनसी, फोड़ा ।

अंसु पुं [अंशु] किरण । °मालि पुं [°मालिन्] सूर्य ।

अंसु देखो अंसुय = अंशुक ।

अंसु पुं [अंशु] किरण । °मंत, °वंत वि [°मत्] किरणवाला । पुं. सूर्य ।

अंसु न [अश्रु] आँसू । °मंत, °वंत वि [°मत्] अश्रुवाला ।

अंसुय न [अंशुक] वस्त्र । बारीक वस्त्र । पोशाक ।

अंसोत्थ देखो अस्सोत्थ ।

अंह पुंन [अंहस्] मल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंहि पुं [अंह्रि] पाँव।
अकइ वि [अकति] असंख्यात, अनन्त।
अकंड देखो अयंड।
अकंडतलिम वि [दे] स्नेह रहित। जिसने शादी न की हो वह।
अकंपण वि [अकम्पन] कंप रहित। पुं रावण का एक पुत्र।
अकंपिय वि [अकम्पित] कम्प रहित। पुं भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर।
अकज्ज देखो अकय = अकृत्य।
अकण्ण वि [अकर्ण] कर्ण रहित। पुं. स्वनामख्यात एक अंतर्द्वीप और उसमें रहनेवाला।
अकप्प पुं [अकल्प] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बाहर का आचरण।
अकप्प वि [अकल्प्य] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदि अग्राह्य वस्तु।
अकप्पिय पुं [अकल्पिक] जिसको शास्त्र का पूरा-पूरा ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु।
अकप्पिय देखो अकप्प = अकल्प्य।
अकम वि [अक्रम] क्रम रहित। एक साथ।
अकम्म न [अकर्मन्, °क] कर्म का अभाव। पुं मुक्त, सिद्ध जीव। कृषि आदि कर्म रहित (देश, भूमि वगैरह)। °भूमग, °भूमय वि [°भूमक] अकर्म-भूमि में उत्पन्न होने वाला। °भूमि, °भूमी स्त्री जिस भूमि में कल्प वृक्षों से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होने से कृषि वगैरह कर्म करने की आवश्यकता नहीं है वह, भोग-भूमि। °भूमिय वि [°भूमिज] अकर्म-भूमि में उत्पन्न।
अकम्हा अ [अकस्मात्] अचानक, निष्कारण।
°अकय वि [अकृत] नहीं किया हुआ। °मुह वि [°मुख] अपठित, अशिक्षित। °त्थ वि [°ार्थ] असफल।
अकय वि [अकृत्य] करने के अयोग्य या अशक्य। न. अनुचित काम। °कारि वि [°कारिन्] अकृत्य को करनेवाला।
अकथ्थ (मा) ऊपर देखो।
अकरण न नहीं करना। मैथुन।
अकाइय वि [अकायिक] शारीरिक चेष्टा से रहित। पुं. मुक्तात्मा।
अकाम पुं अनिच्छा। वि. निष्काम। °णिज्जरा स्त्री [°निर्जरा] कर्म-नाश की अनिच्छा से बुभुक्षा आदि कष्टों को सहन करना।
अकामग, अकामय } [अकामक] ऊपर देखो। अवांछनीय, इच्छा करने के अयोग्य।
अकामिय वि [अकामिक] निराश।
अकाय वि शरीररहित। पुं मुक्तात्मा।
अकार पुं 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण।
अकारग पुं [अकारक] अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग। वि. अकर्ता। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला।
अकासि अ [दे] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्।
अकिंचण वि [अकिञ्चन] साधु, मुनि, भिक्षुक। निर्धन।
अकिरिय वि [अक्रिय] आलसी, निरुद्यम। अशुभ व्यापार से रहित। परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक। °ाय वि [°ात्मन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य।
अकीरिय देखो अकिरिय।
अकुइया स्त्री [अकुचिका] देखो अकुय।
अकुओभय वि [अकुतोभय] जिसको किसी तरफ से भय न हो वह, निर्भय।
अकुय वि [अकुच] निश्चल।
अकोप्प वि [अकोप्य] सुन्दर।
अकोप्प पुं [दे] अपराध।
अकोस देखो अक्कोस = अक्रोश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्क पुं [अर्क] सूर्य । आक का पेड़ । रावण का एक सुभट । °तूल न आक की रूई । °तेअ पुं [°तेजस्] विद्याधर वंश का एक राजा । °बोंदीया स्त्री [°बोन्दिका] वल्ली-विशेष ।

अक्क पुं [दे] दूत ।

°अक्क देखो चक्क ।

अक्कअ वि [अकृत] नहीं किया गया ।

अक्कंड देखो अकंड ।

अक्कंत वि [आक्रान्त] बलवान् के द्वारा दबाया हुआ । घेरा हुआ, ग्रस्त । परास्त । एक जाति का निर्जीव वायु । न. आक्रमण, उल्लंघन । °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दबा हुआ ।

अक्कंत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध ।

अक्कंत वि [अकान्त] अनभिलषित, अनभिमत ।

अक्कंद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना । विलाप करना ।

अक्कंद (अप) देखो अक्कम = आ + क्रम् ।

अक्कंद पुं [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना ।

अक्कंद वि [दे] रक्षक ।

अक्कंदावणय वि [आक्रन्दक] रुलानेवाला ।

अक्कम सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना, दबाना । परास्त करना । पुं चढ़ाई करना ।

अक्कमण न [आक्रमण] पराक्रम । वि. आक्रमण करनेवाला ।

अक्कसाला स्त्री [दे] जबरदस्ती । उन्मत्त-सी स्त्री ।

अक्का स्त्री [दे] बहिन ।

अक्का स्त्री कुट्टनी, दूती ।

अक्कासी स्त्री व्यन्तर-जातीय एक देवी ।

अक्किज्ज वि [अक्रेय] खरीदने के अयोग्य ।

अक्किट्ठ वि [अक्लिष्ट] क्लेश-वर्जित । बाधा-रहित ।

अक्किट्ठ वि [अकृष्ट] अविलिखित ।

अक्किय वि [अक्रिय] क्रियारहित ।

अक्कुट्ठ वि [दे] अध्यासित, अधिष्ठित ।

अक्कुस सक [गम्] जाना ।

अक्कुहय वि [अकुहक] निष्कपट ।

अक्कूर पुं [अक्रूर] श्रीकृष्ण के चाचा का नाम । वि. क्रूरतारहित, दयालु ।

अक्केज्ज देखो अक्किज्ज ।

अक्केल्लय वि [एकाकिन्] अकेला, एकाकी ।

अक्कोड पुं [दे] बकरा ।

अक्कोडण न [आक्रोडन] इकट्ठा करना, संग्रह करना ।

अक्कोस न [अक्रोश] जिस ग्राम के अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह ।

अक्कोस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना ।

अक्कोस पुं [आक्रोश] कटु वचन, शाप, भर्त्सना ।

अक्कोसग वि [आक्रोशक] आक्रोश करनेवाला ।

अक्कोह वि [अक्रोध] अल्प-क्रोधी । क्रोधरहित ।

अक्ख पुं [अक्ष] जीव, आत्मा । रावण का एक पुत्र । चन्दनक, समुद्र में होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं । पहिया की धुरी, कील । चौसर का पासा । बिभीतक । चार हाथ या ९६ अंगुलों का एक मान । रुद्राक्ष । न. इन्द्रिय । जुआ । °चम्म न [°चर्मन्] पखाल, मसक । °पाडय न [°पादक] कील का टुकड़ा । °माला स्त्री जपमाला । °लया स्त्री [°लता] रुद्राक्ष की माला । °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र । °वलय न रुद्राक्ष की माला । °वाअ पुं [°पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि । °वाडग पुं [°वाटक] अखाड़ा । °सुत्तमाला स्त्री [°सूत्रमाला] जपमाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्ख देखो अक्खा = आ + ख्या ।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित (सण) ।

अक्खउहिणी देखो अक्खोहिणी ।

अक्खंड वि [अखण्ड] संपूर्ण । अखण्डित । निरन्तर, अविच्छिन्न ।

अक्खंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र ।

अक्खड सक [आ + स्कन्द्] आक्रमण करना ।

अक्खणवेल न [दे] संभोग । संध्या काल ।

अक्खणिआ स्त्री [दे] विपरीत मैथुन ।

अक्खम वि [अक्षम] असमर्थ । अनुचित ।

अक्खय वि [अक्षत] घावरहित । संपूर्ण । पुं. ब. अखण्ड चावल ।

°यार वि [°चार] निर्दोष आचरणवाला ।

अक्खय वि [अक्षय] क्षय का अभाव । जिसका कभी नाश न हो वह ।

°निहि पुंन [°निधि] एक प्रकार की तपश्चर्या । °तइया स्त्री [°तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया ।

अक्खर पुंन [अक्षर] अक्षर, वर्ण । ज्ञान चेतना । वि. नित्य । °त्थ पुं [°ार्थ] शब्दार्थ । °पुट्ठिया स्त्री [°पृष्ठिका] लिपिविशेष । समास पुं अक्षरों का समूह । श्रुत-ज्ञान का एक भेद ।

अक्खल पुं [दे] अखरोट वृक्ष । न. अखरोट वृक्ष का फल ।

अक्खलिय वि [दे] प्रतिध्वनित । व्याकुल ।

अक्खलिय वि [अस्खलित] अबाधित, निरुपद्रव । अपतित ।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा ।

अक्खा सक [आ + ख्या] कहना, बोलना । उपदेश देना । प्रतिपादित करना ।

अक्खा स्त्री [आख्या] नाम ।

अक्खाय न [आख्यातिक] क्रियापद, क्रिया वाचक शब्द ।

अक्खाइय वि [अक्षितिक] स्थायी, शाश्वत ।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वार्ता, कहानी ।

अक्खाउ वि [आख्यातृ] कहनेवाला ।

अक्खाग पुं [आख्याक] म्लेच्छों की एक जाति ।

अक्खाडग } पुं [अक्षवाटक] जूआ खेलने
अक्खाडय } का अड्डा । अखाड़ा, व्यायाम-स्थान । प्रेक्षकों को बैठने का आसन ।

अक्खाण न [आख्यान] कथन, निवेदन । वार्ता, उपकथा ।

अक्खाय वि [आख्यात] प्रतिपादित, कथित । न. क्रियापद ।

अक्खाय न [अखात] हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता गढ़ा, खड्डा ।

अक्खाया स्त्री [आख्याता] एक प्रकार की जैन दीक्षा ।

अक्खि त्रि [अक्षि] आंख ।

अक्खिअ वि [आक्षिक] पासा से जूआ खेलनेवाला, जुआड़ी ।

अक्खिअ वि [आख्यात] प्रतिपादित, कथित ।

अक्खितर न [अक्ष्यन्तर] आंख का कोटर ।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] सब तरह से प्रेरित । व्याकुल । जिस पर टीका की गई हो वह । आकृष्ट । सामर्थ्य से लिया हुआ ।

अक्खित्त न [अक्षेत्र] मर्यादित क्षेत्र के बाहर का प्रदेश ।

अक्खिव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना । रोकना । गँवाना । व्याकुल करना । स्वीकार करना । घबराना ।

अक्खिव सक [आ + क्षिप्] आक्रोश करना ।

अक्खीण वि [अक्षीण] क्षयरहित, अखूट । परिपूर्ण । °महाणसिय वि [°महानसिक] जिसको निम्नोक्त अक्षीण महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह । °महाणसी स्त्री [°महानसी] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति जिससे थोड़ा भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्षान्न दूसरे सैकड़ों लोगों को यावत्-तृप्ति खिलाने पर भी तबतक कम न हो, जबतक भिक्षान्न लानेवाला स्वयं उसे न खाय। °महालय वि जिससे थोड़ी जगह में भी बहुत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त।

अक्खुअ वि [अक्षत] अक्षीण, त्रुटि-शून्य।

अक्खुडिअ वि [अखण्डित] संपूर्ण, अखण्ड, त्रुटिरहित।

अक्खुण्ण वि [अक्षुण्ण] अविच्छिन्न।

अक्खुद्द वि [अक्षुद्र] गंभीर, अतुच्छ। दयालु। उदार। सूक्ष्म बुद्धिवाला।

अक्खुद्द न [अक्षौद्रय] क्षुद्रता का अभाव।

अक्खुपुरी स्त्री [अक्षपुरी] नगरी-विशेष।

अक्खुब्भमाण वि [अक्षुभ्यमान] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो।

अक्खुभिय देखो अक्खुहिय।

अक्खुहिय वि [अक्षुभित] क्षोभरहित, अक्षुब्ध।

अक्खूण सि [अक्षूण] अन्यून, परिपूर्ण।

अक्खेअ अक्खा = आ + ख्या। का कृ।

अक्खेव पुं [अ + क्षेप] शीघ्रता।

अक्खेव पुं [आक्षेप] आकर्षण, खींच कर लाना। सामर्थ्य, अर्थ की संगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलाना। आशंका, पूर्वपक्ष। उत्पत्ति।

अक्खेवग पुं [आक्षेपक] खींचकर लानेवाला, आकर्षक। समर्थक पद, अर्थसंगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलानेवाला शब्द। सान्निध्य-कारक।

अक्खेवणी स्त्री [आक्षेपणी] श्रोताओं के मन को आकर्षित करनेवाली कथा।

अक्खोड सक [कृष्] म्यान से तलवार को खींचना, बाहर करना।

अक्खोड सक [आ + स्फोटय्] थोड़ा या एक बार झटकना।

अक्खोड पुं [अक्षोट] अखरोट का पेड़। न. अखरोट वृक्ष का फल। राजकुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट।

अक्खोड पुं [आस्फोट] प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष।

अक्खोभ / **अक्खोह** पुं [अक्षोभ] क्षोभ का अभाव, घबराहट का अभाव। यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था। न. 'अन्त-कृद्दशा' सूत्र का एक अध्ययन। वि. क्षोभ-रहित, अचल, स्थिर।

अक्खोहिणी स्त्री [अक्षौहिणी] एक बड़ी सेना, जिसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल होते हैं।

अखंड वि [अखण्ड] परिपूर्ण, खण्डरहित। त्रुटिरहित।

अखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र।

अखंपण वि [दे] स्वच्छ, निर्मल।

अखत्त न [अक्षात्र] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध। जुलम।

अखरय पुं [दे] एक प्रकार का दास।

अखादिम वि [अखाद्य] खाने के अयोग्य।

अखाय वि [अखात] नहीं खुदा हुआ। °तल न छोटा तलाव।

अखिल वि सर्व, सकल, परिपूर्ण। ज्ञान आदि गुणों से पूर्ण।

अखुट्ट वि [दे] अखूट।

अखेयण्ण वि [अखेदज्ञ] अकुशल, अनिपुण।

अखोड देखो अक्खोड + आस्फोट।

अखोहा स्त्री [अक्षोभा] विद्या-विशेष।

अग पुं वृक्ष। पर्वत।

अगइ स्त्री [अगति] नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म। निरुपाय।

अगंठिम न [अग्रन्थिम] केला। फल की फाँक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टुकड़ा।

अगंडिगेह वि [दे] यौवनोन्मत्त।

अगंडूयग वि [अकण्डूयक] नहीं खुजलानेवाला।

अगंथ वि [अग्रन्थ] धनरहित। पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु।

अगंधण पुं [अगन्धन] इस नाम की सर्पों की एक जाति।

अगड पुं [दे. अवट] कूप, इनारा। °**तड** त्रि [°तट] इनारा का किनारा। °**दत्त** पुं इस नाम का एक राजकुमार। **दद्दुर** पुं [°दर्दुर] कुंए का मेढक, अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो।

अगड पुं [अवट] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह।

अगड वि [अकृत] नहीं किया हुआ।

अगणि पुं [अग्नि] आग। °**काय** पुं अग्नि के जीव। °**मुह** पुं [°मुख] देव, देवता।

अगणिअ वि [अगणित] अवगणित, अपमानित।

अगत्थि } पुं [अगस्ति, °क] इस नाम का
अगत्थिय } एक ऋषि। वृक्ष-विशेष। एक तारा, अठासी महाग्रहों में ५४ वाँ महाग्रह।

अगन्न वि [अकर्ण्य] नहीं सुनने लायक।

अगम पुं वृक्ष। वि. स्थावर। न. आकाश।

अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमें एक सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरह पद्य हो।

अगम्म वि [अगम्य] जाने के अयोग्य। स्त्री. भोगने के अयोग्य, भगिनी, पर-स्त्री आदि। °**गामि** वि [°गामिन्] पर-स्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक।

अगय न [अगद] औषध।

अगय पुं [दे] दानव।

अगर पुंन [अगरु] सुगन्धि काष्ठ-विशेष।

अगरल वि [अगरल] सुविभक्त, स्पष्ट।

अगरु देखो **अगर**।

अगरुलहु वि [अगुरुलघु] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह। °**णाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिससे जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है।

अगलदत्त पुं [अगलदत्त] एक रथिक-पुत्र।

अगलय देखो **अगर**।

अगहण पुं [दे] कापालिक, एक ऐसे संप्रदाय के लोग, जो माथे की खोपड़ी में ही खाने-पीने का काम करते हैं।

अगहिल्ल वि [अग्रहिल] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल। °**राय** पुं [°राज] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रमण से बनावटी पागल बना था।

अगाढ त्रि [अगाध] अथाह, बहुत गहरा।

अगामिय वि [अग्रामिक] ग्रामरहित।

अगार पुं [अकार] 'अ' अक्षर।

अगार न गृह। पुं. गृहस्थ, गृही, संसारी। °**त्थ** वि [°स्थ] गृही। °**धम्म** पुं [°धर्म] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म।

अगारग वि [अकारक] अकर्ता।

अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही।

अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री।

अगाल देखो **अयाल**।

अगाह वि [अगाध] गहरा, गंभीर।

अगिणि देखो **अग्गि**।

अगिला स्त्री [अग्लानि] अखिन्नता, उत्साह।

अगिला स्त्री [दे] अवज्ञा, तिरस्कार।

अगुण देखो **अउण**।

अगुण त्रि [अगुण] गुणरहित, निर्गुण। पुं. दोष, दूषण।

अगुणासी देखो **एगूणासी**।

अगुरु वि छोटा। पुंन. सुगन्धि काष्ठविशेष।

अगुरुलहु देखो **अगुरुलहु**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगुलु देखो अगुरु ।

अग्ग न [अग्रव] प्रकर्ष ।

अग्ग पुंन [दे] परिहास । वर्णन ।

अग्ग न [अग्र] आगे का भाग, ऊपर का भाग । पूर्वभाग । परिमाण । वि. प्रधान, श्रेष्ठ । अग्रवर्ती । प्रथम । °क्खंध पुं [°स्कन्ध] सैन्य का अग्र भाग । °गामिग वि [°गामिक] अग्रगामी । °ज देखो °य । °जम्म [जन्मन्] देखो °य । °जाय [°जात] देखो °य । °जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग । °णिय, °णी वि [°णी] नायक । °तावस पुं [°तापस] ऋषि-विशेष का नाम । °द्ध न [°र्ध] पूर्वार्ध । °पिंड पुं [°पिण्ड] एक प्रकार का भिक्षान्न । °प्पहारि वि [°प्रहा-रिन्] पहले प्रहार करनेवाला । °बीय वि [°बीज] जिसमेंबीजपहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्रभाग ही कारण होता है; जैसे आम, कोरंटक आदि वनस्पति । °मणि पुं [°मणि] मुख्य, श्रेष्ठ, शिरोमणि । °महिसी स्त्री [°महिषी] पट-रानी । °य वि [°ज] आगे उत्पन्न होने वाला । पुं ब्राह्मण । बड़ा भाई । स्त्री. बड़ी बहन । °लोग पुं [°लोक] मुक्तिस्थान । °हत्थ पुं [°हस्त] हाथ का अग्र-भाग । हाथ का अवलम्बन । अंगुली ।

अग्ग न [अग्र] प्रभूत, बहु । उपकार । °भाव न धनिष्ठा-नक्षत्र का गोत्र । °माहिसी देखो °महिसी ।

अग्ग वि [अग्र्य] श्रेष्ठ । प्रधान ।

अग्गंथ वि [अग्रन्थ] धनरहित । पुं जैन साधु ।

अग्गक्खंध पुं [दे] रणभूमि का अग्रभाग ।

अग्गल न [अर्गल] किवाड़ बन्द करने की लकड़ी । पुं. एक महाग्रह । °पासय पुं [°पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान । °पासाय पुं [°प्रासाद] जहाँ आगल दिया जाता है वह घर ।

अग्गल वि [दे] अधिक ।

अग्गवेअ पुं [दे] नदी का पूर ।

अग्गह पुं [आग्रह] हठ, अभिनिवेश ।

अग्गहण न [अग्रहण] अज्ञान । नहीं लेना ।

अग्गहण न [दे. अग्रहण] अनादर ।

अग्गहणिया स्त्री [दे] गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव ।

अग्गहिअ वि [दे] निर्मित । स्वीकृत ।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य ।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन ।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध ।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम ।

अग्गाहार पुं [दे. अग्राहार] उच्च जीविका ।

अग्गि पुं [अग्नि] एक नरक-स्थान । °हुत्त देखो °होत्त । अग्गि पुं स्त्री [अग्नि] आग । कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव । लोकान्तिक देव-विशेष । °आरिआ स्त्री [°कारिका] होम । °उत्त पुं [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम । °कुमार पुं भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति । °कोण पुं पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा । °जस पुं [°यशस] देव-विशेष । °ज्जोय पुं [°द्योत] भगवान् महा-वीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम । °ट्ठ वि [°स्थ] आग में रहा हुआ । °ट्ठोम पुं [°ष्टोम] यज्ञ-विशेष । °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकनेवाली एक विद्या । °दत्त पुं भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव । भद्रबाहु स्वामी का एक शिष्य । °दाण पुं [°दान]सातवें वासुदेव के पिता का नाम । °देव पुं देवविशेष ।°भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर । भगवान् महावीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का पूर्वीय अठारहवें ब्राह्मणजन्म का नाम। °माणव पुं अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र। °माली स्त्री एक इन्द्राणी। °वेस पुं [°वेश] इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि। न. एक गोत्र। °वेस पुं [°वेश्मन्] चतुर्दशी तिथि। दिवस का बाईसवाँ मुहूर्त। °वेसायण पुं [°वैश्यायन] अग्निवेश ऋषि का पौत्र। अग्निवेश गोत्र में उत्पन्न। गोशालक का एक दिक्चर। दिन का बाईसवाँ मुहूर्त। °सक्कार पुं [°संस्कार] विधि-पूर्वक दाह देना। °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालकी का नाम। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण। °सिह पुं [°शिख] सातवें वासुदेव का पिता। अग्निकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र। °सिह पुं [°सिंह] एक जैन मुनि। °सिहाचारण पुं [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु। °सीह पुं [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम। °सेण पुं [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें तीर्थंकर। °होत्त न [°होत्र] अग्न्याधान, होम। पुं ब्राह्मण। °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला। °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला।

अग्गिअ पुं [अग्रिक] यमदग्नि नामक एक तापस। भस्मक रोग।

अग्गिअ पुं [दे] इन्द्रगोप, एक जाति का क्षुद्र कीट। वि. मन्द।

अग्गिआय पुं [दे] इन्द्रगोप।

अग्गिच्च वि [आग्नेय] अग्नि-सम्बन्धी। पुं लोकान्तिक देवों की एक जाति। न. गोतम गोत्र की शाखा।

अग्गिच्चाभ न [आग्नेयाभ] देव-विमान विशेष।

अग्गिज्झ वि [अग्राह्य] लेने के अयोग्य।

अग्गिम वि [अग्रिम] प्रथम। श्रेष्ठ, प्रधान।

अग्गियय पुं [आग्नेयक] इस नाम का एक राजपुत्र।

अग्गिल देखो अग्गिल्ल अग्निल।

अग्गिलिय देखो अग्गिम।

अग्गिल्ल पुं [अग्निल] एक महाग्रह।

अग्गिल्ल वि [अग्रिम] अग्रवर्ती।

अग्गीय देखो अगीय।

अग्गीवय न [दे] घर का एक भाग।

अग्गुच्छ वि [दे] प्रमित, निश्चित।

अग्गे अ [अग्रे] आगे, पहले। °यण वि [तन] आगे का, पहले का। °सर वि नायक।

अग्गेई स्त्री [आग्नेयी] अग्निकोण।

अग्गेणिअ न [अग्रायणीय] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग।

अग्गेणी देखो अग्गेई।

अग्गेणीय देखो अग्गेणिय।

अग्गेय वि [आग्नेय] अग्नि (कोण)सम्बन्धी। अग्नि-सम्बन्धी। न. शस्त्र-विशेष। वत्स गोत्र की शाखा। अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा।

अग्गोदय न [अग्रोदक] समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि।

अग्घ अक [राज्] शोभना, चमकना।

अग्घ सक [आ-घ्रा] सूँघना।

अग्घ शक [अर्ह्] योग्य होना।

अग्घ सक [अर्घ्] अच्छी कीमत से बेचना। आदर करना।

अग्घ पुं [अर्घ] एक देव-विमान। पूजा मछली की एक जाति। पूजा-सामग्री। पूजा में जलादि देना। मूल्य। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र।

अग्घ वि [अर्घ्य] पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य। कीमती।

अग्घव सक [पूर्] पूर्ति करना।

अग्घविय वि [अर्घित] पूजित, सत्कृत।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्घा सक [आ + घ्रा] सूंघना ।
अग्घाड सक [पूर्] पूरा करना ।
अग्घाड पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, चिचड़ा, लटजीरा ।
अग्घाण वि [दे] तृप्त ।
अग्घाय वि [आघ्रात] सूंघा हुआ ।
अग्घिय वि [अर्घित] बहुमूल्य, कीमती । पूजित ।
अग्घोदय न [अर्घोदक] पूजा का जल ।
अघ न पाप । वि. शोचनीय, शोक का हेतु ।
अघो देखो अहो ।
अचक्खु पुंन [अचक्षुस्] आँख के सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन । वि. अंधा । °दंसण न [दर्शन] आँख को छोड़ बाकी इन्द्रियाँ और मन से होने वाला सामान्य ज्ञान । °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अचक्षुदर्शन को रोकनेवाला कर्म । °फास पुं [°स्पर्श] अंधकार ।
अचक्खुस वि [अचाक्षुष] जो आँख से देखा न जा सके ।
अचक्खुस्स वि [अचक्षुष्य] जिसको देखने का मन न चाहता हो ।
अचर वि पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ ।
अचल वि निश्चल । पुं यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम । एक बलदेव का नाम । पर्वत । एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी । °पुर न ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर । °प्प न [°ात्मन्] हस्तप्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या । °भाय पुं [°भ्रातृ] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर ।
अचल पुं छठवाँ रुद्र पुरुष ।
अचल न [दे] घर । घर का पिछला भाग । वि. कहा हुआ । निर्दय । नीरस, सूखा ।
अचला स्त्री पृथिवी । एक इन्द्राणी ।
अचिंत वि [अचिन्त] निश्चिन्त ।
अचिंत वि [अचिन्त्य] अनिर्वचनीय, अद्‌भुत ।
अचिंतिय वि [अचिन्तित] आकस्मिक, असंभावित ।
अचित्त वि जीव-रहित, अचेतन ।
अचियंत / अचियत्त } वि [दे] अनिष्ट । न. अप्रीति ।
अचिरजुवइ देखो अइरजुवइ ।
अचिरा देखो अइरा ।
अचिराभा स्त्री बिजली ।
अचेल न वस्त्रों का अभाव । अल्प-मूल्यक वस्त्र । थोड़ा वस्त्र । वि. वस्त्र-रहित । जीर्ण वस्त्र वाला । अल्प वस्त्र वाला । मैला । °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना ।
अचेलग / अचेलय } वि [अचेलक] नग्न । फटा-टूटा वस्त्र वाला । मलिन वस्त्र वाला । अल्प वस्त्र वाला । निर्दोष वस्त्र वाला । अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करनेवाला ।
अच्च सक [अर्च्] पूजना ।
अच्च पुं [अर्च्य] लव (काल मान) का एक भेद । वि. पूजनीय ।
अच्चंग न [अत्यङ्ग] भोग के मुख्य साधन ।
अच्चंत वि [अत्यन्त] हद से ज्यादा । °थावर वि [°स्थावर] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ । °दूसमा स्त्री [°दुष्षमा] देखो दुस्समदुस्समा ।
अच्चंतिअ वि [आत्यन्तिक] अत्यन्त शाश्वत ।
अच्चग वि [अर्चक] पूजक ।
अच्चगल वि [अत्यर्गल] निरंकुश ।
अच्चणिया स्त्री [अर्चनिका] अर्चन ।
अच्चत्त वि [अत्यक्त] नहीं छोड़ा हुआ ।
अच्चत्थ वि [अत्यर्थ] बहुत । गंभीर अर्थ वाला । अत्यंत ।
अच्चब्भुय वि [अत्यद्भुत] बड़ा आश्चर्य-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जनक।

अच्चय पुं [अत्यय] विपरीत आचरण। विनाश, मरण।

अच्चय वि [अर्चक] पूजक।

अच्चर, अच्चरिअ, अच्चरीअ न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार।

अच्चहम वि [अत्यधम] अति नीच।

अच्चा स्त्री [अर्चा] शरीर। पूजा। सत्कार। लेश्या, चित्त-वृत्ति। ऐश्वर्य।

अच्चासण पुं [अत्यशन] द्वादशी तिथि।

अच्चासणया स्त्री [अत्यासनता] खूब बैठना, देर तक या बारंबार बैठना।

अच्चासणया स्त्री [अत्यशनता] खूब खाना।

अच्चासण्ण न [अत्यासन्न] अति समीप।

अच्चासाइय, अच्चासादिय वि [अत्याशातित] अपमानित, हैरान किया गया।

अच्चासाय सक [अत्या + शातय्] अपमान करना, हैरान करना।

अच्चाहिअ, अच्चाहिद वि [अत्याहित] महा-भीति। झूठा। ऐसा जखमी कार्य, जिसमें प्राणहानि की सम्भावना हो।

अच्चि स्त्री [अर्चिस्] कान्ति। अग्नि की ज्वाला। किरण। दीप की शिखा। न. लोकान्तिक देवों का एक विमान। °मालि पुं [°मालिन्] सूर्य। वि. किरणों से शोभित। न. लोकान्तिक देवों का एक विमान। °माली स्त्री चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्रमहिषी का नाम। 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम। शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] चन्द्र और सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम।

अच्चिअ वि [अर्चित] पूजित, सत्कृत। न. विमान-विशेष।

अच्चित्त देखो अचित्त।

अच्चीकर सक [अर्ची + कृ] प्रशंसा करना। खुशामद करना।

अच्चुअ पुं [अच्युत] विष्णु। बारहवाँ देवलोक। ग्यारहवाँ और बारहवाँ देवलोक का इन्द्र। अच्युत-देवलोकवासी देव। °नाह पुं [°नाथ] बारहवाँ देवलोक का इन्द्र। °वइ पुं [°पति] इन्द्र-विशेष। °वडिंसग न [°ावतंसक] विमान-विशेष का नाम। °सग्ग पुं [°स्वर्ग] बारहवाँ देवलोक पुं न एक देव-विमान।

अच्चुआ स्त्री [अच्युता] छठवें और सतरहवें तीर्थंकर की शासनदेवी।

अच्चुइंद पुं [अच्युतेन्द्र] ग्यारहवाँ और बारहवाँ देवलोक का स्वामी।

अच्चुक्कड वि [अत्युत्कट] अत्यन्त उग्र।

अच्चुग्ग वि [अत्युग्र] ऊपर देखो।

अच्चुच्च वि [अत्युच्च] खूब ऊँचा।

अच्चुट्ठिय वि [अत्युत्थित] अकार्य करने को तैय्यार।

अच्चुण्ह वि [अत्युष्ण] खूब गरम।

अच्चुत्तम वि [अत्युत्तम] अति श्रेष्ठ।

अच्चुदय न [अत्युदक] बड़ी वर्षा। प्रभूत पानी।

अच्चुदार वि [अत्युदार] अत्यन्त उदार।

अच्चुन्नय वि [अत्युन्नत] बहुत ऊँचा।

अच्चुब्भड वि [अत्युद्भट] अति-प्रबल।

अच्चुवयार पुं [अत्युपकार] महान् उपकार।

अच्चुवयार पुं [अत्युपचार] विशेष सेवा-शुश्रूषा।

अच्चुव्वाय वि [अत्युद्वात] अत्यन्त थका हुआ।

अच्चुसिण वि [अत्युष्ण] अधिक गरम।

अच्चे अक [अति + इ] अतिक्रान्त होना, गुजरना। सक. उल्लंघन करना।

अच्चे सक [अत्या + इ] त्याग करवाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्चेअर न [आश्चर्य] आश्चर्य ।
अच्छ अक [आस्] बैठना ।
अच्छ सक [आ + छिद्] काटना । खींचना ।
अच्छ वि स्वच्छ । पुं. स्फटिक रत्न । पुं. ब. आर्य देश-विशेष ।
अच्छ पुं [ऋक्ष] रीछ ।
अच्छ वि [आच्छ] अच्छे देश में उत्पन्न ।
अच्छ पुं मेरु पर्वत । न. तीन बार औटा हुआ स्वच्छ पानी ।
अच्छ न [दे] अत्यन्त । शीघ्र ।
°**अच्छ** वि [अक्षि] आँख ।
°**अच्छ** पुं [कच्छ] अधिक पानीवाला प्रदेश । लताओं का समूह । तृण ।
°**अच्छ** पुं [वृक्ष] वृक्ष ।
अच्छअ पुं [अक्षक] बहेड़ा का वृक्ष । न. स्वच्छ जल ।
अच्छअर न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार ।
अच्छंद वि [अच्छन्द] पराधीन ।
अच्छक्क देखो अत्थक्क ।
अच्छण न [आसन] बैठना । पालकी वगैरह सुखासन । °**घर** न [°गृह] विश्राम-स्थान ।
अच्छण न [दे] सेवा । देखना । अहिंसा, दया ।
अच्छणिउर न [अच्छनिकुर] अच्छनिकुरांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।
अच्छणिउरंग न [अच्छनिकुराङ्ग] नलिन का चौरसी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।
अच्छण्ण वि [अच्छन्न] प्रकट ।
अच्छभल्ल पुं [ऋक्षभल्ल] रीछ ।
अच्छभल्ल पुं [दे] यक्ष, देव-विशेष ।
अच्छरआ देखो अच्छरा ।
अच्छरय पुं [आस्तरक] शय्या पर बिछाने का वस्त्र-विशेष ।
अच्छरसा } **अच्छरा** } स्त्री [अप्सरस्] इन्द्र की पटरानी । 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन । देवी । रूपवती स्त्री ।
अच्छरा स्त्री [दे. अप्सरा] चुटकी । चुटकी की आवाज ।
अच्छराणिवाय पुं [दे] चुटकी । चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय ।
अच्छरिअ } **अच्छरिज्ज** } **अच्छरीअ** } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार ।
अच्छल न निर्दोषता, अनपराध ।
अच्छवि वि जैन-दर्शन में जिसको स्नातक कहते हैं वह, जीवनमुक्त योगी ।
अच्छविकर पुं [अक्षपिकर] एक प्रकार का मानसिक विनय ।
अच्छहल्ल पुं [ऋक्षभल्ल] रीछ ।
अच्छा स्त्री वरुण देश की राजधानी ।
°**अच्छा** स्त्री [कक्षा] गर्व ।
अच्छाइ वि [आच्छादिन्] ढकनेवाला ।
अच्छायण न [आच्छादन] ढकना । वस्त्र ।
अच्छायंत वि [अच्छातान्त] तीक्ष्ण ।
अच्छि त्रि [अक्षि] आँख । °**चमढण** न [°मलन] आँख का मलना । °**णिमीलिय** न [निमीलित] आँख को मूँदना, मींचना । आँख मिचने में जो समय लगे वह । °**पत्त** न [°पत्र] आँख का पक्ष्म । °**वेहग** पुं [°वेधक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु । °**रोडय** पुं [°रोडक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु । °**ल्ल** वि [°मत्] आँख वाला प्राणी । चतुरिन्द्रिय जन्तु । °**मल** पुं आँख का मैल ।
अच्छिंद सक[आ + छिद्] थोड़ा छेद करना । एक बार छेद करना । बलात्कार से छीन लेना । थाड़ा काटना ।
अच्छिंद पुं [अक्षीन्द्र] गोशालक के एक दिक्-चर (शिष्य) का नाम ।
अच्छिक्क वि [दे] अस्पृष्ट ।
अच्छिघरुल्ल वि [दे] अप्रीतिकर । पुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोशाक।

अच्छिज्ज वि [आच्छेद्य] जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय। पुं जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष।

अच्छिज्ज वि [अच्छेद्य] जो तोड़ा न जा सके।

अच्छित्ति स्त्री नित्यता। वि. नाश-रहित। °णय पुं [°नय] वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष।

अच्छिद्द वि [अच्छिद्र] छिद्र-रहित, निबिड। निर्दोष।

अच्छिण्ण वि [आच्छिन्न] बलात्कार से छीना हुआ। छेदा हुआ, तोड़ा हुआ।

अच्छिण्ण वि [अच्छिन्न] नहीं तोड़ा हुआ। अन्तर-रहित।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने के अयोग्य।

अच्छिवडण न [दे] आँख का मूंदना।

अच्छिविअच्छि स्त्री [दे] परस्पर-आकर्षण।

अच्छिहरिल्ल, **अच्छिहरुल्ल** देखो अच्छिघरुल्ल।

अच्छी देखो अच्छि

अच्छुक्क न [दे] आँख का कोटर।

अच्छुत्ता स्त्री [अच्छुप्ता] एक विद्याधिष्ठात्री देवी। भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी की शासन-देवी।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [दे] असंभावित लाभ।

अच्छुल्लूढ वि [दे] निष्कासित, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ।

अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज।

अच्छेर न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार। पुंन. अपूर्व घटना। °कर वि विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला।

अच्छोड सक [आ+छोटय्] पटकना। सिंचना।

अच्छोड पुं [आच्छोट] सिंचन। आस्फालन करना, पटकना।

अच्छोडण न [आच्छोटन] सिंचन। आस्फालन, वेणी। मृगया।

अच्छोडाविय वि [दे. आच्छोटित] बंधित।

आच्छोडिअ वि [दे] आकृष्ट।

अछिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य।

अज देखो अय = अज।

अजगर देखो अयगर।

अजड पुं [दे] जार।

अजड वि पक्व, विकसित। निपुण।

अजम वि [दे] सरल। जमाईन।

अजय वि [अयत] पाप-कर्म से अविरत, नियम-रहित। अनुद्योगी। उपयोग-शून्य, बेख्याल।

अजय पुं षट्पद छंद का एक भेद।

अजर वि वृद्धावस्था-रहित। पुं देव। मुक्त आत्मा।

अजराउर वि [दे] गरम।

अजरामर वि बुढ़ापा और मृत्यु से रहित। न. मुक्ति। स्त्री. °रा विद्या-विशेष।

अजस पुं [अयशस्] अपयश। °क्कित्तिणाम न [°कीर्तिनामन्] अपकीर्त्ति का कारण-भूत एक कर्म।

अजस्स क्रिवि [अजस्र] निरन्तर, हमेशा।

अजा देखो अया।

अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न। °कप्प पुं [°कल्प] शास्त्रों को पूरा-पूरा नहीं जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ। °कप्पिय पुं [°कल्पिक] अगीतार्थ जैन साधु।

अजिअ वि [अजित] अपराजित। पुं दूसरे तीर्थंकर का नाम। नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव। एक भावी बलदेव। °बला स्त्री भगवान् अजितनाथ की शासनदेवी। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध राजा। चौथा कुलकर। एक विख्यात जैन मुनि। पुं भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम श्रावक। °नाह पुं [नाथ] नववाँ रुद्र पुरुष।

अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजिअ वि [अजय्य] जो जीता न जा सके ।

अजिया स्त्री [अजिता] भगवान् अजितनाथ की शासन देवी । चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या ।

अजिण न [अजिन] हरिण आदि पशुओं का चमड़ा । वि. जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया है वह । जिन भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु ।

अजियंधर पुं [अजितधर] ग्यारह रुद्रों में आठवाँ रुद्र पुरुष ।

अजिर न आँगन ।

अजीर देखो अइन्न = अजीर्ण ।

अजीव पुं अचेतन, निर्जीव, जड़ पदार्थ । °**काय** पुं धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ ।

अजुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतौना ।

अजुअ न [अयुत] दश हजार ।

अजुअलवण्ण पुं [अयुगलपर्ण] सतौना ।

अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इमली का पेड़ ।

अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य । °**कारि** वि [°कारिन्] अयोग्य कार्य करनेवाला ।

अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] अन्याय्य ।

अजुय देखो अउअ ।

अजेअ वि [अजय] जो जीता न जा सके ।

अजोग पुं [अयोग] मन, वचन और काया के सब व्यापारों का जिसमें अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण ।

अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य ।

अजोगि पुं [अयोगिन्] सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी । मुक्त आत्मा ।

अज्ज सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना, कमाना ।

अज्ज वि [अर्य] वैश्य । स्वामी ।

अज्ज वि [आर्य] निर्दोष । आर्य-गोत्र में उत्पन्न । शिष्ट-जनोचित । °**खउड** पुं [°खपुट] एक जैन आचार्य । उत्तम । मुनि । सत्यकार्य करनेवाला । पूज्य । पुं मातामह । पितामह । एक ऋषि का नाम । न. गोत्र-विशेष । जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओं के पूर्व में यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे अज्जवइर, अज्जचंदणा, अज्जपोमिला । °**उत्त** पुं [°पुत्र] पति । मालिक का पुत्र । °**घोस** पुं [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर । °**मंगु** पुं [°मङ्गु] एक प्राचीन जैनाचार्य । °**मिस्स** वि [°मिश्र] पूज्य, मान्य । °**समुद्द** पुं [°समुद्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ।

अज्ज अ [अद्य] आज । °**त्त** वि [°तन] आजकल का । °**त्ता** स्त्री [°ता] आज कल । °**प्पभिइ** अ [°प्रभृति] आज से ले कर ।

अज्ज पुं [दे] जिनेन्द्र देव । बुद्ध देव ।

अज्ज न [आज्य] घी ।

अज्ज° देखो रि = ऋ ।

अज्जं अ [अद्य] आज ।

अज्जंत वि [आयत्] आगामी । °**काल** पुं भविष्य काल ।

अज्जंहिज्जो अ [अद्यह्यः] आजकल ।

अज्जकालिअ वि [अद्यकालिक] आजकल का ।

अज्जग देखो अज्जय = अर्जक ।

अज्जण, **अज्जणण** } [अर्जन] उपार्जन । पैदा करना ।

अज्जम पुं [अर्यमन्] सूर्य । देव-विशेष । उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव । न. उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र ।

अज्जय पुं [आर्यक] मातामह । पितामह ।

अज्जय वि [अर्जक] उपार्जन करनेवाला । पुं वृक्षविशेष ।

अज्जय पुं [दे] सुरस नामक तृण । गुरेटक नामक तृण । तृण ।

अज्जल पुं [आर्यल] म्लेच्छों की एक जाति ।

अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता ।

अज्जव (अप) देखो अज्ज = आर्य । °**खंड** पुं [खण्ड] आर्य देश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जवया स्त्री [आर्जव] ऋजुता ।

अज्जविय न [आर्जव] सरलता ।

अज्जा स्त्री [आर्या] साध्वी । पार्वती । आर्या छन्द । भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या । पूज्या स्त्री । एक कला ।

अज्जा स्त्री [आज्ञा] आदेश ।

अज्जाय वि [अजात] अनुत्पन्न ।

अज्जाव सक [आ + ज्ञापय्] आज्ञा करना ।

अज्जिआ स्त्री [आर्यिका] पूज्या स्त्री । संन्यासिनी । माता की माता । पिता की माता ।

अज्जिड्डोअ वि [दे] दिया हुआ ।

अज्जिणण देखो अज्जणण ।

अज्जीव देखो अजीव ।

अज्जु (अप) अ [अद्य] आज ।

अज्जुअ (शौ) देखो अज्ज = आर्य ।

अज्जुआ (शौ) देखो अज्जा = आर्या ।

अज्जुण पुं [अर्जुन] तीसरा पाण्डव । वृक्ष-विशेष । गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम । न. श्वेत सुवर्ण । तृण-विशेष । अर्जुन वृक्ष का पुष्प ।

अज्जुणग } [अर्जुनक] एक माली का नाम ।
अज्जुणय }

अज्जू स्त्री [आर्या] सास ।

अज्जोग देखो अजोग = अयोग ।

अज्जोरुह न [दे] वनस्पति-विशेष ।

अज्झक्ख वि [अध्यक्ष] अधिष्ठाता ।

अज्झ पुं [दे] यह (पुरुष, मनुष्य) ।

अज्झत्त देखो अज्झप्प ।

अज्झत्थ वि [दे] आगत ।

अज्झत्थ } न [अध्यात्म] आत्मा में, आत्म-विषयक । मन में, मन-संबंधी । मन, चित्त । शुभ ध्यान । पुं आत्मा । °जोग पुं [°योग] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता । °दोस पुं [°दोष] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ । °वत्तिय वि [°प्रत्ययिक] मन से ही उत्पन्न होनेवाला शोक, चिन्ता आदि । °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि । °संवुड वि [°संवृत] मनो-निग्रही । °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्मशास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र । °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि । °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मनः-शुद्धि ।
अज्झप्प }

अज्झत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्मा या मन से संबंध रखनेवाला ।

अज्झथीअ देखो अज्झत्थिय ।

अज्झप्पिअ वि [आध्यात्मिक] अध्यात्म का जानकार । अध्यात्म-सम्बन्धी ।

अज्झय वि [दे] पड़ोसी ।

अज्झयण पुंन [अध्ययन] शब्द, नाम । पढ़ना, अभ्यास । ग्रन्थ का एक अंश ।

अज्झयाव सक [अधि + आप] पढ़ाना ।

अज्झवस सक [अध्यव + सो] विचार करना। निश्चय करना । चिन्तन करना ।

अज्झवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन, विचार, आत्म-परिणाम ।
अज्झवसाण }

अज्झवसाय पुं [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक संकल्प ।

अज्झवसिय न [दे] मुंड़ा हुआ मुँह ।

अज्झसिय वि [दे] दृष्ट ।

अज्झस्स सक [आ + क्रुश] आक्रोश करना, अभिशाप देना ।

अज्झस्स } वि [आक्रुष्ट] जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ।
अज्झस्सिय }

अज्झहिय वि [अत्यधिक] अत्यंत ।

अज्झा स्त्री [दे] कुलटा । प्रशस्त स्त्री । नवोढ़ा । युवती स्त्री । यह (स्त्री) ।

अज्झा } सक [अधि + इ] अध्ययन करना ।
अज्झाअ }

अज्झाअ सक [अध्यापय्] पढ़ाना ।

अज्झाइअव्व वि [अध्येतव्य] पढ़ने योग्य ।

अज्झाय पुं [अध्याय] पठन । ग्रन्थ का एक अंश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्झारुह पुं [अध्यारुह] वृक्ष-विशेष। वृक्षों के ऊपर बढ़नेवाली वल्ली या शाखा वगैरह।
अज्झारोव पुं [अध्यारोप] आरोप, उपचार।
अज्झारोवण न [अध्यारोपण] आरोपण, ऊपर चढ़ाना। प्रश्न करना।
अज्झारोह पुं [अध्यारोह] देखो अज्झारुह।
अज्झाव देखो अज्झाअ = अध्यापय्।
अज्झावग देखो अज्झावय।
अज्झावय वि [अध्यापक] शिक्षक, गुरु।
अज्झावस अक [अध्या + वस्] बास करना।
अज्झास पुं [अध्यास] ऊपर बैठना। निवास-स्थान।
अज्झासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना।
अज्झासिअ वि [अध्यासित] आश्रित, अधिष्ठित। स्थापित।
अज्झाहय वि [अध्याहत] उत्तेजित।
अज्झीण वि [अक्षीण] अखूट। न. अध्ययन।
अज्झुववज्ज देखो अज्झोववज्ज।
अज्झुववण्ण देखो अज्झोववण्ण।
अज्झुववाय देखो अज्झोववाय।
अज्झुसिअ वि [अध्युषित] आश्रित।
अज्झुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित।
अज्झेउ वि [अध्येतृ] पढ़नेवाला।
अज्झेल्ली स्त्री [दे] दोहने पर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया।
अज्झेसणा स्त्री [अध्येषणा] विशेष याचना।
अज्झोयरग, अज्झोयरय पुं [अध्यवपूरक] साधु के लिए अधिक रसोई करना। साधु के लिए बढ़ाकर की हुई रसोई।
अज्झोल्लिआ स्त्री [दे] वक्षः-स्थल के आभूषण में की जाती मोतियों की रचना।
अज्झोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत।
अज्झोववज्ज अक [अध्युप + पद्] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना।
अज्झोववण्ण वि [अध्युपपन्न] अत्यंत आसक्त।
अज्झोववाय पुं [अध्युपपाद] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता।
अट, अट्ट सक [अट्] भ्रमण करना।
अट्ट सक [कथ्] क्वाथ करना।
अट्ट अक [शुष्] सूखना।
अट्ट वि [आर्त] पीड़ित। ध्यान-विशेष—इष्ट-संयोग, अनिष्ट, वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना। °ण्ण वि [°ज्ञ] पीड़ित की पीड़ा को जाननेवाला।
अट्ट वि [ऋत] गत, प्राप्त।
अट्ट पुंन दूकान। महल के ऊपर का घर, अटारी। आकाश।
अट्ट वि [दे] दुर्बल। बड़ा, महान्। बेशरम। आलसी। पुं शुक। आवाज। न. सुख। असत्योक्ति।
अट्टट्ट वि [दे] गत।
अट्टट्टहास पुं देखो अट्टहास।
अट्टण न [अट्टन] व्यायाम, कसरत। पुं. इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल। °साला स्त्री [°शाला] व्यायाम-शाला।
अट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवृत्ति।
अट्टमट्ट वि [दे] व्यर्थ। पुं आलवाल, कियारी। अशुभ संकल्प-विकल्प, पाप-संबद्ध अव्यवस्थित विचार।
अट्टय पुं [अट्टक] हाट। पात्र के छिद्र को बन्द करने में उपयुक्त द्रव्य-विशेष।
अट्टयक्कली स्त्री [दे] कमर पर हाथ रखकर खड़ा रहना।
अट्टहास पुं खिलखिला कर हँसना।
अट्टालग, अट्टालय पुंन [अट्टालक] महल का उपरिभाग, अटारी।
अट्टि स्त्री [आर्ति] पीड़ा।
अट्टिय वि [अर्दित] व्याकुल, व्यग्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठ पुं [अर्थ] संयम। पुंन वस्तु, पदार्थ। विषय। शब्द का अभिधेय, वाच्य। तात्पर्य। परमार्थ। हेतु। इच्छा। उद्देश्य। धन। फल, लाभ। मोक्ष। °कर पुं मंत्री। निमित्त शास्त्र का विद्वान्। °जाय वि [°जातार्थ] जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह। °जाय वि [°याच] धनार्थी। °सइय वि [°शतिक] जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण, देखो अत्थ = अर्थ।

अट्ठ [अष्टन्] आठ। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] अठतालीसवाँ। °चत्तालीस त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस। °ट्ठमिया स्त्री [°ाष्टमिका] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष। °तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस। °तीस त्रि [°ात्रिंशत्] अठतीस। °तीसइम वि [°ात्रिंश] अठतीसवाँ। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर। °त्तीस त्रि [°ात्रिंशत्] अठतीस। °दस त्रि [°ादशन्] अठारह। °दसुत्तरसय वि [°ादशोत्तरशत] एक सौ अठारहवाँ। °दह त्रि [°ादशन्] अठारह। °पएसिय वि [°प्रदेशिक] आठ अवयव वाला। °पया स्त्री [°पदा] छन्द-विशेष। °पाहरिअ वि [प्राहरिक] आठ प्रहर संबंधी। °भाइया स्त्री [°भागिका] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलों का एक परिमाण। °म न तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास। °मंगल पुंन स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु। °मभत्त पुंन [°मभक्त] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] तेला करनेवाला। °मी स्त्री अष्टमी। °मुत्ति पुं [°मूर्ति] महादेव। °याल त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस। °वन्न त्रि [°पञ्चाशत्] अट्ठावन। °वरिस, °वारिस वि [°वार्षिक] आठ वर्ष की उम्र का। °विह वि [°विध] आठ प्रकार का। °वीस स्त्रीन [°ाविंशति] अट्ठाईस। °सट्ठि स्त्री [षष्टि] अठसठ। °समइय वि [°सामयिक] जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह। °सय न [°शत] एक सौ आठ। °सहस्स न [सहस्र] एक हजार और आठ। °सामइय देखो °समइय। °सिर वि [°शिरस्, °सिर] अष्ट-कोण। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण। °हत्तर वि [°सप्ततितम] अठत्तरवाँ। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर की संख्या। °हा अ [°धा] आठ प्रकार का।

°अट्ठ न [काष्ठ] काष्ठ, लकड़ी।

अट्ठंग वि [अष्टाङ्ग] जिसके आठ अंग हों वह। °णिमित्त न [°निमित्त] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर, आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो। °महाणिमित्त न [°महानिमित्त] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ।

अट्ठंस वि [अष्टास्र] अष्ट-कोण।

अट्ठदिट्ठि स्त्री [अष्टदृष्टि] योग की आठ दृष्टियाँ, वे ये हैं :—मित्रा, तारा, बला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रभा और परा।

अट्ठय न [अष्टक] आठ का समूह।

अट्ठा स्त्री [अष्टा] मुष्टि। मुट्ठीभर चीज।

अट्ठा स्त्री [आस्था] श्रद्धा।

अट्ठा स्त्री [अर्थ] वास्ते। °दंड पुं कार्य के लिए की गई हिंसा।

अट्ठाइस वि [अष्टाविंश] अठाईसवाँ।

अट्ठाइस } स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस।
अट्ठाईस }

अट्ठाण न [अस्थान] अयोग्य स्थान। कुत्सित स्थान। अयोग्य।

अट्ठाण न [आस्थान] सभा, सभा-गृह।

अट्ठाणउइ स्त्री [अष्टानवति] अठानबे।

अट्ठाणउय वि [अष्टानवत] अठानबेवाँ।

अट्ठाणवइ देखो अट्ठाणउइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठाणिय वि [अस्थानिक] अपात्र, अनाश्रय।

अट्ठायमाण वकृ [अतिष्ठत्] नहीं बैठता हुआ।

अट्ठार } त्रि. ब. [अष्टादशन्] अठारह। अट्ठारस } °विह वि [°विध] अठारह प्रकार का।

अट्ठारसग न [अष्टादशक] अठारह का समूह। वि. जिसका मूल्य अठारह मुद्रा हो वह।

अट्ठारसम वि [अष्टादश] अठारहवाँ। न. लगातार आठ दिनों का उपवास।

अट्ठारह } देखो अट्ठार।
अट्ठाराह }

अट्ठावण्ण स्त्रीन [अष्टापञ्चाशत्] अठावन।

अट्ठावय पुं [अष्टापद] स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास। न. एक जाति का जुआ। द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह। सुवर्ण। °सेल पुं [°शैल] मेरु-पर्वत। स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे।

अट्ठावय न [अर्थपद] गृहस्थ। अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र।

अट्ठावीस स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस।

अट्ठावीसइ स्त्री [अष्टाविंशति] अठाईस। °विह वि [°विध] अठाईस प्रकार का।

अट्ठावीसइम वि [अष्टाविंश] अठाईसवाँ। न. तेरह दिनों के लगातार उपवास।

अट्ठासट्ठि स्त्री [अष्टाषष्टि] अठसठ।

अट्ठासि } स्त्री [अष्टाशीति] अठासी।
अट्ठासीइ }

अट्ठासीय वि [अष्टाशीत] अठासीवाँ।

अट्ठाह न [अष्टाह] आठ दिन।

अट्ठाहिया स्त्री [अष्टाहिका] आठ दिनों का एक उत्सव। उत्सव।

अट्ठि वि [अर्थिन्] प्रार्थी, गरजवाला, अभिलाषी।

अट्ठि पुं [अस्थि] हड्डी। फल की गुठ्ठी।

अट्ठि स्त्रीन [अस्थि] हाड़। जिसमें बीज उत्पन्न न हुए हों ऐसा अपरिपक्व फल। पुं. कापालिक। °मिजा स्त्री [°मिञ्जा] हड्डी के भीतर का रस। °सरक्ख पुं [°सरजस्क] कापालिक। °सेण न [°षेण] वत्सगोत्र की शाखारूप एक गोत्र। पुं. इस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी सन्तान।

अट्ठिय वि [अर्थिक] गरजू, याचक। अर्थ का कारण, अर्थ-सम्बन्धी। मोक्ष का हेतु।

अट्ठिय वि [आर्थिक] अर्थ का कारण, अर्थ-सम्बन्धी। मोक्ष का कारण।

अट्ठिय वि [अर्थित] अभिलषित, प्रार्थित।

अट्ठिय वि [अस्थित] अव्यवस्थित, अनियमित। चंचल।

अट्ठिय वि [आस्थिक] हड्डी-सम्बन्धी।

अट्ठिय वि [आस्थित] स्थित रहा हुआ।

अट्ठिय पुं [अस्थिक] वृक्ष-विशेष। न. अस्थिक वृक्ष का फल।

अट्ठिल्लय पुं [अस्थि] फल की गुठ्ठी।

अट्ठुत्तर वि [अष्टोत्तर] आठ से अधिक। सय न [°शत] एक सौ और आठ। °सय वि [°शततम] एक सौ आठवाँ।

अठ } देखो अट्ठ = अष्टन्।
अड }

अड सक [अट्] भ्रमण करना।

अड पुं [अवट] कूप, इनारा। कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिए जो गर्त किया जाता है वह।

°अड देखो तड = तट।

अडइ } स्त्री [अटवि, °वी] भयानक जंगल,
अडई } वन।

अडडज्झिय न [दे] विपरीत मैथुन।

अडखम्म सक [दे] संभालना, रक्षण करना।

अडड न [अटट] 'अटटांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अडडंग न [अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।
अडणी स्त्री [दे] रास्ता ।
अडपल्लण न [दे] वाहन-विशेष ।
अडयणा, अडया स्त्री [दे] कुलटा ।
अडयाल न [दे] प्रशंसा ।
अडयाल, अडयालीस स्त्री [अष्टचत्वारिंशत्] ४८ की संख्या । °सय न [°शत] १४८ ।
अडवडण न [दे] स्खलना, रुक-रुक चलना ।
अडवि, अडवी स्त्री [अटवि, °वी] भयंकर जंगल, गहरा वन ।
अडसट्ठि स्त्री [अष्टषष्टि] अठसठ । °म वि [°तम] अठसठवाँ ।
अडाड पुं [दे] जबरदस्ती ।
अडिल्ल पुं [अटिल] एक जाति का पक्षी ।
अडिल्ला स्त्री [अडिल्ला] छन्द-विशेष ।
अडोलिया स्त्री [अटोलिका] एक राजपुत्री, जो युवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी । चूड़ी ।
अडोविय वि [अटोपित] भरा हुआ ।
अड्ड वि [दे] जो आड़े आता हो, बीच में बाधक होता हो वह ।
अड्डक्ख सक [क्षिप्] फेंकना, गिराना ।
अड्डण न [अड्डन] चर्म । ढाल, फलक ।
अड्डिअ वि [दे] आरोपित ।
अड्डिया स्त्री [अड्डिका] मल्लों की क्रिया-विशेष ।
अड्ढ देखो अद्ध = अर्ध ।
अड्ढ वि [आढ्य] सम्पन्न । सहित । परिपूर्ण ।
अड्ढअक्कली स्त्री [दे] देखो अट्टयक्कली ।
अड्ढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ।
अड्ढाइज्ज, अड्ढाइय वि [अर्धतृतीय] ढाई ।
°अड्ढिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ ।
अड्ढुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन ।
अड्ढेज्ज न [आढ्यत्व] श्रीमंताई ।
अड्ढेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमंत से किया हुआ सत्कार ।
अड्ढोरुग पुं [अर्धोरुक] जैन साध्वियों के पहनने का एक वस्त्र ।
अढ (अप) देखो अट्ठ = अष्टन् ।
अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस ।
अढारसग देखो अट्ठारसग ।
अढारसम देखो अट्ठारसम ।
अण अ [°अ, अन्°] देखो अ° ।
अण सक [अण्] आवाज करना । जाना । जानना । समझाना ।
अण पुं शब्द, आवाज । गमन । कषाय । आक्रोश, अभिशाप । न. पाप । कर्म । वि. कुत्सित ।
अण पुं [अन] देखो अणंताणुबंधि ।
अण पुं [अनस्] गाड़ी ।
अण देखो अण्ण = अन्य ।
अण न [ऋण] करजा । °धारग वि [°धारक] करजदार । °बल वि लेनदार । °भंजग वि [°भञ्जक] देउलिया ।
°अण देखो गण ।
°अण देखो जण ।
°अण देखो तण ।
°अणअरद देखो अणवरय ।
अणइवर वि [अनतिवर] सर्वोत्तम ।
अणइवुट्ठि स्त्री [अनतिवृष्टि] वर्षा का अभाव ।
अणईइ वि [अनीति] ईति-रहित, सलभादि-कृत उपद्रव से रहित ।
अणंग पुं [अनङ्ग] काम । कामदेव । एक राजकुमार, जो आनन्दपुर के राजा जीतारि का पुत्र था । न. विषय-सेवन के मुख्य अंगों के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अंग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बनावटी लिंग आदि। बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन शास्त्र। वि. शरीर-रहित। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] रति। °पडिसेविणी स्त्री [प्रतिषेविणी] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री। °पविट्ठ न [°प्रविष्ट] बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन ग्रन्थ। °बाण पुं काम के बाण। °लवण पुं [°लवन] रामचन्द्रजी का एक पुत्र। °सर पुं [°शर] काम के बाण। °सेणा स्त्री [°सेना] द्वारका की एक विख्यात गणिका।

अणंत पुं [अनन्त] चालू अवसर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर-देव। विष्णु, कृष्ण। शेष नाग। जिसमें अनन्त जीव हों ऐसी वनस्पति, कन्द-मूल वगैरह। न. केवल-ज्ञान। आकाश। वि. शाश्वत। निःसीम, अपरिमित। बहुत, विशेष। °काइय वि [°कायिक] अनन्त जीववाली वनस्पति, कन्द-मूल आदि। °काय पुं कन्द-मूल आदि अनन्त जीववाली वनस्पति। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] अनन्त बार। °जीव पुं देखो °काइय। °जीविय वि [°जीविक] देखो °काइय। °णाण न [°ज्ञान] केवल-ज्ञान। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ। °दंसि वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ। °पासि वि [°दर्शिन्] ऐरवत क्षेत्र के बीसवें जिन-देव। °मिस्सिया स्त्री [°मिश्रिका] सत्यमिश्र भाषा का एक भेद; जैसे अनन्तकाय से भिन्न प्रत्येक वनस्पति से मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना। °मीसय न [°मिश्रक] देखो °मिस्सिया। °रह पुं [°रथ] विख्यात राजा दशरथ के बड़े भाई का नाम। °विजय पुं भरतक्षेत्र के २४वें और ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावी तीर्थंकर का नाम। °वीरिय वि [°वीर्य] अनन्त बलवाला। पुं एक केवल-ज्ञानी मुनि का नाम। एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे। भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर का नाम। °संसारिय वि [°संसारिक] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पानेवाला। °सेण पुं [°सेन] चौथा कुलकर। एक अन्तकृद् मुनि।

अणंतइ पुं [अनन्तजित्] चालू काल के चौदहवें जिन-देव।

अणंतग, **अणंतय** देखो अणंत। न. वस्त्र-विशेष। पुं ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव।

अणंतर वि [अनन्तर] व्यवधान-रहित। पुं, वर्तमान समय।

अणंतरहिय वि [अनन्तर्हित] अव्यवहित। सजीव, सचित्त, चेतन।

अणंताणुबंधि पुं [अनन्तानुबन्धिन्] अनन्त काल तक आत्मा को संसार में भ्रमण करानेवाले कषायों की चार चौकड़ियों में प्रथम चौकड़ी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ।

अणंस वि [अनंश] अखण्ड।

अणक्क पुं [दे] एक म्लेच्छ देश। एक म्लेच्छ जाति।

अणक्ख पुं [दे] क्रोध। लज्जा।

अणक्खर न [अनक्षर] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्ण के बिना संपर्क के, छींकना, चुटकी बजाना, सिर हिलाना आदि संकेतों से दूसरे का अभिप्राय जानना।

अणगार वि [अनगार] जिसने घर-बार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि। घर-रहित, भिक्षुक। पुं. भरतक्षेत्र के भावी पांचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम।

°सुय न [°श्रुत] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अध्ययन।

अणगार वि [ऋणकार] करजा करनेवाला। दुष्ट शिष्य, अपात्र।

अणगार वि [अनाकार] आकाररहित।

अणगारिय वि [आनगारिक] साधु-सम्बन्धी, मुनि का।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणगाल पुं [अकाल] दुर्भिक्ष ।

अणगिण वि [अनग्न] जो नंगा न हो, वस्त्रों से आच्छादित । पुं, कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है ।

अणग्घ देखो **अनघ** ।

अणग्घ वि [ऋणघ्न] ऋण-नाशक, कर्म-नाशक ।

अणग्घ } वि [अनर्घ्य] अमूल्य । महान्,
अणग्घेय } गुरु । उत्तम ।

अणघ वि [अनघ] शुद्ध ।

अणच्छ देखो **करिस** = कृष् ।

अणच्छिआर वि [दे] अच्छिन्न ।

अणज्ज वि [अन्याय्य] अयोग्य, जो न्याययुक्त नहीं ।

अणज्ज वि [अनार्य] आर्य-भिन्न । खराब । पापी ।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो । **°खंड** पुं [°खण्ड] अनार्य देश ।

अणज्झवसाय पुं [अनध्यवसाय] अव्यक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान ।

अणज्झाय पुं [अनध्याय] अध्ययन का अभाव । जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल ।

अणट्ट वि [अनार्त] आर्त-ध्यान से रहित ।

अणट्ठ पुं [अनर्थ] नुकसान । प्रयोजन का अभाव । वि. निष्कारण, वृथा । **°दंड** पुं [°दण्ड] निष्कारण हिंसा ।

अणड पुं [दे] जार, उपपति ।

अणड्ढ वि [अनर्ध] अखण्ड ।

अणण्ण वि [अनन्य] अभिन्न । मोक्ष-मार्ग । अद्वितीय । **°तुल्ल** वि [°तुल्य] अनुपम । **°दंसि** वि [°दर्शिन्] पदार्थ को सत्य-सत्य देखने वाला । **°परम** वि संयम, इन्द्रिय-निग्रह । **°मण, °मणस** वि [°मनस्क] एकाग्र चित्तवाला, तल्लीन । **°समाण** वि [°समान] अद्वितीय ।

अणत्त वि [अनात्त] अगृहीत ।

अणत्त [अनार्त] अपीडित ।

अणत्त वि [ऋणार्त] ऋण से पीड़ित ।

अणत्त वि [अनात्र] दुःखकर, सुख-नाशक ।

अणत्त न [दे] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य ।

अणत्थ देखो **अणट्ठ** ।

अणथंत वकृ [अतिष्ठत्] नहीं रहता हुआ । अस्त होता हुआ ।

अणपन्निय देखो **अणवण्णिय** ।

अणप्प वि [अनर्प्य] अर्पण करने के अयोग्य या अशक्य ।

अणप्प वि [अनल्प] अधिक ।

अणप्प पुं [अनात्मन्] आत्मा से परे । **°ज्ज** वि [°ज्ञ] मूर्ख । पागल, भूताविष्ट, पराधीन । **°वसग** वि [°वश] पराधीन ।

अणप्प पुं [दे] तलवार ।

अणप्पिय वि [अनर्पित] नहीं दिया हुआ । सामान्य । **°णय** पुं [°नय] सामान्य-ग्राही पक्ष ।

अणब्भंतर वि [अनभ्यन्तर] भीतरी तत्त्व को नहीं जाननेवाला ।

अणभिग्गह न [अनभिग्रह] 'सर्वे देवा वन्द्याः' इत्यादि रूप मिथ्यात्व का एक भेद ।

अणभिग्गहिय वि [अनभिगृहीत] कदाग्रह-शून्य । अस्वीकृत ।

अणभिण्ण वि [अनभिज्ञ] अजान, निर्बोध ।

अणभिलप्प वि [अनभिलाप्य] अनिर्वचनीय ।

अणमिस वि [अनिमिष] विकसित, खिला हुआ । निमेष-रहित ।

अणयार देखो **अणगार** ।

अणरण्ण पुं [अनरण्य] साकेतपुर का एक राजा, जो पीछे से ऋषि हुआ था ।

अणरह वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक ।

अणरहू स्त्री [दे] नवोढा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणरामय पुं [दे] अरति, बेचैनी ।

अणराय वि [अराजक] राज-शून्य, जिसमें राजा न हो वह ।

अणराह पुं [दे] सिर में पहनी जाती रंग-बिरंगी पट्टी ।

अणरिक्क वि [दे] अवकाश-रहित, फुरसत-रहित । दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य ।

अणरिह, **अणरुह** वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक ।

अणलं अ [अनलम्] असमर्थ ।

अणल पुं [अनल] अग्नि । वि. असमर्थ । अयोग्य ।

अणव वि [ऋणवत्] करजदार । पुं. दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त ।

अणवकय वि [अनपकृत] जिसका अपकार न किया गया हो वह ।

अणवगल्ल वि [अनवग्लान] ग्लानि-रहित, निरोग ।

अणवच्च वि [अनपत्य] सन्तान-रहित ।

अणवज्ज न [अनवद्य] पाप का अभाव, कर्म का अभाव । वि. निर्दोष निष्पाप ।

अणवज्ज वि [अणवर्ज्य] ऊपर देखो ।

अणवट्ठप्प वि [अनवस्थाप्य] जिसको फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करने वाला । न. गुरुप्रायश्चित्त का एक भेद ।

अणवट्ठिय वि [अनवस्थित] अव्यवस्थित, अनियमित । अस्थिर । पल्य-विशेष ।

अणवण्णिय पुं [अणपन्निक, अणपर्णिक] वानव्यंतर देवों की एक जाति ।

अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनियमित, असमंजस ।

अणवत्था स्त्री [अनवस्था] अवस्था का अभाव । एक तर्क-दोष । अव्यवस्था ।

अणवदग्ग वि [दे] अनन्त । अविनाशी ।

अणवद्द वि [अनवद्य] निर्दोष ।

अणवयग्ग देखो **अणवदग्ग** ।

अणवयमाण वकृ [अनपवदत्] अपवाद नहीं करता हुआ । सत्यवादी ।

अणवरय वि [अनवरत] निरन्तर, अविच्छिन्न । न. हमेशा ।

अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असाधारण ।

अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक ।

अणवाह वि [अबाध] बाधा-रहित ।

अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित, जिसकी परवाह न हो ।

अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] नहीं देखा हुआ । नहीं सोचा हुआ । °**कारि** वि [°**कारिन्**] साहसिक । °**कारिया** स्त्री [°**कारिता**] साहस कर्म ।

अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उपवास ।

अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी ।

अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र ।

अणह वि [दे] अक्षत, व्रणशून्य ।

अहण न [अनभस्] पृथिवी ।

अणहप्पणय वि [दे] विद्यमान ।

अणहवणय वि [दे] तिरस्कृत ।

अणहा स्त्री [अधुना] इस समय ।

अणहारय पुं [दे] खल्ल, खला, जिसका मध्य-नीचा हो वह जमीन ।

अणहिअअ वि [अहृदय] निष्ठुर ।

अणहिगय वि [अनधिगत] नहीं जाना हुआ । पुं. वह साधु, जिसको शास्त्रों का ज्ञान न हो ।

अणहिण्ण देखो **अअणभिण्ण** ।

अणहियास वि [अनध्यास] असहिष्णु ।

अणहिल, **अणहिल्ल** न [अणहिल्ल] गुजरात देश की प्राचीन राजधानी । °**वाडय** न [**पाटक**] देखो **अणहिल** ।

अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त ।

अणहुल्लिय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो वह ।

अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित । °णिहण, वि [°निधन] शाश्वत । °मंत, °वंत वि [मत्] अनादि काल से प्रवृत्त ।

अणाइज्ज वि [अनादेय] अनुपादेय । नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन युक्त होने पर भी ग्राह्य नहीं समझा जाता है ।

अणाइय वि [अनादिक] आदि रहित ।

अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला ।

अणाइय वि [अणातीत] पापिष्ठ ।

अणाइय पुं [ऋणातीत] संसार ।

अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया हो वह ।

अणाइल वि [अनाविल] अकलुषित, निर्मल ।

अणाईअ देखो अणाइय ।

अणाउ पुं [अनायुष्क] जिन-देव । मुक्तात्मा, सिद्ध ।

अणाउल वि [अनाकुल] धीर ।

अणाउत्त वि [अनायुक्त]बेख्याल, असावधान ।

अणाएज्ज देखो अणाइज्ज ।

अणागय पुं [अनागत] भविष्य काल । वि. भविष्य में होनेवाला । °द्धा स्त्री [°द्धा] भविष्य काल ।

अणागलिय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ ।

अणागलिय वि [अनाकलित]नहीं जाना हुआ, अलक्षित । अपरिमित ।

अणागार वि [अनाकार] आकार-रहित । विशेषता-रहित । न. दर्शन, सामान्य ज्ञान ।

अणाजीव वि [अनाजीव] आजीविका-रहित । आजीविका की इच्छा नहीं रखने वाला । निःस्पृह, निरीह ।

अणाड पुं [दे] जार, उपपति ।

अणाढिय वि [अनादृत] तिरस्कृत । पुं. जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव । स्त्री. जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव की राजधानी ।

अणाणुगामिय वि [अनानुगामिक] पीछे नहीं जानेवाला । न. अवधि-ज्ञान का एक भेद ।

अणादि देखो अणाइ ।

अणादिय } देखो अणाइय ।
अणादीय }

अणादेज्ज देखो अणाइज्ज ।

अणाभिग्गह न [अनाभिग्रह] मिथ्यात्व का एक भेद ।

अणाभोग पुं [अनाभोग] अनुपयोग । न. मिथ्यात्वविशेष ।

अणामिय वि [अनामिक] नाम-रहित । पुं. असाध्य रोग । स्त्री. कनिष्ठांगुली के ऊपर की अंगुली ।

अणाय पुं [अनाक] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक ।

अणाय पुं [अनात्मन्] आत्मा से परे ।

अणायग वि [अज्ञातक] स्वजन-रहित, अकेला ।

अणायग वि [अज्ञायक] अजान, निर्बोध ।

अणायतण } न [अनायतन] वेश्या आदि
अणाययण } नीच लोगों का घर । जहाँ सज्जन पुरुषों का संसर्ग न होता हो वह स्थान । पतित साधुओं का स्थान । पशु, नपुंसक वगैरह के संसर्गवाला स्थान ।

अणायत्त वि [अनायत्त] पराधीन ।

अणायर पुं [अनादर] अ-बहुमान, अपमान ।

अणायरण न [अनाचरण] अनाचार, खराब आचरण ।

अणायरिय देखो अणज्ज = अनार्य ।

अणायार देखो अणागार = अनाकार ।

अणायार पुं [अनाचार] शास्त्र-निषिद्ध आचरण । गृहीत नियमों का जान-बूझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणारिय देखो **अणज्ज** = अनार्य ।

अणारिस वि [अनार्ष] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह ।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा ।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुक्त, नहीं बुलाया हुआ ।

अणालवय पुं [अनालपक] मौन ।

अणाव सक [आ + नायय्] मंगवाना ।

अणावरण वि [अनावरण] आवरण-रहित । न. केवल-ज्ञान ।

अणाविट्ठि } स्त्री [अनावृष्टि] वर्षा का
अणावुट्ठि } अभाव ।

अणाविल वि [अनाविल] स्वच्छ ।

अणासंसि वि [अनाशंसिन्] अनिच्छु, निस्पृह ।

अणासण देखो **अणसण** ।

अणासय पुं [अनाश, °क] अनशन, भोजनाभाव ।

अणासव वि [अनाश्रव] आश्रव-रहित । पुं. आश्रव का अभाव, संवर । अहिंसा, दया ।

अणासिय वि [अनशित] भूखा ।

अणाह वि [अनाथ] शरण-रहित । स्वामि-रहित । गरीब, बेचारा । पुं. एक जैन मुनि ।

अणाहार पुं [अनाहार] एक दिन का उपवास ।

अणाहि वि [अनाधि] मानसिक पीड़ा से रहित ।

अणाहिट्ठि पुं [अनाधृष्टि] एक अन्तकृद् मुनि ।

अणिइण देखो **अणगिण** ।

अणिइय वि [अनियत] अनियमित, अव्यवस्थित । पुं. संसार ।

अणिउंचिय वि [अनिकुञ्चित] टेढ़ा नहीं किया हुआ, सरल ।

अणिउँत
अणिउँतय } देखो **अइमुत्त** ।
अणिउँत्तय

अणिंदिय वि [अनिन्दित] जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम । पुं. किन्नर देव की एक जाति ।

अणिंदिय वि [अनिन्द्रिय] इंद्रिय-रहित । पुं. मुक्त जीव । केवलज्ञानी । वि. अतीन्द्रिय ।

अणिंदिया स्त्री [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी ।

अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादा । °**वाइ** वि [°वादिन्] अक्रियावादी ।

अणिक्किणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०९३५ प्यादें हों ।

अणिगण } देखो **अणगिण** ।
अणिगिण }

अणिग्गह वि [अनिग्रह] स्वच्छन्द, असंयत ।

अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी । °**भावणा** स्त्री [°भावना] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन । °**णुप्पेहा** स्त्री [°नुप्रेक्षा] देखो पूर्वोक्त अर्थ ।

अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, द्वेष्य ।

अणिण देखो **अणिरिण** ।

अणिदा स्त्री [दे.अनिदा] बिना ख्याल किये की गई हिंसा । चित्त की विकलता । ज्ञान का अभाव ।

अणिमा पुंस्त्री [अणिमन्] आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति ।

अणिमिस न [अनिमिष] फल-विशेष ।

अणिमिस } वि [अनिमिष, °मेष] निमेष
अणिमेस } शून्य । पुं मछली । देवता । °**नयण** पुं [नयन] देव ।

अणिय न [अनीक] सैन्य ।

अणिय न [अनृत] असत्य ।

अणिय न [दे] अग्र-भाग ।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर ।

अणियट्ट पुं [अनिवर्त] मोक्ष । एक महाग्रह ।

अणियट्टि वि [अनिवर्तिन्] निवृत्त नहीं होने-

वाला। न. शुक्ल-ध्यान का एक भेद। पुं. एक महाग्रह। आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम।

अणियट्टि वि [अनिवृत्ति] निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित। नववाँ गुणस्थानक। °**करण** न आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष। °**बादर** न नववां गुण-स्थानक। नववें गुणस्थान में प्रवृत्त जीव।

अणियण देखो **अणगिण**।

अणियय वि [अनियत] अव्यवस्थित, अनियमित, कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है।

अणिया देखो **अणिदा**।

अणिया स्त्री [दे] धार, अग्र-भाग।

अणिरिक्क वि [दे] परतन्त्र।

अणिरिण वि [अनृण] ऋण-वर्जित।

अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] अप्रतिहत। एक अन्तकृद् मुनि।

अणिल पुं [अनिल] पवन। एक अतीत तीर्थंकर का नाम। राक्षस-वंशीय एक राजा।

अणिला स्त्री [अनिला] बाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या।

अणिल्ल न [दे] प्रभात।

अणिस न [अनिश] हमेशा।

अणिसट्ठ } **अणिसिट्ठ** } वि [अनिसृष्ट] अनिक्षिप्त, असंमत। ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जो सबकी अनुमति से ली न गई हो। साधु की भिक्षा का एक दोष।

अणिसीह वि [अनिशीथ] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढ़ा या पढ़ाया जाय।

अणिस्सकड वि [अनिश्रीकृत] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्वसाधारण।

अणिस्सिय वि [अनिश्रित] आसक्तिरहित, रुकावटरहित, अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखनेवाला। न. ज्ञान-विशेष, अवग्रहज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के बिना ही होता है।

अणिह वि [अनीह] धीर, निष्कपट, निर्मम, निःस्पृह।

अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित।

अणिह वि [दे] सदृश, न. मुख।

अणिहय वि [अनिहत] अहत। °**रिउ** पुं [°रिपु] एक अन्तकृद् मुनि।

अणीइस वि [अनीदृश] इस माफिक नहीं, विलक्षण।

अणीय न [अनीक] सेना।

अणीयस पुं [अनीयस] एक अन्तकृद् मुनि का नाम।

अणीस वि [अनीश] असमर्थ।

अणीसकड देखो **अणिस्सकड**।

अणीहारिम वि [अनिर्हारिम] गुफा आदि में होनेवाला मरण-विशेष।

अणु अ [अनु] इन अर्थों का सूचक उपसर्ग-नजदीक, छोटा, परिपाटी, भीतर, लक्ष्य करना, योग्य, वीप्सा, बीच का भाग, अनुकूल, हितकर, प्रतिनिधि, पीछे, बहुत, मदद करना। निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है।

अणु वि अल्प, छोटा, पुं. परमाणु। °**मय** वि [°मत] उत्तम कुल। °**विरइ** स्त्री [°विरति] देखो **देसविरइ**।

अणु पुं [दे] धान-विशेष, चावल की एक जाति।

°**अणु** स्त्री [तनु] शरीर।

अणुअ वि [अज्ञ] मूर्ख।

अणुअ पु [दे] आकृति, आकार। पुंस्त्री. धान्य-विशेष।

अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करनेवाला।

अणुअ वि [अनुज] पीछे से उत्पन्न। पुं. छोटा भाई। स्त्री. छोटी बहिन।

अणुअंच सक [अनु + कृष्] पीछे खींचना।

अणुअंप सक [अनु + कम्प्] दया करना।

अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुअत्तय वि [अनुवर्तक] अनुकूल आचरण करनेवाला, अनुसरण करनेवाला।

अणुअत्ति देखो अणुवत्ति।

अणुअर वि [अनुचर] सहायताकारी, सहचर, नौकर। अनुसरण-कर्ता।

अणुअल्ल न [दे] सुबह।

अणुआ स्त्री [दे] लाठी।

अणुआर पुं [अनुकार] अनुकरण।

अणुआस पुं [अनुकास] प्रसार, विकास।

अणुइअ पुं [दे] चना।

अणुइअ देखो अणुदिय।

अणुइण्ण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ, नहीं गिरा हुआ।

अणुइण्ण वि [अनुद्गीर्ण] बाहर नहीं निकला हुआ।

अणुइण्ण देखो अणुचिण्ण।

अणुइण्ण देखो अणुदिण्ण।

अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, प्रसन्न।

अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। प्रसन्न करना।

अणुओअ पुं [अनुयोग] व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन। पृच्छा।

अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ।

अणुओग देखो अणुओअ।

अणुओग पुं [अनुयोग] सम्बन्ध।

अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित मुनि-शिष्य।

अणुओयण न [अनुयोजन] सम्बन्धन, जोड़ना।

अणुकंप सक [अनु + कम्प्] दया करना। भक्ति करना। हित करना।

अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य।

अणुकंप } वि [अनुकम्प] दयालु, करुण।
अणुकंपय } भक्त।

अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो। °दाण न [°दान] करुणा से गरीबों को अन्न आदि देना।

अणुकड्ढ सक [अनु + कृष्] खींचना। अनुसरण करना।

अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण।

अणुकप्प पुं [अनुकल्प] बड़े पुरुषों के मार्ग का अनुकरण। वि. महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला।

अणुकम पुं [अनुक्रम] परिपाटी।

अणुकर सक [अनु + कृ] अनुकरण करना।

अणुकह सक [अनु + कथय्] अनुवाद करना, पीछे बोलना।

अणुकार पुं [अनुकार] अनुकरण, नकल।

अणुकिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल।

अणुकिण्ण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ।

अणुकित्तण न [अनुकीर्तन] वर्णन, प्रशंसा।

अणुकित्ति देखो अणुकिइ।

अणुकुइय वि [अनुकुचित] पीछे फेंका हुआ। ऊँचा किया हुआ।

अणुकुण सक [अनु + कृ] अनुकरण करना।

अणुकूल देखो अणुऊल।

अणुक्कंत वि [अन्वाक्रान्त] आचरित, अनुष्ठित।

अणुक्कंत वि [अनुक्रान्त] आचरित, विहित, अनुष्ठित।

अणुक्कम सक [अनु + क्रम्] क्रम से कहना। अतिक्रमण करना।

अणुक्कम देखो अणुकम।

अणुक्कमण न [अनुक्रमण] गमन, गति।

अणुक्कुइअ वि [अनुकुचित] थोड़ा संकुचित।

अणुक्कोस पुं [अनुक्रोश] दया।

अणुक्कोस पुं [अनुत्कर्ष] उत्कर्ष का अभाव। वि. उत्कर्षरहित।

अणुक्खित्त वि [अनुत्क्षिप्त] ऊँचा न किया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुआ।

अणुग वि [अनुग] नौकर, अनुसरण-कर्त्ता।

अणुगंतव्व अणुगम = अनु + गम्। का कृ.

अणुगंपा स्त्री [अनुकम्पा] करुणा।

अणुगच्छ देखो **अणुगम** = अनु + गम्।

अणुगज्ज अक [अनु + गर्ज्] प्रतिध्वनि करना।

अणुगम सक [अनु + गम्] अनुसरण करना, जानना, समझना। व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का स्पष्टीकरण करना।

अणुगम पुं [अनुगम] निश्चय करना। सूत्र की व्याख्या। अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता। व्याख्या।

अणुगय वि [अनुगत] अनुसृत, ज्ञात। अनुवृत्त, जो पूर्व से बराबर चला आया हो। अतिक्रान्त।

अणुगर देखो **अणुकर**।

अणुगवेस सक [अनु + गवेष्] तलाश करना।

अणुगह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह्।

अणुगाम पुं [अणुग्राम] छोटा गाँव। उपपुर, शहर के पास का गाँव। विवक्षित गाँव से दूसरा गाँव।

अणुगामि, **अणुगामिय** वि [अनुगामिन्, °मिक] अनुसरण करनेवाला। शुद्ध कारण। अवधिज्ञान का एक भेद। अनुचर।

अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला।

अणुगिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल।

अणुगिण्ह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह।

अणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] अत्यन्त आसक्त, लोलुप।

अणुगिद्धि स्त्री [अनुगृद्धि] अत्यासक्ति।

अणुगिल सक [अनु + गृ] भक्षण करना।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर मेहरबानी की गई हो वह।

अणुगीय वि [अनुगीत] पीछे कहा हुआ, अनूदित। पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि। कीर्तित, वर्णित। गीत।

अणुगुण वि [अनुगुण] अनुकूल, उचित, तुल्य, सदृश गुणवाला।

अणुगुरु वि [अनुगुरु] गुरु-परम्परा के अनुसार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुकूल।

अणुगेज्झ वि [अनुग्राह्य] कृपा-पात्र।

अणुगेण्ह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह्।

अणुग्गह सक [अनु + ग्रह्] कृपा करना।

अणुग्गह पुं [अनुग्रह] कृपा, मेहरबानी। उपकार। वि. जिस पर अनुग्रह किया जाय वह।

अणुग्गह पुं [अनवग्रह] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान।

अणुग्गहिअ, **अणुग्गहीअ**, **अणुगिहीअ** वि [अनुगृहीत] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी।

अणुग्घाइम न [अनुद्घातिम] महा-प्रायश्चित्त का एक भेद। वि. महा प्रायश्चित्त का पात्र।

अणुग्घाइय वि [अनुद्घातिक] अनुद्घातिक नामक महा-प्रायश्चित्त का पात्र। न. ग्रन्थांश-विशेष, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का वर्णन है।

अणुग्घाय वि [अनुद्घात] उद्घात-रहित। न. निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है।

अणुग्घाय न [अनुद्घात] गुरु-प्रायश्चित्त।

अणुग्घायण न [अणोद्घातन] कर्मों का नाश।

अणुग्घास सक [अनु + ग्रासय्] भोजन कराना।

अणुचय पुं [अनुचय] फैलाकर इकट्ठा करना।

अणुचर सक [अनु + चर्] सेवा करना। अनुसरण करना। अनुष्ठान करना।

अणुचर देखो **अणुअर**।

अणुचरग वि [अनुचरक] सेवा करनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुचरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ।

अणुचि सक [अनु+च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना।

अणुचिंत सक [अनु+चिन्त्] पर्यालोचन करना, विचारना, याद करना, सोचना।

अणुचिट्ठ सक [अनु+स्था] अनुष्ठान करना।

अणुचिण्ण वि [अनुचीर्ण] अनुष्ठित, आचरित, विहित। प्राप्त। परिणमित।

अणुचिण्णव वि [अनुचीर्णवत्] जिसने अनुष्ठान किया हो वह।

अणुचिय वि [अनुचित] अयोग्य।

अणुचीइ
अणुचीति } देखो अणुचिंत।

अणुच्च वि [अनुच्च] ऊँचा नहीं, नीचा।

°াকুइय वि [°াকুचिक] नीची और अस्थिर शय्या वाला।

अणुच्छहंत वि [अनुत्सहमान] उत्साह नहीं रखता हुआ।

अणुच्छित्त वि [अनुत्क्षिप्त] अत्यक्त।

अणुच्छित्त वि [अनुत्थित] गर्व-रहित, विनीत। स्फीत, समृद्ध। सर्वोच्च।

अणुच्छूढ वि [अनुत्क्षिप्त] अत्यक्त।

अणुज पुं [अनुज] छोटा भाई।

अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में।

अणुजत्ता स्त्री [अनुयात्रा] निर्गम, निःसरण।

अणुजा सक [अनु+या] अनुसरण करना, पीछे चलना।

अणुजाइ स्त्री [अनुयाति] अनुसरण।

अणुजाण न [अनुयान] पीछे-पीछे चलना। महोत्सव-विशेष, रथयात्रा।

अणुजाण सक [अनु+ज्ञा] सम्मति देना।

अणुजाणावण न [अनुज्ञापन] अनुमति लेना।

अणुजाय वि [अनुयात] अनुगत, अनुसृत।

अणुजाय वि [अनुजात] पीछे से उत्पन्न। सदृश।

अणुजीव सक [अनु+जीव्] आश्रय करना।

अणुजीवि वि [अनुजीविन्] आश्रित, नौकर। °त्तण न [°त्व] आश्रय, नौकरी।

अणुजुंज सक [अनु+युज्] प्रश्न करना।

अणुजुत्ति स्त्री [अनुयुक्ति] योग्य युक्ति, उचित न्याय।

अणुजेट्ठ वि [अनुज्येष्ठ] बड़े के नजदीक का। छोटा, उतरता।

अणुजोग देखो अणुओअ।

अणुज्ज वि [अनूर्ज] उत्साह-रहित, हताश।

अणुज्ज वि [अनोजस्क] तेजरहित, फीका।

अणुज्ज वि [अनूद्य] उद्देश्य, लक्ष्य।

अणुज्जा स्त्री [अनुज्ञा] अनुमति।

अणुज्जा देखो अणोज्जा।

अणुज्जिय वि [अनूर्जित] निर्बल।

अणुज्जुय वि [अनृजुक] वक्र, कपटी।

अणुज्झा सक [अनु+ध्या] चिन्तन करना, ध्यान करना।

अणुझा देखो अणुज्झा।

अणुझिअअ वि [दे] प्रयत्न-शील। सावधान।

अणुझिज्जिर वि [अनुक्षयिन्] क्षीण होनेवाला।

अणुट्ठ वि [अनुत्थ] नहीं उठा हुआ, स्थित।

अणुट्ठा सक [अनु+स्था] अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना। करना।

अणुट्ठाण न [अनुष्ठान] कृति। शास्त्रोक्त विधान।

अणुट्ठाण न [अनुत्थान] क्रिया का अभाव।

अणुट्ठावण न [अनुष्ठापन] अनुष्ठान कराना।

अणुट्ठिय वि [अनुष्ठित] विधि से संपादित, विहित।

अणुट्ठिय वि [अनुत्थित] बैठा हुआ। आलसी।

अणुट्ठुभ न [अनुष्टुप्] एक प्रसिद्ध छंद।

अणुट्ठेअ देखो अणुट्ठा।

अणुण देखो अणुणी।

अणुणय पुं [अनुनय] विनय, प्रार्थना।

अणुणाय पुं [अनुनाद] प्रतिध्वनि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुणाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित ।

अणुणास पुंन [अनुनास] अनुनासिक । वि. अनुस्वार-युक्त।

अणुणासिअ पुं [अनुनासिक] देखो ऊपर का पहला अर्थ ।

अणुणी सक [अनु + नी] अनुनय करना । समझाना, दिलासा देना ।

अणुणेंत [अणुणी] का वकृ० ।

अणुण्णय वि [अनुन्नत] नीचा, नम्र । गर्व-रहित ।

अणुण्णव सक [अनु + ज्ञापय्] अनुमति देना । आज्ञा देना ।

अणुण्णवणी स्त्री [अनुज्ञापनी] अनुमति लेने का वाक्य ।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] अनुमोदन । आज्ञा । पठन-विषयक गुरु-आज्ञा-विशेष । सूत्र के अर्थ का अध्ययन । °**कप्प** पुं [°कल्प] जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शास्त्रीय विधान ।

अणुण्णाय वि [अनुज्ञात] जिसको आज्ञा दी गई हो वह । अनुमत, अनुमोदित ।

अणुण्ह वि [अनुष्ण] ठंडा, जो गरम नहीं है वह ।

अणुतड पुं [अनुतट] भेद, पदार्थों का एक जाति का पृथक्करण; जैसे संतप्त लोहे को हथौड़े से पीटने से स्फुलिंग(चिनगारी)पृथक् होते हैं ।

अणुतडिया स्त्री [अनुतटिका] ऊपर देखो । तलाव, द्रह आदि का भेद ।

अणुतप्प अक [अनु + तप्] पछताना ।

अणुताव सक [अनु + तापय्] तपाना ।

अणुताव पुं [अनुताप] पश्चात्ताप ।

अणुतावय वि [अनुतापक] पश्चात्ताप करानेवाला ।

अणुत्त वि [अनुक्त] अकथित ।

अणुत्तंत देखो **अणुवत्त** ।

अणुत्तप्प वि [अनुत्त्रप्य] परिपूर्ण शरीर । पूर्ण शरीरवाला ।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] सर्वश्रेष्ठ । एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम । छोटा । °**ग्गा** स्त्री [°ग्र्या] एक पृथिवी, जहाँ मुक्त जीवों का निवास है । °**णाणि** वि [°ज्ञानिन्] केवलज्ञानी । °**विमाण** न [°विमान] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक। °**ोववाइय** वि [°ौपपातिक] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न । °**ोववाइयदसा** स्त्री. ब. [°ौपपातिकदशा] नववाँ जैन अंगग्रंथ ।

अणुत्थाण देखो **अणुट्ठाण** ।

अणुत्थारय वि [अनुत्साह] हतोत्साह ।

अणुदत्त पुं [अनुदात्त] नीचे से बोला जानेवाला स्वर ।

अणुदय पुं [अनुदय] उदय का अभाव । कर्म-फल के अनुभव का अभाव ।

अणुदवि न [दे] सुबह ।

अणुदिअ वि [अनुदित] जिसका उदय न हुआ हो ।

अणुदिअस न [अनुदिवस] प्रतिदिन ।

अणुदिज्जंत वि [अनुदीयमान] उदय में न आता हुआ ।

अणुदिण न [अनुदिन] हमेशा ।

अणुदिण्ण वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त । फल-दान में अतत्पर ।

अणुदिण्ण वि [अनुदीरित] जिसकी उदीरणा दूर भविष्य में हो । जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो ।

अणुदिय वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त ।

अणुदियह न [अनुदिवस] प्रतिदिन ।

अणुदिव न [दे] प्रातःकाल ।

अणुदिसा, **अणुदिसी** } स्त्री [अनुदिक्] विदिक्, ईशान कोण आदि विदिशा ।

अणुद्दिट्ठ वि [अनुद्दिष्ट] जिसका उद्देश्य न किया गया हो वह ।

अणुद्ध वि [अनूर्ध्व] नीचा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुद्धय वि [अनुद्धत] सरल, भद्र, विनयी ।
अणुद्धरि पुं [अनुद्धरिन्] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु ।
अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] जिसका उद्धार न किया गया हो वह । बाहर नहीं निकाला हुआ ।
अणुद्धुय वि [अनुद्धूत] अपरित्यक्त ।
अणुधम्म पुं [अणुधर्म] गृहस्थ-धर्म ।
अणुधम्म पुं [अनुधर्म] अनुकूल—हितकर धर्म । °**चारि** वि [°चारिन्] हितकर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी ।
अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनुकूल, धर्मोचित ।
अणुधाव सक [अनु + धाव्] पीछे दौड़ना ।
अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह ।
अणुपंथ पुं [अनुपथ] समीप का मार्ग । रास्ता के पास ।
अणुपत्त वि [अनुप्राप्त] प्राप्त ।
अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त ।
अणुपयट्ट वि [अनुप्रवृत्त] अनुसृत, अनुगत ।
अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बदला प्रतिग्रहण ।
अणुपरियट्ट सक [अनुपरि + अट्] घूमना, परिभ्रमण करना ।
अणुपरियट्ट अक [अनुपरि + वृत्] फिरना, फिरते रहना । परिवर्तन करना ।
अणुपरिवट्ट देखो **अणुपरियट्ट** = अनुपरि + वृत् ।
अणुपरिवाडि, °**डी** स्त्री [अनुपरिपाटि, °टी] अनुक्रम ।
अणुपरिहारि वि [अणुपरिहारिन्] 'परिहारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला ।
अणुपवन्न वि [अनुप्रपन्न] प्राप्त ।
अणुपवाएत्त वि [अनुप्रवाचयितृ] पाठक, उपाध्याय ।
अणुपवाय देखो **अणुप्पवाय** = अनुप्र + वाचय् ।
अणुपविट्ठ वि [अनुप्रविष्ट] पीछे से प्रविष्ट ।
अणुपविस सक [अनुप्र + विश्] पीछे से प्रवेश करना । भीतर जाना ।
अणुपवेस पुं [अनुप्रवेश] प्रवेश, भीतर जाना ।
अणुपस्स सक [अनु + दृश्] पर्यालोचन करना ।
अणुपाल सक [अनु + पालय्] अनुभव करना । रक्षण करना । प्रतीक्षा करना ।
अणुपास देखो **अणुपस्स** ।
अणुपिट्ठ न [अनुपृष्ठ] अनुक्रम ।
अणुपिहा देखो **अणुपेहा** ।
अणुपुंख न [अनुपुङ्ख] मूल तक, अन्त-पर्यन्त ।
अणुपुव्व वि [अनुपूर्व्व] क्रमवार, क्रिवि. क्रमशः । °**सो** [शस्] अनुक्रम से ।
अणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम ।
अणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] ऊपर देखो ।
अणुपेक्खा स्त्री [अनुप्रेक्षा] भावना, चिन्तन, विचार ।
अणुपेहण न [अनुप्रेक्षण] ऊपर देखो ।
अणुपेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] ऊपर देखो ।
अणुपेहि वि [अनुप्रेक्षिन्] चिन्तन-कर्ता ।
अणुप्पइन्न वि [अनुप्रकीर्ण] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित ।
अणुप्पणी सक [अनुप्र + णी] प्रणय करना । प्रसन्न करना ।
अणुप्पगंथ [अणुप्रग्रन्थ] सन्तोषी, अल्प परिग्रह वाला ।
अणुप्पण्ण वि [अनुत्पन्न] अविद्यमान ।
अणुप्पत्त देखो **अणुपत्त** ।
अणुप्पदा सक [अनुप्र + दा] दान देना, फिर-फिर देना ।
अणुप्पदाण न [अनुप्रदान] दान, फिर-फिर दान देना ।
अणुप्पभु पुं [अनुप्रभु] स्वामी के स्थानापन्न, प्रतिनिधि ।
अणुप्पया देखो **अणुप्पदा** ।
अणुप्पवत्त सक [अनुप्र + वृत्] अनुसरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना।

अणुप्पवाइत्तु } वि [अनुप्रवाचयितृ]
अणुप्पवाएत्तु } अध्यापक, पाठक, पढ़ानेवाला।

अणुप्पवाद पुं [अनुप्रवाद] कथन।

अणुप्पवाय सक [अनुप्र + वाचय्] पढ़ाना।

अणुप्पवाय न [अनुप्रवाद] नववाँ पूर्व, बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश-विशेष।

अणुप्पविट्ठ देखो अणुपविट्ठ।

अणुप्पवित्ति स्त्री [अनुप्रवृत्ति] अनुप्रवेश, अनुगम।

अणुप्पविस देखो अणुपविस।

अणुप्पवेस देखो अणुपवेस।

अणुप्पसाद (शौ) सक [अनुप्र + सादय्] प्रसन्न करना।

अणुप्पसूय वि [अनुप्रसूत] उत्पन्न, पैदा किया हुआ।

अणुप्पाइ वि [अनुपातिन्] युक्त, संबद्ध, संबन्धी।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुकूल, इष्ट।

अणुप्पेंत वि [अनुत्प्रयत्] दूर करता, हटाता हुआ।

अणुप्पेच्छ देखो अणुप्पेह।

अणुप्पेसिय वि [अनुप्रेषित] पीछे से भेजा हुआ।

अणुप्पेह सक [अनुप्र + ईक्ष्] चिन्तन करना, विचारना।

अणुप्पेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] चिन्तन, भावना, विचार, स्वाध्याय-विशेष।

अणुप्फास पुं [अनुस्पर्श] अनुभाव, प्रभाव।

अणुफुसिय वि [अनुप्रोञ्छित] पोंछा हुआ, साफ किया हुआ।

अणुबंध सक [अनु + बन्ध्] अनुसरण करना। संबन्ध बनाये रखना। अणुबंधंति।

अणुबंध पुं [अनुबन्ध] निरन्तरता, विच्छेद का अभाव। संबन्ध। कर्मों का संबन्ध। कर्मों का विपाक, स्नेह।

अणुबंधअ वि [अनुबन्धक] अनुबन्ध करने वाला।

अणुबंधण न [अनुबन्धन] अनुकूल बन्धन।

अणुबंधणा स्त्री [अनुबन्धना] अनुसन्धान, विस्मृत अर्थ का सन्धान।

अणुबंधिअ न [दे] हिक्का-रोग, हिचकी।

अणुबंधेल्ल वि [अनुबन्धिन्] विच्छेद-रहित, अनुगमवाला, अविनश्वर।

अणुबज्झ } वि [अनुबद्ध] बँधा हुआ,
अणुबद्ध } संबद्ध। सतत। व्याप्त। अत्यन्त। प्रतिबद्ध। उत्पन्न।

अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] अनुगत। पीछे बँधा हुआ।

अणुबूह देखो अणुवूह।

अणुब्भड वि [अनुद्भट] अनुद्धत, अनुल्वण।

अणुब्भूय वि [अनुद्भूत] अप्रकट, अनुत्पन्न।

अणुभअ देखो अणुभव = अनुभव।

अणुभव सक [अनु + भू] अनुभव करना। जानना, समझना। कर्मफल को भोगना।

अणुभव पुं [अनुभव] ज्ञान, बोध, निश्चय। कर्म-फल का भोग।

अणुभव्व वि [अनुभव्य] आसन्न भव्य।

अणुभाग पुं [अनुभाग] प्रभाव, माहात्म्य। सामर्थ्य। कर्मों का विपाक—फल। कर्मों का रस, कर्मों में फल उत्पन्न करने की शक्ति। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना।

अणुभाय } पुं [अनुभाव] ऊपर देखो।
अणुभाव } मनोगत भाव की सूचक चेष्टा। मेहरबानी।

अणुभावग वि [अनुभावक] बोधक, सूचक।

अणुभास सक [अनु + भाष्] अनुवाद करना। कही हुई बात को उसी शब्द में, शब्दान्तर में या दूसरी भाषा में कहना। चिन्तन करना।

अणुभासय वि [अनुभाषक] अनुवादक, अनुवाद करनेवाला।

अणुभुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुभूइ स्त्री [अनुभूति] अनुभव।

अणुभूय वि [अनुभूत] ज्ञात, निश्चित। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह।

अणुभूस सक [अनु + भूष्] शोभित करना।

अणुमइ स्त्री [अनुमति] सम्मति।

अणुमंतव्व देखो अणुमण्ण।

अणुमग्ग न [दे] पीछे-पीछे। °गामि वि [°गामिन्] पीछे-पीछे जानेवाला।

अणुमज्ज सक [अनु + मस्ज्] विचार करना।

अणुमण्ण सक [अनु + मन्] अनुमोदन करना।

अणुमन्निय } वि [अनुमत] सम्मत।
अणुमय

अणुमर अक [अनु + मृ] मरना। सती होना।

अणुमर अक [अनु + मृ] क्रम से मरना, पीछे-पीछे मरना।

अणुमहत्तर वि [अनुमहत्तर] मुखिया का प्रतिनिधि।

अणुमाण न [अनुमान] अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय।

अणुमाण न [अनुमान] अभिप्राय-ज्ञान। अनुसार।

अणुमाण सक [अनु + मानय्] अनुमान करना।

अणुमाय वि [अणुमात्र] बहुत थोड़ा, थोड़ा परिमाणवाला।

अणुमाल अक [अनु + मालय्] शोभित होना, चमकना।

अणुमिण सक [अनु + मा] अटकलसे जानना।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य।

अणुमेरा स्त्री [अनुमर्यादा] हद।

अणुमोय सक [अनु + मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना।

अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करनेवाला।

अणुम्मुक्क वि [अनुन्मुक्त] नहीं छोड़ा हुआ।

अणुम्मुह वि [अनुन्मुख] विमुख।

अणुय पुं [अणुक] धान्य-विशेष।

अणुयंपा देखो अणुकंपा।

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनु + वृत्।

अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित।

अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनुष्ठित।

अणुया देखो अणुण्णा।

अणुयाव देखो अणुताव।

अणुयास पुं [अनुकाश] विशेष विकास।

अणुरंगा स्त्री [दे] गाड़ी।

अणुरंगि वि [अनुरङ्गिन्] अनुकरण-कर्ता।

अणुरंगिय वि [अनुरङ्गित] रंगा हुआ।

अणुरंज सक [अनु + रञ्जय्] अनुरागी करना, प्रीणित करना।

अणुरंजिएल्लय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त किया हुआ, अनुरागी बनाया हुआ।
अणुरंजिय

अणुरक्क वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त।

अणुरज्ज अक [अनु + रञ्ज्] अनुरक्त होना।

अणुरत्त देखो अणुरक्क।

अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ, आहूत।

अणुराइ } वि [अनुरागिन्] अनुरागवाला, प्रेमी।
अणुराइल्ल

अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति।

अणुरागय वि [अन्वागत] पीछे आया हुआ। ठीक-ठीक आया हुआ। न. स्वागत।

अणुराय देखो अणुराग।

अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष।

अणुरुंध सक [अनु + रुध्] अनुरोध करना। स्वीकार करना। आज्ञा का पालन करना। प्रार्थना करना। अक. अधीन होना।

अणुरूअ } वि [अनुरूप] योग्य, उचित। अनुकूल। सदृश। न. समानता,
अणुरूव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योग्यता ।
अणुरोह पुं [अनुरोध] प्रार्थना, दाक्षिण्य ।
अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ ।
अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] पीछे से मिला हुआ । फिर से मिला हुआ ।
अणुलाव पुं [अनुलाप] फिर-फिर बोलना ।
अणुलिप सक [अनु + लिप्] पोतना, लेप करना । फिर से पोतना ।
अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ ।
अणुलिह सक [अनु + लिह्] चाटना । छूना ।
अणुलेवण न [अनुलेपन] लेप, पोतना । फिर से पोतना ।
अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ ।
अणुलोम सक [अनुलोमय्] क्रम से रखना । अनुकूल करना ।
अणुलोम न [अनुलोम] अनुक्रम, यथाक्रम ।
अणुलोम वि [अनुलोम] सीधा, अनुकूल ।
अणुल्लग देखो अणुल्लय ।
अणुल्लण वि [अनुल्बण] अनुद्धत, अनुद्भट ।
अणुल्लय पुं [अनुल्लक] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु ।
अणुल्लाव पुं [अनुल्लाप] खराब कथन, दुष्ट उक्ति ।
अणुव पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ।
अणुवइट्ठ वि [अनुपदिष्ट] अ-कथित, अव्याख्यात । जो पूर्व-परम्परा से न आया हो ।
अणुवउत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान ।
अणुवएस पुं [अनुपदेश] अयोग्य उपदेश । उपदेश का अभाव । स्वभाव ।
अणुवओग वि [अनुपयोग] उपयोग-रहित । असावधानता ।
अणुवंक वि[अनुवक्र]अत्यन्त वक्र, बहुत टेढ़ा ।
अणुवंदण न [अनुवन्दन] प्रति-नमन, प्रतिप्रणाम ।
अणुवक्क देखो अणुवंक ।
अणुवक्ख वि [अनुपाख्य] नाम-रहित, अनिर्वचनीय ।
अणुवक्खड वि [अनुपस्कृत] संस्कार-रहित ।
अणुवच्च सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना ।
अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] अनाश्रित । आजीविका-रहित ।
अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान ।
अणुवज्ज सक [गम्] जाना ।
अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुश्रूषा करना ।
अणुवट्ट देखो अणुवत्त = अनु + वृत् ।
अणुवड सक [अनु + पत्] अभिन्न होना । अणुवडइ ।
अणुवडिअ वि [अनुपतित] पीछे गिरा हुआ ।
अणुवत्त सक [अनु + वृत्] अनुसरण करना । सेवा-शुश्रूषा करना । अनुकूल बरतना । व्याकरण आदि के पूर्व-सूत्र के पद का, अन्वय के लिए नीचे के सूत्र में जाना ।
अणुवत्त वि [अनुद्वृत्त] अनुत्पन्न ।
अणुवत्त वि [अनुवृत्त] अनुसृत, अनुगत । अनुकूल किया हुआ । प्रवृत्त ।
अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, सेवा करनेवाला ।
अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुसरण-कर्ता ।
अणुवत्तय देखो अणुवत्तग ।
अणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] अनुसरण । अनुकूल प्रवृत्ति । अनुगम ।
अणुवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, अद्वितीय ।
अणुवमा स्त्री [अनुपमा] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य ।
अणुवय देखो अणुव्वय ।
अणुवय सक [अनु + वद्] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिर से कहना ।
अणुवरय वि [अनुपरत] असंयत, अनिग्रही । क्रिवि॰ निरन्तर, हमेशा ।
अणुवलद्धि स्त्री [अनुपलब्धि] अभाव, अप्राप्ति । अभाव-ज्ञान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुवलब्भमाण वि [अनुपलभ्यमान] जो उपलब्ध न होता हो, जो जानने में न आता हो।

अणुवलेवय वि [अनुपलेपक] उपलेप-रहित, अलिप्त।

अणुवसंत वि [अनुपशान्त] अशान्त, कुपित।

अणुवसम पुं [अनुपशम] उपशम का अभाव।

अणुवसु वि [अनुवसु] प्रीतिवाला।

अणुवह न [अनुपथ] पीछे।

अणुवहण न [अनुवहन] वहन।

अणुवहय वि [अनुपहत] अभिनाशित।

अणुवहुआ स्त्री [दे] नवोढ़ा स्त्री, दुलहिन।

अनुवाइ वि [अनुपातिन्] अनुसरण करनेवाला सम्बन्ध रखनेवाला।

अणुवाइ वि [अनुवादिन्] अनुवाद करनेवाला। उक्त अर्थ को कहनेवाला।

अणुवाइ वि [अनुवाचिन्] पढ़नेवाला, अभ्यासी।

अणुवाएज्ज वि [अनुपादेय] ग्रहण करने के अयोग्य।

अणुवाद देखो अणुवाय = अनुवाद।

अणुवादि देखो अणुवाइ = अनुपातिन्।

अणुवाय पुं [अनुपात] अनुसरण। संबन्ध, संयोग। आगमन।

अणुवाय पुं [अनुवात] अनुकूल पवन। वि. अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान।

अणुवाय [अनुपाय] निरुपाय।

अणुवाय पुं [अनुवाद] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना।

अणुवायण न [अनुपातन] अवतारण, उतारना।

अणुवायय वि [अनुवाचक] कहनेवाला।

अणुवाल देखो अणुपाल।

अणुवालण न [अनुपालन] रक्षण, परिपालन।

अणुवालणा स्त्री [अनुपालना] ऊपर देखो। °कप्प पुं [°कल्प] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान।

अणुवालय वि [अनुपालक] रक्षक, पुं. गोशालक के एक भक्त का नाम।

अणुवास सक [अनु + वासय्] व्यवस्था करना।

अणुवास पुं [अनुवास] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वहीं वास करना।

अणुवासण न [अनुवासन] ऊपर देखो। यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढ़ाना।

अणुवासणा स्त्री [अनुवासना] ऊपर देखो। °कप्प पुं [°कल्प] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था।

अणुवासग वि [अनुपासक] सेवा नहीं करनेवाला, पुं. जैनेतर गृहस्थ।

अणुवासर न [अनुवासर] प्रतिदिन।

अणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] अनुकूल वर्तन। अनुसरण।

अणुविद्ध वि [अनुविद्ध] संबद्ध।

अणुविस सक [अनु + विश्] प्रवेश करना।

अणुविहाण न [अनुविधान] अनुकरण। अनुसरण।

अणुवीइ स्त्री [अनुवीचि] अनुकूलता।

अणुवीइ, अणुवीई, अणुवीति, अणुवीतिय अ [अनुविचिन्त्य] विचार कर, पर्यालोचना कर। देखो अणुचित।

अणुवीइत्तु, अणुवीय देखो अणुवीई।

अणुवूह सक [अनु + बृंह्] अनुमोदन करना, प्रशंसा करना।

अणुवूहेत्तु वि [अनुबृंहितृ] अनुमोदन करनेवाला।

अणुवेद सक [अनु + वेदय्] अनुभव करना।

अणुवेध, अणुवेह पुं [अनुवेध] अनुगम, अन्वय, सम्बन्ध। संमिश्रण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव ।
अणुवेल अ [अनुवेल] सदा ।
अणुवेलंधर पुं [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र ।
अणुवेह देखो अणुप्पेह ।
अणुव्वइय वि [अनुव्रजित] अनुसृत ।
अणुव्वज सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, सामने जाना ।
अणुव्वय न [अणुव्रत] साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत । पुं श्रावक-धर्म ।
अणुव्वयण न [अनुव्रजन] अनुगमन ।
अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करनेवाला ।
अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री ।
अणुव्वस वि [अनुवश] अधीन ।
अणुव्वाण वि [अनुद्वान] खुला हुआ । स्निग्ध ।
अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] खेद-रहित ।
अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार ।
अणुव्वीइय देखो अणुवीइ ।
अणुसंकम सक [अनुसं + क्रम्] अनुसरण करना ।
अणुसंग पुं [अनुषङ्ग] प्रसंग, प्रस्ताव । संसर्ग ।
अणुसंगिअ वि [आनुषङ्गिक] प्रासङ्गिक ।
अणुसंचर सक [अनुसं + चर्] परिभ्रमण करना, पीछे चलना ।
अणुसंज देखो अणुसज्ज ।
अणुसंध सक [अनुसं + धा] खोजना, विचार करना, पूर्वापर का मिलान करना ।
अणुसंधण } न [अनुसंधान] विचार,
अणुसंधाण } चिन्तन, गवेषणा, खोज, पूर्वापर की संगति ।
अणुसंधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का ।
अणुसंभर सक [अनु + स्मृ] याद करना ।
अणुसंवेयण न [अनुसंवेदन] पीछे से जानना, अनुभव करना ।
अणुसंसर सक [अनुसं + सृ] गमन करना, भ्रमण करना ।
अणुसंसर सक [अनुसं + स्मृ] स्मरण करना ।
अणुसज्ज अक [अनुसं + संज्] अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन करना, प्रीति करना, परिचय करना ।
अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] शिक्षित ।
अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] शिक्षण, सीख, श्लाघा । आज्ञा, सम्मति ।
अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण ।
अणुसय पुं [अनुशय] पश्चात्ताप, अभिमान ।
अणुसर सक [अनु + सृ] पीछा करना । अनुवर्तन करना ।
अणुसर सक [अनु + स्मृ] याद करना, चिन्तन करना ।
अणुसरिउ वि [अनुस्मर्तृ] याद करनेवाला ।
अणुसरिच्छ } वि [अनुसदृश] समान,
अणुसरिस } योग्य ।
अणुसार पुं [अनुस्वार] वर्ण-विशेष, बिन्दी । वि. अनुनासिक वर्ण ।
अणुसार पुं [अनुसार] अनुसरण, अनुवर्तन । माफिक ।
अणुसास सक [अनु + शास्] उपदेश देना, आज्ञा करना, सजा देना ।
अणुसासण न [अनुशासन] सीख, उपदेश । आज्ञा । शिक्षा, सजा । अनुकम्पा ।
अणुसिक्खिर वि [अनुशिक्षितृ] सीखनेवाला ।
अणुसिट्ठ देखो अणुसट्ठ ।
अणुसिट्ठि देखो अणुसट्ठि ।
अणुसिण वि [अनुष्ण] ठण्डा ।
अणुसील सक [अनु + शीलय्] पालन करना, रक्षण करना ।
अणुसुत्ति वि [दे] अनुकूल ।
अणुसुमर सक [अनु + स्मृ] याद करना ।
अणुसुय अक [अनु + स्वप्] सोने का अनु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करण करना ।

अणुसूआ स्त्री [दे] शीघ्र ही प्रसव करनेवाली स्त्री ।

अणुसूय वि [अनुस्यूत] अनुविद्ध, मिला हुआ ।

अणुसूयग वि [अनुसूचक] जासूस की एक श्रेणी ।

अणुसेढि स्त्री [अनुश्रेणि] सीधी लाइन, न. लाइनसर ।

अणुसोय पुं [अनुस्रोतस्] अनुकूल प्रवाह। वि. अनुकूल । न. प्रवाह के अनुसार ।

अणुसोय सक [अनु + शुच्] सोचना, चिन्ता करना । अफसोस करना ।

अणुस्सर देखो अणुसर = अनु + स्मृ ।

अणुस्सर देखो अणुसर = अनु + सृ ।

अणुस्सार पुं [अनुस्वार] अनुस्वार, बिन्दी । वि. अनुस्वारवाला अक्षर ।

अणुस्सुय वि [अनुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित ।

अणुस्सुय वि [अनुश्रुत] अवधारित, सुना हुआ । न. भारत-आदि पुराण-शास्त्र ।

अणुहर सक [अनु + हृ] नकल करना ।

अणुहव सक [अनु + भू] अनुभव करना ।

अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला ।

अणुहाव देखो अणुभाव ।

अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य से सहन करना ।

अणुहु सक [अनु + भू] अनुभव करना ।

अणुहुंज सक [अनु + भुञ्ज्] भोग करना ।

अणुहुत्त देखो अणुहूअ ।

अणुहूअ वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह । न. अनुभव ।

अणुहो सक [अनु + भू] अनुभव करना ।

अणूकप्प देखो अणुकप्प ।

अणूण वि [अनून] अधिक ।

अणूय, **अणूव** पुं [अनूप] अधिक जलवाला देश ।

अणेअ वि [अनेक] देखो अणेक्क ।

अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल ।

अणेक्क, **अणेग** वि [अनेक] एक से अधिक। °करण न पर्याय, धर्म, अवस्था । °राइय वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होनेवाला, अनेक रात संबन्धी (उत्सवादि) ।

अणेगंत पुं [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव । °वाय पुं [°वाद] स्याद्वाद, जैनों का मुख्य सिद्धान्त ।

अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थों को सर्वथा अलग-अलग माननेवाला, अक्रियावाद-मत का अनुयायी ।

अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ ।

अणेज वि [अनेज] निष्कम्प ।

अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य, जानने के अशक्य ।

अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण ।

अणेवंभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र ।

अणेस देखो अण्णेस ।

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव ।

अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि) ।

अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री ।

अणोक्कंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह ।

अणोग्गह देखो अणुग्गह = अनवग्रह ।

अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] अमार्जित ।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध ।

अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम ।

अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो ।

अणोणअ वि [अनवनत] नहीं झुका हुआ ।

अणोत्तप्प देखो अणुत्तप्प ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणोम वि [अनवम] परिपूर्ण ।

अणोमाण न [अनपमान] सत्कार ।

अणोरपार वि [दे] प्रचुर, प्रभूत । अनादि-अनन्त । अति विस्तीर्ण ।

अणोरुम्मिअ वि [अनुद्वान] गीला ।

अणोलय न [दे] प्रातःकाल ।

अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनुपूर्वी का एक भेद क्रम-विशेष ।

अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर देखो ।

अणोल्ल वि [अनार्द्र] सूखा हुआ । °मण वि [°मनस्क] निर्दय ।

अणोवदग्ग वि [अनवदग्र] अनन्त ।

अणोवम वि [अनुपम] अद्वितीय ।

अणोवसंखा स्त्री [अनुपसंख्या] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव ।

अणोवहिय वि [अनुपधिक] परिग्रहरहित, संतोषी । सरल ।

अणोवाहणग } वि [अनुपानत्क] जो जूता न
अणोवाहणय } पहिना हो ।

अणोसिय वि [अनुषित] जिसने वास न किया हो । अव्यवस्थित ।

अणोहंतर वि [अनोघन्तर] पार जाने के लिये असमर्थ ।

अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरंकुश ।

अणोहीण वि [अनवहीन] हीनता-रहित ।

अण्ण सक [भुज्] भोजन करना ।

अण्ण न [अन्य] दूसरा । °उत्थिय वि [°तिर्थिक, °यूथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी । °ग्गहण न [°ग्रहण] गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मुख-विकार । पुं. गान्धर्विक, गवैया । °धम्मिय वि [°धार्मिक] भिन्न धर्म वाला ।

अण्ण न [अन्न] नाज, चावल आदि धान्य । भक्ष्य पदार्थ । भक्षण, भोजन । °इलाय, °गिलाय वि [°ग्लायक] बासी अन्न को खानेवाला । °विहि पुंस्त्री [°विधि] पाक-कला ।

अण्ण न [अर्णस्] पानी ।

अण्ण वि [दे] आरोपित । खण्डित ।

°अण्ण देखो कण्ण = कर्ण ।

अण्णअ पुं [दे] तरुण । धूर्त । देवर ।

अण्णइअ वि [दे] तृप्त । सर्वार्थ-तृप्त ।

अण्णण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर ।

अण्णण्ण वि [अन्यान्य] और-और, अलग-अलग ।

अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे में, भिन्न स्थान में ।

अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान ।

अण्णत्थ देखो अण्णत्त ।

अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ ।

अण्णत्थ वि [अन्वर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला ।

अण्णमण्ण देखो अण्णण्ण = अन्योन्य ।

अण्णमय वि [दे] पुनरुक्त ।

अण्णय देखो अन्नय ।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में से कोई एक ।

अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय में ।

अण्णव पुं [अर्णव] समुद्र । संसार ।

अण्णव न [ऋणवत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त्त का नाम ।

अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन ।

अण्णह देखो अण्णत्त ।

अण्णह } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से,
अण्णहा } विपरीत रीति से । °भाव पुं उलटापन ।

अण्णहिं देखो अण्णत्त (षड्) ।

अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा ।

अण्णाइट्ठ वि [अन्वादिष्ट] जिसको आदेश दिया गया हो वह ।

अण्णाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] व्याप्त । पराधीन ।

अण्णाइस(अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा ।

अण्णाण न [अज्ञान] अज्ञान, मूर्खता । मिथ्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान। वि. ज्ञान-रहित, मूर्ख।

अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह।

अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित।

अण्णाय पुं [अन्याय] न्याय का अभाव।

अण्णाय वि [दे] आर्द्र।

अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय-विरुद्ध।

अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो।

अण्णारिच्छ वि [अन्यादृक्ष] दूसरे के जैसा।

अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा।

अण्णासय वि [दे] विस्तृत, बिछाया हुआ।

अण्णिय वि [अन्वित] युक्त।

अण्णिया स्त्री [दे] देखो अण्णी।

अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम। °उत्त पुं [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि।

अण्णी स्त्री [दे] देवर की स्त्री। पति की बहिन, ननद। फूफी, पिता की बहिन।

अण्णु } **अण्णुअ** } वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख।

अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में।

अण्णूण वि [अन्यून] अहीन, परिपूर्ण।

अण्णे सक [अनु + इ] अनुसरण करना।

अण्णेस सक [अनु + इष्] खोजना, तहकीकात करना। चाहना, वांछना। प्रार्थना करना।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] खोज, तहकीकात (प्राप)। प्रार्थना (आचा)। गृहस्थ से दी जाती भिक्षा का ग्रहण।

अण्णेसय वि [अन्वेषक] गवेषक।

अण्णोण्ण देखो अण्णुण्ण।

अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लंघित।

अण्ह सक [भुज्] भोजन करना। पालन करना। ग्रहण करना।

°अण्ह न [अहन्] दिवस,।

अण्हग } **अण्हय** } पुं [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण हिंसादि।

°अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ।

अतक्किय वि [अतर्कित] अचिन्तित, आकस्मिक। ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित।

अतड त्रि [अतट] छोटा किनारा।

अतण्हाअ वि[अतृष्णाक]तृष्णा-रहित,निःस्पृह।

अतर देखो अयर।

अतव पुं [अस्तव] अ-प्रशंसा, निन्दा।

अतसी देखो अयसी।

अतिउट्ट अक [अति + त्रुट्] खूब टूटना, टूट जाना। सब बन्धन से मुक्त होना।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] उल्लंघन करना। व्याप्त होना।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिक्रान्त। अनुगत, व्याप्त।

अतित्थ न [अतीर्थ] तीर्थ का अभाव। वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो। °सिद्ध वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतित्थसिद्धा य मरुदेवी'।

अतिहि देखो अइहि।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] अति-निबिड। क्रिवि. अत्यंत, बहुत।

अत्त देखो अप्प = आत्मन्। °लाभ पुं [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति।

अत्त वि [आर्त्त] पीड़ित, हैरान (कुमा)।

अत्त वि [आत्त] गृहीत। स्वीकृत। पुं. ज्ञानी मुनि।

अत्त वि [आप्त] ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी। रागद्वेष वर्जित। प्रायश्चित्तदाता गुरु। मुक्ति। एकान्त हितकर। प्राप्त।

अत्त वि [आत्र] दुःख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादक।

अत्तअ [अत्र] यहाँ, इस स्थान में। °भव वि [°भवत्] पूज्य, माननीय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्तअ देखो अच्चय = अत्यय।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] जिससे कर्म-बन्धन हो वह। पुं. आधाकर्म दोष।

अत्तट्ठ वि [आत्मार्थ] आत्मीय, स्वकीय। पुं. स्वार्थ।

अत्तट्ठिय वि [आत्मार्थिक] आत्मीय। जो अपने लिए किया गया हो।

अत्तण, अत्तणअ } देखो अप्प = आत्मन्। °केरक वि [आत्मीय] निजी।

अत्तणअ, अत्तणक } (शौ) वि [आत्मीय] स्वकीय।

अत्तणिज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय।

अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो।

अत्तमाण देखो आवत्त = आ + वृत्।

अत्तय पुं [आत्मज] पुत्र। °या स्त्री [°जा] पुत्री, लड़की।

अत्तव्व वि [अत्तव्य] भक्ष्य।

अत्ता स्त्री [दे] माता। सासू। फूफी। सखी।

°अत्ता देखो जत्ता।

अत्ताण देखो अत्त = आत्मन्।

अत्ताण वि [अत्राण] शरण-रहित, रक्षक-वर्जित। पुं. कन्धे पर लाठी रखकर चलनेवाला मुसाफिर। फटे-टूटे कपड़े पहनकर मुसाफिरी करनेवाला यात्री।

अत्ति पुं [अत्रि] इस नाम का एक ऋषि।

अत्ति स्त्री [अर्त्ति] दुःख। °हर वि [°हर] दुःख का नाश करनेवाला।

अत्तिहरी स्त्री [दे] दूती।

अत्तीकर सक [आत्मी + कृ] अपने अधीन करना, वश करना।

अत्तुक्करिस, अत्तुक्कोस } पुं [आत्मोत्कर्ष] अभिमान।

अत्तेय पुं [आत्रेय] अत्रि ऋषि का पुत्र। एक जैन मुनि।

अत्तो अ [अतस्] इससे, इस हेतु से। यहां से।

अत्थ देखो अट्ठ = अर्थ। °जोणि स्त्री [°योनि] धनोपार्जन का उपाय, साम, दाम, दण्ड रूप अर्थ-नीति। °णय पुं [°नय] शब्द छोड़ अर्थ को ही मुख्य वस्तु माननेवाला पक्ष। °सत्थ न [शास्त्र] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र। °वइ पुं [°पति] धनी। कुबेर। °वाय पुं [°वाद] गुणवर्णन। दोष-निरूपण। गुण-वाचक शब्द। दोष-वाचक शब्द। °वि वि [°वित्] अर्थ का जानकर। °सिद्ध वि प्रभूत धनवाला। पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव। °लिय न [°लीक] धन के लिए असत्य बोलना। °लोयण न [°लोचन] पदार्थ का सामान्य ज्ञान। °लोयण न [°लोकन] पदार्थ का निरीक्षण।

अत्थ पुं [अस्त] जहां सूर्य अस्त होता है वह पर्वत। मेरु पर्वत। वि. अविद्यमान। °गिरि पुं अस्ताचल। °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल। °चल पुं अस्तगिरि।

अत्थ [अस्त्र] हथियार।

अत्थ सक [अर्थय्] याचना करना, प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना।

अत्थ अक [स्था] बैठना।

अत्थ, अत्थं } देखो अत्त = अत्र।

अत्थंडिल वि [अस्थण्डिल] साधुओं के रहने के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त स्थान।

अत्थकिरिआ स्त्री [अर्थक्रिया] वस्तु का व्यापार, पदार्थ से होनेवाली क्रिया।

अत्थक्क न [दे] अकाण्ड, अकस्मात्, बेसमय। वि. अखिन्न। क्रिवि. अनवरत, हमेशा।

अत्थग्घ वि [दे] मध्य-वर्ती, बीच का। अगाध, गंभीर। न. लम्बाई, आयाम। स्थान, जगह।

अत्थणिऊर पुंन [अर्थनिपूर] देखो अच्छ-णिउर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थणिऊरंग पुंन [अर्थनिपूराङ्ग] देखो अच्छणिउरंग।

अत्थत्थि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छावाला।

अत्थम अक [अस्तम् + इ] अस्त होना, अदृश्य होना।

अत्थयारिआ स्त्री [दे] सखी।

अत्थर सक [आ + स्तृ] बिछाना, शय्या करना, पसारना।

अत्थरय वि [आस्तरक] आच्छादन करनेवाला। पुं. बिछौने के ऊपर का वस्त्र।

अत्थरय वि [अस्तरजस्क] शुद्ध।

अत्थवण देखो अत्थमण।

अत्थसिद्ध पुं [अर्थसिद्ध] दशमी तिथि।

अत्था देखो अट्ठा = आस्था।

अत्था } सक [अस्ताय्] अस्त होना,
अत्थाअ } डूब जाना, अदृश्य होना।

अत्थाअ वि [अस्तमित] डूबा हुआ।

अत्थाइया स्त्री [दे] गोष्ठी-मण्डप।

अत्थाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान।

अत्थाणिय वि [अस्थानिन्] गैर-स्थान में लगा हुआ।

अत्थाणी स्त्री [आस्थानी] सभा-स्थान।

अत्थाणीअ वि [आस्थानीय] सभा-संबन्धी।

अत्थाम वि [अस्थामन्] निर्बल।

अत्थार पुं [दे] सहायता।

अत्थारिय पुं [दे] नौकर, कर्मचारी।

अत्थावग्गह देखो अत्थुग्गह।

अत्थावत्ति स्त्री [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान।

अत्थाह वि [अस्ताघ] थाह-रहित, गंभीर। नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमें डूब सके इतना गहरा जलाशय। पुं. अतीत चौबीसी में भारत में समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थंकर-देव।

अत्थाह वि [दे] देखो अत्थग्घ।

अत्थि वि [अर्थिन्] याचक। धनी, मालिक, स्वामी। गरजू, चाहनेवाला।

अत्थि न [अस्थि] हाड़, हड्डी।

अत्थि अ [अस्ति] सत्त्व-सूचक अव्यय है, प्रदेश, अवयव। °अवत्तव्व वि [अवक्तव्य] सप्तभङ्गी का पाँचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ। °काय पुं प्रदेशों का—अवयवों का समूह। °णत्थ-वत्तव्व वि [°नास्त्यवक्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ। °त्त न [°त्व] विद्यमानता। °त्ता स्त्री [°ता] हयाती। °त्तिणय पुं [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय। °नत्थि वि [°नास्ति] सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु। °नत्थिप्पवाय न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व।

अत्थिक्क न [आस्तिक्य] आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास।

अत्थिय देखो अत्थि = अर्थिन्।

अत्थिय वि [अर्थिक] धनवान्।

अत्थिय न [अस्थिक] हाड़। पुं वृक्ष-विशेष। न. बहु बीजवाला फल-विशेष।

अत्थिय वि [आस्तिक] आत्मा परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखनेवाला।

अत्थिर देखो अथिर।

अत्थीकर सक [अर्थी + कृ] प्रार्थना करना। याचना करना।

अत्थु सक [आ + स्तृ] बिछाना, शय्या करना।

अत्थुअ वि [आस्तृत] बिछाया हुआ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

अत्थुग्गह पुं [अर्थावग्रह] इन्द्रियाँ और मन द्वारा होनेवाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान ।
अत्थुग्गहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय ।
अत्थुड वि [दे] छोटा ।
अत्थुरण न [दे. आस्तरण] बिछौना ।
अत्थुरिय वि [दे. आस्तृत] बिछाया हुआ ।
अत्थुवड न [दे] मिलावाँ वृक्ष का फल ।
अत्थेक्क वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित ।
अत्थोग्गह देखो अत्थुग्गह ।
अत्थोग्गहण देखो अत्थुग्गहण ।
अत्थोडिय वि [दे] आकृष्ट ।
अत्थोभय वि [अस्तोभक] 'उत', 'वै' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित ।
अत्थोवग्गह देखो अत्थुग्गह ।
अथक्क न [दे] अकाण्ड, अनवसर, अकस्मात् । (षड्) । वि. फैलनेवाला ।
अथव्वण पुं [अथर्वण] चौथा वेद-शास्त्र ।
अथिर वि [अस्थिर] चंचल, अनित्य, शिथिल, निर्बल, मजबूती से नहीं बैठा हुआ । °णाम न [°नामन्] नाम कर्म का एक भेद ।
अद सक [अद्] खाना ।
अदंसण देखो अद्दंसण ।
अदंसण पुं [दे] चोर, डाकू ।
अदंसिया स्त्री [अदंशिका] एक प्रकार की मीठी चीज ।
अदण न [अदन] भोजन ।
अदत्त वि नहीं दिया हुआ । °हार वि चोर । °हारि वि [°हारिन्] चोर । °दाण न [°दान] चोरी । °दाणवेरमण न [°दान-विरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत ।
अदन्न देखो अद्दण्ण ।
अदब्भ वि [अदभ्र] बहुत ।
अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर ।
अदिइ देखो अदइ ।
अदिस्स देखो अद्दिस्स ।
अदीण वि [अदीन] दीनता-रहित । °सत्तु पुं [°शत्रु] हस्तिनापुर का एक राजा ।
अदु अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, इससे । अथवा, या अधिकारान्तर का सूचक ।
अदुत्तरं अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, बाद ।
अदुय न [अद्रुत] धीरे-धीरे । °बंधण न [°बन्धन] दीर्घकाल के लिए बन्धन ।
अदुव, अदुवा अ [दे] या । और ।
अदोलि, अदोलिर वि [अदोलिन्] स्थिर ।
अद्द वि [आर्द्र] गीला, अकठिन । पुं. इस नाम का एक राजा । एक प्रसिद्ध राजकुमार और पीछे से जैन मुनि । वि. आर्द्रराजा के वंशज । नगर-विशेष । °कुमार पुं एक राजकुमार और बाद में जैन मुनि । °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] कन्द-विशेष, नागरमोथा । °ामलग न [°ामलक] हरा आमला । पीलु-वृक्ष की कली । शण वृक्ष की कली । °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] कमल कौआ ।
अद्द पुं [अब्द] मेघ, वर्षा । संवत् ।
अद्द पुं [अर्द] आकाश ।
अद्द पुंन [दे] परिहास । वर्णन ।
अद्द सक [अर्द्] पीटना ।
अद्दइअ न [अद्वैत] भेद का अभाव । वि. भेदरहित ब्रह्म वगैरह ।
अद्दइज्ज वि [आर्द्रीय] आर्द्रकुमार-सम्बन्धी । इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' का एक अध्ययन ।
अद्दंसण न [अदर्शन] दर्शन का निषेध, नहीं देखना । वि. परोक्ष, अन्धा । अधम निद्रा वाला । °भूअ, °हूय वि [°भूत] जो अदृश्य हुआ हो ।
अद्दण, अद्दण्ण वि [दे] व्याकुल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्दव वि [आद्रव] गला हुआ ।
अद्दव्व न [अद्रव्य] अवस्तु ।
अद्दह सक [आ + द्रह्] उबालना, पानी-तैल वगैरह को खूब गरम करना ।
अद्दहिय वि [आहित] रखा हुआ, स्थापित ।
अद्दा स्त्री [आर्द्रा] नक्षत्र-विशेष, छन्द-विशेष ।
अद्दाअ पुं [दे] दर्पण । °पसिण पुं [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे दर्पण में देवता का आगमन होता है । °विज्जा स्त्री [°विद्या] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे बीमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित करने से वह नीरोग होता है ।
अद्दाइअ वि [दे] आदर्शवाला, आदर्श से पवित्र ।
अद्दाग [दे] देखो अद्दाअ ।
अद्दि पुं [अद्रि] पर्वत ।
अद्दिट्ठ वि [अदृष्ट] नहीं देखा हुआ, दर्शन का अविषय ।
अद्दिय वि [अर्दित] पीटा हुआ, पीड़ित ।
अद्दिस्स वि [अदृश्य] देखने के अयोग्य या अशक्य ।
अद्दीण वि [अद्रीण] अक्षुब्ध, निर्भीक ।
अद्दीण देखो अदीण ।
अद्दुमाअ वि [दे] पूर्ण ।
अद्देस वि [अदृश्य] देखने के अशक्य ।
अद्देसीकारिणी स्त्री [अदृश्यीकारिणी] अदृश्य बनानेवाली विद्या ।
अद्देस्सीकरण वि [अदृश्यीकरण] अदृश्य करना, अदृश्य करनेवाली विद्या ।
अद्दोहि वि [अद्रोहिन्] द्रोह-रहित, द्वेषवर्जित ।
अद्ध पुन [अर्ध] आधा, अंश । °करिस पुं [°कर्ष] परिमाण-विशेष, फल का आठवाँ भाग । °कुडव, °कुलव पुं एक प्रकार का धान्य का परिमाण । °क्खेत्त न [°क्षेत्र] एक अहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करनेवाला नक्षत्र । °खल्ला स्त्री [°खल्वा] एक प्रकार का जूता । °घडय पुं [°घटक] आधा परिमाणवाला घड़ा, छोटा घड़ा । °चंद पुं [°चन्द्र] आधा चन्द्र, गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना । न एक हथियार । अर्ध चन्द्र के आकारवाले सोपान । एक तरह का बाण । °चक्कवाल न [°चक्रवाल] गति-विशेष । °चक्कि पुं [°चक्रिन्] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव । °च्छट्ठ, °छट्ठ वि [°षष्ठ] साढ़े पाँच । °ट्ठम वि [°ाष्टम] साढे सात । °णाराय न [°नाराच] चौथा संहनन, शरीर के हाड़ों की रचना-विशेष । °णारीसर पुं [°नारीश्वर] महादेव । °तइय वि [°तृतीय] ढाई । °तेरस वि [°त्रयोदश] साढ़े बारह । °तेवन्न वि [°त्रिपञ्चाश] साढ़े बावन । °द्ध वि [°ार्ध] चौथा भाग । °नवम वि [°नवम] साढ़े आठ । °नाराय देखो °णाराय । °पंचम वि [°पञ्चम] साढ़े चार । °पलिअंक वि [पर्यङ्क] आसन-विशेष । °पहर पुं [°प्रहर] ज्यौतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग । °बब्बर पुं [°बर्बर] देश-विशेष । °मागहा, °ही स्त्री [°मागधी] प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिसमें मागधी भाषा के भी कोई नियम का अनुसरण किया गया है । °मास पुं [°मास] पक्ष । पनरह दिन । °मासिय वि [°मासिक] पाक्षिक, पक्षसम्बन्धी । °यंद देखो °चंद । °रज्जिय वि [°राज्यिक] राज्य का आधा हिस्सेदार । °रत्त पुं [°रात्र] मध्य रात्रि का समय, निशीथ । °वेयाली स्त्री [°वेताली] विद्या-विशेष । °संकासिया स्त्री [°सांकाशियका] एक राज-कन्या का नाम । °सम न एक वृत्त । °हार पुं नवसरा हार, इस नाम का एक द्वीप-विशेष । °हारभद्द [°हारभद्र] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव । °हारमहाभद्द पुं [हारमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ । °हारमहावर पुं अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव । °हारवर पुं द्वीप-विशेष, समुद्र-विशेष, उनका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिष्ठायक देव। °हारवरभद्द पुं [°हारवरभद्र] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव। °हारवरमहावर पुं अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। °हारोभास पुं [°हारावभास] द्वीप-विशेष, समुद्र-विशेष। हारोभासभद्द पुं [°हारावभासभद्र] अर्धहारावभास नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव। °हारोभासमहाभद्द पुं [°हारावभासमहाभद्र] पुं पूर्वोक्त ही अर्थ। °हारोभासमहावर पुं [°हारावभासमहावर] अर्धहारावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। °हारोभासवर पुं [°हाराभासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °ाढ़य पुं [°ाढ़क] आढ़क का आधा भाग।

अद्ध पुं [अध्वन्] रास्ता।

अद्धंत पुं [दे] पर्यन्त, अन्त भाग, पुं. ब. कतिपय।

अद्धक्खण न [दे] प्रतीक्षा करना, परीक्षा करना।

अद्धक्खिअ न[दे]संज्ञा करना, इशारा करना।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आंख वाला।

अद्धजंघा } स्त्री [दे. अर्धजङ्घा] मोचक
अद्धजंघी } नामक जूता, मोजड़ी।

अद्धद्धा स्त्री [दे. अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग।

अद्धपेडा स्त्री [अर्धपेटा] सन्दूक के अर्ध भाग के आकारवाली गृह-पंक्ति में भिक्षाटन।

अद्धर पुं [अध्वर] यज्ञ। याग।

अद्धर वि [दे] प्रच्छन्न। गुप्त।

अद्धविआर न [दे]मण्डन, भूषा। मंडल, छोटा मंडल।

अद्धा स्त्री [दे. अद्धा] समय, संकेत, लब्धि। अ. वस्तुतः, प्रत्यक्ष, दिवस, रात्रि। °काल पुं सूर्य आदि की क्रिया (परिभ्रमण) से व्यक्त होनेवाला समय। °छेय पुं [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना। °मीसय न [°मिश्रक] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा। मीसिया स्त्री [°मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °समय पुं सर्व-सूक्ष्म काल।

अद्धाण पुं [अध्वन्] मार्ग। °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग, °सीसय न [°शीर्षक] जहाँ पर संपूर्ण साथ के लोग आगे जाने के एकत्र हों वह मार्ग-स्थान।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक।

अद्धासिय वि [अध्यासित] अधिष्ठित, आश्रित, आरूढ।

अद्धि देखो इड्ढि।

अद्धिइ स्त्री [अधृति] धीरज का अभाव।

अद्धुइअ वि [अर्धोदित] थोड़ा कहा हुआ।

अद्धुग्घाड वि [अर्धोद्घाट] आधा खुला।

अद्धुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन।

अद्धुत्त वि [अर्धोक्त] थोड़ा कहा हुआ।

अद्धुव वि [अध्रुव]चंचल, विनश्वर, अनियत।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] द्विधा-भूत, खण्डित। क्रिवि॰ आधा-आधा जैसा हो।

अद्धोरु } देखो अड्ढोरुग।
अद्धोरुग }

अद्धोवमिय वि [अद्धौपम्य, अद्धौपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल।

अध अ [अधस्] नीचे। अध (शौ) अ [अथ] अब, बाद।

अधइं(शौ)[अथकिम्]हाँ, और क्या, अवश्य।

अधं अ [अधस्] नीचे।

अधम देखो अहम।

अधमण्ण वि [अधमर्ण] करजदार।

अधम्म पुं [अधर्म] पाप-कार्य, निषिद्ध कर्म,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनीति, एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरह को स्थित करने में सहायता पहुँचाती है। वि. धर्म-रहित, पापी। °केउ पुं [°केतु] पापिष्ठ। °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] पाप का उपदेश देनेवाला। °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो। °बुद्धि वि पापी, पापिष्ठ।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मिष्ठ] धर्म को नहीं करनेवाला। महा-पापी।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] अधर्म-प्रिय।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मीष्ट] पापियों का प्यारा।

अधर देखो अहर।

अधवा (शौ) देखो अहवा।

अधा स्त्री [अधस्] अधो-दिशा।

अधि देखो अहि = अधि।

अधिकरण देखो अहिगरण।

अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादा।

अधिगम देखो अहिगम।

अधिगरण देखो अहिगरण।

अधिगरणिया देखो अहिगरणिया।

अधिगार देखो अहिगार।

अधिण्ण (अप) वि [अधीन] आयत्त, परवश।

अधिमासग पुं [अधिमासक] अधिक मास।

अधिरोविअ वि [अधिरोपित] आरोपित।

अधीगार देखो अहिगार।

अधीय देखो अहीय।

अधीस वि [अधीश] नायक।

अधुव देखो अद्धुव।

अधो देखो अहो = अधस्।

अनालंफ (चूपै) वि [अनारम्भ] पाप-रहित।

अनालंफ(चूपै) वि[अनालम्भ] अहिंसक, दयालु

अनिगिण देखो अणगिण।

अनिदाया } देखो अणिदा।
अनिद्दाया }

अनिमित्ती स्त्री लिपि-विशेष।

अनियमिय वि [अनियमित] अव्यवस्थित। असंयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करनेवाला।

अनिहारिम देखो अणोहारिम।

अनु (अप) देखो अण्णहा।

अनुचिट्ठिय देखो अणुट्ठिय।

अन्नओ। °हुत्त क्रिवि [°मुख] दूसरी तरफ।

अन्नत्थं देखो अण्णत्थ।

अन्नय पुं [अन्वय] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूम की सत्ता, नियमित सम्बन्ध।

अन्ना स्त्री [दे] जननी।

अन्नाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] आक्रान्त।

अन्नाहुत्त वि [दे] पराङ्मुख।

अन्नि वि [अन्यदीय] परकीय।

अन्नियसुय पुं [अन्निकासुत] एक विख्यात जैन मुनि।

अन्नुत्ति स्त्री [अन्योक्ति] साहित्य-प्रसिद्ध एक अलङ्कार।

अन्नुमन्न देखो अण्णुण्ण।

अप स्त्री. ब. [अप्] पानी। °काय. पुं पानी के जीव।

अपइट्ठाण देखो अप्पइट्ठाण।

अपइट्ठिअ पुं [अप्रतिष्ठित] नरक-स्थान विशेष। देखो अप्पइट्ठिअ।

अपएस वि [अप्रदेश] निरंश। पुं. खराब स्थान।

अपंग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग। तिलक। हीन अंग वाला।

अपंडिअ वि [दे] अ-नष्ट, विद्यमान।

अपकरिस पुं [अपकर्ष] ह्रास।

अपगंड वि [अपगण्ड] निर्दोष। न. फेन।

अपचय पुं अपकर्ष, हीनता।

अपच्च देखो अवच्च।

अपच्छिम वि [अपश्चिम] अन्तिम।

अपज्जत्त } वि [अपर्याप्त] अपर्याप्त,
अपज्जत्तग } असमर्थ। पर्याप्ति (आहारादि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रहण करने की शक्ति) से रहित। °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद।

अपडिच्छिर वि [दे] जड़ बुद्धि।

अपडिण्ण वि [अप्रतिज्ञ] प्रतिज्ञारहित, निश्चय रहित। राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित।

अपडिपोग्गल वि [अप्रतिपुद्गल] दरिद्र।

अपडिवाइ देखो अप्पडिवाइ।

अपडिहट्टु अ [अप्रतिहृत्य] न देकर।

अपडिहय देखो अप्पडिहय।

अपडुप्पण्ण वि [अप्रत्युत्पन्न] अ-विद्यमान। प्रतिपत्ति में अ-कुशल।

अपभासिय देखो अवभासिय = अपभाषित।

अपमाण न [अप्रमाण] असत्य। वि. ज्यादा।

अपय वि [अपद] पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरह पैर रहित वस्तु। पुं. मुक्तात्मा। सूत्र का एक दोष।

अपय स्त्री [अप्रज] सन्तानरहित।

अपर देखो अवर। वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य।

अपरच्छ वि [अपराक्ष] परोक्ष।

अपरद्ध देखो अवरज्झ।

अपरंतिया स्त्री [अपरान्तिका] छन्द-विशेष।

अपराइय वि [अपराजित] अ-परिभूत। पुं. सातवें बलदेव के पूर्वजन्म का नाम। भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव। उत्तम-पंक्ति के देवों की एक जाति। भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र। एक महाग्रह। अनुत्तर देवलोक का एक विमान—देवावास। रुचक पर्वत का एक शिखर। जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार।

अपराइया स्त्री [अपराजिता] विदेह-वर्ष की एक नगरी। आठवें बलदेव की माता। अंगारक ग्रह की एक पटरानी का नाम। एक दिशा-कुमारी देवी। ओषधि-विशेष। अञ्जनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी।

अपराजिय देखो अपराइय।

अपराजिया देखो अवराइया।

अपराजिया स्त्री [अपराजिता] भगवान मल्लिनाथ की दीक्षा-शिविका। पक्ष की दशवीं रात।

अपरिग्गहा स्त्री [अपरिग्रहा] वेश्या।

अपरिग्गहिआ स्त्री [अपरिगृहीता] वेश्या, कन्या वगैरह अविवाहिता स्त्री। विधवा। घरदासी। पनहारी। देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या।

अपरिणय वि [अपरिणत] रूपान्तर को अप्राप्त। जैन साधु की भिक्षा का एक दोष।

अपरिसेस वि [अपरिशेष] सकल, निःशेष।

अपरिहारिय वि [अपरिहारिक] दोषों का परिहार नहीं करनेवाला। पुं. जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ।

अपवग्ग पुं [अपवर्ग] मुक्ति।

अपविद्ध वि प्रेरित। न. गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन करके तुरन्त ही भाग जाना।

अपह वि [अप्रभ] निस्तेज।

अपहत्थ देखो अवहत्थ।

अपहारि वि [अपहारिन्]अपहरण करनेवाला।

अपहिय वि [अपहृत] छीना हुआ।

अपाइय वि [अपात्रित] भाजन-वर्जित।

अपाउड वि [अपावृत] नहीं ढका हुआ, नग्न।

अपादाण न [अपादान] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है।

अपाण न [अपान] पान का अभाव। पानी जैसा ठंडा पेय वस्तुविशेष। पुंन. अपान वायु। गुदा। वि. निर्जल (उपवास)।

अपायावगम पुं [अपायापगम] जिनदेव का एक अतिशय।

अपार वि पार-रहित, अनन्त।

अपारमग्ग पुं [दे] विश्रान्ति।

अपाव वि [अपाप] पाप-रहित। न. पुण्य।

अपावा स्त्री [अपापा] नगरी-विशेष, जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था।

अपिट्ट वि [दे] पुनरुक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपुणबंधग } वि [अपुनर्बन्धक] फिर से
अपुणबंधय } उत्कृष्ट कर्मबन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करनेवाला।

अपुणब्भव पुं [अपुनर्भव] फिर से नहीं होना। वि. मुक्ति-प्रद।

अपुणब्भाव वि [अपुनर्भाव] फिर से नहीं होनेवाला।

अपुणभव देखो अपुणब्भव।

अपुणरागम पुं [अपुनरागम] मुक्त आत्मा। मोक्ष।

अपुणरावत्तग } पुं [अपुनरावर्तक]
अपुणरावत्तय } फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त। आत्मा। मुक्ति।

अपुणरावत्ति पुं [अपुनरावर्तिन्] मुक्त आत्मा।

अपुणराविति पुं [अपुनरावृत्ति] मोक्ष।

अपुणरुत्त वि [अपुनरुक्त] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित।

अपुणागम देखो अपुणरागम।

अपुणागमण न [अपुनरागमन] फिर से नहीं आना। फिर से अनुत्पत्ति।

अपुण्ण वि [दे] आक्रान्त।

अपुत्त } वि [अपुत्र] पुत्र-रहित। स्वजन-
अपुत्तिय } रहित, निर्मम, निःस्पृह।

अपुम न [अपुंस्] नपुंसक।

अपुल्ल देखो अप्फुल्ल।

अपुव्व वि [अपूर्व] नवीन। अद्भुत। असाधारण। °करण न आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम। आठवाँ गुणस्थानक।

अपूय } पुं [अपूप] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ,
अपूव } पूड़ी।

अपेक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना।

अपेच्छ वि [अप्रेक्ष्य] देखने के अशक्य। देखने के अयोग्य।

अपेय वि पीने के अयोग्य, मद्य आदि।

अपेय वि [अपेत] गया हुआ, नष्ट।

अपेहय वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला।

अपोरिसिय } वि [अपौरुषिक] पुरुष से
अपोरिसीय } ज्यादा परिमाणवाला, अगाध।

अपोरिसीय वि [अपौरुषेय] पुरुष से नहीं बनाया हुआ, नित्य।

अपोह सक [अप + ऊह्] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना।

अपोह पुं [अपोह] निश्चय-ज्ञान। भिन्नता।

अप्प देखो अत्त = आप्त।

अप्प वि [अल्प] थोड़ा। अभाव।

अप्प पुं [आत्मन्] आत्मा, जीव, चेतन। निज, शरीर। स्वभाव, स्वरूप। °घाइ वि [°घातिन्] आत्महत्या करनेवाला। °छंद वि [°च्छन्द] स्वच्छन्दी। °ज्ज वि [°ज्ञ] आत्मज्ञ। स्वाधीन। °ज्जोइ पुं [°ज्योतिस्] ज्ञानस्वरूप। °ण्णु वि [°ज्ञ] आत्म-ज्ञानी। °वस वि [वश] स्वतन्त्र। °वह पुं [°वध] आत्म-हत्या, अपघात। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं माननेवाला।

अप्प पुं [दे] पिता।

अप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना।

अप्पआस देखो अप्पगास।

अप्पआस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। अप्पआसइ (षड्)।

अप्पइट्ठाण पुंन [अप्रतिष्ठान] मुक्ति। सातवीं नरक-भूमि का बिचला आवास।

अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] अप्रतिबद्ध। अशरीरी। देखो अपइट्ठिअ।

अप्पउलिय वि [अपक्वौषधि] नहीं पकी हुई फल-फलहरी।

अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-गमक, अ-निश्चायक।

अप्पंभरि वि [आत्मम्भरि] स्वार्थी।

अप्पकंप वि [अप्रकम्प] स्थिर।

अप्पकेर वि [आत्मीय] निजी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पक्क वि [अपक्व] कच्चा ।
अप्पग देखो अप्प ।
अप्पगास पुं [अप्रकाश] अन्धकार ।
अप्पगुत्ता स्त्री [दे] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष ।
अप्पजाणुअ वि[आत्मज्ञ]आत्मा का जानकार ।
अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] मूर्ख ।
अप्पज्झ वि [दे] स्वाधीन ।
अप्पडिआर वि [अप्रतिकार] उपाय-रहित ।
अप्पडिकंटय वि [अप्रतिकण्टक] प्रतिस्पर्धि-रहित ।
अप्पडिकम्म वि [अप्रतिकर्मन्] संस्काररहित ।
अप्पडिक्कंत वि [अप्रतिक्रान्त] दोष से अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह ।
अप्पडिकुट्ठ वि [अप्रतिक्रुष्ट] अनिवारित ।
अप्पडिचक्क वि [अप्रतिचक्र] असमान ।
अप्पडिण्ण देखो अपडिण्ण ।
अप्पडिबंध पुं [अप्रतिबन्ध] प्रतिबन्ध का अभाव । प्रतिबन्ध-रहित ।
अप्पडिबद्ध देखो अपडिबद्ध ।
अप्पडिबुद्ध वि [अप्रतिबुद्ध] अ-जागृत । कोमल ।
अप्पडिम वि [अप्रतिम] असाधारण, अनुपम ।
अप्पडिरूव वि [अप्रतिरूप] ऊपर देखो ।
अप्पडिलद्ध वि [अप्रतिलब्ध] अप्राप्त ।
अप्पडिलेस्स वि [अप्रतिलेश्य] असाधारण मनो-बलवाला ।
अप्पडिलेहण न [अप्रतिलेखन] अनवलोकन ।
अप्पडिलेहिय वि [अप्रतिलेखित] अ-पर्यवेक्षित, अनवलोकित, नहीं देखा हुआ ।
अप्पडिलोम वि [अप्रतिलोम] अनुकूल ।
अप्पडिवरिय पुं [अप्रतिवृत्त] प्रदोष काल ।
अप्पडिवाइ वि [अप्रतिपातिन्] नित्य । अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को बिना उत्पन्न किये नहीं जाता ।
अप्पडिहत्थ वि [अप्रतिहस्त] अद्वितीय ।
अप्पडिहय वि [अप्रतिहत] किसी से नहीं रुका हुआ । अखण्डित, अबाधित । विसंवाद-रहित ।
अप्पडीबद्ध देखो अपडिबद्ध ।
अप्पड्ढिय वि [अल्पर्द्धिक] अल्प वैभववाला ।
अप्पण न [अर्पण] उपहार, दान । प्रधान रूप से प्रतिपादन ।
अप्पण देखो अप्प = आत्मन् ।
अप्पण वि [आत्मीय] स्वकीय ।
अप्पणा अ [स्वयम्] खुद ।
अप्पणिज्ज } वि [आत्मीय] स्वकीय ।
अप्पणिज्जिय }
अप्पणो अ [स्वयम्] आप, निज ।
अप्पण्ण देखो अक्कम = आ+क्रम् ।
अप्पण्णुअ देखो अप्पजाणुअ = आत्मज्ञ, अल्पज्ञ ।
अप्पतक्किय वि [अप्रतर्कित] अवितर्कित, असंभावित ।
अप्पत्त पुंन [अपात्र] अयोग्य, नालायक, कुपात्र । वि. आधार-रहित, भाजन-शून्य ।
अप्पत्त वि [अपत्र] पत्ता से रहित (वृक्ष) । पांख से रहित (पक्षी) ।
अप्पत्त वि [अप्राप्त] अलब्ध । °कारि वि [°कारिन्] वस्तु का बिना स्पर्श किये ही (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करनेवाला ।
अप्पत्ति स्त्री [अप्राप्ति] नहीं पाना ।
अप्पत्तिय पुंन [अप्रत्यय] अविश्वास । अश्रद्धा ।
अप्पत्तिय न [अप्रीति] प्रेम का अभाव । क्रोध । मानसिक पीड़ा । अपकार ।
अप्पत्तिय वि [अपात्रिक] पात्र-रहित, आधार-वर्जित ।
अप्पत्थ वि [अप्रार्थ्य] प्रार्थना करने के अयोग्य । नहीं चाहने लायक ।
अप्पत्थण क [अप्रार्थन] अयाञ्चा । अनिच्छा ।
अप्पत्थिय वि [अप्रार्थित] अयाचित । अनभिलषित । °पत्थय, °पत्थिय वि [°प्रार्थक, °र्थिक] मरणार्थी ,मौत को चाहनेवाला ।
अप्पत्थुय वि [अप्रस्तुत] प्रसंग के अनुपयुक्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयान्तर ।

अप्पदुट्ठ वि [अप्रद्विष्ट] जिसपर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर ।

अप्पदुस्समाण वकृ [अप्रद्विष्यत्] द्वेष नहीं करता हुआ ।

अप्पप्प वि [अप्राप्य] प्राप्त करने के अशक्य ।

अप्पभाय न [अप्रभात] बड़ी सबेर । वि. कान्ति-वर्जित ।

अप्पभु वि [अप्रभु] असमर्थ । पुं. मालिक से भिन्न, नौकर वगैरह ।

अप्पमज्जिय वि [अप्रमार्जित] साफ नहीं किया हुआ ।

अप्पमत्त वि [अप्रमत्त] सावधान । °संजय पुंस्त्री [°संयत] प्रमाद-रहित मुनि । न. सातवाँ गुण-स्थानक ।

अप्पमाण देखो अपमाण ।

अप्पमाय पुं [अप्रमाद] प्रमाद का अभाव ।

अप्पमेय वि [अप्रमेय] जिसका माप न हो सके, अनन्त । जिसका ज्ञान न हो सके । प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह ।

अप्पय देखो अप्प ।

अप्परिचत्त वि [अपरित्यक्त] नहीं छोड़ा हुआ ।

अप्परिवडिय वि [अपरिपतित] अनष्ट, विद्यमान ।

अप्पलहुअ वि [अप्रलघुक] महान्, बड़ा ।

अप्पलीण वि [अप्रलीन] असंबद्ध, सङ्ग-वर्जित ।

अप्पलीयमाण वकृ [अप्रलीयमान] आसक्ति नहीं करता हुआ ।

अप्पवित्त वि [अप्रवृत्त] प्रवृत्ति-रहित ।

अप्पवित्ति स्त्री [अप्रवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव ।

अप्पसंत वि [अप्रशान्त] अशान्त, कुपित ।

अप्पसंसणिज्ज वि [अप्रशंसनीय] प्रशंसा के अयोग्य ।

अप्पसज्झ वि [अप्रसह्य] सहन करने के अयोग्य ।

अप्पसण्ण वि [अप्रसन्न] उदासीन ।

अप्पसत्थ वि [अप्रशस्त] असुन्दर ।

अप्पसत्तिय वि [अल्पसत्त्विक] अल्प सत्त्ववाला ।

अप्पसारिय वि [अप्रसारिक] निर्जन (स्थान) ।

अप्पहवंत वकृ [अप्रभवत्] समर्थ नहीं होता हुआ, नहीं पहुँच सकता हुआ ।

अप्पहिय वि [अप्रथित] अविस्तृत । अप्रसिद्ध ।

अप्पाअप्पि स्त्री [दे] औत्सुक्य ।

अप्पाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित ।

अप्पाउय वि [अल्पायुष्क] थोड़ी आयुवाला ।

अप्पाउरण वि [अप्रावरण] नग्न । न. वस्त्र का अभाव । वस्त्र नहीं पहनने का नियम ।

अप्पाण देखो अप्प = आत्मन् । °रक्खि वि [°रक्षिन्] आत्मा की रक्षा करनेवाला ।

अप्पाबहु न [अल्पबहुत्व] न्यूनाधिकता ।

अप्पावय वि [अप्रावृत] वस्त्ररहित । बन्द नहीं किया हुआ ।

अप्पाविय वि [अर्पित] दिया हुआ ।

अप्पाह सक [सं + दिश्] संदेश देना, खबर पहुँचाना ।

अप्पाह सक [आ + भाष्] संभाषण करना ।

अप्पाह सक [अधि + आपय्] पढ़ाना-सिखाना । उपदेश देना । संदेश देना ।

अप्पाहणी स्त्री [दे] संदेश, समाचार ।

अप्पाहण्ण न [अप्राधान्य] गौणता ।

अप्पिड्ढिय वि [अल्पर्द्धिक] अल्प संपत्तिवाला ।

अप्पिण सक [अर्पय्] अर्पण करना ।

अप्पिणिच्चिय वि [आत्मीय] निजी ।

अप्पिय वि [अर्पित] दिया हुआ, भेंट किया हुआ । विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट ।

अप्पिय वि [अप्रिय] अप्रीतिकर । न. मन का दुःख । चित्त की शंका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पीइ स्त्री [अप्रीति] अप्रेम, अरुचि ।
अप्पीकय वि [आत्मीकृत] आत्मा से संबद्ध ।
अप्पुट्ठ वि [अस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ, असंयुक्त ।
अप्पुट्ठ वि [अपृष्ट] नहीं पूछा हुआ ।
अप्पुण्ण वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण ।
अप्पुल्ल वि [आत्मीय] आत्मा में उत्पन्न ।
अप्पुव्व देखो अपुव्व ।
अप्पेयव्व अप्प = अर्पय् का कृ. ।
अप्पोलि स्त्री [अप्रज्वलिता] कच्ची फल-फुल्हरी ।
अप्पोल्ल वि [दे] नक्कर ।
अप्फडिअ वि [आस्फालित] आहत ।
अप्फाल सक [आ + स्फालय्] हाथ से आघात करना । पीटना । ताल ठोकना ।
अप्फालिय वि [आस्फालित] हाथ से ताडित, आहत । वृद्धि-प्राप्त, उन्नत ।
अप्फुंद सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना । जाना ।
अप्फुडिय देखो अफुडिय ।
अप्फुण्ण वि [दे. आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ ।
अप्फुण्ण वि [अपूर्ण] अधूरा ।
अप्फुण्ण वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण, भरा हुआ ।
अप्फुल्लय देखो अप्पुल्ल ।
अप्फोआ स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ।
अप्फोड, अप्फोल सक [आ + स्फोटय्] आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोकना, ताड़न करना ।
अप्फोया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ।
अप्फोव वि [दे] वृक्षादि से व्याप्त, गहन ।
अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष ।
अफास वि [अस्पर्श] स्पर्श-रहित । खराब स्पर्श वाला ।
अफासुय वि [अप्रासुक] सजीव । अग्राह्य (भिक्षा) ।
अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नहीं टूटा हुआ ।
अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य ।
अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित ।
अफुस्स देखो अफुस ।
अबंभ न [अब्रह्म] मैथुन । °चारि वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालनेवाला ।
अबद्धिय पुं [अबद्धिक] 'कर्मों का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा माननेवाला एक निह्नव—जैनाभास । न. उसका मत ।
अबला स्त्री महिला ।
अबस पुं [अबश] वडवानल ।
अबहिट्ठ न [दे. अबहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग ।
अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ ।
अबहिल्लेस, अबहिल्लेस्स वि [अबहिर्लेश्य] जिसकी चित्त-वृत्ति बाहर न घूमती हो, संयत ।
अबाधा देखो अबाहा ।
अबाह पुं. देश-विशेष ।
अबाहा स्त्री [अबाधा] बाध का अभाव । व्यवधान, बाध-रहित समय ।
अबाहिरय वि [अबाह्य] आभ्यन्तर ।
अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर ।
अबीय देखो अवीय ।
अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नहीं जान कर ।
अबुद्ध वि [अबुध] अजान, मूर्ख । अविवेकी ।
अबुद्धिय, अबुद्धीय वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख ।
अबोहि पुंस्त्री [अबोधि] ज्ञान का अभाव । जैन धर्म की अप्राप्ति । बुद्धिविशेष का अभाव । मिथ्याज्ञान । वि. बोधि-रहित ।
अब्° स्त्री. ब. [अप्°] पानी ।
अब्बंभ देखो अबंभ ।
अब्बंभण्ण, अब्बम्हण्ण न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का अभाव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्बीय देखो अबीय ।

अब्बुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति ।

अब्बुय पुं [अर्बुद] आबू पर्वत ।

अब्बुय न[अर्बुद]जमा हुआ शुक्र और शोणित ।

अब्भ न [अभ्र] आकाश ।

अब्भ सक [आ + भिद्] भेदन करना ।

अब्भंग सक [अभि + अञ्ज्] तैल आदि से मर्दन करना ।

अब्भंग पुं [अभ्यङ्ग] तैल-मर्दन, मालिश ।

अब्भंगिएल्लय } वि [अभ्यक्त] तैलादि से
अब्भंगिय } मर्दित, मालिश किया हुआ ।

अब्भंतर न [अभ्यन्तर] भीतर, में । वि. भीतर का, भीतरी । समीप का । °ठाणिज्ज वि [°स्थानीय] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोग । °तव पुं [°तपस्] विनय, वैयावृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग रूप अन्तरंग तप । °परिसा स्त्री [°परिषद्] मित्र आदि समान जनों की सभा । °लद्धि स्त्री [°लब्धि] अवधिज्ञान का एक भेद । °संबुक्का स्त्री [°शम्बूका] भिक्षा की एक चर्या, गतिविशेष । °सगडुद्धिया स्त्री [°शकटोद्धिका] कायोत्सर्ग का एक दोष ।

अब्भंसि वि [अभ्रंशिन्] भ्रष्ट नहीं होनेवाला । अनष्ट ।

अब्भक्खइज्ज देखो अब्भक्खा ।

अब्भक्खण न [दे] अपयश ।

अब्भक्खा सक [अभ्या + ख्या] दोषारोप करना ।

अब्भक्खाण न [अभ्याख्यान]झूठा अभियोग ।

अब्भट्ठ देखो अब्भत्थिय ।

अब्भड अ [दे] पीछे जाकर ।

अब्भणुजाण सक [अभ्यनु + ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना ।

अब्भणुण्णा [अभ्यनुज्ञा] अनुमति ।

अब्भणुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत, संमत ।

अब्भण्ण न [अभ्यर्ण] निकट । वि. समीपस्थ । °पुर न. नगर-विशेष ।

अब्भत्त वि [अभ्यक्त] तैलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ ।

अब्भत्थ वि [अभ्यस्त] पठित । शिक्षित ।

अब्भत्थ सक [अभि+अर्थय्] सत्कार करना । प्रार्थना करना ।

अब्भपडल न [दे] उपधातु-विशेष, अभ्रक ।

अब्भपिसाअ पुं [दे. अभ्रपिशाच] राहु ।

अब्भय पुं [अर्भक] बालक ।

अब्भय पुं [अभ्रक] अबरख ।

अब्भरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कारप्राप्त, गौरवशाली ।

अब्भवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त ।

अब्भवहार पुं [अभ्यवहार] भोजन ।

अब्भवालुया स्त्री [दे] अभ्रक का चूर्ण ।

अब्भव्व देखो अभव्व ।

अब्भस सक [अभि + अस्] सीखना, अभ्यास करना ।

अब्भहर पुं [दे] अभ्रक ।

अब्भहिय वि [अभ्यधिक] विशेष, ज्यादा ।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या+गम्] संमुख आना ।

अब्भाइक्ख देखो अब्भक्खा ।

अब्भागम पुं [अभ्यागम] संमुखागमन । समीप स्थिति ।

अब्भागमिय } वि [अभ्यागत] संमुखागत ।
अब्भागय } पुं. आगन्तुक, अतिथि ।

अब्भायत्त } वि [दे] वापस आया हुआ ।
अब्भायत्थ }

अब्भास पुं [अभ्यास] गुणकार ।

अब्भास न [अभ्यास] नजदीक । वि. समीपवर्ती । पुं. पढ़ाई, सीख । आवृत्ति । आदत । आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार । गणित का संकेत-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भास सक [अभि+अस्] अभ्यास करना, आदत डालना ।
अब्भाहय वि [अभ्याहत] आघात-प्राप्त ।
अब्भिग देखो अब्भंग = अभि + अंज् ।
अब्भिग देखो अब्भंग = अभ्यंग ।
अब्भितर देखो अब्भंतर ।
अब्भितरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर का, अन्तरंग ।
अब्भितरुद्धि पुं [अभ्यन्तरोर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पैर के अंगूठों को मिलाकर और पृष्णियों को बाहर फैलाकर किया जाता ध्यान-विशेष ।
अब्भिट्ट वि [दे] संगत, सामने आकर भिड़ा हुआ ।
अब्भिड सक [सं + गम्] संगति करना, मिलना ।
अब्भिडिअ वि [दे] सार, मजबूत ।
अब्भिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित ।
अब्भुअअ देखो अब्भुदय ।
अब्भुक्ख सक [अभि + उक्ष्] सीचन करना ।
अब्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल ।
अब्भुगम पुं [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति ।
अब्भुग्गय वि [अभ्युद्गत] उन्नत । उत्पन्न । उठाया हुआ । चारों तरफ फैला हुआ ।
अब्भुग्गय वि [अभ्रोद्गत] ऊंचा, उन्नत ।
अब्भुच्चय पुं [अभ्युच्चय] समुच्चय ।
अब्भुज्जय वि [अभ्युद्यत] उद्यत । तैयार । पुं. एकाकी विहार । जिनकल्पिक मुनि ।
अब्भुट्ठ उभ [अभ्युत् + स्था] आदर करने के लिए खड़ा होना । प्रयत्न करना । तैयारी करना ।
अब्भुट्ठा देखो अब्भुट्ठ ।
अब्भुट्ठेत्तु [अभ्युत्थातृ] अभ्युत्थान करनेवाला ।
अब्भुण्णय वि [अभ्युन्नत] उन्नत, ऊंचा । उत्तेजित ।
अब्भुत्त अक [स्ना] स्नान करना ।
अब्भुत्त अक [प्र + दीप्] प्रकाशित होना । उत्तेजित होना ।
अब्भुत्थ वि [अभ्युत्थ] उत्पन्न ।
अब्भुत्थ } देखो अब्भुट्ठा ।
अब्भुत्था }
अब्भुदय पुं [अभ्युदय] उन्नति, उदय ।
अब्भुद्धर सक [अभ्युद् + धृ] उद्धार करना ।
अब्भुब्भड वि [अभ्युद्भट] अत्युद्भट, विशेष उद्धत ।
अब्भुय न [अद्भुत] आश्चर्य । वि. आश्चर्यकारक । पुं. साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसों में से एक ।
अब्भुवगच्छ सक [अभ्युप + गम्] स्वीकार करना । पास जाना ।
अब्भुवगम पुं [अभ्युपगम] स्वीकार । तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष ।
अब्भुवगय वि [अभ्युपगत] स्वीकृत । समीप में गया हुआ ।
अब्भुववण्ण वि [अभ्युपपन्न] अनुगृहीत ।
अब्भुववत्ति स्त्री [अभ्युपपत्ति] मेहरबानी ।
अब्भुवे सक [अभ्युप + इ] स्वीकार करना ।
अब्भो देखो अव्वो ।
अब्भोक्खिय वि [अभ्युक्षित] सींचा हुआ ।
अब्भोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य ।
अब्भोय (अप) देखो आभोग ।
अब्भोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत । °। स्त्री [°।] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना ।
अब्हिड देखो अब्भिड ।
अब्हुत्त देखो अब्भुत्त ।
अभग्ग वि [अभग्न] अखण्डित । इस नाम का एक चोर ।
अभत्त वि [अभक्त] भक्ति नहीं करनेवाला । न. भोजन का अभाव । °ट्ठ पुं [°र्थ]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपवास। °ट्ठिय वि [°र्थिक] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह।

अभय न. भय का अभाव, धैर्य। जीवित, मरण का अभाव। वि. निर्भीक। पुं. राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी। °**कुमार** पुं. देखो अनन्तरोक्त अर्थ। °**दय** वि. भय-विनाशक, जीवित-दाता। °**दाण** न [°**दान**] जीवित-दान। °**देव** पुं. कई एक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारों का नाम। °**प्पदाण** न [°**प्रदान**] जीवित का दान। °**वत्त** न [°**वत्त्व**] निर्भयता। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राजा का नाम।

अभयकरा स्त्री. भगवान् अभिनन्दन की दीक्षा-शिविका।

अभया स्त्री. हरीतकी। राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम।

अभयारिट्ठ न [**अभयारिष्ट**] मद्य-विशेष।

अभाअ वि [**अभाग**] अस्थान, अयोग्य स्थान।

अभाइ वि [**अभागिन्**] अभागा। हत-भाग्य।

अभागधेज्ज वि [**अभागधेय**] ऊपर देखो।

अभाव पुं. ध्वंस, नाश। अविद्यमानता। असत्व। असम्भव। अशुभ परिणाम।

अभाविय वि [**अभावित**] अयोग्य, अनुचित।

अभासग } **अभासय** } वि [**अभाषक**] बोलने की शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह। नहीं बोलनेवाला। पुं. केवल त्वगिन्द्रियवाला, एकेन्द्रिय जीव। मुक्त आत्मा।

अभासा स्त्री [**अभाषा**] असत्य वचन। सत्य-मिश्रित असत्य वचन।

अभि अ. इन अर्थों का सूचक उपसर्ग—संमुख, चारों ओर। बलात्कार। उल्लंघन। अत्यन्त। लक्ष्य। प्रतिकूल। विकल्प। संभावना। निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है।

अभिअण पुं [**अभिजन**] कुल। जन्मभूमि।

अभिआवण्ण वि [**अभ्यापन्न**] संमुख-आगत।

अभिइ स्त्री [**अभिजित्**] नक्षत्र-विशेष।

अभिइ सक [**अभि + इ**] संमुख जाना।

अभिउंज देखो **अभिजुंज**।

अभिओअ } **अभिओग** } पुं [**अभियोग**] उद्यम। आज्ञा। बलात्कार। बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना। पराभव। वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि। अभिमान। आग्रह। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] विद्याविशेष। देखो **अहिओय**।

अभिओगी स्त्री [**आभियोगी**] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है।

अभिओयण न [**अभियोजन**] देखो **अभिओग**।

अभिग } **अभिज** } देखो **अब्भंग**।

अभिकंख सक [**अभि + काङ्क्ष्**] चाहना।

अभिकंखा स्त्री [**अभिकाङ्क्षा**] इच्छा।

अभिक्कंत वि [**अभिक्रान्त**] गत, अतिक्रान्त। संमुख गत। आरब्ध। उल्लंघित।

अभिक्कम सक [**अभि + क्रम्**] जाना, गुजरना। सामने जाना। उल्लंघन करना। शुरू करना।

अभिक्ख } **अभिक्खण** } अ [**अभीक्ष्ण**] बारंबार।

अभिक्खा स्त्री [**अभिख्या**] नाम।

अभिगच्छ सक [**अभि + गम्**] प्राप्त करना। सामने जाना।

अभिगज्ज अक [**अभि + गर्ज्**] गर्जना।

अभिगम देखो **अभिगच्छ**।

अभिगम पुं [**अभिगम**] प्राप्ति, स्वीकार। आदर। (गुरु का) उपदेश। ज्ञान, निश्चय। सम्यक्त्व का एक भेद। प्रवेश।

अभिगय वि [**अभिगत**] प्राप्त। सत्कृत। उपदिष्ट। प्रविष्ट। ज्ञात, निश्चित।

अभिगहिय न [**अभिग्रहिक**] मिथ्यात्वविशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिगिज्झ अक [अभि + गृध्] अति लोभ करना, आसक्त होना ।

अभिगिण्ह सक [अभि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकारना ।

अभिग्गह पुं [अभिग्रह] प्रतिज्ञा । जैन साधुओं का आचारविशेष । प्रत्याख्यान, (नियम विशेष) का एक भेद । हठ । एक प्रकार का शारीरिक विनय ।

अभिग्गहणी स्त्री [अभिग्रहणी] भाषा का एक भेद, असत्य-मृषा वचन ।

अभिग्गहिय वि [अभिग्रहिक] अभिग्रहवाला।

अभिग्गहिय वि [अभिगृहीत] जिसके विषय में अभिग्रह किया गया हो वह ।

अभिघट्ट सक [अभि + घट्ट्] वेग से जाना ।

अभिघाय पुं [अभिघात] प्रहार, मार-पीट, हिंसा ।

अभिचंद पुं [अभिचन्द्र] यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी । इस नाम का एक कुलकर पुरुष । मुहूर्त-विशेष ।

अभिजण देखो अभिअण ।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की संतति) ।

अभिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता ।

अभिजाण सक [अभि+ज्ञा] जानना ।

अभिजात पुं. पक्ष का ग्यारहवाँ दिन ।

अभिजाय वि [अभिजात] उत्पन्न । कुलीन ।

अभिजुंज अक [अभि + युज्] मन्त्रतन्त्रादि से वश करना । कोई कार्य में लगाना । आलिंगन करना । याद दिलाना ।

अभिजुत्त वि [अभियुक्त] व्रत-नियम में जिसने दूषण न लगाया हो वह । पण्डित । दुश्मन से घिरा हुआ ।

अभिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ, आसक्ति ।

अभिज्झिय वि [अभिध्यित] वांछित ।

अभिट्ठिअ वि [अभीष्ट] अभिलषित ।

अभिट्ठुय वि [अभिष्टुत] वर्णित, प्रशंसित ।

अभिड्डुय देखो अभिद्दुय ।

अभिणंद सक [अभि + नन्द्] स्तुति करना । आशीर्वाद देना । प्रीति करना । खुशी मनाना । चाहना, बहुमान करना ।

अभिणंदण न [अभिनन्दन] अभिनन्दन । पुं. वर्तमान अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ जिनदेव । लोकोत्तर श्रावणमास ।

अभिणय पुं [अभिनय] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्य-क्रिया ।

अभिणव वि [अभिनव] नया ।

अभिणिक्खंत वि [अभिनिष्क्रान्त] दीक्षित ।

अभिणिगिण्ह सक [अभिनि + ग्रह्] रोकना ।

अभिणिचारिया स्त्री [अभिनिचारिका] भिक्षा के लिए गति-विशेष ।

अभिणिपया स्त्री [अभिनिप्रजा] अलग-अलग रही हुई प्रजा ।

अभिणिबुज्झ सक [अभिनि + बुध्] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना ।

अभिणिबोह पुं [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मति-ज्ञान ।

अभिणियट्टण न [अभिनिवर्त्तन] वापस जाना।

अभिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] तीव्र रूप से निविष्ट । आग्रही ।

अभिणिवेस पुं [अभिनिवेश] आग्रह ।

अभिणिवेह पुं [अभिनिवेध] उलटा मापना ।

अभिणिव्वागड वि [दे. अभिनिर्व्याकृत] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरह) ।

अभिणिव्वट्ट सक [अभिनि + वृत्] रोकना, प्रतिषेध करना ।

अभिणिव्वट्ट सक [अभिनिर् + वृत्] संपादित करना, निष्पन्न करना । उत्पन्न करना ।

अभिणिव्वुड वि [अभिनिर्वृत्त] मुक्त । शान्त,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकुपित। पाप से निवृत्त।

अभिणिसज्जा स्त्री [अभिनिषद्या] जैन साधुओं के स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष।

अभिणिसट्ठ } वि [अभिनिसृष्ट] बाहर
अभिणिसिट्ठ } निकला हुआ।

अभिणिसेहिया स्त्री [अभिनैषेधिकी] जैन साधुओं के स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष।

अभिणिस्सव अक [अभिनिर् + स्रु] निकलना।

अभिणी सक [अभि + नी] अभिनय करना।

अभिणूम न [अभिनूम] माया, कपट।

अभिण्ण वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण।

अभिण्ण वि [अभिन्न] अत्रुटित, अविदारित, अखण्डित।

अभिण्णपुड पुं[दे]खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के जिसको रास्ता पर रख देते हैं।

अभिण्णाण न [अभिज्ञान] निशानी।

अभिण्णाय वि [अभिज्ञात] विदित।

अभितज्ज सक [अभि + तर्ज्] तिरस्कार करना, ताड़न करना।

अभितत्त वि [अभितप्त] तपाया हुआ, गरम किया हुआ।

अभितव सक [अभि + तप्] तपाना। पीड़ा करना।

अभिताव सक [अभि + तापय्] तपाना, गरम करना। पीड़ित करना।

अभिताव पुं [अभिताप] दाह। पीड़ा।

अभितास सक [अभि + त्रासय्] त्रास उपजाना, भयभीत करना।

अभित्थु सक [अभि + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना।

अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, श्लाघित।

अभिथु देखो अभित्थु।

अभिदुग्ग वि [अभिदुर्ग] दुःखोत्पादक स्थान। अतिविषम स्थान।

अभिद्दव सक [अभि + द्रु] दुःख उपजाना, हैरान करना।

अभिद्दविय वि [अभिद्रुत] उपद्रुत, हैरान किया हुआ।

अभिद्दुय देखो अभिद्दविय।

अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक, कहनेवाला।

अभिधार सक [अभि + धारय्] चिन्तन करना। स्पष्ट करना। धारण करना।

अभिधेज्ज } पुं [अभिधेय] अर्थ, वाच्य,
अभिधेय } पदार्थ।

अभिनंदि स्त्री [अभिनंदि] आनन्द, खुशी।

अभिनिक्खम अक [अभिनिर् + क्रम्] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना।

अभिनिवेस सक [अभिनि + वेशय्] स्थापन करना। करना।

अभिनिवेसिय न [अभिनिवेशिक] मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नहीं मानने का दुराग्रह।

अभिनिव्वट्ट अक [अभिनि + वृत्] पृथक् होना।

अभिनिव्वट्ट सक [अभिनिर् + वृत्] खींचना।

अभिनिव्वागड वि [अभिनिर्व्याकृत] विभिन्न द्वार वाला (मकान)।

अभिनिव्विट्ठ वि [अभिनिर्विष्ट] संजात, उत्पन्न।

अभिनिसढ वि [अभिनिःसट] जिसका स्कन्ध प्रदेश बाहर निकल आया हो वह।

अभिनिस्सव अक [अभिनि + स्रु] टपकना, झरना।

अभिपल्लाणिय वि [अभिपर्याणित] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ।

अभिपवुट्ठ वि [अभिप्रवृष्ट] बरसा हुआ।

अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय सम्बन्धी, मनःकल्पित।

अभिप्पाय पुं [अभिप्राय] आशय, मनपरिणाम।

अभिप्पेय वि [अभिप्रेत] इष्ट, अभिमत।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिभव सक [अभि + भू] पराभव करना, परास्त करना ।

अभिभास सक [अभि + भाष्] संभाषण करना ।

अभिभूइ स्त्री [अभिभूति] पराभव, अभिभव ।

अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, पराजित ।

अभिमंत सक [अभि + मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से संस्कारना ।

अभिमन्न सक [अभि + मन्] अभिमान करना । सम्मत करना ।

अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत ।

अभिमाण पुं [अभिमान] अभिमान, गर्व ।

अभिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष ।

अभिमुह वि[अभिमुख]संमुख, सामने स्थित ।

अभियागम पुं [अभ्यागम] संमुख आगमन ।

अभियावन्न वि [अभ्यापन्न] संमुख प्राप्त ।

अभिरइ स्त्री [अभिरति] रति, संभोग । प्रीति, अनुराग ।

अभिरम अक [अभि + रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना । प्रीति करना । तल्लीन होना, आसक्ति करना ।

अभिरय वि [अभिरत] अनुरक्त । तल्लीन, तत्पर ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर ।

अभिराम सक [अभि + रामय्] तत्परता से कार्य में लगाना ।

अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसंद, मन का अभिमत ।

अभिरुय सक [अभि + रुच्] पसंद पड़ना, रुचना ।

अभिरूयंसि वि [अभिरूपिन्] सुन्दर रूप-वाला, मनोहर ।

अभिरुह सक [अभि + रुह्] रोकना । ऊपर चढ़ना, आरोहना ।

अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारों ओर से निरुद्ध, रोका हुआ ।

अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो ।

अभिलंघ सक [अभि + लङ्घ्] उल्लंघन करना ।

अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य, निर्वचनीय ।

अभिलस सक [अभि + लष्] चाहना ।

अभिलाअ } पुं [अभिलाप] शब्द, ध्वनि ।
अभिलाव } संभाषण ।

अभिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, चाह ।

अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी ।

अभिलोयण न [अभिलोकन] जहाँ खड़े रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान ।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो ।

अभिवंद सक [अभि + वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

अभिवंदय वि[अभिवन्दक]प्रणाम करनेवाला।

अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] बढ़ना, बड़ा होना, उन्नत होना ।

अभिवड्ढि देखो अभिवुड्ढि ।

अभिवड्ढि देखो अहिवड्ढि (इक) ।

अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] बढ़ाया हुआ । अधिक मास । अधिक मासवाला वर्ष ।

अभिवड्ढे सक [अभि + वर्धय्] बढ़ाना ।

अभिवत्त वि [अभिव्यक्त] आविर्भूत ।

अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव ।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने जाना ।

अभिवात पुं [अभिवात] सामने का पवन । सामने का पवन । प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन ।

अभिवाद } सक [अभि + वादय्] प्रणाम
अभिवाय } करना । नमस्कार करना ।

अभिवाय देखो अभिवात ।

अभिवाहरण न [अभिव्याहरण] बुलाहट, पुकार ।

अभिवाहार पुं [अभिव्याहार] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिविहि पुंस्त्री[अभिविधि]मर्यादा, व्याप्ति।
अभिवुट्ठि स्त्री [अभिवृष्टि] वृष्टि, वर्षा।
अभिवुड्ढ देखो अभिवड्ढ।
अभिवुड्ढि स्त्री [अभिवृद्धि] वृद्धि, बढ़ाव। उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठाता देव।
अभिवुड्ढे देखो अभिवड्ढे।
अभिवेदणा स्त्री [अभिवेदना] अत्यन्त पीड़ा।
अभिव्वंजण न [अभिव्यञ्जन] देखो अभिवत्ति।
अभिव्वाहार देखो अभिवाहार।
अभिसंकण न [अभिशङ्कन] शंका, वहम।
अभिसंका स्त्री [अभिशङ्का] संशय, संदेह।
अभिसंकि वि [अभिशङ्किन्] संदेह करनेवाला। भीरु, डरनेवाला।
अभिसंग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति।
अभिसंजाय वि [अभिसंजात] उत्पन्न।
अभिसंथुण सक [अभिसं + स्तु] स्तुति करना, वर्णन करना।
अभिसंधारण न [अभिसंधारण] पर्यालोचन, विचारना।
अभिसंधि पुंस्त्री [अभिसंधि] आशय, अभिप्राय।
अभिसंधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात्त।
अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादुर्भूत।
अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त।
अभिसंवुड्ढ वि [अभिसंवृद्ध] बढ़ा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त।
अभिसमण्णागय वि [अभिसमन्वागत] अच्छी तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत। व्यवस्थित। प्राप्त, लब्ध।
अभिसमागम सक [अभिसमा + गम्] सामने जाना। प्राप्त करना। निर्णय करना, ठीक-ठीक जानना।
अभिसमे सक [अभिसमा + इ] देखो अभिसमागम = अभिसमा + गम्।
अभिसर सक [अभि + सृ] प्रिय के पास जाना।
अभिसव पुं [अभिषव] मद्य आदि का अर्क। मद्य-मांस आदि से मिश्रित चीज।
अभिसारिआ देखो अहिसारिआ।
अभिसिच सक [अभि + सिच्] अभिषेक करना।
अभिसित्त वि [अभिषिक्त] जिसका अभिषेक किया गया हो वह।
अभिसेअ } पुं [अभिषेक] राजा, आचार्य
अभिसेग } आदि पद पर आरूढ़ करना। स्नान-महोत्सव। स्नान। जहाँ पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान। शुक्र-शोणित का संयोग। वि. आचार्य आदि पद के योग्य। अभिषिक्त।
अभिसेगा स्त्री [अभिषेका] संन्यासिनी। साध्वियों की मुखिया, प्रवर्त्तिनी।
अभिसेज्जा स्त्री [अभिशय्या] देखो अभिणिसज्जा। भिन्न स्थान।
अभिसेवण न[अभिषेवण]पूजा, सेवा, भक्ति।
अभिसेवि वि [अभिषेविन्] सेवा-कर्ता।
अभिस्संग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति।
अभिहट्टु अ [अभिहृत्य] जबरदस्ती करके।
अभिहड वि [अभिहृत] सामने लाया हुआ। जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष।
अभिहण सक [अभि + हन्] मारना, हिंसा करना।
अभिहय वि [अभिहत] मारा हुआ, आहत।
अभिहा स्त्री [अभिधा] नाम।
अभिहाण न[अभिधान]नाम। वाचक, शब्द। कथन, उक्ति। उच्चारण। कोशग्रन्थ।
अभिहिय वि [अभिहित] कथित।
अभिहेअ वि [अभिधेय] वाच्य, पदार्थ।
अभीइ } स्त्री [अभिजित्] नक्षत्रविशेष।
अभोजि } पुं. एक राजकुमार। राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभीरु वि. निडर । स्त्री. मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ।

अभेज्झा देखो अभिज्झा ।

अभोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य । °घर न [°गृह] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर ।

अम सक [अम्] जाना । आवाज करना । खाना । पीडना । अक. रोगी होना ।

अमग्ग पुं [अमार्ग] खराब रास्ता । मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ । कुमत, कुदर्शन ।

अमग्घाय पुं [अमाघात] द्रव्य का अहरण । मारिनिवारण, अभय-घोषणा ।

अमच्च पुं [अमात्य] मन्त्री ।

अमच्च पुं [अमर्त्य] देव ।

अमज्झ वि [अमध्य] मध्यरहित, अखण्ड । परमाणु ।

अमण न [अमन] ज्ञान, निर्णय । अन्त, अवसान ।

अमण } वि [अमनस्क] अप्रीतिकर,
अमणक्ख } अभीष्ट । मनरहित ।

अमणाम वि [अमनआप] अनिष्ट, अमनोहर ।

अमणाम वि [अमनोम] ऊपर देखो ।

अमणाम वि [अवनाम] दुःखोत्पादक ।

अमणुस्स पुं [अमनुष्य] मनुष्य-भिन्न देव आदि । नपुंसक ।

अमत्त न [अमत्र] भाजन ।

अमम वि. ममता-रहित, निःस्पृह । पुं. आगामी काल में होने वाले एक जिनदेव का नाम । युग्म रूप से होने वाले मनुष्यों की एक जाति । दिन के २५ वें मुहूर्त का नाम । °त्त वि [°त्व] निःस्पृह, ममता-रहित ।

अमय वि [अमय] विकार-रहित ।

अमय न [अमृत] अमृत । क्षीर समुद्र का पानी । पुं. मोक्ष । वि. नहीं मरा हुआ । °कर पुं. चन्द्रमा । °किरण पुं. चन्द्र । °कुंड पुं [°कुण्ड] चाँद । °घोस पुं [°घोष] एक राजा का नाम । °फल न. अमृतोपम फल । °मइय—°मय वि [°मय] अमृत-पूर्ण । °मऊह पुं [°मयूख] चन्द्र । °वल्लरि, °वल्लरी स्त्री. अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची । °वल्लि, °वल्ली स्त्री. वल्ली विशेष, गुडूची । °वास पुं [°वर्ष] सुधा-वृष्टि देखो अमिय = अमृत ।

अमय पुं [दे] चन्द्र । दैत्य ।

अमयघडिअ पुं [दे. अमृतघटित] चन्द्रमा ।

अमयणिग्गम पुं [दे. अमृतनिर्गम] चन्द्रमा ।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-सम्बन्धी ।

अमर पुं. देव । मुक्त आत्मा । भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र । अनन्तवीर्य नामक भावी जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम । वि. मरण-रहित । °कंका स्त्री [°कङ्का] एक नगरी का नाम । °केउ पुं [°केतु] एक राजकुमार । °गिरि पुं. मेरु पर्वत । °गेह न. स्वर्ग । °चन्दण न [°चन्दन] हरिचन्दन वृक्ष । एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ । °तरु पुं. कल्प-वृक्ष । °दत्त पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम । °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र । °पुर न. स्वर्ग । °पुरी स्त्री. स्वर्गपुरी, अमरावती । °पभ पुं [°प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा । °वइ पुं [°पति] इन्द्र । °वहू स्त्री [°वधू] देवी । °सामि पुं [°स्वामिन्] इन्द्र । °सेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम । एक राजकुमार का नाम । °लय न. स्वर्ग । °वई स्त्री [°वती] देव-नगरी, स्वर्गपुरी । मर्त्यलोक की एक नगरी । राजा श्रीसेन की राजधानी ।

अमरंगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी ।

अमरिंद पुं [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र ।

अमरिस पुं [अमर्ष] असहिष्णुता । कदाग्रह । क्रोध ।

अमरिसण न [अमर्षण] ऊपर देखो । वि. असहिष्णु, क्रोधी । सहिष्णु, क्षमाशील ।

अमरिसण वि [अमसृण] उद्यमी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमरिसिय वि [अमर्षित] मत्सरी, असहिष्णु ।

अमरीस पुं [अमरेश] इन्द्र ।

अमल वि. स्वच्छ । पुं. भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम ।

अमला स्त्री. शक्र की एक अग्रमहिषी का नाम ।

अमवस्सा देखो अमावस्सा ।

अमाइ, **अमाइल्ल** वि [अमायिन्] निष्कपट ।

अमाघाय देखो अमग्घाय ।

अमाण वि [अमान] गर्वरहित । असंख्य ।

अमाय वि [अमात] नहीं समाया हुआ ।

अमाय वि. निष्कपट ।

अमारि स्त्री. हिंसा-निवारण । जीवितदान । °घोस पुं [°घोष] अहिंसा की घोषणा । °पडह पुं [°पटह] हिंसा-निषेध का डिण्डिम ।

अमावसा, **अमावस्सा**, **अमावासा** स्त्री [अमावास्या] तिथि विशेष, अमावस ।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिए अशक्य, असंख्य ।

अमिज्झ न [अमेध्य] अशुचि वस्तु । विष्ठा ।

अमित्त पुंन [अमित्र] रिपु, दुश्मन ।

अमिय देखो अमय = अमृत । °कुंड न [°कुण्ड] नगर-विशेष का नाम । °गइ स्त्री [°गति] एक छन्द का नाम । °णाणि पुं [°ज्ञानिन्] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम । °भूय वि [भूत] अमृत-तुल्य । °मेह पुं [°मेघ] अमृतवर्षा । °रुइ पुं [°रुचि] चन्द्रमा ।

अमिय वि [अमित] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त । °गइ पुं [°गति] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारों का इन्द्र । °जस पुं [°यशस्] एक चक्रवर्ती राजा का नाम । °णाणि वि [°ज्ञानिन्] सर्वज्ञ । ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव का नाम । °तेय पुं. [°तेजस्] एक जैन मुनि का नाम । °बल पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम । °वाहण पुं [°वाहन] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का नाम । °वेग पुं. राक्षस वंश के एक राजा का नाम । °ासणिय वि [°ासनिक] चंचल ।

अमिल न [दे] ऊन का बना हुआ वस्त्र । पुं. मेष, भेड़ ।

अमिल वि [दे. आमिल] अमिल देश में बना हुआ ।

अमिला स्त्री. बीसवें जिनदेव की प्रथम शिष्या । पाड़ी, छोटी भैंस ।

अमिलाण, **अमिलाय** वि [अम्लान] म्लान-रहित, ताजा, हृष्ट । पुं. कुरण्टक वृक्ष । कुरण्टक वृक्ष का पुष्प ।

अमु स [अदस्] वह, अमुक ।

अमुअ स [अमुक] वह, कोई ।

अमुअ देखो अमय = अमृत ।

अमुअ वि[अस्मृत]स्मरण में नहीं आया हुआ ।

अमुइ वि [अमोचिन्] नहीं छोड़नेवाला ।

अमुग देखो अमुअ = अमुक ।

अमुगत्थ वि [अमुत्र] अमुक स्थान में ।

अमुण वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख ।

अमुणिय वि [अज्ञान] मूर्ख, अजान ।

अमुदग्ग, **अमुयग्ग** न [अमुदग्र] अतीन्द्रिय मिथ्या-ज्ञान विशेष, जैसे देवताओं के पुद्गलरहित शरीर को देखकर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय ।

अमुस वि [अमृष] सत्य ।

अमुह वि [अमुख] निरुत्तर ।

अमुहरि वि [अमुखरिन्] अवाचाल, मित-भाषी ।

अमूढ वि. अमुग्ध, विचक्षण । °णाण न [°ज्ञान] सत्य-ज्ञान । °दिट्ठि स्त्री [दृष्टि]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यग्दर्शन। अविचलित बुद्धि। वि. अविचलित दृष्टिवाला, सम्यग्दृष्टि।

अमूस वि [अमृष] सत्यवादी।

अमेज्ज देखो अमिज्ज।

अमेज्झ देखो अमिज्झ।

अमोल्ल वि [अमूल्य] बहुमूल्य।

अमोसलि न [दे. अमुशलि] वस्त्रादि निरीक्षण का एक प्रकार।

अमोह वि [अमोघ] अवन्ध्य, सफल। पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा विशेष। एक यक्ष का नाम। °दंसि वि [°दर्शिन्] ठीक-ठीक देखनेवाला। न. उद्यान-विशेष। पुं. यक्ष-विशेष। °पहारि वि [°प्रहारिन्] अचूक प्रहार करनेवाला, निशानबाज। °रह पुं [°रथ] इस नाम का एक रथिक।

अमोह पुं. मोह का अभाव, सत्यग्रह। रुचक पर्वत का एक शिखर। वि. निर्मोह।

अमोह पुं [अमोघ] सूर्य-बिम्ब के नीचे कभी-कभी दीखती श्याम आदि वर्णवाली रेखा। पुंन. एक देवविमान।

अमोहा स्त्री [अमोघा] एक जम्बूवृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है। एक पुष्करिणी।

अम्म देखो अंब = आम्ल।

अम्मएव पुं [आम्रदेव] एक जैन आचार्य।

अम्मगा देखो अम्मया।

अम्मच्छ वि [दे] असंबद्ध।

अम्मड देखो अंबड।

अम्मडी (अप) स्त्री [अम्बा] माता।

अम्मणुअंचिय न [दे] अनुगमन, अनुसरण।

अम्मधाई देखो अंबधाई।

अम्मया स्त्री [अम्बा] जननी। पांचवें वासुदेव की माता का नाम।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय।

अम्मा स्त्री [दे. अम्बा] माता। °पिइ, °पिउ, °पियर °गोइ पुं. ब. [°पितृ] माँ-बाप। °पेइय वि [°पैतृक] माँ-बाप-सम्बन्धी।

अम्माइआ स्त्री [दे] अनुसरण करने वाली स्त्री।

अम्मो अ. आश्चर्य-सूचक अव्यय। माता का संबोधन, हे माँ।

अम्मोगइया स्त्री [दे] संमुख-गमन, स्वागत करने लिए सामने जाना।

अम्मोस वि [अमर्ष्य] अक्षम्य,।

अम्ह स [अस्मद्] हम, खुद। °केर, °क्केर, °च्चय वि [°ीय] हमारा।

अम्हत्त वि [दे] प्रमृष्ट, प्रमार्जित।

अम्हार (अप) वि [अस्मदीय] हमारा।

अम्हारिच्छ वि [अस्मादृक्ष] हमारे जैसा।

अम्हारिस वि [अस्मादृश] हमारे जैसा।

अम्हेच्चय वि [अस्माकम्] हमारा।

अम्हो अ [अहो] आश्चर्य-सूचक अव्यय।

अय पुं [अग] पहाड़। साँप। सूर्य।

अय पुं [अज] छाग। पूर्वभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठायक देव। महादेव। विष्णु। रामचन्द्र। ब्रह्मा। कामदेव। महाग्रह-विशेष। बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य। °करक पुं. एक महाग्रह का नाम। °वाल पुं [°पाल] आभीर।

अय पुं [अय] गमन, गति। लाभ। अनुभव। न. पुण्य। भाग्य।

अय न [अक] दुःख। पाप।

अय न [अयस्] लोह। °आगर पुं [°आकर] लोहे की खान। लोहे का कारखाना। °कंत, °क्खंत पुं [°कान्त] लोह-चुम्बक। °कडिल्ल न [दे. °कडिल्ल] कड़ाह। कुंडी स्त्री [°कुण्डी] लोहे का भाजन-विशेष। °कोट्ठय पुं [°कोष्ठक] लोहे को कुशूल, लोहे का गोला। °गोलय पुं [°गोलक] लोहे का गोला। °दव्वी स्त्री [°दर्वी] लोहे की कड़छी या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करछुल, जिससे दाल, कढ़ी आदि हिलाया जाता है। °पाय न [°पात्र] लोहे का भाजन। °सलागा स्त्री [°शलाका] लोहे की सलाई।
अय सक [अय्] जाना। प्राप्त करना। जानना।
अयंछ सक [कृष्] खींचना। जोतना, चास करना। रेखा करना।
अयंड पुं [अकाण्ड] अनुचित समय। अकस्मात्, हठात्।
अयंतिय वि [अयन्त्रित] अनादरणीय।
अयंपिर वि [अजल्पितृ] मौनी।
अयंपुल पुं [अयंपुल] गोशालक का एक शिष्य।
अयंस पुं [आदर्श] दर्पण। °मुह पुं [°मुख] इस नाम का एक द्वीप। द्वीप विशेष का निवासी।
अयंसंधि वि [इदंसंधि] उपयुक्त कार्य को यथा-समय करनेवाला।
अयकरय पुं [अयकरक] एक महाग्रह।
अयक्क } पुं [दे] दानव, असुर।
अयग }
अयगर पुं [अजगर] मोटा साँप।
अयड पुं [दे. अवट] कुंआ।
अयण न [अतन] सतत होना।
अयण न [अयन] गमन। प्राप्ति, लाभ। ज्ञान, निर्णय। गृह, मन्दिर। वि. प्रापक। पुंन. वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है।
अयण न [अदन] भक्षण। भोजन।
अयणु वि [अज्ञ] अजान।
अयणु वि [अतनु] स्थूल, मोटा, महान्।
अयतंचिअ वि [दे] पुष्ट, उपचित।
अयर वि [अजर] वृद्धावस्थारहित।
अयर पुंन [अतर] समुद्र। समय का मान-विशेष। वि. तरने के अशक्य। असमर्थ, बीमार।
अयरामर वि [अजरामर] जरा और मरण से रहित। न. मुक्ति।
अयल देखो अचल = अचल।
अयला देखो अचला।
अयस देखो अजस।
अयसि वि [अयशस्विन्] कीर्ति-शून्य।
अयसि } स्त्री [अतसी] धान्य-विशेष, अलसी,
अयसी } तीसी।
अया स्त्री [अजा] बकरी। माया, अविद्या। कुदरत। °किवाणिज्ज पुं[°कृपाणीय] न्याय-विशेष; जैसे बकरो के गले पर अनधारी छुरी पड़ती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना। °पाल पुं. आभीर। °वय पुं [°व्रज] बकरी का बाड़ा।
अयागर देखो अय-आगर।
अयाण न [अज्ञान] ज्ञान का अभाव। वि [अज्ञ] अजान। मूर्ख।
अयाणुय देखो अजाणुय।
अयार पुं [अकार] 'अ' अक्षर।
अयाल पुं [अकाल] अयोग्य समय।
अयालि पुं [दे] दुर्दिन। मेघाच्छन्न दिवस।
अयालिय वि [अकालिक] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न।
अयि देखो अइ = अयि।
अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा।
अयोमय देखो अओ-मय।
अय्यावत्त (शौ) पुं [आर्यावर्त] भारत।
अय्युण (मा) देखो अज्जुण।
अर पुं. धूरी, पहिये के बीच का काष्ठ। अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ चक्रवर्ती राजा। समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा।
°अर पुं [°कर] किरण। हाथ। शुल्क।
अरइ स्त्री [अरति] अर्श, मसा। बेचैनी। °कम्म न [°कर्मन्] अरति का हेतुभूत कर्म-विशेष। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°परीषह] अरति को सहन करना । °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष । °रइ स्त्री [°रति] सुख-दुःख ।

°अरंग देखो तरंग ।

अरंजर पुंन [अरञ्जर] घड़ा, जल-घट ।

°अरक्ख देखो वरक्ख ।

अरक्खरी स्त्री [अराक्षरी] नगरी-विशेष ।

अरज्झिय वि [अरहित] निरन्तर, सतत ।

अरड्ड पुं [अरट्टु] वृक्ष-विशेष ।

अरण न. हिंसा ।

अरणि पुं. वृक्ष-विशेष । इस वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है ।

अरणि पुंस्त्री [दे] रास्ता । पंक्ति ।

अरणिया स्त्री [अरणिका] वनस्पति-विशेष ।

अरणेट्टय पुं [दे. अरणेटक] पत्थरों के टुकड़ों से मिली हुई सफेद मिट्टी ।

अरण्ण वि [आरण्य] जंगल में रहने वाला ।

अरण्ण न [अरण्य] वन । °वडिंसग न [°ावतंसक] देवविमान विशेष । °साण पुं [°श्वन्] जंगली कुत्ता ।

अरबाग पुं [दे] एक अनार्य देश, अरब देश ।

अरमंतिया स्त्री [अरमन्तिका] अरमणता, कार्य में अतत्परता ।

अरय वि [अरजस्] रजोगुण-रहित । एक महाग्रह का नाम । वि. धूलीरहित, निर्मल । न. पाँचवें देवलोक का एक प्रतर । रजोगुण का अभाव ।

अरय पुंन [अरजस्] एक देवविमान ।

अरया स्त्री [अरजा] कुमुद नामक विजय की राजधानी ।

अरयणि पुं [अरत्नि] परिमाण विशेष, खुली अंगुलीवाला हाथ ।

अरर न. युद्ध । ढकना । °कुरि स्त्री. नगरी-विशेष ।

अररि पुंन. किवाड़, द्वार ।

अरल न [दे] चीरी, कीट-विशेष । मच्छर ।

अरलाया स्त्री [दे] चीरी, कीट-विशेष ।

अरलु देखो अरडु ।

अरविंद न [अरविन्द] कमल ।

अरविंदर वि [दे] दीर्घ ।

अरस पुं. रसरहित, नीरस ।

अरस पुं [अर्शस्] व्याधि-विशेष, बवासीर ।

अरस न [अरस] तप-विशेष निर्विकृति तप ।

अरह वि [अर्हत्] पूज्य । पुं. जिनदेव, तीर्थंकर । °मित्त पुं [°मित्र] एक व्यापारी का नाम ।

अरह देखो अरिह = अर्ह् ।

अरह वि [अरहस्] प्रकट । जिससे कुछ भी न छिपा हो । पुं. जिनदेव, सर्वज्ञ ।

अरह वि [अरथ] परिग्रहरहित ।

अरहंत वकृ [अर्हत्] पूजा के योग्य, पूज्य । पुं. जिन भगवान्, तीर्थंकरदेव ।

अरहंत वि [अरहोन्तर्] सर्वज्ञ । पूज्य । पुं. जिन भगवान् ।

अरहंत वि [अरथान्त] निःस्पृह, निर्मम । पुं. जिनदेव ।

अरहंत वकृ [अरहयत्] अपने स्वभाव को नहीं छोड़नेवाला । पुं. जिनेश्वर देव ।

अरहट्ट पुं [अरघट्ट] अरहट, पानी निकालने का यन्त्र विशेष ।

अरहट्टिय वि [अरघट्टिक] अरहट चलाने वाला ।

अरहणा स्त्री [अर्हणा] पूजा । योग्यता ।

अरहण्णय पुं [अरहन्नक] एक व्यापारी का नाम ।

अरहन्न पुं [अर्हन्न] एक जैन मुनि का नाम ।

अराइ पुं [अराति] दुश्मन ।

अराइ स्त्री [अरात्रि] दिवस ।

अरि देखो अरे ।

अरि पुं. रिपु । °छव्वग्ग पुं [°षड्वर्ग] छः आन्तरिक शत्रु—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य । °दमण वि [°दमन] रिपु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनाशक। पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम। एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरु थे। °दमणी स्त्री [°दमनी] विद्या-विशेष। विद्धंसी स्त्री [°विध्वंसिनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या। °संतास पुं [°संत्रास] राक्षस वंश में उत्पन्न लंका का एक राजा। °हंत वि [°हन्तृ] रिपु-विनाशक। पुं. जिनदेव।

अरिअल्लि पुंस्त्री [दे] व्याघ्र, शेर।

अरिंजय पुं [अरिञ्जय] भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र। न. नगर-विशेष।

अरिट्ठ पुं [अरिष्ट] वृक्ष-विशेष। पनरहवें तीर्थंकर का एक गणधर। पुंन. एक देवविमान। न. माण्डव्य गोत्र की शाखा। रत्न की एक जाति। फल-विशेष, रीठा। अनिष्ट-सूचक उत्पात। °णेमि, °नेमि पुं. वर्तमान काल के बाईसवें जिनदेव।

अरिट्ठा स्त्री [अरिष्टा] कच्छ नामक विजय की राजधानी।

अरित्त न [अरित्र] पतवार, कन्हर।

अरिरिहो अ. पादपूरक अव्यय।

अरिस देखो अरस।

अरिसल्ल / अरिसिल्ल वि [अर्शस्वत्] बवासीर रोगवाला।

अरिह वि [अर्ह] योग्य। पुं. जिनदेव।

अरिह सक [अर्ह्] योग्य होना। पूजा के योग्य होना। पूजा करना।

अरिह देखो अरह = अर्हत्। °दत्त, °दिण्ण पुं. जैन मुनि-विशेष का नाम।

अरिहणा देखो अरहणा।

अरिहंत देखो अरहंत = अर्हत्। °चेइय न [°चैत्य] जिनमन्दिर। °सासण न [°शासन] जैन आगम-ग्रन्थ। जिन-आज्ञा।

°अरु देखो तरु।

अरु वि [अरुज्] रोग-रहित।

अरु देखो अरूव।

अरुग न [दे. अरुक] व्रण।

अरुंतुद वि [अरुन्तुद] मर्म-वेधक। मर्म-स्पर्शी।

अरुण पुं. सूर्य। सूर्य का सारथी। संध्याराग। द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। एक ग्रह-देवता का नाम। गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव। देव-विशेष। रक्त रंग। न. विमान-विशेष। वि लाल। °कंत न [°कान्त] देवविमान-विशेष। [°कील] न. देवविमान-विशेष। °गंगा स्त्री [गङ्गा] महाराष्ट्र देश की एक नदी। °गव न. देवविमान-विशेष। °ज्झय न [°ध्वज] एक देवविमान का नाम। °प्पभ, °प्पह न [°प्रभ] इस नाम का एक देवविमान। °भद्द पुं [°भद्र] एक देवता का नाम। °भूय न [°भूत] एक देवविमान। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-विशेष। °महावर पुं. द्वीपविशेष। समुद्र-विशेष। °वडिंसय न [°ावतंसक] एक देवविमान। °वर पुं द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °वरोभास पुं. [°वरावभास] द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान। °ाभ न. देवविमान-विशेष।

अरुण न [दे] कमल।

अरुण पुंन. एक देव-विमान। °प्पभ पुं [°प्रभ] अनुवेलन्धर नामक नागराज का एक आवास-पर्वत। उस पर्वत का निवासी देव। °ाभ पुं. कृष्ण पुद्गल-विशेष।

अरुणिम पुंस्त्री [अरुणिमन्] लाली।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल।

अरुणुत्तरवडिंसग न [अरुणोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देवविमान।

अरुणोद पुं. समुद्र-विशेष।

अरुणोदय पुं [अरुणोदक] समुद्र-विशेष।

अरुणोववाय पुं [अरुणोपपात] ग्रन्थ-विशेष का नाम।

अरुय वि [अरुष्] घाव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरुय वि [अरुज्] निरोगी।
अरुह देखो अरह = अर्हत्।
अरुह वि. जन्मरहित। पुं. मुक्त आत्मा। जिन-देव।
अरुह देखो अरिह = अर्ह्।
अरुह वि [अर्ह] योग्य।
अरुहंत देखो अरहंत = अर्हत्।
अरूव वि [अरूप] रूपरहित, अमूर्त्त।
अरे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संभाषण और रतिकलह। आक्षेप। विस्मय। परिहास।
अरोअ अक [उत्+लस्] उल्लास पाना, विकसित होना।
अरोअअ पुं [अरोचक] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि।
अरोइ वि [अरोचिन्] अरुचि वाला, रुचि-रहित।
अरोग वि. रोगरहित। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, नीरोगता।
अरोग्ग, अरोय } देखो आरोय = आरोग्य।
अरोस वि [अरोष] गुस्सा-रहित। पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति।
अल न. बिच्छू के पुच्छ का अग्र भाग। अलादेवी का एक सिंहासन। वि. समर्थ। °पट्ट न. बिच्छू की पूंछ जैसे आकारवाला एक शस्त्र।
°अल देखो तल।
अलं अ. [अलम्] पर्याप्त, पूर्ण। प्रतिषेध, निवारण, बस। अलङ्कार।
अलंकर सक [अलं+कृ] भूषित करना।
अलंकरण न [अलङ्करण] अलंकार। वि. शोभाकारक।
अलंकार पुं [अलङ्कार] साहित्यशास्त्र। पुंन. एक देवविमान।
अलंकार पुं. गहना। शोभा। °सहा स्त्री [°सभा] भूषा-गृह।
अलंकारिग पुं [अलंकारिक] हजाम। °कम्म न [°कर्मन्] हजामत। °सहा स्त्री [°सभा] हजामत बनाने का स्थान।
अलंकिय वि [अलंकृत] विभूषित, सुशोभित। न. संगीत का एक गुण।
अलंकुण देखो अलंकर।
अलंघ वि [अलङ्घ्य] उल्लंघन करने के अयोग्य। उल्लंघन करने के अशक्य।
अलंप पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा।
अलंबुसा स्त्री [अलम्बुषा] एक दिक्कुमारी देवी का नाम। गुल्म-विशेष।
अलंभि स्त्री [अलाभ] अप्राप्ति।
अलका स्त्री. नगरी-विशेष, पहले प्रतिवासुदेव की राजधानी। देखो अलया।
अलक्ख पुं [अलक्ष] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी। न. 'अंतगडदसा' सूत्र के एक अध्ययन का नाम।
अलक्खमाण वि [अलक्ष्यमाण] जो पहिचाना न जा सकता हो, गुप्त।
अलग देखो अलय = अलक।
अलगा देखो अलया।
अलग्ग न [दे] कलंक देना, दोष का झूठा आरोप।
अलचपुर न [अचलपुर] नगर-विशेष।
अलज्ज वि. बेशरम।
अलट्टपलट्ट न [दे] पार्श्व का परिवर्तन।
अलत्त पुं [अलक्त] आलता।
अलत्तय पुं [अलक्तक] ऊपर देखो। वि. आलता से रंगा हुआ।
°अलधोय देखो कलधोय।
अलमंजुल वि [दे] आलसी, सुस्त।
अलमंथु वि [अलमस्तु] समर्थ। निषेधक, निवारक।
अलमल पुं [दे] दुर्दान्त बैल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलमलवसह पुं [दे] उन्मत्त बैल।

अलय न [दे] प्रवाल।

अलय पुं [अलक] बिच्छू का कांटा। केश, घुंघराले बाल।

अलया स्त्री [अलका] कुबेर की नगरी। देखो अलका।

अलव वि [अलप] मौनी।

अलवलवसह पुं [दे] धूर्त बैल।

अलस वि. आलसी। मन्द। पुं. क्षुद्र कीटविशेष, भू-नाग, वर्षाऋतु में साँप सरीखा लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है।

अलस वि [दे] मधुर आवाजवाला। कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ। न. मोम।

°अलस देखो कलस।

अलसग } पुं [अलसक] विसूचिका रोग।
अलसय } श्वयथु, सूजन।

अलसाइअ वि [अलसायित] जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द।

अलसाय अक [अलसाय्] आलसी होना, आलसी की तरह काम करना।

अलसी देखो अयसी।

अला स्त्री. इस नाम की एक देवी। एक इन्द्राणी का नाम। °वडिंसग न [°वतंसक] अलादेवी का भवन।

°अला देखो कला।

अलाउ न [अलाबु] तुम्बी फल, लौकी।

अलाऊ } स्त्री [अलाबू] तुम्बी-लता।
अलाबू }

अलाय न [अलात] उल्मुक, जलता हुआ काष्ठ। कोयला।

अलावणी स्त्री [अलाबुवीणा] वीणा-विशेष।

अलावु देखो अलाउ।

अलाबू देखो अलाऊ।

अलाहि देखो अलं।

अलि पुंस्त्री. वृश्चिक राशि। पुं. भ्रमर। °उल न [°कुल] भ्रमरों का समूह। °विरुय न [°विरुत] भ्रमर का गुञ्जारव।

अलिअल्ली स्त्री [दे] कस्तूरी। व्याघ्र, शेर।

अलिआ स्त्री [दे] सखी।

अलिआर न [दे] दूध।

अलिंजर न [अलिञ्जर] घड़ा, कुम्भ। कुंड, पात्र-विशेष। रंग-पात्र।

अलिंद न [अलिन्द] एक प्रकार का जलपात्र।

अलिंदग पुं [अलिन्दक] द्वार का एक प्रकोष्ठ। घर के बाहर के दरवाजे का चौक। बाहर का अग्रभाग।

अलिंदय पुंन [आलिन्दक] धान्य रखने का पात्र-विशेष।

अलिण पुं [दे] बिच्छू।

अलिणी स्त्री [अलिनी] भ्रमरी।

अलित्त न [अरित्र] नौका खेवने का डाँड़, चप्पू।

अलिय न [अलिक] कपाल।

अलिय न [अलीक] असत्य वचन। वि. खोटा। निष्फल, निरर्थक। °वाइ वि [°वादिन्] मृषावादी।

अलिल्ल सक [कथय्] कहना, बोलना।

अलिल्लह न [दे] छन्द विशेष का नाम। वि. अप्रयोजक, नियमरहित।

अलिल्ला स्त्री. इस नाम का एक छन्द।

अलीग } देखो अलिय = अलीक।
अलीय }

अलीवहू स्त्री [अलिवधू] भ्रमरी।

अलीसअ स्त्री पुं [दे] शाक-वृक्ष, साग का पेड़।

अलुक्खि वि [अरूक्षिन्] कोमल।

अलेसि वि [अलेश्यिन्] लेश्यारहित। पुं. मुक्त आत्मा।

अलोग पुं [अलोक] जीव-पुद्गल आदि रहित आकाश।

अलोय देखो अलोग।

अल्ल न [दे] दिवस।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अल्ल देखो **अट्ट** ।

अल्ल अक [**नम्**] नीचे झुकना ।

अल्लई स्त्री [**आर्द्रकी**] आर्द्रकलता ।

अल्लग देखो **अल्लय** = आर्द्रक ।

अल्लत्थ सक [**उत्** + **क्षिप्**] ऊँचा फेंकना ।

अल्लत्थ न [**दे**] जलार्द्रा, गीला पंखा । केयूर, भूषण-विशेष ।

अल्लय न [**आर्द्रक**] अदरक । °**तिय** न [°**त्रिक**] आदी, हल्दी और कचूर ।

अल्लय वि [**दे**] परिचित, ज्ञात ।

अल्लय पुं [**अल्लक**] इस नाम का एक विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्योतन-सूरि का उपाध्याय-अवस्था का नाम ।

अल्लल्ल पुं [**दे**] मयूर ।

अल्लविय [**अप**] देखो **आलत्त** = आलपित ।

अल्ला स्त्री [**दे**] माता ।

अल्लि } देखो **अल्ली** ।
अल्लिअ }

अल्लिअ सक [**उप** + **सृप्**] समीप में जाना ।

अल्लिअ वि [**आर्द्रित**] गीला किया हुआ ।

अल्लियावण न [**आलायन**] आलीन करना, श्लिष्ट करना, मिलान ।

अल्लिल्ल पुं [**दे**] भमरा ।

अल्लिव सक [**अर्पय्**] अर्पण करना ।

अल्ली } सक [**आ** + **ली**] आना ।
अल्लीअ } प्रवेश करना । जोड़ना । आश्रय करना । आलिंगन करना । अक. संगत होना ।

अल्लीण वि [**आलीन**] आश्लिष्ट । आगत । प्रविष्ट । संगत । योजित । थोड़ा लीन । आश्रित । तल्लीन, तत्पर ।

अल्लेस वि [**अलेश्य**] लेश्यारहित ।

अल्लोग देखो **अलोग** ।

अल्हाद पुं [**आह्लाद**] आनन्द ।

अव अ [**अप**] इन अर्थों का सूचक अव्यय— विपरीतता । वापसी । बुरापन । न्यूनता । रहितपन, वियोग । बाहरपन ।

अव अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—निम्नता । पीछेपन । तिरस्कार, अनादर । बुराई । गमन । अनुभव । हानि, ह्रास । अभाव । मर्यादा । निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है ।

अव सक [**अव्**] रक्षण करना । जाना, गमन करना । इच्छा करना । जानना । प्रवेश करना । सुनना । माँगना । करना, बनाना । चाहना । प्राप्त करना । आलिङ्गन । हिंसा करना । जलाना । अक. प्रीति करना । तृप्त होना । प्रकाशना । बढ़ना ।

अव पुं. आवाज ।

अवअक्ख सक [**दृश्**] देखना ।

अवअक्खिअ न [**दे**] मुंडाया हुआ मुंह ।

अवअच्छ न [**दे**] कक्षा-वस्त्र ।

अवअच्छ अक [**ह्लाद्**] खुश होना ।

अवअच्छ सक [**ह्लादय्**] खुश करना ।

अवअच्छिअ [**दे**] देखो **अवअक्खिअ** ।

अवअज्झ सक [**दृश्**] देखना ।

अवअणिअ वि [**दे**] अनघटित, असंयुक्त ।

अवअण्ण पुं [**दे**] ऊखल, गूगल ।

अवअत्त वि [**अपवृत्त**] स्खलित ।

अवआस सक [**दृश्**] देखना ।

अवइ वि [**अव्रतिन्**] व्रतशून्य, अविरत, असंयत ।

अवइण्ण वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ, जन्मा हुआ ।

अवइद (शौ) वि [**अवचित**] एकत्रित ।

अवइद (शौ) वि [**अपकृत**] जिसका अहित किया गया हो वह । न. अपकार, अहित ।

अवउज्ज सक [**अवकुब्ज्**] नीचे नमना ।

अवउज्झ सक [**अप** + **उज्झ्**] परित्याग करना ।

अवउज्भ° देखो **अवबह** ।

अवउडग } देखो **अवओडग** ।
अवउडय }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवउंठण न [अवगुण्ठन] ढकना। मुंह ढकने का वस्त्र, घूंघट।

अवऊढ वि [अवगूढ] आलिंगित।

अवऊसण न [अपवसन] तपश्चर्या-विशेष।

अवऊसण न [अपजोषण] ऊपर देखो।

अवऊहण न [अवगूहन] आलिङ्गन।

अवएड पुं [अवएज] तापिका-हस्त, पात्र-विशेष।

अवएस पुं [अपदेश] बहाना, छल।

अवओडग न [अवकोटक] गले को मरोड़ना, कृकाटिका को नीचे ले जाना। °बंधण न [°बन्धन] हाथ और सिर को पृष्ठ भाग से बाँधना। वि. रस्सी से गला और हाथ को मोड़कर पृष्ठ भाग के साथ जिसको बांधा जाय वह।

अवंग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग।

अवंग पुं [दे] कटाक्ष।

अवंगु } वि [दे. अपावृत] नहीं ढका
अवंगुय } हुआ।

अवंगुण सक [दे] खोलना।

अवंचिअ वि [अवाञ्चित] अधोमुख, अवाङ्मुख।

अवंझ वि [अवन्ध्य] सफल, अचूक। °पवाय न [°प्रवाद] ग्यारहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष।

अवंतर वि [अवान्तर] भीतरी।

अवंति पुं. भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र।

अवंति } स्त्री. मालव देश। मालव देश की
अवंती } राजधानी, जो आजकल राजपूताना में 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] आजीविक मत में प्रसिद्ध काल-विशेष। °वड्ढण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा। °सुकुमाल पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र, जो आर्यसुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा लेकर देव-लोक के नलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न हुआ है। °सेण पुं [°षेण] एक राजा।

अवंदिम वि [अवन्द्य] प्रणाम के अयोग्य।

अवकंख सक [अव + काङ्क्ष] चाहना। देखना।

अवकंत देखो **अवक्कंत**।

अवकप्प सक [अव + कल्पय्] कल्पना करना, मान लेना।

अवकय वि [अपकृत] जिसका अपकार किया गया हो वह। अपकार, अहित।

अवकर सक [अप + कृ] अहित करना।

अवकरिस पुं [अपकर्ष] ह्रास, हानि।

अवकलुसिय वि [अपकलुषित] मलिन।

अवकस सक [अव + कृष्] त्याग करना।

अवकारि वि [अपकारिन्] अहित करने वाला।

अवकिण्ण वि [अवकीर्ण] परित्यक्त।

अवकिण्णग } पुं [अपकीर्णक] करकण्डू
अवकिण्णय } नामक एक जैन महर्षि का पूर्व नाम।

अवकित्ति स्त्री [अपकीर्त्ति] अपयश।

अवकिदि स्त्री [अपकृत्ति] अपकार, अहित।

अवकीरण न [अवकरण] त्याग, उत्सर्ग।

अवकीरिअ वि [दे. अवकीर्ण] विरहित।

अवकीरियव्व वि [अवकरितव्य] त्याज्य।

अवकूजिय न [अवकूजित] हाथ को ऊँचा-नीचा करना।

अवकेसि पुं [अवकेशिन्] फल-वन्ध्य वनस्पति।

अवकोडक देखो **अवओडग**।

अवक्कंत वि [अपक्रान्त] पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ। निकृष्ट।

अवक्कंत पुं [अवक्रान्त] प्रथम नरक भूमि का ग्यारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष।

अवक्कंति स्त्री [अपक्रान्ति] अपसरण। निर्गमन।

अवक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] गमन।

अवक्कम अक [अप + क्रम्] पीछे हटना। बाहर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निकलना। भागना।
अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना।
अवक्कमण न [अपक्रमण] अवतरण।
अवक्कय पुं [अवक्रय] भाड़ा, भाटि।
अवक्कय वि [अपकृत] जिसका अहित किया गया हो वह।
अवक्करस पुं [दे] दारु।
अवक्करिस } पुं [अपकर्ष] ह्रानि, अपचय।
अवक्कास }
अवक्कास पुं [अवकर्ष] ऊपर देखो।
अवक्कास पुं [अप्रकाश] अन्धकार।
अवक्कोस पुं [अवक्रोश] अहंकार।
अवक्ख सक [दृश्] देखना।
अवक्खंद पुं [अवस्कन्द] शिविर, सैन्य का पड़ाव। नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन।
अवक्खर पुं [अवस्कर] पुरीष, विष्ठा।
अवक्खारण न [अपक्षारण] निर्भर्त्सना, कठोर वचन। सहानुभूति का अभाव।
अवक्खेव पुं [अवक्षेप] विघ्न।
अवक्खेवण न [अवक्षेपण] बाधा, अन्तराय। क्रिया-विशेष, नीचे जाना।
अवखेर सक [दे] खिन्न करना। तिरस्कार करना।
अवग पुन [दे. अवक] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष।
अवगइ स्त्री [अपगति] खराब गति। गोपनीय स्थान।
अवगंड न [अवगण्ड] सुवर्ण। पानी का फेन।
अवगच्छ सक [अप + गम्] जानना।
अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना, निकल जाना।
अवगण } सक [अव + गणय्] अनादर करना।
अवगण्ण }
अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल।
अवगम पुं [अपगम] अपसरण। विनाश।
अवगम सक [अव + गम्] जानना। निर्णय करना।
अवगमिअ } वि [अवगत] ज्ञात, विदित। निश्चित, अवधारित।
अवगय }
अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट।
अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, अहित करना।
अवगरिस देखो अवक्करिस।
अवगल वि [दे] आक्रान्त।
अवगल्ल वि [अवग्लान] बीमार।
अवगहण न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण।
अवगाढ देखो ओगाढ।
अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने-वाला।
अवगार पुं [अपकार] अपकार, अहित-करण।
अवगारय वि [अपकारक] अपकार-कारक।
अवगास पुं [अवकाश] फुरसत। स्थान। अवस्थान।
अवगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना।
अवगाह पुं [अवगाह] अवगाहन। अवकाश।
अवगाहणा देखो ओगाहणा।
अवगिंचण न [दे. अवविवेचन] पृथक्करण।
अवगिज्झ देखो ओगिज्झ।
अवगीय वि [अवगीत] निन्दित।
अवगुंठण देखो अवउंठण।
अवगुंठिय वि [अवगुण्ठित] आच्छादित।
अवगुण पुं [अवगुण] दुर्गुण, दोष।
अवगुण सक [अव + गुणय्] उद्घाटन करना।
अवगूढ वि [अवगूढ] आलिंगित। व्याप्त।
अवगूढ न [दे] व्यलीक, अपराध।
अवगूहण न [अवगूहन] आलिंगन।
अवगूहाविय वि [अवगूहित] आश्लेषित।
अवग्ग वि [अव्यक्त] अस्पष्ट। पुं. अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु।
अवग्गह देखो उग्गह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गह।
अवच देखो अवय = अवच।
अवचइय वि [अपचयिक] अपकर्षप्राप्त, ह्रासवाला।
अवचय पुं [अपचय] ह्रास।
अवचय पुं. इकट्ठा करना।
अवचि अक[अप + चि]हीन होना, कम जाना।
अवचि } सक [अव + चि] इकट्ठा करना
अवचिण } (फूल आदि को वृक्ष से तोड़कर)।
अवचिय वि [अवचित] हीन, ह्रासप्राप्त।
अवचिय वि [अपचित] इकट्ठा किया हुआ।
अवचुण्णिय वि [अवचूर्णित] तोड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ।
अवचुल्ल पुं. चूल्हे का पीछला भाग।
अवचूल देखो ओऊल।
अवच्च वि [अवाच्य] बोलने के अयोग्य। बोलने के अशक्य।
अवच्च न [अपत्य] संतान। °व वि [°वत्] संतानवाला।
अवच्चिज्ज देखो अवच्चीय।
अवच्चीय वि [अपत्यीय] संतान-सम्बन्धी।
अवच्छुण्ण न [दे] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन।
अवच्छेय पुं [अवच्छेद] विभाग, अंश।
अवछंद वि [अपच्छन्दरक] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दोदोष-दुष्ट।
अवजस पुं [अपयशस्] अपकीर्ति।
अवजाण सक [अप + ज्ञा] अपलाप करना।
अवजाय पुं [अपजात] पिता की अपेक्षा हीन वैभववाला पुत्र।
अवजिब्भ पुं [अपजिह्व] दूसरी नरक-पृथिवी का आठवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष।
अवजीव वि [अपजीव] मृत, अचेतन।
अवजुय वि [अवयुत] पृथग्भूत।
अवज्ज न [अवद्य] पाप। वि. निन्दनीय।
अवज्जस सक [गम्] जाना।
अवज्जा स्त्री [अवज्ञा] अनादर।
अवज्झ सक [दृश्] देखना।
अवज्झस न [दे] कटि। वि. कठिन।
अवज्झा स्त्री [अवध्या] अयोध्या नगरी। विदेह वर्ष की एक नगरी।
अवज्झाण } पुंन [अपध्यान] दुर्ध्यान, बुरा
अवझाण } चिन्तन।
अवज्झाय वि [अपध्यात] दुर्ध्यान का विषय। तिरस्कृत।
अवज्झाय (अप) देखो उवज्झाय।
अवट्ट सक [अप + वृत्] घुमाना।
अवट्ट अक [अप + वृत्] पीछे हटना।
अवट्टा स्त्री [आवर्त्ता] राजमार्ग से बाहर की जगह।
अवट्ठंभ पुं [अवष्टम्भ] अवलम्बन। दृढ़ता, हिम्मत।
अवट्ठंभ देखो अवठंभ।
अवट्ठंभण } न [अवष्टम्भन] सहारा।
अवट्ठहण }
अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] रोका हुआ।
अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध]अवलम्बित। आक्रान्त।
अवट्ठुव सक [अव + स्तम्भ्] अवलम्बन करना।
अवट्ठाण न [अवस्थान] अवस्थिति, अवस्था। व्यवस्था।
अवट्ठिअ वि [अवस्थित] अवगाहन करके स्थित। कर्म-बन्ध विशेष, प्रथम समय में जितनी कर्म-प्रकृतियों का बन्ध हो द्वितीय आदि समयों में भी उतनी ही प्रकृतियों का जो बन्ध हो वह। स्थिर रहनेवाला। नित्य। जो बढ़ता-घटता न हो।
अवट्ठिइ स्त्री [अवस्थिति] अवस्थान।
अवठंभ सक [अव + स्तम्भ्] अवलम्बन करना।
अवठंभ पुं [दे] ताम्बूल।
अवड पुं [अवट] कुँआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवड पुं [दे] कूप। बगीचा।
अवडअ पुं [दे] चञ्चा. घास-फूस का पुतला, तृण-पुरुष।
अवडंक पुं [अवटङ्क] प्रसिद्धि, ख्याति।
अवडक्किअ वि [दे] कूप आदि में गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह।
अवडाहु सक [उत् + क्रुश्] ऊँचे स्वर से रुदन करना।
अवडाहिअ न [दे] ऊँचे स्वर से रोदन। वि. उत्कृष्ट।
अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त।
अवडु पुं [अवटु] कृकाटिका, घंटी या घांटी, कण्ठमणि।
अवडुअ पुं [दे] उलूखल।
अवडुल्लिअ वि [दे] कूप आदि में गिरा हुआ।
अवड्डा स्त्री [दे] कृकाटिका, घट्टी, गर्दन का ऊँचा हिस्सा।
अवड्ढ वि [अपार्ध] आधा। आधा दिन। आधे से कम। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] नक्षत्र-विशेष। मुहूर्त-विशेष।
अवण पुं [दे] पानी का प्रवाह। घर का फलहक।
अवण न [अवन] गमन। अनुभव।
अवणण देखो अवणयण।
अवणद्ध वि [अवनद्ध] संबद्ध। आच्छादित।
अवणम अक [अव + नम्] नीचे नमना।
अवणमिय वि [अवनत] अवनत।
अवणमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ।
अवणय वि [अवनत] नमा हुआ।
अवणय पुं [अपनय] अपनय, हटाना। निन्दा।
अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना।
अवणाम पुं [अवनाम] ऊर्ध्वगमन।
अवणि स्त्री [अवनि] पृथिवी।
अवणिंद पुं [अवनीन्द्र] राजा।
अवणिय देखो अवणीय।
अवणी देखो अवणि। °सर पुं [°श्वर] भूमिपति।
अवणी सक [अप + नी] दूर करना, हटाना।
अवणीय वि [अपनीत] दूर किया हुआ।
अवणीयवयण न [अपनीतवचन] निन्दावचन।
अवणोय पुं [अपनोद] अपनयन।
अवण्ण न [दे] अवज्ञा।
अवण्णा स्त्री [अवज्ञा] तिरस्कार।
अवण्हव पुं [अपह्नव] अपलाप।
अवण्हवण न [अपह्नवन] अपलाप।
अवण्हाण न [अवस्नान] साबुन आदि से स्नान करना।
अवतंस देखो अवयंस = अवतंस।
अवतंस पुं. मेरुपर्वत।
अवतंसिय वि [अवतंसित] विभूषित।
अवतट्ठ वि [अवतष्ट] तनुकृत, छिला हुआ।
अवतट्ठि देखो अवयट्ठि = अवतष्टि।
अवतारण न उतारना। योजना करना।
अवतासण न [अवत्रासन] डराना।
अवतित्थ न [अपतीर्थ] खराब किनारा।
अवत्त वि [अव्यक्त] अस्पष्ट। कम उमर वाला। असंस्कृत। पुं. देखो अवग्ग।
अवत्त वि [अवात] पवनरहित।
अवत्त वि [अवाप्त] प्राप्त, लब्ध।
अवत्त न [अवत्र] आसन-विशेष।
अवत्तय वि [दे] विसंस्थुल, अव्यवस्थित।
अवत्तव्व वि [अवक्तव्य] अनिर्वचनीय। सप्त-भंगी का चतुर्थ भंग।
अवत्तिय न [अव्यक्तिक] एक जैनाभास मत, निह्नवप्रचालित एक मत। वि. इस मत का अनुयायी।
अवत्थंतर न [अवस्थान्तर] भिन्न अवस्था।
अवत्थग वि [अपार्थक] व्यर्थ। असम्बद्ध अर्थ-वाला।
अवत्थद्ध वि [अवष्टब्ध] अवलम्बन-प्राप्त।
अवत्थय वि [अपार्थक] निरर्थक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवत्थरा स्त्री [दे] पाद-प्रहार ।

अवत्था स्त्री [अवस्था] दशा, अवस्थिति ।

अवत्थाव सक [अव + स्थापय्] स्थिर करना, ठहराना । व्यवस्थित करना ।

अवत्थिअ देखो अवट्ठिय ।

अवत्थिय वि [अवस्तृत] प्रसारित ।

अवत्थु न [अवस्तु] अभाव, असत्त्व । वि. निरर्थक, निष्फल ।

अवथंभ देखो अवठंभ ।

अवदग्ग देखो अवयग्ग ।

अवदल वि [अपदल] साररहित । अपक्व ।

अवदहण न [अवदहन] दम्भन, गरम लोहे के कोश आदि से चर्म (फोड़े आदि) पर दागना ।

अवदाण न [अवदान] शुद्ध कर्म ।

अवदाय वि [अवदात] पवित्र, निर्मल । सफेद ।

अवदार न [अपद्वार] छोटी खिड़की । गुम-द्वार ।

अवदाल सक [अव + दलय्] खोलना । विकसित करना । विजृम्भित करना ।

अवदिसा स्त्री [अपदिक्] भ्रान्त दिशा ।

अवदेस देखो अवएस ।

अवद्दार } देखो अवदार ।
अवद्दाल }

अवद्दाहणा स्त्री. देखो अवदहण ।

अवद्दुस न [दे] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण ।

अवद्धंस पुं [अवध्वंस] विनाश ।

अवधंसि वि [अपध्वंसिन्] विनाशकारक ।

अवधार सक [अव + धारय्] निश्चय करना ।

अवधारणा स्त्री. दीर्घकाल तक याद रखने की शक्ति ।

अवधाव सक [अप + धाव्] पीछे दौड़ना ।

अवधिका स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक ।

अवधीरिय वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित ।

अवधुण } सक [अव + धू] परित्याग करना ।
अवधूण } अवज्ञा करना ।

अवधूय वि [अवधूत] अवज्ञात, तिरस्कृत । विक्षिप्त ।

अवनिद्दय पुं [अपनिद्रक] निद्रा का अभाव ।

अवपंगुण } सक [दे] खोलना ।
अवपंगुर }

अवपक्का स्त्री [अवपाक्या] छोटा तवा ।

अवपुट्ठ वि [अवस्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह ।

अवपुसिय वि [दे] संघटित, संयुक्त ।

अवपूर सक [अव + पूरय्] पूर्ण करना ।

अवपेक्ख सक [अवप्र + ईक्ष्] अवलोकन करना ।

अवप्पओग पुं [अपप्रयोग] उलटा प्रयोग, विरुद्ध औषधियों का मिश्रण ।

अवप्फार पुं [अवस्फार] विस्तार, फैलाव ।

अवबंध पुं [अवबन्ध] बन्ध, बन्धन ।

अवबद्ध वि. बँधा हुआ, नियन्त्रित ।

अवबाण वि [अपबाण] बाणरहित ।

अवबुज्झ सक [अव + बुध्] जानना । समझना ।

अवबोह पुं [अवबोध] ज्ञान, बोध । विकास । जागरण । स्मरण ।

अवबोहि पुं [अवबोधि] ज्ञान । निश्चय, निर्णय ।

अवभास अक [अव + भास्] चमकना, प्रकाशित होना ।

अवभास पुं. प्रकाश । ज्ञान ।

अवभासण वि [अवभासन] प्रकाश-कर्त्ता ।

अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशक ।

अवभासिय वि [अपभाषित] आक्रुष्ट, अभिशप्त ।

अवम देखो ओम ।

अवमग्ग पुं [अपमार्ग] खराब रास्ता ।

अवमग्ग पुं [अपामार्ग] वृक्ष-विशेष, चिचड़ा,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

लटजीरा ।
अवमच्चु पुं [अपमृत्यु] अकाल मृत्यु ।
अवमज्ज सक [अव + मृज्] पोंछना, झाड़ना, साफ करना ।
अवमण्ण सक [अव + मन्] तिरस्कार करना । निरादर करना । अवज्ञा करना ।
अवमद्द पुं [अवमर्द] मर्दन, विनाश ।
अवमद्दग वि [अवमर्दक] मर्दन करने वाला ।
अवमन्निय, अवमय } वि [अवमत] अवज्ञात, अवगणित ।
अवमाण पुं [अपमान] तिरस्कार ।
अवमाण पुंन [अवमान] अवज्ञा । परिमाण ।
अवमाण सक [अव + मानय्] अवगणना करना ।
अवमाणिय वि [अवमानित] अवज्ञात, अनादृत । अपूरित ।
अवमार पुं [अपस्मार] भयंकर रोग-विशेष, पागलपन ।
अवमारिय वि [अपस्मारित, °रिक] अपस्मार रोग वाला ।
अवमारुय पुं [अवमारुत] नीचे चलता पवन ।
अवमिच्चु देखो अवमच्चु ।
अवमिय वि[दे]जिसको घाव हो गया हो वह ।
अवमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त ।
अवमेह वि [अपमेघ] मेघ-रहित ।
अवय देखो अपय = अपद ।
अवय न [अब्ज] कमल ।
अवय वि [अवच] नीचा । जघन्य । प्रतिकूल ।
अवयंस पुं [अवतंस] शिरोभूषण विशेष । कान का आभूषण ।
अवयंस सक [अवतंसय्] भूषित करना ।
अवयक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना ।
अवयक्ख सक [अव + ईक्ष्] देखना । पीछे से देखना ।
अवयक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा ।
अवयग्ग न [दे] अन्त, अवसान ।
अवयच्छ सक [अव + गम्] जानना ।
अवयच्छ सक [दृश्] देखना ।
अवयच्छिय वि [दे] प्रसारित ।
अवयज्झ सक [दृश्] देखना ।
अवयट्ठि स्त्री [अवतष्टि] पतला करना ।
अवयट्ठि वि [अवस्थायिन्]स्थिर रहनेवाला ।
अवयट्ठि स्त्री [अवकृष्टि] आकर्षण ।
अवयड्ढिअ वि [दे] युद्ध में पकड़ा हुआ ।
अवयण न [अवचन] कुत्सित वचन, दूषित भाषा ।
अवयर सक [अव + तॄ] नीचे उतरना । जन्म ग्रहण करना ।
अवयरिअ पुं [दे] वियोग ।
अवयरिअ वि [अपकृत] जिसका अपकार किया गया हो वह । न. अपकार, अहित-करण ।
अवयव पुं. अंश, विभाग । अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश ।
अवयाढ देखो ओगाढ ।
अवयाण न [दे] खींचने की डोरी, लगाम ।
अवयाय पुं [अववाय] अपराध, दोष ।
अवयाय वि [अवदात] निर्मल ।
अवयार पुं [अपकार] अहित-करण ।
अवयार पुं [अवतार] उतरना । देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण । मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना । संगति, योजना । प्रवेश । समावेश ।
अवयार पुं [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें ईख से दतवन आदि किया जाता है ।
अवयारण न [अवतारण] उतारना ।
अवयारय देखो अवगारय ।
अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ ।
अवयास सक [श्लिष्] आलिंगन करना ।
अवयास सक [अव + काश्] प्रकट करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवयास देखो अवगास।
अवयास पुं [श्लेष]आलिंगन।
अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ।
अवयासिणी स्त्री [दे] नाक में डाली जाती डोर।
अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न। °हा अ [°था] अन्यथा।
अवर स [अपर] पिछला काल या देश। पिछले काल या देश में रहा हुआ, पाश्चात्य। पश्चिम दिशा में स्थित। °कंका स्त्री [°कङ्का] धातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी। इस नाम के 'ज्ञातधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन। °ण्ह पुं (°ाह्न) दिन का अन्तिम प्रहर। दिन का उत्तरी भाग। °दाहिण पुं [°दक्षिण] नैऋत्य कोण। वि. नैऋत्य कोण में स्थित। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत्य कोण। °फाणु स्त्री [°पार्ष्णि] एड़ी, अड्डी का पिछला भाग। °राय पुं [°रात्र] देखो अवरत्त = अपररात्र। °विदेह पुं. महाविदेह नामक वर्ष का पश्चिम भाग। °विदेहकुड न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष। देखो अपर।
अवरंमुह वि [अपराङ्मुख] संमुख। तत्पर।
अवरच्छ देखो अपरच्छ।
अवरज्ज पुं [दे] गत दिन। आगामी दिन। प्रभात, सुबह।
अवरज्झ अक[अप + राध्] गुनाह करना। नष्ट होना।
अवरत्त पुं [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग।
अवरत्त वि [अपरक्त]विरक्त,उदास। नाखुश।
अवरत्तअ } पुं [दे] पश्चात्ताप।
अवरत्तेअ
अवरदक्खिणा देखो अवर-दाहिणा।
अवरद्ध न[अपराद्ध]अपराध। वि. अपराधी। विनाशित।
अवरद्धिग वि [अपराधिक] अपराधी, दोषी। पुं. लूता-स्फोट। सर्पादि-दंश।
अवरद्धिग } पुंस्त्री [अपराधिक] सर्पदंश।
अवरद्धिय } फुनसी, छोटा फोड़ा।
अवरा स्त्री [अपरा] विदेहवर्ष की एक नगरी। पश्चिम दिशा।
अवराइया देखो अपराइया।
अवराइस देखो अण्णाइस।
अवराजिय देखो अपराइय।
अवराजिया देखो अपराइया।
अवराह पुं[अपराध] गुनाह। अनिष्ट, बुराई।
अवराह पुं [दे] कटी।
अवराहिय न [अपराधित]अपराध। अपकार, अनिष्ट, अहित।
अवराहुत्त वि [अपराभिमुख] पराङ्मुख। पश्चिम दिशा की तरफ मुँह किया हुआ।
अवरि } अ [उपरि] ऊपर।
अवरिं
अवरिक्क वि [दे] अनवसर।
अवरिगलिअ वि [अपरिगलित]पूर्ण, भरपूर।
अवरिज्ज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण।
अवरिल्ल वि [उपरि] उत्तरीय वस्त्र, चादर।
अवरिल्ल वि [अपरीय] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा सम्बन्धी।
अवरिहड्ढपुसण न [दे] अकीर्त्ति, अजस। असत्य। दान।
अवरुंड सक [दे] आलिङ्गन करना।
अवरुत्तर पुं [अपरोत्तर] वायव्य कोण। वि. वायव्य कोण में स्थित।
अवरुत्तरा स्त्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा।
अवरुद्ध वि. घिरा हुआ।
अवरुप्पर देखो अवरोप्पर।
अवरुह अक [अव + रुह्] नीचे उतरना।
अवरूव देखो अपुव्व।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरोप्पर } वि [परस्पर] आपस में।
अवरोवर }
अवरोह पुं [अवरोध] अन्तःपुर। अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री। नगर को सैन्य से घेरना। संक्षेप। प्रतिबन्ध। °जुवइ स्त्री [°युवति] अन्तःपुर की स्त्री।
अवरोह पुं. उगनेवाला (तृण आदि)।
अवरोह पुं [दे] कटि।
अवलंब सक [अव + लम्ब्] आश्रय लेना। लटकना।
अवलंब } पुं [अवलम्ब, °क] सहारा,
अवलंबग } आश्रय। वि. लटकनेवाला। सहारा लेनेवाला।
अवलंबणया स्त्री [अवलम्बनता] अवग्रह-ज्ञान।
अवलक्खण न [अपलक्षण] खराब लक्षण, बुरी आदत।
अवलग्ग वि [अवलग्न] आरूढ़। संलग्न।
अवलत्त वि [अपलपित] छिपाया हुआ।
अवलद्ध वि [अपलब्ध] अनादर से प्राप्त।
अवलद्धि स्त्री [अवलब्धि] अप्राप्ति।
अवलय न [दे] मकान।
अवलव सक [अप + लप्] असत्य बोलना। सत्य को छिपाना।
अवलाव पुं [अपलाप] अपह्नव।
अवलिअ न [दे] झूठ।
अवलिंब पुं [अवलिम्ब] जीव या पुद्गलों से व्याप्त स्थान-विशेष।
अवलिच्छअ वि [दे] अप्राप्त, अनासादित।
अवलित्त वि [अवलिप्त] व्याप्त। लिप्त। गर्वित।
अवलुअ देखो अवल्लय।
अवलुआ स्त्री [दे] गुस्सा।
अवलुत्त वि [अवलुप्त] लोप-प्राप्त।
अवलेअ } पुं [अवलेप] अहंकार। लेप,
अवलेव } लेपन। अनादर।
अवलेह पुं. चटनी।
अवलेहणिया स्त्री [अवलेखनिका] बांस का छिलका। धूलि आदि झाड़ने का एक उपकरण।
अवलेहि } स्त्री [अवलेखि, °का] बांस
अवलेहिया } का छिलका। लेह्य विशेष। चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध।
अवलोअ सक [अव + लोक्] देखना, अवलोकन करना।
अवलोग } पुं [अवलोक] अवलोकन,
अवलोय } दर्शन।
अवलोयण न [अवलोकन] विलोकन। स्थान-विशेष। शिखर-विशेष।
अवलोयणी स्त्री [अवलोकनी] देवी-विशेष।
अवलोव पुं [अपलोप] छिपाना, लोप करना।
अवलोवणी स्त्री [अपलोपनी] विद्या-विशेष।
अवलोह वि [अपलोह] लोहरहित।
अवल्लय न [दे. अवल्लक] नौका खेवने का उपकरण-विशेष।
अवल्लाव } पुं [दे. अपलाप] असत्य-
अवल्लावय } कथन, अपलाप।
अवव न. संख्या-विशेष, 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।
अववंग न [अववाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।
अववक्कल वि [अपवल्कल] त्वचारहित।
अववक्का स्त्री [अवपाक्या] छोटा तवा।
अववग्ग पुं [अपवर्ग] मोक्ष।
अववट्टण न [अपवर्तन] अपसरण। कर्मपरमाणुओं की दीर्घ स्थिति को छोटी करना।
अववत्त वि [अपवृत्त] वापस लौटा हुआ। अपसृत।
अववरक पुं [अपवरक] कोठरी, छोटा घर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अववह सक [अप + वह्] बाहर फेंकना, दूर हटाना ।

अववाइअ वि [आपवादिक] अपवाद-संबंधी ।

अववाइय वि [अपवादिक] अपवादवाला ।

अववाय पुं [अपवाद] विशेष नियम, अपवाद । निन्दा, अवर्ण-वाद । अनुज्ञा, संमति । निश्चय, निर्णय वाली हकीकत ।

अववास सक [अव + काश्] अवकाश देना, जगह देना ।

अववाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना ।

अवविह पुं [अवविध] गोशालक के एक भक्त का नाम ।

अववीड पुं [अवपीड] निष्पीड़न, दबाना ।

अवस वि [अवश] पराधीन । स्वतन्त्र । अकाम, अनिच्छु ।

अवसं अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय ।

अवसउण न [अपशकुन] अनिष्ट-सूचक निमित्त ।

अवसंकि वि [अपशङ्किन्] अपसरणकर्ता ।

अवसक्क सक [अव + ष्वष्क्] पीछे हट जाना ।

अवसण्ण वि [दे] टपका हुआ ।

अवसण्ण वि [अवसन्न] निमग्न ।

अवसद्द पुं [अपशब्द] अशुद्ध शब्द । खराब वचन । अपकीर्त्ति ।

अवसप्प अक [अव + सृप्] पीछे हटाना । निवृत्त होना । उतरना ।

अवसप्पण न [अपसर्पण] अपसरण, अपवर्तन ।

अवसप्पिणी देखो **ओसप्पिणी** ।

अवसमिआ [दे] देखो **अंबसमी** ।

अवसय वि [अपशद] अधम ।

अवसर अक [अप + सृ] पीछे हटना । निवृत्त होना ।

अवसर सक [अव + सृ] आश्रय करना ।

अवसर पुं. काल, समय । प्रस्ताव, मौका ।

अवसरण देखो **ओसरण** ।

अवसरिय वि [आवसरिक] सामयिक, समयोपयुक्त ।

अवसरीर पुं [अपशरीर] रोग ।

अवसवस वि [अपस्ववश] पराधीन ।

अवसव्व न [अपसव्य] वाम पार्श्व ।

अवसव्वय न [अपसव्यक] शरीर का दाहिना भाग ।

अवसह पुं [आवसथ] घर ।

अवसह न [दे] उत्सव । नियम ।

अवसाइअ वि [अप्रसादित] प्रसन्न नहीं किया हुआ ।

अवसाण न [अवसान] नाश । अन्त भाग ।

अवसाय पुं [अवश्याय] हिम ।

अवसारिअ वि [अप्रसारित] न. फैला हुआ, अविस्तारित ।

अवसारिअ वि [अपसारित] आकृष्ट । हटाया हुआ ।

अवसावण न [अवस्रावण] काँजी । भात वगैरह का पानी ।

अवसावणिया स्त्री [अवस्वापनिका] सुलानेवाली विद्या ।

अवसिअ वि [अपसृत] पीछे हटा हुआ ।

अवसिअ वि [अवसित] समाप्त । ज्ञात ।

अवसिज्ज अक [अव + सद्] हारना ।

अवसित्त वि [अवसिक्त] सींचा हुआ ।

अवसिद (शौ) वि [अवसित] समाप्त ।

अवसिद्धंत पुं [अपसिद्धान्त] दूषित सिद्धांत ।

अवसीय अक [अव + सद्] क्लेश पाना, खिन्न होना ।

अवसुअ अक [उद् + वा] सूखना, शुष्क होना ।

अवसेअ पुं [अवसेक] सिंचन ।

अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य ।

अवसें (अप) देखो **अवसं** ।

अवसेण देखो **अवसं** ।

अवसेस पुं [अवशेष] अवशिष्ट । वि. सर्व ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवसेसिय वि [अवशेषित] समाप्त किया हुआ, पार पहुँचाया हुआ । अवशिष्ट ।
अवसेह सक [गम्] जाना ।
अवसेह अक [नश्] पलायन करना ।
अवसोइया स्त्री [अवस्वापिका] निद्रा ।
अवसोग वि [अपशोक] शोक-रहित । देव-विशेष ।
अवसोण वि [अपशोण] थोड़ा लाल ।
अवसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] निद्रा ।
अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत । °कम्म न [°कर्मन्] आवश्यक क्रिया । °करणिज्ज वि [°करणीय] अवश्य करने लायक कर्म, सामयिक आदि । °किरिया स्त्री [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान । °किच्च वि [°कृत्य] आवश्यक कार्य ।
अवस्सं अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय ।
अवस्सप्पिणी देखो अवसप्पिणी ।
अवस्साअ देखो अवसाय ।
अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलग्न ।
अवह सक [रच्] निर्माण करना ।
अवह स [उभय] दोनों, युगल ।
अवह वि. न बहता हुआ, जो चालू नहीं है ।
अवहइ स्त्री [अपहृति] विनाश ।
अवहट्ट वि [दे] अभिमानी ।
अवहट्टु अवहर = अप + हृ का संकृ. ।
अवहड वि [अपहृत] ले लिया गया, छीना हुआ ।
अवहड वि [अवहृत] ऊपर देखो ।
अवहड न [दे] मुसल ।
अवहण्ण पुं [दे] उदूखल ।
अपहत्थ पुं [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊँचा किया हुआ हाथ ।
अवहत्थ सक [अपहस्तय्] हाथ को ऊँचा करना । त्याग करना, छोड़ देना । दूर करना ।
अवहत्थरा स्त्री [दे] लात मारना ।
अवहय वि [अपहृत] नष्ट ।
अवहय वि [अघातक] अहिंसक ।
अवहर सक [गम्] जाना ।
अवहर अक [नश्] भाग जाना ।
अवहर सक [अप + हृ] छीन लेना, अपहरण करना । भागाकार करना, भाग देना । परित्याग करना ।
अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेनेवाला ।
अवहस सक [अव, अप + हस्] तुच्छ करना, तिरस्कार करना, उपहास करना ।
अवहाउ सक [दे] आक्रोश करना ।
अवहाडिअ वि [दे] उत्कृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ।
अवहाण न [अवधान] ख्याल, उपयोग । ज्ञान, जानना ।
अवहाय पुं [दे] विरह, वियोग ।
अवहाय अ [अपहाय] छोड़ कर, त्याग कर ।
अवहार सक [अव + धारय्] निर्णय करना, निश्चय करना ।
अवहार (अप) देखो अवहर = अप + हृ ।
अवहार पुं [अपहार] अपहरण । दूर करना, परित्याग । चोरी । बाहर करना, निकालना । भागाकार । विनाश ।
अवहार पुं [अवधार] निश्चय, निर्णय । °व वि [वत्] निश्चय वाला ।
अवहार पुं [अवधार्य] ध्रुवराशि, गणित-प्रसिद्ध राशिविशेष ।
अवहारय वि [अपहारक] छीननेवाला, अपहरण करनेवाला ।
अवहाव सक [कृप्] दया करना, कृपा करना ।
अवहाविअ वि [अवधावित] गमन के लिए प्रेरित ।
अवहास पुं [अवभास] प्रकाश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवहासिणी स्त्री [अवहासिनी] नासारज्जु।
अवहि देखो ओहि।
अवहिट्ठ वि [दे] अभिमानी।
अवहिट्ठ न [दे] मैथुन।
अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ।
अवहिय वि [अपहित] अहित।
अवहिय वि[अवधृत]नियमित। न. अवधारण।
अवहिय वि [अवहित] सावधान। °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त।
अवहिय वि [रचित] निर्मित।
अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला।
अवहीय वि [अपधीक] दुर्बुद्धि।
अवहीर सक [अव+धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। अवहेलना करना।
अवहील देखो अवहीर।
अवहीला स्त्री [अवहेला] अनादर।
अवहूय वि [अवधूत] मार भगाया हुआ।
अवहेअ वि [दे] कृपा-पात्र।
अवहेड सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना।
अवहेडग, अवहेडय पुंन [अवहेटक] आधे सिर का दर्द, आधा सीसी रोग।
अवहेड्डिय वि [दे] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ।
अवहेरि, अवहेरी स्त्री [अवहेला] अवगणना, तिरस्कार।
अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक।
अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला।
अवहोअ पुं [दे] विरह, वियोग।
अवहोडय देखो अवओडग।
अवहोमुह वि [उभयमुख] दोनों तरफ मुँह वाला।
अवहोल अक [अव+होलय्] झूलना। संदेह करना।
अवाइ वि [अपायिन्] दुःखी। दोषी, अपराधी।
अवाईण वि [अवाचीन] अधोमुख।
अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत।
अवाउड वि [अ-व्यापृत] किसी कार्य में न लगा हुआ।
अवाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर।
अवाडिअ वि [दे] वञ्चित, प्रतारित।
अवाण देखो अपाण।
अवाय पुं [अपाय] पानी का आगमन।
अवाय वि [अपाय] भाग्यरहित।
अवाय वि [अपाग] वृक्षरहित।
अवाय वि [अपाक] पापरहित।
अवाय पुं [अवाय] प्राप्ति।
अवाय पुं [अपाय] अनर्थ, अनिष्ट। दोष, दूषण। उदाहरण-विशेष। विनाश। वियोग, पार्थक्य। संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष। °दंसि वि [°दर्शिन्] भावी अनर्थों को जाननेवाला। °विजय न [°विचय, °विजय] ध्यान-विशेष।
अवाय पुं. संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान विशेष, मति ज्ञान का एक भेद। प्राप्ति।
अवाय वि [अम्लान] म्लानरहित, ताजा।
अवायाण न [अपादान] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण।
अवार वि [अपार] अनन्त।
अवार पुं [दे] दूकान।
अवारी स्त्री [दे] ऊपर देखो।
अवालुआ स्त्री [दे] होठ का प्रान्त भाग।
अवाव पुं [अवाप] रसोई। °कहा स्त्री [°कथा] रसोई-सम्बन्धी कथा।
अवास, अवासें (अप) देखो अवसें।
अवाह पुं. देश-विशेष।
अवाहा देखो अबाहा।
अवि अ [अपि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—अवधारण। समुच्चय। संभावना। विलाप। वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है।
अवि पुं. अज। मेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविअ वि [दे] उक्त ।
अविअ वि [अवित] रक्षित ।
अविअ अ [अपिच] विशेषण-सूचक अव्यय । समुच्चय-द्योतक अव्यय ।
अविअ पुं [अविक] मेष, भेड़ ।
अविउ वि [अवित्] अज्ञ, मूर्ख ।
अविउक्कंतिय वि [अव्युत्क्रान्तिक] उत्पत्ति-रहित ।
अविउसरण न [अव्युत्सर्जन] अपरित्याग, पास में रखना ।
अविकंप वि [अविकम्प] निश्चल ।
अविकरण न. गृहीत वस्तुओं को यथास्थान न रखना ।
अविक्ख देखो अवेक्ख ।
अविक्खग वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला।
अविक्खण न [अवेक्षण] अवलोकन, निरीक्षण ।
अविक्खण न [अपेक्षण] अपेक्षा, परवाह ।
अविक्खा देखो अवेक्खा ।
अविगइय वि [अविकृतिक] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी ।
अविगडिय वि [अविकटित] अनालोचित ।
अविगप्पग वि [अविकल्पक] विकल्परहित । न. कल्पनारहित प्रत्यक्ष ज्ञान ।
अविगल वि [अविकल] अखण्ड, पूर्ण ।
अविगिच्छ वि [अविचिकित्स्य] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि ।
अविगीय पुं [अविगीत] अगीतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु ।
अविग्गह वि [अविग्रह] शरीर-रहित । युद्ध-रहित, कलह-वर्जित । सरल, सीधा । °गइ स्त्री [°गति] अकुटिल गति ।
अविच्छ वि [अवीप्स्य] वीप्सारहित, व्याप्ति-रहित ।
अविज्ज वि [अबीज] बीजशक्ति से रहित ।
अविणयवइ } पुं [दे] जार, उपपति ।
अविणयवर }
अविणयवई स्त्री [दे] कुलटा ।
अविणिद्द वि [अविनिद्र] निद्रा-विच्छेदरहित ।
अविण्णा स्त्री [अविज्ञा] अनुपयोग, ख्याल का अभाव ।
अविद } अ. विषाद-सूचक अव्यय ।
अविदा }
अविन्नाण वि [अविज्ञान] अजान । अज्ञात, अपरिचित ।
अवियत्त न [अप्रीतिक] प्रीति का अभाव । वि. अप्रीतिकारक ।
अविरइ स्त्री [अविरति] विराम का अभाव, अनिवृत्ति । पाप कर्म से अनिवृत्ति । हिंसा । मैथुन । विरति-परिणाम का अभाव । वि. विरतिरहित । °वाय पुं [°वाद] अविरति की चर्चा । मैथुन-चर्चा ।
अविरइय वि [अविरतिक] विरति से रहित, पापनिवृत्ति से वर्जित, पाप कर्म में प्रवृत्त ।
अविरय वि [अविरत] विरामरहित, अवि-च्छिन्न । पाप निवृत्ति से रहित । चतुर्थ गुण-स्थानक वाला जीव । °सम्मद्दिट्ठि स्त्री [°सम्यग्दृष्टि] चतुर्थ गुणस्थानक ।
अविराम वि [अविराम] विरामरहित । वि. निरन्तर, हमेशा ।
अविराय वि [अविलीन] अभ्रष्ट ।
अविराहिय वि [अविराधित] अखण्डित, आराधित ।
अविल पुं [दे] पशु । वि. कठिन ।
अविला स्त्री. मेषी ।
अविसंधि वि. पूर्वापर विरोध से रहित, संगत, संबद्ध ।
अविसंवाइ वि [अविसंवादिन्] विसंवादरहित, प्रमाणभूत, सत्य ।
अविसेस वि [अविशेष] समान ।
अविस्स न [अविश्र] मांस और रुधिर ।
अविस्साम वि [अविश्राम] विश्रामरहित । क्रिवि. निरन्तर, सदा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविहड पुं [दे] बालक ।
अविहव वि [अविभव] दरिद्र ।
अविहा देखो **अविदा** ।
अविहाविअ वि [दे] गरीब । न. मौन ।
अविहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त ।
अविहिंत वकृ [अविघ्नत्] नहीं मारता हुआ, हिंसा न करता हुआ ।
अविहीर वि [अप्रतीक्ष] प्रतीक्षा नहीं करने वाला ।
अविहेडय वि [अविहेटक] आदर करनेवाला ।
अवी देखो **अवि** ।
अवीइय अ [अविविच्य] अलग न होकर ।
अवीय वि [अद्वितीय] असाधारण, अनुपम । एकाकी, असहाय ।
अवुक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना ।
अवुग्गह देखो **अविग्गह** ।
अवूह देखो **अवोह** ।
अवे सक [अव + इ] जानना ।
अवे अक [अप + इ] दूर होना, हटना ।
अवेक्ख सक [अव + ईक्ष्] अपेक्षा करना । परवाह करना ।
अवेक्ख सक [अव + ईक्ष्] अवलोकन करना ।
अवेय वि [अपेत] रहित, वर्जित । °**रुइ** वि [°रुचि] रुचि-रहित, निरीह ।
अवेय वि [अवेद] पुरुष-वेदादि वेद से रहित । मुक्त, मोक्ष-प्राप्त ।
अवेसि देखो **अंबेसि** ।
अवेह देखो **अवेक्ख** = अव + ईक्ष् ।
अवोअड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्पष्ट ।
अवोह सक [अप + ऊह्] विचार करना । निर्णय करना ।
अवोह पुं [अपोह] विकल्पज्ञान, तर्कविशेष । त्याग । निर्णय ।
अव्वईभाव पुं [अव्ययीभाव] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास ।
अव्वंग वि [अव्यङ्ग] अखण्ड, अन्यून । संपूर्ण । न. पूर्ण अंग, पूरा शरीर ।
अव्वक्खित्त वि [अव्याक्षिप्त] विक्षेपरहित । तल्लीन, एकाग्र ।
अव्वग्ग वि [अव्यग्र] अनाकुल ।
अव्वत्त / **अव्वत्तय** } वि [अव्यक्त] अस्पृष्ट, अस्फुट । छोटी उमर का बालक । अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यानभिज्ञ (साधु) । पुं. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि । सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति । °**मय** न [°मत] एक जैनाभास मत ।
अव्वत्तव्व वि [अवक्तव्य] अवचनीय । पुं. कर्मबन्ध विशेष, जब जीव सर्वथा कर्मबन्ध-रहित होकर फिर जो कर्मबन्ध करे वह ।
अव्वत्तिय देखो **अवत्तिय** ।
अव्वभिचारि वि [अव्यभिचारिन्] ऐकान्तिक ।
अव्वय न [अव्यय] 'च' आदि निपात ।
अव्वय न [अव्रत] व्रत का अभाव । वि. व्रत-रहित ।
अव्वय वि [अव्यय] अखूट । शाश्वत ।
अव्ववसिय वि [अव्यवसित] अनिश्चित, संदिग्ध । अपराक्रमी ।
अव्वसण वि [अव्यसन] व्यसन-रहित । पुंन. लोकोत्तर रीति से १२वाँ दिन ।
अव्वह वि [अव्यथ] व्यथारहित । न. निश्चल ध्यान ।
अव्वा स्त्री [अर्वाक्] पर से भिन्न ।
अव्वा स्त्री [दे. अम्बा] माता ।
अव्वाइद्ध वि [अव्याविद्ध] अविपरीत । न. सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव ।
अव्वागड वि [अव्याकृत] अव्यक्त ।
अव्वाण वि [आव्यान] थोड़ा स्निग्ध ।
अव्वाबाह वि [अव्याबाध] हरज-रहित । न. रोग का अभाव । सुख । मोक्ष-स्थान,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ति। पुं. लोकान्तिक देव-विशेष। पुंन. एक देवविमान।

अव्वावड वि [अव्यापृत] जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित। एक प्रकार का वास्तु।

अव्वावन्न वि [अव्यापन्न] अविनष्ट।

अव्वावार वि [अव्यापार] व्यापार-वर्जित।

अव्वाहय वि [अव्याहत] रुकावट-वर्जित। आघातरहित। °पुव्वावरत्त न [°पूर्वापरत्व] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन)।

अव्वाहार पुं [अव्याहार] मौन।

अव्वाहिय वि [अव्याहृत] न बुलाया हुआ।

अव्विरय वि [अविरत] विरति-रहित।

अव्वो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—सूचना। दुःख। संभाषण। अपराध। विस्मय। आनन्द। आदर। भय। खेद। विषाद। पश्चात्ताप।

अव्वोगड वि [अव्याकृत] अविशेषित। फैलाव-रहित। नहीं बांटा हुआ। अस्फुट, अस्पष्ट। न. एक प्रकार का वास्तु।

अव्वोच्छिण्ण वि[अव्युच्छिन्न, अव्यवच्छिन्न] सतत। नित्य। अव्याहत।

अव्वोच्छित्ति स्त्री [अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति] सातत्य, प्रवाह, परंपरा से बराबर चला आना। °नय पुं. वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी माननेवाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय।

अव्वोयड देखो अव्वोगड।

अस सक [अश्] व्याप्त करना। खाना।

अस अक [अस्] होना।

अस वकृ [असत्] अविद्यमान।

असइ स्त्री [असृति] उलटा रखा हुआ हस्त तल। धान्य मापने का एक परिमाण। उससे मापा हुआ धान्य।

असइ स्त्री [दे. असत्त्व] अभाव, अविद्यमानता।

असइ
असइं } अ [असकृत्] बारंबार।
असई

असई स्त्री [असती] कुलटा। दासी। °पोस पुं [°पोष] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन।

असउण पुंन [अशकुन] अपशकुन।

असंक वि [अशङ्क] असंदिग्ध। निर्भय।

असंकल वि [अश्रृङ्खल] श्रृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित।

असंकिलिट्ठ वि [असंक्लिष्ट] संक्लेश-रहित। विशुद्ध, निर्दोष।

असंख वि [असंख्य] संख्या-रहित, परिमाण-रहित।

असंख [असंख्य] सांख्य मत से भिन्न दर्शन।

असंखड स्त्रीन [दे] कलह।

असंखड न [दे] कलह, झगड़ा।

असंखडिय वि [दे] कलह करने वाला, झगड़ाखोर।

असंखय देखो असंख = असंख्य।

असंखय वि [असंस्कृत] संस्कार-हीन। संधान करने के अशक्य।

असंखिज्ज वि [असंख्येय] गिनती या परिमाण करने के अशक्य।

असंखेज्ज देखो असंखिज्ज।

असंखेज्जइ° वि [असंख्येय] असंख्यातवां। °भाग पुं. असंख्यातवां हिस्सा।

असंखेज्जय पुंन [असंख्येयक] गणना-विशेष।

असंग वि [असङ्ग] अनासक्त। पुं. आत्मा। मुक्त जीव। न. मोक्ष।

असंगय न [दे] वस्त्र।

असंगहिय वि [असंगृहीत] जिसका संग्रह न किया गया हो वह। अनाश्रित।

असंगहिय वि [असंग्रहिक] संग्रह न करने वाला। पुं. नैगम नय का एक भेद।

असंगिअ पुं [दे] घोड़ा। वि. अनवस्थित,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चञ्चल ।

असंघयण वि [असंहनन] संहनन से रहित । वज्र, ऋषभ, नाराच आदि प्राथमिक तीन संघयणों से रहित ।

असंजण न [असञ्जन] अनासक्ति ।

असंजम वि [असंयम] हिंसा, झूठ आदि सावद्य अनुष्ठान । हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्ति । अज्ञान । असमाधि ।

असंजय वि [असंयत] हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त । हिंसा आदि करने वाला । पुं. साधु-भिन्न, गृहस्थ ।

असंजल पुं [असंज्वल] ऐरवत वर्ष के एक जिनदेव का नाम ।

असंजोगि वि [असंयोगिन्] संयोग-रहित । पुं मुक्त जीव ।

असंत वकृ. [असत्] अविद्यमान । असत्य । असुन्दर ।

असंत वि [असत्त्व] सत्त्व-रहित, बल-शून्य ।

असंथरंत वकृ. [दे. असंस्तरत्] समर्थ न होता हुआ । खोज न करता हुआ । तृप्त न होता हुआ ।

असंथरण न [दे. असंस्तरण] निर्वाह का अभाव । पर्याप्त लाभ का अभाव । असमर्थता, अशक्त अवस्था ।

असंथरमाण वकृ [दे. असंस्तरमाण] देखो **असंथरंत** ।

असंधिम वि. संधान-रहित, अखण्ड ।

असंभंत पुं [असंभ्रान्त] प्रथम नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष ।

असंभव्व वि [असंभाव्य] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा ।

असंभावणीय वि [असंभावनीय] ऊपर देखो ।

असंलप्प वि [असंलप्य] अनिर्वचनीय ।

असंलोय पुं [असंलोक] अप्रकाश । भीड़ रहित स्थान ।

असंवर पुं. आश्रव, संवर का अभाव ।

असंवरीय वि [असंवृत] अनाच्छादित । नहीं रुका हुआ ।

असंसट्ठ वि [असंसृष्ट] दूसरे से न मिला हुआ । लेप-रहित । स्त्री. पिण्डैषणा का एक भेद ।

असंसि वि [अस्रंसिन्] अविनश्वर ।

असक्क वि [अशक्य] जिसको न कर सके वह ।

असक्कय वि [असत्कृत] सत्कार-रहित ।

असक्कणिज्ज वि [अशकनीय] अशक्य ।

असग्गाह / **असग्गह** / **असग्गाह** } पुं [असद्ग्रह] कदाग्रह । विशेष आग्रह ।

असच्च न [असत्य] झूठ वचन । वि. झूठा । °**मोस** न [°मृष] झूठ से मिला हुआ सत्य । °**वाइ** वि [°वादिन्] झूठ बोलने वाला । °**ामोस** न [°ामृष] न सत्य और न झूठ ऐसा वचन । °**ामोसा** स्त्री [°ामृषा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ । °**संध** वि. असत्य-प्रतिज्ञ । असत्य अभिप्राय वाला ।

असज्ज / **असज्जमाण** } वकृ [असजत्] संग न करता हुआ ।

असज्झाइय पुं [अस्वाध्यायिक] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण ।

असज्झाय वि [अस्वाध्याय] अनध्याय, वह काल जिसमें पठन-पाठन का निषेध किया गया है ।

असढ वि [अशठ] सरल, निष्कपट । °**करण** वि [°करण] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला ।

असण न [अशन] भोजन । खाद्य पदार्थ ।

असण पुं [असन] बीजक नामक वृक्ष । न. फेंकना ।

असणि पुंस्त्री [अशनि] एक प्रकार की बिजली । पुं. एक नरक-स्थान ।

असणि पुंस्त्री [अशनि] वज्र । आकाश से गिरता अग्नि-कण । वज्र की अग्नि । अग्नि । अस्त्रविशेष । °**प्पह** पुं [°प्रभ] रावण के मामा का नाम । °**मेह** पुं [°मेघ] वह वर्षा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसमें ओले गिरते हैं। अति भयंकर वर्षा, प्रलय-मेघ। °वेग पुं. विद्याधरों का एक राजा।

असणी स्त्री [अशनी] एक इन्द्राणी। जीभ, जिह्वा।

असण्ण वि [असंज्ञ] अचेतन।

असण्णि वि [असंज्ञिन्] संज्ञि-भिन्न, मनोज्ञान से रहित (जीव)। सम्यग्दृष्टि भिन्न, जैनेतर। **°सुय** न [°श्रुत] जैनेतर शास्त्र।

असत्थ वि [अस्वस्थ] अतंदुरुस्त, बीमार।

असत्थ न [अशस्त्र] शस्त्र-भिन्न। संयम, निर्दोष अनुष्ठान।

असद्द पुं [अशब्द] अपयश। वि. शब्दरहित।

असबल वि. [अशबल] अमिश्रित। निर्दोष, पवित्र।

असब्भाव पुं [असद्भाव] यथार्थता का अभाव, झूठ। वि. असत्य।

असब्भूय वि [असद्भूत] असत्य।

असम वि. असमान, असाधारण। एक, तीन, पाँच आदि इकाई संख्या वाला, विषम। **°सर** पुं [°शर] कामदेव।

असमवाइ न [असमवायिन्] नैयायिक और वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष।

असमंजस वि [असमञ्जस] अव्यवस्थित, गैरव्याजबी।

असमिक्खिय वि [असमीक्षित] अनालोचित, अविचारित। **°कारि** वि [°कारिन्] साहसिक। **°कारिया** स्त्री [°कारिता] साहस कर्म।

असरासय वि [दे] निर्दय।

असलील वि [अश्लील] असभ्य भाषा।

असव पुं [असु] प्राण।

असवण्ण वि [असवर्ण] असमान, असाधारण।

असवार पुं [अश्ववार] घुड़सवार।

असह वि. असहिष्णु। असमर्थ। खेद करने वाला।

असहण वि [असहन] असहिष्णु, क्रोधी।

असहाय वि. सहायरहित। एकाकी।

असहिज्ज वि [असाहाय्य] सहायतारहित। सहायता का अनिच्छुक।

असहु वि [असह] असहिष्णु। असमर्थ, अशक्त। बीमार। सुकुमार।

असहेज्ज देखो **असहिज्ज**।

असागारिय वि [असागारिक] गृहस्थों के आवागमन से रहित स्थान।

असाढभूइ पुं [अषाढभूति] एक जैन मुनि।

असाढय न [असाढक] तृण-विशेष।

असाय न [असात] दुःख। **°वेयणिज्ज** न [°वेदनीय] दुःख का कारण-भूत कर्म।

असारा स्त्री [दे] कदली-वृक्ष।

असालिय पुंस्त्री [दे] सर्प की एक जाति।

असाहण न [असाधन] असिद्धि।

असाहारण वि [असाधारण] अतुल्य, अनुपम।

असि पुं. तलवार। इस नाम की नरकपाल देवों की एक जाति। स्त्री. बनारस की एक नदी का नाम। **°कुण्ड** न [°कुण्ड] मथुरा का एक तीर्थ-स्थान। **°घाय** पुं [°घात] तलवार का घाव। **°चम्मपाय** न [°चर्मपात्र] तलवार की म्यान, कोश। **°धारा** स्त्री **°धेणु**, **°धेणुआ** स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी। **°पत्त** न [°पत्र] तलवार। तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्र। तलवार की पतरी। पुं. नरकपाल देवों की एक जाति। **°पुत्तगा** स्त्री [°पुत्रिका] छुरी। **°मुट्ठि** स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ। **°रयण** न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार। **°लट्ठि** स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार। **°वण** न [°वन] खड्गाकार पत्ते वाले वृक्षों का जंगल। **°वत्त** देखो [°पत्त]। **°हर** वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा। **°हारा** देखो **°धारा**।

असिइ (अप) देखो **असीइ**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असिण न [अशन] भोजन।

असित्थ न [असिक्थ] आटा लगे हुए हाथ या बर्तन का कपड़े से छना हुआ धोवन।

असिद्ध वि. अनिष्पन्न। तर्कशास्त्र प्रसिद्ध दुष्ट हेतु।

असिय वि [अशित] खादित।

असिय वि [असित] कृष्ण, श्वेतरहित। अशुभ। अबद्ध, अयन्त्रित। °क्ख पुं [°ाक्ष] यक्ष-विशेष।

असिय न [दे] दात्र, दाँती।

असिलेसा स्त्री [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष।

असिव न [अशिव] विनाश। असुख। देवतादि कृत उपद्रव। मारी रोग।

असिविण पुं [अस्वप्न] देव, देवता।

असिव्व देखो **असिव**।

असिसुई स्त्री [अशिश्वी] शिशुरहित स्त्री।

असिह वि [अशिख] शिखारहित।

असीइ स्त्री [अशीति] संख्या-विशेष, अस्सी, ८०। °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८०वाँ।

असीइग वि [अशीतिक] अस्सी वर्ष की उम्र वाला।

असीम वि [असीमन्] निस्सीम।

असील वि [अशील] असदाचारी। न. असदाचार, अब्रह्मचर्य। °मंत वि [°वत्] अब्रह्मचारी। असंयत।

असु पुं. ब. प्राण। न. चित्त। ताप।

असु देखो **अंसु**।

असुइ वि [अशुचि] अपवित्र, अस्वच्छ। न. अमेध्य, विष्ठा।

असुइ वि [अश्रुति] शास्त्रश्रवण-रहित।

असुईकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया हुआ।

असुग पुं [असुक] देखो **असु** = असु।

असुणि वि [अश्रोतृ] न सुननेवाला।

असुद्ध वि [अशुद्ध] मलिन। न. मैला। °विसोहय पुं [°विशोधक] भंगी।

असुय वि [अश्रुत] न सुना हुआ। °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के बिना ही होनेवाली बुद्धि—ज्ञान। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ।

असुर पुं. दैत्य, दानव। देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति। दास-स्थानीय देव। °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति। °राय पुं [°राज] असुरों का इन्द्र। °वंदि पुं [°बन्दिन्] राक्षस।

असुरिंद पुं [असुरेन्द्र] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष।

असुह न [अशुभ] अमंगल, अनिष्ट। पाप-कर्म। वि. खराब, असुन्दर। °णाम न [°नामन्] अशुभ फल देनेवाला कर्म-विशेष।

असूअ सक [असूय्] असूया करना।

असूया स्त्री. [असूचा] सूचना का अभाव। दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना।

असूया स्त्री. असूया, असहिष्णुता।

असूरिय वि [असूर्य] सूर्यरहित, अन्धकारमय स्थान। पुं. नरक-स्थान।

असेव्व देखो **असिव**।

असेस वि [अशेष] निःशेष, सर्व।

असोअ, **असोग** } पुं [अशोक] देव-विशेष। पुंन. एक देवविमान। शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान। °वडिंसय पुंन [°ावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान।

असोग पुं [अशोक] सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष। महाग्रह विशेष। हरा रंग। भगवान् मल्लिनाथ का चैत्यवृक्ष। देव-विशेष। न. तीर्थ-विशेष। यक्ष-विशेष। वि. शोक रहित। °चंद पुं [°चन्द्र] राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक। एक प्रसिद्ध जैनाचार्य। °ललिय पुं [°ललित] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम। °वण न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°वन] अशोक वृक्षों वाला वन। °वणिया स्त्री [°वनिका] अशोक वृक्ष वाला बगीचा। °सिरि पुं [°श्री] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक।

असोगा स्त्री [अशोका] इस नाम की एक इन्द्राणी। भगवान् श्री शीतलनाथ की शासन-देवी। एक नगरी का नाम।

असोय देखो असोग।

असोय पुं [अश्वयुक्] आश्विन मास।

असोय वि [अशौच] शौचरहित। न. शौच का अभाव। °वाइ वि [°वादिन्] अशौच का ही माननेवाला।

असोयणया स्त्री [अशोचनता] शोक का अभाव।

असोया देखो असोगा।

असोल्लिय वि [अपक्व] कच्चा।

असोहि स्त्री [अशोधि] अशुद्धि। विराधना। °ठाण न [°स्थान] पाप-कर्म। अशुद्धि स्थान। दुर्जन का संसर्ग। अनायतन।

अस्स न [आस्य] मुख।

अस्स वि [अस्व] निर्धन। निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि।

अस्स पुं [अश्व] घोड़ा। अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव। ऋषि-विशेष। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। इन अन्तर्द्वीप का निवासी। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष। करण न. जहाँ घोड़ा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] पहले प्रतिवासुदेव का नाम। °तर पुंस्त्री. खच्चड़। °मुह पुं [°मुख] इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता। एक महाग्रह का नाम। °ायर पुं [°ादर] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम।

अस्स न [अस्र] आँसू। रुधिर।

अस्संख वि [असंख्य] संख्या-रहित।

अस्संगिअ वि [दे] आसक्त।

अस्संघयणि वि [असंहननिन्] संहनन-रहित, किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित।

अस्संजम देखो असंजम।

अस्संजय वि [अस्वयत] गुरु की आज्ञानुसार चलनेवाला, अस्वच्छंदी।

अस्संजय देखो असंजय।

अस्संदम पुं [अश्वन्दम] अश्व-पालक।

अस्सच्च देखो असच्च।

अस्सण्णि देखो असण्णि।

अस्सत्थ पुं [अश्वत्थ] वृक्ष-विशेष, पीपल।

अस्सत्थ वि [अस्वस्थ] रोगी, बीमार।

अस्सन्नि देखो असण्णि।

अस्सम पुं [आश्रम] स्थान, जगह। ऋषियों का स्थान।

अस्समिअ वि [अश्रमित] श्रमरहित, अनभ्यासी।

अस्सवार देखो असवार।

अस्सस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना।

अस्साइय वि [आस्वादित] जिसका आस्वादन किया गया हो वह।

अस्साद सक [आ + सादय्] प्राप्त करना।

अस्साद सक [आ + स्वादय्] आस्वादन करना।

अस्सादण देखो अस्सायण।

अस्साय देखो अस्साद = आ + सादय्।

अस्साय देखो अस्साद = आ + स्वादय्।

अस्साय देखो असाय।

अस्सायण पुं [आश्वायन] अश्व ऋषि की संतान। अश्विनी नक्षत्र का गोत्र।

अस्साவि वि [आस्राविन्] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र।

अस्सास सक [आ + श्वासय्] आश्वासन देना, दिलासा देना।

अस्सासण पुं [आश्वासन] एक महाग्रह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्सि स्त्री [अश्रि] कोण, घर आदि का कोना। तलवार आदि का अग्रभाग—धार।

अस्सि पुं [अश्विन्] अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव।

अस्सिणी स्त्री [अश्विनी] इस नाम का एक नक्षत्र।

अस्सिय वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त।

अस्सु पुंन [अश्रु] आँसू।

अस्सु (शौ) न [अश्रु] आँसू।

अस्सुंक वि [अशुल्क] जिसकी चुंगी या फीस माफ की गई हो वह।

अस्सुद (शौ) देखो **अस्सुय** = अश्रुत।

अस्सुय वि [अस्मृत] याद नहीं किया हुआ।

अस्सेसा देखो **असिलेसा**।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की पूर्णिमा।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की अमावस देखो **आसोया**।

अस्सोक्कंता स्त्री [अश्वोत्क्रान्ता] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पाँचवीं मूर्च्छना।

अस्सोत्थ देखो **अस्सत्थ**।

अस्सोयव्व वि [अश्रोतव्य] सुनने के अयोग्य।

अह अ [अथ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—अब, बाद। अथवा, और। मंगल। प्रश्न। समुच्चय। प्रतिवचन, उत्तर विशेष। यथार्थता, वास्तविकता। पूर्वपक्ष। वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है।

अह न [अहन्] दिवस।

अह अ [अधस्] नीचे। °**लोग** पुं [°लोक] पाताल-लोक। °**त्थ** वि [°स्थ] निम्न-स्थित।

अह स [अदस्] यह, वह।

अह न [दे] दुःख।

अह न [अघ] पाप।

अह° देखो **अहा**। °**क्कम**, °**क्कमसो** अ [°क्रम] अनुक्रम से। °**क्खाय**, °**खाय** न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम। °**क्खायसंजय** वि [°ख्यातसंयत] परिपूर्ण संयम वाला। °**च्छंद** देखो **अहाछंद**। °**त्थ** वि [°स्थ] ठीक-ठीक रहा हुआ, यथास्थित। °**त्थ** वि [°र्थ] वास्तविक। °**प्पहाण** अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से।

अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ, अच्छा।

अहंकार पुं. अभिमान।

अहंणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा।

अहकम्म देखो **अहेकम्म**।

अहण वि [अधन] निर्धन।

अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर।

अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे।

अहण्ण वि [अधन्य] अप्रशस्य, हतभाग्य।

अहम वि [अधम] अधम, नीच।

अहमंति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी।

अहमहमिआ, **अहमहमिगया**, **अहमहमिगा** स्त्री [अहमहमिका] मैं इससे पहले हो जाऊँ ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा।

अहमिंद पुं [अहमिन्द्र] उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देवजाति विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव। अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ।

अहम्म देखो **अधम्म**।

अहम्म वि [अधर्म्य] धर्मरहित, गैरव्याजबी। पाप।

अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी।

अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म-रहित, पापी।

अहम्मिट्ठ देखो **अधम्मिट्ठ**।

अहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी।

अहय वि [अहत] अनुबद्ध, अव्यवच्छिन्न। अखण्डित। जो दूसरी तरफ लिया गया हो नूतन।

अहर वि [दे] अशक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहर पुं [अधर] होठ। वि. नीचला। अधम। दूसरा, अन्य। °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति।

अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत।

अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर, सिलवट। °लोट्ठ पुं [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर, लोढा।

अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित।

अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत।

अहरुट्ठ पुंन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ।

अहरेम देखो अहिरेम।

अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ।

अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक।

अहलंद न [यथालन्द] पाँच रात का समय।

अहलंदि देखो अहालंदि।

अहव देखो अहवा।

अहवइ (अप) देखो अहवा।

अहवण } अ [अथवा] वाक्यालंकार में
अहवा } प्रयुक्त किया जाता अव्यय। या, अथवा।

अहव्व देखो अभव्व।

अहव्वण पुं [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र।

अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री।

अहह अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—आमन्त्रण। खेद। आश्चर्य। दुःख। आधिक्य, प्रकर्ष।

अहा° अ [यथा] जैसे, माफिक, अनुसार। °छंद वि [°च्छन्द] स्वच्छन्दी। न. मरजी के अनुसार। °जाय वि[°जात] प्रावरण-रहित। न. जन्म के अनुसार। जैन साधुओं में दीक्षा काल के परिमाण के अनुसार किया जाता वन्दन—नमस्कार। °णुपुव्वी स्त्री [°नुपूर्वी] यथाक्रम, अनुक्रम। °तच्च न [°तत्त्व] तत्त्व के अनुसार। °तच्च न [तथ्य] सत्य-सत्य। °पडिरूव वि [°प्रतिरूप] उचित, योग्य। °पवत्त वि [°प्रवृत्त] पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्त्तित। न. आत्मा का परिणाम-विशेष। °पवित्तिकरण न [°प्रवृत्तिकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष। °बायर वि [°बादर] निस्सार। °भूय वि [°भूत] तात्त्विक, वास्तविक। °राइणिय, °रायणिय न [°रात्निक] यथाज्येष्ठ, बड़े के क्रम से। °रिय न [ऋजु] सरलता के अनुसार। °रिह न [°र्ह] यथोचित। वि. योग्य। °रीय न [°रीत] रीति के अनुसार। स्वभाव के माफिक। °लंद पुं [°लन्द] काल का एक परिमाण, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय। °वगास न [°वकाश] अवकाश के अनुसार। °वच्च वि [°पत्य] पुत्र-स्थानीय। °संथड वि [°संस्तृत] शयन के योग्य। °संविभाग पुं. साधु को दान देना। °सच्च न [°सत्य] वास्तविकता, सचाई। °सत्ति न [°शक्ति] शक्ति के अनुसार। °सुत्त न[°सूत्र] आगम के अनुसार। °सुह न[°सुख] इच्छानुसार। °सुहुम वि [सूक्ष्म] सारभूत। देखो °अह।

अहालंद वि [यथालन्द] यथानुज्ञात (काल), इच्छानुसार (समय)।

अहालंदि पुं [यथालन्दिन्] 'यथालन्द' अनुष्ठान करने वाला मुनि।

अहासंखड वि [दे] निष्कम्प।

अहासल वि [अहास्य] हास्य-रहित।

अहाह अ [अहाह] देखो अहह।

अहि देखो अभि।

अहि अ [अधि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—आधिक्य, विशेषता। अधिकार, सत्ता। ऐश्वर्य, ऊँचा, ऊपर।

अहि पुं. साँप। शेषनाग। °च्छत्ता स्त्री [°च्छत्रा] नगरी-विशेष। °मड पुंन [°मृतक] साँप का मुर्दा। °वइ पुं [°पति] शेषनाग। °विंछिअ पुं [°वृश्चिक] सर्प के मूत्र से उत्पन्न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होने वाली वृश्चिक जाति।
अहिअल न [दे] गुस्सा।
अहिआअ न [अभिजात] कुलीनता।
°अहिआइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता।
अहिआर पुं [दे] लोक-यात्रा, जीवन-निर्वाह।
अहिउत्त वि [दे] व्याप्त, खचित।
अहिउत्त वि [अभियुक्त] विद्वान्। उद्यत, उद्योगी। शत्रु से घिरा हुआ।
अहिऊर सक [अभि + पूरय्] पूर्ण करना, व्याप्त करना।
अहिऊल सक [दह्] जलाना।
अहिओय पुं[अभियोग] सम्बन्ध। दोषारोपण। देखो अभिओअ।
अहिंद पुं [अहीन्द्र] सर्पों का राजा, शेषनाग। श्रेष्ठ सर्प। °वुर न [°पुर] वासुकि-नगर °वुरणाह पुं [पुरनाथ] विष्णु, अच्युत।
अहिंसा स्त्री. दूसरे को किसी प्रकार से दुःख न देना।
अहिंसिय वि [अहिंसित] अमारित, अपीड़ित।
अहिकंख देखो अभिकंख।
अहिकंखि देखो अहिकंखिर।
अहिकय वि [अधिकृत] प्रस्तुत।
अहिकरण देखो अहिगरण।
अहिकरणी देखो अहिरगणी।
अहिकार देखो अहिगार।
अहिकारि देखो अहिगारि।
अहिकिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार कर, उद्देश्य कर।
अहिक्खण न [दे] उपालंभ, उलहना।
अहिक्खित्त वि [अधिक्षिप्त] तिरस्कृत। निन्दित। स्थापित। परित्यक्त। क्षिप्त।
अहिक्खिव सक [अधि + क्षिप्] तिरस्कार करना। फेंकना। निन्दना। स्थापित करना। छोड़ देना।
अहिक्खेव पुं [अधिक्षेप] तिरस्कार। स्थापन। प्रेरणा।
अहिखिव देखो अहिक्खिव।
अहिग देखो अहिय = अधिक।
अहिखीर सक [दे] पकड़ना। आघात करना।
अहिगंध वि [अधिगन्ध] अधिक गन्धवाला।
अहिगम सक [अधि + गम्] जानना। निर्णय करना। प्राप्त करना।
अहिगम सक [अभि + गम्] सामने जाना। आदर करना।
अहिगम पुं [अधिगम] ज्ञान। प्राप्ति। गुरु आदि का उपदेश। सेवा, भक्ति। न. गुरु आदि के उपदेश से होने वाली सद्धर्म-प्राप्ति–सम्यक्त्व। °रुइ स्त्री [°रुचि] सम्यक्त्व का एक भेद। सम्यक्त्व वाला।
अहिगम देखो अभिगम।
अहिगमय वि [अधिगमक] जाननेवाला।
अहिगम्म देखो अहिगम = अधि + गम्।
अहिगम्म देखो अहिगम = अभि + गम्।
अहिगय वि [अधिकृत] प्रस्तुत। न. प्रस्ताव, प्रसंग।
अहिगय वि [अधिगत] उपलब्ध। ज्ञात। पुं. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु।
अहिगर पुं [दे] अजगर।
अहिगरण पुंन [अधिकरण] युद्ध। असंयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति। आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु। पाप-जनक क्रिया। आधार। उपहार। कलह, विवाद। हिंसा का उपकरण। कड़, °कर वि [°कर] कलहकारक। °किरिया स्त्री [°क्रिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति में ले जानेवाली क्रिया। °सिद्धंत पुं [°सिद्धान्त] आनुषंगिक सिद्धि करनेवाला सिद्धान्त।
अहिगरणी स्त्री [अधिकरणी] लोहार का एक उपकरण। °खोडि स्त्री [°खोटि] जिसपर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ।
अहिगरणिया } स्त्री [आधिकरणिकी]
अहिगरणीया } देखो अहिगरण-किरिया।
अहिगार पुं [अधिकार] वैभव। हक। प्रस्ताव। ग्रन्थविभाग। योग्यता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिगारि } वि [अधिकारिन्] अमलदार,
अहिगारिय } राजनियुक्त सत्ताधीश ।
अहिगिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार करके ।
अहिघाय पुं [अभिघात] आस्फालन, आघात ।
अहिछत्ता स्त्री [अहिच्छत्रा] नगरी-विशेष, कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी ।
अहिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता ।
अहिजाण सक [अभि + ज्ञा] पहिचानना ।
अहिजाय वि [अभिजात] कुलीन ।
अहिजुंज देखो अभिजुंज ।
अहिजुत्त देखो [अभिजुत्त] ।
अहिज्ज सक [अधि + इ] पढ़ना, अभ्यास करना ।
अहिज्ज वि [अधिज्य] धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ (बाण) ।
अहिज्ज } वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण।
अहिज्जग }
अहिज्जण न [अध्ययन] पठन, अभ्यास ।
अहिज्जाण (शौ) देखो अहिण्णाण ।
अहिज्जाविय वि [अध्यापित] पढ़ाया हुआ ।
अहिज्जिय वि [अधीत] पठित ।
अहिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ-रहित ।
अहिट्ठ सक [अधि + ष्ठा] करना ।
अहिट्ठग वि [अधिष्ठक] अधिष्ठाता, विधायक, कारक ।
अहिट्ठण देखो अहिट्ठाण ।
अहिट्ठा सक [अधि + स्था] ऊपर चलना । आश्रय लेना । रहना, निवास करना । शासन करना । हराना । आक्रमण करना । ऊपर चढ़ बैठना । वश करना ।
अहिट्ठाण न [अधिष्ठान] बैठना । आश्रयण । मालिक बनना । स्थान, आश्रय ।
अहिट्ठायग वि [अधिष्ठायक] अध्यक्ष, अधिपति ।
अहिट्ठावण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना ।
अहिट्ठिय वि [अधिष्ठित] अध्यासित । अधीन किया हुआ । आक्रान्त, आविष्ट ।
अहिठाण न [अधिष्ठान] अपान-प्रदेश ।
अहिडुय वि [दे. अभिद्रुत] पीड़ित ।
अहिणंद देखो अभिणंद ।
अहिणय देखो अभिणय ।
अहिणव पुं [अभिनव] सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन । वि. नूतन ।
अहिणवेमाण देखो अहिणी ।
अहिणवेमाण देखो अहिणु ।
अहिणाण देखो अहिण्णाण ।
अहिणिबोह पुं [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान ।
अहिणिवस सक [अभिनि + वस्] रहना ।
अहिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] आग्रह-ग्रस्त ।
अहिणिवेस पुं [अभिनिवेश] आग्रह, हठ ।
अहिणी स्त्री [अहि] नागिन ।
अहिणी देखो अभिणी ।
अहिणील वि [अभिनील] हरा, हरा रंग वाला ।
अहिणु सक [अभि + नु] स्तुति करना, प्रशंसना ।
अहिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित, अपृथग्भूत ।
अहिण्णाण न [अभिज्ञान] चिह्न, निशानी ।
अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निपुण, ज्ञाता ।
अहितत्त वि [अभितप्त] तापित, संतापित ।
अहित्ता देखो अहिज्ज = अधि + इ ।
अहिदायग वि [अभिदायक] दाता ।
अहिदेवया स्त्री [अधिदेवता] अधिष्ठाता देव ।
अहिद्दव सक [अभि + द्रु] हैरान करना ।
अहिद्दुय वि [अभिद्रुत] हैरान किया हुआ ।
अहिधाव सक [अभि + धाव्] दौड़ना, सामने दौड़कर जाना ।
अहिपच्चुअ सक [ग्रह्] ग्रहण करना ।
अहिपच्चुअ सक [आ + गम्] आना ।
अहिपच्चुइअ न [दे] अनुगमन, अनुसरण ।
अहिपड सक [अभि + पत्] सामने आना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिपास सक [अधि + दृश्] अधिक देखना। समान रूप से देखना।

अहिप्पाय देखो अभिप्पाय।

अहिप्पेय देखो अभिप्पेय।

अहिभव देखो अभिभव।

अहिमंजु पुं [अभिमन्यु] अर्जुन के एक पुत्र का नाम।

अहिमंतण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना।

अहिमंतिअ वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कृत।

अहिमज्जु } देखो अहिमंजु।
अहिमण्णु }

अहिमय वि [अभिमत] सम्मत, इष्ट।

अहिमयर पुं [अहिमकर] सूर्य।

अहिमर पुं [अभिमर] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला। गजादिघातक।

अहिमाण पुं [अभिमान] अहंकार।

अहिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष।

अहिमास पुं [अधिमास] अधिक मास।

अहिमुह वि [अभिमुख] संमुख।

अहिमुहिहूअ } वि [अभिमुखीभूत] सामने आया हुआ।
अहिमुहीहूअ }

अहिय वि [अधिक] ज्यादा, विशेष।

अहिय वि [अहित] अहितकर, शत्रु।

अहिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त।

अहिया स्त्री [अधिका] भगवान् श्रीनमिनाथ की प्रथम शिष्या।

अहियाइ देखो अहिजाइ।

अहियाय देखो अहिजाय।

अहियार पुं [अभिचार] शत्रु के वध के लिए किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग।

अहियार देखो अहिगार।

अहियास सक [अधि + आस्, अधि+सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना।

अहियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु।

अहियासण न [अधिकाशन] अधिक भोजन, अजीर्ण।

अहिर पुं [आभीर] अहीर।

अहिरम अक [अभि + रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना।

अहिरम्म वि [अभिरम्य] सुन्दर।

अहिराम वि [अभिराम] मनोहर।

अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने वाला।

अहिराय पुं [अधिराज] राजा। स्वामी, पति।

अहिराय न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व।

अहिरिअ देखो अहिरीअ।

अहिरीअ वि [अह्रीक] निर्लज्ज।

अहिरीअ वि [दे] निस्तेज।

अहिरीमाण वि [दे. अहारिन्, अह्रीमनस्] अमनोहर, मन को प्रतिकूल। अलज्जाकारक।

अहिरूव वि [अभिरूप] सुन्दर। अनुरूप, योग्य।

अहिरेम सक [पृ] पूर्त्ति करना।

अहिरोइअ वि [दे] पूर्ण।

अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढ़ना, आरोहण।

अहिरोहि वि [अधिरोहिन्] ऊपर चढ़ने वाला।

अहिरोहिणी स्त्री [अधिरोहिणी] निःश्रेणी, सीढ़ी।

अहिल वि [अखिल] सकल।

अहिलंख }
अहिलंघ } सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना।
अहिलक्ख }

अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से जानने योग्य।

अहिलव सक [अभि + लप्] संभाषण करना, कहना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिलस सक [अभि+लष्] अभिलाष करना, चाहना।

अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्धन विशेष।

अहिलाव पुं [अभिलाप] शब्द, आवाज।

अहिलास पुं [अभिलाष] इच्छा।

अहिलिअ न [दे] पराभव। गुस्सा।

अहिलिह सक [अभि+लिख्] चिन्ता करना। लिखना।

अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊँचा स्थान।

अहिलोल वि [अभिलोल] चञ्चल।

अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] लोलुपता, तृष्णा।

अहिल्ल वि [दे] धनवान्।

अहिल्लिया स्त्री [अहिल्या] एक सती स्त्री।

अहिव [अधिप] ऊपरी, मुखिया। मालिक, स्वामी। राजा।

अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो।

अहिवंजु देखो अहिमंजु।

अहिवंदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत।

अहिवज्जु देखो अहिमंजु।

अहिवड अक [अधि+पत्] क्षीण होना।

अहिवड सक [अधि+पत्] आना।

अहिवड्ढ देखो अभिवड्ढ।

अहिवड्ढि } स्त्री [अभिवृद्धि] उत्तर प्रोष्ठ-
अहिवद्धि } पदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता।

अहिवण्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला।

अहिवण्णु देखो अहिमंजु।

अहिवल्ली स्त्री. नाग-वल्ली।

अहिवस सक [अधि+वस्] निवास करना, रहना।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित।

अहिवायण देखो अभिवायण।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक।

अहिवास पुं [अधिवास] वासना (गन्ध), संस्कार।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान।

अहिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी।

अहिवासिअ वि [अधिवासित] सजाया हुआ।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत-सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, संदेह। भय, डर।

अहिसंजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण।

अहिसंधारण न [अभिसंधारण] अभिप्राय।

अहिसंधि पुंस्त्री [अभिसंधि] अभिप्राय, आशय।

अहिसंधि पुं [दे] बारम्बार।

अहिसक्कण पुंन [अभिष्वष्कण] संमुख-गमन।

अहिसर सक [अभि+सृ] प्रवेश करना। अपने दयित—प्रिय के पास जाना।

अहिसहण न [अधिसहन] सहन करना।

अहिसाअ देखो अक्कम = आ+क्रम्।

अहिसाम वि [अभिशाम] काला, कृष्णवर्ण वाला।

अहिसाय वि [दे] पूर्ण, पूरा।

अहिसारण न [अभिसारण] आनयन। पति के लिए संकेत स्थान पर जाना।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री।

अहिसिअ न [दे] अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना। वि. अनिष्ट ग्रह से भयभीत।

अहिसिंच देखो अभिसिंच।

अहिसित्त देखो अभिसित्त।

अहिसेअ देखो अभिसेअ।

अहिसोढ वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ।

अहिस्संग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति।

अहिहय वि [अभिहत] आघात-प्राप्त। मारित,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यापादित।

अहिहर सक [अभि+हृ] लेना। उठाना। अक. शोभना। प्रतिभास होना, लगना।

अहिहर न [दे] देवकुल, पुराना देवमन्दिर। वल्मीक।

अहिहव सक [अभि+भू] पराभव करना।

अहिहाण न [दे. अभिधान] वर्णन, प्रशंसा।

अहिहाण देखो **अभिहाण**।

अहिहू देखो **अहिहव**।

अहिहूअ वि [अभिभूत] परास्त।

अही सक [अधि+इ] पढ़ना।

अही स्त्री. नागिन।

अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगड़ा।

अहीगार देखो **अहिगार**।

अहीण वि [अधीन] आयत्त।

अहीण वि [अहीन] अन्यून, पूर्ण।

अहीय देखो **अहिय** = अधिक।

अहीय वि [अधीत] पठित।

अहीरग वि [अहीरक] तन्तु-रहित (फलादि)।

अहीरु वि [अभीरु] निडर।

अहीलास देखो **अहिलास**।

अहीसर पुं [अधीश्वर] परमेश्वर।

अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य।

अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आज-कल।

अहुणि (पै) देखो **अहुणा**।

अहुलण वि [अमार्जक] अनाशक।

अहुल्ल वि [अफुल्ल] अविकसित।

अहुवंत वकृ [अभवत्] न होता हुआ।

अहूण देखो **अहीण** = अहीन।

अहूव वि [अभूत] जो न हुआ हो। °**पुव्व** वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो।

अहे अ [अधस्] नीचे। °**कम्म** न [कर्मन्] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष। °**काय** पुं. शरीर का निचला हिस्सा। °**चर** वि. बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरह जन्तु। °**तारग** पुं [°तारक] पिशाच-विशेष। °**दिसा** स्त्री [°दिक्] नीचे की दिशा। °**लोग** पुं [°लोक] पाताल-लोक। °**वाय** पुं [°वात] नीचे बहनेवाला वायु। अपानवायु, पर्दन। °**वियड** वि [°विकट] भित्त्यादिरहित स्थान, खुला स्थान। °**सत्तमा** स्त्री [°सप्तमी] सातवीं या अन्तिम नरकभूमि। देखो **अहो** = अधस्।

अहे देखो **अह** = अथ।

अहेउ पुं [अहेतु] सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास। वि. कारणरहित, नित्य। °**वाय** पुं [°वाद] आगमवाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड़कर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद।

अहेकम्म पुंन [अधःकर्मन्] अधोगति में ले जाने वाला कर्म। भिक्षा का आधाकर्म दोष।

अहेसणिज्ज वि [यथैषणीय] संस्काररहित, कोरा।

अहेसर पुं [अहरीश्वर] सूर्य।

अहो देखो **अह** = अधस्। °**करण** न. कलह। °**गइ** स्त्री [°गति] नरक या तिर्यग्योनि। अवनति। °**गामि** वि [°गामिन्] दुर्गति में जानेवाला। °**तरण** न. झगड़ा। °**मुह** वि [°मुख] अधोमुख, अवनत मुख, लज्जित। °**लोइय** वि[°लौकिक]पाताल लोक से सम्बन्ध रखने वाला। °**हि** वि [°अवधि] नीचे दर्जा का अवधिज्ञान वाला। पुंस्त्री. नीचे दर्जा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद।

अहो अ [अहनि] दिवस में।

अहो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—आश्चर्य। शोक। आमन्त्रण, संबोधन। वितर्क। प्रशंसा। असूया, द्वेष। दीनता। °**दाण** न [°दान] आश्चर्य-कारक दान। °**पुरिसिगा**, °**पुरिसिया** स्त्री [°पुरुषिका] अभिमान। °**विहार** पुं. संयम का आश्चर्यजनक अनुष्ठान।

अहो° पुंन [अहन्] दिवस। °**णिस**, **निस**,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसि न [°निश] रात और दिन, दिन-रात। °रत्त पुं [°रात्र] दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर। चार-प्रहर का समय। °राइया स्त्री [°रात्रिकी] ध्यान-प्रधान अनुष्ठान-विशेष। °राइंदिय न [°रात्रिन्दिव] दिनरात।

अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर।

आ

आ पुं [आ] प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण। इन अर्थों का सूचक अव्यय—अ. मर्यादा, सीमा। अभिविधि, व्याप्ति। थोड़ापन, चारों ओर। अधिकता, विशेषता। स्मरण। आश्चर्य। क्रियाशब्द के योग में अर्थविस्तृति और विपर्यय। वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है। पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय।

आ अ. नीचे।

आ अ. [आस्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—खेद। दुःख। गुस्सा।

आ सक [या] जाना।

आअ वि [दे] बहुत। लम्बा। विषम, कठिन। न. लोहा। मुसल।

आअ वि [आगत] आया हुआ।

आअअ वि [आगत] आया हुआ।

आअअ वि [आयत] लम्बा, विस्तीर्ण।

आअंछ सक [कृष्] खींचना। जोतना, चास करना। रेखा करना।

आअंतुअ देखो आगंतुय।

आअंब वि [आताम्र] थोड़ा लाल।

°आअंब पुं [कादम्ब] हंस।

आअक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, बोलना, उपदेश करना।

आअच्छ देखो आगच्छ।

आअड्ड अक [दे] परवश होकर चलना।

आअड्ड अक [व्या + पृ] काम में लगना।

आअड्डिअ वि [दे] दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ।

आअत्ति देखो आयइ।

आअद देखो आगय।

आअम देखो आगम।

आअर सक [आ + दृ] आदर करना, सत्कार करना।

आअर न [दे] ऊखल। कूर्च।

आअल्ल पुं [दे] रोग। वि. चंचल। देखो आयल्लया।

आअल्लि } स्त्री [दे] झाड़ी, लताओं से
आअल्ली } निबिड प्रदेश।

आअव्व अक [वेप्] काँपना।

आआमि देखो आगामि।

आआस देखो आयंस।

आइ सक [आ + दा] ग्रहण करना, लेना।

आइ पुं [आदि] प्रथम। प्रभृति। समीप। प्रकार, भेद। अवयव, अंश। प्रधान, मुख्य। उत्पत्ति। संसार। °गर वि [°कर] आदि प्रवर्त्तक। पुं. भगवान् ऋषभदेव। °गुण पुं. सहभावी गुण। °णाह पुं [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव। °तित्थियर पुं [°तीर्थंकर] भगवान् ऋषभदेव। °देव पुं. भगवान् ऋषभदेव। °म पुं. प्रथम। °मूल न. मुख्य कारण। °मोक्ख पुं [°मोक्ष] संसार से छुटकारा, मोक्ष। शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा। °राय पुं [°राज] भगवान् ऋषभदेव। °वराह पुं. कृष्ण, नारायण।

आइ वि [आदिन्] खानेवाला।

आइ स्त्री [आजि] संग्राम।

आइअंतिय देखो अच्चंतिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइं अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय।

आइंखणा, आइंखणिया, आइंखिणिया स्त्री [दे] देवता-विशेष, कर्ण पिशाचिका देवी। डोमिनी, चांडाली।

आइंग न [दे] वाद्य-विशेष।

आइंच देखो आयंच।

आइंच देखो अक्कम = आ + क्रम्।

आइंचवार पुं [आदित्यवार] रविवार।

आइंचिय वि [आदित्यिक] आदित्य-सम्बन्धी।

आइंछ देखो आअंछ।

आइक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, उपदेश देना।

आइक्खग वि [आख्यायक] कहनेवाला, वक्ता।

आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश।

आइक्खिया स्त्री [आख्यायिका] वार्ता, कहानी। एक प्रकार की मैली विद्या, जिससे चाण्डालिनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है।

आइग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, खिन्न।

आइग्घ सक [आ + घ्रा] सूंघना।

आइच्च अ [दे] कोईबार।

आइच्च पुं [आदित्य] सूर्य। लोकान्तिक देव-विशेष। न. देवविमान-विशेष। पुं. तन्निवासी देव। वि. आद्य। सूर्य-सम्बन्धी। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश के एक राजा का नाम। °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखारूप सूर्य-वंश की उत्पत्ति हुई थी। °पभ न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर। °पीढ न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृतिचिह्न—पाद-पीठ। °रक्ख पुं [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राजपुत्र। °रय पुं [°रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा।

आइज्ज देखो आएज्ज।

आइज्जमाण वकृ [आर्द्रीक्रियमाण] भींजाया जाता।

आइट्ठ वि [आदिष्ट] उक्त, उपदिष्ट। विव-क्षित।

आइट्ठ वि [आविष्ट] अधिष्ठित, आश्रित।

आइट्ठि स्त्री [आदिष्टि] धारणा।

आइड्ढि स्त्री [आत्मर्द्धि] आत्मा की शक्ति।

आइड्ढिय वि [आत्मर्द्धिक] आत्मीय शक्ति-सम्पन्न।

आइड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ।

आइण्ण देखो आइन्न।

आइत्त वि [आदीप्त] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित।

आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत।

आइत्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला।

आइत्थ न [आतिथ्य] अतिथि-सत्कार।

आइदि स्त्री [आकृति] आकार।

आइद्ध वि [आविद्ध] प्रेरित। छूआ हुआ। पहना हुआ।

आइद्ध वि [आदिग्ध] व्याप्त।

आइन्न वि [आकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ। पुं. वस्त्रदायक कल्पवृक्ष।

आइन्न वि [आचीर्ण] आचरित, विहित।

आइन्न वि [आदीर्ण] उद्विग्न, खिन्न।

आइन्न पुं [दे] कुलीन घोड़ा।

आइप्पण न [दे] आटा। घर की शोभा के लिए जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह। चावल के आटा का दूध। घर का मण्डन—भूषण।

आइय (अप) वि [आयात] आया हुआ।

आइय वि [आचित] एकत्रीकृत। व्याप्त। ग्रथित, गुम्फित।

आइय वि [आदृत] आदरप्राप्त।

आइयण न [आदान] ग्रहण।

आइयणया स्त्री [आदान] उपादान।

आइरिय देखो आयरिय = आचार्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइल वि [आविल] कलुष, अस्वच्छ।

आइल्ल } वि [आदिम] प्रथम।
आइल्लिय }

आइवाहिअ पुं [आतिवाहिक] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है।

आइवाहिग पुं [आतिवाहिक] मार्गदर्शक।

आइस सक [आ + दिश्] आदेश करना, हुकुम करना।

आइसण वि [दे] परित्यक्त।

आईण वि [आदीन] बहुत गरीब। न. दूषित भिक्षा।

आईण पुं [दे] जातिमान् अश्व।

आईण न [आजिन] चमड़े का बना हुआ वस्त्र। पुं. द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °भद्द पुं [°भद्र] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °महावर पुं. आजिन और आजिनवर नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव। °वर पुं. द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। आजिन और आजिनवर समुद्र का अधिष्ठाता देव। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] आजिनवरद्वीप का अधिष्ठाता देव। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] देखो अनन्तर उक्त अर्थ। °वरोभास पुं [°वरावभास] द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °वरोभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव। °वरोभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °वरोभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] अजिनवराभास नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव। °वरोभासवर [°वरावभासवर] देखो अनन्तरोक्त अर्थ।

आईनीइ स्त्री [आदिनीति] सामरूप पहली राजनीति।

आईय देखो आइ = आदि।

आईय वि [आतीत] विशेष-ज्ञात। संसार में घूमनेवाला।

आईल पुंन [आचील] पान का थूकना।

आईव अक [आ + दीप्] चमकना।

आईसर पुं [आदीश्वर] भगवान् ऋषभदेव।

आउ स्त्री [दे] पानी। इस नाम का एक नक्षत्र-देव। °काय, °क्काय पुं [°काय] जल का जीव। °काइय, °क्काइय पुं [°कायिक] जल का जीव। °जीव पुं. जल का जीव। °बहुल वि. जल-प्रचुर। रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काण्ड।

आउ अ [दे] अथवा।

आउ } न [आयुष्] आयु, जीवनकाल। वय। आयु के कारणभूत कर्म-पुद्गल। °क्काल पुं [°काल] मृत्यु। °क्खय पुं [°क्षय] मरण। °क्खेम न [°क्षेम] आयु-पालन, जीवन। °विज्जा स्त्री [°विद्या] चिकित्साशास्त्र। °व्वेय पुं [°वेद] चिकित्सा-शास्त्र।
आउअ }

आउंच सक [आ + कुञ्चय्] संकुचित करना, समेटना।

आउंचिअ वि [आकुञ्चित] संकुचित। उठाकर धारण किया हुआ।

आउंजि वि [आकुञ्चिन्] संकुचनेवाला। निश्चल।

आउंट देखो आउट्ट = आ-वर्त्तय्।

आउंट अक [आ + कुञ्च्] संकोचना।

आउंटण न [आकुण्टन] आवर्जन।

आउंबालिय वि [दे] आप्लावित, डुबाया हुआ, पानी आदि द्रवपदार्थ से व्याप्त।

आउक्क } देखो आउ = आयुष्।
आउग }

आउच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना। अनुज्ञा लेना।

आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रश्न।

आउच्छिय वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउज्ज देखो आओज्ज = आतोद्य ।

आउज्ज पुं [आवर्ज] सम्मुख करना । शुभ क्रिया ।

आउज्ज वि [आवर्ज्य] सम्मुख करने योग्य ।

आउज्ज वि [आयोज्य] सम्बन्ध करने योग्य ।

आउज्जिय वि [आतोद्यिक] वाद्य बजानेवाला ।

आउज्जिय वि [आयोगिक] उपयोगवाला, सावधान ।

आउज्जिया स्त्री [आवर्जिका] क्रिया, व्यापार । °करण न. शुभ व्यापार-विशेष ।

आउज्जीकरण न [आवर्जीकरण] शुभ व्यापार-विशेष ।

आउट्ट सक [आ + वृत्] करना । भूलाना । व्यवस्था करना । अक. सम्मुख होना, तत्पर होना । निवृत्त होना । घूमना ।

आउट्ट सक [आ + कुट्ट्] छेदन करना, हिंसा करना ।

आउट्ट वि [आवृत्त] निवृत्त, पीछे फिरा हुआ । भ्रामित, भुलाया हुआ । ठीक-ठीक व्यवस्थित । कृत, विहित ।

आउट्ट, आउट्टिअ } वि [आदृत] आदर-युक्त ।

आउट्टण न [आवर्त्तन] आराधन, सेवा, भक्ति । अभिमुख होना, तत्पर होना । इच्छा । घूमाना, भ्रमण । निवृत्ति । करना, क्रिया, कृति ।

आउट्टणया स्त्री [आवर्त्तनता] अपायज्ञान ।

आउट्टावण न [आवर्त्तन] अभिमुख करना, तत्पर करना ।

आउट्टि स्त्री [आकुट्टि] हिंसा, मारना । निर्दयता ।

आउट्टि स्त्री [आवृत्ति] देखो आउट्टण = आवर्तन । बार-बार करना, पुनः-पुनः क्रिया ।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] मारनेवाला, हिंसक । अकार्य-कारक ।

आउट्टि वि [दे] साढ़े तीन ।

आउट्टिम वि [आकुट्ट्य] कूटकर बैठाने योग्य (जैसे सिक्के में अक्षर) ।

आउट्टिय देखो आउट्ट = आवृत्त ।

आउट्टिय पुं [आकुट्टिक] दण्ड-विशेष ।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित ।

आउट्टिया स्त्री [आकुट्टिका] पास में आकर करना ।

आउट्ठ वि [आतुष्ट] संतुष्ट ।

आउड सक [आ + जोडय्] सम्बन्ध करना, जोड़ना ।

आउड सक [आ + कुट्] कूटना, पीटना । ताडन करना, आघात करना ।

आउड सक [लिख्] लिखना ।

आउड्ड अक [मस्ज्] मज्जन करना, डूबना । तल्लीन होना ।

आउण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त ।

आउत्त वि [आयुक्त] उपयोग वाला, सावधान । न. पुरीषोत्सर्ग । पुं. गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया ।

आउत्त वि [आगुप्त] संक्षिप्त । संयत ।

आउत्थ वि [आत्मोत्थ] आत्म-कृत ।

आउर वि [आतुर] रोगी । उत्कण्ठित । पीडित ।

आउर न [दे] युद्ध । वि. बहुत । गरम ।

आउल सक [आकुलय्] व्याप्त करना । व्यग्र करना । दुःखी करना । संकीर्ण करना । प्रचुर करना ।

आउलि स्त्री [आतुलि] वृक्ष-विशेष ।

आउलीकर सक [आकुली + कृ] देखो आउल = आकुलय् ।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबड़ाया हुआ ।

आउल्लय न [दे] जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण ।

आउस अक [आ + वस्] रहना, वास करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना ।
आउस सक [आ + मृश्] छूना ।
आउस सक [आ + जुष्] सेवा करना ।
आउस न [दे] कूर्च । क्षुरकर्म ।
आउस देखो आउ = आयुष् ।
आउस } वि [आयुष्मत्] दीर्घायु ।
आउसंत }
आउस्स देखो आउस = आ + क्रुश् ।
आउस्स पुं [आक्रोश] दुर्वचन, असभ्य वचन ।
आउस्सिय वि [आवश्यक] जरूरी । °करण न. मन, वचन और काया का शुभ व्यापार । मोक्ष के लिए प्रवृत्ति ।
आउह न [आयुध] शस्त्र । विद्याधर वंश के एक राजा का नाम । °घर न [°गृह] शस्त्र-शाला । °घरसाला स्त्री [°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ । °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी । °गार न. शस्त्रगृह ।
आउहि वि [आयुधिन्] योद्धा, शस्त्रधारक ।
आऊड अक [दे] जुए में पण करना ।
आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए में की जाती प्रतिज्ञा ।
आऊर सक [आ + पूरय्] भरना, पूर्ति करना, भरपूर करना ।
आऊरिय वि [आपूरित] भरा हुआ, व्याप्त ।
आऊसिय वि [आयूषित] प्रविष्ट । संकुचित ।
आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य उपादेय । °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है ।
आएस वि [ऐष्यत्] आगामी, भविष्य में होने वाला ।
आएस पुं [आदेश] अपेक्षा । प्रकार, रीति । वि. नीचे देखो ।
आएस } पुं [आदेश] उपदेश, शिक्षा ।
आएसम } आज्ञा, हुकुम । विवक्षा, सम्मति । अतिथि । निर्देश । प्रमाण । इच्छा । दृष्टान्त । सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र । उपचार, आरोप । शिष्ट-सम्मत ।
आएस देखो आवेस ।
आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा वगैरह का कारखाना, शिल्पशाला ।
आएसिय वि [आदेशिक] आदेश सम्बन्धी । विवाह आदि के जिमन में बचे हुए वे खाद्य-पदार्थ जिनको श्रमणों में बाँट देने का संकल्प किया गया हो ।
आओ अ [दे] अथवा ।
आओग पुं [आयोग] लाभ । अत्यधिक सूद के लिए करजा देना । परिकर, सरंजाम । अर्थो-पार्जन का साधन ।
आओग्ग पुं [आयोग्य] परिकर, सरंजाम ।
आओज्ज पुंन [आयोग्य] बाजा ।
आओज्ज वि [आयोज्य] सम्बन्ध-योग्य ।
आओड सक [आ + खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेड़ना ।
आओडण न [आकोलन] मजबूत करना ।
आओडिअ वि [दे] ताडित ।
आओध अक [आ + युध्] लड़ना ।
आओस सक [आ + क्रुश्, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना ।
आओस पुं [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल ।
आओसणा स्त्री [आक्रोशना] निर्भर्त्सना, तिरस्कार ।
आओहण न [आयोधन] युद्ध ।
आंत वि [अन्त्य] अन्त का ।
आकंख सक [आ + काङ्क्ष्] इच्छना ।
आकंद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना ।
आकंप अक [आ + कम्प्] थोड़ा काँपना । तत्पर होना । आराधन करना । आवर्जन करना । थोड़ा चलना, प्रसन्न करना ।
आकड्ढ पुं [आकर्ष] खिंचाव । °विकड्ढि स्त्री [°विकृष्टि] खींच-तान ।
आकड्ढिय वि [दे] बाहर निकाला हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकण्णण न [आकर्णन] श्रवण ।

आकंदि देखो आकिंदि ।

आकम्हिय वि [आकस्मिक] अकस्मात् होनेवाला, बिना ही कारण होनेवाला ।

आकर पुं. खान । समूह ।

आकस देखो आगस ।

आकार देखो आगार ।

आकास देखो आगास ।

आकासिय वि [दे] पर्याप्त, काफी ।

आकिइ स्त्री [आकृति] स्वरूप, आकार ।

आकिंचण न [आकिञ्चन्य] निस्पृहता, निष्परिग्रहता ।

आकिंचणिय } देखो आकिंचण ।
आकिंचण्ण }

आकिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण ।

आकिंदि देखो आकिड ।

आकुंच सक [आ + कुञ्चय्] संकोच करना ।

आकुट्ठ न [आक्रुष्ट] आक्रोश । वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ।

आकुल देखो आउल ।

आकूय न [आकूत] इङ्गित, इशारा । अभिप्राय ।

आकेवलिय वि [आकेवलिक] असम्पूर्ण ।

आकोडण न [आकोटन] कूट कर घुसेड़ना ।

आकोस देखो अक्कोस = आक्रोश ।

आकोसाय अक [आकोशाय्] विकसित होना ।

आक्कंद (मा) देखो आकंद ।

आखंच (अप) सक [आ + कृष्] पीछे खींचना ।

आखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र । °धणुह न [°धनुष्] इन्द्रधनुष । °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गौतम-स्वामी ।

आगइ स्त्री [आगति] आगमन ।

आगइ देखो आकिइ ।

आगंतगार } न [आगन्त्रगार] धर्मशाला,
आगंतार } मुसाफिरखाना ।

आगंतु वि [आगन्तृ] आनेवाला ।

आगंतुग } वि. [आगन्तुक] आनेवाला ।
आगंतुय } अतिथि । कृत्रिम, अस्वाभाविक ।

आगंप सक [आ + कम्पय्] कँपाना, हिलाना ।

आगच्छ सक [आ + गम्] आना, आगमन करना ।

आगत देखो आगय ।

आगत्ती स्त्री [दे] कूप-तुला ।

आगम सक [आ + गम्] आना, आगमन करना । जानना ।

आगम पुं. समागम । ज्ञान, जानकारी । आगमन । शास्त्र, सिद्धान्त । °कुसल वि [°कुशल] सिद्धान्तों का जानकार । °ज्ज वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार । °णीइ स्त्री [°नीति] आगमोक्त विधि । °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार । °परतंत वि [°परतन्त्र] सिद्धान्त के अधीन । °बलिय वि [°बलिक] सिद्धान्तों का अच्छा जानकार । °ववहार पुं [°व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार ।

आगम सक [आ + गम्] प्राप्त करना ।

आगमिय वि [आगमिक] शास्त्र-सम्बन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित । शास्त्रोक्त वस्तु को ही माननेवाला ।

आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] आगामी, होनेवाला । आनेवाला ।

आगमिस्सा स्त्री [आगमिष्यन्ती] भविष्यकाल ।

आगमेस } देखो आगमिस्स ।
आगमेसि }

आगय वि [आगत] आया हुआ । उत्पन्न ।

आगर देखो आकर = आकर ।

आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक, खान का काम करनेवाला ।

आगरिस पुं [आकर्ष] ग्रहण, उपादान । खिंचाव । ग्रहण कर छोड़ देना । प्राप्ति ।

आगरिस सक [आ + कृष्] खींचना ।

आगरिसग वि [आकर्षक] खींचनेवाला । पुं. लौह-चुम्बक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगरिसणी स्त्री [आकर्षणी] विद्या-विशेष ।
आगल सक [आ + कलय्] जानना । लगाना। पहुँचाना । संभावना करना ।
आगल्ल वि [आग्लान] ग्लान, बीमार ।
आगस सक [आ + कृष्] खींचना ।
आगह देखो आगाह ।
आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत ।
आगाढ वि. प्रबल, दुःसाध्य । अपवाद, खास कारण । अत्यन्त गाढ । °जोग पुं [°योग] योग-विशेष, गणि-योग । °पण्ण न [°प्रज्ञ] शास्त्र, आगम । °सुय न [°श्रुत] आगम-विशेष ।
आगामि वि [आगामिन्] आनेवाला ।
आगार सक [आ + कराय्] बुलाना, आह्वान करना । त्याग करना ।
आगार न. गृह । वि. गृहस्थ । °त्थ वि [°स्थ] गृही ।
आगार पुं [आकार] अपवाद । इंगित, चेष्टा-विशेष । आकृति, रूप ।
आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-सम्बन्धी ।
आगाल पुं. समान प्रदेश में रहना । सम भाव से रहना । उदीरणा-विशेष ।
आगास पुंन [आकाश] आकाश, अन्तराल । °गमा स्त्री. विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश में गमन कर सकता है । °गामि वि [°गामिन्] आकाश में गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति । °जोइणी स्त्री [°योगिनी] पक्षिविशेष । °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] आकाश-प्रदेशों का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य । °थिग्गलन [दे] मेघरहित आकाश का भाग । °फलिह, °फालिय पुं [°स्फटिक] निर्मल स्फटिक-रत्न । °फालिया स्त्री [°फालिका] एक मीठा द्रव्य । °इवाइ वि [°ातिपातिन्] विद्या आदि के बल से आकाश में गमन करनेवाला ।
आगासिय वि [आकाशित] आकाश को प्राप्त ।
आगासिय वि [आकर्षित] खींचा हुआ ।
आगासिया स्त्री [आकाशिकी] आकाश में गमन करने की लब्धि-शक्ति ।
आगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, स्नान करना ।
आगिइ स्त्री [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति ।
आगिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण ।
आगी देखो आगिइ ।
आगु पुं [आकु] इच्छा ।
आघं देखो आघव । 'सूत्रकृतांग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दसवाँ अध्ययन ।
आघंस सक [आ + घृष्] घर्षण करना ।
आघंस सक [आ + घृष्] थोड़ा घिसना ।
आघंस वि [आघर्ष] जल के साथ घिसकर जो पिया जा सके वह ।
आघयण न [दे] वध-स्थान ।
आघव सक [आ + ख्या] कहना, उपदेश देना । ग्रहण करना ।
आघवइत्तु वि [आख्यायक] वक्ता, उपदेशक ।
आघविय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत ।
आघवेत्तग वि [आख्यापयितृक] उपदेष्टा, वक्ता ।
आघस सक [आ + घस्] थोड़ा घिसना ।
आघा सक [आ + ख्या] कहना ।
आघा सक [आ + घ्रा] सूंघना ।
आघाय वि [आख्यात] कथित । न. उक्ति, कथन ।
आघाय पुं [आघात] एक नरक-स्थान । विनाश ।
आघाय पुं [आघात] वध । चोट, प्रहार ।
आघाव देखो आघव ।
आघुट्ठ वि [आघुष्ट] घोषित, जाहिर किया हुआ ।
आघुम्म अक [आ + घूर्ण्] डोलना, हिलना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काँपना, चलना ।
आघोस सक [आ + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना ।
आचक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना ।
आचरिय वि [आचरित] अनुष्ठित, विहित । न. आचरण ।
आचाम सक [आ+चामय्] चाटना, खाना, पीना ।
आचार देखो आयार = आचार ।
आचारिअ देखो आयरिय = आचार्य ।
आचिक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना ।
आचुण्णिअ वि [आचूर्णित] चूर-चूर किया हुआ ।
आचेलक्क न [आचेलक्य] वस्त्र का अभाव । वि. आचार-विशेष ।
आच्छेदण न [आच्छेदन] नाश । वि. नाशक ।
आजाइ देखो आयाइ ।
आजि देखो आइ = आजि ।
आजीरण पुं [आजीरण] स्वनामख्यात एक जैन मुनि ।
आजीव } पुं. आजीविका । जैन साधु के
आजीवग } लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपनी जाति, कुल आदि की समानता बतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना । गोशालक मत का अनुयायी साधु । धन का समूह ।
आजीवग पुं [आजीवक] धन का गर्व । सकल जीव । देखो आजीवय ।
आजीवण न [आजीवन] जीवन-निर्वाह का उपाय । जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष ।
आजीवय देखो आजीवग ।
आजीविय वि [आजीविक] गोशालक के मत का अनुयायी ।
आजीविया स्त्री [आजीविका] निर्वाह । जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष ।
आजुत्त वि [आयुक्त] अप्रमादी ।
आजुज्झ अक [आ + युध्] लड़ना ।
आजुह न [आयुध] हथियार ।
आजोज्ज देखो आओज्ज ।
आडंबर पुं. आटोप, ऊपरी दिखाव । वाद्य की आवाज । यक्ष-विशेष । न. यक्ष का मन्दिर ।
आडंबर पुं [आडम्बर] पटह ।
आडंबरिल्ल वि [आडम्बरवत्] आडम्बरी ।
आडविय वि [दे] चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ ।
आडविय वि [आटविक] जंगल में रहनेवाला, जंगली ।
आडह सक [आ + दह्] चारों ओर से जलाना ।
आडह सक [आ + धा] स्थापन करना, नियुक्त करना ।
आडाडा स्त्री [दे] बलात्कार । जबरदस्ती ।
आडासेतीय पुं [आडासेतीक] पक्षि-विशेष ।
आडि स्त्री [आटि] पक्षि-विशेष । मत्स्य विशेष ।
आडियत्तिय पुं [दे] शिविका-वाहक पुरुष ।
आडुआल सक [दे] मिश्र करना, मिलाना ।
आडुआलि पुं [दे] मिश्रता, मिलावट ।
आडोय देखो आडोव = आटोप ।
आडोलिय वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ ।
आडोव सक [आ + टोपय्] आडम्बर करना । पवन द्वारा फुलाना ।
आडोविअ वि [दे] आरोपित, गुस्सा किया हुआ ।
आडोविअ वि [आटोपिक] आटोपवाला, स्फारित ।
आढई स्त्री [आढकी] वनस्पति-विशेष ।
आढग पुंन [आढक] चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण । चार सेर परिमित चीज ।
आढत्त वि [दे] आक्रान्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ।
आढप्प° देखो आढव ।
आढय देखो आढग ।
आढव सक [आ + रभ्] शुरू करना ।
आढा सक [आ + दृ] आदर करना, मानना ।
आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित ।
आढिअ वि [दे] अभीष्ट । गणनीय, माननीय । अप्रमत्त, उद्युक्त । गाढ़, निबिड ।
आण सक [ज्ञा] जानना ।
आण सक [आ + णी] ले आना ।
आण पुं [आन] श्वासोच्छ्वास । श्वास के पुद्गल ।
°आण देखो जाण = यान ।
आणंछ देखो आअंछ ।
आणंतरिय न [आनन्तर्य] अविच्छेद, व्यवधान का अभाव । अनुक्रम ।
आणंद अक [आ + नन्द्] खुश होना ।
आणंद सक [आ + नन्दय्] खुश करना ।
आणंद पुं [आनन्द] अहोरात्र का सोलहवाँ मुहूर्त । एक देवविमान । हर्ष । भगवान् शीतलनाथ के मुख्य-शिष्य । पोतनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था । भावी छठवाँ बलदेव । नाग-कुमार जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव । मुहूर्त-विशेष । भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र । भगवान् महावीर के एक साधु शिष्य का नाम । भगवान् महावीर के दस मुख्य उपासकों (श्रावक-शिष्य) में पहला । देव-विशेष । राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम । 'उपास-गदसा' सूत्र का एक अध्ययन । 'अणुत्तरोप-पातिकदसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन । 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन । ब. देश-विशेष । °पुर न. नगर-विशेष । °रक्खिय पुं [°रक्षित] स्वनामख्यात एक जैन साधु ।
आणंदण न [आनन्दन] खुशी । वि. खुश करनेवाला, आनन्ददायक ।
आणंदवड / आणंदवस } पुं [दे] पहली बार की रजस्वला का रक्त वस्त्र ।
आणंदा स्त्री [आनन्दा] देवी-विशेष, मेरु की पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी । इस नाम की एक पुष्करिणी ।
आणंदिय वि [आनन्दित] हर्षप्राप्त । रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजा ।
आणक्ख सक [परि + ईक्ष] परीक्षा करना ।
आणच्छ देखो आअंछ ।
आणट्ठ वि [आनष्ट] सर्वथा नष्ट ।
आणण न [आनन] मुख ।
आणण न [आनयन] लाना ।
आणत्त वि [आज्ञप्त] जिसको हुकुम दिया गया हो वह ।
आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम । °अर वि [°कर] आज्ञाकारक, नौकर । °किंकर वि. नौकर । °हर वि. आज्ञावाहक, संदेश-वाहक ।
आणत्थ न [आनर्थ्य] अनर्थता ।
आणप (अशो) देखो आणव = आ + ज्ञपय् ।
आणपाण देखो आणापाण ।
आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य ।
आणम अक [आ + अन्] श्वास लेना ।
आणमणी देखो आणवणी ।
आणय पुंन [आनत] देवलोक-विशेष । पुं. उस देवलोकवासी देव ।
आणय पुंन [आनत] एक देवविमान ।
आणयण न [आनयन] लाना, आनना ।
आणव सक [आ + ज्ञपय्] आज्ञा देना, फरमाना ।
आणव देखो आणाव = आ + नायय् ।
आणवण न [आनायन] मँगवाना ।
आणवणिय वि [आज्ञापनिक] आज्ञा फरमाने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाला।

आणवणिया स्त्री [आज्ञापनिका, आनायनिका] देखो दोनों आणवणी।

आणवणी स्त्री [आज्ञापनी] क्रिया-विशेष, हुकुम करना। हुकुम करने से होनेवाला कर्मबन्ध।

आणवणी स्त्री [आनायनी] क्रिया-विशेष, मँगवाना। मँगवाने से होनेवाला कर्म-बन्ध।

आणा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम। उपदेश। निर्देश। आगम, सिद्धान्त। सूत्र की व्याख्या। °**ईसर** पुं [°**ईश्वर**] आज्ञा फरमाने वाला मालिक। °**जोग** पुं [°**योग**] आज्ञा का सम्बन्ध। शास्त्र के अनुसार कृति। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] सम्यक्त्व-विशेष। वि. आगमों पर श्रद्धा रखने वाला। °**व** वि [°**वत्**] आज्ञा मानने वाला। °**वत्त** न [°**पत्र**] आज्ञा-पत्र, हुकुमनामा। °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] व्यवहार-विशेष। °**विजय** न [°**विचय**, °**विजय**] धर्मध्यान-विशेष, जिसमें आज्ञा—आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है।

आणाइ पुं [दे] पक्षी।

आणाइत्त वि [**आज्ञावत्**] आज्ञा माननेवाला।

आणाइय वि [**आनायित**] मंगाया हुआ।

आणापाण पुं [**आनप्राण**] श्वासोच्छ्वास। श्वासोच्छ्वास-परिमित समय। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति।

आणापाणु स्त्री [**आनप्राण**] ऊपर देखो।

आणापाणुय पुं [**आनप्राणक**] श्वासोच्छ्वास-परिमित काल।

आणाम पुं [**आनाम**] श्वास, अन्तःश्वास।

आणामिय वि [**आनामित**] थोड़ा नमाया हुआ। अधीन किया हुआ।

आणाल पुं [**आलान**] बन्धन। हाथी बाँधने की रज्जु—डोरी। जहाँ पर हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ, कील। °**क्खंभ**, °**खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] जहाँ हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ।

आणाव देखो **आणव** = आ + ज्ञपय्।

आणाव सक [आ + नायय्] मँगवाना।

आणाव (अप) सक [आ + नी] लाना।

आणावण न [**आनायन**] दूसरे से मँगवाना।

आणावण न [**आज्ञापन**] आज्ञा, हुकुम।

आणि देखो **आणी**।

आणिअ वि [**आनीत**] लाया हुआ।

आणिअ [दे] देखो **आढिअ**।

आणिक्क वि [दे] टेढ़ा, वक्र।

आणिक्क न [दे] तिर्यक् मैथुन।

आणी सक [आ + नी] लाना।

आणीय वि [**आनीत**] लाया हुआ।

आणुअ न [दे] आकार, आकृति।

आणुओगिअ वि [**आनुयोगिक**] व्याख्याकर्ता।

आणुकंपिय वि [**आनुकम्पिक**] दयालु, कृपालु।

आणुगामि वि [**अनुगामिन्**] नीचे देखो।

आणुगामिय वि [**आनुगामिक**] अनुसरण करनेवाला। न. अवधिज्ञान का एक भेद।

आणुगुण्ण न [**आनुगुण्य**] औचित्य, अनुरूपता। अनुकूलता।

आणुधम्मिय वि [**आनुधर्मिक**] सर्वधर्म-सम्मत।

आणुपाणु देखो **आणापाणु**।

आणुपुव्व न [**आनुपूर्व्य**] अनुक्रम, परिपाटी।

आणुपुव्वी स्त्री [**आनुपूर्वी**] क्रम, परिपाटी। °**णाम** न [°**नामन्**] नामकर्म का एक भेद।

आणुलोमिअ वि [**आनुलोमिक**] अनुलोम, अनुकूल, मनोहर।

आणुवित्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] अनुसरण।

आणूग पुंन [**अनूप**] सजलप्रदेश।

आणूव पुं [दे] श्वपच, डोम।

आणे सक [आ + नी] लाना, ले आना।

आणे सक [**ज्ञा**] जानना।

आणेसर देखो **आणा-ईसर**।

आत देखो **आय** = आत्मन्।

आतंब देखो **आयंब** = आताम्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आतित्थ देखो आइत्थ ।
आत्त देखो अत्त = आत्मन् ।
आत्त देखो अत्त = आत्त ।
आत्त वि [आत्मीय] स्वकीय ।
आदंस देखो आयंस ।
आद (शौ) देखो अत्त = आत्मन् ।
आद देखो आइ = आ + दा ।
आदण्ण वि [दे] आकुल, व्याकुल, घबड़ाया हुआ ।
आदयाण वि [आददान] ग्रहण करता हुआ ।
आदर देखो आयर = आ+दृ ।
आदरिस देखो आयंस ।
आदाउ वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला ।
आदाण देखो आयाण ।
आदाण न [आर्द्रंहण] गरम किया हुआ (जल, तैल आदि) ।
आदाणिय न [आदानीय] लाभ, नफा ।
आदि देखो आइ = आदि ।
आदिच्च देखो आइच्च ।
आदिच्छा स्त्री [आदित्सा] ग्रहण करने की इच्छा ।
आदिज्ज देखो आएज्ज ।
आदिट्ठ देखो आइट्ठ ।
आदित्त देखो आइच्च ।
आदित्तु वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला ।
आदिय सक [आ + दा] ग्रहण करना ।
आदिल्ल देखो आइल्ल ।
आदी स्त्री. इस नाम की एक महानदी ।
आदीण वि [आदीन] बहुत गरीब । न. दूषित भिक्षा । °भोइ वि [°भोजिन्] दूषित भिक्षा को लेनेवाला ।
आदीणिय वि [आदीनिक] अत्यन्त दीन-सम्बन्धी ।
आदु (शौ) देखो अदु ।
आदेज्ज देखो आएज्ज ।
आदेस देखो आएस = आदेश ।
आदेस पुं [आदेश] व्यपदेश, व्यवहार । देखो आएस = आदेश ।
आधरिस सक [आ + धर्षय्] परास्त करना, तिरस्कारना ।
आधा देखो आहा ।
आधार देखो आहार = आधार ।
आधोरण पुं. हस्तिपक, महावत ।
आपण देखो आवण ।
आपण्ण देखो आवण्ण ।
आपत्ति स्त्री. प्राप्ति ।
आपाइय वि [आपादित] जिसकी आपत्ति की गई हो वह । उत्पादित । जनित ।
आपायण न [आपादन] संपादन ।
आपीड पुं. शिरोभूषण ।
आपीण देखो आवीण ।
आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना, सम्मति लेना ।
आपुट्ठ वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह ।
आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर ।
आपूर पुं. पूरनेवाला ।
आपूर देखो आऊर ।
आपेड, आपेड्ड, आपेल्ल देखो आपीड ।
आप्पण न [दे] पिष्ट, आटा ।
आफंस पुं [आस्पर्श] अल्प स्पर्श ।
आफर पुं [दे] द्यूत ।
आफाल सक [आस्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना । देखो अप्फाल ।
आफुण्ण वि [दे] आक्रान्त ।
आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाड़ना ।
आबंध सक [आ + बन्ध्] मजबूत बाँधना ।
आबंध पुं [आबन्ध] सम्बन्ध, संयोग ।
आबद्ध वि. बँधा हुआ ।
आबाहा स्त्री [आबाधा] अल्प बाधा । अन्तर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानसिक पीड़ा।

आभंकर पुं [आभङ्कर] ग्रह-विशेष। न. विमान-विशेष। °पभंकर न [°प्रभङ्कर] विमान-विशेष।

आभक्खाण देखो अब्भक्खाण।

आभट्ठ वि [आभाषित] उक्त। संभाषित।

आभरण न. आभूषण।

आभव्व वि [आभव्य] होने योग्य, संभाव्य।

आभा स्त्री. प्रभा, कान्ति, तेज।

आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता।

आभार पुं. बोझ, भार।

आभास सक [आ + भाष्] कहना, संभाषण करना।

आभास पुं. जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो। विपरीत।

आभासिय पुं [आभाषिक] इस नाम का एक म्लेच्छ देश। उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति। एक अन्तर्द्वीप। उसमें रहनेवाला।

आभिओइय देखो आभिओगिय।

आभिओग पुं [आभियोग्य] किंकरस्थानीय देव-विशेष। नौकर। नौकरी।

आभिओगा स्त्री [आभियोग्या] आभियोगिक भावना।

आभिओगि वि [आभियोगिन्] किंकर-स्थानीय देव।

आभिओगिय वि [आभियोगिक] मन्त्र आदि से आजीविका चलानेवाला। नौकर स्थानीय देव-विशेष। वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म।

आभिओगिय वि [आभियोगित] वशीकरण आदि से संस्कृत।

आभिओग्ग देखो आभिओग।

आभिग्गहिअ वि [आभिग्रहिक] अभिग्रह-सम्बन्धी। न. मिथ्यात्वविशेष।

आभिग्गहिय वि [आभिग्रहिक] प्रतिज्ञा से सम्बन्ध रखनेवाला। प्रतिज्ञा का निर्वाह करने-वाला। न. मिथ्यात्व-विशेष।

आभिणंदिय पुं [आभिनन्दित] श्रावण मास।

आभिट्ट, आभिड्डिय वि [दे] प्रवृत्त।

आभिणिबोहिग देखो आभिणिबोहिय।

आभिणिबोहिय न [आभिनिबोधिक] इन्द्रिय और मन से होनेवाला प्रत्यक्षज्ञान-विशेष।

आभिप्पाइअ वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-वाला।

आभिसेक्क वि [आभिषेक्य] अभिषेक के योग्य। मुख्य।

आभीर, आभीरिय पुं [आभीर] एक शूद्र-जाति, अहीर।

आभूअ वि [आभूत] उत्पन्न।

आभेडिय [दे] देखो आभिट्ट।

आभोइअ वि [आभोगित] देखा हुआ।

आभोग पुं. विलोकन, देखना। प्रदेश, स्थान। उपकरण, साधन। प्रतिलेखन। उपयोग, ख्याल। विस्तार। ज्ञान, जानना। देखो आभोय = आभोग।

आभोगि वि [आभोगिन्] परिपूर्ण। °णी स्त्री [°नी] मानसिक निर्णय उत्पन्न कराने-वाली विद्या-विशेष।

आभोय सक [आ + भोगय्] देखना। जानना। ख्याल करना।

आभोय पुं [आभोग] सर्प का फण। देखो आभोग।

आम अ. अनुमति-प्रकाशक अव्यय—हाँ।

आम अ [भवत्] आप।

आम पुं. रोग, पीड़ा। वि. अपक्व, कच्चा। अशुद्ध, अपवित्र। °जर पुं [°ज्वर] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार।

आमइ वि [आमयिन्] रोगी।

आमं अ [आम] स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ। अतिशय।

आमंड न [दे] कृत्रिम आमलक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आमंडण न [दे] भाण्ड।
आमंत सक [आ + मन्त्रय्] आह्वान करना, सम्बोधन करना। अभिनन्दन करना।
आमंतण न [आमन्त्रण] आह्वान, सम्बोधन। °वयण न [°वचन] सम्बोधन-विभक्ति।
आमंतणी स्त्री [आमन्त्रणी] सम्बोधन की भाषा, आह्वान की भाषा। आठवीं सम्बोधन-विभक्ति।
आमघाय पुं [अमाघात] अमारि-प्रदान, हिंसा-निवारण।
आमज्ज सक [आ + मृज्] एक बार साफ करना।
आमद्द पुं [आमर्द] संघर्ष, आघात।
आमय पुं. रोग, दर्द। °करणी स्त्री. विद्या-विशेष।
आमय वि [आमत] सम्मत।
आमराय पुं [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा।
आमरिस पुं [आमर्ष] स्पर्श।
आमल पुंन [आमलक] आमला का फल।
आमलई स्त्री [आमलकी] आमला का पेड़।
आमलकप्पा स्त्री [आमलकल्पा] नगरी विशेष।
आमलग पुं [आमरक] चारों ओर से मारना। विपाक-श्रुत का एक अध्ययन।
आमलग } पुंन [आमलक] आमला का पेड़।
आमलय } आमला का फल।
आमलय न [दे] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान।
आमसिण वि [आमसृण] थोड़ा चिकना। उल्लसित।
आमिल्ल सक [आ + मुच्] छोड़ना।
आमिस न [आमिष] मांस, नैवेद्य। वि. मनोहर, सुन्दर। आसक्ति का कारण, आहार, फलादि भोज्य वस्तु।
आमुंच सक [आ + मुच्] छोड़ना। उतारना। पहनना।

आमुक्क वि [आमुक्त] त्यक्त। उतारा हुआ। परिहित।
आमुट्ठ वि [आमृष्ट] स्पृष्ट। उलटा किया हुआ।
आमुय सक [आ + मुच्] छोड़ना, त्यागना।
आमुस सक [आ + मृश्] थोड़ा या एक बार स्पर्श करना।
आमेडणा स्त्री [आम्रेडना] विपर्यस्त करना।
आमेल पुं [दे] लट, जटा।
आमेल पुं [आपीड़] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरोभूषण।
आमेल्ल देखो आमेल = आपीड़।
आमोअ अक [आ + मुद्] खुश होना।
आमोअ पुं [दे. आमोद] खुशी।
आमोअ पुं [आमोद] सुगन्ध।
आमोअ पुं [आमोद] वाद्य-विशेष।
आमोअअ वि [आमोदक] सुगन्ध उत्पन्न करनेवाला। आनन्द-जनक।
आमोअअ वि [आमोदद] सुगन्ध देनेवाला।
आमोक्ख पुं [आमोक्ष] मोक्ष।
आमोक्खा स्त्री [आमोक्ष] छुटकारा। परित्याग।
आमोड पुं [दे] जूट, लट, समूह।
आमोडग न [आमोटक] वाद्य-विशेष। फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्धन।
आमोडण न [आमोटन] थोड़ा मोड़ना।
आमोडिअ वि [आमोटित] मर्दित।
आमोद } देखो आमोअ।
आमोय }
आमोय पुं [आमोक] कूड़े का पुञ्ज।
आमोरअ वि [दे] विशेषज्ञ।
आमोस पुं [आमर्श, °र्ष] स्पर्श।
आमोस पुं [आमोष] चोर।
आमोसग वि [आमोषक] चोर। चोरों की एक जाति।
आमोसहि पुं [आमर्शौषधि] लब्धि-विशेष,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सब रोग नष्ट होते हैं।

आय पुं. लाभ, प्राप्ति, फायदा। वनस्पति-विशेष। कारण, हेतु। अध्ययन। गमन।

आय पुं [आय] अध्ययन, शास्त्रांश-विशेष।

आय वि [आज] अज-सम्बन्धी। बकरे के बाल से उत्पन्न (वस्त्रादि)।

आय वि [आगत] आया हुआ (काल)।

आय वि [आत्त] गृहीत।

आय पुं [आगस्] पाप। अपराध।

आय पुंस्त्री [आत्मन्] आत्मा, जीव। निज, स्वयं। शरीर। ज्ञान आदि आत्मा के गुण। °गुत्त वि [°गुप्त] जितेन्द्रिय। °जोगि वि [°योगिन्] मुमुक्षु, ध्यानी। °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु। °तंत वि [°तन्त्र] स्वाधीन। °तत्त न [°तत्त्व] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय। °प्पमाण वि [°प्रमाण] साढ़े तीन हाथ का परिमाण वाला। °प्पवाय न [°प्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग ग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व। °भाव पुं. आत्म-स्वरूप। निज-अभिप्राय। विषयासक्ति। °य पुं [°ज] पुत्र, लड़का। °रक्ख वि [°रक्ष] अङ्गरक्षक। °व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्मगुणों से सम्पन्न। °हम्म वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति में ले जानेवाला। देखो आहाकम्म।

आय° देखो आवइ।

आयइ स्त्री [आयति] भविष्य काल।

आयइजणग न [आयतिजनक] तपश्चर्या-विशेष।

आयंक पुं [आतङ्क] दुःख। पीड़ा। दुःसाध्य आशु-घाती रोग।

आयंकि वि [आतङ्किन्] रोगी।

आयंगुल न [आत्माङ्गुल] परिमाण का एक भेद।

आयंच सक [आ + तञ्च्] सींचना।

आयंचणिया स्त्री [आतञ्चनिका] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टीवाला पानी रखता है।

आयंचणी स्त्री [आतञ्चनी] ऊपर देखो।

आयंत वि [आचान्त] जिसने आचमन किया हो वह।

आयंतम वि [आत्मतम] आत्मा को खिन्न करनेवाला।

आयंतम वि [आत्मतमस्] अज्ञानी, अजान। क्रोधी।

आयंदम वि [आत्मदम] आत्मा को शान्त रखनेवाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करनेवाला। अश्व आदि को संयत रहने को सिखानेवाला।

आयंप पुं [आकम्प] काँपना, हिलना। कँपानेवाला।

आयंब अक [वेप्] काँपना, हिलना।

आयंब, आयंबिर } वि [आताम्र] थोड़ा लाल।

आयंबिल न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आम्बिल। °वड्ढमाण न [°वर्धमान] तपश्चर्या-विशेष।

आयंबिलिय वि [आचाम्लिक] आम्बिल-तप का कर्त्ता।

आयंभर, आयंभरि } वि [आत्मम्भरि] स्वार्थी।

आयंव अक [आ + कम्प्] काँपना, हिलना।

आयंस पुं [आदर्श] दर्पण। बैल आदि के गले का भूषण-विशेष। °मुह पुं [°मुख] एक अन्तर्द्वीप। उसके निवासी मनुष्य।

आयक्ख देखो आइक्ख।

आयग वि [आजक] देखो आय = आज।

आयज्झ अक [वेप्] काँपना, हिलना।

आयट्ट सक [आ + वर्त्तय्] घुमाना। उबालना।

आयड्ढ सक [आ + कृष्] खींचना।

आयड्ढण न [आकर्षण] आकर्षण, खिंचाव।

आयड्ढि स्त्री [आकृष्टि] ऊपर देखो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयड्ढि पुं [दे] विस्तार ।
आयण्ण सक [आ + कर्णय्] सुनना ।
आययंत वकृ [आददत्] ग्रहण करता हुआ ।
आयत्त वि. अधीन, स्ववश ।
आयम सक [आ + चम्] आचमन करना, कुल्ला करना ।
आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच ।
आयमिअ देखो आगमिअ ।
आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष ।
आयय वि [आयत] लम्बा, विस्तृत । पुं. मोक्ष ।
आयय सक [आ + दद्] ग्रहण करना ।
आययण न [आयतन] प्रकटीकरण । उपादान कारण । घर । आश्रय, स्थान । देव-मन्दिर । धार्मिक जनों का एकत्र होने का स्थान । कर्म-बन्ध का कारण । निर्णय, निश्चय । निर्दोष स्थान ।
आयर सक [आ + चर्] आचरना, करना ।
आयर पुं [आकर] खानि, खान । समूह ।
आयर देखो आयार = आचार ।
आयर पुं [आदर] सत्कार, सम्मान । परिग्रह, असन्तोष । ख्याल, संभाल ।
आयरंग पुं [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा ।
आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान ।
आयरणा स्त्री [आचरणा] परम्परा का रिवाज ।
आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान ।
आयरिय वि [आचरित] अनुष्ठित, विहित, कृत । न. शास्त्र-सम्मत चाल-चलन ।
आयरिय पुं [आचार्य] गण का नायक, मुखिया । उपदेशक, गुरू, शिक्षक । अर्थ पढ़ाने वाला ।
आयरिस देखो आयंस ।
आयल्ल अक [लम्ब्] व्याप्त होना । लटकना ।
आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी । देखो आअल्ल ।
आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त, व्याप्त ।
आयव पुं [आतपवत्] अहोरात्र का २४वाँ मुहूर्त ।
आयव वि [आतप] उद्योत, प्रकाश । ताप, घाम । न. मुहूर्त-विशेष । °णाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद ।
आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता ।
आयवत्त पुं [आर्यावर्त्त] हिन्दुस्तान ।
आयवा स्त्री [आतपा] सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी । इस नाम का 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ।
आयस वि. लौह-निर्मित ।
आयसी स्त्री. लोहे का कोश ।
आया देखो आय = आत्मन् ।
आया सक [आ + या] आना, आगमन करना ।
आया सक [आ + दा] ग्रहण करना ।
आयाइ स्त्री [आजाति] उत्पत्ति, जन्म । जाति, प्रकार । आचार, आचरण । °ट्ठाण न [°स्थान] संसार, जगत् । 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम ।
आयाइ स्त्री [आयाति] आगमन । उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना । आयति, भविष्य काल ।
आयाण पुंन [आदान] ग्रहण, स्वीकार । इन्द्रिय । जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु । कारण, हेतु । आदि, प्रथम ।
आयाण न [आदान] संयम, चरित्र । वि. आदेय, उपादेय । °पय न [°पद] ग्रन्थ का प्रथम शब्द ।
आयाण न [आयान] आगमन । अश्व का एक आभरण-विशेष ।
आयाम सक [आ+यमय्] लम्बा करना ।
आयाम सक [आ + यम्] शुद्धि करना ।
आयाम सक [दा] देना, दान करना ।
आयाम पुं. लम्बाई, दैर्घ्य ।
आयाम पुं [दे] बल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयाम न [आचाम्ल] तपो-विशेष। आयम्बिल।

आयाम न [आचाम] अवस्रावण, चावल आदि का पानी।

आयामणया स्त्री [आयामनता] लम्बाई।

आयामि वि [आयामिन्] लम्बा।

आयामुही स्त्री [आयामुखी] इस नाम की एक नगरी।

आयाय वि [आयात] आया हुआ।

आयार सक [आ+कारय्] बुलाना, आह्वान करना।

आयार पुं [आकार] आकृति, रूप। इङ्गित, इशारा।

आयार पुं [आकार] 'अ' अक्षर।

आयार पुं [आचार] आचरण, अनुष्ठान। चाल-चलन, रीत-भात। बारह जैन अङ्गग्रन्थों में पहला ग्रन्थ। निपुण शिष्य। °क्खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद। °भंडग, °भंडय न [°भाण्डक] ज्ञानादि का उपकरण—साधन।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान।

आयारिय वि [आकारित] आहूत। न. आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन।

आयाव सक [आ+तापय्] सूर्य के ताप में शरीर को थोड़ा तपाना। शीत, आतप आदि को सहन करना।

आयाव पुं [आताप] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष।

आयाव पुं [आताप] आतप-नामकर्म।

आयावग वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला।

आयावण न [आतापन] एक बार या थोड़ा आतप आदि को सहन करना। °भूमि स्त्री. शीतादि सहन करने का स्थान।

आयावल, आयावलय } पुं [दे] सबेरे का तड़का, बालातप।

आयास सक [आ+यासय्] तकलीफ देना, खिन्न करना।

आयास पुं. तकलीफ, परिश्रम, खेद। परिग्रह, असन्तोष। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष।

आयास देखो आयंस।

आयास देखो आगास। °तिलय न [°तिलक] नगर-विशेष।

आयासइत्तिअ वि [आयासयितृ] तकलीफ देनेवाला।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रशाला, घर के ऊपर की खुली छत।

आयासतल न [दे] प्रासाद का पृष्ठ भाग।

आयासलव न [दे] नीड़।

आयाहम्म वि [आत्मघ्न] आत्मविनाशक। न. आधाकर्म दोष।

आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना। °पयाहिण वि [°प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होनेवाला। °पयाहिणा स्त्री [°प्रदक्षिणा] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा।

आयु देखो आउ = आयुष्।

आर पुं. इह-लोक, यह जन्म। मनुष्यलोक। नुकीली लोहे की कील। न. गृहस्थपन।

आर पुं. मंगल-ग्रह। चौथा नरक का एक नरकावास। वि. पूर्व का।

°आरअ वि [कारक] कर्ता।

आरओ अ [आरतस्] पूर्व, पहले। समीप में, शुरू करके, पीछे से।

आरंदर वि [दे] अनेकान्त। संकट, व्याप्त।

आरंभ सक [आ+रभ्] शुरू करना। हिंसा करना।

आरंभ पुं [आरम्भ] शुरूआत, प्रारम्भ। जीव-हिंसा, वध। जीव, प्राणी। पाप-कर्म। °य वि [°ज] पाप-कार्य से उत्पन्न। °विणय पुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°विनय] आरम्भ का अभाव। °विणइ वि [°विनयिन्] आरम्भ से विरत।

आरंभग } पुं [आरम्भक] ऊपर देखो।
आरंभय } वि. शुरू करनेवाला। हिंसक पाप-कर्म करनेवाला।

आरंभिअ पुं [दे] माली।

आरंभिया स्त्री [आरम्भिकी] हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाली क्रिया। हिंसक क्रिया से होनेवाला कर्म-बन्ध।

आरक्ख न [आरक्ष्य] कोतवाल का ओहदा, कोतवाली, आरक्षकता।

आरक्ख वि [आरक्ष] रक्षण करनेवाला। पुं. कोतवाल।

आरक्खग वि [आरक्षक] रक्षण करनेवाला। त्राता। पुं. क्षत्रियों का एक वंश। वि. उस वंश में उत्पन्न।

आरक्खि वि [आरक्षिन्] रक्षक, त्राता।

आरक्खिग } वि [आरक्षिक] रक्षक,
आरक्खिय } त्राता। पुं. कोतवाल।

आरज्झ सक [आ + राध्] आराधन करना।

आरज्झ वि [आराध्य] पूज्य, माननीय।

आरड सक [आ + रट्] चिल्लाना। रोना।

आरडिअ न [दे] विलाप, क्रन्दन। वि. चित्र-युक्त।

आरण पुं. देवलोक-विशेष। उस देवलोक का निवासी देव। पुंन. एक देवविमान।

आरण न [दे] होठ। फलक।

आरणाल न [आरनाल] कांजी, साबूदाना।

आरणाल न [दे] कमल।

आरण्ण वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी।

आरण्णग } वि [आरण्यक] जंगली, जंगल-
आरण्णय } निवासी, जंगल में उत्पन्न। न. शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष।

आरण्णिय वि [आरण्यिक] जंगल में बसनेवाला (तापस आदि)।

आरत वि. थोड़ा रक्त। अत्यन्त अनुरक्त।

आरत्तिय न [आरात्रिक] आरती।

आरद्ध वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ (काल)।

आरद्ध वि [दे] बढ़ा हुआ। सतृष्ण, उत्सुक। घर में आया हुआ।

आरब देखो आरव।

आरभ देखो आरंभ = आ + रभ्।

आरभड न [आरभट] नृत्य का एक भेद। इस नाम का एक मुहूर्त्त। एक तरह की नाट्यविधि। °भसोल न. नाट्यविधि-विशेष।

आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष।

आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि-विशेष।

आरय वि [आरत] उपरत। अपगत।

आरय वि [आऽरत] उपरत, सर्वथा निवृत्त।

आरव पुं. शब्द, आवाज, ध्वनि।

आरव पुं [आरब] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश। वि. अरब देश में उत्पन्न, अरब देश का निवासी।

आरविंद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी।

आरस सक [आ + रस्] चिल्लाना, बूम मारना।

आरसिय पुं [आदर्श] दर्पण।

आरह देखो आरभ।

आरहंत } वि [आर्हत] अर्हन् का, जिन-
आरहंतिय } देव सम्बन्धी।

आरा स्त्री. लोहे की सलाई, पैने में डाली जाती लोहे की खीली।

आरा अ [आरात्] अर्वाक्, पहले। पूर्व-भाग।

आराइअ वि [दे] गृहीत, स्वीकृत। प्राप्त।

आराडि स्त्री [आराटि] चीत्कार, चिल्लाहट।

आराडी स्त्री [दे] देखो आरडिअ।

आराम पुंन. बगीचा, उपवन।

आरामिअ पुं [आरामिक] माली।

आराव पुं [आराव] शब्द, आवाज।

आराह सक [आ + राधय्] सेवा करना, भक्ति करना। ठीक-ठीक पालन करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य ।

आराहग वि [आराधक] आराधन करने वाला । मोक्ष का साधक ।

आराहण न [आराधन] सेवना । अनशन ।

आराहणा स्त्री [आराधना] आवश्यक, सामयिक आदि षट्-कर्म ।

आराहणी स्त्री [आराधनी] भाषा का एक प्रकार ।

आराहिय वि [आराधित] सेवित, परिपालित । अनुरूप, योग्य ।

आरिट्ठ वि [दे] गत, गुजरा हुआ ।

आरिय न [आऋत] आगमन ।

आरिय देखो अज्ज = आर्य ।

आरिय वि [आरित] सेवित ।

आरिय वि [आकारित] आहूत ।

आरिया देखो अज्जा = आर्या ।

आरिल्ल वि [दे] पहले जो उत्पन्न हुआ हो ।

आरिस वि [आर्ष] ऋषि-सम्बन्धी ।

आरिहय देखो आरहंत ।

आरुग्ग देखो आरोग्ग = आरोग्य ।

आरुट्ठ वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, रुष्ट ।

आरुण्ण (अप) सक [आ + श्लिष्] आलिङ्गन करना ।

आरुभ देखो आरुह = आ + रुह् ।

आरुवणा देखो आरोवणा ।

आरुस सक [आ + रुष्] क्रोध करना, रोष करना ।

आरुह सक [आ + रुह्] ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना ।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात ।

आरुहण न [आरोहण] आरोपण, ऊपर चढ़ाना ।

आरुहिय वि [आरोपित] स्थापित । ऊपर बैठाया हुआ ।

आरुहिय } वि [आरूढ] ऊपर चढ़ा हुआ ।
आरूढ } कृत, विहित ।

आरेइअ वि [दे] मुकुलित, संकुचित । भ्रान्त । मुक्त । रोमाञ्चित ।

आरेण अ. समीप । पहले । प्रारम्भ कर ।

आरोअ अक [उत् + लस्] विकसित होना, उल्लास पाना ।

आरोअणा देखो आरोवणा ।

आरोइअ [दे] देखो आरेइअ ।

आरोग्ग सक [दे] भोजन करना ।

आरोग्ग न [आरोग्य] एकासन तप ।

आरोग्ग न [आरोग्य] नीरोगता । वि. रोग-रहित । पुं. एक ब्राह्मणोपासक का नाम ।

आरोग्गरिअ वि [दे] रँगा हुआ ।

आरोद्ध वि [दे] प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ । गृहागत ।

आरोय न [आरोग्य] क्षेम, कुशल । नीरोगता ।

आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना ।

आरोव सक [आ + रोपय्] ऊपर चढ़ाना, ऊपर बैठाना । स्थापन करना ।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढ़ाना । सम्भावना ।

आरोवणा स्त्री [आरोपणा] ऊपर चढ़ाना । प्रायश्चित्त-विशेष । प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार । प्रश्न, पर्यनुयोग ।

आरोस पुं [आरोष] म्लेच्छ देश-विशेष । वि. उस देश का निवासी ।

आरोसिअ वि [आरोषित] कोपित, रुष्ट किया हुआ ।

आरोह सक[आ + रुह्]ऊपर चढ़ना, बैठना ।

आरोह सक [आ + रोहय्] ऊपर चढ़ाना ।

आरोह पुं. सवार । हाथी, घोड़ा आदि पर चढ़नेवाला । ऊँचाई । लम्बाई ।

आरोह पुं [दे] स्तन, थन, चूँची ।

आरोहग वि [आरोहक] सवार होनेवाला । हाथी का रक्षक ।

आल न [दे] अनर्थक ।

आल न [दे]छोटा प्रवाह । वि. मृदु । आगत ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आल न. दोषारोपण।
°आल देखो काल।
°आल देखो जाल।
°आल देखो ताल।
आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान में रखा हुआ।
आलइअ वि [आलयिक] गृही, आश्रयवाला।
आलइय वि [आलगित] पहना हुआ।
आलंकारिय वि [आलङ्कारिक] अलंकार-शास्त्र-ज्ञाता। अलंकार-सम्बन्धी। अलंकार के योग्य।
आलंकिअ वि [दे] पंगु किया हुआ।
आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतने से लेकर पाँच अहोरात्र तक का काल।
आलंदिअ वि [आलन्दिक] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करनेवाला।
आलंब सक [आ + लम्ब्] आश्रय करना, सहारा लेना।
आलंब न [दे] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है।
आलंबण न [आलम्बन] आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह। कारण, हेतु, प्रयोजन।
आलंभिय न [आलम्भिक] नगर-विशेष। भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देश।
आलंभिया स्त्री [आलम्भिका] नगरी-विशेष।
आलक्क पुं [दे] पागल कुत्ता।
आलक्ख सक [आ+लक्षय्] जानना। चिह्न से पहिचानना।
आलग्ग वि [आलग्न] लगा हुआ, संयुक्त।
आलत्त वि [आलपित] सम्भाषित, आभाषित।
आलत्तय देखो अलत्त।
आलत्थ पुं [दे] मोर।
आलद्ध वि [आलब्ध] संसृष्ट। संयुक्त। स्पृष्ट, छुआ हुआ। मारा हुआ।
आलप्प वि [आलाप्य] कहने के योग्य, निर्वचनीय।
आलभ सक [आ + लभ्] प्राप्त करना।
आलभण न [आलभन] विनाशन।
आलभिया स्त्री [आलभिका] नगरी-विशेष।
आलय पुंन. घर, स्थान।
आलय पुंन. बौद्धदर्शन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष।
आलयण न [दे] शय्या-गृह।
आलव सक [आ + लप्] कहना, बातचीत करना। थोड़ा या एक बार कहना।
आलवाल न. कियारी, थाँवला।
आलस वि. आलसी, सुस्त। °त्त न [°त्व] आलस, सुस्ती।
आलसिय वि [आलसित] आलसी, मन्द।
आलसुय देखो आलसिय।
आलस्स पुंन [आलस्य] सुस्ती।
आलाअ देखो आलाव।
आलाण देखो आथाल।
आलाणिय वि [आलानित] नियन्त्रित, मजबूती से बाँधा हुआ।
आलाव पुं [आलाप] सम्भाषण, बातचीत। अल्प भाषण। प्रथम भाषण। एक बार की उक्ति।
आलावक देखो आलावग।
आलावग पुं [आलापक] परिच्छेद, ग्रन्थ का अंश-विशेष।
आलावण न [आलापन] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष।
आलावणी स्त्री [आलापनी] वाद्यविशेष।
आलास पुं [दे] बिच्छू।
आलाहि देखो अलाहि।
आलि पुं [अलि] भ्रमर।
आलि देखो आली।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलिंग सक [आ + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना।

आलिंग पुं [आलिङ्ग] वाद्य-विशेष।

आलिंग वि [आलिङ्ग्य] आलिङ्गन करने योग्य। पुं. वाद्य-विशेष।

आलिंगण न [आलिङ्गन] आलिंगन, भेंट। °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] गाल या कपोल का उपधान—तकिया, शरीर-प्रमाण उपधान।

आलिंगणिया स्त्री [आलिङ्गनिका] देखो आलिंगणवट्टि।

आलिंगिणी स्त्री [आलिङ्गिनी] जानु आदि के नीचे रखने का तकिया।

आलिंद पुं [आलिन्द] बाहर के दरवाजे के चौकट्ठे का एक हिस्सा।

आलिंप सक [आ + लिप्] पोतना, लेप करना।

आलिंपण न [आलेपण] लेप करना, विलेपन। जिसका लेप होता है वह चीज।

आलिगा देखो आवलिआ।

आलित्त न [आलित्र] जहाज चलाने का काष्ठ-विशेष।

आलित्त वि [आलिप्त] खरण्टित, खरड़ा हुआ। लिपा हुआ।

आलित्त वि [आदीप्त] चारों ओर से जला हुआ। न. आग लगनी, आग से जलना।

आलिद्ध वि [आश्लिष्ट] आलिंगित।

आलिद्ध वि [आलीढ] आस्वादित।

आलिसंदग पुं [दे. आलिसन्दक] धान्य-विशेष।

आलिसिंदय पुं[दे.आलिसिन्दक] ऊपर देखो।

आलिह सक [स्पृश्] छूना।

आलिह सक [आ + लिख्] विन्यास करना, स्थापन करना। चित्र करना, चितरना या चित्र बनाना।

आली सक [आ + ली] लीन होना, आसक्त होना। आलिंगन करना। निवास करना।

आली स्त्री. पंक्ति, श्रेणी। सखी। वनस्पति-विशेष।

आलीढ वि [आलीढ] आसक्त। न. आसन-विशेष।

आलीढ पुंन. योद्धा का युद्ध समय का आसन-विशेष।

आलीण वि [आलीन] लीन, आसक्त, तत्पर। आलिंगित, आश्लिष्ट।

आलीयग वि [आदीपक] जलानेवाला, आग सुलगानेवाला।

आलील न [दे] समीप का भय।

आलीवग देखो आलीयग।

आलीवण न [आदीपन] आग लगाना।

आलीविय वि [आदीपित] आग से जलाया हुआ।

आलु पुंन. कन्द-विशेष।

आलुई स्त्री [आलुकी] वल्ली-विशेष।

आलुंख सक [दह्] जलाना, दाह देना।

आलुंख सक [स्पृश्] छूना।

आलुंघ सक [स्पृश्] छूना।

आलुंप सक [आ + लुम्प्] हरण करना।

आलुंप वि. अपहारक।

आलुगा स्त्री [दे] घटी, छोटा घड़ा।

आलुयार वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ।

आलेक्ख, आलेक्खिय } वि [आलेख्य] चित्रित।

आलेट्ठुं, आलेट्ठुअं } आसिलिस का हेकृ.।

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप।

आलेसिय वि [आश्लेषित] आलिंगन कराया हुआ।

आलेह पुं [आलेख] चित्र।

आलोअ सक [आ + लोक्] देखना, विलोकन करना।

आलोअ सक [आ + लोच्] देखाना। गुरू को अपना अपराध कह देना। विचार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना। आलोचना करना।

आलोअ पुं [आलोक] तेज, प्रकाश। विलोकन, अच्छी तरह देखना। पृथ्वी का समान-भाग। गवाक्षादि प्रकाशस्थान। जगत्, संसार। ज्ञान।

आलोअग } वि [आलोचक] आलोचना
आलोअय } करनेवाला।

आलोअण न [आलोकन] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण।

आलोअणा स्त्री [आलोचना] देखना, बतलाना। प्रायश्चित्त के लिए अपने दोषों को गुरू को बता देना। विचार करना।

आलोइत्तु वि [आलोकयितृ] देखने वाला, द्रष्टा।

आलोइल्ल वि [आलोकवत्] प्रकाश-युक्त।

आलोग देखो आलोअ = आलोक। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष।

आलोच देखो आलोअ = आ + लोच्।

आलोड सक [आ + लोडय्] हिलोरना, मन्थन करना।

आलोयण न [आलोकन] गवाक्ष।

आलोल सक. देखो आलोड।

आलोव सक [आ + लोपय्] आच्छादित करना।

आलोव देखो आलोअ = आलोक।

आव वि [यावत्] जितना।

आव अ [यावत्] जब तक, जब लग। °कह वि [°कथ] देखो °कहिय। °कहं अ [°कथम्] यावज्जीव। °कहा स्त्री [°कथा] जीवन-पर्यन्त। °कहिय वि [°कथिक] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहनेवाला।

आव पुं [आप] प्राप्ति, लाभ। जल का समूह। °बहुल न. देखो आउ-बहुल।

आव सक [आ + या] आना, आगमन करना।

आवआस सक [उप + गूह्] आलिंगन करना।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति।

आवंग पुं [दे] अपामार्ग, वृक्ष-विशेष, लटजीरा।

आवंडु वि [आपाण्डु] थोड़ा सफेद, फीका।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो।

आवंत देखो जावंत।

आवग्गण न [आवलगन] अश्व पर चढ़ने की कला।

आवच्चेज्ज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय।

आवज्ज देखो आओज्ज।

आवज्ज अक [अ + पद्] प्राप्त होना, लागू होना।

आवज्ज सक [आ + वर्ज्] सम्मुख करना। प्रसन्न करना।

आवज्ज सक [आ + पद्] प्राप्त करना।

आवज्ज वि [आवर्ज] प्रीत्युत्पादक।

आवज्जण न [आवर्जन] सम्मुख करना। प्रसन्न करना। उपयोग, ख्याल। उपयोग-विशेष। व्यापार-विशेष।

आवज्जिय वि [आवर्जित] प्रसन्न किया हुआ। अभिमुख किया हुआ। °करण न. व्यापार-विशेष।

आवज्जिय देखो आउज्जिय = आतोद्यिक।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका में कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार।

आवट्ट अक [आ + वृत्] चक्र की तरह घूमना, फिरना। विलीन होना। सक. शोषण करना, सुखाना। पीड़ना, दुःखी करना।

आवट्ट देखो आवत्त।

आवट्टिआ स्त्री [दे] नवोढ़ा। परतन्त्र स्त्री।

आवड देखो आवत्त = आवर्त्त।

आवड सक [आ + पत्] पास में आना, आगमन करना। आ लगना। गिरना।

आवणवीहि स्त्री [आपणवीथि] हट्ट-मार्ग, बाजार। रथ्या-विशेष, एक तरह का मुहल्ला।

आवडिअ वि [दे] संगत, सम्बद्ध। सार,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मजबूत ।
आवण पुं [आपण] हाट । बाजार ।
आवणिय पुं [आपणिक] सौदागर, व्यापारी ।
आवण्ण वि [आपन्न] आपत्ति-युक्त । प्राप्त । °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] गर्भवती स्त्री ।
आवण्ण वि [आपन्न] आश्रित ।
आवत्त सक [आ + वृत्] आना ।
आवत्त अक [आ + वृत्] परिभ्रमण करना । बदलना । चक्राकार घूमना । सक. पठित पाठ को याद करना । घुमाना ।
आवत्त पुं [आवर्त्त] चक्राकार परिभ्रमण । मुहूर्त्त-विशेष । महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम । एक खुरवाला पशु-विशेष । एक लोकपाल का नाम । पर्वतविशेष । मणि का एक लक्षण । ग्राम-विशेष । शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष । °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष । °यंत वकृ [°यमान] दक्षिण की तरफ चक्राकार घूमनेवाला ।
आवत्त पुंन [आवर्त्त] एक तरह का जहाज । न. लगातार २५ दिनों का उपवास ।
आवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता ।
आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण । °पेढ़िया स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष ।
आवत्तय पुं [आवर्त्तक] देखो आवत्त । वि. चक्राकार भ्रमण करनेवाला ।
आवत्ता स्त्री [आवर्त्ता] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम ।
आवत्ति स्त्री [आपत्ति] दोष-प्रसंग । कष्ट । उत्पत्ति ।
आवत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति ।
आवदि स्त्री [आवृत्ति] आवरण ।
आवय पुं [आवर्त] देखो आवत्त ।
आवय देखो आवड ।
आवया स्त्री [आपगा] नदी ।
आवया स्त्री [आपद्] विपद्, दुःख ।
आवर सक [आ + वृ] आच्छादन करना ।
आवरण न. ढकनेवाला, तिरोहित करनेवाला । वास्तु-विद्या ।
आवरिसण न [आवर्षण] सिंचन । सुगन्ध जल की वृष्टि ।
आवरेइया स्त्री [दे] करिका, मद्य परोसने का पात्र-विशेष ।
आवलण न [आवलन] मोड़ना ।
आवलि स्त्री. पङ्क्ति । पुं. एक विद्यार्थी का नाम ।
आवलिआ स्त्री [आवलिका] श्रेणी । परिपाटी । समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण । °पविट्ठ वि [°प्रविष्ट] श्रेणी से व्यवस्थित । °बाहिर वि [बाह्य] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ ।
आवलिय वि [आवलित] वेष्टित ।
आवली स्त्री. पंक्ति । रावण की एक कन्या का नाम ।
आवस सक [आ + वस्] रहना, वास करना ।
आवसह पुं [आवसथ] घर, आश्रय, स्थान । मठ, संन्यासियों का स्थान ।
आवसहिय पुं [आवसथिक] गृहस्थ, गृही । संन्यासी ।
आवसिय, आवस्सग, आवस्सय वि [आवश्यक] अवश्य-कर्त्तव्य, जरूरी । न. सामयिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म । जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र । °णुओग पुं [°ानुयोग] आवश्यक सूत्र की व्याख्या ।
आवस्सय पुंन [आपाश्रय] ऊपर देखो । आश्रय ।
आवस्सिया स्त्री [आवश्यकी] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष ।
आवह सक [आ + वह्] धारण करना, वहन करना ।
आवह वि. धारण करनेवाला ।
आवा सक [आ + पा] पीना । भोग में लाना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपभोग करना ।

आवाइया स्त्री [आवापिका] प्रधान होम ।

आवाग पुं [आपाक] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान ।

आवाड पुं [आपात] भीलों की एक जाति ।

आवाणय न [आपाणक] दूकान ।

आवाय पुंन [आपात] अभ्यागम, आगमन ।

आवाय देखो आवाग ।

आवाय पुं [आपात] प्रारम्भ । प्रथम मिलन । तुरन्त । पतन । सम्बन्ध, संयोग ।

आवाय पुं [आवाप] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान । आलवाल । प्रक्षेप, फेंकना । शत्रु की चिन्ता । बोना, वपन ।

आवायण न [आपादन] सम्पादन ।

आवाल देखो आलवाल ।

आवाल } न [दे] जल के निकट का
आवालय } प्रदेश ।

आवाव देखो आवाय = आवाप । °कहा स्त्री [°कथा] रसोई सम्बन्धी कथा, वि. कथा-विशेष ।

आवास पुं. वास-स्थान । निवास, अवस्थान, रहना । नीड । पड़ाव । °पव्वय पुं [°पर्वत] रहने का पर्वत ।

आवास } देखो आवस्सय = आवश्यक ।
आवासग }

आवासणिया स्त्री [आवासनिका] आवास-स्थान ।

आवासय न [आवासक] आवश्यक, जरूरी । नित्य-कर्तव्य धर्मानुष्ठान । पुं. नीड़ । वि. संस्काराधायक, वासक । आच्छादक ।

आवाह सक [आ + वाहय्] सान्निध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना । बुलाना ।

आवाह पुं [आबाध] पीड़ा, बाधा ।

आवाह पुं. नव-परिणीता वधू को वर के घर लाना । विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव ।

आवाहण न [आवाहन] आह्वान ।

आवाहिय वि [आवाहित] बुलाया हुआ, आहूत । मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु ।

आवि न [दे]प्रसव-पीड़ा । वि. नित्य, शाश्वत । दृष्ट ।

आवि अ [चापि] समुच्चय-द्योतक अव्यय ।

आवि अ [आविस्] प्रकटता-सूचक अव्यय ।

आविअ सक [आ + पा] पीना ।

आविअ वि [आवृत्त] आच्छादित ।

आविअ पुं [दे] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष । वि. मथित, आलोडित । प्रोत ।

आविअ वि [आविन्ध] अविन्ध-देशोत्पन्न ।

आविअज्झा स्त्री [दे] दुलहिन । पराधीन स्त्री ।

आविध सक [आ + व्यध्] विंधना । पहनना । मन्त्र से अधीन करना ।

आविकम्म पुंन [आविष्कर्मन्] प्रकटरूप से किया हुआ काम ।

आविग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, उदासीन ।

आविट्ठ वि [आविष्ट] आवृत, व्याप्त । प्रविष्ट । अधिष्ठित, आश्रित । भूत आदि के उपद्रव से युक्त ।

आविद्ध वि [आविद्ध] परिहित, पहना हुआ ।

आविद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित ।

आविब्भाव पुं [आविर्भाव] उत्पत्ति । प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति ।

आविब्भूय वि [आविर्भूत] उत्पन्न । प्रादुर्भूत । अभिव्यक्त ।

आविल वि. मलिन, अस्वच्छ । आकुल, व्याप्त ।

आविलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध ।

आविलुंपिअ वि [आकाङ्क्षित] अभिलषित ।

आविस सक[आ + विश्]प्रवेश करना, घुसना ।

आविस अक [आ + विश्] सम्बद्ध होना, युक्त होना । सक. उपभोग करना, सेवना ।

आविहव अक [आविर् + भू] प्रकट होना । उत्पन्न होना ।

आविहूअ देखो आविब्भूय ।

आवी देखो आवि = आविस्। °कम्म देखो आविकम्म।
आवीअ वि [आपीत] पीत। शोषित।
आवीइ वि [आवीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न। °मरण न. मरण-विशेष।
आवीकम्म न [आविष्कर्मन्] उत्पत्ति। अभिव्यक्ति।
आवीड सक [आ + पीड्] पीड़ना। दबाना।
आवीण न [आपीन] स्तन।
आवील देखो आमेल = आपीड।
आवील देखो आवीड।
आवीलण न [आपीडन] समूह, निचय।
आवुअ पुं [आवुक] नाटक की भाषा में पिता।
आवुण्ण वि [आपूर्ण] भरपूर।
आवुत्त पुं [दे] भगिनी-पति।
आवुद वि [आवृत] ढका हुआ।
आवुदि स्त्री [आवृति] आवरण।
आवूर देखो आपूर = आ + पूरय्।
आवेअ सक [आ + वेदय्] विनति करना, निवेदन करना। बतलाना।
आवेअ पुं [आवेग] कष्ट, दुःख।
आवेउं (आवा का हेक्.)।
आवेड्ढिय वि [आवेष्टित] वेष्टित, घिरा हुआ।
आवेड देखो आमेल।
आवेढ पुं [आवेष्ट] वेष्टन। मण्डलाकार करना।
आवेयण न [आवेदन] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाश-करण।
आवेवअ वि [दे] विशेष आसक्त। प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ।
आवेस सक [आ + वेशय्] भूताविष्ट करना।
आवेस पुं [आवेश] अभिनिवेश। जोश। भूत-ग्रह। प्रवेश।
आवेसण न [आवेशन] शून्य-गृह।
आस देखो अस्स = अस्त्र।

आस अक [आस्] बैठना।
आस पुं [अश्व] अश्व। अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव। अश्विनी नक्षत्र। मन, चित्त। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। उसका निवासी। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव। °तर पुं. खच्चर। °त्थाम पुं [°स्थामन्] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र। °द्धअ पुं [°ध्वज] विद्याधर वंश का एक राजा। °धम्म पुं [°धर्म] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °धर वि. अश्वों को धारण करनेवाला। °पुर न. नगर-विशेष। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष। °मक्खिया स्त्री [°मक्षिका] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष। °मद्दग, °मद्दय पुं [°मर्दक] अश्व का मर्दन करनेवाला। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने सामुच्छेदिक पन्थ चलाया था। °मुह पुं [°मुख] एक अन्तर्द्वीप। उसका निवासी। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष। °रह पुं [°रथ] घोड़ा-गाड़ी। °वार पुं. घुड़-सवार। °वाहणिया स्त्री [°वाहनिका] घोड़े की सवारी। °सेण पुं [°सेन] भगवान् पार्श्वनाथ के पिता। पाँचवें चक्रवर्ती का पिता। °रोह पुं [°रोह] घुड़-सवार।
आस पुंस्त्री [आश] भोजन।
आस पुं. फेंकना।
आस न [आस्य] मुख।
आसइ वि [आश्रयिन्] आश्रय-स्थित।
आसंक सक [आ + शङ्क्] सन्देह करना। अक. भयभीत होना।
आसंका स्त्री [आशङ्का] भय, वहम, संशय। सम्भावना।
आसंग पुं [दे] शय्या-गृह।
आसंग पुं [आसङ्ग] आसक्ति, अभिष्वंग। सम्बन्ध। रोग।
आसंघ सक [सं + भावय्] सम्भावना करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्यवसाय करना। स्थिर करना, निश्चय करना।

आसंघ पुं [दे] श्रद्धा, विश्वास। अध्यवसाय, परिणाम। आशंसा, इच्छा।

आसंघा स्त्री [दे] इच्छा। आसक्ति।

आसंघिअ वि [दे] अध्यवसित। अवधारित। सम्भावित।

आसंजिअ वि [आसक्त] पीछे लगा हुआ।

आसंदय न [आसन्दक] आसन-विशेष। पुंन. मञ्च।

आसंदाण न [आसन्दान] अवष्टम्भन, अवरोध।

आसंदिआ स्त्री [आसन्दिका] छोटा मञ्च।

आसंदी स्त्री [आसन्दी] आसन-विशेष, मञ्च।

आसंधी स्त्री [अश्वगन्धी] वनस्पति-विशेष।

आसंबर वि [आशाम्बर] दिगम्बर। जैन का एक मुख्य भेद। उसका अनुयायी।

आसंसइय वि [असंशयित] संशय-रहित।

आसंस न [आशंस्] इच्छा करना, अभिलाषा करना।

आसक्खय पुं [दे] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद।

आसग देखो आस = अश्व।

आसगलिअ वि [दे] आक्रान्त। प्राप्त।

आसज्ज अ [आसाद्य] प्राप्त करके।

आसड पुं. विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार।

आसण न [आसन] जिसपर बैठा जाता है वह चौकी आदि। स्थान, जगह। शय्या। बैठना। उपवेशन।

आसणिय वि [आसनित] आसन पर बैठाया हुआ।

आसण्ण न [आसन्न] समीप, वि. समीपस्थ। °वत्ति वि [°वर्तिन्] नजदीक में रहनेवाला।

आसत्त वि [आसक्त] लीन, तत्पर। नीचे लगा हुआ। पुं. नपुंसक का एक भेद, वीर्यपात होने पर भी स्त्री का आलिंगन कर उसके कक्षादि अंगों में जुड़कर सोनेवाला नपुंसक।

आसत्ति स्त्री [आसक्ति] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता।

आसत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़।

आसत्थ वि [आश्वस्त] आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ। विश्रान्त।

आसम पुं [आश्रम] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और भैक्ष्य (संन्यास) ये चार प्रकार की अवस्था।

आसमपय न [आश्रमपद] तापसों के आश्रम से उपलक्षित स्थान।

आसमि वि [आश्रमिन्] आश्रम में रहनेवाला, ऋषि, मुनि वगैरह।

आसय अक [आस्] बैठना।

आसय सक [आ + श्री] आश्रय करना, अवलम्बन करना। ग्रहण करना।

आसय पुं [आशक] खानेवाला।

आसय पुं [आश्रय] अवलम्बन।

आसय पुं [आशय] मन, चित्त, हृदय। अभिप्राय।

आसय न [दे] समीप।

आसरिअ वि [दे] सम्मुख-आगत।

आसव अक [आ + स्रु] धीरे-धीरे झरना, टपकना।

आसव सक [आ + स्रु] आना।

आसव पुं [आश्रव] सूक्ष्म छिद्र। कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्मबन्ध होता है वह हिंसा आदि। वि. श्रोता, गुरु-वचन को सुननेवाला। °सक्कि वि [°सक्तिन्] हिंसादि में आसक्त।

आसव पुं. दारू।

आसवण न [दे] शय्या-घर।

आसवाहिया स्त्री [अश्ववाहिका] अश्व-क्रीडा।

आसस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना, विश्राम लेना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा।
आससा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा।
आसा स्त्री [आशा] उम्मीद। दिशा। उत्तर रुचक पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष।
आसाअ सक [आ+सादय्] स्पर्श करना।
आसाअ सक [आ+स्वाद्] चखना।
आसाअ सक [आ+सादय्] प्राप्त करना।
आसाअ सक [आ+शातय्] अवज्ञा करना, अपमान करना।
आसाअ पुं [आस्वाद] स्वाद, रस। तृप्ति।
आसाअ पुं [आऽस्वाद] स्वाद का बिलकुल अभाव।
आसाअ देखो **आसय**=आश्रय।
आसाअ पुं [आसाद] प्राप्ति।
आसाढ पुं [आषाढ] आषाढ़ मास। एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था। °भूइ पुं [°भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि।
आसाढा स्त्री [आषाढा] नक्षत्र-विशेष।
आसाढी स्त्री [आषाढी] आषाढ़ मास की पूर्णिमा। आषाढ़ मास की अमावस।
आसादेत्तु वि [आस्वादयितृ] आस्वादन करनेवाला।
आसामर पुं [आशामर] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम।
आसायण न [आशातन] नीचे देखो। अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन।
आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्त्तन, अपमान, तिरस्कार।
आसार सक [आ+सारय्] तन्दुरस्त करना, वीणा को ठीक करना।
आसार पुं. समीकरण, वीणा को ठीक करना। वेग से पानी का बरसना।
आसालिय पुंस्त्री [आशालिक] सर्प की एक जाति। स्त्री. विद्याविशेष।
आसावल्ली स्त्री [आशापल्ली] एक नगरी।
आसावि वि [आस्राविन्] झरनेवाला, सच्छिद्र।
आसास सक [आ+शास्] आशा करना।
आसास अक [आ+श्वासय्] सान्त्वना करना।
आसास पुं [आश्वास] आश्वासन। विश्राम। द्वीप-विशेष।
आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय। वि. आश्वासन देनेवाला।
आसासग पुं [आशासक] बीजक-नामक वृक्ष।
आसासण न [आश्वासन] सान्त्वना। ग्रहों के देव-विशेष। एक महाग्रह। वि. आश्वासन-दाता।
आसि सक [आ+श्रि] आश्रय करना।
आसि वि [आशिन्] खानेवाला, भोजक।
आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक।
आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ। भोजित।
आसिअ वि [आसित] उपविष्ट, बैठा हुआ। रहा हुआ, स्थित।
आसिअ देखो **आसित्त**।
आसिअअ वि [दे] लोह-निर्मित।
आसिआ देखो [आसिका] बैठना, उपवेशन।
आसिआ देखो **आसी**=आशिष्।
आसिच सक [आ+सिच्] सींचना।
आसिण वि [आशिन्] खानेवाला, भोक्ता।
आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास।
आसित्त वि [आसिक्त] थोड़ा सिक्त। सींचा हुआ। पुं. नपुंसक का एक भेद।
आसित्तिया स्त्री [दे] खाद्य-विशेष।
आसियावाय देखो **आसीवाय**।
आसिल पुं एक महर्षि।
आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित।
आसिलिस सक [आ+श्लिष्] आलिंगन करना।
आसिसा देखो **आसी**=आशिष्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसी स्त्री [आशी] दाढ़ा। °विस पुं [°विष] जहरीला साँप। पर्वत-विशेष का एक शिखर। निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि-विशेष को प्राप्त।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद। °वयण न [°वचन] आशीर्वाद। °वाय पुं [°वाद] आशीर्वाद।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ।

आसीवअ पुं [दे] दरजी।

आसीसा देखो आसी = आशिष्।

आसु पुंन [अश्रु] आँसू।

आसु } अ [आशु] शीघ्र। °क्कार पुं
आसुं } [°कार] हिंसा, मारना। मरने का कारण। शीघ्र उपस्थित। °पण्ण वि [°प्रज्ञ] शीघ्र-बुद्धि। दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी।

आसुर वि. असुर-सम्बन्धी।

आसुरत्त न [आसुरत्व] गुस्सा।

आसुरिय पुं [आसुरिक] असुर, असुर रूप से उत्पन्न। वि. असुर-सम्बन्धी।

आसुरीय पुं [असुरीय] असुर-सम्बन्धी।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] शीघ्र-क्रुद्ध। अति कुपित।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति-कुपित।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित।

आसूणि न [आशूनिन्] बलिष्ठ-बनानेवाली खुराक। रसायन-क्रिया।

आसूणी स्त्री [आशूनी] प्रशंसा।

आसूणिय वि [आशूनित] थोड़ा स्थूल किया हुआ।

आसूय न [दे] मनौती।

आसेअणय वि [आसेचनक] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह।

आसेव सक [आ + सेव्] सेवना। पालना। आचरना।

आसेवण न [आसेवन] परिपालन, संरक्षण। आचरण। मैथुन।

आसेवणया } स्त्री [आसेवना] परिपालन,
आसेवणा } विपरीत आचरण। अभ्यास। शिक्षा का एक भेद।

आसेविय वि [आसेवित] परिपालित। अभ्यस्त। आचरित। अनुष्ठित।

आसोअ पुं [अश्वयुक्] आश्विन मास।

आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष-सम्बन्धी।

आसोइया स्त्री [दे. आसोतिका] ओषधि-विशेष।

आसोई } स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास
आसोया } की पूर्णिमा। आश्विन मास की अमावस।

आसोकंता स्त्री [आशोकान्ता] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना।

आसोत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़।

आह सक [ब्रूज्] कहना।

आह सक [काङ्क्ष] इच्छा करना।

आहंडल देखो आखंडल।

आहच्च न [दे] अत्यर्थ, बहुत। अ. शीघ्र। कदाचित्। उपस्थित होकर। व्यवस्था कर। विभक्त कर। छीन कर। अन्यथा। निष्कारण। °भाव पुं. कादाचित्कता।

आहच्चा स्त्री [आहत्या] प्रहार।

आहट्ट न [दे] देखो आहट्टु = दे।

आहट्टु स्त्री [दे] पहेलियाँ।

आहड [आहृत] छीन लिया हुआ। चोरी किया हुआ। सामने लाया हुआ, उपस्थापित।

आहड न [दे] सुरत-शब्द।

आहण सक [आ + हन्] आघात करना, मारना।

आहण सक [आ + हन्] उठाना।

आहत्तहीय न [याथातथ्य] वास्तविकता। तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि। 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन।

आहम्म सक [आ + हम्म्] आगमन करना।

आहम्मिअ वि [अधार्मिक] अधर्म सम्बन्धी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी।
आहय वि [आहत] आघात प्राप्त, प्रेरित।
आहय वि [आहृत] आकृष्ट, खींचा हुआ। छीना हुआ।
आहर सक [आ + हृ] छीनना। चोरी करना। खाना।
आहर सक [आ + हृ] लाना।
आहरण पुंन [आहरण] दृष्टान्त। आह्वान। स्वीकार। व्यवस्थापन। आनयन।
आहरण पुंन [आभरण] अलंकार।
आहरणा स्त्री [दे] नाक का खरखर शब्द।
आहरिसिय वि [आधर्षित] तिरस्कृत।
आहल्ल (अप) अक [आ + चल्] हिलना, चलना।
आहल्ला स्त्री [आहल्या] विद्याधर-राज की एक कन्या।
आहव सक [आ + ह्वे] बुलाना।
आहव पुं. युद्ध।
आहवण } न [आह्वान] बुलाना।
आहव्वण } ललकारना।
आहव्व वि [आभाव्य] शास्त्रोक्त क्षेत्रादि।
आहव्वणी स्त्री [आह्वानी] विद्या-विशेष।
आहा सक [आ + ख्या] कहना।
आहा सक [आ + धा] स्थापन करना।
आहा स्त्री [आभा] तेज।
आहा स्त्री [आधा] आश्रय। साधु के निमित्त आहार के लिए मनः-प्रणिधान। °कड वि [°कृत] आधा-कर्म-दोष से युक्त। °कम्म न [°कर्मन्] साधु के लिए आहार पकाना। साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है। °कम्मिय वि [°कर्मिक] देखो पूर्वोक्त अर्थ।
आहाण न [आधान] स्थापन। स्थान, आश्रय।
आहाण न [आख्यान] उक्ति। किंवदन्ती, कहावत।
आहातहिय वि [याथातथ्य] सत्य, वास्तविक।
आहार सक [आ + हारय्] खाना।
आहार पुं. खुराक। भक्षण। न. देखो आहारग। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] भुक्त आहार को खल और रस के रूप में बदलने की शक्ति। °पोसह पुं [°पोषध] व्रत-विशेष, जिसमें आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग किया जाता है। °सण्णा स्त्री [°संज्ञा] आहार करने की इच्छा।
आहार पुं [आधार] आश्रय, अधिकरण। आकाश। अवधारण, याद रखना।
आहारग न [आहारक] शरीर-विशेष, जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है। वि. भोजन करनेवाला। आहारक-शरीर-वाला। आहारक-शरीर-उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह। °जुगल न [°युगल] आहारक शरीर और उसके अंगोपाङ्ग। °णाम न [°नामन्] आहारक शरीर का हेतु-भूत कर्म। °दुग न [°द्विक] देखो °जुगल।
आहारण वि. [आधारण] धारण करनेवाला। आधार-भूत।
आहारण वि. आकर्षक।
आहारय देखो आहारग।
आहाराइणिया स्त्री [याथारात्निकता] यथा-ज्येष्ठ, ज्येष्ठानुक्रम।
आहारिम वि [आहार्य] खाने योग्य। जल के साथ खाया जा सके ऐसा योग्य चूर्ण-विशेष।
आहावणा स्त्री [आभावना] गणना का अभाव। उद्देश्य।
आहाविअ वि [आधावित] दौड़ा हुआ।
आहाविर वि [आधावितृ] दौड़नेवाला।
आहास देखो आभास = आ + भाष्।
आहाह अ. आश्चर्य-द्योतक अव्यय।
आहि पुंस्त्री [आधि] मन की पीड़ा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहिआइ स्त्री [आभिजाति] कुलीनता, खानदानी ।
आहिआई स्त्री [आभिजाती] कुलीनता ।
आहिंड सक [आ + हिण्ड्] जाना । परिश्रम करना । घूमना ।
आहिंडग } वि [आहिण्डक] चलनेवाला,
आहिंडय } परिभ्रमण करनेवाला ।
आहिक्क न [आधिक्य] अधिकता ।
आहिजाइ देखो आहिआइ ।
आहिजाई देखो आहिआई ।
आहितुंडिअ पुं[आहितुण्डिक]गारुडिक,सपेरा ।
आहित्थ वि [दे] चलित, गत । कुपित, क्रुद्ध । आकुल, घबड़ाया हुआ ।
आहिद्ध वि [दे] रुद्ध । गलित ।
आहिपत्त न [आधिपत्य] नेतृत्व ।
आहिय वि [आहित] निवेशित । सम्पूर्ण हितकर । विरचित । °ग्गि पुं [°ाग्नि] अग्निहोत्रीय ब्राह्मण ।
आहिय वि [आहित] व्याप्त । उत्पादित । प्रथित । सर्वथा हितकारी ।
आहिय वि [आख्यात] प्रतिपादित, उक्त ।
आहियार पुं [अधिकार] अधिकार, सत्ता ।
आहिवत्त देखो आहिपत्त ।
आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि से गृहीत, पति-बुद्धि से स्वीकृत ।
आहीर पुं. देश-विशेष । शूद्र जाति-विशेष, अहीर । इस नाम का एक राजा ।
आहु सक [आ + ह्वे] बुलाना ।
आहु [आ + हु] दान करना, त्याग करना ।
आहु अ. अथवा, या ।
आहु पुं [दे] घूक, उल्लू ।
आहुइ वि [आहोतृ] दाता, त्यागी ।
आहुइ स्त्री [आहुति] हवन, होम का पदार्थ, बलि ।
आहुंदुर } पुं [दे] बालक, बच्चा ।
आहुंदुरु }
आहुड न [दे] सीत्कार विक्रय । अक. गिरना ।
आहुण सक [आ + धु] हिलाना ।
आहुणिय वि [आधुनिक] आजकल का, नवीन । पुं. ग्रह-विशेष ।
आहुत्त न [दे. अभिमुख] सम्मुख ।
आहूअ वि [आहूत] बुलाया हुआ ।
आहूअ पुं [आहूक] पिशाच-विशेष ।
आहूअ वि [आभूत] उत्पन्न ।
आहेड पुंन [आखेट] शिकार, मृगया ।
आहेडिय वि [आखेटिक] मृगया-सम्बन्धी ।
आहेण न [दे] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह ।
आहेय वि [आधेय] स्थाप्य । आश्रित ।
आहेर देखो आहीर ।
आहेवच्च न [आधिपत्य] मुखियापन ।
आहेवण न [आक्षेपण] आक्षेप । क्षोभ उत्पन्न करना ।
आहोअ देखो आभोग ।
आहोअ देखो आभोय = आ + भोजय् ।
आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट ।
आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग ही जिसका प्रयोजन हो वह ।
आहोड सक [ताडय्] पीटना ।
आहोरण [आधोरण] महावत ।
आहोहि } वि [आधोवधिक] अवधि-
आहोहिय } ज्ञानी का एक भेद, नियत क्षेत्र को अवधिज्ञान से देखनेवाला ।

इ

इ पुं. प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वरवर्ण । वाक्यालङ्कार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ।
इ देखो इइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इ सक. जाना । जानना ।
इअहरा देखो इयरहा ।
इइ अ [इति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—समाप्ति । अवधि । परिमाण । निश्चय । हेतु । एवम्, इस तरह । देखो इति ।
इओ अ [इतस्] इससे, इस कारण । इस तरफ । इस (लोक) में ।
इओअ अ [इतश्च] प्रसंगान्तर-सूचक अव्यय ।
इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा ।
इंखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो ।
इंगार } देखो अंगार । °कम्म न [°कर्मन्]
इंगाल } कोयला आदि उत्पन्न करने का और बेचने का व्यापार । °सगडिया स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का बर्तन ।
इंगारडाह पुंन [अङ्गारदाह] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान ।
इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-सम्बन्धी ।
इंगालग देखो अंगारग ।
इंगालय देखो इंगालग ।
इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा, गंडेरी ।
इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो इंगाल-कम्म ।
इंगिअ न [इङ्गित] इशारा, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा । °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] इशारे से समझनेवाला । °मरण न. मरण-विशेष ।
इंगिअजाणुअ देखो इंगिअज्ज ।
इंगिणी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष ।
इंगुअ न [इङ्गुद] इंगुदी वृक्ष का फल ।
इंगुई } स्त्री [इङ्गुदी] वृक्ष-विशेष ।
इंगुदी }
इंघिअ वि [दे] सूँघा हुआ ।
°इंणर देखो किण्णर ।
इंद पुं [इन्द्र] देवराज । श्रेष्ठ, प्रधान । परमेश्वर । जीव, आत्मा । ऐश्वर्य-शाली । विद्याधरों का प्रसिद्ध राजा । पृथ्वीकाय का एक अधिष्ठायक देव । ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव । उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनामख्यात गणधर । सप्तमी तिथि । मेघ, वर्षा । न. देव-विमान-विशेष । °इ पुं [°जित्] इस नाम का राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश । रावण के एक पुत्र का नाम । °ओव देखो °गोव । °काइय पुं. [°कायिक] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष । °कील पुं. दरवाजा का एक अवयव । °कुंभ पुं [°कुम्भ] बड़ा कलश । उद्यानविशेष । °केउ पुं [°केतु] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र-यष्टि । °खील देखो °कील । °गाइय देखो °काइय । °गाह पुं [°ग्रह] इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है । °गोव पुं [°गोप] वर्षा ऋतु में होनेवाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष । °ग्गह पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष । °ग्गि पुं [°ग्नि] विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव । महाग्रह-विशेष । °ग्गीव पुं [°ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मराज की एक पत्नी । °जाल न. माया-कर्म, कपट । °जालि वि [°जालिन्] मायावी, बाजीगर । °जुइण्ण पुं [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकुवंश का एक राजा । °ज्झय पुं [ध्वज] बड़ी ध्वजा । °ज्झया स्त्री [ध्वजा] इन्द्र द्वारा भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत से उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपलक्ष में किया गया उत्सव । °णील पुंन [°नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष । °तरु पुं. वृक्षविशेष, जिसके नीचे भगवान् सम्भवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था । °त्त न [°त्व] स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म । राजत्व । प्राधान्य । °दत्त पुं. इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा । एक जैन मुनि । °दिण्ण पुं [दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन आचार्य। °धणु न [°धनुष्] शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह। विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम। °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्त्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्णपक्ष की पहली तिथि। °पुर न. इन्द्र का नगर, अमरावती। नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी। °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम। °प्पभ पुं [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी। °मह पुं. इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव। आश्विन पूर्णिमा। °माली स्त्री. राजा आदित्य की पत्नी। °मुद्धाभिसित्त पुं [°मूर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवी तिथि, सप्तमी। °मेह पुं [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा। °य पुं [°क] देखो इन्द्र। नरक-विशेष। द्वीप-विशेष। न. विमान-विशेष। °याल देखो °जाल। °रह पुं [°रथ] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम। °राय पुं [°राज] इन्द्र। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसंयत की पत्नी। °वज्जा स्त्री. [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं। °वसु स्त्री. ब्रह्मराज की एक पत्नी। °वाय पुं [°वात] एक माण्डलिक राजा। °वारण पुं. इन्द्र का हाथी। °सम्म पुं [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण। °सामाणिय पुं [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धिवाला देव। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का लड़का, जयन्त। °सेणा स्त्री [°सेना] इन्द्र का सैन्य। एक महानदी। °हणु देखो °धणु। °ाउह न [°ायुध] इन्द्रधनु। °ाउहप्पभ पुं [°ायुधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा। °ामअ पुं [°ामय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा।

इंद पुंन [इन्द्र] एक देवविमान।

इंद वि [ऐन्द्र] इन्द्र-सम्बन्धी। न. संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण।

इंदगाइ पुं [दे] साथ में संलग्न रहनेवाले कीट-विशेष।

इंदग्गि पुं [दे] बर्फ।

इंदग्गिधूम न [दे] हिम।

इंदड्ढलअ पुं [दे] इन्द्र का उत्थापन।

इंदमह वि [दे] कुमारी में उत्पन्न। न. यौवन।

इंदमहकामुअ पुं [दे. इन्द्रमहकामुक] श्वान।

इंदा स्त्री [इन्द्रा] एक महानदी। धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी।

इंदा स्त्री [ऐन्द्री] पूर्व-दिशा।

इंदाणी स्त्री [इन्द्राणी] इन्द्र की पत्नी। एक राज-पत्नी।

इंदासणि पुं [इन्द्राशनि] एक नरक-स्थान।

इंदिंदिर पुं [इन्दिन्दिर] भ्रमर।

इंदिय पुंन [इन्द्रिय] आत्मा का चिह्न, ज्ञान के साधन-भूत इन्द्रिय—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन। शरीर के अवयव। °अवाय पुं [°पाय] इन्द्रियों द्वारा होनेवाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष। °ओगाहणा स्त्री [°ावग्रहणा] इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष। °जय पुं. इन्द्रियों का निग्रह। तपो-विशेष। °ट्ठाण न [°स्थान] इन्द्रियों का उपादान कारण। °णिव्वत्तणा स्त्री [°निर्वर्त्तना] इन्द्रियों के आकार की निष्पत्ति। °णाण न [°ज्ञान] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान। °त्थ पुं [°ार्थ] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगैरह। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओं के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूप में बदले हुए आहार को इन्द्रियों के रूप में परिणत करता है। °विजय पुं. देखो °जय। °विसय पुं [°विषय] देखो °त्थ।

इंदिय न [इन्द्रिय] लिंग, पुरुष-चिह्न।

इंदियाल देखो इंद-जाल।

इंदियाल } देखो इंद-जालि।
इंदियालि }

इंदिर पुं [इन्दिर] भ्रमर।

इंदिरा स्त्री [इन्दिरा] लक्ष्मी।

इंदीवर न [इन्दीवर] कमल।

इंदु पुं [इन्दु] चन्द्रमा।

इंदुत्तरवडिंसग न [इन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष।

इंदुर पुंस्त्री [उन्दुर] चूहा।

इंदोकंत न [इन्दुकान्त] विमान-विशेष।

इंदोव देखो इंद-गोव।

इंदोवत्त पुं [दे] इन्द्रगोप, कीट-विशेष।

इंद्र देखो इंद = इन्द्र।

इंध न [चिह्न] निशानी।

इंधण न [इन्धन] ईंधन, लकड़ी वगैरह दाह्य-वस्तु। अस्त्र-विशेष। उद्दीपन। पलाल, तृण वगैरह, जिससे फल पकाये जाते हैं। °साला स्त्री [°शाला] वह घर, जिसमें जलावन रक्खे जाते हैं।

इंधिय वि [इन्धित] उद्दीपित, प्रज्ज्वलित।

इक न [दे] प्रवेश।

इक्क देखो एक्क।

इक्कड पुं. तृण-विशेष।

इक्कड वि [ऐक्कड] इक्कड़ तृण का बना हुआ।

इक्कण वि [दे] चोर।

इक्कार देखो एक्कारह।

इक्किक्क वि [एकैक] प्रत्येक।

इक्किल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस।

इक्कुस न [दे] नीलोत्पल।

इक्ख सक [ईक्ष्] देखना।

इक्खअ वि [ईक्षक] देखनेवाला।

इक्खाउ देखो इक्खागु।

इक्खाग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु नामक प्रसिद्ध क्षत्रियवंश में उत्पन्न।

इक्खाग } पुं. [इक्ष्वाकु] एक प्रसिद्ध क्षत्रिय
इक्खागु } राजवंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश। उस वंश में उत्पन्न। कोशल देश। °भूमि स्त्री. अयोध्या नगरी।

इक्खु पुं [°इक्षु] ईख। धान्य-विशेष, 'बरट्टिका' नाम का धान्य। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] ईख का टुकड़ा। °घर न [°गृह] उद्यान-विशेष। °चोयग न [दे] ईख का कुच्चा। °डालग न [दे] ईख की शाखा का एक भाग। ईख का छेद। °पेसिया स्त्री [°पेशिका] गण्डेरी। °भित्ति स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा। °मेरग न [°मेरक] गण्डेरी। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इक्षु-दण्ड। °वाड पुं [°वाट] ईख का खेत। °सालग न [दे] ईख की लम्बी शाखा। ईख की बाहर की छाल। देखो उच्छु।

इग देखो एक्क।

इगयाल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] ४१—एक-चालीस।

इगवीसइम वि [एकविंश] एक्कीसवाँ।

इगुचाल वि [एकचत्वारिंशत्] चालिस और एक।

इगुणवीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवाँ।

इगुणीस } स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस।
इगुवीस }

इगुसट्ठि स्त्री [एकोनषष्टि] उनसठ।

इग्ग वि [दे] डरा हुआ।

इग्ग देखो एक्क।

इग्घिअ वि [दे] तिरस्कृत।

इच्चाइ पुंन [इत्यादि] प्रभृति।

इच्चेवं अ [इत्येवम्] इस प्रकार।

इच्छ सक [इष्] इच्छा करना।

इच्छ सक [आप् + स् = ईप्स्] प्राप्त करने को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाहना।

इच्छकार देखो इच्छा-कार।

इच्छक्कार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द।

इच्छा स्त्री. पक्ष की ग्यारहवीं रात्रि। अभिलाषा, चाह। °कार पुं. स्वकीय-इच्छा। °छंद वि [°च्छन्द] इच्छा के अनुकूल। °णुलोम वि [°नुलोम] इच्छा के अनुकूल। °णुलोमिय वि [°नुलोमिक] इच्छा के अनुकूल। °पणिय वि [°प्रणीत] इच्छानुसार किया हुआ। °परिमाण न. परिग्राह्य वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पाँचवाँ व्रत। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा। °लोभ पु. प्रबल लोभ। °लोभिय वि [°लोभिक] महालोभी। °लोल पुं. महान् लोभ। वि. महालोभी।

°इच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा।

इच्छु देखो इक्खु।

इच्छु वि [इच्छु] अभिलाषी।

इज्ज सक [आ + इ] आना, आगमन करना।

इज्ज पुंन [इज्या] यज्ञ।

इज्जा स्त्री [इज्या] याग। ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन।

इज्जा स्त्री [दे] जननी।

इज्जिसिय वि [इज्यैषिक] पूजा का अभिलाषी।

इज्झ अक [इन्ध्] चमकना।

इट्टग [दे] सेवईं।

इट्टगा स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, सेव।

इट्टगा स्त्री [इष्टका] नीचे देखो इट्टा।

इट्टवाय देखो इट्टा-वाय।

इट्टा स्त्री [इष्टका] ईंट। °पाय, °वाय पुं [°पाक] ईंटों का पकना। जहाँ पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान।

इट्टाल न. ईंट का टुकड़ा।

इट्ठ वि [इष्ट] अभिलषित, अभिप्रेत, पूजित, सत्कृत। आगमोक्त, सिद्धान्त से अविरुद्ध। न. स्व-सिद्धान्त। न. निर्विकृति-तप। याग-क्रिया।

इट्ठि स्त्री [इष्टि] इच्छा। याग-विशेष।

°इट्ठि स्त्री [कृष्टि] खिंचाव, खींचना।

इडा स्त्री. शरीर के बाएँ भाग में स्थित नाड़ी।

इड्डर न [दे] गाड़ी।

इड्डरग } न [दे] रसोई ढकने का बड़ा
इड्डरय } पात्र।

इड्डरिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष।

इड्ढ वि [ऋद्ध] ऋद्धि-सम्पन्न।

इड्ढि स्त्री [ऋद्धि] ऐश्वर्य। लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य। पदवी। °गारव न [°गौरव] सम्पत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होने पर उसकी लालसा। °पत्त वि [°प्राप्त] ऋद्धिशाली। °म, °मंत वि [°मत्] ऋद्धिवाला।

इड्ढिसिय वि [दे] माँगन की एक जाति।

इणं } अ [एतत्] यह।
इणमो }

°इण्ण देखो दिण्ण।

°इण्ण देखो किण्ण।

इण्ह न [चिह्न] निशान।

°इण्हा स्त्री [तृष्णा] प्यास, स्पृहा।

इण्हिं अ [इदानीम्] इस समय।

इतरेतरासय पुं [इतरेतराश्रय] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा।

इति देखो इइ। °हास पुं. पूर्ववृत्तान्त, पुरावृत्त। पुराणशास्त्र।

इत्तर वि [इत्वर] थोड़ा। अल्प-कालिक। °परिग्गहा स्त्री [°परिग्रहा] थोड़े समय के के लिए रक्खी हुई वेश्या आदि। °परिग्गहिया स्त्री [°परिगृहीता] देखो °परिग्गहा।

इत्तरिय वि [इत्वरिक] ऊपर देखो।

इत्तरिय देखो इयर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्तरी स्त्री [इत्वरी] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि।
इत्तहे (अप) अ [अत्र] यहाँ पर।
इत्ताहे अ [इदानीम्] अधुना।
इत्ति देखो इइ।
इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना।
इत्तिरिय वि [इत्वरिक] अल्पकालिक।
इत्तिल देखो इत्तिय।
इत्तो देखो इओ।
इत्तोअ देखो इओअ।
इत्तोप्पं [दे] इतःप्रभृति।
इत्थ अ [अत्र] यहाँ, इसमें।
इत्थं अ [इत्थम्] इस प्रकार। °थ वि [°स्थ] नियत आकारवाला, नियमित।
इत्थंथ वि [इत्थंस्थ] इस तरह रहा हुआ।
इत्थत्थ पुं [इत्यर्थ] वह अर्थ।
इत्थत्थ पुं [स्त्र्यर्थ] स्त्री-विषय।
इत्थयं देखो इत्थ।
इत्थि स्त्रीन [स्त्री] महिला।
इत्थि, इत्थी स्त्री [स्त्री] औरत। °कला स्त्री. स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला। °कहा स्त्री [°कथा] स्त्री-विषयक वार्त्तालाप। °णपुंसग पुंन [°नपुंसक] एक प्रकार का नपुंसक। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है। °परिसह पुं [परिषह] ब्रह्मचर्य। °विप्पजह वि [°विप्रजह] स्त्री का परित्याग करनेवाला। पुं. मुनि। °वेद, °वेय पुं [°वेद] स्त्री को पुरुष-संग की इच्छा। कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है।
इत्थेण त्रि [स्त्रैण] स्त्रियों का समूह।
इदाणिं देखो इयाणिं।
इदाणि (शौ) देखो इयाणिं।
इदाणीं, इदाणी देखो इदाणिं।
इदिवित्त (शौ) न [इतिवृत्त] इतिहास।
इदुर न [दे] धान्य रखने का एक तरह का पात्र।
इद्दंड पुं [दे] भौंरा।
इद्धग्गिघूम न [दे] हिम।
इद्धि देखो इड्ढि।
इध (शौ) देखो इह।
इब्भ पुं [इभ्य] धनी।
इब्भ पुं [दे] व्यापारी।
इभ पुं. हाथी।
इभपाल पुं. महावत।
इम स [इदम्] यह।
इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा।
इय देखो इम।
इय देखो इइ।
इय न [दे] प्रवेश।
इय वि [इत] गत। प्राप्त। ज्ञात।
इयण्हिं अ [इदानीम्] हाल में।
इयर वि [इतर] अन्य, दूसरा। हीन।
इयरहा अ [इतरथा] अन्यथा, नहीं तो।
इयरेयर वि [इतरेतर] अन्योन्य।
इयाणिं, इयाणि अ [इदानीम्] इस समय।
इर देखो किल।
इरमंदिर पुं [दे] ऊँट।
इराव पुं [दे] हाथी।
इरावदी (शौ) स्त्री [इरावती] नदी-विशेष।
°इरि देखो गिरि।
इरिण न [ऋण] करजा।
इरिण न [दे] सुवर्ण।
इरिय सक [ईर्] गति करना।
इरिया स्त्री [दे] कुटिया।
इरिया स्त्री [ईर्या] गमन। °वह पुं [°पथ] मार्ग में जाना। रास्ता। केवल शरीर से होनेवाली क्रिया। °वहिय न [°पथिक] केवल शरीर की चेष्टा से होनेवाला कर्म-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बन्ध, कर्म-विशेष। °वहिया स्त्री [°पथिकी] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया। °समिइ स्त्री [°समिति] दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना। °समिय वि [°समित] विवेक-पूर्वक चलने-वाला।

इल पुं. वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृहपति-गृहस्थ। न. इलादेवी के सिंहासन का नाम। °सिरी स्त्री [°श्री] इल नामक गृहस्थ की स्त्री।

°इलंतअ देखो किलंत।

इला स्त्री. पृथिवी, भूमि। धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी। इल नामक गृहस्थ की पुत्री। रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी। राजा जनक की माता। इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता। °कूड न [°कूट] इला-देवी के निवास-भूत एक शिखर। °पुत्त पुं [°पुत्र] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र। °वइ पुं [°पति] एलापत्य गोत्र का आदि पुरुष। °वडंसय न [°ावतंसक] इलादेवी का प्रासाद।

इलाइपुत्त देखो इला-पुत्त।

इलिया स्त्री [इलिका] चीनी और चावल में उत्पन्न होनेवाला कीटविशेष।

इली स्त्री. एक जाति की तलवार की तरह का हथियार।

इल्ल पुं [दे] चपरासी। दाँती। वि. दरिद्र। कोमल। काला।

इल्लपुलिंद पुं [दे] व्याघ्र, शेर।

इल्लि पुं [दे] शार्दूल। सिंह। छाता।

इल्लिय वि [दे] आसिक्त।

इल्लिया स्त्री [इल्लिका] अन्न में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष।

इल्लीर न [दे] आसन-विशेष। छाता। दरवाजा, गृह-द्वार।

इव अ. इन अर्थों का द्योतक अव्यय— उपमा। सादृश्य। उत्प्रेक्षा।

इसअ वि [दे] विस्तीर्ण।

इसणा देखो एसणा।

इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशानकोण।

इसि पुं [ऋषि] मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा। ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र। °गुत्त पुं [°गुप्त] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि। न. जैन मुनियों का एक कुल। °गुत्तिय न [°गुप्तीय] जैन मुनियों का एक कुल। °दास पुं. इस नाम का एक सेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी। 'अनुत्तरोववाइ-दसा' सूत्र का एक अध्ययन। °दत्त, °दिण्ण पुं [°दत्त] एक जैन मुनि। °पालिय पुं [°पालित] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम। °पालिया स्त्री [°पालिता] जैन मुनियों की एक शाखा। °भद्दपुत्त पुं [°भद्रपुत्र] एक जैन श्रावक। °भासिय न [°भाषित] अंगग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाये हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र। 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन। °वाइ, °वाइय, °वादिय पुं [°वादिन्] व्यन्तरों की एक जाति। °वाल पुं [°पाल] ऋषिवादि-व्यन्तरों का उत्तर दिशा का इन्द्र। पाँचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम। °वालिय पुं [°पालित] ऋषिवादिव्यन्तरों के एक इन्द्र का नाम।

इसिण पुं [इसिन] अनार्य देश-विशेष।

इसिणय वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश में उत्पन्न।

इसिया स्त्री [इषिका] शलाका।

इसु पुं [इषु] बाण।

इस्स वि [एष्यत्] भविष्यकाल। होनेवाला।

इस्सर देखो ईसर।

इस्सरिय देखो ईसरिय।

इस्सा स्त्री [ईर्ष्या] द्रोह, असूया।

इस्सास पुं [इष्वास] धनुष। तीरंदाज।

इह पुं [इभ] हाथी।

इह अ [इदानीम्] इस समय, अधुना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इह अ. यहाँ, इस जगह। °पारलोइय वि [ऐहिकपारलौकिक] इस और परलोक से सम्बन्ध रखनेवाला। °भविय वि [ऐह-भविक] इस जन्म-सम्बन्धी। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक। °लोय, °लोइय वि[ऐहलौकिक] इस जन्म-सम्बन्धी, वर्तमान-जन्म-सम्बन्धी।

इहअ, इहइं } ऊपर देखो।

इहइं अ [इदानीम्] सम्प्रति, इस समय।

इहं, इहयं } देखो इह = इह।

इहरहा, इहरा } देखो इयर-हा।

इहरा देखो इहइं = इदानीम्।

इहामिय देखो ईहामिय।

इहिं अ [इह] यहाँ।

ई

ई पुं. प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर-विशेष।

ईअ स [एतत्, इदम्] यह।

ईअ अ [इति] इस तरह।

ईइ पुंस्त्री [ईति] धान्य वगैरह को नुकसान पहुँचानेवाला चूहा आदि प्राणि-गण।

ईइस वि [ईदृश] ऐसा, इसके समान।

ईजिह अक [घ्रा] तृप्त होना।

°ईड देखो कीड = कीट।

ईडा स्त्री. स्तुति।

ईण वि [ईन] प्रार्थी, अभिलाषी।

°ईण देखो दीण।

ईति देखो ईइ।

ईदिस देखो ईइस।

ईर सक. प्रेरणा करना। कहना। गमन करना। फेंकना।

ईरिया देखो इरिया।

ईरिस देखो ईइस।

ईस न [दे] खूंटा, खीला।

ईस सक [ईर्ष्] द्वेष करना।

ईस पुं [ईश] देखो ईसर = ईश्वर। न. ऐश्वर्य, प्रभुता।

ईस देखो ईसि।

ईसअ पुं [दे] रोझ, हरिण की एक जाति।

ईसत्थ न [इष्वस्त्रशास्त्र] धनुर्वेद, बाणविद्या।

ईसर पुं [दे] कामदेव।

ईसर पुं [ईश्वर] प्रभु। महादेव। पति। मुखिया। बेलंधर-देवों का आवास-विशेष। एक पाताल-कलश। आढ्य। ऐश्वर्य-शाली। युवराज। माण्डलिक, सामन्त-राजा। मन्त्री। भूतवादि-निकाय का इन्द्र। पाताल-विशेष। एक राजा का नाम। एक जैन मुनि। यक्ष-विशेष।

ईसर पुं [ईश्वर] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न।

ईसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, ईश्वरपन।

ईसा स्त्री [ईषा] लोकपालों की अग्रमहिषियों की एक पार्षदा। पिशाचेन्द्र की एक परिषद्। हल का एक काष्ठ।

ईसा स्त्री [ईर्षा] ईर्ष्या, द्रोह। °रोस पुं [°रोष] क्रोध।

ईसाण पुं [ईशान] दूसरा देवलोक। दूसरे देवलोक का इन्द्र। ईशान-कोण। मुहूर्त-विशेष। दूसरे देवलोक के निवासी देव। प्रभु, स्वामी। °वडिंसग न [°ावतंसक] विमान-विशेष का नाम।

ईसाण पुं [ईशान] अहोरात्र का ग्यारहवाँ मुहूर्त।

ईसाणा स्त्री [ऐशानी] ईशान-कोण।

ईसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान-कोण। विद्या-विशेष।

ईसालु वि [ईर्ष्यालु] असहिष्णु, द्वेषी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईसास देखो इस्सास ।

ईसि अ [ईषत्] अल्प । पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्तभूमि । °पब्भार वि [°प्राग्भार] थोड़ा अवनत । °पब्भारा स्त्री [°प्राग्भारा] पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र ।

ईसिअ न [ईर्ष्यित] ईर्ष्या, द्वेष । वि. जिसपर ईर्ष्या की गई हो वह ।

ईसिअ न [दे] भील के सिर पर का पत्रपुट या पगड़ी । वि. वशीकृत ।

ईसिं } देखो ईसि ।
ईसीं }

ईह सक [ईक्ष्, ईह्] देखना । विचारना । चेष्टा करना ।

ईहा स्त्री. विचार, ऊहापोह, विमर्श । चेष्टा, प्रयत्न । मति-ज्ञान का एक भेद । °मिग, °मिय पुं [°मृग] वृक, भेड़िया । नाटक का एक भेद ।

ईहा स्त्री [ईक्षा] अवलोकन, विलोकन ।

उ

उ पुं, प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष । उपयोग रखना, ख्याल करना । गति-क्रिया ।

उ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—सम्बोधन, आमन्त्रण । कोप-वचन । अनुकम्पा । नियोग, हुकुम । आश्चर्य । स्वीकार । पृच्छा ।

उ अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—विशेषण । कारण । समुच्चय, और । निश्चय । किन्तु । आज्ञा । प्रशंसा । विनिग्रह । शंका की निवृत्ति । पादपूर्त्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है ।

उ देखो उव ।

उ° अ [उत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—ऊर्ध्व । विपरीत । अभाव । ज्यादा, विशेष ।

उअ अ [दे] विलोकन करो, देखो ।

उअ अ [उत] इन अर्थों का सूचक अव्यय—विकल्प । वितर्क, विमर्श । प्रश्न । समुच्चय । अतिशय ।

उअ अ [दे] ऋजु ।

उअ देखो उव ।

उअ न [उद] पानी । °सिंधु पुं [°सिन्धु] समुद्र ।

उअ वि [उदञ्च्] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित । °महिहर पुं [°महिधर] हिमाचलपर्वत ।

उअअ न [उदक] पानी ।

उअअ देखो उदय ।

उअअ न [उदर] पेट ।

उअअ वि [दे] सरल, सीधा ।

उअअद (शौ) देखो उवगय ।

उअआरअ वि [उपकारक] उपकार करनेवाला ।

उअआरि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो ।

उअइव्व वि [उपजीव्य] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य ।

उअऊह सक [उप + गूह्] आलिंगन करना ।

उअएस देखो उवएस ।

उअंचण न [उदञ्चन] ऊँचा फेंकना या उठाना, ढकने का पात्र ।

उअंचिद (शौ) वि [उदञ्चित] ऊँचा उठाया हुआ, ऊँचा फेंका हुआ ।

उअंत पुं [उदन्त] हकीकत, वृत्तान्त ।

उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह ।

उअक्किअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ।

उअगअ देखो उवगय ।

उअचित्त वि [दे] अपगत, निवृत्त ।

उअजीवि वि [उपजीविन्] आश्रित ।

उअज्झाअ देखो उवज्झाय ।

उअट्टी स्त्री [दे] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाडी।
उअट्ठिअ देखो उवट्ठिय।
उअणिअ } देखो उवणीय।
उअणीअ }
उअण्णास देखो उवण्णास।
उअत्तंत देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।
उअत्थाण देखो उवट्ठाण।
उअत्थिअ देखो उवट्ठिय।
उअदिट्ठ देखो उवइट्ठ।
उअभुत्त देखो उवभुत्त।
उअभोग देखो उवभोग।
उअमिज्जंत वक्र [उपमीयमान] जिसकी तुलना की जाती हो वह।
उअर न [उदर] पेट।
उअरिं } देखो उवरिं।
उअरि }
उअरी स्त्री [दे] शाकिनी देवी।
उअरुज्झ देखो उवरुज्झ।
उअरोअ } देखो उवरोह।
उअरोह }
उअलद्ध देखो उवलद्ध।
उअविट्ठअ न [औपविष्टक] आसन।
उअविय वि [दे] उच्छिष्ट।
उअसप्प देखो उवसप्प।
उअसम } देखो उवसम = उप + शम्।
उअसम्म }
उअह अ [दे] देखिए।
उअहस देखो उवहस।
उअहार देखो उवहार।
उअहारी स्त्री [दे] दोहनेवाली स्त्री।
उअहि पुं [उदधि] सागर। स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजकुमार। काल परिमाण, सागरोपम। स्वनामख्यात एक जैन मुनि। देखो उदहि।
उअहि देखो उवहि = उपधि।
उवहुंज देखो उवभुंज।
उअहोअ देखो उवभोग।
उआअ देखो उवाय।
उआअण देखो उवायण।
उआर देखो उराल।
उआर देखो उवयार।
उआलंभ देखो उवालंभ = उपा + लभ्।
उआलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ।
उआलभ देखो उआलंभ = उपा + लभ्।
उआलि स्त्री [दे] शिरोभूषण।
उआस वि [उदास] नीचे देखो।
उआस देखो उवास = उपा + आस्।
उआसीण वि [उदासीन] उदासी, दिलगीर। मध्यस्थ।
उआहरण देखो उदाहरण।
उइ सक [उप + इ] समीप जाना।
उइ अक [उद् + इ] उदित होना।
उइ देखो उउ। °राय पुं [°राज] वसन्त ऋतु।
उइअ वि [उदित] उदय-प्राप्त, उद्गत। कथित। °परक्कम पुं [°पराक्रम] इक्ष्वाकुवंश के एक राजा का नाम।
उइअ वि [उचित] योग्य।
उइंतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर।
उइंद पुं [उपेन्द्र] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था।
उइट्ठ वि [अपकृष्ट] हीन, संकुचित।
उइण्ण देखो उदिण्ण।
उइण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा-सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न।
उइन्न देखो ओइण्ण।
उईण देखो उदीण।
उईर देखो उदीर।
उईरण देखो उदीरण।
उईरणया } देखो उदीरणा।
उईरणा }
उईरिय देखो उदीरिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उउ त्रि [ऋतु] ऋतु, दो मास का काल-विशेष, वसन्त आदि छः प्रकार का काल। स्त्री-कुसुम, रजो दर्शन, स्त्री-धर्म। °बद्ध पुं. शीत और उष्णकाल। °मास पुं. श्रावण मास। तीस दिनवाला मास। °य वि [°ज] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होनेवाला। °संधि पुंस्त्री. ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष। देखो उइ = उउ।

उउंबर देखो उंबर = उदुम्बर।

उउवहिय न [ऋतुबद्ध] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवासानुष्ठान।

उऊखल / उऊहल पुंन [उदूखल] उलूखल, गूगल।

उएट्ट पुं [दे] शिल्प-विशेष।

उओग्गिअ वि [दे] सम्बद्ध, संयुक्त।

उं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—क्षेप, निन्दा। विस्मय। खेद। वितर्क। सूचन।

उंघ अक [नि + द्रा] नींद लेना।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्रधारा।

उंछ पुंन [उञ्छ] भिक्षा। पु. माधुकरी।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छापने का काम करनेवाला शिल्पी।

उंज सक [सिच्] छिड़कना।

उंज सक [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना।

उंजायण न [उञ्जायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ-गोत्र की एक शाखा है।

उंड / उंडग / उंडय वि [दे] गभीर, गहरा। पुं. पिण्ड। चलते समय पाँव में पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीचड़, कर्दम। शरीर का एक भाग, मांस-पिण्ड।

उंडग / उंडुअ न [दे] स्थण्डिल, स्थान, जगह।

उंडल न [दे] मञ्च, मचान, उच्चासन। समूह।

उंडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष।

उंडी स्त्री [दे] पिण्ड, गोलाकार वस्तु।

उंदर / उंदुर पुंस्त्री [उन्दुर] चूहा।

उंदु न [दे] मुख। °रुक्क न [दे] मुंह से वृषभ आदि की तरह आवाज करना।

उंदुरअ पुं [दे] लम्बा दिवस।

उंदुरु पुंस्त्री [उन्दुरु] मूषक।

उंब पुं [उम्ब] वृक्ष-विशेष।

उंबर पुं [उदुम्बर] गूलर का पेड़। न. गूलर का फल। देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी। °दत्त पुं. यक्ष-विशेष। एक सार्थवाह का पुत्र। °पंचग, °पणग न [°पञ्चक] बड़, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पाँच वृक्षों के फल। °पुप्फ न [°पुष्प] गूलर का फूल।

उंबर वि [दे] प्रचुर।

उंबरउप्फ न [दे] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति।

उंबरय पुं. [दे] कुष्ट रोग का एक भेद।

उंबा स्त्री [दे] बन्धन।

उंबी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ।

उंबेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष।

उंभ सक [दे] पूर्ति करना, पूरा करना।

उंकिट्ठ देखो उक्किट्ठ।

उकुरुडिया [दे] देखो उक्कुरुडिया।

उक्क वि [उत्क] उत्सुक, उत्कण्ठित। एक विद्याधर राजा का नाम।

उक्क वि [उक्त] कथित।

उक्क न [दे] पाद-पतन, पांव पर गिर कर नमस्कार करना।

उक्कअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ।

उक्कंचण / उक्कंचणया न [दे] खुशामद। उठाना। झाड़ू निकालना। रिश्वत। मूर्ख पुरुष को ठगनेवाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए निश्चेष्ट रहना। °दीव पुं [°दीप] ऊँचा दंडवाला प्रदीप।

उक्कंछण न [दे] देखो उक्कंचण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवकंठ अक [उत् + कण्ठ्] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना।
उवकंठुलय वि [उत्कण्ठित] उत्सुक।
उवकंड वि [उत्कण्डित] खूब छटा हुआ।
उवकंडय सक [उत्कण्टय्] पुलकित करना।
उवकंडय वि [उत्कण्टक] रोमाञ्चित।
उवकंडा स्त्री [दे] रिश्वत।
उवकंडिअ वि [दे] आरोपित। खण्डित।
उवकंत वि [उत्क्रान्त] ऊँचा गया हुआ।
उवकंति, उवकंती स्त्री [दे] देखो उवकंदि।
उवकंद वि [दे] विप्रलब्ध, ठगा हुआ।
उवकंदल वि [उत्कन्दल] अंकुरित।
उवकंदि, उवकंदी स्त्री [दे] कूपतुला।
उवकंप अक [उत् + कम्प्] काँपना, हिलना। चञ्चल होना।
उवकंपिय वि [दे] धवलित।
उवकंबण न [दे. अवकम्बन] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बाँधना, घर का संस्कार-विशेष।
उवकंबिय वि [दे. अवकम्बित] काठ से बाँधा हुआ।
उवकच्छ वि [उत्कच्छ] स्फुट, स्पष्ट।
उवकच्छा स्त्री [उत्कच्छा] छन्द-विशेष।
उवकच्छिआ स्त्री [औपकक्षिकी] जैन साध्वियों को पहनने का वस्त्र-विशेष।
उवकज्ज वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल।
उवकट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हानि।
उक्कट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष। देखो उक्किट्ठि।
उक्कड वि [उत्कट] तीव्र, प्रचण्ड। विशाल। प्रबल। °उक्कड देखो दुक्कड।
उक्कडिय वि [दे] तोड़ा हुआ, छिन्न।
उक्कडिय देखो उवकुडुय।
उक्कड्ढ सक [उत् + कर्षय्] उत्कृष्ट करना, बढ़ाना।
उक्कड्ढग पुं [अपकर्षक] चोर की एक-जाति— जो घर से धन आदि ले जाते हैं। जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते हैं। चोर के सहायक।
उक्कड्ढिय वि [उत्कर्षित] उत्पाटित, उठाया हुआ। एक स्थान से उठाकर अन्यत्र स्थापित।
उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उत्सुक।
उक्कत्त सक [उत् + कृत्] काटना, कतरना।
उक्कत्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ, छिन्न।
उक्कत्थण न [उत्कत्थन] उखाड़ना।
उक्कप्प पुं [उत्कल्प] शास्त्र-निषिद्ध आचरण।
उक्कनाह पुं [दे] उत्तम अश्व की एक जाति।
उक्कम सक [उत् + क्रम्] ऊँचा जाना। उलटे क्रम से रखना।
उक्कम पुं [उत्क्रम] उलटा क्रम, विपरीत क्रम।
उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्वगमन। बाहर जाना।
उक्कमित वि [उपक्रान्त] प्रारब्ध। क्षीण।
उक्कर सक [उत् + कृ] खोदना।
उक्कर पुं [उत्कर] समूह, संघात। कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित।
उक्करड देखो उक्कर = उत्कर।
उक्करड पुं [दे] अशुचि-राशि। जहाँ मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान।
उक्करिअ वि [दे] विस्तीर्ण, आयत। आरोपित। खण्डित।
उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊँचा किया हुआ।
उक्करिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद-विशेष।
उक्करिस सक [उत् + कृष्] खींचना। गर्व करना, बड़ाई करना। उन्मूलन करना।
उक्करिस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष।
उक्करिसण न [उत्कर्षण] उत्कर्ष, बड़ाई,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महत्त्व । स्थापन, आधान ।
उक्कल देखो उक्कड ।
उक्कल अक [उत्+कल्] उत्कट रूप से बरतना ।
उक्कल वि [उत्कल] धर्म-रहित । न. चोरी । पुं. देश-विशेष ।
उक्कलंब सक [उत्+लम्बय्] फांसी लटकाना ।
उक्कला देखो उक्कलिया ।
उक्कलिय वि [दे] उबला हुआ ।
उक्कलिया स्त्री [उत्कलिका] लूता, मकड़ी । नीचे की तरफ बहनेवाला वायु । छोटा समुदाय, समूह-विशेष । लहरी, तरंग । ठहर-ठहर कर तरंग की तरह चलनेवाला वायु ।
उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना ।
उक्कस देखो ओकस ।
उक्कस देखो उक्कुस ।
उक्कस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष ।
उक्कसण न [उत्कर्षण] अभिमान करना । ऊँचा जाना । निवर्तन, निवृत्ति । प्रेरणा ।
उक्कसाइ वि [उत्कशायिन्] सत्कारादि के लिए उत्कण्ठित ।
उक्कसाइ वि [उत्कषायिन्] प्रबल कषायवाला ।
उक्कस्स अक [अप+कृष्] ह्रास प्राप्त होना । फिसलना, गिरना ।
उक्कस्स पुं [उत्कर्ष] गर्व । अतिशय ।
उक्कस्स वि [उत्कर्षवत्] उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा । अभिमानी ।
उक्का स्त्री [उल्का] लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अंगार सा गिरता है । छिन्न-मूल दिग्दाह । अग्नि-पिण्ड । °मुह पुं [°मुख] अन्तर्द्वीप-विशेष । उसके निवासी लोक । °वाय पुं [°पात] तारा का गिरना, लूका गिरना ।
उक्का स्त्री [दे] कूप-तुला ।
उक्काम सक [उत्+क्रामय्] दूर करना, पीछे हटाना ।
उक्कारिया देखो उक्करिया ।
उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढ़ने का विधान न हो ।
उक्कास देखो उक्कस्स = उत्कर्ष ।
उक्कास वि [दे] उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा ।
उक्कासिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ ।
उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] ज्यादा । पुंन. इमली आदि के पत्तों का समूह । लगातार दो दिन का उपवास ।
उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] उत्तम । फल का शस्त्र द्वारा किया हुआ टुकड़ा ।
उक्किट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] हर्षध्वनि । देखो उक्कुट्ठि ।
उक्किण्ण वि [उत्कीर्ण] खोदा हुआ । नष्ट । चर्चित, उपलिप्त ।
उक्कित्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ ।
उक्कित्तण न [उत्कीर्त्तन] कथन । प्रशंसा ।
उक्कित्तिय वि [उत्कीर्त्तित] कथित, कहा हुआ ।
उक्किर सक [उत्+कृ] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरह का शस्त्र से लिखना ।
उक्किरणग न [उत्करणक] अक्षत आदि से बढ़ाना, बधावा, वर्धापन ।
उक्कीर देखो उक्किर ।
उक्कीलिय न [उत्क्रीडित] उत्तम क्रीड़ा ।
उक्कीलिय वि [उत्कीलित] कीलक से नियंत्रित ।
उक्कुंचण न [उत्कुञ्चन] ऊँचे चढ़ाना ।
उक्कुंड वि [दे] मत्त, उन्मत्त ।
उक्कुक्कुर अक [उत्+स्था] उठना, खड़ा होना ।
उक्कुज्ज अक [उत्+कुब्ज्] ऊँचा होकर नीचा होना ।
उक्कुजिय न [उत्कूजित] अव्यक्त शब्द ।
उक्कुट्ठ न [उत्कुष्ट] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण ।
उक्कुट्ठ वि [उत्क्रुष्ट] ऊँचे स्वर से आक्रुष्ट ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कुडुग, उक्कुडुय वि [उत्कुटुक] आसन-विशेष, निषद्या-विशेष। °ासणिय वि [°ासनिक] उत्कुटुक-आसन से स्थित।

उक्कुद्द अक [उत् + कुर्द्] कूदना, उछलना।

उक्कुरुआ देखो उक्कुरुडिया।

उक्कुरुड पुं. देखो उक्कुरुडी।

उक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढेर।

उक्कुरुडिगा, उक्कुरुडिया, उक्कुरुडी स्त्री [दे] घूरा, कूड़ा डालने की जगह।

उक्कुस सक [गम्] जाना, गमन करना।

उक्कुस वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ।

उक्कूइय न [उत्कूजित] अव्यक्त महा-ध्वनि।

उक्कूल वि [उत्कूल] सन्मार्ग से भ्रष्ट करने वाला। किनारे से बाहर का। न. चोरी।

उक्कूव अक [उत् + कूज्] चिल्लाना।

उक्केर पुं [उत्कर] राशि, ढेर। करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को बढ़ाना। भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह।

उक्केर पुं [दे] उपहार।

उक्केल्लाविय वि [दे] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ।

उक्कोट्टिय वि [दे] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ।

उक्कोड न [दे] राजा आदि को दिया जाता उपहार।

उक्कोडा स्त्री [दे] रिश्वत।

उक्कोडिय वि [दे] घूसखोर।

उक्कोडी स्त्री [दे] प्रतिध्वनि।

उक्कोय वि [उत्कोप] प्रखर, उत्कट।

उक्कोयण देखो उक्कोवण।

उक्कोया स्त्री [उत्कोचा] रिश्वत। मूर्ख को ठगने में प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना।

उक्कोल पुं [दे] धूप, गरमी।

उक्कोवण न [उत्कोपन] उद्दीपन, उत्तेजन।

उक्कोविअ वि [उत्कोपित] अत्यन्त क्रुद्ध किया हुआ।

उक्कोस सक [उत् + क्रुश्] रोना, चिल्लाना। तिरस्कार करना।

उक्कोस वि [उत्कर्ष] उत्कृष्ट, मुख्य।

उक्कोस पुं [उत्कर्ष] प्रकर्ष, अतिशय। गर्व।

उक्कोस वि [उत्कृष्ट] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक।

उक्कोस पुं [उत्क्रोश] कुरर। वि. जोर से चिल्लानेवाला।

उक्कोसण न [उत्क्रोशन] क्रन्दन। निर्भर्त्सन, तिरस्कार।

उक्कोसा स्त्री [उत्कोशा] कोशानामक एक प्रसिद्ध वेश्या।

उक्कोसिअ पुं [उत्कौशिक] गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि। न. गोत्र-विशेष।

उक्कोसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ।

उक्कोसिया स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, आधिक्य।

उक्कोस्स देखो उक्कोस = उत्कृष्ट।

उक्ख सक [उक्ष्] सींचना।

उक्ख [उक्ष] सम्बन्ध। जैन साध्वियों के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश।

उक्ख देखो उच्छ = उक्षन्।

उक्खइअ वि [उत्खचित] व्याप्त, भरा हुआ।

उक्खंड सक [उत् + खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना।

उक्खंड पुं [दे] सङ्घात, समूह। स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश।

उक्खंडण न [उत्खण्डन] उत्कर्त्तन, विच्छेदन।

उक्खंडिअ वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ।

उक्खंद पुं. [अवस्कन्द] घेरा डालना। छल से शत्रु-सैन्य को मारना।

उक्खंभ पुं [उत्तम्भ] अवलम्ब, सहारा।

उक्खंभिय देखो उत्थंभिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्खंभिय न [औत्तम्भिक] अवलम्ब, सहारा।
उक्खडमड्डा अ [दे] पुनः-पुनः।
उक्खण सक [उत् + खन्] उखाड़ना, उच्छेदन करना, काटना।
उक्खण सक [दे] खाँड़ना, मुसल वगैरह से व्रीहि आदि का छिलका दूर करना।
उक्खण वि [दे] अवकीर्ण, चूर्णित।
उक्खत्त देखो उक्खय।
उक्खम्म° देखो उक्खण = उत् + खन्।
उक्खय वि [उत्खात] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित। खुला हुआ, उद्‌घाटित।
उक्खल देखो उऊखल।
उक्खलिय वि [दे. उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित।
उक्खलिया, उक्खली स्त्री [दे] थाली।
उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली।
उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत।
उक्खाय देखो उक्खय।
उक्खाल सक [उत् + खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना।
उक्खिण देखो उक्खण = उत् + खन्।
उक्खिण्ण वि [दे] अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित। आच्छन्न, गुप्त। एक तरफ से ढीला।
उक्खित्त, उक्खित्तय वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ। ऊँचा उड़ाया हुआ। ऊँचा किया हुआ। उन्मूलित, उत्पाटित। बाहर निकाला हुआ। उत्थित। न. गेय-विशेष। °चरय वि [°चरक] पाक पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियमवाला (साधु)।
उक्खिप्प देखो उक्खिव = उत् + क्षिप्।
उक्खिय वि [उक्षित] सींचा हुआ।
उक्खिल्ल सक [दे] उखाड़ना।
उक्खिव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना।
उक्खिव सक [उत् + क्षिप्] फेंकना। ऊँचा फेंकना। उड़ाना। बाहर करना। काटना। उठाना।
उक्खुंड पुं [दे] उल्मुक, अलात, मशाल। समूह। अञ्चल।
उक्खुड सक [तुड्] तोड़ना, टुकड़ा करना।
उक्खुडिअ वि [तुडित] खण्डित, छिन्न, भिन्न। व्यय किया हुआ।
उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ।
उक्खुब्भ अक [उत् + क्षुभ्] क्षुब्ध होना।
उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त।
उक्खुलंप सक [दे] खुजवाना।
उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त।
उक्खेव पुं [उत्क्षेप] उत्पाटन, उन्मूलन। ऊँचा करना। फेंकना। जो उठाया जाय वह।
उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्‌घात, भूमिका।
उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] ऊँचा फेंकनेवाला। पुं. एक जाति का पंखा।
उक्खेविअ अ [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप)।
उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] उत्क्षिप्त, उड़ाया हुआ। छिन्न, उखाड़ा हुआ।
उग अक [उत् + गम्] उदित होना।
उग (अप) वि [उद्‌गत] उदित।
उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ।
उगुणपण्ण स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] ऊनपचास।
उगुणवीसा स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस।
उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उनहत्तर।
उगुणउइ स्त्री [एकोननवति] नवासी।
उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी।
उग्ग अक [उद् + गम्] उदित होना।
उग्ग सक [उद् + घाटय्] खोलना।
उग्ग वि [उग्र] तेज, तीव्र, प्रबल। पुं. क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त किया था। °वई स्त्री [°वती] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात। °सिरि पुं [°श्रीक] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°सेण पुं [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदु-वंशीय राजा।

उग्गंठ सक [उत् + ग्रन्थ्] खोलना, गाँठ खोलना।

उग्गंध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित।

उग्गच्छ } अक [उद् + गम्] उदय होना।
उग्गम }

उग्गम पुं [उद्गम] उत्पत्ति, उद्भव। उदय। उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला एक भिक्षा-दोष।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित।

उग्गय वि [उद्गत] उत्पन्न। उदय-प्राप्त। व्यवस्थित।

उग्गह सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना। करना।

उग्गह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना।

उग्गह पुं [अवग्रह] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान-विशेष। अवधारण, निश्चय। प्राप्ति। भाजन। साध्वियों का एक उपकरण। योनिद्वार। ग्रहण करने योग्य वस्तु। आश्रय, वसति। वस्तु, जिसपर अपना प्रभुत्व हो। मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारों तरफ की शरीर-प्रमाण जमीन। °णंत न [°नन्त] जैन साध्वियों का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जाँघिया। °पट्ट पुंन [°पट्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ।

उग्गह पुं [अवग्रह] परोसने के लिए उठाया हुआ भोजन।

उग्गहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान।

उग्गहिअ वि [अवगृहीत] सामान्य रूप से ज्ञात। परोसने के लिए उठाया हुआ। गृहीत। आनीत। मुख में प्रक्षिप्त।

उग्गहिअ वि [दे] अच्छी तरह लिया हुआ।

उग्गा सक [उद् + गै] ऊँचे स्वर से गान करना। वर्णन करना। श्लाघा करना।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] अति गाढ़, प्रबल। स्वस्थ।

उग्गामिय वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ।

उग्गार } पुं [उद्गार] उक्ति। आवाज, ध्वनि। डकार। वमन। जल का छोटा प्रवाह। रोमन्थ, पगुराना।
उग्गाल }

उग्गाल पुं [दे. उद्गाल] पान की पिचकारी।

उग्गाल पुं [उद्गार] बाहर निकलना।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना।

उग्गाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना।

उग्गाह सक [उद् + ग्राहय्] तगादा करना। ऊँचे से चलना।

उग्गाह पुं. देखो उग्गाहा।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष।

उग्गाहिअ वि [दे. उद्ग्राहित] गृहीत। फेंका हुआ। प्रवर्तित। ऊँचे से चलाया हुआ।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तली हुई वस्तु।

उग्गिण्ण वि [उद्गीर्ण] कथित। वान्त। ऊपर किया हुआ।

उग्गिर देखो उग्गिल।

उग्गिल सक [उद् + गॄ] कहना, बोलना। डकार करना। उलटी करना। उठाना।

उग्गीय वि [उद्गीत] उच्च स्वर से गाया हुआ। न. सङ्गीत गीत।

उग्गीर देखो उग्गिर।

उग्गीव वि [उद्ग्रीव] उत्कण्ठित, उत्सुक। °किय वि [°कृत] उत्कण्ठित किया हुआ।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [दे] भावोद्रेक।

उग्गोव सक [उद् + गोपय्] खोजना। प्रकट करना। विमुग्ध करना। भ्रान्त होना।

उग्घ देखो उंघ।

उग्घट्टि } स्त्री [दे] अवतंस, शिरोभूषण।
उग्घट्टी }

उग्घड सक [उद् + घाटय्] खोलना।

उग्घड अक [उद् + घट्] खुलना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ। छिन्न, नष्ट किया हुआ।

उग्घर वि[उद्गृह]गृह-त्यागी, संन्यासी, साधु।

उग्घव देखो अग्घव।

उग्घसिय न [अवघर्षित] घर्षण।

उग्घाअ पुं [दे] समूह, सङ्घात। स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश।

उग्घाअ पुं [उद्घात] आरम्भ। प्रतिघात ठोकर लगना। लघूकरण, भाग-पात। उपोद्‍घात। ह्रास। न. प्रायश्चित्त-विशेष। निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त प्रायश्चित्त का वर्णन है।

उग्घाअ सक [उद्+घातय्] विनाश करना।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] लघु, छोटा। न. लघु प्रायश्चित्त।

उग्घाइय वि [उद्घातित] विनाशित। न. लघु प्रायश्चित्त। लघु प्रायश्चित्त वाला।

उग्घाइय न [उद्घातिक] लघु प्रायश्चित्त।

उग्घाड सक [उद्+घाटय्] खोलना। प्रकट करना। बाहर करना।

उग्घाड पुं[उद्घाट]प्रकट। वि. अनाच्छादित। थोड़ा बन्द किया हुआ। परिपूर्ण, अन्यून।

उग्घायण न [उद्घातन] नाश, विनाश। पूज्य-स्थान, उत्तम जगह। सरोवर में जाने का मार्ग।

उग्घार पुं [उद्धार] सिञ्चन।

उग्घिट्ठ } उग्घुट्ठ } वि [उद्घृष्ट] संघृष्ट।

उग्घुट्ठ वि [उद्घुष्ट] घोषित, उद्घोषित।

उग्घुट्ठ वि [दे] उत्प्रोञ्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित।

उग्घुस सक [मृज्] साफ करना।

उग्घुस सक [उद्+घुष्] देखो उग्घोस।

उग्घोस सक [उद्+घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना।

उग्घोसणा स्त्री [उद्घोषणा] ढिंढोरा पिटवा-कर जाहिर करना।

उग्घोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर।

उचिय वि [उचित] योग्य, अनुरूप। °ण्णु वि [°ज्ञ] विवेकी।

उच्च न [दे] नाभि-तल।

उच्च वि [उच्च, उच्चैस्] ऊँचा। उत्तम, उत्कृष्ट। °च्छंद वि [°च्छन्दस्] स्वेच्छाचारी। °त्त न [°त्व] ऊँचाई। उत्तमता। °त्तभयग, °त्तभयय पुं [°त्वभृतक] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथासमय नियत काम लिया जाय वह नौकर। °त्तरिया स्त्री [°त्तरिका] लिपि-विशेष। °त्थवणय न [°स्थापनक] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष। °वचिआ स्त्री [°ावचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे-तैसे रखना। °वाय पुं [°वाद] श्लाघा। देखो उच्चा।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत।

उच्चंडिय वि [दे] ऊँचा चढ़ाया हुआ।

उच्चंतय पुं [उच्चन्तग] दन्त-रोग।

उच्चंपिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा। आक्रान्त, दबाया हुआ, रौंदा हुआ।

उच्चड्डिअ वि [दे] ऊँचा फेंका हुआ।

उच्चत्त वि [उत्त्यक्त] पतित, त्यक्त।

उच्चत्तवरत्त न [दे] दोनों तरफ का स्थूल भाग। अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्तन। दोनों तरफ से ऊँचा-नीचा करना।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ़, मजबूत।

उच्चदिअ वि [दे] चुराया हुआ।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ़।

उच्चय सक [उत्+त्यज्] छोड़ देना।

उच्चय पुं. समूह, राशि। ऊँचा ढेर करना। नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर-ऊपर रख कर चीजों को बाँधना।

उच्चय पुं [अवचय] इकट्ठा करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्चर सक [उत्+चर्] पार जाना, उत्तीर्ण होना। बोलना। अक. समर्थ होना, पहुँच सकना। बाहर निकलना।

उच्चलण न [उच्चलन] उन्मर्दन, उत्पीड़न।

उच्चलिय वि [उच्चलित] चलित, गत।

उच्चल्ल वि [दे] अध्यासित, आरूढ़। विदारित।

उच्चल्ल सक [उत्+चल्] चलना, जाना। समीप में आना।

उच्चा अ [उच्चैस्] ऊँचा। उत्तम, श्रेष्ठ। °**गोत्त**, °**गोय** न [°गोत्र] उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ-वंश। कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माने-जाते कुल में उत्पन्न होता है। °**वय** न [°व्रत] महाव्रत। वि. महाव्रतधारी।

उच्चाअ वि [दे] श्रान्त। पुं. आलिङ्गन।

उच्चाइय वि [दे. उत्याजित] उत्थापित, उठाया हुआ।

उच्चाग पुं हिमाचल पर्वत। °**य** वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न।

उच्चाड वि [दे] विपुल, विशाल।

उच्चाड सक [दे] रोकना। अक. अफसोस करना।

उच्चाडण न [उच्चाटन] एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना। मन्त्र-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है।

उच्चाडणी स्त्री [उच्चाटनी] विद्या विशेष जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है।

उच्चार सक [उत्+चारय्] बोलना। मलोत्सर्ग करना।

उच्चार वि [दे] स्वच्छ।

उच्चारण न. कथन।

उच्चारिअ वि [दे] गृहीत, उपात्त।

उच्चाल सक [उत्+चालय्] ऊँचा फेंकना। दूर करना।

उच्चालइय वि [उच्चालयितृ] दूर करनेवाला, त्यागनेवाला।

उच्चाव सक [उच्चय्] ऊँचा करना, उठाना।

उच्चावय वि [उच्चावच] ऊँचा और नीचा। उत्तम और अधम। अनकूल और प्रतिकूल। असमञ्जस, अव्यवस्थित। नानाविध। विशेष उत्तम।

उच्चिट्ठ अक [उत्+स्था] खड़ा होना।

उच्चिडिम वि [दे] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज।

उच्चिण सक [उत्+चि] फूल वगैरह को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना।

उच्चिय देखो **उचिय**।

उच्चिवलय न [दे] कलुषित जल।

उच्चुंच वि [दे] दृप्त, अभिमानी।

उच्चुग वि [दे] अनवस्थित।

उच्चुड अक [उत्+चुड्] अपसरण करना।

उच्चुप्प सक [चट्] आरूढ़ होना।

उच्चुरण [दे] उच्छिष्ट।

उच्चुलउलिअ न [दे] कुतूहल से शीघ्र-शीघ्र जाना।

उच्चुल्ल वि [दे] उद्विग्न। अधिरूढ। भीत।

उच्चूड पुं. निशान का नीचे लटकता हुआ शृंगारित वस्त्रांश।

उच्चूर वि [दे] बहुविध।

उच्चूल पुं [अवचूल] निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश। औंधा-सिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर—खड़ा किया हुआ।

उच्चे देखो **उच्चिण**।

उच्चेय वि [उच्चेतस्] चिन्तातुर मनवाला।

उच्चेल्लर न [दे] ऊसर भूमि। जघनस्थानीय केश।

उच्चेव वि [दे] प्रकट, व्यक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्चोड पुं. [दे] शोषण ।
उच्चोदय पुं. चक्रवर्ती का एक देवकृत प्रासाद ।
उच्चोल पुं [दे] खेद, उद्वेग । नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाड़ी ।
उच्छ पुं [उक्षन्] वृषभ ।
उच्छ पुं [दे] आँत का आवरण । वि. न्यून, हीन ।
उच्छअ पुं [उत्सव] क्षण, उत्सव ।
°उच्छअ वि [पृच्छक] प्रश्न-कर्ता ।
उच्छइअ वि [उच्छदित] आच्छादित ।
उच्छंखल वि [उच्छृङ्खल] शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, बन्धन-शून्य । उद्धत ।
उच्छंग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भाग । गोद । पृष्ठ देश ।
उच्छंगिअ वि [उत्सङ्गित] कोरा, कोली या गोद में लिया हुआ ।
उच्छंगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ ।
उच्छंघ देखो उत्थंघ ।
उच्छंट पुं [दे] झड़प से की हुई चोरी ।
उच्छट्ट पुं [दे] चोर, डाकू ।
उच्छडिअ वि [दे] चोरी का माल ।
°उच्छण न [प्रच्छन] प्रश्न, पूछना ।
उच्छण्ण वि [उत्सन्न] छिन्न, खण्डित, नष्ट ।
उच्छत न [अपच्छत्र] अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न । मृषावाद ।
उच्छप्प सक [उत् + सर्पय्] उन्नत करना, प्रभावित करना ।
उच्छल अक [उत् + शल्] उछलना, ऊँचा जाना । कूदना । पसरना, फैलना ।
उच्छल्ल देखो उच्छल ।
उच्छल्ल वि [उच्छल] उछलनेवाला ।
उच्छल्लणा स्त्री [दे] अपवर्त्तना, अपप्रेरणा ।
उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल काटी गई हो वह ।
उच्छव देखो उच्छअ । उत्सेक ।
उच्छविअ न [दे] शय्या, बिछौना ।
उच्छह सक [उत् + सह्] उद्यम करना । अक. उत्साहित होना ।
उच्छाइअ वि [अवच्छादित] आच्छादित, ढका हुआ ।
उच्छाडिअ (अप) वि [अवच्छादित] ढका हुआ ।
उच्छाण देखो उच्छ = उक्षन् ।
उच्छाय पुं [उच्छ्राय] उत्सेध, ऊँचाई ।
उच्छाय सक [अव + छादय्] ढकना ।
उच्छायण वि [उच्छादन] नाशक ।
उच्छायणया } स्त्री [उच्छादना] उच्छेद,
उच्छायणा } विनाश । व्यवच्छेद, व्यावृत्ति ।
उच्छार देखो उत्थार = आ + क्रम् ।
उच्छाल सक [उत् + शालय्] उछालना, ऊँचा फेंकना ।
उच्छास देखो ऊसास ।
उच्छाह सक [उत् + साहय्] उत्साह दिखाना, उत्तेजित करना ।
उच्छाह पुं [उत्साह] उत्साह । दृढ़ उद्यम, स्थिर प्रयत्न । उत्कण्ठा, उत्सुकता । पराक्रम । शक्ति ।
उच्छाह पुं [दे] सूत का डोरा ।
उच्छिंद सक [उत् + छिद्] उन्मूलन करना, उखाड़ना ।
उच्छिंदण न [दे] उधार लेना ।
उच्छिंपग वि [अवच्छिम्पक] चोरों को खान-पान वगैरह की सहायता देनेवाला ।
उच्छिंपण न [उत्क्षेपण] ऊपर फेंकना । बाहर निकालना ।
उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] जूठा । अशिष्ट, असभ्य ।
उच्छिण्ण वि [उच्छिन्न] उच्छिन्न, उन्मूलित ।
उच्छित्त वि [दे] विक्षिप्त । पागल ।
उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ ।
उच्छित्त देखो उट्ठिय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्छित्त वि [उत्सिक्त] सींचा हुआ ।
उच्छिप्प देखो उक्खिव ।
उच्छिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा ।
उच्छिरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा ।
उच्छिल्ल न [दे] विवर । वि. अवजीर्ण ।
उच्छु देखो इक्खु । °जंत न [°यंत्र] ईख पेरने का सांचा ।
उच्छु पुं [दे] वायु ।
उच्छुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ।
उच्छुअ न [दे] डरते-डरते की हुई चोरी ।
उच्छुअरण न [दे] ईख का खेत ।
उच्छुआर वि [दे] संछन्न, ढका हुआ ।
उच्छुंडिअ वि [दे] बाण वगैरह से आहत । छीना हुआ ।
उच्छुच्छु वि [दे] अभिमानी ।
उच्छुण्ण वि [उत्क्षुण्ण] खण्डित, तोड़ा हुआ । आक्रान्त ।
उच्छुद्ध वि [दे] विक्षिप्त । पतित ।
उच्छुभ सक [अप + क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना ।
उच्छुभण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना ।
उच्छुर वि [दे] अविनश्वर, स्थायी ।
उच्छुरण न [दे] ईख का खेत । ईख ।
उच्छुल्ल पुं [दे] अनुवाद । खेद, उद्वेग ।
उच्छूढ वि [दे] आरूढ़, ऊपर बैठा हुआ ।
उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] उज्झित । चुराया हुआ । निष्कासित ।
उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] त्यक्त ।
उच्छूर देखो उल्लूर = तुड़ ।
उच्छूल देखो उच्चूल ।
उच्छेअ पुं [उच्छेद] नाश, उन्मूलन ।
उच्छेर अक [उत् + श्रि] ऊँचा होना, उन्नत होना । अधिक होना, अतिरिक्त होना ।
उच्छेव पुं [उत्क्षेप] ऊँचा करना, उठाना । फेंकना ।
उच्छेव पुं [उत्क्षेप] प्रक्षेप ।
उच्छेवण न [दे] घी ।
उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई ।
उच्छोडिय वि [उच्छोटित] मुक्त किया हुआ ।
उच्छोभ वि शोभा-रहित । न. चुगली ।
उच्छोल सक [उत् + मूलय्] उखाड़ना ।
उच्छोल सक [उत् + क्षालय्] प्रक्षालन करना ।
उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल ।
उच्छोलित्तु वि [उत्क्षालयितृ] डूबोनेवाला ।
उजु देखो उज्जु ।
उज्ज देखो ओय = ओजस् ।
उज्ज न [ऊर्ज] तेज, प्रताप । बल ।
उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनि] नगरी-विशेष ।
उज्जइणी }
उज्जंगल न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती । वि. दीर्घ, लम्बा ।
उज्जगरय पुं [उज्जागरक] जागरण ।
उज्जग्गिर न [उज्जागर] निद्रा का अभाव ।
उज्जग्गुज्ज वि [दे] निर्मल ।
उज्जड वि [दे] उजाड़, वसति-रहित ।
उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढ़ा ।
उज्जम अक [उद् + यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना ।
उज्जमण (अप) न [उद्यापन] उद्यापन, व्रत-समाप्ति कार्य ।
उज्जमिय (अप) वि [उद्यापित] समापित (व्रत)।
उज्जम्भ अक [उत् + जृम्भ्] जोर से जँभाई लेना ।
उज्जय हि [उद्यत] उद्योगी, प्रयत्नशील । °मरण न. मरण-विशेष ।
उज्जयंत पुं [उज्जयन्त] गिरनार पर्वत ।
उज्जर वि [दे] मध्य-गत, भीतर का । पुं. निर्जरण, क्षय ।
उज्जल अक [उद् + ज्वल्] जलना । प्रकाशित होना ।
उज्जल वि [उज्ज्वल] निर्मल । चमकीला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जल वि [दे] देखो उज्जल्ल ।

उज्जलिअ पुं [उज्ज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक ।

उज्जलिअ वि [उज्ज्वलित]उद्दीप्त, प्रकाशित । ऊँची ज्वालाओं से युक्त । न. उद्दीपन ।

उज्जल्ल वि [दे] पसीनावाला, मलिन, बलवान ।

उज्जल्ल न [औज्ज्वल्य] उज्ज्वलता ।

उज्जल्ला स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ।

उज्जव अक [उद् + यत्] प्रयत्न करना ।

उज्जवण देखो उज्जावण ।

उज्जह सक [उद् + हा] प्रेरणा करना ।

उज्जाअर, उज्जागर पुं [उज्जागर] जागरण, निद्रा का अभाव ।

उज्जाडिअ वि [दे] उजाड़ किया हुआ ।

उज्जाण न [उद्यान] उपवन । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] गोष्ठी । °पालअ, °वाल वि [°पालक, °पाल] माली ।

उज्जाणिअ वि [औद्यानिक]उद्यान-सम्बन्धी, बगीचा का ।

उज्जाणिअ वि [दे] निम्नीकृत ।

उज्जाणिआ, उज्जाणिगा स्त्री [औद्यानिका] गोष्ठी, गोठ ।

उज्जाणी स्त्री [औद्यानी] गोष्ठी ।

उज्जायण न [उद्यायन] गोत्र-विशेष ।

उज्जाल सक [उत् + ज्वालय्] उज्ज्वल करना, विशेष निर्मल करना ।

उज्जाल सक [उद् + ज्वालय्]उजाला करना । जलाना ।

उज्जालय वि[उज्ज्वालक]आग सुलगानेवाला ।

उज्जावण न [उद्यापन] व्रत का समाप्तिकार्य ।

उज्जाविय वि [दे] विकासित ।

उज्जित देखो उज्जयंत ।

उज्जीरिअ वि [दे] अपमानित, तिरस्कृत ।

उज्जीवण न [उज्जीवन] पुनर्जीवन, जिलाना । उद्दीपन ।

उज्जीविय वि [उज्जीवित] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ ।

उज्जु वि [ऋजु] निष्कपट, सीधा । °कड वि [°कृत] निष्कपट तपस्वी । °कड वि [°कृत्] माया-रहित आचरणवाला । °जड, °जड्ड वि [°जड] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझनेवाला । °मइ स्त्री [°मति] मनःपर्यव ज्ञान का एक भेद, सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव को जानना । वि. उक्त मनो-ज्ञानवाला । °वालिया स्त्री [°वालिका] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था । °सुत्त पुं [°सूत्र] वर्तमान वस्तु को ही माननेवाला नय-विशेष । सुय पुं [°श्रुत] देखो पूर्वोक्त अर्थ । °हत्थ पुं [°हस्त] दाहिना हाथ ।

उज्जु पुं [ऋजु] संयम ।

उज्जुआइअ वि [ऋजुकारित] सरल किया हुआ ।

उज्जुत्त वि [उद्युक्त] उद्यमी, प्रयत्नशील ।

उज्जुरिअ वि [दे] क्षीण, शुष्क, सूखा ।

उज्जूढ वि [उद्व्यूढ] धारण किया हुआ ।

उज्जेणग पुं [उज्जयनक] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम ।

उज्जेणी देखो उज्जइणी ।

उज्जोअ सक [उद् + द्योतय्] प्रकाश करना, उद्योत करना ।

उज्जोअ पुं [उद्योग] प्रयत्न, उद्यम ।

उज्जोअ पुं [उद्द्योत] प्रकाश, उजेला । °गर वि [°कर] प्रकाशक । उद्द्योत का कारण-भूत कर्मविशेष । °त्थ न [°स्त्र] शस्त्र-विशेष ।

उज्जोअग वि [उद्द्योतक] प्रकाशक ।

उज्जोअण न [उद्द्योतन]प्रकाशन, अवभासन । वि. प्रकाश करनेवाला । पुं. सूर्य । एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ।

उज्जोअय वि[उद्द्योतक] प्रकाशक । प्रभावक, उन्नति करनेवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जोमिआ स्त्री [दे] रश्मि, रस्सी ।
उज्जोव देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय् ।
उज्झ सक [उज्झ्] त्याग करना, छोड़ देना ।
उज्झ पुं [उज्झ, उद्ध्य] उपाध्याय, पाठक ।
उज्झअ, **उज्झग** वि [उज्झक] त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला ।
उज्झणिअ वि [दे] विक्रीत, निम्नीकृत ।
उज्झमण न [दे] पलायन, भागना ।
उज्झमाण वि [दे] पलायित, भागा हुआ ।
उज्झर पुं [निर्झर] पहाड़ का झरना । °वण्णी स्त्री [°पर्णी] जल-प्रपात ।
उज्झरिअ वि [दे] टेढ़ी नजर से देखा हुआ । विक्षिप्त । फेंका हुआ । परित्यक्त ।
उज्झल वि [दे] प्रबल, बलिष्ठ ।
उज्झलिअ वि [दे] प्रक्षिप्त । विक्षिप्त ।
उज्झस पुं [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न ।
उज्झसिअ वि [दे] उत्कृष्ट, उत्तम ।
°**उज्झा** देखो अउज्झा ।
उज्झाय पुं [उपाध्याय] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक ।
उज्झासि वि [उद्भासिन्] देदीप्यमान ।
उज्झिखिअ न [दे] लोकापवाद । वि. निन्दनीय । कथनीय ।
उज्झिय वि [उज्झित] विमुक्त । भिन्न । न. परित्याग । °य पुं [°क] एक सार्थवाह का पुत्र ।
उज्झिय वि [दे] शुष्क । निम्नीकृत ।
उज्झिया स्त्री [उज्झिता] एक सार्थवाह-पत्नी ।
उट्ट पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट ।
उट्टार पुं [अवतार] तीर्थ, जलाशय का तट ।
उट्टिगा देखो उट्टिया ।
उट्टिय, **उट्टियय** वि [औष्ट्रिक] ऊँट-सम्बन्धी । ऊँट के रोओं का बना हुआ । पुं. भृत्य । बड़ा ।
उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घड़ा, कुम्भ । °समण पुं [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु, जो बड़े घड़े में बैठ कर तपस्या करता है ।
उट्ठ अक [उत् + स्था] उठना, खड़ा होना ।
उट्ठ वि [उत्थ] उठा हुआ । °बइस अप [°पवेश] उठ-बैठ ।
उट्ठ पुं [ओष्ठ] ओठ ।
उट्ठ पुं [उष्ट्र] जलचर जन्तु-विशेष ।
उट्ठण देखो उट्ठाण ।
उट्ठंभ सक [अव + स्तभ्] सहारा देना । आक्रमण करना ।
उट्ठवण न [उत्थापन] ऊँचा करना, उठाना ।
उट्ठा देखो उट्ठ = उत् + स्था ।
उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान ।
उट्ठाइअ वि [उत्थित] जो तैयार हुआ हो, प्रगुण । उत्पन्न, उत्थित ।
उट्ठाण न [उत्थान] उठान, ऊँचा होना । उद्भव, उत्पत्ति । आरम्भ । उद्वसन, बाहर निकलना । °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष ।
उट्ठाय देखो उट्ठ = उत् + स्था ।
उट्ठाव सक [उत् + स्थापय्] उठाना ।
उट्ठावण देखो उट्ठवण ।
उट्ठावण देखो उवट्ठावणा ।
उट्ठावणा देखो उवट्ठावणा ।
उट्ठाविअ वि [उत्थापित] उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ । उत्पातित ।
उट्ठिय वि [उत्थित] खड़ा हुआ । उत्पन्न, उद्भूत । उदित । उद्यत, उद्युक्त । उद्वसित, बाहर निकला हुआ ।
उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित ।
उट्ठीअ (अप) देखो उट्ठिय ।
उट्ठुभ, **उट्ठुह** अक [अव + ष्ठीव्] थूकना ।
उठिअ (अप) देखो उट्ठिय ।
°**उड** पुंन [कुट] कुम्भ ।
°**उड** पुं [कूट] समूह, राशि ।
°**उड** देखो पुड ।
उडंक पुं [उटङ्क] तापस-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उडंब वि [दे] लिप्त हुआ।
उडज, उडय, उडव पुं [उटज] ऋषि-आश्रम, पर्ण-शाला।
उडाहिअ वि [दे] फेंका हुआ।
उडिअ वि [दे] खोजा हुआ।
उडिउ पुं [दे] उरद, धान्य-विशेष।
उडु पुं. एक देव-विमान। °प्पभ पुंन [°प्रभ] उडु नामक विमान के पूर्व तरफ स्थित एक देव-विमान। °मज्झ पुंन [°मध्य] उडु-विमान के दक्षिण तरफ का एक देव-विमान। °यावत्त पुंन [°कावर्त] उडुविमान के पश्चिम तरफ का एक देव-विमान। °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] उडुविमान के उत्तर तरफ का एक देव-विमान।
उडु न. नक्षत्र। विमान-विशेष। °प, °व पुं [°प] चन्द्रमा। जहाज, नौका। एक की संख्या। °वइ पुं [°पति] चन्द्र। °वर पुं. सूर्य।
उडु देखो उउ।
उडुंबरिज्जिया स्त्री [उदुम्बरीया] जैन मुनियों की एक शाखा।
उडुहिअ न [दे] विवाहिता स्त्री का कोप। वि. जूठा।
उडूहल पुंन [उडूखल] उलूखल।
उड्ड पुं [उड्र] उत्कल, ओड़, ओड्र नामों से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल उड़ीसा कहते हैं। इस देश का निवासी, उड़िया।
उड्ड वि [दे] कुँआ आदि को खोदनेवाला, खनक।
उड्डण पुं [दे] बैल, साँड़। वि. लम्बा।
उड्डंस देखो उद्दंस।
उड्डस पुं [दे] खटमल, खटकीरा, उड़िस।
उड्डहण पुं [दे] चोर, डाकू।
उड्डाअ पुं [दे] उद्गम, उद्भव।
उड्डाण न [उड्डयन] उड़ान, उड़ना।
उड्डाण पुं [दे] प्रतिशब्द, कुरर। पक्षि-विशेष। विष्ठा। मनोरथ। वि. गर्विष्ठ।
उड्डामर वि. उद्भट प्रबल। भीति। आडम्बर-वाला, टीपटापवाला।
उड्डाव सक [उद् + डायय्] उड़ाना।
उड्डाव वि [उड्डायक] उड़ानेवाला।
उड्डावण न [उड्डायन] उड़ाना। आकर्षण।
उड्डास पुं [दे] सन्ताप, परिताप।
उड्डाह पुं [उद्दाह] भयङ्कर दाह, जला देना। मालिन्य, निन्दा, उपघात।
उड्डिअ वि [औड्र] उड़ीसा देश का निवासी।
उड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ।
उड्डिआहरण न [दे] छुरी पर रक्खे हुए फूल को पाँव की दो उँगलियों से लेते हुए चल जाना।
उड्डिय वि [उड्डीन] उड़ा हुआ।
उड्डिहिअ वि [दे] ऊपर फेंका हुआ।
उड्डी अक [उद् + डी] उड़ना।
उड्डी स्त्री [औड्री] उत्कल देश की लिपि।
उड्डीण वि [उड्डीन] उड़ा हुआ।
उड्डुअ पुं [दे] डकार, उद्गार।
उड्डुय, उड्डोअ पुं [दे] देखो। उड्डुअ।
उड्डुवाडिय पुं [उड्डुवाटिक] भगवान् महावीर के एक गण का नाम।
उड्डुहिअ देखो उडुहिअ।
उड्डोय देखो उड्डुअ।
उड्ढ न [ऊर्ध्व] ऊपर, ऊँचा। वमन। वि. उत्तम, मुख्य। खड़ा, दण्डायमान। उपरितन। °कंडूयग पुं [°कण्डूयक] तापसों का एक सम्प्रदाय जो नाभि के ऊपर भाग में ही खुज-लाते हैं। °काय पुं. शरीर का उपरितन भाग। °काय पुं [°काक] काक। °गम वि ऊपर जानेवाला। °चर वि. ऊपर चलनेवाला, आकाश में उड़नेवाला (गृध्रादि)। °दिसा स्त्री [°दिश्] ऊर्ध्व दिशा। °रेणु पुं. परिमाण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष, आठ। °लोग, °लोय पुं [°लोक] स्वर्ग, देव-लोक। °वाय पुं [°वात] ऊँचा गया हुआ वायु।

उड्ढं ऊपर देखो।

उड्ढंक न [दे] मार्ग का उन्नत भू-भाग।

उड्ढल } पुं [दे] उल्लास, विकास।
उड्ढल्ल }

उड्ढविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ।

उड्ढा स्त्री [ऊर्ध्वा] ऊर्ध्व-दिशा।

उड्ढि [दे] देखो उद्धि।

उड्ढि देखो वुड्ढि।

उड्ढि देखो इद्धि।

उड्ढिय देखो उद्धरिअ = उद्धृत।

उड्ढिया स्त्री [दे] पात्र-विशेष। कम्बल वगैरह ओढ़ने का वस्त्र।

उणं देखो पुण = पुनर्।

उण न [ऋण] करजा।

उण }
उणा } देखो पुण।
उणाइ }

उणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनचास।

उणाइ पुं [उणादि] व्याकरण का एक प्रकरण।

उणाइ पुं [दे] प्रिय, पति, नायक।

उणो देखो पुण।

उण्ण न [ऊर्ण] भेड़ या बकरी के रोम, रोआँ। °कप्पास पुं [°कार्पास] ऊन। °णाभ पुं [°नाभ] मकड़ी।

°उण्ण देखो पुण्ण = पूर्ण।

उण्णअ सक [उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना।

उण्णइ स्त्री [उन्नति] अभ्युदय।

उण्णम अक [उत् + नम्] ऊँचा होना, उन्नत होना।

उण्णम वि [दे] समुन्नत, ऊँचा।

उण्णय वि [उन्नत] ऊँचा। गुणवान्। अभिमानी। गर्व।

उण्णय पुं [उन्नय] नीति का अभाव।

उण्णा स्त्री [ऊर्णा] ऊन, भेड़ के रोम। °पिपीलिया स्त्री [°पिपीलिका] चींटी।

उण्णाअक वि [उन्नायक] उन्नति-कारक। पुंन. छन्दःशास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल की संज्ञा।

उण्णाग पुं [उन्नाक] ग्राम-विशेष।

उण्णाम पुं [उन्नाम] उन्नति, ऊँचाई। अभिमान। गर्व का कारण-भूत कर्म।

उण्णाम सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना।

उण्णाल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना।

उण्णालिय वि [दे] कृश। उन्नमित।

उण्णिअ वि [उन्नीत] वितर्कित, विचारित।

उण्णिअ वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ।

उण्णिद्द वि [उन्निद्र] विकसित, उल्लसित। निद्रा-रहित।

उण्णी सक [उद् + नी] ऊँचा ले जाना। कहना।

उण्णुइअ पुं [दे] हुँकार। आकाश की तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज। वि. गर्वित।

उण्ह पुं [उष्ण] गरमी। वि. तप्त।

उण्हवण न [उष्णन] गरम करना।

उण्हिआ स्त्री [दे] कृसर, खिचड़ी।

उण्हीस पुंन [उष्णीष] पगड़ी, मुकुट।

उण्होदयभंड पुं [दे] भमरा।

उण्होला स्त्री [दे] कीट-विशेष।

उताहो अ [उताहो] अथवा।

उत्त वि [उक्त] कथित।

उत्त वि [उप्त] बोया हुआ। निष्पादित, उत्पादित।

उत्त पुं [दे] वनस्पति-विशेष।

°उत्त वि [गुप्त] रक्षित।

उत्त देखो पुत्त।

उत्तइय } वि [उत्तेजित]।
उत्तुइय }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तंघ देखो उत्थंघ = रुध् ।

उत्तंघ देखो उत्तंभ ।

उत्तंत देखो वुत्तंत ।

उत्तंपिअ वि [दे] खिन्न, उद्विग्न ।

उत्तंभ सक [उत् + स्तम्भ्] रोकना । सहारा देना ।

उत्तंभय वि [उत्तम्भक] रोकनेवाला । अवलम्बन देनेवाला, सहायक ।

उत्तंस पुं [अवतंस] शिरो-भूषण ।

उत्तंस पुं [उत्तंस] कर्णपूरक, कर्णभूषण ।

उत्तइय वि [दे] उत्तेजित अधिक दीपित ।

उत्तण वि [दे] गर्वित । देखो उत्तुण ।

उत्तण वि [उत्तृण] तृणवाली जमीन ।

उत्तणुअ वि [उत्तनुक] अभिमानी ।

उत्तत्त वि [उत्तप्त] बहुत गरम ।

उत्तत्त वि [दे] अध्यासित, आरूढ़ ।

उत्तत्थ वि [उत्त्रस्त] भय-भीत, त्रास-प्राप्त ।

उत्तद्ध देखो उत्तरद्ध ।

उत्तप्प वि [दे] अभिमानी । अधिक गुणवाला ।

उत्तप्प वि [उत्तप्त] देदीप्यमान ।

उत्तम पुं. एक दिन का उपवास । वि. श्रेष्ठ, सुन्दर । मुख्य । परम, उत्कृष्ट । अन्तिम । पुं. मेरुपर्वत । संयम, त्याग । राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लङ्केश । °ट्ठ पुं. [°ार्थ] श्रेष्ठ वस्तु । मोक्ष । मोक्षमार्ग । अनशन, मरण । °ण्ण वि [°र्ण] लेनदार ।

उत्तम वि [उत्तमस्] अज्ञान-रहित ।

उत्तमंग न [उत्तमाङ्ग] मस्तक ।

उत्तमा स्त्री 'णायाधम्मकहा' का एक अध्ययन । इन्द्राणी । पक्ष की प्रथम रात्रि ।

उत्तम्म अक [उत् + तम्] खिन्न होना, उद्विग्न होना । दिलगीर होना ।

उत्तर अक [उत् + तॄ] उतरना, नीचे आना । बाहर निकलना । सक. पार करना ।

उत्तर अक [अव + तॄ] उतरना, नीचे आना ।

उत्तर वि. श्रेष्ठ, प्रशस्त । प्रधान । उत्तर-दिशा में रहा हुआ । उपरि-वर्ती । अधिक, अतिरिक्त । अवान्तर, भेद, शाखा । ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल वगैरह । न. प्रत्युत्तर । वृद्धि । पुं. ऐरवत क्षेत्र के बाईसवें भावी जिनदेव का नाम । वर्षा-कल्प । आर्य-महागिरि के प्रथम शिष्य । °कंचुय पुं [°कञ्चुक] बख्तर-विशेष । °करण न. उपस्कार, संस्कार, विशेष-गुणाधान । °कुरा स्त्री [°कुरु] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष । °कुरु पुं. वर्ष-विशेष । देव-विशेष । °कुरुकूड न [°कुरुकूट] माल्यवन्त पर्वत का एक शिखर । देव-विशेष । °कोडि स्त्री [°कोटि] सङ्गीतशास्त्रप्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना । °गंधारा स्त्री [°गान्धारा] देखो पूर्वोक्त अर्थ । °गुण पुं. शाखा गुण, अवान्तर गुण । °चावाला स्त्री. नगरी-विशेष । °चूल [°चूड] गुरु वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर बड़े आवाज से 'मत्थएण वंदामि' कहना । °चूलिया स्त्री [°चूलिका] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ । °ड्ढ न [°ार्ध] पिछला आधा भाग, उत्तरार्ध । °दिसा स्त्री [°दिश्] उत्तर-दिशा । °द्ध न [°ार्ध] पिछला आधा भाग । °पगइ, °पयडि स्त्री [°प्रकृति] कर्मों के अवान्तर भेद । °पच्चत्थिमिल्ल पुं [°पाश्चात्य] वायव्य कोण । °पट्ट पुं. बिछौना के ऊपर का वस्त्र । °पारणग न [°पारणक] उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण । °पुरच्छिम, °पुरत्थिम पुं [°पौरस्त्य] ईशान कोण । °पोट्ठवया स्त्री [°प्रौष्ठपदा] उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र । °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र । °बलिस्सह पुं. एक प्रसिद्ध जैन साधु । उत्तर बलिस्सह-नामक स्थविर से निकाला हुआ एक गण, भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-सम्प्रदाय । °भद्दवया स्त्री [भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष । °मंदा स्त्री. मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना । °महुरा स्त्री [°मथुरा] नगरी-विशेष । °वाय पुं [°वाद] उत्तरवाद ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°विक्किय, °वेउव्विय वि [°वैक्रिय] स्वाभाविक-भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय। °साला स्त्री [°शाला] क्रीडा-गृह। पीछे से बनाया हुआ घर। वाहन-गृह, हाथी-घोड़ा आदि बाँधने का स्थान, तबेला। °साहग, °साहय वि [°साधक] विद्या, मन्त्र वगैरह का साधन करनेवाले का सहायक। देखो उत्तरा°।

उत्तरंग न [उत्तरङ्ग] दरवाजे का ऊपर का काष्ठ। वि. चञ्चल।

उत्तरकुरु पुं.ब. देव-भूमि, स्वर्ग। स्त्री. भगवान् नेमिनाथ की दीक्षाशिविका।

उत्तरणवरंडिया स्त्री [दे] उडुप, जहाज।

उत्तरविउव्विय वि [उत्तरवैक्रियिक] उत्तर-वैक्रिय नामक लब्धि से सम्पन्न।

उत्तरसंग देखो उत्तरा-संग।

उत्तरा स्त्री. उत्तर-दिशा। मध्यम ग्राम की की एक मूर्च्छना। एक दिशा-कुमारी देवी। दिगम्बर-मत प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनामख्यात भगिनी। अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम। °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी। °पह पुं [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश। °फग्गुणी देखो उत्तरफग्गुणी। °भद्दवया देखो उत्तर-भद्दवया। °यण न. सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, माघ से लेकर छः महीना। °यया स्त्री [°यता] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना। °वह देखो °पह। °संग पुं. उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण। °समा स्त्री. मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना। °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष। °हुत्त न [°भिमुख] उत्तर की तरफ। वि. उत्तर दिशा को तरफ मुँह किया हुआ।

उत्तरिज्ज } न [उत्तरीय] चादर, दुपट्टा।
उत्तरिय }

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो उत्तर।

उत्तरिल्ल वि [औत्तराह] उत्तर-दिशा या काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-सम्बन्धी, उत्तरीय।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय = उत्तरीय।

उत्तरीकरण न. उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना।

उत्तरोट्ठ पुं [उत्तरौष्ठ] ऊपर का ओठ। मूँछ।

उत्तलहअ पुं [दे] विटप, अङ्कुर।

उत्तव वि [उक्तवत्] जिसने कहा हो वह।

उत्तस अक [उत् + त्रस्] त्रास पाना, पीड़ित होना। भयभीत होना।

उत्ताड सक [उत् + ताडय्] ताड़न करना। वाद्य बजाना।

उत्ताण वि [उत्तान] उन्मुख, ऊर्ध्वमुख। चित्त। विस्फारित। अनिपुण। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोनेवाला।

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरण्ड-सम्बन्धी (पत्ती वगैरह)।

उत्ताणिअ वि [उत्तानित] चित्त किया हुआ। चित्त सोनेवाला।

उत्तार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना।

उत्तार सक [उत् + तारय्] पार पहुँचाना। बाहर निकालना। दूर करना।

उत्तार पुं [उत्तार] उतरना, पार करना। परित्याग। उतारनेवाला, पार करानेवाला।

उत्तार पुं [दे] आवास-स्थान।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारनेवाला।

उत्ताल वि [उत्ताल] महान्, बड़ा। उतावला। उद्धत। बेताल, ताल-विरुद्ध गान का एक दोष।

उत्ताल न [दे] लगातार रुदन।

उत्ताल देखो उत्ताड।

उत्तावल न [दे] उतावल, शीघ्रता। वि. शीघ्रकारी, आकुल।

उत्तास सक [उत् + त्रासय्] भयभीत करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीड़ना ।
उत्तासइत्तु वि [उत्त्रासयितृ] भय-भीत करने-वाला । हैरान करनेवाला ।
उत्तासणअ } वि [उत्त्रासनक] भयंकर,
उत्तासणग } उद्वेगजनक । हैरान करनेवाला ।
उत्ताहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ।
उत्ति स्त्री [उक्ति] वचन, वाणी ।
उत्तिंग पुं [उत्तिङ्ग] गर्दभाकार कीट-विशेष । चीटियों का बिल । चींटियों की सन्तान । तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-बिन्दु । वनस्पति-विशेष, सर्पच्छत्रा । न. छिद्र । °लेण न [°लयन] कीट-विशेष का गृह—बिल ।
उत्तिंगपणग पुंन [उत्तिङ्गपनक] कीटिका-नगर, चींटियों का बिल ।
उत्तिट्ठ अक [उत् + स्था] उठाना । उदित होना ।
उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-शून्य ।
उत्तिण्ण वि [उत्तीर्ण] बाहर निकला हुआ । पार पहुँचा हुआ । जो कम हुआ हो । रहित । निपटा हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह । उल्लंघित, अतिक्रान्त ।
उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] नीचे उतरा हुआ ।
उत्तित्थ पुंन [उत्तीर्थ] अपमार्ग ।
उत्तिम देखो उत्तम ।
उत्तिमंग देखो उत्तमंग ।
उत्तिरिविडि } स्त्री [दे] भाजन वगैरह का
उत्तिवडा } ऊँचा ढेर ।
उत्तुंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत ।
उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ।
उत्तुण वि [दे] अभिमानी ।
उत्तुप्पिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना ।
उत्तुय सक [उत् + तुद्] पीड़ा करना, हैरान करना ।
उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] गर्व । वि. अभिमानी ।
उत्तुर्व वि [दे] दृप्त ।
उत्तुहिअ वि [दे] उत्खादित, छिन्न, नष्ट ।
उत्तूह पुं [दे] तट-शून्य कूप ।
उत्तेअ वि [उत्तेजस्] तेजस्वी, प्रखर । पुं. मात्रावृत्त का एक भेद ।
उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजन ।
उत्तेइअ } वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्सा-
उत्तेजिअ } हित, प्रेरित ।
उत्तेड पुं [दे] बिन्दु ।
उत्थ न [उक्थ] स्तोत्र-विशेष । योगविशेष ।
उत्थ वि. उत्पन्न, उत्थित ।
उत्थ (शौ) देखो उट्ठ = उत् + स्था ।
उत्थइय वि [अवस्तृत] व्याप्त । प्रसारित । आच्छादित ।
उत्थंगिअ देखो उत्थंघिअ = उत्तम्भित ।
उत्थंघ सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना ।
उत्थंघ सक [उत्+स्तम्भ्] उठाना । अव-लम्बन देना । रोकना ।
उत्थंघ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना ।
उत्थंघ सक [रुध्] रोकना ।
उत्थंघ पुं [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलाना ।
उत्थंघअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ ।
उत्थंभि वि [उत्तम्भिन्] आघात-प्राप्त, अव-लम्बन करनेवाला ।
उत्थंभिअ वि [उत्तम्भित] अवलम्बित । रुका हुआ । बन्धन-मुक्त किया हुआ ।
उत्थग्घ पुं [दे] सम्मर्द, उपमर्द ।
उत्थप्पण देखो उट्ठवण ।
उत्थय देखो उत्थइअ ।
उत्थर सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना । दबाना ।
उत्थर सक [अव + स्तृ] आच्छादन करना । पराभव करना ।
उत्थर } सक [उत् + स्तृ] आच्छादन
उत्थल्ल } करना (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्थरिय वि [दे] निस्सृत, निर्गत। उठा हुआ।
उत्थल न [उत्स्थल] ऊँची धूल-राशि। उन्मार्ग, कुपथ।
उत्थलिअ न [दे] घर। वि. उन्मुख-गत।
उत्थल्ल अक [उत् + शल्] उछलना, कूदना।
उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [दे] दोनों पार्श्वों से परिवर्तन, उथल-पुथल।
उत्थल्ला स्त्री [दे] परिवर्त्तन। उद्वर्त्तन।
उत्थाइ वि [उत्थायिन्] उठनेवाला।
उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ।
उत्थाण न [उत्थान] वीर्य, बल, पराक्रम। उत्पत्ति।
उत्थामिय (अप) वि [उत्थापित] उठाया हुआ।
उत्थार सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दबाना।
उत्थार देखो उच्छाह = उत्साह।
उत्थिय देखो उत्थइअ।
°उत्थिय वि [°तीर्थिक] मतानुयायी, दर्शनानुयायी।
°उत्थिय वि [°यूथिक] यूथ-प्रविष्ट।
उत्थुभण न [अवस्तोभन] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू-थू आवाज करना।
उद न. जल। °उल्ल, °ओल्ल वि [°आर्द्र] पानी से गीला। °गत्ताभ न [°गर्त्ताभ] गोत्र-विशेष।
उदइय देखो ओदइय।
उदइल्ल वि [उदयिन्] उदयवान्, उन्नतिशील।
उदंक पुं. जल का पात्र-विशेष, जिससे जल ऊँचा छिड़का जाता है।
उदंच सक [उद् + अञ्च्] ऊँचा जाना।
उदंचण पुं. ऊँचा फेंकना। वि. ऊँचा फेंकनेवाला।
उदंत पुं. हकीकत, वृत्तान्त।
उदंप पुं [उद्दृप्त] कृष्णराज पुत्र उदय।
उदग पुंन [उदक] पानी। वनस्पति-विशेष। जलाशय। पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु। सातवें भावी जिनदेव। °गब्भ पुं [°गर्भ] बादल। °दोणि स्त्री [°द्रोणि] जल रखने का पात्र-विशेष, ठण्ढा करने के लिए गरम लोहा जिसमें डाला जाता है वह। जो अरघट्ट में लगाया जाता है वह छोटा घड़ा। °पोग्गल न [°पौद्गल] मेघ। °मच्छ पुं [°मत्स्य] इन्द्र-धनुष का खण्ड, उत्पात-विशेष। °माल पुंस्त्री. जल का ऊपर चढ़ता तरङ्ग, उदकशिखा, वेला। °वत्थि स्त्री [°वस्ति] पानी भरने का मशक। °सिहा स्त्री [°शिखा] वेला। °सीम पुं [°सीमन्] पर्वत-विशेष।
उदग्ग वि [उदग्र] सुन्दर। उत्कट, प्रखर। मुख्य।
उदड्ढ पुं [उद्दग्ध] एक नरक-स्थान।
उदत्त वि [उदात्त] उदार।
उदत्त वि [उदात्त] जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर।
उदन्ना स्त्री [उदन्या] तृषा।
उदय देखो उदग।
उदय पुं. लाभ। उन्नति। उत्पत्ति। कर्म-परिणाम। प्रादुर्भाव। भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिनदेव। भरतक्षेत्र में होनेवाले तीसरे जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम। स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार। °यल पुं [°चल] पर्वत-विशेष, जहाँ सूर्य उदित होता है।
उदयण पुं [उदयन] राजा सिद्धराज का प्रसिद्ध मन्त्री। कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र। एक विख्यात जैन राजा। न. उन्नति। वि. उन्नत होनेवाला, प्रवर्धमान।
उदर न. पेट। पेट की बीमारी।
उदरंभरि वि. स्वार्थी, अकेलपेटू।
उदरि वि [उदरिन्] पेट की बीमारीवाला।
उदरिय वि [उदरिक] ऊपर देखो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदवाह वि. जल-वाहक। पुं. छोटा प्रवाह।
उदसी [दे. उदश्वित् ?] तक।
उदहि पुं [उदधि] समुद्र। भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार। °कुमारपुं. देवों की एक जाति। देखो उअहि।
उदाइ पुं [उदायिन्] एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बनकर धर्मच्छल से मारा था और जो भविष्य में तीसरा जिनदेव होगा। पुं. राजा कूणिक का पट्टहस्ती।
उदाइण देखो उदायण।
उदात्त देखो उदत्त।
उदायण पुं [उदायन] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी।
उदार देखो उराल।
उदासि वि [उदासिन्] उदास, उदासीन। °व न [°त्व] औदासीन्य।
उदासीण वि [उदासीन] मध्यस्थ। उपेक्षा करनेवाला।
उदाहड वि [उदाहृत] कथित, दृष्टान्तित।
उदाहर सक [उदा + हृ] कहना। प्रतिपादन करना।
उदाहिय वि [उदाहृत] कथित, प्रतिपादित। दृष्टान्तित।
उदाहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका गया।
उदाहु देखो उदाहर।
उदाहु अ [उताहो] अथवा।
उदाहू देखो उदाहर।
उदाहो देखो उदाहु = उताहो।
उदि अक [उद् + इ] उन्नत होना। उत्पन्न होना।
उदिक्खिअ वि [उदीक्षित] अवलोकित।
उदिण्ण वि [उदीच्य] उत्तर-दिशा में उत्पन्न।
उदिण्ण वि [उदीर्ण] उदित। फलोन्मुख (कर्म)। उत्पन्न। उत्कट, प्रबल।
उदिय वि [उदित] उद्गत। उन्नत। उक्त।
उदीण वि [उदीचीन] उत्तर दिशा से सम्बन्ध रखनेवाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न। °पाईणा स्त्री [°प्राचीना] ईशान-कोण।
उदीणा स्त्री [उदीचीना] उत्तर-दिशा।
उदीर सक [उद् + ईरय्] प्रेरणा करना। कहना, प्रतिपादन करना। जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना।
उदीरग देखो उदीरय।
उदीरय न [उदीरण] कथन, प्रतिपादन। प्रेरणा। काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव।
उदीरय वि [उदीरक] कथक, प्रतिपादक। प्रेरक, प्रवर्तक। उदीरणा करनेवाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्मफल का अनुभव करनेवाला।
उदीरिद, उदीरिय } वि [उदीरित] प्रेरित, कथित, प्रतिपादित। जनित, कृत। समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फल का अनुभव किया जाय वह।
उदु देखो उउ।
उदुंबर देखो उंबर।
उदुरुह सक [उद् + रुह्] ऊपर चढ़ना।
उदूखल देखो उऊखल।
उदूग पुंन [दे] पृथिवी-शिला।
उदूलिय वि [दे] अवनत।
उदूहल देखो उऊहल।
उद्द न [दे] जल-मानुष। बैल के कंधे का कूबड़। मत्स्य-विशेष। उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र।
उद्द वि [आर्द्र] गीला।
उद्दअ वि [मद्यत] उद्यम-युक्त।
उद्दंड, उद्दंडग } वि [उद्दण्ड] प्रचण्ड, उद्धत। पुं. हाथ में दण्ड को ऊँचा रखकर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चलनेवाले तापसों की एक जाति ।

उद्दंतुर वि. जिसका दाँत बाहर आया हो वह । ऊँचा ।

उद्दंभ पुं. छन्द का एक भेद ।

उद्दंस पुं. मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट ।

उद्दड्ढ पुं [उद्दग्ध] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास । °मज्झिम पुं [°मध्यम] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास । °वत्त पुं [°वर्त्त] देखो पूर्वोक्त अर्थ । °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ ।

उद्दद्दर न [दे. ऊर्ध्वदर] सुभिक्ष, सुकाल ।

उद्दम पुन देखो उज्जम = उद्यम ।

उद्दरिअ वि [दे] उखाड़ा हुआ । स्फुटित, विकसित ।

उद्दरिअ वि [उद्+दृप्त] गर्वित, उद्धत ।

उद्दलण न [उद्दलन] विदारण ।

उद्दव सक [उद्, उप+द्रु] उपद्रव करना, पीड़ा करना । मारना, विनाश करना, हिंसा करना ।

उद्दवअ पुं [उद्द्रव, उपद्रव] उपद्रव । हरकत । पीड़ा । विनाश, हिंसा ।

उद्दवइत्तु वि [उद्द्रोतृ उपद्रोतृ] उपद्रव करनेवाला । हिंसक, विनाशक ।

उद्दवण न [अपद्रावण] मृत्यु को छोड़कर सब प्रकार का दुःख ।

उद्दवाइअ देखो उड्डुवाइय ।

उद्दवेत्तु देखो उद्दवइत्तु ।

उद्दा सक [उद्+दा] बनाना, निर्माण करना ।

उद्दा अक [अव+द्रा] मरना ।

उद्दाइआ स्त्री [उद्द्रात्री, उपद्रोत्री] उपद्रव करनेवाली स्त्री ।

उद्दाइ देखो उद्दाय ।

उद्दाण स्त्री [दे] चूल्हा ।

उद्दाण वि [अवद्रात] मृत ।

उद्दाम वि. स्वच्छन्द । प्रचण्ड, प्रखर । अव्यवस्थित ।

उद्दाम पुं [दे] संघात । स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ।

उद्दामिय वि [उद्दामित] लटकता हुआ, प्रलम्बित ।

उद्दाय अक [शुभ्] शोभित होना, अच्छा मालूम देना ।

उद्दार देखो उराल = उदार ।

उद्दारिअ वि [दे] युद्ध से पलायित । उत्खात, उन्मूलित ।

उद्दाल सक [आ+छिद्] खींच लेना, हाथ से छीन लेना ।

उद्दाल पुं [अवदाल] दबाव, अवदलन । वृक्ष-विशेष । अवसर्पिणी काल का प्रथम आरा—समय-विशेष ।

उद्दालिय वि [आच्छिन्न] छीना हुआ, खींच लिया गया ।

उद्दावणया स्त्री [उपद्रावणा] उपद्रव, हैरानी ।

उद्दाह पुं. प्रखर-दाह । आग ।

उद्दाहग वि [उद्दाहक] आग लगानेवाला ।

उद्दिट्ठ वि [उद्दिष्ट] कथित, प्रतिपादित । निर्दिष्ट । दान के लिए संकल्पित (अन्न, पानादि) । लक्षित । न. उद्देश्य । °कड वि [°कृत] साधु के उद्देश्य से बनाया हुआ, साधु के निमित्त किया हुआ (भोजनादि) ।

उद्दिट्ठा स्त्री [दे. उद्दिष्टा] अमावस्या ।

उद्दित्त वि [उदीप्त] प्रज्ज्वलित ।

उद्दिस सक [उद्+दिश्] आज्ञा करना ।

उद्दिस सक [उद्+दिश्] नाम-निर्देश-पूर्वक वस्तु का निरूपण करना । देखना । संकल्प करना । लक्ष्य करना । अंगीकार करना । सम्मति लेना । समाप्त करना । उपदेश देना ।

उद्दिसिअ देखो उद्दिट्ठ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्दिसिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, वितर्कित।

उद्दीरणा देखो उदीरणा।

उद्दीवण न [उद्दीपन] उत्तेजन। वि. उत्तेजक। उद्दीपक।

उद्दीविअ वि [उद्दीपित] प्रदीपित, प्रज्ज्वालित।

उद्दुय वि [उद्द्रुत] पलायित।

उद्दुय वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ।

उद्देस देखो उद्दिस।

उद्देस पुं [उद्देश] पठन-विषयक गुर्वाज्ञा। नाम उच्चारण। वाचन, सूत्र-प्रदान, सूत्रों के मूल पाठ का अध्यापन।

उद्देस पुं [उद्देश] नाम-निर्देशपूर्वक वस्तु-निरूपण। शिक्षा, उपदेश। व्यपदेश, व्यवहार। लक्ष्य। अभिप्राय, मतलब। ग्रन्थ का एक अंश। प्रदेश। गुरुप्रतिज्ञा, गुरु-वचन। जगह, स्थान।

उद्देस वि [औद्देश] देखो **उद्देसिय** = औद्देशिक।

उद्देसण न [उद्देशन] पाठन, वाचना, अध्यापन। अधिकारिता, योग्यता।

उद्देसणकाल पुं [उद्देशनकाल] मूलसूत्र के अध्यापन का समय।

उद्देसिय न [औद्देशिक] भिक्षा का एक दोष, साधु के लिए भोजन-निर्माण। वि. साधु निमित्त बनाया हुआ (भोजन)।

उद्देसिय वि [औद्देशिक] उद्देश-सम्बन्धी उद्देश से किया हुआ। विवाह आदि के उपलक्ष्य में किये गये जीमन में निमन्त्रितों के भोजन की समाप्ति के अनन्तर बचे हुए वे खाद्य द्रव्य जिनको सर्वजातीय भिक्षुओं को देने का संकल्प किया गया हो।

उद्देह पुं. भगवान् महावीर का एक गण—साधु समुदाय।

उद्देहलिया स्त्री [उद्देहलिका] वनस्पति-विशेष।

उद्देहिया, **उद्देही** } स्त्री [दे] दीमक, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष।

उद्दोहग वि [उद्द्रोहक] घातक।

उद्ध देखो उड्ढ।

उद्धअ वि [उद्धत] उन्मत्त। अभिमानी। उत्पाटित। अतिप्रबल।

उद्धअ देखो **उद्धरिअ** = उद्धृत।

उद्धअ वि [दे] शान्त, ठण्ढा।

उद्धंस सक [उत् + धृष्] मारना। आक्रोश करना, गाली देना। वध करना।

उद्धंस सक [उद् + ध्वंस्] विनाश करना।

उद्धच्छवि वि [दे] विसम्वादित, अप्रमाणित।

उद्धच्छविअ वि [दे] सज्जित।

उद्धच्छिअ वि [दे] निषिद्ध।

उद्धड वि [उद्धृत] उठा कर रखा हुआ।

उद्धण वि [दे] अविनीत।

उद्धत्थ वि [दे] वञ्चित।

उद्धदेहिय न [और्ध्वदेहिक] अग्नि-संस्कार आदि अन्त्येष्टि क्रिया।

उद्धम सक [उद् + ध्मा] शङ्ख वगैरह फूँकना, वायु भरना। ऊँचा फेंकना, उड़ाना।

उद्धर सक [उद् + हृ] फँसे हुए को निकालना। उन्मूलन करना। दूर करना। खींचना। जीर्ण मन्दिर वगैरह का परिष्कार-संस्कार करना। किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल करना।

उद्धर (अप) देखो उद्धुर।

उद्धरण वि [दे] उच्छिष्ट।

उद्धरिअ वि [उद्धृत] उत्पाटित, उत्क्षिप्त। किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना। आकृष्ट। निष्कासित। जीर्ण वस्तु का परिष्कार करना।

उद्धरिअ वि [दे] अर्दित, विनाशित।

उद्धल पुं [दे] दोनों तरफ की अप्रवृत्ति।

उद्धव पुं. ऊधो, श्रीकृष्ण का चाचा, मित्र और भक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्धवअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ।
उद्धविअ वि [दे] अर्चित, पूजित ।
उद्धा } सक [उद् + धाव्] दौड़ना । वेग
उद्धाअ } से जाना । ऊँचे जाना । फैलना ।
उद्धाअ अक [ऊर्ध्वाय्] ऊँचा होना ।
उद्धाअ पुं [दे] विषमोन्नत-प्रदेश । समूह । वि. थका हुआ ।
उद्धार पुं. रक्षण । ऋण देना, उधार देना । अपहरण । अपवाद । धारणा, पढ़े हुए पाठ को नहीं भूलना । °पलिओवम न [°पल्योपम] समय का परिमाण । °समय पुं. समय-विशेष । °सागरोवम न [°सागरोपम] समय का एक दीर्घ परिमाण ।
उद्धरय वि [उद्धारक] उद्धार-कारक ।
उद्धाव देखो उद्धा ।
उद्धवण न [उद्धावन] नीचे देखो ।
उद्धावणा स्त्री [उद्धावना] प्रबल-प्रवृत्ति । दूर-गमन । कार्य की शीघ्र सिद्धि ।
°उद्धि देखो बुद्धि ।
उद्धि स्त्री [दे] गाड़ी का एक अवयव ।
उद्धिअ देखो उद्धरिअ = उद्धृत ।
उद्धीमुह वि [ऊर्ध्वीमुख] मुँह ऊँचा किया हुआ ।
उद्धुंधलिय वि [दे] धुँधलाया हुआ ।
उद्धुणिय देखो उद्धुय ।
उद्धुम सक [पृ] पूर्ण करना ।
उद्धुमा सक [उद् + ध्मा] आवाज करना । जोर से धमनी को चलाना ।
उद्धुमाइअ वि [उद्ध्मापित] ठण्ढा किया हुआ, निर्वापित ।
उद्धुमाय वि [दे] परिपूर्ण । उन्मत्त ।
उद्धुय वि [उद्धूत] पवन से उड़ा हुआ । प्रसृत, फैला हुआ । प्रकम्पित । उत्कट, प्रबल । प्रकट ।
उद्धुर वि [उद्धुर] ऊँचा । प्रबल ।
उद्धुसिय वि [उद्धुषित] रोमाञ्च । रोमाञ्चित ।
उद्धू सक [उद् + धू] कँपाना, चलाना । पंखा करना ।
उद्धूणिय देखो उद्धुय ।
उद्धूद (शौ) देखो उद्धुय ।
उद्धूल सक [उद् + धूलय्] व्याप्त करना । धूलि लगाना ।
उद्धूवणिया स्त्री [उद्धूपनिका] धूप देना ।
उद्धूविअ वि [उद्धूपित] जिसको धूप किया गया हो वह ।
उद्धोस पुं [उद्धर्ष] उल्लास, ऊँचा होना ।
उन्न न [ऊर्ण] ऊन । °मय वि [°मय] ऊन का बना हुआ ।
उन्न (अप) वि [विषण्ण] विषाद-प्राप्त ।
उन्नइय वि [उन्नीत] ऊँचा लिया हुआ ।
उन्नंद सक [मद् + नन्द्] अभिनन्दन करना ।
उन्ना देखो उण्णा । °मय वि [°मय] ऊन का बना हुआ ।
उन्नाडिय न [उन्नाटित] हर्ष-द्योतक आवाज ।
उन्नाह पुं. ऊँचाई ।
उन्निक्ख सक [उन्नि + खन्] उन्मूलन करना ।
उन्निक्खमण न [उन्निष्क्रमण] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना ।
उन्हाल (अप) पुं [उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु ।
उपक्खर न [उपस्कर] घर का उपकरण ।
उपंत न [उपान्त] पीछे का भाग । वि. समीपस्थ ।
उपरि } देखो उवरि ।
उपरिं }
उपरिल्ल देखो उवरिल्ल ।
उपवाय देखो उववाय = उप + वादय् ।
उपसप्प देखो उवसप्प ।
उपाणहिय पुंस्त्री [उपानह्] जूता ।
उप्प देखो ओप्प = अर्पय् ।
उप्पइअ वि [उत्पतित] ऊँचा गया हुआ, उड़ा हुआ । उन्नत, उत्पन्न । न. उत्पतन, उड़ना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पइअ वि [उत्पाटित] उत्थापित। उठाया हुआ।
उप्पंक वि [दे] अत्यन्त। पुं. कीचड़। उन्नति। समूह।
उप्पंग पुं [दे] समूह।
उप्पज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना।
उप्पड सक [उत् + पत्] उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना।
उप्पड पुं [उत्पट] क्षुद्र कीट-विशेष।
उप्पडिअ देखो उप्पइअ।
उप्पण सक [उत् + पू] धान्य वगैरह को सूप आदि से साफ-सुथरा करना।
उप्पण्ण वि [उत्पन्न] उत्पन्न।
उप्पत्त वि [दे] गलित। विरक्त।
उप्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पत्ति।
उप्पत्तिया स्त्री [औत्पत्तिकी] बुद्धि-विशेष, बिना शास्त्राभ्यासादि के ही होनेवाली बुद्धि।
उप्पय सक [उत् + पत्] उड़ना, कूदना।
उप्पय देखो उप्पव।
उप्पय पुं [उत्पात] ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। उत्पत्ति। °निवय पुं [°निपात] ऊँचा-नीचा होना। नाट्य-विधि का एक प्रकार।
उप्पयण न [उत्प्लवन] तैरना।
उप्पयणी स्त्री [उत्पतनी] विद्या-विशेष।
उप्पिं (अप) देखो उवरिं।
उप्परिवाडि, °डी स्त्री [उत्परिपाटि, °टी] उलटा क्रम।
उप्परोप्पर अ [उपर्युपरि] ऊपर-ऊपर।
उप्पल न [उत्पल] कमल। विमान-विशेष। संख्या-विशेष। सुगन्धि-द्रव्य-विशेष। पुं. परिव्राजक-विशेष। द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °वेंटग पुं [°वृन्तक] आजीविक मत का एक साधु-समाज।
उप्पलंग न [उत्पलाङ्ग] संख्या-विशेष, 'हुहुय' (समय की माप-विशेष) को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।

उप्पला स्त्री [उत्पला] एक इन्द्राणी। इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन। स्वनामख्यात एक श्राविका। एक पुष्करिणी।
उप्पलिणी स्त्री [उत्पलिनी] कमलिनी।
उप्पल्ल वि [दे] अध्यासित, आरूढ़।
उप्पव सक [उत् + प्लु] लाँघना, तैरना। ऊँचा जाना, उड़ना।
उप्पवइय वि [उत्प्रव्रजित] जिसने दीक्षा छोड़ दी हो वह।
उप्पह पुं [उत्पथ] उन्मार्ग, कुमार्ग। °जाइ वि [°यायिन्] उलटे रास्ते जानेवाला।
उप्पा स्त्री देखो उप्पाय = उत्पाद।
उप्पाइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक।
उप्पाइय न [औत्पातिक] भूकम्प आदि उत्पातों का सूचक शास्त्र। अस्वाभाविक। आकस्मिक। उत्पात।
उप्पाड सक [उत् + पाटय्] ऊपर उठाना। उन्मूलन करना। उत्खनन करना। उत्थापन करना।
उप्पाड सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना।
उप्पादअ वि [उत्पादक] उत्पन्नकर्त्ता।
उप्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना, बनाना। उपार्जन करना।
उप्पाय पुंन [उत्पात] उत्पतन, ऊर्ध्व-गमन। आकस्मिक उपद्रव। निमित्त-शास्त्र-विशेष। °निवाय पुं [°निपात] चढ़ना और उतरना।
उप्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति। °पव्वय पुं [पर्वत] एक प्रकार के पर्वत जहाँ आकर कई व्यन्तर-जातीय देव-देवियाँ क्रीड़ा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर बनाते हैं। °पुव्व न [°पूर्व] प्रथमपूर्व, बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग।
उप्पायग वि [उत्पादक] उत्पन्न करने-वाला। कीट-विशेष।
उप्पायण न [उत्पादन] उत्पादन, उपार्जन।
उप्पायणया, उप्पायणा } स्त्री [उत्पादना] उपार्जन, उत्पन्न करना। जैन साधु की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्षा का एक दोष ।
उप्पाल सक [कथ्] कहना, बोलना ।
उप्पाव सक [उत् + प्लावय्] लँघाना, तैराना । कुदाना, उड़ाना ।
उप्पास सक [उत्प्र + अस्] हँसी करना ।
उप्पाहल न [दे] उत्कण्ठा ।
उप्पि सक [अर्पय्] देना ।
उप्पि अ [उपरि] ऊपर ।
उप्पिगलिआ स्त्री [दे] हाथ का मध्य भाग, करोत्संग ।
उप्पिजल न [दे] सुरत, सम्भोग । रज । अपयश ।
उप्पिजल अक [उत्पिञ्जलय्] आकुल की तरह आचरण करना ।
उप्पिच्छ [दे] देखो उप्पित्थ ।
उप्पिण देखो उप्पण ।
उप्पित्थ वि [दे] त्रस्त, भीत । क्रुद्ध । विधुर, आकुल ।
उप्पित्थ वि [दे] श्वास-युक्त ।
उप्पिय सक [उत् + पा] आस्वादन करना । फिर-फिर श्वास लेना ।
उप्पियण न [उत्पान] फिर-फिर श्वास लेना ।
उप्पिलण न [उत्प्लावन] लाँघना ।
उप्पिलाव देखो उप्पाव ।
उप्पीड देखो उप्पील ।
उप्पील सक [उत् + पीडय्] कस कर बाँधना, उठवाना, दबाना । पीड़ा करना, उपद्रव करना ।
उप्पील पुं [दे] समूह, राशि । स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ।
उप्पुअ वि [उत्प्लुत] उच्छलित, कूदा हुआ ।
उप्पुंसिअ देखो उप्पुसिअ ।
उप्पुणिअ वि [उत्पूत] सूप से साफ-सुथरा किया हुआ ।
उप्पुण्ण वि [उत्पूर्ण] पूर्ण, व्याप्त ।
उप्पुलइअ वि [उत्पुलकित] रोमाञ्चित ।
उप्पुसिअ वि [उत्प्रोञ्छित] लुप्त, प्रोञ्छित ।
उप्पूर पुं [उत्पूर] प्राचुर्य । प्रकृष्ट-प्रवाह ।
उप्पेक्ख (अप) देखो उविक्ख ।
उप्पेक्ख सक [उत्प्र + ईक्ष] सम्भावना करना ।
उप्पेक्खा स्त्री [उत्प्रेक्षा] अलङ्कार-विशेष । सम्भावना ।
उप्पेय न [दे] अभ्यङ्ग, तैलादि की मालिश ।
उप्पेल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना ।
उप्पेल्ल पुं [उन्नमन] ऊँचा करना ।
उप्पेस पुं [उत्पेष] त्रास, भय ।
उप्पेहड वि [दे] उद्भट, आडम्बरवाला ।
°उप्फ देखो पुप्फ ।
उप्फण सक [उत् + फण्] छाँटना, पवन में धान्य आदि का छिलका दूर करना ।
उप्फंदोल वि [दे] चल, अस्थिर ।
उप्फाल पुं [दे] दुर्जन ।
उप्फाल सक [उत् + पाटय्] उठाना । उखाड़ना ।
उप्फाल सक [कथ्] कहना, बोलना ।
उप्फाल वि [कथक] कहनेवाला, सूचक ।
उप्फिड अक [उत् + स्फिट्] कुण्ठित होना, असमर्थ होना ।
उप्फिड अक [उत् + स्फिट्] मण्डूक की तरह कूदना, उड़ना ।
उप्फिडण न [उत्स्फेटन] कुण्ठित होना ।
उप्फिडिय वि [उत्स्फिटित] कुण्ठित । बाहर निकला हुआ ।
उप्फुंकिआ स्त्री [दे] धोबिन ।
उप्फुंडिअ वि [दे] बिछाया हुआ ।
उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण । व्याप्त ।
उप्फुन्न वि [दे] स्पृष्ट ।
उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित ।
उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीड़ा-विशेष । पाँव पर बैठ कर बारम्बार ऊँचा-नीचा होना ।
उप्फुस सक [उत् + स्पृश्] सिचना, छिड़कना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रबल वचन से।
उप्फेस पुं [दे] त्रास, भय। मुकुट, पगड़ी, शिरोवेष्टन।
उप्फोअ पुं [दे] उद्गम, उदय।
उबुस सक [मृज्] शुद्धि करना, साफ करना।
उब्बंध सक [उद्+बन्ध्] फाँसी लगाना। वेष्टन करना।
उब्बण वि [उल्बण] उत्कट।
उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] जिसने फाँसी लगाई हो वह। वेष्टित। शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ।
उब्बिब वि [दे] खिन्न। शून्य। क्रान्त। प्रकट वेष वाला। डरा हुआ। उद्भट।
उब्बिबल वि [दे] कलुष जलवाला। न. मैला पानी।
उब्बुक्क सक [उद्+बुक्क्] बोलना, कहना।
उब्बुक्क न [दे] प्रलपित, प्रलाप। सङ्कट। बलात्कार।
उब्बुड अक [उद्+ब्रुड्] तैरना।
उब्बुड, उब्बुड्ड पुं [उद्ब्रुड] तैरना। °निबुड, °निब्बुड्डण न [निब्रुड, °ण] उभचुभ करना।
उब्बुड्ड वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण।
उब्बुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन।
उब्बुह अक [उत्+क्षुभ्] संक्षुब्ध होना।
उब्बूर वि [दे] अधिक। पुं. समूह। स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश।
उब्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना।
उब्भ देखो उड्ढ।
उब्भंड पुं [उद्भाण्ड] उत्कट भाँड़, बहुरूपा, निर्लज्ज हुंड़ा, उग्र विदूषक। न. गाली।
उब्भंत वि [दे] ग्लान, बीमार।
उब्भंत वि [उद्भ्रान्त] आकुल, खिन्न। मूर्च्छित। भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, चकित।
उब्भंत पुं [उद्भ्रान्त] प्रथम नरक-पृथिवी का चौथा नरकेन्द्रक।
उब्भग्ग वि [दे] गुण्ठित, व्याप्त।
उब्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह।
उब्भड वि [उद्भट] प्रबल, प्रचण्ड। भयंकर। उद्धत, आडम्बरी।
उब्भम पुं [उद्भ्रम] उद्वेग। परिभ्रमण।
उब्भव अक [उद्+भू] उत्पन्न होना।
उब्भव अक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना।
उब्भाअ वि [दे] शान्त, ठण्ढा।
उब्भाम सक [उद्+भ्रामय्] घुमाना।
उब्भाम पुं [उद्भ्राम] परिभ्रमण। वि. परिभ्रमण करनेवाला।
उब्भामइल्ला स्त्री [उद्भ्रामिणी] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री।
उब्भामय पुं [उद्भ्रामक] जार, उपपति।
उब्भामग पुं [उद्भ्रामक] पारदारिक, पर-स्त्री-लम्पट। वायु-विशेष। वि. परिभ्रमण करनेवाला।
उब्भामिगा, उब्भामिया स्त्री [उद्भ्रामिका] कुलटा स्त्री, स्वैरिणी।
उब्भालण न [दे] सूप आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन। वि. अपूर्व, अद्वितीय।
उब्भालिअ वि [दे] सूप आदि से साफ किया हुआ।
उब्भाव अक [रम्] क्रीड़ा करना, खेलना।
उब्भावणया, उब्भावणा स्त्री [उद्भावना] प्रभावना, गौरव, उन्नति। उत्प्रेक्षा, वितर्कणा। प्रकाशन।
उब्भाविअ न [रमण] सुरत, क्रीड़ा, सम्भोग।
उब्भास सक [उद्+भासय्] प्रकाशित करना।
उब्भासुअ वि [दे] शोभाहीन।
उब्भि देखो उब्भिय = उद्भिद्।
उब्भिउडि वि [उद्भ्रुकुटि] भौंह चढ़ाया हुआ।
उब्भिज्जा स्त्री [उद्भेद्या] एक तरह का शाक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उब्भिद सक [उद् + भिद्] ऊँचा करना, खड़ा करना। विकसित करना। अङ्कुरित करना। खोलना।

उब्भिग देखो उब्भिय = उद्भिद्।

उब्भिडण न. [उद्भेदन] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना।

उब्भिण्ण वि [उद्भिन्न] अङ्कुरित। खोला हुआ। न. जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरह से लिप्त पात्र को खोलकर उसमें से दी जाती भिक्षा। वि ऊँचा हुआ, खड़ा हुआ।

उब्भिय वि [उद्भिद्] पृथ्वी को फाड़कर उगनेवाली वनस्पति।

उब्भिय न [उद्भिद्] लवण-विशेष। खंजरीट, शलभ आदि प्राणी।

उब्भीकय वि [ऊर्ध्वीकृत] ऊँचा किया हुआ।

उब्भुअ अक [उद् + भू] उत्पन्न होना।

उब्भुआण वि [दे] उबलता हुआ।

उब्भुग्ग वि [दे] चल, अस्थिर।

उब्भुत्त सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना।

उब्भुत्तिअ वि [दे] उद्दीपित।

उब्भूअ वि [उद्भूत] उत्पन्न। आगन्तुक कारण।

उब्भूइआ स्त्री [औद्भूतिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयोजन के उपस्थित होने पर बजाई जाती थी।

उब्भेअ पुं [उद्भेद] उद्गम।

उब्भेइम वि [उद्भेदिम] स्वयं उत्पन्न होनेवाला।

उभ पुं. दोनों।

उभओ अ [उभयतस्] द्विधा, दोनों तरह से।

उभज्जायण देखो ओमज्जायण।

उभय वि. दोनों। °त्थ अ [°त्र] दोनों जगह। °लोग पुं [°लोक] यह और पर जन्म। °हा अ [°था] दोनों तरफ से, द्विधा।

उमच्छ सक [वञ्च्] ठगना।

उमच्छ सक [अभ्या + गम्] सामने आना।

उमा स्त्री. गौरी, पार्वती। द्वितीय वासुदेव की माता। देव-गणिका-विशेष। स्त्री-विशेष। °साइ [°स्वाति] स्वनामधन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार।

उमाण न [दे] प्रवेश।

°उमार देखो कुमार।

उमीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित।

उमुय सक [उद् + मुच्] छोड़ना।

उम्मइअ वि [दे] मूर्ख। उन्मत्त।

उम्मऊह वि [उन्मयूख] प्रभाशाली।

उम्मंड पुं [दे] हठ।

उम्मंथिय वि [दे] जला हुआ।

उम्मग्ग वि [उन्मग्न] पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण। न. उन्मज्जन, तैरना। °जला स्त्री. नदी-विशेष।

उम्मग्ग पुं [उन्मार्ग] कुपथ, उलटा रास्ता। छिद्र। अकार्य करना।

उम्मच्छ न [दे] क्रोध। वि. असम्बद्ध। प्रकारान्तर से कथित।

उम्मच्छर वि [उन्मत्सर] ईर्ष्यालु। उद्भट।

उम्मच्छविअ वि [दे] उद्भट।

उम्मच्छिअ वि [दे] रुषित। आकुल।

उम्मज्ज न[उन्मज्जन] तरण। °णिमज्जिया स्त्री [°निमज्जिका] पानी में ऊँचा-नीचा होना।

उम्मज्जग वि [उन्मज्जक] उन्मज्जन करनेवाला, गोता लगानेवाला। उन्मज्जन से ही स्नान करनेवाले तापसों की एक जाति।

उम्मड्डा स्त्री [दे] जबरदस्ती। निषेध।

उम्मण वि [उन्मनस्] उत्कण्ठित-उत्सुक।

उम्मत्त पुं [दे] धतूरा। एरण्ड, वृक्ष-विशेष।

उम्मत्त वि [उन्मत्त] उद्धत, उन्माद-युक्त। पागल, भूताविष्ट। °जला स्त्री. नदी-विशेष।

उम्मत्थ सक [अभ्या + गम्] सामने आना।

उम्मत्थ वि [दे] अधो-मुख, विपरीत।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उम्मर पुं [दे] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी।
उम्मरिअ वि [दे] उत्खात, उन्मूलित।
उम्मल वि [दे] स्त्यान, कठिन, घट्ट।
उम्मलण न [उन्मर्दन] मसलना।
उम्मल्ल पुं [दे] राजा। मेघ, बारिश। बलात्कार। वि. पीवर, पुष्ट।
उम्मल्ला स्त्री [दे] तृष्णा।
उम्मह्ण वि [उन्मथन] नाशक।
उम्माइअ वि [उन्मादित] उन्मत्त किया हुआ।
उम्माडिय न [दे] उल्मुक, जलता काष्ठ।
उम्माण न [उन्मान] माप। जो तौला जाता है वह।
उम्माद देखो उम्माय।
उन्मादइत्तअ (शौ) वि [उन्मादयितृ] उन्माद करानेवाला।
उम्माय अक [उद् + मद्] उन्माद करना।
उम्माय पुं [उन्माद] चित्त-विभ्रम। कामाधीनता। आलिङ्गन।
उम्माल देखो ओमाल।
उम्मालिय व [उन्मालित] सुशोभित।
उम्माह पुं [उन्माथ] विनाश।
उम्माहय वि [उन्माथक] विनाशक।
उम्मि पुंस्त्री [ऊर्मि] कल्लोल, तरङ्ग। भीड़। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष।
उम्मिठ वि [दे] महावतरहित, निरङ्कुश।
उम्मिण सक [उद् + मी] तौलना।
उम्मिय वि [उन्मित] प्रमित।
उम्मिलिर वि [उन्मीलितृ] विकासी।
उम्मिल्ल अक [उद् + मील्] विकसित होना। प्रकाशित होना। उल्लसित होना।
उम्मिल्लिय वि [उन्मीलित] विकसित, उल्लसित। खुला हुआ। प्रकाशित, बहिष्कृत, न. विकास।
उम्मिस अक [उद् + मिष्] खुलना, विकसना।
उम्मिसिय वि [उन्मिषित] विकसित, प्रफुल्ल। न. विकास, उन्मेष।
उम्मिस्स देखो उम्मीस।
उम्मीलण देखो उम्मिल्लण।
उम्मीलणा स्त्री [उन्मीलना] प्रभव, उत्पत्ति।
उम्मीलिय देखो उम्मिल्लिय।
उम्मीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, युक्त।
उम्मुअ देखो उमुय।
उम्मुअ न [उल्मुक] अलात, लूका।
उम्मुंच सक [उद् + मुच्] परित्याग करना।
उम्मुक्क वि [उन्मुक्त] विमुक्त, रहित। उत्क्षिप्त। परित्यक्त।
उम्मुग्ग वि [उन्मग्न] जल के ऊपर तैरा हुआ। न. तैरना। °निमुग्गिया स्त्री [°निमग्नता] उभचुभ करना।
उम्मुग्गा, उम्मुज्जा } स्त्री. देखो उम्मग्ग = उन्मग्न।
उम्मुट्ठ वि [उन्मृष्ट] स्पृष्ट।
उम्मुद्दिअ वि [उन्मुद्रित] विकसित, प्रफुल्ल। उद्घाटित।
उम्मुयण व [उन्मोचन] परित्याग।
उम्मुयणा स्त्री [उन्मोचना] त्याग, उज्झन।
उम्मुह वि [दे] दृप्त, अभिमानी।
उम्मुह वि [उन्मुख] सम्मुख। ऊर्ध्व-मुख।
उम्मूढ वि [उन्मूढ] अत्यन्त मुग्ध। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा।
उम्मूल वि [उन्मूल] उन्मूलन करनेवाला, विनाशक।
उम्मूल सक [उद् + मूलय्] मूल से उखाड़ फेंकना।
उम्मेंठ [दे] देखो उम्मिठ।
उम्मेस पुं [उन्मेष] उन्मीलन, विकास।
उम्मोयणी स्त्री [उन्मोचनी] विद्या-विशेष।
उम्ह पुंस्त्री [ऊष्मन्] सन्ताप, गरमी।
उम्हइअ, उम्हविय } वि [ऊष्मायित] सन्तप्त, गरम किया हुआ।
उम्हाअ अक [ऊष्माय्] गरम होना। भाप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निकालना।

उम्हाल वि [ऊष्मवत्] गरम, परितप्त। वाष्प-युक्त।

उम्हाविअ न [दे] सुरत, सम्भोग।

उयचिय वि [दे] देखो उविअ = परिकर्मित।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उद्वृत्त।

उयत्त अक [अप + वृत्] हटना।

उयर वि [उदार] श्रेष्ठ।

उयरिया स्त्री [अपवरिका] छोटा कमरा।

उयविय देखो उविअ = (दे)।

उयाइय न [उपयाचित] मनौती।

उयाय वि [उपयात] उपगत।

उयारण न [अवतारण] निछावर, उतारा, हर्षदान।

उयाहु देखो उदाहु।

उय्यकिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ।

उय्यल वि [दे] अध्यासित, आरूढ़।

उर पुंन [उरस्] छाती। °अ, °ग पुंस्त्री [°ग] सर्प। °तव पुं [°तपस्] तप-विशेष। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है। °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] पेट से चलनेवाला प्राणी। °सुत्तिया स्त्री [°सूत्रिका] मोतियों की हार।

उर न [दे] आरम्भ।

उरनंरेण अ [दे] साक्षात्।

उरत्त वि [दे] खण्डित।

उरत्थ वि [उरःस्थ] छाती में स्थित। छाती में पहनने का आभूषण।

उरत्थय न [दे] वर्म, बख्तर, कवच।

उरब्भ पुंस्त्री [उरभ्र] मेष, भेड़।

उरब्भिअ वि [औरभ्रिक] भेड़ चरानेवाला।

उरब्भिज्ज } वि [उरभ्रीय] मेष-सम्बन्धी।
उरब्भिय } उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन।

उरय पुं [उरज] वनस्पति-विशेष।

उर्रार पुं [दे] पशु, बकरा।

उरल देखो उराल।

उरविय वि [दे] आरोपित। खण्डित, छिन्न।

उरसिज पुं [उरसिज] स्तन।

उरस्स वि [उरस्य] सन्तान। हार्दिक आभ्यन्तर।

उराल वि [उदार] प्रबल। मुख्य। सुन्दर, श्रेष्ठ। अद्भुत। विशाल, विस्तीर्ण। न. शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च (पशु-पक्षी) इन दोनों का शरीर।

उराल वि [उदार] स्थूल, मोटा।

उराल वि [दे] भयंकर।

उरालिय न [औदारिक] शरीर-विशेष।

उरिआ स्त्री [उड्रिका] लिपि-विशेष।

उरित्तिय न [दे. उरसि-त्रिक] तीन सरवाला हार।

°उरिस देखो पुरिस।

उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण।

उरुपुल्ल पुं [दे] अपूप, पूआ। खिचड़ी।

उरुमल्ल }
उरुमिल्ल } वि [दे] प्रेरित।
उरुसोल्ल }

उरोरुह पुं. स्तन। न. जैन साध्वियों का उपकरण-विशेष।

°उल देखो कुल।

उलय } पुंन [उलप] तृण-विशेष।
उलव }

उलवी स्त्री [उलपी] तृण-विशेष।

उलिअ वि [दे] असङ्कुचित नजरवाला।

उलित्त न [दे] ऊँचा कुँआ।

°उलीण देखो कुलीण।

उलुउंडिअ वि [दे] प्रलुठित, विरेचित।

उलुओसिअ वि [दे] रोमाञ्चित।

उलुकसिअ वि [दे] ऊपर देखो।

उलुखंड पुं [दे] उल्मुक, अलात, लूका।

उलुग पुं [उलूक] उल्लू, पेचक। देश-विशेष।

उलुगी स्त्री [औलूकी] विद्या-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उलुग्ग वि [अवरुग्ण] बीमार ।
उलुग्ग वि [दे] देखो ओलुग्ग ।
उलुफुंटिअ वि [दे] विनिपातित, विनाशित । प्रशान्त ।
उलुय देखो उलूअ ।
उलुहंत पुं [दे] कौआ ।
उलुहलिअ वि [दे] अतृप्त।
उलुहुलअ वि [दे] तृप्तिरहित ।
उलूअ पुं [उलूक] उल्लू, पेचक । वैशेषिक मत का प्रवर्तक कणाद मुनि ।
उलूखल देखो उऊखल ।
उलूलु पुं [उलूलु] मङ्गल-ध्वनि ।
उलूहल देखो उऊखल ।
उल्ल सक [आर्द्रय्] गीला करना, आर्द्र करना । अक. आर्द्र होना । °गच्छ पुं [°गच्छ] जैन मुनियों का गण-विशेष ।
उल्ल न [दे] ऋण ।
उल्लअण न [उल्लयन] अर्पण, समर्पण ।
उल्लंक पुं [उल्लङ्क] काष्ठ-मय वारक ।
उल्लंघ सक [उत् + लङ्घ्] उल्लङ्घन करना ।
उल्लंघण न [उल्लङ्घन] अतिक्रमण, उल्लवन । वि. अतिक्रमण करनेवाला ।
उल्लंठ वि [उल्लण्ठ] उद्धत ।
उल्लंडग पुं [उल्लण्डक] छोटा मृदङ्ग ।
उल्लंडिअ वि [दे] बहिष्कृत ।
उल्लंबण न [उल्लम्बन] उद्बन्धन, फाँसी लगाकर लटकना ।
उल्लक्क वि [दे] भग्न । स्तब्ध ।
°उल्लट्ट देखो उव्वट्ट = उद्-वृत् ।
उल्लट्ट वि [दे] उल्लुण्ठित, खाली किया हुआ ।
उल्लण वि [उल्बण] उत्कट ।
उल्लण न [दे] खाद्य वस्तु-विशेष, ओसामन ।
उल्लणिया स्त्री [आर्द्रयणिका] जल पोंछने का गमछा, टोपिया ।
उल्लट्टिय वि [दे] भाराक्रान्त, जिसपर बोझा लादा गया हो वह ।
उल्लरय न [दे] कौड़ियों का आभूषण ।
उल्लल अक [उत् + लल्] चञ्चल होना । ऊँचा चलना । उत्पन्न होना ।
उल्ललिअ वि [दे] शिथिल ।
उल्लव सक [उत् + लप्] कहना । बकवाद करना, खराब शब्द बोलना ।
उल्लव सक [उद् + लू] उन्मूलन करना ।
उल्लविय वि [उल्लपित] कथित, उक्त । न. उक्ति-वचन ।
उल्लस अक [उत् + लस्] विकसित होना । खुश होना ।
उल्लस देखो उल्लास ।
उल्लसिअ वि [दे. उल्लसित] पुलकित, रोमाञ्चित ।
उल्लाय वि [दे] लात मारना ।
उल्लाय वि [उल्लाप] वक्र-वचन । कथन ।
उल्लाल सक [उत् + नमय्] ऊँचा करना । ऊपर फेंकना ।
उल्लाल सक [उत् + लालय्] ताडन करना, बजाना ।
उल्लाल पुंन [उल्लाल] छन्द-विशेष ।
उल्लाव सक [उत् + लप्, लापय्] कहना, बोलना । बकवाद करना । बुलवाना । बकवाद कराना ।
उल्लाव पुं [उल्लाप] शब्द, आवाज । उत्तर । बकवाद, विकृत-वचन । उक्ति, कथन । सम्भाषण ।
उल्लासग वि [उल्लासक] विकसित होनेवाला । आनन्दजनक ।
उल्लासण न [उल्लासन] विकास ।
उल्लाह सक [उत् + लाघय्] कम करना, हीन करना ।
उल्लिअ वि [दे] उपसर्पित, उपागत ।
उल्लिअ वि [दे] चीरा हुआ, फाड़ा हुआ । उपालब्ध, उलाहना दिया हुआ ।
उल्लिच सक [उद् + रिच्] खाली करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्लिक्क न [दे] खराब चेष्टा।
उल्लिंगण वि [उल्लिङ्गन] उपदर्शक।
उल्लिपण न [उपलेपन] उपलेप।
उल्लिया स्त्री [दे] राधा-वेध का निशाना।
उल्लिर वि [आर्द्र] गीला।
उल्लिह सक [उद्+लिह्] चाटना। भक्षण करना।
उल्लिह सक [उद्+लिख्] रेखा करना। लिखना। घिसना। छिलना।
उल्ली स्त्री [दे] चूल्हा। दाँत का मैल।
उल्लीण वि [उपलीन] प्रच्छन्न, गुप्त।
उल्लुअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ। रंगा हुआ।
उल्लुअ वि [दे. उद्‌गत] उदय-प्राप्त।
उल्लुअ वि [उल्लून] उन्मूलित। न. उन्मूलन।
उल्लुंचिअ वि [उल्लुञ्चित] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित।
उल्लुंटिअ वि [दे] संचूर्णित, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ।
उल्लुंठ वि [उल्लुण्ठ] उल्लण्ठ, उद्धत।
उल्लुंड अक [वि+रेचय्] झरना, बाहर निकलना।
उल्लुक्क वि [दे] टूटा हुआ।
उल्लुक्क सक [तुड्] तोड़ना।
उल्लुग° } स्त्री [उल्लुका] नदी-विशेष।
उल्लुगा } उल्लुका नदी के किनारे का प्रदेश। °तीर न. उल्लुका नदी के किनारे बसा हुआ एक नगर।
उल्लुज्झण न [दे] पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ पाँव की फिर से उत्पत्ति।
उल्लुट्ट अक [उत्+लुट्] नष्ट होना।
उल्लुट्ट वि [दे] मिथ्या, असत्य।
उल्लुरुह पुं [दे] छोटा शङ्ख।
उल्लुलिअ वि [उल्लुलित] चलित।
उल्लुव देखो उल्लव = उद्+लू।
उल्लुह अक [निस्+सृ] निकलना।
उल्लुहुंडिअ वि [दे] उन्नत, उच्छ्रित।
उल्लूढ वि [दे] आरूढ़। अङ्कुरित।
उल्लूढ सक [आ+रुह्] चढ़ना।
उल्लूर सक [तुड्] तोड़ना। नाश करना।
उल्लूरण न [तोडन] छेदन, खण्डन।
उल्लूह वि [दे] शुष्क।
उल्लेव पुं [दे] हास्य।
उल्लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध।
उल्लोइय न [दे] पोतना। वि. पोता हुआ।
उल्लोक वि [दे] त्रुटित, छिन्न।
उल्लोच पुं [दे. उल्लोच] चाँदनी।
उल्लोढ सक [उल्लोध्रय्] लोध्र आदि से घिसना।
उल्लोय पुं [उल्लोक] अगासी, छत। थोड़ी देर।
उल्लोय देखो उल्लोच।
उल्लोल अक [उत्+लुल्] लुठना, लेटना। पुं. शोकाकुल-स्त्री-रुदन-शब्द।
उल्लोल सक [उद्+लोलय्] पोंछना।
उल्लोल पुं [दे] शत्रु। कोलाहल।
उल्लोल पुं. प्रबन्ध। वि. उद्भट, उद्धत। वि. उत्सुक।
उल्लोव (अप) देखो उल्लोच।
उल्हव सक [वि+ध्मापय्] ठण्ढा करना, आग को बुझाना। शान्त करना।
उल्हसिअ वि [दे] उद्भट, उद्धत।
उल्हा अक [वि+ध्मा] बुझ जाना।
उव अ [उप] इन अर्थों का सूचक अव्यय—समीपता। सदृशता। समस्तपन। एकबार। भीतर।
उव न [उद] पानी।
उवअंठ वि [उपकण्ठ] समीप का।
उवइट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित।
उवइण्ण वि [उपचीर्ण] सेवित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवइय वि [उपचित] मांसल। उन्नत।

उवइय पुंस्त्री [दे] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, देखो ओवइय।

उवइस सक [उप + दिश्] उपदेश देना, सिखाना। प्रतिपादन करना

उवउंज सक [उप + युज्] उपयोग करना।

उवउज्ज पुं [दे] उपकार। वि. उपकारक।

उवउत्त वि [उपयुक्त] न्याय्य। अप्रमत्त।

उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित।

उवऊह सक [उप + गूह्] आलिङ्गन करना।

उवएइआ स्त्री [दे] शराब परोसने का पात्र।

उवएस पुं [उपदेश] बोध। कथन, प्रतिपादन। शास्त्र, सिद्धान्त। उपदेश्य।

उवएसग वि [उपदेशक] उपदेश देने वाला।

उवओग पुं [उपयोग] ज्ञान, चैतन्य। ध्यान, सावधानी। प्रयोजन, आवश्यकता।

उवओगि वि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय।

उवंग पुंन [उपाङ्ग] छोटा अवयव, क्षुद्र भाग। मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करनेवाला ग्रन्थ, टीका। 'औपपातिक' सूत्र वगैरह बारह जैन ग्रन्थ।

उवंजण न [उपाञ्जन] मालिश।

उवकंठ देखो उवअंठ।

उवकंठ न [उपकण्ठ] समीप।

उवकदुअ (शौ) अ [उपकृत्य] उपकार। करके।

उवकप्प सक [उप + क्लृ] उपस्थित करना। करना।

उवकप्प पुं [उपकल्प] साधु को दी जाने-वाली भिक्षा, अन्नपान वगैरह।

उवकय वि [उपकृत] अनुगृहीत।

उवकय वि [दे] सज्जित, प्रगुण, तैयार।

उवकर देखो उवयर = उप + कृ।

उवकर सक [अव + कॄ] व्याप्त करना।

उवकरण देखो उवगरण।

उवकस सक [उप + कष्] प्राप्त होना।

उवकसिअ वि [दे] सन्निहित। परिसेवित। सर्जित, उत्पादित।

उवकार देखो उवगार।

उवकारिया देखो उवगारिया।

उवकिइ / उवकिदि स्त्री [उपकृति] उपकार।

उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह।

उवकुल पुंन [उपकुल] कुल नक्षत्र के पास का नक्षत्र।

उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक गणिका, कोशा वेश्या की छोटी बहन।

उवक्कंत वि [उपक्रान्त] समीप में आनीत। प्रारब्ध, प्रस्तावित।

उवक्कम सक [उप + क्रम्] शुरू करना। प्राप्त करना। जानना। समीप में लाना। संस्कार करना। अनुसरण करना।

उवक्कम पुं [उपक्रम] आरम्भ। प्राप्ति का प्रयत्न। कर्मों के फल का अनुभव। कर्मों की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष। मरण, विनाश। दूरस्थित को समीप में लाना। आयुष्य-विघातक वस्तु। शस्त्र। उपचार। ज्ञान, निश्चय। अनुवर्त्तन, अनुकूल-प्रवृत्ति। संस्कार, परिकर्म।

उवक्कम पुं [उपक्रम] अनुदित कर्मों को उदय में लाना।

उवक्कमिय वि [औपक्रमिक] उपक्रम से सम्बन्ध रखनेवाला।

उवक्काम सक [उप + क्रम्] दीर्घकाल में भोगने योग्य कर्मों को अल्प समय में ही भोगना।

उवक्कामण न [उपक्रमण] उपक्रम कराना।

उवक्केस पुं [उपक्लेश] बाधा। शोक।

उवक्खड सक [उप + स्कृ] पकाना, रसोई करना। पाक को मसाले से संस्कारित करना।

उवक्खड / उवक्खडिय वि [उपस्कृत] पकाया हुआ। मसाला वगैरह से संस्कार-युक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पकाया हुआ। पुंन. रसोई, पाक। °ाम वि [°ाम] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता हैं वह, मूंग वगैरह अन्न-विशेष।
उवक्खर पुं [उपस्कर] संस्कार। जिससे संस्कार किया जाय वह।
उवक्खर पुं [उपस्कर] घर का उपकरण। साधन।
उवक्खरण न [उपस्करण] ऊपर देखो। °साला स्त्री [°शाला] रसोई-घर।
उवक्खा सक [उपा + ख्या] कहना।
उवक्खा स्त्री [उपाख्या] उपनाम।
उवक्खाइत्तु वि [उपख्यापयितृ] प्रसिद्धि करानेवाला।
उवक्खाइया स्त्री [उपाख्यायिका] उपकथा।
उवक्खाण न [उपाख्यान] कथा।
उवक्खित्त वि [उपक्षिप्त] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ।
उवक्खिव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना। प्रयत्न करना। प्रारम्भ करना।
उवक्खीण वि [उपक्षीण] क्षय-प्राप्त।
उवक्खेअ पुं [उपक्षेप] प्रयत्न। उपाय।
उवक्खेव पुं [दे. उपक्षेप] मुण्डन।
उवग वि [उपग] अनुसरण करनेवाला। समीप में जानेवाला।
उवगच्छ सक [उप + गम्] समीप में आना। प्राप्त करना। जानना। स्वीकार करना।
उवगणिय वि [उपगणित] गिना हुआ।
उवगप्पिय वि [उपकल्पित] विरचित।
उवगम देखो उवगच्छ।
उवगय वि [उपगत] पास आया हुआ। ज्ञात। युक्त। प्राप्त। प्रकर्ष-प्राप्त। स्वीकृत। अन्तर्भूत।
उवगय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह।
उवगर सक [उप + कृ] हित करना।
उवगरण न [उपकरण] साधन, साधक वस्तु। बाह्य इन्द्रियविशेष।
उवगस सक [उप + कस्] समीप आना।
उवगा सक [उप + गै] वर्णन करना। गुणगान करना।
उवगार देखो उवयार = उपकार।
उवगारग वि [उपकारक] उपकार करनेवाला।
उवगारिया स्त्री [उपकारिका] प्रासाद आदि की पीठिका।
उवगिअ न [उपकृत] उपकार। वि. जिसपर उपकार किया गया हो वह।
उवगिण्ह सक [उप + ग्रह्] उपकार करना। पुष्टि करना। ग्रहण करना।
उवगीय वि [उपगीत] वर्णित, श्लाघित। न. संगीत, गीत।
उवगूढ वि[उपगूढ]आलिङ्गित। न. आलिङ्गन।
उवगूह सक [उप + गुह्] आलिङ्गन करना। गुप्त रीति से रक्षण करना। रचना करना।
उवग्ग न [उपाग्र] अग्र के समीप। आषाढ़ मास।
उवग्गह पुं [उपग्रह] पुष्टि। उपकार। ग्रहण, उत्पादन। उपधि, उपकरण।
उवग्गह पुं [उपग्रह] सामीप्य-सम्बन्ध।
उवग्गहिअ न [उपगृहीत] उपकार।
उवग्गहिअ वि [उपगृहित] उपस्थापित। आलिंगनादि चेष्टा। उपकृत। उपष्टम्भित।
उवग्गहिअ देखो ओवग्गहिअ।
उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] सम्बन्धी, सम्बन्ध रखनेवाला।
उवग्घाय पुं [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य।
उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करनेवाला।
उवघाइय वि [उपघातिक] उपघातकारक। हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाला।
उवघाय पुं [उपघात] विराधना, आघात। अशुद्धता। विनाश। उपद्रव। दूसरे का अशुभ चिन्तन। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवघायग वि [उपघातक] विनाशक ।
उवचय पुं [उपचय] वृद्धि । समूह । शरीर । इन्द्रिय-पर्याप्ति । पुष्टि ।
उवचर सक [उप + चर्] सेवा करना । समीप में घूमना-फिरना । आरोप करना । समीप में आना । उपद्रव करना । उपासना करना, उपचार करना ।
उवचर सक [उप + चर्] व्यवहार करना ।
उवचरय वि [उपचरक] सेवा के बहाने से दूसरे का अहित करने का मौका देखनेवाला । पुं. जासूस ।
उवचरिय वि [उपचरित] कल्पित ।
उवचि सक [उप + चि] इकट्ठा करना । पुष्ट करना ।
उवचिट्ठ सक [उप + स्था] उपस्थित होना, समीप आना ।
उवचिणिय, उवचिय वि [उपचित] पुष्ट, पीन । स्थापित, निवेशित । उन्नत । व्याप्त । बढ़ा हुआ ।
उवच्चया स्त्री [उपत्यका] पर्वत के पास की नीची जमीन ।
उवच्छंदिद (शौ) वि [उपच्छन्दित] अभ्यर्थित ।
उवजंगल वि [दे] दीर्घ ।
उवजा अक [उप + जन्] उत्पन्न होना ।
उवजाइ स्त्री [उपजाति] छन्द-विशेष ।
उवजाइय देखो उवयाइय ।
उवजाय वि [उपजात] उत्पन्न ।
उवजीव सक [उप + जीव्] आश्रय लेना ।
उवजीवग वि [उपजीवक] आश्रित ।
उवजीवि वि [उपजीविन्] आश्रय लेनेवाला । उपकारक ।
उवजोइय वि [उपज्योतिष्क] अग्नि के समीप में रहनेवाला । पाक-स्थान में स्थित ।
उवज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना ।
उवज्जण न [उपार्जन] कमाना ।
उवज्जिण सक [उप+अर्ज्] उपार्जन करना ।
उवज्झय, उवज्झाय पुं [उपाध्याय] अध्यापक । सूत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी ।
उवज्झिय वि [दे] आकारित, बुलाया हुआ ।
उवझाय देखो उवज्झाय ।
उवट्टग देखो उव्वट्टग ।
उवट्टणा देखो उव्वट्टणा ।
उवट्ठ वि [उपस्थ] एक स्थान में सतत अवस्थित । °काल पुं. आने की वेला ।
उवट्ठंभ पुं [उपष्टम्भ] अवस्थान । अनुकम्पा ।
उवट्ठप्प वि [उपस्थाप्य] उपस्थित करने योग्य । व्रत—दीक्षा के योग्य ।
उवट्ठव सक [उप + स्थापय्] युक्ति से संस्थापित करना । उपस्थित करना । व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना ।
उवट्ठवणा स्त्री [उपस्थापना] चारित्र-विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा । शिष्य में व्रत की स्थापना ।
उवट्ठवणीय वि [उपस्थापनीय] देखो उवट्ठप्प ।
उवट्ठा सक [उप+स्था] उपस्थित होना ।
उवट्ठाण न [उपस्थान] बैठना, व्रत-स्थापन । एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना, अनुष्ठान, आचार । °दोस पुं [°दोष] नित्यवास दोष । °साला स्त्री [°शाला] सभा-स्थान ।
उवट्ठाणा स्त्री [उपस्थाना] जिसमें जैन साधु-लोग एक बार ठहर कर फिर भी शास्त्र-निषिद्ध-अवधि के पहले ही आकर ठहरें वह स्थान ।
उवट्ठाव देखो उवट्ठव ।
उवट्ठावणा देखो उवट्ठवणा ।
उवट्ठिय वि [उपस्थित] प्राप्त । समीप-स्थित तैयार । आश्रित । मुमुक्षु ।
उवठावणा देखो उवट्ठवणा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवडहित्तु वि [उपदहितृ] जलानेवाला।
उवडिअ वि [दे] अवनत।
उवणगर न [उपनगर] शाखा-नगर।
उवणच्च सक [उप + नर्तय्] नचाना।
उवणद्ध वि [उपनद्ध] घटित।
उवणम सक [उप+नम्] उपस्थित करना, ला रखना, प्राप्त करना।
उवणय वि [उपनत] उपस्थित।
उवणय पुं [उपनय] उपसंहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोड़ना, हेतु का पक्ष में उपसंहार। स्तुति, श्लाघा। अवान्तर नय। यज्ञोपवीत संस्कार, उपहार, भेंट।
उवणयण न [उपनयन] उपवीत-संस्कार, यज्ञ-सूत्र-धारण-संस्कार।
उवणिअ देखो उवणीय।
उवणिक्खित्त वि [उपनिक्षिप्त] व्यवस्थापित।
उवणिक्खेव पुं [उपनिक्षेप] धरोहर, रक्षा के लिए दूसरे के पास रखा धन।
उवणिग्गम पुं [उपनिर्गम] द्वार। उपवन।
उवणिग्गय वि [उपनिर्गत] समीप में निकला हुआ।
उवणिमंत सक [उपनि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना।
उवणिवाय पुं [उपनिपात] सम्बन्ध।
उवणिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीप-स्थित।
उवणिसआ स्त्री [उपनिषत्] वेदान्त-शास्त्र।
उवणिहा स्त्री [उपनिधा] मार्गण, मार्गणा।
उवणिहि पुंस्त्री [उपनिधि] समीप में आनीत। विरचना। उपस्थापन, अमानत।
उवणिहिअ वि [औपनिधिक] उपनिधि-सम्बन्धी। °आ स्त्री [°की] क्रम-विशेष।
उवणिहिय वि [उपनिहित] समीप में स्थापित। आसन्न-स्थित। °य पुं [°क] नियम-विशेष को धारण करनेवाला भिक्षु।
उवणी सक [उप + नी] समीप में लाना। अर्पण करना। इकट्ठा करना।
उवणीअ न [उपनीत] उपनयन। °वयण न [°वचन] प्रशंसा-वचन।
उवणीय वि [उपनीत] समीप में लाया हुआ। अर्पित, उपढौकित। उपनययुक्त, उपसंहृत। प्रशस्त, श्लाघित। °चरय पुं [°चरक] अभिग्रह-विशेष को धारण करनेवाला साधु।
उवण्णत्थ वि [उपन्यस्त] उपन्यस्त, उपढौकित।
उवण्णास पुं [उपन्यास] वाक्योपक्रम, प्रस्तावना। दृष्टान्त-विशेष। रचना। छल-प्रयोग।
उवतल न [उतपल] हस्त-तल की चारों ओर का पार्श्वभाग।
उवताव पुं [उपताप] सन्ताप, गरम।
उवत्त वि [उपात्त] गृहीत।
उवत्थड वि [उपस्तृत] ऊपर-ऊपर आच्छादित।
उवत्थाण देखो उवट्ठाण।
उवत्थाणा देखो उवट्ठाणा।
उवत्थिय देखो उवट्ठिय।
उवत्थु सक [उप + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना।
उवदंस सक [उप + दर्शय्] दिखलाना।
उवदंस पुं [उपदंश] रोग-विशेष, गर्मी, सुजाक। चाटना।
उवदंसण न [उपदर्शन] दिखलाना। °कूड पुं [°कूट] नीलवन्त नामक पर्वत का एक शिखर।
उवदंसेत्तु वि [उपदर्शयितृ] दिखलानेवाला।
उवदव पुं [उपद्रव] ऊधम, उपसर्ग।
उवदा स्त्री [उपदा] भेंट।
उवदाई स्त्री [उदकदायिका] पानी देनेवाली।
उवदिस सक [उप + दिश्] उपदेश देना।
उवदीव न [दे] द्वीपान्तर।
उवदेसग वि [उपदेशक] व्याख्याता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवदेसि वि [उपदेशिन्] उपदेशक ।

उवदेही स्त्री [उपदेहिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, दीमक ।

उवद्दव सक [उप + द्रु] पीडित करना । उपद्रव करना, ऊधम मचाना ।

उवद्दव देखो उवदव ।

उवद्दुअ वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ ।

उवधाउ पुं [उपधातु] निकृष्ट धातु ।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] अवग्रह-ज्ञान । धारण करना ।

उवधारिय वि [उपधारित] धारण किया हुआ ।

उवनंद पुं [उपनन्द] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ।

उवनंद सक [उप + नन्द्] अभिनन्दन करना ।

उवनिक्खेव सक [उपनि + क्षेपय्] धरोहर रखना । स्थापन करना ।

उवनिबंधण न [उपनिबन्धन] सम्बन्ध । वि. सम्बन्ध-हेतु ।

उवनिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीपस्थित ।

उवनिहिय वि [औपनिधिक] देखो उवणिहिय ।

उवन्नत्थ वि [उपन्यस्त] स्थापित ।

उवन्नास पुं [उपन्यास] निवेदन ।

उवप्पदाण } न [उपप्रदान] नीति-विशेष,
उवप्पयाण } दान-नीति, अभिमत अर्थ का दान ।

उवप्पुय वि [उपप्लुत] उपद्रुत, भय से व्याप्त ।

उवभुंज सक [उप + भुज्] उपभोग करना, काम में लाना ।

उवभुत्त वि [उपभुक्त] जिसका उपभोग किया हो वह । अधिकृत ।

उवभोअ } पुं [उपभोग] भोजनातिरिक्त
उवभोग } भोग, जिसका फिर-फिर भोग किया जाय जैसे—वस्त्र, गृहादि । जिसका एक बार भोग किया जाय वह—अशन, पान वगैरह । एक बार भोग, आसेवन । अन्तरङ्ग भोग । धारण करना ।

उवभोग्ग } वि [उपभोग्य] उपभोग-योग्य ।
उवभोज्ज }

उवमा स्त्री [उपमा] सादृश्य, दृष्टान्त । सत्य । खाद्य-पदार्थ-विशेष । 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन । अलङ्कार-विशेष । प्रमाण-विशेष, उपमान-प्रमाण ।

उवमाण न [उपमान] दृष्टान्त, सादृश्य । जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह । प्रमाण-विशेष ।

उवमालिय वि [उपमालित] विभूषित ।

उवमिय वि [उपमित] जिसको उपमा दी गई हो वह । न. उपमा, सादृश्य ।

उवमेअ वि [उपमेय] उपमा के योग्य ।

उवय पुं [दे] हाथी को पकड़ने का गड्ढा ।

उवय देखो ओवय ।

उवय (अप) देखो उदय ।

उवयर सक [उव + कृ] उपकार करना ।

उवयर सक [उप + चर्] आरोप करना । भक्ति करना । कल्पना करना । चिकित्सा करना ।

उवयरण न [उपकरण] साधन । उपकार ।

उवयरिया स्त्री [उपचारिका] दासी ।

उवया सक [उप + या] समीप में जाना ।

उवयाइय वि [उपयाचित] प्रार्थित । मनौती ।

उवयार पुं [उपकार] भलाई ।

उवयार पुं [उपचार] पूजा, आदर । चिकित्सा । शब्द-शक्ति-विशेष, अध्यारोप । व्यवहार । कल्पना । आदेश ।

उवयारग वि [उपचारक] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ।

उवयारण न [उपकारण] अन्य-द्वारा उपकार करना ।

उवयारय वि [उपकारक] उपकार करने वाला ।

उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्बन्ध रखनेवाला।

उवयालि पुं [उपजालि] एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर मुक्ति पाई थी। राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में देव-गति प्राप्त की थी।

उवरइ स्त्री [उपरति] विराम।

उवरंज सक [उप + रञ्ज्] ग्रस्त करना।

उवरग देखो ओअरय।

उवरत्त वि [उपरक्त] अनुरक्त। राहु से ग्रसित। म्लान।

उवरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना, विरत होना। नाश होना।

उवरय वि [उपरत] विरत, निवृत्त। मृत।

उवरय देखो उवरग।

उवरल (अप) देखो उव्वरिय [दे]।

उवराग, **उवराय** पुं [उपराग] सूर्य या चन्द्र का ग्रहण, राहु-ग्रहण।

उवराय पुं [उपरात्र] दिन।

उवरि अ [उपरि] ऊपर। °**भासा** स्त्री [°भाषा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना। °**म**, °**मग**, °**मय**, **ल्ल** वि [°तन] ऊपर का। °**हुत्त** वि [°अभिमुख] ऊपर की तरफ।

उवरिं ऊपर देखो।

उवरितण देखो उवरि—म।

उवरुंध सक [उप + रुध्] अड़चन डालना। रोकना।

उवरुद्द पुं [उपरुद्र] नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति।

उवरुद्ध वि [उपरुद्ध] रक्षित। प्रतिरुद्ध।

उवरोह सक [उप + रोधय्] अड़चन डालना।

उवरोह पुं [उपरोध] बाधा। प्रतिबन्ध। नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन। निर्बन्ध, आग्रह।

उवल पुं [उपल] पत्थर। टाँकी वगैरह को संस्कृत करनेवाला पाषाण-विशेष।

उवलम्बण पुं [उपलम्बन] साँकल वाला एक प्रकार का दीपक।

उवलंभ सक [उप + लभ्] प्राप्त करना। जानना। उलाहना देना।

उवलंभ पुं [उपलम्भ] लाभ। ज्ञान। उलाहना।

उवलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ।

उवलक्ख सक [उप + लक्षय्] जानना, पहिचानना।

उपलक्खण न [उपलक्षण] पहिचान। अन्यार्थ-बोधक सङ्केत।

उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ।

उवलद्ध वि [उपलब्ध] प्राप्त। विज्ञात। उपालब्ध।

उवलद्धि स्त्री [उपलब्धि] प्राप्ति, लाभ। ज्ञान।

उवलद्धु वि [उपलब्धृ] ग्रहण करनेवाला, जाननेवाला।

उवलभ देखो उवलंभ = उप + लभ्।

उवलभत्ता, **उवलयभग्गा** स्त्री [दे] कङ्कन।

उवलल अक [उप + लल्] क्रीडा करना, विलास करना।

उवललय न [दे] सुरत, मैथुन।

उवलह देखो उवलंभ = उप + लभ्।

उवला सक [उप + ला] ग्रहण करना। आश्रय करना।

उवलि देखो उवलिल।

उवलिंप सक [उप + लिप्] लीपना, पोतना। चुम्बन करना।

उवलित्त वि [उपलिप्त] लीपा हुआ, पोता हुआ।

उवलीण देखो उवल्लीण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवलुअ वि [दे] लज्जा-युक्त ।

उवलेव पुं [उपलेप] लेपना । कर्मबन्ध । संश्लेष । आश्लेष ।

उवलोभ सक [उप + लोभय्] लालच देना ।

उवलोहिय वि [उपलोभित] जिसको लालच दी गई हो वह ।

उवल्लि सक [उप + ली] रहना । आश्रय करना ।

उवल्लीण वि [उपलीन] स्थित । प्रच्छन्न-स्थित ।

उववइ पुं [उपपति] जार ।

उववज्ज अक [उप + पद्] उत्पन्न होना । सङ्गत होना ।

उववज्जण न [उपवर्जन] त्याग ।

उववज्झ वि [उपवाह्य]राजा आदि का वल्लभ —प्रधान, सेनापति आदि ।

उववज्झ वि [औपवाह्य] प्रधान आदि का, प्रधान आदि को बैठने योग्य ।

उववट्ट अक [उप + वृत्] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना ।

उववण न [उपवन] बगीचा ।

उववण्ण वि [उपपन्न] उत्पन्न । सङ्गत, युक्त । प्रेरित । न. उत्पत्ति ।

उववत्ति स्त्री [उपपत्ति] उत्पत्ति, जन्म । युक्ति, न्याय । विषय । सम्भव ।

उववत्तु वि [उपपत्तृ] उत्पन्न होनेवाला ।

उववयण न [उपपतन] देखो उववाय = उप-पात ।

उववसण न [उपवसन] उपवास ।

उववाइय वि [औपपादिक, औपपातिक] उत्पन्न होनेवाला । देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होनेवाला ।

उववाय सक [उप + पादय्] सम्पादन करना, सिद्ध करना ।

उववाय पुं [उप + वादय्] वाद्य बजाना ।

उववाय पुं [उपपात] देव या नारक जीव की उत्पत्ति । सेवा, आदर । विनय । आज्ञा । प्रादुर्भाव । उपसम्पादन, सम्प्राप्ति । °कप्प पुं [°कल्प] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रहकर संविग्न-विहार की सम्प्राप्ति । °य वि [°ज] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव ।

उववास पुंन [उपवास] अनाहार ।

उवविअ देखो उववीअ ।

उवविट्ठ वि [उपविष्ट] बैठा हुआ ।

उवविणिग्गय वि [उपविनिर्गत] सतत निर्गत ।

उवविस अक [उप + विश्] बैठना ।

उववीअ न [उपवीत] यज्ञसूत्र । वि. सहित ।

उववीड अ [उपपीड] उपमर्दन ।

उववूह सक [उप + बृंह्] पुष्ट करना । वृद्धि करना । प्रशंसा करना ।

उववूहणिय वि [उपबृंहणीय] पुष्टि-कर्ता । स्त्री. पट्ट-विशेष, राजा वगैरह के भोजन-समय में उपभोग में आनेवाला पट्टा ।

उववेय वि [उपेत] युक्त ।

उवसंकम सक [उपसं + क्रम्] समीप आना ।

उवसंखड सक [उपसं + कृ] रांधना ।

उवसंखा स्त्री [उपसंख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान ।

उवसंगह सक [उपसं + ग्रह्] उपकार करना ।

उवसंधर सक [उपसं + हृ] उपसंहार करना ।

उवसंधिय वि [उपसंहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित ।

उवसंचि सक [उपसं + चि] सञ्चय करना ।

उवसंठिय वि [उपसंस्थित] समीप में स्थित । उपस्थित ।

उवसंत वि [उपशान्त] क्रोधादि विकाररहित । नष्ट, अपगत । पुं. ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव । °मोह पुं. ग्यारहवाँ गुण-स्थानक ।

उवसंति स्त्री [उपशान्ति] उपशम ।

उवसंधारिय वि [उपसंधारित] सङ्कल्पित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसंपज्ज [उपसं+पद्] समीप में जाना। स्वीकार करना। प्राप्त करना।

उवसंपण्ण वि [उपसंपन्न] प्राप्त। समीप-गत।

उवसंपया स्त्री [उपसंपद्] ज्ञान वगैरह की प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना। अन्य गुरु आदि की सत्ता का स्वीकार करना। लाभ।

उवसंहर सक [उपसं+हृ] हटाना। सङ्कोलना। समेटना।

उवसंहार पुं [उपसंहार] सङ्कोचन, समेट। समाप्ति। उपनय।

उवसंहार पुं. उपसंहार।

उवसग्ग पुं [उपसर्ग] उपद्रव, बाधा। अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व में जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है।

उवसग्ग वि [दे] मन्द, आलसी।

उवसज्ज अक [उप+सृज्] आश्रय करना।

उवसज्जण न [उपसर्जन] गौण। सम्बन्ध।

उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष आसक्तिवाला।

उवसद्द पुं [उपशब्द] सुरत-समय का शब्द। प्रच्छन्न शब्द। समीप का शब्द।

उवसप्प सक [उप+सृप्] समीप जाना।

उवसम पुं [उप+शम्] क्रोध-रहित होना। शान्त होना। ठण्ढा होना। नष्ट होना।

उवसम पुं [उपशम] क्रोध का अभाव, क्षमा। इन्द्रिय-निग्रह। पन्द्रहवाँ दिवस। मुहूर्त्तविशेष। °सम्म न [°सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष।

उवसमणा स्त्री [उपशमना] आत्मिक प्रयत्न-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाए जाँय वह।

उवसमिअ पुं [औपशमिक] कर्मों का उपशम।

उवसमिय वि [औपशमिक] उपशम से होने-वाला। उपशम से सम्बन्ध रखनेवाला।

उवसाम सक [उप+शमय्] शान्त करना। रहित करना।

उवसाम पुं [उपशम] उपशान्ति।

उवसाम देखो उवसम।

उवसामग वि [उपशमक] क्रोधादि को उप-शान्त करनेवाला। उपशम से सम्बन्ध रखने-वाला।

उवसामय देखो उवसामग।

उवसामिय वि [औपशमिक] उपशम-सम्बन्धी। पुं. भाव-विशेष। न. सम्यक्त्व-विशेष।

उवसाह सक [उप+कथ्] कहना।

उवसाहण वि [उपसाधन] निष्पादक।

उवसाहिय वि [उपसाधित] तैयार किया हुआ।

उवसित्त वि [उपसिक्त] छिड़का हुआ।

उवसिलोअ सक [उपश्लोकय्] वर्णन करना, प्रशंसा करना।

उवसुत्त वि [उपसुप्त] सोया हुआ।

उवसुद्ध वि [उपशुद्ध] निर्दोष।

उवसूइय वि [उपसूचित] संसूचित।

उवसेर वि [दे] रति-योग्य।

उवसेवण न [उपसेवन] सेवा, परिचय।

उपसेवय वि [उपसेवक] सेवा करनेवाला, भक्त।

उवसोभ अक [उप+शुभ्] शोभना।

उवसोहा स्त्री [उपशोभा] शोभा।

उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्मल किया हुआ।

उवस्सग्ग देखो उवसग्ग।

उवस्सय पुं [उपाश्रय] जैन साधुओं के निवास करने का स्थान।

उवस्सा स्त्री [उपश्रा] द्वेष।

उवस्सिय वि [उपाश्रित] द्वेषी। अङ्गीकृत। समीप में स्थित। न. द्वेष।

उवस्सुदि स्त्री [उपश्रुति] प्रश्न-फल को जानने के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम वाक्य।

उवह स [उभय] दोनों, युगल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवहृ अ [दे] 'देखो' अर्थ को बतलानेवाला अव्यय।
उवहट्ट सक [समा + रभ्] शुरू करना।
उवहड वि [उपहृत] उपढौकित, उपस्थापित। भोजन-स्थान में अर्पित भोजन।
उवहण सक [उप + हन्] विनाश करना। आघात पहुँचाना।
उवहत्थ सक [समा + रच्] रचना, उत्तेजित करना।
उवहम्म° देखो उवहण।
उवहय वि [उपहत] विनाशित। दूषित।
उवहर सक [उप + हृ] पूजा करना। उपस्थित करना। अर्पण करना।
उवहस सक [उप + हस्] उपहास करना।
उवहा स्त्री [उपधा] माया, कपट।
उवहाण न [उपधान] तकिया। तपश्चर्या। उपाधि।
उवहार पुं [उपहार] भेंट। विस्तार।
उवहारणया देखो उवधारणया।
उवहारिअ वि [उपधारित] अवधारित। निश्चित।
उवहारिआ } स्त्री [दे] दोहनेवाली स्त्री।
उवहारी }
उवहारुल्ल वि [उपहारवत्] उपहारवाला।
उवहास पुं [उपहास] हँसी।
उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य।
उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद।
उवहि पुं [उदधि] समुद्र।
उवहि पुंस्त्री [उपाधि] माया, कपट। कर्म। उपकरण।
उवहिंड सक [उप + हिण्ड्] पर्यटन करना।
उवहिय वि [उपहित] उपढौकित, अर्पित। स्थापित। न. उपढौकन, अर्पण।
उवहिय वि [औपाधिक] माया से प्रच्छन्न विचरनेवाला।
उवहुंज सक [उप + भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना।
उवहुत्त देखो उवभुत्त।
उवाइकम सक [उपाति + क्रम्] उल्लंघन करना।
उवाइण सक [उपाति + नी] गुजारना।
उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना।
उवाइण सक [उपा + दा] ग्रहण करना। प्रवेश करना।
उवाइणाव सक [अति + क्रम्] उल्लंघन करना। गुजारना।
उवाइय देखो उवयाइय।
उवाई स्त्री [उलावकी] पोताकी-नामक विद्या की प्रतिपक्षभूत एक विद्या।
उवाएज्ज } वि [उपादेय] ग्राह्य।
उवाएय }
उवागच्छ } सक [उपा + गम्] समीप में आना।
उवागम }
उवागमण न [उपागमन] समीप में आगमन। स्थान, स्थिति।
उवागय वि [उपागत] समीप में आया हुआ। प्राप्त।
उवाडिय वि [उत्पाटित] उखाड़ा हुआ।
उवाणया } स्त्री [उपानह्] जूता।
उवाणहा }
उवादा सक [उपा + दा] ग्रहण करना।
उवादाण न [उपादान] ग्रहण। कार्यरूप में परिणत होनेवाला कारण। ग्राह्य।
उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त।
उवाय पुं [उपाय] हेतु, साधन। दृष्टान्त। प्रतीकार।
उवाय सक [उप + याच्] मनौती करना।
उवायण न [उपायन] भेंट।
उवायणाव देखो उवाइणाव।
उवायाण देखो उवादाण।
उवायाय वि [उपायात] समीप में आया हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवारूढ वि [उपारूढ] आरूढ़ ।

उवालंभ सक [उपा + लभ्] उलाहना देना ।

उवालद्ध वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह ।

उवालह सक [उपा + लभ्] उलाहना देना ।

उवावत्त पुं [उपावृत्त] वह अश्व जो लेटने से श्रम-मुक्त हुआ हो ।

उवावत्तिद (शौ) वि [उपावृत्तित] उपर्युक्त अश्व से युक्त ।

उवास सक [उप + आस्] उपासना करना ।

उवास पुं [अवकाश] खाली जगह, आकाश ।

उवासग वि [उपासक] उपासना करने-वाला, सेवक । पुं. श्रावक, जैन या बौद्ध गृहस्थ । °**दसा** स्त्री [°दशा] सातवाँ जैन अंग ग्रन्थ । °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] श्रावकों को करने योग्य नियम-विशेष ।

उवासणा स्त्री [उपासना] क्षौर-कर्म; हजा-मत वगैरह सफाई । सेवा ।

उवासय देखो **उवासग** ।

उवासय पुं [उपाश्रय] जैन मुनियों का निवास-स्थान ।

उवाहण सक [उपा + हन्] विनाश करना, मारना ।

उवाहणा देखो **उवाणहा** ।

उवाहि पुंस्त्री [उपाधि] कर्म-जनित विशेषण । सामीप्य, अस्वाभाविक धर्म ।

उवि सक [उप + इ] समीप आना । स्वीकार करना । प्राप्त करना ।

उविअ देखो **अविअ** = अपि च ।

उविअ वि [उपेत] युक्त ।

उविअ न [दे] शीघ्र । वि. परिकर्मित ।

उविंद पुं [उपेन्द्र] कृष्ण, एक देवविमान । °**वज्जा** स्त्री [°वज्रा] ग्यारह अक्षरों के पाद-वाला एक छन्द ।

उविक्ख सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना । अनादर करना ।

उविक्खेव पुं [उद्विक्षेप] हजामत, मुण्डन ।

उवियग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न ।

उवीव अक [उद् + विच्] उद्वेग करना ।

उवे देखो **उवि** ।

उवेक्ख देखो **उविक्ख** ।

उवेय वि [उपेत] समीप-गत । युक्त ।

उवेय वि [उपेय] उपाय-साध्य ।

उवेल्ल अक [प्र + सृ] फैलना ।

उवेस अक [उप + विश्] बैठना ।

उवेह सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, उदासीन रहना ।

उवेह सक [उत्प्र + ईक्ष्] जानना । निश्चय करना । कल्पना करना ।

°**उव्व** देखो **पुव्व** ।

उव्वंत वि [उद्वान्त] वमन किया हुआ । निष्क्रान्त ।

उव्वक्क सक [उद् + वम्] बाहर निकालना । वमन करना ।

उव्वग्ग देखो **ओवग्ग** ।

उव्वट्ट उभ [उद् + वृत्, वर्त्तय्] चलना-फिरना । मरना, एक गति से दूसरी गति में जन्म लेना । पद से भ्रष्ट करना । पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना । कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति को हटाकर लम्बी स्थिति करना । पार्श्व को चलाना-फिराना । उत्पन्न होना, उदित होना ।

उव्वट्ट देखो **उव्वट्टिय** ।

उव्वट्ट वि [दे] राग-रहित । गलित ।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] शरीर पर से मल वगैरह को दूर करना । शरीर को निर्मल करनेवाला द्रव्य—सुगन्धित वस्तु । दूसरे जन्म में जाना, मरण । पार्श्व का परिवर्तन । कर्म-परमाणुओं की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] तुले से उसके बीज को अलग करना।

उव्वट्टण न [अपवर्तन] देखो उव्वट्टणा = अपवर्त्तना।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है।

उव्वट्टिअ वि [उद्वर्तित] साफ किया हुआ।

उव्वड्ढ वि [उद्वृद्ध] वृद्धि-प्राप्त।

उव्वण वि [उल्बण] प्रचण्ड, उद्भट।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट।

उव्वत्त सक [उद् + वर्तय्] खड़ा करना। उलटा करना।

उव्वत्त वि [उद्वर्त्त] खड़ा करनेवाला।

उव्वत्त वि [उद्वृत्त] उत्तान, चित्त। उल्लसित। जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह। ऊर्ध्व-स्थित। घुमाया हुआ।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित।

उव्वत्तण न [उद्वर्तन] पार्श्व का परिवर्त्तन। ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्त्तन।

उव्वत्तिय वि [उद्वर्त्तित] परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ।

उव्वद्ध देखो उव्वड्ढ।

उव्वम सक [उद् + वम्] उलटी करना।

उव्वर अक [उद् + वृ] शेष रहना।

उव्वर पुं [दे] घर्म, ताप।

उव्वरिअ वि [दे] अधिक, बचा हुआ। अनीप्सित। निश्चित। अगणित। न. गरमी। वि. अतिक्रान्त।

उव्वरिअ न [अपवरिका] छोटा घर।

उव्वल सक [उद् + वल्] मालिश करना। उपलेपन करना। पीछे लौटना।

उव्वल सक [उद् + वलय्] उन्मूलन करना।

उव्वलणा स्त्री [उद्वलना] उन्मूलन। उद्वलन-योग्य कर्म-प्रकृति।

उव्वस वि [उद्वस] बसति-रहित।

उव्वसी स्त्री [उर्वशी] एक अप्सरा। रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी।

उव्वह सक [उद् + वह्] धारण करना। उठाना।

उव्वहण न [दे] महान् आवेश।

उव्वा स्त्री [दे] घर्म, ताप।

उव्वा, उव्वाअ अक [उद् + वा] सूखना।

उव्वाअ, उव्वाइअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त।

उव्वाउल न [दे] गीत। उपवन।

उव्वाउल न [दे] विपरीत सुरत। मर्यादा-रहित मैथुन।

उव्वाढ वि [दे] विस्तीर्ण। दुःखरहित।

उव्वाण देखो उव्वाअ = उद्वात।

उव्वाय देखो उवाय = उपाय।

उव्वार (अप) सक [उद् + वर्तय्] त्याग करना।

उव्वाल सक [कथ्] कहना।

उव्वास सक [उद्+वासय्] दूर करना। देशनिकाला करना। उजाड़ करना।

उव्वाह पुं [दे] घर्म, ताप।

उव्वाह पुं [उद्वाह] विवाह।

उव्वाह सक [उद् + बाधय्] विशेष प्रकार से पीड़ित करना।

उव्वाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ।

उव्वाहुल न [दे] उत्सुकता, उत्कण्ठा। वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर।

उव्विआइअ वि [उद्वेदित] उत्पीडित।

उव्विक्क न [दे] प्रलपित, प्रलाप।

उव्विग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न। भीत।

उव्विग्गिर वि [उद्वेगशील] उद्वेग करनेवाला।

उव्विज्ज देखो उव्विय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उव्विड वि [दे] चकित भीत। क्लान्त। क्लेश-युक्त।
उव्विडिम वि [दे] अधिक प्रमाण वाला। मर्यादा-रहित, निर्लज्ज।
उव्विण्ण देखो उव्विग्ग।
उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] ऊँचा गया हुआ। जिसकी ऊँचाई का माप किया गया हो वह। गम्भीर, गहरा, विद्ध।
उव्विन्न देखो उव्विग्ग।
उव्विय अक [उद्+विज्] उद्वेग करना, उदासीन होना।
उव्वियणिज्ज वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-प्रद।
उव्विरेयण न [उद्विरेचन] खाली करना।
उव्विल्ल अक [उद्+वेल्] चलना, काँपना। सक. वेष्टन करना। तड़फड़ाना।
उव्विल्ल अक [प्र+सृ] फैलना।
उव्विल्ल वि [उद्वेल] चञ्चल।
उव्विव अक [उद्+विज्] उद्वेग करना, खिन्न होना।
उव्विव्व } देखो उव्विव।
उव्वेअ }
उव्विव्व वि [दे] क्रुद्ध। उद्भट वेश वाला।
उव्विह सक [उत्+व्यध्] ऊँचा फेंकना। ऊँचा जाना, उड़ना।
उव्विह पुं [उद्विह] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक।
उव्वी पुं [उर्वी] पृथिवी। °स पुं [°श] राजा।
उव्वीढ देखो उव्वूढ।
उव्वीढ वि [दे] खोदा हुआ।
उव्वीढ वि [उद्विद्ध] उत्क्षिप्त।
उव्वील सक [अव+पीडय्] पीड़ा पहुँचाना, मार-पीट करना।
उव्वीलय वि [अपव्रीडक] लज्जा-रहित करनेवाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देनेवाला।
उव्वुण्ण वि [दे] उद्विग्न। उत्सिक्त। शून्य। उद्भट, उल्बण।
उव्वूढ वि [उद्व्यूढ] धारण किया हुआ। परिणीत।
उव्वेअणीअ वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-कारक।
उव्वेग पुं [उद्वेग] शोक, दिलगीरी। व्याकुलता।
उव्वेढ सक [उद्+वेष्ट्] बाँधना। परिवेष्टित करना। पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना।
उव्वेत्ताल न [दे] निरन्तर रोदन।
उव्वेय देखो उव्वेग।
उव्वेयग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक।
उव्वेयणग } वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक।
उव्वेयणय }
उव्वेयणय पुंन [उद्वेजनक] एक नरक-स्थान।
उव्वेल अक [प्र+सृ] फैलना।
उव्वेल वि [उद्वेल] उच्छलित।
उव्वेल्ल देखो उव्वेढ।
उव्वेल्ल सक [उद्+वेल्ल्] सत्वर जाना। त्याग करना। ऊँचा उड़ना, ऊँचा जाना। अक. फैलना।
उव्वेल्ल वि [उद्वेल] उच्छलित, उछला हुआ। प्रसृत, फैला हुआ। उद्भिन्न।
उव्वेल्लिअ वि [उद्वेल्लित] कम्पित। उत्सारित। प्रसारित।
उव्वेव देखो उव्विव।
उव्वेव देखो उव्वेग।
उव्वेवग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक।
उव्वेवणय वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक।
उव्वेवय देखो उव्वेवग।
उव्वेसर पुं [उव्वेश्वर] इस नाम का एक राजा।
उव्वेह पुं [उद्वेध] ऊँचाई। गहराई। जमीन का अवगाह।
उव्वेहलिया स्त्री [उद्वेधलिका] वनस्पति-विशेष।
उसड्ढ वि [दे] ऊँचा।
उसढ देखो ऊसढ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसण पुं [उशनस्] ग्रह-विशेष, शुक्र ।
उसणसेण पुं [दे] बलभद्र ।
उसत्त वि [उत्सक्त] ऊपर बँधा हुआ ।
उसन्न पुं [उत्सन्न] भ्रष्ट यति-विशेष की एक जाति ।
उसप्पिणी देखो उस्सप्पिणी ।
उसभ पुंन [वृषभ] एक देव-विमान ।
उसभ पुं [ऋषभ, वृषभ] स्वनामख्यात प्रथम जिनदेव । बैल । वेष्टन-पट्ट । देव-विशेष । ब्राह्मण-विशेष । °कंठ पुं [°कण्ठ] बैल का गला । रत्न-विशेष । °कूड पुं [°कूट] पर्वत-विशेष । °णाराय न [°नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-बन्ध-विशेष । °दत्त पुं. ब्राह्मण-कुण्ड ग्राम का रहनेवाला एक ब्राह्मण, जिसके घर भगवान् महावीर अवतरे थे । °पुर न. नगर-विशेष । °पुरी स्त्री. एक राज-धानी । °सेण पुं [°सेन] भगवान् ऋषभदेव के प्रथम गणधर ।
उसर (पै) पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट ।
उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित ।
उसह देखो उसभ ।
उसहसेण पुं [वृषभसेन] तीर्थङ्कर-विशेष । जिनदेव की एक शाश्वती प्रतिमा ।
उसा अ [उषस्] प्रभात-काल ।
उसिण वि [उष्ण] गरम । पुंन. गरम स्पर्श । गरमी ।
उसिय वि [उत्सृत] व्याप्त ।
उसिय वि [उषित] निवसित ।
उसिर } न [उशीर] सुगन्धि तृण-विशेष ।
उसीर }
उसीर न [दे] कमल-दण्ड ।
उसु पुं [इषु] बाण । धनुराकार क्षेत्र का बाणस्थानीय क्षेत्र-परिमाण । °कार, °गार, °यार पुं. पर्वत-विशेष । इस नाम का एक राजा । स्वनाम-ख्यात एक पुरोहित । वि. बाण बनानेवाला । स्वनाम-ख्यात एक नगर ।
उसुअ पुं [दे] दोष, दूषण ।
उसुअ न [इषुक] बाण के आकार का एक आभूषण । तिलक ।
उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ।
उसुयाल न [दे] उदूखल ।
उसूलग पुं [दे] परिखा, शत्रु-सैन्य का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त-विशेष ।
उस्स पुं [दे] हिम, ओस ।
उस्संकलिअ वि [उत्संकलित] निसृष्ट, परित्यक्त ।
उस्संखलअ वि [उच्छृङ्खलक] निरङ्कुश ।
उस्संग पुं [उत्सङ्ग] क्रोड, कोला ।
उस्संघट्ट वि [उत्संघट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित ।
उस्सक्क अक [उत् + ष्वष्क्] उत्कण्ठित होना । पीछे हटना । सक स्थगित करना ।
उस्सक्क सक [उत् + ष्वष्क्] प्रदीप्त करना, उत्तेजित करना ।
उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] उत्सर्पण ।
उस्सग्ग पुं [उत्सर्ग] त्याग । सामान्य विधि ।
उस्सग्गि वि [उत्सर्गिन्] उत्सर्ग—सामान्य नियम—का जानकार ।
उस्सण्ण वि [अवसन्न] निमग्न ।
उस्सण्ण अ [दे] प्रायः ।
उस्सण्हसण्हिआ स्त्री [उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्व-रेणु का ६४वाँ हिस्सा ।
उस्सन्न देखो उस्सण्ण = दे । °भाव पुं. बाहुल्यभाव ।
उस्सन्न वि [उत्सन्न] निज धर्म में आलसी साधु ।
उस्सप्पण न [उत्सर्पण] उन्नति, पोषण । वि. उन्नत करनेवाला ।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] उन्नति, प्रभावना ।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] विख्यात करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] उन्नत काल विशेष, दश कोटाकोटि-सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सब पदार्थों की क्रमशः उन्नति होती है।

उस्सय पुं [उच्छ्रय]उन्नति, उच्चता। अहिंमा। शरीर।

उस्सयण न [उच्छ्रयण] अभिमान।

उस्सर अक [उत् + सृ] दूर जाना।

उस्सव सक [उत् + श्रि] ऊँचा करना। खड़ा करना।

उस्सव पुं [उत्सव] उत्सव।

उस्सवणया स्त्री [उच्छ्रयणता] ऊँचा ढेर करना।

उस्सस अक [उत् + श्वस्] उच्छ्वास लेना, श्वास लेना। उल्लसित होना।

उस्सा स्त्री [उस्रा] गैया, गौ।

उस्सा [दे] देखो ओसा। °चारण पुं. ओस के अवलम्बन से गति करने का सामर्थ्यवाला मुनि।

उस्सार सक [उत् + सारय्] दूर करना। बहुत दिन में पठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना। °कप्प पुं [°कल्प] पाठन-सम्बन्धी आचार-विशेष।

उस्सारग वि [उत्सारक] दूर करनेवाला। उत्सार कल्प के योग्य।

उस्सास पुं [उच्छ्वास] ऊँचा श्वास। प्रबल श्वास। °नाम् न [°नामन्] उसाँस-हेतुक कर्म-विशेष।

उस्सासय वि [उच्छ्वासक] उसाँस लेनेवाला।

उस्साह देखो उच्छाह।

उस्सिखल वि [उच्छृङ्खल] स्वेच्छाचारी।

उस्सिघिय वि [दे] सूंघा हुआ।

उस्सिच सक [उत् + सिच्] सिंचना, सेक करना। ऊपर सिंचना। आक्षेप करना। खाली करना।

उस्सिंचण न [उत्सेचन] सिञ्चन। कूपादि से जल वगैरह को बाहर को खींचना। सिंचन के उपकरण।

उस्सिक्क देखो उस्सक्क।

उस्सिक्क सक [मुच्] त्याग करना।

उस्सिक्क सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना।

उस्सिक्खिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊँचा फेंका हुआ। ऊपर रखा हुआ।

उस्सिन्न वि [उत्स्विन्न] विकारान्त को प्राप्त, अचित्त किया हुआ।

उस्सिय वि [उच्छ्रित] उन्नत। ऊँचा किया हुआ।

उस्सिय वि [उत्सृत] व्याप्त। ऊँचा किया किया हुआ। अहंकारी।

उस्सीस न [उच्छीर्ष] तकिया।

उस्सुआव सक [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना।

उस्सुंक } वि [उच्छुल्क] शुल्क-रहित, कर-
उस्सुक्क } रहित।

उस्सुक्क वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।

उस्सुक्क } न [औत्सुक्य] उत्सुकता।
उस्सुग }

उस्सुक्काव वि [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना।

उस्सुग वि [उत्सूत्र] सूत्र-विरुद्ध, सिद्धान्त-विपरीत।

उस्सुय देखो उस्सुग।

उस्सुय न [औत्सुक्य] उत्कण्ठा। °कर वि. उत्कण्ठा-जनक।

उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ।

उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या।

उस्सेअ पुं [उत्सेक] सिंचन। उन्नति। गर्व।

उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी।

उस्सेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई। शिखर। अभ्युदय।

उस्सेहंगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण।

उह स [उभ] दोनों, युग्म, युगल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उहट्ट अक [अप + घट्ट्] नष्ट होना ।
उहट्टु = उव्वट्ट का संकृ. ।
उहय स [उभय] दोनों ।
उहर न [उपगृह] छोटा घर ।
उहस सक [उप+हस्] उपहास करना ।
उहार पुं. मत्स्य-विशेष ।
उहिंजल पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष ।
उहिंजलिआ स्त्री [दे] ऊपर देखो ।
उहु (अप) देखो अहो = अहो ।
उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख ।

ऊ

ऊ पुं. प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वरवर्ण ।
ऊ अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—निन्दा । आक्षेप । प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना । विस्मय । सूचना ।
ऊअट्ठ वि [अववृष्ट] वृष्टि से नष्ट ।
ऊआ स्त्री [दे] यूका, जूं ।
ऊआस पुं [उपवास] भोजनाभाव ।
ऊगिय वि [दे] अलंकृत ।
ऊज्झाअ देखो उवज्झाय ।
°ऊड देखो कूड ।
ऊढ वि. वहन किया हुआ, धारण किया हुआ । परिणीत ।
ऊढिअय वि [दे] प्रावृत, आच्छादित । न. आच्छादन, प्रावरण ।
ऊण वि [ऊन] न्यून, हीन । °वीसइम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ ।
ऊण न [ऋण] ऋण ।
ऊणंदिअ वि [दे] आनन्दित ।
ऊणिमा स्त्री [पूर्णिमा] पूर्णिमा ।
ऊणिय वि [ऊनित] कम किया हुआ ।
ऊणिय पुं [ऊणिक] सेवक-विशेष ।
ऊणोयरिआ स्त्री [ऊनोदरिता] कम आहार करना, तप-विशेष ।
ऊतालीस, ऊयाल स्त्री न [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस ।
ऊमिणण न [दे] प्रोंखणक, चुमना ।
ऊमिणिय वि [दे] जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह ।
ऊमित्तिअ न[दे]दोनों पार्श्वों में आघात करना ।
°ऊर पुं [दे] ग्राम । संघ ।
°ऊर देखो तूर ।
°ऊर देखो पूर ।
ऊरण पुं. मेष ।
ऊरणी स्त्री [दे] मेष, भेड़ ।
ऊरणीअ वि [औरणिक] भेड़ी चरानेवाला ।
°ऊरय वि [पूरक] पूर्ति करनेवाला ।
ऊरस वि [औरस] स्व-पुत्र ।
ऊरिसंकिअ वि [दे] रोका हुआ ।
ऊरी अ. अङ्गीकार । विस्तार । °कय वि [°कृत] अंगीकृत ।
ऊरु पुं. जाँघ । °जाल न. जांघ तक लटकनेवाला एक आभूषण ।
ऊरुदग्घ वि [ऊरुदघ्न] जंघा-प्रमाण ।
ऊरुद्दअस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो ।
ऊरुमेत्त वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो ।
ऊल पुं [दे] गति-भङ्ग ।
°ऊल देखो कूल ।
ऊस पुं [उस्र] किरण । °मालि पुं [°मालिन्] सूर्य ।
ऊस पुं [ऊष] क्षार-भूमि की मिट्टी ।
ऊसअ न [दे] तकिया ।
ऊसढ वि [उत्सृष्ट] परित्यक्त । न. उत्सर्जन । मलादि का त्याग ।
ऊसढ वि [दे. उच्छ्रित] उच्च, श्रेष्ठ । ताजा ।
ऊसण न [दे] गति-भङ्ग ।
ऊसण्हसण्हिया देखो उस्सण्हसण्हिया ।
ऊसत्त देखो उसत्त ।
ऊसत्थ पुं [दे] जम्भाई । वि. आकुल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊसर अक [उत् + सृ] खिसकना । दूर होना। सक. त्यागना ।
ऊसर न [ऊषर] क्षार-भूमि ।
ऊसरण न [उत्सरण] आरोहण ।
ऊसय पुं [उच्छ्रय] उत्सेध, ऊँचाई । उत्सेधांगुल ।
ऊसल अक [उत् + लस्] उल्लसित होना । प्रादुर्भूत होना ।
ऊसल वि [दे] पीन, पुष्ट ।
ऊसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित ।
ऊसव देखो उस्सव = उत्सव ।
ऊसव देखो उस्सव = उत् + श्रि ।
ऊसविअ वि [दे] उद्भ्रान्त । ऊँचा किया हुआ ।
ऊसस सक [उत् + श्वस्] ऊँचा साँस लेना । विकसित होना । पुलकित होना ।
ऊससण न [उच्छ्वसन] उसाँस । °लद्धि स्त्री [°लब्धि] श्वासोच्छ्वास की शक्ति ।
ऊसाअंत वि [दे] खेद होने पर शिथिल ।
ऊसाइअ वि [दे] विक्षिप्त । उत्क्षिप्त ।
ऊसार सक [उत् + सारय्] दूर करना, त्यागना ।
ऊसार पुं [दे] गर्त्त-विशेष ।
ऊसार पुं [आसार] वेग वाली वृष्टि ।
ऊसारि वि [आसारिन्] वेग से बरसनेवाला।
ऊसास पुं [उच्छ्वास] ऊँचा श्वास । मरण । °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष ।
ऊसासय वि [उच्छ्वासक] उसाँस लेनेवाला।
ऊसासिअ वि [उच्छ्वासित] बाधा-रहित किया हुआ ।
ऊसाह पुं [उत्साह] उत्साह, उछाह ।
ऊसि सक [उत् + श्रि] ऊँचा करना, उन्नत करना ।
ऊसिक्क सक [उत् + ष्वष्क्] ऊँचा करना ।
ऊसिक्किअ वि [दे] प्रदीप्त, शोभायमान ।
ऊसित्त वि [उत्सिक्त] गर्वित । उद्धत । बढ़ा हुआ । अतिशायित ।
ऊसित्त वि [अवसिक्त] उपलिप्त ।
ऊसिय देखो उस्सिय = उच्छ्रित ।
ऊसीस, ऊसीसग, ऊसीसय } न [उच्छीर्ष, °क] उसीसा ।
ऊसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ।
ऊसुअ वि [उच्छुक] जहाँ से शुक उद्गत हुआ हो वह ।
ऊसुंभ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना ।
ऊसुंभिअ न [दे] गला बैठ जाय ऐसा रुदन ।
ऊसुक्किअ वि [दे] विमुक्त ।
ऊसुग देखो ऊसुअ = उत्सुक ।
ऊसुग न [दे] मध्य भाग ।
ऊसुम्भिअ वि [दे] उसीसा किया हुआ ।
ऊसुर न [दे] ताम्बूल ।
ऊसुरुसुंभिअ [दे] देखो ऊसुंभिअ ।
ऊह सक [ऊह्] तर्क करना । विचारना ।
ऊह न [ऊधस्] स्तन ।
ऊह पुं. विचार, विवेक-बुद्धि । तर्क । संख्या-विशेष । ओघ-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान ।
ऊहंग न [ऊहाङ्ग] संख्या-विशेष ।
ऊहट्ठ वि [दे] उपहसित ।
ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह ।
ऊहापोह पुं. सोच-विचार ।
ऊहिअ वि [ऊहित] अनुमान से ज्ञात ।

ए

ए पुं स्वर वर्ण-विशेष ।
ए अ [ए, ऐ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—आमन्त्रण, सम्बोधन । वाक्यालंकार । स्मरण । असूया । अनुकम्पा । आह्वान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए सक [आ + इ] आगमन करना।

एअ वि [एत] आया हुआ।

एअ स [एतद्] यह। °ारिस वि [°ादृश] ऐसा। °ारूव वि [°रूप] इस प्रकार का।

एअ देखो एग। °आइ वि [°ाकिन्] अकेला। °ारह त्रि. ब. [°ादशन्] ग्यारह की संख्या। °ारहम वि [°ादश] ग्यारहवाँ।

एअ देखो एव = एव।

एअ } देखो एवं।
एअं }

एअंत देखो एक्कंत।

एआईस (अप) पुं. ब. [एकविंशति] एक्कीस।

एयारिच्छ वि [एतादृश] ऐसा।

एइय वि [एजित] कम्पित।

एइस देखो एईस।

एईस वि [एतादृश]ऐसा।

एउंजि (अप) अ [एवमेव] इसी तरह। यही।

एऊण देखो एगूण।

एक देखो एक्क तथा एग। °इआ अ [°दा] एक समय में। °ल (अप) वि [°क] एकाकी। °लिय वि [°ाकिन्] एकाकी। °ाणउइ स्त्री [°नवति] एकानबे।

एकूण देखो अउण = एकोन।

एक्क देखो एक तथा एग। °वए देखो एगपए। °सणिय वि [°ाशनिक] एक ही बार भोजन करनेवाला। °सत्तरि स्त्री [°सप्तति] एकहत्तर। °सरग, °सरय वि [°सरक, °सर्ग] एक समान। °सि अ [°शस्] एक बार। °सि अ [°त्र] एक (किसी एक) में। °सि, °सिअं अ [°दा] कोई एक समय में। °सिं अ [°शस्] एक बार। °इ वि [°ाकिन्] अकेला। °इ पुं [°ादि] स्वनाम-ख्यात एक माण्डलिक। °ाणउय वि [°नवत] ९१ वाँ। °ारसम वि [°ादश] ग्यारहवाँ। °रह त्रि. ब. [°ादशन्] ग्यारह। °ासीइ स्त्री [°ाशीति] एकासी। °ासीइविह वि [°ाशीतिविध] एकासी तरह का °ासीय वि [°ाशीत] एकासीवाँ °ोत्तरसय वि [°ोत्तरशततम] एक सौ एक वाँ। °ोयर पुं [°ोदर] सगा भाई। °ोयरा स्त्री [°ोदरा] सगी बहिन।

एक्क वि [एकक] अकेला।

एक्क वि [दे] प्रेम-तत्पर।

एक्कई (अप) वि [एकाकिन्] एकाकी।

एक्कंग न [दे] चन्दन।

एक्कंत पुं [एकान्त] सर्वथा। तत्त्व, प्रमेय। जरूर। असाधारणता। निर्जन, निराला। देखो एगंत।

एक्कक्क वि [एकैक] प्रत्येक।

एक्कक्कम [दे] देखो एक्केक्कम।

एक्कगसित्थ न [एकसिक्थ] तपो-विशेष।

एक्कग्ग देखो एग-ग्ग = एक-क।

एक्कघरिल्ल पुं [दे] देवर।

एक्कणड पुं [दे] कथा कहनेवाला।

एक्कमुह वि [दे] धर्म-रहित। दरिद्र। प्रिय।

एक्कमेक्क वि [एकैक] प्रत्येक।

एक्कल्ल वि [दे] प्रबल।

एक्कल्लपुंडिग न [दे] अल्प बिन्दुवाली बारिश।

एक्कसरिअं अ [दे] शीघ्र। सम्प्रति, आजकल।

एक्कसिरिआ अ [दे] शीघ्र।

एक्कसाहिल्ल वि [दे] एक स्थान में रहनेवाला।

एक्कसिंबली स्त्री [दे] शाल्मली-पुष्पों से नूतन फलवाली।

एक्कसेस देखो एग-सेस।

एक्कह देखो एग।

एक्कार देखो एक्कारह।

एक्कार पुं [अयस्कार] लोहार।

एक्कूण देखो अउण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्केक्कम वि [दे] परस्पर।

एक्केल्ल } देखो एग।
एक्कोल्ल }

एग स [एक] एक, प्रथम-संख्या। एकाकी। अद्वितीय। असहाय। अन्य। समान। °इय देखो एग। °इय वि[°क]अकेला। °क्खरिय वि [°ाक्षरिक] एक अक्षरवाला। °खंधी स्त्री [°स्कन्ध] एक स्कन्धवाला (वृक्ष वगैरह)। °खुर वि. एक खुरवाला (गौ वगैरह पशु)। °ग वि [°क] एकाकी। °ग्ग वि [°ाग्र] तल्लीन, तत्पर। °चक्खु वि [°चक्षुष्क] एक आँखवाला। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] एकतालीसवाँ। °चर वि. एकाकी विहरनेवाला। °चरिया स्त्री [°चर्या] एकाकी विहरना। °चारि वि [°चारिन्] अकेल-विहारी। °चूड पुं. विद्याधर वंश का एक राजा। °च्छत्त वि [°च्छत्र] पूर्ण प्रभुत्व-वाला। अद्वितीय। °जडि वि [°जटिन्] महाग्रह-विशेष। °जाय वि [°जात] अकेला, निस्सहाय। °ट्ठ वि [°स्थ] इकट्ठा। °ट्ठ वि [°ार्थ] एक अर्थवाला, पर्याय-शब्द। °ट्ठ, °ट्ठं अ [°त्र] एक स्थान में। °ट्ठिय वि [°ार्थिक] एक ही अर्थवाला, पर्याय-शब्द। °ट्ठिय वि [°ास्थिक] जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा आम वगैरह का पेड़। °णासा स्त्री [°नासा] एक दिक्कुमारी। °त्त न [°त्र] एक ही स्थान में। °त्थ देखो °ट्ठ। °पए अ [°पदे] युगपत्। °पक्ख वि [°पक्ष] असहाय। ऐकान्तिक, अविरुद्ध। °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] एकावनवाँ। °पाइअ वि [°पादिक] एक पाँव ऊँचा रखनेवाला। °पासग वि [°पार्श्वक] एक ही पार्श्व की भूमि से सम्बन्ध रखनेवाला। °पासिय वि [°पार्श्विक] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °भत्त न [°भक्त] एकाशन व्रत। °भूय वि [°भूत] एकीभूत। समान। °मण वि [°मनस्] एकाग्रचित्त। °मेग वि [°एक] प्रत्येक। °य वि [°क] एकाकी। °य वि [°ग] अकेला जानेवाला। °यर वि [°तर] दो में से कोई भी एक। °या अ [°दा] एक समय में। °राइय वि [°रात्रिक] एक-रात्रि-सम्बन्धी। °राय न [°रात्र] एक रात्र। °ल्ल वि [एक] एकाकी। °विह वि [°विध] एक प्रकार का। °विहारि वि [°विहारिन्] एकल-विहारी। °वीसइम वि [°विंशतितम] एक्कीसवाँ। °वीसा स्त्री [°विंशति] एक्कीस। °सट्ठ वि [°षष्ट] एकसठवाँ। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] एकसठ। °सत्तर वि [°सप्तत] एकहत्तरवाँ। °समइय वि [°सामयिक] एक समय में होनेवाला। °सरिया स्त्री [°सरिका] एकावली, हार-विशेष। °साडिय वि [°शाटिक] एक वस्त्र-वाला। °सिअं अ [°दा] एक समय में। °सेल पुं [°शैल] पर्वत-विशेष। °सेलकूड पुंन [°शैलकूट] एक शैल पर्वत का शिखर-विशेष। °सेस पुं [°शेष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष। °हा अ [°धा] एक प्रकार का। °हुत्त अ [°सकृत्] एक बार। °ाणिअ वि [°ाकिन्] अकेला। °ादस त्रि. ब. [°ादशन्] ग्यारह। °ादसुत्तरसय वि [°ादशोत्तरशततम] एक सौ ग्यारहवाँ। °ाभोग पुं [°ाभोग] एकत्र-बन्धन। °ामोस वि [°ामर्श] प्रत्युपेक्षणा का एक दोष, वस्त्र को मध्य में ग्रहण कर दोनों आँचलों को हाथ से घसीट कर उठाना। °ायय वि [°ायत] एकत्र सम्बद्ध। °ारस देखो [°ादस]। °ारसी स्त्री [°ादशी] एकादशी। °ावण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन। °ावलि, °ली स्त्री [°ावलि,°ली] विविध प्रकार की मणियों से ग्रथित हार। °ावलीपविभत्ति न [°ावलीप्रविभक्ति] नाटक-विशेष। °ावाइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुं [°वादिन्] एक ही आत्मा वगैरह पदार्थ को माननेवाला दर्शन, वेदान्त-दर्शन। °वीस स्त्रीन [°विंशति] एक्कीस। °सण न [°शन, °सन] एकाशन। °ह पुंन [°ह] एक दिन। °हच्च वि [°हत्य] एक ही प्रहार से नष्ट हो जानेवाला। °हिय वि [°हिक] एक दिन का उत्पन्न। पुं. एकान्तर ज्वर। °हिय वि [°धिक] एक से ज्यादा। देखो एअ, एक और एक्क।

एगंत देखो एक्कंत। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] जैनेतर दर्शन। वि. जैनेतर दर्शन को माननेवाला। स्त्री. निश्चित सम्यक्त्व, निश्चल सत्य-श्रद्धा। °दूसमा स्त्री [°दुष्षमा] अवसर्पिणी-काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी-काल का पहला आरा। °पंडिय पुं [°पण्डित] साधु, संयत। °बाल पुं. जैनेतर दर्शन को माननेवाला। असंयत जीव। °वाइ वि [°वादिन्] जैनेतर दर्शन का अनुयायी। °वाय पुं [°वाद] जैनेतर दर्शन। °सुसमा स्त्री [°सुषमा] अवसर्पिणी काल का प्रथम और उत्सर्पिणी काल का छठवाँ आरा।

एगंतिय वि [ऐकान्तिक] अवश्यम्भावी। अद्वितीय। न. मिथ्यात्व का एक भेद—वस्तु को सर्वथा क्षणिक आदि एक ही दृष्टि से देखना। जैनेतर दर्शन।

एगट्ठि देखो एग्ग-सट्ठि।

एगट्ठिया स्त्री [दे] नौका।

एगठाण न [एकस्थान] एक प्रकार का तप।

एगिंदिय वि [एकेन्द्रिय] केवल स्पर्शेन्द्रियवाला।

एगीभूत वि [एकीभूत] मिला हुआ।

एगूण देखो अउण। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] उनचालीसवाँ। °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] उनचालीस। °चत्तालीसइम वि [°चत्वारिंशत्तम] उनचालीसवाँ। °णउइ स्त्री [°नवति] नवासी। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] उनतीसवाँ। °नउइ देखो °णउइ। °नउय वि [°नवत] नवासीवाँ। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनचास। °पन्नास वि [°पञ्चाश] उनपचासवाँ। °पन्नासइम वि [पञ्चाशत्तम] उनपचासवाँ। °वीस स्त्रीन [°विंशति] उन्नीस। °वीसइ स्त्री [°विंशति] उन्नीस। °वीसइम, °वीसईम, °वीसम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ। °सट्ठ वि [°षष्ठ] उनसठवाँ। °सत्तर वि [°सप्तत] उनसत्तरवाँ। °सी, °सीइ स्त्री [°शीति] उन्नासी। °सीय वि [°शीत] उन्नासीवाँ। देखो अउण।

एगूरुय पुं [एकोरुक] इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। वि. उसका निवासी।

एग्ग (अप) देखो एग।

एज पुं. वायु।

एजणया स्त्री [एजना] कम्प, काँपना।

एज्ज देखो एय = एज्।

एज्जण न [आयन] आगमन।

एड सक [एड्] त्याग करना।

एड सक [एडय्] दूर करना।

एडक्क पुं [एडक] मेष, भेड़।

एडया स्त्री [एडका] भेड़ी।

एण पुं. कृष्ण मृग। °णाहि स्त्री [°नाभि] कस्तूरी।

एणंक पुं [एणाङ्क] चन्द्र।

एणिज्ज वि [एणेय] हरिण-सम्बन्धी।

एणिज्जग पुं [एणेयक] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी।

एणिस पुं. वृक्ष-विशेष।

एणी स्त्री [एणी] हरिणी। °यार पुं [°चार] हरिणी को चरानेवाला।

एणुवासिय पुं [दे] भेक, मेढ़क।

एणेज्ज देखो एणिज्ज।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एण्हं } अ [इदानीम्] अधुना ।
एण्हिं }
एत्ताव देखो एत्तिअ = एतावत् ।
एत्तअ वि [इयत्, एतावत्] इतना ।
एत्तहि (अप) अ [इतस्] यहाँ से ।
एत्तहे देखो इत्तहे ।
एत्ताहे देखो इत्ताहे ।
एत्तिअ } वि [इयत्, एतावत्] इतना ।
एत्तिल } °मत्त, °मेत्त वि [°मात्र] इतना ही ।
एत्तिक (शौ) देखो एत्तिअ = एतावत् ।
एत्तुल (अप) ऊपर देखो ।
एत्तूण अ [दे] अधुना ।
एत्तो देखो इओ ।
एत्तोअ अ [दे] यहाँ से लेकर ।
एत्थ अ [अत्र] यहाँ, यहाँ पर ।
एत्थी देखो इत्थी ।
एत्थु (अप) देखो एत्थ ।
एदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य ।
एदिहासिअ (शौ) वि [ऐतिहासिक] इतिहास-सम्बन्धी ।
एद्दह देखो एत्तिअ ।
एम (अप) अ [एवं] इस तरह ।
एमइ (अप) अ [एवमेव] ऐसा ही ।
एमाइ } वि [एवमादि] इत्यादि ।
एमाइय }
एमाण वि [दे] प्रवेश करता हुआ ।
एमिणिआ स्त्री [दे] वह स्त्री, जिसके शरीर को किसी देश के रिवाज के अनुसार सूत के धागे से माप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है ।
एमेअ } अ [एवमेव] इसी प्रकार ।
एमेव }
एम्व (अप) अ [एवम्] इस तरह ।
एम्वइ (अप) अ [एवमेव] इसी तरह ।
एम्वहिं (अप) अ [इदानीम्] इस समय ।
एय अक [एज्] काँपना, हिलना । चलना ।
एय पुं [एज] गति ।
एयंत देखो एक्कंत ।
एयाणि देखो इयाणि ।
एयावंत वि [एतावत्] इतना ।
एरंड पुं [एरण्ड] एरण्ड का पेड़ । तृण-विशेष । °मिंजिया स्त्री [°मिञ्जिका] एरण्ड-फल ।
एरंड वि [ऐरण्ड] एरण्ड-वृक्ष-सम्बन्धी ।
एरंडइय } पुं [दे] पागल कुत्ता ।
एरंडय }
एरण्णवय न [ऐरण्यवत] क्षेत्र-विशेष । वि. उस क्षेत्र में रहनेवाला ।
एरवई स्त्री [ऐरावती, अजिरवती] नदी-विशेष ।
एरवय न [ऐरवत] क्षेत्र-विशेष । पुं. पर्वत-विशेष । °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष ।
एराणी स्त्री [दे] इन्द्राणी व्रत का सेवन करने वाली स्त्री ।
एरावई स्त्री [ऐरावती] नदी-विशेष ।
एरावण पुं [ऐरावण] इन्द्र का हाथी । °वाहण पुं [°वाहन] इन्द्रवाहन ।
एरावय पुं [ऐरावत] ह्रद-विशेष । ह्रद-विशेष का अधिष्ठाता देव । छन्दः-शास्त्र-प्रसिद्ध पञ्च-कला-प्रस्तार में आदि के ह्रस्व और अन्त के दो गुरु अक्षरों का संकेत । लकुच वृक्ष । सरल और लम्बा इन्द्र-धनुष । इरावती नदी का समीपवर्त्ती देश । इन्द्र का हाथी ।
एरिस वि [ईदृश] इस तरह का ।
एरिसिअ (अप) ऊपर देखो ।
एल वि [दे] निपुण ।
एल } पुं [एड, एल] मृगों की एक
एलग } जाति । मेष, भेड़ । °मूअ, °मूग वि [°मूक] भेड़ की तरह अव्यक्त बोलनेवाला ।
एलगच्छ न [एलकाक्ष] स्वनाम-ख्यात नगर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष।
एलय देखो एल।
एलविल वि [दे] धनाढ्य। पुं. वृषभ।
एला स्त्री [एला] इलायची का पेड़। इलायची-फल। °रस पुं. इलायची का रस।
एलालुय पुंन [एलालुक] आलू की एक जाति।
एलावच्च न [एलापत्य] माण्डव्य गोत्र का एक शाखा-गोत्र।
एलावच्च वि [ऐलापत्य] एलापत्य-गोत्र का।
एलावच्चा स्त्री [एलापत्या] पक्ष की तीसरी रात।
एलिक्ख वि [ईदृक्ष] ऐसा।
एलिंध पुं [एलिङ्ग] धान्य-विशेष।
एलिया स्त्री [एडिका, एलिका] एक जाति की मृगी। भेड़िया।
एलिस देखो एरिस।
एलु पुं. वृक्ष-विशेष।
एलुग } पुंन [एलुक] द्वार के नीचे की
एलुय } लकड़ी।
एल्ल वि [दे] दरिद्र।
एव अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—अवधारण। सादृश्य। चार-नियोग। निग्रह। परिभव। अल्प।
एव देखो एवं।
एवइ वि [इयत्, एतावत्] इतना। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] इतनी बार।
एवं अ [एवम्] इस तरह। °भूअ पुं [°भूत] व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया से विशिष्ट अर्थ को ही शब्द का अभिधेय माननेवाला पक्ष। वि. इस तरह का। °विह वि [°विध] इस प्रकार का।
एवंहास पुं. इतिहास।
एवड (अप) वि [इयत्] इतना।
एवमाइ देखो एमाइ।
एवमेव } देखो एमेव।
एवामेव }
एव्वं देखो एवं।
एव्व देखो एव = एव।
एव्वहि (अप) अ [इदानीम्] इस समय।
एव्वारु पुं [इर्वारु] ककड़ी।
एस सक [इष्] इच्छा करना। खोजना। प्रकाशित करना।
एस सक [आ + इष्] करना। खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना। निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना।
एस वि [एष्य] भावी पदार्थ। पुं. भविष्य काल।
°एस देखो देस।
एसग वि [एषक] अन्वेषक।
एसज्ज न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुत्व।
एसणा स्त्री [एषणा] अन्वेषण। प्राप्ति। प्रार्थना। निर्दोष आहार की खोज करना। निर्दोष भिक्षा। इच्छा। भिक्षा का ग्रहण। °समिइ स्त्री [°समिति] निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना। °समिय वि [°समित] निर्दोष भिक्षा को ग्रहण करनेवाला।
एसणिज्ज वि [एषणीय] ग्रहण-योग्य।
एसिय वि [एषिक] खोज करनेवाला। पुं. व्याध। पाखण्डि-विशेष। मनुष्यों की एक नीच जाति।
एसिय वि [एषित] भिक्षा-चर्या की विधि से प्राप्त।
एस्सरिय देखो एसज्ज।
एह अक [एध्] बढ़ना। उन्नत होना।
एह (अप) वि [ईदृक्] इसके जैसा।
एहत्तरि (अप) स्त्री [एकसप्तति] संख्या-विशेष, ७१।
एहा स्त्री [एधस्] समिध।
एहिअ वि [ऐहिक] इस जन्म-सम्बन्धी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—सम्भावना। आमन्त्रण, सम्बोधन। प्रश्न। अनुराग। अनुनय।

ओ

ओ पुं. स्वर वर्ण-विशेष।
ओ देखो अव = अप।
ओ देखो अव।
ओ देखो उव।
ओ देखो उअ = उत।
ओ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—वितर्क। प्रकोप, विस्मय। सूचना। पश्चात्ताप। सम्बोधन। आमन्त्रण। पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय।
ओअ न [दे] वार्त्ता।
ओअअ वि [अपगत] अपसृत।
ओअंक पुं [दे] गर्जित, गर्जना।
ओअंद सक [आ + छिद्] बलात्कार से छीन लेना। नाश करना।
ओअंदणा स्त्री [आच्छेदना] नाश। जबरदस्ती छीनना।
ओअक्ख सक [दृश्] देखना।
ओअग्ग सक [वि + आप्] व्याप्त करना।
ओअग्गिअ वि [दे] अभिभूत। न. केश वगैरह को एकत्रित करना।
ओअग्घिअ } वि [दे] सूंघा हुआ।
ओअघिअ }
ओअण्ण वि [अवनत] नमा हुआ।
ओअत्त वि [अपवृत्त] उलटा किया हुआ।
ओअत्तअ वि [अपवर्त्तितव्य] अपवर्त्तनयोग्य। त्यागने योग्य।
ओअम्मअ वि [दे] अभिभूत।
ओअर सक [अव + तृ] जन्म-ग्रहण करना। नीचे उतरना।
ओअरण न [उपकरण] साधन।
ओअरय पुं [अपवरक] कमरा, कोठरी।
ओअरिअ वि [औदरिक] पेटू, उदर भरने मात्र की चिन्ता करनेवाला।
ओअरिया स्त्री [अपवरिका] कोठरी, छोटा कमरा।
ओअल्ल देखो ओवट्ट = अप + वृत्।
ओअल्ल अक [अव + चल्] चलना।
ओअल्ल पुं [दे] खराब आचरण। काँपना। गौओं का बाड़ा। वि. पर्यस्त, प्रक्षिप्त। लम्बमान। जिसकी आँखें निमीलित होती हों वह।
ओअल्लअ वि [दे] विप्रलब्ध, प्रतारित।
ओअव सक [साधय्] साधना। वश में करना। जीतना।
ओआअ पुं [दे] ग्रामाधीश। आज्ञा। हस्ति वगैरह को पकड़ने का गर्त्त। वि. अपहृत।
ओआअव पुं [दे] अस्त-समय।
ओआर सक [अप + वारय्] ढाँकना।
ओआर पुं [अपकार] अनिष्ट, क्षति।
ओआर पुं [अवतार] अवतारण। देहान्तरधारण। उत्पत्ति। प्रवेश। उतारना।
ओआर देखो उवयार।
ओआल पुं [दे] छोटा प्रवाह।
ओआली स्त्री [दे] खड्ग का दोष। पंक्ति।
ओआवल पुं [दे] सुबह का सूर्यताप।
ओआस देखो अवगास।
ओआस देखो उववास।
ओआहिअ वि [अवगाहित] जिसका अवगाहन किया गया हो वह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओइंध सक [आ + मुच्] छोड़ देना। फेंक देना। उतार कर रख देना।
ओइण्ण वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ।
ओइत्त, ओइत्तण न [दे] परिधान। वस्त्र।
ओइल्ल वि [दे] आरूढ।
ओउंठण न [अवगुण्ठन] घूंघट।
ओउल्लिय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ।
ओऊल न [अवचूल] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल। देखो ओचूल।
ओं अ [ओम्] प्रणव। मुख्य मन्त्राक्षर।
ओंकार पुं [ओङ्कार] 'ओं' अक्षर।
ओंगण अक [क्वण्] अव्यक्त आवाज करना।
ओंघ देखो उंघ।
ओंडल न [दे] केश-गुम्फ। केश रचना।
ओंदुर देखो उंदुर।
ओंबाल सक [छादय्] ढकना।
ओंबाल सक [प्लावय्] डुबाना। व्याप्त करना।
ओकंबण देखो उक्कंबण।
ओकच्छिया देखो उक्कच्छिआ।
ओकड्ढ वि [अपकृष्ट] खींचा हुआ। न. अपकर्षण।
ओकड्ढग देखो उक्कड्ढग।
ओकरग पुं [अवकरक] विष्ठा।
ओक्कस सक [अव + कृष्] निमग्न होना। खींचना। बह जाना।
ओक्कंत वि [अवक्रान्त] निराकृत। पराजित।
ओक्कंदी देखो उक्कंदी।
ओक्कणी स्त्री [दे] यूका।
ओक्किअ न [दे] वास, बसन, अवस्थान। वमन।
ओक्खंच सक [आ + कृष्] खींचना।
ओक्खंड सक [अव + खण्डय्] तोड़ना।
ओक्खंडिअ वि [दे] आक्रान्त।
ओक्खंद देखो अवक्खंद।
ओक्खल देखो उऊखल।
ओक्खली [दे] देखो उक्खली।
ओक्खमाण (शौ) वि [भविष्यत्] भावी।
ओक्खिण्ण वि [दे] अवकीर्ण। खण्डित। ढका हुआ। पार्श्व में शिथिल।
ओक्खित्त वि [अवक्षिप्त] फेंका हुआ।
ओखंच देखो ओक्खंच।
ओगम देखो अवगम।
ओगय वि [उपगत] प्राप्त।
ओगर देखो ओग्गर।
ओगलिअ वि [अवगलित] गिरा हुआ, खिसका हुआ।
ओगसण न [अपकसन] ह्रास।
ओगहिअ वि [अवगृहीत] उपात्त, गृहीत।
ओगाढ वि [अवगाढ] आश्रित। अधिष्ठित। व्याप्त। निमग्न। गहरा।
ओगास पुं [अवकाश] जगह। मार्ग।
ओगाह सक [अव + गाह्] पाँव से चलना। अवगाहन करना।
ओगाहणा स्त्री [अवगाहना] आधार-भूत, आकाश-क्षेत्र। शरीर। शरीर-परिमाण। अवस्थान, अवस्थिति। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष। °णाम पुं [°नाम] अवगाहनात्मक परिणाम।
ओगाहिम वि [अवगाहिम] पक्वान्न।
ओगिज्झ, ओगिण्ह सक [अव + ग्रह्] आश्रय लेना। अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। जानना। उद्देश करना। लक्ष्य कर कहना।
ओगिण्हण न [अवग्रहण] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह।
ओगिण्हणया स्त्री [अवग्रहणता] ऊपर देखो। मन से जानना।
ओगुंडिय वि [अवगुण्डित] लिप्त।
ओगुट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हलकाई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओगूहिय वि [अवगूहित] आलिङ्गित।
ओग्गर पुं [ओगर] व्रीहिविशेष।
ओग्गह देखो उग्गह।
ओग्गह सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना।
ओग्गहण देखो ओगिण्हण। °पट्टग पुंन [°पट्टक] जैन साध्वियों के पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र।
ओग्गहिय वि [अवगृहीत] अवग्रह का विषय। अनुज्ञा से गृहीत। बद्ध। देने के लिए उठाया हुआ।
ओग्गारण न [उद्गारण] उद्गार।
ओग्गाल पुं [दे] छोटा प्रवाह।
ओग्गाल सक [रोमन्थाय्] चबाई हुई वस्तु को पुनः चबाना।
ओग्गाह देखो उग्गाह = उद् + ग्राहय्।
ओग्गिअ वि [दे] अभिभूत।
ओग्गीअ पुं [दे] हिम।
ओग्घ देखो उग्घड।
ओग्घसिय वि [अवघर्षित] प्रमार्जित।
ओघ पुं. समूह। संसार। अविच्छेद। सामान्य। °सण्णा स्त्री [°संज्ञा] सामान्य ज्ञान। °ादेस पुं [°ादेश] सामान्य विवक्षा। देखो ओह = ओघ।
ओघट्टिद (शौ) वि [अवघट्टित] आहत।
ओघसर पुं [दे] घर का जल-प्रवाह। अनर्थ। खराबी, नुकसान।
ओघसिय देखो ओग्घसिय।
ओघाययण न [ओघायतन] परम्परा से पूजा जानेवाला स्थान। तलाब में पानी जाने का साधारण रास्ता।
ओघेत्तव्व ओगिण्ह का कृ.।
ओचार पुं [दे. अपचार] धान्य रखने की बड़ी कोठी। मिट्टी का पात्र-विशेष।
ओचिदी (शौ) स्त्री [औचिती] उचितता।
ओचुंब सक [अव = चुम्ब्] चुम्बन करना।
ओचुल्ल न [दे] चूल्हा का एक भाग।
ओचूल } देखो ओऊल। मुख से हटा
ओचूलग } शिथिल (वस्त्र)।
ओच्चय देखो अवचय।
ओच्चिया स्त्री [अवचायिका] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करनेवाली।
ओच्चेल्लर न [दे] ऊषर-भूमि। जघन के रोम।
ओच्छअ } वि [अवस्तृत] आच्छादित।
ओच्छइय } निरुद्ध।
ओच्छंदिअ वि [दे] अपहृत। व्यथित।
ओच्छण्ण वि [अवच्छन्न] आच्छादित। अवष्टब्ध, आक्रान्त। देखो ओच्छन्न।
ओच्छत्त न [दे] दन्त धावन, दतवन।
ओच्छर (शौ) सक [अव + स्तृ] बिछाना। आच्छादित करना।
ओच्छविय } वि [अवच्छादित] आच्छा-
ओच्छाइय } दित।
ओच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना।
ओच्छाहिय देखो उच्छाहिय।
ओच्छिअ न [दे] केश-विवरण।
ओच्छिण्ण वि [अवच्छिन्न] आच्छादित।
ओच्छुंद सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। गमन करना।
ओच्छुण्ण वि [आक्रान्त] दबाया हुआ। उल्लंघित।
ओच्छोअअ न [दे] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी।
ओजिग्घ अक [घ्रा] तृप्त होना।
ओज्जर वि [दे] भीरु।
ओज्जल देखो उज्जल।
ओज्जल्ल वि [दे] बलवान्।
ओज्जाअ पुं [दे] गर्जित। गर्जारव।
ओज्झ वि [दे] मैला।
ओज्झमण न [दे] पलायन।
ओज्झर पुं [निर्झर] झरना।
ओज्झरिअ [दे] देखो उज्झरिअ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओज्झरी स्त्री [दे] आंत का आवरण।
ओज्झा सक [अप+ध्या] खराब चिन्तन करना।
ओज्झा देखो अउज्झा।
ओज्झाय देखो उवज्झाय।
ओज्झाय वि [दे] दूसरे को प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ।
ओज्झावग देखो उवज्झाय।
ओट्ठ पुं [ओष्ठ] अधर।
ओट्टिय वि [औष्ट्रिक] उष्ट्र-सम्बन्धी, उष्ट्र के बालों से बना हुआ।
ओडड्ढ वि [दे] रागी।
ओड्ड पुं [ओड्र] उत्कल देश। वि. उत्कल देश का निवासी।
ओड्डिअ वि [ओड्रीय] उत्कलदेशीय।
ओड्ढण न [दे] ओढ़न, उत्तरीय।
ओड्ढिगा स्त्री [दे] ओढ़नी।
ओढण न [दे] अवगुण्ठन।
ओण देखो ऊण = ऊन।
ओणंद सक [अव+नन्द्] अभिनन्दन करना।
ओणम अक [अव+नम्] नीचे नमना।
ओणय वि [अवनत]नमा हुआ। न. नमस्कार।
ओणल्ल अक [अव+लम्ब्] लटकना।
ओणविय वि [अवनमित] नमाया हुआ।
ओणाम सक [अव+नमय्] नीचे नमाना।
ओणामणी स्त्री [अवनामनी] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरह स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं।
ओणिअत्त अक [अपनि+वृत्] पीछे हटना। वापिस आना।
ओणिमिल्ल वि [अवनिमीलित] मुद्रित। मूंदा हुआ।
ओणियट्ट देखो ओणिअत्त।
ओणियव्व पुं [दे] वल्मीक, चींटियों का खुदा हुआ मिट्टी का ढेर।
ओणीवी स्त्री [दे] नीवी, कटि-सूत्र।
ओणुणअ वि [दे] अभिभूत।
ओण्णिद्द न [औन्निद्रय] निद्रा का अभाव।
ओण्णिय वि [औणिक] ऊन का बना हुआ।
ओणेज्ज वि [उपनेय] साँचे में ढाल कर बना हुआ फूल आदि, साँचे से बनता मोम का पुतला।
ओत्तलहअ पुं [दे] विटप।
ओत्ताण देखो उत्ताण।
ओत्थ सक [स्थग्] ढकना।
ओत्थअ वि [अवस्तृत] फैला हुआ। आच्छादित।
ओत्थअ वि [दे] अवसन्न, खिन्न।
ओत्थइअ देखो ओच्छइय।
ओत्थर देखो ओच्छर।
ओत्थर पुं [दे] उत्साह।
ओत्थरिअ वि [दे] आक्रान्त। जो आक्रमण करता हो वह।
ओत्थल्ल देखो उत्थल्ल = उत् + स्तृ।
ओत्थल्लपत्थल्ला देखो उत्थल्लपत्थल्ला।
ओत्थाडिय वि [अवस्तृत] बिछाया हुआ।
ओत्थार सक [अव+स्तारय्] आच्छादित करना।
ओदइग } पुंन [औदयिक] उदय, कर्म-
ओदइय } विपाक। वि. उदय निष्पन्न। पुं कर्मोदय रूप भाव। वि. उदय होने पर होनेवाला।
ओदन्न न [औदात्य] उदात्तता। श्रेष्ठता।
ओदज्ज न [औदार्य] उदारता।
ओदण न [ओदन] भात।
ओदरिय वि [औदरिक] पेट भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह।
ओदहण न [अवदहन] तप्त किये हुये लोहे के कोश वगैरह से दागना।
ओदारिय न [औदार्य] उदारता।
ओद्द वि [आर्द्र] गीला।
ओद्दंपिअ वि [दे] आक्रान्त। नष्ट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओद्धंस सक [अव + ध्वंस्] गिराना। हटाना। हराना।
ओधाव सक [अव + धाव्] पीछे दौड़ना।
ओधुण देखो अवधुण।
ओधूअ वि [अवधूत] कम्पित।
ओधूसरिअ वि [अवधूसरित] धूसर रंग वाला, हलका पीला रंगवाला।
ओनडिय वि [अवनटित] अवगणित तिरस्कृत।
ओपल्ल वि [दे] अपदीर्ण, कुण्ठित।
ओप्प वि [दे] सृष्ट, ओप दिया हुआ।
ओप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना।
ओप्पा स्त्री [दे] शाण आदि पर मणि वगैरह का घर्षण करना।
ओप्पाइय वि [औत्पातिक] उत्पात-सम्बन्धी।
ओप्पिअ वि [दे] शाण पर घिसा हुआ।
ओप्पील पुं [दे] समूह।
ओप्पुंसिअ } देखो उप्पुसिअ।
ओप्पुसिअ }
ओबद्ध वि [अवबद्ध] बँधा हुआ। अवसन्न।
ओबुज्झ सक [अव + बुध्] जानना।
ओब्भालण देखो उब्भालण।
ओभग्ग वि [अवभग्न] भग्न, नष्ट।
ओभावणा स्त्री [अपभ्राजना] लोक-निन्दा।
ओभास अक [अव + भास्] प्रकाशना।
ओभास सक [अव + भाष्] याचना करना।
ओभास पुं [अवभास] प्रकाश। महाग्रह-विशेष।
ओभासण न [अवभासन] प्रकाशन, उद्योतन। आविर्भाव। प्राप्ति।
ओभुग्ग वि [अवभुग्न] वक्र।
ओभेडिय वि [अवमुक्त] छुड़ाया हुआ। रहित किया हुआ।
ओम वि [अवम] असार।
ओम वि [अवम] कम। लघु। न. दुर्भिक्ष। °कोट्ठ वि [°कोष्ठ] जिसने कम खाया हो वह। °चेलग, °चेलय वि [°चेलक] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करनेवाला। °रत्त पुं [°रात्र] ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह। अहोरात्र।
ओमइल्ल वि [अवमलिन] मलिन।
ओमंथ [दे] देखो ओमत्थ।
ओमंथिय वि [अवमस्तिक] शीर्षासन से स्थित।
ओमंस वि [दे] अपसृत, अपगत।
ओमज्जण न [अवमज्जन] स्नान-क्रिया।
ओमज्जायण पुं [अवमज्जायन] ऋषि-विशेष।
ओमज्जिअ वि [अवमार्जित] स्पर्शित।
ओमट्ठ वि [अवमृष्ट] स्पृष्ट।
ओमत्थ वि [दे] नत, अधोमुख।
ओमल्ल न [निर्माल्य] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य।
ओमल्ल वि [दे] घनीभूत। कठिन, जमा हुआ।
ओमाण पुं [अपमान] अपमान, तिरस्कार।
ओमाण न [अवमान] जिससे क्षेत्र वगैरह का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरह मान। जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि।
ओमाय वि [अवमित] परिमित, मापा हुआ।
ओमाल देखो ओमल्ल = निर्माल्य।
ओमाल अक [उप + माल्] शोभना। सक. सेवा करना। पूजा करना।
ओमालिअ देखो ओमल्ल = निर्माल्य।
ओमालिआ स्त्री [अवमालिका] चिमड़ी या मुरझाई हुई माला।
ओमास पुं [अवमर्श] स्पर्श।
ओमिण सक [अव + मा] मापना। मान करना।
ओमिणण न [दे] प्रोंखनक। वर के लिए सासू की ओर से किया हुआ न्योछावर।
ओमिय वि [अवमित] परिच्छिन्न, परिमित।
ओमील अक [अव + मील्] मुद्रित होना, बन्द होना।
ओमीस वि [अवमिश्र] मिश्रित। समीपस्थ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न. सामीप्य।
ओमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त।
ओमुग्ग देखो उम्मुग्ग।
ओमुच्छिअ वि [अवमूर्च्छित] महा-मूर्च्छा को प्राप्त।
ओमुद्धग वि [अवमूर्धक] अधोमुख।
ओमुय सक [अव + मुच्] पहनना।
ओमोय पुं [ओमोक] आभरण।
ओमोयर वि [अवमोदर] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करनेवाला।
ओमोयरिय न [अवमोदरिक] न्यून भोजनत्व। दुर्भिक्ष, अकाल।
ओम्माय पुं [उन्माद] उन्मत्तता।
ओय न [ओजस्] विषम संख्या—जैसे एक, तीन, पाँच आदि। आहार-विशेष, अपनी उत्पत्ति के समय जीव प्रथम जो आहार लेता है वह। बल। प्रकाश। उत्पत्ति-स्थान में आहृत पुद्गलों का समूह। आर्तव, ऋतु-धर्म।
ओय वि [ओकस्] गृह।
ओय वि [ओज] एक, असहाय। मध्यस्थ, उदासीन। पुं. विषम राशि।
ओयंसि वि [ओजस्विन्] बलवान्। तेजस्वी।
ओयट्टण न [अपवर्त्तन] पीछे हटना।
ओयड्ढ सक [अप + कृष्] खींचना।
ओयड्ढिया } स्त्री [दे] ओढ़नी। चादर,
ओयड्ढी } दुपट्टा।
ओयण देखो ओदण।
ओयत्त वि [अववृत्त] अवनत, अधोमुख।
ओयत्त सक [अप + वर्तय्] खाली करने के लिए नमाना।
ओयत्तण न [अपवर्तन] खिसकाना।
ओयविय वि [दे] परिकर्मित।
ओया स्त्री [ओजस्] शक्ति। प्रकाश। माता का शुक्र-शोणित।
ओयाइअ देखो उवयाइय।
ओयाय वि [उपयात] समीप पहुँचा हुआ।
ओयार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना।
ओयार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ।
ओयारग वि [अवतारक] उतारनेवाला। प्रवृत्ति करनेवाला।
ओयारण देखो उयारण।
ओयावइत्ता अ [ओजयित्वा] बल दिखा कर। चमत्कार दिखा कर। विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर।
ओर वि [दे] सुन्दर। समीप।
ओरंपिअ वि [दे] आक्रान्त। नष्ट। पतला किया हुआ, छिला हुआ।
ओरत्त वि [दे] गर्विष्ठ। कुसुम्भ से रक्त। विदारित।
ओरद्ध देखो अवरद्ध = अपराद्ध।
ओरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना।
ओरल्ली स्त्री [दे] लम्बी और मधुर आवाज।
ओरस सक [अव + तॄ] नीचे उतरना।
ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त।
ओरस वि [औरस] स्व-पुत्र। हृदयोत्पन्न।
ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक।
ओराल देखो उराल।
ओराल न [औदार] नीचे देखो।
ओरालिय न [औदारिक] शरीर-विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर। वि. शोभायमान। औदारिक शरीरवाला। °**णाम** न [°नामन्] औदारिक शरीर का हेतुभूत कर्म।
ओरालिय वि [दे] व्यास। उपलिप्त। पोंछा हुआ। प्रसारित।
ओराली देखो ओरल्ली।
ओरिंकिय न [अवरिङ्कित] महिष की आवाज।
ओरिल्ल पुं [दे] दीर्घ काल।
ओरी [दे] समीप।
ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष।
ओरुंभिय वि [उपरुद्ध] आवृत्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरुण्ण वि [अवरुदित] रोया हुआ ।
ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बन्द किया हुआ ।
ओरुभ सक [अव + रुह्] उतरना । उतारना ।
ओरुम्मा अक [उद् + वा] सूखना ।
ओरुह देखो ओरुभ ।
ओरोध देखो ओरोह = अवरोध ।
ओरोह देखो ओरुभ ।
ओरोह पुं [अवरोध] अन्तःपुर की स्त्री । नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार । संघात ।
ओलअ पुं [दे] बाज पक्षी । अपलाप, निह्नव ।
ओलअणी स्त्री [दे] नवोढा ।
ओलइअ वि [दे. अवलगित] शरीर में सटा हुआ, परिहित । लगा हुआ ।
ओलइणी स्त्री [दे] प्रिया, स्त्री ।
ओलंड सक [उत् + लङ्घ्] उल्लंघन करना ।
ओलंब पुं [अवलम्ब] नीचे लटकना । सहारा ।
ओलंबण न [अवलम्बन] सहारा । °दीव पुं [°दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक ।
ओलंबिय वि [उल्लंबित] लटकाया हुआ ।
ओलंभ पुं [उपालम्भ] उलाहना ।
ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ ।
ओलग्गि (अप) देखो ओलग्गि ।
ओलग्ग सक [अव + लग्] पीछे लगना । सेवा करना ।
ओलग्ग वि [अवरुग्ण] ग्लान, बीमार । दुर्बल ।
ओलग्ग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ ।
ओलग्ग [दे] देखो ओलुग्ग ।
ओलावअ पुं [दे] बाज पक्षी ।
ओलि देखो ओली = आली ।
ओलिंदअ पुं [अलिन्दक] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ ।
ओलिंप सक [दे] खोलना । [?लिप्] ।
ओलिंप सक [अव + लिप्] लीपना ।
ओलिंभा स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक ।
ओलित्त वि [अवलिप्त, उपलिप्त] लीपा हुआ ।
ओलित्ती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष ।
ओलिप्प न [दे] हास, हँसी ।
ओलिप्पंती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष ।
ओलिह सक [अव + लिह्] आस्वादन करना ।
ओली सक [अव + ली] आगमन करना । नीचे आना । पीछे आना ।
ओली स्त्री [आली] श्रेणी ।
ओली स्त्री [दे] कुलाचार ।
ओलुंकी स्त्री [दे] बालकों की एक प्रकार की क्रीडा ।
ओलुंड सक [वि + रेचय्] झरना, टपकना, बाहर निकलना ।
ओलुंप पुं [अवलोप] मसलना ।
ओलुंपअ पुं [दे] तवा का हाथा ।
ओलुग्ग वि [अवरुग्ण] रोगी । भग्न, नष्ट ।
ओलुग्ग वि [दे] सेवक । बल-हीन । निस्तेज ।
ओलुग्गाविय वि [दे] बीमार । विरह, पीड़ित ।
ओलुट्ट वि [दे] असंघटमान । मिथ्या ।
ओलेहड वि [दे] अन्यासक्त । तृष्णा-पर । प्रवृद्ध ।
ओलोअ देखो अवलोअ ।
ओलोट्ट सक [अप + लुट्] पीछे लौटना ।
ओलोयण न [अवलोकन] देखना । गवाक्ष । खोज, दृष्टि ।
ओल्ल पुं [दे] पति । स्वामी । दण्डप्रतिनिधि पुरुष, राजपुरुष-विशेष ।
ओल्ल देखो उल्ल = आर्द्र । आर्द्रय् ।
ओल्लट्टण पुं [अवलट्टन] एक नरक-स्थान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओल्लणी स्त्री [दे] मार्जिता, इलायची, दालचीनी आदि मसाला से संस्कृत दधि ।
ओल्लरण न [दे] स्वाप, सोना ।
ओल्लरिअ वि [दे] सुप्त ।
ओल्लविद (शौ) नीचे देखो ।
ओल्लिअ वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ ।
ओल्ली स्त्री [दे] पनक, काई ।
ओल्हव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना । ठण्ढा करना ।
ओव न [दे] हाथी वगैरह को बाँधने के लिए किया हुआ गर्त्त ।
ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना ।
ओवइणी स्त्री [अवपातिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है ।
ओवइय वि [अवपतित] नीचे आया हुआ । आ पड़ा हुआ, आ डटा हुआ । न. पतन ।
ओवइय पुंस्त्री [दे] तीन इन्द्रियवाला एक क्षुद्र जन्तु ।
ओवइय वि [औपचयिक] उपचित, परिपुष्ट ।
ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार करनेवाला उपकारार्थक ।
ओवग्ग सक [अप + क्रम्] व्याप्त करना । ढकना ।
ओवग्ग सक [उप + वल्ग्, आ + क्रम्] आक्रमण करना । पराभव करना ।
ओवग्गहिय वि [औपग्रहिक] जैन साधुओं का एक प्रकार का उपकरण, जो कारण-विशेष से थोड़े समय के लिए लिया जाता है ।
ओवग्गिअ वि [दे. उपवल्गित] अभिभूत । आक्रान्त ।
ओवघाइय वि [औपघातिक] उपघात करनेवाला, पीड़ा उत्पन्न करनेवाला ।
ओवच्च सक [उप + व्रज्] पास जाना ।
ओवट्ट अक [अप + वृत्] पीछे हटना । कम होना, ह्रास-प्राप्त होना ।
ओवट्ट पुं [अपवर्त्त] ह्रास, हानि । भागाकार।
ओवट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद ।
ओवट्ठ वि [अनवृष्ट] जिसने वृष्टि की हो वह ।
ओवट्ठ पुं [दे. अववर्ष] वृष्टि ।
ओवट्ठिइअ वि [औपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर ।
ओवड अक [अव + पत्] गिरना ।
ओवडण न [अवपतन]अधःपात । झम्पापात ।
ओवड्ढ वि [उपार्ध] आधे के करीब । °ोमोयरिया स्त्री [°ावमोदरिका] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष ।
ओवड्ढि वि [अपवृद्धि] ह्रास ।
ओवड्ढा स्त्री [दे] ओढ़नी का एक भाग ।
ओवण न [उपवन] बगीचा, आराम ।
ओवणिहिय पुं [औपनिहित, औपनिधिक] समीपस्थ भिक्षा को लेनेवाला साधु ।
ओवणिहिया स्त्री [औपनिधिकी] आनुपूर्वी-विशेष ।
ओवत्त सक [अप + वर्त्तय्] उलटा करना । फिराना । फेंकना ।
ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ ।
ओवत्थाणिय वि [औपस्थानिक] सभा का कार्य करनेवाला नोकर ।
ओवम देखो ओवम्म ।
ओवमिय वि [औपमिक] उपमा-सम्बन्धी ।
ओवमिय, ओवम्म न [औपम्य] उपमा । उपमान, प्रमाण ।
ओवय सक [अव + पत्] नीचे उतरना । आ पड़ना ।
ओवयण न [दे. अवपदन] प्रोङ्खणक, चुमना ।
ओवयाइयय वि [औपयाचितक] मनौती से प्राप्त किया हुआ ।
ओवयारिय वि [औपचारिक] उपचार-सम्बन्धी ।
ओवर पुं [दे] समूह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओववाइय वि [औपपातिक] एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने वाला। जिसकी उत्पत्ति होती हो वह। पुं. संसारी, प्राणी। देव या नारक जीव का शरीर। जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औपपातिक सूत्र।

ओवसग्गिय वि [औपसर्गिक] उपसर्ग से सम्बन्ध रखने वाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि। शब्द-विशेष, प्र, परा आदि अव्यय रूप शब्द।

ओवसमिअ पुंन [औपशमिक] उपशम। वि. उपशम से उत्पन्न।

ओवसेर न [दे] चन्दन। वि. रति-योग्य।

ओवस्सय देखो उवस्सय।

ओवह सक[अव + वह्]बह जाना। डूबना।

ओवहारिअ वि [औपहारिक] उपहार-सम्बन्धी।

ओवहिय वि [औपधिक] माया से गुप्त विचरनेवाला।

ओवाअअ पुं [दे] जल-समूह की गरमी।

ओवाइय देखो ओववाइय।

ओवाइय देखो उवयाइय।

ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवाला।

ओवाडण न [अवपाटन] विदारण। नाश।

ओवाडिय वि [अवपाटित] विदारित।

ओवाय सक [उप + याच्] मनौती करना।

ओवाय पुं [अवपात] सेवा। भक्ति। गर्त्त, गड्ढा। नीचे गिरना।

ओवाय वि [औपाय] उपाय-जन्य। उपाय-सम्बन्धी।

ओवार सक [अप + वारय्] ढकना।

ओवारि न [दे] धान्य भरने का एक प्रकार का लम्बा कोठा, गोदाम।

ओवारिअ वि [दे] राशिकृत।

ओवास अक [अव + काश्] शोभना। जगह मिलना।

ओवास पुं [अवकाश] अवकाश, खाली जगह।

ओवास पुं [उपवास] उपवास।

ओवासंतर पुंन [अवकाशान्तर] आकाश।

ओवाह सक [अव + गाह्] अवगाहना।

ओवाहिअ वि [अपवाहित] नीचे गिराया हुआ। घुमाकर नीचे डाला हुआ।

ओविअ वि [दे] आरोपित। मुक्त। छीना हुआ। न. खुशामद। रोदन। वि. परिकर्मित। खचित, व्याप्त। उज्ज्वालित, शृङ्गारित। देखो उविय।

ओविद्ध वि [अपविद्ध] प्रेरित, आहत। नीचे गिराया हुआ।

ओवील सक [अव + पीडय्] पीड़ा पहुँचाना, मार-पीट करना।

ओवीलय देखो उव्वीलय।

ओवुब्भमाण देखो ओवह का कवकृ.।

ओवेहा स्त्री [उपेक्षा] उपदर्शन। अवधीरण।

°ओव्वण देखो जोव्वण।

ओव्वत्त अक [अप + वृत्] पीछे फिरना। लौटना। अवनत होना।

ओव्वत्त वि [अपवृत्त] पीछे फिरा हुआ। नमा हुआ।

ओव्वेव्व देखो उव्वेव।

ओस देखो ऊस = ऊष।

ओस पुं [दे] देखो ओसा। °चारण पुं. हिम के अवलम्बन से जानेवाला साधु।

ओसक्क सक [अव + ष्वष्क्] कम करना। पीछे हटना, अपसरण करना। पलायन करना। उदीरण करना, उत्तेजित करना। नियत काल से पहले करना।

ओसक्क वि [दे. अवष्वष्कित] अपसृत, पीछे हटा हुआ।

ओसट्ट अक [वि + सृप्] फैलना।

ओसट्ट वि [दे] विकसित, प्रफुल्लित।

ओसडिअ वि [दे] आकीर्ण, व्याप्त।

ओसढ न [औषध] दवा, इलाज।

ओसढिअ वि [औषधिक] वैद्य, चिकित्सक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओसण न [दे] उद्वेग, खेद।

ओसण्ण वि [अवसन्न] खिन्न। शिथिल, ढीला। निमग्न। न. एकान्त।

ओसण्ण वि [दे] त्रुटित, खण्डित।

ओसण्णं अ [दे] प्रायः।

ओसत्त वि [अवसक्त] सम्बद्ध, संयुक्त।

ओसधि देखो ओसहि।

ओसद्ध वि [दे] गिराया हुआ।

ओसप्पिणी स्त्री [अवसर्पिणी] दश कोटाकोटि सागरोपमपरिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमशः हानि होती जाती है।

ओसम सक [उप + शमय्] उपशान्त करना।

ओसर अक [अव + तृ] नीचे आना। अवतरना।

ओसर अक [अप + सृ] अपसरण करना, पीछे हटना। सरकना, खिसकना, फिसलना।

ओसर सक [अव + सृ] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना।

ओसर पुं [अवसर] अवसर, समय। अन्तर।

ओसरण न [अवसरण] जिन-देव का उपदेश स्थान। साधुओं का एकत्रित होना।

ओसरण न [अपसरण] हटना, दूर होना। वि. दूर करनेवाला।

ओसरिअ वि [दे] आकीर्ण, व्याप्त। आँख के इशारे से संकेतित या इंगित। अधोमुख। न. आँख का इशारा।

ओसरिअ वि [उपसृत] सम्मुखागत।

ओसरिआ स्त्री [दे] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ।

ओसव पुं [उत्सव] उत्सव, आनन्द-क्षण।

ओसव देखो ओसम।

ओसविय वि [उच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ।

ओसव्विअ वि[दे]शोभा-रहित। न. अवसाद।

ओसह न [औषध] दवाई, भैषज।

ओसहि°, ही स्त्री [ओषधि] वनस्पति। नगरी-विशेष। °महिहर पुं [°महिधर] पर्वत-विशेष।

ओसहिअ वि [आवसथिक] चन्द्रार्घ-दानादि व्रत को करनेवाला।

ओसा स्त्री [दे] ओस। हिम।

ओसाअ पुं [दे] प्रहार की पीड़ा।

ओसाअ पुं [अवश्याय] हिम, ओस।

ओसाअंत वि [दे] जँभाई खाता हुआ आलसी। बैठला। वेदना-युक्त।

ओसाअण वि [दे] जमीन का मालिक। आपोशान।

ओसाण न [अवसान] अन्त। समीपता। गुरु के समीप स्थान, गुरु के पास निवास।

ओसाणिहाण वि [दे] विधि-पूर्वक अनुष्ठित।

ओसाय पुं [अवश्याय] ओस।

ओसायण न [अवसादन] परिशाटन, नाश।

ओसार सक [अप + सारय्] दूर करना।

ओसार पुं [दे] गो-वाट, गो-बाड़ा।

ओसार देखो ऊसार = उत्सार।

ओसार पुं [अवसार] कवच, बख्तर।

ओसारिअ वि [अवसारित] अवलम्बित, लटकाया हुआ।

ओसास (अप) देखो ओवास = अवकाश।

ओसिअ वि [दे] अबल। अपूर्व।

ओसिअ वि [उषित] बसा हुआ, रहा हुआ। व्यवस्थित।

ओसिअंत वकृ. [अवसीदत्]पीड़ा पाता हुआ।

ओसिंघिअ वि [दे] सूँघा हुआ।

ओसिंचित्तु वि [अपसेचयितृ] अपसेक करनेवाला।

ओसिक्खिअ न [दे] गति-व्याघात। अरति-निहित।

ओसित्त वि [अवसिक्त] भिगाया हुआ, सिक्त।

ओसित्त वि [दे] उपलिप्त।

ओसिय वि [अवसित] पर्यवसित। उपशान्त। जीत, पराभूत।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओसिरण न [दे] व्युत्सर्जन, परित्याग।
ओसीअ वि [दे] अधो-मुख।
ओसीर देखो उसीर।
ओसीस अक [अप + वृत्] पीछे हटना। घूमना, फिरना।
ओसीस वि [अप + वृत्त] अपवृत्त।
ओसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।
ओसुंखिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, कल्पित।
ओसुंभ सक [अव + पातय्] गिरा देना। नष्ट करना।
ओसुक्क सक [तिज्] तीक्ष्ण करना, तेज करना।
ओसुक्क वि [अवशुष्क] सूखा हुआ।
ओसुक्ख अक [अव + शुष्] सूखना।
ओसुद्ध वि [दे] विनिपतित। विनाशित।
ओसुय न [औत्सुक्य] उत्सुकता।
ओसोयणी, ओसोवणिया, ओसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ़ निद्राधीन किया जा सकता है।
ओस्सक्क पुं [अवष्वष्क] अपसर्पण, पीछे हटना।
ओस्सा [दे] देखो ओसा।
ओस्साड पुं [अवशाट] नाश।
ओह देखो ओघ।
ओह सक [अव + तॄ] नीचे उतरना।
ओह पुंन [ओघ] उत्सर्ग, सामान्य नियम। सामान्य। प्रवाह। सलिल-प्रवेश। आस्रव-द्वार। संसार। °**सूय** न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष।
ओहंक पुं [दे] हास, हँसी।
ओहंजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष।
ओहंतर वि [ओघतर] संसार पार करने-वाला।
ओहंस पुं [दे] चन्दन। जिसपर चन्दन घिसा जाता है वह शिला।
ओहट्ट अक [अप + घट्ट्] कम होना, ह्रास पाना। पीछे हटना। सक. हटाना, निवृत्त करना। निषेध करना।
ओहट्ट पुं [दे] अवगुण्ठन। नीवी, कटि-वस्त्र। वि. अपसृत, पीछे हटा हुआ।
ओहट्ट, ओहट्टय वि [अपघट्टक] निवारक, हटाने-वाला, निषेधक।
ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबाकर हाथ से गृहीत।
ओहट्ठ पुं [दे] हास, हँसी।
ओहट्ठ वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ।
ओहड वि [अपहृत] नीचे लाया हुआ।
ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला।
ओहत्त वि [दे] अवनत।
ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ।
ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त।
ओहय वि [अवहत] विनाशित।
ओहर सक [अप + हृ] अपहरण करना।
ओहर अक [अव + हृ] टेढ़ा होना, वक्र होना। सक. उलटा करना। फिराना।
ओहर न [उपगृह] छोटा गृह। कोठरी।
ओहरण न [दे] विनाशन, हिंसा। असम्भव अर्थ की सम्भावना। अस्त्र। वि. आघ्रात।
ओहरिअ वि [दे. अपहृत] फेंका हुआ। नीचे गिराया हुआ। उतारा हुआ। अपनीत।
ओहरिस वि [दे] आघ्रात। पुं. चन्दन घिसने की शिला।
ओहल देखो उऊखल।
ओहल सक [अव + खल्] घिसना।
ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह।
ओहस सक [उप + हस्] उपहास करना।
ओहसिअ न [दे] वस्त्र। वि. धूत, कम्पित।
ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख।
ओहाइअ वि [अवधावित] चरित्र से भ्रष्ट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहाडण न [अवघाटन] प्रायश्चित्त-विशेष। ढकना, पिधान।

ओहाडणी स्त्री [दे. अवघाटनी] पिधानी। एक प्रकार की ओढ़नी।

ओहाडिय वि [अवघाटित] पिहित। स्थगित।

ओहाण न [उपधान] स्थगन, ढकना।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना।

ओहाम सक [तुलय्] तौलना, तुलना करना।

ओहामिय वि [दे] अभिभूत। तिरस्कृत। बन्द किया हुआ, स्थगित।

ओहार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। °व वि [°वत्] निश्चयवाला। नियम करना।

ओहार पुं [दे] कच्छप। नदी वगैरह के बीच की शुष्क जगह, द्वीप। अंश, विभाग। जल-चर-जन्तु-विशेष।

ओहारइत्तु वि [अवहारयितृ] निश्चय करने-वाला।

ओहारइत्तु वि [अवहारयितृ] दूसरे पर मिथ्या-भियोग लगानेवाला।

ओहारणी स्त्री [अवधारणी] निश्चयात्मक भाषा।

ओहारिणी स्त्री [अवधारिणी] ऊपर देखो।

ओहाव सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना।

ओहाव अक [अव + धाव्] पीछे हटना। दीक्षा को छोड़ देना।

ओहावण न [अवभावन] अपमान, अपकीर्ति।

ओहावणा स्त्री [अपहापना] लाघव।

ओहावणा स्त्री [अपभावना] तिरस्कार।

ओहाविअ वि [अपभावित] तिरस्कृत। ग्लान।

ओहास पुं [अवहास, उपहास] हँसी।

ओहासण न [अवभाषण] याचना। विशिष्ट भिक्षा।

ओहासिय वि [अवभाषित] याचित।

ओहि पुंस्त्री [अवधि] मर्यादा, सीमा। रूपी-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष। °जिण पुं [°जिन] अवधिज्ञानवाला साधु। °णाण न [°ज्ञान] अवधिज्ञान। °णाणावरण न [°ज्ञानावरण] अवधिज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म। °दंसण न [°दर्शन] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अवधिदर्शन का आवारक कर्म। °मरण न. मरण-विशेष।

ओहिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ।

ओहिअ वि [औधिक] औत्सर्गिक, सामान्य रूप से उक्त।

ओहिण्ण वि [अपभिन्न] रोका हुआ।

ओहित्थ न [दे] विषाद। रभस, वेग। वि. विचारित।

ओहिर देखो ओहीर।

ओहिर देखो ओहर = अप + हृ।

ओहीअंत वि [अवहीयमान] क्रमशः कम होता हुआ।

ओहीण वि [अवहीन] पीछे रहा हुआ। गुजरा हुआ।

ओहीर अक [नि + द्रा] निद्रा लेना।

ओहीर अक [सद्] खिन्न होना।

ओहीरिअ वि [अवधीरित] तिरस्कृत, परिभूत।

ओहीरिअ वि [दे] उद्गीत। अवसन्न, खिन्न।

ओहुअ वि [दे] अभिभूत।

ओहुंज देखो उवहुंज।

ओहुड वि [दे] विफल।

ओहुप्पंत वि [आक्रम्यमाण] जिसपर आक्रमण किया जाता हो वह।

ओहुर वि [दे] अवनत, अवाङ्मुख। खिन्न। स्रस्त, ध्वस्त।

ओहुल्ल वि [दे] खिन्न। अवनत।

ओहूणण न [अवधूनन] कम्प। उल्लङ्घन। अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना।

ओहूय वि [अवधूत] उल्लङ्घित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क

क पुं [क] प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है। ब्रह्मा। किये हुये पाप का स्वीकार। न. पानी। सुख। देखो °अ = क।

क देखो किं।

कअवंत देखो कय-व = कृतवत्।

कइ वि. ब. [कति] कितना। °अ वि [°क] कतिपय। °अव वि [°पय] कतिपय। °इ अ [°चित्] कईएक। °त्थ वि [°थ] कौन संख्या का ?। °वइय, °वय, °वाह वि [°पय] कईएक। °वि अ [°अपि] कईएक। °विह वि [°विध] कितने प्रकार का।

कइ वि [कृतिन्] विद्वान्। पुण्यवान्।

कइ अ [कचित्] कहीं, किसी जगह में।

कइ अ [कदा] कब, किस समय ?

कइ पुं [कपि] बन्दर। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष, वानर-द्वीप। °द्धय, °धय पुं [°ध्वज] वानर-द्वीप के एक राजा का नाम। अर्जुन। °हसिअ न [°हसित] स्वच्छ आकाश में अचानक बिजली का दर्शन। वानर के समान विकृत मुँह का हँसना।

°कइ देखो कवि = कवि। °अर (अप) पुं [कवि] श्रेष्ठ कवि। °मा स्त्री [°त्व] कवित्व। °राय पुं [°राज] श्रेष्ठ कवि। 'गउडवहो' नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-नामक कवि।

कइअ वि [क्रयिक] खरीदने वाला।

कइअंक, कइअंकसइ } पुं [दे] निकर।

कइअव न [कैतव] कपट, दम्भ।

कइआ अ [कदा] कब, किस समय ?

कइउल्ल वि [दे] थोड़ा।

कइंद पुं [कवीन्द्र] श्रेष्ठ कवि।

कइकच्छु स्त्री [कपिकच्छु] वृक्ष-विशेष, केवाँच, कौंछ, कवाछ।

कइगई स्त्री [कैकयी] राजा दशरथ की एक रानी।

कइत्थ पुं [कपित्थ] कैथ का पेड़। फल-विशेष।

कइम वि [कतम] बहुत में से कौन सा ?

कइयव्व देखो कइअव।

कइयहा (अप) अ [कदा] कब, किस समय ?

कइयाइ अ [कदाचित्] किसी समय में।

कइर देखो कयर = कतर।

कइर पुं [कदर] वृक्ष-विशेष।

कइरव न [कैरव] कमल। कुमुद।

कइरविणी स्त्री [कैरविणी] कुमुदिनी, कमलिनी।

कइलास पुं [कैलास, °श] स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष। मेरु पर्वत। देव-विशेष, एक नाग-राज। °सय पुं [°शय] महादेव। देखो केलास।

कइलासा स्त्री [कैलासा, °शा] देव-विशेष की एक राजधानी।

कइल्लबइल्ल पुं [दे] स्वच्छन्द-चारी बैल।

कइविया स्त्री [दे] बरतन-विशेष, पीकदान।

कइस (अप) वि [कीदृश] कैसा।

कईआ (अप) देखो कइआ।

कईवय देखो कइवय।

कईस पुं [कवीश] श्रेष्ठ कवि।

कईसर पुं [कवीश्वर] उत्तम कवि।

कउ पुं [क्रतु] यज्ञ।

कउ (अप) अ [कुतः] कहाँ से।

कउअ वि [दे] मुख्य। पुंन. चिह्न।

कउच्छेअय पुं [कौक्षेयक] पेट पर बँधी हुई तलवार।

कउड न [दे. ककुद] देखो कउह = ककुद।

कउरअ, कउरव } पुं [कौरव] कुरु देश का राजा। पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न। वि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुरु (देश या वंश) से सम्बन्ध रखनेवाला। कुरु देश में उत्पन्न।

कउल न [दे] करीष, गोइँठा का चूर्ण।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्त्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरह। वि. शक्ति का उपासक। तान्त्रिक मत को जाननेवाला। तान्त्रिक मत का अनुयायी। देवता-विशेष।

कउलव देखो कउरव।

कउसल पुंन [कौशल] चतुराई। कुशलता, दक्षता।

कउह न [दे] नित्य।

कउह पुंन [ककुद] बैल के कन्धे का कुब्बड़। सफेद छत्र वगैरह राज-चिह्न। पर्वत का अग्रभाग, टोंच। वि. प्रधान, मुख्य।

कउहा स्त्री [ककुभ्] दिशा। शोभा, कान्ति। चम्पा के पुष्पों की माला। इस नाम की एक रागिणी। शास्त्र। विकीर्ण केश।

कउहि वि [ककुदिन्] वृषभ।

कए } कएणं } अ [कृते] निमित्त, लिए। कएण }

कएल्ल वि [कृत] किया हुआ।

कओ अ [कुतः] कहाँ से ?। °हुत्त क्रिवि [दे] किस तरफ।

कओ अ [क] कहाँ, किस स्थान में।

कओण्ह वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम।

कओल देखो कवोल।

कं अ [कम्] उदक।

कंइ अ [दे] किससे।

कंक पुं [कङ्क] पक्षि-विशेष। एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा। वृक्ष-विशेष। °पत्त न [°पत्र] एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है। °लोह पुंन. एक प्रकार का लोहा। °वत्त देखो °पत्त।

कंकइ पुं [कङ्कति] वृक्ष-विशेष, नागबला-नामक ओषधि।

कंकड पुं [कङ्कट] वर्म, कवच।

कंकडुअ } कंकडुग } पुं [काङ्कटुक] दुर्भेद्य माष, उरद की एक जाति, जो कभी पकती ही नहीं।

कंकण न [कङ्कण] कँगन।

कंकण पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

कंकणी स्त्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष।

कंकति पुं [कङ्कति] ग्राम-विशेष।

कंकतिज्ज पुंस्त्री [काङ्कतीय] माघराज वंश में उत्पन्न।

कंकय पुं [कङ्कत] नागबला-नामक ओषधि। सर्प की एक जाति। पुंस्त्री. कंघा।

कंकलास पुं [कृकलास] कर्कोट, साँप की एक जाति।

कंकसी स्त्री [दे] कंघी।

कंकाल न [कङ्काल] चमड़ी और मांस रहित अस्थि-पञ्जर।

कंकावंस पुं [कङ्कावंश] वनस्पति-विशेष।

कंकिल्लि देखो कंकेल्लि।

कंकुण देखो कंकण = दे।

कंकेलि पुं [कङ्केलि] अशोक वृक्ष।

कंकेल्लि पुं [दे. कङ्केल्लि] अशोक वृक्ष।

कंकोड न [दे. कर्कोट] ककरैल, एक प्रकार की सब्जी। पुं. एक नागराज। साँप की एक जाति।

कंकोल पुं [कङ्कोल] शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद। न. उस वृक्ष का फल। देखो कक्कोल।

कंख सक [काङ्क्ष्] वाञ्छना।

कंखा स्त्री [काङ्क्षा] अभिलाप। आसक्ति। अन्य धर्म की चाह अथवा उसमें आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] कर्म-विशेष।

कंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कांगनी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंगु स्त्रीन [कङ्गु] धान्य-विशेष, काँगन। वल्ली-विशेष।

कंगुलिया स्त्री [दे. कङ्गुलिका] जिन-मन्दिर की एक बड़ी आशातना, जिन-मन्दिर में या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना।

कंचण पुंन[काञ्चन]एक देव-विमान। वि.सुवर्ण का। °पह न [°प्रभ] रत्न-विशेष। वि. रत्न-विशेष का बना हुआ। °पायव पुं [°पादप] वृक्ष-विशेष।

कंचण पुं [काञ्चन] वृक्ष-विशेष। स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी। न. सुवर्ण। °उर न[°पुर] कलिंग देश का एक मुख्य नगर। °कूड न [°कूट] सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर। देवविमान-विशेष। रुचक पर्वत का एक शिखर। °केअई स्त्री [°केतकी] लता-विशेष। °तिलय न [°तिलक] इस नाम का विद्याधरों का एक नगर। °त्थल न [°स्थल] स्वनामख्यात एक नगर। °बलाणग न [°बलानक] चौरासी तीर्थों में एक तीर्थ का नाम। °सेल पुं [°शैल] मेरुपर्वत।

कंचणग पुं [काञ्चनक] पर्वत-विशेष। काञ्चनक पर्वत का निवासी देव।

कंचणा स्त्री [कञ्चना] स्वनामख्यात एक स्त्री।

कंचणार पुं [कञ्चनार] वृक्ष-विशेष।

कंचणिया स्त्री [काञ्चनिका] रुद्राक्ष-माला।

कंचा (पै) देखो कण्णा।

कंचि } कंची } स्त्री [काञ्चि, °ञ्ची] स्वनाम-ख्यात एक देश। कटि-मेखला। स्वनाम-ख्यात एक नगर।

कंची स्त्री [दे] मुशल के मुँह में रखी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज।

कंचीरय न [दे] पुष्प-विशेष।

कंचीरय न [काञ्चीरत] सुरत-विशेष।

कंचु } कंचुअ } पुं [कञ्चुक] स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र। साँप की केंचली। वर्म, कवच। वृक्ष-विशेष। वस्त्र।

कंचुइ पुं [कञ्चुकिन्] अन्तःपुर का प्रतीहार। साँप। जव। चना। जुआर, जोन्हरी। वि. जिसने कवच धारण किया हो वह।

कंचुइअ वि [कञ्चुकित] कञ्चुकवाला।

कंचुइज्ज पुं [कञ्चुकीय] अन्तःपुर का प्रतीहार।

कंचुइज्जंत वि [कञ्चुकायमान] कञ्चुक की तरह आचरण करता।

कंचुग देखो कंचुअ।

कंचुगि देखो °कंचुइ।

कंचुलिआ स्त्री [कञ्चुलिक] चोली।

कंछुल्ली स्त्री [दे] कण्ठाभरण।

कंजिअ न [काञ्जिक] काञ्जिक।

कंट देखो कंटग।

कंटअंत वि [कण्टकायमान] कण्टक जैसा। पुलकित होता।

कंटइअ वि [कण्टकित] कण्टकवाला। रोमाञ्चित, पुलकित।

कंटइज्जंत देखो कंटअंत।

कंटइल पुं [कण्टकिल] एक जाति का बाँस। वि. कण्टकों से व्याप्त।

कंटउच्चि वि [दे] कण्ट प्रोत।

कंटकिल्ल देखो कंटइअ।

कंटग } कंटय } पुं [कण्टक] काँटा। रोमाञ्च। शत्रु। वृश्चिक की पूँछ। शल्य। दुःखोत्पादक वस्तु। ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग। °बोंदिया स्त्री [°दे] कण्टक-शाखा।

कंटाली स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया।

कंटिय वि [कण्टिक] कण्टकवाला। वृक्ष-विशेष।

कंटिया स्त्री [कण्टिका] वनस्पति-विशेष।

कंटी स्त्री [दे] कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंटुल्ल } [दे] देखो कंकोड = (दे)।
कंटोल }

कंठ पुं [दे] सूकर। मर्यादा।

कंठ पुं [°कण्ठ] गला, घाँटी। समीप। अञ्चल। °दरखलिअ वि [°दरस्खलित] गद्गद्। °मुरय न [°मुरज] आभरण-विशेष। °मुरवी स्त्री. गले का एक आभरण। मुही° स्त्री [°मुखी] गले का एक आभूषण। °सुत्त न [°सूत्र] सुरत-बन्ध-विशेष। गले का एक आभूषण।

कंठ वि [कण्ठ्य] कण्ठ से उत्पन्न। सरल।

कंठकुंची स्त्री [दे] वस्त्र वगैरह के अञ्चल में बँधी हुई गाँठ। गले में लटकती हुई लम्बी नाडी-ग्रन्थि।

कंठदीणार पुं [दे] छिद्र। विवर।

कंठमल्ल न [दे] ठठरी, मृत-शिबिका। यान-पात्र, वाहन।

कंठमाल पुंस्त्री [कण्ठमाल] रोग-विशेष।

कंठय पुं [कण्ठक] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक।

कंठाकंठि अ [कण्ठाकण्ठि] गले-गले में ग्रहण कर।

कंठाल वि [कण्ठवत्] बड़ा गलावाला।

कंठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार।

कंठिआ स्त्री [कण्ठिका] गले का एक आभूषण।

कंठीरअ } पुं [कण्ठीरव] सिंह। शार्दूल।
कंठीरव }

कंड सक [कण्ड्] व्रीहि वगैरह का छिलका अलग करना। खींचना। खुजवाना। साफ-सुथरा करना।

कंड न [काण्ड] अंगुल का असंख्यातवाँ भाग।

कंड पुंन [काण्ड] लाठी। निन्दित समुदाय। पानी। पर्व। वृक्ष का स्कन्ध। वृक्ष की शाखा। वृक्ष का वह एक भाग, जहाँ से शाखाएँ निकलती हैं। ग्रन्थ का एक भाग। गुच्छ। अश्व। प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा। रीढ़, पृष्ठ भाग की लम्बी हड्डी। खुशामद। प्रशंसा। गुप्तता। एकान्त। तृण-विशेष। निर्जन पृथ्वी। अवसर, प्रस्ताव। समूह। बाण। देव-विमान-विशेष। पर्वत वगैरह का एक भाग। खण्ड। अवयव। °च्छारिय पुं [°छारिक] इस नाम का एक ग्राम। एक ग्रामनायक। देखो कंडग, कंडय।

कंड पुं [दे] फेन, फीन। वि. दुर्बल। विपन्न।

कंडइअ देखो कंटइअ।

कंडइज्जंत देखो कंटइज्जंत।

कंडग न [कण्डक] संख्यातीत संयम-स्थान-समुदाय। विभाग, पर्वत आदि का एक भाग।

कंडग पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड। संयम श्रेणि-विशेष। इस नाम का एक ग्राम। देखो कंडय।

कंडण न [कण्डन] व्रीहि वगैरह को साफ करना।

कंडपंडवा स्त्री [दे] परदा।

कंडय पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड तथा कंडग। राक्षसों का चैत्य वृक्ष। तावीज़, गण्डा, यन्त्र।

कंडरीय पुं [कण्डरीक] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई, जिसने वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था।

कंडरीय वि [कण्डरीक] अशोभन। अप्रधान।

कंडलि } स्त्री [कन्दरिका] गुफा।
कंडलिआ }

कंडवा स्त्री [कण्डवा] वाद्य-विशेष।

कंडार सक [उत् + कॄ] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना।

कंडावेल्ली स्त्री [काण्डवल्ली] वनस्पति-विशेष।

कंडियायण न [कण्डिकायन] वैशाली (बिहार) का एक चैत्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंडिल्ल पुं [काण्डिल्य] काण्डिल्य गोत्र का प्रवर्त्तक ऋषि-विशेष। पुंस्त्री. काण्डिल्य गोत्र में उत्पन्न। न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है। °ायण पुं [°ायन] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष।

कंडु देखो कंडू।

कंडु देखो कंदु।

कंडुअ सक [कण्डूय्] खुजवाना।

कंडुअ पुं [कान्दविक] हलवाई।

कंडुअ } पुं [कन्दुक] गेंद।
कंडुग }

कंडुज्जुय वि [काण्डर्जु] बाण की तरह सीधा।

कंडुयग वि [कण्डूयक] खुजानेवाला।

कंडुयण न [कण्डूयन] खुजली। खुजवाना।

कंडुयय देखो कंडुयग।

कंडुरु पुं [कण्डुरु] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी।

कंडू स्त्री [कण्डू] खुजवाना। रोग-विशेष।

कंडूइ स्त्री [कण्डूति] ऊपर देखो।

कंडूय देखो कंडुअ = कण्डूय्। कंडूयइ।

कंडूर पुं [दे] बक, बगुला।

कंडूल वि [कण्डूल] खाजवाला, कण्डू-युक्त।

कंत सक [कृत्] काटना, छेदना। कातना।

कंत वि [कान्त] मनोहर। अभिलषित। पुं. पति। देव-विशेष। न. कान्ति।

कंत वि [क्रान्त] गत।

कंता स्त्री [कान्ता] स्त्री। रावण की एक पत्नी का नाम। एक योगदृष्टि।

कंतार न [कान्तार] जंगल। दुष्ट, दूषित। निराश्रय। पागल। जल-फलादि-रहित अरण्य।

कंति स्त्री [कान्ति] तेज। शोभा, सौन्दर्य। इस नाम की रावण की एक पत्नी। अहिंसा। इच्छा। चन्द्र की एक कला। °पुरी स्त्री. नगरी-विशेष। °म, °ल्ल वि [°मत्] कान्ति-युक्त।

कंति स्त्री [क्रान्ति] परिवर्तन। गमन।

कंतु पुं [दे] काम, कामदेव।

कंथक पुं [कन्थक] अश्व की एक जाति।

कंथा स्त्री [कन्था] कथड़ी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढ़ना।

कंथार पुं [कन्थार] वृक्ष-विशेष।

कंथारिया } स्त्री [कन्थारिका, °री] वृक्ष-
कंथारी } विशेष। °वण न [°वन] उज्जैन के समीप का एक जंगल, जहाँ अवन्ती-सुकुमार-नामक जैन मुनि ने अनशन व्रत किया था।

कंथेर पुं [कन्थेर] वृक्ष-विशेष।

कन्थेरी स्त्री [कन्थेरी] कण्टकमय वृक्ष-विशेष।

कंद अक [क्रन्द्] काँदना, रोना।

कंद वि [दे] दृढ़। मत्त। न. आच्छादन।

कंद पुं [क्रन्द, क्रन्दित] व्यन्तर देवों की एक जाति।

कंद पुं [कन्द] जमीकन्द, सूरन, शकरकन्द, बिलारीकन्द, ओल, गाजर, लहसुन वगैरह। मूल। छन्द-विशेष।

कंद पुं [स्कन्द] कार्त्तिकेय।

कंदणया स्त्री [क्रन्दनता] मोटे स्वर से चिल्लाना।

कंदप्प पुं [कन्दर्प] कामदेव। कामोद्दीपक हास्यादि। देव-विशेष। काम-सम्बन्धी कषाय। वि. कामी।

कंदप्प वि [कान्दर्प] कान्दर्प-सम्बन्धी।

कंदप्पिय पुं [कान्दर्पिक] मजाक करनेवाला भाण्ड वगैरह। भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति। हास्य वगैरह भाण्ड कर्म से आजीविका चलानेवाला। वि. काम-सम्बन्धी।

कंदर न [कन्दर] रन्ध्र। गुहा। गुफा।

कंदरा } स्त्री [कन्दरा] गुहा, गुफा।
कंदरी }

कंदल पुं [कन्दल] अंकुर। लता-विशेष। कन्द-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंदल न [दे] कपाल।

कंदलग पुं [कन्दलक] एक खुरवाला जानवर-विशेष।

कंदलिअ } वि [कन्दलित] अंकुरित।
कंदलिल्ल }

कंदली स्त्री [कन्दली] लता-विशेष। अंकुर।

कंदली स्त्री [कन्दली] कन्द-विशेष।

कंदविय पुं [कान्दविक] हलवाई।

कंदिंद पुं [कन्देन्द्र क्रन्दितेन्द्र] क्रन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र।

कंदिय पुं [क्रन्दित] वाणव्यन्तर देवों की एक जाति। न. रोदन, आक्रन्द।

कंदी स्त्री [दे] मूला।

कंदु पुंस्त्री [कन्दु] एक प्रकार का बरतन, जिसमें माण्ड वगैरह पकाया जाता है, हाँडा।

कंदुअ पुं [कन्दुक] गेंद। वनस्पति-विशेष।

कंदुइअ पुं [कान्दविक] हलवाई।

कंदुक देखो कंदुअ।

कंदुग देखो कंदुअ।

कंदुट्ट न [दे] देखो कंदोट्ट।

कंदुब्वय पुंन [दे] कन्द-विशेष।

कंदुय देखो कंदुइअ।

कंदोइय देखो कंदुइअ।

कंदोट्ट न [दे] नील कमल।

कंध देखो खंध = स्कन्ध।

कंधरा स्त्री [कन्दरा] ग्रीवा।

कंधार पुं [दे] ग्रीवा का पिछला भाग।

कंप अक [कम्प्] काँपना।

कंप पुं [कम्प] अस्थैर्य, चलन, हिलन।

कंपड पुं [दे] पथिक।

कंपण न [कम्पन] कम्प, हिलन। रोग-विशेष। °वाइअ वि [°वातिक] कम्प वायु नामक रोगवाला।

कंपिल्ल वि [कम्पवत्] काँपनेवाला, अस्थिर।

कंपल्लि पुं [काम्पिल्य] यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम। न. पंजाब देश का एक नगर। °पुर न. नगर-विशेष।

कंब वि [कम्र] कामुक। सुन्दर।

कंब° देखो कंबा।

कंबर पुं [दे] विज्ञान।

कंबल पुंन [कम्बल] कामरी। पुं. स्वनाम-ख्यात एक बलीवर्द। गौ के गले का चमड़ा, सास्ना, गलकम्बल, लहर।

कंबा स्त्री [कम्बा] यष्टि, लकड़ी।

कंबि } स्त्री [कम्बि, °म्बी] दर्वी, कड़छी।
कंबी } लीला-यष्टि, छड़ी।

कंबिया स्त्री [कम्बिका] पुस्तक का पुट्ठा।

कंबु पुं [कम्बु] शङ्ख। इस नाम का एक द्वीप। पर्वत-विशेष। न. एक देव-विमान। °ग्गीव न [°ग्रीव] एक देव-विमान।

कंबोय पुं [कम्बोज] देश-विशेष।

कंबोय वि [काम्बोज] कम्बोज देश में उत्पन्न।

कंभार पुं. ब. [कश्मीर] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश। °जम्म न [जन्मन्] कुंकुम, केसर। देखो कम्हार।

कंभूर (अप) ऊपर देखो।

कंस पुं. राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल। महाग्रह-विशेष। काँसा। °णाभ पुं [°नाभ] ग्रह-विशेष। °वण्ण पुं [°वर्ण] ग्रह-विशेष। °वण्णाभ पुं [°वर्णाभ] ग्रह-विशेष। °संहारण पुं. कृष्ण, विष्णु।

कंस न [कांस्य] कांसा। वाद्य-विशेष। परिमाण-विशेष। प्याला। °ताल न. वाद्य-विशेष। °पत्ती, °पाई स्त्री [°पात्री] कांसा का बना हुआ पात्र-विशेष। °पाय न [°पात्र] कांसा का बना हुआ पात्र।

कंसार पुं [दे] कसार, एक प्रकार की मिठाई।

कंसारी स्त्री [दे] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति।

कंसाल पुं [कांस्याल] वाद्य-विशेष।

कंसाला स्त्री [कंसताला, कांस्यताला] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंसालिया स्त्री [कांस्यतालिका] एक प्रकार का वाद्य ।

कंसिअ पुं [कांस्यिक] कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार । वाद्य-विशेष ।

कंसिआ स्त्री [कंसिका] ताल । वाद्य-विशेष ।

ककाणि पुंस्त्री [दे] मर्म स्थान ।

ककुध } देखो कउह = ककुद ।
ककुभ }

ककुह देखो कउह = ककुद । हरिवंश का एक राजा ।

ककुहा देखो कउहा ।

कक्क पुं [कल्क] उद्वर्तन-द्रव्य । न. पाप । माया, कपट । °गरुग न [°गुरुक] माया, कपट ।

कक्क पुंन [कल्क] चन्दन आदि उद्वर्तन द्रव्य । प्रसूति-रोग आदि में किया जाता क्षार-पातन । लोध्र आदि से उद्वर्तन । °कुरुया स्त्री [°करुका] माया, कपट ।

कक्क पुं [कर्क] चक्रवर्त्ती का एक देव-कृत प्रासाद । कर्क राशि ।

कक्कंध पुं [कर्कन्ध] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ।

कक्कंधु स्त्री [कर्कन्धु] बैर का वृक्ष ।

कक्कड पुं [कर्कट] कर्कराशि । न. जलजन्तु-विशेष, कुलीर । ककड़ी । हृदय की एक प्रकार की वायु ।

कक्कडच्छ पुं [कर्कटाक्ष] ककड़ी, खीरा ।

कक्कडिया } स्त्री [कर्कटिका, °टी] ककड़ी
कक्कडी } (खीरा) का गाछ ।

कक्कणा स्त्री [कल्कना] पाप । माया ।

कक्कब पुं [दे] गुड़ बनाते समय की इक्षु-रस की एक अवस्था ।

कक्कर पुं [कर्कर] कंकर, पत्थर । वि. कठिन । कर्कर आवाजवाला ।

कक्करणया स्त्री [कर्करणता] दोषोद्भावन, दोषोद्भावनगर्भित प्रलाप ।

कक्कराइय न [कर्करायित] कर्कर की तरह आचरित । दोषोच्चारण ।

कक्कस वि [कर्कश] कठोर । प्रखर, चण्ड । तीव्र, प्रगाढ । अनिष्ट । निष्ठुर । चबा-चबा कर कहा हुआ वचन ।

कक्कस } पुं [दे] दध्योदन, दरम्ब ।
कक्कसार }

कक्कसेण पुं [कर्कसेन] अतीत उत्सर्पिणीकाल में उत्पन्न एक स्वनामख्यात कुलकर पुरुष ।

कक्कारुआ स्त्री [कर्कारुका] कूष्माण्डवल्ली, कोंहड़ा का गाछ ।

कक्किकड पुं [दे] कृकलास, गिरगिट ।

कक्कि पुं [कल्किन्] भविष्य में होनेवाला पाट-लिपुत्र का एक राजा ।

कक्किय न [कल्किक] मांस ।

कक्केअण पुंन [कर्केतन] रत्न की एक जाति ।

कक्केरअ पुं [कर्केरक] मणि-विशेष की एक जाति ।

कक्कोड न [कर्कोट] ककरैल, कक्कोडा । देखो कक्कोडय ।

कक्कोडई स्त्री [कर्कोटकी] ककोड़े का वृक्ष, ककरैल का गाछ ।

कक्कोडय न [कर्कोटक] देखो कक्कोड । पुं. अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज । उसका आवास पर्वत ।

कक्कोल पुं [कङ्कोल] शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद । न. फल-विशेष, जो सुगन्धित होता है । देखो कंकोल ।

कक्कोली स्त्री [कङ्कोली] वृक्ष-विशेष ।

कक्ख देखो कच्छ = कक्ष ।

कक्खग वि [कक्षाग] कक्षा-प्राप्त । पुं. कक्षा का केश ।

कक्खड देखो कक्कस ।

कक्खड वि [दे] पीन, पुष्ट ।

कक्खडंगी स्त्री [दे] सखी ।

कक्खल [दे] देखो कक्कस ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कक्खा देखो कच्छा = कक्षा ।

कग्घाड पुं [दे] अपामार्ग, चिरचिरा, लट-जीरा । किलाट, दूध की मलाई ।

कग्घायल पुं [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई ।

कच्च न [दे. कृत्य] कार्य ।

कच्च (पै) देखो कज्ज ।

कच्च न [काच] काच, शीशा ।

कच्चंत वि [कृत्यमान] पीड़ित किया जाता ।

कच्चरा स्त्री [दे] कचरा, कच्चा खरबूजा । कचरा को सुखाकर, तलकर और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य-विशेष ।

कच्चवार पुं [दे] कतवार, कूड़ा ।

कच्चाइणी स्त्री [कात्यायनी] देवी-विशेष, चण्डी ।

कच्चायण पुं [कात्यायन] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष । न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न ।

कच्चायणी स्त्री [कात्यायनी] पार्वती ।

कच्चि अ [कच्चित्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रश्न । मण्डल । अभिलाप । हर्ष ।

कच्चु (अप) ऊपर देखो ।

कच्चूर पुं [कर्चूर] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी ।

कच्चोल } पुंन [कच्चोलक] पात्र-विशेष,
कच्चोलय } प्याला ।

कच्छ पुं [कक्ष] काँख, कखरी । वन । तृण । शुष्क तृण । वल्ली । शुष्क काष्ठों वाला जंगल । राजा वगैरह का जनानखाना । हाथी को बांधने की डोर । पार्श्व, बाजू । ग्रह-भ्रमण । कक्षा । द्वार । गूगल । विभीतक वृक्ष । घर की भीत । स्पर्धा का स्थान । जल-प्राय देश ।

कच्छ पुं. ब.स्वनाम-ख्यातदेश । जलप्राय देश । कच्छा, लँगोट । इक्षु वगैरह की वाटिका । महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय-प्रदेश । तट । नदी के जल से वेष्टित वन । भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र । कच्छ-विजय का एक राजा । कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव । पार्श्ववर्ती प्रदेश । राजा वगैरह के उद्यान के समीप का प्रदेश । दोधक छंद का एक भेद । °कूड न [°कूट] माल्यवन्त नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर । कच्छ-विजय के विभाजक वैताढय पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्व-वर्ती दो शिखर । चित्रकूट पर्वत का एक शिखर । °ाहिव पुं [°ाधिप] कच्छ देश का राजा । °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] कच्छ देश का राजा ।

कच्छ पुंन. नदी के पास की नीची जमीन । मूला आदि की बाड़ी ।

कच्छकर पुं [दे] काछिआ, सब्जी बेचने-वाला ।

कच्छगावई स्त्री [कच्छकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश ।

कच्छट्टी स्त्री [दे] काछौटी, लँगोटी ।

कच्छभ पुं [कच्छप] कूर्म । राहु । °रिंगिय न [°रिङ्गित] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना ।

कच्छभाणिया स्त्री [दे] जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष ।

कच्छभी स्त्री [कच्छपी] कूर्मी । वाद्य-विशेष । नारद की वीणा । पुस्तक-विशेष ।

कच्छर पुं [दे] पङ्क ।

कच्छरी स्त्री [कच्छुरी] गुच्छ-विशेष ।

कच्छव (अप) पुं [कच्छ] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष ।

कच्छव देखो कच्छभ ।

कच्छवी देखो कच्छभी ।

कच्छह देखो कच्छभ ।

कच्छा स्त्री [कक्षा] विभाग । उरो-बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जु । काँख । श्रेणी । कमर पर बाँधने का वस्त्र । जनान-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खाना। संशय-कोटि। स्पर्धा-स्थान। घर की भीत। प्रकोष्ठ।

कच्छा स्त्री. कटि-मेखला। °वई स्त्री [°वती] देखो कच्छगावई। °वईकूड न [°वतीकूट] महाविदेह वर्ष में स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर।

कच्छादब्भ पुं [दे. कक्षादर्भ] रोग-विशेष।

कच्छु स्त्री [कच्छू] खुजली, खाज। खाज को उत्पन्न करनेवाली औषधि, कपिकच्छु। °ल, °ल्ल वि [°मत्] खाज रोगवाला।

कच्छुट्टिया स्त्री [दे. कच्छपटिका] कछोटी। लँगोटी।

कच्छुरिअ वि [दे] इर्षित। न. ईर्ष्या।

कच्छुरिअ वि [कच्छुरित] व्याप्त, खचित।

कच्छुरी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच।

कच्छुल पुं. गुल्म-विशेष।

कच्छुल्ल पुं. स्वनामख्यात एक नारद-मुनि।

कच्छू देखो कच्छु।

कच्छोटी स्त्री [दे] कछौटी, लँगोटी।

कज्ज वि [कार्य] जो किया जाय वह। करने-योग्य। न. प्रयोजन। कारण। काम। °जाण वि [°ज्ञ] कार्य को जाननेवाला। °सेण पुं [°सेन] अतीत उत्सर्पिणीकाल में उत्पन्न स्वनामख्यात एक कुलकर पुरुष।

कज्जआ (शौ) स्त्री [कन्यका] कन्या।

कज्जउड पुं [दे] अनर्थ।

कज्जमाण वि [क्रियमाण] जो किया जाता हो वह।

कज्जल न. काजल। सुरमा। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी।

कज्जलइअ वि [कज्जलित] काजलवाला। श्याम।

कज्जलंगी स्त्री [कज्जलाङ्गी] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है।

कज्जला स्त्री. इस नाम की एक पुष्करिणी।

कज्जलाव अक [ब्रुड्] डूबना।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ।

कज्जव, कज्जवय पुं [दे] विष्ठा, मैला। तृण वगैरह का समूह, कूड़ा।

कज्जिय वि [कार्यिक] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी।

कज्जोवग पुं [कार्योपग] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम।

कज्झाल न [दे] सेवाल।

कटरि (अप) अ [कटरे] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—आश्चर्य। प्रशंसा।

कटार (अप) न [दे] छुरी।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न।

कट्ट न [कष्ट] दुःख। वि. कष्ट-कारक।

कट्टर पुंन [दे] कढ़ी में डाला हुआ घी का बड़ा।

कट्टर न [दे] खण्ड, अंश, टुकड़ा।

कट्टराय न [दे] छुरी।

कट्टारी स्त्री [दे] छुरी।

कट्टिअ वि [कर्तित] काटा हुआ, छेदित।

कट्टु वि [कर्तृ] कर्त्ता।

कट्टु अ [कृत्वा] करके।

कट्टोरग पुं [दे] कटोरा। प्याला, पात्र-विशेष।

कट्ठ न [कष्ट] दुःख; पीड़ा। पाप। वि. कष्ट-दायक। °हर न [°गृह] कठघरा।

कट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकड़ी। पुं. राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। °कम्मंत न [°कर्मान्त] लकड़ी का कार-खाना। °करण न. श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम। °कार पुं. काष्ठ-कर्म से जीविका चलानेवाला। °कोलंब पुं [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग। °खाय पुं [°खाद] कीट-विशेष, घुण। °दल न. रहर की दाल। °पाउया स्त्री [°पादुका] खड़ाऊँ। °पुत्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिया स्त्री [°पुत्तलिका] कठपुतली। °पेज्जा स्त्री [°पेया] मूँग वगैरह का क्वाथ। घृत से तली हुई तण्डुल की राब। °महु न [°मधु] पुष्प-मकरन्द। °मूल न. द्विदल धान्य। °हार पुं. त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष। °हारय पुं [°हारक] कठहरा।

कट्ठ वि [कृष्ट] विलिखित, चासा हुआ।

कट्ठण न [कर्षण] आकर्षण।

कट्ठहार पुं [काष्ठहार] कठहरा।

कट्ठा स्त्री [काष्ठा] दिशा। हद। अठारह निमेष। प्रकर्ष।

कट्ठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार।

कट्ठिअ वि [काष्ठित] काठ से संस्कृत भीत वगैरह।

कट्ठिण देखो कढिण।

कट्ठेअ वि [काष्ठेय] देखो कट्ठिअ—काष्ठित।

कट्ठोल देखो कट्ठ = कृष्ट।

कड वि [दे] क्षीण। मृत, विनष्ट।

कड पुं [कट] गण्ड-स्थल, गाल। तृण। चटाई। लकड़ी। बांस। तृण-विशेष। छिला हुआ काष्ठ। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष। °तड न [°तट] कटक का एक भाग। गण्ड-तल। °पूयणा स्त्री [°पूतना] व्यन्तरी-विशेष।

कड वि [कृत] किया हुआ। रचित। पुंन. सत्ययुग। चार की संख्या। °जुग न [°युग] सत्य-युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है। °जुम्म पुं [°युग्म] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि। °जुम्मकडजुम्म पुं [°युग्मकृतयुग्म] राशि-विशेष। °जुम्मकलिओय [°युग्मकल्योज] राशि-विशेष। °जम्मतेओग पुं [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष। °जुम्मदावरजुम्म पुं.[°जुग्मद्वापर-युग्म] राशि-विशेष। °जोगि वि [योगिन्] कृत-क्रिय। गीतार्थ, ज्ञानी। तपस्वी। °वाइ पुं [°वादिन्] जगत्कर्तृत्ववादी। °इ पुं [°दि] देखो °जोगि। देखो कय = कृत।

कडअल्ल पुं [दे] दौवारिक।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला।

कडइअ पुं [दे] स्थपति।

कडइअ वि [कटकित] वलय की तरह स्थित।

कडइल्ल पुं [दे] दौवारिक।

कडंगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका, भूसा।

कडंत न [दे] मूली। मुसल।

कडंतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण।

कडंतरिअ वि [दे] विदारित, विनाशित।

कडंब पुं [कडम्ब] वाद्य-विशेष।

कडंबा पुंस्त्री [कदम्बा] वाद्य-विशेष।

कडंभुअ न [दे] कुम्भग्रीव-नामक पात्र-विशेष। घड़े का कण्ठ-भाग।

कडक देखो कडग।

कडकडा स्त्री. अनुकरण शब्द-विशेष, कड़-कड़ आवाज।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड़-कड़ आवाज किया हो वह, जीर्ण।

कडकडिर वि [कडकडायितृ] कड़-कड़ आवाज करनेवाला।

कडक्किय न [कडक्कित] कड़कड़ आवाज।

कडक्ख पुं [कटाक्ष] कटाक्ष, भाव-युक्त दृष्टि, आँख का संकेत।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना।

कडग पुंन [कटक] कड़ा, वलय। यवनिका। पर्वत का मूल भाग। पर्वत का मध्य भाग। पर्वत का सम भूमि। पर्वत का एक भाग। शिविर, सेना के रहने का स्थान। पुं. देश-विशेष। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई।

कडण न [कदन] मार डालना। नाश करना। मर्दन। पाप। युद्ध। विह्वलता।

कडण न [कटन] घर की छत। घर पर छत डालना। चटाई आदि से घर के पार्श्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भागों का किया जाता आच्छादन।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव-विशेष।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धारवाला और वक्र होता है।

कडत्तरिअ वि [दे] देखो कडंतरिअ।

कडद्दरिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ। न. छिद्रता।

कडप्प पुं [दे, कटप्र] समूह, कलाप। वस्त्र का एक भाग।

कडमड पुंन [दे] उद्वेग।

कडय न [कटक] ऊख आदि की यष्टि।

कडय देखो कडग लश्कर। पुं. काशी देश का एक राजा। °वई स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या।

कडयड पुं [कडकड] कड़-कड़ आवाज।

कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ।

कडसक्करा स्त्री [दे] बाँस की सलाई।

कडसार न [कटसार] मुनि का एक उपकरण, आसन।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान।

कडहू पुं [कटभू] वृक्ष-विशेष।

कडा स्त्री [दे] कड़ी, सिकड़ी, जंजीर की लड़ी।

कडार न [दे] नारिकेल।

कडार पुं. तामड़ा वर्ण, भूरा रंग। वि. कपिल वर्णवाला।

कडाली स्त्री [दे. कटालिका] घोड़े के मुँह पर बांधने का एक उपकरण।

कडाह पुं [कटाह] लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी कड़ाही। वृक्ष-विशेष। पाँजर की हड्डी। शरीर का एक अवयव।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनों पार्श्वों को घुमाना-फिराना।

कडि स्त्री [कटि] कमर। वृक्षादि का मध्य भाग। °तड न [°तट] कटि-तट। मध्य भाग। °पट्टय न [°पट्टक] धोती। °पत्त न [°पत्र] सर्पादि वृक्ष की पत्ती। पसली कमर। °यल न [°तल] कटि-प्रदेश। °ल्ल न [°टीय] देखो कडिल्ल (दे) का दूसरा अर्थ। °वट्टी स्त्री [°पट्टी] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा। °वत्थ न [°वस्त्र] धोती, कमर में पहनने का कपड़ा। °सुत्त न [°सूत्र] कमर का आभूषण, मेखला। °हत्थ पुं [°हस्त] कमर पर रखा हुआ हाथ।

कडि वि [कटिन्] चटाईवाला।

कडिअ वि [कटित] कट—चटाई से आच्छादित। कट से संस्कृत। एक दूसरे में मिला हुआ।

कडिअ वि [दे] प्रीणित।

कडिखंभ पुं [दे] कमर पर रखा हुआ हाथ, कमर में किया हुआ आघात।

कडिण पुंन [दे] तृण-विशेष।

कडित्त देखो कलित्त।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग में होनेवाला कुष्ठ-विशेष।

कडिल्ल वि [दे] छिद्र-रहित। न. कटि-वस्त्र, धोती वगैरह। वन। वि. गहन। आशीर्वाद। पुं. प्रतीहार। विपक्ष, शत्रु। कटाह। उपकरण-विशेष।

कडी देखो कडि।

कडु } पुं [कटुक] कडुआ, तिक्त। वि.
कडुअ } तीता। अनिष्ट। भयंकर। निष्ठुर। स्त्री. कुटकी।

कडुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके।

कडुआल पुं [दे] घण्टा, घण्ट। छोटी मछली।

कडुइय वि [कटुकित] कड़ुआ किया हुआ। दूषित।

कडुइया स्त्री [कटुकी] वल्ली-विशेष, कुटकी।

कडुच्छय } पुंस्त्री [दे] देखो कडच्छु।
कडुच्छु }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडुयाविय वि [दे] प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह। व्यथित, पीड़ित। पराभूत। भारी विपद् में फँसा हुआ।

कडूइद (शौ) वि [कटूकृत] कटुक किया हुआ।

कडेवर न [कलेवर] शरीर।

कड्ढ सक [कृष्] खींचना। चास करना। रेखा करना। पढ़ना। उच्चारण करना।

कड्ढ पुं [कर्ष] आकर्षण।

कड्ढण न [कर्षण] खींचाव। वि. खींचनेवाला, आकर्षक।

कड्ढाविय वि [कर्षित] खींचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ।

कड्ढिअ वि [दे] बाहर निकला हुआ।

कड्ढोकड्ढ न [कर्षापकर्ष] खींचातान।

कढ सक [क्वथ्] क्वाथ करना। उबालना। गरम करना।

कढकढकढेंत वि [कडकडायमान] कड़-कड़ आवाज करता।

कढिअ न [दे] कढ़ी।

कढिआ स्त्री [दे] कढ़ी, भोजन-विशेष।

कढिण वि [कठिन] कठिन, कर्कश, परुष। न. तृण-विशेष। पर्ण।

कढोर वि [कठोर] कठिन, निष्ठुर। पुं. इस नाम का एक राजा।

कण सक [क्वण] आवाज करना।

कण सक [कण्] आवाज करना।

कण पुं. लेश। विकीर्ण दाना। बनस्पति-विशेष। पुं. एक म्लेच्छ देश। ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष। ओदन। कनिक। बिन्दु। °इअ वि [°वत्] बिन्दुवाला। °कुंडग पुं [°कुण्डक] ओदन की बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु। °पूपलिया स्त्री [°पूपलिका] भोजन-विशेष, कणिक (आटा) की बनाई हुई एक खाद्य-वस्तु। °भक्ख पुं [°भक्ष] वैशेषिक मत का प्रवर्त्तक एक ऋषि। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] भिक्षा। °वियाणग पुं [°वितानक] देखो कणग-वियाणग। °संताणय पुं [°संतानक] देखो कणग-संताणय। °ाद पुं. वैशेषिक मत का प्रवर्तक ऋषि। °ाइण्ण वि [°ाकीर्ण] बिन्दुवाला।

कण पुं [कण] शब्द, आवाज।

कणइकेउ पुं [कनकिकेतु] इस नाम का एक राजा।

कणइपुर न [कनकिपुर] नगर-विशेष।

कणइर पुं [कर्णिकार] कणेर।

कणइल्ल पुं [दे] तोता, सुग्गा, सुआ।

कणई स्त्री [दे] वल्ली।

कणंगर न [कनङ्गर] पाषाण का एक प्रकार का हथियार।

कणकणकण अक [दे] कण-कण आवाज करना।

कणकणग पुं [कनकनक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष।

कणक्कणिअ वि [कणकणित] कण-कण आवाजवाला।

कणखल न [दे] उद्यान-विशेष।

कणग वि [कानक] सुवर्ण-रस पाया हुआ (कपड़ा)। °पट्ट वि. सोने का पट्टावाला।

कणग देखो कण।

कणग [दे] देखो कणय = (दे)।

कणग पुं [कनक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष। रेखा-सहित ज्योतिः-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है। बिन्दु। शलाका। घृतवर द्वीप का अधिपति देव। बिल्व-वृक्ष। न. सुवर्ण। °कंत वि [°कान्त] कनक की तरह चमकता। पुं. देव-विशेष। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का एक शिखर। पुं. स्वर्णमय शिखरवाला पर्वत। °केउ पुं [°केतु] इस नाम का एक राजा। °गिरि पुं. मेरु पर्वत। स्वर्ण-प्रचुर पर्वत। °ज्झय पुं [°ध्वज] इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम का एक राजा । °पुर न. नगर-विशेष । °प्पभ पुं [°प्रभ] देव-विशेष । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] देवी-विशेष । 'ज्ञाता-धर्मसूत्र' का एक अध्ययन । °फुल्लिअ न [°पुष्पित] जिसमें सोने के फूल लगाये गये हों ऐसा वस्त्र । °माला स्त्री. एक विद्याधर की पुत्री । एक स्वनामख्यात साध्वी । °रह पुं [°रथ] इस नाम का एक राजा । °लया स्त्री [°लता] चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपालदेव की एक अग्रमहिषी । °वियाणग पुं [°वितानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । °संताणग पुं [°सन्तानक]ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । °ावलि स्त्री. सुवर्ण की मणियों से बना आभूषण । तप-विशेष । पुं. द्वीप-विशेष । समुद्र-विशेष । °ावलिपविभत्ति स्त्री [°ावलिप्रविभक्ति] नाट्य का एक प्रकार । °ावलिभद्द पुं [°ावलिभद्र] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव । °वलिमहाभद्द पुं [°वलिमहाभद्र] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव । °ावलिमहावर पुं. कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । °ावलिवर पुं. इस नाम का एक द्वीप । इस नाम का एक समुद्र । कनकावलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष । °ावलिवरभद्द पुं [°ावलिवरभद्र] कनकावलिवर नामक द्वीप का एक अधिपति देव । °ावलिवरमहाभद्द पुं [°ावलिवरमहाभद्र] कनकावलिवर नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव । °ावलिवराभास पुं [°ावलिवरावभास] इस नाम का एक द्वीप । इस नाम का एक समुद्र । °ावलिवरोभासभद्द पुं [°ावलिवरावभासभद्र] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव । °ावलिवरोभासमहाभद्द पुं [°ावलिवरावभासमहाभद्र] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव । °ावलिवरोभासमहावर पुं [°ावलिवरावभासमहावर] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । °ावलिवरोभासवर पुं [°ावलिवरावभासवर] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । °ावली स्त्री. देखो °ावलि का पहला और दूसरा अर्थ । देखो **कणय** = कनक ।

कणगसत्तरि स्त्री [कनकसप्तति] एक प्राचीन जैनेतर शास्त्र ।

कणगा स्त्री [कनका] भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्रमहिषी । चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी । 'णायाधम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन । चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ।

कणगुत्तम पुं [कनकोत्तम] इस नाम का एक देव ।

कणय पुं [दे] फूलों को इकट्ठा करना, बाण ।

कणय पुन [कनक] एक देव-विमान ।

कणय देखो **कणग** = कनक । पुं. राजा जनक के एक भाई का नाम । रावण का इस नाम का सुभट । धतूरा । वृक्ष-विशेष । न. छन्द-विशेष । °पव्वय पुं [°पर्वत] देखो कणगगिरि । °मय वि. सुवर्ण का बना हुआ । °ाभ न. विद्याधरों का एक नगर । °ाली स्त्री. घर का एक भाग । °ावली स्त्री. देखो कणगावली । एक राज-पत्नी ।

कणयंदो स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, पाउरी, पाढल ।

कणविआणय पुं [कणवितानक] देखो **कणगवियाणग** ।

कणवी स्त्री [दे] कन्या ।

कणवीर पुं [करवीर] कनेर । न. कणेर का फूल ।

कणि पुंस्त्री [दे] स्फुरण, स्फूर्ति ।

कणिआर देखो **कण्णिआर** ।

कणिआरिअ वि [दे] कानी आँख से जो देखा

गया हो वह। न. कानी नजर से देखना।

कणिका स्त्री रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा।

कणिक्क वि. मत्स्य-विशेष।

कणिक्का देखो **कणिका**।

कणिट्ठ वि [कनिष्ठ] छोटा, लघु। निकृष्ट, जघन्य।

कणिय न [कणित] आर्त्त-स्वर। आवाज, ध्वनि।

कणिय°, **कणिया** } देखो **कणिका**। कणिका, चावल का टुकड़ा। °कुंडय देखो **कण-कुंडग**।

कणिया स्त्री [कणिता] वीणा-विशेष।

कणिल्ल न [कनिल्य] नक्षत्र विशेष का गोत्र।

कणिल्लिका स्त्री [कनिष्ठिका] छोटी अंगुली।

कणिस न [कणिश] धान्य का अग्र-भाग।

कणिस न [दे] किशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग।

कणीअ, **कणीअस** } वि [कनीयस्] छोटा, लघु।

कणीणिगा स्त्री [कनीनिका] आँख का तारा। छोटी उंगली।

कणीर देखो **कणेर**।

कणुय न [कणुक] त्वग् वगैरह का अवयव।

कणूया देखो **कणिया** = **कणिका**।

कणेड्ढिआ स्त्री [दे] गुञ्जा, घुँघची।

कणेर देखो **कण्णिआर**।

कणेरु, **कणेरुया** } स्त्री [करेणु] हस्तिनी।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेल वगैरह।

कण्ण पुं [कन्या] कन्या-राशि।

कण्ण पुं [कण्व] इस नाम का एक परिव्राजक, ऋषि-विशेष।

कण्ण पुं [कर्ण] कोटि भाग, अग्रांश। एक म्लेच्छ-जाति। पुंन. कान। पुं. अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा, युधिष्ठिर का बड़ा भाई। काना, वस्तु के छोर का एक अंश। °उर, °ऊर न [°पूर] कान का आभूषण। °गइ स्त्री [°गति] मेरु-सम्बन्धी एक डारी। °जयसिंहदेव पुं. गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा। °देव पुं. विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र-देशीय एक राजा। °धार पुं. नाविक, निर्यामक। °पाउरण पुं [°प्रावरण] इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। उस अन्तर्द्वीप का निवासी। °पावरण देखो °पाउरण। °पीढ न [°पीठ] कान का एक प्रकार का आभूषण। °पूर देखो °ऊर। °रवा स्त्री. नदी-विशेष। °वालिया स्त्री [°वालिका] कान के ऊपर भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण। °वेहणग न [°वेधनक] उत्सव-विशेष, कर्ण-वेधोत्सव। °सक्कुली स्त्री [°शष्कुली] कान का छिद्र। कान की लम्बाई। °सोहण न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण। °हार पुं [°धार] देखो °धार। देखो कन्न।

कण्णआर देखो **कण्णिआर**।

कण्णउज्ज पुं [कान्यकुब्ज] देश-विशेष। न. उस देश का प्रधान नगर।

कण्णबाल न [दे] कुण्डल।

कण्णगा देखो **कन्नगा**।

कण्णच्छुरी स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली।

कण्णडय (अप) देखो **कण्ण**।

कण्णल (अप) वि [कर्णाट] कर्णाटक। वि. उस देश का निवासी।

कण्णलोयण पुंन [कर्णलोचन] देखो **कण्णि-लायण**।

कण्णल्ल पुंन [कर्णल] ऊपर देखो।

कण्णस वि [कन्यस] अधम, जघन्य।

कण्णस्सरिय वि [दे] कानी नजर से देखा हुआ। न. कानी नजर से देखना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्णा स्त्री [कन्या] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि। कुमारी। °च्चोलय न [°चोलक] धान्यविशेष, जवनाल। °णय न [°नय] चोल देश का एक प्रधान नगर। °लिय न [°लीक] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ।

कण्णाआस न [दे] कान का आभूषण।

कण्णाइंधण न [दे] कुण्डल।

कण्णाड पुं [कर्णाट] देश-विशेष। वि. उस देश में उत्पन्न, वहाँ का निवासी।

कण्णास पुं [दे] पर्यन्त, अन्त-भाग।

कण्णि पुं [कर्णि] एक नरक-स्थान।

कण्णिआ स्त्री [कर्णिका] पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष। कोण, अस्त्र। शालि वगैरह के बीज का मुख-मूल, तुष-मुख।

कण्णिआर पुं [कर्णिकार] कनेर का गाछ। गोशालक का एक भक्त। न. कनेर का फूल।

कण्णिलायण न [कर्णिलायन] नक्षत्र-विशेष का एक गोत्र।

कण्णीरह देखो **कन्नीरह**।

कण्णुप्पल न [कर्णोत्पल] कान का आभूषण-विशेष।

कण्णेर देखो **कण्णिआर**।

कण्णोच्छडिआ स्त्री [दे] दूसरे की बात गुप-चुप सुननेवाली स्त्री।

कण्णोड्ढ / **कण्णोड्ढिआ** स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, नीरङ्गी।

कण्णोढत्ती [दे] देखो **कण्णोच्छडिआ**।

कण्णोप्पल देखो **कण्णुप्पल**।

कण्णोल्ली स्त्री [दे] चञ्चु, पक्षी का ठोर, ठोंठ। अवतंस, शेखर, भूषण-विशेष।

कण्णोवगण्णिआ स्त्री [कर्णोपकर्णिका] कर्णाकर्णी, कानाकानी।

कण्णोस्सरिअ [दे] देखो **कण्णस्सरिय**।

कण्ह पुं [कृष्ण] कन्द-विशेष। श्रीकृष्ण। पाँचवाँ वासुदेव और बलदेव के पूर्वजन्म के गुरु का नाम। देशावकाशिक व्रत को अतिचरित करनेवाला एक उपासक। विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्तक शिवभूति मुनि के गुरु। काला वर्ण। इस नाम का एक परिव्राजक, तापस। वि. श्याम-वर्ण। °ओराल पुं. वनस्पति-विशेष। °कंद पुं [°कन्द] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष। °कण्णियार पुं [°कर्णिकार] काली कनेर का गाछ। °कुमार पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र। °गोमी स्त्री [°गोमिन्] काला शृगाल। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] क्रूर कर्म करनेवाला। बहुत काल तक संसार में भ्रमण करनेवाला (जीव)। °बंधुजीव पुं [°बन्धुजीव] वृक्ष-विशेष, श्याम पुष्पवाला दुपहरिया। °भूम, °भोम पुं [°भूम] काली जमीन। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] काली रेखा। एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी। 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद। °रिसि पुं [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य] कृष्ण-लेश्यावाला। °लेसा, °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति निकृष्ट मनःपरिणाम, जघन्य-वृत्ति। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान। °वल्लि, °वल्ली स्त्री. वल्ली-विशेष, नागदमनी लता। °सप्प पुं [°सर्प] काला साँप। राहु। °सह न जैन साधुओं का एक कुल।

कण्हई अ [कुतश्चित्] किसी से। देखो **कण्हुइ**।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी। एक अन्तकृत् स्त्री। द्रौपदी। राजा श्रेणिक की एक रानी। ब्रह्म देश की एक नदी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्हुइ } अ [क्वचित्] क्वचित्, कहीं भी।
कण्हुई } कहाँ से।
कतवार पुं [दे] कूड़ा।
कति देखो कइ = कति।
कतु देखो कउ = क्रतु।
कत्त सक [कृत्] छेदना। कतरना। कातना।
कत्त वि [क्लृप्त] निर्मित।
कत्त न [दे] कलत्र स्त्री।
कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई।
कत्तर पुं [दे] कतवार, कूड़ा।
कत्तरिअ वि [कृत्त, कर्त्तित] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून।
कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कैंची।
कत्तवीरिअ पुं [कार्त्तवीर्य] नृप-विशेष।
कत्तव्व वि [कर्त्तव्य] करने-योग्य। न. काम।
कत्ता स्त्री [दे] अन्धिका-द्यूत की कपर्दिका, कौड़ी।
कत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म।
कत्ति° वि [कर्तृ] करनेवाला।
कत्तिकेअ पुं [कार्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र।
कत्तिगी स्त्री [कार्त्तिकी] कार्त्तिक मास की पूर्णिमा।
कत्तिम वि [कृत्रिम] बनावटी।
कत्तिय पुं [कार्त्तिक] कातिक मास। इस नाम का एक श्रेष्ठी। भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थङ्कर के पूर्व भव का नाम।
कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नक्षत्र-विशेष।
कत्तिया स्त्री [कर्त्तिका] कतरनी।
कत्तिया स्त्री [कार्त्तिकी] कार्त्तिक मास की पूर्णिमा या अमावास्या।
कत्तिवविय वि [दे] कृत्रिम, दिखाऊ।
कत्तु वि [कर्तृ] करनेवाला।
कत्तो अ [कुतः] कहाँ से, किससे? °च्चय वि [°त्य] कहाँ से उत्पन्न?
कत्थ सक [कत्थ्] श्लाघा करना।
कत्थ अ [कुतः] कहाँ से?
कत्थ अ [क, कुत्र] कहाँ? °इ अ [°चित्] कहीं, किसी जगह।
कत्थ वि [कथ्य] कथनीय। न. काव्य का एक भेद। वनस्पति-विशेष।
कत्थभाणी स्त्री [कस्तभानी] पानी में होनेवाली वनस्पति-विशेष।
कत्थूरिया } स्त्री [कस्तूरी] हरिण की नाभि
कत्थूरी } में होनेवाली सुगन्धित वस्तु।
कथ वि [दे] उपरत, मृत। क्षीण।
कद (मा) देखो कड = कृत।
कदग देखो कयग।
कदण देखो कडण = कदन।
कदली देखो कयली।
कदु देखो कउ = क्रतु।
कदुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके।
कदुइया स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कद्दू।
कदुसण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम।
कद्दम पुंन [कर्दम] कीचड़। °ल वि. कीचड़वाला।
कद्दम पुं [कर्दम] कीच। देव-विशेष, एक नागराज।
कद्दमिअ पुं [दे] महिष।
कन्न देखो कण्ण = कर्ण। °यंस पुं [°वतंस] कान का आभूषण।
कन्न देखो कण्ण। °एव देखो कण्णदेव। °वट्टि, °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] किनारा, अग्र भाग।
कन्नगा स्त्री [कन्यका] कन्या।
कन्नस वि [कनीयस्] कनिष्ठ, जघन्य।
कन्नारिय वि [दे] विभूषित।
कन्नीरह पुं [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिविका, धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन।
कन्नुल्लड (अप) पुं [कर्ण] श्रवणेन्द्रिय।
कन्नेरय देखो कण्णिआर।
कन्नोली [दे] देखो कण्णोल्ली।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपंध देखो कमन्ध ।

कपिंजल पुं. चातक । गौरा पक्षी ।

कपूर देखो कप्पूर ।

कप्प अक [कृप्] समर्थ होना । कल्पना, काम में आना । सक. काटना ।

कप्प सक [कल्पय्] करना, बनाना । वर्णन करना । कल्पना करना ।

कप्प वि [कल्प्य] ग्रहण-योग्य ।

कप्प पुं [कल्प] प्रक्षालन । आचार, व्यवहार । दशाश्रुतस्कन्धसूत्र । कल्पसूत्र । व्यवहार-सूत्र । वि. उचित । °काल पुं. प्रभूत काल । °धर वि. कल्प तथा व्यवहार सूत्र का जानकार ।

कप्प पुं [कल्प] काल-विशेष, देवों के दो हजार युग परिमित समय । शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान । शास्त्र-विशेष । कम्बल-प्रमुख उपकरण । देवों का स्थान, बारह देवलोक । बारह देवलोक । निवासी देव, वैमानिक देव । कल्प-वृक्ष। शस्त्र-विशेष । अधिवास, स्थान । राजा नन्द का एक मन्त्री । वि. समर्थ, शक्तिमान् । सदृश । °ट्ठ पुं [°स्थ] बालक । °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] साधुओं का शास्त्रोक्त अनुष्ठान । °ट्ठिया स्त्री [°स्थिका] बालिका । तरुण स्त्री । °ट्ठी स्त्री [°स्था] लड़की । कुल-वधू । °तरु पुं. कल्पवृक्ष । °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी । °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] कल्प-वृक्ष। °पायव पुं [°पादप] कल्पवृक्ष । °पाहुड न[°प्राभृत] जैनग्रन्थ-विशेष । °रुक्ख पुं [°वृक्ष]कल्प-वृक्ष। °वडिंसय न [°ावतंसक] विमान-विशेष । विमानवासी देव-विशेष । °वडिंसया स्त्री [°ावतंसिका] जैन-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पावतंसक देव-विमानों का वर्णन है। °विडवि पुं [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष । °साल पुं [°शाल] कल्प-वृक्ष। °साहि पुं [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष । °सुत्त न [°सूत्र] श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन-ग्रन्थ। °सुय [°श्रुत] ज्ञान-विशेष । ग्रन्थ-विशेष । °ाईअ पुं [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव । °ाग पुं [°ाक] विधि को जाननेवाला । °ाय पुं. चुङ्गी, राज-देय भाग ।

कप्पंत पुं [कल्पान्त] प्रलय-काल ।

कप्पड पुं [कर्पट] वस्त्र । जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपड़ा ।

कप्पडिअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, कपटी, मायावी ।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] रचना, निर्माण । प्ररूपण, निरूपण । कल्पना, विकल्प ।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कैंची ।

कप्पर पुं [कर्पर] खप्पर, सिर की खोपड़ी । देखो कुप्पर = कर्पर ।

कप्परिअ वि [दे] दारित ।

कप्पास पुं [कार्पास] कपास, रुई, ऊन ।

कप्पासत्थि पुं [कार्पासास्थि] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु-विशेष ।

कप्पासिअ वि [कार्पासिक] कपास बेचनेवाला । न. जैनेतर शास्त्र-विशेष । कपास का बना हुआ, सूती वगैरह ।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रुई का गाछ ।

कप्पिआकप्पिअ न [कल्पाकल्प] एक जैन शास्त्र ।

कप्पिय वि [कल्पित] रचित, निर्मित । स्थापित, समीप में रखा हुआ । कल्पना-निर्मित, विकल्पित । व्यवस्थित । छिन्न, काटा हुआ ।

कप्पिय वि [कल्पिक] अनुमत, अनिषिद्ध । योग्य । पुं. गीतार्थ, ज्ञानी साधु ।

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, एक उपाङ्ग-ग्रन्थ ।

कप्पूर पुं [कर्पूर] कपूर ।

कप्पोवग पुं [कल्पोपक] कल्प-युक्त । बारह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव लोक-वासी देव ।

कप्पोववण्ण पुं [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो ।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देव-लोक-विशेष में उत्पत्ति ।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल ।

कप्फाड देखो कवाड = कपाट ।

कप्पाड [दे] देखो कफाड ।

कफ पुं. शरीर-स्थित धातु-विशेष ।

कफाड पुं [दे] गुफा ।

कबंध (शौ) देखो कमंध ।

कब्बट्टी स्त्री [दे] छोटी लड़की ।

कब्बड पुंन [कर्बट] कुत्सित शहर । पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । वि. कुनगर का निवासी ।

कब्बर देखो कब्बुर ।

कब्बाडभयय पुं [दे] ठीका पर जमीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर ।

कब्बुर, कब्बुरय } वि [कर्बुर] चितकबरा । पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ।

कभ (अप) देखो कफ ।

कभल्ल न [दे] कपाल ।

कम सक [क्रम्] चलना, पाँव उठाना । उल्लंघन करना । अक. फैलना, पसरना । होना ।

कम सक [कम्] वाञ्छना ।

कम अक [क्रम्] युक्त होना, घटना । अधिक रहना ।

कम पुं [क्रम्] पाँव । परम्परा । परिपाटी । मर्यादा, सीमा । न्याय, फैसला । नियम ।

कम पुं [क्लम] थकावट ।

कमंडलु पुंन. संन्यासियों का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र ।

कमंध पुंन [कबन्ध] मस्तकहीन शरीर ।

कमढ पुं [दे] दही की कलशी । पिठर, स्थाली । बलदेव । मुख ।

कमढ पु [कमठ] तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और जो मरकर दैत्य हुआ था । कच्छप । बाँस । शल्लकी वृक्ष । न. मैल । साध्वियों का एक पात्र । साध्वियों के पहनने का एक वस्त्र ।

कमण न [क्रमण] गति, चाल । प्रवृत्ति ।

कमणिया स्त्री [क्रमणिका] जूता ।

कमणिल्ल वि [क्रमणीवत्] जूतावाला, जूता पहना हुआ ।

कमणी स्त्री [क्रमण] जूता ।

कमणी स्त्री [दे] सीढ़ी ।

कमणीय वि [कमनीय] सुन्दर, मनोहर ।

कमल पुं [दे] स्थाली । पटह । मुँह । मृग । कलह ।

कमल पुंन. एक देव-विमान । न. पद्म । कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन । संख्या-विशेष, 'कमलांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह । छन्द-विशेष । पुं. कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्वजन्म का पिता । श्रेष्ठि-विशेष । पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण । एक जाति का चावल, कलम । °क्ख पुं [°ाक्ष] इस नाम का एक यक्ष । °जय न. विद्याधरों का एक नगर । °जोणि पुं [°योनि] विधाता । °णअण पुं [°नयन] विष्णु, नारायण । °पुर न. विद्याधरों का एक नगर । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] काल-नामक पिशाचेन्द्र की अग्र-महिषी । 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन । °बन्धु पुं [°बन्धु] सूर्य । इस नाम का एक राजा । °माला स्त्री. पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की दादी । °रय पुं [°रजस्] कमल का पराग । °वडिंसय न [°ावतंसक] कमला नामक इन्द्राणी का प्रासाद । °सिरी स्त्री [°श्री] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की माता का नाम। °संदरी स्त्री [°सुन्दरी] इस नाम की एक रानी। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री। °ाअर, °ागर पुं [°ाकर] कमलों का समूह। सरोवर, ह्रद वगैरह जलाशय। °ापीड, °ामेल पुं [°ापीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व-रत्न। °ासण पुं [°ासन] ब्रह्मा।

कमलंग न [कमलाङ्ग] संख्या-विशेष, चौरासी लाख महापद की संख्या।

कमला स्त्री [दे] हरिणी।

कमला स्त्री. लक्ष्मी। रावण की एक पत्नी। काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष। 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन। छन्द-विशेष। °अर पुं [°कर] धनाढ्य।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ।

कमलुब्भव पुं [कमलोद्भव] ब्रह्मा।

कमव }
कमवस } अक [स्वप्] सो जाना।

कमसो अ [क्रमशः] क्रम से, एक-एक करके।

कमिअ वि [दे] पास आया हुआ।

कमेलग }
कमेलय } पुंस्त्री [क्रमेलक] ऊँट।

कम्म सक [कृ] क्षौर-कर्म करना।

कम्म सक [भुज्] भोजन करना।

कम्म देखो कम = कम्।

कम्म पुंन [कर्मन्] जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल। काम, क्रिया, करनी, व्यापार। जो किया जाय वह। व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष। वह स्थान, जहाँ पर चूना वगैरह पकाया जाता है। भाग्य। कार्मण-शरीर। कार्मण-शरीर नामकर्म, कर्मविशेष। °कर वि. चाकर। देखो °गार। °करण न. कर्म-विषयक बन्धन, जीव-पराक्रम-विशेष। °कार वि. नौकर। °किब्बिस वि [°किल्बिष] खराब काम करनेवाला। °क्खंध पुं [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलों का पिण्ड। °गर देखो °कर। °गार पुं [°कार] कारीगर, शिल्पी। देखो °कर। °जोग पुं [°योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान। °ट्ठाण न [°स्थान] कारखाना। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] कर्म-पुद्गलों का अवस्थान-समय। वि. संसारी जीव। °णिसेग पुं [°निषेक] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष। °धारय पुं [°धारय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास। °परिसाडणा स्त्री [°परिशाटना] कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों से पृथक्करण। °पुरिस पुं [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष, कारीगर, शिल्पी। महारम्भ करनेवाले वासुदेव वगैरह राजा लोग। °प्पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थांश-विशेष, आठवाँ पूर्व। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों का आत्मा में लगना, कर्मों से आत्मा का बन्धन। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न। °भूमि स्त्री. कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरह। °भूमिग देखो °भूमग। °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म-भूमि में उत्पन्न। °मास पुं. श्रावण मास। °मासग पुं [°माषक] मास-विशेष, पाँच गुञ्जा, पाँच रत्ती। °य वि [°ज] कर्म से उत्पन्न होनेवाला। कर्म-पुद्गलों का बना हुआ कार्मण-शरीर। °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि, अनुभव। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होनेवाला जीव का परिणाम। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्मरूप में परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ माननेवाला। °विवाग पुं [°विपाक] कर्म-परिणाम, कर्म-फल। कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] लौकिक वर्ष। °साला स्त्री [°शाला] कारखाना। कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान। °सिद्ध पुं. कारीगर, शिल्पी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°ाजीव कारीगर। कारीगरी का कोई भी काम बतलाकर भिक्षादि प्राप्त करनेवाला साधु। °ादाण न [°ादान] जिससे भारी पाप हो ऐसा व्यापार। °ायरिय पुं [°ार्य] निर्दोष व्यापार करनेवाला। °ावाइ देखो °वाइ।

कम्म वि [कार्मण] कर्म-सम्बन्धी, कर्मजन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय। न. कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है। कर्म-विशेष, कार्मण-शरीर का हेतु-भूत कर्म। कर्मण-शरीर का एक व्यापार।

कम्मइय न [कर्मचित, कार्मण] ऊपर देखो।

कम्मंत पुं [दे. कर्मान्त] कर्म-बन्धन का कारण। कर्मस्थान, कारखाना।

कम्मंत वि [कुर्वत्] हजामत करता हुआ। नापित। °साला स्त्री [°शाला] जहाँ पर उस्तरा—बाल बनाने का छुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान।

कम्मक्कर देखो कम्म-कर।

कम्मग न [कर्मक, कार्मक, कार्मण] देखो कम्म = कार्मण।

कम्मण न [कार्मण] कर्म-मय शरीर। औषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म। °गारि वि [°कारिन्] कार्मण करनेवाला। °जोय पुं [°योग] कार्मण-प्रयोग।

कम्मण न [भोजन] भोजन।

कम्मय देखो कम्मग।

कम्मव सक [उप + भुज्] उपभोग करना।

कम्मवण न [उपभोग] उपभोग, काम में लाना।

कम्मस वि [कल्मष] मलिन। न. पाप।

कम्मा स्त्री [कर्मन्] क्रिया, व्यापार।

कम्मार पुं [कर्मार] लोहार, लोहकार। ग्राम-विशेष।

कम्मार वि [कर्मकार] नौकर। कारीगर, शिल्पी।

कम्मारिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-नौकर, दासी।

कम्मि वि [कर्मिन्] कर्म करनेवाला, अभ्यासी, पाप कर्म करनेवाला।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कार्मिका] अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि। अवशिष्ट कर्म।

कम्हल न [कश्मल] पाप।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से।

कम्हार देखो कंभार। °ज न. केसर, कुंकुम।

कम्हिअ पुं [दे] माली।

कम्हीर देखो कंभार।

कय पुं [कच] केश।

कय पुं [क्रय] खरीदना।

कय देखो कड = कृत। °उण्ण वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली। °क देखो °ग। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ। °करण वि. अभ्यासी, कृताभ्यास। °किच्च वि [°कृत्य] सफल-मनोरथ। °ग वि [°क] अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करनेवाला, प्रयत्न-जन्य। पुं. दास-विशेष, गुलाम। न. सुवर्ण। °ग्घ वि [°घ्न] कृतघ्न। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ। °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] किये हुये उपकार की कदर करनेवाला। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] एहसानमन्दी। °त्थ वि [°ार्थ] कृतकृत्य। °नासि वि [°नाशिन्] कृतघ्न। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] प्रत्युपकार, विनय-विशेष। °पडिकइया स्त्री [प्रतिकृतिता] प्रत्युपकार। विनय का एक भेद। °बलिकम्म वि [°बलि-कर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नाम की एक नगरी। °माल वि [°माल] जिसने माला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बनाई हो वह । पुं. वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ । तमिस्रा नामक गुफा का अधिष्ठायक देव । °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर-चिन्ह को सफल किया हो वह । °व वि [°वत्] जिसने किया हो वह । °वणमालपिअ पुं [°वनमालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष । °वम्म पुं. [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता । °वीरिय पुं [°वीर्य] कार्तवीर्य के पिता का नाम ।

कयं अ [कृतम्] अलम्, बस ।

कयंगला स्त्री [कृतङ्गला] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी ।

कयंत पुं [कृतान्त] यम, मृत्यु । शास्त्र, सिद्धान्त । रावण का इस नाम का एक सुभट । °मुह पुं [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम । °वयण पुं [°वदन] राम का एक सेनापति ।

कयंध देखो कमंध ।

कयंब देखो कलंब ।

कयंब पुं [कदम्ब] समूह ।

कयंबिय वि [कदम्बित] अलंकृत ।

कयंबुअ देखो कलंबुअ ।

कयग वि [कृतक] प्रयत्न-जन्य ।

कयग वि [क्रायक] खरीदनेवाला ।

कयग पुं [कतक] वृक्ष-विशेष, निर्मली । न. कतक-फल, निर्मली-फल, पायपसारी ।

कयज्ज वि [कदर्य] कंजूस ।

कयड्डि पुं [कपर्दिन्] इस नाम का एक यक्ष देवता ।

कयण न [कदन] हिंसा, मार डालना ।

कयत्थ सक [कदर्थय्] हैरान करना, पीड़ा करना ।

कयन्न वि [कदन्न] खराब अन्न ।

कयम वि [कतम] बहुत में से कौन ?

कयर वि [कतर] दो में से कौन ?

कयर पुं [ककर] वृक्ष-विशेष, करीर, करील । न. करीर का फल ।

कयल पुं [कदल] केला का गाछ । न. केला ।

कयल न [दे] अलिञ्जर, बड़ा गगरा, झंझर, मटका ।

कयलि, °ली स्त्री [कदलि, °ली] केला का गाछ । °समागम पुं. इस नाम का एक गाँव । °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर ।

कयल्लय देखो कय = कृत ।

कयवर पुं [दे] कूड़ा, मैला, विष्ठा ।

कयवरुज्झिया स्त्री [दे. कचवरोज्झिका] कूड़ा साफ करनेवाली दासी ।

कयवाउ पुं [कृकवाकु] कुकड़ा, मुर्गा ।

कयवाय पुं [कृकवाक] कुक्कुट ।

कयसण न [कदशन] खराब भोजन ।

कयसेहर पुं [दे] मुर्गा ।

कया अ [कदा] कब, किस समय ?

कयाइ अ [कदापि] कभी भी, किसी समय भी ।

कयाइं, कयाइ, कयाई अ [कदाचित्] किसी समय, कभी । वितर्क-द्योतक अव्यय ।

कयाण न [क्रयाणक] बेचने योग्य वस्तु, करियाना ।

कयार पुं [दे] कूड़ा ।

कयावि देखो कयाइ = कदापि ।

कयोग पुं. बहुरूपिया ।

कर सक [कृ] करना, बनाना ।

कर पुं. एक महाग्रह । हाथ । महसूल । किरण । हाथी की सूँड़ । करका, शिला-वृष्टि, ओला । °ग्गह पुं [°ग्रह] हाथ से ग्रहण करना । शादी । °य पुं [°ज] नख । °रुह पुंन [°कररुह] नख । पुं. नृप-विशेष । °लाघव न. कला-विशेष, हस्त-लाघव । °वंदण न [°वन्दन] वन्दन का एक दोष ।

करअडी, करअरी स्त्री [दे] मोटा कपड़ा ।

करआ स्त्री [करका] ओला ।
करइल्ली स्त्री [दे] सूखा पेड़ ।
करंक पुं [दे. करङ्क] भिक्षा-पात्र । अशोक-वृक्ष ।
करंक पुंन. हड्डी । अस्थि-पञ्जर । पानदान । हड्डियों का ढेर ।
करंज सक [भञ्ज्] तोड़ना, फोड़ना ।
करंज पुं. वृक्ष-विशेष, करिञ्जा ।
करंज पुं [दे] सूखी त्वचा ।
करंड पुंन. वंशाकार हड्डी ।
करंड पुं [करण्ड] डिब्बा ।
करंडिया स्त्री [करण्डिका] छोटा डिब्बा ।
करंडी स्त्री. पेटिका, कुंडी ।
करंडुय न [दे] पीठ के पास की हड्डी ।
करंब पुं. दध्योदन ।
करंबिय वि [करम्बित] व्याप्त, खचित ।
करकंट पुं [करकण्ट] इस नाम का एक परिव्राजक ।
करकंडु पुं. एक जैन महर्षि ।
करकचिय वि [क्रकचित] करवत आदि से फाड़ा हुआ ।
करकड वि [दे. कर्कर, कर्कट] परुष ।
करकडी स्त्री [दे. करकटी] चिथड़ा, निन्द-नीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था ।
करकय पुं [क्रकच] करपत्र, आरा ।
करकर पुं. 'कर-कर' आवाज । °सुंठ पुंन [°शुण्ठ] तृण-विशेष ।
करकरिग पुं [करकरिक] ग्रह-विशेष, ग्रहा-धिष्ठायक देव-विशेष ।
करग देखो कारग = कारक ।
करग पुं [करक] ओला । पानी की कलशी । देखो करय = करक ।
करगय देखो करकय ।
करग्गह देखो कर-गह ।
करघायल पुं [दे] दूध की मलाई ।
करच्छोडिया स्त्री [दे] ताली, ताल ।
करट्ट पुं [दे] अपवित्र अन्न को खानेवाला ब्राह्मण ।
करड पुं [करट] कौआ । हाथी का गण्ड-स्थल । वाद्य-विशेष । कुसुम्भ-वृक्ष । करीर-वृक्ष । गिरगिट, मरट । नास्तिक । श्राद्ध-विशेष ।
करड पुं [दे] व्याघ्र, शेर । वि. कबरा ।
करडा स्त्री [दे] लट्वा—एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष । पक्षि-विशेष, चटक । भ्रमर । वाद्य-विशेष ।
करडि पुं [करटिन्] हाथी ।
करडी स्त्री [दे. करटी] वाद्य-विशेष ।
करडुयभत्त न [दे] श्राद्ध-विशेष ।
करण न. इन्द्रिय । आसन, पद्मासन वगैरह । आश्रय । क्रिया, विधान । कारक-विशेष, साधकतम । उपाधि, उपकरण । न्यायालय । वीर्य-स्फुरण । ज्योतिःशास्त्र-प्रसिद्ध बव-बालवादि करण । प्रयोजन । जेल । वि. जो किया जाय वह । करनेवाला । °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] जेल का अध्यक्ष । °साला स्त्री [°शाला] न्यायालय ।
करणया स्त्री [करणता] अनुष्ठान, क्रिया । संयमानुष्ठान ।
करणि स्त्री [दे] क्रिया ।
करणि स्त्री [दे] रूप, आकार । सादृश्य । अनुकरण । स्वीकार ।
करणिल्ल वि [दे] समान, सदृश ।
करपत्त न [करपत्र] क्रकच ।
करभ पुं. ऊँट ।
करभी स्त्री. ऊँटनी । धान्य भरने का बड़ा पात्र । देखो करही ।
करम वि [दे] क्षीण, दुर्बल ।
करमंद पुं. फलवाला वृक्ष-विशेष ।
करमद्द पुं [करमर्द] वृक्ष-विशेष, करौंदा ।
करमरी स्त्री [दे] हठ-हृत स्त्री, बाँदी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करय देखो करग। पक्षि-विशेष।

करयंदी स्त्री [दे] मल्लिका, बेला का गाछ।

करयर अक [करकराय्] 'कर-कर' आवाज करना।

करुद्द पुं [करुद्र] छन्द-विशेष।

करलि } स्त्री [कदलि, °ली] पताका।
करली } हरिण की एक जाति। हाथी का एक आभरण।

करव पुंन [दे. करक] जल-पात्र।

करवंदी स्त्री [करमन्दी] लता-विशेष, एक जाति का पेड़।

करवत्तिआ स्त्री [करपात्रिका] जल-पात्र-विशेष।

करवाल पुं. तलवार।

करविया स्त्री [दे. करकिका] पान पात्र-विशेष।

करवीर पुं. कनेर का गाछ।

करसी [दे] देखो कइसी।

करह पुं [करभ] उष्ट्र। सुगंधी द्रव्य-विशेष।

करहंच न [करहञ्च] छंद-विशेष।

करहाड पुं [करहाट] वृक्ष-विशेष, करहार, शिफा कन्द, मैनफल।

करहाडय पुं [करहाटक] ऊपर देखो। देश-विशेष।

करही देखो करभी। इस नाम का एक छन्द। °रुह वि [°रोह] ऊँट-सवार।

कराइणी स्त्री [दे] शाल्मली वृक्ष।

करादल्ल पुं. स्वनामख्यात एक राजा।

कराल वि उन्नत। दन्तुरित। भयंकर। फाड़नेवाला। विकसित। व्यवहित। वि. इस नाम का विदेह-देश का राजा।

कराल सक [करालय्] फाड़ना, छिद्र करना। विकसित करना।

करली स्त्री [दे] दतवन, दाँत शुद्ध करने का काष्ठ।

करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्मापन।

कराविय वि [कारित] कराया हुआ।

करि पुं [करिन्] हाथी। °धरणट्ठाण न [°धरणस्थान] हाथी को बाँधने की डोर—रज्जु। °नाह पुं [°नाथ] ऐरावण, इन्द्र का हाथी। उत्तम हस्ती। °बंधण न [°बन्धन] हाथी पकड़ने का गर्त्त। °मयर पुं [°मकर] जल-हस्ती।

करिअ पुं [करिक] एक महाग्रह।

करिआ स्त्री [दे] मदिरा परोसने का पात्र।

करिणिया } स्त्री [करिणी] हथिनी।
करिणी }

करिण पुं [करिन्] हस्ती।

करिमरी [दे] देखो करमरी।

करिल्ल न [दे] वंशांकुर, बाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होनेवाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं। करैला, तरकारी-विशेष। अंकुर, कन्दल। पुं, करील वृक्ष, करील। वि. वंशांकुर के समान।

करिस देखो कड्ढ = कृष्।

करिस पुं [कर्ष] आकर्षण। विलेखन, रेखा-करण। पल का चौथा हिस्सा।

करिस देखो करीस।

करिसग वि [कर्षक] कृषीवल।

करिसण न [कर्षण] खींचाव। खेती करना। कृषि।

करिसय देखो करिसग।

करिसावण पुंन [कार्षापण] सिक्का-विशेष।

करिसिय वि [कृशित] दुर्बल किया हुआ।

करीर पुं. वृक्ष-विशेष।

करीस पुं [करीष] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कण्डा, गोइठा।

करुण देखो कलुण।

करुणा स्त्री दया।

करे सक [कारय्] कराना।

करेडु पुं [दे] कृकलास, गिरगिट, सरट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेणु पुं. हाथी। कनेर का गाछ। स्त्री. हस्तिनी। °दत्ता स्त्री. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री। °सेणा स्त्री. [°सेना] देखो पूर्वोक्त अर्थ।

करेणुआ स्त्री [करेणु] हथिनी।

करेवाहिय वि [करबाधित] राज-कर से पीड़ित।

करोड पुं [दे] नारिकेल। काक। वृषभ।

करोडग पुं [दे] कटोरा।

करोडि स्त्री [करोटि] सिर की हड्डी।

करोडिय पुं [करोटिक] कापालिक, भिक्षुक-विशेष।

करोडिया, करोडी स्त्री [करोटिका, °टी] कुण्डा, बड़े मुँह का एक पात्र, कांस्य-पात्र-विशेष। स्थगिका, पानदान। मिट्टी का एक तरह का पात्र। कपाल, भिक्षा-पात्र। परोसने का एक उपकरण।

करोडी स्त्री [दे] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष।

करोडी स्त्री [दे] मुरदा, शव।

कल सक [कलय्] संख्या करना। आवाज करना। जानना। पहिचानना। सम्बन्ध करना।

कल वि [कल] मधुर, मनोहर। पुं. अव्यक्त मधुर शब्द। कोलाहल, कलकल। कर्दम। धान्य-विशेष, गोल चना, मटर। °कंठी स्त्री [°कण्ठी] कोयल। °मंजुल वि [°मञ्जुल] शब्द से मधुर। °यंठ पुं [°कण्ठ] कोकिल। °यंठी देखो °कण्ठी। °हंस पुं. राज-हंस।

कलंक पुं [कलङ्क] दोष। लाञ्छन, चिह्न।

कलंक सक [कलंङ्कय्] कलङ्कित करना।

कलंक पुं [दे] बाँस, वंश। बाँस की बनाई हुई बाड़।

कलंकल वि. असमंजस, अशुभ।

कलंकलीभागि वि [कलङ्कलीभागिन्] दुःख-व्याकुल।

कलंकलीभाव पुं [कलङ्कलीभाव] दुःख से व्याकुलता। संसार-परिभ्रमण।

कलंकवई स्त्री [दे] काँटे आदि से परिच्छन्न स्थान-परिधि।

कलंतर न [कलान्तर] ब्याज, सूद।

कलंद पुं [कलन्द] कुण्ड, कुण्डा, रङ्गपात्र। जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य।

कलंब पुं [कदम्ब] वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ। °चीर न. शस्त्र विशेष। °चीरिया स्त्री [°चीरिका] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है। °वालुया स्त्री [°वालुका] कदम्ब के पुष्प के आकारवाली धूली। नरक की नदी।

कलंबु स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, नालिका।

कलंबुअ न [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष एवं उसका पुष्प।

कलंबुआ [दे] देखो कलंबु।

कलंबुआ स्त्री [कलम्बुका] कदम्ब पुष्प के समान मांस-गोलक। एक गाँव का नाम, जहाँ पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था।

कलंबुगा स्त्री [कलम्बुका] जल में होने वाली वनस्पति की एक जाति।

कलकल पुं. कोलाहल, कल-कलरव। स्पष्ट आवाज। चूना आदि से मिश्रित जल।

कलकल अक [कलकलाय्] 'कल-कल' आवाज करना। कोलाहल करना।

कलक्ख देखो कडक्ख = कटाक्ष।

कलचुलि पुं [करचुलि] क्षत्रिय-विशेष। इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश।

कलण देखो करण।

कलण न [कलन] शब्द, आवाज। संख्यान, गिनती। धारण करना। जानना। प्राप्ति, ग्रहण।

कलणा स्त्री [कलना] कृति, करण। धारण करना, लगाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलत्त न [कलत्र] भार्या ।

कलधोय देखो कलहोय ।

कलभ पुंस्त्री. हाथी का बच्चा । बच्चा ।

कलभिआ स्त्री [कलभिका] हाथी का स्त्री बच्चा ।

कलम पुं [दे. कलम] चोर । एक प्रकार का उत्तम चावल ।

कलमल पुं. पेट का मल । वि. दुर्गन्धि, दुर्गन्ध-वाला ।

कलमल पुंन [दे] मदन-वेदन । कम्पन, थरथराहट, घृणा ।

कलय देखो कालय ।

कलय पुं [दे] अर्जुन वृक्ष । सोनार ।

कलय पुं [कलाद] सुवर्णकार ।

कलयंदि वि [दे] विख्यात । स्त्री वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल ।

कलयज्जल न [दे] ओष्ठ-लेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष ।

कलयल देखो कलकल ।

कलरुद्दाणी स्त्री [कलरुद्राणी] इस नाम का छन्द ।

कलल न. वीर्य और शोणित का समुदाय । गर्भवेष्टन चर्म । गर्भ के अवयव रूप रेत-विकार । कर्दम ।

कलविंक पुं. चटक, गौरिया पक्षी, गौरैया ।

कलवू स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र ।

कलस पुं [कलश] घड़ा । स्कन्धक छन्द का एक भेद । पुंन. एक देवविमान । वाद्य-विशेष।

कलसिया स्त्री [कलशिका] छोटा घड़ा । वाद्य-विशेष ।

कलह पुं. झगड़ा ।

कलह देखो कलभ ।

कलह न [दे] तलवार की म्यान ।

कलह अक [कलहाय्] झगड़ा करना, लड़ाई करना ।

कलहाअ देखो कलह = कलहाय् ।

कलहोय न [कलधौत] सुवर्ण । चाँदी ।

कला स्त्री. अंश, भाग, मात्रा । समय का सूक्ष्म भाग । चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा । कला, विद्या, विज्ञान । पुरुष-योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं । °गुरु पुं [°गुरु] कलाचार्य । °यरिय पुं [°चार्य] देखो पूर्वोक्त अर्थ । °वई स्त्री [°वती] कलावाली स्त्री । एक पतिव्रता स्त्री । °सवण्ण न [°सवर्ण] संख्या-विशेष ।

कलाइआ स्त्री [कलाचिका] कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव ।

कलाय पुं [कलाद] सुवर्णकार ।

कलाय पुं. गोल चना, मटर ।

कलाव पुं [कलाप] समूह, जत्था । मयूर-पिच्छ । शरधि, तूण, जिसमें बाण रखे जाते हैं । कण्ठ का आभूषण ।

कलावग न [कलापक] चार श्लोकों की एक-वाक्यता । ग्रीवा का एक आभरण ।

कलावय न [कलापक] चार पद्यों की एक-वाक्यता ।

कलावि पुंस्त्री [कलापिन्] मयूर ।

कलि पुं. एक नरकावास ।

कलि पुं. झगड़ा । कलियुग । पर्वत-विशेष । प्रथम भेद । एक, अकेला । दुष्ट पुरुष । °ओग, °ओय पुं [°ओज] युग्म-राशि-विशेष । °ओयकडजुम्म पुं [°ओजकृत-युग्म] युग्म-राशि-विशेष । °ओयकलिओय पुं [°ओजकल्योज] युग्म-राशि-विशेष । °ओजतेओय पुं [°ओजत्र्योज] युग्म-राशि-विशेष । °ओयदावरजुम्म पुं [°ओजद्वापर-युग्म] युग्म-राशि-विशेष । °कुंड न [°कुण्ड] तीर्थ-विशेष । °जुग न [°युग] कलियुग ।

कलि पुं [दे] शत्रु ।

कलिअ वि [कलित] सहित । गृहीत। विदित ।

कलिअ देखो कल = कलय् ।

कलिअ पुं [दे] नकुल । वि. गर्वित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिआ स्त्री [दे] सखी ।
कलिआ स्त्री [कलिका] कली ।
कलिंग पुं [कलिङ्ग] देश-विशेष । कलिङ्ग देश का राजा । कलिंग पुं. भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र ।
कलिंच देखो किलिंच ।
कलिंज पुं [कलिञ्ज] चटाई ।
कलिंज न [दे] छोटी लकड़ी ।
कलिंब पुंन. बाँस का पात्र-विशेष । सूखी लकड़ी ।
कलित्त न [कटित्र] कमर का पहना जाता एक प्रकार का चर्ममय कवच ।
कलिम न [दे] कमल ।
कलिमल देखो कलमल = कलकल ।
कलिल वि. गहन, घना, दुर्भेद्य ।
कलुण वि [करुण] दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र । पुं. साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस ।
कलुणा देखो करुणा ।
कलुस वि [कलुष] अस्वच्छ । न. पाप, दोष, मैल ।
कलेर पुं [दे] कङ्काल, अस्थि-पञ्जर । वि. भयानक ।
कलेवर न. देह ।
कलेसुय न [कलेसुक] तृण-विशेष ।
कलोवाइ स्त्री [दे] पात्र-विशेष ।
कल्ल न [कल्य] कल, गया हुआ या आगामी दिन । शब्द, आवाज । संख्या, गिनती । आरोग्य । सुबह । वि. निरोग ।
कल्लवत्त पुं [कल्यवर्त्त] प्रातर्भोजन, जलपान ।
कल्लवाल पुं [कल्यपाल] शराब बेचनेवाला ।
कल्लविअ वि [दे] तीमित, आर्द्रित । विस्तारित ।
कल्ला स्त्री [दे] दारू ।
कल्लाकल्लिं } अ [कल्याकल्य] प्रतिदिन । रोज-सुबह ।
कल्लाकल्लिं }
कल्लाण न [कल्याण] सुवर्ण ।
कल्लाण पुंन [कल्याण] सुख, मंगल, क्षेम । निर्वाण । विवाह । जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर । वैभव । वृक्ष-विशेष । तप-विशेष । देश-विशेष । नगर-विशेष । पुण्य । वि. हित-कारक, सुख-कारक । °कडय न [°कृतक] नगर-विशेष ।
कल्लाणी स्त्री [कल्याणी] कल्याण करनेवाली स्त्री । दो वर्ष की बछिया ।
कल्लाल पुं [कल्यपाल] कलाल ।
कल्लिं अ [कल्ये] कल दिन, कल को ।
कल्लुग पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति ।
कल्लुय पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।
कल्लुरिया [दे] देखो कुल्लरिया ।
कल्लेउय पुंन [दे] कलेवा, प्रातराश ।
कल्लोडय पुं [दे] दमनीय बैल ।
कल्लोडिआ [दे] देखो कल्होडी ।
कल्लोल पुं. तरंग, ऊर्मि ।
कल्लोल वि [दे. कल्लोल] दुश्मन ।
कल्लोलिणी स्त्री [कल्लोलिनी] नदी ।
कल्हार न [कल्हार] सफेद कमल ।
कल्हिं देखो कल्लिं ।
कल्होड पुं [दे] बछड़ा ।
कव अक [कु] आवाज करना ।
कवइय वि [कवचित] बख्तरवाला ।
कवंध देखो कमंध ।
कवग्ग पुं [कवर्ग] 'क' से 'ङ' तक के पाँच अक्षर ।
कवचिअ देखो कवइय ।
कवचिया स्त्री [कवचिका] कलाचिका, प्रकोष्ठ ।
कवट्टिअ वि [कदर्थित] पीड़ित ।
कवड न [कपट] माया, छद्म, शाठ्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवडि देखो कवड्डि ।
कवड्ड पुं [कपर्द] बड़ी कौड़ी ।
कवड्डि पुं [कपर्दिन्] यक्ष-विशेष । शिव ।
कवड्डिया स्त्री [कपर्दिका] कौड़ी ।
कवण वि [किम्] कौन ?
कवय पुंन [कवच] बख्तर ।
कवय न [दे] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र ।
कवरी स्त्री [कबरी] केश-पाश ।
कवल सक [कवलय्] ग्रसना ।
कवलिआ स्त्री [दे] ज्ञान का एक उपकरण ।
कवल्ल पुं [दे] लोहे का कड़ाह ।
कवल्लि } स्त्री [दे] गुड़ वगैरह पकाने का
कवल्ली } भाजन, कड़ाह ।
कवाल } पुं [कपाट] किवाड़, किवाड़ी ।
कवाड }
कवाल न [कपाल] खोपड़ी । भिक्षा-पात्र ।
कवास पुं [दे] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा ।
कवि देखो कइ = कपि ।
कवि पुं. कविता करनेवाला । शुक्र ग्रह । °त्त न [°त्व] कविता, कवित्त । देखो कइ = कवि ।
कविअ न [कविक] लगाम ।
कविंजल देखो कपिंजल ।
कविकच्छु } देखो कइकच्छु ।
कविगच्छु }
कविट्ठ देखो कइत्थ ।
कविड न [दे] घर का पिछला आँगन ।
कवित्थ देखो कइत्थ ।
कवियच्छु देखो कइकच्छु ।
कविल पुं [दे] कुत्ता ।
कविल पुं [कपिल] भूरा रंग, तामड़ा वर्ण । पक्षि-विशेष । सांख्य मत का प्रवर्त्तक मुनि-विशेष । एक ब्राह्मण महर्षि । इस नाम का एक वासुदेव । राहु का पुद्गल-विशेष । वि. भूरा रंग का, मटमैला रंग का । °ा स्त्री. एक ब्राह्मणी का नाम ।
कविलडोला स्त्री [दे. कपिलडोला] क्षुद्र जन्तु-विशेष ।
कविलास देखो कइलास ।
कविल्लुय न [दे] कड़ाही ।
कविस पुं [कपिश] कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण । वि. कपिश वर्णवाला ।
कविस न [दे] मदिरा ।
कविसा स्त्री [दे] अर्धजङ्घा ।
कविसायण पुंन [कपिशायन] गुड़ की दारू ।
कविसीसग } पुंन [कपिशीर्षक] प्राकार का
कविसीसय } अग्र-भाग ।
कविहसिय पुंन [कपिहसित] आकाश में अकस्मात् होनेवाली भयंकर आवाज करती ज्वाला ।
कवेल्लुय देखो कविल्लुय ।
कवोड } पुं [कपोत] कबूतर । म्लेच्छ-देश-
कवोय } विशेष । न. कूष्माण्ड, कोहड़ा ।
कवोल पुं [कपोल] गाल ।
कवोसण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम ।
कव्व न [काव्य] कविता, कवित्व । ग्रह-विशेष, शुक्र । वि. वर्णनीय, श्लाघनीय । °इत्त वि [वत्] काव्यवाला ।
कव्व न [क्रव्य] मांस ।
कव्वट्ठ पुं [दे] बालक ।
कव्वड देखो कब्बड ।
कव्वा स्त्री [क्रव्या] माया ।
कव्वाड पुं [दे] दाहिना हाथ ।
कव्वाडिअ वि [दे] काँवर उठानेवाला, बहँगी से माल ढोनेवाला ।
कव्वाय पुं [क्रव्याद] राक्षस, पिशाच । वि. कच्चा माँस खानेवाला । मांस खानेवाला ।
कव्वाल न [दे] कार्यालय । घर ।
कस सक [कष्] ठार मारना । कसना, घिसना । मलिन करना । विनाश करना ।
कस पुं [कश] चाबुक ।
कस पुं [कष] कसौटी । कसौटी का पत्थर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि. हिंसक, मार डालनेवाला। पुंन. संसार, भव। न. कर्म, कर्म-पुद्गल। °पट्ट, °वट्ट पुं [°पट्ट] कसौटी का पत्थर। °हि पुंस्त्री. सर्प की एक जाति।

कसई स्त्री [दे]अरण्यचारी वनस्पति का फल।

कसट (पै) देखो **कट्ठ** = कष्ट।

कसट्ट पुं [दे] कतवार।

कसण पुं [कृष्ण] वर्ण-विशेष। वि श्याम वर्णवाला। °पक्ख पुं [°पक्ष] कृष्णपक्ष। °सार पुं. वृक्ष-विशेष। हरिण की एक जाति।

कसण वि [कृत्स्न] सकल।

कसणसिअ पुं [दे] बलभद्र।

कसमीर देखो **कम्हीर**।

कसर पुं [दे] अधम बैल।

कसर पुंन [दे. कसर] रोग-विशेष, कण्डू-विशेष।

कसरक्क पुंन [दे. कसरत्क] चर्वण-शब्द, खाते समय जो शब्द होता है वह। फूल की कली।

कसव्व न [दे] बाष्प। वि. अल्प। प्रचुर, व्याप्त। आर्द्र। कर्कश।

कसा स्त्री [कशा, कसा] चर्म-यष्टि, कोड़ा।

कसा देखो **कासा**।

कसाय सक [कशाय्] ताड़न करना, मारना।

कसाय पुं [कषाय] क्रोध, मान, माया और लोभ। रस-विशेष, कषैला। लाल-पीला रंग। क्वाथ, काढ़ा। वि. कषैला स्वादवाला। कषाय रंगवाला। खुशबूदार।

कसार [दे] देखो **कंसार**।

कसिअ न [कशिका] चाबुक।

कसिआ स्त्री [दे] अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल।

कसिट (पै) देखो **कट्ठ** = कृष्ट।

कसिण देखो **कसण** = कृष्ण, कृत्स्न।

कसुमीरा स्त्री [कश्मीर] एक उत्तर भारतीय देश।

कसेरु पुंन [कशेरु] जलीय कन्द-विशेष।

कसेरुग पुंन [कशेरुक] जल में होनेवाली वनस्पति की एक जाति।

कसोति स्त्री [दे] खाद्य-विशेष।

कस्स पुं [दे] कर्दम।

कस्सय न [दे] भेंट।

कस्सव पुं [काश्यप] वंश-विशेष। ऋषि-विशेष।

कह सक [कथय्] कहना, बोलना।

कह सक [क्वथ्] क्वाथ करना, उबालना।

कह पुं [कफ] कफ।

कह देखो **कहं**। °कहवि देखो **कह-कहंपि**। °वि देखो **कहं-पि**।

कहअ अ [कथंवा] वितर्क और आश्चर्य अर्थ को बतलानेवाला अव्यय।

कहं अ [कथम्] कैसे, किस तरह ? क्यों, किस लिए ? °कहंपि अ [°कथमपि]किसी तरह। °कहा स्त्री [°कथा] राग-द्वेष को उत्पन्न करनेवाली कथा, विकथा। °चि, °ची अ [°चित्] किसी तरह, किसी प्रकार से। °पि अ [°अपि] किसी तरह।

कहकह अक [कहकहय्] खुशी का शोर मचाना।

कहक्कह पुं [कथंकथा] बातचीत।

कहग वि [कथक] कहनेवाला, पुं. कथा-कार।

कहण न [कथन] कथन, उक्ति।

कहणा स्त्री [कथना] ऊपर देखो।

कहय देखो **कहग**।

कहल्ल पुंन [दे] खप्पर।

कहा स्त्री [कथा] कथा, वार्त्ता, हकीकत।

कहाणग, **कहाणय** } न [कथानक] कथा, वार्त्ता प्रसंग, प्रस्ताव। प्रयोजन, कार्य।

कहाव सक [कथय्] कहलाना, बुलवाना।

कहावण पुं [कार्षापण] सिक्का-विशेष।

कहि, **कहिआ**, **कहिं** } अ [क्व, कुत्र] कहाँ, किस स्थान में ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहित्तु वि [कथयितृ] कहनेवाला, भाषक।

कहिया स्त्री [कथिका] कथा, कहानी।

कहु (अप) अ [कुतः] कहाँ से।

कहेड वि [दे] जवान।

कहेत्तु देखो कहित्तु।

काअइंची, काइंची स्त्री [काकचिञ्ची] गुञ्जा।

काइअ वि [कायिक] शरीर-सम्बन्धी।

काइआ, काइगा स्त्री [कायिकी] शरीर-सम्बन्धी क्रिया। शौच-क्रिया। पेशाब।

काइंदी स्त्री [काकन्दी] बिहार की एक नगरी।

काइणी स्त्री [दे] लाल रत्ती।

काई स्त्री [काकी] कौए की मादा।

काउ स्त्री [कापोती] लेश्या-विशेष। °लेसा स्त्री [°लेश्या] आत्म-परिणाम-विशेष। °लेस्स वि [°लेश्य] कापोत लेश्यावाला। °लेस्सा देखो °लेसा।

काउंबर, काउंबरी पुं [काकोदुम्बर] ओषधि-विशेष।

काउकाम वि [कर्त्तुकाम] करने को चाहनेवाला।

काउड्डावण न [कायोड्डावन] उच्चाटन, दूर,-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना।

काउदर पुं [काकोदर] साँप की एक जाति।

काउमण वि [कर्त्तुमनस्] करने की चाहवाला।

काउरिस पुं [कापुरुष] नीच पुरुष। डरपोक पुरुष।

काउल्ल पुं [दे] बक।

काउसग्ग, काउस्सग्ग पुं [कायोत्सर्ग] शरीर पर के ममत्व का त्याग। कायिक-क्रिया का त्याग। ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता।

काऊ देखो काउ।

काओदर देखो काउदर।

काओली स्त्री [काकोली] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष।

काओवग पुं [कायोपग] संसारी आत्मा।

काओसग्ग देखो काउसग्ग।

काक पुं. कौआ। ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष। °जंघा स्त्री [°जङ्घा] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घुंघची। देखो काग, काय = काक।

काकंदग पुं [काकन्दक] एक जैन महर्षि।

काकंदिय पुं [काकन्दिक] एक जैन महर्षि।

काकंदिया स्त्री [काकन्दिका] जैन मुनियों की एक शाखा।

काकंदी देखो काइंदी।

काकणि देखो कागणि।

काकलि देखो कागलि।

काग देखो काक। °तालसंजोवगनाय पुं [°तालसंजीवकन्याय] काकतालीयन्याय। °तालिज्ज, °तालीअ न [°तालीय] अकस्मात् किसी कार्य का होना। °थल न [°स्थल] देश-विशेष। °पाल पुं [°पाल] कुष्ठ-विशेष। °पिंडी स्त्री [°पिण्डी] अग्र-पिण्ड देखो। काय = काक।

कागंदी देखो काइंदी।

कागणि स्त्री [दे] राज्य। मांस का छोटा टुकड़ा।

कागणी देखो कागिणी।

कागणी स्त्री [काकिणी] सवा गुञ्जा का एक बाँट।

कागल पुं [काकल] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश।

कागलि, कागली स्त्री [काकलि, °ली] सूक्ष्म गति-ध्वनि, स्वर-विशेष। भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी।

कागिणी स्त्री [काकिणी] कौड़ी। बीस कौड़ी के मूल्य का एक सिक्का। रत्न-विशेष।

कागी स्त्री [काकी] कौए की मादा। विद्या-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काकोणंद पुं [काकोनन्द] इस नाम की एक म्लेच्छ जाति।

काठिण्ण न [काठिन्य] कठिनता।

काढ पुं [क्वाथ] काढ़ा।

काण वि. एकाक्ष।

काण वि [दे] सच्छिद्र। चुराया हुआ। °क्कय पुं [°क्रय] चुराई हुई चीज को खरीदना।

काणच्छि, **काणच्छिया** स्त्री [दे] टेढ़ी नजर से देखना।

काणण न [कानन] वन। बगीचा।

काणत्थेव पुं [दे] बूँद-बूँद बरसना।

काणद्धी स्त्री [दे] परिहास।

काणिक्का स्त्री [दे] बड़ी ईंट।

काणिट्ठा स्त्री [काणेष्टा] लोहे की ईंट।

काणिआर देखो **कण्णिआर**।

काणिय न [काण्य] आँख का रोग।

काणीण पुं [कानीन] कुँआरी कन्या से उत्पन्न पुत्र।

कादंब देखो **कायंब**।

कादंबरी देखो **कायंबरी**।

कादूसण वि [कदूषण] आत्मा को दूषित करनेवाला।

कापुरिस देखो **काउरिस**।

काम पुं बीमारी। °एव देखो **कामदेव**। °ग्घ न [°घ्न] आयंबिल तप। °डहण पुं [°दहन] महादेव। °रुय देखो **कामरूअ**। **काम** सक [कामय्] चाहना।

काम पुं [काम] इच्छा। सुन्दर शब्द, रूप वगैरह विषय। विषय का अभिलाष। मदन। इन्द्रिय-प्रीति। मैथुन। छन्द विशेष। °**कंत** न [°कान्त] देव-विमान-विशेष। °**कम** न. लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान। °**काम** वि. विषय की चाहवाला। °**कामि** वि [°कामिन्] विषयाभिलाषी। °**कूड** न [°कूट] देव-विमान-विशेष। °**गम** वि. स्वेच्छाचारी। न. देखो °**कम**। °**गामि** स्त्री [°**गामी**] विद्या-विशेष। °**गुण** न. मैथुन। शब्द-प्रमुख विषय। °**घड** पुं [°**घट**] ईप्सित चीज को देनेवाला दिव्य कलश। °**जल** न. स्नान-पीठ। °जुग पुं [°युग] पक्षि-विशेष। °**ज्झय** न [**ध्वज**] देव-विमान-विशेष। °**ज्झया** स्त्री [°ध्वजा] इस नाम की एक वेश्या। °**ट्ठि** वि [°र्थिन्] विषयाभिलाषी। °**ड्ढिय** पुं [°र्द्धिक] जैन साधुओं का एक गण। न. जैन मुनियों का एक कुल। °**णयर** न [°नगर] विद्याधरों का एक नगर। °**दाइणी** स्त्री [°दायिनी] ईप्सित फल को देनेवाली विद्या-विशेष। °दुहा स्त्री [°दुधा] कामधेनु। °**देअ**, °देव पुं [°**देव**] अनंग। एक जैन श्रावक का नाम। °धेणु स्त्री [°धेनु] ईप्सित फल देनेवाली गौ। °**पाल** पुं. देव-विशेष। बलदेव। °**पिपासय** वि [°**पिपासक**] विषयाभिलाषी। °**पुर** न. इस नाम का एक विद्याधर-नगर। °**प्पभ** न [°प्रभ] देवविमान-विशेष। °**फास** पुं [°**स्पर्श**] ग्रह-विशेष। ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष। °**महावण** न [°**महावन**] बनारस के समीप का एक चैत्य। °**रूअ** पुं [°**रूप**] देश-विशेष। °**लेस्स** [°**लेश्य**] देव-विमान-विशेष। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान। °**सत्थ** न [°शास्त्र] रति-शास्त्र। °**समणुण्ण** वि [°**समनोज्ञ**] कामान्ध। °**सिंगार** न [°**श्रृङ्गार**] देव-विमान-विशेष। °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान-विशेष। °**ावट्ट** न [°ावर्त] देव-विमान-विशेष। °**ावसाइत्त** स्त्री [°ावशायिता] योगी का एक तरहका ऐश्वर्य। °**ासंसा** स्त्री [°ाशंसा] विषयाभिलाष।

कामं अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—अवधारण। सम्मति। स्वीकार। अतिशय।

कामंग न [कामाङ्ग] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरह।

कामंदुहा स्त्री [काकदुधा] कामधेनु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामंध पुं [कामान्ध] विषयातुर ।
कामकिसोर पुं [दे] गर्दभ ।
कामग वि [कामक] अभिलषणीय । इच्छुक ।
कामण न [कामन] अभिलाष ।
कामय देखो कामग ।
कामि वि [कामिन्] विषयाभिलाषी । अभिलाषी ।
कामिअ वि [कामिक] काम-सम्बन्धी, विषय-सम्बन्धी । न. तीर्थ-विशेष । सरोवर-विशेष । वि. इच्छा पूर्ण करनेवाला । वि. साभिलाष ।
कामिआ स्त्री [कामिका] इच्छा ।
कामिंजुल पुं [कामिञ्जुल] पक्षि-विशेष ।
कामिड्ढि पुं [कामर्द्धि] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्तिसूरि का एक शिष्य ।
कामिड्ढिय न [कामर्द्धिक] जैन मुनियों का एक कुल ।
कामिणी स्त्री [कामिनी] स्त्री ।
कामिय वि [कामित] यथेष्ट ।
कामुअ, कामुग वि [कामुक] कामी । °सत्थ न [°शास्त्र] रति-शास्त्र ।
कामुत्तरवडिंसग न [कामोत्तरावतंसक] देवविमान-विशेष ।
काय पुं. वनस्पति की एक जाति । एक महा-ग्रह । पुंन. जीव-निकाय । °मंत वि [°वत्] बड़ा शरीरवाला । °वह पुं [°वध] जीव-हिंसा ।
काय पुं [काय] शरीर । समूह । देश-विशेष । वि. उस देश में रहनेवाला । °गुत्त वि [°गुप्त] शरीर को वश में रखनेवाला । °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] जितेन्द्रियता । °जोअ, °जोग पुं [°योग] शारीरिक क्रिया । °जोगि वि [°योगिन्] शरीर-जन्य क्रियावाला । °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर रहना । °णिरोह पुं [°निरोध] शरीर-व्यापार का परित्याग । °तिगिच्छा स्त्री [°चिकित्सा] शरीररोग की प्रतिक्रिया । उसका प्रतिपादक शास्त्र । °भवत्थ वि [°भवस्थ] माता के उदर में स्थित । °वंझ पुं [°वन्ध्य] ग्रह-विशेष । °समिअ वि [°समित] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति करनेवाला । °समिइ स्त्री [°समिति] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति ।
काय पुं [काक] वायस । काला उम्बर । देखो काक, काग ।
काय पुं [काच] शीशा ।
काय पुं [दे] काँवर, बोझ ढोने के लिए तरा-जूनुमा एक वस्तु । °कोडिय पुं [°कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला । देखो काव ।
काय पुं [दे] लक्ष्य, निशाना । उपमान ।
कायंचुल पुं [दे] कामिञ्जुल जल-पक्षी ।
कायंदी स्त्री [दे] उपहास ।
कायंदी देखो काइंदी ।
कायंधुअ पुं [दे] कामिञ्जुल जल-पक्षी ।
कायंब पुं [कादम्ब] हंस-पक्षी । गन्धर्व-विशेष । कदम्ब-वृक्ष । वि. कदम्ब-वृक्ष-सम्बन्धी ।
कायंबर न [कादम्बर] गुड़ की दारू ।
कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] एक गुहा का नाम ।
कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] दारू । अटवी-विशेष ।
कायक न [दे. कायक] हरे रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र ।
कायत्थ पुं [कायस्थ] कायस्थ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करनेवाली मनुष्य-जाति ।
कायपिउच्छा, कायपिउला स्त्री [दे] कोयल ।
कायर वि [कातर] अधीर, डरपोक ।
कायर वि [दे] प्रिय ।
कायरिय वि [कातर] भयभीत । पुं. गोशालक का एक भक्त ।
कायरिया स्त्री [कातरिका] माया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायल पुं [दे] काक, वि. स्नेह-पात्र ।
कायलि देखो कागलि ।
कायवंझ [कायवन्ध्य] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ।
कायह वि [कायह] देश-विदेश में बना हुआ (वस्त्र) ।
काया स्त्री. देह ।
कार सक [कारय्] करवाना, बनवाना ।
कार वि [दे] कड़वा, तीता ।
कार पुंन. देखो कारा = कारा ।
कार पुं. क्रिया, कृति, व्यापार । रूप, आकृति । संघ का मध्य भाग ।
°कार वि. करनेवाला ।
कारंकड वि [दे] कठिन ।
कारंड } पुं [कारण्ड] पक्षि-विशेष ।
कारंडग }
कारंडव
कारग वि [कारक] करनेवाला । करानेवाला । न. व्याकरणप्रसिद्ध कारक । कारण, हेतु । उदाहरण । पुंन. सम्यकत्व-विशेष ।
कारण न. हेतु । प्रयोजन । अपवाद ।
कारणिज्ज वि [कारणीय] प्रयोजनीय ।
कारणिय वि [कारणिक] प्रयोजन से किया जाता । कारण से प्रवृत्त । पुं. न्यायाधीश ।
कारय देखो कारग ।
कारव सक [कारय्] करवाना, बनवाना ।
कारवस पुं [कारवश] देश-विशेष ।
करवाहिय वि [कारबाधित] देखो करेवाहिय ।
कारह वि [कारभ] करभ-सम्बन्धी ।
कारा स्त्री. कैदखाना । °गार पुंन. जेल । °घर न [°गृह]कैदखाना । °मंदिर न. जेलखाना ।
कारा स्त्री [दे] लेखा, रेखा ।
कारायणी स्त्री [दे] शाल्मलि-वृक्ष ।
काराव देखो कारव ।
कारावय वि [कारक] करानेवाला, विधायक ।
कारिका देखो कारिया ।
कारिम वि [दे] नकली ।
कारिय देखो कज्ज = कार्य ।
कारियल्लई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ ।
कारिया स्त्री [कारिका] कर्त्री ।
कारिल्ली स्त्री [दे] करैला का गाछ ।
कारीस पुं [कारीष] गोइठा की अग्नि ।
कारु पुं. कारीगर, शिल्पी । नव प्रकार के कारु चर्मकर आदि ।
कारुइज्ज वि [कारुकीय] कारीगर से सम्बन्ध रखनेवाला ।
कारुणिय वि [कारुणिक] कृपालु ।
कारुण्ण न [कारुण्य] दया ।
कारेल्लय न [दे] करैला ।
कारोडिय पुं [कारोटिक] कापालिक, भिक्षुक-विशेष । ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर ।
काल न [दे] अन्धकार ।
काल पुं. समय । मृत्यु । प्रस्ताव, प्रसंग । विलम्ब । उमर । ऋतु । ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । ज्योतिः-शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग । सातवीं नरकपृथ्वी का एक नरकावास । नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति । वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल । प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल । पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र । पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल-कलशों का अधिष्ठाता देव । राजा श्रेणिक का एक पुत्र । इस नाम का एक गृहपति । अभाव । पिशाच देवों की एक जाति । निधि-विशेष । श्यामवर्ण । न. देव-विमान-विशेष । 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन । काली देवी का सिंहासन । वि.काला रंग का । °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] समय की अपेक्षा करने-वाला । अवसर का ज्ञाता । °कप्प पुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°कल्प] समय-सम्बन्धी शास्त्रीय विधान। उसका प्रतिपादक शास्त्र। °काल पुं. मृत्यु-समय। °कूड न [°कूट] उत्कट विष-विशेष। °क्खेव पुं [°क्षेप] विलम्ब। °गय वि [°गत] मृत। °चक्क न [°चक्र] बीस सागरोपम परिमित समय। एक भयंकर शस्त्र। °चूला स्त्री [°चूडा] अधिक-मास वगैरह का अधिक समय। °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] अवसर का जानकार। °दट्ठ वि [°दष्ट] मौत से मरा हुआ। °देव पुं. देव-विशेष। °धम्म पुं [°धर्म] मरण। °परियाय पुं [°पर्याय] मृत्यु-समय। °परिहीण न [°परिहीन] विलम्ब। °पाल पुं. देव-विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल। °पास पुं [°पाश] ज्योतिःशास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग। °पिट्ठ, °पुट्ठ पुंन [°पृष्ठ] धनुष। कर्ण का धनुष। काला हरिण। क्रौञ्च पक्षी। °पुरिस पुं [°पुरुष] जो पुंवेद कर्म का अनुभव करता हो वह। °प्पभ पुं [°प्रभ] इस नाम का एक पर्वत। °फोडय पुंस्त्री [°स्फोटक] प्राणहर फोड़ा। °मास पुं. मृत्यु-समय। °मासिणी स्त्री [°मासिनी] गर्भिणी। °मिग [मृग] कृष्ण मृग की एक जाति। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] प्रलय-रात्रि, प्रलय-काल। °वडिंसग न [°ावतंसक] काली देवी का विमान। °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को कालकृत माननेवाला। °वासि पुं [°वर्षिन्] अवसर पर बरसनेवाला मेघ। °संदीव पुं [°संदीप] त्रिपुरासुर। °समय पुं. वक्त। °समा स्त्री. आरक रूप समय। °सार पुं. कालामृग। °सोअरियपुं [°सौकरिक] स्वनाम-ख्यात एक कसाई। °ागरु, °ागुरु, °ायरु न [°ागुरु] सुगन्धि द्रव्य-विशेष। °ायस, °ास न [°ायस] लोहे की एक जाति। °ासवेसियपुत्त पुं [°ास्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि।

कालंजर पुं [कालञ्जर] देश-विशेष। पर्वत-विशेष। देखो **कालिंजर**।

कालक्खर सक [दे] निर्भर्त्सना करना, फट-कारना। निर्वासित करना, बाहर निकाल देना।

कालक्खर पुंन [कालाक्षर] अल्प-ज्ञान, अल्प-शिक्षा। वि. अल्प-शिक्षित।

कालक्खरिअ वि [कालाक्षरिक] देरी से अक्षर जाननेवाला, अशिक्षित।

कालग } पुं [कालक] प्रसिद्ध जैनाचार्य।
कालय } भ्रमर। देखो **काल**।

कालय वि [दे] धूर्त्त।

कालवट्ठ न [दे. कालपृष्ठ] धनुष।

कालवेसिय पुं [कालवैशिक] एक वेश्या-पुत्र।

काला स्त्री. श्याम-वर्णवाली। तिरस्कार करने-वाली। एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पट-रानी। वेश्या-विशेष।

कालाइक्कमय न [कालातिक्रमक] तप-विशेष।

कालाकोण पुंन [काललवण] काला नोन या नमक।

कालि पुं [कालिन्] बिहार का एक पर्वत।

कालिअसूरि पुं [कालिकसूरि] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन आचार्य।

कालिआ स्त्री [दे] देह। कालान्तर। बारिश। मेघसमूह।

कालिआ स्त्री [कालिका] देवी-विशेष। एक प्रकार का तूफानी पवन।

कालिंग पुं [कालिङ्ग] देश-विशेष। वि. कलिङ्ग देश में उत्पन्न।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] तरबूज का गाछ। विद्या-विशेष।

कालिंजण [दे] श्याम तमाल का पेड़।

कालिंजर पुं [कालिञ्जर] देश-विशेष। पर्वत-विशेष। न. जंगल-विशेष। तीर्थ-स्थान-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालिंदी स्त्री [कालिन्दी] यमुना नदी। शक्रेन्द्र की एक पटरानी।

कालिंब पुं [दे] शरीर। मेघ, बारिश।

कालिग देखो कालिय = कालिक।

कालिगी स्त्री [कालिकी] संज्ञा-विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह।

कालिज्ज न [कालेय] हृदय का गूढ़ मांस-विशेष।

कालिम पुंस्त्री [कालिमन्] श्यामता, दागीपन।

कालिय पुं [कालिय] इस नाम का एक सर्प।

कालिय वि [कालिक] काल में उत्पन्न, काल-सम्बन्धी। अनिश्चित, अव्यवस्थित। वह शास्त्र, जिसको अमुक समय में ही पढ़ने की शास्त्रीय आज्ञा है। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे। °सण्णि वि [°संज्ञिन्] कालिकी संज्ञावाला। °सुय न [°श्रुत] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढ़ा जा सके। °णुओग पुं [°नुयोग] देखो पूर्वोक्त अर्थ।

काली स्त्री. विद्या-देवी-विशेष। चमरेन्द्र की एक पटरानी। वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा। श्यामवर्णवाली स्त्री। राजा श्रेणिक की एक रानी। चौथी जैन शासन-देवी। पार्वती। इस नाम का एक छन्द।

कालुण न [कारुण्य] दया। °वडिया स्त्री [°वृत्ति] भीख माँग कर आजीविका करना।

कालुणिय }
कालुणीय } देखो कारुणिय।

कालुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति।

कालुसिय न [कालुष्य] मलिनता।

कालुस्स न [कालुष्य] कलुषपन।

कालेज्ज न [दे] तापिच्छ।

कालेय न. काली देवी का अपत्य। सुगन्धि द्रव्य-विशेष, कालाचन्दन। कलेजा।

कालोद देखो कलोय।

कालोदधि पुं [कालोदधि] समुद्र-विशेष।

कालोदाइ पुं [कालोदायिन्] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान्।

कालोय पुं [कालोद] समुद्र-विशेष जो घातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घेर कर स्थित है।

काव }
कावड } पुं [दे] काँवर, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमा एक वस्तु। °कोडिय पुं [°कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला। देखो काय = (दे)।

कावडि }
कावोडि } स्त्री [दे] काँवर।

कावडिअ पुं [दे] वैवधिक, काँवर से भार ढोनेवाला।

कावध पुं [कावध्य] एक महाग्रह, ग्रहाधि-ष्ठायक देव-विशेष।

कावलिअ वि [दे] असहिष्णु।

कावलिअ वि [कावलिक] कवल-प्रक्षेप रूप आहार।

कावालिअ पुं [कापालिक] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य।

काविट्ठ न [कापिष्ठ] देव-विमान-विशेष।

काविल न [कापिल] सांख्य-दर्शन। वि. सांख्य मत का अनुयायी।

काविलिय वि [कापिलीय] कपिल मुनि-सम्बन्धी। न. कपिल-मुनि के वृत्तान्तवाला एक ग्रन्थांश। 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन।

काविसायण देखो कविसायण।

कावी स्त्री [दे] नीलवर्णवाली, हरे रंग की चीज।

काबुरिस देखो कापुरिस।

कावेअ न [कापेय] वानरपन, चञ्चलता।

कावोय वि [दे] काँवर वहन करनेवाला।

कास देखो कड्ढ = कृष्।

कास अक [कास्] रोग-विशेष से खराब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवाज करना। खाँसी की आवाज करना। खोखार करना। छींक खाना।

कास पुं [काश, °स] रोग-विशेष, खाँसी। तृण-विशेष। उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है। ग्रह-विशेष, ग्रह-देव-विशेष। रस। जगत्।

कास देखो कंस = कांस्य।

कासंकस वि [कासङ्कष] प्रमादी, संसार में आसक्त।

कासग देखो कासय।

कासमद्दग पुं [कासमर्दक] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष।

कासय } पुं [कर्षक] किसान।
कासव }

कासव पुं [कश्यप] इस नाम का एक ऋषि। हरिण की एक जाति। एक जाति की मछली। दक्ष प्रजापति का जामाता। वि. दारू पीने वाला।

कासव न [काश्यप] इस नाम का एक गोत्र। पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष। वि. काश्यप गोत्र में उत्पन्न। पुं. नापित। इस नाम का एक गृहस्थ। न. इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन।

कासवनालिया स्त्री [काश्यपनालिका] श्री-पर्णीफल।

कासविज्जया स्त्री [काश्यपीया] जैन-मुनियों की एक शाखा।

कासवी स्त्री [काश्यपी] पृथिवी। कश्यप-गोत्रीया स्त्री। °रइ स्त्री [°रति] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या।

कासा स्त्री [कृशा] दुर्बल स्त्री।

कासाइया } स्त्री [काषायी] कषाय-रंग से
कासाई } रंगी हुई साड़ी, लाल साड़ी।

कासाय वि [काषाय] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि।

कासार न. तलाब। कँसार। पुं. समूह। स्थान। °भूमि स्त्री. नितम्ब-प्रदेश।

कासार न [दे] धातु-विशेष, सीसपत्रक।

कासि पुं [काशी] काशी देश। काशी देश का राजा। स्त्री. बनारस शहर। °पुर न. काशी नगरी। °राय पुं [°राज] काशी देश का राजा। °व पुं [°प] काशी देश का राजा। °वद्धण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी।

कासिअ न [दे] बारीक कपड़ा। सफेद वस्त्र।

कासिअ न [कासित] छींक।

कासिज्ज न [दे] काकस्थल-नामक देश।

कासिल्ल वि [कासिक] खाँसी रोगवाला।

कासी स्त्री [काशी] काशी। °राय पुं [°राज] काशी का राजा। °स पुं [°श] काशी का राजा। °सर पुं [°श्वर] काशी का राजा।

काह सक [कथय्] कहना।

काहर देखो काहार।

काहल वि [दे] कोमल।

काहल वि [कातर] डरपोक, अधीर।

काहल पुंन. वाद्य-विशेष। अव्यक्त आवाज।

काहला स्त्री. वाद्य-विशेष, महाढक्का।

काहलिया स्त्री [काहलिका] आभूषण-विशेष।

काहली स्त्री [दे] युवती।

काहल्लो स्त्री [दे] खर्च करने का धान्यादि। तवा।

काहार पुं [दे] कहार, एक जाति जो पानी भरने और डोली वगैरह ढोने का काम करती है।

काहार पुंन [दे] काँवर।

काहावण पुं [कार्षापण] सिक्का-विशेष।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार।

काहिल पुं [दे] ग्वाला।

काहिल्लिआ स्त्री [दे] तवा।

काहीअ देखो काहिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काहीइदाण न [कारिष्यतिदान] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान ।

काहे अ [कदा] कब, किस समय ?

काहेणु स्त्री [दे] गुञ्जा ।

कि देखो किं ।

कि सक [कृ] करना, बनाना ।

किअ देखो कय = कृत ।

किअ देखो किव = कृप ।

किअंत वि [कियत्] कितना ।

किअंत देखो कयंत ।

किआडिआ स्त्री [कृकाटिका] गला का उन्नत भाग ।

किइ स्त्री [कृति] क्रिया, विधान । °कम्म न [कर्मन्] वन्दन । कार्य-करण । विश्रामणा ।

किं स [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलानेवाला शब्द । °उण अ [°पुनः] तब फिर, फिर क्या ?

किंकत्तव्वया देखो किंकायव्वया ।

किंकम्म पुं [किंकर्मन्] इस नाम का एक गृहस्थ ।

किंकर पुं. नौकर, दास । °सच्च पुं [°सत्य] परमात्मा । विष्णु ।

किंकाइअ देखो केकाइय ।

किंकायव्वया स्त्री [किंकर्त्तव्यता] क्या करना है यह जानना । °मूढ वि. हक्काबक्का ।

किंकार पुंन [क्रेङ्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष ।

किंकिअ वि [दे] सफेद ।

किंकिच्चजड वि [किंकृत्यजड] हक्काबक्का ।

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र-घण्टिका, करधनी ।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो ।

किंकिल्लि देखो कंकिल्लि ।

किंगिरिड पुं [किङ्गिरिट] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ।

किंच अ. समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी ।

किंचण न [किञ्चन] चोरी । अ. कुछ ।

किंचण न [किञ्चन] द्रव्य, वस्तु ।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ ज्यादा ।

किंचि अ [किञ्चित्] अल्प ।

किंचिम्मत्त वि [किञ्चिन्मात्र] बहुत थोड़ा ।

किंचूण वि [किञ्चिदून] कुछ कम, पूर्ण-प्राय ।

किंजक्क पुं [किञ्जल्क] पुष्प-रेणु, पराग ।

किंजक्ख पुं [दे] शिरीष-वृक्ष ।

किंणेदं (शौ) । अ [किमिदम्, किमेतत्] यह क्या ?

किंतु अ [किन्तु] परन्तु ।

किंथुग्घ देखो किंसुग्घ ।

किंदिय न [केन्द्र] वर्तुल का मध्य-स्थल । ज्योतिष में इष्ट लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान ।

किंदुअ पुं [कन्दुक] गेंद ।

किंधर पुं [दे] छोटी मछली ।

किंनर पुं [किन्नर] व्यन्तर देवों की एक जाति । भगवान् धर्मनाथ जी के शासनदेव का नाम । चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव । एक इन्द्र । देव-गन्धर्व, देव-गायक । °कंठ पुं [°कण्ठ] किन्नर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि ।

किंनरी स्त्री [किन्नरी] किन्नर देव की स्त्री ।

किंनु अ [किंनु] पूर्वपक्ष, आक्षेप, आशङ्का का सूचक अव्यय ।

किंपय वि [दे] कृपण ।

किंपाग पुं [किम्पाक] वृक्ष-विशेष । न. उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर, परन्तु खाने से प्राण का नाश करता है ।

किंपि अ [किमपि] कुछ भी ।

किंपुरिस पुं [किंपुरुष] व्यन्तर देवों की एक जाति । किन्नर-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र । वैरोचन बलीन्द्र की रथसेना का अधिपति देव । °कंठ पुं [°कण्ठ] मणि की एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाति, जो किम्पुरुष के कण्ठ जितना बड़ा होता है ।

किंबोड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ, भूला हुआ ।

किमज्झ वि [किमध्य] निःसार ।

किवयंती स्त्री [किंवदन्ती] जनश्रुति ।

किसारु पुं [किंशारु] सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ।

किंसुअ पुं [किंशुक] पलाश का पेड़, टेसू । न. पलाश का पुष्प ।

किंसुग्घ पुं [किंस्तुघ्न] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिरकरण ।

किक्किडि पुं [दे] साँप ।

किक्किंधा स्त्री [किष्किन्धा] नगरी-विशेष ।

किक्किंधि पुं [किष्किन्धि] पर्वत-विशेष । इस नाम का एक राजा । °पुर न. नगर-विशेष ।

किच्च वि [कृत्य] करने-योग्य, फरज । पूजनीय । पुं. गृहस्थ । न. शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया, कृति ।

किच्चंत वि [कृत्यमान] काटा जाता । सताया जाता ।

किच्चण न [दे] प्रक्षालन ।

किच्चा स्त्री [कृत्या] कर्तन । क्रिया, काम । देव वगैरह की मूर्ति का एक भेद । जादू । महामारी का रोग ।

किच्चा देखो **कर** = कृ का संकृ. ।

किच्चि स्त्री [कृत्ति] मृग वगैरह का चमड़ा । चमड़े का वस्त्र । भूर्जपत्र । कृत्तिका नक्षत्र । °पाउरण पुं [°प्रावरण] महादेव । °हर पुं [°धर] शिव ।

किच्चिरं अ [कियच्चिरम्] कब तक ?

किच्छ न [कृच्छ्] दुःख । वि. कष्ट-साध्य । क्रिवि. दुःख से, मुश्किल से ।

किज्ज वि [क्रेय] खरीदने-योग्य ।

किज्जअ वि [कृत] किया गया, निर्मित ।

किट्ट सक [कीर्त्तय्] श्लाघा करना, स्तुति करना । वर्णन करना । कहना । प्रतिपादन करना । बोलना ।

किट्ट स्त्रीन. धातु का मल, मैल । रज्जु-विशेष । तेल, घी वगैरह का मैल ।

किट्टि स्त्री. अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष ।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष ।

किट्टिस न. खली, सरसों, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण । एक प्रकार का सूत, सूता ।

किट्टिस न. ऊन आदि का बाकी बचा हुआ अंश । उससे बना हुआ सूता । ऊन, ऊँट के बाल आदि की मिलावट का सूता ।

किट्टी देखो **किट्ट** = किट्ट ।

किट्टीकय वि [किट्टीकृत] आपस में मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ ।

किट्ठ वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त । बाधा-युक्त ।

किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित । न. देव-विमान-विशेष ।

किट्ठि स्त्री [कृष्टि] कर्षण । खींचाव । देव-विमान-विशेष । °कूड न [°कूट] देवविमान-विशेष । °घोस न [°घोष] विमान-विशेष । °जुत्त न [°युक्त] विमान-विशेष । °ज्झय न [°ध्वज] विमान-विशेष । °प्पभ न [°प्रभ] देवविमानविशेष । °वण्ण न [°वर्ण] विमान-विशेष । °सिंग न [°शृङ्ग] विमान-विशेष । °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव-विमान ।

किट्ठियावत्त न [कृष्टयावर्त्त] देवविमान-विशेष ।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्ट्युत्तरावतंसक] इस नाम का एक देवविमान ।

किडग वि [क्रीडक] क्रीड़ा करनेवाला ।

किडि पुं [किरि] सूकर ।

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी की आवाज ।

किडिभ पुं [किटिभ] एक प्रकार का क्षुद्र कोढ़ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किडिया स्त्री [दे] खिड़की ।
किड्ड अक [क्रीड्] खेलना ।
किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीड़ा-कारक ।
किड्डा स्त्री [क्रीडा] खेल । बाल्यावस्था ।
किड्डाविया स्त्री [क्रीडिका] बालक को खेल कूद करानेवाली दाई ।
किढि वि [दे] सम्भोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह ।
किढिण न [किठिन]संन्यासियों का एक पात्र।
किण सक [क्री] खरीदना ।
किण पुं. घर्षण-चिह्न । मांस-ग्रन्थि । सूखा-घाव ।
किणइय वि[दे] शोभित ।
किणा देखो किण्णा ।
किणि वि [क्रयिन्] खरीदनेवाला ।
किणिकिण अक [किणिकिणय्] किणकिण आवाज करना ।
किणिय पुं [किणिक] मनुष्य की एक जाति, जो बाजा बनाती और बजाती है। रस्सी बनाने का काम करनेवाली मनुष्य जाति ।
किणिय न [किणित] वाद्य-विशेष ।
किणिया स्त्री [किणिका]छोटा फोड़ा, फुनसी।
किणिस सक [शाणय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना ।
किणो अ [किमिति] क्यों, किसलिए ?
किण्ण वि [कीर्ण] उत्कीर्ण । क्षिप्त ।
किण्ण पुं [किण्व] फलवाला वृक्ष-विशेष, जिससे दारू बनता है । न. सुरा बीज, किण्व-वृक्ष के बीज, जिसका दारू बनता है । °सुरा स्त्री. किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा ।
किण्ण वि [दे] शोभमान ।
किण्ण अ [किनम्] प्रश्नार्थक अव्यय ।
किण्णर देखो किंनर ।
किण्णा अ [कथम्] क्यों, कैसे ?
किण्णु अ [किनु] इन अर्थों का सूचक अव्यय– प्रश्न । वितर्क । सादृश्य । स्थान । विकल्प ।
किण्ह देखो कण्ह ।
किण्ह न [दे] बारीक कपड़ा । सफेद कपड़ा ।
किण्हग पुं [दे] वर्षाकाल में घड़ा आदि में होनेवाली एक तरह की काई ।
किण्हा देखो कण्हा ।
कितव पुं. जूआरी ।
कित्त देखो किच्च ।
कित्त देखो किट्ट=कीर्त्तय् ।
कित्तय वि [कीर्तक] कीर्तन-कर्ता ।
कित्तवीरिअ देखो कत्तवीरिअ ।
कित्ता देखो किच्चा = कृत्या ।
कित्ति स्त्री [कीर्त्ति] यश । एक विद्या-देवी । केसरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी । देव-प्रतिमा-विशेष प्रशंसा । नीलवन्त पर्वत का एक शिखर । सौधर्म देवलोक की एक देवी । पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी । °कर वि. यशस्कर । पुं. भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम । °चंद पुं [°चन्द्र] नृप-विशेष । °धम्म पुं [°धर्म] इस नाम का एक राजा । °धर पुं. नृप-विशेष । एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरु । पुरिस पुं [°पुरुष] कीर्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरह । °म वि [°मत्] कीर्ति युक्त । °मई स्त्री [°मती] एक जैन साध्वी । ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री । °य वि [°द] कीर्तिकर ।
कित्ति स्त्री [कृत्ति] चमड़ा ।
कित्तिम वि [कृत्रिम] बनावटी ।
कित्तिय वि [कियत्] कितना ।
किन्न वि [क्लिन्न] गीला ।
किन्ह देखो कण्ह ।
किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ ।
किब्बिस न [किल्बिष] पाप । मांस । पुं. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति । वि. मलिन । अधम, नीच । पापी, दुष्ट । चितकबरा ।
किब्बिसिय पुं [किल्बिषिक] चाण्डाल-स्थानीय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव-जाति। केवल वेषधारी साधु। वि. अधम, नीच। पापफल को भोगनेवाला दरिद्र, पंगु वगैरह। भाण्ड-चेष्टा करनेवाला।

किब्बिसिया स्त्री [कैल्बिषिकी] भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरह की निन्दा करने की आदत। केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति।

किम (अप) अ [कथम्] क्यों, कैसे ?

किमण देखो किवण।

किमस्स पुं [किमश्च] नृप-विशेष।

किमी पुं [कृमि] क्षुद्र जीव, कीट-विशेष। पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होनेवाला जन्तु-विशेष। द्वीन्द्रिय कीट-विशेष। °य न [°ज] कृमि-तन्तु से उत्पन्न वस्त्र। °राग, °राय पुं [°राग] किरमिजी का रंग। °रासि पुं [°राशि] वनस्पति-विशेष।

किमिघरवसण [दे] देखो किमिहरवसण।

किमिच्छय न [किमिच्छक] इच्छानुसार दान।

किमिण वि [कृमिमत्] कृमि-युक्त।

किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त।

किमिहरवसण न [दे] रेशमी वस्त्र।

किमु अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रश्न। वितर्क। निन्दा। निषेध।

किमुय अ [किमुत] इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रश्न। विकल्प। वितर्क। अतिशय।

किम्मिय न [दे. किम्मित] जड़ता।

किम्मीर वि [किर्मीर] कर्बुर। पुं. राक्षस-विशेष।

किय देखो कीय।

कियंत वि [कियत्] कितना।

कियत्थ देखो कयत्थ।

कियव्व देखो कइअव।

किया देखो किरिया।

कियाडिया स्त्री [दे] कान का ऊपरी भाग।

कियाणं देखो कर = कृ का संकृ.।

कियाणग न [क्रयाणक] किराना, नमक, मसाला आदि बेचने योग्य चीजें।

किर पुं [दे] सूअर।

किर अ [किल] इन अर्थों का सूचक अव्यय—सम्भावना। निश्चय। हेतु, निश्चित कारण। वार्त्ता-प्रसिद्ध अर्थ। अरुचि। असत्य। संशय। पाद पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है।

किर सक [कृ] फेंकना। पसारना। बिखेरना।

किरण पुंन. किरण, रश्मि प्रभा।

किरणिल्ल वि [किरणवत्] किरणवाला, तेजस्वी।

किराड } पुं [किरात] अनार्य देश-विदेश।
किराय } भील, एक जंगली जाति।

किरात (शौ) देखो किराय।

किरि देखो किर = किल।

किरि पुं. भालू की आवाज।

किरि पुं. सूकर।

किरिआण देखो कयाण।

किरिइरिया } स्त्री [दे] कर्णोपकर्णिका,
किरिकिरिआ } गप। कुतूहल।

किरिकिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, बाँस आदि की कम्बा—लकड़ी से बना हुआ एक प्रकार का बाजा।

किरित्त देखो किट्ट।

किरिया स्त्री [क्रिया] क्रिया कृति, व्यापार, प्रयत्न। शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान। सावद्य व्यापार। °ट्ठाण न [°स्थान] कर्मबन्ध का कारण। °वर वि [°पर] अनुष्ठान-कुशल। °वाइ वि [°वादिन्] आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व माननेवाला। केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा माननेवाला। °विसाल न [°विशाल] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ।

किरीड पुं [किरीट] मुकुट।

किरीडि पुं [किरीटिन्] अर्जुन।

किरीत वि [क्रीत] खरीदा हुआ।

किरीय पुं. एक म्लेच्छ देश। उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किरोलय न [किरोलक] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल।

किल देखो **किर** = किल।

किलंत वि [क्लान्त] खिन्न, श्रान्त।

किलंज न [किलिञ्ज] बाँस का एक पात्र, जिसमें गैया वगैरह को खाना खिलाया जाता है। तृण-विशेष।

किलकिल अक [किलकिलाय्] 'किलकिल' आवाज करना, हँसना।

किलणी स्त्री [दे] रथ्या, गली।

किलम्म अक [क्लम्] क्लान्त होना, खिन्न होना।

किलाचक्क न [क्रीडाचक्र] इस नाम का एक छन्द।

किलाड पुं [किलाट] दूध का विकार-विशेष, मलाई।

किलाम सक [क्लमय्] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। हैरान करना। पीड़ा करना। कवकृ **किलामीअमाण**।

किलिंच न [दे] छोटी लकड़ी का टुकड़ा।

किलिंचिअ न [दे] ऊपर देखो।

किलिंत देखो **किलंत**।

किलिंकिंच अक [रम्] रमण करना, क्रीड़ा करना।

किलिकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना।

किलिकिलि न [किलकिलि] इस नाम का एक विद्याधरनगर।

किलिकिलिकिल देखो **किलकिल**।

किलिगिलिय न [किलिकिलित] 'किल-किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष।

किलिट्ठ वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त। कठिन विषम। क्लेश-जनक।

किलिण्ण देखो **किलिन्न**।

किलित्त वि [क्लृप्त] कल्पित, रचित।

किलिन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र।

किलिम्म देखो **किलम्म**।

किलिम्मिअ वि [दे] कथित।

किलिव देखो **कीव**।

किलिस अक [क्लिश्] थक जाना, दुःखी होना।

किलिस्स देखो **किलेस**।

किलिस्स देखो **किलिस** = क्लिश्।

किलीण देखो **किलिन्न**।

किलीव देखो **कीव**।

किलेस अक [क्लिश्] क्लेश पाना, हैरान होना।

किलेस पुं [क्लेश] खेद, थकावट। दुःख, पीड़ा, बाधा। दुःख का कारण। कर्म, शुभाशुभ-कर्म। °**यर** वि [°**कर**] क्लेशजनक।

किल्ला देखो **किड्डा**।

किव पुं [कृप] कृपाचार्य।

किवँ (अप) देखो **कहं**।

किवण वि [कृपण] गरीब। निर्धन। कंजूस। कायर।

किवा स्त्री [कृपा] दया, मेहरबानी। °**वन्न** वि [°**पन्न**] कृपा-प्राप्त, दयालु।

किवाण पुंन [कृपाण] खड्ग।

किवालु वि [कृपालु] दयालु।

किविड न [दे] खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान। वि. खलिहान में जो हुआ हो वह।

किविडी स्त्री [दे] किवाड़, पार्श्व-द्वार। घर का पिछला आँगन।

किविण देखो **किवण**।

किवीडजोणि पुं [कृपीटयोनि] अग्नि।

किस सक [कशय्] अपचित करना।

किस वि [कृश] निर्बल। पतला।

किसंग वि [कृशाङ्ग] दुर्बल शरीरवाला।

किसर पुं [कृशर] पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज। खिचड़ी।

किसर देखो **केसर**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसरा स्त्री [कृशरा] खिचड़ी ।
किसल देखो किसलय ।
किसलय पुंन [किसलय] नूतन अंकुर । कोमल पत्ता । °माला स्त्री. छन्द-विशेष ।
किसा देखो कासा ।
किसाणु पुं [कृशानु] अग्नि । चित्रक वृक्ष । तीन की संख्या ।
किसि स्त्री [कृषि] खेती ।
किसिअ वि [कृषित] विलखित, रेखा किया हुआ । जोता हुआ, कृष्ट । खींचा हुआ ।
किसीवल पुं [कृषीवल] किसान ।
किसोर पुं [किशोर] बाल्यावस्था के बाद की अवस्थावाला बालक ।
किसोरी स्त्री [किशोरी] कुमारी, अविवाहिता युवती ।
किस्स देखो किलिस = क्लिश् ।
किह } देखो कहं ।
किहं }
कीअ देखो कीव ।
कीइस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का ।
कीकस पुं [कीकश] कृमि-जन्तु-विशेष । न. हड्डी, हाड़ । वि. कठिन, कठोर ।
कीचअ देखो कीयग ।
कीड देखो किड्ड = क्रीड् ।
कीड पुं [कीट]कीड़ा, क्षुद्र-जन्तु । कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।
कीडइल्ल वि [कीटवत्]कीड़ावाला,कीटकयुक्त।
कीडय न [कीटज] कीड़े के तन्तु से उत्पन्न होनेवाला वस्त्र ।
कीडा देखो किड्डा ।
कीडाविया देखो किड्डाविया ।
कीडिया स्त्री [कीटिका] पिपीलिका ।
कीडी स्त्री [कीटी] ऊपर देखो ।
कीण सक [क्री] मोल लेना ।
कीणास पुं [कीनाश] यम । °गिह [°गृह] मौत ।
कीदिस (शौ) देखो कीरिस ।
कीय वि [क्रीत] खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ । जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष । न. खरीद । °कड, °गड वि [°कृत] मूल्य देकर लिया हुआ । साधु के लिए मोल से खरीदा हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा-दोषयुक्त वस्तु ।
कीयग पुं [कीचक] विराट देश के राजा का साला ।
कीया स्त्री [कीका] नयन-तारा ।
कीर पुं [दे. कीर] शुक ।
कीर पुं. काश्मीर देश । वि. काश्मीर देश सम्बन्धी । वि. काश्मीर देश में उत्पन्न ।
कीरल पुं. देश-विशेष ।
कीरिस देखो केरिस ।
कीरी स्त्री. कीर देश की लिपि ।
कील अक [क्रीड्] खेलना ।
कील वि [दे] अल्प ।
कील देखो खील ।
कील पुंन [दे. कील] गला ।
कीलण न [कीलन] खीले में नियन्त्रण ।
कीलण न [क्रीडन] खेल । °धाई स्त्री [°धात्री] बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई ।
कीलणअ न [क्रीडनक] खिलौना ।
कीलणिआ } स्त्री [दे] रथ्या, गली ।
कीलणी }
कीला स्त्री [दे] नव-वधू ।
कीला स्त्री. सुरत समय में किया जाता हृदय-ताड़न-विशेष ।
कीला स्त्री. [क्रीडा] क्रीडन । °वास पुं. क्रीड़ा करने का स्थान ।
कीलाल न. रुधिर ।
कीलावण न [क्रीडन] खेल कराना ।
कीलावणय न [क्रीडनक] खिलौना ।
कीलिअ न [क्रीडित] क्रीड़ा, रमण ।
कीलिअ वि [कीलित] खूँटा ठोका हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीलिआ स्त्री [कीलिका] खूँटी। शरीर-संहनन-विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाँधा, जिसमें हड्डियाँ केवल खूँटी से बँधी हुई हों ऐसा शरीर-बन्धन।

कीव पुं [क्लीब] नपुंसक। वि. कातर, अधीर।

कीव पुं [दे. कीव] पक्षि-विशेष।

कीस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का।

कीस वि [किंस्व] कैसे स्वभाव का।

कीस अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से ?

कीस देखो किलिस्स।

कु अ. थोड़ा। निषिद्ध, निवारित। कुत्सित। विशेष, ज्यादा। °उरिस पुं [°पुरुष] दुर्जन। °चर वि. खराब चाल-चलनवाला, सदाचार-रहित। °डंड पुं [°दण्ड] जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु-पाश। °डंडिम वि [°दण्डिम] दण्ड देकर छीना हुआ द्रव्य। °तित्थ न [°तीर्थ] जलाशय में उतरने का खराब मार्ग। दूषित दर्शन। °तित्थि वि [°तीर्थिन्] दूषित मत का अनुयायी। °दंडिम देखो °डंडिम। °दंसण न [°दर्शन] दुष्ट मत, दूषित धर्म। °दंसणि वि [°दर्शनिन्] दुष्ट दार्शनिक। दूषित मत का अनुयायी। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] कुत्सित दर्शन। दूषित मत का अनुयायी। °दिट्ठिय वि [°दृष्टिक] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी। °प्पवयण न [°प्रवचन] दूषित शास्त्र। वि. दूषित सिद्धान्त को माननेवाला। °प्पावयणिय वि [°प्रावचनिक] दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करनेवाला। दूषित आगमन-सम्बन्धी (अनुष्ठान)। °भत्त न [°भक्त] खराब भोजन। °मार पुं. कुत्सित मार। मृत-प्राय करनेवाला ताड़न। °रंडा स्त्री [°रण्डा] विधवा। °रुव, °रूव न [°रूप] खराब रूप। माया-विशेष। °लिंग न [°लिङ्ग] कुत्सित भेष। पुं. कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु। वि. कुतीर्थिक, दूषित धर्म का अनुयायी। °लिंगि पुं [°लिङ्गिन्] कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु। वि. कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी। °वय न [°पद] खराब शब्द। °वियप्प पुं [°विकल्प] कुत्सित विचार। °वुरिस देखो °उरिस। °संसग्ग पुं [°संसर्ग] दुर्जन-संगति। °सत्थ पुंन [°शास्त्र] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त। °समय पुं. अनाप्तप्रणीत शास्त्र। वि. कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी। °सल्लिय वि [°शल्यिक] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह। °सील न [°शील] खराब स्वभाव। व्यभिचार। वि. दुराचारी। अब्रह्मचारी। °स्सुमिण पुंन [°स्वप्न] खराब स्वप्न। °हण वि [°धन] अल्प धनवाला।

कु स्त्री. पृथिवी, भूमि। °त्तिअ न [°त्रिक] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। तीन जगत् में स्थित पदार्थ। °त्तिअ वि [°त्रिज] तीनों जगत् में उत्पन्न वस्तु। °त्तिआवण पुंन [°त्रिकापण] तीनों जगत् के पदार्थ जहाँ मिल सकें ऐसी दूकान। °वलय न. पृथ्वी-मण्डल।

कुअरी देखो कुआँरी।

कुअलअ देखो कुवलय।

कुआँरी देखो कुमारी।

कुइअ वि [कुचित] सकुचा हुआ।

कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क।

कुइय वि [कुचित] अवस्यन्दित, क्षरित।

कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध।

कुइयण्ण पुं [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ।

कुउअ पुंन [कुतुप] घी-तैल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र-विशेष। देखो कुतुव।

कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा।

कुउव देखो कुउअ।

कुऊल न [दे] नीवी। नारा। अञ्चल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुऊहल न [कुतूहल] अपूर्व वस्तु देखने की लालसा। कौतुक, परिहास।

कुओ अ [कुतः] कहाँ से? °इ अ [°चित्] कहीं से, किसी से। °वि अ [°अपि] कहीं से भी।

कुंआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घीकुवार, घीगुवार।

कुंकण न [दे] रक्त-कमल। पुं. क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति।

कुंकण पुं [कोङ्कण] देश-विशेष।

कुंकुण देखो कुंकण।

कुंकुम न. केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष।

कुंग पुं. देश-विशेष।

कुंच सक [कुञ्च्] जाना, चलना। अक. संकुचित होना। टेढ़ा चलना।

कुंच पुं [क्रौञ्च] पक्षि-विशेष। इस नाम का एक असुर। इस नाम का एक अनार्य देश। वि. उसके निवासी लोग। °रवा स्त्री. दण्ड-कारण्य की इस नाम की एक नदी। °वीरग न [°वीरक] एक प्रकार का जहाज। °रि पुं. स्कन्द। देखो कोंच।

कुंचल न [दे] कली।

कुंचि वि [कुञ्चिन्] कुटिल। कपटी।

कुंचिगा देखो कोंचिगा।

कुंचिय वि [कुञ्चित] संकुचित। कुण्डल के आकारवाला, गोलाकृति। वक्र।

कुंचिय पुं [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक।

कुंचिया देखो कोंचिगा। रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा।

कुंचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुञ्जी, ताली।

कुंजर पुं. हस्ती। °पुर न. हस्तिनापुर। °सेणा स्त्री [°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी। °वत्त न [°वर्त] नगर-विशेष।

कुंट वि [कुण्ट] कुब्ज, वामन। हाथ-रहित।

कुंटलविंटल न [दे] मन्त्र-तन्त्रादि का प्रयोग, पाखण्ड-विशेष। वि. मन्त्रतन्त्रादि से आजीविका चलानेवाला।

कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन।

कुंटि स्त्री [दे] गठरी, गाँठ। शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का औजार।

कुंठ वि [कुण्ठ] मन्द, आलसी। मूर्ख। अनिपुण।

कुंठी स्त्री [दे] सँड़सी, चीमटा।

कुंड न. कुंडा, पात्र-विशेष। जलाशय-विशेष। इस नाम का एक सरोवर। आज्ञा, आदेश। °कोलिय पुं [°कोलिक] एक जैन उपासक। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश का एक गाँव। °धारि वि [°धारिन्] आज्ञाकारी। °पुर न. ग्राम-विशेष।

कंड न [दे] ऊख पेरने का जीर्ण काण्ड, जो बाँस का बना हुआ होता है।

कुंडग पुंन [कुण्डक] अन्न का छिलका। चावल से मिश्रित भूसा।

कुंडभी स्त्री [दे. कुटभी] छोटी पताका।

कुंडमोअ पुंन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की आकृतिवाला मिट्टी का एक तरह का पात्र।

कुंडल पुंन [कुण्डल] एक देव-विमान। तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' या निर्विकृतिक तप। कान का आभूषण। पुं. विदर्भ देश के एक राजा का नाम। द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। देव-विशेष। पर्वत-विशेष। गोल आकार। °भद्द पुं [°भद्र] कुण्डल द्वीप का एक अधिष्ठायक देव। °मंडिअ वि [°मण्डित] कुण्डल से विभूषित। विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-विशेष। °महावर पुं. कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव। °वर पुं. द्वीप-विशेष। समुद्र विशेष। पर्वत-विशेष। °वरभद्द पुं [°वर-भद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°वरोभास पुं [°वरावभास] द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °वरोभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव। °वरोभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °वरोभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष। °वरोभासवर पुं [°वरावभासवर] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष।

कुंडला स्त्री [कुण्डला] विदेहवर्ष-स्थित नगरी विशेष।

कुंडलिआ वि [कुण्डलिका] छन्द-विशेष।

कुंडलोद पुं [कुण्डलोद] इस नाम का एक समुद्र।

कुंडाग पुं [कुण्डाक] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष।

कुंडि देखो कुंडी।

कुंडिअ पुं [दे] गाँव का मुखिया।

कुंडिअपेसण न [दे] ब्राह्मण विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा।

कुंडिगा } स्त्री [कुण्डिका] नीचे देखो।
कुंडिया }

कुंडिण न [कुण्डिन] विदर्भ देश का एक नगर।

कुंडी स्त्री [कुण्डी] कुण्डा, पात्र-विशेष।

कुंढ देखो कुंठ।

कुंढय न [दे] चूल्हा। छोटा बरतन।

कुंत पुं [दे] तोता।

कुंत पुं [कुन्त] भाला। राम के एक सुभट का नाम।

कुंतल पुं [कुन्तल] केश। देश-विशेष। °हार पुं. धम्मिल, बाँधे हुए बाल।

कुंतल पुं [दे] सातवाहन। नृप-विशेष।

कुंतला स्त्री [कुन्तला] एक रानी।

कुंतली स्त्री [दे] करोटिका।

कुंतली स्त्री [कुन्तली] कुन्तल देश की रहनेवाली स्त्री।

कुंताकुंति न [कुन्ताकुन्ति] बर्छे की लड़ाई।

कुंती स्त्री [दे] मंजरी, बौर।

कुंती स्त्री [कुन्ती] पाण्डवों की माता का नाम। °विहार पुं. नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर।

कुंतीपोट्टलय वि [दे] चतुष्कोण, चारकोण-वाला, चौकोर।

कुंथु पुं [कुन्थु] एक जिन-देव, इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न सत्तरहवाँ तीर्थङ्कर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा। हरिवंश का एक राजा। चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष। एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

कुंद पुं [कुन्द] पुष्प-वृक्ष-विशेष। नं. पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल। विद्याधरों का एक नगर। पुंन. छन्द-विशेष।

कुंदय वि [दे] कृश, दुर्बल।

कुंदा स्त्री [कुन्दा] मानिभद्र इन्द्र की पट-रानी।

कुंदीर न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल।

कुंदुक्क पुं [कुन्दुक्क] बनस्पति-विशेष।

कुन्दुरुक्क पुं [कुन्दुरुक] सुगन्धि पदार्थ विशेष।

कुंदुल्लुअ पुं [दे] उलूक।

कुंधर पुं [दे] छोटी मछली।

कुंपय पुंन [कूपक] तैल वगैरह रखने का-पात्र-विशेष।

कुंपल पुंन [कुट्मल, कुड्मल] इस नाम का एक नरक। कली।

कुंबर [दे] देखो कुंधर।

कुंभ पुं. साठ, अस्सी और एक सौ आढ़क की नाप। ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि। एक बाजा। भगवान् मल्लिनाथ का पिता। स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थङ्कर के प्रथम शिष्य। कुम्भकर्ण का एक पुत्र। एक विद्याधर सुभट का नाम। परमाधार्मिक देवों की एक जाति। कलश। हाथी का गण्ड-स्थल। धान्य मापने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का एक परिमाण। तरने का उपकरण। ललाट। °अण्ण पुं [°कर्ण] रावण के छोटे भाई का नाम। °आर पुं [°कार] कुम्हार। °उर न [°पुर] नगर-विशेष। °गार देखो [°आर]। °ग्ग न [°ाग्र] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण। °सेण पुं [°सेन] उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थङ्कर के प्रथम शिष्य का नाम।

कुंभंड न [कूष्माण्ड] कोहँड़ा, कुम्हड़े का फल।

कुंभार पुं [कुम्भकार] कुम्हार। °ावाय पुं [°ापाक] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान।

कुंभि पुं [कुम्भिन्] हाथी। नपुंसक-विशेष।

कुंभिक्क देखो कुंभिय।

कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त।

कुंभिय वि [कुम्भिक] कुम्भ-परिमाणवाला।

कुंभिल पुं [दे. कुम्भिल] चोर। दुर्जन।

कुंभिल्ल वि [दे] खोदने-योग्य।

कुंभी स्त्री [कुम्भी] घड़े के आकारवाला छोटा कोष्ठ। घड़ा। °पाग पुं [°पाक] कुम्भी में पकना। नरक की एक प्रकार की यातना।

कुंभी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँड़ा का गाछ।

कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-संयम।

कुंभील पुं [कुम्भील] मगर।

कुंभुब्भव पुं [कुम्भोद्भव] अगस्त्य ऋषि।

कुकम्मि वि [कुकर्मिन्] खराब कर्म करने वाला।

कुकुला स्त्री [दे] नवोढ़ा।

कुकुस [दे] देखो कुक्कुस।

कुकुहाइय न [कुकुहायित] चलते समय का शब्द-विशेष।

कुकूल पुं. कण्डे की आग।

कुक्क देखो कोक्क।

कुक्क पुं [दे] कुत्ता, कुक्कुर।

कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष। देखो कुक्कुडय।

कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी।

कुक्कुअ वि [कुत्कुच] भाँड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करनेवाला।

कुक्कुअ न [कौकुच्य] कुचेष्टा, कामोत्पादक अङ्ग-विकार।

कुक्कुअ वि [कुकूज] आक्रन्दन करनेवाला।

कुक्कुआ स्त्री [कुचकुचा] अवस्यन्दन, रस-रस कर चूना।

कुक्कुइअ वि [कौकुचिक] भाँड़ की तरह कुचेष्टा करनेवाला, काम-चेष्टा करनेवाला।

कुक्कुइअ न [कौकुच्य] काम-कुचेष्टा।

कुक्कुड पुं [कुर्कुट] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

कुक्कुड पुं [कुक्कुट] मुर्गा। वनस्पति-विशेष। विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयाग-विशेष। °मंसय न [°मांसक] मुर्गा का मांस। बीज-पूरक वनस्पति का गुदा।

कुक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त।

कुक्कुडय न [कुक्कुटक] देखो कुक्कयय।

कुक्कुडिया स्त्री [कुक्कुटिका] मुर्गी।

कुक्कुडी स्त्री [कुक्कुटी] कपट।

कुक्कुडेसर न [कुक्कुटेश्वर] तीर्थ विशेष।

कुक्कुर पुं. श्वान।

कुक्कुरुड पुं [दे] समूह।

कुक्कुस पुं [दे] धान्य आदि का छिलका।

कुक्कुह पुं [कुक्कुभ] पक्षि-विशेष।

कुक्कुहाइअ न [दे] चलते समय का अश्व का शब्द-विशेष।

कुक्खि [दे. कुक्षि] देखो कुच्छि।

कुक्खिंभरि देखो कुच्छिंभरि।

कुक्खेअअ देखो कुच्छेअय।

कुग्गाह पुं [कुग्राह] हठ। जलजन्तु-विशेष।

कुच पुं. स्तन।

कुचोज्ज न [कुचोद्य] कुतर्क।

कुच्च पुं [कूर्च] कँघी।

कुच्च न [कूर्च] दाढ़ी-मूँछ। तृण-विशेष देखो कुच्चग।

कुच्चंधरा स्त्री [कूर्चधरा] दाढ़ी-मूँछ धारण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करनेवाली।
कुच्चग वि [कौर्चक] शर-नामक गाछ का बना हुआ।
कुच्चग } देखो कुच्च। कूँची, तृण-निर्मित
कुच्चय } तूलिका।
कुच्चिय वि [कूर्चिक] दाढ़ी-मूँछवाला।
कुच्छ सक [कुत्स्] निन्दा करना, धिक्कारना।
कुच्छ पुं [कुत्स] ऋषि-विशेष। गोत्र-विशेष।
कुच्छग पुं [कुत्सक] वनस्पति-विशेष।
कुच्छा स्त्री [कुत्सा] निन्दा, घृणा।
कुच्छि पुंस्त्री [कुक्षि] पेट। अड़तालीस अंगुल का मान। °किमि पुं [°कृमि] उदर में उत्पन्न होनेवाला कीड़ा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष। °धार पुं जहाज का काम करनेवाला नौकर। एक प्रकार का जहाज का व्यापारी। °पूर पुं. उदर-पूर्ति। °वेयणा स्त्री [°वेदना] उदर का रोग-विशेष। °सूल पुंन [°शूल] रोग-विशेष।
कुच्छिंभरि वि [कुक्षिम्भरि] पेटू, स्वार्थी।
कुच्छिमई स्त्री [दे. कुक्षिमती] गर्भिणी।
कुच्छिमट्टिका (मा) देखो कुच्छिमई।
कुच्छिय वि [कुत्सित] खराब, निन्दित।
कुच्छिल्ल न [दे] बाड़ का छिद्र। विवर।
कुच्छेअय पुं [कौक्षेयक] तलवार।
कुज पुं. वृक्ष।
कुजय पुं. जूआरी।
कुज्ज वि [कुब्ज] कुब्ज, वामन। पुंन. पुष्प-विशेष।
कुज्जय पुं [कुब्जक] शतपत्रिका वृक्ष। न. उस वृक्ष का पुष्प।
कुज्झ सक [क्रुध्] गुस्सा करना।
कुट्ट सक [कुट्ट्] कूटना, पीटना। काटना, छेदना। गरम करना। उपालम्भ देना।
कुट्ट पुं [कुट] घड़ा।
कुट्ट पुंन [दे] कोट, किला। नगर। °वाल पुं [°पाल] कोतवाल।
कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शारीरिक पीड़ा।
कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] मूसल। दूती।
कुट्टयरी स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती।
कुट्टा स्त्री [दे] पार्वती।
कुट्टाय पुं [दे] मोची।
कुट्टिंतिया देखो कोट्टंतिया।
कुट्टिंब [दे] देखो कोट्टिंब।
कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] दूती।
कुट्टिम देखो कोट्टिम = कुट्टिम।
कुट्ठ पुंन [कुष्ठ] पंसारी के यहाँ बेची जाती कूठ। कोढ़।
कुट्ठ पुं [कोष्ठ] उदर। कोठा, कुशूल, धान्य भरने का बड़ा भाजन। °बुद्धि वि. एक बार जानने पर नहीं भूलनेवाला। देखो कोट्ठ, कोट्ठग।
कुट्ठ वि [क्रुष्ट] अभिशप्त। न. अभिशाप-शब्द।
कुट्ठग पुंन [कोष्ठक] शून्य घर।
कुट्ठा स्त्री [कुष्ठा] इमली।
कुड पुं [कुट] घड़ा, कलश। पर्वत। हाथी वगैरह का बन्धन-स्थान। पेड़। °कंठ पुं. घड़ा के जैसा पात्र। °दोहिणी स्त्री [°दोहिनी] घड़ा भर दूध देनेवाली।
कुडंग पुंन [कुटङ्क] कुञ्ज। वन। बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत। कोटर। वंशगहन।
कुडंग पुंन [दे. कुटङ्क] लता-गृह।
कुडंगा स्त्री [कुटङ्का] लता-विशेष।
कुडंगी स्त्री [दे. कुटङ्की] बाँस को जाली।
कुडंब देखो कुडुंब।
कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटी पताका।
कुडय न [दे] लता-गृह, कुटीर।
कुडय पुंन [कुटज] कुरैया वृक्ष।
कुडव पुं [कुडव] अनाज या अन्न नापने का एक माप।
कुडाल देखो कुड्डाल।
कुडिअ वि [दे] वामन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुडिआ स्त्री [दे] बाड़ का विवर।

कुडिच्छ न [दे] बाड़ का छिद्र। झोंपड़ी। वि. त्रुटित, छिन्न।

कुडिल वि [कुटिल] टेढ़ा।

कुडिलविडल न [दे. कुटिलविटल] हस्त-शिक्षा।

कुडिल्ल न [दे] विवर। वि. कुब्ज।

कुडिल्लय वि [दे. कुटिलक] कुटिल, टेढ़ा।

कुडिव्वय देखो कुलिव्वय।

कुडी स्त्री [कुटी] कुटीर।

कुडीर न [कुटीर] कुटी।

कुडीर न [दे] बाड़ का छिद्र।

कुडुंग पुं [दे] लतागृह।

कुडुंब न [कुटुम्ब] परिजन, परिवार।

कुडुंबय पुं [कुस्तुम्बक] धनियाँ। कन्द-विशेष।

कुडुंबि वि [कुटुम्बिन्] गृहस्थ। कर्षक। सम्बन्धी।

कुडुंबीअ न [दे] मैथुन।

कुडुंभग पुं [दे] पानी का मेढक।

कुडुक्क पुं [दे] लता-गृह।

कुडुच्चिअ न [दे] संभोग।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया।

कुड्ड पुंन [कुड्य] भित्ति।

कुड्ड न [दे] आश्चर्य।

कुड्डगिलोई [दे] छिपकली।

कुड्डलेवणी स्त्री [दे. कुड्यलेपनी]सुधा, चूना।

कुड्डाल न [दे] हल के ऊपर का विस्तृत अंश।

कुढ पुंन [दे] चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना। छीनी हुई चीज को छुड़ानेवाला, वापस लेनेवाला।

कुढार पुं [कुठार] फरसा।

कुढावय न [दे] अनुगमन।

कुढिय वि [दे] मूर्ख, जिसके माल की चोरी हो गई हो वह।

कुण सक [कृ] करना, बनाना।

कुणक्क पुं [कुणक] वनस्पति-विशेष।

कुणव न [कुणप] मृत-शरीर। वि. दुर्गन्धी।

कुणाल पुं. ब. देश-विशेष। प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र। °नयर न [°नगर] उज्जैन।

कुणाला स्त्री. इस नाम की एक नगरी।

कुणि, कुणिअ } पुं [कुणि] हाथ-कटा मनुष्य। जन्म से ही जिसका एक पाँव छोटा हो वह। जिसका एक पाँव छोटा हो वह, खञ्ज।

कुणिआ स्त्री [दे] बाड़ का छिद्र।

कुणिम पुंन [दे. कुणप] मुरदा। मांस। नरकावास-विशेष। शव का रुधिर, वसा वगैरह।

कुणुकुण अक [कुणुकुणाय्] शीत से कम्प होने पर 'कड़कड़' आवाज करना।

कुण्हरिया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष।

कुतत्ती स्त्री [दे] मनोरथ।

कुतुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष।

कुतुंबर पुं [कुस्तुम्बर] वाद्य-विशेष।

कुतुव पुंन [कुतुप] तेल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र। देखो कुउअ।

कुत्त पुं [दे] कुत्ता।

कुत्त न [दे. कुतक] ठेका, इजारा।

कुत्तार वि [कुतार] अयोग्य तारक।

कुत्तिय पुंस्त्री [दे] एक तरह का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष।

कुत्थ अ [कुत्र] कहाँ?

कुत्थ सक [कोथय्] सड़ाना।

कुत्थ देखो कुढ।

कुत्थर न [दे] विज्ञान। कोटर। सर्प वगैरह का बिल।

कुत्थल देखो कोत्थल।

कुत्थुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष।

कुत्थुंभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष।

कुत्थुह पुंन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की छाती पर रहती है।
कुत्थुहवत्थ न [दे] नीवी, इजारबन्द।
कुदो देखो कुओ।
कुद्द वि [दे] प्रभूत।
कुद्दण पुं [दे] रासक।
कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदों, कोदव।
कुद्दाल पुं. कुदारी। वृक्ष-विशेष।
कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित।
कुपचि (पै) अ [क्वचित्] किसी जगह में।
कुप्प सक [कुप्] गुस्सा करना।
कुप्प सक [भाष्] कहना।
कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चाँदी को छोड़ कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरह के बने हुए गृह-उपकरण।
कुप्पढ पुं [दे] घर का रिवाज।
कुप्पर न [दे] सुरत के समय किया जाता हृदय-ताड़न-विशेष। समुदाचार। नर्म, ठट्ठा।
कुप्पर पुं [कूर्पर] हाथ का मध्य भाग। जानु। रथ का अवयव-विशेष।
कुप्पर पुं [कर्पर] देखो कप्पर। भीत का जीर्ण-शीर्ण घर।
कुप्पल देखो कुंपल।
कुप्पास पुं [कूर्पास] कञ्चुक, जनानी कुरती।
कुप्पिस देखो कुप्पास।
कुबर पुं [कूबर] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष।
कुबेर पुं.भगवान् कुन्थुनाथ के प्रथम श्रावक का नाम। यक्ष-राज, धनेश। भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष-विशेष। काञ्चनपुर के एक राजा का नाम। इस नाम का एक श्रेष्ठी। एक जैन मुनि। °दिसा पुं [°दिश्] उत्तर दिशा। °नयरी स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका।
कुबेरा स्त्री. जैन साधु-गण की एक शाखा।
कुब्बड वि [दे] कुबड़ा।

कुब्बर पुं [कूबर] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम।
कुभंड पुं [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति।
कुभंडिंद पुं [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी।
कुमर देखो कुमार।
कुमार पुं. प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का। युवराज, राज्यार्ह पुरुष। भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष। लोहार। कार्त्तिकेय। शुक। घुड़सवार। सिन्धु नद। वरुण-वृक्ष। अविवाहित। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष। °णंदि पुं [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार। °धम्म पुं [°धर्म] एक जैन साधु। °वाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा।
कुमार पुं [दे] कुआर का महीना, आश्विन मास।
कुमारा स्त्री. एक सन्निवेश।
कुमारिय पुं [कुमारिक] कसाई, सौनिक।
कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो कुमारी।
कुमारी स्त्री. प्रथम वय की लड़की। अविवाहित कन्या। घीकुआरी वनस्पति। नवमल्लिका। नदी-विशेष। जम्बू-द्वीप का एक भाग। अपराजिता। सीता। बड़ी इलाची। वन्ध्या ककड़ी की लता। पक्षि-विशेष।
कुमारी स्त्री [दे. कुमारी] पार्वती।
कुमुअ पुं [कुमुद] एक वानर। महाविदेह-वर्ष का एक विजय-युगल, भूमि प्रदेश-विशेष। न. चन्द्र-विकासी कमल। कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह। शिखर-विशेष। वि. पृथ्वी में आनन्द पानेवाला। खराब प्रीतिवाला। देखो कुमुद।
कुमुअ पुं [कुमुद] देव-विशेष। °चंद पुं [°चन्द्र] आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की मुनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवस्था का नाम ।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] 'महाकाल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह संख्या ।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] इस नाम की एक पुष्करिणी । एक नगरी ।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] चन्द्र-विकासी कमल का पेड़ । इस नाम की एक रानी ।

कुमुद देखो कुमुअ । देव-विमान-विशेष । °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष । °पुर न. नगर-विशेष । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी । °वण न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल । °ागर पुं [°ाकर] कुमुद-षण्ड, कुमुदों से भरा हुआ वन ।

कुमुदंग देखो कुमुअंग ।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष ।

कुमुली स्त्री [दे] चूल्हा ।

कुम्म पुं [कूर्म] कच्छप । °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम ।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क ।

कुम्मार पुं [कूर्मार] मगध देश के एक गाँव का नाम ।

कुम्मास पुं [कुल्माष] अन्न-विशेष, उरद । थोड़ा भीजा हुआ मूँग वगैरह धान्य ।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] कछुई, कच्छपी । नारद की माता का नाम । °पुत्त पुं [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी ।

कुम्ह पुंब. [कुश्मन्] देश-विशेष ।

कुम्हंड देखो कोहंड ।

कुम्हंडी देखो कोहंडी ।

कुय पुं [कुच] स्तन । वि. शिथिल । अस्थिर ।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ।

कुरंग पुं. मृग की एक जाति । हरिण । °च्छी स्त्री [°ाक्षी] मृगनयनी स्त्री ।

कुरंटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियाबाँसा ।

कुरकुर देखो कुरुकुरु ।

कुरय पुं. [कुरक] वनस्पति-विशेष ।

कुरय न [कुरबक] पुष्प-विशेष ।

कुरर पुं. कुरर-पक्षी, उत्क्रोश ।

कुररी स्त्री [दे] पशु ।

कुररी स्त्री. कुरर पक्षी की मादा । गाथा छन्द का एक भेद । मेढ़ी ।

कुरल पुं. केश । पक्षि-विशेष ।

कुरली स्त्री. केशों की वक्र सटा । कुरल-पक्षिणी ।

कुरवय पुं [कुरबक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया ।

कुरा स्त्री. वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि-विशेष ।

कुरिण न [दे] बड़ा जंगल, भयंकर अटवी ।

कुरु पुं. ब. आर्य देश-विशेष । भगवान् आदि-नाथ का इस नाम का एक पुत्र । अकर्म-भूमि विशेष । इस नाम का एक वंश । पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न । °अरा, °अरी देखो नीचे °चरा, °चरी । °खेत्त °क्खेत्त न [°क्षेत्र] दिल्ली के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी । कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर । °चंद पुं [°चन्द्र] इस नाम का एक राजा । °चर वि. कुरु देश का रहनेवाला । स्त्री. °चरा, °चरी । °जंगल न [°जङ्गल] कुरु-भूमि । °णाह पुं [°नाथ] दुर्योधन । °दत्त पुं. इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि । °मई स्त्री [°मती] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी । °राय पु [°राज] कुरु देश का राजा । °वइ पुं [°पति] कुरु देश का राजा ।

कुरुकुया स्त्री [कुरुकुचा] पाँव का प्रक्षालन ।

कुरुकुर अक [कुरुकुराय्] 'कुर-कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बड़बड़ाना ।

कुरुकुरिअ न [दे] रणरणक, औत्सुक्य ।

कुरुगुर देखो कुरुकुरु ।

कुरुचिल्ल पुं [दे] कुलीर, जल-जन्तु-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न. ग्रहण, उपादान । देखो कुरुविल्ल ।

कुरुच्च वि [दे] अप्रिय ।

कुरुड वि [दे] निर्दय । निपुण, चतुर ।

कुरुण न [दे] राजा का या दूसरे का धन ।

कुरुमाल सक [दे] टटोलना, धीरे-धीरे हाथ फेरना ।

कुरुय न [दे. कुरुक] कपट ।

कुरुया स्त्री [दे. कुरुका] स्नान ।

कुरुर देखो कुरर ।

कुरुल पुं [दे] कुटिल केश । वि. निर्दय । निपुण, चतुर ।

कुरुल अक [कु] आवाज करना, कौए का बोलना ।

कुरुव देखो कुरु ।

कुरुवग देखो कुरवय ।

कुरुविंद पुं. मणि-विशेष, रत्न की एक जाति । तृण-विशेष । कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जंघा रोग । °वत्त पुंन [°वर्त्त] भूषण-विशेष ।

कुरुविंदा स्त्री [कुरुविन्दा] इस नाम की एक वणिग्भार्या ।

कुरुविल्ल [दे] देखो कुरुचिल्ल ।

कुल पुंन. वंश, जाति । पैतृक वंश । कुटुम्ब । सजातीय समूह । गोत्र । एक आचार्य की सन्तति । घर । सान्निध्य, सामीप्य । ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध नक्षत्र-संज्ञा । °उव्व पुं [°पूर्व] पूर्वज । °कम पुं [°क्रम] कुलाचार । °कर देखो नीचे °गर । °कोडि स्त्री [°कोटि] जाति-विशेष । °क्कम देखो कम । °गर पुं [°कर] कुल की स्थापना करनेवाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरह की व्यवस्था करने-वाला महापुरुष । °गेह न [°गृह] पितृ-गृह । °घर न [°गृह] पितृ-गृह । °ज वि [°ज] कुलीन । °जाय वि [°जात] खानदानी कुल का । °जुअ वि [°युत] कुलीन । °णाम न [°नामन्] कुल के अनुसार किया जाता नाम । °तंतु पुं [°तन्तु] कुल-सन्तति । °तिलग पुंन [°तिलक] कुल में श्रेष्ठ । °त्थ वि [°स्थ] कुलीन । °त्थेर पुं [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु । °दिणयर पुं [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ । °दीव पुं [°दीप] कुल प्रकाशक । °देव पुं [°देव] गोत्र-देवता । °देवया स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता । °देवी स्त्री. गोत्र-देवी । °धम्म पुं [°धर्म] कुलाचार । °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष । °पुत्त पुं [°पुत्र] वंश-रक्षक पुत्र । °बालिया स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या । °भूसण न [°भूषण] वंश को दिपाने या चमकाने वाला । पुं. एक केवली भगवान् । °मय पुं [मद]कुल का अभिमान । °मयहरिया, °महत्तरिया स्त्री [°महत्त-रिका] कुटुम्ब की मुखिया । °य देखो °ज । °रोग पुं. कुल व्यापक रोग । °वइ पुं [°पति] प्रधान संन्यासी । °वंस पुं [°वंश] कुल रूप वंश । °वंस पुं [°वंश्य] कुल में उत्पन्न । °वडिंसय पुं [°वतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक । °वहू स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री । °संपण्ण वि [°सम्पन्न] कुलीन । °समय पुं. कुलाचार । °सेल पुं [°शैल] कुल-पर्वत । °सेलया स्त्री [°शैलजा] कुल-पर्वत से निकली हुई नदी । °हर न [°गृह] पितृगृह । °ाजीव वि. अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करनेवाला । °ाय न. नीड़ । °ायार पुं [°ाचार] वंश-परम्परा से चला आता रिवाज । °ारिय पुं [°ार्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य । °ालय वि. गृहस्थों के घर भीख माँगनेवाला ।

कुलंकर पुं [कुलङ्कर] इस नाम का एक राजा ।

कुलंप पुं [कुलम्प] इस नाम का एक अनार्य देश । उसमें रहनेवाली जाति ।

कुलकुल देखो कुरकुर ।

कुलक्ख पुं [कुलक्ष] एक म्लेच्छ देश । उसमें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहनेवाली जाति ।
कुलाग्घ पुं [कुलार्घ] एक अनार्य देश ।
कुलडा स्त्री [कुलटा] व्यभिचारिणी स्त्री ।
कुलत्थ पुंस्त्री. कुलथी ।
कुलफंसण पुं [दे] कुल का दाग ।
कुलय देखो कुडव ।
कुलय न [कुलक] तीन या चार से ज्यादा परस्पर सापेक्ष पद्य ।
कुलल पुं. गृद्ध पक्षी । कुरर पक्षी । मार्जार ।
कुलल्य पुंन [दे] गंडूष ।
कुलव देखो कुडव ।
कुलसंतइ स्त्री [दे] चूल्हा ।
कुलाअल पुं [कुलाचल] कुलपर्वत ।
कुलाण देखो कुणाल ।
कुलाल पुं. कुम्भकार ।
कुलाल पुं [कुलाट] बिलाड़ । ब्राह्मण ।
कुलिंगाल पुं [कुलाङ्गार] कुल में कलंक लगानेवाला, दुराचारी ।
कुलिअ न [कुलिक] खेत में घास काटने का छोटा काष्ठ-विशेष ।
कुलिक } पुं [कुलिक] ज्योतिष-शास्त्र में
कुलिय } प्रसिद्ध एक कुयोग । न. एक प्रकार का हल ।
कुलिय न [कुड्य] भित्ति । मिट्टी की बनाई हुई भीत ।
कुलिया स्त्री [कुलिका] भीत ।
कुलिर पुं. मेष वगैरह बारह राशि में चतुर्थ राशि ।
कुलिव्वय पुं [कुटिव्रत] परिव्राजक का एक भेद, तापस-विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करनेवाला ।
कुलिस पुंन [कुलिश] वज्र । °णिणाय पुं [°निनाद] रावण का इस नाम का एक सुभट । °मज्झ न [°मध्य] एक प्रकार की तपश्चर्या ।
कुलीकोस पुं [कुटीक्रोश] पक्षि-विशेष ।
कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल में उत्पन्न ।
कुलीर पुं. जन्तु-विशेष ।
कुलुंच सक [दह्, म्लै] जलाना । म्लान करना ।
कुलुक्किय वि [दे] जला हुआ ।
कुलोवकुल पुं [कुलोपकुल] ये चार नक्षत्र—अभिजित्, शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा ।
कुल्ल पुं [दे] ग्रीवा, कण्ठ । वि. असमर्थ । छिन्नपुच्छ ।
कुल्ल पुंन [दे] चूतड़ ।
कुल्ल अक [कूर्द्] कूदना ।
कुल्लउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष ।
कुल्लड न [दे] चुल्ली । छोटा पात्र, पुड़वा ।
कुल्लरिअ पुं [दे] हलवाई ।
कुल्लरिया स्त्री [दे] हलवाई की दूकान ।
कुल्ला स्त्री [कुल्या] जल की नाली । कृत्रिम नदी ।
कुल्लाग पुं [कुल्याक] मगध देश का एक गाँव ।
कुल्ली देखो कुल्ला ।
कुल्लुडिया स्त्री [कुल्लुडिका] घड़ी ।
कुल्लुरी स्त्री [दे] खाद्य-विशेष ।
कुल्लूरिअ [दे] देखो कुल्लरिअ ।
कुल्ह पुं [दे] शृगाल ।
कुवणय न. [दे] यष्टि, छड़ी ।
कुवलय न. नीलोत्पल, हरा रंग का कमल ।
कुवली स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष ।
कुविंद पुं [कुविन्द] कपड़ा बुनने वाला । °वल्ली स्त्री. वल्ली-विशेष ।
कुविय वि [कुपित] क्रुद्ध ।
कुविय देखो कुप्प = कुप्य । °साला स्त्री [°शाला] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया ।
कुवेणी स्त्री. एक प्रकार का हथियार ।
कुवेर देखो कुबेर ।
कुव्व सक [कृ, कुर्व] करना, बनाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुस पुंन [कुश] दर्भ। पुं. दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम। °ग्ग [°ाग्र] दर्भ का अग्र-भाग। °ग्गनयर न [°ाग्रनगर] राज-गृह, नगर। °ग्गपुर न [°ाग्रपुर] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °ट्ट पुं [°ावर्त्त] आर्य देश-विशेष। °ट्ठ पुं [°ार्य] आर्य देश-विशेष। °त्त न [°क्त, °ाक्त] आस्तरण-विशेष। °त्थलपुर न [°स्थलपुर] नगर-विशेष। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] डाभ के साथ कूटी जाती मिट्टी। °वर पुं. द्वीप-विशेष।

कुस वि [कौश] दर्भ का बना हुआ।

कुसण न [दे] आर्द्र करना। गोरस।

कुसणिय वि [दे] गोरस से बना हुआ करम्बा आदि खाद्य।

कुसल वि [कुशल] निपुण, चतुर, अभिज्ञ। न. सुख, हित। पुण्य।

कुसला स्त्री [कुशला] अयोध्या।

कुसार देखो कूसार।

कुसी स्त्री [कुशी] लोहे का बना हुआ एक हथियार।

कुसीलव पुं [कुशीलव] अभिनयकर्ता नट।

कुसुंभ पुंन [कुसुम्भ] वृक्ष-विशेष, कुसुम, बर्रे। एक-पुष्प। रंग-विशेष।

कुसुंभिल पुं [दे] दुर्जन, चुगलखोर।

कुसुंभी स्त्री. कुसुम का पेड़।

कुसुम अक [कुसुमय्] फूल आना।

कुसुम न. फूल। पुं. इस नाम का भगवान् पद्मनाभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष। °केउ पुं [°केतु] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव। °चाय, °चाव पुं [°चाप] कामदेव। °ज्झय पुं [°ध्वज]वसन्त ऋतु। °णयर न[°नगर] पाटलिपुत्र। °दंत पुं [°दन्त] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिनदेव, श्री सुविधिनाथ। °दाम न[°दामन्] फूलों की माला। °धणु न [°धनुष्]कामदेव। °पुर न. देखो ऊपर °णयर। °बाण पुं. कामदेव। °रअ पुं [°रजस्] मकरन्द। °रद पुं. देखो °दंत। °लया स्त्री [°लता] छन्द-विशेष। °संभव पुं. मधुमास। °सर पुं [°शर] कामदेव। °ाअर पुं. [°ाकर] इस नाम का एक छन्द। °ाउह पुं [°ायुध] कामदेव। °ावई स्त्री [°ावती] इस नाम की एक नगरी। °ासव पुं. पराग।

कुसुमसंभव पुं [कुसुमसम्भव] वैशाख मास का लोकोत्तर नाम।

कुसुमाल वि [कुसुमवत्] फूलवाला।

कुसुमाल पुं [दे] चोर।

कुसुमालिअ वि [दे] शून्य-मनस्क।

कुसुमिल्ल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो।

कुसुर [दे] देखो झसुर।

कुसूल पुं [कुशूल] कोष्ठ।

कुस्सुमिण पुं [कुस्वप्न] दुष्ट स्वप्न।

कुह अक [कुथ्] सड़ जाना, दुर्गन्धी होना।

कुह पुं. वृक्ष।

कुह देखो कहं।

कुहंड पुं [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति। न. कुम्हड़ा, पेठा।

कुहंडिया स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँड़ा का गाछ।

कुहक्क } कुहग } देखो कुहय।

कुहग पुं [कुहक] कन्द-विशेष।

कुहड वि [दे] कूबड़ा।

कुहण पुं [कुहन] वृक्षों की एक जाति। वनस्पति-विशेष। भूमि-स्फोट। देश-विशेष। इसमें रहनेवाली जाति।

कुहण वि [क्रोधन] क्रोधी।

कुहणी स्त्री [दे] हाथ का मध्य-भाग।

कुहय पुंन [कुहक] दौड़ते हुये अश्व के उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार की वायु। इन्द्रजालादि कौतुक।

कुहर न. पर्वत का अन्तराल। विवर। पुं. देश-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुहाड पुं [कुठार] फरसा।

कुहाडी स्त्री [कुठारी] कुल्हाड़ी।

कुहावणा स्त्री [कुहना] आश्चर्य-जनक, दम्भ-क्रिया। लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष।

कुहिअ वि [दे] लिप्त।

कुहिअ वि [कुथित] थोड़ी दुर्गन्धवाला। सड़ा हुआ। विनष्ट। °पूइय वि [°पूतिक] अत्यन्त सड़ा हुआ।

कुहिणी स्त्री [दे] कूर्पर। रथ्या, महल्ला।

कुहिल पुंस्त्री [कुहुमत्] कोयल पक्षी।

कुहु स्त्री. कोकिल पक्षी की आवाज।

कुहुण देखो कुहण = कुहन।

कुहुव्वय पुं [कुहुव्रत] कन्द-विशेष।

कुहेड पुं [दे] ओषधी-विशेष, गुरेटक, एक प्रकार का हरे का गाछ।

कुहेड / कुहेडअ पुं [कुहेट, °क] चमत्कार उप-जानेवाला मन्त्र-तन्त्रादि ज्ञान। आभाणक।

कुहेडग पुंन [दे] अजमा।

कुहेडगा स्त्री [कुहेटका] पिण्डालु।

कूअ देखो कूव = कूप।

कूअण न [कूजन] अव्यक्त शब्द। वि. ऐसी आवाज करनेवाला।

कूइआ स्त्री [कूपिका] छोटा कूप।

कूइय न [कूजित] अव्यक्त आवाज।

कूइया स्त्री [कूजिका] किवाड़ आदि का अव्यक्त आवाज।

कूचिआ स्त्री [कूर्चिका] दाढ़ी-मूंछ का बाल।

कूचिया स्त्री [कूर्चिका] बुद्बुद, बुलबुला।

कूज अक [कूज्] अव्यक्त शब्द करना।

कूड सक [कूटय्] झूठा ठहराना। अन्यथा। करना।

कूड पुं [दे. कूट] फांसी, जाल।

कूड पुंन [कूट] असत्य, छल-युक्त। भ्रान्ति-जनक वस्तु। कपट। धोखा। नरक। पीड़ा-जनक स्थान। शिखर। पर्वत का मध्य भाग। पाषाणमय यन्त्र-विशेष। समूह। °कारि वि [°कारिन्] दगाखोर। °ग्गाह पुं [°ग्राह] धोखे से जीवों को फँसानेवाला। °जाल न. धोखे का जाल, फाँसी। °तुला स्त्री. झूठी नाप। °पास न [°पाश] एक प्रकार की मछली पकड़ने का जाल। °प्पओग पुं [°प्रयोग] प्रच्छन्न पाप। °लेह पुं [°लेख] दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखे-बाजी करना। दूसरे के नाम से झूठी चिट्ठी वगैरह लिखना। °वाहि पुं [°वाहिन्] बैल। °सक्ख न [°साक्ष्य] झूठी गवाही। °सक्खि वि [°साक्षिन्] झूठी साक्षी देनेवाला। °सक्खिज्ज न [°साक्ष्य] झूठी गवाही। °सामलि स्त्री [°शाल्मलि] वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहाँ गरुड-जातीय देवों का निवास है। नरक-स्थित वृक्ष-विशेष। °ागार न. शिखर के आकारवाला घर। पर्वत पर बना हुआ घर। पर्वत में खुदा हुआ घर। हिंसा-स्थान। °ागारसाला स्त्री [°ागारशाला] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर। °ाहच्च न [°ाहत्य] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना।

कूड न [कूट] पाश। लगातार २७ दिन का उपवास।

कूडग देखो कूड।

कूण अक [कूणय्] संकुचित होना।

कूणिअ वि [दे] ईषद् विकसित।

कूणिअ पुं [कूणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र।

कूणिय वि [कूणित] सड़ा हुआ।

कूय अक [कूज्] अव्यक्त आवाज करना।

कूय पुं [कूप] कुआ। घी, तेल वगैरह रखने का पात्र। °दद्दुर पुं [°दर्दुर] कूप का मेढ़क। वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ। देखो कूव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूर वि [क्रूर] निर्दय, हिंसक। भयंकर। पुं. रावण का इस नाम का एक सुभट।

कूर पुंन. वनस्पति-विशेष। न.ओदन। °गडुअ, °गड्डुअ पुं [°गडुक] एक जैन महर्षि।

कूर° अ [ईषत्] अल्प।

कूरपिउड न [दे] खाद्य-विशेष।

कूरि वि [क्रूरिन्] निर्दयी। निर्दय परिवार-वाला।

कूल न [दे] सैन्य का पिछला भाग।

कूल न तट। °धमग पुं [°ध्मायक] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है। वालग, वालय पुं [बालक] एक जैन मुनि।

कूलकंसा स्त्री [कूलङ्कषा] तीर को तोड़ने-वाली नदी।

कूव पुंन [दे] चुराई चीज की खोज में जाना। चुराई चीज को छुड़ानेवाला।

कूव, कूवग, कूवय पुं [कूप,°क] कुंआ, गर्त्त। स्नेह-पात्र। जहाज का मध्य स्तम्भ। °तुला स्त्री. ढेंकुवा। °मंडुक्क पुं [°मण्डूक] कूप का मेढक। अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर छोड़ बाहर न जाता हो।

कूवय पुं [कूपक] देखो कूव = कूप। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि।

कूवर पुंन.जहाज का मुख-भाग। रथ या गाड़ी वगैरह का एक अवयव, युगन्धर।

कूवल न [दे] जवन-वस्त्र।

कूविय न [कूजित] अव्यक्त शब्द।

कूविय पुं [कूपिक] इस नाम का एक सन्निवेश —गाँव।

कूविय वि [दे] चुराई हुई चीज की खोज कर उसे लानेवाला। चोर की खोज करनेवाला।

कूविया स्त्री [कूपिका] छोटा कूप। छोटा स्नेह-पात्र।

कूवी स्त्री [कूपी] ऊपर देखो।

कूसार पुं [दे] गर्त्त जैसा स्थान, खड्डा।

कूहंड पुं [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति।

के सक [क्री] खरीदना।

के° वि [कियत्] कितना? °च्चिरेण अ. कितने समय में? °च्चिरं अ. कितने समय तक। °च्चिरेण देखो °चिरेण। °दूर न. कितना दूर? °महालय वि. कितना बड़ा? °महा-लिय वि [°महत्] कितना बड़ा? °महि-ड्डिय वि [°महर्द्धिक] कितनी बड़ी ऋद्धि-वाला।

केअइ पुं [केकय] देश-विशेष।

केअई स्त्री [केतकी] केवड़ा का वृक्ष।

केअग, केअय पुं [केतक] केवड़ा का गाछ। न. केतकी-पुष्प। चिह्न।

केअगी स्त्री [केतकी] केवड़ा का गाछ या फूल।

केअल देखो केवल।

केअव देखो कइअव = कैतव।

केआ स्त्री [दे] रज्जु।

केआर पुं [केदार] खेत। क्यारी।

केआरवाण पुं [दे] पलाश का पेड़।

केआरिआ स्त्री [केदारिका]घासवाली जमीन, गोचर भूमि।

केउ पुं [केतु] पताका। ग्रह-विशेष। निशान। रूई का सूता। °खेत्त न [°क्षेत्र] मेघ-वृष्टि से ही जिसमें अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा क्षेत्र-विशेष। °मई स्त्री [°मती] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम। °माल न. वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर।

केउ पुं [दे] कांदा।

केउ पुंन [केतु] एक देवविमान।

केउग, केउय पुं [केतुक] पाताल-कलश-विशेष।

केऊर पुंन [केयूर] अङ्गद, बाजूबन्द। दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केऊरपुत्त पुं [दे] गाय तथा भैंस का बच्चा ।

केऊव पुं [केयूप] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश ।

केंकाय अक [केङ्काय्] 'कें-कें' आवाज करना ।

केंसुअ देखो किंसुअ ।

केकई स्त्री [कैकयी] राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या । आठवें वासुदेव की माता । अपर-विदेह के विभीषण-वासुदेव की माता ।

केकय पुं. देश-विशेष । इस देश का रहनेवाला । केकय देश का राजा ।

केकसिया स्त्री [कैकसिका] रावण की माता का नाम ।

केका स्त्री. मयूर-वाणी । °रव पुं. मयूर की आवाज ।

केकाइय न [केकायित] मयूर का शब्द ।

केक्कई देखो केकई ।

केक्कय देखो केकय ।

केक्कसी स्त्री [कैकसी] रावण की माता ।

केक्काइय देखो केकाइय ।

केगई देखो केकई ।

केगाइय देखो केकाइय ।

केज्ज वि [क्रेय] बेचने की चीज ।

केढ, केढव पुं [कैटभ] इस नाम का एक प्रति-वासुदेव राजा । दैत्य-विशेष । °रिउ पुं [°रिपु] श्रीकृष्ण ।

केत्त देखो केत्तिअ ।

केत्तिअ, केत्तिल वि [कियत्] कितना ?

केत्तुल (अप) ऊपर देखो ।

केत्थु (अप) अ [कुत्र] कहाँ ।

केद्दह देखो केत्तिअ ।

केम, केम्व (अप) देखो कहं ।

केय न [केत] गृह । निशानी ।

केयण न [केतन] वक्र-वस्तु । चंगेरी का हाथा । संकेत, संकेत-स्थान । धनुष की मूठ । मछली पकड़ने का जाल । जगह ।

केयय देखो केकय ।

केयव्व वि [क्रेतव्य] खरीदने योग्य वस्तु ।

केर, केरय वि [दे. सम्बन्धिन्] सम्बन्धी वस्तु ।

केरव न [कैरव] सफेद कमल । कपट ।

केरिच्छ वि [कीदृक्ष] कैसा, किस तरह का ?

केरिस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का ?

केरी स्त्री [क्रकटी] करीर का गाछ ।

केल देखो कयल = कदल ।

केलाइय वि [समारचित] साफसुथरा किया हुआ ।

केलाय सक [समा + रचय] साफ कर ठीक करना ।

केलास पुं [कैलास] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष । स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वतविशेष । इस नाम का एक नाग-राज । इस नागराज का आवास पर्वत । मिट्टी का एक तरह का पात्र । देखो कइलास ।

केलि देखो कयलि ।

केलि स्त्री [दे] कन्द-विशेष ।

केलि, केली स्त्री [केलि, °ली] खेल, मजाक । परिहास, कामक्रीड़ा । °आर वि [°कार] क्रीड़ा करनेवाला, विनोदी । °काणण न [°कानन] क्रीड़ोद्यान । °किल, °गिल वि [°किल] विनोदी, क्रीड़ा-प्रिय । पुं. व्यन्तर-जातीय देवविशेष । पुंन. स्थान-विशेष । °भवण न [°भवन] क्रीड़ा-गृह । °विमाण न [°विमान] विलास-महल । °सअण न [°शयन] काम-शय्या । °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काम-शय्या ।

केली देखो कयली ।

केली स्त्री [दे] कुलटा ।

केलीगिल वि [कैलीकिल] केलीकिल स्थान में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्पन्न ।

केव° देखो के° ।

केवँ (अप) देखो कहं ।

केवइय वि [कियत्] कितना ?

केवट्ट पुं [कैवर्त्त] मछलीमार ।

केवड (अप) देखो केत्तिअ ।

केवल वि. अकेला, असहाय । अद्वितीय । शुद्ध । सम्पूर्ण । अनन्त । न. सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सर्वज्ञता । °कप्प वि [°कल्प] परिपूर्ण । °णाण न [°ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सम्पूर्ण ज्ञान । °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानवाला, सर्वज्ञ । पुं. इस नाम के एक अर्हन् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थंकर । °ण्णाण, °नाण देखो °णाण । °दंसण न [°दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध ।

केवलं अ [केवलम्] सिर्फ ।

केवलाअ सक [समा + रभ्] शुरू करना ।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञानवाला, सर्वज्ञ । °पक्खिय वि [°पाक्षिक] स्वयंबुद्ध । पुं. जिनदेव, तीर्थंकर ।

केवलिअ वि [केवलिक] केवलज्ञानवाला । सम्पूर्ण ।

केवलिअ वि [केवलिक] केवल-ज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाला । केवलिप्रोक्त । केवल-ज्ञान-सम्बन्धी । न. केवल ज्ञान, सम्पूर्ण ज्ञान ।

केवलिअ न [कैवल्य] केवल ज्ञान ।

केवली स्त्री. ज्योतिष विद्या-विशेष ।

केस पुं [केश] बाल । °पुर न. वैताढ्य पर स्थित एक विद्याधर-नगर । °लोअ पुं [°लोच] केशों का उन्मूलन । °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] केशवाले जीवों का व्यापार । °हत्थ पुं [°हस्त] केशपाश, समारचित केश ।

केस देखो केरिस ।

केस देखो किलेस ।

केसर पुं [कवीश्वर] श्रेष्ठ कवि ।

केसर पुंन. एक देवविमान । पराग । सिंह वगैरह के कंधा का बाल । पुं. बकुल वृक्ष । न. काम्पिल्य नगर का एक उपवन । फल-विशेष । सुवर्ण । छन्द-विशेष । पुष्प-विशेष ।

केसरा स्त्री. सिंह वगैरह के स्कन्ध पर के बालों की सटा ।

केसरि पुं [केसरिन्] सिंह, कण्ठीरव । नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद । नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रतिवासुदेव । °द्दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष ।

केसरिआ स्त्री [केसरिका] साफ करने का कपड़े का टुकड़ा ।

केसरिल्ल वि [केसरवत्] केसरवाला ।

केसरी स्त्री [केसरी] देखो केसरिआ ।

केसव पुं [केशव] अर्द्ध-चक्रवर्ती राजा । श्री-कृष्ण वासुदेव ।

केसि वि [क्लेशिन्] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट ।

केसि पुं [केशि] एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य । अश्व के रूप को धारण करनेवाला एक दैत्य ।

केसि पुं [केशिन्] देखो केसव ।

केसिअ वि [केशिक] केशवाला ।

केसी स्त्री [केशी] सातवें वासुदेव की माता ।

°केसी स्त्री [°केशी] केशवाली स्त्री ।

केसुअ देखो किंसुअ ।

केह (अप) वि [कीदृश्] कैसा, किस तरह का ?

केहिं (अप) अ. वास्ते ।

कैअव न [कैतव] कपट, दम्भ ।

कोअ देखो कोक ।

कोअ देखो कोव ।

कोअंड देखो कोदंड ।

कोआस अक [वि + कस्] विकसना, खिलना ।

कोइल पुं [कोकिल] कोयल । छन्द का एक भेद । °च्छय पुं [°च्छद] तलकण्टक ।

कोइला स्त्री [कोकिला] स्त्री-कोयल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोइला स्त्री [दे] कोयला, काष्ठ के अंगार।

कोउआ स्त्री [दे] गोइठा की अग्नि, करीषाग्नि।

कोउग } न [कौतुक] कुतूहल, अपूर्व वस्तु
कोउय } देखने का अभिलाष। आश्चर्य। उत्सव। उत्सुकता, उत्कण्ठा। दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता काजल का तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग। सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन, विस्मापन, धूप, होम वगैरह कर्म।

कोउण्ह वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम।

कोउहल } देखो कुऊहल।
कोउहल्ल }

कोऊहल } देखो कुऊहल।
कोऊहल्ल }

कोंकण पुं [कोङ्कण] देश-विशेष। अनार्य देश-विशेष। वि. उस देश में रहनेवाला।

कोंच पुं [क्रौञ्च] इस नाम का एक अनार्य देश। पक्षि-विशेष। द्वीप-विशेष। इस नाम का एक असुर। वि. क्रौञ्च देश का निवासी। °रिवु पुं [°रिपु] कार्त्तिकेय। °वर पुं. इस नाम का एक द्वीप। °वीरग पुंन [°वीरक] एक प्रकार का जहाज। देखो कुंच।

कोंचिगा स्त्री [कुञ्चिका] ताली, कुंजी।

कोंचिय वि [कुञ्चित] आकुञ्चित, संकुचित।

कोंटलय न [दे] ज्योतिष-सम्बन्धी सूचना। शकुनादि निमित्त-सम्बन्धी सूचना।

कोंठ देखो कुंठ।

कोंड देखो कुंड।

कोंड पुं [कौण्ड, गौड] देश-विशेष।

कोंडल देखो कुंडल। °मेत्तग पुं [°मित्रक] एक व्यन्तर देव का नाम।

कोंडलग पुं [कुण्डलक] पक्षि-विशेष।

कोंडलिआ स्त्री [दे] श्वापद जन्तु-विशेष, साही, श्वावित्। कीड़ा, कीट।

कोंडिअ पुं [दे] ग्राम-निवासी लोगों में फूट कराकर छल से गाँव का मालिक बन बैठनेवाला।

कोंडिणपुर न [कौण्डिनपुर] नगर-विशेष।

कोंडिण्ण देखो कोडिण्ण।

कोंडिया देखो कुंडिया।

कोंढ देखो कुंढ।

कोंढुल्लु पुं [दे] उलूक।

कोंत देखो कुंत।

कोंतल देखो कुंतल = कुन्तल।

कोंती देखो कुंती।

कोंभी देखो कुंभी।

कोक पुं. चक्रवाक पक्षी। भेड़िया।

कोकंतिय पुंस्त्री [दे] जन्तु-विशेष, लोमड़ी, लोखरिआ।

कोकणद देखो कोकणय।

कोकणय न [कोकनद] लाल कमल।

कोकासिय [दे] देखो कोक्कासिय।

कोकुइय देखो कुक्कुइअ।

कोक्क सक [व्या + हृ] बुलाना, आह्वान करना।

कोक्कास पुं. इस नाम का एक वर्धकि, बढ़ई।

कोक्कासिय [दे] विकसित।

कोक्कुइय देखो कक्कुइअ।

कोखुब्भ देखो खोखुब्भ।

कोच्चप्प न [दे] झूठी भलाई।

कोच्चिय पुंस्त्री [दे] नया शिष्य।

कोच्छ न [कौत्स] गोत्र-विशेष। पुंस्त्री कौत्स गोत्र में उत्पन्न।

कोच्छ वि [कौक्ष] कुक्षि सम्बन्धी। न. उदर-प्रदेश।

कोच्छभास पुं [दे.कुत्सभाष] कौआ।

कोच्छेअय देखो कुच्छेअय।

कोज्ज देखो कुज्ज।

कोज्जप्प न [दे] स्त्री-रहस्य।

कोज्जय देखो कुज्जय।

कोज्जरिअ वि [दे] पूर्ण किया हुआ, भरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुआ।

कोज्झरिअ वि [दे] ऊपर देखो।

कोटर देखो कोट्टर।

कोटिंब पुं [दे] भी।

कोटुंभ पुंन [दे] हाथ से आहत जल। देखो कोट्टुंभ।

कोटीवरिस अ [कोटीवर्ष] लाट देश की प्राचीन राजधानी।

कोट्ट देखो कुट्ट = कुट्ट्।

कोट्ट न [दे] नगर। दुर्ग। °वाल पुं [°पाल] नगर-रक्षक।

कोट्टंतिया स्त्री [कुट्टयन्तिका] तिल वगैरह को चूरने का उपकरण।

कोट्टकिरिया स्त्री [कोट्टक्रिया] देवी-विशेष, दुर्गा आदि रुद्र रूपवाली देवी।

कोट्टण देखो कुट्टण।

कोट्टर देखो कोडर।

कोट्टवीर पुं. इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य।

कोट्टा स्त्री [दे] पार्वती। गर्दन।

कोट्टाग पुं [कोट्टाक] बढ़ई। न. हरे फलों को सुखाने का स्थान-विशेष।

कोट्टिंब पुं [दे] द्रोणी, नौका, जहाज।

कोट्टिम पुंन[कुट्टिम] रत्नमय भूमि। फरस-बन्ध जमीन। भूमि-तल। एक या अनेक तलावाला घर। मढ़ी। रत्न की खान। अनार का पेड़।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावटी, बनाया हुआ।

कोट्टिल, कोट्टिल्ल पुं [कौट्टिक] मुग्दर, मुगरी, मुगरा, जोड़ी।

कोट्टी स्त्री [दे] दोहन। विषम स्खलना।

कोट्टुंभ पुंन [दे] हाथ से आहत जल।

कोट्टुम अक [रम्] क्रीड़ा करना।

कोट्टुवाणी स्त्री [क्रोट्टुवाणी] जैन मुनिगण की एक शाखा।

कोट्ठ देखो कुट्ठ = कुष्ठ।

कोट्ठ पुं [कोष्ठ] धारणा, अवधारित अर्थ का कालान्तर में स्मरण-योग्य अवस्थान। सुगन्धी द्रव्य-विशेष।

कोट्ठ, कोट्ठग, कोट्ठय देखो कुट्ठ = कोष्ठ। आश्रय-विशेष, आवास-विशेष। अपवरक, कोठरी। चैत्य-विशेष।°ागार न. धान्य भरने का घर। भण्डार।

कोट्ठार पुंन [कोष्ठागार] भाण्डागार।

कोट्ठिया स्त्री [कोष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल।

कोट्ठु पुं [क्रोष्टु] सियार।

कोडंड देखो कोदंड।

कोडंडिय देखो कोदंडिय।

कोडंब न [दे] कार्य।

कोडय [दे] देखो कोडिअ।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोल भाग, विवर।

कोडल पुं [कोटर] पक्षि-विशेष।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह।

कोडाल पुं. गोत्र-विशेष का प्रवर्त्तक पुरुष। न. गोत्र-विशेष।

कोडि स्त्री [कोटि] धनुष का अग्र भाग। प्रकार। संख्या-विशेष, करोड़। अग्र-भाग। अंश, विभाग। °कोडि देखो कोडा-कोडि। °बद्ध वि. करोड़ संख्यावाला। °भूमि स्त्री. एक जैन तीर्थ। °सिला स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ। °सो अ [°शस्] अनेक करोड़। देखो कोडो।

कोडिअ न [दे] सकोरा। पुं. दुर्जन, चुगल-खोर।

कोडिअ पुं. [कोटिक] एक जैन मुनि। एक जैन-मुनि-गण।

कोडिअ वि [कोटित] संकोचित।

कोडिण्ण न [कौडिन्य] इस नाम का एक नगर। वाशिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोत्र। पुं. कौडिन्य गोत्र का प्रवर्त्तक पुरुष। वि. कौडिन्य-गोत्रीय। पुं. एक मुनि जो शिवभूति का शिष्य था। महागिरि-सूरि का शिष्य। गोतम-स्वामी के पास दीक्षा लेनेवाले पाँच सौ तापसों का गुरु।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौडिन्य-गोत्रीय स्त्री।

कोडिल्ल पुं [दे] पिशुन।

कोडिल्ल देखो कोट्टिल्ल।

कोडिल्ल पुं [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि।

कोडिल्लय न [कौटिल्यक] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र।

कोडिसाहिय न [कोटिसहित] प्रत्याख्यान विशेष, पहले दिन उपवास करके दूसरे दिन भी उपवास को ली जाती प्रतिज्ञा।

कोडी देखो कोडि। °करण न. विभाग। °णार न [°नार] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर। °मातसा स्त्री. गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष। °वरिसिया स्त्री [°र्वाषका] जैन मुनि-गण की एक शाखा। °सर पुं [°श्वर] करोड़पति।

कोडीण न [कोडीन] इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है। वि. इस गोत्र में उत्पन्न।

कोडुंब न [दे] कार्य।

कोडुंबि देखो कुडुंबि।

कोडुंबिय पुं [कौटुम्बिक] कुटुम्ब का स्वामी। ग्राम-प्रधान, गाँव का आदमी। वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब-सम्बन्धी।

कोडूसग पुं [कोदूषक] अन्न-विशेष, कोदों की एक जाति।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड।

कोड्डम देखो कोट्टुम।

कोड्डमिअ न [रत] रति-क्रीड़ा-विशेष।

कोड्डिय वि [दे] विनोद-शील, उत्कण्ठित।

कोड्ढ, कोढ वि [कुष्ठि] कुष्ठ-रोग।

कोण वि [दे] श्याम वर्णवाला। पुं. लकड़ी। वीणा वगैरह बजाने की लकड़ी।

कोण, कोणग पुंन [कोण] कोन, अस्त्र, घर का एक भाग।

कोणव पुं [कौणप] राक्षस।

कोणायल पुं [कोणाचल] भगवान् शान्तिनाथ के प्रथम श्रावक का नाम।

कोणालग पुं [कोनालक] जलचर पक्षि-विशेष।

कोणाली स्त्री [दे] गोष्ठी, गोठ।

कोणिअ, कोणिग पुं [कोणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र।

कोणु स्त्री [दे] रेखा।

कोणेट्ठिया स्त्री [दे] गुञ्जा देखो, चणोट्ठिया।

कोण्ण पुं [दे. कोण] घर का एक भाग, कोना।

कोतव न [कौतव] मूषक के रोम से निष्पन्न सूता।

कोतुहल देखो कुऊहल।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दारू परोसने का भाण्ड।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कुतूहली।

कोत्तिअ पुं [कौत्रिक] भूमि-शयन करनेवाला वानप्रस्थ। न. एक प्रकार का मधु।

कोत्थ देखो कोच्छ = कौक्ष।

कोत्थर न [दे] विज्ञान। कोटर।

कोत्थल पुं [दे] कुशूल। कोथली, थैला। °कारा स्त्री [°कारी] भौंरी।

कोत्थुभ, कोत्थुह, कोथुभ पुं [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्षःस्थल की मणि।

कोदंड पुं. धनुष।

कोदंडिम, कोदंडिय देखो कु-दंडिम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोदूसग देखो कोडूसग ।

कोद्दव देखो कुद्दव ।

कोद्दविया स्त्री [दे] मातृवाहा, क्षुद्र कीट-विशेष ।

कोद्दाल देखो कुद्दाल ।

कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] कुदारी ।

कोध पुं. इस नाम का एक राजा ।

कोप्प देखो कुप्प = कुप् ।

कोप्प पुं [दे] अपराध ।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर ।

कोप्पर पुं [कूर्पर] हाथ का मध्य भाग । नदी का तट ।

कोबेरी स्त्री [कौबेरी] विद्या-विशेष ।

कोभग पुं [कोभक] पक्षि-विशेष ।

कोमल वि. मृदु ।

कोमार वि [कौमार] कुमार-सम्बन्धी । कुमारी-सम्बन्धी । कुमारी में उत्पन्न । स्त्री. °रिया, °री । °भिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष ।

कोमारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष ।

कोमुइया स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी ।

कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा ।

कोमुई स्त्री [कौमुदी] शरद् ऋतु की पूर्णिमा । चाँदनी । इस नाम की एक नगरी । कार्त्तिक की पूर्णिमा । °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा । °महूसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष ।

कोमुदिया देखो कोमुइया ।

कोमुदी देखो कोमुई = कौमुदी ।

कोयव वि [कौतव] चूहे के रोमों से बना हुआ (वस्त्र) ।

कोयव वि [कौयव] 'कोयव' देश में निष्पन्न । देखो कोयवग ।

कोयवग, कोयवय पुं [दे] रजाई ।

कोयवी स्त्री [दे] रूई से भरा हुआ कपड़ा ।

कोरंग पुं [कोरङ्क] पक्षि-विशेष ।

कोरंट, कोरंटग पुं [कोरण्ट, °क] वृक्ष-विशेष । न. इस नाम का भृगुकच्छ (भडौंच) शहर का एक उपवन । कोरण्टक वृक्ष का पुष्प ।

कोरअ (शौ) देखो कउरव ।

कोरय, कोरव पुंन [कोरक] फलोत्पादक मुकुल, फल की कली ।

कोरव देखो कउरव ।

कोरविआ स्त्री [कौरव्या] देखो कोरव्वीया ।

कोरव्व पुंस्त्री [कौरव्य] कुरु-वंश में उत्पन्न । कौरव्य-गोत्रीय । पुं. आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त ।

कोरव्वीया स्त्री [कौरवीया] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ।

कोरिंट, कोरिंटय, कोरेंट देखो कोरंट ।

कोल पुं [दे] ग्रीवा ।

कोल पुं [क्रोड] सूअर । गोद ।

कोल पुं. देश-विशेष । काष्ठ-कीट । शूकर । मूषिक के आकार का एक जन्तु । अस्त्र-विशेष । मनुष्य की एक नीच जाति । बदरी-वृक्ष । न. बदरी-फल । °पाग न [°पाक] नगर-विशेष जहाँ श्रीऋषभदेव भगवान् का मन्दिर है, यह नगर दक्षिण में है । °पाल पुं. धरणेन्द्र का लोकपाल । °सुणय, °सुणह पुंस्त्री [°शुनक] बड़ा शूकर, सूअर की एक जाति, जङ्गली वराह । शिकारी कुत्ता । स्त्री. °णिया । °वास पुंन. काष्ठ ।

कोल वि [कौल] शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी । तान्त्रिक मत से सम्बन्ध रखनेवाला । न. बदर-फलसम्बन्धी । °चुण्ण न [°चूर्ण] बेर का चूर्ण । °ट्ठिय न [°अस्थिक] बेर की गुठिया या गुठली ।

कोलंब पुं [दे] स्थाली । घर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोलंब पुं [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का नमा हुआ अग्रभाग ।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] कोल-जातीय स्त्री ।

कोलघरिय वि [कौलगृहिक] कुलगृह-सम्बन्धी, पितृगृह-सम्बन्धी ।

कोलज्जा स्त्री [दे] धान्य रखने का एक तरह का गर्त्त ।

कोलर देखो **कोटर** ।

कोलव न [कौलव] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण ।

कोलाल वि [कौलाल] कुम्भकार-सम्बन्धी । न. मिट्टी का पात्र ।

कोलालिय पुं [कौलालिक] मिट्टी का पात्र बेचनेवाला ।

कोलाह पुं [कोलाभ] साँप की एक जाति ।

कोलाहल पुं [दे] पक्षी की आवाज ।

कोलाहल पुं. शोरगुल, हल्ला ।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल-वाला, शोरगुलवाला ।

कोलिअ पुं [दे] एक अधम मनुष्य-जाति ।

कोलिअ पुं [दे] कोली, जुलाहा । जाल का कीड़ा, मकड़ा ।

कोलित्त न [दे] उल्मुक, लूका ।

कोलिन्न न [कौलीन्य] कुलीनता ।

कोलीकय वि [क्रोडीकृत] स्वीकृत ।

कोलीण न [कौलीन] जन-श्रुति । वि. वंश-परम्परागत । उत्तम कुल में उत्पन्न । तान्त्रिक मत का अनुयायी ।

कोलीर न [दे] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरुविन्द ।

कोलुण्ण न [कारुण्य] दया । °**पडिया**, °**वडिया** स्त्री [°प्रतिज्ञा] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा ।

कोलेज्ज पुं [दे] नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य आदि भरने का कोठा ।

कोलेय पुं [कौलेयक] श्वान ।

कोल्ल पुंन [दे] कोथला ।

कोल्लइर न [कोल्लकिर] नगर-विशेष ।

कोल्लपाग न [कोल्लपाक] दक्षिण देश का एक नगर, जहाँ श्रीऋषभदेव का मन्दिर है ।

कोल्लर पुं [दे] थाली, थरिया ।

कोल्ला देखो **कुल्ला** ।

कोल्लाग देखो **कुल्लाग** ।

कोल्लापुर न [कोल्लापुर] दक्षिण देश का एक नगर, महालक्ष्मी का स्थान ।

कोल्लासुर पुं [कोल्लासुर] इस नाम का एक दैत्य ।

कोल्लुग [दे] देखो **कोल्हुअ** ।

कोल्हाहल न [दे] बिम्बी-फल ।

कोल्हुअ पुं [दे] शृगाल । चरखी, ऊख से रस निकालने का कल ।

कोव सक [कोपय्] दूषित करना । कुपित करना ।

कोव पुं [कोप] गुस्सा ।

कोवण वि [कोपन] क्रोधी ।

कोवाय पुं [कोपक] अनार्य देश-विशेष ।

कोवास देखो **कोआस** ।

कोविअ वि [कोविद] निपुण, विद्वान् ।

कोविआ स्त्री [दे] सियारिन ।

कोविआर पुं [कोविदार] वृक्ष-विशेष ।

कोविणी स्त्री [कोपिनी] कोप-युक्त स्त्री ।

कोसण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम ।

कोस पुं [दे] कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ रक्त वस्त्र । समुद्र ।

कोस पुं [क्रोश] मार्ग की लम्बाई का परि-माण, दो मील ।

कोस पुं [कोश, ष] खजाना । तलवार की म्यान । कुड्मल । गोल । दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरह शपथ । अभिधानशास्त्र । पुंन. चषक । न. नगर-विशेष । °**पाण** न [°पान] शपथ । °**ाहिव** पुं [°ाधिप]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भण्डारी। कोसंब पुं [कोशाम्र] फल-वृक्ष-विशेष। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] खड्ग-विशेष।

कोसंबिया स्त्री [कौशाम्बिका] जैनमुनिगण की एक शाखा।

कोसंबी स्त्री [कौशाम्बी] वत्स देश की मुख्य-नगरी।

कोसग पुं [कोशक] साधुओं का एक चर्ममय उपकरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली।

कोसट्टइरिआ स्त्री[दे] चण्डी, पार्वती।

कोसय न [दे. कोशक] छोटा पान-पात्र।

कोसल न [कौशल] निपुणता, चातुरी।

कोसल न [दे] नीवी।

कोसल, कोसलग पुं [कोसल, °क] देश-विशेष। एक जैन महर्षि। कोसल देश का राजा। वि. कोशल देश में उत्पन्न। °पुर न. अयोध्या नगरी।

कोसला स्त्री. अयोध्या-नगरी। कोसल-देश।

कोसलिअ न [दे. कौशलिक] उपहार।

कोसलिआ स्त्री[दे. कौशलिका] ऊपर देखो।

कोसल्ल न [कौशल्य] निपुणता।

कोसल्ल न [दे] भेंट।

कोसल्लया स्त्री [कौशल्य] चतुराई।

कोसल्ला स्त्री [कौशल्या] दाशरथि राम की माता।

कोसल्लिअ न [दे. कौशलिक] भेंट।

कोसा स्त्री [कोशा] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या।

कोसिण वि [कोष्ण] थोड़ा गरम।

कोसिय न [कौशिक] मनुष्य का गोत्र-विशेष। बीसवें नक्षत्र का गोत्र। पुं. उल्लू। चण्ड-कोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था। वृक्ष-विशेष। इन्द्र। नकुल। खजानची, अनुराग। इस नाम का एक राजा। इस नाम का एक असुर। सपेरा। मज्जा। शृंगाररस। इस नाम का एक तापस। पुंस्त्री. कौशिक-गोत्रीय।

कोसिया स्त्री [कोशिका] भारतवर्ष की एक नदी। इस नाम की एक विद्याधर राजकन्या। चमड़े का जूता। देखो कोसी।

कोसियार पुं [कोशिकार] रेशम का कीड़ा। न. रेशमी वस्त्र।

कोसी स्त्री [कोशी] छीमी, फली। तलवार की म्यान। देखो कोसिया। गोलाकार एक वस्तु।

कोसुम्भ वि[कौसुम्भ] कुसुम्भ-सम्बन्धी (रंग)।

कोसुम वि [कौसुम] फूल-सम्बन्धी, फूल का बना हुआ।

कोसुम्ह देखो कुसुंभ।

कोसेअ, कोसेज्ज न [कौशेय] रेशमी वस्त्र। तसर का बना हुआ वस्त्र।

कोह पुं [क्रोध] गुस्सा। °मुंड वि. क्रोधरहित।

कोह पुं [कोथ] शीर्णता।

कोह पुं [दे. कोथ] कोथली, थैला।

कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध-युक्त।

कोहंगक पुं [कोभङ्गक] पक्षि-विशेष।

कोहंझाण न [क्रोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन।

कोहंड न [कूष्माण्ड] कुष्माण्डी-फल। न. देव-विमान-विशेष। पुं. व्यन्तरश्रेणीय देव-जाति-विशेष।

कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँड़े का गाछ।

कोहण वि [क्रोधन] क्रोधी। पुं. इस नाम का रावण का एक सुभट।

कोहल देखो कुऊहल।

कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कुतूहल-प्रेमी।

कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहँड़ा का गाछ।

कोहली देखो कोहंडी।

कोहल्ल देखो कोहल।

कोहल्ली स्त्री [दे] तवा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहल्ली देखो कोहंडी ।

कोहि } वि [क्रोधिन्] गुस्साखोर ।
कोहिल्ल }

कौरव } देखो कउरव ।
कौलव }

°क्किसिय देखो किसिय = कृषित ।

°क्कूर देखो कूर = कूर ।

°क्केर देखो °केर ।

°क्खंड देखो खंड ।

°क्खंभ देखो खंभ ।

°क्खम देखो खम ।

°क्खलण देखो खलण ।

°क्खिंसा देखो खिंसा ।

°क्खु देखो खु ।

°क्खुत्त देखो खुत्त ।

°क्खेड्डु देखो खेड्डु ।

°क्खेव देखो खेव ।

°क्खोडी देखो खोडी ।

ख

ख पुं. व्यंजन-वर्ण-विशेष । न. आकाश । इन्द्रिय । °ग पुं [°ग] पक्षी । मनुष्य की एक जाति जो विद्या के बल से आकाश में गमन करती है, विद्याधर लोक । देखो खय = खग । °गइ स्त्री [°गति] आकाश गति । कर्म-विशेष । °गामिणी स्त्री [°गामिनी] विद्या-विशेष । °पुप्फ न [°पुष्प] आकाश-कुसुम, असम्भावित वस्तु ।

खअ } सक [खव्] सम्पत्ति-युक्त करना ।
खउर }

खइ वि [क्षयिन्] नाशवाला । क्षय-रोगी ।

खइअ वि [क्षपित] नाशित ।

खइअ वि [खचित] व्याप्त । विभूषित ।

खइअ वि [खादित] भुक्त, ग्रस्त । आक्रान्त ।

खइअ वि [क्षयित] क्षीण ।

खइअ पुं [दे] हेवाक, स्वभाव ।

खइअ } पुं [क्षायिक] विनाश । वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-सम्बन्धी । कर्म-नाश से उत्पन्न ।
खइग }

खइत्त न [क्षैत्र] खेतों का समूह ।

खइया स्त्री [खदिका]सेका हुआ व्रीहि–धान ।

खइर पुं [खदिर] खैर का गाछ ।

खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-सम्बन्धी ।

खइव [दे] देखो खइअ ।

खउड पुं [खपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य ।

खउर अक [क्षुभ्] डर से विह्वल होना । सक. कलुषित करना ।

खउर वि [दे] कलुषित ।

खउर न [क्षौर] हजामत ।

खउर पुंन [खपुर] खैर वगैरह का चिकना रस, गोंद । °कढिणय न [°कठिनक] तापसों का एक प्रकार का पात्र ।

खउरिअ वि [क्षुब्ध] कलुषित ।

खउरिअ वि [क्षौरित] मुण्डित लुञ्चित, केश-रहित किया हुआ ।

खउरिअ वि [खपुरित] खरण्टित, चिपकाया हुआ ।

खउरीकय वि [खपुरीकृत] गोंद वगैरह की तरह चिकना किया हुआ ।

खओवसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का विनाश और कुछ का दबना ।

खओवसमिय वि [क्षयोपशमिक] क्षयोपशम से उत्पन्न । पुंन. क्षयोपशम ।

खंखर पुं [दे] पलाश-वृक्ष ।

खंगार पुं [खङ्गार] राजा खेंगार, सौराष्ट्र देश का एक भूपति । °गढ पुं. सौराष्ट्र का एक नगर, जूनागढ़ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंच सक [कृष्] खींचना । वश में करना ।

खंज अक [खञ्ज्] लंगड़ा होना ।

खंज वि [खञ्ज] पंगु, लूला । न. गाड़ी में लोहे के डंडे के पास बाँधा जाता सण आदि का गोल कपड़ा ।

खंजण पुं [खञ्जन] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष । खञ्जरीट । वृक्ष-विशेष ।

खंजण पुं [दे] कीचड़ । काजल । गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच ।

खंजर पुं [दे] सूखा हुआ पेड़ ।

खंजा स्त्री. छन्द-विशेष ।

खंड सक [खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना ।

खंड पुं [खण्ड] एक नरक-स्थान । °कव्व न [°काव्य] छोटा काव्यग्रन्थ ।

खंड (अप) देखो खग्ग ।

खंड पुंन [खण्ड] टुकड़ा, अंश । चीनी । पृथ्वी का एक हिस्सा । °घडग पुं [°घटक] भिक्षुक का जल-पात्र । °प्पधाया स्त्री [°प्रपाता] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा । °भेय पुं [°भेद] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथग्भाव । °मल्लय पुंन [°मल्लक] भिक्षापात्र । °सो अ [°शस्] टुकड़ा-टुकड़ा । °भेय देखो °भेय ।

खंड न [दे] मस्तक । दारू का बरतन ।

खंडई स्त्री [दे] कुलटा ।

खंडग पुंन [खण्डक] चौथा हिस्सा । खंडग न. शिखर-विशेष ।

खंडण न [खण्डन] विच्छेद, भञ्जन, नाश । कण्डन, धान्य वगैरह का छिलका अलग करना । वि. नाशक ।

खंडपट्ट पुं [खण्डपट्ट] जूआरी । धूर्त्त । अन्याय से व्यवहार करनेवाला ।

खंडरक्ख पुं [खण्डरक्ष] कोतवाल । चुङ्गी वसूल करनेवाला ।

खंडव न [खाण्डव] इन्द्र का वन-विशेष ।

खंडा स्त्री. [खण्ड] शक्कर ।

खंडा स्त्री. इस नाम की एक विद्याधर-कन्या ।

खंडाखंडि अ [खण्डशस्] टुकड़ा-टुकड़ा । °डीकय वि [कृत] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ ।

खंडामणिकंचण न [खण्डामणिकाञ्चन] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ।

खंडावत्त न [खण्डावर्त्त] इस नाम का एक विद्याधरनगर ।

खंडाहंड वि [खण्डखण्ड] टुकड़-टुकड़ा किया हुआ ।

खंडिअ पुं [खण्डिक] विद्यार्थी ।

खंडिअ पुं [दे] भाट । वि. अनिवार्य ।

खंडिआ स्त्री [खण्डिका] खण्ड, टुकड़ा ।

खंडिआ स्त्री [दे] बीस मन की नाप ।

खंडी स्त्री [दे] छोटा गुप्त द्वार । किले का छिद्र ।

खंडु (अप) देखो खग्ग ।

खंडुअ न [दे] बाज़ूबन्द ।

खंडुय देखो खंडग ।

खंत पुं [दे] पिता ।

खंत वि [क्षान्त] क्षमा-शील ।

खंतव्व वि [क्षन्तव्य] क्षमा-योग्य ।

खंति स्त्री [क्षान्ति[क्षमा, क्रोध का अभाव ।

खंतिया } स्त्री [दे] माता ।
खंती }

खंद पुं [स्कन्द] कार्त्तिकेय । राम का स्कन्द नाम का एक सुभट । °कुमार पुं. एक जैन मुनि । °ग्गह पुं [°ग्रह] स्कन्दकृत उपद्रव । ज्वर-विशेष । °मह पुं. स्कन्द का उत्सव । °सिरी स्त्री [°श्री] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम ।

खंदग } पुं [स्कन्दक] ऊपर देखो । एक जैन
खंदय } मुनि । एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ली थी।

खंदरुद्द न [स्कन्दरुद्र] शास्त्र-विशेष।

खंदिल पुं [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया।

खंध पुं [स्कन्ध] भीत। पुद्गलों का पिण्ड। समूह। कन्धा। पेड़ का धड़। छन्द-विशेष। °करणी स्त्री. साध्वियों को पहनने का उपकरण-विशेष। °मंत वि [°मत्] स्कन्ध-वाला। °वीय पुं [°बीज] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरह का गाछ। °सालि पुं [°शालिन्] व्यन्तर देवों की एक जाति।

खंधग्गि पुं [दे. स्कन्धाग्नि] स्थूल काष्ठों की आग।

खंधमंस पुं [दे] हाथ। बाहु।

खंधमसी स्त्री [दे] स्कन्द-यष्टि, हाथ।

खंधय देखो खंध।

खंधयट्ठि स्त्री [दे. स्कन्धयष्टि] हाथ।

खंधर पुं [कन्धर] गरदन।

खंधलट्ठि स्त्री [दे. स्कन्धयष्टि] हाथ।

खंधवार देखो खंधावार।

खंधाआर देखो खंधावार।

खंधार पुं ब. [स्कन्धार] देश-विशेष।

खंधार देखो खंधावार।

खंधाल वि [स्कन्धवत्] स्कन्धवाला।

खंधावार पुं [स्कन्धावार] सैन्य का पड़ाव। शिविर।

खंधीधार पुं [दे] बहुत गरम पानी की धारा।

खंप सक [सिच्] छिड़कना।

खंपणय न [दे] कपड़ा।

खंभ पुं [स्तम्भ] थम्भा।

खंभ सक [स्कभ्] क्षुब्ध होना।

खंभतित्थ न [स्तम्भतीर्थ] एक जैन तीर्थ, गुजरात का प्राचीन 'खंभणा' गाँव।

खंभल्लिअ वि [स्तम्भि]खम्भे से बाँधा हुआ।

खंभाइत्त न [स्तम्भादित्य] गूर्जर देश का प्राचीन नगर खम्भात।

खंभालण न [स्तम्भालगन] खम्भे से बांधना।

खक्खरग पुंन [दे] सूखी रोटी।

खग्ग पुं [खड्ग] गेंड़ा। पुंन. तलवार। °धेणुआ स्त्री [°धेनु] छूरी। °पुरा स्त्री. विदेह-वर्ष की स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी। °पुरो स्त्री. पूर्वोक्त ही अर्थ।

खग्गाखग्गि न [खड्गाखड्गि] तलवार की लड़ाई।

खग्गि पुं [खड्गिन्] गेंड़ा।

खग्गिअ पुं [दे] गाँव का मुखिया।

खग्गी स्त्री [खड्गी] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष।

खग्गूड वि [दे] धूर्त-सदृश। धर्मरहित, नास्तिकप्राय। निद्रालु। रसलम्पट।

खच सक [खच्] पावन करना। कसकर बाँधना।

खचिअ देखो खइअ = खचित। पिञ्जरित।

खच्चल पुं [दे] भालू।

खच्चोल पुं [दे] व्याघ्र।

खज्ज पुं [खर्ज] वृक्ष-विशेष।

खज्ज वि [खाद्य] खाने योग्य वस्तु। न. खाद्य-विशेष।

खज्ज वि [क्षय्य] जिसका क्षय किया जा सके वह।

खज्जिअ वि [दे] जीर्ण, सड़ा हुआ। उपालब्ध।

खज्जिर (अप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह।

खज्जू स्त्री [खर्जू] खुजली।

खज्जूर पुं [खर्जूर] खजूर का पेड़। न. खजूर का फल।

खज्जूरी स्त्री [खर्जूरी] खजूर का गाछ।

खज्जोअ पुं [दे] नक्षत्र।

खज्जोअ पुं [खद्योत] जुगनू।

खट्ट न [दे] कढ़ी। वि. अम्ल। °मेह पुं

[°मेघ] खट्टे जल की वर्षा।
खट्टंग न [दे] छाया।
खट्टंग न [खट्वाङ्ग] शिव का एक आयुध। चारपाई का पाया या पाटी। प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा माँगने का एक पात्र। तान्त्रिक मुद्रा-विशेष।
खट्टक्खड पुं [खट्वाक्षक] रत्नप्रभा नामक पृथिवी का एक नरकावास।
खट्टा स्त्री [खट्वा] पलंग। °मल्ल पुं. बीमारी की प्रबलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह।
खट्टिअ } [दे. खट्टिक] कसाई।
खट्टिक्क }
खड पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति। न. तृण।
खडइअ वि [दे] सङ्कुचित।
खडंग न [षडङ्ग] छः अंग, वेद के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °वि वि [°वित्] छहों अंगों का जानकार।
खडक्कय पुंन [खटत्कृत] आहट देना, सिकड़ी वगैरह की आवाज।
खडक्कार पुं [खटत्कार] ऊपर देखो।
खडक्किआ } स्त्री [दे] खिड़की।
खडक्की }
खडक्किय देखो खडक्कय।
खडक्खड पुं [खटत्खट] खट-खट आवाज।
खडक्खर देखो छडक्खर।
खडखड पुं. देखो खाडखड।
खडखडग वि [दे] छोटा और लम्बा।
खडट्ठोबिल पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति।
खडणा स्त्री [दे] गौ।
खडहड पुं[खटखट]साँकल वगैरह की आवाज।
खडहडी स्त्री [दे] जन्तु-विशेष, गिलहरी गिल्ली।
खडिअ देखो खट्टिअ।
खडिअ देखो खलिअ।
खडिअ पुं [दे] स्याही का पात्र।
खडिआ स्त्री [खटिका] लड़कों को लिखने की खड़ी या खड़िया।
खडी स्त्री [खटी] ऊपर देखो।
खडुआ स्त्री [दे] मोती।
खडुक्क अक [आविस्+भू] प्रकट होना, उत्पन्न होना।
खडुक्क } पुंस्त्री [दे] मुण्ड सिर पर उँगली
खडुक } का आघात।
खड्ड सक [मृद्] मर्दन करना।
खड्ड } न [दे] दाढ़ी-मूंछ। बड़ा महान्।
खड्डग } गर्त्त के आकारवाला।
खड्डा स्त्री [दे] आकर। पर्वत का गर्त्त। गड्ढा।
खड्डुया स्त्री [दे] ठोकर।
खड्डोलय पुं [दे] गड्ढा।
खण सक [खन्] खोदना।
खण पुं [क्षण] बहुत थोड़ा समय। °जोइ वि [°योगिन्] क्षणमात्र रहनेवाला। °भंगुर वि [°भङ्गुर] क्षणिक। °या स्त्री [°दा] रात्रि।
खणक्खण } अक [खणखणाय्] खणखण
खणखणखण } आवाज करना।
खणग वि [खनक] खोदनेवाला।
खणण न [खनन] खोदना।
खणय देखो खण = क्षण।
खणि स्त्री [खनि] खान।
खणिक्क } देखो खणिय = क्षणिक।
खणिग }
खणित्त य [खनित्र] खोदने का अस्त्र।
खणिय वि [क्षणिक] क्षण-विनश्वर। वि. फुरसत वाला, काम-धन्धा से रहित। °वाइ वि [°वादिन्] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर माननेवाला, बौद्धमत का अनुयायी।
खणी देखो खणि।
खणुसा स्त्री [दे] मानसिक पीड़ा।
खण्ण न [दे] खोदा हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्ण वि [खन्य] खोदने-योग्य ।

खण्णु देखो खाणु ।

खण्णुअ पुं [दे. स्थाणुक] कीलक, खूँटा ।

खत्त न [दे] खात । शस्त्र से तोड़ा हुआ । सेंध । गोबर । °खणग पुं [°खनक] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला । °खणण न [°खनन] सेंध लगाना । °मेह पुं [°मेघ] करीष के समान रसवाला मेघ ।

खत्त पुं [क्षत्र] क्षत्रिय ।

खत्त वि[क्षात्र]क्षत्रिय-सम्बन्धी । न. क्षत्रियत्व ।

खत्तय पुं [दे] खेत खोदनेवाला । सेंध लगाकर चोरी करनेवाला । राहुग्रह ।

खत्ति पुं [दे] एक म्लेच्छ-जाति ।

खत्ति पुंस्त्री [क्षत्रिन्] नीचे देखो ।

खत्तिअ पुंस्त्री [क्षत्रिय] राजन्य । °कुंडग्गाम पुं [कुण्डग्राम] नगर-विशेष । °कुंडपुर न [°कुण्डपुर] पूर्वोक्त ही अर्थ । °विज्जा स्त्री [°विद्या] धनुर्विद्या ।

खत्तिणी, खत्तियाणी स्त्री [क्षत्रियाणी] क्षत्रिय जाति की स्त्री ।

खद्द न [दे] प्रभूत लाभ ।

खद्ध वि [दे] भुक्त । बहुत । विशाल । अ. शीघ्र । °दाणिअ वि. [°दानिक] समृद्ध ।

खपुसा स्त्री [दे] एक प्रकार का जूता ।

खप्पर पुं [कर्पर]मनुष्य-जाति-विशेष । भिक्षा-पात्र । खोपड़ी । घट वगैरह का टुकड़ा ।

खप्पर, खप्पुर वि [दे] रूक्ष, निष्ठुर ।

खम सक [क्षम्] माफ करना । सहन करना ।

खम वि [क्षम] उचित । समर्थ ।

खमग पुं [क्षमक, क्षपक] तपस्वी जैन साधु ।

खमण न [क्षपण] तपश्चर्या, बेला, तेला आदि तप ।

खमण न [क्षपण, क्षमण] उपवास । पुं. तपस्वी जैन साधु ।

खमय देखो खमग ।

खमा स्त्री [क्षमा] पृथिवी । क्रोध का अभाव । °वइ पुं [°पति] राजा । °समण पुं [°श्रमण] ऋषि । °हर पुं [°धर] पर्वत । साधु ।

खमावणया, खमावणा स्त्री [क्षमणा] माफी माँगना ।

खम्म देखो खण = खन् ।

खम्मक्खम पुं [दे] संग्राम । मन का दुःख । पश्चात्ताप का निःश्वास ।

खय देखो खच ।

खय अक [क्षि] नष्ट होना ।

खय देखो खग । आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ । °राय पुं [°राज] गरुड-पक्षी । °वइ पुं [°पति] गरुड़ पक्षी ।

खय न [क्षत] घाव । वि. व्रणित । °यार स्त्री. पुं [°ाचार] शिथिलाचारी साधु या साध्वी ।

खय वि [खात] खोदा हुआ ।

खय पुं [क्षय] प्रलय, विनाश । राज-यक्ष्मा । °कारि वि [°कारिन्] नाश-कारक । °काल °गाल पुं [°काल] प्रलय-काल । °ग्गि पुं [°ाग्नि] प्रलय-काल की आग । °नाणि पुं [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी । °समय पुं. प्रलय-काल ।

खयंकर वि [क्षयकर] नाश-कारक ।

खयंतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक ।

खयर पुंस्त्री [खचर] आकाश में चलनेवाला, पक्षी । विद्याधर । °राय पुं [°राज] विद्याधरों का राजा ।

खयर देखो खइर = खदिर ।

खयरक्क वि [खादिरक] खदिर-सम्बन्धी ।

खयाल पुंन [दे] बाँस का वन ।

खर अक [क्षर्] झरना । नष्ट होना ।

खर वि. निष्ठुर, परुष । पुंस्त्री. गर्दभ । पुं. छन्द-विशेष । न. तिल का तेल । °कंट न [°कण्ट] बबूल वगैरह की शाखा । °कंड न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड–अंश-विशेष। °कम्म न [°कर्मन्] जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा काम। °कम्मिअ वि [°कर्मिन्] निष्ठुर कर्म करनेवाला। पुं. कोतवाल। °किरण पुं. सूरज। °दूसण पुं [°दूषण] इस नाम का एक विद्याधर राजा। °नहर पुं [°नखर] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी। °निस्सण पुं [°निःस्वन] इस नाम का रावण का एक सुभट। °मुह पुं [°मुख] अनार्य-देश-विशेष। अनार्य देश-विशेष का निवासी। °मुही स्त्री [°मुखी] वाद्य-विशेष। नपुंसक दासी। °यर वि [°तर] विशेष कठोर। पुं. इस नाम का एक जैन गच्छ। °सन्नय न [°संज्ञक] तिल का तेल। °साविआ स्त्री [°शाविका] लिपि-विशेष। °स्सर पुं [°स्वर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति।

खर वि [क्षर] विनश्वर।

खरंट सक [खरण्टय्] निर्भर्त्सना करना। लेप करना।

खरंट वि [खरण्ट] थूत्कारनेवाला। उपलिप्त करनेवाला। अशुचि पदार्थ।

खरंटण न [खरण्टन] निर्भर्त्सन। प्रेरणा।

खरंसूया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष।

खरड पुं [दे] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता आस्तरण।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना।

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य जाति।

खरडिअ वि [दे] रूखा। भग्न, नष्ट।

खरण न [दे] बबूल वगैरह की कण्टक-मय डाली।

खरफरुस पुं [खरपरुष] एक नरक स्थान।

खरय पुं [खरक] भगवान् महावीर के कान में से खीला (मांस कील) निकालनेवाला एक वैद्य।

खरय पुं [दे] नौकर। राहु।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना।

खरहिअ पुं [दे] पौत्र।

खरा स्त्री. नेवला की तरह भुज से चलनेवाला जन्तु-विशेष।

खरिअ वि [दे] भुक्त।

खरिआ स्त्री [दे] दासी।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष।

खरुट्ठी स्त्री [खरोष्ट्री] एक प्राचीन लिपि। गांधार लिपि।

खरुल्ल वि [दे] कठिन, कठोर। स्थपुट, विषम और ऊँचा।

खरोट्टिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष।

खल अक [स्खल्] गिरना। भूलना। रुकना। अपसरण करना।

खल अ. [खलु] पादपूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय।

खल वि. दुर्जन। न. धान साफ करने का स्थान। °पू वि. खलिहान या खलियान को साफ करनेवाला।

खलइअ वि [दे] खाली।

खलखल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना।

खलगंडिअ वि [दे] उन्मत्त।

खलणा स्त्री [स्खलना] निपतन। विराधना। अटकायत।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध।

खलहर } पुं [खलखल] नदी के प्रवाह की
खलहल } आवाज।

खला अक [दे]खराब करना, नुकसान करना।

खलिअ वि [स्खलित] रुका हुआ। गिरा हुआ, पतित। न. अपराध, भूल।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलिखचित।

खलिण पुंन [खलिन] लगाम। कायोत्सर्ग का एक दोष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खलिया स्त्री [**खलिका**] तिल वगैरह का तैल-रहित चूर्ण, खली ।

खलियार सक [**खली+कृ**] तिरस्कार करना । धूत्कारना । ठगना । उपद्रव करना ।

खली स्त्री [**दे. खली**] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरह का स्नेहरहित चूर्ण ।

खलीण न [**खलीन**] देखो **खलिण** । नदी का किनारा ।

खलु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय—अवधारण, निश्चय । पुनः । विशेष पादपूर्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है । °**खित्त** न [°**क्षेत्र**] जहाँ पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र ।

खलुंक पुं [**दे**] गली बैल, अविनीत बैल, कुशिष्य ।

खलुंकिज्ज पुं [**दे**] गली बैल सम्बन्धी । न. उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन ।

खलुग / **खलुय** } न [**खलुक**] गुल्फ, पाँव का मणि-बन्ध ।

खल्ल न [**दे**] बाड़ का छिद्र । विलास । वि. रिक्त ।

खल्ल वि[**दे**]जिसका मध्य भाग नीचा हो वह ।

खल्लइअ वि [**दे**] संकुचित, संकोच-युक्त । हर्षयुक्त ।

खल्लग / **खल्लय** } पुंन [**दे**] पत्ता । पत्र-पुट ।

खल्लग / **खल्लय** } पुंन [**दे**] पाँव का रक्षण करनेवाला चमड़ा, एक प्रकार का जूता । थैला ।

खल्ला स्त्री [**दे**] चर्म । खाल ।

खल्लाड देखो **खल्लीड** ।

खल्लिरा स्त्री [**दे**] संकेत ।

खल्लिहड (अप) देखो **खल्लीड** ।

खल्ली स्त्री [**दे**] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो ।

खल्लीड पुं [**खल्वाट**] गंजा, चंदला ।

खल्लूड पुं [**खल्लूट**] कन्द-विशेष ।

खव सक [**क्षपय्**] नाश करना । डालना, प्रक्षेप करना । उल्लंघन करना ।

खव पुं [**दे**] बायाँ हाथ । गर्दभ ।

खवग वि [**क्षपक**]नाश करनेवाला । पुं. तपस्वी जैन-मुनि । वि. क्षपकश्रेणि में आरूढ़ । °**सेढि** स्त्री [**श्रेणि**] क्षपण कर्मों के नाश की परिपाटी ।

खवडिअ वि [**दे**] स्खलित, स्खलन-प्राप्त ।

खवण / **खवणय** } न [**क्षपण**] क्षय । डालना, प्रक्षेप । पुं. जैन-मुनि ।

खवण देखो **खमण** ।

खवणा स्त्री [**क्षपणा**] अध्ययन, शास्त्र-प्रकरण ।

खवय पुं [**दे**] कन्धा ।

खवय देखो **खवग** ।

खवलिअ वि [**दे**] कुपित ।

खवल्ल पुं. मत्स्य-विशेष ।

खवा स्त्री [**क्षपा**] रात्रि । °**जल** न. आवश्याय, हिम ।

खविअ वि [**क्षपित**] विनाशित । उद्वेजित ।

खव्व पुं [**दे**] बायाँ हाथ । रासभ ।

खव्व वि [**खर्व**] वामन । लघु, थोड़ा ।

खव्वुर देखो **कब्बुर** ।

खव्वुल न [**दे**] मुख ।

खस अक [**दे**] खिसकना, गिर पड़ना ।

खस पुं. ब. अनार्य देश-विशेष । पुंस्त्री. खस देश में रहनेवाला मनुष्य ।

खसखस पुं. पोस्ता का दाना, उशीर, खस ।

खसफस अक [**दे**] खिसकना, गिर पड़ना ।

खसफसि वि [**दे**] अधीर ।

खसर देखो **कसर** = दे कसर ।

खसिअ देखो **खइअ** = खचित ।

खसु पुं [**दे**] रोग-विशेष, पामा ।

खह पुंन [**खह**] आकाश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खह देखो ख ।

खहयर देखो खयर ।

खहयरी स्त्री[खचरी]मादा पक्षी । विद्याधरी ।

खा / खाअ } सक [खाद्] भोजन करना, भक्षण करना ।

खाअ वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत । °कित्तीय वि [°कीर्त्तिक] यशस्वी । °जस वि [°यशस्] वही अर्थ

खाअ वि [खादित] भुक्त, भक्षित ।

खाअ वि [खात] खुदा हुआ । न. खुदा हुआ जलाशय । ऊपर में विस्तारवाली और नीचे में संकुचित ऐसी परिखा । ऊपर और नीचे समान रूप से खुदी हुई परिखा । खाई ।

खाइ स्त्री [खाति] परिखा ।

खाइ स्त्री [ख्याति] प्रसिद्ध ।

खाइ [दे] देखो खाइं ।

खाइअ देखो खइअ = क्षायिक ।

खाइआ स्त्री [दे. खातिका] खाई ।

खाइं अ [दे] वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय ।

खाइग देखो खाइअ = क्षायिक ।

खाइम न [खादिम] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरह खाद्य चीज ।

खाइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-सम्बन्धी, खैर का, कत्थई ।

खाउय न [खाद्यक] खाद्यपदार्थ ।

खाओवसम / खाओवसमिअ / खाओवसमिग } देखो खओवसमिय ।

खाडइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित ।

खाडखड पुं चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास ।

खाडहिला स्त्री [दे] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी ।

खाण पुं [दे] एक म्लेच्छजाति ।

खाण न [खादन] भोजन ।

खाण न [ख्यान] कथन ।

खाणि स्त्री [खानि] खान ।

खाणिअ वि [खानित] खुदवाया हुआ ।

खाणी देखो खाणि ।

खाणु / खाणुय } पुं [स्थाणु] ठूठा वृक्ष, अचल ।

खादि देखो खाइ = ख्याति ।

खाम सक [क्षमय्] माफी माँगना ।

खाम वि [क्षाम] दुर्बल । क्षीण, अशक्त ।

खामण न [क्षमण] खमाना ।

खामिय वि [क्षमित] खमाया हुआ । सहन किया हुआ । विलम्बित ।

खाय पु [खाद] पाँचवी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान ।

खायर देखो खाइर ।

खार पुं [क्षार] एक नरक-स्थान । भुजपरिसर्प की एक जाति । दुश्मनी । °डाह पुंन [°दाह] क्षार पकाने की भट्ठी । °तंत पुंन [°तन्त्र] आयुर्वेद का एक भेद, वाजीकरण ।

खार पुं [क्षार] क्षरण, झरना, संचलन । भस्म । खार । लवण-विशेष । लवण । जानवर-विशेष । सज्जी । वि. कटु या चरपरा स्वादवाला, कटु चीज । खारी चीज, नमकीन स्वादवाली वस्तु । °तउसी [°त्रपुषी] कटु त्रपुषी, वनस्पति-विशेष । °तिल्ल न [°तैल] खारे से संस्कृत तैल । °मेह पुं [°मेघ] क्षार रसवाले पानी की वर्षा । °वत्तिय वि [°पात्रिक] क्षार-पात्र में जिमाया हुआ । क्षार-पात्र का आधार-भूत । °वत्तिय वि [°वृत्तिक] खार में फेंका हुआ, खार से सींचा हुआ । °वावी स्त्री [°वापी] क्षार से भरी हुई वापी, कुँआ ।

खारंफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह ।

खारदूसण वि. खरदूषण का ।

खारय न [दे] कली ।

खारायण पुं [क्षारायण] ऋषि-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माण्डव्यगोत्र के शाखाभूत एक गोत्र ।

खारि स्त्री [खारी] एक प्रकार की नाप, सेर की तौल ।

खारिंभरी स्त्री [खारिम्भरी] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर दूध देनेवाली ।

खारिक्क न [दे] फल-विशेष, छुहारा ।

खारिय वि [क्षारित] स्रावित । पानी में घिसा हुआ ।

खारी देखो खारि ।

खारुगणिय पुं [क्षारुगणिक] म्लेच्छ देश-विशेष । उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति ।

खारोदा स्त्री [क्षारोदा] नदी-विशेष ।

खाल सक [क्षालय्] धोना ।

खाल स्त्रीन [दे] मोरी ।

खावण न [ख्यापन] प्रतिपादन ।

खावणा स्त्री [ख्यापना] प्रसिद्धि ।

खावियंत वि [खाद्यमान] जिसको खिलाया जाता हो वह ।

खावियग वि [खादितक] जिसको खिलाया गया हो वह ।

खावेंत वि [ख्यापयत्] प्रख्याति करता हुआ ।

खास अक [कास्] खाँसना ।

खास पुं [कास] खाँसी की बीमारी ।

खासिअ पुं [खासिक] म्लेच्छ देश-विशेष । उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति ।

खि अक [क्षि] क्षीण होना ।

खिइ स्त्री [क्षिति] पृथिवी । °**गोयर** पुं [°गोचर] मनुष्य । °**पइट्ठ** न [°प्रतिष्ठ] नगर-विशेष । °**पइट्ठिय** न [°प्रतिष्ठित] इस नाम का एक नगर । राजगृह नाम का नगर । °**सार** पुं. इस नाम का एक दुर्ग ।

खिख अक [सिङ्खय्] खिंखि आवाज करना ।

खिंखिणिया स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका ।

खिंखिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो ।

खिंखिणी स्त्री [दे] शृगाली ।

खिंग पुं. व्यभिचारी ।

खिंस सक [खिंस्] निन्दा करना ।

खिक्खिंड पुं [दे] गिरगिट, सरट ।

खिखिखयंत वि [खिखीयमान] 'खि-खि' आवाज करता ।

खिक्खिरी स्त्री [दे] डोम वगैरह का स्पर्श रोकने की लकड़ी ।

खिच्च पुंन [दे] खीचड़ी, कृसरा ।

खिज्ज अक [खिद्] अफसोस करना । उद्विग्न होना, थक जाना ।

खिज्जणिया स्त्री [खेदनिका] खेद-क्रिया, अफसोस ।

खिज्जिअ न [दे] उपालम्भ ।

खिज्जिअ वि [खिन्न] खेद-प्राप्त । न. खेद । प्रणय-जन्य रोष ।

खिज्जिअय न [खेदितक] छन्द-विशेष ।

खिड्ड न [खेल] क्रीड़ा, मजाक ।

खिण्ण वि [खिन्न] खेदप्राप्त । श्रान्त ।

खिण्ण देखो खीण ।

खित्त वि [क्षिप्त] फेंका हुआ । प्रेरित । °**इत्त**, °**चित्त** वि [°चित्त] भ्रान्त-चित्त, पागल । °**मण** वि [मनस्] चित्त-भ्रमवाला ।

खित्त देखो खेत्त । °**देवया** स्त्री [°देवता] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव । °**वाल** पुं [पाल] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव ।

खित्तज पुं [क्षेत्रज] गोद लिया हुआ लड़का ।

खित्तय न [क्षिप्तक] छन्द-विशेष ।

खित्तय न [दे] अनर्थ, नुकसान । वि. प्रज्वलित ।

खित्तअ वि [क्षैत्रिक] क्षेत्र-सम्बन्धी । पुं. व्याधि-विशेष ।

खिप्प अक [क्लृप्] समर्थ होना । दुर्बल होना ।

खिप्प वि [क्षिप्र] शीघ्र । °**गइ** वि [°गति]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शीघ्र गतिवाला । पुं. अमितगति इन्द्र का एक लोकपाल ।

खिप्पं अ [क्षिप्रम्] तुरन्त ।

खिप्पामेव अ [क्षिप्रमेव] शीघ्र ही, तुरन्त ।

खिमा स्त्री [क्षमा] पृथिवी ।

खिर अक [क्षर्] गिरना, गिर पड़ना । टपकना ।

खिल न [खिल] ऊसर जमीन ।

खिलीकरण न [खिलीकरण] खाली करना ।

खिल्ल सक [कीलय्] रोकना । डालना ।

खिल्ल अक [खेल्] क्रीड़ा करना, तमाशा करना ।

खिल्ल पुं [दे] फोड़ा, फुनसी ।

खिल्लण न [खेलन] खिलौना ।

खिल्लहड } पुं [दे. खिल्लहड] कन्द-विशेष ।
खिल्लहल }

खिल्लुहडा स्त्री [दे] कन्द-विशेष ।

खिव सक [क्षिप्] फेंकना । प्रेरना । डालना । इधर-उधर चलाना ।

खिव्व देखो खिव ।

खिस अक [दे] सरकना, खिसकना ।

खीण देखो खिण्ण = खिन्न ।

खीण वि [क्षिण] नष्ट, विच्छिन्न । कृश । °दुह वि [°दुःख] दुःखरहित । °मोह वि. जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह । न. बारहवाँ गुण-स्थानक । °राग वि. वीतराग । पुं. तीर्थङ्कर देव ।

खीयमाण वि [क्षीयमाण] जिसका क्षय होता जाता हो वह ।

खीर न [क्षीर] बेला, दो दिन का उपवास । °डिडिर पुं.देव-विशेष । °डिडिरा स्त्री-देवी-विशेष । °वर पुं. समुद्र-विशेष । द्वीप-विशेष ।

खीर न [क्षीर] दूध । पानी । पुं. क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव । क्षीर-समुद्र । कयंब पुं [°कदम्ब] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय। °काओलीस्त्री [°काकोली] वनस्पति-विशेष, क्षीरविदारी । °जल पुं. क्षीर-समुद्र । °जलनिहि पुं [°जलनिधि] वही पूर्वोक्त अर्थ । °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] दूधवाला पेड़, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति । °धाई स्त्री [धात्री] दूध पिलानेवाली दाई । °पूर पुं. उबलता हुआ दूध । °प्पभ पुं [°प्रभ] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव । °मेह पुं [°मेघ] दूध-समान स्वादवाले पानी की वर्षा । °वई स्त्री [°वती] प्रभूत दूध देनेवाली । °वर पुं. द्वीप-विशेष । °वारि न. क्षीर समुद्र का जल । °हर पुं [°गृह, °धर] क्षीर-सागर । °सव पुं [°श्रव] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो । ऐसी लब्धिवाला जीव ।

खीरइय वि [क्षीरकित] सञ्जात-क्षीर ।

खीरिणी स्त्री [क्षीरिणी] दूधवाली । वृक्ष-विशेष ।

खीरी स्त्री [क्षैरेयी] खीर ।

खीरोअ पुं [क्षीरोद] क्षीरसागर ।

खीरोआ स्त्री [क्षीरोदा] इस नाम की एक नदी ।

खीरोद देखो खीरोअ ।

खीरोदा देखो खीरोआ ।

खील } पुं [कील, °क] खीला, खूंटा ।
खीलग } °मग्ग पुं [°मार्ग] मार्ग-विशेष,
खीलय } जहाँ धूली ज्यादा रहने से खूंटे के निशान बनाये गये हों ।

खीलावण न [क्रीडन] खेल कराना, क्रीड़ा कराना । °धाई स्त्री [°धात्री] खेलकूद करानेवाली दाई ।

खीलिया देखो कीलिआ ।

खीलिया स्त्री [कीलिका] छोटी खूंटी ।

खीव पुं [क्षीब] मदोन्मत्त, मस्त ।

खु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय— निश्चय । वितर्क, विचार । सन्देह । सम्भा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बना। विस्मय।

खु° देखो खुहा।

खुइ स्त्री [क्षुति] छींक, छींक का निशान।

खुइय वि [दे] विच्छिन्न। विध्यात। शान्त।

खुंखुणय पुं [दे] नाक का छिद्र।

खुंखुणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला।

खुंगाह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति।

खुंट पुं [दे] खूंट, खूंटी। °मोडय वि [°मोटक] खूँटे को मोड़ने वाला, उससे छूट-कर भाग जानेवाला। पुं. इस नाम का एक हाथी।

खुंडय वि [दे] स्खलित।

खुंद (शौ) सक [क्षुद्] जाना। पीसना, कूटना।

खुंद अक [क्षुध्] भूख लगना।

खुंपा स्त्री [दे] वृष्टि रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण।

खुंभण वि [क्षोभण] क्षोभ उपजानेवाला।

खुज्ज अक [परि+अस्] फेंकना। निरास करना।

खुज्ज } वि [कुब्ज] कूबड़ा। वामन।
खुज्जय } टेढ़ा। एक पार्श्व से हीन। न. संस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार।

खुज्जिय वि [कुब्जिन्] कूबड़ा।

खुट्ट सक [तुड] तोड़ना, खण्डित, टुकड़ा करना। अक. खूटना, क्षीण होना। टूटना, त्रुटित होना।

खुट्ट वि [दे] त्रुटित, खण्डित, छिन्न।

खुड देखो खुट्ट = तुड्।

खुडक्क देखो खुडुक्क = (दे)।

खुडिअ वि [खण्डित] त्रुटित, खण्डित, विच्छिन्न।

खुडुक्क सक [अप+क्रमय्] दूर करना।

खुडुक्क अक [दे] नीचे उतरना। स्खलितहोना। शल्य की तरह चुभना। गुस्सा से मौन रहना।

खुडुक्किअ वि [दे] शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ। रोषमूक, गुस्सा से मौन धारण करनेवाला। स्त्री. °आ।

खुड्ड } वि[दे. क्षुद्र, क्षुल्लक]लघु, छोटा।
खुड्डग } अधम दुष्ट। पुं. छोटा साधु, लघु शिष्य। पुंन. अंगूठी।

खुड्डमड्डा अ [दे] अत्यन्त। फिर-फिर।

खुड्डय देखो खुड्ड।

खुड्डाग } देखो खुड्डग। 'णियंठ न
खुड्डाय } [°नैर्ग्रन्थ] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन।

खुड्डिअ न [दे] मैथुन।

खुड्डिआ स्त्री [दे. क्षुद्रिका] छोटी। डाबर, नहीं खुदा हुआ छोटा तलाव।

खुणुक्खुडिआ स्त्री [दे] नासिका।

खुण्ण वि [क्षुण्ण] मर्दित। चूर्णित। मग्न।

खुण्ण वि [दे] परिवेष्टित।

खुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ।

°खुत्तो अ [°कृत्वस्] बार, दफा।

खुद्द वि.[क्षुद्र] तुच्छ, नीच, दुष्ट।

खुद्द न [क्षौद्रय] क्षुद्रता, तुच्छता।

खुद्दिमा स्त्री [क्षुद्रिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना।

खुद्ध वि [क्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त।

खुधा स्त्री [क्षुध्] भूख।

खुधिय वि [क्षुधित] भूखा।

खुप्प सक [प्लुष्] जलाना।

खुप्प अक [मस्ज्] डूबना।

खुप्पिवासा स्त्री [क्षुत्पिपासा] भूख और प्यास।

खुब्भ अक [क्षुभ्] क्षोभ पाना, नीचे डूबना।

खुभ अक [क्षुभ्] डरना, घबड़ाना।

खुभिय वि[क्षुभित]क्षोभ-युक्त। न. घबड़ाहट। कलह।

खुम्म अक [क्षुध्] भूख लगना।

खुम्मिय वि [दे] नमित।

खुय न [क्षुत] छींक।

खुर पुं. जानवर के पाँव का नख।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खुर पुं [क्षुर] उस्तरा । °पत्त न [°पत्र] छूरा ।

खुरप्प पुन [क्षुरप्र] एक तरह का जहाज । पुं. घास काटने का अस्त्र-विशेष । शर-विशेष ।

खुरसाण पुं [खुरशान] देश-विशेष । खुरशान देश का राजा ।

खुरहखुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप ।

खुरासाण देखो खुरसाण ।

खुरि वि [खुरिन्] खुरवाला जानवर ।

खुरु पुं [खुरु] आयुध-विशेष ।

छुरुडुक्खुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप ।

खुरुप्प देखो खुरप्प ।

खुल क [दे] वह गाँव जहाँ साधुओं को भिक्षा कम मिलती हो या भिक्षा में घृत आदि न मिलता हो ।

खुल देखो खुम्भ ।

खुलिअ देखो खुडिअ ।

खुलुह पुं [दे] गुल्फ, फीली ।

खुल्ल न [दे] कुटी ।

खुल्ल वि [क्षुल्ल] छोटा, लघु, क्षुद्र । पुं. द्वीन्द्रिय जीव-विशेष ।

खुल्लग देखो खुड्डुग ।

खुल्लण (अप) देखो खुड्डु ।

खुल्लय वि [क्षुल्लक] क्षुद्र, छोटा । कदर्पक-विशेष, कौड़ी ।

खुल्लासय पुं [दे] खलासी, जहाज का कर्म-चारी-विशेष ।

खुल्लिरी स्त्री [दे] सङ्केत ।

खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा वृक्ष ।

खुवय पुं [दे] कँटीला घास ।

खुव्व देखो खुभ ।

खुव्वय न [दे] पत्ते का पुड़वा, दोना ।

खुह देखो खुभ ।

खुहा स्त्री [क्षुध] बुभुक्षा । °परिसह, °परी-सह पुं [°परिषह °परीषह] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना ।

खूण न [क्षूण] नुकसान । अपराध । न्यूनता ।

खेअ सक [खेदय्] खिन्न करना । खेद उप-जाना ।

खेअ पुं [खेद] उद्वेग । तकलीफ, परिश्रम । संयम । थकावट । °ण्ण वि [°ज्ञ] निपुण जानकार ।

खेअ देखो खेत्त ।

खेअ पुं [क्षेप] त्याग, मोचन ।

खेअण न [खेदन] खेद, उद्वेग । वि. खेद उपजानेवाला ।

खेअर देखो खयर । °हिव पुं [°धिप] विद्याधरों का राजा । °हिवइ पुं [°धिपति] विद्याधरों का राजा ।

खेअरिंद पुं [खेचरेन्द्र] खेचरों का राजा ।

खेअरी देखो खहयरी ।

खेआलु वि [दे] मन्द, आलसी । असहिष्णु, ईर्ष्यालु ।

खेचर देखो खेअर ।

खेज्जणा स्त्री [खेदना] खेद-सूचक वाणी, खेद ।

खेड सक [कृष्] खेती करना ।

खेड सक [खेटय्] हाँकना ।

खेड न [खेट] धूली का प्राकारवाला नगर । नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर । पुं. मृगया ।

खेडग न [खेटक] फलक, ढ़ाल ।

खेडण न [खेटन] खदेड़ना, पीछे हटाना ।

खेडणअ न [खेलनक] खिलौना ।

खेडय पुं [क्ष्वेटक] विष । ज्वर-विशेष ।

खेडय वि [स्फेटक] नाशक ।

खेडय न [खेटक] छोटा-गाँव ।

खेडावग वि [खेलक] तमासगिर ।

खेडिअ पुं [स्फेटिक] नश्वर । अनादरवाला ।

खेड्डु अक [रम्] क्रीड़ा करना ।

खेड्डु, खेड्डुय न [खेल] खेल, तमाशा, मजाक । बहाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेड्डा स्त्री [क्रीडा] खेल, तमाशा ।
खेड्डिया स्त्री [दे] बारी ।
खेत्त पुंन [क्षेत्र] आकाश । खेत । जमीन । देश, गाँव, नगर वगैरह स्थान । भार्या । °कप्प पुं [°कल्प] देश का रिवाज । क्षेत्र-सम्बन्धी अनुष्ठान । ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो । °पलिओवम न [°पल्योपम] काल की नाप-विशेष । °रिय पुं [°ार्य] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य । देखो खित्त = क्षेत्र ।
खेत्तय पुं [क्षेत्रक] राहु ।
खेम न [क्षेम] कुशल, कल्याण । प्राप्त वस्तु का परिपालन । वि. कुशलता-युक्त, हितकर, उपद्रव-रहित । पुं. पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य । °पुरी स्त्री. नगरी-विशेष ।
खेमंकर पुं. कुलकर पुरुष-विशेष । ऐरवत । क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष । ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि । वि. कल्याण-कारक ।
खेमंधर पुं [क्षेमन्धर] कुलकर पुरुष-विशेष । ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष । वि. क्षेम-धारक, उपद्रव-रहित ।
खेमय पुं [क्षेमक] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्तकृद् जैनमुनि ।
खेमराय पुं [क्षेमराज] राजा कुमारपाल का एक पूर्व-पुरुष ।
खेमलिज्जिया स्त्री [क्षेमलिया] जैनमुनि-गण की एक शाखा ।
खेमा स्त्री [क्षेमा] विदेह वर्ष की एक नगरी । क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष ।
खेर पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति ।
खेरि स्त्री [दे] परिशाटन, नाश । उद्वेग । उत्सुकता ।
खेल अक [खेल्] खेलना, तमाशा करना ।
खेल पुं [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष ।
खेल वि [खेल] खेल करनेवाला, नाटक का पात्र ।
खेल पुं [श्लेष्मन्] कफ ।
खेलण } न [खेलन, °क] क्रीड़ा । खिलौना ।
खेलणय }
खेलोसहि स्त्री [श्लेष्मौषधि] लब्धि-विशेष, जिससे श्लेष्म ओषधि का काम देने लगे । वि. ऐसी लब्धिवाला ।
खेल्ल देखो खेल = खेल् ।
खेल्ल देखो खेल = श्लेष्मन ।
खेल्लण देखो खेलण ।
खेल्लावण } न [खेलनक] क्रीड़ा कराना ।
खेल्लावणय } न. खिलौना । °धाई स्त्री [°धात्री] खेल करानेवाली दाई ।
खेल्लिअ न [दे] हसित ।
खेल्लुड देखो खल्लूड ।
खेव पुं [क्षेप] फेंकना । स्थापना । संख्या-विशेष ।
खेव पुं [क्षेप] देरी ।
खेव पुं [खेद] खेद, क्लेश ।
खेवण न [क्षेपण] प्रेरण ।
खेवय वि [क्षेपक] फेंकनेवाला ।
खेह पुंन [दे] रज ।
खोअ पुं [क्षोद] इक्षु । इक्षुवर द्वीप । इक्षुरस समुद्र ।
खोइय वि [दे] विच्छेदित ।
खोउदय पुं [क्षोदोदक] समुद्र-विशेष ।
खोओद देखो खोदोद ।
खोंटग } पुं [दे] खूँटी, खूँटा ।
खोंटय }
खोक्ख अक [खोख्] बन्दर की आवाज करना ।
खोक्खा } स्त्री [खोखा] वानर की आवाज ।
खोखा }
खोखुब्भ अक [चोक्षुभ्य्] अत्यन्त भयभीत होना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खोज्ज पुंन [दे] मार्ग-चिह्न ।

खोट्ट सक [दे] खटखटाना । ठकठकाना । ठोकना ।

खोट्टिय [दे] बनावटी लकड़ी ।

खोट्टी स्त्री [दे] चाकरानी ।

खोड पुं [स्फोट] फोड़ा ।

खोड पुं [दे] सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा । वि. धार्मिक, धर्मिष्ठ । लंगड़ा । सियार । जगह । प्रस्फोटन, प्रमार्जन । न. राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरह द्रव्य ।

खोडपज्जालि पुं [दे] स्थूल काष्ठ की अग्नि ।

खोडय पुं [क्ष्वोटक] नख से चर्म का निष्पीड़न ।

खोडय पुं [स्फोटक] फुंसी ।

खोडिअ पुं [खोटिक] गिरनार पर्वत का क्षेत्रपाल देवता ।

खोडी स्त्री [दे] बड़ा काष्ठ । काष्ठ की एक प्रकार की पेटी । नकली लकड़ी ।

खोणि स्त्री [क्षोणि] पृथिवी । °वई पुं [°पति] राजा ।

खोणिंद पुं [क्षोणीन्द्र] भूमिपति ।

खोणी देखो खोणि ।

खोद पुं [क्षोद] चूर्णन, विदारण । इक्षु-रस । °रस पुं. समुद्र-विशेष । °वर पुं. द्वीप-विशेष ।

खोद पुं [क्षोद] चूर्ण, बुकनी ।

खोदोअ } पुं [क्षोदोद] समुद्र-विशेष ।
खोदोद } जिसका पानी इक्षु-रस के तुल्य मधुर है । मधुर पानीवाली वापी । न. इक्षु-रस के समान मीठा जल ।

खोद्द न [क्षौद्र] शहद ।

खोभ सक [क्षोभय्] विचलित करना । धैर्य से च्युत करना । आश्चर्य उपजाना । रंज पैदा करना ।

खोभ पुं [क्षोभ] सम्भ्रम । इस नाम का एक रावण का सुभट ।

खोभण न [क्षोभण] क्षोभ उपजाना ।

खोम } न [क्षौम] कपास का बना हुआ
खोमग } वस्त्र । सन का बना हुआ वस्त्र । रेशमीवस्त्र ।वि.अतसी-सम्बन्धी,सन-सम्बन्धी । °पसिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वस्त्र में देवता का आह्वान किया जाता है ।

खोमिय न [क्षौमिक] कपास का वस्त्र । सन का वस्त्र । रेशम-सम्बन्धी, सन-सम्बन्धी ।

खोय देखो खोद ।

खोर } न [दे] कटोरा ।
खोरय }

खोल पुं [दे] छोटा गधा । वस्त्र का एक देश । मद्य का निचला कीट-कर्दम ।

खोल पुं [दे] गुप्तचर ।

खोल्ल न [दे] कोटर ।

खोसलय वि [दे] दन्तुल ।

खोसिय वि [दे] जीर्ण-प्राय किया हुआ ।

खोह देखो खोभ = क्षोभय् ।

ग

ग पुं[ग]व्यञ्जन-वर्ण-विशेष, इसका स्थान कण्ठहै। °ग वि [°ग] जानेवाला । प्राप्त होनेवाला ।

गअवंत वि [गतवत्] गया हुआ ।

गइ स्त्री [गति] ज्ञान । भेद । चलन, देशान्तर-प्राप्ति, जन्मान्तर-प्राप्ति । देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि । °तस पुं [°त्रस] अग्नि और वायु के जीव । °नाम न [°नामन्] देवादि-गति का कारणभूत कर्म । °प्पवाय पुं [°प्रपात] गति की नियतता । ग्रन्थांश-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष।

गइंद पुं [गजेन्द्र] ऐरावण हाथी। श्रेष्ठ हाथी। °पय न [°पद] गिरनार पर्वत का एक जल-तीर्थ।

गउ } पुं [गो] बैल, साँड़। °पुच्छ पुंन.
गउअ } बैल की पूँछ। बाण-विशेष।

गउअ पुं [गवय] गो-तुल्य आकृतिवाला जंगली पशु-विशेष, नील गाय।

गउआ स्त्री [गो] गैया।

गउड पुं [गौड] बंगाल का पूर्वी भाग। गौड़ देश का निवासी। गौड़ देश का राजा। °वह पुं [°वध] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रन्थ।

गउण वि [गौण] अप्रधान।

गउणी स्त्री [गौणी] शब्द की एक शक्ति।

गउरव देखो गारव।

गउरी स्त्री [गौरी] पार्वती। गौर वर्णवाली स्त्री। स्त्री-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] कार्तिकेय।

गंअ देखो गय = गत।

गंग पुं [गङ्ग] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य। °दत्त पुं. एक जैन मुनि, जो षष्ठ वासुदेव के पूर्वजन्म के गुरू थे। नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम। इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी। °दत्ता स्त्री एक सार्थवाह की स्त्री का नाम।

गंग° देखो गंगा। °प्पवाय पुं [°प्रपात] हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहाँ से गंगा निकलती है। °सोअ पुं [°स्रोतस्] गंगा नदी का प्रवाह।

गंगली स्त्री [दे] मौन।

गंगा स्त्री [गङ्गा] स्वनाम-प्रसिद्ध नदी। स्त्री-विशेष। गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष। गंगा नदी की अधिष्ठायिका देवी। भीष्मपितामह की माता का नाम। °कुंड न [°कुण्ड] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहाँ से गंगा निकलती है। °कूड न [°कूट] हिमाचल पर्वत का एक शिखर। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष, जहाँ गंगा-देवी का भवन है। °देवी स्त्री. गंगा की अधिष्ठायिका देवी। °वत्त पुं [°वर्त्त] आवर्त्त-विशेष। °सय न [°शत] गोशालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण। °सागर पुं. प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहाँ गंगा समुद्र में मिलती है।

गंगेअ पुं [गाङ्गेय] गंगा का पुत्र, भीष्म-पितामह। द्विक्रिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य। एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्वनाथ के वंश के थे।

गंछ } पुं [दे] वरुड़, इस नाम की एक
गंछय } म्लेच्छ जाति।

गंछिय पुं [दे] तेली। घाँची।

गंज सक [गञ्ज] तिरस्कार करना। उल्लंघन करना। मर्दन करना। पराभव करना। मारना, पीडित करना।

गंज पुं [दे] गाल।

गंज पुं [गञ्ज] एक प्रकार की खाद्य वस्तु। °साला स्त्री [°शाला] तृण, लकड़ी वगैरह ईन्धन रखने का स्थान।

गंजण न [गञ्जन] अपमान।

गंजण वि [गञ्जन] मर्दनकर्ता।

गंजा स्त्री [गञ्जा] मद्य की दूकान।

गंजिअ पुं [गाञ्जिक] दारू बेचने वाला कलाल।

गंजिल्ल वि [दे] वियोग-प्राप्त, वियुक्त। पागल।

गंजुल्लिय वि [दे] रोमाञ्चित।

गंजोल वि [दे] व्याकुल।

गंजोल्लिअ वि [दे] रोमाञ्चित। गुदगुदी।

गंठ सक [ग्रंथ्] गठना, गूँथना। पिरोना, बनाना।

गंठ देखो गंथ।

गंठि स्त्री [गृष्टि] एकबार व्यायी हुई गौ।

गंठि पुंस्त्री [ग्रन्थि] गाँठ, जोड़। बाँस आदि की गिरह, पर्व। गठरी। रोग-विशेष। राग-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वेष का निबिड़ परिणाम-विशेष। °छेअ पुं [°च्छेद] गाँठ तोड़नेवाला, जेबकतरा। °भेय पुं [°भेद] ग्रन्थि का भेदन। °भेयग वि [°भेदक] ग्रन्थि को भेदनेवाला। पुं. चोर-विशेष। °वण्ण पुं [°पर्ण] सुगन्धि गाछ-विशेष। °सहिय वि [°सहित] गाँठ-युक्त। न प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष।

गंठिम न [ग्रन्थिम] ग्रन्थन से बनी हुई माला वगैरह। गुल्म-विशेष।

गंठिय वि [ग्रन्थिक] गाँठवाला।

गंठिल्ल वि [ग्रन्थिमत्] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ-वाला।

गंड पुं [दे] जङ्गल। कोतवाल। छोटा मृग। नाई। न. गुच्छ, समूह।

गंड पुंन [गण्ड] कपोल। गण्डमाला, रोग। हाथी का कुम्भस्थल। स्तन। इक्षु-समूह। छन्द-विशेष। स्फोटक। ग्रन्थि। °भेअ, भेअअ पुं [°भेदक] जेबकतरा। °माणिया स्त्री [°माणिका] धान्य की एक प्रकार की नाप। °माला स्त्री. रोग-विशेष। °यल न [°तल] कपोल-तल। °लेहा स्त्री [°लेखा] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरह की छटा। °वच्छा स्त्री [°वक्षस्का] पीन स्तनों से युक्त छातीवाली स्त्री। °वाणिया स्त्री [°पाणिका] बाँस का पात्र-विशेष। °वास पुं [°पार्श्व] गाल का पार्श्व-भाग।

गंड न [गण्ड] दोष, दाग। °माणिया स्त्री [°मानिका] पात्रविशेष। °विइवाय पुं [°व्यतिपात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग।

गंडइया स्त्री [गण्डकिका] नदी-विशेष।

गंडय पुं [गण्डक] गेंडा। उद्घोषणा करने-वाला पुरुष।

गंडली स्त्री [दे] गँडेरी।

गंडा देखो गंठि = ग्रन्थि।

गंडाग पुं [गण्डक] हजाम।

गंडि पुं [गण्डि] जन्तु-विशेष।

गंडिया स्त्री [गण्डिका] ऊख का टुकड़ा। सोनार का एक उपकरण। एक अर्थ के अधिकारवाली ग्रन्थ-पद्धति।

गंडिल देखो गंधिल।

गंडिलावई देखो गंधिलावई।

गंडी स्त्री [गण्डी] सोनार का एक उपकरण। कमल की कर्णिका। °तिंदुग न [°तिन्दुक] यक्ष-विशेष। °पय पुं [°पद] हाथी वगैरह चतुष्पद जानवर। °पोत्थय पुंन [°पुस्तक] पुस्तक-विशेष।

गंडीरी स्त्री [दे] गण्डेरी।

गंडीव न [गाण्डीव] अर्जुन का धनुष।

गंडीव न [दे. गाण्डीव] कार्मुक।

गंडीवि पुं [गाण्डीविन्] अर्जुन।

गंडुअ न [गण्डु] सिरहाना।

गंडुअ न [गण्डुत्] तृण-विशेष।

गंडुल पुं [गण्डोल] कृमि-विशेष।

गंडुवहाण न [गण्डोपधान] गाल का तकिया।

गंडूपय पुं [गण्डूपद] जन्तु-विशेष।

गंडूल देखो गंडुल।

गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला।

गंतिय न [गन्तृक] तृण-विशेष।

गंती स्त्री [गन्त्री] शकट।

गंतुंपच्चागया स्त्री [गत्वाप्रत्यागता] जैन मुनियों की भिक्षा का एक प्रकार।

गंथ देखो गंठ—ग्रन्थ।

गंथ पुं [ग्रन्थ] शास्त्र, सूत्र, पुस्तक। धन-धान्य वगैरह बाह्य मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर परिग्रह। धन। स्वजन, लोग। °ाईअ पुं [°ातीत] जैन साधु।

गंथि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता।

गंथि देखो गंठि।

गंथिम देखो गंठिम।

गंदिला स्त्री [गन्दिला] देखो गंधिल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंदीणी स्त्री [दे] आँख-मिचौनी।

गंदुअ देखो गेंदुअ।

गंध पुं [गन्ध] महक। लेश। चूर्ण-विशेष। वानव्यन्तर देवों की एक जाति। न. देव-विमान-विशेष। वि. गन्धयुक्त पदार्थ। °उडी स्त्री [°कुटी] गन्ध-द्रव्य का घर। °कासाइया स्त्री [°काषायिका] सुगन्धि कषाय रंग की साड़ी। °गुण पुं. गन्धरूप गुण। °ट्टय न[°आट्टक]गन्ध-द्रव्य का चूर्ण। °ड्ढ वि [°आढ्य] गन्धपूर्ण, सुगन्धपूर्ण। °णाम न [°नामन्] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष। °तेल्ल न [°तैल] सुगन्धित तैल। °दव्व न [°द्रव्य] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य। °देवी स्त्री. सौधर्म देवलोक की एक देवी। °द्धणि स्त्री [°घ्राणि] गन्ध-तृप्ति। °मय पुं [°मृग] कस्तूरी मृग। °मंत वि [°वत्] सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त। अतिशय गन्धवाला। °मादण, °मायण पुं [°मादन] पर्वत-विशेष। पुंन. पर्वत-विशेष का एक शिखर। न. नगर-विशेष। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान। °वट्टय न [°वर्त्तक] सुगन्धित लेप-द्रव्य। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली। °वह पुं. पवन। °वास पुं. सुगन्धित वस्तु का पुट। चूर्ण-विशेष। °समिद्ध वि [°समृद्ध] सुगन्ध-पूर्ण। न. नगर-विशेष। °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित व्रीहि। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती। °हरिण पुं. कस्तुरिया हिरन। °हारग पुं [°हारक] इस नाम का एक म्लेच्छ देश। गन्धहारक देश का निवासी।

गंधण पुं [गन्धन] एक सर्प-जाति।

गंधपिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी।

गंधय देखो गंध।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका।

गंधवाह पुं [गन्धवाह] पवन।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] स्वर्ग-गायक। व्यन्तर देवों की एक जाति। भगवान् कुन्थुनाथ का शासनाधिष्ठायक। न. मुहूर्त्त-विशेष। नृत्य-युक्त गान। °कंठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति। °घर न [°गृह] संगीत-गृह। °णगर न [°नगर] सन्ध्या के समय में आकाश में दिखता मिथ्या-नगर, जो भावी उत्पात का सूचक है। °पुर न. देखो °णगर। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष। °विवाह पुं. स्त्री-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह। °साला स्त्री [°शाला] संगीतालय।

गंधव्व वि [गन्धर्व] गन्धर्व-सम्बन्धी। पुं. उत्सव-हीन विवाह। न. गान।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] गन्धर्व-विद्या में कुशल।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष।

गंधार पुं [गन्धार] कन्धार देश। पर्वत-विशेष। न. नगर-विशेष।

गंधार पुं [गान्धार] रागिनी-विशेष।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] सती-विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री। विद्यादेवी-विशेष। भगवान् नमिनाथ की शासनदेवी।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] विद्या-विशेष।

गंधावइ } पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-
गंधावाइ } प्रसिद्ध एक वृत्त, वैताढ्य पर्वत।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्धवाला।

गंधिअ पुं [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य बेचनेवाला, पसारी।

गंधिअ वि [गन्धिक] गन्ध-युक्त। °साला स्त्री [°शाला] दारू वगैरह गन्धवाली चीज की दूकान।

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र-विशेष।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] क्षेत्र-विशेष। विजयवर्ष-विशेष। नगरी-विशेष। °कूड न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°कूट] गन्धमादन पर्वत का एक शिखर। वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष।

गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा।

गंधेल्ली स्त्री [दे] छाँह। मधु-मक्षिका।

गंधोदग } न [गन्धोदक] सुगन्धित जल,
गंधोदय } सुगन्धवासित पानी।

गंधोल्ली स्त्री [दे] इच्छा। रजनी।

गंभीर न [गाम्भीर्य] गम्भीरता। अनौद्धत्य।

गंभीर वि [गम्भीर] अस्ताघ अतुच्छ, गहरा। पुंन. गहन-स्थान। पुं. रावण का एक सुभट। यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र। न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर। °पोय न [°पोत] नगर-विशेष। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] महाविदेह-वर्ष की एक नगरी।

गंभीरा स्त्री [गम्भीरा] गम्भीर-हृदया स्त्री। मात्रा-छन्द का एक भेद। क्षुद्र जन्तु-विशेष। चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष।

गंभीरिअ न [गाम्भीर्य] गम्भीरता।

गंभीरिम पुंस्त्री [गाम्भीर्य] ऊपर देखो।

गगण न [गगन] आकाश। °णंदण न [°नन्दन] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर। °वल्लभ, °वल्लह न [°वल्लभ] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर।

गगणंग पुंन [गगनाङ्ग] छन्द-विशेष।

गग्ग पुं [गर्ग] ऋषि-विशेष। गोत्र-विशेष। गौतम गोत्र की एक शाखा।

गग्ग पुं [गर्ग] एक जैन महर्षि। विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठी।

गग्ग पुं [गार्ग्य] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष।

गग्गर वि [गद्गद] गद्गद आवाजवाला, अति अस्पष्ट वक्ता। आनन्द या दुःख से अव्यक्त कथन।

गग्गरी स्त्री [गर्गरी] छोटा घड़ा।

गग्गिर देखो **गग्गर**।

गच्छ सक [गम्] जाना। जानना। प्राप्त करना।

गच्छ पुंन [गच्छ] समूह, सार्थ। एक आचार्य का परिवार। गुरु-परिवार। °वास पुं. गुरु-कुल में रहना। °विहार पुं. गच्छ का आचार। °सारणा स्त्री. गच्छ का रक्षण।

गच्छागच्छि अ. गच्छ-गच्छ से होकर।

गच्छिल्ल वि [गच्छवत्] गच्छ में रहने-वाला।

गज देखो गय = गज। °सार पुं. एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता।

गज्ज पुं [दे] जव, अन्न-विशेष।

गज्ज न [गद्य] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध।

गज्ज अक [गर्ज्] गरजना, गड़गड़ाना।

गज्जण न [गर्जन] गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद। नगर-विशेष।

गज्जणसद्द पुं [दे. गर्जनशब्द] पशु और हाथी की आवाज।

गज्जफल } वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न
गज्जल } (वस्त्र)।

गज्जभ पुं [गर्जभ] पश्चिमोत्तर दिशा का पवन।

गज्जर पुं [दे] गाजर।

गज्जल वि [गर्जल] गर्जन करनेवाला।

गज्जह देखो **गज्जभ**।

गज्जि स्त्री [गर्जि°] गर्जन, हाथी वगैरह की आवाज।

गज्जित्तु वि [गर्जितृ] गर्जन करनेवाला। गरजनेवाला।

गज्जिल्लिअ न [दे] गुदगुदाहट। अंग-स्पर्श से होनेवाला रोमांच।

गज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य।

गट्टण पुं [गट्टन] धरणेन्द्र की नाट्य-सेना का अधिपति।

गट्ठिया स्त्री [दे] गुठली।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गड न. मोटा पत्थर। खाई।

गड (मा) देखो गय = गत।

गडयड अक [दे]गर्जन करना, भयानक आवाज करना।

गडयडी स्त्री [दे] वज्र-निर्घोष, गड़गड़ आवाज मेघ-ध्वनि।

गडवड न [दे] गोलमाल।

गडिअ } गम = गम् का संकृ।
गडुअ }

गडुल न [दे] चावल आदि का धोवन।

गड्ड पुंस्त्री [गर्त्त] गड्ढा।

गड्ड न [दे] गाड़ी।

गड्डरिगा } स्त्री [दे] मेषी।
गड्डरिआ }

गड्डरी स्त्री [दे] बकरी। भेड़ी।

गड्डह पुंस्त्री [गर्दभ] गधा। °वाहण पुं [°वाहन] रावण।

गड्डिआ } स्त्री [दे] शकट।
गड्डी }

गड्ढ न [दे] बिछौना।

गढ देखो घड = घट्।

गढ पुंस्त्री [दे] दुर्ग, कोट।

गढिअ वि [घटित] गढ़ा हुआ, जटित।

गढिअ वि [ग्रथित] गूंथा हुआ, निबद्ध। गुम्फित, निर्मित। गृद्ध, आसक्त।

गण सक [गणय्] गिनती करना। संख्या करना। आदर करना। आवृत्ति करना। पर्यालोचन करना।

गण पुं. समुदाय। समान आचार-व्यवहारवाले साधुओं का समूह। छन्दःशास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह। शिव का अनुचर। मल्लों का समुदाय।°ओ अ [°तस्] अनेकशः।°नायग पुं [°नायक] गण का मुखिया। °नाह पुं [°नाथ] गण का स्वामी। गणधर। °भाव पुं. विवेक-विशेष। °राय पुं [°राज] सामन्त राजा। सेनापति। °वइ पुं [°पति] गण का स्वामी। गणेश। °सामि पुं [°स्वामिन्] गण का मुखिया। °हर पुं [°धर] जिनदेव का प्रधान शिष्य। अनुपम ज्ञानादिगुण-समूह को धारण करनेवाला जैन साधु, आचार्य वगैरह। °हरिंद पुं [°धरेन्द्र] प्रधान गणधर। °हारि पुं [°धारिन्] देखो °हर। °ाजीव पुं. गण के नाम से निर्वाह करनेवाला। °ावच्छेइय, °ावच्छेदय, °ावच्छेयय पुं [°ावच्छेदक] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करनेवाला साधु। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] गजानन। जिनदेव का प्रधान-शिष्य।

गणग पुं [गणक] ज्योतिषी, दैवज्ञ। भण्डारी।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती।

गणय देखो गणग।

गणसम वि [दे] गोठ में लीन।

गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक।

गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ।

गणि वि [गणिन्] गण का मुखिया। पुं. आचार्य, गच्छनायक। जिनदेव का प्रधान साधुशिष्य। परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त। °पिडग न [°पिटक] बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी। निर्युक्ति वगैरह से युक्त जैन आगम। पुं. यक्ष-विशेष, जिनशासन का अधिष्ठायक देव। निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह।°विज्जा स्त्री [°विद्या]शास्त्र-विशेष। ज्योतिष और निमित्तशास्त्र का ज्ञान।

गणि पुंस्त्री. प्रकरण।

गणिम न. संख्या पर जिसका भाव हो वह। गिनती। वि. संख्येय।

गणिय वि [गणित] गिना हुआ। न. संख्या। जैन साधुओं का एक कुल। अंकगणित, गणित-शास्त्र। °लिवि स्त्री [°लिपि] अंक-लिपि।

गणिय पुं [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता।

गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणेत्तिआ } स्त्री [दे] रुद्राक्ष का बना हुआ
गणेत्ती } हाथ का एक आभूषण-विशेष। अक्ष-माला।

गणेसर पुं [गणेश्वर] गण का नायक। छन्द-विशेष।

गण्ण वि [गण्य] गणनीय, संख्येय। माननीय।

गण्णा (मा) स्त्री [गणना] गिनती।

गत्त न [गात्र] शरीर।

गत्त देखो गड्ड।

गत्त न [दे] ईषा, चौपाई या चारपाई की लकड़ी-विशेष। कर्दम। वि. गत, गया हुआ।

°गत्तण वि [कर्तन] छेदक।

गत्तडि } स्त्री [दे] गोचर-भूमि।
गत्ताडी } गायिका।

गत्थ वि [ग्रस्त] कवलित।

गद सक [गद्] बोलना, कहना।

गदि देखो गइ = गति।

गदुअ (शौ) अ [गत्वा] जाकर।

गद्द देखो गज्ज = गद्य।

गद्दतोय पुं [गर्दतोय] लोकान्तिक देवों की एक जाति।

गद्दब्भ पुं [दे] कटु-ध्वनि।

गद्दभ देखो गद्दह = गर्दभ।

गद्दभय देखो गद्दहय।

गद्दभाल पुं [गर्दभाल] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक।

गद्दभालि पुं [गर्दभालि] एक जैन मुनि।

गद्दभिल्ल पुं [गर्दभिल्ल] उज्जयिनी का एक राजा।

गद्दभी स्त्री [गर्दभी] गदही। विद्या-विशेष।

गद्दह पुं [गर्दभ] खर। इस नाम का एक मन्त्रिपुत्र।

गद्दह न [दे] चन्द्र-विकासी कमल।

गद्दहय पुं [गर्दभक] क्षुद्र जन्तु-विशेष। देखो गद्दह।

गद्दही देखो गद्दभी।

गद्दिअ वि [दे] गर्वित।

गद्ध पुं [गृध्र] गीध।

गब्भ पुं [गर्भ] कुक्षि। उत्पत्ति-स्थान। भ्रूण। भीतर का। °गरा स्त्री [°करी] गर्भाधान करनेवाली विद्या-विशेष। °घर न [°गृह] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग। °ज वि. गर्भ में उत्पन्न होनेवाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरह। °त्थ वि [°स्थ] गर्भ में रहनेवाला। गर्भ से उत्पन्न होनेवाला मनुष्य वगैरह। °मास पुं. कार्त्तिक से लेकर माघ तक का महीना। °य देखो °ज। °वई स्त्री [°वती] गर्भिणी स्त्री। °वक्कंति स्त्री [°व्युत्क्रान्ति] गर्भाशय में उत्पत्ति। °वक्कंतिअ वि [°व्युत्क्रान्तिक] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति होती है वह। °हर देखो घर।

गब्भर न [गह्वर] कोटर। गहन, विषम स्थान।

गब्भर देखो गहर।

गब्भाहाण न [गर्भाधान] संस्कार-विशेष।

गब्भिज्ज पुं [दे. गर्भज] जहाज का निम्न श्रेणी का नौकर।

गब्भिण } वि [गर्भित] गर्भ-युक्त। सहित।
गब्भिय }

गब्भिल्ल देखो गब्भिज्ज।

गम सक [गम्] चलना। जानना, समझना। प्राप्त करना।

गम सक [गमय्] ले जाना। व्यतीत करना।

गम पुं. गमन, गति, चाल। प्रवेश। शास्त्र का तुल्य पाठ। व्याख्या, टीका। ज्ञान, समझ। मार्ग। प्रकार। वि. जंगम।

गमग वि [गमक] बोधक, निश्चायक।

गमण न [गमन] गति। बोध। व्याख्यान, टीका। पुष्य वगैरह नव नक्षत्र।

गमणिया स्त्री [गमनिका] संक्षिप्त, व्याख्यान, दिग्-दर्शन। गुजारना, अतिक्रमण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गमणी स्त्री [गमनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है। जूता।

गमय देखो गमग।

गमार वि [दे. ग्राम्य] अविदग्ध, मूर्ख।

गमाव देखो गम = गमय्।

गमिअ वि [गमिक] प्रकारवाला।

गमिद वि [दे] अपूर्ण। मूढ़। स्खलित।

गमिय वि [गमिक] सदृश पाठवाला शास्त्र।

गमेर देखो गमार।

गमेस देखो गवेस।

गम्म वि [गम्य] जानने-योग्य। जो जाना जा सके। हराने योग्य, आक्रमणीय। जाने-योग्य। भोगने-योग्य—स्वपत्नी वगैरह।

गम्म न [गम्य] गमन।

गय वि [दे] घूर्णित। निर्जीव।

गय वि[गत]गया हुआ। अतिक्रान्त। विज्ञात। नष्ट। प्राप्त। स्थित। प्रविष्ट। प्रवृत्त। व्यवस्थित। न. गमन। °पाण वि [°प्राण] मृत। °राय वि [°राग] वीतराग, निरीह। °वइया, °वई स्त्री [°पतिका] विधवा। प्रोषित-भर्तृका। °वय वि [°वयस्] वृद्ध। °ाणुगइअ वि [°ानुगतिक] अन्ध, परम्परा का अनुयायी, अन्धश्रद्धालु।

गय पुं [गज] हाथी। एक अन्तकृत् जैनमुनि, गज सुकुमाल मुनि। इस नाम का एक सेठ। रावण का एक सुभट। °उर न [°पुर] हस्तिनापुर। °कण्ण पुं [°कर्ण] द्वीप-विशेष। उसमें रहनेवाला। °कलभ पुं. हाथी का बच्चा। °गय वि [°गत] हाथी के ऊपर आरूढ़। °गपय पुं [°ाग्रपद] पर्वत-विशेष। °त्थ वि [°स्थ] हाथी के ऊपर स्थित। °पुर देखो °उर। °बंधय पुं [°बन्धक] हाथी को पकड़नेवाली जाति। °मारिणी स्त्री. वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष। °मुह पुं [°मुख] गणपति। यक्ष-विशेष। °राय पुं [°राज] श्रेष्ठ हस्ती। °वइ पुं [°पति] गजेन्द्र। °वर पुं. प्रधान हाथी। °वरारि पुं [°वरारि] वनराज। °वहू स्त्री [°वधू] हस्तिनी। °वीही स्त्री [°वीथी] शुक्र वगैरह महाग्रहों का चार-क्षेत्र-विशेष। °ससण पुं [°श्वसन] हाथी सूँड़। °सुकुमाल पुं. एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव में मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष। °ारि पुं. सिंह, पञ्चानन। °ारोह पुं. महावत।

गय पुं [गद] बीमारी।

गयंक पुं [गजाङ्क] दिक्कुमार देव।

गयंद पुं [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी।

गयकंठ पुं [गजकण्ठ] रत्न-विशेष।

गयकन्न पुं [गजकर्ण] अनार्य देश-विशेष।

गयग्गपय न [गजाग्रपद] दशार्णकूट का एक तीर्थ।

गयण न [गगन] 'ह' अक्षर। °मणि पुं. सूर्य।

गयण न [गगन] आकाश। °गइ पुं [°गति] एक राजकुमार। °चर वि. आकाश में चलने-वाला, पक्षी, विद्याधर वगैरह। °मंडल पुं [मण्डल] एक राजा।

गयणरइ पुं [दे] बादल।

गयणिंदु पुं [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम।

गयनिमीलिया स्त्री [गजनिमीलिका] उपेक्षा, उदासीनता।

गयमुह पुं [गजमुख] अनार्य देश-विशेष।

गयसाउल } वि [दे] वैरागी।
गयसाउल्ल }

गया स्त्री[गदा] लोहे या पाषाण का अस्त्र-विशेष। एक देव-विमान। °हर पुं [°धर] वासुदेव।

गया स्त्री. स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष।

°गर वि [°कर] कर्त्ता।

गर पुं. एक प्रकार का जहर। ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध बवादि करणों में से एक।

°गरण देखो करण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गरल न. विष। रहस्य। वि. अव्यक्त।
गरलिगाबद्ध वि [गरलिकाबद्ध] निक्षिप्त, उपन्यस्त।
गरह सक[गर्ह्]निन्दा करना, घृणा करना।
°गरिअ वि [कृत] किया हुआ, निर्मित।
गरिट्ठ वि [गरिष्ठ] बड़ा भारी।
गरिम पुंस्त्री [गरिमन्] गुरुत्व, गौरव।
गरिह देखो गरह।
गरु देखो गुरु।
गरुअ वि [गुरुक] गुरु, बड़ा, महान्।
गरुअ सक [गुरुकारय्] गुरु करना, बड़ा बनाना।
गरुआ, गरुआअ अक [गुरुकारय्] बड़े की तरह आचरण करना।
गरुई, गरुगी स्त्री [गुर्वी] बड़ी, ज्येष्ठा, महती।
गरुक्क देखो गरुअ।
गरुड देखो गरुल। छन्द-विशेष। °त्थ न [°ास्त्र] उरगास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र। °द्धय पुं [°ध्वज] विष्णु, वासुदेव। °वूह पुं [°व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना।
गरुडंक पुं [गरुडाङ्क] विष्णु, वासुदेव। इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम।
गरुल पुं [गरुड] एक देव-विमान।
गरुल पुं [गरुड] पक्षि-राज। भगवान् शान्तिनाथ का शासन यक्ष। भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देव। सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र। °केउ पुं [°केतु] देखो °ज्झय। °ज्झय, °द्धय पुं [°ध्वज] गरुड़ पक्षी के चित्र वाली ध्वजा। कृष्ण। देव-जाति-विशेष, सुपर्णकुमार देव। °व्वूह देखो गरुड-वूह। °सत्थ न [°शस्त्र] गरुड़ास्त्र। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष। °ोववाय न [°ोपपात] शास्त्र-विशेष, जिसको याद करने से गरुड़देव प्रत्यक्ष होते हैं। देखो गरुड।
गरुवी देखो गरुई।

गल अक [गल्] गल जाना, सड़ना। खतम होना। झरना। पिघलना। सक. गिराना।
गल, गलअ पुं [गल] गला, कण्ठ। वंशी, मछली पकड़ने का काँटा। °गज्जि स्त्री [°गर्जि] गले की गर्जना। °गज्जिय न [°गर्जित] गल-गर्जन। °लाय वि [°लात] कण्ठ-न्यस्त।
गलई स्त्री [गलकी] वनस्पति-विशेष।
गलग देखो गलअ।
गलत्थ देखो खिव।
गलत्थलिअ वि[दे] क्षिप्त, फेंका हुआ। प्रेरित।
गलत्थल्ल पुं [दे] हाथ से गला पकड़ना।
गलत्थल्लिअ [दे] देखो गलत्थलिअ।
गलत्था स्त्री [दे] प्रेरणा।
गलत्थिअ वि [क्षिप्त] प्रेरित, फेंका हुआ। बाहर निकाला हुआ।
गलद्धअ पुं [दे] प्रेरित, क्षिप्त।
गलहत्थिअ वि [गलहस्तित] गला पकड़कर बाहर निकाला हुआ।
गलाण देखो गिलाण।
गलि देखो गल = गल।
गलि, गलिअ वि [गलि, क] दुर्दम। °गद्दह पुं [°गर्दभ] अविनीत गदहा। °बइल्ल पुं [°बलीवर्द] दुर्विनीत बैल। °स्स पुं [°ाश्व] दुर्दम घोड़ा।
गलिअ वि [गलित] गला हुआ। प्रक्षालित। स्खलित। नष्ट।
गलिअ वि [दे] स्मृत।
गलिच्च वि [गलीय, गल्य] गले का पिण्ड।
गलिर वि [गलितृ] निरन्तर पिघलता।
गलुल देखो गरुल।
गलोई, गलोया स्त्री [गुडूची] वल्ली-विशेष, गिलोय, गुरुच।
गल्ल पुं. कपोल। हाथी का गण्डस्थल, कुम्भस्थल। °मसूरिया स्त्री [°मसूरिका] गाल का उपधान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गल्लक्क पुंन [दे] स्फटिक मणि ।
गल्लत्थ देखो गलत्थ ।
गल्लप्फोड पुं [दे] डमरुक ।
गल्लूरण न [दे] माँस खाते हुए कुपित शेर की गर्जना ।
गल्लोल्ल न [दे] गडुक ।
गव पुंस्त्री [गो] जानवर ।
गवक्ख पुं [गवाक्ष] झरोखा । गवाक्ष के आकृति का रत्न-विशेष । °जाल न. रत्न-विशेष का ढेर । जालीवाला वातायन ।
गवच्छ पुं [दे] आच्छादन ।
गवच्छिय वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ ।
गवत्त न [दे] घास ।
गवत्थिय देखो गवच्छिय ।
गवय पुं. गो की आकृति का जंगली पशु-विशेष, नील गाय ।
गवर पुं [दे] वनस्पति-विशेष ।
गवल पुं. जंगली महिष । न. महिष का सिंग ।
गवा स्त्री [गो] गाय ।
गवादणी, गवायणी } स्त्री [गवादनी] गोचर-भूमि ।
गवार वि [दे] गँवार, छोटे गाँव का निवासी ।
गवालिय न [गवालीक] गौ के विषय में अनृत भाषण ।
गाविअ वि [दे] निश्चित ।
गविट्ठ वि [गवेषित] खोजा हुआ ।
गविल न [दे] शुद्ध मिस्री ।
गवेधुआ स्त्री [गवेधुका] जैनमुनि-गण की एक शाखा ।
गवेलग पुंस्त्री [गवेलक] मेष । गौ और भेड़ ।
गवेस सक [गवेषय्] गवेषणा करना ।
गवेसइत्तु वि [गवेषयितृ] गवेषक ।
गवेसग वि [गवेषक] ऊपर देखो ।
गवेषणया स्त्री [गवेषणा] ईहा-ज्ञान, सम्भावना-ज्ञान ।
गवेसणया, गवेसणा } स्त्री [गवेषणा] खोज । शुद्ध भिक्षा की याचना । भिक्षा का ग्रहण ।
गवेसाविय वि [गवेषित] दूसरे द्वारा खोज किया गया । अन्वेषित ।
गव्व पुं [गर्व] अभिमान ।
गव्वर न [गह्वर] गुहा ।
गव्विट्ठ वि [गर्विष्ठ] विशेष अभिमानी ।
गस सक [ग्रस्] खाना, निगलना, भक्षण करना ।
गह सक [ग्रथ्] गूंथना, गठना ।
गह सक [ग्रह्] लेना ।
गह पुं [ग्रह] ग्रहण, स्वीकार । सूर्य, चन्द्र, वगैरह ज्योतिष्क-देव । कर्म का बन्ध । भूत वगैरह का आक्रमण । आसक्ति, तल्लीनता । संगीत का रस-विशेष । °खोभ पुं [°क्षोभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश । °गज्जिय न [°गर्जित] ग्रहों के संचार से होनेवाली आवाज । °गहिय वि [°गृहीत] भूतादि से आक्रान्त, पागल । °चरिय न [°चरित] ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान । °दंड पुं. दण्डाकार ग्रह-पंक्ति । °नाह पुं [°नाथ] सूरज । चन्द्र । °मुसल न. मुसलाकार ग्रह-पंक्ति । °सिंघाडग न [°शृङ्गाटक] पानी-फल के आकारवाली ग्रहपंक्ति । ग्रह-युग्म । °हिव पुं [°धिप] सूर्य ।
गह पुं [ग्रह] सम्बन्ध । पकड़ । ग्रहण, ज्ञान । °भिन्न न. जिसके बीच से ग्रह का गमन हो वह नक्षत्र । °सम न. गेय काव्य का एक भेद ।
गह° न [गृह] मकान । °वइ पुं [°पति] गृहस्थ, संसारी । °वइणी स्त्री [°पत्नी] गृहिणी ।
गहकल्लोल पुं [दे. ग्रहकल्लोल] राहु ।
गहगह अक [दे] आनन्दपूर्ण होना ।
गहण न [ग्रहण] आदान । आदर, सम्मान । ज्ञान । शब्द, आवाज । वि. ग्रहण करनेवाला । न. इन्द्रिय । चन्द्र-सूर्य का उपराग—ग्रहण । वि. ग्राह्य । न. शिक्षा-विशेष । आदान का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारण। आक्षेपक।

गहण न [ग्राहण] अङ्गीकार कराना।

गहण वि [गहन] निविड़, दुर्भेद्य। वन, झाड़ी। वृक्ष का कोटर। अरण्य-क्षेत्र। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] पर्वत के एक प्रदेश में स्थित वृक्ष-वल्ली-समुदाय।

गहण न [दे] निर्जल-स्थान। बन्धक।

गहणय न [दे] आभूषण।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, उपादान।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] पेट।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बाँदी।

गहत्थि पुं [गभस्ति] किरण।

गहर पुं [दे] गृध्र।

गहर पुंन [गह्वर] निकुञ्ज। जङ्गल। दम्भ, कपट। विषम स्थान। रोदन। गुफा। अनेक अनर्थों का सङ्कट।

गहवइ पुं [गृहपति] कृषक।

गहवइ वि [दे] ग्रामीण। पुं. चन्द्रमा।

गहिअ वि [दे] मोड़ा हुआ, टेढ़ा।

गहिअ वि [गृहीत] स्वीकृत। पकड़ा हुआ। ज्ञात, उपलब्ध।

गहिअ वि [गृद्ध] आसक्त, तल्लीन।

गहिआ स्त्री [दे] काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री। ग्रहण करने योग्य स्त्री।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अस्ताघ।

गहिल वि [ग्रहिल]भूतादि से आविष्ट, पागल।

गहिलिय, **गहिल्ल** } वि [दे. ग्रहिल] आवेश-युक्त, पागल, भ्रान्त-चित्त।

गहीअ देखो गहिअ = गृहीत।

गहीर देखो गभीर।

गहीरिअ न [गाम्भीर्य] गहराई।

गहीरिम पुंस्त्री [गभीरिमन्] गम्भीरता।

गल्ह (अप) देखो गह = ग्रह्। गल्हइ

गा, **गाअ** } सक [गै] गाना। वर्णन करना। श्लाघा करना।

गाअ पुं [गो] बैल, वृषभ, साँड़।

गाअ न [गात्र] शरीर। शरीर का अवयव।

गाअ वि [गायक] गानेवाला।

गाअंक पुं [गवाङ्क] महादेव।

गाअण वि [गायन] गवैया।

गाइअ वि [गीत] गाया हुआ। न. गीत।

गाइआ स्त्री [गायिका] गानेवाली स्त्री।

गाई स्त्री [गो] गैया।

गाउ, **गाउअ**, **गाऊअ** } न [गव्यूत] कोस, क्रोश, दो हजार धनुष-प्रमाण जमीन। दो कोस।

गागर पुं [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा, घाँघरा। मत्स्य-विशेष।

गागरी [दे] देखो गायरी।

गागलि पुं. एक जैनमुनि।

गागेज्ज वि [दे] मथित।

गागेज्जा स्त्री [दे] दुलहिन।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त।

गाढ वि. निविड़। मजबूत।

गाण न [गान] गीत।

गाण वि [गायन] गवैया।

गाणंगणिअ पुं [गाणङ्गणिक] छः ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जाने-वाला साधु।

गाणी स्त्री [दे] गोचर-भूमि।

गाथा देखो गाहा।

गाध वि. कम गहरा।

गाम पुं [ग्राम] समूह। प्राणि-समूह, जन्तु-निकर। गाँव, वसति। इन्द्रिय-समूह। °कंडग, °कंडय पुं [°कण्टक] इन्द्रिय-समूह रूप काँटा। दुर्जनों का रूक्ष आलाप, गाली। °घायग वि [°घातक] गाँव का नाश करनेवाला। °णिद्धमण न [°निर्धमन] नाला। °धम्म पुं [°धर्म] विषयाभिलाष। इन्द्रियों का स्वभाव। विषय-प्रवृत्ति। मैथुन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द, रूप वगैरह इन्द्रियों का विषय। गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य। °द्ध पुंन [°ार्ध] आधा गाँव। उत्तर भारत, भारत का उत्तर-प्रदेश। °मारी स्त्री. गाँव भर में फैली हुई बीमारी-विशेष। °रोग पुं ग्राम-व्यापक बीमारी। °वइ पुं [°पति] गाँव का मुखिया। °ाणुग्गाम न [°ानुग्राम] एक गाँव से दूसरे गाँव। °ायार पुं [°ाचार] विषय।

गामउड, गामऊड पुं [दे] गाँव का मुखिया।

गामंतिय न [ग्रामान्तिक] गाँव की सीमा। वि. गाँव की सीमा में रहनेवाला। पुं. जैनेतर दार्शनिक-विशेष।

गामगोह पुं [दे] गाँव का मुखिया।

गामड पुं [ग्रामक] छोटा गाँव।

गामण न[दे. गमन]भूमि में गमन, भू-सर्पण।

गामणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश।

गामणि देखो गामणी।

गामणिसुअ पुं [दे] गाँव का मुखिया।

गामणी पुं [दे] गाँव का मुखिया।

गामणी वि [ग्रामणी] श्रेष्ठ, नायक। पुं. तृण-विशेष।

गामपिंडोलग पुं [दे] भीख से पेट भरने के लिए गाँव का आश्रय लेनेवाला भिखारी।

गामरोड पुं [दे] छल से गाँव का मुखिया बन बैठनेवाला।

गामहण न [दे] ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश। छोटा गाँव।

गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश।

गामार वि [दे. ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहनेवाला।

गामि वि [गामिन्] जानेवाला।

गामिअ वि [ग्रामिक] देखो गामिल्ल। ग्राम का मुखिया। विषयाभिलाषी।

गामिणिआ स्त्री [गामिनिका] गमन करने-वाली स्त्री।

गामिल्ल, गामिल्लुअ, गामीण वि [ग्रामीण] गाँव का निवासी, गँवार।

गामुअ वि [गामुक] जानेवाला।

गामेइआ स्त्री [ग्रामेयिका] गाँव की रहने-वाली स्त्री, गँवार स्त्री।

गामेणी स्त्री [दे] बकरी।

गामेय, गामेयग वि [ग्रामेयक] ग्राम का निवासी, गँवार।

गामेरड [दे] देखो गामरोड।

गामेलुअ, गामेल्ल देखो गामिल्ल।

गामेस पुं [ग्रामेश] गाँव का अधिपति।

गायण वि [गायन] गायक।

गादरी स्त्री [दे] गगरी, छोटा घड़ा।

°गार वि [°कार] कर्त्ता।

गार पुं [दे. ग्रावन्] पत्थर, कङ्कड़।

गार न [अगार] मकान। °त्थ पुंस्त्री [°स्थ] गृही। °त्थिय पुंस्त्री [°स्थिक] संसारी।

°गारय वि [कारक] करनेवाला।

गारव पुंन [गौरव] अभिमान। अभिलाष। महत्व, गुरुत्व, प्रभाव। आदर।

गारवित वि [गौरवित] गौरवान्वित, महत्त्व-शाली। अभिमानी। अभिलाषी।

गारविल्ल वि [गौरववत्] ऊपर देखो।

गारहत्थ वि [गार्हस्थ] गृहस्थ-सम्बन्धी।

गारि पुंस्त्री [अगारिन्] संसारी, गृहस्थ।

गारिहत्थिय स्त्रीन [गार्हस्थ्य] गृहस्थ-सम्बन्धी।

गारुड, गारुल्ल वि [°गारुड] गरुड़-सम्बन्धी। सर्प-विष को दूर करनेवाला। पुं. सर्प-विष को दूर करनेवाला मन्त्र। न. मन्त्र-शास्त्र-विशेष। °मंत पुं [°मन्त्र] सर्प-विष का नाशक मन्त्र। °विउ वि [°वित्] गारुड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्र का जानकार।

गाल सक [गालय्] गालना, छानना। नाश करना। उल्लंघन करना।

गालणा स्त्री [गालना] गालना, छानना। गिरवाना। पिघलवाना।

गालवाहिया स्त्री [दे] छोटी नौका।

गालि स्त्री. अपशब्द, असभ्य वचन।

गालिय वि [गालित] छाना हुआ। अतिक्रान्त। विनाशित। क्षिप्त।

गाली स्त्री. देखो गालि।

गाव (अप) देखो गा।

गाव (अप) देखो गव्व।

गाव वि [दे] गत, गुजरा हुआ।

गाव } पुं [ग्रावन्] पत्थर। पहाड़।
गावाण

गावि (अप देखो गव्विय।

गावी स्त्री [गो] गौ।

गास पुं [ग्रास] कवल। भोजन।

गाह देखो गह = ग्रह्।

गाह सक [ग्राहय्] ग्रहण कराना।

गाह सक [गाह्] ढूंढ़ना। पढ़ना। अनुभव करना। टोह लगाना।

गाह पुं [गाध] अस्ताघ-रहित, थाह।

गाह पुं [ग्राह] मगर। आग्रह। ग्रहण। गारुड़िक। °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष।

गाहग वि [ग्राहक] ग्रहण करनेवाला समझनेवाला, जाननेवाला। गुरु। बोधक। प्राप्ति करनेवाला।

गाहण न [ग्राहण] ग्रहण कराना। आदान। शास्त्र, सिद्धान्त। उपदेश।

गाहा स्त्री [गाथा] ग्रन्थ-प्रकरण। आर्या, गीतिछन्द। प्रतिष्ठा। निश्चय। 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन।

गाहा स्त्री [दे] मकान। °वइ पुंस्त्री [°पति] गृहस्थ, संसारी। धनी। भाण्डागारिक।

गाहाल पुं [ग्राहाल] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष।

गाहावई स्त्री [ग्राहावती] नदी-विशेष। द्वीप-विशेष। ह्रद-विशेष।

गाहिणी स्त्री [गाहिनी] गाहने वाली स्त्री। छन्द-विशेष।

गाहिपुर न [गाधिपुर] नगर-विशेष।

गाहिय वि [ग्राहित] जिसका ग्रहण कराया गया हो वह। भ्रामित, उकसाया हुआ।

गाहीकय वि [गाथीकृत] एकत्रित।

गाहु स्त्री [गाहु] छन्द-विशेष।

गाहुलि पुंस्त्री [दे] मगर।

गाहुल्लिया देखो गाहा = गाथा।

गिंठि [गृष्टि] एक बार ब्यायी हुई। एक बार ब्यायी हुई गाय।

गिंधुअ [दे] देखो गेंठुअ।

गिंभुल्ल [दे] देखो गेंठुल्ल।

गिंभ (अप) देखो गिह्म।

गिंह देखो गिह्म।

गिज्झ अक [गृध्] आसक्त होना।

गिज्झ वि [गृह्य, ग्राह्य] ग्रहण करने-योग्य। अपनी तरफ में किया जा सके ऐसा।

गिट्ठि देखो गिंठि।

गिड्डिया स्त्री [दे] गेंद खेलने की लकड़ी।

गिण देखो गण = गणय्।

गिण्ह देखो गह = ग्रह्।

गिण्हणा स्त्री [ग्रहण] उपादान, आदान।

गिण्हाविअ वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ।

गिद्ध पुं [गृध्र] गीध।

गिद्ध वि [गृद्ध] लोलुप।

गिद्धपिट्ठ न [गृद्ध स्पृष्ट, गृध्रपृष्ठ] मरण-विशेष, आत्महत्या के अभिप्राय से गीध आदि को अपना शरीर खिला देना।

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] एक देव-विमान।

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति, लम्पटता।

गिह्म पुं [ग्रीष्म] ऋतु-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिह्मा स्त्री. देखो गिह्म ।

गिर सक [गॄ] उच्चारण करना । निगलना ।

गिरा स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा ।

गिरि पुं. पर्वत । °अडी स्त्री [°तटी] पर्वतीय नदी । °कण्णई, °कण्णी स्त्री [°कर्णी] लता-विशेष । °कूड न [°कूट] पर्वत का शिखर । पुं रामचन्द्र का महल । °जण्ण पुं [°यज्ञ] कोंकण देश में वर्षाकाल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव । °णई स्त्री [°नदी] पर्वतीय नदी । °णाल पुं [°नार] प्रसिद्ध पर्वत-विशेष । °दारिणी स्त्री. विद्या-विशेष । °पक्खंदण न [प्रस्कन्दन] पहाड़ पर से गिरना । °यडय न [°कटक]पर्वत का मध्य भाग । °पब्भार पुं [°प्राग्भार] पर्वत-नितम्ब । °राय पुं [°राज] मेरु-पर्वत । °वर पुं. प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड़ । °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत । सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती ।

गिरि पुं [दे] बीज-कोश ।

गिरिंद पुं [गिरीन्द्र] श्रेष्ठ पर्वत । मेरु पर्वत । हिमाचल ।

गिरिडी स्त्री [दे] पशुओं के दाँत को बाँधने का उपकरण-विशेष ।

गिरिनयर न [गिरिनगर] गिरनार पर्वत के नीचे का नगर ।

गिरिफुल्लिय न [गिरिपुष्पित] नगर-विशेष ।

गिरिस पुं [गिरिश] शिव । °वास पुं. कैलाश पर्वत ।

गिरीस पुं [गिरीश] हिमालय पर्वत । महादेव ।

गिल सक [गॄ] गिलना, निगलना, भक्षण करना ।

गिला } अक [ग्लै] ग्लान होना, बीमार
गिलाअ } होना । खिन्न होना, थक जाना । उदासीन होना । असमर्थ होना ।

गिलाणि स्त्री [ग्लानि] ग्लानि, खेद, थकावट ।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, ग्लान ।

गिलासि पुंस्त्री [ग्रासिन्] भस्मक रोग ।

गिलिअवंत वि [गिलितवत्] जिसने भक्षण किया हो वह ।

गिलोइया } स्त्री [दे] गृह-गोधा ।
गिलोई }

गिल्लि स्त्री [दे] हाथी की पीठ पर कसा जाता हौदा, हौदा । डोली ।

गिव्वाण पुं [गीर्वाण] देव ।

गिह न [गृह] घर । °त्थ पुंस्त्री [स्थ] संसारी । °नाह पुं [°नाथ] घर का मालिक । °लिंगि पुंस्त्री [°लिङ्गिन्] गृही, संसारी । °वइ पुंस्त्री [°पति] गृहस्थ । घर का मालिक । °वास पुं. घर में निवास । द्वितीया-श्रम । °वट्ट पुं [°वर्त्त] संसारिपन । °ासम पुं [°ाश्रम] द्वितीयाश्रम ।

गिहकोइला स्त्री [गृहकोकिला] छिपकली ।

गिहमेहि पुं [गृहमेधिन्] गृहस्थ ।

गिहवइ पुं [गृहपति] देश का अधिपति, सूबेदार ।

गिहि पुं [गृहिन्] संसारी, गृहस्थ । °धम्म पुं [°धर्म] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म । °लिंग न [°लिङ्ग] गृहस्थ का वेश ।

गिहिणी स्त्री [गृहिणी] भार्या ।

गिहीअ वि [गृहीत] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ ।

गिहेलुग } पुं [गृहैलुक] देहली ।
गिहेलुय }

गी स्त्री [गिर्] वाणी ।

गीआ स्त्री [गीता] श्रीमद्भगवद्गीता, ज्ञानमय उपदेश, छन्द-विशेष ।

गीइ स्त्री [गीति] आर्या-वृत्त का एक भेद । गान ।

गीइया स्त्री [गीतिका] ऊपर देखो ।

गीय वि [गीत] पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह । कथित, प्रतिपादित । प्रसिद्ध । न.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताल और बाजे के अनुसार गाना। संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान। पुं. गीतार्थ, उत्सर्ग और अपवाद वगैरह का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि। °जस पुं [°यशस्] गन्धर्व देवों का एक इन्द्र। °त्थ पुं [°ार्थ] विद्वान् जैन मुनि। संगीत-रहस्य। °पुर न. नगर-विशेष। °रइ स्त्री [°रति] संगीत-क्रीड़ा। पुं. गन्धर्व देवों का एक इन्द्र। गन्धर्व-सेना का अधिपति देव-विशेष। वि संगीत-प्रिय।

गीवा स्त्री [ग्रीवा] गरदन।

गुंछ देखो गुच्छ।

गुंछा स्त्री [दे] बिन्दु। दाढ़ी-मूँछ। अधम।

गुंज अक [हस्] हँसना।

गुंज अक [गुञ्ज्] गुन-गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना। गर्जना।

गुंज पुं. गुञ्जारव करता वायु। पर्वत-विशेष।

गुंजा स्त्री. लता-विशेष। फल-विशेष, घुँघची। भम्भा। परिणाम-विशेष। गुञ्जारव। गुञ्जारव करनेवाला वायु। °फल, °हल न [°फल] घुँघची।

गुंजालिआ स्त्री [गुञ्जालिका] गम्भीर तथा टेढ़ी वापी—बावली या बावड़ी।

गुंजालिया स्त्री [गुञ्जालिका] टेढ़ी कियारी। गोल पुष्करिणी। वक्र नदी।

गुंजुल्ल देखो गुंजोल्ल।

गुंजेल्लिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ।

गुंजोल्ल सक [वि + लुल्] बिखेरना।

गुंजोल्ल अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना।

गुंठ सक [उद् + धूलय्, गुण्ठ्] धूसरित करना।

गुंठ पुं [दे] अधम अश्व। वि. मायावी, कपटी।

गुंठा स्त्री [दे] दम्भ, छल।

गुंठिअ वि [गुण्ठित] धूसरित। व्याप्त। आच्छादित।

गुंठी स्त्री [दे] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष।

गुंड न [दे] मुस्ता से उत्पन्न होनेवाला तृण-विशेष।

गुंडण न [गुण्डन] धूलि का लेप।

गुंडिअ वि [गुण्डित] धूलियुक्त। लिप्त। घिरा हुआ। आच्छादित। प्रेरित।

गुंथण न [ग्रन्थन] गूंथना।

गुंद पुं [गुन्द्र] वृक्ष-विशेष।

गुंदल न [दे. गुन्दल] आनन्द-ध्वनि। खुशी की वृद्धि, खुशी में लीन।

गुंदवडय न [दे] एक प्रकार की मिठाई।

गुंदा } स्त्री [दे] बिन्दु। अधम।
गुंपा }

गुंध सक [ग्रन्थ्] गठना।

गुंफ सक [गुम्फ्] गूंथना, गठना। रचना।

गुंफ पुं [गुम्फ]।

गुंफ पुं [दे] कारागार।

गुंफण न [दे] गोफन।

गुंफी स्त्री [दे] गोजर, कनखजूरा।

गुग्गुल पुं. गूगल।

गुग्गुली स्त्री [गुग्गुल] गूगल का पेड़।

गुग्गुलु देखो गुग्गुल।

गुच्छ } पुं [गुच्छ] स्तबक। वृक्षों की एक
गुच्छय } जाति। पत्तों का समूह।

गुच्छय देखो गोच्छय।

गुच्छिय वि [गुच्छित] गुच्छा वाला।

गुज्ज देखो गोज्ज।

गुज्जर पुं [गूर्जर] गुजरात देश। वि. गुजरात का निवासी।

गुज्जरत्ता स्त्री [गूर्जरत्रा] गुजरात देश।

गुज्जलिअ वि [दे] संघटित।

गुज्झ पुं [गुह्य] एक देव-जाति।

गुज्झ } वि [गुह्य] गोपनीय। न. रहस्य।
गुज्झअ } लिंग। योनि। सम्भोग। °हर वि
गुज्झग } [°धर] गुप्त बात को प्रकट नहीं करनेवाला। °हर वि. गुप्त बात को प्रसिद्ध करनेवाला। पुं [गुह्यक] देवों की एक जाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुट्ठ न [दे] स्तम्ब ।

गुट्ठ देखो गोट्ठ ।

गुट्ठी देखो गोट्ठी ।

गुड सक [गुड्] हाथी को कवच वगैरह से सजाना । लड़ाई के लिए तैयार करना, सजाना ।

गुड सक [गुड्] नियन्त्रण करना ।

गुड पुं. गुड़ लाल शक्कर । एक प्रकार का कवच । °सत्थ न [°सार्थ] नगर-विशेष ।

गुडदालिअ वि [दे] पिण्डीकृत ।

गुडा स्त्री. हाथी का कवच । अश्व का कवच ।

गुडिअ वि [गुडित] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह ।

गुडिआ स्त्री [गुटिका] गाली ।

गुडोलद्धिआ स्त्री [दे] चुम्बन ।

गुड्डुर पुंन [दे] तम्बू, वस्त्र-गृह ।

गुण सक [गुणय्] गिनना । आवृत्ति करना, याद करना ।

गुण पुं उच्चारण । रसना, मेखला । पुंन. गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म । ज्ञान, सुख वगैरह एक ही साथ रहनेवाला धर्म । ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरह दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ । लाभ । प्रशंसा । रज्जू, डोरा । व्याकरण-प्रसिद्ध ए, ओ और अर् रूप स्वर-विकार । जैन गृहस्थ को पालने का व्रत-विशेष । रूप, रस, गन्ध वगैरह द्रव्याश्रित धर्म । प्रत्यञ्चा । कार्य, प्रयोजन । गौण । अंश, विभाग । उपकार । °कर वि. लाभ-कारक । °कार पुं. गुणा करना, अभ्यास-राशि । °चंद पुं [°चन्द्र] एक राजकुमार । एक जैन मुनि और ग्रन्थकार । श्रेष्ठि-विशेष । °ट्ठाण न [°स्थान] गुणों का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरह चौदह गुण-स्थानक । °ट्ठिअ पुं [°ार्थिक] गुण को प्रधान माननेवाला मत, नय-विशेष । °ड्ढ वि [°ाढ्य] गुणवान् । °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] गुण का जानकार । °पुरिस पुं [°पुरुष] गुणी पुरुष । °मंत वि [वत्] गुण-युक्त । °रयणसंवच्छर न [°रत्नसंवत्सर] तप-श्चर्या-विशेष । °व, °वंत वि [°वत्] गुण-युक्त । °व्वय न [व्रत] जैन गृहस्थ को पालने-योग्य व्रत-विशेष । °सिलय न [°शिलक] राजगृह नगर का एक चैत्य । °सेढि स्त्री [°श्रेणि] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष । °सेण पुं [°सेन] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा । °हर वि [°धर] गुणी । तन्तु-धारक । °ायर पुं [°कर] गुणों की खान, अनेक गुणवाला ।

गुण देखो एगूण ।

°गुण वि. गुना, आवृत्त ।

गुणण न [गुणन] गुणकार । ग्रन्थ-परावर्तन, आवृत्ति ।

गुणयालीस स्त्रीन [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस ।

गुणवुड्ढि स्त्री [गुणवृद्धि] लगातार आठ दिनों का उपवास ।

गुणसेण पुं [गुणसेन] एक जैन आचार्य जो सुप्रसिद्ध हेमाचार्य के प्रगुरु थे ।

गुणा स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष ।

गुणाविय वि [गुणित] पाठित ।

गुणिअ वि [गुणित] जिसका गुणा किया गया हो वह । चिंतित, याद किया हुआ । पठित । जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परा-वर्तित ।

गुणिल्ल वि [गुणवत्] गुणी ।

गुण्ण देखो गोण्ण ।

गुण्ह (अप) देखो गिण्ह ।

गुत्त न [गोत्र] साधुपन ।

गुत्त वि [गुप्त] प्रच्छन्न । रक्षित । स्व-पर की रक्षा करनेवाला, मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला । एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य ।

गुत्त देखो गोत्त ।

गुत्तण्हाण न [दे] पितृ-तर्पण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] जेल। कठघरा। मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना। मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्ति। °गुत्त वि [°गुप्त] मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला, संयत। °पाल पुं. कैदखाना का अध्यक्ष। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] गोपन, रक्षण।

गुत्ति स्त्री [दे] बन्धन। अभिलाषा। वचन, आवाज। लता। सिर पर पहनी जाती फूल की माला।

गुत्तिंदिय वि [गुप्तेन्द्रिय] संयतेंद्रिय।

गुत्तिय वि [गौप्तिक] रक्षक।

गुत्तिय वि [गौत्रिक] समान गोत्रवाला।

गुत्तिवाल देखो गुत्ति-पाल।

गुत्थ वि [ग्रथित] गुम्फित।

गुत्थंड पुं [दे] भास-पक्षी।

गुद पुंस्त्री. गुदा।

गुद्दह न [गोद्रह] नगर-विशेष।

गुप्प अक [गुप्] व्याकुल होना।

गुप्प वि [गोप्य] छिपाने-योग्य। न. एकान्त, विजन।

गुप्पई स्त्री [गोष्पदी] गौ का पैर डूबे उतना गहरा।

गुप्पंत न [दे] शयनीय, शय्या। वि. गोपित, रक्षित। संमूढ़, मुग्ध, व्याकुल।

गुप्पय देखो गो-पय।

गुप्फ पुं [गुल्फ] फीली, पैर की गाँठ।

गुफगुमिअ वि [दे] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त।

गुब्भ देखो गुप्फ।

गुभ सक [गुफ्] गूँथना, गठना।

गुम सक [भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना।

गुमगुम } अक [गुमगुमाय्] 'गुमगुम'
गुमगुमाअ } आवाज करना। मधुर अव्यक्त ध्वनि करना।

गुमिल वि [दे] मूढ़, मुग्ध। गहन। प्रस्खलित। भरपूर।

गुमुगुमुगुम देखो गुमगुम।

गुम्म अक [मुह्] मुग्ध होना, घबड़ाना।

गुम्म पुं [गुल्म] परिवार, परिकर।

गुम्म पुंन [गुल्म] वल्ली, वनस्पति-विशेष। झाड़ी। सेना-विशेष, जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़ा और १३५ प्यादा हों ऐसी सेना। समूह। गच्छ का एक हिस्सा, जैनमुनि-समाज का एक अंश। जगह।

गुम्मइअ वि [दे] मूर्ख। अपूरित। पूरित। स्खलित। संचलित, मूल से उच्चलित। विघटित, वियुक्त।

गुम्मड देखो गुम्म।

गुम्मडिअ वि [मोहित] मोह-युक्त, मुग्ध किया हुआ।

गुम्मागुम्मि अ. जत्थाबन्ध होकर।

गुम्मिअ वि [मुग्ध] मोह-प्राप्त, मूढ़। घूर्णित, मद से घूमता हुआ।

गुम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल, नगररक्षक।

गुम्मिअ वि [दे] उन्मूलित।

गुम्मी स्त्री [दे] इच्छा।

गुम्मी स्त्री [गुल्मी] खटमल, जूँ।

गुम्ह (शौ) सक [गुम्फ्] गूँथना, गठना।

गुय्ह देखो गुज्झ।

गुरव देखो गुरु।

गुरु } पुं [गुरु] शिक्षक। धर्मोपदेशक।
गुरुअ } माता, पिता वगैरह पूज्य लोग। बृहस्पति। स्वर-विशेष, दो मात्रावाला आ, ई वगैरह स्वर, जिसके पीछे अनुस्वार या संयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण। वि. बड़ा, महान्। भारी। उत्कृष्ट, उत्तम। °कम्म वि [°कर्मन्] कर्मों का बोझवाला पापी। °कुल न. धर्माचार्य का सामीप्य। गुरुपरिवार। °गइ स्त्री [°गति] गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा-नीचा गमन। °लाघव न. सारासार, अच्छा और बुरापन। °सज्झि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ल्लग पुं [°सहाध्यायिक] गुरु के भाई।

गुरुई देखो गरुई।

गुरुणी स्त्री [गुर्वी] गुरु-स्थानीय स्त्री। धर्मोपदेशिका, साध्वी।

गुरेड न [गुरेट] तृण-विशेष।

गुल देखो गुड = गुड।

गुल न [दे] चुम्बन।

गुलगुंछ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना।

गुलगुंछ देखो गुलुगुंछ = उद् + नमय्।

गुलगुल अक [गुलगुलाय्] 'गुलगुल' आवाज करना, हाथी का हर्ष से चिंघाड़ना या बोलना।

गुलगुलाइअ, गुलगुलिय न [गुलगुलायित] हाथी की गर्जना।

गुलल सक [चाटो कृ] खुशामद करना।

गुललावणिया स्त्री [गुडलावणिका] गोल-पापड़ी। गुड़धाना।

गुलहाणिया स्त्री [गुडधानिका] खाद्य-विशेष।

गुलिअ वि [दे] विलोड़ित। पुं. गेंद।

गुलिआ स्त्री [दे] बुसिका। गेंद। स्तबक।

गुलिआ स्त्री [गुलिका] गोली। वर्णक द्रव्य-विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष।

गुलुइय वि [दे] लता समूहवाला।

गुलुंछ पुं [गुलुञ्छ] गुच्छा।

गुलुगुंछ देखो गुलगुंछ = उत् + क्षिप्।

गुलुगुंछ सक [उत् + नमय्] उन्नत करना।

गुलुगुंछिअ वि [दे] बाड़ से अन्तरित।

गुलुगुल देखो गुलगुल।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित।

गुलुच्छ पुं. स्तबक।

गुल्लइय वि [गुल्मवत्] लता-समूहवाला, गुल्म-युक्त।

गुव देखो गुप्त = गुप्।

°गुवलय देखो कुवलय।

गुवालिया [दे] देखो गोआलिआ।

गुविअ वि [गुप्त] व्याकुल, क्षुब्ध।

गुविल वि [गुपिल] गहरा, निबिड़। न. झाड़ी, जंगल।

गुविल वि [दे] चीनी का बना हुआ मिष्टान्न।

गुव्विणी स्त्री [गुर्विणी] गर्भवती स्त्री।

गुह देखो गुभ।

गुह पुं. कार्त्तिकेय।

गुहा स्त्री. कन्दरा।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा।

गूढ वि. प्रच्छन्न। °दंत पुं. एक अन्तर्द्वीप। द्वीप-विशेष का निवासी। एक जैन मुनि। 'अनुत्तरोपपातिक दशा' सूत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा।

गूह सक [गुह्] छिपाना, गुप्त रखना।

गूह न [गूथ] विष्ठा।

गृण्ह, गृन्ह (अप) देखो गिण्ह।

गेअ वि [गेय] गाने-योग्य। न. गीत।

गेंठुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र-ग्रन्थि।

गेंठुल्ल न [दे] कञ्चुक।

गेंड न [दे] देखो गेंठुअ।

गेंडुई स्त्री [दे] क्रीड़ा, विनोद।

गेंदुअ पुं [कन्दुक] गेंद।

गेज्ज वि [दे] मथित।

गेज्जल न [दे] ग्रीवा का आभरण।

गेज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य।

गेडण न [दे] फेंकना। दे देना।

गेडु न [दे] पंक। यव।

गेड्डी स्त्री [दे] गेड़ी।

गेण्ह देखो गिण्ह।

गेण्हिअ न [दे] उरः-सूत्र, स्तनाच्छादक वस्त्र।

गेद्ध देखो गिद्ध।

गेरिअ, गेरुअ पुंन [गैरिक] गेरु। मणि-विशेष, वि. गेरु रंग का। पुं. त्रिदण्डी साधु।

गेलण्ण न [ग्लान्य] बीमारी, ग्लानि।

गेविज्ज, गेवेज्ज, गेवेज्जय न [ग्रैवेयक] ग्रीवा का आभूषण। ग्रैवेयक देवों का विमान। पुं. उत्तमश्रेणीके देवों की एक जाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेवेय देखो गेवेज्ज ।

गेह पुंन. घर । °जामाउय पुं [°जामातृक] घर-जमाई । °गार वि [°कार] घर के आकारवाला । पुं कल्पवृक्ष की एक जाति । °लु वि [°वत्] गृही, संसारी । °सम पुं [°श्रम] गृहस्थाश्रम ।

गेहि वि [गृद्ध] अत्यासक्त ।

गेहि स्त्री [गृद्धि] लालच ।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो ।

गेहिअ वि [गेहिक] गृही । पुं. पति ।

गेहिअ [गृद्धिक] लोलुप ।

गेहिणी स्त्री [गेहिनी] गृहिणी, स्त्री ।

गो पुं. राजा । °माहिसक्क न [°माहिषक] गौ और भैंस का झुंड या समूह ।

गो पुं. किरण । स्वर्ग । बैल । पशु । स्त्री. गैया वाणी । भूमि ।°आल देखो °वाल ।°इल्ल वि [°मत्] जिसके पास अनेक गौ हों वह । °उल न [°कुल] गौओं का समूह । गोष्ठ, गोवाड़ा, °उलिय वि [°कुलिक] गोवाला । °किलंजय न [°किलञ्जक] पात्र-विशेष । °कीड पुं [°कीट] पशुओं की मक्खी । °क्खीर, °खीर न [°क्षीर] गैया का दूध । °ग्गह पुं [°ग्रह] गाय की चोरी । °ग्गहण न [°ग्रहण] गो-ग्रहण । °णिसज्जा स्त्री [°निषद्या] आसन-विशेष, गौ की तरह बैठना । °तित्थ न [°तीर्थ] गौओं का तालाब आदि में उतरने का रास्ता, क्रम से नीची जमीन । लवण समुद्र वगैरह की एक जगह । °त्तास वि [°त्रास] गौओं को त्रास देनेवाला । पुं. एक कूटग्राह का पुत्र । °दास पुं. एक जैनमुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य । एक जैनमुनिगण । °दोहिया स्त्री [°दोहिका] गौ का दोहन । गौ दुहने का आसन-विशेष । °दुह वि [°दुह्] गौ को दोहनेवाला । °धूलिआ स्त्री [°धूलिका] लग्न-विशेष, सायंकाल । °पय °प्पय न [°ष्पद] गौ का खुर डूबे उतना गहरा । गोपद-परिमित भूमि । गौ का खुर । °भद्द पुं [°भद्र] शालिभद्र के पिता का नाम । °भूमि स्त्री. गौओं को चरने की जगह । °म वि [°मत्] गौवाला । °मड न [°मृत] गौ का शव । °मय न. गो-विष्ठा । °मुत्तिया स्त्री [°मूत्रिका] गोमूत्र । गोमूत्र के आकारवाली गृहपंक्ति । °मुहिअ न [°मुखित] गौ के मुख की आकारवाली ढाल । °रहग पुं [°रथक] तीन वर्ष का बैल । °रोयण स्त्रीन [°रोचन] स्वनामख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तक-स्थित शुष्क-पित्त । °लेहणिया स्त्री [°लेहनिका] ऊषर भूमि । °लोम पुं. गौ का रोम । द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष । °वइ पुं [°पति] इन्द्र । सूर्य । राजा । महादेव । बैल । °वइय पुं [°व्रतिक] गौओं की चर्या का अनुकरण करनेवाला एक प्रकार का तपस्वी । °वय देखो °पय । °वाड पुं [°वाट] गौओं का बाड़ा । °व्वइय देखो °वइय । °साला स्त्री [शाला] गौओं का बाड़ा । °हण न [°धन] गौओं का समूह ।

गोअ देखो गोव = गोपय् ।

गोअंट पुं [दे] गौ का चरण । स्थल में होनेवाला शृङ्गाट या सिंघाड़ा का पेड़ ।

गोअग्गा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला ।

गोअर पुं [गोचर] छात्रालय ।

गोअलिणी स्त्री [गोपालिनी] ग्वालिन ।

गोअल्ला स्त्री [दे] दूध बेचनेवाली स्त्री ।

गोआ स्त्री [गोदा] गोदावरी नदी ।

गोआ स्त्री [दे] कलशी, छोटा घड़ा ।

गोआअरी स्त्री [गोदावरी] नदी-विशेष ।

गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष ।

गोआवरी देखो गोआअरी ।

गोउर न [गोपुर] नगर या किले का दरवाजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोउलिय वि [गोकुलिक] गोकुल-रक्षक ।

गोंजी } स्त्री [दे] मंजरी , बौर ।
गोंठी }

गोंड देखो कोंड = कौण्ड ।

गोंड न [दे] जंगल ।

गोंडी स्त्री [दे] मंजरी, बौर ।

गोंदल देखो गंदल ।

गोंदीण न [दे] मोर का पित्त ।

गोंफ पुं [गुल्फ] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ ।

गोकण्ण पुं [गोकर्ण] गौ का कान । दो खुर-वाला चतुष्पद-विशेष । एक अन्तर्द्वीप । गो-कर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य ।

गोकिलिंज देखो गो-कलिंजय ।

गोक्खुरय पुं [गोक्षुरक] गोखरू ।

गोच्चय पुं [दे] चाबुक ।

गोच्छ देखो गुच्छ ।

गोच्छअ } पुंन [गोच्छक] पात्र वगैरह
गोच्छग } साफ करने का वस्त्र-खण्ड ।

गोच्छड न [दे] गोमय ।

गोच्छा स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ।

गोच्छिय देखो गुच्छिय ।

गोछड देखो गोच्छड ।

गोजलोया स्त्री [गोजलौका] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ।

गोज्ज पुं [दे] शारीरिक दोषवाला बैल । गवैया ।

गोट्ठ पुं [गोष्ठ] गोबाड़ा ।

गोट्ठामाहिल पुं [गोष्ठामाहिल] कर्मपुद्गलों को जीव-प्रदेश से अबद्ध माननेवाला एक जैनाभास आचार्य ।

गोट्ठि देखो गोट्ठी ।

गोट्ठिल पुं [गौष्ठीक] एक मण्डली के सदस्य, मित्र ।

गोट्ठी स्त्री [गोष्ठी] मण्डली, समान वयवालों की सभा । वार्त्तालाप, परामर्श ।

गोड पुं [गौड] देश-विशेष । वि. गौड़ देश का निवासी ।

गोड पुं [दे] गोड़, पैर ।

गोडा स्त्री [गोला] गोदावरी ।

गोडी स्त्री [गौडी] गुड़ की दारू ।

गोड्ड वि [गौड] गुड़ का बना हुआ । मधुर ।

गोड्ड [दे] देखो गोड ।

गोण पुं [दे] साक्षी । बलीवर्द । °इल्ल वि [°वत्] गौओं का मालिक । °वइ पुंस्त्री [°पति] गौ वाला ।

गोण (णी) पुंन [गो] बैल ।

गोण वि [गौण] गुण-निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ । अमुख्य ।

गोणंगणा स्त्री [गवाङ्गना] गाय ।

गोणत्त } पुंन. [दे] वैद्य का औजार
गोणत्तय } रखने का थैला ।

गोणस पुं [गोनस] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति ।

गोणा स्त्री [दे] गाय ।

गोणिक्क पुं [दे] गौओं का समूह ।

गोणिय वि [दे] गौओं का व्यापारी ।

गोणी स्त्री [दे] गैया ।

गोण्ण देखो गोण = गौण ।

गोतिहाणी स्त्री [दे. गोत्रिहायणी] गौ की बछड़ी ।

गोत्त पुं [गोत्र] पर्वत । न. नाम । कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है । पुंन. गोत्र, वंश, कुल, जाति । °क्खलिय न [°स्खलित] एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण । °देवया स्त्री [°देवता] कुल-देवी । °फुसिया स्त्री [°स्पर्शिका] वल्ली-विशेष ।

गोत्त पुंन [गोत्र] पूर्वज पुरुष के नाम से प्रसिद्ध अपत्य—संतति । वि. वाणी का रक्षक ।

गोत्ति वि [गोत्रिन्] समान गोत्रवाला, कुटुम्बी, स्वजन ।

गोत्ति देखो गुत्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोत्तिअ वि [गोत्रिक] स्वजन, भाई-बंद ।

गोत्थुभ देखो गोथुभ ।

गोत्थूभा देखो गोथूभा ।

गोथुभ } पुं [गोस्तूप] ग्यारहवें जिनदेव का
गोथूभ } प्रथम-शिष्य । वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत । न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर । कौस्तुभरत्न ।

गोथूभा स्त्री [गोस्तूपा] वापी-विशेष, अंजन पर्वत पर की एक वापी । शक्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी ।

गोदा स्त्री [दे. गोदा] गोदावरी नदी ।

गोध पुं. म्लेच्छ देश । गोध देश का निवासी ।

गोधा स्त्री. गोह, हाथ से चलनेवाली एक साँप की जाति ।

गोपुर देखो गोउर ।

गोप्पहेलिया स्त्री [गोप्रहेलिका] गौओं को चरने की जगह ।

गोफणा स्त्री [दे] गोफन ।

गोमट्टा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला ।

गोमाअ } पुं [गोमायु] सियार, गीदड़ ।
गोमाउ }

गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिका] शय्याकार स्थान-विशेष ।

गोमाणसी स्त्री [गोमानसी] ऊपर देखो ।

गोमि } वि [गोमिन्] जिसके पास अनेक
गोमिअ } गौ हों वह ।

गोमिअ देखो गोम्मिअ ।

गोमिआ [दे] देखो गोमी ।

गोमिक (मा) [गौरवित] सम्मानित ।

गोमी स्त्री[दे]कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ।

गोमुह पुं [गोमुख] भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष । एक अन्तर्द्वीप । गोमुख-द्वीप का निवासी । न. उपलेपन ।

गोमुही स्त्री [गोमुखी] वाद्य-विशेष ।

गोमेअ } पुं [गोमेद] रत्न की एक जाति,
गोमेज्ज } राहुरत्न ।

गोमेह पुं [गोमेध] यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव । यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है ।

गोम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल ।

गोम्ही देखो गोमी ।

गोय देखो गोत्त । °वाइ वि [°वादिन्] अपने कुल को उत्तम माननेवाला, वंशाभिमानी ।

गोय न [दे] उदुम्बर—गूलर वगैरह का फल ।

गोय न [गोत्र] मौन, वाक्-संयम । °वाय पुं [°वाद] गोत्र-सूचक वचन ।

गोयम पुं [गोतम] ऋषि-विशेष । छोटा बैल । न. गोत्र-विशेष ।

गोयम वि [गौतम] गोतम-गोत्रीय । पुं. भगवान् महावीर का प्रधान-शिष्य । राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र । एक मनुष्य-जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह चलाती है । एक ब्राह्मण । द्वीप-विशेष । °केसिज्ज न [°केशीय] 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन । °सगुत्त वि [°सगोत्र] गोतम-गोत्रीय । °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम ।

गोयमज्जिया } स्त्री [गौतमार्यिका] जैनमुनि-
गोयमेज्जिया } गण की एक शाखा ।

गोयर पुं [गोचर] गौओं को चरने को जगह । विषय । इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष । भिक्षाटन । माधुकरी । वि. भूमि में विचरनेवाला । °चरिआ स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिए भ्रमण । °भूमि स्त्री. पशुओं को चरने की जगह । भिक्षा-भ्रमण की जगह । °वत्ति वि [°वर्त्तिन्] भिक्षा के लिए भ्रमण करनेवाला ।

गोयरी स्त्री [गोचरी] भिक्षा ।

गोर पुं [गौर] शुक्ल-वर्ण । वि. गौर वर्णवाला । निर्मल । °खर पुं. गर्दभ की एक जाति । °गिरि पुं. हिमाचल । °मिग पुं [°मृग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिण की एक जाति। न. उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र।
गोरअ देखो **गोरव**।
गोरंग वि [गौराङ्ग] गोरा शरीरवाला।
गोरंफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष।
गोरडित वि [दे] स्रस्त, ध्वस्त।
गोरव न [गौरव] महत्व, गुरुत्व। आदर। गमन।
गोरव्व वि [गौरव्य] गौरव-योग्य।
गोरस पुंन. गोरस, दूध, दही, मट्ठा या छाछ वगैरह। पुं. वाणी का आनन्द।
गोरह पुं [दे] हल में जोतने-योग्य बैल।
गोरा स्त्री [दे] हल-रेखा। आँख। ग्रीवा।
°**गोरि** देखो **गोरी**।
गोरिअ न [गौरिक] विद्याधर का नगर-विशेष।
गोरी स्त्री [गौरी] शुक्ल-वर्ण स्त्री। पार्वती। श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम। इस नाम की एक विद्या-देवी। °कूड न [°कूट] विद्याधर-नगर-विशेष।
गोरी स्त्री [गौरी] विद्या-विशेष।
गोरूव न [गोरूप] प्रशस्त गाय।
गोल पुं [दे] साक्षी। पुरुष का निन्दा-गर्भ आमन्त्रण। कठोरता।
गोल पुं. वृक्ष-विशेष। गोलाकार वस्तु। कुंडा। गेंद।
गोल पुंस्त्री [दे] गोला, जार से उत्पन्न।
गोलव्वायण न [गौलव्यायन] गोत्र-विशेष।
गोला स्त्री [दे] गौ। नदी। सखी। गोदावरी नदी।
गोलिय पुं [गौडिक] गुड़ बनानेवाला।
गोलिया स्त्री [दे] गुटिका। गेंद। बड़ा कुण्डा, बड़ी थाली। °लिछ, °लिच्छ न. चुल्ली, चूल्हा। अग्नि-विशेष।
गोलियायण न [गोलिकायन] गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है। वि. गोलिकायन-गोत्रीय।
गोली स्त्री [दे] दही मथने की लकड़ी।
गोल्ल न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल।
गोल्ल पुं [गौल्य] देश-विशेष। न. गोत्र-विशेष। वि. गौल्य गोत्र में उत्पन्न।
गोल्हा स्त्री [दे] बिम्बी, कुन्दरुन की लता।
गोव सक [गोपय्] छिपाना। रक्षण करना।
गोव } पुं [गोप] ग्वाला। °जिरि पुं
गोवअ } [°गिरि] पर्वत-विशेष।
गोवड्ढण देखो **गोवद्धण**।
गोवद्धण पुं [गोवर्धन] पर्वत-विशेष। ग्राम-विशेष।
गोवय वि [गोपक] छिपानेवाला, ढांकनेवाला।
गोवर पुंन [दे] गोबर।
गोवर पुं. मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्मभूमि। वणिग्-विशेष।
गोवल न [गोबल] गोधन। गोत्र-विशेष।
गोवलायण देखो **गोवल्लायण**।
गोवलिय पुं [गोबलिक] अहीर।
गोवल्ल पुंन [गोवल] गोत्र-विशेष।
गोवल्लायण वि [गोवलायन] गोवल गोत्र में उत्पन्न। न. गोत्र-विशेष।
गोवा पुं [गोपा] ग्वाला।
गोवाय सक [गोपाय्] छिपाना। रक्षण करना।
गोवाल पुं [गोपाल] अहीर। °गुज्जरी स्त्री [°गुर्जरी] भैरव रागवाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरों का गीत।
गोवाली स्त्री [गोपाली] वल्ली-विशेष।
गोविअ वि [दे] नहीं बोलनेवाला।
गोविआ स्त्री [गोपिका] गोपांगना।
गोविंद पुं [गोपेन्द्र] स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थकार। एक जैनमुनि। [गोविन्द] विष्णु, कृष्ण। एक जैन मुनि। °णिज्जुत्ति स्त्री [°निर्युक्ति] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ।
गोविल्ल न [दे] कञ्चुक।
गोवी स्त्री [दे] कन्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोवी स्त्री [गोपी] अहीरिन।

गोव्वर [दे] देखो गोवर।

गोस पुंन [दे] प्रातःकाल।

गोसंधिय पुं [गोसंधित] गोपाल।

गोसग्ग पुंन [दे. गोसर्ग] प्रभात।

गोसण्ण वि [दे] मूर्ख।

गोसाल } पुं. ब. [गोशाल] देश-विशेष।
गोसालग } पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था।

गोसाविआ स्त्री [दे] वारांगना। मूर्ख-जननी।

गोसिय वि [दे] प्रातःकाल-सम्बन्धी।

गोसीस न [गोशीर्ष] चन्दन-विशेष।

गोह पुं [दे] गाँव का मुखिया। योद्धा। जार। सिपाही, पुलिस। मनुष्य। कोतवाल आदि क्रूर मनुष्य। वि. देहाती।

गोहा देखो गोधा।

गोहिया स्त्री [गोधिका] गोधा, जल-जन्तु-विशेष। साँप की एक जाति। वाद्य-विशेष।

गोहुर न [दे] गोमय।

गोहूम पुं [गोधूम] गेहूँ।

गोहेर } पुं [गोधेर] जन्तु-विशेष, साँप
गोहेरय } की तरह का जानवर।

°ग्गह देखो गह = ग्रह।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहाण।

घ

घ पुं. कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष।

घअंद न [दे] मुकुर, दर्पण।

घइं (अप)अ. पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय।

घओअ } पुं [घृतोद] समुद्र-विशेष। मेघ-
घओद } विशेष। वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय।

घंघ पुं [दे] घर। °साला स्त्री [°शाला] अनाथ-मण्डप, भिक्षुओं का आश्रय-स्थान।

घंघल (अप) न [झकट] कलह। मोह, घबराहट।

घंघलिअ वि [दे] घबड़ाया हुआ।

घंघोर वि [दे] भ्रमण-शील।

घंचिय पुं [दे] तेली, घांची।

घंट पुंस्त्री. घण्टा, कांस्य-निर्मित वाद्य-विशेष।

घंटिय पुं [घण्टिक] चाण्डाल का कुल-देवता, यक्ष-विशेष।

घंटिय पुं [घाण्टिक] घण्टा बजानेवाला।

घंटिया स्त्री [घण्टिका] छोटी घण्टी। किंकिणी, घुंघरू। आभरण-विशेष।

घंस पुं [घर्ष] घर्षण, घिसन।

घक्कूण देखो घे का संकृ.।

घग्घर न [दे] घघरा, लहँगा।

घग्घर पुं [घर्घर] शब्द-विशेष। खोखला गला। खोखली आवाज। न. श्याद्रल, शैवाल या सेवार वगैरह का समूह।

घट्ट सक. छूना। हिलना, चलना। संघर्ष करना। आहत करना।

घट्ट सक [घट्टय्] हिलाना, प्रेरित करना।

घट्ट अक [भ्रंश्] भ्रष्ट होना।

घट्ट पुं [दे] कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र। नदी का घाट। वेणु, बाँस।

घट्ट पुं. शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास। पुंन. जमाव। समूह, जत्था। वि. निबिड।

घट्टंसुअ न [दे. घटचंशुक] बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र।

घट्टण वि [घट्टन] चालक, हिला देनेवाला। न. स्पर्श करना। चलाना, हिलाना।

घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्र वगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक

प्रकार का पत्थर।

घट्टणया, घट्टणा स्त्री [घट्टना] आघात। चलन, हिलन। विचार। पृच्छा। पीड़ा। स्पर्श।

घट्टय देखो घट्ट।

घट्ठ वि [घृष्ट] घिसा हुआ।

घड सक [घट्] चेष्टा करना। करना, बनाना। अक. परिश्रम करना। संगत होना।

घड सक [घटय्] जोड़ना। निर्माण करना। संचालन करना।

घड पुं [घट] कुम्भ। °कार पुं. कुम्भकार। °चेडिया स्त्री [°चेटिका] पानी भरनेवाली दासी, पनहारिन। °दास पुं. पानी भरनेवाला नौकर, पनिहारा। °दासी स्त्री. पनिहारी।

घड वि [दे] बनाया हुआ।

घडइअ वि [दे] संकुचित।

घडग पुं [घटक] छोटा घड़ा।

घडगार देखो घड-कार।

घडचडग पुं [घटचटक] एक हिंसा-प्रधान सम्प्रदाय।

घडण स्त्रीन [घटन] घटना। सम्बन्ध।

घडणा स्त्री [घटना] संयोग।

घडय देखो घडग।

घडा स्त्री [घटा] समूह।

घडाघडी स्त्री [दे] गोष्ठी, सभा, मण्डली।

घडाव सक [घटय्] बनाना। बनवाना। संयुक्त करना।

घडि° स्त्री [घटी] देखो घडिआ = घटिका। °मंतय, °मत्तय न [°मात्रक] छोटे घड़े के आकार का पात्र-विशेष। °जंत न [°यन्त्र] रेंहट।

घडिअघडा स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली।

घडिआ स्त्री [घटिका] छोटा घड़ा। घड़ी, मुहूर्त। °लय न. घण्टागृह।

घडिआ, घडी स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली।

घडुक्कय पुं [घटोत्कच] भीम का पुत्र।

घडुब्भव वि [घटोद्भव] घट से उत्पन्न। पुं. अगस्त्य मुनि।

घढ न [दे] थूहा, टीला, स्तूप।

घण पुं [घन] बादल। हथौड़ा। गणित-विशेष, तीन अंकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है। वाद्य का शब्द-विशेष। कांस्यताल वगैरह। वि. दृढ़, ठोस। अविरल, निबिड़, निश्छिद्र, सान्द्र। प्रगाढ़। अधिक। कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान। न. देवविमान-विशेष। पिण्ड। वाद्य-विशेष। °उदहि देखो घणोदहि। °णिचिय वि [°निचित] अत्यन्त निबिड़। °तव न [°तपस्] तपश्चर्या-विशेष। °दंत पुं [°दन्त] इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। उसका निवासी मनुष्य। °माल न. वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष। °मुइंग पुं [°मृदङ्ग] मेघ की तरह गम्भीर आवाजवाला वाद्य-विशेष। °रह पुं [°रथ] एक जैन मुनि। °वाउ पुं [°वायु] स्त्यान वायु, जो नरक पृथिवी के नीचे है। °वाय पुं [°वात] देखो °वाउ। °वाहण पुं [°वाहन] विद्याधरों के राजा का नाम। °विज्जुआ स्त्री [°विद्युता] दिक्कुमारी देवी। °समय पुं. वर्षा ऋतु।

घणंगुल पुंन [घनाङ्गुल] परिमाण-विशेष। सूची से गुना हुआ प्रतरांगुल।

घणघणाइय न [घनघनायित] रथ की घनघनाहट या गड़गड़ाहट, अव्यक्त शब्द-विशेष।

घणवाहि पुं [दे] इन्द्र।

घणसंमद्द पुं [घनसंमर्द] ज्योतिष-प्रसिद्ध योग विशेष।

घणसार पुं [घनसार] कपूर। °मंजरी स्त्री. एक स्त्री का नाम।

घणा स्त्री [घना] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी।

घणा स्त्री [घृणा] घृणा, गर्हा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घणिय न [घनित] गर्जना।

घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह। °वलय न. वलयाकार कठिन जल-समूह।

घण्ण पुं [दे] उर। वि. रंगा हुआ। मार डालने-योग्य।

घत्त सक [क्षिप्] फेंकना, डालना। प्रेरणा।

घत्त सक [ग्रह्] ग्रहण करना।

घत्त सक [गवेषय्] ढूंढ़ना, अनुसन्धान करना।

घत्त सक [यत्] यत्न करना।

घत्त वि [घात्य] मार डालने-योग्य।

घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द-विशेष।

घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष।

घत्ति अ [दे] शीघ्र।

घत्तु वि [घातुक] घातक, जल्लाद।

घत्थ वि [ग्रस्त] गृहीत, पकड़ा हुआ। भक्षित, निगला हुआ, कवलित। आक्रान्त, अभिभूत।

घम्म पुं [घर्म] गरमी, सन्ताप। पसीना।

घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक-पृथिवी।

घम्मोई स्त्री [दे] तृण-विशेष।

घम्मोडी स्त्री [दे] मध्याह्न काल। मच्छर। ग्रामणी नामक-तृण।

घय न [घृत] घी। °आसव पुं [°आश्रव] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष। °किट्ट न. घी का मैल। °किट्टिया स्त्री [°किट्टिका] घी का मैल। °गोल न [°गोल] घी और गुड़ की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई, मिष्टान्न-विशेष। °घट्ट पुं. घी का मैल। °पुन्न पुं [°पूर्ण] घेवर। °पूर पुं. घेवर मिष्टान्न-विशेष। °पूसमित्त पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य। °मंड पुं [°मण्ड] ऊपर का घी, घृतसार। °मिल्लिया स्त्री [°इलिका] घी का कीट, क्षुद्र जन्तु-विशेष। °मेह पुं [°मेघ] घी के तुल्य पानी बरसनेवाली वर्षा। °वर पुं. द्वीप-विशेष। °सागर पुं. समुद्र-विशेष।

घयण पुं [दे] भाण्ड।

घयपूस पुं [घृतपुष्य] एक जैन महर्षि।

घर पुंन [गृह] मकान। °कुडी स्त्री [°कुटी] घर के बाहर की कोठरी। चौक के भीतर की कुटिया। स्त्री का शरीर। °कोइला, °कोइलिआ स्त्री [°कोकिला] छिपकली। °गोली स्त्री. गृह-गोधा। गोहिआ स्त्री [°गोधिका] छिपकली, जन्तु-विशेष। °जामाउय पुं [जामातृक] घर-जमाई। °त्थ पुं [°स्थ] संसारी। °नाम न [°नामन्] असली नाम, वास्तविक नाम। °वाडय न [°पाटक] ढकी हुई जमीन वाला घर। °वार न [°द्वार] घर का दरवाजा। °सउणि पुं [°शकुनि] पालतू जानवर। °समुदाणिय पुं [समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु। °सामि [°स्वामिन्] घर का मालिक। °सामिणी स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री। °सूर [°शूर] झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दिखानेवाला।

घरंगण न [गृहाङ्गण] चौक।

घरकूडी स्त्री [गृहकूटी] स्त्री-शरीर।

घरग देखो घर।

घरघंट पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी।

घरघरग पुं [दे] गला का आभूषण-विशेष।

घरट्ट पुं. जाँता, चक्की।

घरट्ट पुं [दे] पानी का चरखा।

घरट्टी स्त्री. तोप।

घरणी देखो घरिणी।

घरयंद पुं [दे] दर्पण, शीशा।

घरस पुं [दे. गृहवास] गृहस्थाश्रम।

घरसण देखो घंसण।

घरिंत वि [गृहवत्] घरवाला।

घरिणी स्त्री [गृहिणी] भार्या।

घरिल्ल पुं [गृहिन्] घरबारी।

घरिल्ला स्त्री [गृहिणी] पत्नी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घरिल्ली स्त्री [दे. गृहिणी] गृहिणी ।
घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ ।
घरोइला स्त्री [दे] छिपकली ।
घरोल न [दे] गृह-भोजन-विशेष ।
घरोलिया, घरोली स्त्री [दे] गृहगोधिका, छिपकली ।
घलघल पुं. 'घल-घल' आवाज ।
घल्ल सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, घालना ।
घल्ल वि [दे] अनुरक्त, प्रेमी ।
घल्लय, घल्लोय पुं [दे] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति ।
घल्लिअ वि [दे] घटित, निर्मित ।
घस सक [घृष्] घिसना, रगड़ना । मार्जन करना, सफा करना ।
घस स्त्रीन [दे] फाटवाली भूमि । शुषिर भूमि, क्षार भूमि ।
घसणिअ वि [दे] गवेषित ।
घसणी स्त्री [घर्षणी] टेढ़ी लकीर ।
घसा स्त्री [दे] पोली जमीन । भूमि-रेखा ।
घसिर वि [ग्रसितृ] बहुत खानेवाला ।
घसी स्त्री [दे] भूमि-राजि, लकीर । नीचे उतरना, अवतरण । [दे] जमीन का उतार, ढाल ।
घसुमर वि [घस्मर] खाने की आदतवाला ।
घाइ वि [घातिन्] नाशक, हिंसक । °**कम्म** न [°कर्मन्] ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म । °**चउक्क** न [चतुष्क] पूर्वोक्त चार कर्म ।
घाइअ वि [घातित] मारित, विनाशित । घबाया हुआ । सामर्थ्यरहित ।
घाइआ स्त्री [घातिका] विनाश करनेवाली स्त्री, मारनेवाली स्त्री । घात, हत्या । घाव करना ।
घाइर वि [घ्रायिन्] सूंघनेवाला ।
घाउकाम वि [हन्तुकाम] मारने की इच्छा-वाला ।
घाड अक [भ्रंश्] च्युत होना ।
घाड पुं [घाट] मित्रता । मस्तक के नीचे का भाग ।
घाडिय वि [घाटिक] मित्र ।
घाडेरुय पुं [दे] खरगोश की एक जाति ।
घाण पुं [दे] घानी, कोल्हू । घान, चक्की आदि में एक बार डालने का परिमाण ।
घाण पुंन [घ्राण] नासिका । °**रिस** पुंन [°र्शस्] पीनस रोग ।
घाणिंदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका ।
घाय सक [हन्] मारना, विनाश करना ।
घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना ।
घाय पुं [घात] गमन, प्रहार, वार । नरक । हत्या, विनाश । संसार ।
घायग वि [घातक] मार डालनेवाला, विनाशक ।
घायण पुं [दे] गायक ।
घायणा स्त्री [हनन] मारना, हिंसा, वध ।
घायय पुं [घातक] नरक-स्थान-विशेष ।
घायावणा स्त्री [घातना] मरवाना, दूसरे द्वारा मारना । लूटपाट मचवाना ।
घार अक [घारय्] विष का फैलना, विष के असर से बेचैन होना । सक. विष से बेचैन करना । विष से मारना ।
घार पुं [दे] दुर्ग ।
घारंत पुं [दे] घेवर ।
घारिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, घारी ।
घारी स्त्री [दे] पक्षि-विशेष । छन्द-विशेष ।
घास सक [घृष्] घिसना । पीड़ा करना ।
घास पुं. तृण ।
घास पुं [ग्रास] कवल । आहार ।
घास पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ ।
घासेसणा स्त्री [ग्रासैषणा] आहार-विषयक शुद्धि-अशुद्धि का पर्यालोचन ।
घि देखो घे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घिअ न [घृत] घी।
घिअ वि [दे] तिरस्कृत, अवधीरित।
घिं° } पुं [ग्रीष्म] ग्रीष्म-काल। गरमी,
घिंसु } अभिताप।
घिट्ठ वि [दे] कूबड़ा।
घिट्ठ वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ।
घिणा स्त्री [घृणा] जुगुप्सा, अरुचि। दया।
घिणिल्ल वि [घृणावत्] घृणावाला, नफरत करनेवाला।
घित्त (अप) वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ।
घित्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छावाला।
घिस सक [ग्रस्] ग्रसना, निगलना, भक्षण करना।
घिसरा स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष।
घुंघुरुड पुं [दे] ढेर, समूह।
घुंट पुं [दे] घूंट।
घुग्घ } (अप) पुंन [घुग्घिका] बन्दर की
घुग्घिअ } चेष्टा।
घुग्घुच्छण न [दे] खेद, तकलीफ, परिश्रम।
घुग्घुरि पुं [दे] मेढ़क।
घुग्घुस्सुअ वि [दे] निःशंक होकर गया हुआ।
घुग्घुस्सुसय न [दे] आशंकायुक्त वाणी।
घुघुघुघुघुघ अक [घुघुघुघाय्] 'घुघु' आवाज करना, घूक या उल्लू का बोलना।
घुघुय अक [घुघूय्] ऊपर देखो।
घुट्टग पुं [घृष्टक] लिपे हुए पात्र को घिसने का पत्थर।
घुट्टघुणिअ न [दे] पहाड़ की बड़ी शिला।
घुट्ठ वि [घुष्ट] घोषित।
घुडुक्क अक [गर्ज्] गर्जारव करना।
घुण पुं. काष्ठ-भक्षक कीट, घुन।
घुणहुणिआ } स्त्री [दे] कर्णोपकर्णिका,
घुणाहुणी } कानाकानी।
घुणिय वि [घुणित] घुणों से विद्ध, घुना हुआ।
घुण्ण देखो घुम्म।
घुत्तिअ वि [दे] गवेषित।
घुन्न } देखो घुम्म।
घुम }
घुमघुमिय वि [घुमघुमित] जिसने 'घुमघुम' आवाज किया हो वह। न. 'घुम-घुम' ध्वनि।
घुम्म अक [घुर्ण्] घूमना, चक्राकार फिरना। भटकना।
घुयग पुं [दे] एक तरह का पत्थर, जो पात्र वगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है, खराद या चरखो।
घुरहुर देखो घुरुघुर।
घुरुक्क अक [दे] गरजना।
घुरुक्कार पुं [घुरुत्कार] सूअर आदि की आवाज।
घुरुघुर अक [घुरुघुराय्] घुरघुराना। व्याघ्र वगैरह का बोलना।
घुरुघुरि पुं [दे] मण्डूक।
घुरुघुरु } देखो घुरुघुर।
घुरुहुर }
घुल देखो घुम्म।
घुलघुल अक [घुलघुलाय्] 'घुल-घुल' आवाज करना।
घुलिकि स्त्री [दे] हाथी की आवाज।
घुल्ला स्त्री [दे] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।
घुसण देखो घुसिण।
घुसल सक [मथ्] मथना, विलोड़ना।
घुसिण न [घुसृण] कुंकुम, केसर।
घुसिणल्ल वि [घुसृणवत्] कुंकुमवाला।
घुसिणिअ वि [दे] गवेषित।
घुसिम न [दे] घुसृण, कुंकुम।
घुसिरसार न [दे] अवस्नान, विवाह के अवसर में स्नान के पहले लगाया जाता मसूरादि का पिसान, उबटन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घुसुल देखो घुसल ।

घूअ पुंस्त्री [घूक]उलूक । स्त्री. घूई । °रि पुं. कौआ ।

घूणाग पुं [घूणाक] स्वनाम-ख्यात सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष ।

घूरा स्त्री [दे] जंघा । खलका, शरीर का अवयव विशेष ।

घे देखो गह = ग्रह ।

घेउर पुंन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष ।

घेक्कूण घे का संकृ. ।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छावाला ।

घेप्प°
घेप्पंत } घे का वकृ. ।
घेप्पमाण

घेवर [दे] देखो घेउर ।

घोट्ट } सक [पा] पीना, पान करना ।
घोट्टय

घोड देखो घुम्म ।

घोड
घोडग } पुंस्त्री [घोट, °क] अश्व । पुं. कायोत्सर्ग का एक दोष । °रक्खग पुं [°रक्षक] अश्वपाल । °गीव
घोडय
[°ग्रीव] अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, नृप-विशेष । °मुह न [°मुख] जैनेतर शास्त्र-विशेष ।

घोडिय पुं [दे] मित्र ।

घोडी स्त्री [घोटी] घोड़ी । वृक्ष-विशेष ।

घोण न [घोण] घोड़े की नाक ।

घोणस पुं [घोनस] एक प्रकार का साँप ।

घोणा स्त्री. नाक । घोड़े की नाक । सूअर का मुख-प्रदेश ।

घोर अक [घुर्] निद्रा में 'घुर-घुर' आवाज करना ।

घोर वि [दे] विनाशित । पुं. गोध ।

घोर वि. भयंकर, विकट । निर्दय ।

घोरि पुं [दे] शलभ-पशु की एक जाति ।

घोल देखो घुम्म ।

घोल सक [घोलय्] घिसना, रगड़ना । मिलाना । मर्दन करना ।

घोल न [दे] कपड़े से छाना हुआ दही ।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरह का पानी की रगड़ से गोलाकार होना ।

घोलवड न [दे] दहीबड़ा ।

घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया हुआ ।

घोलिअ न [दे] शिलातल । हठ-कृत ।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ । अत्यन्त लीन ।

घोलिअ वि [घोलित] आम की तरह घोला हुआ ।

घोस सक [घोषय्] घोषणा करना । घोखना । जोर-जोर से बोल कर पढ़ना या रटना ।

घोस पुं [घोष] ऊँची आवाज । अहीरों का महल्ला, अहीर टोली । गोष्ठ, गौओं का बाड़ा । स्तनितकुमार देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र । उदात्त आदि स्वर-विशेष । अनुनाद । न. देव-विमान-विशेष । °सेण पुं [°सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म-गुरु, एक जैन मुनि ।

घोस न [घोष] लगातार ग्यारह दिनों का उपवास ।

घोसय न [दे] दर्पण रखने का उपकरण-विशेष ।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष ।

घोसाडिया देखो घोसाडई ।

घोसालई } स्त्री [दे] शरद् ऋतु में होने-
घोसाली } वाली लता-विशेष ।

घोसावण न [घोषण] घोषणा ।

च

च पुं. तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ।

च अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय-और, तथा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनः। निश्चय। भेद, विशेष। अतिशय, आधिक्य। सम्मति। पाद-पूर्ति। अथवा।

चआ स्त्री [त्वक्] चमड़ी।

चइअ वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो।

चइअ देखो चविअ।

चइअ वि [त्यक्त] मुक्त, परित्यक्त।

चइअ वि [त्याजित] छुड़वाया हुआ।

चइअ चय = त्यज् } का संकृ.।
चइअ चु }

चइइअ देखो चेइअ।

चइत्त देखो चेइअ।

चइत्त पुं [चैत्र] चैत्र मास।

चइद (शौ) वि [चकित] भीत, शंकित।

चउ वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष। °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] चौआलीस। °कट्ठ न [°काष्ठा] चारों दिशा। °कट्ठी स्त्री [°काष्ठी] चोकठा। द्वार का ढाँचा। °क्कोण वि [°कोण] चार कोणवाला, चतुरस्र। °ग न. देखो चउक्क = चतुष्क। °गइ स्त्री [°गति] नरक, तिर्यग्, मनुष्य और देव की योनि। °गइअ वि [°गतिक] चारों गति में भ्रमण करनेवाला। °गमण न [°गमन] चारों दिशाएँ। °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] चौगुना। °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] चौआलीस। °चरण पुं. चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु। °चूड पुं. विद्याधर वंश के एक राजा का नाम। °ट्ठ देखो °त्थ। °ट्ठाणवडिअ वि [°स्थानपतित] चार प्रकार का। °णउइ स्त्री [°नवति] चौरानबे। °णउय वि [°नवत] चौरानबेवाँ। °णवइ देखो °णउइ। °ण्ण देखो °पन्न। °तिस, °तीस न [°त्रिंशत्] चौतीस। °तीसइम देखो °त्तीसइम। °तीसा स्त्री. देखो °तीस। °त्तालीस वि [°चत्वारिंश] चौआलीसवाँ। °त्तीसइम वि [°त्रिंश] चौतीसवाँ। न. सोलह दिनों का लगातार उपवास। °त्थ वि [°थ] चौथा। पुंन. उपवास। °त्थचउत्थ पुंन [°थचतुर्थ] एक-एक उपवास। °त्थभत्त न [°थभक्त] एक दिन का उपवास। °त्थभत्तिय वि [°थभक्तिक] जिसने एक उपवास किया हो वह। °त्थिमंगल न [°थीमङ्गल] वधू-वर के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता है, चौठारी। °त्थी स्त्री [°थी] चौथी। सम्प्रदान-विभक्ति। तिथि-विशेष। °दंत देखो °द्दंत। °दस त्रि. ब. [°दशन्] चौदह। °दसपुव्वि पुं [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व ग्रन्थों का ज्ञानवाला मुनि। °दसम वि. देखो °द्दसम। °दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकार से। °दसी स्त्री [°दशी] चतुर्दशी-तिथि। °द्दंत पुं [°दन्त] इन्द्र का हाथी। °द्दस देखो °दस। °द्दसपुव्वि देखो °दसपुव्वि। °द्दसम वि [°दश] चौदहवाँ। पुंन. लगातार छः दिनों का उपवास। °द्दसी देखो °दसी। °द्दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ। °द्दह देखो °दस। °द्दही देखो °दसी। °द्दिसं, °द्दिसिं अ [°दिश्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में। °द्धा अ [°धा] चार प्रकार से। °नाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यव ज्ञान। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरह चार ज्ञानवाला। °पण्णइम वि [°पञ्चाश] चौवनवाँ। न. लगातार छब्बीस दिनों का उपवास। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ। °पय देखो °प्पय। °पाल न. सूर्याभ देव का प्रहरण-कोश। °पइया, °प्पइया स्त्री [°पदिका] छन्द-विशेष। जन्तु-विशेष की एक जाति। °प्पई स्त्री [°पदी] देखो °पइया। °प्पन्न देखो °पन्न। °प्पय पुंस्त्री [°पद] चौपाया प्राणी, पशु। न. ज्योतिष प्रसिद्ध एक स्थिरकरण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°प्पह पुं [°पथ] चौराहा। °प्पुड वि [°पुट] चार पुटवाला, चौसर, चौपड़। °प्फाल वि [°फाल] देखो °प्पुड। °ब्बाहु वि [°बाहु] चार हाथवाला। पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण। °ब्भुअ [°भुज] देखो °बाहु। °भंग पुंन. चार प्रकार, चार विभाग। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपड़े के साथ कूटी हुई मिट्टी। °मंडलग न [°मण्डलक] लग्न-मण्डप। °मासिअ देखो चाउम्मासिअ। °मुह, °म्मुह पुं [°मुख] ब्रह्मा, विधाता। वि. चार मुँहवाला, चार द्वारवाला। °वग्ग पुंन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय। °वण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजेवाला (गृह)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का। °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौबीस। °वीसइ (अप)। स्त्री [°विंशति] चौबीस। °वीसइम वि [°विंशतितम] चौबीसवाँ। न. ग्यारह दिनों का लगातार उपवास। °व्वग्ग देखो °वग्ग। °व्वार पुंन [°वार] चार दफा। °व्विह देखो °विह। °व्वीस देखो °वीस। °व्वीसइम देखो °वीसइम। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ। °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ। °स्सट्ठि देखो °सट्ठि। °स्साल न [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर। °हट्ट पुंन [°हट्ट] बाजार। °हत्तर वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर। °हा अ [°धा] चार प्रकार से। देखो चो°।

चउक्क न [चतुष्क] चौकड़ी, चार वस्तुओं का समूह।

चउक्क [दे. चतुष्क] चौक, चौराहा। आँगन।

चउक्कर पुं [दे] कार्तिकेय।

चउक्कर वि [चतुष्कर] चतुर्भुज।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किका] आँगन, छोटा चौक।

चउज्झाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष।

चउड पुं [चोड] देश-विशेष।

चउद देखो चउ-दस।

चउद्दह वि [चतुर्दश] चौदहवाँ।

चउपंचम वि [चतुष्पञ्च] चार या पाँच।

चउपाडिवय न [चतुष्प्रतिपत्] चार पड़वा या परिवा तिथियाँ।

चउप्पाय पुं [चतुष्पाद] एक दिन का उपवास।

चउप्फल वि [चतुष्फल] चौगुना।

चउबोल स्त्रीन [चौबोल] छन्द-विशेष।

चउम्मुह पुं [चतुर्मुख] दो दिन का उपवास।

चउर वि [चतुर] निपुण, होशियार।

चउरंग वि [चतुरङ्ग] चार अंगवाला, चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)। न. चार अंग, चार प्रकार।

चउरंगय न [चतुरङ्गक] एक तरह का जुआ।

चउरंगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)। स्त्री. °णी।

चउरंत वि [चतुरन्त] चार सीमाओंवाला। पुं. संसार। स्त्री. °ता [°ता] पृथिवी।

चउरंत न [चतुरन्त] पहिया।

चउरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोणवाला।

चउरंसा स्त्री [चतुरंसा] छन्द-विशेष।

चउरचिंध पुं [दे] सातवाहन, राजा शालिवाहन।

चउरय पुं [दे] चबूतरा, गाँव का सभा-स्थान।

चउरस्स देखो चउरंस।

चउराणण वि [चतुरानन] चार मुँहवाला। पुं. ब्रह्मा, विधाता।

चउरासी, चउरासीइ स्त्री [चतुरशीति] संख्या-विशेष, चौरासी की संख्या।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रियवाला।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुराई, निपुणता।

चउरिया } स्त्री [दे] लग्न-मण्डप।
चउरी }

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एक सौ चारवाँ।

चउवीस वि [चतुर्विंश] चौबीसवाँ।

चउवीसिगा स्त्री [चतुर्विंशिका] समय-मान-विशेष, चौबीस तीर्थङ्कर जितने समय में होते हैं उतना काल—एक उत्सर्पिणी या एक अवसर्पिणी-काल।

चउवेद }
चउवेय } वि [चतुर्वेद] चारों वेदों का ज्ञाता, चौबे।
चउव्वेद }

चउसट्ठिआ स्त्री [चतुःषष्टिका] रसवाली चीज तौलने का एक नाप, चार पल का एक माप।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा (लड़ी) वाला (हार आदि)।

चउहत्थ पुं [चतुर्हस्त] श्रीकृष्ण।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम।

चओर पुंन [दे] पात्र-विशेष।

चओर } पुंस्त्री. [चकोर] पक्षि-विशेष।
चओरग }

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानि-वाला।

चंकम } अक [चङ्क्रम्] बार-बार चलना। इधर-उधर घूमना। बहुत भटकना। टेढ़ा चलना। चलना-फिरना।
चंकम्म }

चंकार पुं [चकार] च वर्ण, 'च' अक्षर।

चंग वि [दे. चङ्ग] सुन्दर।

चंग क्रिवि [दे] अच्छा, ठीक।

चंगदेव पुं [चङ्गदेव] हेमाचार्य का गृहस्थावस्था का नाम।

चंगवेर पुंन [दे] काठ का तख्ता। पुं. काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष।

चंगिम पुंस्त्री [दे. चङ्गिमन्] सौन्दर्य, श्रेष्ठता।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, चंगेली, डलिया, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष।

चंच देखो चंछ।

चंच पुं [चञ्च] पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास। न. देवविमान-विशेष।

चंचपुड पुंन [दे] आघात, अभिघात।

चंचप्पर न [दे] असत्य।

चंचरीअ पुं [चञ्चरीक] भ्रमर।

चंचल वि [चञ्चल] चपल, चञ्चल। पुं. रावण के एक सुभट का नाम।

चंचला स्त्री [चञ्चला] चञ्चल स्त्री। छन्द-विशेष।

चंचा स्त्री [चञ्चा] नरकट की चटाई। चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष। घास का पुतला।

चंचाल (अप) देखो चंचल।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोंच, पक्षी का ठोर।

चंचुच्चिय न [दे. चञ्चुरित, चञ्चूच्चित] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित।

चंचुय पुं [चञ्चुक] अनार्य देश-विशेष। उस देश का निवासी मनुष्य।

चंचुर वि [चञ्चुर] चपल, चञ्चल।

चंछ सक [तक्ष्] छिलना।

चंड सक [पिष्] पीसना।

चंड देखो चंद।

चंड वि [चण्ड] प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र। भयानक। अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी। तेजस्वी। पुं. राक्षस वंश के एक राजा का नाम। क्रोध। °किरण पुं. सूर्य। °कोसिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुं [°कौशिक] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °पज्जोअ पुं [°प्रद्योत] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम। °भाणु पुं [°भानु] सूरज। °रुद्द पुं [°रुद्र] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य। °वडिंसअ पुं [°ावतंसक] नृप-विशेष। °वाल पुं [°पाल] नृप-विशेष। °सेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम। °ालिय न [°ालीक] क्रोध-वश कहा हुआ झूठ।

चंडंसु पुं [चण्डांशु] सूर्य।

चंडण देखो चंदण।

चंडमा पुं [चन्द्रमस्] चाँद।

चंडा स्त्री. चमरादि इन्द्रों की मध्यम परिषद्। भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी।

चंडातक न [चण्डातक] चोली, लहँगा।

चंडार पुंन [दे] भण्डार।

चंडाल पुं [चण्डाल] वर्णसङ्कर जाति-विशेष। डोम।

चंडालिय वि [चाण्डालिक] चाण्डाल-सम्बन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] चण्डाल-जातीय स्त्री। विद्या-विशेष।

चंडिअ वि [दे] कृत, छिन्न, काटा हुआ।

चंडिक्क पुंन [दे. चाण्डिक्य] रोष, क्रोध, रौद्रता।

चंडिज्ज पुं [दे] कोप, गुस्सा। वि. पिशुन, खल, दुर्जन।

चंडिम पुंस्त्री [चण्डिमन्] चण्डता, प्रचण्डता।

चंडिया स्त्री [चण्डिका] देखा चंडी।

चंडिल वि [दे] पीन, पुष्ट।

चंडिल पुं [चण्डिल] हजाम।

चंडी स्त्री [चण्डी] क्रोध-युक्त स्त्री, कर्कशा और उग्र स्त्री। पार्वती। वनस्पति-विशेष। °देवग वि [°देवक] चण्डी का भक्त।

चंद पुं [चन्द्र] चन्द्रमा। नृप-विशेष। दाशरथी राम। राम के एक सुभट का नाम। रावण का एक सुभट। राशि-विशेष। आह्लादक वस्तु। कपूर। स्वर्ण। पानी। एक जैन आचार्य। द्वीप-विशेष। राधावेध की पुतली का बायाँ नयन, आँख का गोला। न. देव-विमान-विशेष। रुचक पर्वत का एक शिखर। °अंत देखो °कंत। °उत्त देखो °गुत्त। °कंत पुं [°कान्त] मणि-विशेष। न. देव-विमान-विशेष। वि. चन्द्र की तरह आह्लादक। °कंता स्त्री [°कान्ता] नगरी-विशेष। एक कुलकर-पुरुष की पत्नी। °कूड न [°कूट] देवविमान-विशेष। रुचक पर्वत का एक शिखर। °गुत्त पुं [°गुप्त] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा। °चार पुं. चन्द्र की गति। °चूड, °चूल पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा। °च्छाय पुं. अङ्ग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी। °जसा स्त्री [°यशस्] एक कुलकर पुरुष की पत्नी। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष। °णखा स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम। °णह पुं [°नख] रावण का एक सुभट। °णही देखो °णखा। °णागरी स्त्री [°नागरी] जैन मुनि-गण की एक शाखा। °दरिसणिया स्त्री [°दर्शनिका] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव। °दिण न [°दिन] प्रतिपदादि तिथि। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °द्ध न [°ार्ध] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] तप-विशेष। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ। °पव्वय पुं [°पर्वत] वक्षस्कार पर्वत-विशेष। °पुर न. वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर। °पुरी स्त्री. नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्मभूमि। °प्पभ वि [°प्रभ]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्द्र के तुल्य कान्तिवाला। पुं. आठवें जिन-देव का नाम। चन्द्रकान्त मणि। एक जैन मुनि। न. देवविमान-विशेष। चन्द्र का सिंहासन। °प्पभा स्त्री[°प्रभा]चन्द्र की एक अग्र-महिषी। मदिरा-विशेष। इस नाम की एक राज-कन्या। इस नाम की एक शिविका जिसमें बैठकर भगवान् शीतलनाथ और महावीर स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे। °प्पह देखो °प्पभ। °भागा स्त्री. एकनदी। °मंडल पुंन [°मण्डल] चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान। चन्द्र का बिम्ब। °मग्ग पुं [°मार्ग] चन्द का मण्डल-गति से परि-भ्रमण। चन्द्र का मण्डल। °मणि पुं. मणि-विशेष। °माला स्त्री. चन्द्राकार हार, चन्द्र-हार। छन्द-विशेष।°मालियास्त्री[°मालिका] वही पूर्वोक्त अर्थ।°मुही स्त्री [°मुखी] चन्द्र के समान आह्लादक मुखवाली स्त्री। सीता-पुत्र कुश की पत्नी। °रह पुं [°रथ] विद्या-धर वंश का एक राजा। °रिसि पुं[°ऋषि] एक जैन ग्रन्थकार मुनि। °लेस न [°लेश्य] देवविमान-विशेष। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्द्रकला। एक राज-पत्नी। °वडिंसग न [°ावतंसक] चन्द्र के विमान का नाम। देखो चंडवडिंसग। °वण्ण न [°वर्ण] एक देवविमान। °वयण वि [°वदन] चन्द्र के तुल्य आह्लादजनक मुँहवाला। पुं. राक्षस-वंश का एक राजा। °विकंप पुंन [°विकम्प] चन्द्र का विकम्प-क्षेत्र। °विमाण न [°विमान] चन्द्र का विमान। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर। °वेग पुं. एक विद्याधर-नरेश। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] चान्द्र मासों से निष्पन्न संवत्सर। °साला स्त्री [°शाला] अटारी। °सालिया स्त्री [°शालिका] अट्टालिका। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान-विशेष। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान। °सिरी स्त्री [°श्री] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम। °सिहर पुं [°शिखर] विद्याधर वंश का एक राजा। °सूरदंसावणिया, °सूरपा-सणिया स्त्री [°सूरदर्शनिका] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन और उसके उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव। °सूरि पुं. स्वनामविख्यात एक जैन आचार्य। °सेण पुं [°सेन] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र। एक विद्याधर राज-कुमार। °सेहर पुं [°शेखर] भूप-विशेष। महादेव। °हास पुं. खड्ग-विशेष।

चंद पुं [चन्द्र] जिसमें अधिक मास न हो वह वर्ष। °उडु पुं [°ऋतु] कुछ अधिक उनसठ दिनों की एक ऋतु। °परिवेस पुं [°परिवेष] चन्द्र-परिधि। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] देखो चंदप्पभा। °ावदी स्त्री [°ावती] एक नगरी।

चंद वि[चान्द्र] चन्द्र-सम्बन्धी। °कुल न. जैन मुनियों का एक कुल।

चंदअ देखो चंद = चन्द्र।

चंदइल्ल पुं [दे] मोर।

चंदंक पुं [चन्द्राङ्क] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा।

चंदग [चन्द्रक] देखो चंद। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध।

चंदट्ठिआ स्त्री [दे] भुज, शिखर, कन्धा। गुच्छा।

चंदण पुं [चन्दन] एक देवविमान। रत्न की एक जाति। पुं. द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, अक्ष का जीव।

चंदण पुंन [चन्दन] चन्दन का पेड़। न. चन्दन की लकड़ी। घिसा हुआ चन्दन। छन्द-विशेष। रुचक पर्वत का एक शिखर। °कलस पुं [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट। °घड पुं [°घट] मंगल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारक घड़ा। °बाला स्त्री. एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या। °वइ पुं. [°पति] स्वनाम-ख्यात एक राजा।

चंदणग पुंन [चन्दनक] ऊपर देखो। पुं. द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं।

चंदणा स्त्री [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनबाला।

चंदणि स्त्री [दे] आचमन, कुल्ला। °उयय न [°उदक] कुल्ला फेंकने की जगह।

चंदणी स्त्री [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी।

चंदम पुं [चन्द्रमस्] चाँद।

चंदरुद्द देखो चंड-रुद्द।

चंदवडाया स्त्री [दे] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी स्त्री।

चंदा स्त्री [चन्द्रा] चन्द्र-द्वीप की राजधानी।

चंदाअव पुं [चन्द्रातप] चाँदनी। देखो चंदायय।

चंदाणण पुं [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिनदेव।

चंदाणणा स्त्री [चन्द्रानना] चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करनेवाली, चन्द्रमुखी। शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष।

चंदाभ वि [चन्द्राभ] चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। पुं. आठवाँ जिनदेव, चन्द्रप्रभ स्वामी। इस नाम का एक राज-कुमार। न. एक देव-विमान।

चंदायण न [चान्द्रायण] तप-विशेष, जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं।

चंदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छः-छः मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन।

चंदायय देखो चंदाअव। आच्छादन-विशेष, वितान, चँदवा।

चंदालग न [दे] ताम्र का भाजन-विशेष।

चंदावत्त न [चन्द्रावर्त्त] एक देवविमान।

चंदाविज्झय देखो चंदग-विज्झ।

चंदिआ स्त्री [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा।

चंदिकोज्जलीय वि [दे. चन्द्रिकोज्ज्वलित] चन्द्रकान्ति से उज्ज्वल बना हुआ।

चंदिण न [दे] चन्द्रप्रभा।

चंदिम देखो चंदम एक जैन मुनि।

चंदिमा स्त्री [चन्द्रिका] ज्योत्स्ना।

चंदिमाइय न [चान्द्रिक] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन।

चंदिल पुं [चन्दिल] नापित।

चंदुत्तरवडिंसग न [चन्द्रोत्तरावतंसक] एक देवविमान।

चंदेरी स्त्री [दे] नगरी-विशेष।

चंदोज्ज } न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी
चंदोज्जय } कमल।

चंदोत्तरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान।

चंदोयर पुं [चन्द्रोदर] एक राज-कुमार।

चंदोवग न [चन्द्रोपक] संन्यासी का एक उपकरण।

चंदोवराग पुं [चन्द्रोपराग] चन्द्र-ग्रहण।

चंद्र देखो चंद।

चंप सक [दे] चाँपना, दबाना।

चंप सक [चर्च्] चर्चा करना।

चंप सक [आ + रुह्] चढ़ना।

चंप देखो चंपय।

चंपग पुंन [चम्पक] एक देवविमान।

चंपग देखो चंपय।

चंपडण न [दे] प्रहार, आघात।

चंपय पुं [चंपक] चम्पा का पेड़। देव-विशेष। न. चम्पा का फूल। °माला स्त्री. छन्द-विशेष। चम्पा के फूलों का हार। °लया स्त्री [°लता] लताकार चम्पक वृक्ष। चम्पक वृक्ष की शाखा। °वण न [°वन] चम्पक वृक्षों की प्रधानतावाला वन।

चंपयवडिंसय पुं [चम्पकावतंसक] सौधर्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवलोक में स्थित एक विमान।

चंपा स्त्री [चम्पा] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष। °पुरी स्त्री. वही अर्थ।

चंपा स्त्री. देखो चंपय। °कुसुम न. चम्पा का फूल। °वण्ण वि [°वर्ण] चम्पा के फूल के तुल्य रंगवाला, सुवर्ण-वर्ण।

चंपारण (अप) पुं [चम्पारण्य] देश-विशेष, चंपारन, तिरहुत कमिश्नरी (बिहार) का एक जिला। चंपारन का निवासी।

चंपिअ न [दे] आक्रमण, दबाव।

चंपिज्जिया स्त्री [चम्पीया] जैन मुनिगण की एक शाखा।

चंभ पुं [दे] हल से विदारित भूमि-रेखा।

चकप्पा स्त्री [दे] त्वचा।

चकिद देखो चइद।

चकोर पुंस्त्री. चकोर पक्षी।

चक्क पुं [चक्र] चक्रवाक पक्षी, न. गाड़ी का पहिया। समूह। अस्त्र-विशेष। चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष। व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष। न. एक देवविमान। °कंत पुं [°कान्त] स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव। °जोहि पुं [°योधिन्] चक्र से लड़नेवाला योद्धा। वासुदेव, तीन खण्ड पृथिवी का राजा। °ज्झय पुं [°ध्वज] चक्र के निशानवाली ध्वजा। °पहु पुं [°प्रभु] चक्रवर्ती राजा। °पाणि पुं. चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] विदेह वर्ष की एक नगरी। °प्पहु देखो °पहु। °यर पुं [°चर] भिक्षुक। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध। °वइ पुं [°पति] सम्राट्। °वइ, °वट्टि पुं [°वर्तिन्] छः खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट्। °वट्टित्त न [°वर्तित्व] सम्राट्पन, साम्राज्य। °वत्ति देखो °वट्टि। °विजय पुं. चक्रवर्ती राजा से जीतने-योग्य क्षेत्र-विशेष। °साला स्त्री [°शाला] तैलिक गृह। °सुह पुं [°शुभ, °सुख] मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव। °सेण पुं [°सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा। °हर पुं [°धर] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा।

चक्कआअ देखो चक्कवाय।

चक्कंग पुं [चक्राङ्ग] पक्षि-विशेष।

चक्कणभय न [दे] नारंगी का फल।

चक्कणाहय न [दे] तरङ्ग, कल्लोल।

चक्कम } चक्कम्म } अक [भ्रम्] घूमना, भटकना।

चक्कम्मविअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ।

चक्कय देखो चक्क।

चक्कल न [दे] कुण्डल। हिंडोला का पटिया। वि. वर्तुल, गोलाकार पदार्थ। विशाल, विस्तीर्ण।

चक्कलिअ वि [दे] चक्राकार किया हुआ। °भिण्ण वि [°भिन्न] गोलाकार खण्ड, गोल टुकड़ा।

चक्कवाई स्त्री [चक्रवाकी] चकवी।

चक्कवाग } चक्कवाय } पुं [चक्रवाक] चकवा।

चक्कवाल न [चक्रवाल] चक्राकार भ्रमण। मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु। गोल जलाशय। गोल जल-समूह, जल-राशि। आवश्यक कार्य, नित्य-कर्म। समूह, राशि, ढेर। पुं. पर्वत-विशेष। °विक्खंभ पुं [°विष्कम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि। °सामायारी स्त्री [°सामाचारी] नित्य-कर्म-विशेष।

चक्कवाला स्त्री [चक्रवाला] गोल पंक्ति, चक्राकार श्रेणी।

चक्काअ देखो चक्कवाय।

चक्काग न [चक्रक] चक्राकार वस्तु।

चक्कार पुं [चक्रार] राक्षस वंश का एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा, एक लंकापति । °बद्ध न. शकट ।

चक्कावाय पुंन. देखो चक्कवाय ।

चक्काह पुं [चक्राभ] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य ।

चक्काहिव पुं [चक्राधिप] चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ।

चक्काहिवइ पुं [चक्राधिपति] ऊपर देखो ।

चक्कि, चक्किय वि [चक्रिन्, चक्रिक] चक्रवाला, चक्र-विशिष्ट । पुं. चक्रवर्ती राजा, सम्राट् । तेली । कुम्भार । °साला स्त्री [°शाली] तेल बेचने की दूकान ।

चक्किय वि [चकित] भयभीत ।

चक्किय पुं [चाक्रिक] चक्र से लड़नेवाला योद्धा । भिक्षुक की एक जाति ।

चक्किया क्रि [शक्नुयात्] कर सके, समर्थ हो सके ।

चक्की स्त्री [चक्रा] छन्द-विशेष ।

चक्कुलंडा स्त्री [दे] सर्प की एक जाति ।

चक्केसर पुं [चक्रेश्वर] चक्रवर्त्ती राजा । विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि ।

चक्केसरी स्त्री [चक्रेश्वरी] भगवान् आदिनाथ की शासनदेवी । एक विद्या-देवी ।

चक्कोडा स्त्री [दे] अग्नि-भेद, अग्नि-विशेष ।

चक्ख (अप) सक [आ+चक्ष्] कहना ।

चक्ख सक [आ+स्वादय्] चखना ।

चक्खडिअ न [दे] जीवितव्य, जीवन ।

चक्खिंदिय न [चक्षुरिन्द्रिय] आँख ।

चक्खु पुंन [चक्षुष्] नेत्र । पुं. इस नाम का एक कुलकर पुरुष । न. देखो नीचे °दंसण ज्ञान, बोध । दर्शन, अवलोकन । °कंत पुं [°कान्त] कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव । °कंता स्त्री [°कान्ता] एक कुलकर पुरुष की पत्नी । °दंसण न [°दर्शन] चक्षु से वस्तु का सामान्य ज्ञान । °दंसणवडिया स्त्री [°दर्शनप्रतिज्ञा] आँख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का संयम । °दय वि. ज्ञानदाता ।°पडिलेहा स्त्री[°प्रतिलेखा]आँख से देखना । °परिन्नाण न [°परिज्ञान] रूपविषयक ज्ञान । °पह पुं [°पथ] नेत्र-मार्ग, नयनगोचर । °फास पुं [°स्पर्श] दर्शन, अवलोकन । °भीय वि [°भीत] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ । °म, °मंत वि [°मत्] लोचन-युक्त, आँखवाला । पुं. एक कुलकर पुरुष का नाम । °लोल वि.देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय संयत न हो वह । °लोलुय वि [°लोलुप] वही पूर्वोक्त अर्थ । °ल्लोयणलेस्स वि[°लोकनलेश्य] सुरूप । °वित्तिहय वि[°वृत्तिहत] दृष्टि से अपरिचित । °स्सव पुं[°श्रवस्] साँप ।

चक्खुड्डुण न [दे] तमाशा ।

चक्खुय देखो चक्खुस ।

चक्खुरक्खणी स्त्री [दे] लज्जा ।

चक्खुस वि [चाक्षुष] आँख से देखने-योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य ।

चक्खुहर वि [चक्षुर्हर] दर्शनीय ।

चगोर देखो चुओर ।

चच्च सक [चर्च्] चन्दन आदि का विलेपन करना ।

चच्च पुं [चर्च] हेमाचार्य के पिता का नाम । समालम्भन, चन्दन वगैरह का शरीर में उपलेप ।

चच्चर न [चत्वर] चौरास्ता, चौराहा, चौक ।

चच्चरिअ पुं [दे. चञ्चरीक] भौंरा ।

चच्चरिया स्त्री [चर्चरिका] नृत्य-विशेष । देखो चच्चरी ।

चच्चरी स्त्री [चर्चरी] गीत-विशेष, एक प्रकार का गान । गानेवाली टोली । छन्द-विशेष । हाथ की ताली की आवाज ।

चच्चसा स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।

चच्चा स्त्री [दे] शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन । तल-प्रहार, हाथ की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताली ।

चब्बार सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना ।

चच्चिक्क वि [दे] मण्डित, विभूषित । पुंन. विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना ।

चच्चुप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, देना ।

चच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना ।

चज्ज सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना ।

चज्जा स्त्री [चर्या] आचरण, वर्तन । चलन, गमन । परिभाषा, संकेत ।

चट्टुअ देखो चट्टुअ ।

चट्ट सक [दे] चाटना ।

चट्ट पुंन [दे] भूख । पुं. विद्यार्थी । °साला स्त्री [°शाला] चटशाला, चटसार, छोटे बालकों की पाठशाला ।

चट्टु, चट्टुअ, चट्टुल } पुं [दे] दारु-हस्त, काठ की कलछी, परोसने का पात्र-विशेष ।

चड सक [आ + रुह्] चढ़ना, ऊपर बैठना ।

चड पुं [दे] शिखा ।

चडक्क पुंन [दे] चटका । शस्त्र-विशेष ।

चडक्कारि वि [चटत्कारिन्] 'चटत्' शब्द करनेवाला (पवन आदि) ।

चडग देखो चडय ।

चडगर पुं [दे] समूह, जत्था । आडम्बर ।

चडचड पुं. 'चड-चड' आवाज ।

चडचडचड अक [चडचडाय्] 'चड-चड' आवाज करना ।

चडड पुं [चटट] बिजली के गिरने की आवाज ।

चडपड अक [दे] चटपटाना, छटपटाना, क्लेश पाना ।

चडय पुंस्त्री [चटक] गौरैया पक्षी ।

चडवेला स्त्री. देखो चवेडा ।

चडावण न [आरोहण] चढ़ना ।

चडाविय वि [आरोहित] चढ़ाया हुआ, ऊपर स्थापित ।

चडाविय वि [दे] प्रेषित ।

चडिआर पुं. [दे] आडम्बर ।

चडु पुं [चटु] प्रिय वचन । व्रती का एक आसन । उदर । पुंन. खुशामद । °आर वि [°कार] खुशामद करनेवाला, खुशामदी । °आरअ वि [°कारक] खुशामदी ।

चडुकारि वि [चटुकारिन्] खुशामदी ।

चडुत्तरिया स्त्री [दे] उतरचढ़ । वाद-विवाद ।

चडुयारि देखो चडुकारि ।

चडुल वि [चटुल] चंचल, चपल । कंपवाला, हिलता हुआ ।

चडुलग वि [दे. चटुलक] खण्ड-खण्ड किया हुआ ।

चडुला स्त्री [दे] रत्न-तिलक, सोने की मेखला में लटकता हुआ रत्न-निर्मित तिलक ।

चडुलातिलय न [दे] ऊपर देखो ।

चडुलिया स्त्री [दे] अन्त भाग में जला हुआ घास का पूला, घास की आँटी ।

चड्ड सक [मृद्] मर्दन करना, मसलना ।

चड्ड सक [पिष्] पीसना ।

चड्ड सक [भुज्] भोजन करना ।

चड्ड न [दे] तैल-पात्र, जिसमें दीपक किया जाता है ।

चड्डण न [भोजन] भोजन । खाने की वस्तु ।

चड्डावल्ली स्त्री. इस नाम की एक नगरी ।

चढ देखो चड = आ + रुह् ।

चढ देखो चड ।

चण, चणअ } पुं [चणक] चना ।

चणइया स्त्री [चणकिका] मसूर ।

चणग देखो चणअ । °गाम पुं [°ग्राम] गौड़ देश का एक ग्राम । °पुर न. नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम ।

चणयग्गाम देखो चणग-गाम ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चणोट्ठिया स्त्री [दे] गुञ्जा । देखो कोणेट्ठिया ।

चत्त पुंन [दे] तकली ।

चत्त वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ । सूत की आँटी ।

चत्तर देखो चच्चर ।

चत्ता देखो चत्तालीसा ।

चत्ता स्त्री [चर्चा] शरीर पर सुगन्धी वस्तु का विलेपन । विचार, चर्चा ।

चत्ताल वि [चत्वारिंश] चालीसवाँ ।

चत्तालीस न [चत्वारिंशत्] चालीस । वि. चालीस वर्ष की उम्रवाली ।

चत्तालीसा स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस ।

चत्थरि पुंस्त्री [दे. चस्तरि] हास्य ।

चपेटा स्त्री [दे. चपेटा] तमाचा ।

चप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दबाना ।

चप्प सक [चर्च्] अध्ययन करना । कहना । भर्त्सना करना । चन्दन आदि से विलेपन करना ।

चप्पडग न [दे] काष्ठ-यन्त्र-विशेष ।

चप्परण न [दे] तिरस्कार, निरास ।

चप्पलअ वि [दे] असत्य । बहुत झूठ बोलने वाला ।

चप्पुडिया, चप्पुडी स्त्री [चप्पुटिका] चपटी, चुटकी, अंगुष्ठ के साथ अंगुली की ताली ।

चप्फल न [दे] शेखर-विशेष, एक तरह का शिरोभूषण । वि. असत्य, मिथ्याभाषी ।

चमक्क पुं [चमत्कार] विस्मय, आश्चर्य ।

चमक्क, चमक्कर सक [चमत् + कृ] विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना ।

चमक्कार पुं [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय ।

चमड, चमढ सक [भुज्] भोजन करना, खाना ।

चमढ सक [दे] मर्दन करना, मसलना । प्रहार करना । पीड़ना । निन्दा करना । आक्रमण करना । उद्विग्न करना ।

चमर पुं. पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर या चँवर बनता है । पुं. पाँचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य । दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र । °चंच पुं [°चञ्च] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत । °चंचा स्त्री [°चञ्चा] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्गपुरी-विशेष । °पुर न. विद्याधरों का नगर-विशेष ।

चमर पुंन [चामर] चँवर, बालव्यजन । °धारी, °हारी स्त्री [°धारिणी] चामर बीजने या डोलानेवाली स्त्री ।

चमरी स्त्री. चमर-पशु की मादा, सुरही गाय ।

चमस पुंन. चमचा, कलछी, दर्वी ।

चमुक्कार पुं [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय । बिजली का प्रकाश ।

चमू स्त्री. सैन्य । सेना-विशेष, जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों ऐसा लश्कर ।

चम्म न [चर्मन्] छाल, त्वक्, चमड़ा । °किड वि [°किट] चमड़े से सीआ हुआ । °कोस, °कोसय पुं [°कोश, °क] चमड़े का बना हुआ थैला । एक तरह का चमड़े का जूता । °कोसिया स्त्री [°कोशिका] चमड़े की बनी हुई थैली । °खंडिय वि [°खण्डिक] चमड़े का परिधानवाला । सब उपकरण चमड़े का ही रखनेवाला । °ग वि [°क] चमड़े का बना हुआ चर्ममय । °पक्खि पुं [°पक्षिन्] चमड़े की पाँखवाला पक्षी । °पट्ट पुं. चमड़े का पट्टा, वर्ध्र । °पाय न [°पात्र] चमड़े का पात्र । °यर पुं [°कर] मोची । °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिससे सुबह में बोये हुए शालि वगैरह उसी दिन पक कर खाने-योग्य हो जाते हैं । °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष ।

चम्मट्ठि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्मदण्ड, चमड़ा लगी हुई छड़ी ।

चम्मट्ठिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरह आचरण करना ।

चम्मट्ठिल पुं [**चर्मास्थिल**] पक्षि-विशेष ।

चम्मार पुं [**चर्मकार**] चमार ।

चम्मिय वि [**चर्मित**] चर्म में बँधा हुआ ।

चम्मेट्ठ पुं [**चर्मेष्ट**] चमड़े से वेष्टित पाषाण-वाला आयुध ।

चम्मेट्ठग पुंस्त्री [**चर्मेष्टक**] शस्त्र-विशेष ।

चय सक [**त्यज्**] त्याग करना ।

चय सक [**शक्**] सकना, समर्थ होना ।

चय अक [**च्यु**] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना ।

चय पुं [**चय**] देह । समूह । इकट्ठा होना । वृद्धि । ईंटों की रचना-विशेष ।

चय पुं [**च्यव**] जन्मान्तर-गमन ।

चयण न[**चयन**]इकट्ठाकरना। ग्रहण, उपादान।

चयण न [**त्यजन**] परित्याग ।

चयण न [**च्यवन**] मरण, जन्मान्तर-गमन । पतन, गिर जाना । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] चारित्र वगैरह से गिरने का प्रकार । शिथिल साधुओं का विहार ।

चयण न [**च्यवन**] च्युति, भ्रंश, क्षय ।

चर सक [**चर्**] चलना, जाना । भक्षण करना । सेवना । जानना ।

चर पुं. गमन, गति । वर्तन । जङ्गम प्राणी । °**चर** वि. चलनेवाला ।

चरंती स्त्री. जिस दिशा में भगवान् जिनदेव वगैरह ज्ञानी पुरुष विचरते हों वह ।

चरग पुं [**चरक**] देखो **चर** = चर । यूथबन्ध घूमने वाले त्रिदण्डियों की एक जाति । दंश-मशकादि जन्तु ।

चरचरा स्त्री. 'चर-चर' आवाज ।

चरड पुं [**चरट**] लुटेरे की एक जाति ।

चरण पुंन. संयम, चारित्र । आचरण । न. व्रत, नियम । चरना, पशुओं का तृणादि-भक्षण । पद्य का चौथा हिस्सा । गमन, विहार । सेवन, आदर । पाद, पाँव । °**करण** न. संयम का मूल और उत्तर गुण । °**करणाणुओग** पुं [°**करणानुयोग**] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या । °**कुसील** पुं [°**कुशील**] शिथिलाचारी साधु । °**णय** [°**नय**] क्रिया को मुख्य माननेवाला मत । °**मोह** पुंन. चारित्र का आवारक कर्म-विशेष ।

चरम वि. अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती । जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह । °**काल** पुं. मरणसमय । °**जलहि** पुं [°**जलधि**] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र ।

चरमंत पुं [**चरमान्त**] सब से अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्ती ।

चरय देखो **चरग** ।

चरि पुंस्त्री. पशुओं के चरने की जगह । चारा ।

चरिगा देखो **चरिया** = चरिका ।

चरित्त न [**चरित्र**] चरित, आचरण । व्यवहार । स्वभाव, प्रकृति ।

चरित्त न [**चरित्र**] जीवन-कथा, कहानी ।

चरित्त न [**चारित्र**] संयम, विरति, व्रत, नियम । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] संयमानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ । °**मोह** पुंन. संयम का आवारक कर्म । °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] वही पूर्वोक्त अर्थ । °**चरित्त** न [°**चारित्र**] आंशिक संयम, श्रावक-धर्म । °**यार** पुं [°**चार**] संयम का अनुष्ठान । °**रिय** पुं [°**र्य**] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्रवाला, साधु, मुनि ।

चरिम देखो **चरम** ।

चरिय पुं [**चरक**] जासूस, दूत ।

चरिय न [**चरित**] चेष्टित, आचरण । जीवन-चरित । चरित्र-ग्रन्थ । सेवित, आश्रित ।

चरिया स्त्री [**चरिका**] परिव्राजिका, संन्यासिनी । किला और नगर के बीच का मार्ग ।

चरिया स्त्री [**चर्या**] आचरण, अनुष्ठान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गमन, गति, विहार । गाड़ी ।
चरीया देखो चरिया = चर्या ।
चरु पुं. स्थाली-विशेष । पात्र-विशेष ।
चरुगिणय देखो चारुइणय ।
चरुल्लेव न [दे] नाम, आख्या ।
चल सक [चल्] चलना, गमन करना । अक. कांपना, हिलना ।
चल वि. चंचल । पुं. रावण का एक सुभट ।
चलचल वि. अस्थिर । पुं. घी में तली जाती हुई चीज का पहला तीन घाम ।
चलण पुं [चरण] पाँव, पाद । °मालिया स्त्री [°मालिका] पैर का आभूषण-विशेष । °वंदण न [°वन्दन] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम ।
चलण न [चलन] चलना, गति, चाल, प्रथा, रिवाज ।
चलणाउह पुं [चरणायुध] कुक्कुट ।
चलणाओह पुं [दे. चरणायुध] ऊपर देखो ।
चलणिया, चलणी स्त्री [चलनिका, °नी] जैन साध्वियों को पहनने का कटि-वस्त्र ।
चलणी स्त्री [चलनी] साध्वियों का एक उपकरण । पैर तक का कौच ।
चलवलण न [दे] चटपटाई, चंचलता ।
चलाचल वि. चंचल, अस्थिर ।
चलिंदिय वि [चलेन्द्रिय] इन्द्रिय-निग्रह करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रियाँ काबू में न हों वह ।
चलिअ न [चलित] विकलता, अस्थैर्य, चंचलता । वि. चला हुआ, कम्पित । प्रवृत्त । विनष्ट ।
चल्ल देखो चल = चल् ।
चल्लणग न [दे] कटि-वस्त्र ।
चल्लि स्त्री [दे] नाचते समय की एक प्रकार की गति ।
चल्लि स्त्री [दे] मदन-वेदना ।
चव सक [कथय्] कहना, बोलना ।
चव अक [च्यु] मरना, जन्मान्तर में जाना । गिर जाना, पतन होना ।
चव पुं [च्यव] मौत ।
चवचव पुं. 'चव-चव' आवाज ।
चवल वि [चपल] चंचल, अस्थिर । आकुल, व्याकुल । पुं. रावण का एक सुभट ।
चवल पुं [दे] अन्न-विशेष, बोड़ा ।
चवलय पुं [दे] धान्य-विशेष ।
चवला स्त्री [चपला] बिजली ।
चविआ स्त्री [चविका] वनस्पति-विशेष ।
चविडा, चविला, चवेला स्त्री [चपेटा] तमाचा, थप्पड़ ।
चवेडी स्त्री [दे] श्लिष्ट कर-संपुट । संपुट, समुद्‌ग, डिब्बा ।
चवेण न [दे] वचनीय, लोकापवाद ।
चवेला देखो चविडा ।
चव्व सक [चर्व्] चबाना ।
चव्व (शौ) देखो चव्व = चर्व् ।
चव्वक्किअ वि [दे] धवलित, चूने से पोता हुआ ।
चव्वाइ देखो चव्वागि ।
चव्वाक, चव्वाग पुं [चार्वाक] नास्तिक, बृहस्पति का शिष्य, लोकायतिक ।
चव्वागि वि [चार्वाकिन्] चबानेवाला । दुर्व्यवहारी ।
चस सक [चष्] चखना ।
चसग, चसय पुं [चषक] दारू पीने का प्याला । प्याला । पक्षि-विशेष ।
चहुंतिया स्त्री [दे] चुटकी, चुटकीभर ।
चहुट्ट अक [दे] चिपकना, चिपटना, लगना ।
चहुट्ट वि [दे] निमग्न, लीन । चिपका हुआ ।
चहोड पुं [दे] एक मनुष्य-जाति ।
चाइ वि [त्यागिन्] त्याग करनेवाला । दानी, उदार । निःसंग, निरीह, संयमी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाइय वि [त्याजित] छोड़वाया हुआ ।
चाइय वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो ।
चाउअंगी स्त्री [चार्वङ्गी] सुन्दर अंगवाली स्त्री ।
चाउंड पुं [चामुण्ड] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति ।
चाउकाल न [चतुष्काल] चार समय ।
चाउक्कोण वि [चतुष्कोण] चार कोनावाला, चतुरस्र ।
चाउग्घंट } वि [चतुर्घण्ट] चार घंटा
चाउघंट } वाला, चार घण्टाओं से युक्त ।
चाउज्जाम न [चातुर्याम] चार महाव्रत, साधु-धर्म—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह ये चार साधु-व्रत ।
चाउज्जाय न [चातुर्जात] दालचीनी, तमालपत्र, इलायची और नागकेसर ।
चाउत्थिग } पुं [चातुर्थिक] रोग-विशेष,
चाउत्थिय } चौथे-चौथे दिन पर होनेवाला ज्वर ।
चाउद्दसिया स्त्री [चतुर्दशिका] चौदस ।
चाउद्दसी स्त्री [चतुर्दशी] ऊपर देखो ।
चाउद्दाह (अप) त्रि. ब. [चतुर्दशन्] चौदह।
चाउद्दिसि देखो चउ-द्दिसि ।
चाउप्पाय न [चतुष्पाद] चतुर्विध ।
चाउमास } पुंन [चातुर्मास] चौमासा ।
चाउम्मास } आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी ।
चाउम्मासिअ वि [चातुर्मासिक] चार मास सम्बन्धी, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवाला । न. आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष ।
चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] चार मास, चौमासा, आषाढ़ से कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ़ तक के चार महीने ।
चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] देखो चाउम्मासिअ ।
चाउरंग देखो चउरंग ।
चाउरंगिज्ज वि [चतुरङ्गीय] चार अंगों से सम्बन्ध रखनेवाला । न. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन ।
चाउरंत देखो चउरंत ।
चाउरंत पुं [चातुरन्त] चक्रवर्ती राजा, सम्राट् । न. लग्न-मण्डप, चौरी ।
चाउरंत न [चातुरन्त] भारतवर्ष ।
चाउरंत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया ।
चाउरक्क वि [चातुरक्य] चार बार परिणत । °गोखीर न [°गोक्षीर] चार बार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध, जैसे कतिपय गौओं का दूध दूसरी गौओं को पिलाया जाय, फिर उनका अन्य गौओं को, इस तरह चार बार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध ।
चाउल वि [दे] चावल का । पुं. तण्डुल ।
चाउल्लग न [दे] पुरुष का पुतला—कृत्रिम पुरुष ।
चाउवण्ण } वि [चातुर्वर्ण्य] चार वर्णवाला,
चाउव्वण्ण } चार प्रकार वाला । पुं. साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय । न. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार मनुष्य-जाति ।
चाउव्विज्ज } न [चातुर्वैद्य] चार प्रकार
चाउव्वेज्ज } की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और धर्म-शास्त्र । पुं. चौबे, ब्राह्मणों का एक अल्ल-उपगोत्र या वर्ग ।
चाउस्साला स्त्री [चतुश्शाला] चारों तरफ के कमरों से युक्त घर ।
चाँउंडा स्त्री [चामुण्डा] स्वनाम-ख्यात देवी । °काउअ पुं [°कामुक] महादेव ।
चाग देखो चाय = त्याग ।
चाड वि [दे] मायावी, कपटी ।
चाडु पुंन [चाटु] प्रियवाक्य । खुशामद ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°यार वि [°कार] खुशामदी ।
चाणक्क पुं [चाणक्य] राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री । एक मनुष्य-जाति ।
चाणक्की स्त्री [चाणक्यी] लिपि-विशेष ।
चाणिक्क देखो चाणक्क ।
चाणूर पुं. मल्ल-विशेष ।
चामर पुंन. बाल-व्यजन । छन्द-विशेष । °गाहि वि [°ग्राहिन्] चामर बीजनेवाला नौकर । °छायण न [°च्छायन] स्वाति नक्षत्र का गोत्र । °ज्झय पुं [°ध्वज] चामर-युक्त पताका । °धार वि [°धार] चामर बीजनेवाला ।
चामरच्छ न [चामरच्छ] गोत्र-विशेष ।
चामीअर न [चामीकर] सुवर्ण ।
चामुंडराय पुं [चामुण्डराज] गुजरात का चालुक्य वंश का एक राजा ।
चामुंडा देखो चाँउंडा ।
चाय देखो चय = शक् ।
चाय देखो चाव ।
चाय पुं [त्याग] छोड़ना, परित्याग । दान ।
चायग } पुं [चातक] चातकपक्षी ।
चायव }
चार सक [चारय्] चराना, खिलाना ।
चार पुं. गति, गमन, भ्रमण, परिभ्रमण । जासूस । कारागार । संचार, संचरण । अनुष्ठान, आचरण । ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश ।
चार पुं [दे] पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़ । बन्धन स्थान । इच्छा, अभिलाष । न. फल विशेष, मेवा-विशेष । °वकय पुं [°क्रय] बेचनेवाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना ।
चारग दे [चारक] देखो चार । [°पाल] पुं. [°पाल] जेलखाना का अध्यक्ष । °पालग पुं [°पालक] जेलर । °भंड न [°भाण्ड] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण । °ाहिव पुं [°ाधिप] कैदखाना का अध्यक्ष ।
चारण पुं [दे] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार ।
चारण पुं. आकाश में गमन करने की शक्ति रखनेवाले जैन मुनियों की एक जाति । स्तुति करनेवाली भाट जाति । एक जैन मुनि-गण ।
चारणिआ स्त्री [चारणिका] गणित-विशेष ।
चारभड पुं [चारभट] शूर पुरुष, लड़वैया ।
चारभड पुं [चारभट] लुटेरा ।
चारय देखो चारग ।
चारवाय पुं [दे] ग्रीष्म-ऋतु का पवन ।
चारहड देखो चारभड ।
चारहडी स्त्री [चारभटी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति ।
चारागार न. कैदखाना ।
चारि स्त्री. चारा ।
चारि वि [चारिन्] प्रवृत्ति करनेवाला । चलनेवाला, गमन-शील ।
चारिअ वि [चारित] जिसको खिलाया गया हो वह । विज्ञापित, जताया हुआ ।
चारिअ पुं [चारिक] चर-पुरुष । पंचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ ।
चारित्त देखो चरित्त = चारित्र ।
चारित्ति देखो चरित्ति ।
चारिया स्त्री [चर्या] आचरण, इधर-उधर गमन, जीविका । चेष्टा ।
चारी स्त्री. देखो चारि = चारि ।
चारु वि. सुन्दर, प्रवर । पुं. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य । न. शस्त्र-विशेष ।
चारुइणय पुं [चारुकिनक] देश-विशेष । वि. उस देश का निवासी ।
चारुणय पुं [चारुनक] ऊपर देखो ।
चारुवच्छि पुं. ब. [चारुवत्सि] देश-विशेष ।
चारुसेणी स्त्री [चारुसेनी] छन्द-विशेष ।
चाल सक [चालय्] चलाना, हिलाना, कँपाना । विनाश करना ।
चालण न [चालन] चलाना, हिलाना । विचार । शंका, प्रश्न, पूर्वपक्ष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चालणा स्त्री [चालना] शंका, पूर्वपक्ष, आक्षेप।

चालणिया } स्त्री [चालनिका]।
चालणी } स्त्री [चालनी] आखा, छानने का पात्र चलनी या छलनी।

चालवास पुं [दे] सिर का भूषण-विशेष।

चालिर वि [चालयितृ] चलानेवाला। चलनेवाला।

चाली स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस।

चालीस स्त्रीन [चत्वारिंशत्] चालीस।

चालुक्क पुंस्त्री [चौलुक्य] चालुक्य वंश में उत्पन्न। पुं. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल।

चाव सक [चर्व्] चबाना।

चाव पुं [चाप] धनुष।

चावल न [चापल] चंचलता।

चावल्ल न [चापल्य] ऊपर देखो।

चावाली स्त्री. ग्राम-विशेष।

चाविय वि [च्यावित] मरवाया हुआ।

चावेडी स्त्री [चापेटी] विद्या-विशेष, जिससे दूसरे को तमाचा मारने पर बीमार आदमी का रोग चला जाता है।

चावोण्णय न [चापोन्नत] विमान-विशेष, एक देव-विमान।

चास पुं [चाष] स्वर्ण-चातक, पपीहा, लहटोरवा।

चास पुं [दे] हल-विदारित भूमि-रेखा, खेती।

चाह सक [वाञ्छ्] चाहना। अपेक्षा करना। याचना।

चाहिणी स्त्री [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम।

चाहुआण पुं [चाहुयान] चौहान-वंश। पुंस्त्री. चौहान वंश में उत्पन्न।

चि देखो चिण।

चिअ अ [एव] निश्चय को बतलानेवाला अव्यय।

चिअ अ [इव] उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय।

चिअ वि [चित] इकट्ठा किया हुआ। व्याप्त। पुष्ट, मांसल।

चिअ न [चित] ईंट आदि का ढेर।

चिअ देखो चित्त = चित्त।

चिआ स्त्री [त्विष्] कान्ति, तेज।

चिआ देखो चियगा।

चिइ स्त्री [चिति] उपचय, पुष्टि, वृद्धि। इकट्ठा करना। बुद्धि। भीत वगैरह बनाना। चिता। °कम्म न [°कर्मन्] वन्दन, प्रणाम-विशेष।

चिइ देखो चेइअ।

चिइगा देखो चियगा।

चिइच्छ सक [चिकित्स्] दवा करना, इलाज करना। संशय करना।

चिइच्छअ वि [चिकित्सक] दवा करनेवाला, इलाज करनेवाला। पुं. वैद्य।

चिइय चित का भू. कृ.।

चिउर पुं [चिकुर] केश। पीत रंग का गन्ध-द्रव्य-विशेष।

चिंच } सक [मण्डय्] विभूषित करना।
चिंचअ }

चिंचइअ वि [दे] चलित, चला हुआ।

चिंचणिआ }
चिंचणिगा } स्त्री [दे] देखो चिंचिणी।
चिंचणी }

चिंचणी स्त्री [दे] अन्न पीसने की चक्की।

चिंचा स्त्री [चञ्चा] तृण की बनाई हुई चटाई वगैरह। °पुरिस पुं [°पुरुष] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है।

चिंचा स्त्री [दे. चिञ्चा] इमली का पेड़।

चिंचिणिआ }
चिंचिणिचिंचा } स्त्री [दे] इमली का पेड़।
चिंचिणी }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंचिल्ल सक [मण्डय्] अलंकृत करना ।

चिंत सक [चिन्तय्] चिन्ता करना, विचार करना । याद करना । ध्यान करना । अफसोस करना ।

चिंत वि [चिन्त्य] चिन्तनीय, विचारणीय ।

चिंतग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला, विचारक ।

चिंतण न [चिन्तन] विचार, पर्यालोचन । स्मरण, स्मृति ।

चिंतणिया स्त्री [चिन्तनिका] याद करना, चिन्तन करना ।

चिंतय वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला ।

चिंतव देखो चिंत = चिंतय् ।

चिंता स्त्री. विचार, पर्यालोचन । अफसोस, शोक । ध्यान । स्मृति । इष्ट-प्राप्ति का सन्देह । °उर वि[°तुर] शोक से व्याकुल । °दिट्ठ वि [दृष्ट] विचार-पूर्वक देखा हुआ । °मइअ वि [°मय] चिन्ता-युक्त । °मणि पुं. मनोवाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्यमणि । वीतशोक नगरी का एक राजा । °वर वि [°पर] चिन्ता-मग्न ।

चिंतायग } वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला ।
चिंतावग }

चिंध न [चिह्न] लाञ्छन, निशानी । ध्वजा । °पट्ट पुं. निशानी रूप वस्त्र खण्ड । °पुरिस पुं [°पुरुष] दाढ़ी-मूँछ वगैरह पुरुष की निशानी वाला नपुंसक, हिंजड़ा । पुरुष का वेष धारण करनेवाली स्त्री वगैरह ।

चिंधाल वि [चिह्नवत्] चिह्न-युक्त ।

चिंधाल वि [दे] सुन्दर । मुख्य, प्रवर ।

चिंफुल्लणी स्त्री [दे] लहँगा ।

चिकिच्छ देखो चिइच्छ ।

चिकुर देखो चिउर ।

चिक्क वि [दे] अल्प । न. छींक ।

चिक्कण वि [चिक्कण] चिकना, स्निग्ध । निबिड । दुर्भेद्य, दुःख से छूटने-योग्य ।

चिक्का स्त्री [दे] थोड़ी चीज । सूक्ष्म छींटा ।

चिक्कार पुं [चीत्कार] चिल्लाहट, चिंघाड़ ।

चिक्किण देखो चिक्कण ।

चिक्खअण वि [दे] सहिष्णु ।

चिक्खल्ल पुं [दे] कीच ।

चिक्खल्लय न [चिक्खल्लक] काठियावाड़ का एक नगर ।

चिक्खिल्ल }
चिखल्ल } [दे] देखो चिक्खल्ल ।
चिखिल्ल }

चिगिचिगाय अक [चिकचिकाय्] चकचकाट करना, चमकना ।

चिगिच्छग देखो चिइच्छअ ।

चिगिच्छण न [चिकित्सन]चिकित्सा, इलाज ।

चिगिच्छय देखो चिइच्छअ ।

चिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] दवा, प्रतीकार, इलाज । °संहिया स्त्री [°संहिता] वैद्यकशास्त्र ।

चिच्च वि [दे] चिपटी नासिकावाला । न. सम्भोग ।

चिच्च वि [त्याज्य] छोड़ने-योग्य ।

चिच्चर वि [दे] चिपटी नासिकावाला ।

चिच्चा देखो चय = त्यज् ।

चिच्चि पुं.चीत्कार, चिल्लाहट, भयंकर आवाज ।

चिच्चि पुं [दे] अग्नि ।

चिट्ठं अ [दे] अत्यन्त ।

चिट्ठ अक [स्था] बैठना, स्थिति करना ।

चिट्ठ देखो चेट्ठ ।

चिट्ठइत्तु वि[स्थातृ]बैठनेवाला, ठहरनेवाला ।

चिट्ठण न [स्थान] खड़ा रहना ।

चिट्ठण न [चेष्टन] चेष्टा, प्रयत्न ।

चिट्ठणा स्त्री[स्थान]स्थिति, बैठना, अवस्थान ।

चिट्ठा देखो चेट्ठा ।

चिट्ठिय वि [चेष्टित] जिसने चेष्टा की हो वह । न. चेष्टा, प्रयत्न ।

चिट्ठिय वि [स्थित] अवस्थित, रहा हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न. अवस्थान, स्थिति।
चिडिग पुं [चिटिक] पक्षि-विशेष।
चिण सक [चि] इकट्ठा करना।
चिण देखो चण।
चिण देखो चित्त।
चिणोट्ठी स्त्री [दे] गुञ्जा।
चिण्ण वि [चीर्ण] आचरित, अनुष्ठित। अंगीकृत, आदृत। विहित।
चिण्ह न [चिह्न] निशानी।
चित्त सक [चित्रय्] चित्र बनाना, तसवीर खींचना।
चित्त न. मन, अन्तःकरण, हृदय। ज्ञान, चेतना। बुद्धि। अभिप्राय, आशय। उपयोग, ख्याल। °ण्णु वि [°ज्ञ] दिल का जानकार। °निवाइ वि [°निपातिन्] अभिप्राय के अनुसार वरतनेवाला। °मंत वि [°वत्] सजीव वस्तु।
चित्त देखो चइत्त = चैत्र।
चित्त न [चित्र] आलेख्य, तसवीर। आश्चर्य। काष्ठ-विशेष। वि. विलक्षण, विचित्र। नानाविध। अद्भुत। चितकबरा। पुं. एक लोकपाल। पर्वत-विशेष। चित्रक, चीता, श्वापद विशेष। चित्रा नक्षत्र। °उत्त पुं [°गुप्त] भरत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव। °कणगा स्त्री [°कनका] एक विद्युत्कुमारी देवी। °कम्म न [°कर्मन्] आलेख्य, छवि। °कर देखो °गर। °कह वि [°कथ] नाना प्रकार की कथाएँ कहनेवाला। °कूड पुं[°कूट] सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत। पर्वत-विशेष। न. नगर-विशेष। शिखर-विशेष। °क्खरा स्त्री[°क्षरा] छन्द-विशेष। °गर पुं[°कर] चित्रकार। °गुत्ता स्त्री[°गुप्ता] देवी-विशेष, सोमनामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी। दक्षिण रुचक पर्वत पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष। °पक्ख पुं [°पक्ष] वेणु-देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष। क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष। °फल, °फलग, °फलय न [°फलक] तसवीरवाला तख्ता। °भित्ति स्त्री. चित्रवाली भीत। स्त्री की तसवीर। °यर देखो °गर। °रस पुं. भोजन देनेवाली कल्पवृक्षों की एक जाति। °लेहा स्त्री [°लेखा] छन्द-विशेष। °संभूइय न [°संभूतीय] 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन। °सभा स्त्री. तसवीरवाला गृह। °साला स्त्री [°शाला] चित्र-गृह।
चित्तंग पुं [चित्राङ्ग] पुष्प देनेवाले कल्पवृक्षों की एक जाति।
चित्तग देखो चित्त = चित्र।
चित्तजाणुअ देखो चित्त-ण्णु।
चित्तठिअ वि [दे] परितोषित, खुश किया हुआ।
चित्तण न [चित्रण] चित्र-कर्म।
चित्तदाउ पुं [दे] मधपुड़ा।
चित्तपत्तय पुं [चित्रपत्रक] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति।
चित्तपरिच्छेय वि [दे] लघु, छोटा।
चित्तय देखो चित्त = चित्र।
चित्तयलया स्त्री [चित्रकलता] वल्ली-विशेष।
चित्तल वि [दे] विभूषित। रमणीय।
चित्तल वि [चित्रल] कबरा। पुं. जगली पशु-विशेष।
चित्तलि पुंस्त्री [चित्रलिन्] साँप की एक जाति।
चित्तलिअ वि [चित्रलित, चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ।
चित्तविअअ वि [दे] परितोषित।
चित्तवीणा स्त्री [चित्रवीणा] वाद्य-विशेष।
चित्ता स्त्री [चित्रा] नक्षत्र-विशेष। एक विद्युत्कुमारी देवी। शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष। औषधि-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्ताचिल्लडय } पुं [दे] जंगली पशु-
चित्ताचेल्लरय } विशेष।

चित्तावडी स्त्री [चित्रपटी] वस्त्र-विशेष, छींट (बूटीदार) आदि कपड़ा।

चित्तिया स्त्री [चित्रिका] स्त्री-चीता, श्वापद-विशेष की मादा।

चित्ती देखो चेत्ती।

चित्ती स्त्री [चैत्री] चैत्र मास की पूर्णिमा।

चिद्दविअ } वि [दे] निर्णाशित, विना-
चिद्दाविअ } शित।

चिप्प सक [दे] कूटना। दबाना।

चिप्पग पुंन [दे] कूटी हुई छाल।

चिप्पड देखो चिविड।

चिप्पय देखो चिप्पग।

चिप्पिअ पुं [दे] नपुंसक-विशेष, जन्म के समय में अंगूठे से मर्दन कर जिसका अंडकोश दबा दिया गया हो वह।

चिप्पिडय पुं [दे] अन्न-विशेष।

चिबुअ न [चिबुक] होठ के नीचे का अवयव, ठोढ़ी।

चिब्भड न [चिर्भिट] खीरा, ककड़ी का फल।

चिब्भडिया स्त्री [चिर्भिटिका] ककड़ी का गाछ। मत्स्य की एक जाति।

चिब्भिड देखो चिब्भड।

चिमिट्ट } वि [चिपिट] चिपटा, बैठा
चिमिढ } हुआ, दबा हुआ (नाक)।

चिमिण वि [दे] रोमाञ्चित, गद्‌गद।

चिय देखो चेइअ = चैत्य।

चियका } स्त्री [चिता] मुर्दे को फूंकने के
चियगा } लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर।

चियत्त देखो चत्त।

चियत्त वि [दे] सम्मत। प्रीतिकर। प्रीति, रुचि।

चियया देखो चियगा।

चियाग } देखो चाय = त्याग।
चियाय }

चिरं अ [चिरम्] दीर्घ काल तक। °तण वि [°तन] पुराना।

चिर न. दीर्घ काल। विलम्ब। वि. दीर्घ काल तक रहनेवाला। °आरअ वि [°कारक] विलम्ब करनेवाला। °जीवि वि [°जीविन्] दीर्घ काल तक जीनेवाला। °जीविअ वि [°जीवित] वृद्ध। °ट्ठिइ °ट्ठिइय, °ट्ठिईय वि [°स्थितिक] लम्बा आयुष्यवाला, दीर्घ काल तक रहनेवाला। °राअ पुं [°रात्र] बहु काल, दीर्घ काल।

चिर अक [चिरय्] विलम्ब करना। आलस करना।

चिरच्चिय वि [चिरचित] चिरकाल से उपचित—इकट्ठा किया हुआ या बढ़ा हुआ।

चिरडी स्त्री [दे] वर्ण-माला।

चिरड्डिहिल्ल [दे] देखो चिरिड्डिहिल्ल।

चिरमाल सक [प्रति+पालय्] परिपालन करना।

चिरया स्त्री [दे] कुटी-झोपड़ी।

चिरस्स अ [चिरस्य] बहुत काल तक।

चिराअ देखो चिर = चिरय्।

चिराइय वि [चिरादिक] पुराना।

चिराईय वि [चिरातीत] प्राचीन।

चिराणय (अप) वि [चिरन्तन] पुरातन।

चिरादण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो।

चिराव अक [चिरय्] विलम्ब करना। आलस करना। सक. विलम्ब कराना, रोक रखना।

चिरिंचिरा स्त्री [दे] जलधारा, वृष्टि।

चिरिक्का स्त्री [दे] मशक। अल्प वृष्टि। प्रातःकाल।

चिरिच्चिरा [दे] देखो चिरिंचिरा।

चिरिडी देखो चिरडी।

चिरिड्डिहिल्ल न [दे] दही।

चिरिहिट्टी स्त्री [दे] गुञ्जा, घुंघची, लालरत्ती।

चिलाअ पुं [किरात] अनार्य देश-विशेष। किरात देश में रहनेवाली म्लेच्छ-जाति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिल्ल, पुलिंद। धन सार्थवाह का एक दास—नौकर।
चिलाइया स्त्री [किरातिका] किरात देश की रहनेवाली स्त्री।
चिलाई स्त्री [किराती] ऊपर देखो। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि।
चिलाद देखो चिलाअ।
चिलिचिलिआ स्त्री [दे] धारा, वृष्टि।
चिलिचिलिय वि [दे] भीजा या भीगा हुआ।
चिलिचिल्ल, चिलिच्चिल, चिलिच्चील वि [दे] आर्द्र, गीला।
चिलिण [दे] देखो चिलीण।
चिलिमिणी, चिलिमिलिगा, चिलिमिलिया, चिलिमिली स्त्री [दे] परदा, आच्छादन-पट।
चिलीण न [दे] अशुचि, मैला, मल-मूत्र।
चिल्ल पुं [दे] बाल, लड़का। शिष्य।
चिल्ल पुं. वृक्ष-विशेष। न. पुष्प-विशेष।
चिल्ल न [दे] सूर्प, छाज।
चिल्लअ न [दे] देदीप्यमान।
चिल्लग [दे] देखो चिल्लिय।
चिल्लड [दे] देखो चिल्लल।
चिल्लणा स्त्री [चिल्लणा] एक सती स्त्री, राजा श्रेणिक की पत्नी।
चिल्लय न [दे] खराब आँख।
चिल्लल पुं [चिल्वल] अनार्य देश-विशेष। उस देश का निवासी।
चिल्लल पुंस्त्री [दे] चीता। स्त्री. °लिया। न. काँदोवाला जलाशय, छोटा तालाब आदि। चमकता।
चिल्ला स्त्री [दे] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका।
चिल्लिय वि [दे]लीन, आसक्त। देदीप्यमान।
चिल्लिरि पुं [दे] मशक, मच्छर।
चिल्लूर न [दे] मुसल। जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं।
चिल्हय पुं [दे] वक्र-मार्ग।
चिविट्ठ, चिविड वि [चिपिट] चिपटा, बैठा या धँसा हुआ (नाक)।
चिविडा स्त्री [चिपिटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष।
चिविढ देखो चिविड।
चिहुर पुं [चिकुर] केश।
ची, चीअ देखो चेइअ।
चीअ न [चिता] मुर्दे को फूंकने के लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर।
चीइ देखो चेइअ।
चीड वि [दे] काले काँच की मणिवाला।
चीण वि [चीन] लघु। पुं. चीन देश। चीन देश का निवासी। व्रीहि का भेद। °पट्ट पुं. चीन देश में होनेवाला वस्त्र-विशेष। °पिट्ठ न [°पिष्ट] सिन्दूर-विशेष।
चीणंसु, चीणंसुय पुं [चीनांशु, °क] कीट-विशेष, जिसके तन्तुओं से वस्त्र बनता है। चीन देश का वस्त्र-विशेष।
चीया स्त्री. देखो चीअ = चिता।
चीर न. कपड़े का टुकड़ा। °कंडूसगपट्ट पुं [°कण्डूसकपट्ट] जैन साधुओं का एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष।
चीरग पुं [चीरक] नीचे देखो।
चीरिय पुं [चीरिक] रास्ते में पड़े हुए चीथड़ों को पहननेवाला भिक्षुक। फटा-टूटा कपड़ा पहननेवाली एक साधु-जाति।
चीरिया, चीरी स्त्री. वस्त्र-खण्ड। क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर।
चीवट्टी स्त्री [दे] भल्ली, भाला।
चीवर न. संन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा।
चीहाडी स्त्री [दे] चीत्कार, पुकार, हाथी की गर्जना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चीही स्त्री [दे] मुस्ता का तृण-विशेष ।

चु अक [च्यु] मरना, जन्मान्तर में जाना । विनाश पाना । गिरना । भ्रष्ट होना ।

चुअ अक [श्चुत्] झरना, टपकना ।

चुअ सक [त्यज्] त्याग करना, परिहार करना ।

चुइ स्त्री [च्युति] च्यवन, मरण ।

चुंकारपुर न. एक नगर ।

चुंचुअ पुं [दे] शेखर, अवतंस, मस्तक का भूषण ।

चुंचुअ पुं [चुञ्चुक] म्लेच्छ देश-विशेष । उस देश में रहनेवाली मनुष्य जाति ।

चुंचुण पुं [चुञ्चुन] एक धनी वैश्य-जाति ।

चुंचुणिअ वि [दे] चलित, गत । च्युत, नष्ट ।

चुंचुणिआ स्त्री [दे] गोष्ठी की प्रतिध्वनि । सम्भोग । इमली का पेड़ । मुष्टि-द्यूत । यूका, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष ।

चुंचुमालि वि [दे] अलस, दीर्घसूत्री ।

चुंचुलि पुं [दे] चोंच । चुलुक, पसर, एक हाथ का सम्पुटाकार ।

चुंचुलिअ वि [दे] अवधारित । न. तृष्णा ।

चुंचुलिपूर पुं [दे] चुलुक, पसर ।

चुंट सक [चि] फूल वगैरह को तोड़कर इकट्ठा करना ।

चुंढी स्त्री [दे] थोड़ा पानीवाला अखात जलाशय ।

चुंपालय [दे] देखो चुप्पालय ।

चुंब सक [चुम्ब्] चुम्बन करना ।

चुंभल पुं [दे] शेखर, अवतंस, शिरो-भूषण ।

चुक्क अक [भ्रंश्] चूकना, भूल करना । भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना । सक. नष्ट करना, खण्डन करना । अनवधित होना, बे-ख्याल होना ।

चुक्क पुं [दे] मुट्ठी ।

चुक्कार पुं [दे] आवाज, शब्द ।

चुक्कुड पुं [दे] बकरा ।

चुक्ख [दे] देखो चोक्ख ।

चुचुय } न [चूचुक] स्तन का अग्र भाग ।
चुच्चुय } [चुचूक]स्तनों की गोलाई, चूची ।
चुचूय

चुच्छ वि [तुच्छ] थोड़ा, हलका । जघन्य, नगण्य ।

चुज्ज न [दे] आश्चर्य ।

चुडण न [दे] जीर्णता, सड़ जाना ।

चुडलिअ न [दे] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात(मशाल) की तरह खड़ा रखकर वन्दन करना ।

चुडली [दे] देखो चुडुली ।

चुडिली देखो चुडुली ।

चुडुप्प न [दे] खाल उतारना । घाव । चमड़ी, त्वचा ।

चुडुप्पा स्त्री [दे] त्वचा, चमड़ी, खाल ।

चुडुली स्त्री [दे] उल्का, अलात, जलती हुई लकड़ी, उल्मुक ।

चुण सक [चि] चुगना, पक्षियों का खाना ।

चुणअ पुं [दे] चाण्डाल । बच्चा । इच्छा । अरुचि, भोजन की अप्रीति । व्यतिकर, सम्बन्ध । वि. अल्प । मुक्त, त्यक्त । सूँघा हुआ ।

चुणिअ वि [दे] विधारित, धारण किया हुआ ।

चुण्ण सक [चूर्णय्] चूरना, टुकड़ा-टुकड़ा करना ।

चुण्ण पुंन [चूर्ण] चूर, बुकनी, बारीक खण्ड । आटा । रज । गन्ध द्रव्य का रज । चूना । वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान । °कोसय न [°कोशक] भक्ष्य-विशेष ।

चुण्ण न[चौर्ण]गम्भीरार्थक पद, महार्थक शब्द ।

चुण्णइअ वि [दे] चूरन से आहत—जिस प्रकार चूर्ण फेंका गया हो वह ।

चुण्णग पुं [चूर्णक] वृक्ष-विशेष ।

चुण्णा स्त्री [चूर्णा] छन्द-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुण्णाआ स्त्री [दे] कला, विज्ञान ।
चुण्णासी स्त्री [दे] नौकरानी ।
चुण्णि स्त्री [चूर्णि] ग्रन्थ की टीका-विशेष ।
चुण्णिअ वि [चूर्णित] चूर-चूर किया हुआ । धूली से व्याप्त ।
चुण्णिआ स्त्री [चूर्णिका] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग-अलग होता है ।
चुण्णिय वि [चूर्णिक] गणित-प्रसिद्ध सर्वावशिष्ट अंश ।
चुद्दस देखो चउ-द्दस ।
चुप्प वि [दे] सस्नेह, स्निग्ध ।
चुप्पल पुं [दे] शेखर, अवतंस ।
चुप्पलिअ न [दे] नया रँगा हुआ कपड़ा ।
चुप्पालय पुं [दे] झरोखा, गवाक्ष, जंगला ।
चुरिम न [दे] खाद्य-विशेष ।
चुलचुल अक [चुलचुलाय्] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना ।
चुलणी स्त्री [चुलनी] द्रुपद राजा की स्त्री । ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती की माता । °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक ।
चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौरासी की संख्या ।
चुलसीइ देखो चुलसी ।
चुलिआला स्त्री [चुलियाला] छन्द-विशेष ।
चुलुअ पुंन [चुलुक] चुल्लू ।
चुलुक्क देखो चालुक्क ।
चुलुचुल अक [स्पन्द्] फड़कना, फरकना, थोड़ा हिलना, स्पन्दित होना ।
चुलुप्प पुं[दे] अज ।
चुल्ल पुं [दे] बालक । दास । वि. छोटा, लघु । °ताय पुं [°तात] चाचा । °पिउ पुं [°पितृ] चाचा । °माउया स्त्री[°मातृ] छोटी माँ, सौतेली माँ । चाची । °सगय, °सयय पुं. [शतक] भगवान् महावीर के दस मुख्य उपासकों में से एक । °हिमवंत पुं [हिमवत्] छोटा हिमवान् पर्वत । °हिमवंतकूड न [°हिमवत्कूट] क्षुद्र हिमवान्-पर्वत का शिखर-विशेष । पुं. उसका अधिपति देव-विशेष । °हिमवंतगिरिकुमार पुं [°हिमवद्गिरि कुमार] देव-विशेष ।
चुल्लग न [दे] सन्दूक ।
चुल्लग [दे] देखो चोल्लक ।
चुल्लि } स्त्री. चूल्हा ।
चुल्ली }
चुल्ली स्त्री [दे] शिला, पाषाण-खण्ड ।
चुल्लुच्छल अक [दे] छलकना, उछलना ।
चूल्लोडय पुं [दे] बड़ा भाई ।
चूअ पुं [दे] थन का अग्र भाग, चूची ।
चूअ पुं [चूत] आम का गाछ । देव-विशेष । °वडिंसग न [°ावतंसक] सौधर्म विमान-विशेष । °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी ।
चूआ स्त्री [चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी ।
चूचुअ पुंन [चूचुक] स्तन का अग्र-भाग ।
चूड पुं [दे] बाहु-भूषण, वलयावली ।
चूडा देखो चूला ।
चूडुल्लअ (अप) देखो चूड ।
चूर सक [चूरय्, चूर्णय्] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़ा-टुकड़ा करना ।
चूर (अप) पुंन [चूर्ण] चूर, भुरभुर ।
चूरिम पुंन [दे] चूर्मा लड्डू ।
चूल° देखो चूला । °मणि न. विद्याधरों का एक नगर ।
चूलअ [दे] देखो चूड ।
चूला स्त्री [चूडा] सिर के बीच को केश-शिखा । शिखर । मयूरशिखा । कुक्कुट-शिखा । शेर की केसरा । कुन्त वगैरह का अग्र भाग । विभूषण, अलंकार । अधिक मास । अधिक वर्ष । ग्रन्थ का परिशिष्ट । °कम्म न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन । °मणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंस्त्री. सिर का सर्वोत्तम आभूषण-विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो-मणि । सर्वोत्तम ।

चूलिय पुं [चूलिक] अनार्य देश-विशेष । उस देश का निवासी । स्त्रीन. संख्या-विशेष, चूलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।

चूलियंग न [चूलिकाङ्ग] संख्या-विशेष, प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।

चूलिया देखो चूला ।

चूव (अप) देखो चूअ ।

चूह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, प्रेरणा ।

चे अ [चेत्] यदि, जो, अगर ।

चे देखो चय = त्यज् ।

चे } देखो चि ।
चेअ }

चेअ अक [चित्] सावधान होना, ख्याल रखना । सुध आना, स्मरण करना । सक. जानना । अनुभव करना ।

चेअ सक [चेतय्] ऊपर देखो । देना, अर्पण करना, वितरण करना । करना, बनाना ।

चेअ अ [एव] अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय बतानेवाला अव्यय ।

चेअ न [चेतस्] चेतना, ज्ञान । मन, चित्त ।

चेइ पुं [चेदि] देश-विशेष । °वइ पुं [°पति] चेदि देश का राजा ।

चेइ° } पुंन [चैत्य] चिता पर बनाया
चेइअ } हुआ स्मारक, स्तूप, कबर या कब्र वगैरह स्मृतिचिह्न । व्यन्तर का स्थान । जिन-मन्दिर । इष्ट देव की मूर्ति, जिन-देव की मूर्ति । उद्यान । सभा वृक्ष । चबूतरावाला वृक्ष । देवों का चिह्न-भूत वृक्ष । वह वृक्ष जहाँ जिनदेव को केवल ज्ञान उत्पन्न होता है । पेड़ । यज्ञ-स्थान । मनुष्यों का विश्राम-स्थान । °खंभ पुं [°स्तम्भ] स्तूप । °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव-विशेष । °थूभ पुं [°स्तूप] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप । °दव्व न [°द्रव्य] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-सम्बन्धी स्थावर या जंगम मिल्कत । °परिवाडी स्त्री [°परिपाटी] क्रम से जिन-मन्दिरों की यात्रा । °मह पुं. चैत्य-सम्बन्धी उत्सव । °रुक्ख पुं [°वृक्ष] चबूतरा वाला वृक्ष । जिन-देव को जिसके नीचे केवल ज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष । देवताओं का चिह्नभूत वृक्ष । देव-सभा के पास का वृक्ष । °वन्दण न [°वन्दन] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति । °वास पुं. जिन-मन्दिर में यतियों का निवास । °हर देखो °घर ।

चेइअ वि [चेतित] कृत, विहित ।

चेंध देखो चिंध ।

चेच्चा चे = त्यज् का सं. कृ. ।

चेट्ठ अक [चेष्ट्] प्रयत्न करना, आचरण करना ।

चेट्ठ देखो चिट्ठ = स्था ।

चेट्ठण न [स्थान] स्थिति, अवस्थान ।

चेट्ठण देखो चिट्ठण = चेष्टन ।

चेट्ठा स्त्री [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण ।

चेड पुं [दे] बाल, कुमार ।

चेड } पुं [चेट, °क] नौकर नृप-विशेष,
चेडग } भैला देवता, देव की एक जघन्य
चेडय } जाति ।

चेडिआ स्त्री [चेटिका] दासी ।

चेडी स्त्री [चेटी] ऊपर देखो ।

चेडी स्त्री [दे] कुमारी, बाला ।

चेत्त न [चैत्य] चैत्य-विशेष ।

चेत्त पुं [चैत्र] चैत मास । जैन मुनियों का एक गच्छ ।

चेत्ती स्त्री [चैत्री] चैत मास की पूर्णिमा या अमावस ।

चेदि देखो चेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेदीस पुं [चेदीश] चेदि देश का राजा।

चेयग वि [चेतक] दाता।

चेयण पुं [चेतन] आत्मा, जीव, प्राणी। वि. चेतनावाला, ज्ञानवाला।

चेयणा स्त्री [चेतना] ज्ञान, चैतन्य, सुध।

चेयण्ण न [चैतन्य] ऊपर देखो।

चेयस देखो चेअ = चेतस्।

चेया देखो चेयणा।

चेल } न [चेल] वस्त्र। °कण्ण न
चेलय } [°कर्ण] एक तरह का पंखा। °गोल न. वस्त्र का गेंद। °हरन[°गृह] तम्बू, पट-मण्डप।

चेलय न [दे] तुला-पात्र।

चेलुंप न [दे] मुसल, मूषल।

चेल्ल } [दे] देखो चिल्ल।
चेल्लअ }

चेल्लग } [दे] देखो चिल्लग।
चेल्लय }

चेव अ [एव, चैव] अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चयदर्शक शब्द। पाद-पूरक अव्यय।

चेव अ [इव] सादृश्य-द्योतक अव्यय।

चो देखो चउ। आला स्त्री [°चत्वारिंशत्] चौवालीस। वट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर।

चोअ सक [चोदय्] प्रेरणा करना। कहना।

चोअअ वि [चोदक] प्रेरक, प्रश्नकर्ता, पूर्व-पक्षी।

चोअण न [चोदन] प्रेरणा।

चोइअ वि [चोदित] प्रेरित।

चोए सक [चोदय्] प्रश्न करना। सीखना, शिक्षण देना।

चोक्क [दे] देखो चुक्क।

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, पवित्र।

चोक्खलि वि [दे] चोखाई करनेवाला, शुद्धता वाला।

चोक्खा स्त्री [चोक्षा] इस नाम की एक संन्यासिनी।

चोज्ज न [दे] आश्चर्य।

चोज्ज न [चौर्य] चौर-कर्म।

चोज्ज न [चोद्य] प्रश्न, पृच्छा। आश्चर्य, अद्भुत। वि. प्रेरणा-योग्य।

चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा।

चोडु न [दे] बृन्त, फल और पत्ती का बन्धन।

चोढ पुं [दे] बेल का पेड़।

चोण्ण न [दे] झगड़ा। काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म।

चोत्त } पुंन [दे] प्राजन-दण्ड, चाबुक।
चोत्तअ }

चोद [दे] देखो चोय।

चोदग देखो चोअअ।

चोदणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा, किसी प्रभाव-शाली व्यक्ति की ओर से कुछ कहने या करने के लिए होनेवाला संकेत।

चोप्पड सक [म्रक्ष्] स्निग्ध करना, घी तेल वगैरह लगाना।

चोप्पड न [म्रक्षण] घी, तैल वगैरह स्निग्ध वस्तु।

चोप्पाल पुं [चतुष्पाल] सूर्याभ देव की आयुध-शाला।

चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा।

चोप्फुल्ल वि [दे] स्निग्ध, प्रेम-युक्त।

चोय } न [दे] त्वचा, छाल। आम
चोयग } वगैरह का छंछा। गन्ध द्रव्य-विशेष।

चोयग देखो चोअअ।

चोयणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा।

चोयय पुं [दे] फल-विशेष।

चोयालीस स्त्रीन [चतुश्चत्वारिंशत्] चौवा-लीस।

चोर पुं. तस्कर। °कीड पुं [°कीट] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोरंकार पुं [चौर्यंकार] चोर ।

चोरग वि [चोरक] चुरानेवाला । पुंन. वनस्पति-विशेष ।

चोरण न. चुराना । वि. चोर ।

चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी ।

चोराग पुं [चोराक] सन्निवेश-विशेष ।

चोराव सक [चोरय्] चोरी करना ।

चोरासी } देखो चउरासी ।
चोरासीइ }

चोरिअ न [चौर्य] चोरी, अपहरण ।

चोरिअ वि [चौरिक] चोरी करनेवाला । पुं. जासूस ।

चोरिआ स्त्री [चौर्य, चौरिका] चोरी, अपहरण ।

चोरिक्क न [चौरिक्य] ऊपर देखो ।

चोरी स्त्री [चौरी] चोरी, अपहरण ।

चोल वि [दे] वामन, कुब्ज । पुं. पुरुष-चिह्न । न. गन्ध-द्रव्य-विशेष, मंजिष्ठा । °पट्ट पुं. जैन मुनि का कटि-वस्त्र । °य पुं [°ज] मजीठ का रंग ।

चोल पुं. देश-विशेष ।

चोलअ न [दे] कवच ।

चोलअ } न [चौल, °क] संस्कार-विशेष, मुण्डन ।
चोलग }

चोलुक्क देखो चालुक्क ।

चोलोयणग }
चोलोवणय } न [चूलापनयन] चूलोपनयन संस्कार । चूड़ा-धारण ।
चोलोवणयण }

चोल्लक [दे] देखो चोलग ।

चोल्लक } पुंन [दे] भोजन । वि. क्षुद्रक, छोटा ।
चोल्लग }

चोल्लय पुंन [दे] थैला, बोरा ।

चोवत्तरि स्त्री [चतुःसप्तति] चौहत्तर ।

चोवालय पुंन [चतुर्द्वार] चोवारा, ऊपर का शयन-गृह ।

चोव्वड देखो चोप्पड = म्रक्ष् ।

च्च अ [एव] अवधारण-सूचक अव्यय ।

च्चिअ देखो चिअ = एव ।

च्चेअ } देखो चेव = एव ।
च्चेव }

छ

छ पुं. तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष । आच्छादन ।

छ त्रि. ब. [षष्] छः । °उत्तरसय वि [°उत्तरशततम] एक सौ और छठवाँ । °क्कम्म न [°कर्मन्] छः प्रकार के कर्म जो ब्राह्मणों के कर्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह । °क्काय न [°काय] छः प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव । °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] छगुना । °च्चरण पुं [°चरण] भ्रमर । °ज्जीवनिकाय पुं [°जीवनिकाय] देखो °क्काय । °ण्णउइ, °ण्णवइ [°णवति] छानबे । °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] छत्तीस । °त्तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] छत्तीसवाँ । °द्दस त्रि. ब. [षोडशन्] सोलह । °द्दसहा अ [षोडशधा] सोलह प्रकार का । °द्दिसि न [°दिश्] छः दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा । °द्धा अ [°धा] छः प्रकार का । °नवइ, °नुवइ देखो °ण्णउइ । °न्नउय वि [°णवत] छानबेवाँ । °प्पण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] छप्पन । °प्पन्न वि [°पञ्चाश] छप्पनवाँ । °ब्भाय पुं [°भाग] छठवाँ हिस्सा । °ब्भासा स्त्री [भाषा]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छः भाषाएँ। °मासिय, °म्मासिय वि [षाण्मासिक] छः मास में होनेवाला, छः मास सम्बन्धी। °वरिस वि [°वार्षिक] छः वर्ष की उम्रवाला। °वीस देखो °व्वीस। °व्विह वि [°विध] छः प्रकार का। °व्वीस स्त्रीन [°विंशति] छब्बीस। °व्वीसइम वि [°विंशतितम] छब्बीसवाँ। लगातार बारह दिनों का उपवास। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] छियासठ। °स्सयरि स्त्री [°सप्तति] छिहत्तर। °हा देखो °द्धा।

छइ देखो छवि = छवि।

छइअ वि [स्थगित] आच्छादित, तिरोहित।

छइल, छइल्ल वि [दे] विदग्ध, चतुर।

छउअ वि [दे] कृश।

छउम पुंन [छद्मन्] कपट, माया। बहाना। आच्छादन। न. ज्ञानावरणीय आदि चार घाती कर्म।

छउमत्थ वि [छद्मस्थ] असर्वज्ञ, सम्पूर्ण ज्ञान से वञ्चित। राग-सहित।

छउलूअ देखो छलूअ।

छंकुई स्त्री [दे] कपिकच्छू, वृक्ष-विशेष, केवाँच, कवाछ।

छंट पुं [दे] जल का छींटा, जलच्छटा। वि. शीघ्र, जल्दी करनेवाला।

छंट सक [सिच्] सींचना।

छंड देखो छड्डु = मुच्।

छंडिअ वि [दे] छन्न, गुप्त।

छंद सक [छन्द्] चाहना, अनुज्ञा देना, सम्मति देना। निमन्त्रण देना।

छंद पुंन [छन्द] इच्छा, अभिलाषा। अभिप्राय, आशय। वशता, अधीनता। °चारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी। °इत्त वि [°वत्] स्वैरी। °णुवत्तण न [°ानुवर्त्तन] मरजी के अनुसार बरतना। °णुवत्तय वि [°ानुवर्त्तक] मरजी का अनुसरण करनेवाला।

छंद पुंन [छन्दस्] स्वच्छन्दता। अभिलाष। आशय, अभिप्राय। छन्दः-शास्त्र। वृत्त। °ण्णुय वि [°ज्ञ] छन्द का जानकार।

छंदण पुंन [छादन] ढकना, ढक्कन।

छंदण न [छन्दन] निमन्त्रण, प्रार्थना।

छंदण न [वन्दन] प्रणाम।

छंदा स्त्री. दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ संन्यास।

छंदो° देखो छंद = छन्दस्।

छक्क वि [षट्क] छक्का, छः का समूह।

छग देखो छ = षष्।

छग न [दे] पुरीष, विष्ठा।

छग देखो छक्क।

छगण न [स्थगन] पिधान, ढकना।

छगण न [दे] गोबर।

छगणिया स्त्री [दे] गोइंठा, कण्डा।

छगल पुंस्त्री. बकरा। °पुर न. नगर-विशेष।

छग्ग देखो छक्क।

छग्गुरु पुं [षड्गुरु] एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास। तीन दिनों का उपवास।

छच्छुंदर पुंन [दे] मूसे या चूहे की एक जाति।

छज्ज अक [राज्] शोभना, चमकना।

छज्जिआ स्त्री [दे] पुष्प-पात्र, चंगेरी।

छट्टा [दे] देखो छंटा।

छट्ठ वि [षष्ठ] छठवाँ। न. लगातार दो दिनों का उपवास। °क्खमण न[°क्षमण, °क्षपण] लगातार दो दिनों का उपवास। °क्खमय पुं [°क्षमक, °क्षपक] दो-दो दिनों का बराबर उपवास करनेवाला तपस्वी। °भत्त न [°भक्त] लगातार दो दिनों का उपवास। °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार दो दिनों का उपवास करनेवाला।

छट्ठी स्त्री [षष्ठी] तिथि-विशेष। सम्बन्ध-विभक्ति। जन्म के बाद किया जाता उत्सव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष।

छड सक [आ + रुह्] आरूढ़ होना, चढ़ना।

छडक्खर पुं [दे] कार्त्तिकेय।

छडछडा स्त्री [छटच्छटा] सूर्प (सूप) वगैरह से अन्न को झाड़ते समय होती एक प्रकार की अव्यक्त आवाज।

छडा स्त्री [दे] विद्युत्।

छडा स्त्री [छटा] समूह, परम्परा। छींटा, पानी की बूंद।

छडाल वि [छटावत्] छटावाला।

छडिय वि [छटित] सूप आदि से छँटा या फटका हुआ।

छड्ड सक [छर्दय्, मुच्] वमन करना। छोड़ना, त्याग करना। डालना, गिराना।

छड्डय वि [छर्दक] छोड़नेवाला। पुं. एक सेठ का नाम।

छड्डवण न [छर्दन, मोचन] छुड़वाना, मुक्त करवाना। वमन कराना। वि. वमन करानेवाला। छुड़ानेवाला।

छड्डवय वि [छर्दक, मोचक] त्याग करानेवाला।

छड्डावण देखो छड्डवण।

छड्डाविय वि [छर्दित, मोचित] वमन कराया हुआ। छुड़वाया हुआ।

छड्डि स्त्री [छर्दि] वमन का रोग।

छड्डि स्त्री [छर्दिस्] छिद्र, दूषण।

छण सक [क्षण्] हिंसा करना, छेदन करना।

छण पुं [क्षण] उत्सव। हिंसा। °चंद पुं [°चन्द्र] शरद् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा। °ससि पुं [°शशिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ।

छणिंदु पुं [क्षणेन्दु] शरद् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र।

छण्ण वि [छन्न] गुप्त, छिपाया हुआ। आच्छादित। न. माया, कपट। निर्जन, रहस्।

छण्णालय न [दे. षण्णालक] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासियों का एक उपकरण।

छत्त न [छत्र] छाता, आतपात्र। लगातार तैंतीस दिनों का उपवास। पुंन. एक देव-विमान। पुं. ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र आदि ग्रह छत्र के आकार से रहते हैं। °इल्ल वि [°वत्] छातावाला। °कार वि. छाता बनानेवाला शिल्पी। °ग पुंन [°क] वनस्पति-विशेष। °धार पुं. छाता धारण करनेवाला नौकर। °पडागा स्त्री [°पताका] छत्रयुक्त ध्वज। छत्र के ऊपर की पताका। °पलासय न [°पलाशक] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य। °भंग पुं [°भङ्ग] राज-नाश, नृपमरण। °हार देखो °धार। °इच्छत्त न [°ातिच्छत्र] छत्र के ऊपर का छाता। पुं. ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष।

छत्त पुं [छात्र] विद्यार्थी, अभ्यासी।

छत्तंतिया स्त्री [छत्रान्तिका] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष।

छत्तच्छय (अप) पुं [सप्तच्छद] सतौना का पक्ष।

छत्तधन्न न [दे] घास।

छत्तवण्ण देखो छत्तिवण्ण।

छत्ता स्त्री [छत्रा] नगरी-विशेष।

छत्तार पुं [छत्रकार] छाता बनानेवाला कारीगर।

छत्ताह पुं [छत्राभ] वृक्ष-विशेष।

छत्तिवण्ण पुं [सप्तपर्ण] छतिवन।

छत्तोय पुं [छत्रौक] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष।

छत्तोव पुं [छत्रोप] वृक्ष-विशेष।

छत्तोह पुं [छत्रौघ] वृक्ष-विशेष।

छदमत्थ देखो छउमत्थ।

छद्दवण देखो छड्डवण।

छद्दस वि [षड्दश] छः या दश।

छद्दी स्त्री [दे] बिछौना।

छन्न वि [क्षण] हिंसा-प्रधान, हिंसा-जनक।

छप्पइगिल्ल वि [षट्पदिकावत्] यूका-युक्त।

छप्पइया स्त्री [षट्पदिका] जूँ।

छप्पंती स्त्री [दे] नियम-विशेष, जिसमें पद्य

लिखा जाता है ।

छप्पण्ण } वि [दे. षट्प्रज्ञक] विदग्ध,
छप्पण्णय } चतुर ।

छप्पत्तिआ स्त्री [दे] थप्पड़ । रोटी ।

छप्पय पुं [षट्पद] भौंरा । वि. छः स्थान-वाला । छः प्रकार का । छन्द-विशेष ।

छब्ब } पुंन [दे] पात्र-विशेष ।
छब्बग }

छब्बय न [दे] वंश-पिटक, घी वगैरह को छानने का उपकरण-विशेष ।

छब्भामरी स्त्री [षट्भ्रामरी] एक प्रकार की वीणा ।

छमच्छम अक [छमच्छमाय्] गरम चीज पर दी जाती पानी की आवाज ।

छम° देखो क्षमा । °रुह पुं. पेड़, दरख्त ।

छमलय पुं [दे] सप्तच्छद का वृक्ष ।

छमा स्त्री [क्षमा, क्ष्मा] पृथिवी, भूमि । °हर पुं [°धर] पर्वत, देखो छम° ।

छमी स्त्री [शमी] अग्नि-गर्भ वृक्ष ।

छम्म देखो छउम ।

छम्मुह पुं [षण्मुख] कार्तिकेय । भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव ।

छय न [छद] पर्ण, पत्र, आवरण, आच्छादन ।

छय न [क्षत] घाव । पीड़ित, व्रणित ।

छयल्ल [दे] देखो छइल्ल ।

छरु पुं [त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा । °प्पवाय न [°प्रवाद] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र ।

छल° देखो छ = षष् ।

छल सक [छलय्] ठगना, वञ्चना ।

छल न. कपट, माया । बहाना । अर्थविघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-युद्ध । °ाययण न [°ायतन] छल ।

छलंस वि [षडस्र] षट्कोण ।

छलंसिअ वि [षडस्रिक] छः कोणवाला ।

छलण न [छलन] फेंकना ।

छलत्थ वि [षडर्थ] छः अर्थवाला ।

छलसीअ स्त्रीन [षडशीति] छियासी ।

छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो ।

छलिअ वि [छलित] विप्रतारित, ठगा हुआ । शृङ्गार-काव्य । तस्कर-संज्ञा ।

छलिअ वि [दे] विदग्ध, चतुर ।

छलिअ न [छलिक] नाट्य-विशेष ।

छलिअ वि [स्खलित] स्खलन-प्राप्त ।

छलिया देखो छालिया ।

छलुअ } पुं [षडुलूक] वैशेषिक-मत-प्रवर्त्तक
छलुग } कणाद ऋषि ।
छलूअ }

छल्ली स्त्री [दे] त्वचा, छाल ।

छल्लुय देखो छलुअ ।

छव देखो छिव ।

छवडी स्त्री [दे] चर्म ।

छवि स्त्री. कान्ति, तेज । अंग । चमड़ी । अव-यव । अंगी, शरीरी । अलङ्कार-विशेष । °च्छेअ पुं [°च्छेद] अङ्ग का विच्छेद । °च्छेयण न [°च्छेदन] अंगच्छेद । °त्ताण न [°त्राण] चमड़ी का आच्छादन, कवच ।

छविअ वि [स्पृष्ट] छूआ हुआ ।

छविपव्व न [छविपर्वन्] औदारिक शरीर ।

छवोइय वि [छविमत्] कान्तिवाला । घन, निबिड़ ।

छव्वग [दे] देखो छब्बय ।

छव्विअ वि [दे] आच्छादित ।

छह (अप) देखो छ (षष्) ।

छहत्तर वि [षट्सप्तत] छिहत्तरवाँ ।

छहत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर ।

छाअ देखो छाव ।

छाइल्ल वि [छायावत्] छायावाला, कान्ति-युक्त ।

छाइल्ल पुं [दे] प्रदीप, वि. सदृश, तुल्य । ऊन, अधूरा । सुरूप, सुडौल ।

छाई देखो छाया ।

छाई स्त्री [दे] माता, देवी, देवता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाउमत्थ न [छाद्मस्थ्य] छद्मस्थ-अवस्था ।
छाउमत्थिय वि [छाद्मस्थिक] केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता की पूर्वावस्था से सम्बन्ध रखनेवाला ।
छाओवग वि [छायोपग] छायावाला (वृक्षादि)। पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष ।
छागल वि. अज-सम्बन्धी । बकरा ।
छागलिय पुं [छागलिक] अजा-पालक ।
छाण न [दे] धान्य वगैरह का मलना । गोबर । वस्त्र ।
छाणण न [दे] छानना, गालन ।
छाणवइ (अप) देखो छण्णवइ ।
छाणी स्त्री [दे] धान्य वगैरह का मलन । कपड़ा । गोमय ।
छाणी स्त्री [दे] गोबर का इन्धन ।
छाय वि [छात] घाववाला ।
छाय सक [छादय्] आच्छादन करना, ढकना ।
छाय वि [दे. छात] बुभुक्षित । ढकना ।
छायंसि वि [छायावत्] कान्तिमान्, तेजस्वी ।
छायण न [छादन] घर की छत, छाजन । ढक्कन, आवरण । कपड़ा ।
छायणिया } स्त्री [दे] डेरा, पड़ाव, छावनी ।
छायणी }
छाया स्त्री. छाँह । कान्ति, दीप्ति । शोभा । प्रतिबिम्ब, परछाईं । धूप-रहित स्थान । °गइ स्त्री [°गति] छाया के अवलम्बन से गति । °पास पुं [°पार्श्व] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति ।
छाया स्त्री [दे] यश, ख्याति । भ्रमरी ।
छायाइत्तय वि [छायावत्] छाया-युक्त ।
छायाला स्त्री [षट्चत्वारिंशत्] छियालीस ।
छायालीस स्त्रीन. ऊपर देखो ।
छायालीस वि [षट्चत्वारिंश] छियालीसवाँ ।
छार वि [क्षार] पिघलनेवाला, झरनेवाला । खारा । पुं. लवण । सज्जीखार । गुड़ । भस्म, भूति । मात्सर्य, असहिष्णुता ।
छार पुं [दे] अच्छभल्ल, भालूक ।
छारय देखो छार ।
छारय न [दे] ऊख की छाल । कली ।
छारिय वि [छारिक] क्षार-सम्बन्धी ।
छाल पुं [छाग] अज ।
छालिया स्त्री [छागिका] अजा ।
छाव पुं [शाव] बच्चा ।
छावट्ठि स्त्री [षट्षष्टि] छियासठ ।
छावण देखो छायण ।
छावत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर । °म वि [°तम] छिहत्तरवाँ ।
छावलिय वि [षडावलिक] छः आवलिका-परिमित समयवाला ।
छासट्ठ वि [षट्षष्ट] छियासठवाँ ।
छासी स्त्री [दे] छाछ, तक्र ।
छासीइ स्त्री [षडशीति] छियासी । °म वि [°तम] छियासीवाँ ।
छाहत्तरि (अप) देखो छावत्तरि ।
छाहत्तरि देखो छावत्तरि ।
छाहा } स्त्री [छाया] आतप का अभाव ।
छाहिया } प्रतिबिम्ब, परछाईं ।
छाही }
छाही स्त्री [दे] गगन । °मणि पुं. सूरज ।
छिअ देखो छीअ ।
छिंछई स्त्री [दे] असती, कुलटा ।
छिंछटरमण न [दे] चक्षुस्थगन की क्रीड़ा ।
छिंछय पुं [दे] शरीर । उपपति । न. शलाटु-फल ।
छिंछोली स्त्री [दे] छोटा जल-प्रवाह ।
छिंड न [दे] चूड़ा, चोटी । छत्र, छाता । धूप-यन्त्र ।
छिंडिआ स्त्री [दे] बाड़ का छिद्र । अपवाद ।
छिंडी स्त्री [दे] बाड़ का छिद्र ।
छिंद सक [छिद्] छेदना, विच्छेद करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्डन करना।

छिदावण न [छेदन] कटवाना, छेदन कराना।

छिपय पुं [छिम्पक] कपड़ा छापने का काम करनेवाला।

छिक्क न [दे] छींक।

छिक्क वि [दे. छुप्त] स्पृष्ट। °परोइया स्त्री [°प्ररोदिका] वनस्पति-विशेष।

छिक्क वि [छीत्कृत] छीं-छीं आवाज से आहूत।

छिक्कंत वि [दे] छींक करता हुआ।

छिक्का स्त्री [दे] छींक।

छिक्कारिअ वि [छीत्कारित] छीं-छीं आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ।

छिक्किय न [दे] छींकना।

छिक्कोअण वि [दे] असहिष्णु।

छिक्कोट्टली स्त्री [दे] पैर की आवाज। पाँव से धान्य का मलना। गोबर-खण्ड।

छिक्कोलिअ वि [दे] पतला।

छिक्कोवण [दे] देखो **छिक्कोअण**।

छिग्ग (शौ) सक [छुप्] छूना।

छिच्चोलय पुं [दे] देखो **छिव्वोल्ल**।

छिच्छई देखो **छिछई**।

छिच्छय देखो **छिछय**।

छिच्छिकार पुं. निवारण-सूचक या घृणा-सूचक शब्द, छिः, छि।

छिछि अ [दे. धिक्धिक्] छि-छि, धिक्-धिक्, अनेक धिक्कार।

छिज्ज देखो **छिद** = छिद्।

छिज्ज वि [छेद्य] खण्डित किया जा सके। छेदने-योग्य। न. छेद, विच्छेद।

छिज्जंत वि [क्षीयमाण] क्षय पाता, दुर्बल होता।

छिड्ड न [छिद्र] विवर। अवकाश, अवसर। दूषण, दोष। °पाणि पुं. एक प्रकार का जैन साधु।

छिड्ड पुंन [छिद्र] आकाश।

छिण्ण देखो **छिन्न**।

छिण्ण पुं [दे] जार।

छिण्णच्छोडण न [दे] शीघ्र।

छिण्णयड वि [दे] टङ्क से छिन्न।

छिण्णा स्त्री [दे] असती।

छिण्णाल पुं [दे] उपपति।

छिण्णालिआ } स्त्री [दे] कुलटा, पुंश्चली,
छिण्णाली } छिनारी।

छिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूब (घास), दाभ।

छित्त देखो **खित्त** = क्षेत्र।

छित्त वि [दे] छूआ हुआ।

छित्तर [दे] देखो **छेत्तर**।

छित्ति स्त्री. विच्छेद, खण्डन।

छित्तु वि [छेतृ] छेदनेवाला।

छिद्द देखो **छिड्ड**।

छिद्द पुं [दे] छोटी मछली।

छिन्न वि. खण्डित, छेद-युक्त। निर्धारित, निश्चित। न. छेद, खण्डन। °गंथ वि [°ग्रन्थ] स्नेह-रहित। पुं. त्यागी, मुनि, निर्ग्रन्थ। °च्छेय पुं [°च्छेद] नय-विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा से रहित माननेवाला मत। °द्धाणंतर वि [°ध्वान्तर] जहाँ गाँव, नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता। °मडंब वि [°मडम्ब] जिस गाँव या शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरह न हो। °रुह वि. काट कर बोने पर भी पैदा होनेवाली वनस्पति।

छिन्नाल वि [दे] हल की जात का बैल आदि।

छिन्नालिगा स्त्री [दे] स्थलचर पक्षि-विशेष। देखो **छिण्णालिआ**।

छिप्प न [क्षिप्र] जल्दी। °तूर न [°तूर्य] शीघ्र बजाया जाता एक बाजा, तुरही।

छिप्प न [दे] भिक्षा, भीख। पुच्छ।

छिप्पंती स्त्री [दे] व्रत-विशेष। उत्सव-विशेष।

छिप्पंदूर न [दे] गोमय-खण्ड। वि. विषम, कठिन।

छिप्पाल पुं [दे] खाने में लगा हुआ बैल।

छिप्पालुअ न [दे] पूंछ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छिप्पिअ वि [दे] क्षरित, टपका हुआ।
छिप्पिंडी स्त्री [दे] व्रत-विशेष। उत्सव-विशेष। पिष्ट, पिसान।
छिप्पीर न [दे] पलाल, तृण।
छिप्पोल्ली स्त्री [दे] अजादि की विष्ठा।
छिब्भ सक [क्षिप्] फेंकना।
छिमिछिमिछिम अक [छिमिछिमाय्] 'छिम-छिम' आवाज करना।
छिरा स्त्री [शिरा] नस, नाड़ी।
छिरि पुं [दे] भालू की आवाज।
छिल्ल न [दे] छिद्र। कुटिया, छोटा घर। बाड़ का छिद्र। पलाश का पेड़।
छिल्लर न [दे] छोटा तलाव।
छिल्लर वि [दे] असार, छिछरँ, खालरँ।
छिल्ली स्त्री [दे] शिखा, चोटी।
छिव सक [स्पृश्] स्पर्श करना।
छिवड्ड [दे] देखो छेवट्ठ।
छिवा स्त्री [दे] चिकना चाबुक।
छिवाडिआ, छिवाडी स्त्री [दे] वल्लि वगैरह की फली, सीम या सेम। पतले पन्नेवाली ऊँची पुस्तक, जिसके पन्ने विशेष लम्बे और कम चौड़े हों ऐसी पुस्तक।
छिविअ न [दे] ईख का टुकड़ा।
छिवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल।
छिव्व वि [दे] कृत्रिम।
छिव्वोल्ल न [दे] निन्दार्थक मुख-विकूणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष। विकूणित मुख।
छिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना।
छिहंड न [शिखण्ड] मयूर की शिखा।
छिहंडअ पुं [दे] दही का बना हुआ मिष्टान्न।
छिहंडि पुं [शिखण्डिन्] मोर। वि. मयूरपिच्छ को धारण करनेवाला।
छिहली स्त्री [दे] चोटी।
छिहा स्त्री [स्पृहा] अभिलाष।
छिहिंडिभिल्ल न [दे] दही।
छीअ स्त्रीन [क्षुत] छींक।
छीण वि [क्षीण] क्षय-प्राप्त, कृश।
छीर न [क्षीर] पानी। दूध। °बिराली स्त्री [°विडाली] वनस्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड।
छीरल पुं [क्षीरल] हाथ से चलनेवाला एक तरह का जन्तु, साँप की एक जाति।
छीवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल।
छु सक [क्षुद्] पीसना। पीलना।
छुअ देखो छीअ।
छुअ देखो छुव।
छुई स्त्री [दे] बकपंक्ति।
छुंछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़।
छुंछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा।
छुंद वि [आ + क्रम्] आक्रमण करना।
छुंद सक [दे] बहु, प्रभूत।
छुक्कारण न [धिक्कारण] धिक्कारना, निन्दा।
छुच्छ वि [तुच्छ] क्षुद्र, हलका।
छुच्छुक्कर सक [छुच्छु + कृ] श्वानादि को बुलाने की आवाज करना।
छुट्ट अक [छुट्] छूटना, बन्धन-मुक्त होना।
छुट्ट वि [छुटित] छूटा हुआ, बन्धन-मुक्त।
छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु।
छुट्ट वि [दे] लिप्त। क्षिप्त।
छुडु अ [दे] यदि। शीघ्र।
छुड्ड वि [क्षुद्र] तुच्छ, हलका, लघु।
छुड्डिया स्त्री [क्षुद्रिका] आभरण-विशेष।
छुण्ण वि [क्षुण्ण] चूर-चूर किया हुआ। विहत, विनाशित। अभ्यस्त।
छुत्त वि [छुप्त] स्पृष्ट।
छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच।
छुद्दहीर पुं [दे] बालक।
छुद्दिया देखो छुड्डिया।
छुद्ध देखो खुद्ध।
छुद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छुध वि [क्षुध] भूखा ।
छुन्न पुंन [क्षुण्ण] नपुंसक ।
छुप्पंत छुव का वकृ. ।
छुब्भ अक [क्षुभ्]क्षुब्ध होना, विचलित होना ।
छुब्भत्थ [दे] देखो छोब्भत्थ ।
छुभ देखो छुह ।
छुमा देखो छमा ।
छुर सक [छुर्] लेप करना, लीपना । छेदन करना । व्याप्त करना ।
छुर पुं [क्षुर] छुरा, नापित का अस्त्र । पशु का नख, खुर । गोखरू का वृक्ष । बाण । न. तृण-विशेष । °घरय न [°गृहक] नापित के छुरा वगैरह रखने की थैली ।
छुरमड्डि पुं [दे] नापित ।
छुरहत्थ पुं [दे. क्षुरहस्त] हजाम ।
छुरिआ स्त्री [दे] ।
छुरिआ } स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू ।
छुरिगा }
छुरी स्त्री [क्षुरी] छुरी, चाकू ।
छुल्ल देखो छुड्ड ।
छुल्लुच्छुल देखो चुल्लुच्छल ।
छुव सक [छुप्] स्पर्श करना ।
छुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना ।
छुहा स्त्री [सुधा] अमृत । खड़ी, चूना । °अर पुं [°कर] चन्द्र ।
छुहा स्त्री [क्षुध्] बुभुक्षा ।
छुहाइअ वि [क्षुधित] भूखा ।
छुहाउल वि [क्षुधाकुल]
छुहालु वि [क्षुधालु]
छुहिअ वि [क्षुधित]
छुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ ।
छूढ वि [क्षिप्त] क्षिप्त, प्रेरित ।
छूहिअ न [दे] पार्श्व का परिवर्त्तन ।
छेअ सक [छेदय्] छिन्न करना । तोड़वाना, छेदवाना ।
छेअ पुं [दे] अन्त, प्रान्त, पर्यन्त । देवर । एक देश, एक भाग । निर्विभाग अंश ।
छेअ वि [छेक] निपुण । °यरिय पुं [°आचार्य] शिल्पाचार्य, कलाचार्य ।
छेअ वि [दे. छेक] विशुद्ध, निर्मल । न. कालोचित हित ।
छेअ पुं [छेद] विनाश । खण्ड, विभाग । छेदन, कर्त्तन । छः जैन आगम-ग्रन्थ, वे ये हैं—निशीथसूत्र, महानिशीथसूत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र । अलग किया हुआ अंश । कमी । प्रायश्चित्त-विशेष । शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण । °ारिह न [°ार्ह] प्रायश्चित्त-विशेष ।
छेअअ } वि [छेदक] छेदन करनेवाला,
छेअग } काटनेवाला ।
छेअण न [छेदन] खण्डन, कर्त्तन, द्विधाकरण । न्यूनता, ह्रास । हथियार । निश्चायक वचन । सूक्ष्म अवयव । जल-जीव-विशेष ।
छेओवट्ठावण } न [छेदोपस्थापनीय]
छेओवट्ठावणिय } जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा ।
छेंछई [दे] देखो छिंछई ।
छेंड [दे] देखो छिंड ।
छेंडा स्त्री [दे] शिखा । नवमालिका लता ।
छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता ।
छेग देखो छेअ = छेक ।
छेज्ज देखो छिज्ज ।
छेज्जा स्त्री [छेद्या] छेदन-क्रिया ।
छेण पुं [दे] चोर ।
छेत्त देखो खेत्त ।
छेत्तर न [दे] सूप वगैरह पुराना गृहोपकरण ।
छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना ।
छेत्तु वि [छेतृ] छेदनेवाला, काटनेवाला ।
छेद देखो छेअ = छेदय् ।
छेद देखो छेअ = छेद ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छेदअ वि [छेदक] छेदनेवाला।
छेदण वि [छेदन] छेदन-कर्ता।
छेदोवट्ठावणिय देखो छेओवट्ठावणिय।
छेध पुं [दे] स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन। चोर।
छेप्प न [दे. शेप] पूंछ।
छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक।
छेल, छेलग, छेलय पुंस्त्री [दे] बकरा। स्त्री. °लिआ, °ली।
छेलावण न [दे] उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि। बाल-क्रीडन। चीत्कार, ध्वनि-विशेष।
छेलिय न [दे] सेण्टित, नाक छींकने का शब्द, अव्यक्त ध्वनि-विशेष।
छेली स्त्री [दे] थोड़े फूलवाली माला।
छेवग न [दे] महामारी या मारी वगैरह फैली हुई बीमारी।
छेवट्ठ, छेवट्ठु न [दे. सेवार्त्त, छेदवृत्त] संहनन-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, बेठन और खीला न होकर यों ही हड्डियाँ आपस में जुड़ी हों ऐसी शरीर-रचना। कर्म-विशेष।
छेवाडी [दे] देखो छिवाडी।
छेह पुं [दे. क्षेप] प्रेरण, क्षपण।
छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि।
छोअ पुं [दे] छिलका।
छोइअ पुं [दे] दास, नौकर।
छोइआ स्त्री [दे] छिलका। ईख वगैरह की छाल।
छोक्करी स्त्री [दे] लड़की।
छोट्टि स्त्री [दे] उच्छिष्टता, जुठाई।
छोड सक [छोटय्] छोड़ना, बन्धन से मुक्त करना।
छोडय वि [दे] छोटा, लघु।
छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघ्वी, क्षुद्र।
छोडिअ वि [छोटित] छोड़ा हुआ, बन्धन-मुक्त किया हुआ। घट्टित, आहत।
छोडिअ देखो फोडिअ।
छोढूण वि [दे] छोड़कर।
छोढूण, छाढूणं छुह का संकृ.।
छोप्प वि [स्पृश्य] स्पर्श-योग्य।
छोब्भ पुं [दे] पिशुन, दुर्जन। देखो छोभ।
छोब्भ वि [छोभ्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय।
छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट।
छोब्भाइत्ती स्त्री[दे]अस्पृश्या। द्वेष्या, अप्रीति-कर स्त्री।
छोभ [दे] देखो छोब्भ। निस्सहाय, दीन। न. दोषारोप। दो खमासमण-रूप वन्दन। आघात।
छोम देखो छउम।
छोयर पुं [दे] छोरा, छोकरा।
छोलिअ देखो छोडिअ = छोटित।
छोल्ल सक [तक्ष्] छीलना, छाल उतारना।
छोह पुं [दे] समूह, यूथ, जत्था। विक्षेप। आघात।
छोह पुं [क्षेप] फेंकना।
छोहर [दे] देखो छोयर।
छोहिय वि [क्षोभित] घबड़ाया हुआ, व्याकुल किया गया।

ज

ज पुं. तालु-स्थानीय व्यंजन वर्ण-विशेष।
ज स [यत्] जो, जो कोई।
°ज वि. उत्पन्न।
जअक्कार पुं [जयकार] जीत, अभ्युदय।
जअड अक [त्वर्] त्वरा करना।
जअल वि [दे] आच्छादित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ पुं [यति] जितेन्द्रिय, संन्यासी । छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान । वि. जितना ।

जइ अ [यदा] जिस समय ।

जइ अ [यदि] यदि, जो ।°वि अ [°अपि] जो भी ।

जइ अ [यत्र] जहाँ ।

जइ वि [जयिन्] विजयी ।

जइआ अ [यदा] जिस समय ।

जइच्छा स्त्री [यदृच्छा] स्वतन्त्रता । स्वेच्छाचार ।

जइण वि [जैन] जिनधर्मी । जिन-देव से सम्बन्ध रखनेवाला ।

जइण वि [जयिन्] जीतनेवाला ।

जइण वि [जविन्] वेग-युक्त, त्वरा-युक्त ।

जइत्त वि [जैत्र] विजयी । पुं. नृप-विशेष ।

जइय वि [जयिक] विजयी ।

जइय वि [यष्टृ] याग करनेवाला ।

जइवा अ [यदि वा] अथवा ।

जइस (अप) वि [यादृश] जैसा ।

जउ न [जतु] लाक्षा ।

जउ पुं [यदु] स्वनाम-ख्यात एक राजा । सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश । °णंदण पुं [°नन्दन] यदुवंशीय । श्रीकृष्ण ।

जउ पुं [यजुष्] यजुर्वेद ।

जउण पुं [यमुन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ।

जउण, जँउण°, जँउणा, जउणा स्त्री [यमुना] जमुना नदी ।

जओ अ [यतः] क्योंकि, कारण कि । जिससे, जहाँ से ।

जं अ [यत्] क्योंकि । वाक्यान्तर का सम्बन्ध-सूचक अव्यय । °किंचि अ [°किञ्चित्] जो कुछ, जो कोई । असम्बद्ध, अयुक्त, तुच्छ ।

जंकयसुकय वि [दे] थोड़े उपकार से अधीन होनेवाला ।

जंगम वि. जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह छन्द-विशेष ।

जंगल पुं [जङ्गल] सपादलक्ष देश । निर्जल प्रदेश । न. मांस ।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि ।

जंगिअ वि [जाङ्गमिक] जंगम-सम्बन्धी । न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा ।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विष उतारने का मन्त्र ।

जंगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुड़िक ।

जंगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्र, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है ।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ । °चर वि. पैर से चलनेवाला । °चारण पुं. एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं । °सन्तारिम वि [°संतार्य] जाँघ तक पानीवाला जलाशय ।

जंघाच्छेअ पुं [दे] चौक ।

जंघामय, जंघालुअ वि [दे] द्रुत-गामी ।

जंघाल वि [जङ्घाल] द्रुत-गामी ।

जंत सक [यन्त्र्] वश करना । जकड़ना, बाँधना ।

जंत न [यन्त्र] कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र आदि । वशीकरण, रक्षा वगैरह के लिए किया जाता लेख प्रयोग । संयमन, नियन्त्रण । °पत्थर पुं [°प्रस्तर] गोफण का पत्थर । °पिल्लणकम्म न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पीलने या पेरने का धंधा । °पुरिस पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करनेवाला पुतला । °वाडचुल्ली स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस पकाने का चूल्हा । °हर न [°गृह] पानी का फवारावाला स्थान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंतु पुं [जन्तु] जीव, प्राणी ।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय में होनेवाला तृण-विशेष ।

जंतुय वि [जान्तुक] जन्तुक नामक तृण ।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना ।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन ।

जंपण न [दे] अपयश । मुख ।

जंपय वि [जल्पक] बोलनेवाला ।

जंपाण न [जम्पान] वाहन-विशेष, सुखासन, शिविका-विशेष । शव-यान ।

जंपिच्छय वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहनेवाला ।

जंपेक्खिरमग्गिर / **जंपेच्छिरमग्गिर** वि [दे] जिसको देखे उसी की याचना करनेवाला ।

जंबवई स्त्री [जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक पत्नी ।

जंबवंत पुं [जाम्बवत्] एक विद्याधर राजा ।

जंबाल न [दे] सैवाल, जलमल ।

जंबाल पुंन. [जम्बाल] कर्दम । जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म ।

जंबीरिय (अप) न [जम्बीर] फल-विशेष ।

जंबु पुं. सियार । सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली । पुंन. जम्बू वृक्ष का फल, जामुन ।

जंबु° देखो जंबू ।

जंबुअ पुं [दे] वेतस वृक्ष, बेंत । पश्चिम दिक्पाल ।

जंबुल पुं [दे] वानीर वृक्ष, बेंत । न. मद्य-भाजन ।

जंबुल्ल वि [दे] जल्पाक, बकवादी ।

जंबुवई देखो जंबवई ।

जंबू स्त्री. जामुन का पेड़ । जम्बू वृक्ष के आकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है । पुं. सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य । °**दीव** पुं [°द्वीप] भूखण्ड-विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप । °**दीवग** वि [°द्वीपक] जम्बूद्वीप-सम्बन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न । °**दीवपण्णत्ति** स्त्री [°द्वीपप्रज्ञप्ति] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष । °**पीढ**, °**पेढ** न [°पीठ] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश । °**पुर** न. नगर-विशेष । °**मालि** पुं [°मालिन्] रावण का एक पुत्र, रावण का एक सुभट । °**मेघपुर** न. विद्याधर-नगर-विशेष । °**संड** पुं [°षण्ड] ग्राम-विशेष । °**सामि** पुं [°स्वामिन्] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष ।

जंबूअ पुं [जम्बूक] सियार ।

जंबूणय न [जाम्बूनद] सुवर्ण । पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ।

जंबूलय पुंन [जम्बूलक] उदक-भाजन-विशेष ।

जंभ पुं [दे] तुष, भूसा ।

जंभग वि [जृम्भक] जँभाई लेनेवाला । पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति ।

जंभणंभण / **जंभणभण** / **जंभणय** वि [दे] स्वच्छन्द-भाषी ।

जंभणी स्त्री [जृम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष ।

जंभय देखो जंभग ।

जंभल पुं [दे] जड़, सुस्त, मन्द ।

जंभा स्त्री [जृम्भा] जँभाई । एक देवी का नाम ।

जंभा / **जंभाअ** अक [जृम्भ्] जँभाई लेना ।

जंभाइअ न [जृम्भित] जृम्भा ।

जंभिय न [जृम्भित] जँभाई । पुं. ग्राम-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था ।

जक्ख पुं [यक्ष] व्यन्तर देवों की एक जाति । कुबेर, यक्षाधिपति । एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था । द्वीप-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुद्र-विशेष। श्वान। °कद्दम पुं [°कर्दम] केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण। द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °ग्गह पुं [°ग्रह] यक्षावेश, यक्षकृत उपद्रव। °णायग पुं [°नायक] कुबेर। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °ादित्तय। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की बहिन, एक जैन साध्वी। °भद्द पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष। °मंडलप-विभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य। °मह पुं. यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव। °महावर पुं. यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष। °राय पुं [°राज] यक्षों का राजा, कुबेर। प्रधान यक्ष। एक विद्याधर राजा। °वर पुं. यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष। °इट्ठ वि [°ाविष्ट] यक्षाधिष्ठित। °ादित्तय, °ालित्तय न [°ादिप्तक] कभी-कभी किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन। आकाश में दीखता अग्नियुक्त पिशाच। °ावेस पुं [°ावेश] यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश। °ाहिव पुं [°ाधिप] वैश्रमण। एक विद्याधर राजा। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ।

जक्खरत्ति स्त्री [दे. यक्षरात्रि] दीवाली, कार्तिक वदि अमावस का पर्व।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी।

जक्खिंद पुं [यक्षेन्द्र] यक्षों का स्वामी। भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] यक्ष-योनिक स्त्री, देवियों की एक जाति। भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] देखो जक्खा।

जक्खी स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष।

जक्खुत्तम पुं [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक अवान्तर जाति।

जक्खेस पुं [यक्षेश] यक्षों का स्वामी। भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण-ग्रन्थि।

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी।

जग पुंन [जगत्] जीव। न. दुनिया। °गुरु पुं. जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष। जगत् का पूज्य। जिन-देव, तीर्थंकर। °जीवण वि [°जीवन] जगत् को जिलानेवाला। पुं. जिन-देव। °णाह पुं. [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव। °पियामह पुं. [°पितामह] ब्रह्मा, विधाता। जिनदेव। °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करनेवाला, जगत्प्रकाशक। °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ।

जगई स्त्री [जगती] प्राकार, दुर्ग। पृथिवी।

जगईपव्वय पुं [जगतीपर्वत] पर्वत-विशेष।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना।

जगड सक [दे] कलह करना। कदर्थन करना, पीड़ना। उठाना, जागृत करना।

जगडण वि [दे] झगड़ा करानेवाला। कदर्थना करानेवाला।

जगडणा स्त्री [दे] झगड़ा, कलह। कदर्थन, पीड़न।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित। लड़ाया हुआ।

जगर पुं. संनाह, कवच।

जगल न [दे] पङ्कवाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग। ईख की मदिरा का नीचला भाग।

जगार पुं [दे] राब।

जगार पुं [जकार] 'ज' वर्ण।

जगार पुं [यत्कार] 'यत्' शब्द।

जगारी स्त्री. एक प्रकार का क्षुद्र अन्न।

जगुत्तम वि [जगदुत्तम] जगत्-श्रेष्ठ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जग्ग अक [जागृ] जागना, सचेत होना ।
जग्गविअ वि [जागरित] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ ।
जग्गह पुं [यद्ग्रह] जो प्राप्त हो उसे ग्रहण करने की राजाज्ञा ।
जग्गाविअ देखो जग्गविअ ।
जग्गाह देखो जग्गह ।
जघण न [जघन] कमर के नीचे का भाग, ऊरुस्थल ।
जच्च पुं [दे] आदमी ।
जच्च वि [जात्य] कुलीन, श्रेष्ठ, सुन्दर । स्वाभाविक । सजातीय, शुद्ध ।
जच्चंजण न [जात्याञ्जन] सुन्दर आँजन । तैल वगैरह से मर्दित अञ्जन ।
जच्चंदण न [दे] अगरु । कुंकुम, केसर ।
जच्चंध वि [जात्यन्ध] जन्मान्ध ।
जच्चण्णिय वि [जात्यन्वित] सुकुल में उत्पन्न ।
जच्चास पुं [जात्यश्व, जात्याश्व] उत्तम जाति का घोड़ा ।
जच्चिय (अप) वि [जातीय] समान जाति का ।
जच्चिर न [यच्चिर] जहाँ तक, जितने समय तक ।
जच्छ सक [यम्] विराम करना । देना, दान करना ।
जच्छ पुं [यक्ष्मन्] क्षयरोग ।
जच्छंद वि [दे] स्वच्छन्द ।
जज देखो जय = यज् ।
जजु देखो जउ = यजुष् ।
जज्ज वि [जय्य] जीतने को शक्य ।
जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला ।
जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना ।
जज्जिग पुं [जय्यिक] एक जैन आचार्य का नाम ।
जज्जिय } न [यावज्जीव] जीवन-पर्यन्त ।
जज्जीव }
जट्ट पुं [जर्त] देश-विशेष । उस देश का निवासी ।
जट्ठ वि [इष्ट] याग किया हुआ । न [इष्ट] यजन, यज्ञ ।
जट्ठि स्त्री [यष्टि] लकड़ी ।
जड वि. अचेतन पदार्थ । मूर्ख, आलसी, विवेक-शून्य । शिशिर, जाड़े से ठंडा होकर चलने को अशक्त ।
जड देखो जढ ।
जड° } स्त्री [जटा] सटे हुए बाल, मिले हुए बाल । °धर वि. जटा को धारण करनेवाला । पुं. जटाधारी तापस । °धारि पुं [°धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ ।
जडा }
जडहारि देखो जड-धारि ।
जडाउ } पुं [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध गृद्ध पक्षि-विशेष ।
जडाउण }
जडागि पुं [जटाकिन्] ऊपर देखो ।
जडाल वि [जटावत्] जटाधारी ।
जडासुर पुं [जटासुर] असुर-विशेष ।
जडि वि [जटिन्] जटावाला । पुं. जटाधारी तापस ।
जडिअ वि [जटित] ढका हुआ ।
जडिअ वि [दे. जटित] जड़ित, जड़ा हुआ, खचित, संलग्न ।
जडिम पुंस्त्री [जडिमन्] जड़ता ।
जडियाइलग } पुं [दे. जटिकादिलक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ।
जडियाइलय }
जडिल वि [जटिल] जटा-युक्त । व्याप्त, खचित, जटाधारी तापस ।
जडिलय पुं [दे. जटिलक] राहु ।
जडिलिय } वि [जटिलित] जटिल किया हुआ, जटा-युक्त किया हुआ ।
जडिलिल्ल }
जडिल्ल वि [जटिन्] जटावाला ।
जडुल देखो जडिल ।
जड्डु वि [दे] अशक्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जड्ड न [जाड्य] जड़पन ।
जड्ड देखो जड ।
जड्ड पुं [दे] हाथी ।
जड्डा स्त्री [दे] जाड़ा, शीत ।
जढ वि [त्यक्त] परित्यक्त, वर्जित ।
जढर } न [जठर] पेट ।
जढल }
जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना ।
जण पुं [जन] मनुष्य । लोग, व्यक्ति । देहाती मनुष्य । समुदाय, वर्ग, लोक । वि. उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला । °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] जन-समागम । °**ट्ठाण** न [°स्थान] दण्डकारण्य । नासिक नगर । °**वइ** पुं [°पति] लोगों का मुखिया । °**वय** पुं [°व्रज] मनुष्य-समूह । °**वाय** पुं. [°वाद] जन-श्रुति, उड़ती खबर । मनुष्यों की आपस में चर्चा । लोकापवाद । °**स्सुइ** स्त्री [°श्रुति] किंवदन्ती । °**ाववाय** पुं [°ापवाद] लोक में निन्दा ।
जणइ स्त्री [जनिका] उत्पादिका । उत्पन्न करनेवाली ।
जणइउ } पुं [जनयितृ] जनक । वि.
जणइत्तु } उत्पादक ।
जणउत्त पुं [दे] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया । विट, भाँड़, विदूषक ।
जणंगम पुं [जनङ्गम] चाण्डाल ।
जणग देखो **जणय** ।
जणण न [जनन] जन्म देना, पैदा करना । वि. उत्पादक, जनक ।
जणणि } स्त्री [जननी, °नी] माता ।
जणणी } उत्पादिका ।
जणद्दण पुं [जनार्दन] श्रीकृष्ण, विष्णु ।
जणप्पवाद पुं [जनप्रवाद] लोकोक्ति, अफवाह ।
जणमेअअ पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष ।
जणमेजय देखो **जणमेअअ** ।
जणय वि [जनक] उत्पादक । पुं. पिता । देखो **जण** = जन । मिथिला का राजा जनक, सीता का पिता । पुंन. ब. माता-पिता । °**तणआ** स्त्री [°तनया] सीता । °**दुहिया**, °**धूआ** [°दुहितृ] वही अर्थ । °**नदण** पुं [°नन्दन] राजा जनक का पुत्र, भामण्डल । °**नंदणी** स्त्री [°नन्दनी] सीता, जानकी । °**णंदिणी** स्त्री [°नन्दिनी] वही अर्थ । °**निवतणया** स्त्री [°नृपतनया] राजा जनक की पुत्री । °**पुत्ती** स्त्री [°पुत्री] वही अर्थ । °**सुअ** पुं [°सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल । °**सुआ** स्त्री [°सुता] सीता ।
जणयंगया स्त्री [जनकाङ्गजा] सीता ।
जणवय पुं [जनपद] देश, राष्ट्र, लोकालय । देश-निवासी । प्रजा ।
जणवय वि [जानपद] देश का निवासी ।
जणस्सुइ स्त्री [जनश्रुति] किंवदन्ती ।
जणि (अप) अ [इव] तरह, जैसा ।
जणी स्त्री [जनी] महिला ।
जणु देखो **जणि** ।
जणुक्कलिआ स्त्री [जनोत्कलिका] मनुष्यों का छोटा समूह ।
जणुम्मि स्त्री [जनोर्मि] तरंग की तरह मनुष्यों की भीड़ ।
जणेर (अप) वि [जनक] उत्पादक । पुं. बाप ।
जणेरि (अप) स्त्री [जननी] माता ।
जण्ण पुं [यज्ञ] यज्ञ । देव-पूजा । श्राद्ध । °**इ**, °**जाइ** वि [°याजिन्] यज्ञ करनेवाला । °**इज्ज** वि [°ज्ञीय] यज्ञ-सम्बन्धी । न. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक प्रकरण । °**ट्ठाण** न [°स्थान] यज्ञ का स्थान । नगर-विशेष नासिक । °**मुह** न [°मुख] यज्ञ का उपाय । °**वाड** पुं [°वाट] यज्ञ-स्थान । °**सेट्ठ** पुं [°श्रेष्ठ] उत्तम याग ।
जण्णय देखो **जणय** ।
जण्णयत्ता स्त्री [दे. यज्ञयात्रा] बारात ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जण्णसेणी स्त्री [याज्ञसेनी] द्रौपदी ।

जण्णहर पुं [दे] नर-राक्षस, दुष्ट-मनुष्य ।

जण्णिय पुं [याज्ञिक] यज्ञ करानेवाला ।

जण्णोवईय } न [यज्ञोपवीत] जनेऊ ।
जण्णोववीय

जण्णोहण पुं [दे] राक्षस, पिशाच ।

जण्ह न[दे]छोटी स्थाली । वि. काले रंग का ।

जण्हई स्त्री [जाह्नवी] गंगा नदी ।

जण्हली स्त्री [दे] नीवी, इजारबन्द ।

जण्हवी स्त्री [जाह्नवी] सगर चक्रवर्त्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी । गङ्गा-नदी ।

जण्हु पुं [जह्नु] भरत-वंशीय एक राजा । °सुआ स्त्री [°सुता] भागीरथी ।

जण्हुआ स्त्री [दे] घुटना ।

जण्हुकन्ना स्त्री [जह्नुकन्या] गंगा-नदी ।

जत्त देखो जय = यत् ।

जत्त पुं [यत्न] उद्योग, उद्यम, चेष्टा ।

जत्ता स्त्री [यात्रा] देशान्तर-गमन । गमन । देव-पूजा के निमित्त किया जाता उत्सव-विशेष, अष्टाह्निका, रथ-यात्रा आदि । तीर्थ-गमन । शुभ-प्रवृत्ति ।

जत्ता स्त्री [यात्रा] संयम-निर्वाह ।

जत्ति स्त्री [दे] चिन्ता । सेवा, शुश्रूषा ।

जत्तिअ देखो °यत्तिअ ।

जत्तिय वि [यावत्] जितना ।

जत्तो देखो जओ ।

जत्थ अ [यत्र] जहाँ, जिसमें ।

जदि देखो जइ = यदि ।

जदिच्छा देखो जइच्छा ।

जदु देखो जउ = यदु ।

जद्दर पुंन [दे] वस्त्र-विशेष ।

जधा देखो जहा ।

जन्न वि [जन्य] लोक-हितकर । उत्पन्न होने योग्य ।

जन्नत्ता } स्त्री [दे] बारात ।
जन्ना

जन्नु देखो जाणु ।

जन्नोवइय देखो जण्णोवईय ।

जप देखो जव = जप् ।

जप्प देखो जंप ।

जप्प पुं [जल्प] उक्ति । छल का उपालम्भ रूप भाषण ।

जप्प वि [याप्य] गमन करने-योग्य । °जाण न [°यान] शिविका ।

जप्पभिइ } अ [यत्प्रभृति] जब से, जहाँ से लेकर ।
जप्पभिइं

जम सक [यमय्] नियन्त्रण करना । जमाना, स्थिर करना ।

जम पुं [यम] अहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत । दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जमराज । भरणी नक्षत्र का अधि-पति देव । किष्किन्धा नगरी का एक राजा । तापस-विशेष । मृत्यु । संयमन । °काइय पुं [°कायिक] असुर-विशेष, परमाधामिक देव, जो नारकी के जीवों को दुःख देते हैं । °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव । °पुरी स्त्री. जम की नगरी । °प्पभ पुं [°प्रभ] यमदेव का उत्पात-पर्वत । °भड पुं [°भट] यमराज का सुभट । °मंदिर न [°मन्दिर] यमराज का घर, मृत्यु-स्थान । °लय न. पूर्वोक्त ही अर्थ ।

जमग पुं [यमक] पक्षि-विशेष । देव-विशेष । पर्वत-विशेष । द्रह-विशेष । देखो जमय ।

जमगं } अ [दे] एक साथ, एक ही समय में ।
जमगसमगं

जमणिया स्त्री [जमनिका] जैन साधु का उपकरण-विशेष ।

जमदग्गि पुं [जमदग्नि] तापस-विशेष, परशु-राम का पिता ।

जमदग्गिजडा स्त्री [यमदग्निजटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष, सुगन्धबाला ।

जमय देखो जमग । न. अलंकार-शास्त्र में प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष । छन्द-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जमल न[यमल]युग्म । समान श्रेणि में स्थित। सहवर्त्ती । तुल्य । °ज्जुणभंजग पुं [°ार्जुन-भञ्जक] श्रीकृष्ण वासुदेव । °पद, °पय न [°पद] प्रायश्चित्त-विशेष । आठ अंकों की संख्या । °पाणि पुं. मुष्टि ।

जमलिय वि [यमलित] युग्म रूप से स्थित। सम-श्रेणि रूप से अवस्थित ।

जमलोइय वि[यमलौकिक]यमलोक-सम्बन्धी । परमाधार्मिक देव, असुरों की एक जाति ।

जमा स्त्री [यामी] दक्षिण दिशा ।

जमालि पुं.एक राजकुमार, जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था ।

जमावण न [यमन] नियन्त्रण करना । विषम वस्तु को सम करना ।

जमुणा देखो जँउणा ।

जमू स्त्री.ईशानेन्द्रकी एक अग्रमहिषी का नाम।

जम्म अक [जन्] उत्पन्न होना ।

जम्म सक [जम्] भक्षण करना ।

जम्म, जम्मण } पुंन [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद ।

जम्मा स्त्री [याम्या] दक्षिण दिशा ।

जम्हाअ, जम्हाह, जम्हाहा } देखो जंभाअ ।

जय सक [जि] जीतना । अक. उत्कृष्टपन से बरतना ।

जय सक [यज्] पूजा करना । याग करना।

जय अक [यत्] यत्न करना, चेष्टा करना । ख्याल करना ।

जय न [जगत्] संसार । °त्तय न [°त्रय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल-लोक । °नाह पुं [°नाथ] परमात्मा । °पहु पुं [°प्रभु] पर-मेश्वर । °ाणंद वि[°ानन्द] जगत् को आनन्द देनेवाला ।

जय वि [यत] जितेन्द्रिय । उपयोग रखने वाला । न. छठवाँ गुणस्थानक । उपयोग, सावधानता ।

जय पुं. [जव] वेग, दौड़ ।

जय पुं जीत । स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्रवर्त्ती राजा । °उर न[°पुर]नगर-विशेष । °कम्मा स्त्री [°कर्मा] विद्या-विशेष । °घोस पुं [°घोष] जय-ध्वनि । स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि । °चंद पुं [°चन्द्र] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का कन्नौज का एक अन्तिम राजा । पन्नरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] शत्रु पर चढ़ाई । °पडाया स्त्री [°पताका] विजय का झण्डा । °पुर देखो °उर । °मंगला स्त्री [°मङ्गला] एक राजकुमारी । °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] विजयश्री । °वत वि [°वत्] विजयी । °वल्लह पुं [°वल्लभ] नृप-विशेष । °संध पुं [°सन्ध] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री । °संधि पुं [°सन्धि] वही पूर्वोक्त अर्थ । °सद्द पुं[°शब्द]विजय-सूचक आवाज। °सिंह पुं. सिंहल द्वीप का एक राजा । विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्धराज' था । जैनाचार्य-विशेष । °सिरि स्त्री [°श्री] जयलक्ष्मी । °सेण पुं [°सेन] एक राजा । °ावह वि. विजयी । विद्याधर-नगर-विशेष । °ावहपुर न. एक विद्याधर-नगर । °ावास न. विद्याधरों का एक नगर ।

जय पुं [यत्न] प्रयत्न, चेष्टा ।

जय पुंस्त्री [जया] तृतीया, अष्टमी और त्रयो-दशी तिथि ।

जय° देखो जया = यदा । °प्पभिइ अ [°प्रभृति] जिस समय से ।

जयंत पुं [जयन्त] इन्द्र का पुत्र । एक भावी बलदेव । एक जैन मुनि । इस नाम के देव-विमान में रहनेवाली एक उत्तम देव-जाति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्बूद्वीप की जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव। न. देव-विमान-विशेष। जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार। रुचक पर्वत का एक शिखर।

जयंती स्त्री [जयन्ती] पक्ष की नववीं रात। भगवान् अरनाथ की दीक्षा-शिविका। वल्ली-विशेष, अरणी, वर्ष-गाँठ। सप्तम बलदेव की माता। विदेह वर्ष की एक नगरी। अंगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी। जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। भगवान् महावीर की एक उपासिका। भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता। अञ्जनक पर्वत की एक वापी। नवमी तिथि। जैन मुनियों की एक शाखा।

जयण न [यजन] याग, पूजा। अभयदान।

जयण न [यतन] यत्न, चेष्टा, उद्यम। प्राणी की रक्षा।

जयण वि [जवन] वेग-युक्त।

जयण न [जयन] विजय। वि. जीतनेवाला।

जयण न [दे] घोड़े का बख्तर।

जयणा स्त्री [यतना] चेष्टा, कोशिश। प्राणी की रक्षा। उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल।

जयद्दह पुं [जयद्रथ] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।

जया अ [यदा] जिस समय।

जया स्त्री. विद्या-विशेष। चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्रमहिषी। भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम-ख्यात माता। तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि। भगवान् पार्श्वनाथ की शासनदेवी। ओषधि-विशेष।

जयार पुं [जकार] 'ज' अक्षर। जकारादि अश्लील शब्द।

जयिण देखो जइण = जयिन्।

जर अक [जॄ] जीर्ण होना, बूढ़ा होना।

जर पुं. [ज्वर] बुखार।

जर पुं. रावण का एक सुभट। वि. जीर्ण, पुराना। °ग्गव पुं [°गव] बूढ़ा बैल। °ग्गु पुं [°गु] बूढ़ा बैल। स्त्री. बूढ़ी गाय।

जर° देखो जरा।

जरंड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा।

जरग्ग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना।

जरठ वि. कठिन, परुष। जीर्ण, पुराना। देखो जरढ।

जरड वि [दे] वृद्ध।

जरढ देखो जरठ। प्रौढ, मजबूत।

जरण न. जीर्णता, हाजमा।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष। °ावत्त पुं [°ावर्त] नरकावास-विशेष। °ावसिट्ठ पुं [°ावशिष्ट] नरकावास-विशेष।

जरलद्धिअ / **जरलविअ** } वि [दे] ग्रामीण।

जरा स्त्री. बुढ़ापा। वसुदेव की एक पत्नी। °कुमार पुं. श्रीकृष्ण का एक भाई। °संध पुं [°सन्ध] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव। °सिध पुं [°सिन्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ। °सिंधु पुं[°सिन्धु] वही पूर्वोक्त अर्थ।

जराहिरण (अप) देखो जल-हरण।

जरि वि [ज्वरिन्] ज्वर से पीड़ित।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, वृद्ध।

जरिअ वि [ज्वरित] ज्वर-युक्त, बुखारवाला।

जल अक [ज्वल्] दग्ध होना। चमकना।

जल देखो जड।

जल न [जाड्य] जड़ता, मन्दता।

जल पुं [ज्वल] देदीप्यमान।

जल न. वीर्य। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान। °कारि पुंस्त्री [°कारिन्] चतु-

रिन्द्रिय जन्तु-विशेष । °य वि [°ज] पानी में उत्पन्न । °वारिअ पुं [°वारिक] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।

जल न. पानी । पुं. जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल । °कंत पुं [°कान्त] मणि-विशेष, रत्न की एक जाति । उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र । जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल । °करप्फाल पुं [°करास्फाल] हाथ से आहत पानी । °करि पुंस्त्री [°करिन्] पानी का हाथी, जल-जन्तु-विशेष । °कलंब पुं [°कदम्ब] कदम्ब वृक्ष की एक जाति । °कीडा, °कीला स्त्री [°क्रीडा] पानी में की जाती क्रीड़ा । °केलि स्त्री. जल-क्रीड़ा । °चर देखो °यर । °चार पुं. पानी में चलना । °चारण पुं. जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखनेवाला मुनि । °चारि पुं[°चारिन्] पानी में रहनेवाला जन्तु । °चारिया स्त्री [°चारिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति । °जंत न [°यन्त्र] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा । °णाह पुं [°नाथ] समुद्र । °णिहि पुं[°निधि]सागर । °णीली स्त्री [°नीली] शैवाल । °तुसार पुं [°तुषार] पानी का बिन्दु । °थंभिणी स्त्री [°स्तम्भिनी] विद्या-विशेष । °द पुं. मेघ । °द्दा स्त्री [°आर्द्रा] पानी से भींजाया हुआ पंखा । °प्पभ पुं [°प्रभ] उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र । जल-कान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल । °य न [°ज] कमल । °य देखो °द । °यर पुंस्त्री [°चर] जल में रहनेवाला ग्राहादि जन्तु । °रंकु पुं [°रङ्कु] ढेंक-पक्षी । °रक्खस पुं [°राक्षस] राक्षस की जाति । °रमण न. जल-केलि । °रय पुं. जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल । °रासि पुं [°राशि] समुद्र । °रुह पुंन. पानी में पैदा होनेवाली वनस्पति । °रूव पुं [°रूप] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल । °लिलिर न. पानी में उत्पन्न होनेवाली वस्तु-विशेष । °वायस पुंस्त्री. जल-कौआ । °वासि वि [°वासिन्] पानी में रहनेवाला । पुं. तापसों की एक जाति, जो पानी में ही निमग्न रहते हैं । °वाह पुं. मेघ । जन्तु-विशेष । °विच्छुय पुं [°वृश्चिक] पानी का बिच्छू, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष । °वीरिय पुं [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा । क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति । °सय न [°शय] कमल । °साला स्त्री [°शाला] प्रपा, प्याऊ । °सूग न [°शूक] शैवाल । जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल । °सेल पुं [°शैल] समुद्र के भीतर का पर्वत । °हत्थि पुं [°हस्तिन्] जलहस्ती, पानी का एक जन्तु । °हर पुं [°धर] अभ्र । एक विद्याधर सुभट । °हर पुं [°भर] जल समूह । °हर न [°गृह] सागर । °हरण न. पानी की क्यारी । छन्द-विशेष । °हि पुं [°धि] समुद्र । चार की संख्या । °ासय पुंन[°ाशय] सरोवर, तलाव ।

जलइय पुं [जलकित] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ।

जलंजलि पुं [जलाञ्जलि] तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल ।

जलग पुं [ज्वलक] अग्नि ।

जलजलिअ वि [जलजलित] 'जल-जल' शब्द से युक्त ।

जलजलित वि [जाज्वल्यमान] देदीप्यमान ।

जलण पुं [ज्वलन] वह्नि । अग्निकुमार-नामक देव-जाति । वि. जलता हुआ । चमकता । जलानेवाला । न. अग्नि सुलगाना । जलाना, भस्म करना । °जडि पुं [°जटिन्] विद्या-धर वंश का एक राजा । °मित्त पुं [°मित्र] एक प्राचीन कवि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलावण न [ज्वालन] जलाना, दग्ध करना ।
जलिअ वि [ज्वलित] जला हुआ, प्रदीप्त । उज्ज्वल, कान्ति-युक्त ।
जलिर वि [ज्वलितृ] जलता, सुलगता ।
जलूगा, **जलूया** स्त्री [जलौकस्] जन्तु-विशेष, जोंक, जलिका, जल का कीड़ा । पक्षि-विशेष ।
जलूसग पुं [दे] रोग-विशेष ।
जलोयर न[जलोदर]जलन्धर रोग । जठराम ।
जलोया देखो जलूया ।
जल्ल पुं [दे. जल्ल] शरीर का मैल । नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करनेवाला नट । बन्दी, बिरुद-पाठक । एक म्लेच्छ देश । उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति ।
जल्लार पुं. एक अनार्य देश । जल्लार देश का निवासी ।
जल्लिय न. [दे. जल्लक] शरीर का मैल ।
जल्लोसहि स्त्री [दे. जल्लौषधि] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग का नाश होता है ।
जव सक [यापय्] गमन करवाना, भेजना । व्यवस्था करना ।
जव सक [यापय्] काल-यापन करना ।
जव सक [जप्] जाप करना, बार-बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण करना ।
जव पुं [यव] अन्न-विशेष, जव या जौ । यूका की नाप । पुंन. एक देव-विमान । °**णाली** स्त्री [°नाली] वह नाली जिसमें जौ बोये जाते हों । °**नालय** पुं [°नालक] कन्या का कञ्चुक । °**न्न** न [°अन्न] यव-निष्पन्न परमान्न, जव की खीर, जाउर । °**मज्झ** न [°मध्य] तप-विशेष । आठ यूका की एक नाप । °**मज्झा** स्त्री [°मध्या] व्रत-विशेष, प्रतिमा-विशेष । °**राय** पुं[°राज] नृप-विशेष। °**वंसा** स्त्री [°वंशा] वनस्पति-विशेष ।
जव पुं. वेग, दौड़, शीघ्र गति ।
जवजव पुं [यवयव] एक तरह का यव-धान्य ।
जवण न [दे] हल की शिखा ।
जवण वि [जवन] वेग से जानेवाला । पुं. शीघ्र गति ।
जवण पुं [यवन] म्लेच्छ देश-विशेष । उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति । यवन देश का राजा ।
जवण न [यापन] निर्वाह ।
जवणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो ।
जवणाणिया स्त्री[यवनानिका] लिपि-विशेष ।
जवणालिया स्त्री [यवनालिका] कन्या का कञ्चुक ।
जवणिआ स्त्री [यवनिका] परदा ।
जवणी स्त्री[यवनी] परदा । संचारिका. दूती ।
जवणी स्त्री [यावनी] यवन की स्त्री । यवन की लिपि ।
जवपचमाण पुं [दे] जात्यश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु ।
जवय, **जवरय** पुं [दे] जव का अङ्कुर ।
जवली स्त्री [दे] वेग ।
जववारय [दे] देखो जवरय ।
जवस न [यवस] घास । गेहूँ वगैरह धान्य ।
जवा स्त्री [जपा] वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृक्ष । गुड़हल का फूल, अड़हुल का पुष्प ।
जवास पुं [यवास] वृक्ष-विशेष, रक्त पुष्पवाला वृक्ष-विशेष ।
जवि, **जविण** वि [जविन्] वेग-युक्त । पुं. अश्व ।
जविअ वि [जपित] जिसका जाप किया गया हो वह (मन्त्र आदि) । न. अध्ययन, प्रकरण आदि ग्रन्थांश ।
जविय वि [यापित] गमित, गुजरा हुआ । नाशित ।
जस पुं [यशस्] कीर्त्ति, इज्जत । संयम,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्याग। विनय। भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य। भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य। °कित्ति स्त्री [°कीर्त्ति] सुप्रसिद्धि। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन आचार्य। °म, °मंत वि [°वत्] यशस्वी, इज्जतदार। पुं. एक कुलकर पुरुष। °वई स्त्री [°वती] द्वितीय चक्रवर्त्ती सगरराज की माता। तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि। °वम्म पुं [°वर्मन्] नृप-विशेष। °वाय पुं [°वाद] साधुवाद, प्रशंसा। °विजय पुं. विक्रम की अठारहवीं शताब्दी के न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय। °हर पुं. [°धर] भारतवर्ष का भूतकालिक अठारहवाँ जिन-देव। भारतवर्ष के एक भावी जिन-देव। एक राजकुमार। पक्ष का पाँचवाँ दिन। वि. यशस्वी। देखो जसो°।

जसंसि पुं [यशस्विन्] भगवान् महावीर के पिता का नाम।

जसद पुं. धातु-विशेष, जस्ता।

जसदेव पुं [यशोदेव] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य।

जसभद्द पुं. [यशोभद्र] पक्ष का चतुर्थ दिवस। एक राजर्षि। न. उड्डुवाटिक गण का एक कुल।

जसवई स्त्री [यशोमती] भगवान् महावीर की दौहित्री का नाम।

जसस्सि वि [यशस्विन्] कीर्तिमान्।

जसहर पुंन [यशोधर] एक देव-विमान।

जसा स्त्री [यशा] कपिलमुनि की माता।

जसो° देखो जस। °आ स्त्री [°दा] नन्द नामक गोप की पत्नी। भगवान् महावीर की पत्नी। °कामि वि [°कामिन्] यश चाहने-वाला। °कित्तिनाम न [°कीर्त्तिनामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है। °धर पुं. धरणेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधि-पति देव। ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तर। °हरा स्त्री [°धरा] दक्षिण रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिशाकुमारी देवी। जम्बू-वृक्ष-विशेष, सुदर्शना। पक्ष की चौथी रात्रि।

जसोधर देखो जसो-हर।

जसोधरा देखो जसो-हरा।

जसोया स्त्री [यशोदा] भगवान् महावीर की पत्नी का नाम।

जह सक [हा] छोड़ देना।

जह अ [यत्र] जहाँ, जिसमें।

जह अ [यथा] जिस तरह से। °क्कम न [°क्रम] क्रम के अनुसार। °क्खाय देखो अह-क्खाय। °ट्ठिय वि [°स्थित] वास्त-विक। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक। °त्थनाम वि [°र्थनामन्] नाम के अनुसार गुणवाला। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता। °त्थ न [याथात्म्य] वास्तविकता। °रिह न [°र्ह] उचितता के अनुसार। °वट्टिय वि [°वृत्त] यथार्थ। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार। °संख न [°संख्य] संख्या के क्रम से। देखो जहा = यथा।

जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग।

जहणरोह पुं [दे] जाँघ।

जहणा स्त्री [हान] परित्याग।

जहणूसव } न [दे] अर्धोरुक, जघनांशुक,
जहणूसुअ } स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष।

जहण्ण वि [जघन्य] निकृष्ट, नीच।

जहा = देखो जह = हा।

जहा देखो जह = यथा। °जुत्त वि [°युक्त] यथोचित, योग्य। °जेट्ठ न [°ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के क्रम से। °णामय वि [°नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, कोई। °तच्च न [°तथ्य] वास्तविक। °तह न [°तथ] वास्तविक। °तह न [याथातथ्य] वास्तवि-कता। 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन। °पवट्टकरण न [°प्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष। °भूय वि [°भूत] वास्त-विक। °राइणिया स्त्री [°रात्निकता]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्येष्ठता के क्रम से, बड़प्पन के अनुसार। °रुह देखो जहरिह। °वित्त न [°वृत्त] जैसा हुआ हो वैसा। °सत्ति स्त्रीन [°शक्ति] शक्ति के अनुसार।

जहाजाय वि [दे. यथाजात] जड़, मूर्ख।

जहि / जहिं / जहिअं देखो जह = यत्र।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुसार।

जहिच्छिया स्त्री [यदृच्छा] स्वेच्छा, स्वच्छन्दता।

जहिट्ठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु-राजा का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव।

जहिमा स्त्री [दे] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा।

जहुट्ठिल्ल देखो जहिट्ठिल्ल।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही।

जहेच्छ देखो जहिच्छ।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार।

जहोइय / जहोचिय न [यथोचित] योग्यता के अनुसार।

जा अक [जन्] उत्पन्न होना।

जा सक [या] जाना। प्राप्त करना। जानना। सकना, समर्थ होना।

जा देखो जाव = यावत्।

जाअ देखो जाव = जाप।

जाअ देखो जा = या।

जाअर देखो जागर।

जाआ स्त्री [यातृ] देवर-भार्या, देवरानी।

जाइ स्त्री [जाति] मालती पुष्प। सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व। जात, कुल, गोत्र, वंश, ज्ञाति। उत्पत्ति। क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति। पुष्प-प्रधान वृक्ष, जाई का पेड़। मद्य-विशेष। °आजीव पुं जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करनेवाला साधु। °थेर पुं [°स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष। °प्पसण्णा स्त्री [°प्रसन्ना] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा। °फल न. वृक्ष-विशेष। जायफल, एक गर्म-मसाला। °मंत वि [°मत्] उच्च जाति का। °मय पुं [°मद] जाति का अभिमान। °वत्तिया स्त्री [°पत्रिका] सुगन्धित फल-वाला वृक्ष-विशेष। फल-विशेष, एक गर्म मसाला। °सर पुं [°स्मर] पूर्व-जन्म की स्मृति। वि. पूर्व-जन्म का ज्ञानवाला। °सरण न [°स्मरण] पूर्व-जन्म की स्मृति। °स्सर देखो °सर।

जाइ स्त्री [जाति] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध दूषणा-भास—असत्य दूषण। माला का वंश।

जाइ देखो जाया।

जाइ स्त्री [दे] दारू। मदिरा-विशेष।

जाइ वि [याजिन्] यज्ञ-कर्त्ता।

जाइ वि [यायिन्] जानेवाला।

जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, माँगा हुआ।

जाइअ देखो जाय = जात।

जाइच्छि° / जाइच्छिय वि [यादृच्छिक] यथेच्छ। इच्छानुसारी।

जाइच्छिय वि [यादृच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित।

जाइणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्र सूरि अपनी धर्म-माता समझते थे।

जाइयव्वय न [यातव्य] गमन, गति।

जाईअ वि [जातीय] जाति-सम्बन्धी।

जाउ न [जायु] क्षीरपेया, यवागू, मांड की काँजी, लपसी।

जाउ अ [जातु] कदाचित्। किसी तरह। °कण्ण पुं [°कर्ण] पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाउ स्त्री [यातृ]देवर-पत्नी । वि. जानेवाला ।
जाउया स्त्री [यातृका] देवर-पत्नी ।
जाउर पुं [दे] कपित्थवृक्ष, कैथ का फल ।
जाउल पुं [जातुल] वल्ली-विशेष ।
जाउहाण पुं [यातुधान] राक्षस ।
जाग पुं [याग] यज्ञ, होम, हवन । देव-पूजा ।
जागर अक [जागृ] जागना, निद्रा-त्याग करना ।
जागर वि. जागनेवाला, पुं. जागरण ।
जागरइत्तु वि [जागरितृ] जागनेवाला ।
जागरिअ वि [जागृत] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध ।
जागरिअ वि [जागरिक] निद्रा-रहित ।
जागरिया स्त्री [जागरिका, जागर्या] जागरण, निद्रा-त्याग ।
जागरुअ वि [जागरुक] जागता, जागने के स्वभाववाला ।
जाजावर वि [यायावर] गमनशील, विनश्वर ।
जाडी स्त्री [दे] गुल्म, लता-प्रतान ।
जाण सक [ज्ञा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना ।
जाण पुंन [यान] रथादि वाहन, सवारी । यानपात्र, नौका, जहाज । गमन, गति । °पत्त, °वत्त न [°पात्र] जहाज, नौका । °साला स्त्री [°शाला] अस्तबल । वाहन बनाने का कारखाना ।
जाण न [ज्ञान] बोध, समझ ।
जाण° वि [जानत्] जानता हुआ ।
जाणई स्त्री [जानकी] सीता ।
जाणअ } वि [ज्ञायक] जानकार, ज्ञानी ।
जाणग }
जाणगी देखो जाणई ।
जाणण न [दे] बारात ।
जाणय देखो जाणग ।
जाणय वि [ज्ञापक] समझानेवाला ।
जाणया स्त्री [ज्ञान] समझ, जानकारी ।
जाणवय वि [जानपद] देश में उत्पन्न, देश-सम्बन्धी ।
जाणाव सक [ज्ञापय्] ज्ञान कराना, जनाना ।
जाणावणा } स्त्री [ज्ञापनी] विद्या-विशेष ।
जाणावणी }
जाणाविय वि [ज्ञापित] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित ।
जाणु न [जानु] घुटना ।
जाणु } वि [ज्ञायक] जाननेवाला, ज्ञाता ।
जाणुअ }
जाणे अ [जाने] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय, मानो ।
जाम सक [मृज्] मार्जन करना ।
जाम पुं [याम] प्रहर, तीन घण्टा का समय । यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत । आठ से बत्तीस, बत्तीस से साठ और साठ से अधिक वर्ष की उम्र । वि. यम-सम्बन्धी । °इल्ल वि [°वत्] प्रहरवाला । पुं. पहरेदार । °दिसा स्त्री [°दिश्] दक्षिण दिशा । °वई स्त्री [°वती] रात्रि ।
जाम देखो जाव = यावत् ।
जामग्गहण न [यामग्रहण] पहरेदारी ।
जामाइ देखो जामाउ ।
जामाउ पुं [जामातृ] दामाद ।
जामि स्त्री [जामि, यामि] बहिन ।
जामिअ देखो जामिग ।
जामिग पुं [यामिक] प्राहरिक, पहरेदार ।
जामिणी स्त्री [यामिनी] रात्रि ।
जामिल्ल देखो जामिग ।
जामेअ पुं [यामेय] भानजा ।
जाय सक [याच्] माँगना ।
जाय सक [यातय्] पीड़ना, यन्त्रणा करना । कदर्थना करना ।
जाय देखो जाग ।
जाय वि. [जात] उत्पन्न । न. संघात । भेद । वि. प्रवृत्त । पुं. पुत्र । न. बच्चा, सन्तान । उत्पत्ति । °कम्म न [°कर्मन्] प्रसूति-कर्म ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्कार-विशेष। °तेअ पुं [°तेजस्] अग्नि। °निद्दुया स्त्री [°निद्रुता] मृतवत्सा स्त्री। °मूअ वि [°मूक] जन्म से मूक। °रूव न [°रूप] सुवर्ण। चाँदी। सुवर्णनिर्मित। °वेय पुं [°वेदस्] वह्नि।

जाय वि [यात] गत। प्राप्त। न. गमन, गति।

जाय पुं [जात] गीतार्थ, विद्वान् जैन मुनि।

जायग वि [याचक] माँगनेवाला। पुं. भिक्षुक।

जायग वि [याजक] यज्ञ करानेवाला।

जायणया स्त्री [याचना] याचना, प्रार्थना, माँगना।

जायणी स्त्री [याचनी] प्रार्थना की भाषा।

जायव पुंस्त्री [यादव] यदुवंशीय।

जाया स्त्री [यात्रा] निर्वाह, वृत्ति। °माय वि [°मात्र] जितने से निर्वाह हो सके उतना।

जाया स्त्री. स्त्री, औरत।

जाया देखो **जत्ता**।

जाया स्त्री [जाता] चमरेन्द्र आदि इन्द्रों की बाह्य परिषत्।

जायाइ पुं [यायाजिन्] यज्ञ करनेवाला।

जार पुं. उपपति। मणि का लक्षण-विशेष।

जारिच्छ वि [यादृक्ष] ऊपर देखो।

जारिस वि [यादृश] जैसा।

जारेकण्ण न [जारेकृष्ण] वासिष्ठ गोत्र की एक शाखा।

जाल सक [ज्वालय्] जलाना, दग्ध करना।

जाल न. संघात। माला का समूह। कारीगरी-वाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष। मछली वगैरह पकड़ने का जाल, पाश-विशेष। पैर का आभूषण-विशेष, कड़ा। °कडग पुं [°कटक] सच्छिद्र गवाक्षों का समूह। सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश। °घरग न [°गृहक] सच्छिद्र गवाक्षवाला मकान। °पंजर न [°पञ्जर] गवाक्ष। °हरग देखो °घरग।

जाल पुं [ज्वाल] ज्वाला, आग की लपट।

जालंतर न [जालान्तर] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग।

जालंधर पुं [जालन्धर] पंजाब का एक शहर। न. गोत्र-विशेष।

जालंधरायण न [जालन्धरायण] गोत्र-विशेष।

जालग देखो **जाल** = जाल।

जालग पुं [जालक] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति, मकड़ी।

जालघडिआ स्त्री [दे] चन्द्रशाला, अट्टालिका।

जालय देखो **जाल** = जाल।

जालवणी स्त्री [दे] संवाद, सम्हाल, खबर।

जाला स्त्री [ज्वाला] अग्नि की शिखा। नवम चक्रवर्त्ती की माता। भगवान् चन्द्रप्रभ की शासनदेवी।

जाला अ [यदा] जिस समय, जिस काल में।

जालाउ पुं [जालायुष्] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष मकड़ी।

जालाव सक [ज्वालय्] जलाना, दाह देना।

जालि पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र। श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

जालिय पुं [जालिक] जाल-जीवि, वागुरिक।

जालिय वि [ज्वालित] जलाया हुआ।

जालिया स्त्री [जालिका] कञ्चुक। वृन्त।

जालुग्गाल पुं [जालोद्गाल] मछली पकड़ने का साधन-विशेष।

जाव देखो **जावइअ**।

जाव सक [यापय्] गमन करना, गुजारना। बरतना। शरीर का प्रतिपालन करना।

जाव अ [यावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—परिमाण, मर्यादा। अवधारण, निश्चय। °ज्जीव स्त्रीन. जीवनपर्यन्त। °ज्जीविय वि [°ज्जीविक] यावज्जीव-सम्बन्धी। देखो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावं।

जाव पुं [जाप] मन ही मन बार-बार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण।

जावइ पुं [दे] वृक्ष-विशेष।

जावइअ वि [यावत्] जितना।

जावई स्त्री [जातिपत्री] कन्द-विशेष। गुच्छ वनस्पति की एक जाति।

जावईय पुं [जातिपत्रीक] कन्द-विशेष।

जावं देखो जाव। °ताव अ [°तावत्] गणित-विशेष। गुणाकार।

जावंत देखो जावइअ।

जावग देखो जावय = यापक।

जावण न [यापन] बिताना। दूर करना।

जावणिज्ज वि [यापनीय] जो बिताया जाय. गुजारने-योग्य। शक्ति-युक्त। °तंत न [°तन्त्र] ग्रन्थ-विशेष।

जावय वि [यापक] बितानेवाला। पुं. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु।

जावय वि [जापक] जीतनेवाला।

जावय पुं [यावक] अलक्तक।

जावसिय वि [यावसिक] धान्य से गुजारा करनेवाला। घास-वाहक।

जास पुं [जाष] पिशाच-विशेष।

जासुमण, जासुमिण, जासुयण } पुं [जपासुमनस्] जपा का वृक्ष, पुष्पप्रधान। न. जपा का फूल।

जाहग पुं [जाहक] जन्तु-विशेष, साही या साहिल।

जाहत्थ न [याथार्थ्य] वास्तविकता।

जाहासंख देखो जहा-संख।

जाहे अ [यदा] जिस समय।

जि (अप) देखो एव = एव।

जिअ अक [जीव्] जीना, प्राण-धारण करना।

जिअ पुं [जीव] आत्मा, प्राणी, चेतन। °लोअ पुं [°लोक] दुनिया।

जिअ न [जित] जय। °ासि वि [°काशिन्] जीत से शोभनेवाला विजेता। °सत्तु पुं [°शत्रु] अंग-विद्या का जानकार दूसरा रुद्र-पुरुष।

जिअ वि [जित] पराभूत, अभिभूत। परि-चित। °प्प वि [°ात्मन्] जितेन्द्रिय। °भाणु पुं [°भानु] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति। °सत्तु पुं [°शत्रु] भगवान् अजितनाथ का पिता। नृप-विशेष। °सेण पुं [°सेन] जैन आचार्य-विशेष। नृप-विशेष। एक चक्रवर्ती राजा। स्वनामख्यात एक कुलकर। °ारि पुं. भगवान् सम्भवनाथजी का पिता।

जिअंती स्त्री [जीवन्ती] वल्ली-विशेष।

जिअव वि [जीववत्] जय-प्राप्त।

जिइंदिय, जिएंदिय } वि [जितेन्द्रिय] इन्द्रियों को वश में रखनेवाला, संयमी।

जिंघ सक [घ्रा] सूंघना।

जिंडह, जिंडुह } पुं [दे] गेंद।

जिंडुह पुं [दे] कन्दुक।

जिंभ, जिंभाअ } देखो जंभाय।

जिंभिया स्त्री [जृम्भा] जृम्भण।

जिगीसा स्त्री [जिगीषा] जय की इच्छा।

जिग्घ देखो जिंघ।

जिच्च देखो जिण = जि का कृ.।

जिट्ठ वि [ज्येष्ठ] महान्, वृद्ध, बड़ा। श्रेष्ठ, उत्तम। पुं. बड़ा भाई। °भूइ पुं [°भूति] जैन साधु-विशेष। °मूली स्त्री. ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा।

जिट्ठ पुं [ज्येष्ठ] जेठ मास।

जिट्ठा स्त्री [ज्येष्ठा] भगवान् महावीर की पुत्री। भगवान् महावीर की भगिनी। नक्षत्र-विशेष। देखो जेट्ठा।

जिट्ठाणी स्त्री [ज्येष्ठा] बड़े भाई की पत्नी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेठानी।

जिट्ठिणी स्त्री [ज्यैष्ठी] जेठ मास की अमावस।

जिण सक [जि] जीतना, वश करना।

जिण पुं [जिन] राग आदि अन्तरंग शत्रुओं को जीतनेवाला, अर्हन् देव। बुद्ध भगवान्। केवलज्ञानी, सर्वज्ञ। चौदह पूर्व ग्रन्थों का जानकार। जिनकल्पी मुनि। अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञानवाला। वि. जीतनेवाला। °**इंद** पुं [°इन्द्र] अर्हन् देव। °**कप्प** पुं [°कल्प] एक प्रकार के जैन-मुनियों का आचार, चारित्र-विशेष। °**कप्पिअ** पुं [कल्पिक] एक प्रकार का जैन मुनि। °**किरिया** स्त्री [°क्रिया] जिनदेव का बतलाया हुआ धर्मानुष्ठान। °**घर** न [°गृह] जिन-मन्दिर। °**चंद** पुं [°चन्द्र] जिनदेव, अर्हन् देव। स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य-विशेष। °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव-विशेष, रथ-यात्रा। °**णाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थंकर होता है। °**दत्त** पुं. जैनाचार्य-विशेष। एक जैन श्रेष्ठी। °**दव्व** न [°द्रव्य] जिन-मन्दिर सम्बन्धी धनादि वस्तु। °**दास** पुं एक जैन उपासक। एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का चूर्णिकार। °**देव** पुं. अर्हन् देव। जैनाचार्य। एक जैन उपासक। °**धम्म** पुं [°धर्म] जिनदेव उपदिष्ट जैन धर्म। °**नाह** पुं [°नाथ] अर्हन् देव। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] अर्हन् देव की मूर्त्ति। °**पवयण** न [°प्रवचन] जैन आगम। °**पसत्थ** वि [°प्रशस्त] तीर्थंकर-भाषित। °**पहु** पुं [°प्रभु] अर्हन् देव। °**पाडिहेर** न [°प्रातिहार्य] जिन-देव की अर्हता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विभूतियाँ, वे ये हैं—अशोक वृक्ष, सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, दुन्दुभि-नाद, छत्र। °**पालिय** पुं [°पालित] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र। °**बिंब** न [°बिम्ब] जिनदेव की प्रतिमा। °**भड** पुं [°भट] एक जैन आचार्य। °**भद्द** पुं [°भद्र] जैन आचार्य और ग्रन्थकार। °**भवण** न [°भवन] अर्हन् मन्दिर। °**मय** न [°मत] जैन दर्शन। °**माया** स्त्री [°मातृ] जिनदेव की जननी। °**मुद्दा** स्त्री [°मुद्रा] जिनदेव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष। °**यंद** देखो °**चंद**। °**रक्खिय** पुं [°रक्षित] एक सार्थवाह-पुत्र। °**वइ** पुं [°पति] जिन-देव। °**वई** स्त्री [°वाच्] जिन-देव की वाणी। °**वयण** न [°वचन] जिन-देव की वाणी। °**वयण** न [°वदन] जिनदेव का मुख। °**वर** पुं. अर्हन् देव। °**वरिंद** पुं [°वरेन्द्र] अर्हन् देव। °**वल्लह** पुं [°वल्लभ] एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार। °**वसह** पुं [°वृषभ] अर्हन् देव। °**सकहा** स्त्री [°सक्थि] जिन-देव की अस्थि। °**सासण** न [°शासन] जैन दर्शन। °**हंस** पुं. एक जैन आचार्य। °**हर** देखो °**घर**। °**हरिस** पुं [°हर्ष] एक जैन मुनि। °**ायण** न [°ायतन] जिन-देव का मन्दिर।

जिणंद देखो **जिणिंद**।

जिणकप्पि पुं [जिनकल्पिन्] जैन मुनि का एक भेद।

जिणण न [जयन] जीत।

जिणपह पुं [जिनप्रभ] एक जैन आचार्य।

जिणिंद पुं [जिनेन्द्र] अर्हन् देव। °**गिह** न [°गृह] जिनमन्दिर। °**चंद** पुं [°चन्द्र] जिन-देव।

जिणिय वि [जित] पराभूत, वशीकृत।

जिणिसर देखो **जिणेसर**।

जिणिस्सर देखो **जिणेसर**।

जिणुत्तम पुं [जिनोत्तम] जिन-देव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणंद देखो जिणिंद ।
जिणेस पुं [जिनेश] जिन भगवान्, अर्हन् देव।
जिणेसर पुं [जिनेश्वर] अर्हन् देव। विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ।
जिण्ण वि[जीर्ण] पुराना, जर्जर । पचा हुआ । वृद्ध । °सेट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] पुराना सेठ । श्रेष्ठि पद से च्युत ।
जिण्ण (अप) देखो जिअ = जित ।
जिण्णासा स्त्री [जिज्ञासा] जानने की इच्छा।
जिण्णिअ }
जिण्णीअ } (अप) देखो जिणिय ।
जिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा (घास) ।
जिण्हु वि [जिष्णु] विजयी। पुं. अर्जुन । विष्णु, श्रीकृष्ण । सूर्य । देव-नायक इन्द्र ।
जित्त देखो जिअ = जित ।
जित्तिअ }
जित्तिल } वि [यावत्] जितना ।
जित्तुल (अप) ऊपर देखो ।
जिध (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से ।
जिन्नासिय वि [जिज्ञासित] जानने के लिए चाहा हुआ ।
जिन्नुद्धार पुं [जीर्णोद्धार] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि का सुधारना ।
जिब्भ पुं [जिह्व] एक नरक स्थान ।
जिब्भा स्त्री [जिह्वा] जीभ ।
जिब्भिंदिय न [जिह्वेन्द्रिय] रसनेन्द्रिय ।
जिब्भिया स्त्री [जिह्विका] जीभ। जीभ के आकारवाली चीज ।
जिम सक [जिम्, भुज्] भोजन करना ।
जिम (अप) देखो जिध ।
जिमण न [जेमन] जिमाना ।
जिमिअ वि [जिमित, भुक्त] जिसने भोजन किया हुआ हो वह । जो खाया गया हो वह ।
जिम्म देखो जिम = जिम् ।
जिम्ह पुं [जिह्म] मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहता है । वि. कुटिल, कपटी । अलस । न. कपट ।
जिम्ह न [जैम्ह] कुटिलता, वक्रता, माया ।
जिव देखो जीव ।
जिवँ }
जिह } (अप) देखो जिध ।
जिहा देखो जीहा ।
जीअ देखो जीव = जीव् ।
जीअ देखो जीव = जीव, जल ।
जीअ देखो जीविअ ।
जीअ न [जीत] आचार, प्रथा, रूढ़ि। प्रायश्चित से सम्बन्ध रखनेवाला एक तरह का रिवाज, जैन सूत्रों में उक्त रीति से भिन्न तरह के प्रायश्चितों का परम्परागत आचार। आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ । मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था । °कप्प पुं [°कल्प] परम्परा से आगत आचार। परम्परागत आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ । °कप्पिय वि [°कल्पिक] जीत कल्पवाला । °धर वि. आचार-विशेष का जानकार । एक जैनाचार्य। °ववहार पुं [°व्यवहार] परम्परा के अनुसार व्यवहार ।
जीअण देखो जीवण ।
जीअव वि [जीवितवत्] जीवितवाला, श्रेष्ठ जीवनवाला ।
जीआ स्त्री [ज्या] धनुष की डोर । पृथिवी । माता ।
जीण न [दे. अजिन] अश्व की पीठ पर बिछाया जाता चर्ममय आसन ।
जीमूअ पुं [जीमूत] मेघ, वर्षा । मेघ-विशेष, जिसके बरसने से जमीन दस वर्ष तक चिकनी रहती है ।
जीर° देखो जर = जृ ।
जीरण न [जीर्ण] अन्न पाक। वि. पुराना, पचा हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीरय न [जीरक] जीरा, मसाला-विशेष ।

जीरव सक [जीरय्] पचाना ।

जीव अक [जीव्] प्राण धारण करना । सक. आश्रय करना ।

जीव पुंन. आत्मा, चेतन, प्राणी । जीवन, प्राण-धारण । पुं. बृहस्पति । पराक्रम । देखो जीअ = जीव । °काय पुं. जीव-समूह ।°ग्गाह न [°ग्राह] जिन्दे को पकड़ना । °णिकाय पुं [°निकाय] जीव-राशि । °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] जीव-समूह । °दय वि. जीवित देनेवाला । °दया स्त्री. प्राणि-दया । °देव पुं. प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार । °पएस पुं [°प्रदेशजीव] अन्तिम प्रदेश में ही जीव की स्थिति को माननेवाला जैनाभास दार्शनिक । °पएसिय पुं [°प्रादेशिक] देखो पूर्वोक्त अर्थ । °लोग, °लोय पुं [°लोक] प्राणि-लोक, जीव-समूह । °विजय न [°विचय] जीव के स्वरूप का चिन्तन । °विभत्ति स्त्री [°विभक्ति] जीव का भेद । °वुड्ढिय न [°वृद्धिक] सम्मति ।

जीव न. सात दिन का लगातार उपवास । °विसिट्ठ न [°विशिष्ट] वही अर्थ ।

जीवंजीव पुं [जीवजीव] आत्म-पराक्रम । चकोर-पक्षी ।

जीवंत °मुक्क पुं [°मुक्त] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा में ही संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा ।

जीवग पुं [जीवक] पक्षि-विशेष । नृप-विशेष ।

जीवजीवग पुं [जीवजीवक] चकवा ।

जीवण न [जीवन] जिन्दगी । आजीविका । वि. जिलानेवाला । °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] आजीविका ।

जीवमजीव पुं [जीवाजीव] चेतन और जड़ पदार्थ ।

जीवम्मुत्त देखो जीवंत-मुक्क ।

जीवयमई स्त्री [दे] मृगों के आकर्षण के साधन-भूत व्याध-मृगी ।

जीवा स्त्री. धनुष की डोरी । जीवन । क्षेत्र का विभाग-विशेष ।

जीवाउ पुं [जीवातु] जीवनौषध ।

जीवाविय वि [जीवित] जिलाया हुआ ।

जीवि वि [जीविन्] जीनेवाला ।

जीविअ वि [जीवित] जो जिन्दा हो । न. जीवन । °नाह पुं [°नाथ] प्राण-पति । °रिसिका स्त्री. वनस्पति-विशेष ।

जीविआ स्त्री [जीविका] आजीविका, निर्वाह-साधक वृत्ति ।

जीविओसविय वि [जीवितोत्सविक] जीव-नोत्सव के समान ।

जीविओसासिय वि [जीवितोच्छ्वासिक] जीवन को बढ़ानेवाला ।

जीविगा देखो जीविआ ।

जीह अक [लस्ज्] शरमाना ।

जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ । °ल वि [°वत्] लम्बी जीभवाला ।

जीहाविअ वि [लज्जित] लजाया गया ।

जु देखो जुज ।

जु° स्त्री [युध्] लड़ाई ।

जु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय ।

जुअ देखो जुग । युग्म ।

जुअ वि [युत] युक्त, संलग्न ।

जुअ देखो जुव ।

जुअइ स्त्री [युवति] तरुणी ।

जुअंजुअ (अप) अ [युतयुत] जुदा-जुदा ।

जुअण [दे] देखो जुअल = (दे) ।

जुअणद्ध पुं [युगनद्ध] ज्योतिष प्रसिद्ध योग, जिसमें बैल के कंधे पर रखे हुए युग—जुआ या जुआठ की तरह चन्द्र और सूर्य तथा नक्षत्र अवस्थित होते हैं वह योग ।

जुअय न [युतक] पृथक् ।

जुअरज्ज न [यौवराज्य] युवराज का भाव या पद ।

जुअल न [युगल] जोड़ा, उभय । परस्पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सापेक्ष या पद्य ।
जुअल पुं [दे] जवान ।
जुअलिअ वि [दे] द्विगुणित ।
जुअलिय देखो जुगलिय ।
जुअली स्त्री [युगली] युग्म, जोड़ा ।
जुआण देखो जुवाण ।
जुआरि स्त्री [दे] जुआरि, अन्न-विशेष ।
जुइ स्त्री [द्युति] कान्ति, प्रकाश । °म, °मंत वि [°मत्] तेजस्वी । प्रकाशशाली ।
जुइ स्त्री [युति] संयोग, युक्तता ।
जुइ पुं [युगिन्] एक जैन मुनि ।
जुईम वि [द्युतिमत्] तेजस्वी ।
जुउच्छ सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना ।
जुंगिय वि [दे] जाति, कर्म या शरीर से हीन जिसको संन्यास देने का जैन शास्त्रों में निषेध है । काटा हुआ । दूषित ।
जुंज सक [युज्] जोड़ना, युक्त करना । किसी कार्य में लगाना ।
जुंजणया } स्त्री [योजना] ऊपर देखो ।
जुंजणा } करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार ।
जुंजम [दे] देखो जुंजुमय ।
जुंजिअ वि [दे] भूखा ।
जुंजुमय न [दे] एक प्रकार की हरी घास ।
जुंजुरुड त्रि [दे] परिग्रह-रहित ।
जुग पुं [युग] काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग । पाँच वर्ष का काल । न. चार हाथ का यूप । शकट का एक अंग, धुर, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रखे जाते हैं । चार हाथ का परिमाण । देखो जुअ = युग । °प्पवर वि [°प्रवर] युग-श्रेष्ठ । °प्पहाण वि [°प्रधान] युग-श्रेष्ठ । पुं. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य की एक उपाधि । °बाहु पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिनदेव । विदेह वर्ष का एक त्रिखण्डाधिपति राजा । मिथिला का एक राजा । वि. दीर्घ-बाहु । °मच्छ पुं [°मत्स्य] की एक जाति । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ।
जुगंतर न [युगान्तर] यूप-परिमित भूमिभाग, चार हाथ जमीन । °पलोयणा स्त्री [°प्रलोकना] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना ।
जुगंधर न [युगन्धर] शकट का एक अवयव । पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव । एक जैन मुनि । एक जैन आचार्य ।
जुगल न [युगल] युग्म, उभय ।
जुगलि वि [युगलिन्] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होनेवाला ।
जुगलिय वि [युगलित] युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित । युग्म रूप से स्थित ।
जुगव वि [युगवत्] समय के उपद्रव से वर्जित ।
जुगव } अ [युगपत्] एक ही साथ, एक ही
जुगवं } समय में ।
जुगुच्छ देखो जुउच्छ ।
जुगुच्छणया } स्त्री [जुगुप्सा] घृणा,
जुगुच्छा } तिरस्कार ।
जुग्ग न [युग्य] वाहन, गाड़ी वगैरह यान । शिबिका, पुरुष-यान । गोल्ल देश में प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान-विशेष, शिबिका-विशेष । वि. यान-वाहक अश्व आदि । भार-वाहक । °यरिया, °रिया स्त्री [°चर्या] वाहन की गति ।
जुग्ग वि [योग्य] उचित ।
जुग्ग न [युग्म] द्वन्द्व, उभय ।
जुज्ज देखो जुंज ।
जुज्झ अक [युध्] लड़ाई करना ।
जुज्झ न [युद्ध] संग्राम । °इजुद्ध न [°तियुद्ध] महायुद्ध, पुरुषों की बहत्तर कलाओं में एक कला ।
जुज्झण न [योधन] युद्ध ।
जुज्झिअ वि [युद्ध] लड़ा हुआ । संग्राम ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुट्ठ वि [जुष्ट] सेवित ।

जुट्ठ न [दे] असत्य ।

जुडिअ वि [दे] आपस में जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से भीड़ा हुआ ।

जुण्ण वि [दे] निपुण, दक्ष ।

जुण्ण वि [जीर्ण] पुराना ।

जुण्णदुग्ग न [जीर्णदुर्ग] नगर-विशेष, जूनागढ़ ।

जुण्ह देखो जोण्ह = ज्योत्स्न ।

जुण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चाँदनी ।

जुत्त सक [युक्तय्] जोतना ।

जुत्त वि [युक्त] संगत, योग्य । जोड़ा हुआ, मिला हुआ, सम्बद्ध । उद्युक्त । सहित, समन्वित । °ासंखिज्ज न [°ासंख्येय] संख्या-विशेष ।

जुत्ताणंतय पुंन [युक्तानन्तक] गणना-विशेष ।

जुत्तासंखेज्जय देखो जुत्तासंखिज्ज ।

जुत्ति स्त्री [युक्ति] योग, योजन, जोड़, संयोग । उपपत्ति । साधन । °ण्ण वि [°ज्ञ] युक्ति का जानकार । °सार वि. युक्त, न्याय-संगत, प्रमाण-युक्त । °सुवण्ण न [°सुवर्ण] बनावटी सोना । °सेण पुं [°षेण] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव ।

जुत्तिय वि [यौक्तिक] गाड़ी वगैरह में जो जोता जाय ।

जुद्ध देखो जुज्झ = युद्ध ।

जुप्प देखो जुंज ।

जुम्म न [युग्म] युगल, उभय । पुं. सम राशि । °पएसिय वि [°प्रादेशिक] सम-संख्य प्रदेशों से निष्पन्न ।

जुम्म न [युग्म] परस्पर सापेक्ष दो पद्य ।

जुम्ह° स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम ।

जुरुमिल्ल वि [दे] गहन, निबिड़ ।

जुव पुं [युवन्] तरुण । °राअ पुं [°राज] गद्दी का वारिस । राजकुमार ।

जुवइ स्त्री [युवति] जवान स्त्री ।

जुवंगव पुं [युवगव] तरुण बैल ।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] युवराजपन । राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य । राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य ।

जुवल देखो जुगल ।

जुवलिय देखो जुगलिय ।

जुवाण देखो जुव ।

जुवाणी देखो जुवई ।

जुव्वण, जुव्वणत्त } देखो जोव्वण ।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित ।

जुहिट्ठिर, जुहिट्ठिल, जुहिट्ठिल्ल } देखो जहिट्ठिल ।

जुहु सक [हु] अर्पण करना । होम करना ।

जूअ न [द्यूत] जुआ । °कर वि. जुआरी । °कार वि. वही पूर्वोक्त अर्थ । °केलि स्त्री. द्यूत-क्रीड़ा । °खलय न [°खलक] जुआ खेलने का स्थान । °ाकेलि देखो °केलि ।

जूअ पुं [यूप] धुर, गाड़ी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धों पर डाला जाता है, जुअड़ । स्तम्भ-विशेष । यज्ञ-स्तम्भ । एक महापाताल-कलश ।

जूअअ पुं [दे] चातक पक्षी ।

जूअग पुं [यूपक] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण ।

जूआ स्त्री [यूका] जूं, चीलड़, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष । आठ लिक्षा का एक नाप । °सेज्जायर वि [°शय्यातर] यूकाओं को स्थान देनेवाला ।

जूआर वि [द्यूतकार] जुए का खेलाड़ी ।

जूझ देखो जुज्झ = युध् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जूड पुं [जूट] केश-कलाप ।
जूय न [यूप] लगातार छः दिनों का उपवास ।
जूयय } पुं [यूपक] शुक्ल पक्ष की द्वितीया
जूवय } आदि तीन दिनों में होती चन्द्र की कला और सन्ध्या के प्रकाश का मिश्रण ।
जूर सक [गर्ह्] निन्दा करना ।
जूर अक [क्रुध्] गुस्सा करना ।
जूर अक [खिद] अफसोस करना ।
जूर अक [जूर्] झुरना, सूखना । सक. हिंसा करना ।
जूरव सक [वञ्च्] ठगना ।
जूरवण वि [वञ्चन्] ठगनेवाला ।
जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण ।
जूराविअ वि [क्रोधित] कोपित ।
जूरुम्मिलय वि [दे] निबिड, सान्द्र ।
जूल देखो जूर = क्रुध् ।
जूव देखो जूअ = द्यूत ।
जूव } देखो जूअ = यूप ।
जूवय }
जूस देखो झूस ।
जूस पुंन [यूष] जूस, मूंग वगैरह का क्वाथ, कढ़ी ।
जूसअ वि [दे] फेंका हुआ ।
जूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा ।
जूसिय वि [जुष्ट] सेवित । क्षपित, क्षीण ।
जूह न [यूथ] समूह । °वइ पुं [°पति] यूथ का नायक । °ाहिव पुं [°ाधिप] पूर्वोक्त ही अर्थ । °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] यूथ-नायक ।
जूह न [यूथ] युग्म । °काम न. लगातार चार दिनों का उपवास ।
जूहिय वि [यूथिक] यूथ में उत्पन्न ।
जूहियठाण न [यूथिकस्थान] विवाह-मण्डप वाली जगह ।
जूहिया स्त्री [यूथिका] जूही का पेड़ ।
जूही स्त्री [यूथी] माधवी लता ।
जे अ. पादपूरक अव्यय । अवधारण-सूचक अव्यय ।
जेअ वि [जेय] जीतने-योग्य ।
जेअ } वि [जेतृ] विजेता ।
जेउ }
जेक्कार पुं [जयकार] स्तुति ।
जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्येष्ठ ।
जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्यैष्ठ ।
जेट्ठा देखो जिट्ठा । °मूल पुं. जेठ मास । °मूली स्त्री. जेठ मास की पूर्णिमा और अमावस्या ।
जेण देखो जइण = जैन ।
जेण अ [येन] लक्षण-सूचक अव्यय ।
जेत्त वि [यावत्] जितना ।
जेत्त देखो जइत्त ।
जेत्तिअ } वि [यावत्] जितना ।
जेत्तिल }
जेत्तिक (शौ) ऊपर देखो ।
जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो ।
जेत्तुल्ल }
जेद्दह देखो जेत्तिअ ।
जेम सक [जिम्, भुज्] भोजन करना ।
जेम (अप) अ [यथा] जैसे ।
जेमणय न [दे] दक्षिण अंग ।
जेमावण न [जेमन] खिलाना ।
जेमाविय वि [जेमित] जिसको भोजन कराया गया हो वह ।
जेव (शौ) देखो एव = एव ।
जेवँ (अप) देखो जिवँ ।
जेवड (अप) देखो जेत्तिअ ।
जेव्व (शौ) देखो एव = एव ।
जेह (अप) वि [यादृश्] जैसा ।
जेहिल पुं. एक जैन मुनि ।
जो } सक [दृश्] देखना ।
जोअ }
जोअ अक [द्युत्] प्रकाशित होना ।
जोअ सक [द्योतय्] प्रकाशित करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोअ सक [योजय्] समाप्त करना। करना। जोड़ना, युक्त करना।

जोअ पुं [दे] चन्द्रमा। युग्म।

जोअ देखो जोग। °वडय न [°वटक] पाचक चूर्ण।

जोअंगण [दे] देखो जोइंगण।

जोअग वि [द्योतक] प्रकाशनेवाला। न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरह पद।

जोअड पुं [दे] जुगनू।

जोअण न [दे] आँख।

जोअण न [योजन] परिमाण-विशेष, चार कोश। संयोग, जोड़ना।

जोअण न [यौवन] युवावस्था।

जोआ स्त्री [द्यो] स्वर्ग। आकाश।

जोआवइत्तु वि [योजयितृ] जोड़नेवाला।

जोइ वि [योगिन्] युक्त, संयोगवाला। चित्त-निरोध करनेवाला। पुं. मुनि, साधु। रामचन्द्र का एक सुभट।

जोइ पुं [ज्योतिस्] प्रकाश। अग्नि। प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु। अग्नि का काम करने-वाला कल्पवृक्ष। ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ। ज्ञान। ज्ञानयुक्त। प्रसिद्धि-युक्त। सत्कर्म-कारक। स्वर्ग। ग्रह वगैरह का विमान। ज्योतिष-शास्त्र। °अंग पुं [°अङ्ग] अग्नि का काम करनेवाला कल्पवृक्ष-विशेष। °रस न. रत्न की एक जाति। देखो जोइस = ज्योतिस्।

जोइअ पुं [दे] खद्योत, पटबीजना।

जोइअ वि [दृष्ट] विलोकित।

जोइअ वि [योजित] जोड़ा हुआ।

जोइअ देखो जोगिय।

जोइंगण पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप।

जोइक्क पुंन [ज्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ।

जोइक्ख पुं [दे. ज्योतिष्क] प्रदीप। प्रदीप आदि का प्रकाश।

जोइणी स्त्री [योगिनी] संन्यासिनी। एक प्रकार की देवी, ये चौंसठ हैं।

जोइर वि [दे] स्खलित।

जोइस न [दे] नक्षत्र।

जोइस देखो जोइ = ज्योतिस्। °राय पुं [°राज] सूर्य। चन्द्र। °लय पुं. सूर्य आदि देव।

जोइस पुं [ज्यौतिष] देवों की एक जाति, सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह। न. सूर्य, आदि का विमान। ज्योतिष-शास्त्र। सूर्य आदि का चक्र। सूर्य आदि का मार्ग, आकाश।

जोइस पुं [ज्यौतिष] सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति। वि. ज्योतिष शास्त्र का जान-कार।

जोइसिअ वि [ज्यौतिषिक] दैवज्ञ, ज्योतिषी। सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव। °राय पुं [°राज] सूर्य। चन्द्रमा।

जोइसिंद पुं [ज्योतिरिन्द्र] रवि।

जोइसिण पुं [ज्यौत्स्न] शुक्ल पक्ष।

जोइसिणा स्त्री [ज्योत्स्ना] चाँदनी। °पक्ख पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष। °भा स्त्री. चन्द्र की एक अग्र-महिषी।

जोइसिणी स्त्री [ज्यौतिषी] देवी-विशेष।

जोई स्त्री [दे] बिजली।

जोईरस देखो जोइ-रस।

जोईस पुं [योगीश] योगिराज।

जोईसर पुं [योगीश्वर] ऊपर देखो।

जोउकण्ण न [यौगकर्ण] गोत्र-विशेष।

जोउकण्णिय न [यौगकर्णिक] गोत्र-विशेष।

जोक्कार देखो जेक्कार।

जोक्ख वि [दे] अपवित्र।

जोग देखो जुग्ग = युग्म।

जोग पुं [योग] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ सम्बन्ध। मन, वचन और शरीर की चेष्टा। चित्तनिरोध, समाधि। वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष। सम्बन्ध, संयोग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईप्सित वस्तु का लाभ। शब्द का अवयवार्थ-सम्बन्ध। बल, पराक्रम। °क्खेम न [°क्षेम] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका संरक्षण। °त्थ वि [°स्थ]योग-निष्ठ, ध्यान-लीन। °त्थ पुं [°ार्थ]व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] चित्तनिरोध से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष। °धर वि. समाधि में कुशल, योगी। °परिव्वाइया स्त्री [°परिव्राजिका] समाधिप्रधान व्रतिनी-विशेष। °पिंड पुं [°पिण्ड] वशीकरण आदि के प्रयोग से प्राप्त की हुई भिक्षा। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] हाथ का विन्यास-विशेष। °व वि [°वत्] शुभ प्रवृत्तिवाला। योगी। °वाहि वि [°वाहिन्] शास्त्र-ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करनेवाला। समाधि में रहनेवाला। °विहि पुंस्त्री [विधि] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष। सत्थ न [शास्त्र] चित्तनिरोध का प्रतिपादक शास्त्र।

जोग देखो जोग्ग।

जोगि देखो जोइ = योगिन्।

जोगिंद पुं [योगीन्द्र] महान् योगी।

जोगिणी देखो जोइणी।

जोगिय वि [यौगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभिषेणयति। यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ।

जोगीसर देखो जोईसर।

जोगेसरी स्त्री [योगेश्वरी] देव-विशेष।

जोगेसी स्त्री [योगेशी] विद्या-विशेष।

जोग्ग वि [योग्य] योग्य। समर्थ।

जोग्गा स्त्री [दे] खुशामद।

जोग्गा स्त्री [योग्या] शास्त्र का अभ्यास। गर्भ-धारण में समर्थ योनि।

जोज देखो जोअ = योजय्।

जोड सक [योजय्] जोड़ना।

जोड पुंन [दे] नक्षत्र। रोग-विशेष।

जोड (अप) स्त्री [दे] युगल।

जोडिअ पुं [दे] व्याध, चिड़ीमार।

जोण पुं [योन, यवन] म्लेच्छ देश।

जोणि स्त्री. [योनि] उत्पत्ति-स्थान। कारण, उपाय। जीव का उत्पत्ति-स्थान। स्त्री-चिह्न, भग। °विहाण न [°विधान]उत्पत्ति-शास्त्र। °सूल न[°शूल]योनि का एक रोग।

जोणिय वि [योनिक, यवनिक] अनार्य देश-विशेष से उत्पन्न।

जोण्णलिआ स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि।

जोण्ह वि [ज्यौत्स्न] श्वेत। पुं. शुक्ल पक्ष।

जोण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र-प्रकाश।

जोण्हाल वि [ज्योत्स्नावत्] चन्द्रिकायुक्त।

जोत्त देखो जुत्त = युक्त।

जोत्त न [योक्त्र] जोत, रस्सी या चमड़े का तस्मा।

जोव देखो जोअ = दृश्।

जोव पुं [दे] बिन्दु। वि. थोड़ा।

जोव्वण न [दे] यन्त्र, कल। धान्य का मर्दन।

जोवारि स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि।

जोव्वण न [यौवन] जवानी। मध्य भाग।

जोव्वणणीर, जोव्वणवेअ } न [दे] वयः-परिणाम, बुढ़ापा।

जोव्वणिया स्त्री [यौवनिका] जवानी।

जोव्वणोवय न [दे] वृद्धत्व।

जोस देखो जूस = जुष्।

जोस पुं [झोष] अन्त।

जोसिअ वि [जुष्ट] सेवित।

जोसिआ स्त्री [योषित्] नारी।

जोसिणी देखो जोण्हा।

जोह अक [युध्] लड़ना।

जोह पुं [योध] योद्धा। °ट्ठाण न [°स्थान] सुभटों का युद्ध-कालीन शरीर-विन्यास, अंग-रचना-विशेष।

जोहणा देखो जोण्हा।

जोहा स्त्री[योधा] भुज-परिसर्प की एक जाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोहार सक [दे] प्रणाम करना।

जोहार पुं [दे] प्रणाम।

जोहि वि [योधिन्] लड़नेवाला, सुभट।

जोहिया स्त्री [योधिका] जन्तु-विशेष, हाथ से चलने वाली एक प्रकार की सर्प-जाति।

ज्जिअ } (शौ) अ [दे] अवधारण सूचक
ज्जेअ } अव्यय।

°ज्जेव } (शौ)। देखो एव = एव।
°ज्जेव्व }

ज्झड देखो झड।

ज्झडुराविअ वि [दे] निवासित।

झ

झ पुं [झ] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष। ध्यान।

झंकार पुं [झङ्कार] नूपुर वगैरह की आवाज।

झंकारिअ न [दे] फूल वगैरह का आदान या चुनना।

झंख सक [दे] स्वीकार करना।

झंख अक [सं + तप्] सन्ताप करना।

झंख अक [वि + लप्] विलाप करना, बकवाद करना।

झंख सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना।

झंख अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना।

झंख वि [दे] सन्तुष्ट, खुश।

झंखर पुं [दे] सूखा पेड़।

झंखरिअ [दे] देखो झंकारिअ।

झंखावण वि [सन्तापक] सन्ताप करनेवाला।

झंझ पुं कलह। °कर वि. फूट करानेवाला। °पत्त वि [°प्राप्त] क्लेश-प्राप्त।

झंझण } अक [झंझणाय] 'झन-झन' शब्द
झंझणक्क } करना।

झंझणा स्त्री [झञ्झना] 'झन-झन' शब्द।

झंझा स्त्री [झञ्झा] वाद्य-विशेष, झाँझ, झाल। प्रचण्ड वायु-विशेष। क्लेष, झगड़ा। माया, कपट। क्रोध। तृष्णा, लोभ। व्याकुलता, व्यग्रता।

झंझिय वि [झञ्झित] भूखा।

झंट सक [भ्रम्] घूमना।

झंट अक [गुञ्ज्] गुञ्जारव करना।

झंटलिआ स्त्री [दे] चंक्रमण, कुटिल गमन।

झंटिअ वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत।

झंटी स्त्री [दे] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप।

झंडली स्त्री [दे] कुलटा।

झंडुअ पुं [दे] पीलु का पेड़।

झंडुली स्त्री [दे] असती। क्रीड़ा।

झंदिय वि [दे] पलायित, भगाया हुआ।

झंप सक [भ्रम्] फिरना।

झंप सक [आ + च्छादय्] झाँपना, आच्छादन करना।

झंप सक [आ = क्रामय्] आक्रमण करवाना।

झंपणी स्त्री [दे] पक्ष्म, आँख की बरौनी।

झंपा स्त्री [झम्पा] एकदम कूदना।

झंपिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ। घट्टित, आहत।

झंपिअ वि [आच्छादित] झपा हुआ, बंद किया हुआ।

झक्किअ न [दे] लोक-निन्दा।

झख देखो झंख = वि + लप्।

झगड पुं [दे] कलह।

झग्गुली स्त्री [दे] अभिसारिका।

झज्झर पुं [झर्झर] वाद्य-विशेष, झाँझ। पटह, ढोल। कलि-युग। नन्द-विशेष।

झज्झिरिय वि [झर्झरित] वाद्य-विशेष के शब्द से युक्त।

झज्झरी स्त्री [दे] दूसरे के स्पर्श को रोकने के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिए चांडाल लोग जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह।
झड अक [शद्] पके फल आदि का गिरना, टपकना। हीन होना। सक. झपट मारना, गिराना।
झडत्ति अ [झटिति] शीघ्र।
झडप्प अ [दे] जल्दी।
झडप्प सक [आ + छिद्] छीनना।
झडप्पड न [दे] झटपट।
झडि अ [झटिति] तुरन्त।
झडिअ वि [दे] शिथिल, सुस्त। श्रान्त, झड़ा हुआ, गिरा हुआ।
झडित्ति देखो झडत्ति।
झडिल देखो जडिल।
झडी स्त्री [दे] निरन्तर वृष्टि।
झण सक [जुगुप्स्] घृणा करना।
झणज्झण, झणझण अक [झणझणाय्] 'झन-झन' आवाज करना।
झणझणारव पुं [झणझणारव] 'झन-झन' आवाज।
झणि देखो झुणि।
झत्ति देखो झडत्ति।
झत्थ वि [दे] गत। नष्ट।
झपिअ वि [दे] पर्यस्त।
झप्प देखो झण।
झमाल न [दे] माया-जाल।
झय पुंस्त्री [ध्वज] पताका।
झर अक [क्षर्] झरना, गिरना।
झर सक [स्मृ] याद करना।
झरंक, झरंत पुं [दे] तृण का बनाया हुआ पुरुष, चञ्चा।
झरग वि [स्मारक] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला।
झरझर पुं. निर्झर या झरना आदि की 'झर-झर' आवाज।
झरय पुं [दे] सुवर्णकार।
झरुअ पुं [दे] मशक।
झलक्किअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत।
झलझल अक [जाज्वल्] चमकना।
झलझलिआ स्त्री [दे] कोथली।
झलहल देखो झलझल।
झलहलिय वि [दे] क्षुब्ध।
झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा।
झलुंकिअ, झलुंसिअ वि [दे] दग्ध।
झल्लरी स्त्री. वलयाकार वाद्य-विशेष। हुडुग बाजा, झाल, झालर।
झल्लरी स्त्री [दे] बकरी।
झल्लोज्झल्लिअ वि [दे] परिपूर्ण, भरपूर।
झवणा स्त्री [क्षपणा] विनाश। अध्ययन।
झस पुं [झष] एक देवविमान। एक नरक स्थान। मछली। °चिंधय पुं [°चिह्नक] कामदेव।
झस पुं [दे]अपकीर्ति। किनारा। वि. तटस्थ। लम्बा और गम्भीर, बहुत गहरा। टंक से छिन्न।
झसय पुं [झषक] छोटा मत्स्य।
झसर पुंन [दे] आयुध-विशेष।
झसिअ वि [दे] उत्क्षिप्त।
झसिंध पुं [झषचिह्न] स्मर।
झसुर न [दे] ताम्बूल। अर्थ।
झा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना।
झाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करनेवाला, चिन्तक।
झाड न [दे. झाट] निकुञ्ज, झाड़ी। वृक्ष।
झाडण न [झाटन] शोष, क्षय। प्रस्फोटन।
झाडल न [दे] कर्पास-फल, डोडों, कपास।
झाडावण स्त्रीन [झाटन] झड़वाना, मार्जन कराना।
झाण वि [ध्यान] ध्यानकर्ता। पुंन. चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण। एक ही वस्तु में मन की स्थिरता, लौ लगाना। मन आदि की चेष्टा का निरोध। दृढ़ प्रयत्न से मन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वगैरह का व्यापार।

झाणंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] दो ध्यानों का मध्य भाग। एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारम्भ करने का विमर्श।

झाम सक [दह्] जलाना।

झाम वि [दे] जला हुआ। °थंडिल न [°स्थण्डिल] दग्ध भूमि।

झाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल।

झामण न [दे] जलाना।

झामर वि [दे] वृद्ध।

झामल न [दे] आँख का एक प्रकार का रोग। वि. झामर रोगवाला।

झामल वि [ध्यामल] काला।

झामिअ वि [दे] प्रज्ज्वलित। श्यामलित। कलंकित।

झाय वि [ध्मात] भस्मीकृत, दग्ध।

झारुआ स्त्री [दे] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष।

झावण न [ध्मापन] देखो झामण।

झावणा न [ध्मापना] दाह, अग्नि-संस्कार।

झावणा देखो अज्झावणा।

झिखण न [दे] गुस्सा करना।

झिखिअ न [दे] लोक-निन्दा।

झिंगिर, **झिंगिरड** पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति, झींगुर या झिल्ली।

झिंझिअ वि [दे] बुभुक्षित।

झिंझिणी, **झिंझिरी** स्त्री [दे] एक प्रकार का पेड़, लता-विशेष।

झिज्झ, **झिज्ज** अक [क्षि] क्षीण होना।

झिज्झिरी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष।

झिण्ण देखो झीण।

झिमिय, **झिम्मिय** न [दे] शरीर के अवयवों की जड़ता।

झिया देखो झा।

झिरिड न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा।

झिलिअ [दे] झीला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो।

झिल्ल अक [स्ना] झीलना, स्नान करना।

झिल्लिआ स्त्री [झिल्लिका] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक एक जाति, झिल्ली।

झिल्लिरिआ स्त्री [दे] चीही-नामक तृण। मशक, मच्छर।

झिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने की एक तरह की जाल।

झिल्ली स्त्री [दे] लहरी।

झिल्ली स्त्री [झिल्ली] वनस्पति-विशेष। कीट-विशेष, झींगुर।

झीण वि [क्षीण] दुर्बल।

झीण न [दे] शरीर। कीट।

झीरा स्त्री [दे] लज्जा।

झुंख पुं [दे] तुणय-नामक वाद्य।

झुंझिय वि [दे] भूखा। झुरा हुआ, मुरझा हुआ।

झुंझुमुसय न [दे] मन का दुःख।

झुंटण न [दे] प्रवाह। पशु-विशेष।

झुंपडा स्त्री [दे] तृणनिर्मित घर।

झुंबणग न [दे] प्रालम्ब।

झुज्झ देखो जुज्झ = युध्।

झुट्ठ वि [दे] झूठ।

झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना।

झुणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज।

झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विच्छेद।

झुमुझुमुसय न [दे] मन का दुःख।

झुलुक्क पुं [दे] अकस्मात् प्रकाश।

झुल्ल अक [अन्दोल्] झूलना, डोलना, लटकना।

झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द-विशेष।

झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ।

झुस देखो झूस।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झुसणा देखो झूसणा ।
झुसिर न [शुषिर] रन्ध्र, पोल, खाली जगह । वि. पोला, छूंछा ।
झूझ देखो जूझ ।
झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना ।
झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना ।
झूर अक [क्षि] झुरना, क्षीण होना ।
झूर वि [दे] वक्र ।
झूस सक [जुष्] सेवा करना । प्रीति करना । क्षीण करना, खपाना । फेंकना, त्याग करना ।
झूसरिअ वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त । स्वच्छ, निर्मल ।
झेंडुअ पुं [दे] कन्दुक ।
झेय झा का. कृ. ।
झेर पुं [दे] पुराना घण्टा ।
झोंडलिआ स्त्री [दे] रास के समान एक प्रकार की क्रीड़ा ।
झोंटिग पुं [दे] देव-विशेष ।
झोट्टी स्त्री [दे] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति ।
झोड सक [शाटय्] पेड़ आदि से पत्र वगैरह को गिराना ।
झोड न [दे] पेड़ आदि से पत्र आदि का गिराना । जीर्ण वृक्ष ।
झोडप्प पुं [दे] चना । सूखे चने का शाक ।
झोडिअ पुं [दे] शिकारी, बहेलिया ।
झोलिआ, झोल्लिआ स्त्री [दे. झोलिका] थैली ।
झोस देखो झूस ।
झोस सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना ।
झोस सक [झोषय्] डालना, प्रक्षेप करना ।
झोस पुं [झोष] जिसके डालने से समान भागाकार हो वह राशि ।
झोस पुं [दे] झाड़ना, दूर करना ।
झोसणा स्त्री [जोषणा] अन्त समय की आराधना, संलेखना ।

ट

ट पुं. मूर्द्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ।
टउया स्त्री [दे] पुकारने की आवाज।
टंक पुं [टङ्क] सिक्का पर का चित्र । तलवार आदि का अग्र भाग । एक प्रकार का सिक्का । एक दिशा में छिन्न पर्वत । पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी । परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल । पक्षि-विशेष ।
टंक पुं [दे] तलवार । खात, खुदा हुआ जलाशय । जाँघ । भींत । किनारा । कुदाल । वि. छिन्न, काटा हुआ ।
टंकण पुं [टङ्कन] म्लेच्छ की एक जाति ।
टंकवत्थुल पुं [दे] कन्द-विशेष, तरकारी ।
टंका स्त्री [दे] जंघा । एक तीर्थ ।
टंकार पुं [टङ्कार] धनुष का शब्द ।
टंकार पुं [दे] तेज ।
टंकिअ वि [दे] फैला हुआ ।
टंकिअ वि [टङ्कित] टाँकी से काटा हुआ ।
टंकिया स्त्री [टङ्किका] पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी ।
टंबरय वि [दे] गुरू, भारी ।
टक्क पुं. देश-विशेष । वि. टक्क-देशीय । पुं. भाट की एक जाति ।
टक्कर पुं [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात ।
टक्करा स्त्री [दे] टकोर, मुंड-सिर में उंगली का आघात ।
टक्कारा स्त्री [दे] अरणिवृक्ष का फूल ।
टगर पुं [तगर] तगर का वृक्ष । सुगन्धित काष्ठ-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टक्क पुं [दे] लकड़ी आदि के आघात की आवाज।
टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका।
टप्पर वि [दे] भयंकर कानवाला।
टमर पुं [दे] बाल-समूह।
टयर देखो टगर।
टलटल अक [टलटलाय्] 'टल-टल' आवाज करना।
टलवल अक [दे] तड़फड़ाना। घबराना।
टलिअ वि [दे] टला हुआ, हटा हुआ।
टसर न [दे] विमोटन, मोड़ना।
टसर पुं [त्रसर] एक प्रकार का सूता।
टसरोट्ट न [दे] शेखर।
टहरिय वि [दे] ऊँचा किया हुआ।
टार पुं [दे] अधम अश्व, हठी घोड़ा। टट्टू।
टाल न [दे] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल।
टिंट° } [दे] देखो टेंटा। °साला स्त्री
टिंटा } [°शाला] जुआ खेलने का अड्डा।
टिंबरु पुंन [दे] तेन्दू का पेड़।
टिंबरुणी स्त्री [दे] ऊपर देखो।
टिक्क न [दे] तिलक। मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा।
टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक-विभूषित।
टिग्घर वि [दे] स्थविर, वृद्ध।
टिट्टिभ पुं. पक्षि-विशेष, टिटिहरी, टिटिहा। जल-जन्तु-विशेष।
टिट्टियाव सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना, 'टि-टि' आवाज करने को सिखलाना।
टिप्पणय न [टिप्पनक] विवरण, छोटी टीका।
टिप्पी स्त्री [दे] तिलक।
टिरिटिल्ल सक [भ्रम्] घूमना।
टिल्लिक्किय वि [दे] विभूषित।
टिविडिक्क सक [मण्डय्] मण्डित करना।
टुंट वि [दे] छिन्न-हस्त।
टुंटुण्ण अक [टुण्टुणाय] 'टुन-टुन' आवाज करना।
टुंबय पुं [दे] आघात-विशेष।
टुट्ट अक [त्रुट्] टूटना, कट जाना।
टुप्परग न [दे] जैन साधु का एक छोटा पात्र।
टूवर पुं [तूवर] जिसको दाढ़ी-मूंछ न हो ऐसा चपरासी या प्रतिहार।
टेंट पुं [दे] मध्य-स्थित मणि-विशेष। वि. भीषण।
टेंटा स्त्री [दे] जुआखाना। अक्षि-गोलक। छाती का शुष्क व्रण।
टेंबरुय न [दे] फल-विशेष।
टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश।
टोक्कण } न[दे] दारू नापने का बरतन।
टोक्कणखंड }
टोपिआ स्त्री [दे] टोपी।
टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष।
टोप्पर पुंन [दे] शिरस्त्राण-विशेष, टोपी।
टोल पुं [दे] शलभ, जन्तु-विशेष। पिशाच। °गइ स्त्री [°गति] गुरु-वन्दन का एक दोष। °गइ स्त्री [°ाकृति] प्रशस्त आकारवाला।
टोल पुं [दे] टिड्डी। यूथ।
टोलंब पुं [दे] महुआ का पेड़।

ठ

ठ पुं. मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष।
ठइअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ। पुं. अवकाश।
ठइअ वि [स्थगित] आच्छादित। बन्द किया हुआ, रुका हुआ।
ठइअ देखो ठविअ।
ठंडिल्ल देखो थंडिल्ल।
ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ ।

ठकुर } पुं [ठक्कुर] ठाकुर, क्षत्रिय,
ठक्कुर } राजपूत । ग्राम वगैरह का स्वामी ।

ठक्कार पुं [ठःकार] 'ठः' अक्षर ।

ठग } सक [स्थग] बन्द करना, ढकना ।
ठय }

ठग पुं [ठक] धूर्त ।

ठगिय वि [दे] वञ्चित ।

ठगिय देखो ठइय = स्थगित ।

ठट्ठार पुं [दे] धातु के बर्तन बनाकर जीविका चलानेवाला, ठठेरा ।

ठड्ढ वि [स्तब्ध] हक्काबक्का, कुण्ठित, जड़ ।

ठप्प वि [स्थाप्य] स्थापनीय ।

ठय सक [स्थग्] बन्द करना, रोकना ।

ठयण [स्थगन] रुकाव, अटकाव । वि. रोकनेवाला ।

ठरिअ वि [दे] गौरवित । ऊर्ध्व-स्थित ।

ठलिय वि [दे] शून्य, रिक्त किया गया ।

ठल्ल वि [दे] दरिद्र ।

ठव सक [स्थापय्] स्थापन करना ।

ठवणा स्त्री [स्थापना] प्रतिकृति, चित्र, मूर्त्ति, आकार । स्थापन, सांकेतिक वस्तु । जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष, साधु को भिक्षा में देने के लिए रखी हुई वस्तु । सम्मति । पर्युषण, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष । °कुल पुंन. भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल । °णय पुं [°नय] स्थापन को ही प्रधान माननेवाला मत । °पुरिस पुं [°पुरुष] पुरुष की मूर्ति या चित्र । °यरिय पुं [°चार्य] जिस वस्तु में आचार्य का संकेत किया जाय वह । °सच्च न [°सत्य] स्थापना-विषयक सत्य, जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह स्थापना-सत्य है ।

ठवणा स्त्री [स्थापना] वासना ।

ठवणी स्त्री [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ द्रव्य । °मोस पुं [°मोष] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप ।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति ।

ठविर देखो थविर ।

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना ।

ठाण पुं [दे] मान, अभिमान ।

ठाण पुंन [स्थान] स्थिति, अवस्थान । स्वरूप-प्राप्ति । निवास, रहना । कारण । पर्यंक आदि आसन । भेद । पद, जगह । गुण, पर्याय, धर्म । आश्रय, आधार, वसति, मकान । तृतीय जैन अंग ग्रन्थ; 'ठाणांग' सूत्र । 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद । कायोत्सर्ग । °भट्ठ वि [°भ्रष्ट] अपनी जगह से च्युत । चारित्र से पतित । °इय वि [°तिग] कायोत्सर्ग करनेवाला । °यिय न [°यत] ऊँचा स्थान ।

ठाण न [स्थान] कुंकण (कोंकण) देश का एक नगर । तेरह दिन का लगातार उपवास ।

ठाणग न [स्थानक] शरीर की चेष्टा-विशेष ।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थानयुक्त ।

ठाणिज्ज वि [दे] सम्मानित । न. गौरव ।

ठाणु देखो खाणु । °खंड न [°खण्ड] स्थाणु का अवयव । वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीरवाला ।

ठाणुक्कुडिय } वि [स्थानोत्कटुक] उत्कटुक
ठाणुक्कुडय } आसनवाला । न. आसन-विशेष ।

ठाम } (अप) । देखो ठाण ।
ठाय }

ठाय पुं [स्थाय] स्थान, आश्रय ।

ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, धारण करना, रखना ।

ठावणया } देखो ठवणा ।
ठावणा }

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठावर वि [स्थावर] रहनेवाला, स्थायी ।
ठावित्तु वि [स्थापयितृ] देखो ठावय् ।
ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व ऊँचा ।
ठिइ स्त्री [स्थिति] व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम । स्थान, अवस्थान । अवस्था । उम्र, काल-मर्यादा । °क्खय पुं [°क्षय] मरण । °पडिया देखो °वडिया । °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा । °वडिया स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-सम्बन्धी उत्सव-विशेष ।
ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न ।
ठिक्करिआ स्त्री [दे] घड़ा का टुकड़ा ।
ठिय वि [स्थित] अवस्थित । व्यवस्थित, नियमित । खड़ा । बैठा हुआ ।
ठिर देखो थिर ।
ठिविअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा । समीप । हिक्का, हिचकी ।
ठिव्व सक [वि + घुट्] मोड़ना ।
ठीण वि [स्त्यान] जमा हुआ (घृत आदि) । आवाज करनेवाला । न. जमाव । आलस्य । प्रतिध्वनि ।
ठुंठ पुंन [दे] ठूंठा, स्थाणु ।
ठुक्क सक [हा] त्याग करना ।
ठेर पुंस्त्री [स्थविर] वृद्ध ।
ठोड पुं [दे] ज्योतिषी, दैवज्ञ । पुरोहित ।

ड

ड पुं. मूर्द्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ।
डओयर न [दकोदर] जलोदर का रोग ।
डंक पुं [दे] डंक, वृश्चिक (बिच्छू) आदि का काँटा । दंश-स्थान ।
डंगा स्त्री [दे] डाँग, लाठी ।
डंड देखो दंड ।
डंड न [दे] वस्त्र के सीये हुए टुकड़े ।
डंडगा स्त्री [दण्डका] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध जंगल ।
डंडय पुं [दे] रथ्या ।
डंडारण्ण न [दण्डारण्य] दण्डकारण्य ।
डंडि, डंडी } स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड ।
डंबर पुं [दे] गरमी, प्रस्वेद ।
डंबर पुं [डम्बर] आडम्बर ।
डंभ देखो दंभ ।
डंभण न [दम्भन] दागने का शस्त्र-विशेष । ठगाई ।
डंभणया, डंभणा } स्त्री [दम्भना] दागना । माया, कपट, दम्भ, वञ्चना ।
डंभिअ पुं [दे] जुआरी ।
डंभिअ वि [दाम्भिक] मायावी, कपटी ।
डंस सक [दंश्] डसना, काटना ।
डंस पुं [दंश] क्षुद्र-जन्तु-विशेष, डाँस, मच्छर । दन्त-क्षत । सर्प आदि का काटा हुआ घाव । दोष । खण्डन । दाँत । कवच । मर्म-स्थान ।
डंसण पुंन [दंशन] वर्म ।
डक्क वि[दष्ट]डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ ।
डक्क वि [दे] दाँत से उपात्त ।
डक्क स्त्रीन. वाद्य-विशेष ।
डक्कुरिज्जंत वकृ [दे] पीडित होता हुआ ।
डगण न [दे] यान-विशेष ।
डगमग अक [दे] हिलना, काँपना ।
डगल न [दे] फल का टुकड़ा । ईंट, पाषाण वगैरह का टुकड़ा ।
डग्गल पुं [दे] छत ।
डज्झ डह का कृ. ।
डज्झंत, डज्झमाण } डह का कवकृ. ।
डट्ठ देखो डक्क = दष्ट ।
डड्ढ वि [दग्ध] प्रज्ज्वलित ।
डड्ढाडी स्त्री [दे] आग का रास्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डप्फ न [दे] सेल, कुन्त, भाला, बरछी।
डब्भ पुं [दर्भ] डाभ, कुश।
डमडम अक [डमडमाय्] 'डम-डम' आवाज करना, डमरू आदि की आवाज होना।
डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम-डम' आवाज किया हो वह।
डमर पुंन. राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव। कलह, लड़ाई।
डमरुअ } पुंन [डमरुक] कापालिक योगियों
डमरुग } के बजाने का बाजा, डमरू।
डर अक [त्रस्] भय-भीत होना।
डर पुं [दर] डर।
डल पुं [दे] मिट्टी का ढेला।
डल्ल सक [पा] पीना।
डल्ल } न [दे] पिटिका, डाला, डाली,
डल्लग } बाँस का बना हुआ फल-फूल रखने का पात्र।
डल्ला स्त्री [दे] डाला, डाली।
डव सक [आ + रभ्] शुरू करना।
डवडव अ [दे] ऊँचा मुँह कर के वेग से इधर-उधर गमन।
डव्व पुं [दे] बायाँ हाथ।
डस देखो डंस।
डसण न [दशन] दंश, दाँत से काटना। दाँत। वि. काटनेवाला।
डह सक [दह्] जलाना।
डहण न [दहन] भस्म करना। पुं. अग्नि। वि. जलानेवाला।
डहर पुं[दे] शिशु। वि. लघु, क्षुद्र। °ग्गाम पुं. [°ग्राम] छोटा गाँव।
डहरक पुं [दे] वृक्ष-विशेष। पुष्प-विशेष।
डहरिया स्त्री [दे] जन्म से अठारह वर्ष तक की लड़की।
डहरी स्त्री [दे] अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा।
डाअल न [दे] लोचन।
डाइणी स्त्री[डाकिनी] चुड़ैल, प्रेतिनी। जन्तर मन्तर जाननेवाली स्त्री।
डाउ पुं [दे] फलिहंसक वृक्ष, गणपति की एक तरह की प्रतिमा।
डाग पुंन [दे] भाजी, पत्राकार तरकारी।
डाग न [दे] शाखा।
डागिणी देखो डाइणी।
डामर वि. भयंकर। पुं. एक जैन मुनि।
डामरिय वि [डामरिक] लड़ाई करनेवाला।
डाय न [दे] देखो डाग।
डायाल न [दे] प्रासाद-भूमि, छत।
डाल स्त्रीन [दे] शाखा, टहनी। शाखा का एक देश।
डाव पुं [दे] वाम हस्त।
डाह देखो दाह।
डाहर पुं [दे] देश-विशेष।
डाहाल पुं [दे] देश-विशेष।
डाहिण देखो दाहिण।
डिअली स्त्री [दे] स्थूण, खम्भा, खूँटी।
डिडव वि [दे] जल में पतित।
डिंडि पुं [दण्डिन्] राजकर्मचारी विशिष्ट अधिकार-सम्पन्न।
डिंडिम न [डिण्डिम] डुगडुगी, वाद्य-विशेष। काँसे का पात्र।
डिंडिल्लिअ न [दे] खलि-खचित वस्त्र, तैल किट्ट से व्याप्त कपड़ा। स्खलित हस्त।
डिंडी स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड। °बंध पुं [°बन्ध] गर्भ-सम्भव।
डिंडीर पुंन [डिण्डीर] समुद्र का फेन।
डिंडुयाण न [डिण्डुयाण] नगर-विशेष।
डिंफिअ वि [दे] पानी में गिरा हुआ।
डिंब पुंन[डिम्ब]भय। विघ्न। विप्लव, डमर।
डिंब पुं [डिम्ब] शत्रु-सैन्य का भय।
डिंभ अक [स्रंस्] नीचे गिरना। नष्ट होना।
डिंभ पुंन [डिम्भ] बालक।
डिंभिया स्त्री [डिम्भिका] छोटी लड़की।
डिक्क अक [गर्ज्] साँड़ का गरजना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डिड्डुर पुं [दे] मेढ़क, बेंग ।
डित्थ पुं. काष्ठ का बना हुआ हाथी । जो श्याम, विद्वान, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष ।
डिप्प अक [दीप्] चमकना ।
डिप्प अक[वि + गल्]गल जाना, सड़ जाना । गिर पड़ना ।
डिमिल न [दे] वाद्य-विशेष ।
डिल्ली स्त्री [दे] जल-जन्तु-विशेष ।
डिव सक [डीप्] उल्लंघन करना ।
डीण वि [दे] अवतीर्ण ।
डीणोवय न [दे] उपरि, ऊपर ।
डीर न [दे] नवीन अङ्कुर ।
डुंगर पुं [दे] पर्वत ।
डुंघ पुं [दे] नारियल का बना हुआ पात्र-विशेष ।
डुंडुअ पुं [दे] पुराना घण्टा । बड़ा घण्टा ।
डुंडुक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।
डुंडुल्ल अक [भ्रम्] घूमना ।
डुंब पुं [दे] डोम, चाण्डाल । देखो डोंब ।
डुज्जय न [दे] कपड़े का छोटा गट्टा, वस्त्र-खण्ड ।
डुल अक[दोलय्] डोलना, काँपना, हिलना ।
डुलि पुं [दे] कच्छप ।
डुहुडुहुडुह अक[डुहडुहाय्] 'डुह-डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना ।
डेकुण पुं [दे] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष ।
डेड्डुर पुं [दे] दर्दुर ।
डेर वि [दे] केकटाक्ष, नीची-ऊँची आँखवाला ।
डेव सक[डिप्] उल्लंघन करना, कूद जाना ।
डोअ पुं [दे] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ पात्र-विशेष ।
डोअण न [दे] आँख ।
डोंगर देखो डुंगर ।
डोंगिली स्त्री [दे] ताम्बूल रखने का भाजन-विशेष । पान बेचनेवाले की स्त्री ।
डोंगी स्त्री [दे] हस्तबिम्ब, स्थासक । पान रखने का भाजन-विशेष ।
डोंब पुं [दे] म्लेच्छ देश-विशेष । एक म्लेच्छ-जाति, डोम । देखो डुंब ।
डोंबिलग } पुं [दे] म्लेच्छ देश-विशेष ।
डोंबिलय } एक अनार्य जाति । चाण्डाल ।
डोक्करी स्त्री [दे] बूढ़ी स्त्री ।
डोड पुं [दे] ब्राह्मण ।
डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी ।
डोड्ड पुं [दे] ब्राह्मण जाति ।
डोर पुं [दे] रस्सी ।
डोल अक [दोलय्] हिलना, झूलना । संशयित होना ।
डोल पुं [दे] जन्तु-विशेष । फल-विशेष ।
डोल पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति ।
डोला स्त्री [दोला] हिंडोला ।
डोला स्त्री [दे] शिविका ।
डोलिअ पुं [दे] काला हिरन ।
डोल्लणग पुं [दे] पानी में होनेवाला जन्तु-विशेष ।
डोव [दे] देखो डोअ ।
डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना ।
डोहल पुं [दोहद] गर्भिणी स्त्री का अभिलाष । मनोरथ ।

ढ

ढ पुं. व्यञ्जन वर्ण-विशेष ।
ढंक पुं [दे] कौआ । °वत्थुल न [वास्तुल] एक तरह की भाजी या तरकारी ।
ढंक पुं [ढङ्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपासक।
ढंक देखो ढक्क।
ढंकण न [दे. छादन] पिधान।
ढंकण देखो ढिकुण।
ढंकणी स्त्री [दे. छादनी] ढकने का पात्र-विशेष।
ढंकुण पुं [दे] खटमल।
ढंकुण पुं [ढङ्कुण] वाद्य-विशेष।
ढंख देखो ढंक = (दे)।
ढंखर पुंन [दे] फल-पत्र से रहित डाल।
ढंखरअ [दे] ढेला।
ढंखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष।
ढंढ पुं [दे] कीच। वि. निरर्थक।
ढंढ पुं [ढण्ढण] ढण्ढण ऋषि।
ढंढ वि [दे] दाम्भिक, कपटी।
ढंढण पुं [ढण्ढन] एक जैन मुनि।
ढंढणी स्त्री [दे] केवाँच, वृक्ष-विशेष।
ढंढर पुं [दे] पिशाच। ईर्ष्या।
ढंढरिअ पुं [दे] पंक।
ढंढल्ल सक [भ्रम्] घूमना, भ्रमण करना।
ढंढसिअ पुं [दे] ग्राम का यक्ष। गाँव का वृक्ष।
ढंढुल्ल देखो ढंढल्ल।
ढंढोल सक [गवेषय्] खोजना।
ढंढोल्ल देखो ढुंढुल्ल।
ढंस अक [वि + वृत्] धसना, गिर पड़ना।
ढंसय न [दे] अपकीर्ति।
ढक्क सक [छादय्] आच्छादन करना, बन्द करना।
ढक्क पुं. देश-विशेष। देश-विशेष में रहनेवाली एक जाति। भाट की एक जाति।
ढक्कय न [दे] तिलक।
ढक्करि वि [दे] अद्भुत।
ढक्कवत्थुल देखो ढंक-वत्थुल।
ढक्का स्त्री. वाद्य-विशेष, डंका, नगाड़ा, डमरू।
ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना।
ढग्गढग्गा स्त्री [दे] 'ढग-ढग' आवाज, पानी वगैरह पीने की आवाज।
ढज्झंत देखो डज्झंत।
ढड्ढ पुं [दे] भेरी।
ढड्ढर पुं [दे] राहु।
ढड्ढर पुं [दे] बड़ी आवाज। न. गुरु-वन्दन का एक दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना। वि. वृद्ध।
ढणिय वि [ध्वनित] शब्दित।
ढमर न [दे] पिठर, स्थाली या थाली। गरम पानी।
ढयर पुं [दे] पिशाच। ईर्ष्या।
ढल अक [दे] टपकना, गिरना। झुकना। स्खलित होना।
ढलहलय वि [दे] मृदु, कोमल।
ढाल सक [दे] ढालना, नीचे गिराना। झुकाना, चामर वगैरह का वीजना।
ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ।
ढाव पुं [दे] आग्रह, निर्बन्ध।
ढिंक पुं [ढिङ्क] पक्षि-विशेष।
ढिंकण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ आदि
ढिंकुण } को लगनेवाला कीट-विशेष।
ढिंकलीआ स्त्री [दे] पात्र-विशेष।
ढिंग देखो ढिंक।
ढिंढय वि [दे] जल में पतित।
ढिक्क अक [गर्ज्] साँड़ का गरजना।
ढिक्कय न [दे] हमेशा।
ढिक्किय न [गर्जन] साँड़ की गर्जना।
ढिड्ढिस न [ढिड्ढिस] देव-विमान-विशेष।
ढिल्ल वि [दे] शिथिल।
ढिल्ली स्त्री. दिल्ली शहर। °नाह पुं [°नाथ] दिल्ली का राजा।
ढुंढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना।
ढुंढुल्ल सक [गवेषय्] ढूँढ़ना, अन्वेषण करना।
ढुक्क सक [ढौक्] भेंट करना, अर्पण करना। उपस्थित करना। अक. लगना, प्रवृत्ति करना। मिलना।
ढुक्क सक [प्र + विश्] प्रवेश करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढुक्क वि [दे. ढौकित] उपस्थित । मिलित । प्रवृत्त ।

ढुक्कलुक्क न [दे] चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य-विशेष ।

ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना,
ढुस } घूमना ।

ढुरुढुल्ल देखो ढुंढुल्ल = भ्रम् ।

ढेंक पुं [ढेङ्क] एक जल-पक्षी ।

ढेंका स्त्री [दे] खुशी । ढेंकुवा, ढेंकली, कूप-तुला ।

ढेंकिय देखो ढिक्किय ।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका ।

ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण ।

ढेंढिअ वि [दे] धूपित ।

ढेणियालग } पुंस्त्री [ढेणिकालक] पक्षि-
ढेणियालय } विशेष ।

ढेल्ल वि [दे] दरिद्र ।

ढोअ देखो ढुक्क = ढौक ।

ढोइय वि [ढौकित] भेंट किया हुआ । उपस्थित किया हुआ ।

ढोंघर वि [दे] घुमक्कड़ ।

ढोयण देखो ढोवण ।

ढोयणिया स्त्री [ढौकनिका] उपहार ।

ढोल्ल पुं [दे] प्रिय, पति ।

ढोल्ल पुं [दे] पटह । देश-विशेष ।

ढोवण न [ढौकन] अर्पण करना । भेंट ।

ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित ।

ण तथा न

ण पुं [ण, न] मूर्द्धा स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष । अ. निषेधार्थक अव्यय । °उण, °उणा, °उणाइ, °उणो अ [°पुनः] नहीं कि । °संति-परलोगवाइ वि [शान्तिपरलोकवादिन्] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा माननेवाला ।

ण स [तत्] वह ।

ण स [इदम्] यह, इस ।

ण वि [ज्ञ] जानकार, पण्डित, विचक्षण ।

णअ देखो णव = नव । °दीअ पुं [°द्वीप] बंगाल का एक विख्यात नगर ।

णअंचर देखो णत्तंचर ।

णइ स्त्री [नति] नमन, नम्रता । अन्त ।

णइ अ. निश्चय-सूचक । निषेधार्थक ।

णइ° देखो णई ।

णइअ वि [नयिक] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष-वाला ।

णइअ णी = नी का संकृ. ।

णइमासय न [दे] पानी में होनेवाला फल-विशेष ।

णइराय न [नैरात्म्य] आत्मा का अभाव । °वाद पुं. बौद्ध तथा चार्वाक मत ।

णई स्त्री [नदी] नदी । °कच्छ पुं. नदी के किनारे पर की झाड़ी । °गाम पुं [°ग्राम] नदी के किनारे पर स्थित गाँव । °णाह पुं [°नाथ] समुद्र । °वइ पुं [°पति] सागर । °संतार पुं. जहाज आदि से नदी पार जाना । °सोत्त पुं. [°स्रोतस्] नदी का प्रवाह ।

णउ (अप) देखो इव ।

णउअ न [नयुत] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।

णउअंग न [नयुताङ्ग] 'प्रयुत' को चौरासी से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।

णउइ स्त्री [नवति] नब्बे ।

णउइय वि [नवत] ९० वाँ ।

णउल पुं. [नकुल] नेवला । पाँचवाँ पाण्डव । वाद्य-विशेष ।

णउली स्त्री [नकुली] एक महौषधि । सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रश्न। उपमा।

णं वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय। स्वीकार-द्योतक अव्यय।

णं (शौ) देखो णणु।

णं (अप) देखो इव।

णंगअ वि [दे] रोका हुआ।

णंगर पुं [दे] लंगर।

णंगर } न [लाङ्गल] हल।
णंगल }

णंगल पुंन [दे] चोंच।

णंगल पुंन [लाङ्गल] एक देव-विमान।

णंगलि पुं [लाङ्गलिन्] बलभद्र।

णंगलिय पुं [लाङ्गलिक] हल के आकारवाले शस्त्र-विशेष को धारण करनेवाला सुभट।

णंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ।

णंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] लम्बी पूंछवाला। पुं. वानर।

णंगूलि देखो णंगोलि।

णंगोल देखो णंगूल।

णंगोलि पुं [लाङ्गूलिन्] अन्तर्द्वीप-विशेष। उसका निवासी मनुष्य।

णंतग न [दे] वस्त्र।

णंद अक [नन्द्] खुश होना। समृद्ध होना।

णंद पुं [नन्द] एक राजा। भरत-क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव। भरत-क्षेत्र में होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम। एक जैन मुनि। एक श्रेष्ठी। न. देव-विमान-विशेष। लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन। वि. समृद्ध होने वाला। °कंत न [°कान्त] देव-विमान-विशेष। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान। °प्पभ न [°प्रभ] देव-विमान-विशेष। °मई स्त्री [°मती] एक अन्तकृत् साध्वी। °मित्त पुं [°मित्र] भरतक्षेत्र में होनेवाला द्वितीय वासुदेव। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान। °वई स्त्री [°वती] सातवें वासुदेव की माता। रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव-नगरी। °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान-विशेष। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देवविमान। °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान-विशेष। °सिरी स्त्री [°श्री] एक श्रेष्ठि-कन्या। °सेणिया स्त्री [°सेनिका] एक जैन साध्वी।

णंद पुं [नन्द] श्रीकृष्ण का पालक गोपाल।

णंद पुंस्त्री [नन्दा] पक्ष की पहली (प्रतिपदा), षष्ठी और एकादशी तिथि।

णंद न [दे] ऊख पीलने या पेरने का काण्ड। कुण्डा, पात्र-विशेष।

णंदग पुं [नन्दक] वासुदेव का खड्ग।

णंदण पुं [नन्दन] पुत्र। राम का एक सुभट। एक बलदेव। भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव। एक श्रेष्ठी। श्रेणिक राजा का एक पुत्र। मेरु पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन। एक चैत्य। वृद्धि। नगर-विशेष। °कर वि वृद्धि-कारक। °कूड न [°कूट] नन्दन वन का शिखर। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि। °वण न [°वन] एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है। उद्यान-विशेष।

णंदण पुं [दे] दास।

णंदण पुंन [नन्दन] एक देव-विमान। न. सन्तोष।

णंदणा स्त्री [नन्दना] पुत्री।

णंदणी स्त्री [नन्दनी] लड़की।

णंदतणय पुं [नन्दतनय] श्रीकृष्ण।

णंदमाणग पुं [नन्दमानक] पक्षी की एक जाति।

णंदयावत्त } पुंन [नन्दावर्त्त] एक देव-
णंदावत्त } विमान। पुं. चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति। न. लगातार इक्कीस दिनों का उपवास।

णंदा स्त्री [नन्दा] भगवान् ऋषभदेव की एक पत्नी। राजा श्रेणिक की एक पत्नी और अभयकुमार की माता। भगवान् श्री शीतल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाथ की माता। भगवान् महावीर के अचलभ्रातृ नामक गणधर की माता। रावण की एक पत्नी। पश्चिम रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। ईशानेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी। एक पुष्करिणी। ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथि।

णंदा स्त्री [दे] गैया।

णंदावत्त पुं [नन्दावर्त्त] एक प्रकार का स्वस्तिक। क्षुद्र जन्तु की एक जाति। न. देव-विमान-विशेष।

णंदि पुंस्त्री [नन्दि] बारह प्रकार के वाद्यों की एक ही साथ आवाज। हर्ष। मतिज्ञान आदि पाँचों ज्ञान। वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति। मंगल। समृद्धि। जैन आगम ग्रन्थ-विशेष। अभिलाष। गान्धार ग्राम की एक मूर्छना। पुं. एक राजकुमार। एक जैन मुनि जो अपने आगामी भव में द्वितीय बलदेव होगा। वृक्ष-विशेष। °आवत्त देखो °यावत्त। °उड्ढ पुं [°वृद्ध] एक प्राचीन कवि का नाम। °कर, °गर वि [°कर] मंगल-कारक। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष। °घोस पुं [°घोष] बारह प्रकार के वाद्यों की आवाज। न. देवविमान-विशेष। °चुण्णग न [°चूर्णक] होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण। °तूर न [°तूर्य] एक साथ बजाया जाता बारह तरह का वाद्य। °पुर न साण्डिल्य देश का एक नगर। °फल पुं. वृक्ष-विशेष। °भाण न [°भाजन] उपकरण-विशेष। °मित्त पुं [°मित्र] देखो णंद-मित्त। एक राजकुमार, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी। °मुइंग पुं [°मृदङ्ग] एक प्रकार का मृदंग। °मुह न [°मुख] पक्षि-विशेष। °यर देखो °कर। °यावत्त पुं [°आवर्त्त] स्वस्तिक-विशेष। एक लोक-पाल देव। क्षुद्र जन्तु-विशेष। न. देवविमान-विशेष। °राय पुं [°राज] पाण्डवों के सम-कालीन एक राजा। °राय पुं [°राग] समृद्धि में हर्ष। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष। °वड्ढणा देखो °वद्धणा। °वद्धण पुं [°वर्धन] भगवान् महावीर का ज्येष्ठ भ्राता। पक्ष-विशेष। एक राजकुमार। न. नगर-विशेष। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] एक दिक्कुमारी देवी। एक पुष्करिणी। °सेण पुं [°षेण] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिनदेव। एक जैन कवि। एक राजकुमार। एक जैन मुनि। देव-विशेष। °सेणा स्त्री [°षेणा] पुष्करिणी-विशेष। एक दिक्कुमारी देवी। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी। °स्सर पुं [°स्वर] देखो णंदीसर बारह प्रकार के वाद्यों की एक ही साथ आवाज।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट, दहाड़।

णंदिअ वि [नन्दित] समृद्ध। जैन मुनि-विशेष।

णंदिक्ख पुं [दे] सिंह।

णंदिघोस पुं [नन्दिघोष] वाद्य-विशेष।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनियों का एक कुल।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री। °पिउ पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक गृहस्थ उपासक।

णंदिणी स्त्री [दे] गाय।

णंदिल पुं [नन्दिल] आर्यमंगु के शिष्य एक जैनमुनि।

णंदिस्सर, णंदीसर } [नन्दीश्वर] एक द्वीप। एक समुद्र। एक देव-विमान।

णंदी देखो णंदि।

णंदी स्त्री [दे] गाय।

णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] एक द्वीप। °वर पुं. नन्दीश्वर-द्वीप। °वरोद पुं. समुद्र-विशेष।

णंदुत्तर पुं [नन्दोत्तर] नागकुमार के भूतानन्द नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव। °वडिंसग न [°वतंसक] एक देव-विमान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] पश्चिम रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । कृष्णा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी । पुष्करिणी-विशेष । राजा श्रेणिक की एक पत्नी ।

णकार पुं[णकार, नकार]'ण' या 'न' अक्षर।

णक्क पुं [नक्र] जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका । रावण का एक सुभट ।

णक्क पुं [दे] नासिका । वि. गूंगा । °सिरा स्त्री. नाक का छिद्र ।

णक्कंचर पुं[नक्तञ्चर]राक्षस । चोर । बिडाल । वि. रात्रि में चलने-फिरनेवाला ।

णक्ख पुं [नख] नख । °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न । °आउह पुं [°आयुध] सिंह ।

णक्खत्त पुंन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष । °दमण पुं [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश । °मास पुं. ज्योतिषशास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान-विशेष । °मुह न [°मुख] चन्द्र । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध वर्ष-विशेष ।

णक्खत्त वि [नक्षत्र] क्षत्रिय-जाति के अयोग्य कार्य करनेवाला । पुंन. एक देव-विमान ।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-सम्बन्धी ।

णक्खत्तणेमि पुं [दे. नक्षत्रनेमि] विष्णु ।

णक्खन्नण न [दे] नख और कण्टक निकालने का शस्त्र-विशेष ।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नखवाला ।

णख देखो णक्ख ।

णग देखो णय = नग । °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत । °वर पुं. श्रेष्ठ पर्वत । °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु-पर्वत ।

णगर न [नकर, नगर] शहर । °गुत्तिय, °गोत्तिय पुं [°गुप्तिक] नगर रक्षक । °घाय पुं [°घात] शहर में लूट-पाट । °णिद्धमण न [°निर्धमन] मोरी । °रक्खिय पुं[°रक्षिक] देखो °गुत्तिय । °वास पुं. राजधानी ।

णगरी देखो णयरी ।

णगाणिआ स्त्री [नगाणिका] छन्द-विशेष ।

णगिंद पुं [नगेन्द्र] श्रेष्ठ पर्वत । मेरु पर्वत ।

णगिण वि [नग्न] वस्त्ररहित ।

णग्ग देखो णग ।

णग्ग वि [नग्न] नंगा । °इ पुं [°जित्] गन्धार देश का एक राजा ।

णग्गठ वि [दे] निर्गत ।

णग्गोह पुं[न्यग्रोध] बड़ का पेड़ । °परिमंडल न [°परिमण्डल] संस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष ।

णघुस पुं [नघुष] एक राजा ।

णचिरा = अचिरात् ।

णच्च अक [नृत्] नृत्य करना ।

णच्च न [ज्ञत्व] जानकारी, पण्डिताई ।

णच्च न [नृत्य] नृत्य ।

णच्चग वि [नर्त्तक] नाचनेवाला । पुं. नट, नचवैया ।

णच्चणी स्त्री [नर्तनी] नाचनेवाली स्त्री ।

णच्चा } णाण = ज्ञा का संकृ. ।
णच्चाण }

णच्चासन्न न [नात्यासन्न]अति समीप में नहीं।

णच्चिर वि [दे] रमण-शील ।

णच्चुण्ह वि [नात्युष्ण] जो अति गरम न हो ।

णज्ज सक [ज्ञा] जानना ।

णज्ज वि [न्याय्य] न्याय-संगत, योग्य ।

णज्जर वि [दे] मलिन ।

णज्झर वि [दे] निर्मल ।

णट्ट अक [नट्] नाचना । सक. हिंसा करना ।

णट्ट पुं [नट] नर्त्तकों की एक जाति । णट्ट न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य, नट-कर्म । °पाल पुं. नाट्य-स्वामी, सूत्रधार । °मालय पुं [°मालक] देव-विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव । °आरिअ पुं [°ाचार्य] सूत्रधार ।

णट्ट [नृत्य] नाच, नृत्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णट्टअ न [नाट्यक] देखो णट्ट = नाट्य।
णट्टअ } वि [नर्त्तक] नाचनेवाला, नचवैया।
णट्टग } स्त्री. °ई।
णट्टार पुं [नाट्यकार] नाट्य करनेवाला।
णट्टावअ वि [नर्त्तक] नचानेवाला।
णट्टिया स्त्री [नर्त्तिका] नटी, नर्त्तकी।
णट्टुमत्त पुं [नर्त्तुमत्त] एक विद्याधर।
णट्ठ पुं [नष्ट] एक नरक स्थान। न. पलायन। वि. अपगत, नाश-प्राप्त। पुंन. अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त्त। °सुइअ वि [°श्रुतिक] जो बधिर—बहरा हुआ हो। शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित।
णट्ठव वि [नष्टवत्] नाश-प्राप्त। न. अहोरात्र का एक मुहूर्त्त।
णड अक [गुप्] व्याकुल होना। सक. खिन्न करना।
णड देखो णट्ट = नट्।
णड देखो णल = नड।
णड पुं [नट] नर्त्तकों की एक जाति, नट। °खाइया स्त्री [°खादिता] नट की तरह कृत्रिम साधुपन।
णडाल न [ललाट] कपाल।
णडालिआ स्त्री [ललाटिका] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन।
णडाविअ वि [गोपित] व्याकुल किया हुआ। खिन्न किया हुआ।
णडिअ वि [दे] वञ्चित, विप्रतारित। खेदित।
णडी स्त्री [नटी] नट की स्त्री। लिपि-विशेष। नाचनेवाली स्त्री।
णडुली स्त्री [दे] कच्छप।
णड्डूल न [नड्डुल] नगर-विशेष। पुं. देश-विशेष।
णड्डुरी स्त्री [दे] मेढक।
णड्डुल न [दे] मैथुन। मेघाच्छन्न दिवस।
णड्डुली देखो णडुली।
णणंदा स्त्री [ननान्दृ] ननद।
णणु अ [ननु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—निश्चय। आशंका। वितर्क। प्रश्न।
णण्ण पुं [दे] कुआँ। दुर्जन। बड़ा भाई।
णत्त न [नक्त] रात्रि।
णत्त देखो णत्तु।
णत्तंचर देखो णक्कंचर।
णत्तण न [नर्त्तन] नाच, नृत्य।
णत्ति स्त्री [ज्ञप्ति] ज्ञान।
णत्तिअ पुं [नप्तृक] पौत्र। दौहित्र।
णत्तिआ } स्त्री [नप्त्री] पौत्री। पुत्री की
णत्ती } पुत्री।
णत्तु पुं [नप्तृ] देखो णत्तिअ।
णत्तुआ देखो णत्तिआ।
णत्तुइणी स्त्री [नप्तृकिनी] पौत्र की स्त्री। दौहित्र की स्त्री।
णत्तुई देखो णत्ती।
णत्तुणिअ पुं [नप्तृ] पौत्र। प्रपौत्र।
णत्तुणिआ देखो णत्तिआ।
णत्थ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित।
णत्थण न [दे] नाक में छिद्र करना।
णत्था स्त्री [दे] नाथा या नाथ।
णत्थि अ [नास्ति] अभाव-सूचक अव्यय।
णत्थिअ वि [नास्तिक] परलोक आदि नहीं माननेवाला। पुं. नास्तिक मत का प्रवर्त्तक, चार्वाक। °वाय पुं. [°वाद] नास्तिक-दर्शन।
णत्थियवाइ वि [नास्तिकवादिन्] आत्मा आदि के अस्तित्व को नहीं माननेवाला।
णद सक [नद्] नाद करना, आवाज करना।
णदी देखो णई।
णद्दिअ वि [दे] दुःखित।
णद्दिअ न [नर्दित] आवाज।
णद्ध वि [नद्ध] आच्छादित। नियन्त्रित, बँधा हुआ। वर्मित।
णद्ध वि [दे] आरूढ़।
णद्धंबवय न [दे] घृणा या घिन का अभाव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निन्दा।

णपहुत्त वि [अप्रभूत] अपर्याप्त, यथेष्टरहित।

णपहुप्पंत वि [अप्रभवत्] अपर्याप्त होता।

णपुंस, णपुंसग, णपुंसय } पुंन [नपुंसक] क्लीब। °वेय पुं [°वेद] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है।

णप्प सक [ज्ञा] जानना।

णभ देखो णह = नभस्।

णभसूरय पुं [नभःशूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु।

णम सक [नम्] प्रणाम करना।

णमंस सक [नमस्य्] नमन करना।

णमंसणया, णमंसणा } स्त्री [नमस्यना] नमस्कार।

णमंसिय वि [नमस्यित] जिसको नमन किया गया हो वह।

णमक्कार देखो णमोक्कार।

णमसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती।

णमि पुं [नमि] इक्कीसवाँ जिन-देव। राजर्षि। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र।

णमिअ वि [नमित] नमाया हुआ।

णमिआ स्त्री [नमिता] एक स्त्री। 'ज्ञाता-धर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन।

णमिर वि [नम्र] नमन करनेवाला।

णमुइ पुं [नमुचि] एक मन्त्री।

णमुदय पुं [नमुदय] आजीविक मत का एक उपासक।

णमेरु पुं [नमेरु] वृक्ष-विशेष।

णमो अ [नमस्] नमस्कार।

णमोक्कार पुं [नमस्कार] प्रणाम। जैन-शास्त्र में प्रसिद्ध मन्त्र-विशेष। °सहिय न [°सहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष।

णमोयार देखो णमोक्कार।

णम्म पुंन [नर्मन्] उपहास। क्रीड़ा।

णम्मया स्त्री [नर्मदा] एक नदी। एक राज-पत्नी।

णय देखो णद = नद्।

णय पुं [नग] पर्वत। वृक्ष। देखो णग।

णय अ [नच] नहीं।

णय [नत] झुका हुआ, नम्र। जिसको नमस्कार किया गया हो वह। न. देवविमान-विशेष। °सच्च पुं [°सत्य] श्रीकृष्ण।

णय पुं [नय] न्याय, नीति। युक्ति। प्रकार, रीति। वस्तु के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मों की उपेक्षा करनेवाला मत, एकांश-ग्राहक बोध। विधि। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन ग्रन्थकार। °त्थि वि [°र्थिन्] न्याय चाहनेवाला। °व, °वत वि [°वत्] नीतिवाला। °विजय पुं. एक जैन मुनि जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरु थे।

णयचक्क न [नयचक्र] जैन प्रमाण-ग्रन्थ।

णयण न [नयन] ले जाना। जानना, ज्ञान। निश्चय। वि. ले जानेवाला। पुंन. आँख। °जल न. आँसू।

णयय पुं [दे. नवत] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष।

णयर देखो णगर।

णयरंगणा स्त्री [नगराङ्गना] गणिका।

णयरी स्त्री [नगरी] शहर।

णर पुं [नर] मनुष्य, पुरुष। अर्जुन। °उसभ पुं [°वृषभ] श्रेष्ठ मनुष्य, अंगीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष। °कंतप्पवाय पुं [°कान्त-प्रपात] ह्रद-विशेष। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष। °कंताकूड न [°कान्ताकूट] रुक्मि पर्वत का एक शिखर। °दत्ता स्त्री. मुनि-सुव्रत भगवान् की शासनदेवी। विद्या-देवी-विशेष। °देव पुं. चक्रवर्ती राजा। °नायग पुं [°नायक] राजा। °नाह पुं [°नाथ] राजा। °पहु पुं [°प्रभु] राजा। °पौरुसि पुं [°पौरुषिन्] राज-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°लोअ पुं [°लोक] मनुष्य लोक। °वइ पुं [°पति] राजा। °वर पुं. राजा। उत्तम पुरुष। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] भूमि-पति। °वरीसर पुं [°वरेश्वर] श्रेष्ठ राजा। °वसभ, °वसह पुं [°वृषभ] देखो °उसभ। नृपति। पुं. हरिवंश का एक राजा। °वाल पुं [°पाल] भूपाल। °वाहण पुं [°वाहन] एक राजा। °वेय पुं [°वेद] पुरुष वेद, पुरुष को स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा। °सिंघ, °सिंह, °सीह पुं [°सिंह] श्रेष्ठ मनुष्य। अर्धभाग में पुरुष का और अर्धभाग में सिंह का आकारवाला, श्रीकृष्ण। °सुंदर पुं [°सुन्दर] एक राजा। °हिव पुं [°धिप] नरेश।

णरइंदय पुं [नरकेन्द्रक] नरक-स्थान-विशेष।

णरकंठ पुं [नरकण्ठ] रत्न की एक जाति।

णरग, णरय पुं [नरक] नारक जीवों का स्थान। °वाल, °वालय पुं [°पाल, °क] परमाधार्मिक देव जो नरक के जीवों को यातना (पीड़ा) देते हैं।

णरसिंह पुं [नरसिंह] बलदेव। एक राजकुमार।

णराच, णराअ पुंन [नाराच] लोहमय बाण। संहनन-विशेष, शरीर की रचना का एक प्रकार। छन्द-विशेष।

णरायण पुं [नारायण] विष्णु।

णरिंद पुं [नरेन्द्र] राजा। गारुड़िक। °कंत न [°कान्त] देव-विमान-विशेष। °पह पुं [°पथ] राज-मार्ग। °वसह पुं [°वृषभ] श्रेष्ठ राजा।

णरिंदुत्तरवडिंसग न [नरेन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष।

णरीस पुं [नरेश] राजा।

णरीसर पुं [नरेश्वर] राजा।

णरुत्तम पुं [नरोत्तम] श्रीकृष्ण। उत्तम पुरुष।

णरेंद देखो णरिंद।

णरेसर देखो णरीसर।

णल न [नड] भीतर से पोला शराकार तृण।

णल न [नल] ऊपर देखो। पुं. राजा रामचन्द्र का एक सुभट। वैश्रमण का एक पुत्र। °कुब्बर, °कूवर पुं [°कूबर] दुर्लंघपुर का एक राजा। वैश्रमण का एक पुत्र। °गिरि पुं. चण्डप्रद्योत राजा का एक हाथी।

णलय न [दे] उशीर, खस का तृण।

णलाड देखो णडाल।

णलाडंतव वि [ललाटन्तप] ललाट को तपानेवाला।

णलिअ न [दे] मकान।

णलिण न [नलिन] लगातार तेईस दिन का उपवास। पुंन. एक देव-विमान। रक्त कमल। महाविदेह वर्ष का एक प्रदेश-विशेष। 'नलिनांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह। देव-विमान-विशेष। रुचक पर्वत का एक शिखर। °कूड पुं [°कूट] वक्षस्कार-पर्वत-विशेष। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष। नृप-विशेष। अध्ययन-विशेष। राजा श्रेणिक का एक पुत्र। °ावई स्त्री [°ावती] विदेह वर्ष का एक प्रदेश-विशेष।

णलिणंग न [नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।

णलिणि°, णलिणी स्त्री [नलिनी] कमलिनी। °गुम्म देखो णलिण-गुम्म। °वण न [°वन] उद्यान-विशेष।

णलिणोदग पुं [नलिनोदक] समुद्र-विशेष।

णल्लय न [दे] बाड़ का छिद्र। प्रयोजन। निमित्त। वि. कीचवाला।

णव देखो णम।

णव वि [नव] नूतन। °वहुया, °वहू स्त्री [°वधू] नवोढ़ा।

णव त्रि. ब. [नवन्] संख्या-विशेष, नव। °इ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्री [°ति] संख्या-विशेष नब्बे। °ग न [°क] नव का समुदाय। °जोयणिय वि [°योजनिक] नव योजन का परिमाणवाला। °णउइ, °नउइ स्त्री [°नवति] निन्यानबे। °नउय वि [°नवत] ९९ वाँ। °नवइ देखो °णउइ। °नवमिया स्त्री [°नवमिका] जैन साधु का व्रत-विशेष। °म वि. नववाँ। °मी स्त्री. पक्ष का नववाँ दिवस। °मीपक्ख पुं [°मीपक्ष] अष्टमी।

णवकार देखो णमोक्कार।

णवकारसी स्त्री [नमस्कारसहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष।

णवख (अप) वि [नव] अनोखा, नया।

णवणीअ पुंन [नवनीत] मसका।

णवणीइया स्त्री [नवनीतिका] वनस्पति-विशेष।

णवपय न [नवपद] नमस्कार-मन्त्र।

णवमालिया स्त्री [नवमालिका] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष, बसन्ती नेवारी, नेवार।

णवमिया स्त्री [नवमिका] रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी। शक्रेन्द्र की एक पटरानी।

णवय देखो णव-ग।

णवय देखो णयय।

णवयार देखो णवकार।

णवर सक [कथ्] कहना।

णवर, णवरं } अ. केवल, सिर्फ। अनन्तर।

णवरंग, णवरंगय } पुं [नवरङ्ग,°क] नूतन रंग। छन्द-विशेष। कौसुम्भ रंग का वस्त्र।

णवरत्ति स्त्री [नवरात्रि] नव दिनों का आश्विन मास का एक पर्व।

णवरि अ [दे] शीघ्र।

णवरि, णवरिअ } देखो णवर।

णवरिअ न [दे] सहसा, जल्दी।

णवरु देखो णवर।

णवलया स्त्री [दे] वह व्रत जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बतानेवाली स्त्री पलाश की लता से ताड़ित की जाती है।

णवसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती।

णवा स्त्री [नवा] दुलहिन। युवति। जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी। अ. प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं?

णवि अ. वैपरीत्य-सूचक अव्यय। निषेधार्थक अव्यय।

णविअ वि [नव्य] नूतन।

णवीण वि [नवीन] नया।

णवुत्तरसय वि [नवोत्तरशततम] एक सौ नववाँ।

णवुल्लडय (अप) देखो णव = नव।

णवोढा स्त्री [नवोढा] नव-विवाहिता स्त्री।

णवोद्धरण न [दे] उच्छिष्ट।

णव्व पुं [दे] गाँव का मुखिया।

णव्व वि [नव्य] नवीन।

णव्व° देखो णा = ज्ञा।

णव्वाउत्त पुं [दे] ईश्वर, धनाढ्य, भोगी। नियोगी का पुत्र, सूबेदार का लड़का।

णस सक [नि + अस्] स्थापन करना।

णस अक [नश्] पलायन करना।

णसण न [न्यसन] न्यास, स्थापन।

णसा स्त्री [दे] नाड़ी।

णसिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त।

णस्स देखो नस = नश्।

णस्सर वि [नश्वर] विनश्वर, भंगुर।

णस्सा स्त्री [नासा] नासिका।

णह देखो णक्ख।

णह न [नभस्] आकाश। पुं. श्रावण मास। °अर वि [°चर] आकाश में विचरनेवाला। पुं. विद्याधर। °केउमंडिय न [°केतुमण्डित] विद्याधरों का एक नगर। °गमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्री. आकाश-गामिनी विद्या। °गामिणी स्त्री [°गामिनी] आकाश-गामिनी विद्या। °च्चर देखो °अर। °च्छेदणय न [°च्छेदनक] नख उतारने का शस्त्र। °तिलय न [°तिलक] नगर-विशेष। सुभट-विशेष। °बाहण पुं [°बाहन] नृप-विशेष। °सिर न [°शिरस्] नख का अग्र भाग। °सिहा स्त्री [°शिखा] नख का अग्र भाग। °सेण पुं [°सेन] राजा उग्रसेन का एक पुत्र। °हरणी स्त्री. नख उतारने का शस्त्र।

णहंसि वि [नखवत्] नखवाला।

णहमुह पुं [दे] घूक, उल्लू।

णहर पुं [नखर] नख।

णहरण पुं [दे] नखी, नखवाला जन्तु, श्वापद।

णहरणी स्त्री [नखहरणी] नख उतारने का शस्त्र।

णहराल पुं [नखरिन्] नखवाला श्वापद जन्तु।

णहरी स्त्री [दे] छुरी।

णहवल्ली स्त्री [दे] बिजली।

णहारु न [स्नायु] स्नायु, नाड़ी।

णहि पुं [नखिन्] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु।

णहि अ [नहि] निषेधार्थक अव्यय, नहीं।

णहु अ [न खलु] ऊपर देखो।

णा सक [ज्ञा] जानना, समझना।

णा अ [न] निषेध-सूचक अव्यय।

णाअअ } देखो णायग।
णाअक्क }

णाअक्क (अप) देखो णायग।

णाइ पुं [ज्ञाति] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्री महावीर।

णाइ स्त्री [ज्ञाति] नात, समान जाति। माता पिता आदि स्वजन, सगा। ज्ञान, बोध।

णाइ (अप) देखो इव।

णाइ (अप) नीचे देखो।

णाइं देखो ण = न।

णाइणी (अप) स्त्री [नागी] नागिन।

णाइत्त } पुं [दे] जहाज द्वारा व्यापार करनेवाला सौदागर।
णाइत्तग }

णाइय वि [नादित] कथित, पुकारा हुआ। न. आवाज। प्रतिध्वनि।

णाइल पुं [नागिल] एक जैन मुनि। जैन मुनियों का एक वंश। एक श्रेष्ठी।

णाइला } स्त्री [नागिला] जैन मुनियों की एक शाखा।
णाइली }

णाइल्ल देखो णाइल।

णाइव वि [ज्ञातिमत्] स्वजन-युक्त।

णाउ वि [ज्ञातृ] जानकार।

णाउड्ड पुं [दे] सद्भाव, सन्निष्ठा। अभिप्राय। मनोरथ।

णाउल्ल वि [दे] गोमान्, जिसके पास अनेक गैया हों।

णाग पुंन [नाक] स्वर्ग।

णाग पुं [नाग] साँप। भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, नाग-कुमार देव। हाथी। वृक्ष-विशेष। एक गृहस्थ। एक प्रसिद्ध वंश। नाग-वंश में उत्पन्न। एक जैन आचार्य। एक द्वीप। एक समुद्र। वक्षस्कार पर्वत-विशेष। न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण। °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति। °केसर पुं. पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष। °ग्गह पुं [°ग्रह] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि। °जण्ण पुं [°यज्ञ] नाग पूजा का उत्सव। °ज्जुण पुं [°आर्जुन] एक जैन आचार्य। °दंत पुं [°दन्त] खूँटी। °दत्त पुं. एक राज-पुत्र। एक श्रेष्ठि-पुत्र। °पइ पुं [°पति] नाग कुमार देवों का राजा, नागेन्द्र। °पुर न. नगर-विशेष। °बाण पुं. दिव्य अस्त्र-विशेष। °भद्द पुं [°भद्र] नाग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वीप का अधिष्ठाता देव। °भूय न [°भूत] जैन मुनियों का एक कुल। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव। °महावर पुं. नाग समुद्र का अधिपति देव। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैन मुनि। °राय पुं [°राज] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र-विशेष। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष। °लया स्त्री [°लता] ताम्बूली लता। °वर पुं. श्रेष्ठ सर्प। उत्तम हाथी। नाग समुद्र का अधिपति देव। °वल्ली स्त्री. लता-विशेष। °सिरी स्त्री [°श्री] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम। °सुहुम न [°सूक्ष्म] एक जैनेतर शास्त्र। °सेण पुं [°सेन] एक गृहस्थ। °हत्थि पुं[°हस्तिन्]एक प्राचीन जैन ऋषि।

णागणिय न [नाग्न्य] नग्नता।

णागदत्ता स्त्री [नागदत्ता] चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिबिका।

णागपरियावणिया स्त्री[नागपरियापनिका] एक जैन शास्त्र।

णागर नि [नागर]नगर-सम्बन्धी। नागरिक।

णागरिअ पुं[नागरिक] नगर का रहनेवाला।

णागरी स्त्री [नागरी] नगर में रहनेवाली स्त्री। हिन्दी लिपि।

णागिंद पुं [नागेन्द्र] नाग देवों का इन्द्र। शेषनाग।

णागिणी स्त्री [नागी] नागिन। एक वणिक्-पुत्री।

णागिल देखो णाइल।

णागी स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी।

णागेंद देखो णागिंद।

णागोद पुं [नागोद] एक समुद्र।

णाड देखो णट्ट = नाट्य।

णाडइज्ज वि [नाटकीय] नाटक-सम्बन्धी, नाटक में भाग लेनेवाला पात्र।

णाडइणी स्त्री [नाटकिनी] नर्त्तकी, नाचने-वाली स्त्री।

णाडग, णाडय न [नाटक] नाटक, अभिनय, नाट्य-क्रिया। रंगशाला में खेलने में उपयुक्त काव्य।

णाडाल देखो णडाल।

णाडि, णाडी स्त्री [नाडि] रज्जु, बरत्रा। नस, सिरा। [नाडी]।

णाडीअ पुं [नाडीक] वनस्पति-विशेष।

णाण न[ज्ञान] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि। °धर वि. ज्ञानी, विद्वान्। °प्पवाय न[°प्रवाद] जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व। °मायार देखो °ायार। °व, °वंत वि [°वत्] विद्वान्। °वि वि [°वित्] ज्ञान-वेत्ता। °ायार पुं [°ाचार] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि। °ावरण न. ज्ञान का आच्छादक कर्म। °ावरणिज्ज न [°ावरणीय] अनन्तर उक्त अर्थ।

णाणक, णाणग न [दे] सिक्का, मुद्रा।

णाणत न [नानात्व] विशेष, अन्तर।

णाणता स्त्री [नानाता]

णाणा अ [नाना] अनेक। °विह वि [°विध] विविध।

णाणि वि [ज्ञानिन्] विद्वान्।

णादिय देखो णाइय।

णाभि पुं [नाभि] एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता। पेट का मध्य भाग। गाड़ी का एक अवयव। °नंदण पुं [°नन्दन] भगवान् ऋषभदेव।

णाम सक [नमय्] नमाना, नीचा करना। उपस्थित करना। अर्पण करना।

णाम पुं [नाम] परिणाम, भाव। नमन।

णाम अ [नाम] इन अर्थों का सूचक अव्यय— सम्भावना। आमन्त्रण, सम्बोधन। प्रसिद्धि। अनुज्ञा। वाक्यालंकार पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है।

णाम न [नामन्] अभिधान। °कम्म न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°कर्मन्] विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म। °धिज्ज, °धेज्ज, °धेय न [°धेय] नाम। °पुर न. एक विद्याधर-नगर। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] नाम से अंकित मुद्रा। °सच्च वि [°सत्य] नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी। °हेअ देखो °धेय।

णामण न [नमन] नीचा करना।

णाममंतक्ख पुं [दे] अपराध।

णामगोत्त न [नामगोत्र] यथार्थ नाम। नाम तथा गोत्र।

णामिय न [नामिक] वाचक-शब्द, पद।

णामुक्कसिअ } न [दे] कार्य।
णामोक्कसिअ }

णाय वि [दे] अभिमानी।

णाय देखो णाग।

णाय पुं [नाद] ध्वनि।

णाय पुं [न्याय] अक्षपाद—प्रणीत न्याय-शास्त्र। सामयिक आदि षट्-कर्म।

णाय पुं [नाद] अनुनासिक वर्ण, अर्धचन्द्राकार अक्षर-विशेष।

णाय वि [न्याय्य] न्याय-युक्त।

णाय पुं [न्याय] न्याय, नीति। उपपत्ति, प्रमाण। °कारि वि [°कारिन्] न्याय-कर्ता। °गर वि [°कर] न्याय-कर्ता। पुं. न्यायाधीश। °ण्ण वि [°ज्ञ] न्याय का जानकार।

णाय पुं [नाक] स्वर्ग।

णाय पुं [ज्ञात] भगवान् महावीर। वि. प्रसिद्ध। वि. विदित। ज्ञाति सम्बन्धी, सगा। वंश-विशेष में उत्पन्न। पुं. वंश-विशेष। क्षत्रिय-विशेष। न. उदाहरण। °कुमार पुं. ज्ञातवंशीय राज-पुत्र। °कुल न. वंश-विशेष। °कुलचंद पुं [°कुलचन्द्र] भगवान् श्री महावीर। कुलनंदण पुं [कुलनन्दन] भगवान् श्री महावीर। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर। °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्री महावीर। °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा सम्बन्ध, सम्बन्धिपन। °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्री महावीर। °सुय न [°श्रुत] 'ज्ञाताधर्मकथा' नामक जैन आगम-ग्रन्थ। °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष।

णायग पुं [नायक] हार के बीच की मणि, सुमेरु।

णायग पुं [नायक] नेता, मुखिया।

णायत्त पुं [दे] समुद्र मार्ग से व्यापार करनेवाला वणिक्।

णायर देखो णागर।

णायरिय देखो णागरिय।

णायरी देखो णागरी।

णार पुं [नार] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तर।

णारइअ वि [नारकिक] नरक पृथिवी में उत्पन्न, पुं. नरक का जीव।

णारंग पुं [नारङ्ग] सन्तरे का वृक्ष। न. कमला नीबू, सन्तरा का फल।

णारग देखो णारय = नारक।

णारद देखो णारय।

णारदीअ वि [नारदीय] नारद-सम्बन्धी, नारद का।

णारय पुं [नारद] नारद ऋषि। गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष।

णारय वि [नारक] नरक में उत्पन्न, नरक-सम्बन्धी। पुं. नरक का जीव।

णारसिंह वि [नारसिंह] नरसिंह-सम्बन्धी।

णाराय पुं [नाराच] तौलने की छोटी तराजू, काँटा।

णाराय देखो णराअ। °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष।

णारायण पुं [नारायण] विष्णु, श्रीकृष्ण। अर्ध-चक्रवर्ती राजा।

णारायण पुं [नारायण] एक ऋषि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णारायणी स्त्री [नारायणी] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा ।

णारि° देखो णारी । °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष ।

णारिएर } पुं [नारिकेल] नारियल का पेड़ ।
णारिएल } न. नारियल या नरियर का फल । देखो णालिअर ।

णारिंग न [नारिङ्ग] नारंगी का फल, मीठा नीबू, कमला नीबू ।

णारी स्त्री [नारी] महिला । नदी-विशेष । °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष । देखो णारि° ।

णारुट्ट पुं [दे] कुसार ।

णारोट्ट पुं [दे] बिल, साँप आदि का रहने का स्थान, विवर । गर्त्ताकार स्थान ।

णाल न [नाल] कमल-दण्ड । गर्भ का आवरण ।

णालंदइज्ज वि [नालन्दीय] नालन्दा-सम्बन्धी । न. नालन्दा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ।

णालंदा स्त्री [नालन्दा] राजगृह नगर का एक मुहल्ला ।

णालंपिअ न [दे] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि ।

णालंबि पुं [दे] केश-कलाप ।

णालय न [नालक] द्यूत-विशेष ।

णाला } स्त्री [नाडि] नस, सिरा ।
णालि }

णालि स्त्री [नालि] परिमाण-विशेष, अंजली ।

णालि वि [दे] गिरा हुआ ।

णालिअ वि [दे] मूर्ख, अज्ञान ।

णालिअर देखो णारिएर । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष ।

णालिआ } स्त्री [नालिका] नाल, कमल की
णालिगा } डण्डी । परिमाण-विशेष, दण्ड, धनुष । अर्ध मुहूर्त का समय । नली । वल्ली-विशेष । घटिका, काल नापने का एक तरह का यन्त्र । अपने शरीर से चार अंगुल लम्बी लाठी । द्यूत-विशेष । °खेड्ड न [°खेल] द्यूत-विशेष । °खेड्डा स्त्री [°क्रीडा] एक तरह की द्यूत-क्रीड़ा ।

णालिएर देखो णारिएर ।

णालिएरी स्त्री [नारिकेली] नरियर का गाछ ।

णाली स्त्री [नाली] वनस्पति-विशेष, एक लता । घड़ी । द्यूत-विशेष । तीन हाथ और सोलह अंगुल लम्बी लट्ठी या लग्गी (बाँस) ।

णाली स्त्री [नाडी] नाड़ी, सिरा ।

णालीय वि [नालीय] नाल-सम्बन्धी ।

णालीया देखो णालिआ ।

णावइ (अप) देखो इव ।

णावण न [दे] दान, वितरण ।

णावा स्त्री [दे] प्रसृति, अंजली, परिमाण-विशेष ।

णावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज । °वाणिय पुं [°वाणिज] समुद्र मार्ग से व्यापार करने-वाला वणिक् ।

णावापूरय पुं [दे] चुलुक, चुल्लू ।

णाविअ पुं [नापित] हजाम । °साला स्त्री [°शाला] नाइयों का अड्डा ।

णाविअ पुं [नाविक] मल्लाह ।

णास देखो णस्स ।

णास सक [नाशय्] नाश करना ।

णास पुं [नाश] नाश, ध्वंस । °यर वि [°कर] नाश-कारक ।

णास पुं [न्यास] स्थापन । धरोहर या अमानत, रखने योग्य धन आदि ।

णासग वि [नाशक] नाश करनेवाला ।

णासण न [नाशन] पलायन, अपक्रमण । वि. नाश करनेवाला ।

णासणा स्त्री [नासना] विनाश ।

णासव सक [नाशय्] नाश करना । भगाना ।

णासा स्त्री [नासा] घ्राणेन्द्रिय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णासि वि [नाशिन्] विनश्वर।

णासिक्क } न [नासिक्य] दक्षिण भारत का
णासिक्क } एक नगर, पञ्चवटी।

णासिगा स्त्री [नासिका] नाक।

णासीकय वि [न्यासीकृत]धरोहर या अमानत रूप से रखा हुआ।

णासेक्क देखो णासिक्क।

णाह पुं [नाथ] स्वामी, मालिक।

णाहड पुं [नाहट] एक राजा।

णाहल पुं [लाहल] एक म्लेच्छ जाति।

णाहि देखो णाभि। °रुह पुं. ब्रह्मा।

णाहिं (अव) अ [नहि] नहीं।

णाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्सी।

णाहिय वि [नास्तिक] परलोक आदि को नहीं माननेवाला। पुं. नास्तिक मत का प्रवर्त्तक। °वाइ, °वादि वि [°वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी। °वाय पुं[°वाद] नास्तिक-दर्शन।

णाहिविच्छेअ } पुं [दे] जघन, कटि के
णाहीए-विच्छेअ } नीचे का भाग।

णि अ [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—निश्चय। नियतपन, नियम। अतिशय। अधो-भाग। नित्यपन। संशय। आदर। विराम। समावेश। समीपता। निन्दा। बन्धन। निषेध। दान। समूह। मोक्ष। सम्मुखता। अल्पता, लघुता।

णि अ [निर्]इन अर्थों का सूचक अव्यय—निश्चय। आधिक्य, अतिशय। निषेध। निर्गमन, निष्क्रमण।

णिअ सक [दृश्] देखना।

णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय।

णिअ वि [नीत] ले जाया गया।

णिअ वि [नीच] जघन्य, निकृष्ट।

णिअ देखो णिव।

णिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट।

णिअइ स्त्री [नियति] नियतपन, भवितव्यता, नियमितता। अवश्यं-भाविता। °पव्वय पुं [°पर्वत]पर्वत-विशेष। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्यवादी या दैववादी।

णिअंटिअ वि [नियन्त्रित] नियमित। न. प्रत्याख्यान-विशेष, हृष्ट से या रोगी से अमुक दिन में अमुक तप करने का किया हुआ नियम। बँधा हुआ। न. अवश्य-कर्त्तव्य नियम-विशेष।

णिअंठ वि [निर्ग्रन्थ] धन रहित। पुं. जैनमुनि, संयत, यति। जिन भगवान्। पुं. भगवान् बुद्ध।

णिअंठि देखो °णिग्गंथी। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था। एक जैनमुनि जो भगवान् महावीर का शिष्य था।

णिअंठिय वि [नैर्ग्रन्थिक] निर्ग्रन्थ-सम्बन्धी। जिनदेव-सम्बन्धी।

णिअंठी देखो णिग्गंथी।

णिअंत वि [नियत] स्थिर।

णिअंत वि [निर्यत्] बाहर निकलता।

णिअंतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ।

णिअंधण न [दे] वस्त्र।

णिअंब पुं [नितम्ब] पर्वत का वसति-स्थान। स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग,चूतड़। मूलभाग। कटि-प्रदेश।

णिअंबिणी स्त्री [नितम्बिनी] सुन्दर नितम्ब-वाली स्त्री। महिला।

णिअंस सक [नि + वस्] पहनना।

णिअंसण न [दे. निवसन] वस्त्र।

णिअंसणि स्त्री [निवसनी] कपड़ा।

णिअक्क सक [दृश्] देखना।

णिअक्कल वि [दे] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ।

णिअग वि [निजक] स्वकीय।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना।

णिअच्छ सक [नि + यम्] नियन्त्रण करना। अवश्य प्राप्त करना। जोड़ना।

णिअच्छ अक [नि + गम्] संगत होना, युक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होना। सक. अवश्य प्राप्त करना।

णिअट्ट अक [नि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना, रुकना।

णिअट्ट सक [निर् + वृत्] निर्माण करना।

णिअट्ट सक [नि + अर्द्] अनुसरण करना।

णिअट्ट पुं [निवर्त्त] व्यावर्तन, निवृत्ति।

णिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ।

णिअट्टि स्त्री [निवृत्ति] पीछे हटना। अध्यवसाय-विशेष। मोह-रहित अवस्था। °बायर न [°बादर] गुण-स्थानक-विशेष। पुं. गुण-स्थानक-विशेष में वर्त्तमान जीव।

णिअड न [निकट] समीप। वि. पास का।

णिअडि वि [निकृतिन्] कपटी।

णिअडि स्त्री [निकृति] की हुई ठगाई को छिपाना। माया, कपट।

णिअडिअ वि [निगडित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ।

णिअडिअ वि [निकटिक] समीप-वर्त्ती।

णिअडिल्ल वि [निकृतिमत्] कपटी, मायावी।

णिअड्ढ सक [नि + कृष्] खींचना।

णिअण वि [नग्न] वस्त्र-रहित।

णिअत्त वि [निकृत्त] काटा हुआ।

णिअत्त वि [नित्य] शाश्वत।

णिअत्त देखो णिअट्ट = नि + वृत्।

णिअत्त देखो णिअट्ट = निवृत्त।

णिअत्तण न [निवर्त्तन] भूमि की एक नाप। निवृत्ति, व्यावर्त्तन।

णिअत्तणिय वि [निवर्त्तनिक] निवर्त्तन, परिमाणवाला।

णिअत्ति देखो णिअट्टि।

णिअत्थ वि [दे] परिहित। वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह।

णिअद सक [नि + गद] बोलना।

णिअद्दिय देखो णिअट्टिय = न्यर्दित।

णिअद्धण न [दे] परिधान, पहनने का वस्त्र।

णिअम सक [नि + यमय्] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। रोकना। वचन से कराना। शरीर से कराना।

णिअम पुं [नियम] निश्चय। ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत। प्रायोपवेशन, संकल्प-पूर्वक अनशन-मरण के लिए उद्यम। °सा अ [°सात्] नियम से। °सो अ [°शस्] निश्चय से।

णिअय न [दे] मैथुन। शयनीय, शय्या। घड़ा। वि. नित्य।

णिअय वि [निजक] स्वकीय, आत्मीय, अपना।

णिअय वि [नियत] नियम-बद्ध, नियमानुसारी।

णिअया स्त्री [नियता] जम्बू-वृक्ष-विशेष, जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है।

णिअर पुं [निकर] समूह।

णिअरण न [दे] दण्ड।

णिअरिअ वि [दे] राशि रूप से स्थित।

णिअल न [दे] नूपुर, पैजनी।

णिअल पुं [निगड] बेड़ी। देखो णिगल।

णिअलाइअ, णिअलाविअ, णिअलिअ } वि [निगडित] सांकल से नियन्त्रित, जकड़ा हुआ।

णिअल्ल पुं [दे. नियल्ल] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष।

णिअस देखो णिअंस।

णिअह देखो णिवह।

णिआ स्त्री [निदा] प्राणि-हिंसा।

णिआ° देखो णिअय = (दे)। °वाइ वि [°वादिन्] पदार्थ को नित्य माननेवाला।

णिआइय देखो णिकाइय।

णिआग पुं [नियाग] नियत योग। निश्चित पूजा। मोक्ष। न. आमन्त्रण देकर जो भिक्षा दी जाय वह।

णिआग देखो णाय = न्याय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिआण न [निदान] आरम्भ, सावद्य व्यापार। रोग-कारण, रोग की पहचान। कारण, किसी व्रतानुष्ठान की फल-प्राप्ति का अभिलाष संकल्प-विशेष। मूल कारण। °कड वि [°कृत्] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह। °कारि वि [°कारिन्] वही अनन्तर उक्त अर्थ।

णिआण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी, चरही।

णिआणिआ स्त्री [दे] खराब तृणों का उन्मूलन।

णिआम देखो णिअम = नियमय्।

णिआम देखो णिकाम।

णिआमग } वि [नियामक] नियन्ता।
णिआमय } निश्चायक, विनिगमक।

णिआय पुं [नियाग] प्रशस्त धर्म।

णिआर सक [काणेक्षितकृ] कानी नजर से देखना।

णिआह पुं [निदाघ] ग्रीष्म ऋतु। उष्ण, गरमी।

णिइअ वि [नैत्यिक] नित्य का।

णिइग } वि [दे. नित्य, नैत्यिक] शाश्वत,
णिइय } अविनश्वर।

णिइव वि [निष्कृप] निर्दय, कठोर।

णिउअ वि [निवृत] परिवेष्टित, परीक्षित।

णिउअ वि [नियुत] सुसंगत, सुश्लिष्ट।

णिउंचिय वि [निकुञ्चित] संकुचित, सकुचा हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ।

णिउंज सक [नि+युज्] जोड़ना, संयुक्त, करना, किसी कार्य में लगाना।

णिउंज पुं [निकुञ्ज] गहन, लता आदि से निबिड़ स्थान। गह्वर।

णिउंभ पुं [निकुम्भ] कुम्भकर्ण का एक पुत्र।

णिउंभिला स्त्री [निकुम्भिला] यज्ञ-स्थान।

णिउक्क वि [दे] तूष्णीक।

णिउक्कण पुं [दे] कौआ। वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन।

णिउज्ज न [न्युब्ज] आसन-विशेष।

णिउज्जम वि [निरुद्यम] आलसी।

णिउड्ड अक [मस्ज्, नि+ब्रुड्] मज्जन करना, डूबना।

णिउण वि [निपुण] चतुर, कुशल। सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके।

णिउण वि [निपुण] नियत गुणवाला। सुनिश्चित, विनिर्णीत।

णिउणिय वि [नैपुणिक] दक्ष।

णिउत्त वि [नियुक्त] कार्य में लगाया हुआ। निबद्ध।

णिउत्त वि [निवृत्त] उपरत, विमुख, विरक्त।

णिउत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, सिद्ध।

णिउत्ति स्त्री [निवृत्ति] विराम।

णिउद्ध न [नियुद्ध] बाहु-युद्ध।

णिउर पुं [निकुर] वृक्ष-विशेष।

णिउर न [नूपुर] पैंजनी, पायल।

णिउर वि [दे] छिन्न। जीर्ण, पुराना।

णिउरंब } न [निकुरम्ब] समूह [निकु-
णिउरुंब } रुम्ब] जत्था।

णिउल पुं [दे] गाँठ, गठरी।

णिऊढ वि [निगूढ] प्रच्छन्न।

णिएअ वि [नियत] नियम-युक्त, प्रतिबद्ध।

णिएल्ल = निज, स्वकीय।

णिओअ सक [नि+योजय्] किसी कार्य में लगाना।

णिओअ देखो णिओग। आज्ञा, आदेश।

णिओइअ वि [नैयोगिक] नियोग-सम्बन्धी।

णिओग पुं [नियोग] मुक्ति।

णिओग पुं [नियोग] नियम, आवश्यक कर्तव्य। सम्बन्ध, नियोजन। अनुयोग, सूत्र की व्याख्या। व्यापार, कार्य। अधिकार-प्रेरण। राजा, आज्ञा-विधाता। गाँव। क्षेत्र, भूमि। संयम, त्याग। देखो णिओअ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°पुर न. राजधानी। राष्ट्र। राज्य।
णिओगि वि [नियोगिन्] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञाप्राप्त, अधिकारी।
णिओज देखो णिओअ।
णिंद सक [निन्द्] निन्दा करना, बुराई करना, जुगुप्सा करना।
णिंद वि [निन्द्य] निन्दनीय।
णिंद (अप) स्त्री [निद्रा] नींद।
णिंदय वि [निन्दक] निन्दा करनेवाला।
णिंदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा।
णिंदिणी स्त्री [दे] कुत्सित तृणों का उन्मूलन।
णिंदु स्त्री [निन्दु] जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री।
णिंब पुं [निम्ब] नीम का पेड़।
णिंबोलिया स्त्री [निम्बगुलिका] नीम का फल।
णिकर पुं [निकर] समूह।
णिकरण न [निकरण] निर्णय। निकार, दुःख-उत्पादन।
णिकरिय वि [निकरित] सारीकृत, सर्वथा संशोधित।
णिकस देखो णिहस।
णिकाइय वि [निकाचित] व्यवस्थापित, नियमित। अत्यन्त निबिड़ रूप से हुआ (कर्म)। न. कर्मों का निबिड़ रूप से बन्धन।
णिकाम सक [नि+कामय्] अभिलाष करना।
णिकाम न [निकाम]हमेशा परिमाण से ज्यादा खाया जाता भोजन। निश्चय। अतिशय।
णिकाममीण वि [निकाममीण] अत्यन्त प्रार्थी।
णिकाय सक [नि+काचय्] नियमन करना, नियन्त्रण करना। निबिड़ रूप से बाँधना। निमन्त्रण देना।
णिकाय पुं [निकाय] जत्था, यूथ, वर्ग। मोक्ष। आवश्यक, अवश्य करने-योग्य अनुष्ठान-विशेष। °काय पुं. छहो प्रकार के जीवों का समूह।
णिकाय पुं [निकाच] निमन्त्रण।
णिकाय देखो णिकाइय।
णिकायणा स्त्री [निकाचना] कारण-विशेष जिससे कर्मों का निबिड़ बन्ध होता है। निबिड़ बन्धन। दिलाना।
णिकिंत सक [नि+कृत्] छेदना।
णिकिंतय वि [निकर्तक] काट डालनेवाला।
णिकुट्ट सक [नि+कुट्ट्] कूटना। काटना।
णिकूणिय वि [निकूणित] वक्र किया हुआ।
णिकेय पुं [निकेत] आश्रय, निवास-स्थान।
णिकेयण न [निकेतन] ऊपर देखो।
णिकोय पुं [निकोच] संकोच, सिमट।
णिक्क वि [दे] सर्वथा मल-रहित।
णिक्क देखो णिक्ख = निष्क।
णिक्कइअव वि [निष्कैतव] कपट-रहित। कपट का अभाव।
णिक्कंकड वि [निष्कङ्कट] आवरण-रहित। उपघात-रहित।
णिक्कंखि वि [निष्काङ्क्षिन्] अभिलाषा-रहित।
णिक्कंखिय न [निष्काङ्क्षित] आकांक्षा का अभाव। दर्शनान्तर की अनिच्छा। वि. आकांक्षा-रहित। दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित।
णिक्कंचण वि [निष्काञ्चन] सुवर्ण-रहित, धन-रहित।
णिक्कंटय वि [निष्कण्टक] कण्टक-रहित, बाधा-रहित, शत्रु-रहित।
णिक्कंड वि [निष्काण्ड] काण्ड-रहित, स्कन्ध-वर्जित। अवसर-रहित।
णिक्कंत वि [निष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ। जिसने दीक्षा ली हो वह।
णिक्कंतार वि [निष्कान्तार]अरण्य से निर्गत।
णिक्कंति स्त्री [निष्क्रान्ति] निष्क्रमण, बाहर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निकलना।
णिक्कंतु वि [निष्क्रमितृ] बाहर निकलनेवाला।
णिक्कंद सक [नि + कन्द्] उन्मूलन करना।
णिक्कंप वि [निष्कम्प] कम्प-रहित, स्थिर।
णिक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चंचल।
णिक्कट्ठ वि [निष्कृष्ट] कृश, क्षीण।
णिक्कड वि [दे] कठिन। पुं. निश्चय, निर्णय।
णिक्कड्ढिय वि [निष्कृष्ट, निष्कर्षित] बाहर खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ।
णिक्कण वि [निष्कण] धान्य-कण-रहित, अत्यन्त गरीब।
णिक्कम अक [निर् + क्रम्] बाहर निकलना। दीक्षा लेना, संन्यास लेना।
णिक्कमण न [निष्क्रमण] बाहर निकलना। संन्यास।
णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] कर्मरहित, मुक्त। निकम्मा। मोक्ष। संवर, कर्मों का निरोध।
णिक्कय पुं [निष्क्रय] बदला, उऋणपन। वेतन, मजूरी।
णिक्करण न [निकरण] तिरस्कार। परिभव। विनाश।
णिक्करुण वि [निष्करुण] करुणा-रहित।
णिक्कल वि [निष्कल] कला-रहित।
णिक्कल वि [दे] पोलापन से रहित।
णिक्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलंक-रहित।
णिक्कलुण देखो णिक्करुण।
णिक्कलुस वि [निष्कलुष] निर्दोष, निर्मल। उपद्रव-रहित।
णिक्कवड वि [निष्कपट] कपट-रहित।
णिक्कवय वि [निष्कवच] वर्मवर्जित।
णिक्कस अक [निर + कस्] बाहर निकलना। सक निकासना, बाहर निकालना।
णिक्कसाय वि [निष्कषाय] कषाय-रहित। पुं. भरत-क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर-देव।
णिक्का स्त्री [नीका] वाम-नासिका।
णिक्काम वि [निष्काम] अभिलाषा-रहित।
णिक्कारण वि [निष्कारण] कारण-रहित। निरुपद्रव।
णिक्कारणिय वि [निष्कारणिक] हेतु-शून्य।
णिक्कारिम वि [निष्कारण] विना कारण।
णिक्काल सक [निर् + कासय्] बाहर निकालना।
णिक्कास पुं [निष्कास] नीकास, बाहर निकालना।
णिक्किंचण वि [निष्किञ्चन] निर्धन, धन-रहित।
णिक्किट्ठ वि [निकृष्ट] अधम, हीन।
णिक्किण सक [निर् + क्री] खरीदना।
णिक्कित्तिम वि [निष्कृत्रिम] असली, स्वाभाविक।
णिक्किय वि [निष्क्रिय] क्रिया-रहित।
णिक्किव वि [निष्कृप] कृपा-रहित, निर्दय।
णिक्कीलिय वि [निष्क्रीडित] गमन, गति।
णिक्कुड पुं [निष्कुट] तापन, तपाना।
णिक्कूइल स्त्री [दे] जीता हुआ, विनिर्जित।
णिक्कोडण न [निष्कोटन] बन्धन-विशेष।
णिक्कोर सक [निर् + कोरय्] दूर करना। पात्र वगैरह के मुँह का बन्द करना। पात्र आदि का तक्षण करना।
णिक्ख पुं [दे] चोर। सुवर्ण।
णिक्ख पुंन [निष्क] दीनार, मोहर, मुद्रा, अशर्फी, रुपया।
णिक्खंत देखो णिक्कंत।
णिक्खंध वि [निःस्कन्ध] स्कन्ध-रहित, डाली-रहित।
णिक्खणण न [निखनन] गाड़ना।
णिक्खत्त वि [निःक्षत्र] क्षत्रिय-रहित।
णिक्खम अक [निर् + क्रम्] बाहर निकलना। दीक्षा लेना, संन्यास लेना।
णिक्खय वि [निखात] गाड़ा हुआ।
णिक्खय वि [दे. निक्षत] निहत, मारा हुआ।
णिक्खविअ वि [निक्षपित] विनाशित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिक्खसरिअ वि [दे] जो लूट लिया गया हो, अपहृत-सार ।
णिक्खाविअ वि [दे] शान्त, उपशम-प्राप्त ।
णिक्खित्त वि[निक्षिप्त]न्यस्त, स्थापित । मुक्त, परित्यक्त । विच्छिन्न । पाक-भाजन में स्थित । °चर वि. पाक-भाजन में स्थित वस्तु को भिक्षा के लिए खोजनेवाला ।
णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] स्थापन करना, स्वस्थान में रखना । परित्याग करना ।
णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरूपण करना ।
णिक्खिव पुं [निक्षेप] स्थापन । न्यास-स्थापन, धरोहर । डालना ।
णिक्खुड वि [दे] अकम्प, स्थिर ।
णिक्खुड पुंन [निष्कुट]कोटर, विवर । पृथिवी-खण्ड । उपवन, घर के पास का बगीचा ।
णिक्खुत्त न [दे] निश्चित, चोक्कस ।
णिक्खुरिअ वि [दे] अदृढ़, अस्थिर ।
णिक्खेड पुं [निष्खेट] अधमता, दुष्टता ।
णिक्खेत्तव्व णिक्खिव = नि + क्षिप् का कृ. ।
णिक्खेव पुं [निक्षेप] न्यास, स्थापन । परित्याग । धरोहर, धन आदि जमा रखना । व्यवस्थापन करना । नियमन करना ।
णिक्खेवय पुं [निक्षेपक] निगमन, उपसंहार ।
णिक्खोभ, णिक्खोह पुं [निःक्षोभ] क्षोभ-रहित, निष्कम्प ।
णिखय देखो णिक्खय ।
णिखव्व न [निखर्व] सौ खर्व, सौ अरब ।
णिखिल वि [निखिल] सकल, सब ।
णिगंठ देखो णिअंठ ।
णिगड सक [निगडय्] नियन्त्रित करना, बाँधना ।
णिगढ पुं [दे] घाम, गरमी ।
णिगण वि [नग्न] वस्त्र-रहित ।
णिगद सक [नि + गद्] कहना । पढ़ना, अभ्यास करना ।
णिगम पुं [निगम]प्रकृष्ट बोध । व्यापार-प्रधान स्थान, जहाँ व्यापारी विशेष संख्या में रहते हों ऐसा शहर आदि । व्यापारी-समूह ।
णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार ।
णिगमिअ वि [दे] निवासित ।
णिगर पुं [निकर] समूह ।
णिगरण न [निकरण] हेतु ।
णिगरिय वि [निकरित] सर्वथा शोधित ।
णिगल देखो णिअल । बेड़ी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष ।
णिगलिय देखो णिगरिय ।
णिगाम देखो णिकाम = निकाम ।
णिगाम न [निकाम] अत्यन्त ।
णिगास पुं [निकर्ष] परस्पर संयोजन, मिलाना, जोड़ ।
णिगिज्झिय णिगिण्ह का संकृ. ।
णिगिट्ठ देखो णिक्किट्ठ ।
णिगिण वि [नग्न] नंगा ।
णिगिणिण न [नाग्न्य] नंगापन ।
णिगिण्ह सक [नि + ग्रह्]निग्रह करना, शिक्षा करना । रोकना । अक. बैठना, स्थिति करना ।
णिगुंज अक [नि + गुञ्ज्] गूँजना, अव्यक्त शब्द करना । नीचे नमना ।
णिगुंज देखो णिउञ्ज = निकुञ्ज।
णिगुण वि [निर्गुण] गुण-रहित ।
णिगुरंब देखो णिउरंब ।
णिगूढ वि [निगूढ] प्रच्छन्न। मौन रहनेवाला ।
णिगूह सक [नि + गुह्] छिपाना, गोपन करना ।
णिगोअ पुं [निगोद] अनन्त जीवों का एक साधारण शरीर-विशेष । °जीव पुं. निगोद का जीव ।
णिग्ग देखो णिग्गम = निर् + गम् ।
णिग्गंठिद (शौ) वि [निग्रथित] गुम्फित, ग्रथित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिग्गंथ देखो णिअंठ।
णिग्गंथ वि [नैर्ग्रन्थ] निर्ग्रन्थ-सम्बन्धी।
णिग्गंथी स्त्री [निर्ग्रन्थी] जैन साध्वी।
णिग्गच्छ } अक [निर्+गम्] बाहर
णिग्गम } निकलना।
णिग्गम पुं [निर्गम] उत्पत्ति। बाहर निकलना, पसार करना। दरवाजा। बाहर जाने का रास्ता। प्रस्थान।
णिग्गमण न [निर्गमन] निःसरण, बाहर निकलना। पलायन, भाग जाना। अपक्रमण।
णिग्गय वि [निर्गत] निःसृत, °जस वि [°यशस्] जिसका यश बाहर में फैला हो। °मोअ वि [°मोद] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो।
णिग्गय वि [निर्गज] हाथी-रहित।
णिग्गह देखो णिगिण्ह।
णिग्गह पुं [निग्रह] दण्ड, शिक्षा। निरोध, रुकावट। काबू में रखना, नियमन। °ट्ठाण न [°स्थान] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान।
णिग्गहिय } वि [निगृहीत] जिसका निग्रह
णिग्गहीय } किया गया हो वह। पराजित, पराभूत।
णिग्गा स्त्री [दे] हरिद्रा।
णिग्गाल पुंन [निर्गाल] निचोड़, रस।
णिग्गालिय वि [निर्गालित] गलाया हुआ।
णिग्गाहि वि [निग्राहिन्] निग्रह करनेवाला।
णिग्गिण्ण वि [दे. निर्गीर्ण] निर्गत, बाहर निकला हुआ। वमन किया हुआ।
णिग्गिण्ह देखो णिगिण्ह।
णिग्गिलिय वि [निर्गलित] वान्त।
णिग्गुंडी स्त्री [नर्गुण्डी] औषधि-विशेष, वनस्पति संभालू।
णिग्गुण वि [निर्गुण] गुण-रहित, गुण-हीन।
णिग्गुण्ण न [नैर्गुण्य] निर्गुणत्व।
णिग्गूढ वि [निर्गूढ] स्थिर रूप से स्थापित।
णिग्गोह पुं [न्यग्रोध] बरगद, बड़ का पेड़। °परिमंडल न [°परिमण्डल] वटाकार शरीर का आकार।
णिग्घंट } देखो णिघंटु।
णिग्घटु }
णिग्घट्टु वि [दे] निपुण, चतुर।
णिग्घण देखो णिग्घिण।
णिग्घत्तिअ वि [दे] फेंका हुआ।
णिग्घाय पुं [निर्घात] राक्षस-वंश का एक राजा। आघात। बिजली का गिरना। व्यन्तर-कृत गर्जना। विनाश। उच्छेदन।
णिग्घिण वि [निर्घृण] निर्दय।
णिग्घेउं णिगिण्ह का हेकृ.।
णिग्घोर वि [दे] दया-हीन।
णिग्घोस पुं [निर्घोष] महान् अव्यक्त शब्द।
णिघंटु पुं [निघण्टु] शब्द-कोश।
णिघस पुं [निकष] कसौटी का पत्थर। कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा।
णिचय पुं [निचय] संग्रह। समूह। उपचय, पुष्टि।
णिचिअ वि [निचित] व्याप्त, भरपूर। निबिड़, पुष्ट।
णिचुल वि [निचुल] वंजुल वृक्ष।
णिच्च वि [नित्य] शाश्वत। न. निरन्तर, सर्वदा। °च्छणिय वि [°क्षणिक] निरन्तर उत्सववाला। °मंडिया स्त्री [°मण्डिता] जम्बू वृक्ष। °वाय पुं [°वाद] पदार्थों को नित्य माननेवाला मत। °सो अ [°शस्] सदा। °लोअ, °लोग, °लोव पुं [°लोक] एक विद्याधर-राजा। ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष। न. नगर-विशेष। वि. सर्वदा प्रकाशवाला।
णिच्च देखो णीय = नीच।
णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुस्] अन्धा।
णिच्चट्ट (अप) वि [गाढ] निबिड।
णिच्चय देखो णिच्छय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिच्चर देखो णिव्वर।
णिच्चल सक [क्षर्] झरना, टपकना।
णिच्चल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना।
णिच्चल वि [निश्चल] स्थिर, दृढ़। °पय न [°पद] मुक्ति।
णिच्चिंत वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित, बेफिक्र।
णिच्चिट्ठ वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित।
णिच्चिद (शौ) देखो णिच्छिय।
णिच्चुज्जोव, णिच्चुज्जोअ वि [नित्योद्योत] सदा प्रकाश युक्त। पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष। न. एक विद्याधर-नगर।
णिच्चुज्जोअ पुं [नित्योद्योत] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य की दक्षिण दिशा में स्थित एक अंजनगिरि।
णिच्चुड्ड वि [दे] उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ। निर्दय।
णिच्चुव्विग्ग वि [नित्योद्विग्न] सदा खिन्न।
णिच्चेट्ठ देखो णिच्चिट्ठ।
णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित।
णिच्चोउया स्त्री [नित्यर्तुका] हमेशा रजस्वला रहनेवाली स्त्री।
णिच्चोय सक [दे] निचोड़ना।
णिच्चोरिक्क न [निश्चौर्य] चोरी का अभाव।
णिच्छइय वि [नैश्चयिक] निश्चय-सम्बन्धी। पुं. निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम-वाद।
णिच्छउम वि [निश्छद्मन्] कपट-रहित, माया-वर्जित।
णिच्छक्क वि [दे] निर्लज्ज, धृष्ट। अवसर को नहीं जाननेवाला।
णिच्छम्म देखो णिच्छउम।
णिच्छय सक [निर् + चि] निश्चय करना।
णिच्छय पुं [निश्चय] निर्णय। नियम, अविनाभाव। द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही माननेवाला मत परिणाम-वाद। °कहा स्त्री [°कथा] अपवाद।
णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना।
णिच्छाय वि [निश्छाय] कान्ति-रहित, शोभा-हीन।
णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-रहित।
णिच्छिड्ड वि [निश्छिद्र] छिद्र-रहित।
णिच्छिण्ण वि [निश्छिन्न] पृथक्-कृत, काटा हुआ।
णिच्छिद्द देखो णिच्छिड्ड।
णिच्छिय वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत, असन्दिग्ध।
णिच्छीर वि [निःक्षीर] दुग्ध-वर्जित।
णिच्छुंड वि [दे] करुणा-रहित।
णिच्छुट्ट वि [निश्छुटित] निर्मुक्त।
णिच्छुभ सक [नि + क्षिप्] बाहर निकालना। फेंकना।
णिच्छुभ पुं [निक्षेप] निष्कासन।
णिच्छुह सक [नि + क्षिप्] डालना।
णिच्छुहणा स्त्री [निक्षेपणा] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना।
णिच्छूढ वि [निक्षिप्त] उद्वृत्त। निर्गत। फेंका हुआ। निष्कासित।
णिच्छूढ न [निष्ठ्यूत] थूक, खखार।
णिच्छोड सक [निर् + छोटय्] बाहर निकलने के लिए धमकाना। निर्भर्त्सन करना। छुड़-वाना।
णिच्छोडण न [निश्छोटन] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी।
णिच्छोडिअ वि [निश्छोटित] सफा किया हुआ।
णिच्छोल सक [निर् + तक्ष्] छीलना।
णिजंतिय वि [नियन्त्रित] नियमित, अंकुशित।
णिजिण्ण देखो णिज्जिण्ण।
णिजुंज देखो णिउंज = नि + युज्।
णिजुद्ध देखो णिउद्ध।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिजोजण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य में लगाना, भारअर्पण ।

णिजोज देखो णिओअ ।

णिज्ज वि [दे] सोया हुआ ।

णिज्जण वि [निर्जन] विजन, सुनसान । न. एकान्त स्थान ।

णिज्जप्प वि [निर्याप्य] निर्वाह-कारक । निर्बल, बल को नहीं बढ़ानेवाला ।

णिज्जर सक [निर् + जृ] क्षय करना । कर्म-पुद्गलों को आत्मा से अलग करना ।

णिज्जरण न [निर्जरण] नीचे देखो ।

णिज्जरणा स्त्री [निर्जरणा] नाश, क्षय । कर्म-क्षय । जिससे कर्मों का विनाश हो ऐसा तप ।

णिज्जरा स्त्री [निर्जरा] कर्म-विनाश ।

णिज्जरिय वि [निर्जीर्ण] विनाश-प्राप्त ।

णिज्जव वि [निर्याप] निर्वाह करानेवाला ।

णिज्जवग वि [निर्यापक] निर्वाह करनेवाला । आराधक । पुं. जैनमुनि-विशेष जो शिष्य के भारी प्रायश्चित्त का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निबाह सके ।

णिज्जवणा स्त्री [निर्यापना] निगमन, दर्शित का प्रत्युच्चारण । हिंसा ।

णिज्जवय देखो णिज्जवग ।

णिज्जविउ वि [निर्यापयितृ] ऊपर देखो ।

णिज्जा अक [निर् + या] बाहर निकालना ।

णिज्जाण न [निर्याण] बाहर निकलना, निर्गम । आवृत्ति-रहित गमन । मोक्ष ।

णिज्जाणिय वि [नैर्याणिक] निर्गम-सम्बन्धी ।

णिज्जामग } पुं [निर्यामक] कर्णधार, जहाज
णिज्जामय } का नियन्ता ।

णिज्जामण न [निर्यापन] बदला चुकाना ।

णिज्जामय पुं [निर्यामक] बीमार की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला मुनि । वि. आराधना-कारक ।

णिज्जामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया हुआ, तारित ।

णिज्जाय पुं [दे] उपकार ।

णिज्जाय वि [निर्यात] निर्गत, निःसृत ।

णिज्जायण न [निर्यातन] वैर-शुद्धि, बदला ।

णिज्जावय देखो णिज्जामय ।

णिज्जास पुं [निर्यास] वृक्षों का रस, गोंद ।

णिज्जिअ वि [निर्जित] पराभूत ।

णिज्जिण सक [निर् + जि] जीतना ।

णिज्जिण्ण वि [निर्जीर्ण] नाश-प्राप्त, क्षीण ।

णिज्जीव वि [निर्जीव] चैतन्य-वर्जित ।

णिज्जुंज [निर् + युज्] उपकार करना ।

णिज्जुत्त वि [निर्युक्त] सम्बद्ध, संयुक्त । खचित, जड़ित । प्रतिपादित ।

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण, टीका ।

णिज्जुद्ध देखो णिउद्ध ।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] निस्सारित, निष्कासित । असुन्दर । उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित । रहित ।

णिज्जूह सक [निर् + यूह्] परित्याग करना । रचना, निर्माण करना । बाहर निकालना ।

णिज्जूह पुं [दे. निर्यूह] नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, गोख । द्वार के पास का काष्ठ-विशेष । दरवाजा ।

णिज्जूहग वि [निर्यूहक] ग्रन्थान्तर से उद्धृत करनेवाला ।

णिज्जूहिअ वि [निर्यूहित] रहित ।

णिज्जोअ पुं [दे] प्रकार, राशि । पुष्पों का अवकर ।

णिज्जोअ } पुं [नियोग] उपकरण, साधन ।
णिज्जोग } उपकार ।

णिज्जोअ } पुं [दे. निर्योग] परिकर,
णिज्जोग } सामग्री ।

णिज्जोमि पुं [दे] रज्जु, रस्सी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिज्झ अक [स्निह्] स्नेह करना ।

णिज्झर अक [क्षि] क्षीण होना ।

णिज्झर वि [दे] जीर्ण, पुराना ।

णिज्झर पुं [निर्झर] झरना ।

णिज्झरणी स्त्री [निर्झरणी] नदी ।

णिज्झा सक [नि + ध्यै] देखना, निरीक्षण करना ।

णिज्झा सक [निर् + ध्यै] विशेष चिन्तन करना ।

णिज्झाइत्तु वि [निध्यातृ] देखनेवाला, निरीक्षक ।

णिज्झाइत्तु वि [निर्ध्यातृ] अतिशय चिन्तन करनेवाला ।

णिज्झाइय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित । न. दर्शन, निरीक्षण ।

णिज्झाडिय वि [निर्धाटित] विनाशित ।

णिज्झाय वि [दे] दया-रहित ।

णिज्झाय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित ।

णिज्झूर वि [दे] जीर्ण, पुराना ।

णिज्झोड सक [छिद्] छेदना, काटना ।

णिज्झोसइत्तु वि [निर्झोषयितृ] क्षय करनेवाला, कर्मों का नाश करनेवाला ।

णिट्टंक वि [दे] टंक-च्छिन्न । विषम, असमान ।

णिट्टंकिय वि [निष्टङ्कित] निश्चित, अवधारित ।

णिट्टुअ अक [क्षर्] टपकना, चूना ।

णिट्टुह अक [वि + गल्] गल जाना । नष्ट होना ।

णिट्ठ देखो णिट्ठा = नि + स्था ।

णिट्ठय } सक [नि + स्थापय्] समाप्त
णिट्ठव } करना, पूर्ण करना । अन्त करना, नाश करना । विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना ।

णिट्ठवय वि [निष्ठापक] समाप्त करनेवाला ।

णिट्ठा अक [नि + स्था] खतम होना । समाप्त होना ।

णिट्ठा स्त्री [निष्ठा] अन्त, अवसान, समाप्ति । सद्भाव । °भासि वि [°भाषिन्] निष्ठा-पूर्वक बोलनेवाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करनेवाला ।

णिट्ठाण न [निष्ठान] सर्व-गुण-युक्त भोजन । दही वगैरह व्यञ्जन । समाप्ति । °कहा स्त्री [°कथा] भक्त-कथा-विशेष, दही वगैरह व्यञ्जन की बात-चीत ।

णिट्ठिय वि [निष्ठित] समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ । नष्ट किया हुआ, विनाशित । स्थिर । निष्पन्न, सिद्ध । पुं. मोक्ष । °ट्ठ वि [°र्थ] कृतकृत्य । °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु ।

णिट्ठिय वि [नैष्ठिक] निष्ठावाला ।

णिट्ठीव पुं [निष्ठीव] थूक ।

णिट्ठीवण स्त्रीन [निष्ठीवन] थूक, खखार । थूकना ।

णिट्ठुअ न [निष्ठ्यूत] थूक ।

णिट्ठुभय वि [निष्ठीवक] थूकनेवाला ।

णिट्ठुयण देखो णिट्ठीवण ।

णिट्ठुर } वि [निष्ठुर] निष्ठुर, परुष, कठिन ।
णिट्ठुल }

णिट्ठुवण न [निष्ठीवन] थूक खखार । वि. थूकनेवाला ।

णिट्ठुह अक [नि + स्तम्भ्] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना, स्तब्ध होना ।

णिट्ठुह अक [नि + ष्ठीव्] थूकना ।

णिट्ठुह वि [दे] स्तब्ध, निश्चेष्ट ।

णिट्ठुहावण वि [निष्टम्भक] निश्चेष्ट करनेवाला, स्तब्ध करनेवाला ।

णिट्ठुहिअ न [दे] थूक, निष्ठीवन, खखार ।

णिड पुं [दे] पिशाच, राक्षस ।

णिडल } न [ललाट] भाल ।
णिडाल }

णिड्ड न [नीड] पक्षि-गृह ।

णिड्डहण न [निर्दहन] जला देना ।

णिड्डुह देखो णिट्टुअ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिणाय पुं [निनाद] आवाज ।
णिण्ण वि [निम्न] नीचा, अधस्तन ।
णिण्णक्खु क्रि [निस्सारयति] बाहर निकलता है ।
णिण्णगा स्त्री [निम्नगा] नदी ।
णिण्णट्ठ वि [निर्नष्ट] नाश-प्राप्त ।
णिण्णय पुं [निर्णय] निश्चय, अवधारण । फैसला ।
णिण्णया देखो णिण्णगा ।
णिण्णार वि [निर्नगर] नगर से निर्गत ।
णिण्णाला स्त्री [दे] चञ्चु ।
णिण्णास सक [निर् + नाशय्] विनाश करना ।
णिण्णिद्द वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित ।
णिण्णिमेस वि [निर्निमेष] निमेष-रहित, एकटक । चेष्टा-रहित । अनुपयोगी ।
णिण्णी सक [निर् + णी] निश्चय करना ।
णिण्णुण्णअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा, विषम ।
णिण्णेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित ।
णिण्हइया स्त्री [निह्नविका] लिपि-विशेष ।
णिण्हग, णिण्हय, णिण्हव पुं [निह्नव] सत्य का अपलाप करनेवाला, मिथ्यावादी । अपलाप ।
णिण्हव सक [नि + ह्नु] अपलाप करना ।
णिण्हवग वि [निह्नावक] अपलाप करनेवाला ।
णिण्हवण वि [निह्नवन] अपलाप-कर्त्ता ।
णिण्हविद देखो णिण्हुविद ।
णिण्हुय वि [निह्नुत] अपलपित ।
णिण्हुव देखो णिण्हव = नि + ह्नु ।
णिण्हुविद (शौ) वि [नि + ह्नुत] अपलपित ।
णितिय देखो णिच्च ।
णितुडिअ वि [नितुडित] टूटा हुआ, छिन्न ।
णित्त देखो णेत्त ।
णित्तम वि [निस्तमस्] अन्धकार-रहित । अज्ञान-रहित ।
णित्तल वि [दे] अनिवृत्त ।
णित्ति (अप) देखो णीइ ।
णित्तिंस वि [निस्त्रिंश] करुणा-हीन ।
णित्तिरडि वि [दे] निरन्तर, अव्यवहित ।
णित्तिरडिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ ।
णित्तुप्प वि [दे] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित ।
णित्तुल वि [निस्तुल] असाधारण ।
णित्तुस वि [निस्तुष] तुष-रहित, विशुद्ध ।
णित्तेय वि [निस्तेजस्] तेज-रहित ।
णित्थणण न [निस्तनन] विजय-सूचक ध्वनि ।
णित्थर सक [निर् + तॄ] पार करना, पार उतरना ।
णित्थाण वि [निःस्थान] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट ।
णित्थाम वि [निःस्थामन्] निर्बल, मन्द ।
णित्थार सक [निर् = तारय्] पार उतारना, तारना । बचाना, छुटकारा देना । उद्धार करना ।
णित्थारग वि [निस्तारक] पार जानेवाला, पार उतरनेवाला ।
णित्थिण्ण वि [निस्तीर्ण] उत्तीर्ण, पार-प्राप्त । जिसको पार किया हो वह ।
णिदंस सक [नि + दर्शय्] उदाहरण । बतलाना, दृष्टान्त दिखाना । दिखाना ।
णिदंसण न [निदर्शन] उदाहरण, दृष्टान्त । दिखाना ।
णिदरिसण देखो णिदंसण ।
णिदरिसिम वि [निदर्शित] उपदर्शित, बतलाया हुआ ।
णिदा स्त्री [दे] ज्ञान-युक्त वेदना । जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा ।
णिदाण देखो णिआण ।
णिदाया देखो णिदा ।
णिदाह पुं [निदाघ] घाम, उष्ण । ग्रीष्मकाल । जेठ मास । तीसरे नरक का एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरक-स्थान।

णिदाह पुं [निदाह] असाधारण दाह।

णिदेस पुं [निदेश] आज्ञा, हुकुम।

णिदेसिअ वि [निदेशित] प्रदर्शित। उक्त, कथित।

णिदोच्च न [दे] भय का अभाव। स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती।

णिद्दंझाण न [निद्राध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष।

णिद्दंद वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-रहित।

णिद्दंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ-रहित, कपट-रहित।

णिद्दडी (अप) देखो णिद्दा = निद्रा।

णिद्दड्ढ वि [निर्दग्ध] जलाया हुआ, भस्म किया हुआ। पुं. नृप-विशेष। रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश। °ावत्त पुं [°ावर्त] नरकावास-विशेष। °ासिट्ठ पुं [°ाविशिष्ट] नरक-प्रदेश-विशेष।

णिद्दय वि [निर्दय] निष्ठुर।

णिद्दलण न [निर्दलन] मर्दन, विदारण। वि. मर्दन करनेवाला।

णिद्दह सक [निर् + दह्] जला देना, भस्म करना।

णिद्दा अक [नि + द्रा] निद्रा लेना।

णिद्दा स्त्री [निद्रा] नींद। वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे। °अंत वि [°वत्] निद्रायुक्त, निद्रित। °करी स्त्री. लता-विशेष। °णिद्दा स्त्री [निद्रा] वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके। °ल, °लु वि [°वत्] निद्रावाला। °वअ वि [°प्रद] निद्रा देनेवाला।

णिद्दाअ वि [निद्रात] जो नींद में हो।

णिद्दाअ वि [निर्दाव] अग्नि-रहित।

णिद्दाअ वि [निर्दाय] पैतृक धन से वर्जित।

णिद्दाणी स्त्री [निद्राणी] विद्यादेवी-विशेष।

णिद्दाया देखो णिदा।

णिद्दारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित।

णिद्दाव वि [निर्दाव] दावानल-रहित। जंगल-रहित।

णिद्दिट्ठ वि [निर्दिष्ट] कथित, उक्त। प्रतिपादित, निरूपित।

णिद्दिट्ठु वि [निर्देष्टृ] निर्देश करनेवाला।

णिद्दिस सक [निर् + दिश्] उच्चारण करना, कथन करना। प्रतिपादन करना, निरूपण करना।

णिद्दुक्ख वि [निर्दुःख] दुःख-रहित, सुखी।

णिद्दुर पुं [दे. नेत्तर] देश-विशेष।

णिद्दूसण वि [निर्दूषण] निर्दोष।

णिद्देस पुं [निर्देश] लिंग या अर्थ-मात्र का कथन। विशेष का अभिधान। निश्चयपूर्वक कथन। प्रतिपादन, निरूपण। आज्ञा। वि. जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह।

णिद्देसग, णिद्देसय वि [निर्देशक] निर्देश करनेवाला।

णिद्दोत्थ न [निर्दौःस्थ्य] दुःस्थता का अभाव। वि. स्वस्थ।

णिद्दोस वि [निर्दोष] दूषण-वर्जित, विशुद्ध।

णिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस-विशेष। वि. स्नेहयुक्त, चिकना। कान्ति-युक्त।

णिद्धंत वि [निध्मात] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित।

णिद्धंधस वि [दे] निर्दय। निर्लज्ज।

णिद्धण वि [निर्धन] अकिंचन।

णिद्धण्ण वि [निर्धान्य] धान्य-रहित।

णिद्धम वि [दे] अविभिन्न गृह, एक ही घर में रहनेवाला।

णिद्धमण न [दे] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता।

णिद्धमण न [निर्ध्मान] तिरस्कार। पुं. यक्ष-विशेष।

णिद्धमाय वि [दे] अविभिन्न गृह, एक ही घर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में रहनेवाला।
णिद्धम्म वि [दे] एक ही तरफ जानेवाला।
णिद्धम्म वि [निर्धर्मन्] धर्म-रहित, अधर्मी।
णिद्धय वि [दे] देखो णिद्धम।
णिद्धाड सक [निर् + धाटय्] बाहर निकाल देना।
णिद्धारण न [निर्धारण] गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय से एक भाग का पृथक्करण। निश्चय, अवधारण।
णिद्धाव सक [निर् + धाव्] दौड़ना।
णिद्धुण सक [निर् + धू] विनाश करना। दूर करना।
णिद्धुणिय } वि [निर्धूत] विनाशित, नष्ट किया हुआ। अपनीत।
णिद्धुय }
णिद्धूम वि [निर्धूम] धूम रहित। एक तरह का अपलक्षण।
णिद्धूय देखो णिद्धुय।
णिद्धोअ वि [निर्धौत] धोया हुआ। निर्मल।
णिद्धोभास वि [स्निग्धावभास] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता।
णिधण न [निधन] विनाश, मौत।
णिधत्त वि [निधत्त] निकाचित, निश्चित। न. बँधे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान। वि. निबिड़ भाव को प्राप्त कर्म-पुद्गल।
णिधत्ति स्त्री [निधत्ति] करण-विशेष जिससे कर्म-पुद्गल निबिड़ रूप से व्यवस्थापित होता है।
णिधम्म देखो णिद्धम्म = निर्धर्मन्।
णिधाण देखो णिहाण।
णिधूय देखो णिद्धुण।
णिन्नाम सक [निर् + नमय्] झुकाना।
णिपट्ट न [दे] गाढ़।
णिपडिय वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ।
णिपा सक [नि + पा] पीना।
णिपाइ वि [निपातिन्] नीचे गिरने-वाला। सामने गिरनेवाला।
णिपूर पुं [निपूर] नन्दीवृक्ष।
णिप्पअंप देखो णिप्पकंप।
णिप्पएस वि [निष्प्रदेश] प्रदेश रहित। पुं परमाणु।
णिप्पंक वि [निष्पङ्क] कर्दम-रहित।
णिप्पंकिय वि [निष्पङ्किन्] पंक-रहित।
णिप्पंख सक [निर् + पक्षय्] पक्ष-रहित करना।
णिप्पंद वि [निष्पन्द] चलन-रहित स्थिर।
णिप्पकंप वि [निष्प्रकम्प] कम्प-रहित, स्थिर।
णिप्पक्ख वि [निष्पक्ष] पक्ष-रहित।
णिप्पगल वि [निष्प्रगल] चूनेवाला।
णिप्पच्चवाय वि [निष्प्रत्यवाय] प्रत्यवाय-रहित, निर्विघ्न। निर्दोष, विशुद्ध, पवित्र।
णिप्पच्छिम वि [निष्पश्चिम] अन्तिम, अन्त का। परिशिष्ट, अवशिष्ट।
णिप्पट्ठ वि [दे] अधिक।
णिप्पट्ठ वि [निःस्पष्ट] अस्पष्ट, अव्यक्त। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ।
णिप्पट्ठ वि [निःस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ।
णिप्पडिकम्म वि [निष्प्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन।
णिप्पडियार वि [निष्प्रतिकार] निरुपाय।
णिप्पणिअ वि [दे] पानी से धोया हुआ।
णिप्पण्ण देखो णिप्फण्ण।
णिप्पण्ण वि [निष्प्रज्ञ] बुद्धि-रहित।
णिप्पत्त वि [निष्पत्र] पत्र-रहित।
णिप्पत्ति } देखो णिप्फत्ति।
णिप्पद्दि }
णिप्पभ वि [निष्प्रभ] निस्तेज, फीका।
णिप्परिग्गह वि [निष्परिग्रह] परिग्रह-रहित।
णिप्पलिवयण वि [निष्प्रतिवचन] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिप्पसर वि [निष्प्रसर] जिसका फैलाव न हो।
णिप्पह देखो णिप्पभ।
णिप्पाइय देखो णिप्फाइय।
णिप्पाण वि [निष्प्राण] निर्जीव।
णिप्पाल देखो णेपाल।
णिप्पाव पुं [निष्पाव] एक दिन का उपवास।
णिप्पाव देखो णिप्फाव।
णिप्पिच्छ वि [दे]ऋजु, सरल। दृढ़, मजबूत।
णिप्पिट्ठ वि [निष्पिष्ट] पीसा हुआ। न. पेषण की समाप्ति।
णिप्पिवास वि [निष्पिपास] पिपासा-रहित, निःस्पृह।
णिप्पिवासा स्त्री [निष्पिपासा] स्पृहा का अभाव।
णिप्पिह वि [निःस्पृह] स्पृहा-रहित, निर्मम।
णिप्पीडिअ वि [निष्पीडित] दबाया हुआ।
णिप्पीलण न [निष्पीडन] दबाव, दबाना।
णिप्पीलिय देखो णिप्पीडिअ निचोड़ा हुआ।
णिप्पुंसण न [निष्पुंसन] पोंछना, मार्जन। अभिमर्दन।
णिप्पुन्न वि [निष्पुण्य] पुण्य-रहित।
णिप्पुन्नग वि [निष्पुण्यक] पुण्य-रहित। पुं. एक कुलपुत्र।
णिप्पुलाय पुं [निष्पुलाक] आगामी चौबीसी में होने वाले एक जिन-देव।
णिप्पुलाय वि [निष्पुलाक] चारित्र-दोष से रहित।
णिप्फंद देखो णिप्पंद।
णिप्फंस वि [दे] निस्त्रिंश, निर्दय।
णिप्फज्ज अक [निर् + पद्] नीपजना, उपजना, सिद्ध होना।
णिप्फडिअ वि [निस्फटित] विशीर्ण। जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो। अंकुश-रहित।
णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध।
णिप्फत्ति वि [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि।
णिप्फरिस वि [दे] निर्दय।
णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक।
णिप्फाअ देखो णिप्फाव।
णिप्फाय सक [निर् + पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना।
णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजानेवाला, बनानेवाला, सिद्ध करनेवाला।
णिप्फाव पुं. [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल। एक माप, बाँट-विशेष।
णिप्फिड अक [नि + स्फिट्] बाहर निकलना।
णिप्फुर पुं. [निस्फुर] प्रभा, तेज।
णिप्फेड पुं. [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना।
णिप्फेडय वि [निस्फेटक] बाहर निकालनेवाला।
णिप्फेडिय वि [निस्फेटित] निस्सारित, निष्कासित। भगाया हुआ, नसाया हुआ। अपहृत, छीना हुआ।
णिप्फेडिया स्त्री [निस्फेटिका] अपहरण, चोरी।
णिप्फेस पुं. [दे] आवाज निकलना।
णिप्फेस पुं. [निष्पेष] पीसना। संघर्ष।
णिबंध सक [नि + बन्ध्] बाँधना। करना। उपार्जन करना।
णिबंध पुंन [निबन्ध]सम्बन्ध, संयोग। आग्रह, हठ।
णिबंधण न [निबन्धन] कारण, प्रयोजन, निमित्त।
णिबद्ध वि [निबद्ध] बँधा हुआ। संयुक्त, सम्बद्ध।
णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, गाढ़।
णिबुक्क [दे] देखो णिब्बुक्क।
णिबुड्ड अक [नि + मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिबुड्ड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न ।
णिबोल देखो णिबुड्ड = नि + मस्ज् ।
णिबोह पुं. [निबोध] प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान । अनेक प्रकार का बोध ।
णिब्बंध पुं. [निर्बन्ध] आग्रह ।
णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण ।
णिब्बल देखो णिव्वल = निर् + पद् ।
णिब्बल वि [निर्बल] बल-रहित, दुर्बल ।
णिब्बहिं अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर ।
णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ ।
णिब्बुक्क वि [दे] मूल-रहित ।
णिब्बुड्ड देखो णिब्बुड्ड = निमग्न ।
णिब्भंछ देखो णिब्भच्छ ।
णिब्भंजण न [दे] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह ।
णिब्भंत वि [निर्भ्रान्ति] संशय-रहित ।
णिब्भग्ग न [दे] बगीचा ।
णिब्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य-रहित, कमनसीब, अभागा ।
णिब्भच्छ सक [निर् + भर्त्स्] तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना ।
णिब्भय वि [निर्भय] भय-रहित, निडर ।
णिब्भर सक [निर् + भृ]भरना, पूर्ण करना ।
णिब्भर वि [निर्भर] पूर्ण, भरपूर, व्यापक, फैलनेवाला ।
णिब्भिद सक [निर् + भिद्] तोड़ना, विदारण करना ।
णिब्भिच्च वि [निर्भीक] भय-रहित ।
णिब्भिज्जंत } देखो णिब्भिद ।
णिब्भिज्जमाण } का कवकृ ।
णिब्भिट्ट वि [दे]आक्रान्त ।
णिब्भिण्ण वि [निर्भिन्न] विदारित, तोड़ा हुआ । विद्ध ।
णिब्भीअ वि [निर्भीक]भय-रहित, निडर ।
णिब्भुग्ग वि [दे] भग्न, खण्डित ।
णिब्भुय देखो णिभुअ ।
णिब्भेय पुं. [निर्भेद] भेदन, विदारण ।
णिब्भेरिय वि [निर्भेरित] प्रसारित, फैलाया हुआ ।
णिभ देखो णिह = निभ ।
णिभंग पुं. [निभङ्ग] भञ्जन, खण्डन, त्रोटन ।
णिभच्छण देखो णिब्भच्छण ।
णिभाल सक [नि + भालय्] देखना, निरीक्षण करना ।
णिभिअ } देखो णिहुअ ।
णिभुअ }
णिभेल सक[निर् + भेलय्] बाहर करना ।
णिभेलण न [दे] गृह, स्थान ।
णिम सक [नि + अस्] स्थापन करना ।
णिमंत सक [नि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना । न्यौता देना ।
णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ ।°जला स्त्री. नदी-विशेष ।
णिमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना ।
णिमज्जग वि [निमज्जक] निमज्जन करनेवाला । पुं वानप्रस्थाश्रमी तापस-विशेष जो स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं ।
णिमाणिअ देखो णिम्माणिअ = निर्मानित ।
णिमि सक [नि + युज्] जोड़ना ।
णिमिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित ।
णिमिअ वि [दे] सूंघा हुआ ।
णिमिण देखो णिम्माण = निर्माण ।
णिमित्त न [निमित्त] हेतु । सहकारि-कारण । भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र । अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ । जैन साधुओं की शिक्षा का एक दोष । °पिंड पुं [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुई भिक्षा ।
णिमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार ।
णिमित्तिअ देखो णेमित्तिअ ।
णिमिल्ल अक [नि+मील्] आँख मींचना ।
णिमिल्ल वि [निमीलित] मुद्रित-नेत्र ।
णिमिल्लण देखो णिमीलण ।
णिमिस अक [नि + मिष्] आँख मूँदना ।
णिमिस पुं. [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षिमीलन, पलक मारने भर का समय ।
णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच ।
णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित (नेत्र) ।
णिमीस न [निमिश्र] एक विद्याधर-नगर ।
णिमे सक [नि + मा] स्थापन करना ।
णिमेण न [दे] स्थान, जगह ।
णिमेल स्त्रीन [दे] दन्त-मांस ।
णिमेस पुं [निमेष] निमीलन, अक्षि-संकोच, पलक का गिरना, पलक ।
णिमेसि देखो णिमे ।
णिमेसि वि [निमेषिन्] आँख मूँदनेवाला ।
णिम्म सक [निर्+मा] बनाना, निर्माण करना ।
णिम्म पुंस्त्री [नैम] जमीन से ऊँचा निकलता प्रदेश ।
णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत ।
णिम्मंथण न [निर्मथन] विनाश । वि. विनाशक ।
णिम्मंस वि [निर्मांस] मांस-रहित, शुष्क ।
णिम्मंसा स्त्री [दे] चामुण्डा देवी ।
णिम्मंसु वि [दे. निःश्मश्रु] तरुण ।
णिम्मक्खिअ देखो णिम्मच्छिअ = निर्मक्षिक ।
णिम्मच्छ सक [नि + म्रक्ष] विलेपन करना ।
णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] ईर्ष्या-रहित ।
णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] मक्षिका का अभाव । निर्जनता ।
णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित ।
णिम्मज्जिय वि [निर्मार्जित] उपलिप्त ।
णिम्मण वि [निर्मनस्] मन-रहित ।
णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित ।
णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] निरन्तर मर्दन करनेवाला । पुं. चोरों की एक जाति ।
णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो ।
णिम्मम वि [निर्मम] ममता-रहित, निःस्पृह । पुं भारतवर्ष के एक भावी जिनदेव ।
णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ ।
णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध । पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तर ।
णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य ।
णिम्मव सक [निर् + मा] बनाना, रचना, करना ।
णिम्मव सक [निर् + मापय्] बनवाना, कराना, रचना करना ।
णिम्मवइत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवानेवाला ।
णिम्मह सक [गम्] जाना, गमन करना । अक. फैलना ।
णिम्मह पुं [निर्मथ] विनाश । वि. विनाशक ।
णिम्मा देखो णिम्म ।
णिम्माण सक [निर्+मा] बनाना, करना, रचना ।
णिम्माण न [निर्माण] रचना, बनावट, कृति । शरीर के अंगोपांग के निर्माण में नियामक कर्म-विशेष ।
णिम्माण वि [निर्मान] मान-रहित ।
णिम्माणअ वि [निर्मापक] बनानेवाला ।
णिम्माणिअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत ।
णिम्माणुस वि [निर्मानुष] मनुष्य-रहित ।
णिम्माय वि [निर्मात] रचित, विहित, कृत । निपुण, अभ्यस्त, कुशल ।
णिम्माय न [निर्माय] निर्विकृतिक तप ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिम्मालिअ देखो णिम्मल्ल ।
णिम्माव सक [निर्+मापय्] बनवाना, करवाना ।
णिम्मिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ । °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को ईश्वरादि-कृत माननेवाला ।
णिम्मिस्स वि [निर्मिश्र] मिला हुआ, मिश्रित । °वल्ली स्त्री. अत्यन्त नजदीक का स्वजन ।
णिम्मीस वि [निर्मिश्र] मिश्रण-रहित ।
णिम्मीसुअ वि [दे] दाढ़ी-मूँछ-वर्जित ।
णिम्मुक्क वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया ।
णिम्मुक्ख पुं [निर्मोक्ष] मुक्ति, छुटकारा ।
णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह ।
णिम्मेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ।
णिम्मोअ पुं [निर्मोक] कञ्चुक, सर्प की त्वचा ।
णिम्मोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक ।
णिम्मोडण न [निर्मोटन] विनाश ।
णिम्मोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित ।
णिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित ।
णिरइ स्त्री [निर्ऋति] मूल-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ।
णिरइयार वि [निरतिचार] अतिचार-रहित, दूषण-वर्जित ।
णिरइसय वि [निरतिशय] अत्यन्त, सर्वाधिक ।
णिरईआर देखो णिरइयार ।
णिरंकुस वि [निरङ्कुश] अंकुश-रहित, स्वच्छन्दी ।
णिरंगण वि [निरङ्गण] निर्लेप ।
णिरंगी स्त्री [दे] घूँघट ।
णिरंजण वि [निरञ्जन] निर्लेप ।
णिरंतय वि [निरन्तक] अन्त-रहित ।
णिरंतर वि [निरन्तर] व्यवधान-रहित ।
णिरंतराय वि [निरन्तराय] निर्विघ्न, निर्बाध । व्यवधान-रहित, सतत ।
णिरंतरिय वि [निरन्तरित] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित ।
णिरंध वि [नीरन्ध्र] छिद्र-रहित ।
णिरंबर वि [निरम्बर] वस्त्र-रहित ।
णिरंभा स्त्री [निरम्भा] वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी ।
णिरंस वि [निरंश] अंश-रहित, अखण्ड, सम्पूर्ण ।
णिरंह° वि [निरंहस्] निर्मल, पवित्र ।
णिरक्क पुं [दे] चोर । पृष्ठ, पीठ । वि. स्थित ।
णिरक्किय वि [निराकृत] अपाकृत, निरस्त ।
णिरक्ख सक [निर्+ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना ।
णिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित ।
णिरगार वि [निराकार] आकार-रहित ।
णिरग्गल वि [निरर्गल] रुकावट से रहित । स्वैरी, निरंकुश ।
णिरच्चण वि [निरर्चन] अर्चन-रहित ।
णिरट्ठ वि [निरर्थ] निष्प्रयोजन, निकम्मा । न. प्रयोजन का अभाव ।
णिरण वि [निर्ऋण] करज से मुक्त ।
णिरणास देखो णिरिणास = नश् ।
णिरणुकंप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित ।
णिरणुक्कोस वि [निरनुक्रोश] निर्दय ।
णिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप-रहित ।
णिरत्थ वि [निरस्त] अपास्त, निराकृत ।
णिरत्थ, णिरत्थग, णिरत्थय } वि [निरर्थ,°क] अपार्थक, निकम्मा, निष्प्रयोजन ।
णिरन्नय पुं [निरन्वय] अन्वय-रहित ।
णिरप्प अक [स्था] बैठना ।
णिरप्प पुं [दे] पृष्ठ, पीठ । वि. उद्वेष्टित ।
णिरप्पण वि [निरात्मीय] परकीय ।
णिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह-रहित ।
णिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वचनीय ।

णिरभिस्संग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-रहित, निःस्पृह ।

णिरय पुं [निरय] नरक, पाप-भोग-स्थान । नरक-स्थित जीव । °पाल पुं. देव-विशेष । °विलिया स्त्री [°विलिका] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष । नरक-विशेष ।

णिरय वि [निरत] आसक्त । तत्पर, तल्लीन ।

णिरय वि [नीरजस्] रजो-रहित, निर्मल ।

णिरव सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना ।

णिरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना ।

णिरवइक्ख वि [निरपेक्ष] निरीह, निःस्पृह ।

णिरवकंख वि [निरवकाङ्क्ष] स्पृहा-रहित ।

णिरवकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] निःस्पृह ।

णिरवगाह वि [निरवगाह] अवगाहन-रहित ।

णिरवग्गह वि [निरवग्रह] निरंकुश, स्व-च्छन्दी ।

णिरवच्च वि [निरपत्य] निःसन्तान ।

णिरवज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध ।

णिरवणाम देखो णिरोणाम ।

णिरवयक्ख देखो णिरवइक्ख ।

णिरवयव वि [निरवयव] अवयव-रहित, निरंश ।

णिरवयास वि [निरवकाश] अवकाश-रहित ।

णिरवराह वि [निरपराध] बेगुनाह ।

णिरवराहि वि [निरपराधिन्] ऊपर देखो ।

णिरवलंब वि [निरवलम्ब] असहाय ।

णिरवलाव वि [निरपलाप] अपलाप-रहित । गुप्त बात को प्रकट नहीं करनेवाला ।

णिरवसंक वि [निरपशङ्क] दुःशंका-वर्जित ।

णिरवसर वि [निरवसर] अवसर-रहित ।

णिरवसाण वि [निरवसान] अन्त-रहित ।

णिरवसेस वि [निरवशेष] सकल ।

णिरवह सक [निर् + वह्] निर्वाह करना, निबाहना ।

णिरवाय वि [निरपाय] उपद्रव-रहित, विघ्न-वर्जित । निर्दोष, विशुद्ध ।

णिरविक्ख, णिरवेक्ख, णिरवेच्छ देखो णिरवइक्ख ।

णिरस सक [निर् + अस्] अपास्त करना ।

णिरसण वि [निरशन] आहार-रहित, उपोषित ।

णिरसण न [निरसन] निराकरण, हटा देना, खण्डन ।

णिरसि वि [निरसि] खड्ग-रहित ।

णिरस्साय वि [निरास्वाद] स्वाद-रहित ।

णिरस्सावि वि [निरास्राविन्] नहीं टपकने-वाला, छिद्र-रहित ।

णिरहंकार वि [निरहंकार] गर्व-रहित ।

णिरहारि वि [निराहारिन्] आहार-रहित ।

णिरहिगरण वि [निरधिकरण] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष ।

णिरहिलास वि [निरभिलाष] इच्छा-रहित ।

णिरहेउ वि [निर्हेतु] कारणरहित ।

निराइअ वि [निरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित ।

णिराउस वि [निरायुष्] आयु-रहित ।

णिराउह वि [निरायुध] निःशस्त्र ।

णिराकर, णिरागर सक [निरा + कृ] निषेध करना । दूर करना । विवाद का फैसला करना ।

णिरागस वि [निराकर्ष] रंक ।

णिरागार वि [निराकार] आकृति-रहित, अपवाद रहित ।

णिराणंद वि [निरानन्द] आनन्द-रहित, शोकातुर ।

णिराणिउ (अप) अ. निश्चित ।

णिराणुकंप देखो णिरणुकंप ।

णिराणुवत्ति वि [निरनुवर्तिन्] अनुसरण नहीं करनेवाला, सेवा नहीं करनेवाला ।

णिराद वि [दे] नष्ट, विनाश-प्राप्त ।

णिराबाध, णिराबाह वि [निराबाध] आबाधा-रहित, हरकत-रहित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिरामगंध वि [निरामगन्ध] दूषण-रहित, निर्दोष चारित्रवाला।

णिरामय वि [निरामय] रोग-रहित।

णिरामिस वि [निरामिष] आसक्तिहीन निरीह, निरभिष्वङ्ग।

णिराय वि [दे] ऋतु, सरल। प्रकट, खुला। पुं. शत्रु। वि. लम्बा किया हुआ। प्रचुर, अधिक।

णिरायंक वि [निरातङ्क] आतङ्क-रहित, नीरोग।

णिरायर देखो णिरागर।

णिरायव वि [निरातप] आतप-रहित।

णिरायार देखो णिरागार।

णिरायास वि [निरायास] परिश्रम-रहित।

णिरारंभ वि [निरारम्भ] आरम्भ-वर्जित।

णिरालंब वि [निरालम्ब] आलम्ब-रहित।

णिरालंबण वि [निरालम्बन] आशंसा-रहित, संशय-रहित, प्रार्थना-रहित, इच्छा-रहित, अनुमान-रहित। आलम्बन-रहित।

णिरालय वि [निरालय] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करनेवाला।

णिरालोय वि [निरालोक] प्रकाश-रहित।

णिरावकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] आकांक्षा-रहित, निःस्पृह।

णिरावयक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह।

णिरावरण वि [निरावरण] प्रतिबन्धक-रहित। नग्न।

णिरावराह वि [निरपराध] अपराध-रहित।

णिराविक्ख } देखो णिरावयक्ख।
णिरावेक्ख }

णिरास वि [निराश] हताश। न. आशा का अभाव।

णिरास वि [दे] क्रूर।

णिरासंस वि [निराशंस] आकांक्षा-रहित।

णिरासय वि [निराश्रय] निराधार।

णिरासव देखो [निराश्रव] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित।

णिरासस देखो णिरासंस।

णिराह वि [दे] निर्दय।

णिरिअ वि [दे] बाकी रखा हुआ।

णिरिड देखो णिरड।

णिरिक्क वि [दे] नत।

णिरिंगी [दे] देखो णीरंगी।

णिरिंधण वि [निरिन्धन] इन्धन-रहित।

णिरिक्ख सक [निर् + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना।

णिरिग्ध सक [नि + ली] आश्लेष करना। अक छिपना।

णिरिण वि [निऋ॑ण] ऋण-मुक्त।

णिरिणास सक [गम्] गमन करना।

णिरिणास सक [पिष्] पीसना।

णिरिणास अक [नश्] पलायन करना। भागना।

णिरिणिज्ज सक [पिष्] पीसना।

णिरिंत्ति स्त्री [निरिति] एक राशि का नाम।

णिरीह वि [निरीह] निष्काम।

णिरु (अप) अ. निश्चित।

णिरुअ देखो णिरुज।

णिरुईकय [निरुईजीकृत] नीरोग किया गया।

णिरुंभ सक [नि + रुध्] निरोध करना।

णिरुक्कंठ वि [निरुत्कण्ठ] उत्कण्ठा-रहित, निरुत्साह।

णिरुग्ध देखो णिरिग्घ।

णिरुच्चार वि [निरुच्चार] उच्चार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन से वर्जित। पाखाना जाने से जो रोका गया हो।

णिरुच्छव वि [निरुत्सव] उत्सव-रहित।

णिरुच्छाह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन।

णिरुज वि [निरुज] रोग-रहित। °सिख न [°शिख] एक प्रकार की तपश्चर्या।

णिरुज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलसी ।

णिरुट्ठाइ वि [निरुत्थायिन्] नहीं उठनेवाला ।

निरुत्त वि [निरुक्त] कथित । न निश्चित उक्ति । व्युत्पत्ति । वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है । अकथित, दृष्टान्त । व्युत्पत्ति-युक्त ।

णिरुत्त वि [दे] निश्चित । चिन्ता-रहित ।

णिरुत्तत्त वि [निरुत्तप्त] विशेष ताप-युक्त, सन्तप्त ।

णिरुत्तम वि [निरुत्तम] अत्यन्त श्रेष्ठ ।

णिरुत्तर वि [निरुत्तर] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त ।

णिरुत्ति स्त्री [निरुक्ति] व्युत्पत्ति ।

णिरुत्तिअ वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द ।

णिरुत्तिय न [नैरुक्तिक] निरुक्ति, व्युत्पत्ति ।

णिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेटवाला, अनुदर ।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] रोका हुआ । आवृत, आच्छादित । पुं. मत्स्य की एक जाति ।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] थोड़ा, संक्षिप्त ।

णिरुद्धव्व, णिरुब्भंत } देखो णिरुंभ का कवकृ. ।

णिरुलि पुंस्त्री [दे] कुम्भीर—नक्र की आकृति-वाला एक जन्तु ।

णिरुवकिट्ठ देखो णिरुवक्किट्ठ ।

णिरुवक्कम वि [निरुपक्रम] जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य) । विघ्नरहित, अबाध ।

णिरुवक्कय वि [दे] अकृत, नहीं किया हुआ ।

णिरुवक्किट्ठ वि [निरुपक्लिष्ट] क्लेश-वर्जित, दुःखरहित ।

णिरुवक्केस वि [निरुपक्लेश] शोक आदि क्लेशों से रहित ।

णिरुवक्ख वि [निरुपाय] अनिर्वचनीय ।

णिरुवग वि [निरुपक] प्रतिपादक ।

णिरुवगारि वि [निरुपकारिन्] उपकार को नहीं माननेवाला, प्रत्युपकार नहीं करनेवाला ।

णिरुवग्गह वि [निरुपग्रह] उपकार नहीं करनेवाला ।

णिरुवट्ठाणि वि [निरुपस्थानिन्] निरुद्यमी, आलसी ।

णिरुवद्दव वि [निरुपद्रव] उपद्रव-रहित, आबाधा-वर्जित ।

णिरुवम वि [निरुपम] असमान, असाधारण ।

णिरुवयरिय वि [निरुपचरित] वास्तविक, तथ्य ।

णिरुवयार वि [निरुपकार] उपकार-रहित ।

णिरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप-वर्जित, अलिप्त ।

णिरुवसग्ग वि [निरुपसर्ग] उपद्रव-वर्जित । पुं. मोक्ष । न. उपसर्ग का अभाव ।

णिरुवहय वि [निरुपहत] उपघात-रहित, अक्षय । अप्रतिहत ।

णिरुवहि वि [निरुपधि] माया-रहित, निष्कपट ।

णिरुवार सक [ग्रह्] ग्रहण करना ।

णिरुवालंभ वि [निरुपालम्भ] उपालम्भशून्य ।

णिरुव्विग्ग वि [निरुद्विग्न] उद्वेग-रहित ।

णिरुस्साह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन ।

णिरूव सक [नि + रूपय्] विचार कर कहना । विवेचन करना । देखना । दिखलाना । तलाश करना ।

णिरूवण न [निरूपण] विलोकन, निरीक्षण । वि. दिखलानेवाला ।

णिरूवणया स्त्री [निरूपणा] निरूपण ।

णिरूवाविअ वि [निरूपित] जिस की खोज कराई गई हो वह ।

णिरूसुअ वि [निरुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित ।

णिरूह पुं [निरूह] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन ।

णिरेय वि [निरेजस्] निष्कम्प, स्थिर ।

णिरेयण वि [निरेजन] निश्चल, स्थिर ।

णिरोणाम पुं [निरवनाम] नम्रता-रहित,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गर्वित, उद्धत ।
णिरोय वि [नीरोग] रोग-रहित ।
णिरोव पुं [दे] आदेश, आज्ञा, रुक्का ।
णिरोवयार वि [निरुपकार] उपकार को नहीं माननेवाला ।
णिरोविअ देखो णिरूविअ ।
णिरोह पुं [निरोध] रुकावट, रोकना ।
णिरोहग वि [निरोधक] रोकनेवाला ।
णिलंक पुं [दे] पीकदान ।
णिलय पुं [निलय] घर, स्थान, आश्रय ।
णिलयण न [निलयन] वसति, स्थान ।
णिलाड न [ललाट] भाल ।
णिलिअ देखो णिलीअ ।
णिलिज्ज } सक [नी+ली] आश्लेष
णिलीअ } करना । दूर करना । अक. छिप जाना ।
णिलीइर वि [निलेतृ] आश्लेष करनेवाला ।
णिलुक्क देखो णिलीअ ।
णिलुक्क सक[तुड्] तोड़ना ।
णिलुक्क वि [दे. निलीन] निलीन, प्रच्छन्न, तिरोहित । लीन, आसक्त ।
णिलुक्कण न [निलयन] छिपना ।
णिल्लंक [दे] देखो णिलंक ।
णिल्लंछण न [निर्लाञ्छन] शरीर के किसी अवयव का छेदन ।
णिल्लच्छ देखो णेल्लच्छ ।
णिल्लच्छण वि [निर्लक्षण] मूर्ख, बेवकूफ । अपलक्षणवाला, खराब ।
णिल्लज्ज वि [निर्लज्ज] लज्जा-रहित ।
णिल्लज्जिम पुंस्त्री [निर्लज्जिमन्] निर्लज्ज-पन, बेशरमी ।
णिल्लस अक [उत्+लस्] उल्लसना, विकसना ।
णिल्लसिअ वि [दे] निर्गत, निःसृत, निर्यात ।
णिल्लालिअ वि [निर्लालित] निःसारित ।
णिल्लिह सक [निर्+लिख्] घिसना ।
णिल्लुंछ सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना ।
णिल्लुत्त वि [निर्लुप्त] विनाशित ।
णिल्लूर सक [छिद्] छेदन करना, काटना ।
णिल्लेव वि [निर्लेप] लेप-रहित ।
णिल्लेवग पुं [निर्लेपक] धोबी ।
णिल्लेवण न [निर्लेपन] मल को दूर करना । वि. निर्लेप, लेप-रहित । °काल पुं. वह काल जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो ।
णिल्लेविअ वि [निर्लेपित] लेप-रहित किया हुआ । बिलकुल छूट गया हुआ ।
णिल्लेहण न [निर्लेखन] उद्वर्त्तन, पोंछना ।
णिल्लोभ } वि [निर्लोभ] लोभ-रहित ।
णिल्लोह }
णिव पुं [नृप]राजा ।°तणय वि [°सम्बन्धिन्] राजसम्बन्धी, राजकीय ।
णिवइ पुं [नृपति] ऊपर देखो । °मग्ग पुं [°मार्ग] राजमार्ग, जाहिर रास्ता ।
णिवइअ वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ । एक प्रकार का विष ।
णिवइत्तु वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला ।
णिवच्छण न [दे] अवतारण, उतारना ।
णिवज्ज अक [निर्+पद्] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना ।
णिवज्ज अक [नि+सद्] बैठना ।
णिवज्ज अक [नि+सद्] सोना ।
णिवट्ट सक [नि+वर्तय्] निवृत्त करना ।
णिवट्ट अक [नि+वृत्] निवृत्त होना, लौटना, हटना । रुकना ।
णिवट्ट वि [निवृत्त] निवृत्त, हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख । न. निवृत्ति ।
निवट्टण न [निवर्तन] निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध । जहाँ रास्ता बन्द होता हो वह स्थान ।
णिवट्टिम वि [निर्वर्तित] पका हुआ, फलित, सिद्ध ।
णिवड अक [नि+पत्] नीचे पड़ना, नीचे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिरना ।
णिवडण न [निपतन] अधःपतन ।
णिवडिर वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला ।
णिवण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ । पुं. जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग । °णिवण्ण पुं [°निषण्ण] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग ।
णिवण्णुस्सिय पुं [निषण्णोत्सृत] जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ।
णिवत्त देखो णिवट्ट = नि + वृत् ।
णिवत्त देखो णिवट्ट = निवृत्त ।
णिवत्तण देखो णिवट्टण ।
णिवत्तय वि [निवर्तक] लौटनेवाला । वापस करनेवाला ।
णिवत्ति स्त्री [निवृत्ति] निवर्तन ।
णिवत्तिअ वि [निर्वर्त्तित] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध ।
णिवत्तिअ वि [निर्वर्त्तित] निष्पादित ।
णिवद्दि देखो णिवत्ति ।
णिवय अक [नि + पत्] समाना, अन्तर्भूत होना ।
णिवय देखो णिवड ।
णिवय पुं [निपात] नीचे गिरना, अधःपतन ।
णिवरुण पुं [निवरुण] वृक्ष-विशेष ।
णिवस अक [नि + वस्] निवास करना ।
णिवसण न [निवसन] वस्त्र ।
णिवह सक [गम्] जाना, गमन करना ।
णिवह अक [नश्] पलायन करना । नष्ट होना ।
णिवह सक [पिष्] पीसना ।
णिवह पुंन [निवह] समूह ।
णिवह पुंन [दे] समृद्धि, वैभव ।
णिवाइ वि [निपातिन्] गिरनेवाला ।
णिवाड सक [नि + पातय्] नीचे गिराना ।
णिवाण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, चरही । °साला स्त्री [°शाला] पशुओं का पानी पिलाने का स्थान ।
णिवाय देखो णिवाड ।
णिवाय पुं [दे] पसीना ।
णिवाय पुं [निपात] अधः-पतन, गिरना । संयोग, सम्बन्ध । च, प्र आदि व्याकरण-प्रसिद्ध अव्यय । विनाश ।
णिवाय वि [निवात] पवन-रहित, स्थिर ।
णिवायण न [निपातन] गिराना, निपातन, ढाहना । व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि, प्रकृति आदि के बिना विभाग किये ही अखण्ड शब्द की निष्पत्ति ।
णिवार सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना, रोकना ।
णिवारग वि [निवारक] निषेध करनेवाला, रोकनेवाला ।
णिवारण न [निवारण] निषेध, रुकावट । शीत आदि को रोकनेवाला, गृह, वस्त्र आदि । वि. निवारण करनेवाला, रोकनेवाला ।
णिवारय देखो णिवारग ।
णिवास पुं [निवास] निवसन, रहना । डेरा ।
णिविअ देखो णिमिअ = न्यस्त ।
णिविट्ट देखो णिवट्ट = निवृत्त ।
णिविट्ठ वि [निविष्ट] स्थित, बैठा हुआ । आसक्त, लीन ।
णिविट्ठि वि [निर्विष्ट] लब्ध, गृहीत । °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] जैन साधुओं का एक तरह का आचार ।
णिविड देखो णिबिड ।
णिविडिअ देखो णिबिडिय ।
णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव । वापस लौटना, प्रत्यावर्त्तन ।
णिविद्ध वि [दे] सोकर उठा हुआ । हताश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्भट। निर्दय।
णिविन्न वि [निर्विज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित।
णिविस अक [नि + विश्] बैठना।
णिविस (अप) देखो णिमिस।
णिविसिर वि [निवेष्टृ] बैठनेवाला।
णिवुज्झमाण वि [न्युह्यमान] जो ले जाया जाता हो वह।
णिवुट्ठ वि [निवृष्ट] बरसा हुआ।
णिवुड्ढ सक [नि + वर्धय्] त्याग करना, छोड़ना। हानि करना।
णिवुड्ढि स्त्री [निवृद्धि] वृद्धि का अभाव। दिन की छोटाई।
णिवुण देखो णिउण।
णिवुत्त देखो णिवट्ट = निवृत्त।
णिवुदि स्त्री [निवृति] परिवेष्टन।
णिवूढ देखो णिव्वूढ।
णिवेअ सक [नि + वेदय्] सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करना, अर्ज करना। अर्पण करना। मालूम करना।
णिवेअग वि [निवेदक] सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करनेवाला, प्रार्थी।
णिवेअण, णिवेअणय } न [निवेदन] सम्मान-पूर्वक ज्ञापन, विनय। नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि।
णिवेअणा स्त्री [निवेदना] ऊपर देखो। °पिंड पुं [°पिण्ड] देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य।
णिवेअय देखो णिवेअग।
णिवेदइत्तअ वि [निवेदयितृ] निवेदन करनेवाला।
णिवेस सक [नि + वेशय्] स्थापना करना, बैठाना।
णिवेस पुं [निवेश] स्थापन, आधान। प्रवेश। आवास-स्थान, डेरा।
णिवेस पुं [नृपेश] चक्रवर्ती राजा।
णिवेसण न [निवेशन] स्थान, बैठना। एक ही दरवाजेवाले अनेक गृह। घर।
णिव्व न [नीव्र] छदि, पटल-प्रान्त। छप्पर के ऊपर का खपरैल।
णिव्व न [दे] कपट, चिह्न। बहाना।
णिव्वक्कर वि [दे] परिहास-रहित, सत्य।
णिव्वक्कल वि [निर्वल्कल] वल्कल-रहित।
णिव्वट्ट देखो णिव्वत्त = निर् + वर्त्तय्।
णिव्वट्ट (अप) देखो णिच्चट्ट।
णिव्वट्टग वि [निवर्तक] बनानेवाला, कर्ता।
णिव्वट्टिम देखो णिवट्टिम।
णिव्वट्टिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ।
णिव्वड सक [मुच्] दुःख को छोड़ना।
णिव्वड अक [भू] पृथक् होना। स्पष्ट होना।
णिव्वड देखो णिव्वल = निर् + पद्।
णिव्वडिअ वि [भूत] पृथग्-भूत। स्पष्टीभूत, जो व्यक्त हुआ हो।
णिव्वडिअ वि [निष्पन्न] सिद्ध, कृत, निर्वृत्त।
णिव्वढ वि [दे] नंगा।
णिव्वण वि [निर्व्रण] व्रण-रहित।
णिव्वण्ण सक [निर् + वर्णय्] प्रशंसा करना। देखना।
णिव्वत्त सक [निर् + वर्त्तय्] बनाना, करना, सिद्ध करना।
णिव्वत्त सक [निर् + वृत्तय्] वर्तुल करना।
णिव्वत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, रचित, निर्मित।
णिव्वत्त वि [निर्वर्त्य] बनाने-योग्य, साध्य।
णिव्वत्तण न [निर्वर्त्तन] निष्पत्ति, रचना, बनावट। °ाधिकरणिया, °ाहिगरणिया स्त्री [°ाधिकरणिकी] शस्त्र बनाने की क्रिया।
णिव्वत्तय वि [निर्वर्त्तक] निष्पन्न करनेवाला, बनानेवाला।
णिव्वत्ति स्त्री [निर्वृत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण। देखो णिव्वित्ति।
णिव्वमिअ वि [दे] परिभुक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिव्वय अक [निर्+वृ] शान्त होना, उपशान्त होना।

णिव्वय वि [निर्वृत] उपशान्त, शम-प्राप्त। परिणत, परिणामप्राप्त।

णिव्वय वि [निर्व्रत] व्रत-रहित, नियम-रहित।

णिव्वयण न [निर्वचन] निरुक्ति, शब्दार्थ-कथन। उत्तर। वि. निरुक्ति करनेवाला, निर्वाचक।

णिव्वर सक [कथय्] दुःख कहना।

णिव्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना।

णिव्वल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना।

णिव्वल अक [निर्+पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना।

णिव्वल देखो णिच्चल = क्षर्।

णिव्वल देखो णिव्वड = भू।

णिव्वलिअ वि [दे] जल-धौत। प्रविगणित। विघटित। वियुक्त।

णिव्वव सक [निर्+वापय्] ठण्ढा करना, बुझाना। शान्त करना।

णिव्वह अक [निर्+वह्] निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। आजीविका चलाना।

णिव्वह सक [उद्+वह्] धारण करना। ऊपर उठाना।

णिव्वहण न [निर्वहण] निर्वाह, अन्त, नाटक की एक सन्धि।

णिव्वहण न [दे] विवाह, शादी।

णिव्वा अक [वि+श्रम्] विश्राम करना।

णिव्वाघाइम वि [निर्व्याघातिम] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित।

णिव्वाघाय वि [निर्व्याघात] व्याघात-वर्जित। न. व्याघात का अभाव।

णिव्वाघाया स्त्री [निर्व्याघाता] एक विद्या-देवी।

णिव्वाण न [निर्वाण] मुक्ति, निर्वृति। सुख, चैन, तृप्ति, शान्ति, दुःख-निर्वृत्ति। बुझाना, विध्यापन। वि. बुझा हुआ। पुं. ऐरवत वर्ष में होनेवाले एक जिन-देव का नाम।

णिव्वाण न [दे] दुःख-कथन।

णिव्वाणि पुं [निर्वाणिन्] भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिनदेव।

णिव्वाणी स्त्री [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्ति-नाथ की शासन-देवी।

णिव्वाय वि [निर्वाण] व्यतीत।

णिव्वाय वि [विश्रान्त] जिसने विश्राम किया हो वह। सुखित, निर्वृत।

णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित।

णिव्वालिय वि [भावित] पृथक् किया हुआ।

णिव्वाव देखो णिव्वव।

णिव्वाव पुं [निर्वाप] घी, शाक आदि का परिमाण। °कहा स्त्री [°कथा] एक तरह की भोजन-कथा।

णिव्वावइत्तअ(शौ) वि [निर्वापयितृक] ठण्ढा करनेवाला।

णिव्वावय वि [निर्वापक] आग बुझानेवाला।

णिव्वासण न [निर्वासन] देश निकाला।

णिव्वाह पुं [निर्वाह] निभाना, पार-प्राप्ति। आजीविका, जीवन-सामग्री।

णिव्वाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करनेवाला।

णिव्वाहण न [निर्वाहण] निर्वाह, निभाना। निस्सार करना।

णिव्वाहिअ वि [निर्वाहित] अतिवाहित, बिताया हुआ, गुजारा हुआ।

णिव्वाहिअ वि [निर्व्याधिक] व्याधि-रहित, नीरोग।

णिव्विअप्प देखो णिव्विगप्प।

णिव्विआर वि [निर्विकार] विकार-रहित।

णिव्विइअ वि [निर्विकृतिक] घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित। न. प्रत्या-ख्यान-विशेष जिसमें घृत आदि विकृतियों का त्याग किया जाता है।

णिव्विइगिच्छ वि [निर्विचिकित्स] फलप्राप्ति में शंका-रहित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिव्विइगिच्छ न [निर्विचिकित्स्य] फलप्राप्ति में सन्देह का अभाव ।
णिव्विइगिच्छा स्त्री [निर्विचिकित्सा] फल प्राप्ति में शंका का अभाव ।
णिव्विंद सक [निर् + विन्द्] अच्छी तरह विचारना ।
णिव्विंद सक [निर् + विद्] घृणा करना ।
णिव्विकप्प } वि [निर्विकल्प] सन्देह-
णिव्विगप्प } रहित । भेद-रहित ।
णिव्विगइय देखो णिव्विइय ।
णिव्विगप्पग न [निर्विकल्पक] बौद्ध-प्रसिद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष ।
णिव्विगिअ देखो णिव्विइअ ।
णिव्विग्घ वि [निर्विघ्न] विघ्न-रहित, बाधा-वर्जित ।
णिव्विंचिंत वि [निर्विचिन्त] निश्चिन्त ।
णिव्विज्ज अक [निर् + विद्] निर्वेद पाना, विरक्त होना ।
णिव्विज्ज वि [निर्विद्य] मूर्ख ।
णिव्विट्ठ वि [निर्वृष्ट] उपार्जित ।
णिव्विट्ठ वि [दे] योग्य ।
णिव्विट्ठ वि [निर्विष्ट] उपभुक्त, आसेवित, परिपालित । °काइय न [°कायिक] जैन शास्त्र में प्रतिपादित एक तरह का चारित्र ।
णिव्विण्ण वि [निर्विण्ण] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न ।
णिव्वित्त वि [दे] सो कर उठा हुआ ।
णिव्वित्ति देखो णिव्वित्ति । इन्द्रिय का आकार, द्रव्येन्द्रिय-विशेष ।
णिव्विद देखो णिव्विंद = निर् + विद् ।
णिव्विदुगुंछ वि [निर्विजुगुप्स] घृणा-रहित ।
णिव्विभाग वि [निर्विभाग] विभाग-रहित ।
णिव्विय देखो णिव्विइअ ।
णिव्वियण वि [निर्विजन] मनुष्य-रहित । न. एकान्त स्थल ।
णिव्विर वि [दे] चिपट, बैठा हुआ ।
णिव्विराम वि [निर्विराम] विराम-रहित ।
णिव्विलंब क्रिवि [निर्विलम्ब] शीघ्र ।
णिव्विवेअ वि [निर्विवेक] विवेक-शून्य ।
णिव्विस सक [निर् + विश्] त्याग करना । उपभोग करना ।
णिव्विस वि [निर्विष] विष-रहित ।
णिव्विसंक वि [निर्विशङ्क] शंका-रहित, निर्भय ।
णिव्विसमाण न [निर्विशमान] चारित्र-विशेष । वि. उस चारित्र को पालनेवाला । °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] चारित्र-विशेष की मर्यादा ।
णिव्विसय वि [निर्वेशक] उपभोग-कर्ता ।
णिव्विसय वि [निर्विषय] विषयों की अभिलाषा से रहित । निरर्थक । जिसको देश-निकाले की सजा हुई हो वह ।
णिव्विसिट्ठ वि [निर्विशिष्ट] विशेष-रहित, समान, तुल्य ।
णिव्विसी स्त्री [निर्विषी] एक महौषधि ।
णिव्विसेस वि [निर्विशेष] विशेष-रहित, समान, साधारण । अभिन्न ।
णिव्वी स्त्री [निर्विकृति] तप-विशेष ।
णिव्वीय देखो णिव्विइअ ।
णिव्वीरा स्त्री [निर्वीरा] पुत्र-रहित विधवा स्त्री ।
णिव्वुअ वि [निर्वृत] निर्वृति-प्राप्त । स्वस्थ ।
णिव्वुइ स्त्री [निर्वृति] मुक्ति । मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता । सुख, दुःख-निवृत्ति । जैन साधुओं की एक शाखा । एक राजकन्या। °कर वि. निर्वृतिजनक ।°जणय वि[°जनक] निर्वृति का उत्पादक ।
णिव्वुइकरा स्त्री [निर्वृतिकरा] भगवान् सुमतिनाथ की दीक्षा-शिविका ।
णिव्वुड देखो णिव्वुअ ।
णिव्वुड वि [निर्वृत] अचित्त किया हुआ ।
णिव्वुड्ड देखो णिबुड्ड = नि + मस्ज् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिव्वुड्ढ देखो णिवुड्ढ ।
णिव्वुड्ढ वि [निर्व्यूढ] निर्वाहित, निभाया हुआ ।
णिव्वुत्त देखो णिवुत्त ।
णिव्वुत्त देखो णिव्वत्त = निर्वृत्त ।
णिव्वुत्ति देखो णिव्वत्ति ।
णिव्वुद देखो णिव्वुअ ।
णिव्वुदि देखो णिव्वुइ ।
णिव्वुब्भ देखो णिव्वह = निर् + वह् ।
णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] जिसका निर्वाह किया गया हो वह । कृत, निर्मित । जिसने निर्वाह किया हो वह, पार-प्राप्त । त्यक्त, परिमुक्त । बाहर निकाला हुआ, निस्सारित । किसी ग्रन्थ से उद्धृत कर बनाया हुआ ग्रन्थ ।
णिव्वूढ वि [दे] स्तब्ध । न. घर का पश्चिम आँगन ।
णिव्वेअ पुं [निर्वेद] मुक्ति की इच्छा । खेद, विरक्ति । संसार की निर्गुणता का अवधारण—निश्चय (ज्ञान) करना ।
णिव्वेअण न [निर्वेदन] खेद, वैराग्य । वि. वैराग्यजनक ।
णिव्वेट्ठ सक [निर् + वेष्टय्] नाश करना, क्षय करना । घेरना । बाँधना ।
णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] त्याग करना । मजबूती से वेष्टन करना ।
णिव्वेढ वि [दे] नग्न ।
णिव्वेद देखो णिव्वेअ ।
णिव्वेर वि [निर्वैर] वैर-रहित ।
णिव्वेरिस वि [दे] निर्दय । अत्यन्त, अधिक ।
णिव्वेल्ल अक [निर् + वेल्ल्] फुरना, सत्य ठहरना । स्फूर्ति पाना । साबित होना ।
णिव्वेस वि [निर्द्वेष] द्वेष-रहित ।
णिव्वेस पुं [निर्वेश] लाभ, प्राप्ति ।
णिव्वेहणिया स्त्री [निर्वेधनिका] वनस्पति-विशेष ।
णिव्वोढव्व वि [निर्वोढव्य] निर्वाह-योग्य, वहन करने योग्य ।
णिव्वोल सक [क्रु] क्रोध से होठ को मलिन करना ।
णिस° देखो णिसा ।
णिस सक [नि + अस्] स्थापन करना ।
णिसंत वि [निशान्त] सुना हुआ । अत्यन्त ठण्ढा । प्रभात ।
णिसंस वि [नृशंस] क्रूर ।
णिसग्ग पुं [निसर्ग] स्वभाव, प्रकृति । निसर्जन, त्याग ।
णिसग्ग वि [नैसर्ग] स्वाभाविक । न. जात्यन्ध की तरह स्वभाव से अज्ञता ।
णिसग्गिय वि [नैसर्गिक] स्वाभाविक ।
णिसज्ज पुं. देखो णिसज्जा ।
णिसज्जा स्त्री [निषद्या] आसन । उपवेशन, बैठना । देखो णिसिज्जा ।
णिसट्ठ वि [निसृष्ट] निकाला हुआ । दिया हुआ ।
णिसट्ट वि [दे] प्रचुर ।
णिसट्ठ (अप) वि [निषण्ण] बैठा हुआ ।
णिसढ पुं [निषध] हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत । एक वानर, राम-सैनिक । बैल, साँढ़ । बलदेव का एक पुत्र । देश-विशेष । निषध देश का राजा । स्वर-विशेष । °कूड न [°कूट] निषध पर्वत का एक शिखर । °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष ।
णिसण्ण वि [निषण्ण] उपविष्ट, स्थित । कायोत्सर्ग का एक भेद ।
णिसण्ण वि [निःसंज्ञ] संज्ञा-रहित ।
णिसत्त वि [दे] सन्तुष्ट ।
णिसम सक [नि + समय्] सुनना ।
णिसमण न [निशमन] श्रवण, आकर्णन ।
णिसम्म अक [नि + सद्] बैठना । शयन करना ।
णिसर देखो णिसिर ।
णिसल्ल देखो णिस्सल्ल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिसह देखो णिसढ ।
णिसह देखो णिस्सह ।
णिसह सक [नि + सह्] सहन करना ।
णिसा स्त्री [निशा] अन्धकारवाली नरक-भूमि । रात्रि । पीसने का पत्थर, शिलौट, सिलवट । °अर पुं [°कर] चन्द्र । °अर पुं [°चर] राक्षस । °अरेंद पुं [°चरेन्द्र] राक्षसों का नायक । °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा । °लोढ न [°लोष्ट] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढ़ा । °वइ पुं [°पति] चन्द्रमा । देखो णिसि° ।
णिसाण सक [नि+शाणय्] शान पर चढ़ाना । तीक्ष्ण करना ।
णिसाण न [निशाण] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है ।
णिसाम देखो णिसम ।
णिसाम वि [निःश्याम] निर्मल ।
णिसामण देखो णिसमण ।
णिसामिअ वि [दे. निशमित] श्रुत । उपशमित, दबाया हुआ । सिमटाया हुआ, संकोचित ।
णिसाय वि [दे] प्रसुप्त ।
णिसाय वि [निशात] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण ।
णिसाय पुं [निषाद] चाण्डाल, एक प्राचीन जाति । स्वर-विशेष ।
णिसायंत वि [निशातान्त] तीक्ष्ण धारवाला ।
णिसास सक [निर् + श्वासय्] निःश्वास डालना ।
णिसास देखो णीसास ।
णिसि° देखो णिसा । °पालअ पुं [°पालक] छन्द-विशेष । °भत न [°भक्त] रात्रि-भोजन । °भुत्त न [°भुक्त] रात्रि-भोजन ।
णिसिअ देखो णिसीअ ।
णिसिअ वि [निशित] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण ।
णिसिक्क सक [नि + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना ।
णिसिज्जा देखो णिसज्जा । उपाश्रय, साधुओं का स्थान ।
णिसिट्ठ वि [निसृष्ट] बाहर निकाला हुआ । दत्त, प्रदत्त । अनुज्ञात । बनाया हुआ ।
णिसिद्ध वि [निषिद्ध] प्रतिषिद्ध, निवारित ।
णिसिय वि [न्यस्त] स्थापित ।
णिसियण न [निषदन] उपवेशन ।
णिसिर सक [नि + सृज्] बाहर निकालना । देना, त्याग करना । करना ।
णिसीअ अक [नि + षद्] बैठना ।
णिसीआवण न [निषादन] बैठाना ।
णिसीढ देखो णिसीह = निशीथ ।
णिसीदण [निषदन] उपवेशन, बैठाना ।
णिसीह पुंन [निशीथ] मध्य रात्रि । प्रकाश का अभाव । न. जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष ।
णिसीह पुं [नृसिंह] श्रेष्ठ मनुष्य ।
णिसीहिअ वि [नैशीथिक] निज के लिए लाया गया है ऐसा नहीं जाना हुआ भोजनादि पदार्थ ।
णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] शव-परिष्ठापन-भूमि, श्मशान-भूमि । बैठने की जगह ।
णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] स्वाध्याय-भूमि । थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान । आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन ।
णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] स्वाध्याय-भूमि । पाप-क्रिया का त्याग । व्यापारान्तर के निषेध रूप आचार । देखो णिसेहिया ।
णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि । °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा ।
णिसुअ वि [दे. निश्रुत] श्रुत, आकर्णित ।
णिसुंद पुं [निसुन्द] रावण का एक सुभट ।
णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादन करना ।
णिसुंभ पुं [निशुम्भ] एक राजा । एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिवासुदेव। दैत्य-विशेष।

णिसुंभण न [निशुम्भन] मर्दन, विनाश। वि. मार डालनेवाला।

णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] एक इन्द्राणी।

णिसुट्ट } वि [दे] ऊपर देखो।
णिसुट्टिअ }

णिसुड देखो णिसुढ = नम्।

णिसुड्ढ देखो णिसुट्ट।

णिसुढ अक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना, झुकना।

णिसुढ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार कर गिराना।

णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ।

णिसुण सक [नि + श्रु] सुनना, श्रवण करना।

णिसुद्ध वि [दे] पातित, गिराया हुआ।

णिसूग देखो णिस्सूग।

णिसूड देखो णिसुढ = नि + शुम्भ्।

णिसूढ देखो णिसह = नि + सह्।

णिसेग देखो णिसेय।

णिसेज्जा स्त्री [निषद्या] वस्त्र।

णिसेज्जा देखो णिसज्जा।

णिसेज्झ वि [निषेध्य] निषेध-योग्य।

णिसेणि देखो णिस्सेणि।

णिसेय पुं. [निषेक] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष। सींचना।

णिसेव सक [नि + सेव्] सेवा करना, भजना, आदर करना। आश्रय करना। आचरना।

णिसेवग देखो णिसेवय।

णिसेवय वि [निषेवक] सेवा करनेवाला, सेवक। आश्रय करनेवाला।

णिसेह सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना।

णिसेह पुं[निषेध]प्रतिषेध, निवारण। अपवाद।

णिसेहिया देखो णिसीहिआ = नैषेधिकी। मुक्ति। श्मशान-भूमि। बैठने का स्थान। नितम्ब, द्वार के समीप का भाग।

णिस्स वि [निःस्व] निर्धन। °यर वि [°कर] निर्धन-कारक। कर्म को दूर करनेवाला।

णिस्संक पुं [दे] निर्भर।

णिस्संक वि [निःशङ्क] शङ्का-रहित। न. शङ्का का अभाव।

णिस्संकिअ वि [निःशङ्कित] शङ्का-रहित। न. शङ्का का अभाव।

णिस्संग वि [निःसङ्ग] सङ्ग-रहित।

णिस्संचार वि [निःसंचार] संचार-रहित, गमनागमन-वर्जित।

णिस्संजम वि [निस्संयम] संयम-रहित।

णिस्संत वि [निःशान्त] अतिशय शान्त।

णिस्संद देखो णीसंद।

णिस्संदेह वि [निस्संदेह] निश्चय, निःसंशय।

णिस्संधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, साँधा से रहित।

णिस्संस वि [नृशंस] क्रूर।

णिस्संस वि [निःशंस] श्लाघा-रहित।

णिस्संसय वि [निःसंशय] संशय-रहित।

णिस्सक्क सक [नि + ष्वष्क्] कम करना, घटाना।

णिस्सण पुं [निःस्वन] शब्द, आवाज।

णिस्सण्ण वि [निःसंज्ञ] संज्ञा-रहित।

णिस्सत्त वि [निःसत्त्व] धैर्य-रहित, सत्त्वहीन।

णिस्सम्म अक [निर् + श्रम्] बैठना।

णिस्सय पुं [निश्रय] देखो णिस्सा।

णिस्सर अक [निर + सृ] बाहर निकलना।

णिस्सरण वि [निःशरण] शरण-रहित।

णिस्सरिअ वि [दे] त्रस्त, खिसका हुआ।

णिस्सल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित।

णिस्सस अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना।

णिस्सह वि [निःसह] मन्द, अशक्त।

णिस्सा स्त्री [निश्रा] आलम्बन, सहारा। अधीनता। पक्षपात।

णिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन। °पय न [°पद] अपवाद।

णिस्साण पुंन [दे] वाद्य-विशेष, निशान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिस्सार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। भ्रष्ट करना।
णिस्सार } वि [निःसार] सार-हीन,
णिस्सारग } निरर्थक। जीर्ण-पुराना।
णिस्सारय वि [निःसारक] निकालनेवाला।
णिस्सारिय वि [निःसारित] निकाला हुआ। च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ।
णिस्सास पुं [निःश्वास] निःश्वास, नीचा श्वास। काल-मान-विशेष। प्राण-वायु, प्रश्वास।
णिस्साहार वि [निःस्वाधार] निराधार।
णिस्सिंग वि [निःशृङ्ग] शृङ्ग-रहित।
णिस्सिंघिय न [निःशिङ्घित] अव्यक्त शब्द-विशेष।
णिस्सिंच अक [निर् + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना, फेंकना।
णिस्सिणेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित।
णिस्सिय वि [निश्रित] आश्रित, अवलम्बित। अनुरक्त, तल्लीन। आसक्ति। वि. निश्रय से बद्ध। पक्षपाती। रागी।
णिस्सिय वि [निःसृत] निर्गत।
णिस्सील वि [निःशील] सदाचार-रहित, दुःशील।
णिस्सूग वि [निःशूक] निष्करुण।
णिस्सेज्जा देखो णिस्सेज्जा।
णिस्सेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी।
णिस्सेयस न [निःश्रेयस] कल्याण, मङ्गल। मुक्ति, निर्वाण। अभ्युदय, उन्नति।
णिस्सेयसिय न [नैःश्रेयसिक] मुमुक्षु।
णिस्सेस वि [निःशेष] सब, सकल।
णिह वि [निभ] सदृश। न. बहाना।
णिह वि [निह] मायावी, कपटी। पीड़ित। न. आघात-स्थान।
णिह वि [स्निह] रागी, रागयुक्त।
णिहंस पुं [निघर्ष] घर्षण।
णिहंसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड़।
णिहट्टु अ. पृथक् करके। स्थापन कर।
णिहट्ठ वि [निघृष्ट] घिसा हुआ।
णिहण सक [नि + हन्] निहत करना, मारना। फेंकना।
णिहण सक [नि + खन्] गाड़ना।
णिहण न [दे] किनारा।
णिहण न [निधन] मरण, विनाश। पुं. रावण का एक सुभट।
णिहत्त सक [निधत्तय्] कर्म को निबिड़ रूप से बाँधना।
णिहत्त देखो णिधत्त।
णिहत्ति देखो णिधत्ति।
णिहम्म सक [नि + हम्म्] जाना, गमन करना।
णिहय वि [निहत] मारा हुआ।
णिहय वि [निखात] गाड़ा हुआ।
णिहर अक [नि + हृ] पाखाना जाना।
णिहर अक [आ + क्रन्द्] चिल्लाना।
णिहर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना।
णिहरण देखो णीहरण।
णिहव देखो णिहुव।
णिहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ।
णिहव पुं [निवह] समूह।
णिहस सक [नि + घृष्] घिसना।
णिहस पुं [निकष] कसौटी का पत्थर। कसौटी पर की जाती रेखा।
णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड़।
णिहस पुं [दे] सर्प आदि का बिल।
णिहा स्त्री [निहा] माया, कपट।
णिहा सक [नि + धा] स्थापना करना।
णिहा सक [नि + हा] त्याग करना।
णिहा } सक [दृश्] देखना।
णिहाआ }
णिहाण न [निधान] वह स्थान जहाँ पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना, भण्डार।
णिहाय पुं [दे] स्वेद। समूह, जत्था।
णिहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिहाय देखो णिहा = नि + धा, नि + हा का संकृ.।
णिहाय पुं [निह्लाद] अव्यक्त शब्द।
णिहार पुं [निहार] निर्गम।
णिहारिम न [निर्हारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकाल कर संस्कार किया जाय उसका मरण। वि. दूर जानेवाला, दूर तक फैलनेवाला।
णिहाल देखो णिभाल।
णिहि वि [निधि] भण्डार। धन आदि से भरा हुआ पात्र। चक्रवर्ती राजा की सम्पत्ति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि। पुंस्त्री. लगातार नव दिन का उपवास। °नाह पुं [°नाथ] कुबेर।
णिहिअ वि [निहित] स्थापित।
णिहिण्ण वि [निर्भिन्न] विदारित।
णिहित्त देखो णिहिअ।
णिहिप्पंत देखो णिहा = नि + धा का कवकृ.।
णिहिल वि [निखिल] सब, सकल।
णिहिल्लय देखो णिहिअ।
णिही स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष।
णिहीण वि [निहीन] न्यून।
णिहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र।
णिहु स्त्री [स्निहु] औषधि-विशेष।
णिहुअ वि [निभृत] प्रच्छन्न। विनीत। मन्द। निश्चल, स्थिर। संभ्रमरहित। धारण किया हुआ। निर्जन, एकान्त। अस्त होने के लिए उपस्थित। उपशान्त।
णिहुअ वि [दे] व्यापार-रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट। तूष्णीक। न. मैथुन।
णिहुअण देखो णिहुवण।
णिहुआ स्त्री [दे] सम्भोग के लिए प्रार्थित स्त्री।
णिहुण न [दे] व्यापार, धन्धा।
णिहुत्त वि [दे] निमग्न।
णिहुत्थिभगा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष।
णिहुव सक [कामय्] सम्भोग का अभिलाष करना।
णिहुवण न [निधुवन] सम्भोग।
णिहूअ न [दे] मैथुन। वि. अकिञ्चित्कर। देखो णीहूय।
णिहेलण न [दे] गृह। जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग।
णिहो अ [न्यग्] नीचे।
णिहोड सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना।
णिहोड सक [पातय्] गिराना। नाश करना।
णी सक [गम्] जाना, गमन करना।
णी सक [नी] ले जाना। जानना। ज्ञान कराना, बतलाना।
णीअअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर।
णीआरण न [दे] बली रखने का छोटा कलश।
णीइ स्त्री [नीति] न्याय, उचित व्यवहार। नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्यतया माननेवाला मत। °सत्थ न [°शास्त्र] नीति-प्रतिपादक शास्त्र।
णीका स्त्री [नीका] कुल्या, नहर, सारणि।
णीखय वि [निःक्षत] निखिल, सम्पूर्ण।
णीचअ न [नीचैस्] नीचे। वि. अधः-स्थित।
णीछूढ देखो णिच्छूढ।
णीजूह देखो णिज्जूह = दे. निर्यूह।
णीड देखो णिड्ड।
णीण सक [गम्] जाना, गमन करना।
णीण सक [नी] ले जाना। बाहर ले जाना, बाहर निकालना।
णीणिआ स्त्री [नीनिका] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति।
णीम पुं [नीप] कदम्ब का पेड़। न. फल-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीमम वि [निर्मम] ममत्व-रहित ।
णीमी देखो णीवी ।
णीय वि [नीच] अधम, जघन्य । वि. अधस्तन । °गोय न [°गोत्र] क्षुद्र गोत्र । कर्म-विशेष जो क्षुद्र जाति में जन्म होने का कारण है । वि. नीच गोत्र में उत्पन्न ।
णीय वि [नीत] ले जाया गया ।
णीय देखो णिच्च = नित्य ।
णीयंगम वि [नीचंगम] नीचे जानेवाला ।
णीयंगमा स्त्री [नीचंगमा] नदी ।
णीर न [नीर] जल । °निहि पुं [°निधि] समुद्र । °रुह न. कमल । °वाह पुं. मेघ । °हर पुं [°गृह] सागर । °हि पुं [°धि] समुद्र । °किर पुं. समुद्र ।
णीरंगी स्त्री [दे. नीरङ्गी] शिरोवस्त्र, घूंघट ।
णीरंज सक [भञ्ज्] तोड़ना, भाँगना ।
णीरंध वि [नीरन्ध्र] निश्छिद्र ।
णीरण न [दे] घास, चारा ।
णीरय वि [नीरजस्] रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध । पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट ।
णीरव सक [आ+क्षिप्] आक्षेप करना ।
णीरव सक [बुभुक्ष्] खाने को चाहना ।
णीरव वि [आक्षेपक] आक्षेप करनेवाला ।
णीरस वि [नीरस] रस-रहित, शुष्क ।
णीरसजल न [नीरसजल] आयम्बिल तप ।
णीराग } वि [नीराग] वीतराग ।
णीराय }
णीरेणु वि [नीरेणु] धूल-रहित ।
णीरोग वि [नीरोग] रोग-रहित, तन्दुरुस्त ।
णील अक [निर्+सृ] बाहर निकलना ।
णील पुं [नील] हरा वर्ण, नीला रंग । ग्रहाधिष्ठायक-देव-विशेष । रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष । छन्द-विशेष । पर्वत-विशेष । न. नीलम रत्न । वि. हरा वर्णवाला । °कंठ पुं [°कण्ठ] शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिषसैन्य का अधिपति देव-विशेष । मोर । महादेव । °कणवीर पुं [°करवीर] हरे रंग के फूलोंवाला कनेर का पेड़ । °गुफा स्त्री. उद्यान-विशेष । °मणि पुंस्त्री. रत्न-विशेष । नीलम, मरकत । °लेस वि [°लेश्य] नील लेश्यावाला । °लेसा स्त्री [°लेश्या] अशुभ अध्यवसाय-विशेष । °लेस्स देखो °लेस । °लेस्सा देखो °लेसा । °वंत पुं [°वत्] पर्वत-विशेष । द्रह-विशेष । न. शिखर-विशेष ।
णील वि [नील] कच्चा, आर्द्र । °केसी स्त्री [°केशी] युवति ।
णीलकंठी स्त्री [दे] बाण-वृक्ष ।
णीला स्त्री [नीला] लेश्या-विशेष, आत्मा का अशुभ परिणाम । नीलवर्णवाली स्त्री ।
णीलिअ वि [निःसृत] निर्गत ।
णीलिअ वि [नीलित] नील वर्ण का ।
णीलिआ देखो णीला ।
णीलिम पुंस्त्री [नीलिमन्] नीलापन, हरापन ।
णीली स्त्री [नीली] वनस्पति-विशेष, नील । नील वर्णवाली स्त्री । आँख का रोग ।
णीलुंछ सक [कृ] निष्पतन करना । आच्छोटन करना ।
णीलुक्क सक [गम्] जाना, गमन करना ।
णीलुप्पल न [नीलोत्पल] नील रंग का कमल ।
णीलुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति ।
णीलोभास पुं [नीलावभास] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । वि. नीलच्छाय जो नीला मालूम देता हो ।
णीव पुं [नीप] कदम्ब का पेड़ ।
णीवार पुं [नीवार] तिल्ली का पेड़ । व्रीहि-विशेष ।
णीवी स्त्री [नीवी] मूल-धन, पूँजी । इजार-बन्द ।
णीसंक देखो णिस्संक = निःशंक ।
णीसंक पुं [दे] वृषभ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीसंकिअ देखो णिस्संकिअ ।
णीसंख वि [निःसंख्य] असंख्य ।
णीसंचार देखो णिस्संचार ।
णीसंद पुं [निःष्यन्द] रस का झरन ।
णीसंपाय वि [दे] जहाँ जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह ।
णीसट्ठ वि [निःसृष्ट] विमुक्त । प्रदत्त । अतिशय, अत्यन्त ।
णीसण पुं [निःस्वन] आवाज, शब्द, ध्वनि ।
णीसणिआ } स्त्री [दे] सीढ़ी ।
णीसणी }
णीसत्त वि [निःसत्त्व] सत्त्व-हीन, बल-रहित।
णीसद्द वि [निःशब्द] शब्द-रहित ।
णीसर अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना ।
णीसर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना ।
णीसरण न [निःसरण] फिसलन, रपटन । निर्गमन ।
णीसल वि [निःशल] निश्चल, स्थिर । वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट ।
णीसल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित ।
णीसव सक [नि + श्रावय्] निर्जरा करना, क्षय करना ।
णीसवग देखो णीसवय ।
णीसवत्त वि [निःसपत्न] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित ।
णीसवय वि [निःश्रावक] निर्जरा करनेवाला ।
णीसस अक [निर् + श्वस्] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना ।
णीससण न [निःश्वसन] निःश्वास ।
णीसह वि [निःसह] मन्द, अशक्त ।
णीसह वि [निःशाख] शाखा-रहित ।
णीसा स्त्री [दे] पीसने का पत्थर ।
णीसा देखो णिस्सा ।
णीसाइ वि [निःस्वादिन्] स्वाद-रहित ।
णीसाण देखो णिस्साण = (दे) ।
णीसामण्ण वि [निःसामान्य] असाधारण । गुरु ।
णीसार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना ।
णीसार पुं [दे] मण्डप ।
णीसार वि [निःसार] सार-रहित, फल्गु ।
णीसारय वि [निःसारक] बाहर निकालनेवाला ।
णीसास देखो णिस्सास ।
णीसास } वि [निःश्वास, °क] निःश्वास
णीसासय } लेनेवाला ।
णीसाहार देखो णिस्साहार ।
णीसित्त वि [निष्षिक्त] अत्यन्त सिक्त ।
णीसीमिअ वि [दे] निर्वासित ।
णीसेयस देखो णिस्सेयस ।
णीसेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी ।
णीसेस देखो णिस्सेस ।
णीहट्टु अ. निकाल कर ।
णीहट्टु अ [नि + सृत्य] बाहर निकल कर ।
णीहड वि [निर्हृत] निर्गत, निर्यात ।
णीहडिया स्त्री [निर्हृतिका] अन्य स्थान में ले जाया जाता द्रव्य ।
णीहम्म अक [निर् + हम्म्] निकलना ।
णीहर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना ।
णीहर अक [आ + क्रन्द्] आक्रन्द करना, चिल्लाना ।
णीहर अक [निर् + ह्लद्] प्रतिध्वनि करना ।
णीहर सक[निर् + सारय्] बाहर निकालना ।
णीहर अक [निर् + हृ] पाखाना जाना, पुरीषोत्सर्ग करना ।
णीहरण न [निस्सरण, निर्हरण] निर्गमन, बाहर निकालना । परित्याग । अपनयन ।
णीहरिअ न [दे] शब्द, आवाज, ध्वनि ।
णीहार पुं [नीहार] हिम, तुषार । विष्ठा या मूत्र का उत्सर्ग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीहारण न [निस्सारण] निष्कासन ।
णीहारि वि [निर्हारिन्] निकलनेवाला । फैलनेवाला ।
णीहारि वि [निर्ह्लादिन्] घोष करनेवाला, गूँजनेवाला ।
णीहारिम देखो णिहारिम ।
णीहास वि [निर्हास] हास-रहित ।
णीहूय वि [दे] कुछ भी नहीं कर सकनेवाला । देखो णिहुअ ।
णु अ [नु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—व्यंग्य ध्वनि । वक्रोक्ति । वितर्क । प्रश्न । विकल्प । अनुनय । हेतु, प्रयोजन । अपमान । अनुताप, अनुशय । अपदेश, बहाना । निन्दा । विशेष ।
°णुअ वि [ज्ञक] जानकर ।
णुक्कार पुं [नुक्कार] 'नुक' ऐसी आवाज ।
णुज्जिय वि [दे] बन्द किया हुआ, मुद्रित ।
णुत्त वि [नुत्त] प्रेरित । क्षिप्त, फेंका हुआ ।
णुम सक [नि + अस्] स्थापन करना ।
णुम सक [छादय्] आच्छादन करना ।
णुमज्ज अक [नि + सद्] बैठना ।
णुमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना ।
णुमज्ज अक [शी] सोना, सूतना ।
णुमण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट ।
णुमण्ण वि [निमग्न] डूबा हुआ, लीन ।
णुल्ल देखो णोल्ल ।
णुवण्ण वि [दे] सोया हुआ ।
णुवण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट ।
णुव्व सक [प्र + काशय्] प्रकाशित करना ।
णुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू ।
णूउर देखो णिउर = नूपुर ।
णूण वि [न्यून] कम ।
णूण } अ [नूनम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
णूणं } निश्चय । तर्क, विचार । हेतु, प्रयोजन । उपमान । प्रश्न ।
णूतण वि [नूतन] नवीन ।
णूपुर देखो णूउर ।
णूम सक [छादय्] ढकना, छिपाना ।
णूम न [दे] प्रच्छादन, छिपाना । असत्य । माया, कपट । प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरह । अन्धकार, गाढ़ अन्धकार ।
णूम न [दे] कर्म । °गिह न [°गृह] भूमि-गृह ।
णूमिअ वि [दे] पोला किया हुआ ।
णूला स्त्री [दे] शाखा, डाल ।
णे अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय ।
णेअ देखो णा = ज्ञा का कृ. ।
णेअ देखो णी = नी का कृ. ।
णेअ वि [नैक] अनेक, बहुत । °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का ।
णेअ अ [नैव] नहीं ही, कदापि नहीं, कभी नहीं ।
णेआइअ } वि [नैयायिक, न्याय्य] न्यायो-
णेआउअ } चित ।
णेआउय } वि [नेतृ] ले जानेवाला ।
णेउ } रचयिता ।
णेआवण न [नायन] अन्य-द्वारा नयन पहुँचाना ।
णेआविअ वि [नायित] अन्य द्वारा ले जाया गया, पहुँचाया हुआ ।
णेउ वि [नेतृ] नेता, नायक ।
णेउआण देखो णी = नी का संकृ. ।
णेउड्ढ पुं [दे] सद्भाव, शिष्टता ।
णेउण न [नैपुण] निपुणता, चतुराई ।
णेउणिअ वि [नैपुणिक] निपुण । न. अनु-प्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु ।
णेउणिअ देखो णेउण्ण ।
णेउण्ण न [नैपुण्य] निपुणता ।
णेउर न [नूपुर] पायल ।
णेउरिल्ल वि [नूपुरवत्] नूपुरवाला ।
णेऊण देखो णी = नी का संकृ. ।
णेक्कंत देखो णिक्कंत ।
णेग देखो णेअ = नैक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेगम पुं [नैगम] वस्तु के एक अंश को स्वीकारनेवाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष । वणिक् । न. व्यापार का स्थान ।
णेगुण्ण न [नैर्गुण्य] निर्गुणता, निःसारता ।
णेचइय पुं [नैचयिक] धान्य आदि का थोकबन्द व्यापारी ।
णेच्छइअ वि [नैश्चयिक] निश्चयनयसम्मत, निरुपचरित, शुद्ध ।
णेच्छंत वि [नेच्छत्] नहीं चाहता हुआ ।
णेच्छिय वि [नैच्छित] अनभिलषित ।
णेट्ठिअ वि [नैष्ठिक] पर्यन्त-वर्त्ती ।
णेड देखो णिड्ड ।
णेडाली स्त्री [दे] सिर का भूषण-विशेष ।
णेड्ड देखो णिड्ड ।
णेड्ढरिआ स्त्री [दे] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव ।
णेत्त पुंन [नेत्र] आँख ।
णेत्त पुं [नेत्र] वृक्ष-विशेष ।
णेद्दा देखो णिद्दा ।
णेपाल देखो णेवाल ।
णेम स [नेम] आधा । न. मूल, जड़ ।
णेम न [दे] कार्य ।
णेम पुंन [दे] काम ।
णेम देखो णेम्म = दे ।
णेमाल पुं. ब. [नेपाल] एक भारतीय देश, नेपाल ।
णेमि पुं [नेमि] एक जिनदेव, बाईसवें तीर्थङ्कर । चक्र की धारा । चक्र की परिधि । आचार्य हेमचन्द्र के मातुल का नाम । °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैनाचार्य ।
णेमित्त देखो णिमित्त ।
णेमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार ।
णेमित्तिअ } वि [नैमित्तिक] निमित्तशास्त्र
णेमित्तिग } से सम्बन्ध रखनेवाला । कारणिक, निमित्त से होनेवाला, कारण से किया जाता, कदाचित्क । निमित्तशास्त्र का जानकार । न. निमित्तशास्त्र ।
णेमी स्त्री [नेमी] चक्र-धारा ।
णेम्म वि [दे. निभ] सदृश ।
णेम्म देखो णेम = नेम ।
णेरइअ वि [नैरयिक] नरक-सम्बन्धी, नरक में उत्पन्न । पुं. नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी ।
णेरइअ वि [नैर्ऋतिक] नैऋत कोण ।
णेरई स्त्री [नैर्ऋती] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा ।
णेरुत्त न [नैरुक्त] व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द । वि. निरुक्त शास्त्र का जानकार ।
णेरुत्तिय वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति-निष्पन्न ।
णेरुत्ती स्त्री [नैरुक्ति] व्युत्पत्ति ।
णेल वि [नैल] नील का विकार ।
णेलंछण देखो णिल्लंछण ।
णेलच्छ पुं [दे] नपुंसक । बैल ।
णेलय पुं [दे. नेलन] रुपया ।
णेलिच्छी स्त्री [दे] कूपतुला, ढेंकवा ।
णेल्लच्छ देखो णेलच्छ ।
णेव देखो णेअ = नैव ।
णेवच्छ देखो णेवत्थ ।
णेवच्छण न [दे] अवतारण, नीचे उतारना ।
णेवच्छिय देखो णेवत्थिय ।
णेवत्थ न [नेपथ्य] वस्त्र आदि की रचना, वेष की सजावट, नाटक आदि में परदे के भीतर का स्थान जिसमें नट-नटी नाना प्रकार का वेश सजाते हैं, नाट्यशाला । वेष ।
णेवत्थण न [दे] निरुञ्छन, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल ।
णेवत्थिय वि [नेपथ्यित] जिसने वेष-भूषा की हो वह ।
णेवाइय वि [नैपातिक] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेवाल पुं [नेपाल] एक भारतीय देश। वि. नेपाल-देशीय, नेपाली।

णेविज्ज } न [नैवेद्य] देवता के आगे धरा
णेवेज्ज } हुआ अन्न आदि।

णेव्वाण देखो णिव्वाण = निर्वाण।

णेव्वुअ देखो णिव्वुअ।

णेव्वुइ देखो णिव्वुइ।

णेसग्गिय देखो णिसग्गिय।

णेसज्जि वि [नैषद्यिन्] आसन-विशेष से उपविष्ट।

णेसज्जिअ वि [नैषद्यिक] ऊपर देखो।

णेसत्थि पुं [दे] वणिग् मन्त्री।

णेसत्थिया } स्त्री [नैसृष्टिकी, नैशस्त्रिकी]
णेसत्थी } निसर्जन, निक्षेपण। निसर्जन से होनेवाला कर्म-बन्ध।

णेसप्प पुं [नैसर्प] निधि-विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान।

णेसर पुं [दे] सूर्य।

णेसाय देखो णिसाय = निषाद।

णेसु पुंन. [दे] होंठ। पाँव।

णेह पुं [स्नेह] राग, अनुराग। तैल आदि चिकना रस-पदार्थ। चिकनाई।

णेहर देखो णेहुर।

णेहल पुं [स्नेहल] छन्द-विशेष। वि. स्नेही, स्नेह-युक्त।

णेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेह-युक्त, स्निग्ध।

णेहुर पुं [नेहुर] एक अनार्य देश। उसमें बसनेवाली अनार्य जाति।

णो अ [नो] इन अर्थों का सूचक अव्यय — निषेध, अभाव। मिश्रण। देश, भाग, अंश। निश्चय। °आगम पुं. आगम का अभाव। आगम के साथ मिश्रण। आगम का एक अंश। पदार्थ का अपरिज्ञान। °इंदिय न [°इन्द्रिय] मन, अन्तःकरण, चित्त। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय के उद्दीपक हास्य वगैरह नव पदार्थ, वे ये हैं—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद। °केवलनाण न [°केवलज्ञान] अवधि और मनःपर्यव ज्ञान। °गार पुं [°कार] 'नो' शब्द। °गुण वि. अवास्तविक। °जीव पुं. जीव और अजीव से भिन्न पदार्थ, अवस्तु। अजीव, निर्जीव। जीव का प्रदेश। °तह वि [°तथ] जो वैसा ही न हो।

णो अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—खेद। आमन्त्रण। विचित्रता। वितर्क। प्रकोप।

णो° पुं [नृ] पुरुष।

णोक्ख वि [दे] अनोखा, अपूर्व।

णोगोण्ण वि [नोगौण] अयथार्थ (नाम)।

णोजुग न [नोयुग] न्यून युग।

णोदिअ देखो णोल्लिअ।

णोमल्लिआ स्त्री [नवमल्लिका] सुगन्धि वाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासन्ती (फूल)।

णोमालिआ स्त्री [नवमालिका] ऊपर देखो।

णोमि पुं [दे] रज्जु।

णोलइआ } स्त्री [दे] चोंच।
णोलच्छा }

णोल्ल सक [क्षिप्,तुद्] फेंकना। प्रेरणा करना।

णोव्व पुं [दे] आयुक्त, सूबा या सूबेदार राज-प्रतिनिधि।

णोहल पुं [लोहल] अव्यक्त शब्द-विशेष।

णोहलिआ स्त्री [नवफलिका] नवोत्पन्न फली। नूतन फलवाली। नूतन फल का उद्गम।

णोहा स्त्री [स्नुषा] पुत्रवधू।

°ण्णअ वि [ज्ञक] जानकार।

°ण्णास देखो णास = न्यास।

°ण्णुअ देखो °ण्णअ।

ण्हं अ. वाक्यालंकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय।

ण्हव सक [स्नपय्] स्नान कराना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण्हा } अक [स्ना] स्नान करना।
ण्हाण }

ण्हाण न [स्नान] नहाना, नहान। °पीढ पुंन [°पीठ] स्नान करने का पट्टा।

ण्हाणमल्लिया स्त्री [स्नानमल्लिका] स्नान-योग्य, मालती-पुष्प।

ण्हाणिआ स्त्री [स्नानिका] स्नान-क्रिया।

ण्हाय वि [स्नात] नहाया हुआ।

ण्हारु न [स्नायु] नस, धमनी। अष्टादश श्रेणी में की एक श्रेणी, कुम्हार, पटेल आदि।

ण्हाव देखो ण्हव।

ण्हाविअ पुं [नापित] हजाम। °पसेवय पुं [°प्रसेवक] नाई की अपने उपकरण रखने की थैली।

ण्हु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय।

ण्हुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू।

ण्हुहा देखो ण्हुसा।

त

त पुं. दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष।

त स [तत्] वह।

त° स [त्वत्°] तू। °क्कय वि [°कृत] तेरा किया हुआ।

त° देखो तया = त्वच्। °द्दोसि वि [°दोषिन्] चर्म-रोगी। कुष्ठी।

तअ देखो तव = तपस्।

तइ वि [तति] उतना।

तइ (अप) अ [तत्र] वहाँ, उसमें।

तइ अ [तदा] उस समय।

तइअ वि [तृतीय] तीसरा।

तइअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा।

तइअ अ [तदा] उस समय।

तइअहा (अप) अ [तदा] उस समय।

तइआ अ [तदा] उस समय।

तइआ स्त्री [तृतीया] तिथि-विशेष, तीज। तीसरी विभक्ति।

तइल देखो तेल्ल।

तइलोई स्त्री [त्रिलोकी] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

तइलोक्क } न [त्रैलोक्य] ऊपर देखो।
तइलोय }

तइस (अप) वि [तादृश] वैसा, उस तरह का।

तई स्त्री [त्रयी] तीन का समुदाय।

तईअ देखो तइअ = तृतीय।

तउ } न [त्रपु] सीसा, राँगा। °वट्टिआ स्त्री [°पट्टिका] कान का आभूषण-विशेष।
तउअ }

तउस न [त्रपुष] देखो तउसी। °मिंजिया स्त्री [°मिञ्जिका] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

तउस न [त्रपुष] खीरा, ककड़ी।

तउसी स्त्री [त्रपुषी] खीरा का गाछ।

तए अ [ततस्] उससे, उस कारण से। बाद में।

तएयारिस वि [त्वादृश] तुम जैसा।

तओ देखो तए।

तं अ [तत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय-कारण, हेतु। वाक्य-उपन्यास। °जहा अ [°यथा] उदाहरण-प्रदर्शन अव्यय।

तंआ देखो तया = तदा।

तंट न [दे] पृष्ठ, पीठ।

तंड न [दे] लगाम में लगी हुई लार। वि. मस्तक-रहित। स्वर से अधिक।

तंडव (अप) देखो तडुव।

तंडव अक [ताण्डवय्] नृत्य करना।

तंडव न [ताण्डव] नृत्य, उद्धत नाच। उद्ध-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताई ।

तंडविय (अप) देखो तड्डविअ ।

तंडुल पुं [तण्डुल] चावल । देखो तंदुल ।

तंत न [तन्त्र] देश, राष्ट्र । शास्त्र, सिद्धान्त । दर्शन, मत । स्वदेश-चिन्ता । विष का औषध-विशेष । सूत्र, ग्रन्थांश-विशेष । विद्या-विशेष । °न्नु वि [°ज्ञ] तन्त्र का जानकार । °वाइ पुं [°वादिन्] विद्या-विशेष से रोग आदि को मिटानेवाला ।

तंत वि [तान्त] क्लान्त ।

तंतडी स्त्री [दे] करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष ।

तंतवग } पुं [तान्त्रवक] चतुरिन्द्रिय जन्तु
तंतवय } की एक जाति ।

तंतिय पुं [तान्त्रिक] वीणा बजानेवाला ।

तंतिसम न [तन्त्रीसम] तन्त्री-शब्द के तुल्य या उससे मिला हुआ गीत, गेय काव्य का एक भेद ।

तंती स्त्री [तन्त्री] वीणा । वीणा-विशेष । ताँत, चमड़े की रस्सी ।

तंती स्त्री [दे] चिन्ता ।

तंतु पुं [तन्तु] सूत, तागा, सूत्र, धागा । °अ, °ग पुं [°क] जलजन्तु-विशेष । °ज, °य न [°ज] सूती कपड़ा । °वाय पुं [°वाय] जुलाहा । °साला स्त्री [°शाला] कपड़ा बुनने का घर ।

तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण ।

तंदुल देखो तंडुल । मत्स्य-विशेष । °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष ।

तंदुलेज्जग पुं [तन्दुलीयक] वनस्पति-विशेष ।

तंदूसय देखो तिंदूसय ।

तंब पुं [स्तम्ब] तृणादि का गुच्छा ।

तंब न [ताम्र] ताँबा । पुं. वर्ण-विशेष । वि. लालवर्णवाला । °चूल पुं [चूड] कुक्कुट । °वण्णी स्त्री [°पर्णी] एक नदी का नाम । °सिह पुं [°शिख] मुर्गा ।

तंबकरोडपुंन[दे] ताम्र वर्णवाला द्रव्य-विशेष ।

तंबकिमि पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप ।

तंबकुसुम पुंन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुबक, कटसरैया ।

तंबक्क न [दे] वाद्य-विशेष ।

तंबच्छिवाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष ।

तंबटक्कारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष ।

तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूं में कुंकुम की छाया ।

तंबा स्त्री [दे] गैया ।

तंबाय पुं [तामाक] भारतीय ग्राम-विशेष ।

तंबिम पुंस्त्री [ताम्रत्व] अरुणता ।

तंबिय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण ।

तंबिर वि [दे] ताम्र वर्णवाला ।

तंबिरा [दे] देखो तंबरत्ती ।

तंबुक्क न [दे] वाद्य-विशेष ।

तंबेरम पुं [स्तम्बेरम] हाथी ।

तंबेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष, शेफालिका ।

तंबोल न [ताम्बूल] पान ।

तंबोलिअ पुं [ताम्बूलिक] तमोली । पान में होनेवाला तंबोलिया नाग ।

तंबोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ ।

तंभ देखो थंभ ।

तंस पुं [त्र्यंश] तीसरा हिस्सा ।

तंस वि [त्र्यस्र] त्रि-कोण ।

तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, अनुमान करना,

तक्क न [तक्र] मट्ठा, छाछ ।

तक्क पुं [तर्क] विमर्श, विचार, अटकलज्ञान । न्याय-शास्त्र ।

तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा ।

तक्कय वि [तर्कक] तर्क करनेवाला ।

तक्कर पुं [तस्कर] चोर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तक्कलि स्त्री [दे] कदली-वृक्ष ।

तक्कलि } स्त्री [दे] वलयाकार वृक्ष-विशेष ।
तक्कली }

तक्का स्त्री [तर्क] देखो त = तर्क ।

तक्काल क्रिवि [तत्काल] उसी समय ।

तक्किअ वि [तार्किक] तर्कशास्त्र का जानकार ।

तक्कियाणं देखो तक्क = तर्क् का संकृ. ।

तक्कु पुं [तर्कु] चरखा ।

तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग ।

तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना ।

तक्ख पुं [तार्क्ष्य] गरुड़ पक्षी ।

तक्ख पुं [तक्षन्] बढ़ई । विश्वकर्मा । °सिला स्त्री [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर ।

तक्खग पुं [तक्षक] ऊपर देखो । स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज ।

तक्खण न [तत्क्षण] उसी समय । क्रिवि. शीघ्र ।

तक्खय देखो तक्खग ।

तक्खाण देखो तक्ख = तक्षन् ।

तगर देखो टगर ।

तगरा स्त्री. संनिवेश-विशेष । एक नगरी का नाम ।

तग्ग न [दे] धागे का कंकण ।

तग्गंधिय वि [तद्गन्धिक] उसके समान गन्धवाला ।

तच्च वि [तृतीय] तीसरा ।

तच्च न [तत्त्व] सार, परमार्थ । °वाय पुं [°वाद] तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा । दृष्टिवाद, जैन अंग-ग्रंथ-विशेष ।

तच्च न[तथ्य] सत्य, सचाई । वि. वास्तविक । °त्थ पुं [°ार्थ] हकीकत । °वाय पुं [°वाद] देखो ऊपर °वाय ।

तच्चं अ [त्रिः] तीन बार ।

तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन ।

तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना ।

तच्छ } वि [तष्ट] छिला हुआ, तनूकृत ।
तच्छिअ }

तच्छिड वि [दे] भयंकर ।

तच्छिल वि [दे] तत्पर ।

तजा देखो तया = त्वच् ।

तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना ।

तज्जणी स्त्री [तर्जनी] अँगूठे के पासवाली अंगुली, प्रदेशिनी ।

तज्जाय वि [तज्जात] समान जातिवाला ।

तज्जाविअ } वि [तर्जित] तर्जित, भर्त्सित ।
तज्जिअ }

तट्टवट्ट न [दे] आभूषण ।

तट्टिगा स्त्री [दे. तट्टिका] दिगम्बर जैन साधु का एक उपकरण ।

तट्टी स्त्री [दे] वृति, बाड़ ।

तट्ठ वि [त्रस्त] डरा हुआ, भीत । न. मुहूर्त-विशेष ।

तट्ठ वि [तष्ट] छिला हुआ ।

तट्ठव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष ।

तट्ठि वि [तष्टिन्] तनूकृत, कृशतावाला ।

तट्ठि } पुं [त्वष्टृ] तक्षक, विश्वकर्मा । नक्षत्र-
तट्ठु } विशेष का अधिष्ठायक देव ।

तट्ठु पुं [त्वष्टृ] अहोरात्र का बारहवाँ मुहूर्त ।

तड सक [तन्] विस्तार करना । करना ।

तड पुंन [तट] किनारा । °त्थ वि [°स्थ] मध्यस्थ, पक्षपात-हीन । समीप । स्थित ।

तडउडा [दे] देखो तडवडा ।

तडकडिअ वि [दे] अनवस्थित ।

तडक्कार पुं [तटत्कार] चमकारा ।

तडतडा अक [तडतडाय्] तड़-तड़ आवाज होना।

तडतडा स्त्री [तडतडा] तड़-तड़ आवाज ।

तडप्फड } अक [दे] छटपटाना, तड़फड़ाना,
तडफड } व्याकुल होना ।

तडफडिअ वि [दे] सब तरफ से चलित, तड़-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फड़ाया हुआ, व्याकुल।
तडमड वि [दे] क्षुभित।
तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त।
तडयडंत देखो तडतडा का वकृ.।
तडवडा स्त्री [दे] आउली का पेड़।
तडाअ } न [तडाग] सरोवर।
तडाग }
तडि स्त्री [तडित्] बिजली। °डंड पुं [°दण्ड] विद्युद्दंड। °केस पुं [°केश] राक्षस-वंशीय एक राजा, एक लंकापति। °वेअ पुं [°वेग] विद्याधर वंश का एक राजा।
तडिअ वि [तत] विस्तृत, फैला हुआ।
तडिआ स्त्री [तडित्] बिजली।
तडिण वि [दे] विरल, अत्यल्प।
तडिणी स्त्री [तटिनी] नदी।
तडिम न. भित्ति। कुट्टिम, पाषाण आदि से बँधा हुआ भूमितल। द्वार के ऊपर का भाग।
तडी स्त्री [तटी] तट।
तड्ड } सक [तन्] विस्तार करना।
तड्डव }
तड्डविअ } वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ।
तड्डिअ }
तड्डु स्त्री [तर्दु] काठ की करछी।
तण सक [तन्] विस्तार करना। करना।
तण न [दे] कमल।
तण न [तृण] घास। °इल्ल वि [°वत्] तृण-वाला। °जीवि वि [°जीविन्] घास खाकर जीनेवाला। °राय पुं [°राज] ताड़ का पेड़। °विंटय, °वेंटय पुं [°वृन्तक] एक क्षुद्र जन्तु-जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष।
तणग वि [तृणक] तृण का बना हुआ।
तणय पुं [तनय] लड़का।
तणय वि [दे] सम्बन्धी।
तणयमुद्दिआ स्त्री [दे] अँगूठी।
तणया स्त्री [तनया] पुत्री।
तणरासि } वि [दे] प्रसारित, फैलाया हुआ।
तणरासिअ }
तणवरंडी स्त्री [दे] उडुप, डोंगी, छोटी नौका।
तणसोल्लि } स्त्री [दे] मल्लिका, पुष्प-
तणसोल्लिया } प्रधान वृक्ष-विशेष। वि. तृण-शून्य।
तणहार } पुं [तृणहार] त्रीन्द्रिय जन्तु
तणहारय } की एक जाति। वि. घास काटकर बेचनेवाला, घसियारा।
तणु वि [तनु] पतला। कृश, दुर्बल। अल्प। लघु, छोटा। सूक्ष्म। स्त्री. शरीर। °तणुई, °तणू स्त्री [°तन्वी] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय जीव द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गलों को शरीर रूप से परिणत करने की शक्ति। °ब्भव वि [°उद्भव] शरीर से उत्पन्न। पुं. लड़का। °ब्भवा स्त्री [°उद्भवा] लड़की। °भू पुंस्त्री. लड़का। लड़की। °य वि [°ज] देखो °ब्भव। °रुह पुंन. केश। पुं. पुत्र। °वाय पुं [°वात] सूक्ष्म वायु-विशेष।
तणुअ वि [तनुक] ऊपर देखो।
तणुअ सक [तनय्] पतला करना। दुर्बल करना।
तणुआ } अक [तनुकाय्] दुर्बल होना,
तणुआअ } कृश होना।
तणुआअरअ वि [तनुत्वकारक] कृशता उपजानेवाला, दौर्बल्य-जनक।
तणुइअ वि [तनूकृत] दुर्बल किया हुआ। कृश किया हुआ।
तणुई स्त्री [तन्वी] पृथ्वी-विशेष, सिद्धशिला। कृशांगी, कोमलांगी।
तणुग देखो तणुअ।
तणुज देखो तणु-य।
तणुजम्म पुं [तनुजन्मन्] पुत्र।
तणुभव देखो तणु-ब्भव।
तणुवी } देखो तणुई।
तणुवीआ }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तणू स्त्री [तनू] काया। ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी। °अ वि [°ज] शरीर से उत्पन्न। पुं. पुत्र। °अतरा स्त्री [°कतरा] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, सिद्धशिला। °रुह पुंन. रोम, बाल।

तणूइय देखो तणुइअ।

तणेण (अप) अ. लिए, वास्ते।

तणेसि पुं [दे] तृण-राशि।

तण्णय पुं [तर्णक] बछड़ा।

तण्णाय वि [दे] आर्द्र।

तण्हा स्त्री [तृष्णा] पिपासा। स्पृहा, वाञ्छा। °लु, °लुअ वि [°वत्] तृष्णावाला, प्यासा।

तण्हाइअ वि [तृष्णित] तृषातुर।

तत देखो तय = तत।

तत्त न [तत्त्व] सत्य-स्वरूप, तथ्य, परमार्थ। °ओ अ [°तस्] वस्तुतः। °ण्णु वि [°ज्ञ] तत्त्व का जानकार।

तत्त पुं [तप्त] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान। प्रथम नरक-भूमि का एक नरक-स्थान। वि. गरम किया हुआ। °जला स्त्री. नदी-विशेष।

तत्त अ [तत्र] वहाँ। °भव, °होंत वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप।

तत्तट्ठसुत्त न [तत्त्वार्थसूत्र] एक प्रसिद्ध जैन दर्शन-ग्रन्थ।

तत्तडिअ न [दे] रंगा हुआ कपड़ा।

तत्ति स्त्री [तृप्ति] सन्तोष। °ल्ल वि [°मत्] तृप्त।

तत्ति स्त्री [दे] आदेश, हुकुम। तत्परता। चिन्ता-विचार। वार्ता, बात। कार्य-प्रयोजन।

तत्तिय वि [तावत्] उतना।

तत्तिल } वि [दे] तत्पर।
तत्तिल्ल }

तत्तु (अप) देखो तत्थ = तत्र।

तत्तुडिल्ल न [दे] सम्भोग।

तत्तुरिअ वि [दे] रञ्जित।

तत्तो देखो तओ। °मुह वि [°मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो वह।

तत्तोहुत्त न [दे] तदाभिमुख, उसके सामने।

तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमें। °भव वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप। °य वि [°त्य] वहाँ का रहनेवाला।

तत्थ वि [त्रस्त] डरा हुआ।

तत्थ देखो तच्च = तथ्य।

तत्थरि पुं [त्रस्तरि] नय-विशेष।

तदा देखो तया = तदा।

तदीय वि [त्वदीय] तुम्हारा।

तदो देखो तओ।

तद्दिअस }
तत्तिअसिअ } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन।
तद्दिअह }

तद्दीअचय न [दे] नृत्य, नाच।

तद्दोसि देखो त-द्दोसि = त्वग्दोषिन्।

तद्धिय पुं [तद्धित] व्याकरण-प्रसिद्ध-प्रत्यय-विशेष। तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ।

तधा देखो तहा।

तप देखो तव = तपस्।

तप्प सक [तप्] तप करना। अक. गरम होना।

तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना।

तप्प न [तल्प] शय्या। °अ वि [°ग] सोने वाला।

तप्प पुंन [तप्र] छोटी नौका। नदी में दूर से बहकर आता हुआ काष्ठ समूह।

तप्पक्खिअ वि [तत्पाक्षिक] उस पक्ष का।

तप्पज्ज न [तात्पर्य] मतलब।

तप्पण न [तर्पण] सत्तू। स्त्रीन. तृप्ति-करण, प्रीणन। स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश।

तप्पणग न [दे] जैन-साधु का पात्र-विशेष, तरपणी।

तप्पणाडुआलिआ स्त्री [दे] सक्तुमिश्रित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोजन।
तप्पभिइं अ [तत्प्रभृति] तबसे लेकर।
तप्पर वि [तत्पर] आसक्त।
तप्पुरिस पुं [तत्पुरुष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष।
तब्भत्तिय वि [तद्भक्तिक] उसका सेवक।
तब्भव पुं [तद्भव] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म। °मरण न. वह मरण जिससे इस जन्म के समान ही परलोक में भी जन्म हो, यहाँ मनुष्य होने से आगामी जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण।
तब्भारिय पुं [तद्भार्य] दास, नौकर, कर्मचारी।
तब्भारिय पुं [तद्भारिक] ऊपर देखो।
तब्भूम वि [तद्भौम] उसी भूमि में उत्पन्न।
तभत्ति अ [दे] शीघ्र।
तम अक [तम्] खेद करना। सक. इच्छा करना।
तम पुं [दे] अफसोस।
तम पुंन [तमस्] अन्धकार। अज्ञान। °तम पुं. सातवीं नरक-पृथिवी का जीव। °तमप्पभा स्त्री [तमप्रभा] सातवीं नरक-पृथिवी। °तमा स्त्री. सातवीं नरक-पृथिवी। °तिमिर न. अन्धकार। अज्ञान। अन्धकार-समूह। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] छठवीं नरक-पृथिवी।
तमंग पुं [तमङ्ग] मतवारण, घर का वरण्डा, छज्जा।
तमंधयार पुं [तमोन्धकार] प्रबल अन्धकार।
तमण न [दे] चूल्हा।
तमणि पुंस्त्री [दे] हाथ। भूर्ज, भोजपत्र।
तमय पुं [तमक] चौथी या पाँचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान।
तमस न [तमस्] अन्धकार।
तमस वि [तामस] अन्धकारवाला।
तमस देखो तम = तमस्।
तमस्सई स्त्री [तमस्वती] घोर अन्धकारवाली रात।
तमा स्त्री. छठवीं नरक-पृथिवी। अधोदिशा।
तमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना।
तमाल पुं. वृक्ष-विशेष। न. तमाल वृक्ष का फूल।
तमिस पुं [तमिस्र] पाँचवें नरक का एक नरक-स्थान। न. अन्धकार। °गुहा स्त्री. गुफा-विशेष।
तमिसंधयार पुं [तमिस्रान्धकार] घोर अंधेरा।
तमिस्स देखो तमिस।
तमी स्त्री. रात।
तमुकाय देखो तमुक्काय।
तमुक्काय पुं [तमस्काय] अन्धकार-प्रचय।
तमुय वि [तमस्] जन्मान्ध। अत्यन्त अज्ञानी।
तमोकसिय वि [तमःकाषिक] प्रच्छन्न क्रिया करनेवाला।
तम्म अक [तम्] खेद करना।
तम्म देखो तम = तम्।
तम्मण वि [तन्मनस्] तल्लीन।
तम्मय वि [तन्मय] तल्लीन, तत्पर। उसका विकार।
तम्मि न [दे] वस्त्र।
तय वि [तत] विस्तार-युक्त। न. वाद्य-विशेष।
तय न [त्रय] तीन का समूह।
तय° देखो तया = तदा। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] तब से।
तय° देखो तया = त्वच्। °क्खाय वि [°खाद] त्वचा को खानेवाला।
तया अ [तदा] उस समय।
तया स्त्री [त्वच्] छाल, चमड़ी। दालचीनी। °मंत वि [°मत्] त्वचा वाला। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति।
तयाणंतर न [तदनन्तर] उसके बाद।
तयाणि, तयाणिं अ [तदानीम्] उस समय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तयाणुग वि [तदनुग] उसका अनुसरण करनेवाला ।
तर अक [तृ] कुशल रहना । सक. तैरना ।
तर अक [त्वर्] त्वरा होना, तेज होना ।
तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना ।
तर न [तरस्] वेग । बल, पराक्रम । °मल्लि वि. वेगवाला । बलवाला । °मल्लिहायण वि [°मल्लिहायन] तरुण, युवा ।
तरंग पुं [तरङ्ग] कल्लोल, लहर । °णंदण न [°नन्दन] नृप-विशेष । °मालि पुं [°मालिन्] समुद्र । °वई स्त्री [°वती] एक नायिका । कथा ग्रन्थ-विशेष ।
तरंगलोला स्त्री [तरङ्गलोला] बप्पभट्टिसूरि-कृत एक अद्भुत प्राकृतिक जैन कथा-ग्रन्थ ।
तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी ।
तरंगिणीनाह पुं [तरङ्गिणीनाथ] समुद्र ।
तरंड पुंन [तरण्ड] डोंगी, नौका ।
तरग वि [तर, °क] तैरनेवाला ।
तरच्छ पुंस्त्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति । °भल्ल पुंस्त्री. श्वापद जन्तु-विशेष ।
तरट्ट वि [दे] प्रगल्भ, धृष्ट, समर्थ, चतुर, हाजिरजवाब ।
तरट्टा, तरट्टी स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री, प्रौढा नायिका, होशियार स्त्री ।
तरण न. तैरना । जहाज, नौका ।
तरणि पुं. सूर्य । जहाज, नौका । घृतकुमारी का पेड़, घीकुँआर का पेड़ । अर्क-वृक्ष ।
तरतम वि. न्यूनाधिक ।
तरल वि. चञ्चल, चपल ।
तरल सक [तरलय्] चञ्चल करना, चलित करना । हिलाना ।
तरवट्ट पुं [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड़, पमाड, पवार ।
तरस न [दे] मांस ।
तरसा अ. जल्दी ।
तरा स्त्री [त्वरा] जल्दी, शीघ्रता ।
तरिअव्व न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका ।
तरिउ वि [तरीतृ] तैरनेवाला ।
तरिया स्त्री [दे] मलाई ।
तरिहि अ [तर्हि] तो, तब ।
तरी स्त्री. नौका डोंगी ।
तरु पुं. पेड़ ।
तरुण वि. जवान ।
तरुणग, तरुणय वि [तरुणक] बालक, किशोर । नवीन, नया ।
तरुणरहस पुंन [दे] बीमारी ।
तरुणिम पुंस्त्री [तरुणिमन्] यौवन ।
तल सक [तल्] तलना, तेल आदि में भूनना ।
तल न [दे] बिछौना । गाँव का मुखिया ।
तल पुं. ताड़ का पेड़ । न. स्वरूप । हथेली । तला, भूमिका । अधोभाग, नीचे । हाथ । मध्य खण्ड । तलवा, पानी के नीचे का भाग या सतह । °ताल पुंन. हस्त-ताल । वाद्य-विशेष । °प्पहार पुं [°प्रहार] तमाचा, चपेटा । °भंगय न [°भङ्गक] हाथ का आभूषण-विशेष । °वट्ट न [°पट्ट] बिछौने की चद्दर । °वट्ट न [°पत्र] ताड़ का पत्ता ।
तल पुंन. वाद्य-विशेष । हथेली । ताल वृक्ष की पत्ती । °वर पुं. राजा ने प्रसन्न होकर जिसको रत्न-जटित सोने का पट्टा दिया हो वह ।
तलअंट सक [भ्रम्] भ्रमण करना, फिरना ।
तलआगत्ति पुं [दे] कूप, इनारा ।
तलओडा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ।
तलप्प अक [तप्] तपना, गरम होना ।
तलप्फल पुं [दे] शालि, व्रीहि, धान ।
तलवत्त पुं [दे] कान का आभूषण-विशेष । उत्तमांग ।
तलवर पुं [दे. तलवर] कोतवाल ।
तलविंट, तलवेंट, तलवोंट न [तालवृन्त] पंखा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तलसारिअ वि [दे] गालित। मुग्ध, मूर्ख।

तलहट्ट सक [सिच्] सींचना।

तलहट्टिया स्त्री [दे] पर्वत का मूल, तराई।

तलाई स्त्री [तडागिका] छोटा तालाब।

तलाग, तलाय न [तड़ाग] तालाब, सरोवर।

तलार पुं [दे] नगर-रक्षक।

तलारक्ख पुं [दे. तलारक्ष] ऊपर देखो।

तलाव देखो तलाग।

तलिआ, तलिगा न [दे] जूता।

तलिण वि [तलिन] प्रतल, सूक्ष्म, बारीक। तुच्छ, क्षुद्र। दुर्बल।

तलिम पुंन [दे] शय्या। कुट्टिम, फरस-बन्द जमीन। घर के ऊपर की भूमि। वास-भवन। भ्राष्ट्र, भूनने का बरतन।

तलिमा स्त्री. वाद्य-विशेष।

तलुण देखो तरुण।

तलेर [दे] देखो तलार।

तल्ल न [दे] पल्वल, छोटा तालाब। तृण-विशेष, बरू। बिछौना।

तल्लक पुं. सुरा-विशेष।

तल्लड न [दे] बिछौना।

तल्लिच्छ वि [दे] तत्पर, तल्लीन।

तल्लेस, तल्लेस्स वि [तल्लेश्य] तल्लीन, तदासक्त।

तल्लोविल्लि स्त्री [दे] तड़फना, व्याकुल होना।

तव अक [तप्] गरम होना। सक. तपश्चर्या करना।

तव सक [तापय्] गरम करना।

तव पुंन [तपस्] तपस्या। °गच्छ पुं. जैन मुनियों की एक शाखा, गण-विशेष। °गण पुं. पूर्वोक्त ही अर्थ। °चरण, °च्चरण न [°चरण] तप-करण। तप का फल, स्वर्ग का भोग। °चरणि वि [°चरणिन्] तपस्या करनेवाला। देखो तवो°।

तव देखो थव।

तव देखो थुण।

तवग्ग पुं [तवर्ग] 'त' से लेकर 'न' तक पाँच अक्षर। °पविभत्ति न [°प्रविभक्ति] नाट्य-विशेष।

तवण पुं [तपन] सूरज। रावण का एक प्रधान सुभट। न. शिखर-विशेष।

तवण पुं [तपन] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान। °तणया स्त्री [°तनया] तापी नदी।

तवणा स्त्री [तपना] आतापना।

तवणिज्ज न [तपनीय] सुवर्ण।

तवणिज्ज पुंन [तपनीय] एक देव-विमान।

तवणी स्त्री [दे] भक्ष्य, भक्षण-योग्य कण आदि। धान्य को खेत से काटकर भक्षण-योग्य बनाने की क्रिया। तवा।

तवय वि [दे] व्यापृत, किसी कार्य में लगा हुआ।

तवय पुं [तपक] तवा, भूनने का भाजन।

तवसि, तवस्सि [तपस्विन्] तपस्या करनेवाला। पुं. साधु, मुनि, ऋषि।

तविअ वि [तापित] गरम किया हुआ। संतापित।

तविअ वि [तपित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान।

तविआ स्त्री [तापिका] तवा का हाथा।

तवु देखो तउ।

तवो देखो तओ।

तवो° देखो तव = तवस्। °कम्म न [°कर्मन्] तपः-करण। °धण पुं [°धन] ऋषि, मुनि। °धर पुं. तपस्वी, मुनि। °वण न [°वन] ऋषि का आश्रम।

तव्वणिय वि [दे] बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का अनुयायी।

तव्वण्णिग वि [दे.तृतीयवर्णिक] तृतीय आश्रम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में स्थित ।

तव्विह वि [तद्विध] उसी प्रकार का ।

तस अक [त्रस्] डरना, त्रास पाना । स्पर्श-इन्द्रिय से अधिक इन्द्रियवाला जीव, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी । एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने-आने की शक्तिवाला प्राणी । °काइय पुं [°कायिक] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव । °काय पुं.त्रस-समूह । जङ्गम प्राणी ।°णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रसकाय में उत्पन्न होता है । °रेणु पुं. बत्तीस हजार सात सौ अड़सठ परमाणुओं का एक परिमाण । °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ।

तसण न [त्रसन] स्पन्दन, चलन, हिलन । पलायन ।

तसनाडी स्त्री [त्रसनाडी] त्रस जीवों के रहने का प्रदेश, जो ऊपर-नीचे मिलाकर चौदह रज्जू परिमित है ।

तसर देखो टसर ।

तसिअ वि [दे] शुष्क, सूखा ।

तसिअ वि [तृषित] पिपासित ।

तसेयर वि [त्रसेतर] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी ।

तह अ [तथा] उसी तरह । और, तथा । पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय । °क्कार पुं [°कार] 'तथा' शब्द उच्चारण । °णाण वि. [°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जाननेवाला । न. सत्य ज्ञान । °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय । °य अ [°च] उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय ।°वि अ [°पि] तो भी । °विह वि [°विध] उस प्रकार का । देखो तहा ।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य ।

तह पुं [तथ] आज्ञाकारक, दास ।

तह
तहीय } न [तथ्य] स्वभाव, स्वरूप । सत्य वचन ।

तहं देखो तह = तथा ।

तहरी स्त्री [दे] पङ्कवाली सुरा ।

तहल्लिआ स्त्री [दे] गोशाला ।

तहा देखो तह = तथा । °गय पुं [°गत] मुक्त आत्मा । सर्वज्ञ । °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का । °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का । °वि वि [°वित्] निपुण, पुं. सर्वज्ञ । °हि अ. वह इस प्रकार ।

तहि देखो तह = तथा ।

तहिं
तहि } [तत्र] वहाँ, उसमें ।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, वास्तविक ।

तहियं अ [तत्र] वहां, उसमें ।

तहेय
तहेव } अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार ।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से ।

ता देखो ताव = तावत् ।

ता अ [तदा] उस समय ।

ता अ [तर्हि] तो, तब ।

ता स्त्री. लक्ष्मी ।

ता° स [तद्] वह । °गंध पुं [°गन्ध] उसका गन्ध । उसके गन्ध के समान गन्ध । °फास पुं [°स्पर्श] उसका स्पर्श । वैसा स्पर्श । °रस पुं. वह स्पर्श । वैसा स्पर्श । °रूव न [रूप] वह रूप । वैसा रूप ।

ताअ देखो ताव = ताप ।

ताअ पुं [तात] पिता । पुत्र ।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना ।

ताअप्प न [तादात्म्य] तद्रूपता, अभेद, अभिन्नता ।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करनेवाला ।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक ।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त ।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक । मुनि, साधु ।

ताइ वि [तायिन्] उपकारी ।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताउं (अप) देखो ताव = तावत् ।

ताठा (चूपै) देखो दाढा ।

ताड सक [ताडय्] ताड़न करना, पीटना। प्रेरणा करना, आघात करना। गुणाकार करना ।

ताड पुं [ताल] ताड़ का पेड़ ।

ताडंक पुं [ताडङ्क] कुण्डल ।

ताडिअ वि [ताडित] जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ । जिसका गुणाकार किया हो वह ।

ताडिअय न [दे] रोदन ।

ताडी स्त्री. वृक्ष-विशेष ।

ताण न [त्राण] शरण, रक्षणकर्ता ।

ताण पुं [तान] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष ।

ताणव न [तानव] कृशता, दुर्बलता ।

ताणिअ वि [तानित] ताना हुआ ।

ताद देखो ताअ = तात ।

तादत्थ न [तादर्थ्य] तदर्थभाव, उसके लिए ।

तादवत्थ न [तादवस्थ्य] स्वरूप का अपभ्रंश वही अवस्था, अभिन्नरूपता ।

तादिस देखो तारिस ।

ताम देखो तम्म = तम् ।

ताम (अप) देखो ताव = तावत् ।

तामर वि [दे] रम्य, सुन्दर ।

तामरस न. कमल ।

तामरस न[दे]पानी में उत्पन्न होनेवाला पुष्प ।

तामलि पुं. एक तापस ।

तामलित्ति स्त्री [ताम्रलिप्ति] वंगदेश की प्राचीन राजधानी ।

तामलित्तिया स्त्री [ताम्रलिप्तिका] जैनमुनि-वंश की एक शाखा ।

तामस न. अन्धकार । अन्धकार-समूह । वि. तमोगुणवाला । °त्थ न [°अस्त्र] कृष्ण वर्ण का वस्त्र-विशेष ।

तामहि } (अप) देखो ताव = तावत् ।
तामहिं }

तायण न [त्राण] रक्षण ।

तायत्तीसग पुं [त्रायस्त्रिंशक] गुरु-स्थानीय देव-जाति ।

तायत्तीसा स्त्री [त्रयस्त्रिंशत्] तेतीस । तेत्तीस-संख्यावाला ।

तार पुं. चौथी नरक का एक स्थान । शुद्ध मोती । प्रणव, ओंकार । मायाबीज, 'ह्रीं' अक्षर । तैरना । वि. निर्मल, देदीप्यमान । अति ऊँचा स्वर । न. चाँदी । पुं. वानर-विशेष । °वई स्त्री[°वती] एक राज-कन्या ।

तारंग न [तारङ्ग] तरङ्ग-समूह ।

तारग वि [तारक] तारनेवाला, पार उतारने-वाला । पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव । सूर्य आदि नव ग्रह । देखो तारय ।

तारगा स्त्री [तारका] नक्षत्र । पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी । देखो तारया ।

तारण न. पार उतारना । वि. तारनेवाला ।

तारत्तर पुं [दे] मुहूर्त्त ।

तारय देखो तारग । न. छन्द-विशेष ।

तारया देखो तारगा । आँख का तारा ।

तारा स्त्री. आँख की पुतली। नक्षत्र। सुग्रीव की स्त्री । सुभूम चक्रवर्ती की माता। नदी-विशेष । बौद्धों की शासनदेवी।°उर न [°पुर] तारंगा-स्थान । °चंद पुं [°चन्द्र] एक राजकुमार । तणय पुं [°तनय] वानर-विशेष, अङ्गद । °पह पुं [°पथ] आकाश । °पहु पुं [°प्रभु] चन्द्रमा । °मेती स्त्री [°मैत्री] निःस्वार्थ मित्रता । °यण न [°यन] कनीनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलन । °वइ पुं [°पति] चन्द्रमा ।

तारि वि [तारिन्] तारनेवाला, तारक ।

तारिम वि. तरणीय, तैरने-योग्य ।

तारिय वि [तारित] पार उतारा हुआ ।

तारिया स्त्री [तारिका] तारा के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया ।

तारिस वि [तादृश] उस तरह का ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तारी स्त्री. तारकजातीय देवी ।

तारुअ वि [तारक] तारनेवाला ।

तारुण्ण न [तारुण्य] यौवन ।

ताल देखो ताड = ताडय् ।

ताल सक[तालय्]ताला लगाना, बन्द करना ।

ताल पुं. वृक्ष-विशेष । वाद्य-विशेष, कंसिका । ताली। चपेटा, तमाचा । वाद्य-समूह। आजीवक मत का एक उपासक । न. ताला, द्वार बन्द करने की कल । तालवृक्ष का फल । °उड न [°पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष । °जंघ पुं [जङ्घ] नृप-विशेष । वि. ताल की तरह लम्बी जाँघवाला । °ज्झय पुं [°ध्वज] बलदेव । नृप-विशेष । शत्रुञ्जय पहाड़ । °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक । °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घकाय राक्षस । °पुड देखो °उड । °यर पुं [°चर] चारण जाति । °बिंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त]पंखा । °संवुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का संपुट, ताल-पत्र-संचय । °सम वि. ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष ।

तालंक पुं [ताडङ्क] कुण्डल । छन्द-विशेष ।

तालंकि पुंस्त्री [तालङ्किन्] छन्द-विशेष ।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र ।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा आदि का प्रहार ।

तालप्फली स्त्री [दे] नौकरानी ।

तालय देखो तालग ।

तालसम न. गेय काव्य का एक भेद ।

तालहल पुं [दे] शालि, व्रीहि ।

ताला अ [तदा] उस समय ।

ताला स्त्री [दे] खोई, धान का लावा ।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजानेवाला ।

तालाचर, तालायर पुं [तालाचर] प्रेक्षक-विशेष, ताल देनेवाला प्रेक्षक । नट, नर्त्तक आदि मनुष्य-जाति ।

तालिअंट सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना ।

तालिअंट न [तालवृन्त] व्यजन ।

तालिअंटिर वि [भ्रमयितृ] घुमानेवाला ।

तालिस देखो तारिस ।

ताली स्त्री. वृक्ष-विशेष । छन्द-विशेष । °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुआ पंखा ।

तालु न [तालु] तालु, मुँह के अन्दर का ऊपरी भाग ।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्घाटनी] ताला खोलने की विद्या ।

तालुर पुं [दे] फीण । कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड़ । पानी का आवर्त्त । पुं. पुष्प का सत्व ।

ताव सक [तापय्] तपाना, गरम करना । सन्ताप करना, दुःख उपजाना ।

ताव पुं [ताप] गरमी, ताप । सन्ताप, दुःख । सूर्य ।°दिसा स्त्री[दिश्] सूर्य-तापित दिशा ।

ताव अ [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय– तबतक । प्रस्तुत अर्थ । अवधारण, निश्चय । अवधि । पक्षान्तर । प्रशंसा । वाक्य-भूषा । मान । साकल्य, सम्पूर्णता । तब, उस समय ।

तावअ वि [तावक] तुम्हारा ।

तावइअ वि [तावत्] उतना ।

तावं देखो ताव = तावत् ।

तावँ, तावँहिं (अप) देखो ताव = तावत् ।

तावण पुं [तापन] चौथी नरकभूमि का एक नरकस्थान। वि.तपानेवाला । न.गरम करना, तपाना । पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ।

तावत्तीस, तावत्तीसग, तावत्तीसय देखो तायत्तीसय ।

तावत्तीसा देखो तायत्तीसा ।

तावस पुं [तापस] तपस्वी, योगी, संन्यासी-विशेष । एक जैनमुनि । °गेह न. तापसों का मठ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तावसा स्त्री [तापसा] जैन मुनियों की एक शाखा।

तावसी स्त्री [तापसी] तपस्विनी, योगिनी।

ताविआ स्त्री [तापिका] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र। कड़ाही, छोटा कड़ाह।

ताविच्छ पुंन [तापिच्छ] तमाल का पेड़।

तावी स्त्री [तापी] नदी-विशेष।

तास पुं [त्रास] भय। उद्वेग, सन्ताप।

तासण वि [त्रासन] त्रास उपजानेवाला।

तासि वि [त्रासिन्] त्रास-युक्त, त्रस्त। त्रास-जनक।

तासिअ वि [त्रासित] जिनको त्रास उपजाया गया हो वह।

ताहे अ [तदा]।

ति अ [त्रिः] तीन बार।

ति देखो तइअ = तृतीय। °भाग, °भाय, °हाअ पुं [°भाग] तीसरा हिस्सा।

ति देखो थी।

ति त्रि.ब. [त्रि] तीन। °अणुअ न [°अणुक] तीन परमाणुओं से बना हुआ द्रव्य। °उण वि [°गुण] तीनगुना। सत्त्व, रजस् और तमस् गुणवाला। °उणिय वि[°गुणित] तीनगुना। °उत्तरसय वि [°उत्तरशततम] १०३वाँ। °उल वि [°तुल] तीन को जीतनेवाला। तीन को तौलनेवाला। °ओय न [°ओजस्] विषम राशि-विशेष। °कंड, °कंडग वि [°काण्ड, °क] तीन काण्डवाला, तीन भाग-वाला। °कडुअ न [°कटुक] सोंठ, मरीच और पीपल। °करण देखो °गरण। °काल न. भूत, भविष्य और वर्त्तमान काल। °क्काल देखो °काल। °खंड वि[°खण्ड] तीन खण्ड-वाला। °खंडाहिवइ पुं [°खण्डाधिपति] अर्धचक्रवर्त्ती राजा, वासुदेव। °गडु, °गडुअ देखो °कडुअ। °गरण न [°करण] मन, वचन और काया। °गुण देखो °उण। °गुत्त वि [°गुप्त] मनोगुप्ति आदि तीन गुप्तिवाला, संयमी। °गोण वि[°कोण] तीन कोनेवाला। °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] तैंतालीस। °जय न [°जगत्] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। °णयण पुं [°नयन] महादेव। °तुल देखो °उल। °त्तिस (अप) देखो °त्तीस। °त्तीस स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] संख्या-विशेष। तेतीस संख्यावाला, तेतीस। °दंड न [°दण्ड] हथियार रखने का उप-करण। तीन दण्ड। °दंडि पुं [°दण्डिन्] संन्यासी, सांख्य मत का अनुयायी साधु। °नवइ स्त्री [°नवति] तिरानबे। तिरानबे संख्यावाला। °पंच त्रि. ब. [°पञ्चन्] पन्द्रह। °पंचासइम वि [°पञ्चाश] त्रिपनवाँ। °पह न [°पथ] जहाँ तीन रास्ते एकत्रित होते हों वह स्थान। °पायण न [°पातन] शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन तीनों का नाश। मन, वचन और काया का विनाश। °पुंड न [°पुण्ड्र] तिलक-विशेष। °पुर पुं. दानव-विशेष। न. तीन नगर। °पुरा स्त्री. विद्या-विशेष। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] छन्द-विशेष। °महुर न [°मधुर] घी, शक्कर और मधु। °मासिआ स्त्री [त्रैमासिकी] जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक प्रतिमा, व्रत-विशेष। °मुह वि [°मुख] तीन मुखवाला। पुं. भगवान् सम्भवनाथजी का शासन-देव। °रत्त न [°रात्र] तीन रात। °रासि न [°राशि] जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ। °लोअ न [°लोकी] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल-लोक। °लोअण पुं [°लोचन] शिव। °लोअपुज्ज पुं [लोकपूज्य] धातकीषण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव। °लोई स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ। °लोग देखो °लोअ। °वई स्त्री [°पदी] तीन पदों का समूह। भूमि में तीन बार पाँव का न्यास। गति-विशेष। °वग्ग पुं [°वर्ग] धर्म, अर्थ और काम ये तीन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरुषार्थ। लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग। सूत्र, अर्थ और उन दोनों का समूह। °वण्ण पुं [°पर्ण] पलाश वृक्ष। °वरिस वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्थावाला। °वलि स्त्री. चमड़ी की तीन रेखाएँ। °वलिय वि [°वलिक] तीन रेखावाला। °वली देखो °वलि। °वट्ठ पुं [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव। °वय न [°पद] तीन पाँव-वाला। °वहआ स्त्री [°पथगा] गंगा नदी। °वायणा स्त्री [°पातना] देखो °पायण। °विट्ठ, °विट्ठु पुं [पृष्ठ, °विष्टु] भरतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्ती राजा का नाम। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का। °विहार पुं. राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर। °संकु पुं [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा। °संझ न [°सन्ध्य]प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय। °सट्ठ वि [°षष्ट] ६३ वाँ। °सट्ठि [°षष्टि] तिरसठ। °सत्त त्रि. ब. [°सप्तन्] एक्कीस। °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] एक्कीस बार। °समइय वि [°सामयिक] तीन समय में उत्पन्न होनेवाला, तीन समय की अवधिवाला। °सरय न [°सरक] तीन सरा या लड़ीवाला हार। वाद्य-विशेष। °सरा स्त्री. मच्छली पकड़ने का जाल-विशेष। °सरिय न [°सरिक] तीन सरा या लड़ी वाला हार। वाद्य-विशेष। वि. वाद्य-विशेष-सम्बन्धी। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष। °सूल न [°शूल] शस्त्र-विशेष। °सूलपाणि पुं [°शूलपाणि] महादेव। त्रिशूल को हाथ में रखनेवाला सुभट। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल। °हत्तर वि [°सप्तत]७३वाँ। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] तीन जगत्—स्वर्ग मर्त्य और पाताल लोक। पुं. राजा कुमारपाल के पिता का नाम। °हुअणपाल पुं [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता। °हुअणालंकार पुं [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम। °हुणविहार पुं [°भुवनविहार] पाटण (गुजरात) में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन-मन्दिर। देखो ते°। °ति देखो इअ = इति।

तिअ (अप) अक [तिम्, स्तिम्] आर्द्र होना। सक. आर्द्र करना।

तिअ न [त्रिक] तीन का समुदाय। वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होनेवाला।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] एक जैनमुनि।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] एक राक्षसी।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह।

तिअलुक्क } न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—
तिअलोय } स्वर्ग, मर्त्य और पाताल-लोक।

तिअस पुं [त्रिदश] देव। °गअ पुं [°गज] ऐरावत या ऐरावण, इन्द्र का हाथी। °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि। °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग। °विलया स्त्री [°वनिता] देवी। °सरि स्त्री [°सरित्] गंगा नदी। °सेल पुं [°शैल] मेरु पर्वत। °लय पुंन. स्वर्ग। °हिव पुं [°धिप] इन्द्र। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र।

तिअससूरि पुं [त्रिदशसूरि] बृहस्पति।

तिअसिंद } पुं [त्रिदशेन्द्र] देव-पति।
तिअसेंद }

तिअसीस पुं [त्रिदशेश] देव-नायक।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता।
तिइज्ज } वि [तृतीय] तीसरा।
तिइय }
तिउक्खर न [त्रिपुष्कर] वाद्य-विशेष।
तिउट्ट सक [त्रोटय्] तोड़ना। परित्याग करना।
तिउट्ट अक [त्रुट्] टूटना। मुक्त होना।
तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित] टूटा हुआ। अपमृत।
तिउड पुं [दे] कलाप, मोर-पिच्छ।
तिउडग पुंन [त्रिपुटक] धान्य-विशेष।
तिउडय न [दे] मालव देश में प्रसिद्ध धान्य-विशेष। लवङ्ग।
तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर। पुं. असुर-विशेष। °णाह पुं [°नाथ] वही।
तिउरी स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष।
तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को पीड़ा पहुँचानेवाला; दुःख का हेतु।
तिऊड देखो तिकूड।
तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज।
तिंगिच्छ देखो तिगिच्छ।
तिंगिच्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-गोत्र-विशेष।
तिंगिच्छि स्त्री [दे] पराग।
तिंत वि [तीमित] भीजा हुआ।
तिंतिण } वि [दे] बड़बड़ करनेवाला,
तिंतिणिय } वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन में जो आवे सो बोलनेवाला।
तिंतिणी स्त्री [तिन्त्रिणी] इमली का पेड़।
तिंतिणी स्त्री [दे] बड़बड़ाना।
तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष-विशेष।
तिंदुग } पुं [तिन्दुक] तेंदू का पेड़। न.
तिंदुय } फल-विशेष। श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान। त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।
तिंदूस } पुंन [तिन्दूस, °क] वृक्ष-विशेष।
तिंदूसग } गेंद। क्रीड़ा-विशेष।
तिकल्लन [त्रैकाल्य] तीनों काल का विषय।

तिकूड पुं [त्रिकूट] लंका का समीपवर्त्ती सुवेल पर्वत। शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष। °सामिय पुं [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का स्वामी, रावण।
तिक्ख वि [तीक्ष्ण] तेज, पैना। सूक्ष्म। चोखा, शुद्ध। पुरुष, निष्ठुर। वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी। क्रोधी, गरम प्रकृतिवाला। तीता, कड़ुवा। उत्साही। आलस्य-रहित। चतुर। न. जहर। लोहा। युद्ध। हथियार। समुद्र का नोन। यवक्षार। श्वेतकुष्ठ। ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र।
तिक्ख सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना। तेज करना। उत्तेजित करना।
तिक्खाल सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना।
तिक्खुत्तो अ [त्रिस्] तीन बार।
तिग देखो तिअ = त्रिक। °वस्सि वि [°वशिन्] मन, वचन और शरीर को काबू में रखनेवाला।
तिगसंपुण्ण न [त्रिकसंपूर्ण] लगातार तीस दिन का उपवास।
तिगिंछ पुं [तिगिञ्छ] द्रह-विशेष।
तिगिंछायण न [तिगिञ्छायन] गोत्र-विशेष।
तिगिंछि पुं [तिगिञ्छि] पर्वत-विशेष। निषध पर्वत पर स्थित एक ह्रद।
तिगिच्छ सक [चिकित्स्] प्रतीकार करना, इलाज करना।
तिगिच्छ पुं [चिकित्स] वैद्य।
तिगिच्छ पुं. निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह। न. देवविमान-विशेष।
तिगिच्छ न [चैकित्स] चिकित्सा-शास्त्र।
तिगिच्छग } वि [चिकित्सक] प्रतीकार
तिगिच्छय } करनेवाला। पुं. वैद्य।
तिगिच्छय न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म।
तिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा। °सत्थ न [°शास्त्र] आयुर्वेद, वैद्यक-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्र ।
तिगिच्छायण न [तिगिच्छायन] गोत्र-विशेष ।
तिगिच्छि देखो तिगिंछि ।
तिगिच्छिय पुं [चैकित्सिक] वैद्य ।
तिग्ग वि [तिग्म] तीक्ष्ण, तेज ।
तिग्घ वि [त्रिघ्न] तीन-गुना ।
तिचूड पुं [त्रिचूड] विद्याधर वंश का एक राजा ।
तिजड पुं [त्रिजट] विद्याधर वंश का एक राजा । राक्षस वंश का एक राजा ।
तिजामा } स्त्री [त्रियामा] रात्रि ।
तिजामी }
तिज्ज वि [तार्य] तैरने-योग्य ।
तिड्डु पुंस्त्री [दे] अन्न-नाश करनेवाला कीट ।
तिड्डुव सक [ताडय्] ताड़न करना ।
तिण न [तृण] घास । °सूय न [°शूक] तृण का अग्र भाग । °हत्थय पुं [°हस्तक] घास का पूला ।
तिणिस पुं [तिनिश] वृक्ष-विशेष, बेंत ।
तिणिस न [दे] मधपुड़ा ।
तिणिस वि [तैनिश] तिनिश-वृक्ष-सम्बन्धी, बेंत का ।
तिणीकय वि [तृणीकृत] तृण-तुल्य माना हुआ ।
तिण्ण } अक [तिम्] आर्द्र होना । सक. आर्द्र करना ।
तिण्णाइअ }
तिण्ण वि [तीर्ण] पार पहुँचा हुआ । समर्थ ।
तिण्ण न [स्तैन्य] चोरी ।
तिण्ण° देखो ति = त्रि । °भंग वि [°भङ्ग] त्रि-खण्ड, तीन खण्डवाला । °विह वि [°विध] तीन प्रकार का ।
तिण्णिअ पुं [तिन्निक] देखो तित्तिअ = तित्तिक ।
तिण्ह देखो तिक्ख ।
तिण्हा देखो तण्हा ।
तितउ पुं. चालनी या चलनी ।
तितय देखो तिअय ।
तितिक्ख देखो तिइक्ख ।
तित्त वि [तृप्त] सन्तुष्ट, खुश ।
तित्त वि [तिक्त] कडुआ । पुं. तीता रस ।
तित्ति देखो तत्ति = दे ।
तित्ति स्त्री [तृप्ति] सन्तोष ।
तित्ति [दे] तात्पर्य, सार ।
तित्तिअ वि [तावत्] उतना ।
तित्तिअ पुं [तित्तिक] म्लेच्छ देश-विशेष । उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति । देखो तिण्णिअ ।
तित्तिर } पुं [तित्तिरि] तीतर या तित्तिर ।
तित्तिरि }
तित्तिरिअ वि [दे] स्नान से आर्द्र ।
तित्तिल वि [तावत्] उतना ।
तित्तिल्ल पुं [दे] प्रतीहार ।
तित्तुअ वि [दे] भारी ।
तित्तुल (अप) देखो तित्तिल ।
तित्थ पुं [त्रिस्थ] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैनसंघ ।
तित्थ पुं [त्र्यर्थ] ऊपर देखो ।
तित्थ न [तीर्थ] प्रथम गणधर । दर्शन, मत । यात्रा-स्थान, पवित्र जगह । प्रवचन, शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी । पुंन. अवतार, घाट, नदी वगैरह में उतरने का रास्ता । °कर, °गर देखो °यर । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] तीर्थ-गमन । °णाह पुं [°नाथ] जिन-देव । °यर वि [°कर] तीर्थ का प्रवर्तक । पुं. जिन-देव, जिन भगवान् ।°यरणाम न [°करनामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से जीव तीर्थंकर होता है । °राय पुं [°राज] जिन-देव । °सिद्ध पुं. तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव । °ाहिनायग पुं [°ाधिनायक] जिनदेव । °ाहिव पुं [°ाधिप] संघनायक, जिन-देव ।°ाहिवइ पुं [°ाधिपति] जिनदेव, जिन भगवान् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थंकर पुं [तीर्थङ्कर] देखो तित्थ-यर।

तित्थि वि [तीर्थिन्] दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्। किसी दर्शन का अनुयायी।

तित्थिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो।

तित्थीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो।

तित्थेसर पुं [तीर्थेश्वर] जिन भगवान्।

तिदस देखो तिअस।

तिदिव न [त्रिदिव] स्वर्ग।

तिध (अप) देखो तहा।

तिन्न वि [दे] स्तीमित, आर्द्र।

तिपन्न देखो ते-वण्ण।

तिप्प सक [तिप्] देना।

तिप्प अक [तृप्] तृप्त होना।

तिप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना।

तिप्प अक [तिप्] झरना, चूना। अफसोस करना। रोना। सक. सुखच्युत करना।

तिप्प पुंन [त्रेप] अपान आदि धोने की क्रिया, शौच।

तिप्प वि [तृप्त] सन्तुष्ट, खुश।

तिप्पण न [तिपन] पीड़न, हैरानी।

तिप्पणया स्त्री [तेपनता] रोदन।

तिप्पाय न [त्रिपाद] तप-विशेष, नीवी।

तिम (अप) देखो तहा।

तिमि पुं. मत्स्य की एक जाति।

तिमिंगिल पुं [दे] मत्स्य, मछली, तिमि (मत्स्य) को निगलने वाला मत्स्य।

तिमिंगिल पुं [तिमिङ्गिल] मत्स्य की एक जाति। °गिल पुं. बड़ी भारी मछली।

तिमिंगिलि पुं [तिमिङ्गिल] मत्स्य की एक जाति।

तिमिगिल देखो तिमिंगिल = तिमिङ्गिल।

तिमिच्छय, तिमिच्छाह पुं [दे] मुसाफिर।

तिमिण न [दे] गीला काष्ठ।

तिमिर न. अंधेरा। निकाचित कर्म। अल्प ज्ञान। अज्ञान। पुं. वृक्ष-विशेष।

तिमिरिच्छ पुं [दे] करंज का पेड़।

तिमिरिस पुं [दे] वृक्ष-विशेष।

तिमिल स्त्रीन. वाद्य-विशेष।

तिमिस पुं [तिमिष] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हड़ा।

तिमिसा, तिमिस्सा स्त्री [तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा।

तिम्म अक [स्तीम्] भींजना, आर्द्र होना।

तिम्म सक [तिम्] आर्द्र करना। अक. गीला होना।

तिम्म देखो तिग्ग।

तिया स्त्री [स्त्रिका] महिला।

तियाल देखो ते-आलीस।

तिरक्कर सक [तिरस् + कृ] तिरस्कार करना, अवधीरणा करना।

तिरक्करिणी, तिरक्खरिणी स्त्री [तिरस्करिणी] परदा।

तिरक्कार पुं [तिरस्कार] तिरस्कार, अपमान अवहेलना।

तिरच्छ देखो तिरिच्छ।

तिरि, तिरिअं अ [तिर्यक्] तिरछा, टेढ़ा।

तिरिअ वि [तैरश्च] तिर्यंच का।

तिरिअ, तिरिअंच, तिरिक्ख, तिरिच्छ वि [तिर्यंच्] वक्र, कुटिल, बाँका। पुं. पशु, पक्षी आदि प्राणी, देव, नारक और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु। मर्त्यलोक, मध्य लोक। न. मध्य। °गइ स्त्री [°गति] तिर्यग्-योनि। टेढ़ी चाल। °जंभग पुं [°जृम्भक] देवों की एक जाति। °जोणि स्त्री [°योनि] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान। °जोणिअ वि [°योनिक] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न। °जोणिणी स्त्री [°योनिका] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री। °दिसा °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व आदि दिशा। °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच में पड़ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहाड़, मार्गावरोधक पर्वत। °भित्ति स्त्री. बीच की भीत। °लोग पुं [°लोक] मर्त्य लोक। °वसइ स्त्री [°वसति] तिर्यग्-योनि।

तिरिच्छ वि [तिरश्चीन] तिर्यग् गत, टेढ़ा गया हुआ। तिर्यग्-सम्बन्धी।

तिरिच्छि देखो तिरिअ।

तिरिच्छिय देखो तेरिच्छिय।

तिरिच्छी स्त्री [तिरश्ची] तिर्यक्-स्त्री।

तिरिड पुं [दे] तिमिर वृक्ष।

तिरिडिअ वि [दे] तिमिर-युक्त। विचित।

तिरिट्टि पुं [दे] गरम पवन।

तिरिश्चि (मा) देखो तिरिच्छि।

तिरीड पुंन [किरीट] मुकुट।

तिरीड पुं [तिरीट] वृक्ष-विशेष। °पट्टय न [°पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा।

तिरोभाव पुं. अन्तर्धान।

तिरोवइ वि [दे] वृति से अन्तर्हित, बाड़ से व्यवहित।

तिरोहा सक [तिरस् + धा] अन्तर्हित करना, लोप करना, अदृश्य करना।

तिरोहिअ वि [तिरोहित] लुप्त, अन्तर्हित, अदृश्य, आच्छादित।

तिल पुं. तिल। ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष। °कुट्टी स्त्री. तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु, तिलकुट। °पप्पडिया स्त्री [°पर्पटिका] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज, तिल-पापड़। °पुप्फवण्ण पुं [°पुष्पवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष। °मल्ली स्त्री. एक खाद्य वस्तु। °संगलिया स्त्री [°संगलिका] तिल की फली। °सक्कुलिया स्त्री [°शष्कुलिका] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष, तिलखुजिया।

तिलइअ वि [तिलकित] तिलक की तरह आचरित, विभूषित।

तिलंग पुं [तिलङ्ग] आन्ध्र प्रान्त।

तिलग, तिलय पुं [तिलक] वृक्ष-विशेष। पहला प्रतिवासुदेव। द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। न. पुष्प-विशेष। टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न। एक विद्याधर-नगर।

तिलगकरणी स्त्री [तिलककरणी] तिलक करने की सलाई। गोरोचना, पीले रंग का एक सुगन्धित द्रव्य जो गाय के पित्ताशय से निकलता है।

तिलबट्टी स्त्री [तिलपर्पटी] तिल की बनी हुई एक खाद्य वस्तु तिलपट्टी।

तिलितिलय पुं [दे] जल-जन्तु-विशेष।

तिलिम स्त्रीन [दे] वाद्य-विशेष।

तिलुक्क न [त्रैलोक्य] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक।

तिलुत्तमा देखो तिलोत्तमा।

तिलेल्ल न [तिलतैल] तिल का तेल।

तिलोक्क देखो तिलुक्क।

तिलोत्तमा स्त्री. एक स्वर्गीय अप्सरा।

तिलोदग, तिलोदय न [तिलोदक] तिल का धोवन-जल।

तिल्ल न [तैल] तेल।

तिल्ल न. छन्द-विशेष।

तिल्लग वि [तैलक] तेल बेचनेवाला।

तिल्लहडी स्त्री [दे] गिलहरी।

तिल्लोदा स्त्री [तैलोदा] नदी-विशेष।

तिवँ (अप) देखो तहा।

तिवण्णी स्त्री [त्रिवर्णी] एक महौषधि।

तिवाय सक [त्रि + पातय्] मन, वचन और काय से नष्ट करना, जान से मार डालना।

तिविक्कम पुं [त्रिविक्रम] जैनमुनि।

तिविडा स्त्री [दे] सूची, सूई।

तिविडी स्त्री [दे] छोटा पुड़वा।

तिव्व वि [तीव्र] प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट। रौद्र, भयानक। गाढ़। तिक्त। उत्तम, प्रकर्ष-युक्त।

तिव्व वि [दे. तीव्र] दुःसह। अत्यन्त अधिक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिसंथ वि [त्रिसंस्थ] तीन बार सुनने से अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला।

तिसला स्त्री [त्रिशला] भगवान् महावीर की माता। °सुअ पुं [°सुत] भगवान् महावीर।

तिसा स्त्री [तृषा] पिपासा।

तिसाइय } वि [तृषित] प्यासा।
तिसिय }

तिसिर पुं. ब. [त्रिशिरस्] देश-विशेष। पुं. नृप-विशेष। रावण का एक पुत्र।

तिस्सगुत्त देखो तीसगुत्त।

तिह (अप) देखो तहा।

तिहि पुंस्त्री [तिथि] पञ्चदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख।

तीअ वि [तृतीय] तीसरा।

तीअ नि [अतीत] बीता हुआ। पुं. भूतकाल।

तीइल पुं [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष।

तीमण न [तीमन] कढ़ी।

तीमिअ वि [तीमित] आर्द्र।

तीय वि [तैत] तीन।

तीर अक [शक्] समर्थ होना।

तीर सक [तीरय्] समाप्त करना, परिपूर्ण करना।

तीर पुंन. किनारा, तट।

तीरंगम वि. पार-गामी।

तीरट्ठ पुं [तीरस्थ, तीरार्थ] साधु, मुनि, श्रवण।

तीरिया स्त्री [दे] शर या तीर रखने का थैला, तरकस, तूणीर।

तीस न [त्रिंशत्] तीस। तीस-संख्यावाला।

तीसआ } स्त्री [त्रिंशत्] ऊपर देखो।
तीसइ } °वरिस वि [°वर्ष] तीस वर्ष की उम्र का।

तीसइम वि [त्रिंश] तीसवाँ। न. लगातार चौदह दिनों का उपवास।

तीसग वि [त्रिंशक] तीस वर्ष की उम्रवाला।

तीसगुत्त पुं [तिष्यगुप्त] एक प्राचीन आचार्य-विशेष जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था।

तीसभद्द पुं [तिष्यभद्र] एक जैनमुनि।

तीसम वि [त्रिंश] तीसवाँ।

तीसा स्त्री. देखो तीस।

तीसिया स्त्री [त्रिंशिका] तीस वर्ष की उम्र की स्त्री।

तु अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—भेद, विशेषण। निश्चय। समुच्चय। कारण। पाद-पूरक अव्यय।

तुअ सक [तुद्] व्यथा करना, पीड़ा करना।

तुअर पुं [तुवर] धान्य-विशेष, रहर।

तुअर अक [त्वर्] जल्दी होना।

तुंग वि [तुङ्ग] ऊँचा, उच्च। छन्द-विशेष।

तुंगार पुं [तुङ्गार] अग्निकोण का पवन।

तुंगिम पुंस्त्री [तुङ्गिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व।

तुंगिय पुं [तुङ्गिक] ग्राम-विशेष। पर्वत-विशेष। पुंस्त्री. गोत्र-विशेष में उत्पन्न।

तुंगिया स्त्री [तुङ्गिका] नगरी-विशेष।

तुंगियायण न [तुङ्गिकायन] एक गोत्र का नाम।

तुंगी स्त्री [दे] रात्रि। आयुध-विशेष।

तुंगीय पुं [तुङ्गीय] पर्वत-विशेष।

तुंड स्त्रीन [तुण्ड] मुख। अग्र-भाग।

तुंडीर न [दे] मधुर-बिम्बी-फल।

तुंडूअ पुं [दे] जीर्ण घट, पुराना घड़ा।

तुंतुक्खुडिअ वि [दे] त्वरा-युक्त।

तुंद न [तुन्द] उदर।

तुंदिल } वि [तुन्दिल] बड़ा पेटवाला।
तुंदिल्ल }

तुंब न [तुम्ब] तुम्बी, लौकी। गाड़ी की नाभि। ज्ञाताधर्मकथा सूत्र का एक अध्ययन। पहिये के बीच का गोल अवयव। °वण न [°वन] सन्निवेश-विशेष, एक गाँव का नाम। °वीण वि. वीणा-विशेष को बजानेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°वीणा स्त्री. वाद्य-विशेष। °वीणिय वि [°वीणिक] वही पूर्वोक्त अर्थ।
तुंबरु देखो तुंबुरु।
तुंबा स्त्री [तुम्बा] लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद्।
तुंबाग पुंन [तुम्बक] कद्दू, लौकी।
तुंबिणी स्त्री [तुम्बिनी] वल्ली-विशेष।
तुंबिल्ली स्त्री [दे] मधु-पटल। उदूखल।
तुंबी स्त्री [तुम्बी] अलाबू, लौकी। जैन-साधुओं का एक पात्र, तपरनी।
तुंबुरु पुं [तुम्बुरु] टिंबरू का पेड़। गन्धर्व देवों की एक जाति। भगवान् सुमतिनाथ का शासनाधिष्ठायक देव। शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष।
तुक्खार पुं [दे] एक उत्तम जाति का अश्व। देखो तोक्खार।
तुच्छ पुंस्त्री [तुच्छा] रिक्ता तिथि, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथि।
तुच्छ वि [दे] सूखा, नीरस।
तुच्छ वि. हलका, जघन्य, निकृष्ट, हीन। अल्प। शून्य, रिक्त। निःसार। अपूर्ण।
तुच्छइअ, तुच्छय } वि [दे] अनुराग-प्राप्त।
तुच्छिम पुंस्त्री [तुच्छत्व] तुच्छता।
तुज्ज न [तूर्य] बाजा।
तुट्ट अक [त्रुट्, तुड्] टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना। घटना, बीतना।
तुट्ट वि [त्रुटित] टूटा हुआ, छिन्न, खण्डित।
तुट्टण न [त्रोटन] विच्छेद, पृथक्करण।
तुट्ठ वि [तुष्ट] सन्तुष्ट, खुश।
तुट्ठि स्त्री [तुष्टि] खुशी, आनन्द, सन्तोष। कृपा, मेहरबानी।
तुड अक [तुड्] टूटना, अलग होना।
तुडि स्त्री [त्रुटि] न्यूनता, कमी। दोष, दूषण। सन्देह।
तुडिअ न [तुटिक] अन्तःपुर।
तुडिअ न [दे. त्रुटित] वाद्य। बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष। संख्या-विशेष 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह। साँधा, फटे हुए वस्त्र आदि में लगायी जाती पट्टी, पेबन।
तुडिअंग न [दे. त्रुटिताङ्ग] संख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह। पुं. वाद्य देनेवाला कल्प-वृक्ष।
तुडिआ स्त्री [तुडिता] लोकपाल देवों के अग्र-महिषियों की मध्यम परिषद्।
तुडिआ स्त्री [दे. तुटिका] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष।
तुणय पुं [दे] वाद्य-विशेष।
तुण्णग देखो तुण्णाग।
तुण्णण न [तुन्नन] फटे हुए वस्त्र का सन्धान।
तुण्णाग, तुण्णाय } पुं [तुन्नवाय] वस्त्र को साँधनेवाला, रफू करनेवाला, शिल्पी।
तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुआ, साँधा हुआ।
तुण्हि अ [तूष्णीम्] मौन, चुपचाप, चुपके से।
तुण्हि पुं [दे] सूअर।
तुण्हिअ, तुण्हिक्क } वि [तूष्णीक] मौन रहा हुआ, चुप रहनेवाला।
तुण्हिं देखो तुण्हि = तूष्णीम्।
तुण्हिक्क वि [दे] मृदु-निश्चल।
तुण्हीअ देखो तुण्हिअ।
तुत्त देखो तोत्त।
तुद देखो तुअ।
तुद पुं [तोद] अरदार डंडा, चाबुक।
तुन्नण न [तुन्नन] रफू करना।
तुन्नार पुं [तुन्नकार] रफू करनेवाला शिल्पी।
तुप्प पुं [दे] कौतुक। विवाह। सरसों। कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र। वि. चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त। स्निग्ध। न. घी।
तुप्प वि [दे] वेष्टित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुप्पइअ
तुप्पलिअ } वि [दे] घी से लिप्त।
तुप्पविअ

तुमंतुम पुं [दे] क्रोध-कृत मनो-विकार-विशेष। तिरस्कार-वचन, तू-तू। वाक्-कलह। वि. तूकारे से बात कहनेवाला।

तुमुल पुं. लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम। न. शोरगुल।

तुम्ह स [युष्मत्] तुम, आप।

तुम्हकेर वि [त्वदीय] तुम्हारा।

तुम्हकेर वि [युष्मदीय] आपका, तुम्हारा।

तुम्हार (अप) ऊपर देखो।

तुम्हारिस वि [युष्मादृश] आपके जैसा, तुम्हारे जैसा।

तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा।

तुयट्ट अक [त्वग् + वृत्] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना।

तुर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना।

तुर° } स्त्री [त्वरा] शीघ्रता। °वंत
तुरा } [°वत्] त्वरा-युक्त।

तुरंग पुं [तुरङ्ग] अश्व, रामचन्द्र का एक सुभट।

तुरंगम पुं [तुरङ्गम] घोड़ा।

तुरंगिआ स्त्री [तुरङ्गिका] घोड़ी।

तुरक्क पुं [दे. तुरुष्क] तुर्किस्तान। तुर्क जाति।

तुरग देखो तुरय। °मुह पुं [°मुख] अनार्य देश-विशेष। °मेढग पुं [°मेढ्रक] अनार्य देश-विशेष।

तुरमणी देखो तुरुमणी।

तुरय पुं [तुरग] अश्व। छन्द-विशेष। °देह-पिंजरण न [°देहपिञ्जरण] अश्व को सिंगारना, सँवारना, श्रृंगार करना। देखो तुरग।

तुरयमुह देखो तुरग-मुह। त्वरावाला।

तुरिअ वि [त्वरित] उतावला। °गइ वि [°गति] शीघ्र गतिवाला। पुं. अमितगति नामक इन्द्र का एक लोकपाल।

तुरिअ वि [तुर्य] चतुर्थ। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मरणदशा।

तुरिअ न [तूर्य] बाजा।

तुरिमिणी देखो तुरुमणी।

तुरी स्त्री [दे] पीन, पुष्ट। शय्या का उपकरण।

तुरु न [दे] वाद्य-विशेष।

तुरुक्क न [तुरुष्क] लोबान, सिल्हक। पुं. तुर्किस्तान। वि. तुर्किस्तान का।

तुरुक्की स्त्री [तुरुष्की] लिपि-विशेष।

तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष।

तुल सक [तोलय्] तौलना। उठाना। ठीक-ठीक निश्चय करना।

तुल° देखो तुला।

तुलंगा देखो तुलग्गा।

तुलग्ग न [दे] काकतालीय न्याय।

तुलग्गा स्त्री [दे] स्वैरिता, स्वेच्छा।

तुलण न [तुलन] तौलना, तोलन।

तुलणा न[तुलना] तौलना, तोलन। तौल, वजन।

तुलय वि [तोलक] तौलनेवाला।

तुलसिआ स्त्री [तुलसिका] नीचे देखो।

तुलसी स्त्री [दे. तुलसी]लता-विशेष, तुलसी।

तुला स्त्री. राशि-विशेष। तराजू। उपमा, सादृश्य। १०५ या ५०० पल का एक नाप। °सम वि. राग-द्वेष से रहित, मध्यस्थ।

तुलिअ वि [तुलित] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ। तौला हुआ। गुना हुआ।

तुल्ल वि [तुल्य] समान।

तुवट्ट देखो तुयट्ट।

तुवट्ट पुं [त्वग्वर्त] शयन, लेटना।

तुवर अक [त्वर्] त्वरा होना, शीघ्र होना, तेज होना।

तुवर पुंन. कषाय रस। वि. कषाय रसवाला, कसैला।

तुवरा देखो तुरा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुवरी स्त्री. अन्न-विशेष, अरहर ।

तुस पुं [तुष] कोदव या कोदो आदि तुच्छ धान्य । भूसी ।

तुसणीअ वि [तूष्णीक] मौनी ।

तुसली स्त्री [दे] धान्य-विशेष ।

तुसार न [तुषार] हिम । °कर पुं. चन्द्र ।

तुसारअर देखो तुसार-कर ।

तुसिण देखो तुसणीअ ।

तुसिणिय, तुसिणीय } वि [तूष्णीक] मौनी, वचन-रहित ।

तुसिणी अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी ।

तुसिय पुं [तुषित] लोकान्तिक देवों की एक जाति ।

तुसेअजंभ न [दे] काष्ठ ।

तुसोदग, तुसोदय } न [तुषोदक] व्रीहि आदि का धौत-जल -- धोवन ।

तुस्स देखो तूस = तुष् ।

तुह° स [त्वत्°] तुम । °तणय वि [°सम्बन्धिन्] तुम्हारा, तुमसे सम्बन्ध रखनेवाला ।

तुहग पुं. कन्द की एक जाति ।

तुहार (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा ।

तुहिण न [तुहिन] तुषार, बर्फ । °इरि पुं [°गिरि] हिमाचल पर्वत । °कर पुं. चन्द्रमा । °गिरि देखो °इरि । °लय पुं. हिमालय पर्वत ।

तुहिणायल पुं [तुहिनाचल] हिमालय पर्वत ।

तूअ पुं [दे] ईख का काम करनेवाला ।

तूण पुंन. भाथा, तरकस ।

तूणइल्ल पुंन [तूणावत्] तूणा नामक वाद्य बजानेवाला ।

तूणय पुं [तूणक] वाद्य-विशेष ।

तूणा, तूणि° } स्त्री. वाद्य-विशेष । इषुधि, भाथा ।

तूयरी स्त्री [तूवरी] रहर, अरहर ।

तूर देखो तुरव ।

तूर पुंन [तूर्य] वाद्य, बाजा, तुरही । °वइ पुं [°पति] नटों का मुखिया ।

तूरविअ वि [त्वरित] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह ।

तूरिय पुं [तौर्यिक] वाद्य बजानेवाला, बजनियाँ ।

तूरी स्त्री [दे] एक प्रकार की मिट्टी ।

तूल न. रुई, बीज-रहित कपास ।

तूलिअ न. नीचे देखो ।

तूलिआ स्त्री [तूलिका] रुई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा, तोशक । तसवीर—चित्र बनाने की कलम ।

तूलिणी स्त्री [दे] शाल्मली का पेड़ ।

तूलिल्ल वि [तूलिकावत्] तसवीर बनाने की कलमवाला, कूचिका-युक्त ।

तूली स्त्री. देखो तूलिआ ।

तूवर देखो तुवर ।

तूस अक [तुष्] खुश होना ।

तूह देखो तित्थ ।

तूहण पुं [दे] आदमी ।

ते° देखो ति = त्रि । °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] चालीस और तीन की संख्या । तेआलीस की संख्यावाला । °आलीसइम वि [°चत्वारिंश] तेआलीसवाँ । °आसी स्त्री [°अशीति] तीरासी की संख्या । तिरासी की संख्यावाला । °आसीइम वि [°अशीतितम] तिरासीवाँ । °इंदिय पुं [°इन्द्रिय] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रियवाला प्राणी । °ओय पुं [°ओजस्] विषम राशि-विशेष । °णउइ स्त्री [°नवति] तिरानबे । °णउय वि [°नवत] तिरानबेवाँ । °णवइ देखो °णउइ । °तीस, °त्तीस स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] तेतीस । °तीसइम वि [त्रयस्त्रिंश] तेतीसवाँ । °वट्ठि स्त्री [षष्टि] तिरसठ । °वण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] त्रेपन । °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] तिहत्तर । °वीस स्त्रीन [त्रयोविंशति] तेइस । °वीस, °वीसइम वि [त्रयोविंश] तेईसवाँ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°संझ न [°सन्ध्य] प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल का समय। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] देखो °वट्ठि। °सीइ स्त्री [°अशीति] तिरासी। °सीइम वि [°अशीत] तिरासीवाँ।

तेअ सक [तिजय्] तेज करना, पैनाना, धार तेज करना, तीक्ष्ण करना।

तेअ देखो तइअ = तृतीय।

तेअ पुं [तेजस्] कान्ति, प्रकाश। ताप, अभिताप। प्रताप। माहात्म्य, प्रभाव। बल, पराक्रम। °मंत वि [°विन्] प्रभा-युक्त। °वीरिय पुं [°वीर्य] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र।

तेअ न [स्तेय] चोरी।

तेअ देखो तेअय।

तेअ पुं [?] टेक, स्तम्भ।

तेअंसि वि [तेजस्विन्] तेज-युक्त।

तेअग देखो तेअय।

तेअण न [तेजन] तेज करना। उत्तेजन। वि. उत्तेजित करनेवाला।

तेअय न [तैजस] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष।

तेअलि पुं [तेतलिन्] मनुष्य जाति-विशेष। एक मन्त्री के पिता का नाम। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कनकरथ का एक मन्त्री। °पुर न. नगर-विशेष। °सुय पुं [°सुत] देखो °पुत्त। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र + दीप्] दीपना, चमकना। जलना।

तेअवाल देखो तेजपाल।

तेअविय वि [तेजित] तेज किया हुआ।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम।

तेआ स्त्री [तेजा] पक्ष की तेरहवीं रात।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि।

तेआ स्त्री [त्रेता] दूसरा युग।

तेआ° देखो तेअय।

तेआलि पुं [दे] वृक्ष-विशेष।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा।

तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज।

तेइज्जग वि [तार्तीयीक] तीसरा। जाड़ा देकर तीसरे-तीसरे दिन पर आनेवाला ज्वर, तिजारा।

तेइल्ल देखो तेअंसि।

तेउ पुं [तेजस्] अग्नि। तेजो-लेश्या। अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल। ताप, अभिताप। प्रकाश, उद्योत। °आय देखो °काय। °कंत पुं [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष। °काइय पुं [°कायिक] अग्नि का जीव। °काय पुं. अग्नि का जीव। °वकाइय देखो °काइय। °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण-स्पर्श। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्यावाला। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप-विशेष के प्रभाव से होनेवाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती तेज की ज्वाला। °लेस्स देखो °लेस। °लेस्सा देखो °लेसा। °सिह पुं [°शिख] एक लोकपाल। °सोय न [°शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच।

तेउ देखो तेअय।

तेंडुअ न [दे] टींबरू का पेड़।

तेंदु
तेंदुअ } पुं [तिन्दुक] तेंदु का पेड़। कन्दुक।
तेंदुग

तेंदुसय पुं [दे] गेंद।

तेंबरु पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

तेगिच्छ देखो तेइच्छ।

तेगिच्छग वि [चिकित्सक] चिकित्सा करने-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाला । पुं. वैद्य, हकीम ।
तेगिच्छा देखो तेइच्छा ।
तेगिच्छायण देखो तिगिच्छायण ।
तेगिच्छि देखो तिगिंछि ।
तेगिच्छिय वि [चैकित्सिक] चिकित्सा करने-वाला । पुं. वैद्य, हकीम । न. चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण । °साला स्त्री [°शाला] दवाखाना ।
तेचत्तारीस देखो ते-आलीस ।
तेज देखो तेज = तेजय ।
तेज पुं. देश-विशेष ।
तेजंसि देखो तेअंसि ।
तेजपाल पुं. राजा वीरधवल का एक यशस्वी मन्त्री ।
तेजलपुर न. एक नगर ।
तेजस्सि देखो तेअंसि ।
तेज्ज (अप) देखो चय = त्यज् ।
तेड सक [दे] बुलाना ।
तेड्डु पुं [दे] शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्डी । पिशाच, राक्षस ।
तेण अ [तेन] लक्षण-सूचक अव्यय । उस तरफ ।
तेण, तेणग, तेणय पुं [स्तेन] तस्कर । °प्पओग पुं [°प्रयोग] चोर को चोरी करने के लिए प्रेरणा करना । चोरी के साधनों का दान या विक्रय ।
तेणिअ, तेणिक्क न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु का ग्रहण ।
तेणिस वि [तैनिश] तिनिशवृक्ष-सम्बन्धी, बेंत का ।
तेणी स्त्री [स्तेना] चोर-स्त्री ।
तेण्ण न [स्तैन्य] चोरी, पर-द्रव्य का अप-हरण ।
तेण्हाइअ वि [तृष्णित] प्यासा ।
तेतलि पुं [तेतलिन्] धरणेन्द्र की गन्धर्वसेना का नायक । देखो तेअलि ।
तेतिल देखो तीइल ।
तेत्तिअ वि [तावत्] उतना ।
तेत्तिक (शौ) देखो तेत्तिअ ।
तेत्तिर देखो तित्तिर ।
तेत्तिल वि [तावत्] उतना ।
तेत्तिल न [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष ।
तेत्तुल, तेत्तुल्ल (अप) ऊपर देखो ।
तेत्थु (अप) देखो तत्थ = तत्र ।
तेद्दह देखो तेत्तिल ।
तेम (अप) देखो तह = तथा ।
तेमासिअ वि [त्रैमासिक] तीन महीने में होने-वाला । तीन मास-सम्बन्धी ।
तेम्व देखो तेम ।
तेर वि [त्रयोदश] तेरहवाँ ।
तेर (अप) वि [त्वदीय] तेरा, तुम्हारा ।
तेर, तेरस [त्रयोदशन्] तेरह ।
तेरच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यच् ।
तेरस देखो तेरसम ।
तेरसम वि [त्रयोदश] तेरहवाँ ।
तेरसया स्त्री [दे] जैन मुनियों की एक शाखा ।
तेरसी स्त्री [त्रयोदशी] तेरहवाँ । तेरस ।
तेरसुत्तरसय वि [त्रयोदशोत्तरशततम] एक सौ तेरहवाँ ।
तेरह देखो तेरस ।
तेरासि पुं [त्रैराशिक] नपुंसक ।
तेरासिअ वि [त्रैराशिक] त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और नोजीव इन तीन राशियों को मानने वाला । न. मत-विशेष ।
तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यच् ।
तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिरश्चीन ।
तेरिच्छ न [तिर्यक्त्व] तिर्यंचपन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेल न [तैल] गोत्र-विशेष । तेल ।

तेलंग पुं. ब. [तैलङ्ग] देश-विशेष । पुंस्त्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य, तैलंगी ।

तेलाडी स्त्री [तैलाटी] कीट-विशेष, गंधोली ।

तेलुक्क, तेलोअ, तेलोक्क न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक । °दंसि वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी । °णाह पुं [°नाथ] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर । °मंडण न [°मण्डन] तीनों जगत् का भूषण । पुं. रावण का पट्ट-हस्ती ।

तेल्ल न [तैल] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य विशेष । °केला स्त्री. मिट्टी का भाजन-विशेष । °पल्ल न [°पल्य] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष । °पाइया स्त्री [°पायिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष ।

तेल्लग न [तैलक] सुरा-विशेष ।

तेल्लिअ पुं [तैलिक] तेल बेचनेवाला ।

तेल्लोअ, तेल्लोक्क देखो तेलुक्क ।

तेवँ, तेवँइ (अप) देखो तह = तथा ।

तेवट्ठ वि [त्रैषष्ठ] तिरसठ की संख्यावाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी संख्या ।

तेवड (अप) वि [तावत्] उतना ।

तेवण्णासा स्त्री [त्रिपञ्चाशत्] त्रेपन ।

तेवीसइ स्त्री [त्रयोविंशति] तेईस ।

तेवुत्तरि देखो ते-वत्तरि ।

तेह (अप) वि [तादृश्] उसके जैसा, वैसा ।

तेहिं (अप) अ. वास्ते, लिए ।

तेहिय वि [त्र्याहिक] तीन दिन का ।

तेहुत्तरि देखो ते-वत्तरि ।

तो देखो तओ ।

तो अ [तदा] तब ।

तोअय पुं [दे] चातक पक्षी ।

तोंड देखो तुंड ।

तोंतडि स्त्री [दे] करम्ब, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु ।

तोक्कय वि [दे] बिना ही कारण तत्पर होनेवाला ।

तोक्खार देखो तुक्खार ।

तोटअ न [त्रोटक] छन्द-विशेष ।

तोड सक [तुड्] तोड़ना, भेदन करना । अक. टूटना ।

तोड पुं [त्रोड]त्रुटि ।

तोडण वि [दे] असहिष्णु ।

तोडण न [तोदन] व्यथा, पीड़ा-करण ।

तोडर न [दे] टोडर, माल्य-विशेष ।

तोडहिआ स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।

तोडिअ वि [त्रोटित] तोड़ा हुआ ।

तोड्ड पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति ।

तोण पुंन [तूण] तरकस, तूणीर ।

तोणीर पुंन [तूणीर] शरधि, भाथा ।

तोत्त न [तोत्र] प्रतोद, बैल को मारने या हाँकने का बाँस का आयुध-विशेष, पैना, सोंटा ।

तोत्तडि [दे] देखो तोंतडि ।

तोदग वि [तोदक] व्यथा उपजानेवाला, पीड़ा-कारक ।

तोमर पुंन [दे. तोमर] मधपुडा ।

तोमर पुं. बाण-विशेष । न. छन्द-विशेष ।

तोमरिअ पुं [दे] शस्त्र का प्रमार्जन करनेवाला । शस्त्र-मार्जन ।

तोमरिगुंडी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ।

तोमरी स्त्री [दे] लता ।

तोम्हार (अप) देखो तुम्हार ।

तोय न [तोय] जल । °धरा, °धारा स्त्री [°धारा] एक दिक्कुमारी देवी । °पट्ठ, °पिट्ठ न [°पृष्ठ] पानी का उपरिभाग ।

तोय पुं [तोद] व्यथा, पीड़ा ।

तोरण न [तोरण] द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार । बन्दनवार, फूल या पत्तों की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माला (झालर) जो उत्सव में लटकाई जाती है। °उर न [°पुर] नगर-विशेष।
तोरविअ वि [दे] उत्तेजित।
तोरामदा स्त्री [दे] नेत्र का रोग-विशेष।
तोल देखो तुल = तोलय्।
तोल पुंन [दे] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष।
तोलण पुं [दे] पुरुष।
तोलण न [तोलन] तौल करना, तौलना, नाप करना।
तोल्ल न [तौल्य, तौल] तौल, वजन।
तोवट्ट पुं [दे] कान का आभूषण-विशेष। कमल की कर्णिका।
तोस सक[तोषय्]खुशी करना, सन्तुष्ट करना।
तोस पुं [तोष] खुशी, आनन्द, सन्तोष। °यर वि [°कर] सन्तोष-कारक।
तोस न [दे] धन, दौलत।
तोसलि पुं [तोसलिन्] ग्राम-विशेष। देश-विशेष। एक जैन आचार्य। °पुत्त [°पुत्र] एक जैन आचार्य।
तोसलिय पुं [तोसलिक] तोसलि-ग्राम का अधीश क्षत्रिय।
तोसविअ } वि [तोषित] खुश किया हुआ,
तोसिअ } सन्तोषित।
तोहार (अप) देखो तुहार।
°त्त वि [°त्र] त्राण-कर्ता।
°त्तण देखो तण।
°त्ति अ [इति] उपालम्भ-सूचक अव्यय।
°त्ति देखो इअ = इति।
°त्थ देखो एत्थ।
°त्थ वि [°स्थ] स्थित, रहा हुआ।
°त्थ देखो अत्थ।
°त्थअ देखो थय = स्तृत।
°त्थउड देखो थउड।
°त्थंब देखो थंब।
°त्थंभ देखो थंभ।
°त्थंभण देखो थंभण।
°त्थरु देखो थरु।
°त्थल देखो थल।
°त्थली देखो थली।
°त्थव देखो थव = स्तु।
°त्थवअ देखो थवय।
°त्थाण देखो थाण।
°त्थाल देखो थाल।
°त्थिअ देखो थिअ।
°त्थिर देखो थिर।
°त्थोअ देखो थोअ।

थ

थ पुं. दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष।
थ अ. वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय।
°थ देखो एत्थ।
थइअ वि [स्थगित] आच्छादित।
थइअ° } स्त्री [स्थगिका] पानदानी। °इत्त
थइआ } पुं [°वत्] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर। °धर पुं. ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर। °वाहक पुं. पानदानी का वाहक नौकर। देखो थगिय°।
थइआ स्त्री[दे] थैली, कोथली, कमर में बाँधने की रुपयों की थैली।
थउड न [स्थपुट] विषम और उन्नत प्रदेश। वि. नीचा-ऊँचा।
थउडिअ वि [स्थपुटित] विषम और उन्नत प्रदेशवाला। नीचा-ऊँचा प्रदेशवाला।

५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थउड्डु न [दे] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा।
थंग सक [उद् + नामय्] ऊँचा करना, उन्नत करना।
थंडिल } न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि, जन्तु-
थंडिल्ल } रहित प्रदेश। गुस्सा।
थंडिल्ल पुं [स्थण्डिल] क्रोध।
थंडिल्ल न [दे] मण्डल, वृत्त प्रदेश।
थंब वि [दे] विषम, असम।
थंब पुं [स्तम्ब] तृण आदि का गुच्छ।
थंभ अक [स्तम्भ्] रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना। सक. क्रिया-निरोध करना। निश्चल करना।
थंभ पुं [स्तम्भ] घेरा। स्तम्भ, खम्भा। अहंकार। °तित्थ न [°तीर्थ] एक जैन-तीर्थ। °विज्जा स्त्री [°विद्या] स्तब्ध—बेहोश या निश्चेष्ट करने की विद्या।
थंभण न [स्तम्भन] स्तब्ध-करण, थभाँना। स्तब्ध करने का मन्त्र। गुजरात का एक नगर। °पुर न. नगर-विशेष, खम्भात।
थंभणया स्त्री [स्तम्भना] स्तब्ध-करण।
थंभणिया स्त्री [स्तम्भनिका] विद्या-विशेष।
थंभणी स्त्री [स्तम्भनी] स्तम्भन करनेवाली विद्या-विशेष।
थंभय देखो थंभ = स्तम्भ।
थक्क अक [स्था] रहना, बैठना, स्थिर होना।
थक्क अक [फक्क्] नीचे जाना।
थक्क अक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना।
थक्क वि [स्थित] रहा हुआ।
थक्क पुं [दे] अवसर, प्रस्ताव, समय। वि. थका हुआ, श्रान्त।
थक्कव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना।
थग देखो थय = स्थगय्।
थगथग अक [थगथगाय्] धड़कना, काँपना।
थगिय° देखो थइअ°। °ग्गाहि पुं [°ग्राहिन्] ताम्बूल-वाहक नौकर।
थग्गया स्त्री [दे] चञ्चु।
थग्घ सक [स्ताघ्] जल की गहराई को नापना।
थग्घ पुं [दे] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, सीमा।
थग्घा स्त्री [दे] ऊपर देखो।
थट्ट पुंन [दे] ठठ, भीड़, झुण्ड, समूह, यूथ, जत्था। ठाठ, ठाट, तड़क-भड़क, सजधज, आडम्बर।
थट्टि स्त्री [दे] जानवर।
थड पुंन [दे] समूह।
थड्ढ वि [स्तब्ध] निश्चल। अभिमानी।
थड्ढिअ वि [स्तम्भित] स्तब्ध किया हुआ। स्तब्ध, निश्चल। न गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड़ कर गुरु को किया जाता प्रणाम।
थण अक [स्तन्] गरजना। चिल्लाना। आक्रोश करना। जोर से नीसास लेना।
थण पुं [स्तन] थन, पयोधर, चूची। °जीवि वि [°जीविन्] स्तन-पान पर निभनेवाला बालक। °वई स्त्री [°वती] बड़े स्तनवाली। °विसारि वि [°विसारिन्] स्तन पर फैलनेवाला। °सुत्त न [°सूत्र] उरः-सूत्र। °हर पुं [°भर] स्तन का भार या बोझ।
थणंधय पुं [स्तनन्धय] स्तन-पान करनेवाला बालक, छोटा बच्चा।
थणण न [स्तनन] गर्जन। चिल्लाहट। आक्रोश, अभिशाप। आवाजवाला नीसास।
थणय पुं [स्तनक] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान।
थणलोलुअ पुं [स्तनलोलुप] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान।
थणिअ पुं [स्तनित] एक नरक-स्थान। न. मेघ का गर्जन। आक्रन्द। पुं. भवनपति देवों की एक जाति। °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक जाति।
थणिल्ल सक [चोरय्] चोरी करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थणिल्ल वि [स्तनवत्] स्तनवाला।
थणुल्लअ पुं [स्तनक] छोटा स्तन।
थण्णु देखो थाणु।
थत्तिअ न [दे] विश्राम।
थद्ध देखो थड्ढ।
थन्न न [स्तन्य] स्तन का दूध। °जिवि वि [°जीविन्] छोटा बच्चा।
थप्प सक [स्थापय्] रखना, थप्पी करना। न्यास करना।
थब्भ अक [स्तभ्] अहंकार करना।
थब्भर पुं [दे] अयोध्या के समीप का एक ह्रद।
थमिअ वि [दे] विस्मृत।
थय सक [स्थगय्] आच्छादन करना, आवृत करना।
थय वि [स्तृत] व्याप्त, भरपूर।
थय पुं [स्तव] स्तुति, गुण-कीर्तन।
थयण न [स्तवन] ऊपर देखो।
थर पुं [दे] दही की तर।
थरत्थर / थरथर / थरहर } अक [दे] थरथराना, काँपना।
थरु पुं [दे. त्सरु] तलवार की मूठ।
थरुगिण पुं [थरुकिन] देश-विशेष। पुंस्त्री. उस देश का निवासी।
थल न [स्थल] भूमि, जगह, सूखी जमीन। ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह की फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह। °इल्ल वि [°वत्] स्थल-युक्त। °कुक्कुडियंड न[°कुक्कुटचण्ड] कवल-प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख। °चार पुं. जमीन में चलना। °नलिणी स्त्री [°नलिनी] जमीन में होनेवाला कमल का गाछ। °य वि [°ज] जमीन में उत्पन्न होनेवाला। °यर वि [°चर] जमीन पर चलनेवाला। जमीन पर चलनेवाला पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी।
थलय पुं [दे] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह।
थलहिगा / थलहिया } स्त्री [दे] मृतक-स्मारक, शव को गाड़कर उस पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा।
थली स्त्री [स्थली] जल-शून्य भू-भाग। ऊँची जमीन। °घोडय पुं [°घोटक] पशु-विशेष।
थल्लिया स्त्री [दे. स्थालिका] छोटा थाल, भोजन करने का बरतन।
थव सक [स्तु] स्तुति करना।
थव देखो थय = स्तव।
थव पुं [दे] पशु।
थवइ पुं [स्थपति] बढ़ई।
थवइय वि [स्तबकित] स्तबकवाला।
थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैलाकर बैठा हुआ।
थवक्क पुं [दे] थोक, समूह।
थवण देखो थयण।
थवणिया स्त्री. [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु।
थवय पुं[स्तबक] फूल आदि का गुच्छ।
थविआ स्त्री. प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष।
थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित।
थविर वि [स्थविर] वृद्ध।
थवी [दे] देखो थविआ।
थस / थसल } वि [दे] विस्तीर्ण।
थह पुं [दे] निलय, आश्रयस्थान।
था देखो ठा।
थाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला। °णी स्त्री [°नी] वर्ष-वर्ष पर प्रसव करनेवाली घोड़ी।
थागत्त न [दे] जहाज के भीतर घुसा हुआ पानी।
थाण देखो ठाण।
थाणय न [स्थानक] आलवाल, कियारी।
थाणय न [दे] चौकी, पहरा। पुं. चौकीदार।
थाणिज्ज वि [दे] सम्मानित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थाणीय वि [स्थानीय] स्थानापन्न ।
थाणु पुं [स्थाणु] शिव । ठूठा वृक्ष । खीला । स्तम्भ ।
थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर ।
थाम वि [दे] विस्तीर्ण ।
थाम न [स्थामन्] बल, वीर्य, पराक्रम । वि. बलयुक्त । पुंन. प्राण । °व वि [°वत्] बलवान् ।
थाम न [दे. स्थान] स्थान, जगह ।
थार पुं [दे] मेघ ।
थारुणय वि[थारुकिन]देश-विशेष में उत्पन्न ।
थाल पुंन [स्थाल] बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र ।
थालइ वि [स्थालकिन्] थालवाला । पुं. वानप्रस्थ का एक भेद ।
थाला स्त्री [दे] धारा ।
थाली स्त्री [स्थाली] पाक-पात्र, हाँड़ी । °पाग वि [°पाक] हाँड़ी में पकाया हुआ ।
थाव सक [स्थापय्] स्थिर करना । रखना । न्यास करना ।
थावच्चा स्त्री [स्थापत्या] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री । °पुत्त पुं [°पुत्र] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि ।
थावय पुं [स्थापक] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु ।
थावर वि [स्थावर] स्थिर रहनेवाला । पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला—पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव । एक विशेष-नाम, एक नौकर का नाम । °काय पुं. एकेन्द्रिय जीव । °णाम न [°नामन्] स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म ।
थासग [दे] कुदाल ।
थासग } पुं [स्थासक] दर्पण, शीशा ।
थासय } दर्पण के आकार का पात्र-विशेष । अश्व का आभरण-विशेष ।
थाह पुं [दे] स्थान, जगह । वि. गम्भीर जलवाला । विस्तीर्ण । दीर्घ ।
थाह पुं [स्ताघ] तला, गहराई का अन्त, सीमा ।
थाहिअ पुं [दे] आलाप, स्वर-विशेष ।
थिअ वि [स्थित] रहा हुआ ।
थिइ देखो ठिइ ।
थिंदिणी स्त्री [दे] छन्द-विशेष ।
थिंप अक [तृप्] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना ।
थिग्गल न [दे] भीत में किया हुआ दरवाजा । फटे-फुटे वस्त्र में किया जाता सन्धान । पुंन. छिद्र । गिरने के बाद दुरुस्त (ठीक) किया हुआ गृह-भाग ।
थिज्ज देखो थेज्ज = स्थैर्य ।
थिण्ण वि [स्त्यान] कठिन, जमा हुआ । देखो थीण ।
थिण्ण वि [दे] स्नेह-रहित दयावाला । अभिमानी ।
थिन्न वि [दे] गर्वित ।
थिप्प देखो थिंप ।
थिप्प अक [वि + गल्] गल जाना ।
थिबुक पुं [स्तिबुक] कन्द-विशेष ।
थिम सक [स्तिम्] गीला करना ।
थिमिअ वि [दे. स्तिमित] स्थिर, निश्चल ।
थिमिअ पुं [स्तिमित] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ।
थिम्म सक [स्तिम्] आर्द्र करना । अक. आर्द्र होना ।
थिर वि [स्थिर] निश्चल, निष्कम्प । निष्पन्न, सम्पन्न । °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है । °वलिया स्त्री [°वलिका]जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति ।
थिरणाम वि [दे] चञ्चल-मनस्क ।
थिरण्णेस वि [दे] अस्थिर, चञ्चल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थिरसीस वि [दे] निर्भीक, निडर। निर्भर। जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह।
थिरिम पुंस्त्री [स्थैर्य] स्थिरता।
थिरीकण न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना।
थिल्ल वि [दे] गुप्त।
थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष, दो घोड़े की बग्घी। दो खच्चर आदि से वाह्य यान।
थिविथिव अक [थिवथिवाय्] 'थिव-थिव' आवाज करना।
थिवुग } पुं [स्तिबुक] जल-बिन्दु। °संकम
थिवुय } पुं [°संक्रम] कर्म-प्रकृतियों का आपस में संक्रमण-विशेष।
थीहु पुंस्त्री [दे] कन्द-विशेष।
थिहु पुं [स्तिभु] वनस्पति-विशेष।
थी स्त्री [स्त्री] नारी।
थीण देखो थिण्ण। °गिद्धि स्त्री [°गृद्धि] निकृष्ट निद्रा-विशेष। °द्धि स्त्री [°र्द्धि] अधम निद्रा-विशेष। °द्धिय वि [°र्द्धिक] स्त्यानर्द्धि निद्रावाला।
थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय।
थुअ वि [स्तुत] प्रशंसित।
थुअ देखो थुण।
थुइ स्त्री [स्तुति] स्तव, गुण-कीर्तन।
थुइवाय पुं [स्तुतिवाद] प्रशंसा-वचन।
थुक्क अक [थूत् + कृ] थूकना। सक. तिरस्कार करना, अनादर के साथ निकालना।
थुक्क न [थूत्कृत] थूक, कफ, खखार।
थुक्कार सक [थूत्कारय्] तिरस्कार करना।
थुक्किअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा।
थुड न [दे. स्थुड] वृक्ष का स्कन्ध।
थुडंकिअय न [दे] रोष-युक्त वचन।
थुडुंकिअ न [दे] थोड़ा गुस्सा होने से होता मुँह का संकोच। मौन, चुपकी।
थुडुहीर न [दे] चामर।
थुण सक [स्तु] स्तुति करना, गुण-वर्णन करना।
थुण्ण वि [दे] अभिमानी।
थुत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तुति-पाठ।
थुत्थुक्कारिय वि [थुथुत्कारित] थुतकारा हुआ, अपमानित।
थुथूकार पुं [थुथूत्कार] तिरस्कार।
थुरुणुल्लणअ न [दे] बिछौना।
थुलम पुं [दे] पट-कुटी, तम्बू, खेमा।
थुल्ल वि [दे] परिवर्तित, बदला हुआ।
थुल्ल वि [स्थूल] मोटा, तगड़ा।
थुव देखो थुण।
थुवअ वि [स्तावक] स्तुति करनेवाला।
थुवण न [स्तवन] स्तुति।
थू अ. निन्दा-सूचक अव्यय।
थूण पुं [दे] अश्व।
थूण देखो तेण = स्तेन।
थूणा स्त्री [स्थूणा] खम्भा, खूंटी।
थूणाग पुं [स्थूणाक] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष।
थूथू अ [दे] घृणा-सूचक अव्यय।
थूभ पुं [स्तूप] थूहा, टीला, स्मृति-स्तम्भ।
थूभिया } स्त्री [स्तूपिका] छोटा स्तूप।
थूभियागा } छोटा शिखर।
थूरी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण।
थूल देखो थुल्ल। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन महर्षि।
थूलघोण पुं [दे] वराह।
थूव } देखो थूभ।
थूह }
थूह पुं [दे] प्रासाद का शिखर। चातक पक्षी। दीमक।
थेअ वि [स्थेय] रहने-योग्य। जो रह सकता हो। पुं. फैसला करनेवाला।
थेग पुं [दे] कन्द-विशेष।
थेज्ज न [स्थैर्य] स्थिरता।
थेज्ज देखो थेअ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेण पुं [स्तेन] चोर ।
थेणिल्लिअ वि [दे] हृत । भीत ।
थेप्प देखो थिप्प ।
थेर वि [स्थविर] बूढ़ा । पुं. जैन साधु । °कप्प पुं [°कल्प] जैन-मुनियों का आचार-विशेष, गच्छ में रहनेवाले जैन मुनियों का अनुष्ठान । आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ । °कप्पिय पुं [°कल्पिक] आचार-विशेष का आश्रय करनेवाला, गच्छ में रहनेवाला जैन मुनि । °भूमि स्त्री. स्थविर का पद । °ावलि वि. जैन मुनियों का समूह । क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष ।
थेर पुं [दे. स्थविर] ब्रह्मा, विधाता ।
थेरासण न [दे. स्थविरासन] पद्म, कमल ।
थेरिअ न [स्थैर्य] स्थिरता ।
थेरिया, थेरी स्त्री [स्थविरा] बुढ़िया । जैन साध्वी ।
थेरोसण न [दे. स्थविरासन] कमल ।
थेव पुं [दे] बिन्दु ।
थेव देखो थोव । °कालिय वि [°कालिक] अल्प काल तक रहनेवाला ।
थेवरिअ न [दे] जन्म-समय में बजाया जाता वाद्य ।
थोअ देखो थोव ।
थोअ पुं [दे] धोबी । मूलक, मूला, कन्द-विशेष ।
थोक, थोक्क, थोग देखो थोव ।
थोडेरुय देखो घाडेरुय ।
थोणा देखो थूणा ।
थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति ।
थोभ, थोभय पुं [स्तोभ, °क] 'च', 'वै' आदि निरर्थक अव्यय का प्रयोग ।
थोर देखो थुल्ल ।
थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल ।
थोल पुं [दे] वस्त्र का एक देश ।
थोव, थोवाग वि [स्तोक] अल्प, थोड़ा । पुं. समय का एक परिमाण ।
थोह न [दे] बल, पराक्रम ।
थोहर पुंस्त्री [दे] थूहर का पेड़ ।

द

द पुं. दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष ।
दअच्छर पुं [दे] गाँव का अधिपति ।
दअरी स्त्री [दे] मदिरा ।
दइ स्त्री [दृति] मशक ।
दइअ वि [दे] रक्षित ।
दइअ पुंस्त्री [दृतिका] मशक ।
दइअ वि [दयित] प्रिय । वाञ्छित । पुं.पति । °यम वि [°तम] अत्यन्त प्रिय । पुं. भर्ता ।
दइआ स्त्री [दयिता] प्रिया, पत्नी ।
दइच्च पुं [दैत्य] असुर । °गुरु पुं. शुक्राचार्य ।
दइन्न न [दैन्य] दीनता, गरीबी ।
दइव पुंन [दैव] भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध । °ज्ज, °ण्णु पुं [°ज्ञ] ज्योतिषी । देखो देव = दैव ।
दइवय न [दैवत] देव ।
दइविग वि [दैविक] देव-सम्बन्धी, दिव्य, उत्तम ।
दइव्व देखो दइव ।
दउत्ति (शौ) अ [द्राग्] शीघ्र ।
दउदर, दओदर न [दकोदर] जलोदर का रोग ।
दओभास पुं [दकावभास] लवण-समुद्र में स्थित वेलन्धर-नागराज का एक आवास-पर्वत ।
दंठा देखो दाढा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंठि वि [दंष्ट्रिन्] बड़े दाँतवाला, हिंसक जन्तु ।

दंड सक [दण्डय्] सजा करना, निग्रह करना ।

दंड पुं [दण्ड] जीव-हिंसा । शारीरिक या आर्थिक दण्ड, दमन । लाठी । दुःख-जनक । मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार । छन्द-विशेष । एक जैन उपासक । पुंन. १९२ अंगुल का एक नाप । आज्ञा । पुंन. सैन्य । उबाल, उफान । पुं. सेनापति । °अल पुं [°कल] छन्द-विशेष । °जुज्झ न [°युद्ध] यष्टि-युद्ध । °णायग पुं [°नायक] दण्ड-दाता, अपराधविचारकर्ता । सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक । °णीइ स्त्री [°नीति] नीति-विशेष, अनुशासन । °पह पुं [°पथ] सीधा मार्ग । °पासि पुं [°पार्श्विन्, °पाशिन्] दण्डदाता । कोतवाल । °पुंछणय न [प्रोञ्छनक] दण्डाकार झाड़ू । °भी वि. दण्ड से डरनेवाला । °लत्तिय वि [°लात] दण्ड लेनेवाला । °वइ पुं [°पति] सेनानी, सेनापति । °वासिग, °वासिय पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल । °वीरिय पुं [°वीर्य] राजा भरत के वंश का एक राजा जिसको आदर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था । °रास पुं. एक प्रकार का नाच । ाइय वि [ायत]दण्ड की तरह लम्बा । °ायइय वि [°ायतिक] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलानेवाला । °ारक्खिग पुं [°ारक्षिक] दण्डधारी प्रतीहार । ारण्ण न [ारण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल । °ासणिय वि [°ासनिक] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठनेवाला । देखो दंडग, दंडय ।

दंडग } पुं [दण्डक] कर्ण-कुण्डल नगर का
दंडय } एक राजा । दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थांश-विशेष । भवनपति आदि चौबीस दण्डक, पद-विशेष । न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल । °गिरि पुं. पर्वत-विशेष । देखो दंड ।

दंडपासिग पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल ।

दंडलइअ वि [दण्डलातिक] दण्ड लेनेवाला, अपराधी ।

दंडावण न[दण्डन]सजा कराना,निग्रह कराना ।

दंडाविअ वि [दण्डित] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह ।

दंडि वि [दण्डिन्] दण्ड-युक्त । पुं. दण्डधारी प्रतीहार, दरवान ।

दंडि° देखो दंडी ।

दंडिअ पुं [दण्डिक] सामन्त राजा । राज कुलानुगत पुरुष । कोतवाल ।

दंडिअ वि [दण्डित] कैदी ।

दंडिअ वि [दण्डिक] दण्डवाला । पुं. राजा । दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्त्ता ।

दंडिआ स्त्री [दे] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा ।

दंडिक्किअ वि [दे] अपमानित ।

दंडिणी स्त्री [दे. दण्डिनी] राज-पत्नी ।

दंडिम वि [दण्डिम] दण्ड से निर्वृत्त । न. सजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य ।

दंडी स्त्री[दे]सूत्र-कनक । साँधा हुआ वस्त्र-युग्म । साँधा हुआ जीर्ण वस्त्र ।

दंत वि [ददत्] दाता ।

दंत पुं [दान्त] बेला । वि. दो उपवास । जिसका दमन किया गया हो वह, वश में किया हुआ । जितेन्द्रिय ।

दंत पुं [दे] पर्वत का एक देश ।

दंत पुं [दन्त] दाँत । °कुडी स्त्री [°कुटी] दाढ । °च्छअ पुं [°च्छद] होठ । °धावण न [°धावन] दाँत साफ करना । दतवन । °पक्खालण न [°प्रक्षालन] वही पूर्वोक्त अर्थ । °पाय न [°पात्र] दाँत का बना हुआ पात्र । °पुर न. नगर-विशेष । °पहोयण न [°प्रधावन] देखो °धावण । °माल पुं. वृक्ष-विशेष । °वक्क पुं [°वक्र] दन्तपुर नगर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का एक राजा। °वलहिया स्त्री [°वलभिका] उद्यान-विशेष। °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] हाथी-दाँत वगैरह दाँत का व्यापार। °ार पुं [°कार] दाँत का काम करनेवाला शिल्पी।

दंतकार पुं [दन्तकार] दाँत बनानेवाला शिल्पी।

दंतकुंडी स्त्री [दन्तकुण्डी] दंष्ट्रा।

दंतवक्क पुं [दान्तवाक्य] चक्रवर्त्ती राजा।

दंतवण न [दे. दन्तपवन] दन्त-शुद्धि। दाँत साफ करने का काष्ठ।

दंतवण्ण पुंन [दे. दन्तपवन] दतवन।

दंतसोहण न [दन्तशोधन] दतवन।

दंताल पुंस्त्री [दे] घास काटने का हथियार।

दंति पुं [दन्तिन्] हाथी। पर्वत-विशेष।

दंतिअ पुं [दे] शशक, खरगोश, खरहा।

दंतिंदिअ वि [दान्तेन्द्रिय] इन्द्रिय-निग्रही।

दंतिक्क न [दे] चावल का आटा।

दंतिक्कग न [दे] माँस।

दंतिया स्त्री [दन्तिका] एक वृक्ष-विशेष, बड़ी सतावर।

दंती स्त्री [दन्ती] स्वनाम-ख्यात वृक्ष।

दंतुक्खलिय पुं [दन्तोलूखलिक] तापस-विशेष जो दाँतों से ही व्रीहि या धान वगैरह को निस्तुष कर खाते हैं।

दंतुर वि [दन्तुर] उन्नत दाँतवाला, जिसके दाँत उभड़-खाबड़ हों। नीचा स्थान, विषम स्थान। आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ।

दंतुरिय वि [दन्तुरित] ऊपर देखो।

दंद पुं [द्वन्द्व] व्याकरण-प्रसिद्ध उभयपद-प्रधान समास। न. परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म। कलह, क्लेश। युद्ध।

दंपइ पुं. ब. [दम्पति] पति-पत्नी।

दंभ पुं [दम्भ] माया, कपट। छन्द-विशेष। ठगाई।

दंभग वि [दम्भक] दम्भी, धूर्त।

दंभोलि पुं [दम्भोलि] वज्र।

दंस सक [दर्शय्] दिखलाना।

दंश सक [दंश्] काटना, दाँत से काटना।

दंस पुं [दंश] डाँस, बड़ा मच्छड़। दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीड़े से काटा हुआ घाव।

दंस पुं [दर्श] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा।

दंसग वि [दर्शक] दिखलानेवाला।

दंसण पुंन [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण। आँख। सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा। सामान्य ज्ञान। मत, धर्म। शास्त्र-विशेष। °मोह न. तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] कर्म-विशेष। °ावरण न. सामान्य-ज्ञान का आवरक कर्म। °ावरणिज्ज न [°ावरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ। देखो दरिसण।

दंसण न [दंशन] दाँत से काटना।

दंसणि वि [दर्शनिन्] किसी धर्म का अनुयायी। दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार। तत्त्व-श्रद्धालु।

दंसणिआ स्त्री [दर्शनिका] दर्शन, अवलोकन।

दंसाव सक [दर्शय्] दिखलाना।

दंसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला।

दक्क वि [दष्ट] जो दाँत से काटा गया हो वह।

दक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना।

दक्ख सक [दर्शय्] दिखलाना।

दक्ख वि [दक्ष] निपुण, चतुर। पुं. भूतानन्द नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव। भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का एक पौत्र।

दक्ख° देखो दक्खा।

दक्खज्ज पुं [दे] गीध।

दक्खण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि. देखनेवाला, निरीक्षक।

दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना।

दक्खा स्त्री [द्राक्षा] दाख, अंगूर।

दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] शिव-पत्नी।

दक्खिण वि [दक्षिण] दक्षिण दिशा में स्थित। निपुण, चतुर। हितकर, अनुकूल। दाहिना। °पच्छिमा स्त्री [°पश्चिमा] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण। °पुव्वा स्त्री [°पूर्वा] अग्नि-कोण। देखो दाहिण।

दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न।

दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] दक्षिण दिशा। दक्षिण देश। धर्म-कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट। °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] दक्षिणा का अभिलाषी। °यण न [°यन] सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन। कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक के छः मास का काल। °वध, °वह पुं [°पथ] दक्षिण देश।

दक्खिणापुव्वा देखो दक्खिण-पुव्वा।

दक्खिणिल्ल वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित।

दक्खिणेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह।

दक्खिण्ण न [दाक्षिण्य] मुलाहजा, मुरव्वत। उदारता। सरलता, मार्दव। अनुकूलता।

दक्खु देखो दक्ख = दृश्।

दक्खु देखो दक्ख = दक्ष।

दक्खु वि [पश्य, द्रष्टृ] देखनेवाला। पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव।

दक्खु वि [दृष्ट] विलोकित। पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव।

दग न [दक] पानी। पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष। लवण-समुद्र में स्थित एक आवास पर्वत। °गब्भ पुं [°गर्भ] बादल। °तुंड पुं [°तुण्ड] पक्षि-विशेष। °पचवन्न पुं [°पञ्चवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम। °पासाय पुं [°प्रासाद] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल। °पिप्पली स्त्री. वनस्पति-विशेष। °भास पुं वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत। °मंचग पुं [°मञ्चक] स्फटिक रत्न का मञ्च। °मंडव पुं [°मण्डप] मण्डप-विशेष जिसमें पानी टपकता हो। स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप। °मट्टिया, °मट्टी स्त्री [°मृत्तिका] पानीवाली मिट्टी। कला-विशेष। °रक्खस पुं [°राक्षस] जल-मानुष के आकार का जन्तु-विशेष। °रय पुंन [°रजस्] उदक-बिन्दु, जल-कणिका। °वण्ण पुं [°वर्ण] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष। °वारग, °वारय पुं [°वारक] पानी का छोटा घड़ा। °सीम पुं [°सीमन्] वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत।

दग न [दक] स्फटिक रत्न। °सोयरिअ वि [°शौकरिक] सांख्य मत का अनुयायी।

दच्चा देखो दा का संकृ.।

दच्छ देखो दक्ख = दृश्।

दच्छ देखो दक्ख = दक्ष।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज।

दज्झंत, दज्झमाण } दह् = दह का कवकृ.।

दट्ठ वि [दष्ट] जिसको दाँत से काटा गया हो वह।

दट्ठ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित।

दट्ठंतिय वि [दार्ष्टान्तिक] जिसपर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ।

दट्ठु देखो दक्ख = दृश् का संकृ.।

दट्ठु वि [द्रष्टृ] दर्शक।

दट्ठुआण, दट्ठ, दट्ठूण, दट्ठूणं } दक्ख = दृश् का संकृ.।

दडवड पुं [दे] घाटी, दर्रा, अवस्कन्द। जल्दी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दडि स्त्री [दे] वाद्य-विशेष।

दड्ढ वि [दग्ध] जला हुआ।

दड्ढालि स्त्री [दे] देव-मार्ग।

दढ वि [दृढ] मजबूत, बलवान्, पोढ़। निश्चल, निष्कम्प। समर्थ। अति-निबिड, प्रगाढ़। कठोर, कठिन। क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त। °केउ पुं [°केतु] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम। °णेमि देखो °नेमि। °धणु [°धनुष] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम। भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम। °धम्म वि[°धर्मन्] जो धर्म में निश्चल हो। देव-विशेष का नाम। °धिईय वि [°धृतिक] अतिशय धैर्यवाला। °नेमि पुं. राजा समुद्रविजय का एक पुत्र जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी। °पइण्ण वि [°प्रतिज्ञ] स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ। पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होनेवाला नाम। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] मजबूत प्रहार करने वाला। पुं. जैनमुनि-विशेष जो पहले चोरों का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था। °भूमि स्त्री. एक गाँव का नाम। °मूढ वि. नितान्त मूर्ख। °रह पुं [°रथ] एक कुलकर पुरुष का नाम। भगवान् श्री शीतलनाथजी के पिता का नाम। °रहा स्त्री [°रथा] लोकपाल आदि देवों के अग्र-महिषियों की बाह्य परिषद्। °उ पुं [°युष्] भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करनेवाला एक मनुष्य। भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम।

दढगालि स्त्री [दे] धोया हुआ सदश वस्त्र। देखो दाढगालि।

दणु } पुं [दनुज] दैत्य। °इंद, °एंद पुं
दणुअ } [°इन्द्र] दानवों का अधिपति। रावण, लंकापति। °वइ पुं [°पति] देखो °इंद।

दत्त वि. दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण। न्यस्त, स्थापित। पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र। भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष। चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम। भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा, एक वासुदेव। भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव। एक जैनमुनि। नृप-विशेष। एक जैन आचार्य। न. दान, उत्सर्ग।

दत्त न [दात्र] दाँती, घास काटने का हँसिया।

दत्ति स्त्री. एक बार में जितना दान दिया जाय वह, अविच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह।

दत्तिय पुंस्त्री [दत्तिका] ऊपर देखो।

दत्तिय पुं [दत्रिक] वायु-पूर्ण चर्म।

दत्तिया स्त्री [दात्रिका] छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष। दान करनेवाली स्त्री।

दत्थर पुं [दे] हस्त-शाटक।

दद्दर पुं [दे. दर्दर] कुतुप आदि के मुँह पर बाँधा जाता कपड़ा। वि. घना, प्रचुर, अत्यन्त। पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात। प्रहार। वचनाटोप। सीढ़ी। वाद्य-विशेष।

दद्दरिगा देखो दद्दरिया।

दद्दरिया स्त्री [दे. दर्दरिका] प्रहार, आघात। वाद्य-विशेष।

दद्दु पुं [दद्रु] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग।

दद्दुर पुं [दर्दुर] प्रहार, आघात। मेढ़क। चमड़े से अवनद्ध मुंहवाला कलश। देव-विशेष। राहु, ग्रह-विशेष। पर्वत-विशेष। वाद्य-विशेष। न. दर्दुर देव का सिंहासन। °वडिंसय न [°ावतंसक] देव-विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान।

दद्दुल वि [दद्रुमत्] दाद-रोगवाला।

दद्ध देखो दड्ढ।

दधि देखो दहि।

दप्प पुं [दर्प] अहंकार। पराक्रम, जोर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धृष्टता। अरुचि से काम का आसेवन।

दप्पण पुं [दर्पण] कांच। वि. दर्पजनक।

दप्पणिज्ज वि [दर्पणीय] बल-जनक, पुष्टि-कारक।

दप्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित।

दप्पिअ वि [दर्पित] अभिमानी, गर्वित।

दप्पिट्ठ वि [दर्पिष्ठ] अत्यन्त अहंकारी।

दप्पुल्ल वि [दर्पवत्] अहंकारवाला।

दब्भ पुं [दर्भ] तृण-विशेष। °पुप्फ पुं [°पुष्प] साँप की एक जाति।

दब्भायण } न [दार्भायन, दाभ्यीयन] चित्रा नक्षत्र का गोत्र।
दब्भियायण

दब्भिय न [दार्भिक] गोत्र-विशेष।

दम सक [दमय्] दमन करना, रोकना।

दम पुं. दमन। इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध। °घोस पुं [°घोष] चेदि देश के एक राजा का नाम। °दंत पुं [°दन्त] हस्ति-शीर्षक नगर का एक राजा। एक जैन-मुनि। °धर पुं. एक जैन-मुनि।

दमग देखो दमय।

दमग वि [दमक] दमन करनेवाला।

दमण देखो दमणक।

दमण न [दमन] निग्रह, दान्ति। वश में करना। उपताप, पीड़ा। पशुओं को दी जाती शिक्षा।

दमणक } पुंन [दमनक] दौना, सुगन्धित पत्रवाली वनस्पति-विशेष। छन्द-विशेष। गन्ध-द्रव्य-विशेष।
दमणग
दमणय

दमदमा अक [दमदमाय्] आडम्बर करना।

दमय वि [दे. द्रमक] गरीब।

दमयंती स्त्री [दमयन्ती] राजा नल की पत्नी।

दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय।

दमिल पुं [द्रविड] एक भारतीय देश। पुंस्त्री. द्राविड़।

दम्म पुं [द्रम्म] सोने का सिक्का।

दय सक [दय्] रक्षण करना। कृपा करना। चाहना। देना।

दय न [दे. दक] जल। °सीम पुं [°सीमन्] लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत।

दय न [दे] अफसोस।

दय देखो दव = दव।

°दय वि. देनेवाला।

दया स्त्री. करुणा, कृपा। °वर वि [°पर] दयालु।

दयाइअ वि [दे] रक्षित।

दयालु वि. दयावाला, करुण।

दयावण } वि [दे] दीन।
दयावन्न

दर सक [दृ] आदर करना।

दर पुंन. डर। गुफा। गर्त, गड्ढा, दरार। अ. अल्प।

दर न [दे] आधा।

दरंदर पुं [दे] उल्लास।

दरमत्ता स्त्री [दे] जबरदस्ती।

दरमल सक [मर्दय्] चूर्ण करना, विदारना। आघात करना।

दरवलिअ वि [दे] उपभुक्त।

दरवल्ल पुं [दे] गाँव का मुखिया। °णिहेल्लण न [दे] खाली घर। °वल्लह पुं [°वल्लभ] प्रिय। डरपोक। °विदर वि [दे] दीर्घ। विरल।

दरस (शौ) देखो दरिस।

दरि न [दरी] कन्दरा।

दरि° देखो दरी। °अर पुं [°चर] किंनर।

दरिअ वि [दृप्त] गर्विष्ठ।

दरिअ वि [दीर्ण] भीत। विदारित।

दरिअ (अप) पुं [दरिद्र] छन्द-विशेष।

दरिआ स्त्री [दरिका] कन्दरा।

दरिद्द वि [दरिद्र] निःस्व, धन-रहित।

दरिद्दिय वि [दरिद्रित] दुःस्थित, जो धन-रहित हुआ हो।

दरिद्दीहूय वि[दरिद्रीभूत]जो निर्धन हुआ हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दरिस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना ।

दरिसण देखो दंसण = दर्शन । °पुर न. नगर-विशेष । °आवरणी स्त्री [°ावरणी] विद्या-विशेष ।

दरिसणिज्ज न [दर्शनीय] आकृति, रूप । अवलोकन ।

दरिसणिज्ज } न. उपहार ।
दरिसणीय }

दरिसाव देखो दरिस ।

दरिसाव पुं [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार । दिखावा ।

दरिसावण न [दर्शन]दर्शन, साक्षात्कार । वि. दर्शक, दिखलानेवाला ।

दरी स्त्री. गुफा ।

दरुम्मिल्ल वि [दे] निबिड ।

दल सक [दा] देना, दान करना, अर्पण करना ।

दल अक [दल्] विकसना । फटना, खण्डित होना, द्विधा होना ।

दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकड़े-टुकड़े करना, विदारना ।

दल न. सैन्य । पत्ता, पँखुड़ी । सम्पत्ति । समुदाय । खण्ड, भाग, अंश ।

दलण न [दलन] पीसना, चूर्णन । वि. चूर्ण करनेवाला ।

दलमल देखो दरमल ।

दलय देखो दल = दा ।

दलय सक [दापय्] दिलाना ।

दलवट्ट देखो दरमल ।

दलवट्टिय देखो दलमलिय ।

दलाव सक [दापय्] दिलाना ।

दलिअ वि [दलित] विकसित, खिला हुआ । पीसा हुआ । विदारित, खण्डित ।

दलिअ न [दलिक] वस्तु, द्रव्य । पण्डित ।

दलिअ वि [दे] जिसने टेढ़ी नजर की हो वह । न. उंगली । काष्ठ ।

दलिद्द देखो दरिद्द ।

दलिद्दा अक [दरिद्रा] दुर्गत होना, दरिद्र होना ।

दलिल्ल वि [दलवत्] दलवाला ।

दव सक [द्रु] गति करना । छोड़ना ।

दव पुं. जंगल की अग्नि । वन । °ग्गि पुं. [°ाग्नि] जंगल की अग्नि ।

दव पुं [द्रव] परिहास । जल । पनीली वस्तु, रसीली चीज । वेग । संयम, विरति । °कर वि. परिहासकारक । °कारी, °गारी स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी जिसका काम परिहासजनक बातें कर जी बहलाना होता है ।

दवण न [दवन] यान, वाहन ।

दवणय देखो दमणय ।

दवदव } अ [द्रवद्रवम्] शीघ्र ।
दवदवस्स }

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेगवाली गति ।

दवर पुं [दे] तन्तु, धागा ।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी ।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म काल का प्रारम्भ ।

दवाव सक [दापय्] दिलाना ।

दविअ पुंन [द्रव्य] अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु । वस्तु, गुणाधार पदार्थ । वि. भव्य, मुक्ति के योग्य । भव्य, सुन्दर, शुद्ध । राग-द्वेष से विरहित । °ाणुओग पुं [°ानुयोग] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा । देखो दव्व ।

दविअ वि [द्रविक] संयमी ।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु ।

दविड देखो दविल ।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष, तमिल भाषा ।

दविण न [द्रविण] सम्पत्ति ।

दविय न [द्रव्य] घास का जंगल, वन में घास के लिए सरकार से अवरुद्ध भूमि । तृण आदि द्रव्य-समुदाय ।

दविल पुं [द्रविड] मद्रास प्रान्त । पुंस्त्री. द्रविड़ देश का निवासी मनुष्य, द्राविड़ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दव्व देखो दविअ = द्रव्य। भन। भूत या भविष्य पदार्थ का कारण। गौण। बाह्य, अतथ्य। °ट्ठिय पुं [°र्थिक, °स्थित, °स्तिक] द्रव्य को ही प्रधान माननेवाला पक्ष, नय-विशेष। °लिंग न [°लिङ्ग] बाह्य वेष। °लिंगि वि [°लिङ्गिन्] भेषधारी साधु। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप। °वेय पुं [°वेद] पुरुष आदि का बाह्य आकार। °यरिय पुं. [°चार्य] अप्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य।

दव्व न [द्रव्य] योग्यता।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष।

दव्वि° देखो दव्वी।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय।

दव्वी स्त्री [दर्वी] कर्छी, कलछी, चमची, डोई। साँप का फन। °अर, °कर पुं [°कर] सर्प।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष।

दस त्रि. ब. [दशन्] दस की संख्या। °उर न [°पुर] नगर-विशेष। °कंठ पुं [°कण्ठ] रावण, एक लंका-पति। °कंधर पुं [°कन्धर] राजा रावण। °कालिय न [°कालिक] एक जैन आगम-ग्रन्थ। °ग न [°क] दश का समूह। °गुण वि. दसगुना। °गुणिअ वि [°गुणित] दस-गुना। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] रावण। °दसमिया स्त्री [°दशमिका] जैनसाधु का एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष। °दिवसिय वि [°दिवसिक] दस दिन का। °द्ध पुं न [°र्ध] पाँच। °धणु पुं [°धनुष्] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] दस अवयववाला। °पुर देखो °उर। °पुव्वि वि [°पूर्विन्] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी। °बल पुं. भगवान् बुद्ध। °म वि. दसवाँ। चार दिनों का लगातार उपवास। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] चार दिनों का लगातार उपवास करनेवाला। °मासिअ वि [°माषिक] दस मासे की तौलवाला, दस मासे का परिमाण-वाला। °मी स्त्री. दसवीं। तिथि-विशेष। °मुद्दियाणंतग न [°मुद्रिकानन्तक] हाथ की उँगलियों को दस अंगूठियाँ। °मुह पुं [°मुख] रावण, राक्षस-पति। °मुहसुअ पुं [°मुखसुत] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि। °य देखो °ग। °रत्त न [°रात्र] दस रात। °रह पुं [°रथ] रामचन्द्रजी के पिता का नाम। अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष। °रहसुय पुं [°रथसुत] राजा दशरथ के पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। °वअण पुं [°वदन] राजा रावण। °वल देखो °बल। °विह वि [°विध] दस प्रकार का। °वेआलिअ न [°वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष। °हा अ [°धा] दस प्रकार से। °णण पुं [°नन] राक्षसेश्वर रावण। °हिया स्त्री [°हिका] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव।

दसग वि [दशक] दस वर्ष की उम्र का।

दसण पुं [दशन] दाँत। न. दंश, काटना। °च्छय पुं [°च्छद] होठ।

दसण्ण पुं [दशार्ण] देश-विशेष। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष। °पुर न. नगर-विशेष। °भद्द पुं [°भद्र] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा जो अद्वितीय आडम्बर से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी। °वइ पुं [°पति] दशार्ण देश का राजा।

दसतीण न [दे] धान्य-विशेष।

दसा स्त्री [दशा] स्थिति। सौ वर्ष के प्राणी की दस-दस वर्ष की अवस्था। सूत या ऊन का छोटा और पतला धागा। जैन आगम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थ-विशेष ।
दसार पुं [दशार्ह] समुद्रविजय आदि दस यादव । श्रीकृष्ण । बलदेव । वासुदेव की सन्तति । °णेउ पुं [°नेतृ] श्रीकृष्ण । °नाह पुं [°नाथ] श्रीकृष्ण । °वइ पुं [°पति] श्रीकृष्ण ।
दसिया देखो दसा ।
दसु पुं [दे] शोक, दिलगीरी ।
दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] एक सौ दस । वि. ११० वाँ ।
दसुय पुं [दस्यु] लुटेरा, चोर ।
दसेर पुं [दे] सूत्र-कनक ।
दस्स देखो दंस = दर्शय् ।
दस्सण देखो दंसण ।
दस्सु पुं [दस्यु] तस्कर ।
दह सक [दह्] जलना, भस्म करना ।
दह पुं [द्रह] ह्रद, सरोवर । °फुल्लिया स्त्री [°फुल्लिका] वल्ली-विशेष । °वई, °ावई स्त्री [°वती] नदी-विशेष ।
दह देखो दस ।
दहण न [दहन] दाह, भस्मीकरण । पुं.अग्नि ।
दहणी स्त्री [दहनी] विद्या-विशेष ।
दहबोल्ली स्त्री [दे] स्थाली, थलिया ।
दहावण वि [दाहक] जलानेवाला ।
दहि न [दधि] दही । °घण पुं [°घन]अतिशय जमा हुआ दही । °मुह पुं [°मुख] द्वीप-विशेष । एक नगर । पर्वत-विशेष । °वण्ण पुं [°पर्ण] एक राजा । वृक्ष-विशेष । °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष । °वाहण पुं [°वाहन] नृप-विशेष ।°सर पुं. खाद्य-द्रव्य-विशेष, मलाई ।
दहि त्रि [दधि] दही । तेला, लगातार तीन दिन का उपवास ।
दहिउप्फ न [दे] मक्खन ।
दहिट्ठ पुं [दे] कपित्थ ।
दहिण देखो दाहिण ।
दहित्थर, दहित्थार पुं [दे] दही पर की मलाई, खाद्य-विशेष ।
दहिमुह पुं [दे] वानर ।
दहिय पुं [दे] पक्षि-विशेष ।
दा सक. देना, उत्सर्ग करना ।
दा देखो ता = तावत् ।
दा° देखो दग । °थालग न [°स्थालक] जल से गीला थाल । कलस पुं [°कलश] पानी का छोटा घड़ा । °कुंभ [°कुम्भ] जल का घड़ा । °वरग पुं [°वरक] जल का पात्र-विशेष ।
दाअ देखो दाव = दर्शय् ।
दाअ पुं [दे] प्रतिभू, जामिनदार ।
दाअ पुं [दाय] दान, उत्सर्ग ।
दाइ वि [दायिन्] दाता ।
दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ ।
दाइअ पुं [दायिक] पैतृक सम्पत्ति का हिस्सेदार । समान-गोत्रीय ।
दाइज्जय न [देयक] पाणिग्रहण के समय वर-वधू को दिया जाता द्रव्य ।
दाउ वि [दातृ] दाता ।
दाओयरिय वि [दाकोदरिक] जलोदर रोग-वाला ।
दाक्खव (अप) देखो दक्खव ।
दाघ देखो दाह ।
दाडिम न. अनार का फल ।
दाडिमी स्त्री. अनार का पेड़ ।
दाढगालि देखो दढगालि ।
दाढा स्त्री [दंष्ट्रा] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष, चौभड़, चहू, दाढ़ ।
दाढि वि [दंष्ट्रिन्] दाढ़वाला । पुं. हिंसक पशु । सूअर, वराह ।
दाढिआ स्त्री [दे] दाढ़ी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु ।
दाढिआलि, दाढिगालि स्त्री [दंष्ट्रिकावलि] दाढ़ा की पंक्ति । वस्त्र-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाण पुंन [दान] दान, उत्सर्ग, त्याग। हाथी का मद। जो दिया जाय वह। °विरय पुं [°विरत] एक राजा। °साला स्त्री [°शाला] सत्रागार।

दाणंतराय न [दानान्तराय] कर्म-विशेष जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है।

दाणपारमिया स्त्री [दानपारमिता] दान, उत्सर्ग समर्पण।

दाणव पुं [दानव] असुर।

दाणविंद पुं [दानवेन्द्र] असुरों का स्वामी।

दाणि स्त्री [दे] चुंगी।

दाणि }
दाणिं } अ [इदानीम्] इस समय, अभी।
दाणीं }

दाथ वि [द्वाःस्थ] द्वार पर स्थित। पुं. प्रतीहार, द्वारपाल, चपरासी।

दादलिआ स्त्री [दे] अंगुली।

दापण न [दापन] दिलाना।

दाम न [दामन्] माला। रस्सी। पुं. वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत। °वंत वि [°वत्] मालावाला।

दामड्ढि पुं [दामस्थि] सौधर्म देवलोक के इन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति देव।

दामड्ढि पुं [दामर्द्धि] ऊपर देखो।

दामण न [दामन] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण।

दामण स्त्रीन [दामनी] पशु को बाँधने की डोरी—रस्सी, पगहा।

दामणा स्त्री [दे] प्रसूति। आँख।

दामणी स्त्री [दामनी] पशुओं को बाँधने की रस्सी। भगवान् कुन्थुनाथ की मुख्य शिष्या। स्त्री और पुरुष का रज्जु के आकारवाला एक शुभ-लक्षण।

दामिय वि [दामित] संयमित, नियन्त्रित।

दामिली स्त्री [द्राविडी] द्रविड़ देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या।

दामी स्त्री. लिपि-विशेष।

दामोअर पुं [दामोदर] श्रीकृष्ण वासुदेव। अतीत उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववाँ जिनदेव।

दायग वि [दायक] दाता।

दायण न [दान] देना।

दायणा स्त्री [दापना] पृष्ट अर्थ की व्याख्या।

दायय देखो दायग।

दायाद पुं [दायाद] पैतृक सम्पत्ति का भागीदार, पुत्र, सपिंड कुटुम्बी।

दायार वि [दायार] याचक, प्रार्थी।

दार सक [दारय्] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना।

दार पुं [दे] कटी-सूत्र, काँची।

दार पुंन. महिला।

दार न [द्वार] दरवाजा, निकलने का मार्ग। °ग्गला स्त्री [°र्गला] दरवाजे का आगल। °ट्ठ, °त्थ वि [°स्थ] द्वार पर स्थित। पुं. दरवान। °पाल, °वाल पुं [°पाल] द्वार-रक्षक। °वालय, °वालिय पुं. [°पालक, °पालिक] प्रतीहार।

दार }
दारग } पुं [दारक] बच्चा। देखो दारय।

दारद्धंता स्त्री [दे] पेटी।

दारय वि [दारक] करनेवाला, विध्वंसक। देखो दारग।

दारिअ वि [दारित] विदारित, फाड़ा हुआ।

दारिआ स्त्री [दारिका] लड़की।

दारिआ स्त्री [दे] वेश्या।

दारिद्द न [दारिद्र्य] निर्धनता। दीनता। आलस्य।

दारु न. काष्ठ। °ग्गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष। °दंडय पुंन [दण्डक] काष्ठ-दण्ड, साधुओं का एक उपकरण। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष। °पाय न [°पात्र]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काष्ठ का बना हुआ भाजन। °पुत्तय पुं [°पुत्रक] कठपुतला। °मड पुं. भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्वजन्म का नाम। °संकम पुं [°संक्रम] काष्ठ का बना हुआ पुल सेतु।

दारुअ पुं [दारुक] श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी। श्रीकृष्ण का एक सारथि। न. लकड़ी।

दारुइज्ज वि [दारुकीय] काष्ठ-निर्मित, लकड़ी का बना हुआ। °पव्वय पुं [पर्वत] काष्ठ का बना हुआ मालूम पड़ता पर्वत।

दारुण वि. विषम, भयंकर, भीषण। क्रोध-युक्त, रौद्र। न. कष्ट, दुःख। दुर्भिक्ष।

दारुणी स्त्री. विद्यादेवी-विशेष।

दालण न [दारण] विदारण, खण्डन।

दालि स्त्री [दे. दालि] दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूंग आदि अन्न। राजि, रेखा, लकीर।

दालिअ न [दे] नेत्र।

दालिद्द देखो दारिद्द।

दालिद्दिय देखो दारिद्दिय।

दालिम देखो दाडिम।

दालियंब न [दालिकाम्ल] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष।

दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि।

दाली देखो दालि।

दाव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना।

दाव सक [दापय्] दिलाना, दान करवाना।

दाव देखो ताव = तावत्।

दाव पुं. जंगल। देव। जंगल की अग्नि। °ग्गि पुं [°ाग्नि] जंगल की आग। °ाणल पुं [°ानल] जंगल की आग।

दावण न [दामन] छान, पशुओं के पैर में बाँधने की रस्सी।

दावण न [दापन] दिलाना।

दावणया स्त्री [दापना] दिलाना।

दावद्दव पुं [दावद्रव] वृक्ष-विशेष।

दावर पुं [द्वापर] तीसरा युग। न. द्विक, दो। °जुम्म पुं [°युग्म] राशि-विशेष।

दावाव सक [दापय्] दिलाना।

दाविअ वि [द्रावित] झराया हुआ, टपकाया हुआ। नरम किया हुआ।

दास पुं. [दर्श] दर्शन, अवलोकन।

दास पुं. नौकर। धीवर। °चेड, °चेटग पुं [°चेट] छोटी उम्र का नौकर। नौकर का लड़का। °सच्च पुं [°सत्य] श्रीकृष्ण।

दासरहि पुं [दाशरथि] राजा दशरथ का पुत्र, रामचन्द्र।

दासीखब्बडिया स्त्री [दासीकर्वटिका] जैन मुनियों की एक शाखा।

दाह पुं. ताप, जलन। दहन, भस्मीकरण। रोग-विशेष। °ज्जर पुं [°ज्वर] ज्वर-विशेष। °वक्कंतिय वि [°व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह।

दाहग वि [दाहक] जलानेवाला।

दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना।

दाहविय वि [दाहित] जलवाया हुआ। आग लगवाया हुआ।

दाहिण देखो दक्खिण। °दारिय वि [°द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। न. अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र। °पच्चत्थिम वि [°पश्चिमीय] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण। °पह पुं [°पथ] दक्षिण देश की ओर का रास्ता। दक्षिण देश। °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण। °ावत्त वि [°ावर्त] दक्षिण में आवर्तवाला (शंख आदि)।

दाहिणी स्त्री [दक्षिणा] दक्षिण-दिशा।

दि वि. [द्वि] दो, दो की संख्यावाला।

दि° देखो दिसा। °क्करि पुं [°करिन्] दिग्-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्ती। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती। °गय पुं [°गज] दिग्-हस्ती। °चक्कसार न [°चक्रसार] विद्याधरों का एक नगर। °म्मोह पुं [°मोह] दिशा-भ्रम। देखो दिसा।

दिअ पुंन [दे] दिवस, दिन।

दिअ पुं [द्विज] ब्राह्मण। दाँत। ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। अण्डज। पक्षी। टिंबरू का पेड़। °राय पुं [°राज] उत्तम द्विज। चन्द्रमा।

दिअ पुं [द्विक] कौआ।

दिअ पुं [द्विप] हाथी।

दिअ न [दिव] स्वर्ग। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] देवलोक।

दिअ वि [दित] छिन्न, काटा हुआ।

दिअ वि [दृत] हृत, मार डाला हुआ।

दिअंत पुं [दिगन्त] दिशा का प्रान्त भाग।

दिअंबर वि [दिगम्बर] वस्त्र-रहित। पुं. एक जैन सम्प्रदाय।

दिअज्झ पुं [दे] सुवर्णकार।

दिअधुत्त पुं [दे] काक।

दिअर पुं [देवर] पति का छोटा भाई।

दिअलिअ वि [दे] मूर्ख, अज्ञानी।

दिअली स्त्री [दे] स्थूणा, खम्भा, खूंटी।

दिअस पुंन [दिवस] दिन। °कर पुं. सूर्य। °नाह पुं [°नाथ] सूरज। °यर देखो °कर। देखो दिवस।

दिअसिअ न [दे] सदा-भोजन। प्रतिदिन।

दिअह देखो दिअस।

दिअहुत्त न [दे] पूर्वाह्ण का भोजन, दुपहर का भोजन।

दिआ अ [दिवा] दिवस। °णिस न [°निश] दिन-रात। °राअ न [°रात्र] सर्वदा। देखो दिवा।

दिआइ देखो दुआइ।

दिआहम पुं [दे] भास पक्षी।

दिइ स्त्री [दृति] मशक, चमड़े का जल-पात्र।

दिउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना।

दिक्काण पुं [द्रेष्काण] मेष आदि लग्नों का दसवाँ हिस्सा।

दिक्ख सक [दीक्ष्] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, संन्यास देना, शिष्य करना।

दिक्ख देखो देक्ख।

दिक्खा स्त्री [दीक्षा] प्रवज्या देना, दीक्षण। प्रव्रज्या, संन्यास।

दिक्खिअ वि [दीक्षित] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह।

दिगंछा देखो दिगिंछा।

दिगंबर देखो दिअंबर।

दिगिंछा स्त्री [जिघत्सा] भूख।

दिगिच्छ सक [जिघत्स्] खाने को चाहना।

दिगु पुं [द्विगु] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास।

दिग्गु देखो दिगु।

दिग्घ देखो दीह। °णंगूल, °लंगूल वि [°लाङ्गूल] लम्बी पूँछवाला। पुं. वानर।

दिग्घिआ स्त्री [दीर्घिका] वापी, सीढ़ीवाला कूप-विशेष।

दिच्छा स्त्री [दित्सा] देने इच्छा।

दिज देखो दिअ = द्विज।

दिज्ज वि [देय] देने-योग्य। जो दिया जा सके। पुंन. कर-विशेष।

दिट्ठ वि [दिष्ट] कथित, प्रतिपादित।

दिट्ठ वि [दृष्ट] विलोकित। अभिमत। ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ। न. दर्शन, विलोकन। °पाढि वि [°पाठिन्] चरक-सुश्रुतादि का जानकार। °लाभिय पुं [°लाभिक] दृष्ट वस्तु को ही ग्रहण करनेवाला जैन साधु।

दिट्ठ न [दृष्ट] प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण से जानने-योग्य वस्तु। °साहम्मव न [°साधर्म्यवत्] अनुमान का एक भेद।

दिट्ठंत पुं [दृष्टान्त] उदाहरण।

दिट्ठंतिअ वि [द्राष्टान्तिक] जिस पर उदा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरण दिया गया हो वह। न. अभिनय-विशेष।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] आँख, नजर। दर्शन, मत। दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण। बुद्धि, मति। विवेक, विचार। °कीव पुं [°क्लीब] नपुंसक-विशेष। °जुद्ध न [°युद्ध] युद्ध-विशेष, आँख की स्थिरता की लड़ाई। °बंध पुं [°बन्ध] नजर बाँधना। °म, °मंत वि [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला, सम्यग्-दर्शी। °राय पुं [°राग] दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग। चाक्षुष-स्नेह। °ल्ल वि [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला। °वाय पुं [°पात] नजर डालना। बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ। °वाय पुं [°वाद] बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ। °विपरिआसिआ स्त्री [°विपर्यासिका, °सिता] मति-भ्रम। °विस पुं [°विष] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प। °सूल न [°शूल] नेत्र का रोग-विशेष।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] तारा, मित्रा आदि योग-दृष्टि।

दिट्ठिआ अ [दिष्ट्या] इन अर्थों का सूचक अव्यय—मंगल। हर्ष। भाग्य से।

दिट्ठिआ स्त्री [दृष्टिका, °जा] क्रिया-विशेष—दर्शन के लिए गमन। दर्शन से कर्म का उदय होना।

दिट्ठीआ स्त्री [दृष्टीया] ऊपर देखो।

दिट्ठीवाओवएसिआ स्त्री [दृष्टिवादो-पदेशिकी] संज्ञा-विशेष।

दिट्ठेल्लय वि [दृष्ट] देखा हुआ, निरीक्षित।

दिड्ढ, दिढ } देखो दढ।

दिण पुंन [दिन] दिवस। °इंद पुं [°इन्द्र] सूर्य। °कय पुं [°कृत्] रवि। °कर पुं. सूरज। °नाह पुं [°नाथ] सूर्य। °बंधु पुं [°बन्धु] रवि। °मणि पुं. सूर्य। °मुह न [°मुख] प्रातःकाल। °यर देखो °कर। °रयणिकरि स्त्री [°रजनि-करी] विद्या-विशेष। °वइ पुं [°पति] सूर्य।

दिणिंद पुं [दिनेन्द्र] रवि।

दिणेस पुं [दिनेश] सूरज। बारह की संख्या।

दिण्ण वि [दत्त] दिया हुआ, वितीर्ण। निवेशित, स्थापित। पुं. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गणधर। भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्वजन्मीय नाम। भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर। भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाला एक गृहस्थ। देखो दिन्न।

दिण्ण देखो दइन्न।

दिण्णेल्लय वि [दत्त] दिया हुआ।

दित्त वि [दीप्त] ज्वलित, प्रकाशित। कान्ति-युक्त। तीक्ष्णभूत, निशित। उज्ज्वल, चमकीला। पुष्ट, परिवृद्ध। प्रसिद्ध। मारनेवाला। °चित्त वि. हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह।

दित्त वि [दृप्त] गर्वित। मारनेवाला। हानि-कारक। °इत्त वि [°चित्त] जिसके मन में गर्व हो। हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो वह।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] कान्ति, तेज, प्रकाश। °म वि [°मत्] कान्ति-युक्त।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] उद्दीपन। °ल्ल वि [°मत्] प्रकाशवाला।

दिदिक्खा, दिदिच्छा } स्त्री [दिदृक्षा] देखने की इच्छा।

दिद्ध वि [दिग्ध] लिप्त।

दिन्न देखो दिण्ण। श्री गौतम स्वामी के पास पाँच सौ तापसों के साथ जैन-दीक्षा लेनेवाला एक तापस। एक जैन आचार्य।

दिन्नय पुं [दत्तक] गोद लिया हुआ पुत्र।

दिप्प अक [दीप्] चमकना। तेज होना। जलना।

दिप्प अक [तृप्] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना।

दिप्प वि [दीप्र] चमकनेवाला, तेजस्वी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिप्प (अप) पुं [दीप] दीपक। छन्द-विशेष।
दिप्पंत पुं [दे] अनर्थ।
दिप्पिर देखो दिप्प = दीप्त।
दियाव सक [दा] देना।
दिरय पुं [द्विरद] हस्ती।
दिलंदिलिअ [दे] देखो दिल्लिदिलिअ।
दिलिदिल अक [दिलदिलाय्] 'दिल् दिल्' आवाज करना।
दिलिवेढय पुं [दिलिवेष्टक] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति।
दिल्लिदिलिअ पुं [दे] बालक, लड़का।
दिव उभ [दिव्] क्रीड़ा करना। जीतने की इच्छा करना। लेन-देन करना। चाहना, वांछना। आज्ञा करना।
दिव न [दिव्] स्वर्ग।
दिवड्ढ वि [द्व्यपार्ध] डेढ़।
दिवस, दिवह } देखो दिअस। °पुहुत्त न [°पृथक्-त्व] दो से लेकर नव दिन तक का समय।
दिवा देखो दिआ। °इत्ति पुं [°कीर्त्ति] चाण्डाल, भंगी। °कर पुं. सूर्य। °कित्ति पुं [°कीर्त्ति] हजाम। °गर देखो °कर। °मुह न [°मुख] प्रभात। °यर देखो °कर। °यरत्थ न [°करास्त्र] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष।
दिवायर पुं [दिवाकर] सिद्धसेन नामक विख्यात जैन कवि और तार्किक। पूर्वधर मुनि।
दिवि देखो देव।
दिविअ पुं [द्विविद] वानर-विशेष।
दिविज वि [दिविज] स्वर्ग में उत्पन्न। पुं. देवता।
दिविट्ठु देखो दुविट्ठु।
दिवे (अप) देखो दिवा।
दिव्व वि [दिव्य] स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्गीय। उत्तम, सुन्दर, मनोहर। मुख्य। देव-सम्बन्धी। न. शपथ-विशेष, आरोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि। प्राचीन काल में अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौकिक प्रमाण। °माणुस न [°मानुष] देव और मनुष्य सम्बन्धी हकीकतों का जिसमें वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु।
दिव्व न [दिव्य] तेला, तीन दिन का लगातार उपवास। वि. देव-सम्बन्धी।
दिव्व देखो दइव।
दिव्व देखो देव।
दिव्वाग पुं [दिव्याक] सर्प की एक जाति।
दिव्वासा स्त्री [दे] चामुण्डा देवी।
दिस सक [दिश्] कहना। प्रतिपादन करना।
दिस पुं [दिश] एक देव-विमान।
दिस वि [दिश्य] दिशा में उत्पन्न।
दिसआ स्त्री [दृषद्] पत्थर।
दिसा, दिसि, दिसी° } स्त्री [दिश्] दिशा, पूर्व आदि दस दिशाएँ। प्रौढ़ा स्त्री। °अक्क न [°चक्र] दिशाओं का समूह। °कुमरी स्त्री [°कुमारी] देवी-विशेष। °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक जाति। °कुमारी देखो °कुमरी। °गअ पुं [°गज] दिग्-हस्ती। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती। °चक्क देखो °अक्क। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] दिशाओं का समूह। तप-विशेष। °चर पुं. देशाटन करनेवाला भक्त। °जत्ता देखो °यत्ता। °जत्तिय देखो °यत्तिय। °डाह पुं [°दाह] दिशाओं में होनेवाला एक तरह का प्रकाश जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश दीखता है यह भावी उपद्रवों का सूचक है। °णुवाय पुं [°अनुपात] दिशा का अनुसरण। °दंति पुं [°दन्तिन्] दिग्-हस्ती। °दाह देखो °डाह। °दि पुं [°आदि] मेरु-पर्वत। °देवया स्त्री [°देवता]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिशा की अधिष्ठात्री देवी। °पोक्खि पुं [°प्रोक्षिन्] एक प्रकार का वानप्रस्थ। °भाअ पुं [°भाग] दिग्भाग। °मत्त न [°मात्र] अत्यल्प, संक्षिप्त। °मोह पुं. दिशा का भ्रम। °यत्ता स्त्री [°यात्रा] देशाटन, मुसाफिरी। °यत्तिय वि [°यात्रिक] दिशाओं में फिरने वाला। °लोय पुं [°आलोक] दिशा का प्रकाश। °वह पुं [°पथ] दिशा-रूप मार्ग। °वाल पुं [°पाल] दिक्पाल, दिशा का अधिपति। °वेरमण न [°विरमण] जैन गृहस्थ को पालने का एक नियम—दिशा में जाने-आने का परिमाण करना। °व्वय न [°व्रत] देखो °वेरमण। °सोत्थिय पुं [°स्वस्तिक] स्वस्तिक-विशेष। °सोवत्थिय पुं [°सौवस्तिक] स्वस्तिक-विशेष, दक्षिणावर्त्त स्वस्तिक। न. एक देव-विमान। रुचक पर्वत का एक शिखर। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] दिग्गज, दिशाओं में स्थित ऐरवत आदि आठ हस्ती। °हत्थिकूड पुंन [°हस्तिकूट] दिशा में स्थित हस्ती के आकारवाला शिखर-विशेष, वे आठ हैं—पद्मोत्तर, नीलवन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश, अवतंस और रोचनगिरि।

दिसाइ देखो दिसा-दि।

दिसेभ पुं [दिगिभ] दिग्गज।

दिस्स वि [दृश्य] देखने-योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय।

दिस्सा देखो दक्ख = दृश्।

दिहा अ [द्विधा] दो प्रकार।

दिहि स्त्री [धृति] धैर्य। °म वि [°मत्] धीर।

दीअ देखो दीव = दीप।

दीअअ देखो दीवय।

दीण वि [दीन] गरीब। दुःखित। हीन, न्यून। शोकातुर।

दीणार पुं [दीनार] सोने का एक सिक्का।

दीपक, दीपक्क (अप) पुंन [दीपक] छन्द-विशेष।

दीव देखो दिव = दिव्।

दीव सक [दीपय्] दीपाना, शोभाना। जलाना। तेज करना। प्रकट करना। निवेदन करना।

दीव पुं [दीप] प्रदीप, आलोक। कल्पवृक्ष की एक जाति, प्रदीप का कार्य करनेवाला कल्पवृक्ष। °चंपय न [°चम्पक] दिया का ढकना, दीप-पिधान। °ाली स्त्री. दीप-पंक्ति। दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदी अमावस। °ावली स्त्री. पूर्वोक्त ही अर्थ।

दीव पुं [द्वीप] जिसके चारों ओर जल भरा हो ऐसा भूमि-भाग। भवनपति देवों की एक जाति, द्वीपकुमार देव। व्याघ्र। °कुमार पुं. एक देव-जाति। °ण्णु वि [°ज्ञ] द्वीप के मार्ग का जानकार। °सागरपन्नत्ति स्त्री [°सागरप्रज्ञप्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें द्वीपों और समुद्रों का वर्णन है।

दीव पुं [द्वीप] सौराष्ट्र का एक नगर।

दीवअ पुं [दे] कृकलास, गिरगिट।

दीवअ पुं [दीपक] प्रदीप। आलोक। वि. प्रकाशक, शोभा-कारक। न. छन्द-विशेष।

दीवंग पुं [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देनेवाले कल्पवृक्ष की एक जाति।

दीवग देखो दीवअ = दीपक।

दीवड पुं [दे] जलजन्तु-विशेष।

दीवणिज्ज वि [दीपनीय] जठराग्नि को बढ़ानेवाला। शोभायमान, देदीप्यमान।

दीवायण पुं [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीन ऋषि।

दीवि, दीविअ पुं [द्वीपिन्] व्याघ्र की एक जाति, चीता।

दीविअंग पुं [दीपिकाङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है।

दीविआ स्त्री [दे] उपदेहिका, क्षुद्र कीट-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष। व्याध की हरिणी जो दूसरे हरिणों के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है। व्याध-सम्बन्धी पिंजड़े में रखा हुआ तितिर पक्षी।

दीविआ स्त्री [दीपिका] लघु प्रदीप।

दीविच्चग वि [द्वैप्य] द्वीप में पैदा हुआ।

दीवी (अप) देखो देवी।

दीवी स्त्री [दीपिका] छोटा दिया।

दीवूसव पुं [दीपोत्सव] कार्तिक वदी अमावस, दीपावली।

दीह वि [दीर्घ] लम्बा। पुं. दो मात्रावाला स्वर। कोशल देश का एक राजा। °काय अग्निकाय। °कालिगी स्त्री [°कालिकी] संज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष जिससे सुदीर्घ भूत-काल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है। °कालिय वि [°कालिक]दीर्घकाल से उत्पन्न, चिरन्तन। दीर्घकाल-सम्बन्धी। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] लम्बा सफर। मौत। °डक्क वि [°दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण। °दंत पुं [°दन्त] भारत वर्ष का एक भावी चक्रवर्त्ती राजा। एक जैनमुनि। °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी। °दसा स्त्री. ब. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष। °दिट्ठि वि [दृष्टि] दूरदर्शी, दूरन्देशी। स्त्री. दीर्घ-दर्शिता। °पट्ठ पुं [°पृष्ठ] साँप। यवराज का एक मन्त्री। °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिनदेव। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूर-दर्शी। °बाहु पु. भरत-क्षेत्र में होनेवाला तीसरा वासुदेव। भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व जन्मीय नाम। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि। °मद्ध वि [ध्व] लम्बा रास्तावाला। °मद्ध वि [°द्ध] दीर्घकाल से गम्य। °माउ न [°युष्] लम्बा आयुष्य। °रत्त, °राय पुंन [°रात्र] लम्बी रात। बहु रात्रिवाला, चिर-काल। °राय पुं [°राज] एक राजा। °लोग पुं [°लोक] वनस्पति का जीव। °लोगसत्थ न [°लोकशस्त्र] अग्नि। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] स्वनाम-ख्यात पर्वत। °सुत्त न [सूत्र] बड़ा सूता। आलस्य। °सेण पुं [°सेन] अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष। इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव। °ाउ, °ाउय वि [°ायुष्, °ायुष्क] लम्बी उम्रवाला, चिरंजीवी। °ासण न [°ासन] शय्या।

दीह देखो दिअह।

दीहंध वि [दिवसान्ध] दिन को देखने में असमर्थ।

दीहजीह पुं [दे] शंख।

दीहपिट्ठ देखो दीह-पट्ठ।

दीहर देखो दीह = दीर्घ। °च्छ वि [°ाक्ष] लम्बी आँखवाला।

दीहरिय वि [दीर्घित] लम्बा किया हुआ।

दीहिया स्त्री [दीर्घिका] वापी, जलाशय-विशेष।

दीहीकर सक [दीर्घी + कृ] लम्बा करना।

दु देखो तु।

दु देखो दव = द्रु।

दु वि. ब. [द्वि] दो, संख्या-विशेषवाला।

दु पुं [द्रु] वृक्ष। सत्ता, सामान्य।

दु अ [द्विस्] दो दफा।

दु अ [दुर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— अभाव। दुष्टता, खराबी। मुश्किल। निन्दा।

दुअ न [द्रुत] अभिनय-विशेष। वि. पीड़ित, हैरान किया हुआ। वेग-युक्त। °विलंबिअ न [विलम्बित] छन्द-विशेष। अभिनय-विशेष।

दुअ न [द्विक] युग्म।

दुअक्खर पुं [दे] नपुंसक।

दुअक्खर वि [द्व्यक्षर] अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ। पुस्त्री. दास, नौकर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुअणुअ पुं [द्व्यणुक] दो परमाणुओं का स्कन्ध ।

दुअर वि [दुष्कर] मुश्किल ।

दुअल्ल न [दुकूल] वस्त्र । सूक्ष्मवस्त्र । देखो दुकूल ।

दुआइ पुं [द्विजाति] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य —ये तीन वर्ण ।

दुआइक्ख वि [दुराख्येय] दुःख से कहने-योग्य ।

दुआर न [द्वार] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग ।

दुआराह वि [दुराराध] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह ।

दुआरिआ स्त्री [द्वारिका] छोटा द्वारा । गुप्त द्वार, अपद्वार ।

दुआवत्त न [द्व्यावर्त] दृष्टिवाद का एक सूत्र ।

दुइअ, दुइज्ज, दुईअ } वि [द्वितीय] दूसरा ।

दुइल्ल (अप) वि [द्विचतुर] दो चार, दो या चार

दुउंछ, दुउच्छ } सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना ।

दुउण वि [द्विगुण] दुगुना । °अर वि [°तर] दूने से भी विशेष, अत्यन्त ।

दुऊल देखो दुअल्ल ।

दुंडुह, दुंदुभ } पुं [दुन्दुभ] सर्प की एक जाति । ज्योतिष्क-विशेष, एक महाग्रह ।

दुंदुभि देखो दुंदुहि ।

दुंदुमिअ न [दे] गले की आवाज ।

दुंदुमिणी स्त्री [दे] रूपवाली स्त्री ।

दुंदुहि पुंस्त्री [दुन्दुभि] वाद्य-विशेष ।

दुंबवती स्त्री [दे] नदी ।

दुकड देखो दुक्कड ।

दुकप्प देखो दुक्कप्प ।

दुकम्म न [दुष्कर्मन्] पाप, निन्दित काज या काम ।

दुकाल पुं [दुष्काल] दुर्भिक्ष ।

दुकिय देखो दुक्कय ।

दुकूल पुं. वृक्ष-विशेष । वि. दुकूल वृक्ष की छाल से बना हुआ वस्त्र आदि ।

दुक्कंदिर वि [दुष्क्रन्दिन्] अत्यन्त आक्रन्द करनेवाला ।

दुक्कड न [दुष्कृत] पाप कर्म, निन्द्य आचरण ।

दुक्कप्प पुं [दुष्कल्प] शिथिल साधु का आचरण, पतित साधु का आचार ।

दुक्कम्म न [दुष्कर्मन्] दुष्ट कर्म, असदाचरण ।

दुक्कय न [दुष्कृत] पाप-कर्म ।

दुक्कर वि [दुष्कर] कष्ट-साध्य । °आरअ वि [°कारक] मुश्किल कार्य को करनेवाला । °करण न. कठिन कार्य को करना । °कारि वि [°कारिन्] देखो °आरअ ।

दुक्कर न [दे] माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान ।

दुक्करकरण न [दुष्करकरण] पाँच दिन का लगातार उपवास ।

दुक्कह वि [दे] अरुचिवाला ।

दुक्काल पुं [दुष्काल] अकाल ।

दुक्किय देखो दुक्कय ।

दुक्कुक्कणिआ स्त्री [दे] पीकदानी ।

दुक्कुल न [दुष्कुल] निन्दित कुल ।

दुक्कुह वि [दे] असहिष्णु, चिड़चिड़ा । रुचि-रहित ।

दुक्ख पुंन [दुःख] असुख, कष्ट, पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ । वि. दुःखयुक्त । कर° वि. दुःख-जनक । °त्त वि [°र्त्त] दुःख से पीड़ित । °त्तगवेसण न [°र्त्तगवेषण] आर्त्त शुश्रूषा । °मज्जिय वि [अर्जितदुःख] जिसने दुःख उपार्जन किया हो वह । °राह वि [°राध्य] दुःख से आराधन-योग्य । °वह वि. दुःख-प्रद । °ासिया स्त्री [°ासिका] वेदना, पीड़ा । देखो दुह = दुःख ।

दुक्ख न [दे] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाग चूतड़ ।
दुक्ख अक [दुःखाय्] दुखना, दर्द होना । सक. दुःखी करना ।
दुक्खड देखो दुक्कर ।
दुक्खम वि [दुःक्षम] असमर्थ । अशक्य ।
दुक्खर देखो दुक्कर ।
दुक्खरिय पुं [दुष्करिक] नौकर ।
दुक्खरिया स्त्री [दुष्करिका] दासी । वाराङ्गना ।
दुक्खल्लिय (अप) वि [दुःखित] दुःख-युक्त ।
दुक्खविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ ।
दुक्खाव सक [दुःखय्] दुःख उपजाना । दुःखी करना ।
दुक्खिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त, दुखिया ।
दुक्खुत्तर वि [दुःखोत्तार] जिसको पार करने में कठिनाई हो ।
दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो बार ।
दुक्खुर देखो दुखुर ।
दुक्खुल देखो दुक्कुल ।
दुक्खोह पुं [दुःखौघ] दुःख-राशि ।
दुक्खोह वि [दुःक्षोभ] कष्ट-क्षोभ्य सुस्थिर ।
दुखंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़ेवाला ।
दुखुत्तो देखो दुक्खुत्तो ।
दुखुर पुं [द्विखुर] दो खुरवाला प्राणी, गौ, भैंस आदि ।
दुग न [द्विक] युग्म, युगल, जोड़ा ।
दुगंछ देखो दुगुंछ ।
दुगंछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा । देखो दुगुंछा ।
दुगंध देखो दुग्गंध ।
दुगच्छ, दुगुंछ सक [जुगुप्स्] घृणा करना, नफरत करना । निन्दा करना ।
दुगसंपुण्ण न [द्विगसंपूर्ण] लगातार बीस दिन का उपवास ।
दुगुंछग वि [जुगुप्सक] घृणा करनेवाला ।
दुगुंछा देखो दुगंछा । °कम्म न [°कर्मन्] देखो पीछे का अर्थ । °मोहणीय न [°मोहनीय] कर्म-विशेष जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है ।
दुगुंदुग पुं [दौगुन्दुक] एक समृद्धिशाली देव ।
दुगुच्छ देखो दुगुंछ ।
दुगुण देखो दुउण ।
दुगुण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना ।
दुगुणिअ देखो दुउणिअ ।
दुगुल्ल, दुगूल देखो दुअल्ल ।
दुगोत्ता स्त्री [द्विगोत्रा] वल्ली-विशेष ।
दुग्ग न [दे] दुःख । कमर ।
दुग्ग वि [दुर्ग] जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान । जो दुःख से जाना जा सके । पुंन. किला, गढ़, कोट । °नायग पुं [°नायक] किले का मालिक ।
दुग्गइ स्त्री [दुर्गति] कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि । विपत्ति, दुःख । दुर्दशा, बुरी अवस्था । दरिद्रता ।
दुग्गंठि स्त्री [दुर्ग्रन्थि] दुष्टग्रन्थि, गिरह, कठिन गाँठ ।
दुग्गंध पुं [दुर्गन्ध] खराब गन्ध । वि. दुर्गन्धि ।
दुग्गम वि [दुर्गम] जो कठिनाई से जाना जा सके वह ।
दुग्गम, दुग्गम्म वि [दुर्गम] जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके वह । न. कठिनाई, मुश्किल ।
दुग्गय वि [दुर्गत] धन-हीन । दुःखी, विपत्ति-ग्रस्त ।
दुग्गय न [दुर्गत] दरिद्रता । दुःख ।
दुग्गह वि [दुर्ग्रह] जिनका ग्रहण दुःख से हो सके वह ।
दुग्गा स्त्री [दुर्गा] पार्वती । देवी-विशेष । पक्षि-विशेष ।
दुग्गाई, दुग्गाएवी स्त्री [दुर्गादेवी] शिव-पत्नी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुग्गादेई } देवी-विशेष। °रमण पुं. महादेव।
दुग्गावी }

दुग्गास न [दुर्ग्रास] अकाल।

दुग्गिज्झ वि [दुर्ग्राह्य, दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह।

दुग्गूढ वि [दुर्गूढ] अत्यन्त गुप्त।

दुग्गेज्झ देखो दुग्गिज्झ।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह।

दुग्घट्ट } पुं [दे] हाथी।
दुग्घोट्ट }

दुग्घड वि [दुर्घट] कष्ट-साध्य।

दुग्घड वि [दुर्घट] असंगत।

दुग्घडिअ वि [दुर्घटित] दुःख से संयुक्त। खराब रीति से बना हुआ।

दुग्घर न [दुर्गृह] दुष्ट घर।

दुग्घास पुं [दुर्ग्रास] दुर्भिक्ष।

दुघण पुं. एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी।

दुचक्क न [द्विचक्र] शकट। °वइ पुं [°पति] गाड़ी का अधिपति या मालिक।

दुचिण्ण देखो दुच्चिण्ण।

दुच्च न [दौत्य] दूत-कर्म।

दुच्च देखो दोच्च = द्वितीय, द्विस्।

दुच्चंडिअ वि [दे] दुर्ललित। दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित।

दुच्चंबाल वि [दे] झगड़ाखोर। दुश्चरित। परुष-भाषी।

दुच्चज्ज } वि [दुस्त्यज] दुःख से त्यागने-
दुच्चय } योग्य।

दुच्चर } वि [दुश्चर] जिसमें दुःख से जाया
दुच्चरिअ } जाय वह। दुःख से जो किया जाय वह। °लाढ पुं. ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से जाया जा सके।

दुच्चरिअ न [दुश्चरित] खराब आचरण, दुष्ट वर्तन। वि. दुराचारी।

दुच्चार वि [दुश्चार] दुराचारी।

दुच्चिंतिय वि [दुश्चिन्तित] दुष्ट चिन्तित। न. खराब चिन्तन।

दुच्चिगिच्छ वि [दुश्चिकित्स] जिसका प्रतीकार मुश्किल से हो वह।

दुच्चिण्ण न [दुश्चीर्ण] दुष्ट आचरण, दुश्चरित। दुष्ट कर्म—हिंसा आदि। वि. दुष्ट संचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु।

दुच्चेट्ठिय न [दुश्चेष्टित] खराब चेष्टा, शारीरिक दुष्ट आचरण।

दुच्छक्क वि [द्विषट्क] बारह प्रकार का।

दुच्छड्ड वि [दुश्छर्द] दुस्त्यज।

दुच्छेज्ज वि [दुश्छेद] जिसका छेदन दुःख से हो सके वह।

दुछक्क देखो दुच्छक्क।

दुजडि पुं [द्विजटिन्] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह।

दुजय देखो दुज्जय।

दुजीह पुं [द्विजिह्व] साँप। खल पुरुष।

दुज्जंत देखो दुज्जित।

दुज्जण पुं [दुर्जन] खल, दुष्ट मनुष्य।

दुज्जय वि [दुर्जय] जो कष्ट से जीता जा सके।

दुज्जाय न [दे] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव।

दुज्जाय वि [दुर्जात] दुःख से निकलने-योग्य।

दुज्जाय न [दुर्यात] दुष्ट गमन, कुत्सित गति।

दुज्जित पुं [दुर्यन्त] एक प्राचीन जैनमुनि।

दुज्जीव न [दुर्जीव] आजीविका का भय।

दुज्जीह देखो दुजीह।

दुज्जेअ वि [दुजय] दुःख से जीतने योग्य।

दुज्जोहण पुं [दुर्योधन] धृतराष्ट्र का पहला पुत्र।

दुज्झ वि [दोह्य] दोहने-योग्य।

दुज्झाण न [दुर्ध्यान] दुष्ट चिन्तन।

दुज्झाय वि [दुर्ध्यात] जिसके विषय में दुष्ट चिन्तन किया गया हो वह।

दुज्झोसय वि [दुर्जोष] जिसकी सेवा कष्ट से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो सके ऐसा ।

दुज्झोसय वि [दुःक्षप] जिसका नाश कष्ट-साध्य हो वह ।

दुज्झोसिअ वि [दुर्जोषित] दुःख से सेवित ।

दुज्झोसिअ वि [दुःक्षपित] कष्ट से नाशित ।

दुट्ठ वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित । °प्प पुं [°त्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी ।

दुट्ठ वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त ।

दुट्ठाण न [दुःस्थान] दुष्ट जगह ।

दुट्ठु अ [दुष्ठु] असुन्दर ।

दुण्णाम न [दुर्नामन्] अपकीर्ति । दुष्ट नाम । एक प्रकार का गर्व ।

दुण्णिअ वि [दून] पीड़ित, दुःखित ।

दुण्णिअत्थ न [दे] जघन पर स्थित वस्त्र । जघन ।

दुण्णिक्क वि [दे] दुराचारी ।

दुण्णिक्कम वि [दुर्निष्क्रम] जहाँ से निकलना कष्ट-साध्य हो वह ।

दुण्णिक्खित्त वि [दे] दुराचारी । कष्ट से जो देखा जा सके ।

दुण्णिक्खेव वि [दुर्निक्षेप] दुःख से स्थापन करने-योग्य ।

दुण्णिमिअ वि [दुर्नियोजित] दुःख से जोड़ा हुआ ।

दुण्णिमित्त न [दुर्निमित्त] अपशकुन ।

दुण्णिविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही ।

दुण्णिसीहिया स्त्री [दुर्निषद्या] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान ।

दुण्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह ।

दुतितिक्ख वि [दुस्तितिक्ष] दुस्सह ।

दुत्तडी स्त्री [दुस्तटी] नदी । खराब किनारा वाली नदी ।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय ।

दुत्तव वि [दुस्तप] कष्ट से तपने-योग्य, दुःख से करने-योग्य (तप) ।

दुत्तार वि [दुस्तार] दुःख से पार करने-योग्य ।

दुत्तिअ [दे] शीघ्र ।

दुत्तिइक्ख, दुत्तितिक्ख } देखो दुतितिक्ख ।

दुत्तुंड पुं [दुस्तुण्ड] दुर्मुख, दुर्जन ।

दुत्तोस वि [दुस्तोष] जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो वह ।

दुत्थ न [दे] जघन ।

दुत्थ वि [दुःस्थ] दुर्गत, दुःस्थित ।

दुत्थ न [दौःस्थ्य] दुर्गति ।

दुत्थिअ वि [दुःस्थित] विपत्ति-ग्रस्त । निर्धन ।

दुत्थुरहुंड पुंस्त्री [दे] कलह-शील ।

दुत्थोअ पुं [दे] अभागा ।

दुद्दंत वि [दुर्दान्त] उद्धत, दुर्दम ।

दुद्दंस वि [दुर्दश] जो कठिनाई से देखा जा सके ।

दुद्दंसण वि [दुर्दर्शन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह ।

दुद्दम वि [दुर्दम] दुर्जय, दुर्निवार । पुं. राजा अश्वग्रीव का एक दूत ।

दुद्दम पुं [दे] देवर ।

दुद्दिट्ठ वि [दुर्दृष्ट] बुरी तरह से देखा हुआ । वि. दुष्ट दर्शनवाला ।

दुद्दिण न [दुर्दिन] बादलों से व्याप्त दिवस ।

दुद्देय वि [दुर्देय] दुःख से देने-योग्य ।

दुद्दोलना स्त्री [दे] गौ ।

दुद्दोली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति ।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध । °जाइ स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है । °समुद्द पुं [°समुद्र] क्षीर-समुद्र ।

दुद्धंस वि [दुर्ध्वंस] जिसका नाश मुश्किल से हो ।

दुद्धगंधिअमुह पुं [दे] शिशु, छोटा लड़का ।

दुद्धट्टी, दुद्धट्ठी } स्त्री [दे] प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध । खट्टी छाछ से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिश्रित दूध।

दुद्धर वि [दुर्धर] जिसका निर्वाह मुश्किल से हो सके वह। गहन, विषम। दुर्जय। पुं. रावण का एक सुभट।

दुद्धरिस वि [दुर्धर्ष] जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य।

दुद्धवलेही स्त्री [दे] चावल का आटा डालकर पकाया जाता दूध।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा मिलाकर पकाया जाता दूध।

दुद्धिअ न [दे] कद्दू।

दुद्धिणिआ, दुद्धिणी स्त्री [दे] तैल आदि रखने का भाजन। तुम्बी।

दुद्धोअहि, दुद्धोदहि पुं [दुग्धोदधि] क्षीरसमुद्र।

दुद्धोलणी स्त्री [दे] कामधेनु।

दुधा देखो दुहा।

दुन्नय पुं [दुर्नय] कुनीति। अनेक धर्मवाली वस्तु में किसी एक ही धर्म को मानकर अन्य धर्म का प्रतिवाद करनेवाला पक्ष। वि. दुष्टनीति, अन्यायकारी। °कारि वि [°कारिन्] अन्याय करनेवाला।

दुन्निकम देखो दोनिक्कम।

दुन्निग्गह वि [दुर्निग्रह] अनिवार्य।

दुन्निबोह वि [दुर्निबोध] दुःख से जानने-योग्य। दुर्लभ।

दुन्निय न [दुर्नीत] दुष्ट कर्म।

दुन्नियत्थ वि [दे] विट का भेषवाला, निन्द-नीय वेष को धारण करनेवाला, केवल जघन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ।

दुन्निरिक्ख वि [दुर्निरीक्ष्य] जो कठिनाई से देखा जा सके वह।

दुन्निवार वि[दुर्निवार]रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किल से हो सके वह।

दुन्निवारणीअ वि [दुर्निवारणीय, दुर्निवार] ऊपर देखो।

दुन्निसण्ण वि [दुर्निषण्ण] खराब रीति से बैठा हुआ।

दुप देखो दिअ = द्विप।

दुपएस वि [द्विप्रदेश] दो अवयववाला, पुं. द्व्यणुक।

दुपएसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेशवाला।

दुपक्ख पुं [दुष्पक्ष] दुष्ट पक्ष।

दुपक्ख न. [द्विपक्ष] दो पक्ष। वि. दो पक्ष-वाला।

दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का एक सूत्र।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानों में जिसका समावेश हो सके वह।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्यवतार] ऊपर देखो।

दुपमज्जिय देखो दुप्पमज्जिय।

दुपय वि [द्विपद] दो पैरवाला। पुं. मनुष्य। न. गाड़ी।

दुपय पुं [द्रुपद] कांपिल्यपुर का एक राजा।

दुपरिच्चय वि [दुष्परित्यज] दुस्त्यज।

दुपरिच्चयणीय वि [दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज] ऊपर देखो।

दुपस्स देखो दुप्पस्स।

दुपुत्त पुं [दुष्पुत्र] कुपुत्र।

दुपेच्छ वि [दुष्प्रेक्ष] दुर्दर्श, अदर्शनीय।

दुप्पइ पुं [दुष्पति] दुष्ट स्वामी।

दुप्पउत्त वि [दुष्प्रयुक्त] दुरुपयोग करनेवाला। जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह।

दुप्पउलिय, दुप्पउल्ल वि [दुष्प्रज्वलित] अधपका।

दुप्पओग पुं [दुष्प्रयोग] दुरुपयोग।

दुप्पक्क वि [दुष्पक्व] देखो दुप्पउल्ल।

दुप्पक्खाल वि [दुष्प्रक्षाल] जिसका प्रक्षालन कष्टसाध्य हो वह।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित] ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ।

दुप्पजीवि वि [दुष्प्रजीविन्] दुःख से जीने-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाला।

दुप्पडिक्कंत वि [दुष्प्रतिक्रान्त] जिसका प्रायश्चित्त ठीक-ठीक न किया गया हो वह।

दुप्पडिगर वि [दुष्प्रतिकर] जिसका प्रतीकार दुःख से किया जा सके।

दुप्पडिपूर वि [दुष्प्रतिपूर] पूरने के लिए अशक्य।

दुप्पडियाणंद वि [दुष्प्रत्यानन्द] जो किसी तरह सन्तुष्ट न किया जा सके। अति कष्ट से तोषणीय।

दुप्पडियार वि [दुष्प्रतिकार] जिसका प्रतीकार दुःख से हो सके वह।

दुप्पडिलेह वि [दुष्प्रतिलेख] जो ठीक-ठीक न देखा जा सके वह।

दुप्पडिवूह वि [दुष्प्रतिबृंह] बढ़ाने को अशक्य। पालने को अशक्य।

दुप्पणिहाण न [दुष्प्रणिधान] अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग।

दुप्पणिहिय वि [दुष्प्रणिहित] दुष्प्रयुक्त।

दुप्पणीहाण देखो दुप्पणिहाण।

दुप्पणोल्लिय वि [दुष्प्रणोद्य] दुस्त्यज।

दुप्पण्णवणिज्ज वि [दुष्प्रज्ञापनीय] कष्ट से प्रबोधनीय।

दुप्पतर वि [दुष्प्रतर] दुस्तर।

दुप्पधंस वि [दुष्प्रधर्ष] दुर्धर्ष, दुर्जय।

दुप्पमज्जण न [दुष्प्रमार्जन] ठीक-ठीक साफ नहीं करना।

दुप्पमज्जिय वि [दुष्प्रमार्जित] अच्छी तरह से साफ नहीं किया हुआ।

दुप्पय देखो दुपय = द्विपद।

दुप्पयार वि [दुष्प्रचार] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त।

दुप्परक्कंत वि [दुष्पराक्रान्त] बुरी तरह से आक्रान्त।

दुप्परिअल्ल वि [दे] अशक्य। दुगुना। अनभ्यस्त।

दुप्परिइअ वि [दुष्परिचित] अपरिचित।

दुप्परिच्चय देखो दुपरिच्चय।

दुप्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक।

दुप्परिमास वि [दुष्परिमर्ष] कष्ट-साध्य स्पर्शवाला।

दुप्परियत्तण देखो दुप्परिवत्तण।

दुप्परिल्ल वि [दे] दुराकर्ष।

दुप्परिवत्तण वि [दुष्परिवर्त्तन] जिसका परिवर्तन दुःख से हो सके वह। न. दुःख से पीछे लौटना।

दुप्पवंच पुं [दुष्प्रपञ्च] दुष्ट प्रपञ्च।

दुप्पवण पुं [दुष्पवन] दुष्ट वायु।

दुप्पवेस वि [दुष्प्रवेश] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह। °तर वि. प्रवेश करने को अशक्य।

दुप्पसह पुं [दुष्प्रसह] पंचम आरे के अन्त में होनेवाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि।

दुप्पस्स वि [दुर्दर्श] जो मुश्किल से दिखलाया जा सके वह।

दुप्पह वि [दुष्प्रभ] जो दुःख से सूझ सके वह, दुर्गम।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रध्वंस्य] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रधृष्य] अजेय, दुर्जय।

दुप्पाय न [दुष्प्राप] आयंबिल तप।

दुप्पिउ पुं [दुष्पितृ] दुष्ट पिता।

दुप्पिच्छ देखो दुपेच्छ।

दुप्पिय वि [दुष्प्रिय] अप्रिय। °भासि वि [°भाषिन्] अप्रिय-वक्ता।

दुप्पुत्त देखो दुपुत्त।

दुप्पूर वि [दुष्पूर] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके।

दुप्पेक्ख देखो दुपेच्छ।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [दुष्प्रेक्षणीय] कष्ट से दर्शनीय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुप्पेच्छ देखो दुपेच्छ ।
दुप्पोलिय देखो दुप्पउलिअ ।
दुप्फड वि [दुष्फट्] मुश्किल से फटने-योग्य ।
दुप्फरिस, दुप्फास, दुफास वि [दुःस्पर्श] जिसका स्पर्श खराब हो वह ।
दुफास वि [द्विस्पर्श] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त ।
दुब्बद्ध वि [दुर्बद्ध] खराब रीति से बँधा हुआ ।
दुब्बल वि [दुर्बल] निर्बल । °पच्चवमित्त पुंन [°प्रत्यवमित्र] दुर्बल की मदद करनेवाला ।
दुब्बलिय वि [दुर्बलिक] निर्बल । °पूसमित्त पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन आचार्य ।
दुब्बलिय न [दौर्बल्य] श्रम, थाक ।
दुब्बुद्धि वि [दुर्बुद्धि] दुष्ट बुद्धिवाला, खराब नियतवाला । स्त्री. खराब बुद्धि, दुष्ट नियत ।
दुब्बोल्ल पुं [दे] उपालम्भ ।
दुब्भ वि [दुग्ध] दोहा हुआ । न. दोहन ।
दुब्भ° देखो दुह = दुह् का कर्म ।
दुब्भग वि [दुर्भग] कमनसीब । अप्रिय, अनिष्ट । °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से उपकार करनेवाला भी लोगों को अप्रिय होता है । °करा स्त्री. दुर्भग बनानेवाली विद्या-विशेष ।
दुब्भग्ग न [दौर्भाग्य] दुर्भगता, लोक में अप्रियता ।
दुब्भरणि स्त्री [दुर्भरणि] दुःख से निर्वाह ।
दुब्भाव पुं [दुर्भाव] हेय पदार्थ । असद्-भाव, खराब-असर ।
दुब्भाव पुं [द्विभाव] विभाग, जुदाई ।
दुब्भाव पुं [द्विर्भाव] द्वित्व, दुगुनापन ।
दुब्भासिय न [दुर्भाषित] खराब वचन ।
दुब्भि पुंन [दुरभि] खराब गन्ध । वि. अशुभ, असुन्दर । वि. दुर्गन्धि । °गंध [°गन्ध] पूर्वोक्त अर्थ । °सद्द पुंन [°शब्द] खराब शब्द ।
दब्भिक्ख पुंन [दुर्भिक्ष] अकाल । भिक्षा का अभाव । वि. जहाँ पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि ।
दुब्भिज्ज देखो दुब्भेज्ज ।
दुब्भूइ स्त्री [दुर्भूति] अमंगल ।
दुब्भूय पुंन [दुर्भूत] नुकसान करनेवाला जन्तु—टिड्डी वगैरह । न. अशिव ।
दुब्भूय वि [दुर्भूत] दुराचारी ।
दुब्भेज्ज वि [दुर्भेद्य] तोड़ने को अशक्य ।
दुब्भेय वि [दुर्भेद] ऊपर देखो ।
दुभग देखो दुब्भग ।
दुभव न [द्विभव] वर्तमान और आगामी जन्म ।
दुभाग पुं [द्विभाग] आधा ।
दुम सक [धवलय्] सफेद करना । चूना आदि से पोतना ।
दुम पुं [द्रुम] वृक्ष । चमरेन्द्र के पदातिसैन्य का एक अधिपति । राजा श्रेणिक का एक पुत्र । न. एक देव-विमान । °कंत न[°कान्त] एक विद्याधरनगर । °पत्त न [°पत्र] वृक्ष का पत्ता । 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन । °पुप्फिया स्त्री [°पुष्पिका] 'दशवैकालिक' सूत्र का पहला अध्ययन । °राय पुं [°राज] उत्तम वृक्ष । °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का एक पुत्र । नववें बलदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गुरु ।
दुमंतय पुं [दे] केश-बन्ध, धम्मिल्ल—बँधी चोटी, जूड़ा ।
दुमण न [धवलन] चूना आदि से लेपन, सफेद करना ।
दुमणी स्त्री [दे] सुधा । चूना ।
दुमत्त वि [द्विमात्र] दो मात्रावाला स्वरवर्ण ।
दुमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो मास-सम्बन्धी ।
दुमिल देखो दुम्मिल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुमुह पुं [द्विमुख] एक राजर्षि ।
दुमुह देखो दुम्मुह = दुर्मुख ।
दुमुहुत्त पुंन [दुर्मुहूर्त] खराब मुहूर्त ।
दुमोक्ख वि [दुर्मोक्ष] जो दुःख से छोड़ा जा सके ।
दुम्म देखो दूम = दावय् ।
दुम्मइ वि [दुर्मति] दुष्ट बुद्धिवाला ।
दुम्मइणी स्त्री [दे] झगड़ाखोर स्त्री ।
दुम्मण वि [दुर्मनस्] खिन्नमनस्क, उद्विग्न-चित्त, उदास । दीनतायुक्त । द्वेष-युक्त ।
दुम्मण अक [दुर्मनाय्] उद्विग्न होना, उदास होना ।
दुम्मणिअ न [दौर्मनस्य] उदासी, उद्वेग, चिन्ता, बेचैनी ।
दुम्मणिअ न [दौर्मनस्य] दुष्ट मनो-भाव, मन का दुष्ट विकार, दुर्जनता ।
दुम्मय पुं [द्रमक] भिखारी ।
दुम्महिला स्त्री [दुर्महिला] दुष्ट स्त्री ।
दुम्माण पुं [दुर्मान] झूठा अभिमान, निन्दित गर्व ।
दुम्मार पुं [दुर्मार] भयंकर ताड़न ।
दुम्मारि स्त्री [दुर्मारि] उत्कट मारी-रोग ।
दुम्मारुय पुं [दुर्मारुत] दुष्ट पवन ।
दुम्मिअ वि [दून] उपतापित, पीड़ित ।
दुम्मिल स्त्रीन [दुर्मिल] छन्द-विशेष ।
दुम्मुह देखो [दुमुह] = द्विमुख ।
दुम्मुह पुं [दुर्मुख] बलदेव का धारणी-देवी से उत्पन्न एक पुत्र ।
दुम्मुह पुं [दे] वानर ।
दुम्मेह वि [दुर्मेधस्] दुर्बुद्धि ।
दुम्मोअ वि [दुर्मोक] दुःख से छोड़ाने-योग्य ।
दुयणु देखो दुअणुअ ।
दुरइक्कम वि [दुरतिक्रम] दुर्लंघ्य ।
दुरइक्कमणिज्ज वि [दुरतिक्रमणीय] ऊपर देखो ।
दुरंत वि [दुरन्त] जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह । जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह ।
दुरंदर वि [दे] दुःख से उत्तीर्ण ।
दुरक्ख वि [दुरक्ष] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह ।
दुरक्खर वि [दुरक्षर] परुष, कठोर, कड़ा (वचन) ।
दुरग्गह पुं [दुराग्रह] कदाग्रह ।
दुरज्झवसिय न [दुरध्यवसित] दुष्ट चिन्तन ।
दुरणुचर वि [दुरनुचर] दुष्कर ।
दुरणुपाल वि [दुरनुपाल] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो ।
दुरप्प पुं [दुरात्मन्] दुर्जन ।
दुरब्भास पुं [दुरभ्यास] खराब आदत ।
दुरभि देखो दुब्भि ।
दुरभिगम वि. कष्ट-गम्य । दुर्बोध ।
दुरमच्च पुं [दुरमात्य] दुष्ट मन्त्री ।
दुरवगम वि. दुर्बोध ।
दुरवगम्म देखो दुरवगम ।
दुरवगाह वि. जहाँ प्रवेश करना कठिन हो वह ।
दुरस वि [दुरस] खराब स्वादवाला ।
दुरसण पुं [द्विरसन] सर्प । दुर्जन ।
दुरहि देखो दुरभि ।
दुरहिगम देखो दुरभिगम ।
दुरहिगम्म वि [दुरभिगम्य] दुर्बोध ।
दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरधिसह] दुस्सह ।
दुराणण पुं [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा ।
दुराणुवत्त वि [दुरनुवर्त] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह ।
दुराय न [द्विरात्र] दो रात ।
दुरायार वि [दुराचार] दुराचारी । पुं. दुष्ट आचरण ।
दुराराह वि [दुराराध] दुःख से आराध्य ।
दुरारोह वि. जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके वह, दुरभ्यास ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरालोअ पुं [दे] अन्धकार।
दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दुःख से देखा जा सके, देखने को अशक्य।
दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो।
दुरावह वि. दुर्धर, दुर्वह।
दुरास वि [दुराश] दुष्ट आशावाला। खराब इच्छावाला।
दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशयवाला।
दुरासय वि [दुराश्रय] दुःख से जिसका आश्रय किया जा सके वह आश्रय करने को अशक्य।
दुरासय वि [दुरासद] दुर्लभ। दुर्जय। दुःसह।
दुरिअ न [दुरित] पाप।
दुरिअ न [दे] शीघ्र।
दुरिआरि स्त्री [दुरितारि]भगवान् सम्भवनाथ की शासनदेवी।
दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य।
दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब नक्षत्र। खराब यजन—याग।
दुरुक्क वि [दे] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक-ठीक नहीं पीसा हुआ।
दुरुढुल्ल सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना।
दुरुत्त न [दुरुक्त] दुष्ट वचन।
दुरुत्त वि [द्विरुक्त] पुनरुक्त। दो बार कहने-योग्य।
दुरुत्तर वि. दुस्तर, दुर्लंघ्य। न. दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब।
दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। °सय वि [°शततम] एक सौ दो वाँ।
दुरुत्तार वि. दुःख से पार करने-योग्य।
दुरुद्धर वि. जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह।
दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण)।
दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह।
दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण-विशेष, दूब।
दुरुह सक [आ+रुह्] आरूढ़ होना, चढ़ना।
दुरूढ वि [आरूढ] अधिरूढ़।
दुरूव वि [दूरूप] कुरूप। मलमूत्र का कर्दम। अशुचि आदि खराब वस्तु।
दुरूह देखो दुरुह।
दुरेह पुं [द्विरेफ] भौंरा।
दुरोअर न [दुरोदर] द्यूत।
दुरोदर देखो दुरोअर।
दुलंघ देखो दुल्लंघ।
दुलंभ देखो दुल्लंभ।
दुलह वि [दुर्लभ] जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह। पुं. एक वणिक्-पुत्र। देखो दुल्लह।
दुलि पुंस्त्री [दे] कच्छप।
दुल्ल न [दे] वस्त्र।
दुल्लंघ वि [दुर्लङ्घ] जिसका उल्लंघन कठिनाई से हो सके वह, अलंघनीय।
दुल्लंभ वि [दुर्लभ] दुष्प्राप्य।
दुल्लक्ख वि [दुर्लक्ष] दुर्विज्ञेय, अलक्ष्य। जो कठिनाई से देखा जा सके।
दुल्लग्ग वि [दे] अघटमान, अयुक्त।
दुल्लग्ग न [दुर्लग्न] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त।
दुल्लब्भ, दुल्लभ } देखो दुल्लह।
दुल्ललिअ वि [दुर्ललित] दुष्ट आदतवाला। दुष्ट इच्छावाला। व्यसनी, आदतवाला। दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित। न. दुराशा, दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा।
दुल्लसिआ स्त्री [दे] दासी, नौकरानी।
दुल्लह वि [दुर्लभ] दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो वह। गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा। °राय पुं [°राज] वही अर्थ। °लंभ वि [°लम्भ] जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुवई स्त्री [द्रुपदी] छन्द-विशेष ।
दुवण न [दावन] उपताप, पीड़न ।
दुवण्ण वि [दुर्वर्ण] खराब रूपवाला ।
दुवय पुं [द्रुपद] एक राजा, द्रौपदी का पिता । °सुया स्त्री [°सुता] पाण्डव-पत्नी द्रौपदी ।
दुवयंगया, दुवयंगरुहा स्त्री [द्रुपदाङ्गजा] द्रौपदी ।
दुवयण न [दुर्वचन] खराब वचन, दुष्ट उक्ति ।
दुवयण न [द्विवचन] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो संख्या को वाचक विभक्ति ।
दुवार, दुवाराय देखो दुआर । °पाल पुं. दरवान । °वाहा स्त्री [°बाहा] द्वार-भाग ।
दुवारि वि [द्वारिन्] द्वारवाला । पुं. प्रतीहार ।
दुवारिअ वि [द्वारिक] दरवाजावाला ।
दुवारिअ पुं [दौवारिक] द्वारपाल ।
दुवालस त्रि.ब. [द्वादशन्] बारह । °मुहुत्तिअ वि [°मौहूर्तिक] बारह मुहूर्तों का परिमाणवाला । °विह वि [°विध] बारह प्रकार का । °हा अ [°धा] बारह प्रकार । °वत्त न [°वर्त] बारह आवर्तवाला वन्दन, प्रणाम-विशेष ।
दुवालसंग स्त्रीन [द्वादशाङ्गी] 'आचारांग' आदि बारह जैन आगम सूत्र ग्रन्थ ।
दुवालसंगि वि [द्वादशाङ्गिन्] बारह अंगग्रन्थों का जानकार ।
दुवालसम वि [द्वादश] बारहवाँ । न. लगातार पाँच दिनों का उपवास ।
दुविट्ठ, दुविट्ठु पुं [द्विपृष्ठ, द्विविष्टप] भरत-क्षेत्र का द्वितीय अर्ध-चक्री राजा । भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव ।
दुविभज्ज वि [दुर्विभाज्य] जिसका विभाग करना कठिन हो वह—परमाणु ।
दुविभव्व देखो दुव्विभव्व ।
दुवियड्ढ वि [दुर्विदग्ध] दुश्शिक्षित, जानकारी का झूठा अभिमान करनेवाला ।
दुवियप्प पुं [दुर्विकल्प] दुष्ट वितर्क ।
दुविलय पुं [दुर्विलक] एक अनार्य देश ।
दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का ।
दुवीस स्त्रीन [द्वाविंशति] बाईस ।
दुव्वण्ण देखो दुवण्ण ।
दुव्वय न [दुर्व्रत] दुष्ट नियम । वि. दुष्ट व्रत करनेवाला । व्रत-रहित ।
दुव्वयण न [दुर्वचन] खराब वचन ।
दुव्वल देखो दुब्बल ।
दुव्वसण न [दुर्व्यसन] बुरी आदत ।
दुव्वसु वि [दुर्वसु] अभव्य, खराब द्रव्य । °मुणि पुं [°मुनि] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु ।
दुव्वह वि [दुर्वह] दुर्धर ।
दुव्वा देखो दुरुव्वा ।
दुव्वाइ वि [दुर्वादिन्] अप्रियवक्ता ।
दुव्वाय पुं [दुर्वाक्] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति ।
दुव्वाय पुं [दुर्वात] दुष्ट पवन ।
दुव्वार वि [दुर्वार] दुःख से रोकने-योग्य, अवार्य ।
दुव्वारिअ देखो दुवारिअ = दौवारिक ।
दुव्वाली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति ।
दुव्वास पुं [दुर्वासस्] एक ऋषि ।
दुव्विअड वि [दुर्विवृत] नग्न ।
दुव्विअड्ढ, दुव्विअद्ध वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का झूठा अभिमान करनेवाला, दुश्शिक्षित ।
दुव्विजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने-योग्य, जानने को अशक्य ।
दुव्विढप्प वि [दुरर्ज] कठिनाई से कमाने-योग्य ।
दुव्विणीअ वि [दुर्विनीत] उद्धत ।
दुव्विण्णाय वि [दुर्विज्ञात] असत्य रीति से जाना हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुव्विभज देखो दुविभज्ज ।

दुव्विभव्व वि [दुर्विभाव्य] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह ।

दुव्विभाव वि [दुर्विभाव] ऊपर देखो ।

दुव्विलसिय न [दुर्विलसित] स्वच्छन्दी विलास । जघन्य काम ।

दुव्विसह वि [दुर्विसह्य] असह्य ।

दुव्विसोज्झ वि [दुर्विशोध्य] शुद्ध करने को अशक्य ।

दुव्विहिअ न [दुर्विहित] दुष्ट अनुष्ठान । वि, खराब रीति से किया हुआ । असुविहित, अयशस्वी ।

दुव्वोज्झ वि [दुर्वाह्य] दुर्वह, दुःख से ढोने-योग्य ।

दुव्वोज्झ वि [दे] दुःख से मारने-योग्य ।

दुसंकड न [दुस्संकट] विषम विपत्ति ।

दुसंचर देखो दुस्संचर ।

दुसंथ वि [द्विसंस्थ] दो बार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला ।

दुसन्नप्प वि [दुस्संज्ञाप्य] दुर्बोध्य ।

दुसमदुसमा देखो दुस्समदुस्समा ।

दुसमसुसमा देखो दुस्समसुसमा ।

दुसमा देखो दुस्समा ।

दुसह देखो दुस्सह ।

दुसाह वि [दुस्साध] कष्ट-साध्य ।

दुसिक्खिअ वि [दुश्शिक्षित] दुर्विदग्ध ।

दुसुमिण देखो दुस्सुमिण ।

दुसुरुल्लय न [दे] गले का आभूषण-विशेष ।

दुस्स सक [द्विष्] द्वेष करना ।

दुस्सउण न [दुश्शकुन] अपशकुन ।

दुस्संचर वि [दुस्संचर] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम ।

दुस्संचार वि [दुस्संचार] ऊपर देखो ।

दुस्संत पुं [दुष्यन्त] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति ।

दुस्संबोह वि [दुस्संबोध] दुर्बोध्य ।

दुस्सज्झ वि [दुस्साध्य] दुष्कर ।

दुस्सण्णप्प देखो दुसन्नप्प ।

दुस्सत्त वि [दुस्सत्त्व] दुरात्मा, दुष्ट जीव ।

दुस्समदुस्समा स्त्री [दुष्षमदुष्षमा] काल-विशेष, सर्वाधम काल, अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिणाम एक्कीस हजार वर्षों का है ।

दुस्समसुसमा स्त्री [दुष्षमसुषमा] बेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा ।

दुस्समा स्त्री [दुष्षमा] दुष्ट काल । एक्कीस हजार वर्षों के परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा ।

दुस्सर पुं [दुःस्वर] खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ । कर्म-विशेष जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है । °णाम न [°नामन्] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म ।

दुस्सल वि. [दुश्शल] अविनीत ।

दुस्सह वि. असह्य ।

दुस्सहिय वि [दुस्सोढ] दुःख से सहन किया हुआ ।

दुस्सासण पुं [दुश्शासन] दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष ।

दुस्साहड वि [दुस्संहृत] दुःख से एकत्रित किया हुआ ।

दुस्साहिअ वि [दौस्साधिक] दुस्साध्य कार्य को करनेवाला ।

दुस्सिक्ख वि [दुश्शिक्ष] दुष्ट शिक्षावाला, दुर्विदग्ध ।

दुस्सिक्खिअ वि [दुश्शिक्षित] ऊपर देखो ।

दुस्सिज्जा स्त्री [दुश्शय्या] खराब शय्या ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुस्सिलिट्ठ वि [दुश्श्लिष्ट] कुत्सित श्लेषवाला।
दुस्सील वि [दुश्शील] दुष्ट स्वभाववाला। व्यभिचारी।
दुस्सुमिण पुंन [दुस्स्वप्न] खराब स्वप्न।
दुस्सुय न [दुश्श्रुत] दुष्ट शास्त्र। वि. श्रुति-कटु।
दुस्सेज्जा देखो दुस्सिज्जा।
दुह सक [दुह्] दूहना, दूध निकालना।
दुह सक [द्रुह्] द्रोह करना, द्वेष करना, वैर करना।
दुह देखो दोह = दोह।
दुह देखो दुक्ख = दुःख। °अ वि [°द] दुःख-जनक। °ट्ट वि [°र्त] दुःख से पीड़ित। °ट्टिय वि [°र्तित] दुःख से पीड़ित। °ट्ठ पुं [°र्थ] नरक-स्थान। °त्त देखो °ट्ट। °फास पुं [°स्पर्श] दुःख-जनक स्पर्श। °भागि वि [°भागिन्] दुःख में भागीदार। °मच्चु पुं [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत। °विवाग पुं [°विपाक] दुःखरूप कर्म-फल। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दुःख-जनक शय्या। °विह वि. दुःख-जनक।
दुह° देखो दुहा।
दुहअ वि [दे] चूर-चूर किया हुआ।
दुहअ वि [दुर्हत] खराब रीति से मारा हुआ।
दुहअ वि [द्विहत] दो से मारा हुआ।
दुहअ देखो दुब्भग।
दुहओ अ [द्विधातस्] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से।
दुहंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़ेवाला।
दुहग देखो दुब्भग।
दुहट्ट वि [दुर्घट्ट] दुर्वार।
दुहण देखो दुघण।
दुहण पुं [द्रुहण] प्रहरण-विशेष।
दुहण न [दोहन] दोहना।
दुहदुहग पुं [दुहदुहक] 'दुह-दुह' आवाज।
दुहव देखो दूहव।

दुहा अ [द्विधा] दो तरफ, उभयथा। °इअ वि [°कृत] जिसको दो खण्ड किये गये हों वह।
दुहाकर सक [द्विधा + कृ] दो खण्ड करना।
दुहाव सक [छिद्] छेदना, खण्डित करना।
दुहाव सक [दुःखय्] दुःखी करना, दुभाना, दुखाना।
दुहावण वि [दुःखन] दुःखी करनेवाला।
दुहि वि [दुःखिन्] दुःखी, व्यथित, पीड़ित।
दुहिअ वि [दुःखित] पीड़ित, दुःखयुक्त।
दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया हो वह। °दुज्झ वि [°दोह्य] फिर-फिर दोहने-योग्य।
दुहिआ [दुहितृ] पुत्री। °दइअ पुं [°दयित] जामाता।
दुहिण पुं [द्रुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख।
दुहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, नाती।
दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लड़की की लड़की, नतिनी।
दुहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की, नतिनी या नातिन।
दुहिदिआ (शौ) स्त्री [दुहितृ] कन्या।
दुहिल वि [द्रुहिल] द्रोही।
दू सक. उपताप करना। काटना।
दूअ पुं [दूत] सन्देश-हारक।
दूआ देखो धूआ।
दूइ° देखो दूई। °पलासय न [°पलाशक] एक चैत्य।
दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना।
दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन।
दूई स्त्री [दूती] दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, कुटनी। जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष। °पिंड पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा। देखो दूइ°।
दूण वि [दून] हैरान किया हुआ।
दूण पुं [दे] हाथी।
दूण (अप) देखो दुउण।
दूणावेढ वि [दे] अशक्य। तालाब।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूभ अक [दुःखय्] दूभना, दुःखित होना ।
दूभग देखो दुब्भग ।
दूभग्ग न [दौर्भाग्य]दुष्ट भाग्य ।
दूम सक [दू, दावय्] परिताप करना, सन्ताप करना ।
दूम देखो दुम = धवलय् ।
दूमक } वि [दावक] पीड़ा-जनक ।
दूमग }
दूमण वि [दावक] उपताप करनेवाला ।
दूमण न [दवन, दावन] परिताप, पीड़न ।
दूमण देखो दुम्मण = दुर्मनस् ।
दूमणाइअ वि [दुर्मनायित] उद्विग्न-मनस्क ।
दूयाकार न [दे] कला-विशेष ।
दूर न. असमीप । अतिशय, अत्यन्त । वि. दूरस्थित । व्यवहित, अन्तरित । °ग वि. दूरवर्ती । °गइ, °गइअ वि [°गतिक] दूर जानेवाला । सौधर्म आदि देवलोक में उत्पन्न होनेवाला । °तराग वि [°तर] अत्यन्त दूर । °त्थ वि [°स्थ] दूरस्थित, दूरवर्ती । °भविय पुं [°भव्य] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यतावाला जीव । °य देखो °ग । °वत्ति वि [°वर्तिन्] दूर में रहनेवाला । °लइय वि [°लयिक] मुक्ति-गामी । °लय पुं. दूर-स्थित आश्रय । मोक्ष । मुक्ति का मार्ग ।
दूरंगइअ देखो दूर-गइअ ।
दूरंतरिअ वि [दूरान्तरित] अत्यन्त-व्यवहित ।
दूरचर वि. दूर रहनेवाला ।
दूराय सक [दूराय्] दूर स्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना ।
दूरीकय वि [दूरीकृत] दूर किया हुआ ।
दूरीहूअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो ।
दूरुल्ल वि [दूरवत्] दूरस्थित, दूरवर्ती ।
दूलह देखो दुल्लह ।
दूस अक [दुष्] दूषित होना, विकृत होना ।
दूस सक [दूषय्] दोषित करना ।
दूस न [दूष्य] वस्त्र । तम्बू । °गणि पुं [°गणिन्] एक जैन आचार्य । °मित्त पुं [°मित्र] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलीपुत्र में अभिषिक्त एक राजा । °हर न [°गृह] पट-कुटी ।
दूसअ वि [दूषक] दोष प्रकट करनेवाला ।
दूसग वि [दूषक] दूषित करनेवाला । दोष देखनेवाला ।
दूसण न [दूषण] दोष, अपराध । कलंक, दाग । पुं. रावण की मौसी का लड़का । वि. दूषित करनेवाला ।
दूसम वि [दुष्षम] खराब, दुष्ट । पुं. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा । °दूसमा देखो दुस्समदुस्समा । °सुसमा देखो दुस्समसुसमा ।
दूसमा देखो दुस्समा ।
दूसर देखो दुस्सर ।
दूसल वि [दे] अभागा ।
दूसह देखो दुस्सह ।
दूसहणीअ वि [दुस्सहनीय] दुस्सह, असह्य ।
दूसासण देखो दुस्सासण ।
दूसाहिअ वि [दौस्साधिक] दुसाध जाति में उत्पन्न, अस्पृश्य जाति का ।
दूसि पुं [दूषिन्] नपुंसक का एक भेद ।
दूसिअ वि [दूषित] दूषण-युक्त, कलङ्कयुक्त । पुं. एक प्रकार का नपुंसक ।
दूसिआ स्त्री [दूषिका] आँख का मैल ।
दूसुमिण देखो दुस्सुमिण ।
दूहअ वि [दुःखक] दुःख-जनक ।
दूहट्ट वि [दे] लज्जा से उद्विग्न ।
दूहय देखो दोधअ ।
दूहल वि [दे] मन्दभाग्य ।
दूहव देखो दुब्भग ।
दूहव सक [दुःखय्] दुभाना, दुःखी करना ।
दूहिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त ।
दे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—सम्मुख-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करण। सखी को आमन्त्रण।
दे अ. पाद-पूरक अव्यय।
देअ देखो देव।
देअर देखो दिअर।
देअराणी स्त्री [देवरपत्नी] देवरानी।
देई देखो देवी।
देउल न [देवकुल] देव-मन्दिर। °णाह पुं [°नाथ] मन्दिर का स्वामी। °वाडय पुंन [°पाटक] मेवाड़ का एक गाँव।
देउलिअ वि [दैवकुलिक] देव-स्थान का परिपालक।
देउलिया स्त्री [देवकुलिका] छोटा देव-स्थान।
देक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना।
देक्खालिअ वि [दर्शित] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ।
देख (अप) देखो देक्ख।
देट्ठ देखो दिट्ठ = दृष्ट।
देण्ण देखो दइण्ण।
देपाल पुं [देवपाल] एक मन्त्री का नाम।
देप्प देखो दिप्प = दीप्।
देर देखो दार = द्वार।
देव उभ [दिव्] जीतने की इच्छा करना। पण करना। व्यवहार करना। चाहना। आज्ञा करना। अव्यक्त शब्द करना। हिंसा करना।
देव पुंन.अमर, देवता। मेघ। आकाश। राजा। पुं. परमेश्वर, देवाधिदेव। साधु, मुनि, ऋषि। द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। स्वामी, नायक। पूज्य। °उत्त वि [°उप्त] देव से बोया हुआ। देव-कृत। °उत्त वि [°गुप्त] देव से रक्षित। ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव। °उत्त पुं [°पुत्र] देव-पुत्र। °उल न [°कुल] देव-मन्दिर। °उलिया स्त्री [°कुलिका] छोटा देव-मन्दिर। °कन्ना स्त्री [°कन्या] देव-पुत्री। °कहकहय पुं [°कहकहक] देवताओं का कोलाहल। °किब्बिस पुं [°किल्बिष] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति। °किब्बिसिय पुं [°किल्बिषिक] एक अधम देव-जाति। °किब्बिसीया स्त्री [°किल्बिषीया] देखो देवकिब्बिसिया। °कुरा स्त्री. क्षेत्र-विशेष, वर्ष-विशेष। °कुरु पुं. वही अर्थ। °कुल देखो °उल। °कुलिय पुं [°कुलिक] पुजारी। °कुलिया देखो °उलिआ। °गइ स्त्री [°गति] देवयोनि। °गणिया स्त्री [°गणिका] देव-वेश्या, अप्सरा। °गिह न [°गृह] देव-मन्दिर। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक परिव्राजक का नाम। एक भावी जिनदेव। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम। सुप्रसिद्ध श्री हेमचन्द्राचार्य के गुरू का नाम। °च्चय वि [°ार्चक] देव की पूजा करनेवाला। पुं. मन्दिर का पुजारी। °च्छंदग न [°च्छन्दक] जिनदेव का आसन। °जस पुं [°यशस्] एक जैन मुनि। °जाण न [°यान] देव का वाहन। °जिण पुं [°जिन] एक भावी जिनदेव का नाम। °ड्ढि देखो देविड्ढि। °णाअअ पुं [°नायक] नीचे देखो। °णाह पुं [°नाथ] इन्द्र। परमेश्वर, परमात्मा। °तम न [°तमस्] एक प्रकार का अन्धकार। °त्थुइ, °थुइ स्त्री [°स्तुति] देव का गुणानुवाद। °दत्त पुं. व्यक्तिवाचक नाम। °दत्ता स्त्री. व्यक्ति-वाचक नाम। °दव्व न [°द्रव्य] देव-सम्बन्धी द्रव्य। °दार न [°द्वार] देव-गृह-विशेष का पूर्वीय द्वार, सिद्धायतन का एक द्वार। °दारु पुं. देवदार का पेड़। °दाली स्त्री. वनस्पति-विशेष, रोहिणी। °दिण्ण पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °दूस न [°दूष्य] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र। °देव पुं. परमेश्वर, परमात्मा। इन्द्र, देवों का स्वामी। °नट्टिया स्त्री [°नर्तिका] नाचनेवाली देवी, देव-नटी। °नयरी स्त्री [°नगरी] अमरावती, स्वर्ग-पुरी। °पडिक्खोभ पुं [°प्रतिक्षोभ] तमस्काय। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृष्ण-राजि। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष। °प्पसाय पुं [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम। °फलिह पुं [°परिघ] अन्धकार। °भद्द पुं [°भद्र] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव। एक प्रसिद्ध जैनाचार्य। °भूमि स्त्री. स्वर्ग। मरण। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देवद्वीप का अधिष्ठाता देव। °महावर पुं.देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष। °रइ पुं [°रति] एक राजा। °रक्ख पुं [°रक्ष] राक्षस-वंशीय एक राजकुमार। °रण्ण न [°रण्य] अन्धकार। °रमण न.सौभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान। रावण का एक उद्यान। °राय पुं [°राज] इन्द्र। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि। °लोअ, °लोग पुं [°लोक]स्वर्ग। देव-जाति। °लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति। °वर पुं. देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक एक देव। °वहू स्त्री [°वधू] देवांगना, देवी। °संणत्ती स्त्री [°संज्ञप्ति] देव-कृत प्रतिबोध। देवता के प्रतिबोध से ली हुई दीक्षा। °संणिवाय पुं [°सन्निपात] देव-समागम। देव-समूह। देवों की भीड़। °सम्म पुं [°शर्मन्] इस नाम का एक ब्राह्मण। ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव। °साल न [°शाल] एक नगर का नाम। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] देवांगना, देवी। °सुय देखो °स्सुय। °सेण पुं [°सेन] शतद्वार नगर का एक राजा जिसका दूसरा नाम महापद्म था। ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव। भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम। भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक अन्तकृद् मुनि। °स्स न [°स्व] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धन। °स्सुय पुं [°श्रुत] भरत-क्षेत्र के छठवें भावी जिन-देव। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर। °इदेव पुं [°तिदेव] अर्हन् देव। °णंद पुं [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होनेवाले चौबीसवें जिनदेव। °णंदा स्त्री [°नन्दा] भगवान् महावीर की प्रथम माता। पक्ष की पनरहवीं रात्रि का नाम। °णुप्पिय पुं [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति। °यरिअ पुं [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य। °रन्न देखो °रण्ण। देवों का क्रीड़ा-स्थान। °लय पुंन. स्वर्ग। °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, जिनदेव। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक।

देव पुंन. एक देव-विमान। °कुरु स्त्री. भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी की दीक्षा-शिविका का नाम। °च्छंदय पुंन [°च्छन्दक] कमानदार घूमटवाला दिव्य आसन-स्थान। °तमिस्स पुंन. [°तमिस्र] अन्धकार-राशि। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा-शिविका। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्णराजि, कृष्णवर्ण पुद्गलों की रेखा। °रमण पुं. नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पूर्व दिशा-स्थित एक अञ्जनगिरि। °वूह पुं [°व्यूह] तमस्काय।

देव देखो दइव। °न्नु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार। °पर वि. भाग्य पर ही श्रद्धा रखनेवाला।

देवइ स्त्री [देवकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव। देखो देवकी।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फल।

देवं देखो दा = दा का हेकृ.।

देवंग न [दे. दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र।

देवंगण न [देवाङ्गण] स्वर्ग।

देवंधकार } पुं [देवान्धकार] अन्धकार का
देवंधगार } समूह।

देवकिब्बिस पुं [देवकिल्बिष] एक अधम देव जाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवकिब्बिसिया स्त्री [दैवकिल्बिषिकी] भावना-विशेष जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है।

देवकी देखो देवइ। °णंदण पुं [°नन्दन] श्रीकृष्ण।

देवय वि [दैव्य] देव-सम्बन्धी।

देवय न [दैवत] देव, देवता।

देवय देखो देव = देव।

देवया स्त्री [देवता] देव, अमर। परमात्मा।

देवर देखो दिअर।

देवराणी देखो देअराणी।

देवसिअ वि [दैवसिक] दिवस-सम्बन्धी।

देवसिआ स्त्री [देवसिका] एक पतिव्रता स्त्री जिसका दूसरा नाम देवसेना था।

देविंद पुं [देवेन्द्र] इन्द्र। एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार। °सूरि पुं. एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार।

देविंदय पुं [देवेन्द्रक] देवविमान-विशेष।

देविड्ढि स्त्री [देवर्द्धि] देव का वैभव। पुं.एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार।

देविय वि [दैविक] देव-सम्बन्धी।

देविल पुं. एक प्राचीन ऋषि।

देवी स्त्री. देव-स्त्री। राज-पत्नी। दुर्गा, पार्वती। सातवें चक्रवर्त्ती और अठारहवें जिन-देव की माता। दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी। एक विद्याधर कन्या।

देवीकय वि [देवीकृत] देवी से बनाया हुआ।

देवुक्कलिआ स्त्री [देवोत्कलिका] देवों की भीड़।

देवेसर पुं [देवेश्वर] इन्द्र।

देवोद पुं. समुद्र-विशेष।

देवोववाय पुं [देवोपपात] भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले तेईसवें जिन-देव।

देव्व देखो दिव्व = दिव्य।

देव्व देखो दइव। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र को जाननेवाला।

देव्वजाणुअ } देखो देव्व-ज्ज।
देव्वण्णुअ }

देस पुं [देश] एक सौ हाथ परिमित जमीन। °देस पुं [°देश] सौ हाथ से कम जमीन। °राग पुं. देश-विशेष।

देस सक [देशय्] कहना, उपदेश देना। बतलाना।

देस पुं [देश] अंश, भाग। देश, जनपद। अवसर। स्थान। °कहा स्त्री [°कथा] जनपद-वार्ता। °काल देखो °याल। °जइ पुं [°यति] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ। °ण्णु वि [°ज्ञ] देश की स्थिति को जाननेवाला। °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवलज्ञानी महर्षि। °याल पुं [°काल] प्रसंग, योग्य समय। °राय वि [°राज] देश का राजा। °वगासिय देखो °ावगासिय। °विरइ स्त्री [°विरति] श्रावक धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदि का आंशिक त्याग। °विरय वि [°विरत] श्रावक, उपासक। न. पाँचवाँ गुण-स्थानक। °विराहय वि [°विराधक] व्रत आदि में आंशिक दूषण लगानेवाला। °विराहि वि [°विराधिन्] वही अर्थ। °ावगास न [°ावकाश] श्रावक का एक व्रत। °ावगासिय न [°ावकाशिक] वही अर्थ। °ाहिव पुं [°ाधिप] राजा। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] राजा।

देस देखो वेस = द्वेष।

देसंतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का, विदेशी।

देसग देखो देसय।

देसण न [देशन] कथन, उपदेश, प्ररूपण। वि. उपदेशक, प्ररूपक।

देसणा स्त्री [देशना] उपदेश, प्ररूपण।

देसय वि [देशक] उपदेशक, प्ररूपक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिखलानेवाला ।

देसराग वि [दैशराग] 'देशराग' देश में बना हुआ ।

देसि } वि [देशिन्] अंशी, आंशिक, भाग-
देसिअ } वाला । दिखलानेवाला । उपदेशक ।

देसिअ वि [देश्य, दैशिक] देश में उत्पन्न, देश-सम्बन्धी । °सद्द पुं [°शब्द] देशीभाषा का शब्द ।

देसिअ वि [देशिक] बृहत्क्षेत्र-व्यापी, विस्तीर्ण । मुसाफिर । उपदेष्टा, गुरु । प्रवास में गया हुआ । °सहा स्त्री [°सभा] धर्म-शाला ।

देसिअ देखो देवसिअ ।

देसिअव वि [देशितवत्] जिसने उपदेश दिया हो वह ।

देसिल्लग देखो देसिअ = देश्य ।

देसी स्त्री [देशी] भाषाविशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद । °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ ।

देसूण वि [देशोन] कुछ कम ।

देस्स वि [दृश्य] देखने-योग्य । देखने को शक्य ।

देह देखो दैवख ।

देह पुंन. शरीर । पुं. पिशाच-विशेष । °रय न [°रत] मैथुन ।

देहंबलिया स्त्री [देहबलिका] भिक्षा-वृत्ति ।

देहणी स्त्री [दे] कर्दम ।

देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर ।

देहली स्त्री. चौखट ।

देहि पुं [देहिन्] आत्मा, जीव ।

देहुर (अप) न [देवकुल] मन्दिर ।

दो अ [द्विधा] दो प्रकार से ।

दो [द्वि] दो, उभय ।

दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु ।

दोअई स्त्री [द्विपदी] छन्द-विशेष ।

दोआल पुं [दे] वृषभ ।

दोइ देखो दो = द्विधा ।

दोंबुर [दे] देखो दोबुर ।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को माननेवाला ।

दोक्कर देखो दुक्कर ।

दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] नपुंसक ।

दोखंड देखो दुखंड ।

दोखंडिअ वि [द्विखण्डित] जिसके दो टुकड़े किए गए हों वह ।

दोगंछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला ।

दोगच्च न [दौर्गत्य] दुर्दशा । दारिद्रय ।

दोगुंछि देखो दोगंछि ।

दोगुंदय पुंन [दोगुन्दक] एक देव-विमान ।

दोगुंदुय पुं [दौगुन्दक] उत्तम-जातीय देव-विशेष ।

दोग्ग न [दे] युग्म, युगल ।

दोग्गइ देखो दुग्गइ । °कर वि. दुर्गति-जनक ।

दोग्गच्च देखो दोगच्च ।

दोग्घट्ट }
दोग्घोट्ट } पुं [दे] हाथी ।
दोघट्ट }

दोचूड पुं [द्विचूड]विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ।

दोच्च वि [द्वितीय] दूसरा ।

दोच्च न [दौत्य] दूत-कर्म ।

दोच्च अ [द्विस्] दो बार ।

दोच्चंग न [द्वितीयाङ्ग] दूसरा अंग । पकाया हुआ शाक । कढ़ी ।

दोजीह पुं [द्विजिह्व] दुर्जन । साँप ।

दोज्झ वि [दोह्य] दोहने-योग्य ।

दोण पुं [द्रोण] धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य । एक प्रकार का परिमाण । °मुह न [°मुख] नगर, जल और स्थल के मार्गवाला शहर । °मेह पुं [°मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बड़ी कलशी भर जाय वह वर्षा । °मुया स्त्री [°सुता] लक्ष्मण की स्त्री का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम, विशल्या।
दोणअ पुं [दे] आयुक्त। हल जोतनेवाला।
दोणक्का स्त्री [दे] मधुमक्खी।
दोणी स्त्री [द्रोणी] नौका, छोटा जहाज। पानी का बड़ा कुण्डा।
दोत्तडी स्त्री [दुस्तटी] दुष्ट नदी।
दोत्थ न [दौस्स्थ्य] दुर्गति।
दोद्दाण वि [दुर्दान] दुःख से देने-योग्य।
दोद्दिअ पुं [दे] चर्म-कूप, चमड़े का बना हुआ भाजन-विशेष।
दोद्ध वि [दोग्धृ] दोहन-कर्ता।
दोधअ } न [दोधक] छन्द-विशेष।
दोधक }
दोधार पुं [द्विधाकार] दो भाग करना।
दोनिक्कम वि [दुर्निक्रम] अत्यन्त कष्ट से चलने-योग्य।
दोबुर पुं [दे] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक।
दोब्बलिय देखो दुब्बलिय।
दोब्बल्ल न [दौर्बल्य] दुर्बलता।
दोभाय वि [द्विभाग] दो भागवाला, दो खण्डवाला।
दोमणंसिय वि [दौर्मनस्यिक] खिन्न, शोक-ग्रस्त।
दोमणस्स न [दौर्मनस्य] वैमनस्य, द्वेष, मन की दुष्टता।
दोमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का।
दोमिय (अप) देखो दूमिअ = दावित।
दोमिली स्त्री. लिपि-विशेष।
दोमुह वि [द्विमुख] दो मुंहवाला। पुं. नृप-विशेष। दुर्जन।
दोर पुं [दे] धागा। छोटी रस्सी। कटि-सूत्र।
दोरिया देखो दोरी।
दोरी स्त्री [दे] छोटी रस्सी।
दोल अक [दोलय्] हिलना। झूलना। संशय करना।
दोलणय न [दोलनक] झूलन, अन्दोलन।
दोलया } स्त्री [दोला] हिंडोला।
दोला }
दोलिया देखो दोला।
दोव पुं. एक अनार्य जाति।
दोवई स्त्री [द्रौपदी] राजा द्रुपद की कन्या, पाण्डव-पत्नी।
दोवयण देखो दुवयण = द्विवचन।
दोवार (अप) देखो दुवार।
दोवारिअ } पुं [दौवारिक] द्वारपाल।
दोवारिय }
दोविह देखो दुविह।
दोवेली स्त्री [दे] सायंकाल का भोजन।
दोव्वल देखो दोब्बल।
दोस देखो दूस = दूष्य।
दोस पुं [दोष] दूषण, दुर्गुण, ऐब। °न्नु वि [°ज्ञ] दोष का जानकार, विद्वान्। °ह वि [°घ्न] दोष-नाशक।
दोस पुं [दे] अर्ध। द्वेष। द्रोह।
दोस पुं. हाथ।
दोसणिज्जंत पुं [दे] चाँद।
दोसा स्त्री [दोषा] रात्रि।
दोसाकरण न [दे] कोप।
दोसाणिअ वि [दे] निर्मल किया हुआ।
दोसायर पुं [दोषाकर] चाँद। दोषों की खान। दुष्ट।
दोसारअण पुं [दे. दोषारत्न] चन्द्र।
दोसासय पुं [दोषाश्रय] दोष-युक्त, दुष्ट।
दोसिअ पुं [दौष्यिक] वस्त्र का व्यापारी।
दोसिण [दे] देखो दोसीण।
दोसिणा [दे] नीचे देखो। °भा स्त्री. चन्द्र की एक पटरानी।
दोसिणी स्त्री [दे. दोषिणी] ज्योत्स्ना।
दोसियण्ण न [दोषिकान्न] बासी अन्न।
दोसिल्ल वि [दोषवत्] दोष-युक्त।
दोसिल्ल वि [दे] द्वेषी।
दोसीण न [दे] रात का बासी अन्न।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोसील वि [दुश्शील] दुष्ट स्वभाववाला।
दोसोलह त्रि. ब. [द्विषोडशन्] बत्तीस।
दोह सक [द्रुह्] द्रोह करना।
दोह पुं [दोह] दोहन।
दोह वि [दोह्य] दोहने-योग्य।
दोह पुं [द्रोह] ईर्ष्या, द्वेष।
दोहग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, दुरदृष्ट, कमनसीबी।
दोहण न [दोहन] दोहना, दूध निकालना। °वाडण न [°पाटन] दोहन-स्थान।
दोहणहारी स्त्री [दे] दोहनेवाली स्त्री। पनिहारी।
दोहणी स्त्री [दे] कर्दम।
दोहय वि [दोहक] दोहनेवाला।
दोहय वि [द्रोहक] द्रोह करनेवाला, ईर्ष्यालु।
दोहल पुं [दोहद] गर्भिणी स्त्री का मनोरथ।
दोहा अ [द्विधा] दो प्रकार।
दोहाइअ वि [द्विधाकृत] जिसका दो खण्ड किया गया हो वह।
दोहासल न [दे] कटी-तट, कमर।
दोहि वि [दोहिन्] झरनेवाला, टपकनेवाला।
दोहि वि [द्रोहिन्] द्रोह करनेवाला।
दोहिण्ण वि [द्विभिन्न] द्विखण्ड, जिसका दो टुकड़ा किया गया हो वह।
दोहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, नाती।
दोहूअ पुं [दे] मुरदा।
°द्दोस देखो दोस = (दे)।
द्रवक्क (अप) न [दे. भय] डर, भीति।
द्रह पुं [ह्रद] बड़ा जलाशय, झील।
द्रेहि (अप) स्त्री [दृष्टि] नजर।
द्रोह देखो दोह = द्रोह।

ध

ध पुं. दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष।
धअ देखो धव।
धंख पुं [ध्वाङ्क्ष] कौआ।
धंग पुं [दे] भ्रमर।
धंत न [ध्वान्त] अँधेरा। अज्ञान।
धंत न [दे] अतिशय।
धंत वि [ध्मात] अग्नि में तपाया हुआ। शब्द-युक्त, शब्दित।
धंधा स्त्री [दे] लज्जा।
धंन्धुक्कय न [धन्धुक्कय] गुजरात का एक नगर।
धंधोलिय (अप) वि [भ्रमित] घुमाया हुआ।
धंस अक [ध्वंस्] नष्ट होना।
धंस सक [ध्वंसय्] नाश करना। दूर करना।
धंसाड सक [मुच्] त्याग करना, छोड़ना।
धंसाडिअ वि [दे] व्यपगत, नष्ट।
धगधग अक [धगधगाय्] 'धग्-धग्' आवाज करना। जलना, अतिशय जलना।
धगधग्ग देखो धगधग।
धग्गीकय वि [दे] जलाया हुआ, अत्यन्त प्रदीपित।
धज देखो धय = ध्वज।
धट्ठ देखो धिट्ठ।
धट्ठज्जुण } पुं [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का
धट्ठज्जुण्ण } एक पुत्र।
धण न [दे] गले से नीचे का शरीर।
धडहडिय न [दे] गर्जना।
धण न [धन] विभव, स्थावर-जंगम सम्पत्ति। गणिम, धरिम, मेय या परिच्छेद्य द्रव्य—गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय-योग्य पदार्थ। पुं. कुबेर। एक श्रेष्ठी। धन्य सार्थवाह का एक पुत्र। °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] धनी। °गिरि पुं. एक जैन महर्षि जो वज्रस्वामी के पिता थे। °गुत्त पुं [°गुप्त]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक जैन मुनि। °गोव पुं [°गोप] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र। °ड्ढ पं [°ाढ्य] एक जैनमुनि। °णंदि पुंस्त्री [°नन्दि] दुगुना देव-द्रव्य। °णिहि पुं [°निधि]खजाना। °त्थि वि [°ार्थिन्] धन का अभिलाषी। °दत्त पुं. एक सार्थवाह। तृतीय वासुदेव के पूर्व-जन्म का नाम। °देव पुं. एक सार्थवाह, मण्डिक-गणधर का पिता। धन्य सार्थवाह का एक पुत्र। °पइ देखो °वइ। °पवर पुं [°प्रवर] एक श्रेष्ठी। °पाल पुं. धन्य सार्थवाह का एक पुत्र। देखो °वाल। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलधर द्वीप की राजधानी। °मंत, °मण वि [°वत्] धनवान्। °मित्त पुं [मित्र] एक जैनमुनि। °य पुं [°द] एक सार्थवाह। एक विद्याधर राजा जो राजा रावण की मौसी का लड़का था। कुबेर। वि. धन देनेवाला। °रक्खिय पुं [°रक्षित] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र। °वइ पुं [°पति] कुबेर। एक राजकुमार। °वई स्त्री [°वती]एक सार्थवाह-पुत्री। °वंत, °वत्त देखो °मंत। °वह पुं. एक श्रेष्ठी। एक राजा। °वाल देखो °पाल। राजा भोज के समकालिक एक जैन महाकवि। °संचया स्त्री. एक वणिग्-महिला। °सम्म पुं[°शर्मन्] एक वणिक्। °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला। °सेण पुं [°सेन] एक राजा। °ल वि [°वत्]धनी। °वह वि. धनी। पुं. एक श्रेष्ठी। एक राजा।

धणंजय पुं [धनञ्जय] अर्जुन। अग्नि। सर्प-विशेष। वायु-विशेष, शरीर-व्यापी पवन। वृक्ष-विशेष। उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र। पक्ष का नववाँ दिन। श्रेष्ठि-विशेष। एक राजा।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज।

धणि स्त्री [ध्राणि] सन्तोष। अतृप्ति उत्पन्न करने की शक्ति।

धणिअ पुं [धनिक] यवन-मत का प्रवर्तक पुरुष-विशेष।

धणिअ वि [धनिक] पैसादार। पुं. मालिक, स्वामी।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ़, अतिशय।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुतिपात्र।

धणिआ स्त्री [दे] प्रिया, पत्नी। धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री।

धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष।

धणी स्त्री [दे] भार्या। पर्याप्ति। जो बँधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो वह।

धणु पुंन [धनुष्] कार्मुक। चार हाथ का परि-माण। पुं. परमाधार्मिक देवों की एक जाति। °कुडिल न [कुटिलधनुष्]वक्र धनुष। °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष। °द्धय पुं [°ध्वज] नृप-विशेष। °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण। °पिट्ठ न [°पृष्ठ] धनुष का पृष्ठ भाग, धनुष के पीठ के आकारवाला क्षेत्र। °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] दो कोस। °वेअ, °व्वेअ पुं [°वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र। °हर देखो °धर।

धणु पुंन [धनुस्] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि। °ल्ल वि [°मत्] धनुषवाला।

धणुक्क }
धणुह } ऊपर देखो।

धणुही स्त्री [धनुष] कार्मुक।

धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैनमुनि और ग्रन्थकार।

धण्ण पुं [धन्य] एक जैनमुनि। 'अनुत्तरोपपा-तिकदसा' सूत्र का एक अध्ययन। यक्ष-विशेष। वि. कृतार्थ। धन-लाभ के योग्य। स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय। भाग्यशाली।

धण्ण देखो धन्न = धान्य।

धण्णंतरि पुं [धन्वन्तरि] राजा कनकरथ का एक स्वनामख्यात वैद्य। देव-वैद्य।

धण्णाउस वि [दे] जिसको आशीर्वाद दिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाता हो वह । पुं. आशीर्वाद ।

धत्त वि [दे] निहित, स्थापित । पुं. वनस्पति-विशेष ।

धत्त वि [धात्त] निहित, स्थापित ।

धत्तरट्ठग पुं [धार्तराष्ट्रक] हंस की एक जाति जिसके मुँह और पाँव काले होते हैं ।

धत्ती स्त्री [धात्री] उपमाता, दाई । पृथिवी, भूमि । आमलकी-वृक्ष, आँवले का पेड़ । देखो धाई ।

धत्तूर पुं [धत्तूर] धतूरा का वृक्ष । न. धतूरा का पुष्प ।

धत्तूरिअ वि [धात्तूरिक] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह ।

धत्थ वि [ध्वस्त] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट ।

धन्न न [धान्य] अनाज । धान्य-विशेष । धनिया । °कीड पुं [°कीट] अनाज में होनेवाला कीट । °णिहि पुंस्त्री [°निधि] कोष्ठागार । °पत्थय पुं [°प्रस्थक] धान का एक नाप । °पिडग न [°पिटक] अनाज का एक नाप । °पुंजिय न [पुञ्जितधान्य] इकट्ठा किया हुआ अनाज । °विक्खित्त न [विक्षिप्तधान्य] विकीर्ण अनाज । °विरल्लिय न [°विरल्लितधान्य] वायु से इकट्ठा किया अनाज । °संकड्ढिय न [°संकर्षितधान्य] खेत से काटकर खले–खलिहान में लाया गया धान्य । °गार न. धान रखने का गृह ।

धन्ना स्त्री [धान्य] अन्न ।

धन्ना स्त्री [धन्या] एक स्त्री का नाम ।

धम सक [ध्मा] आग में तपाना । शब्द करना । वायु पूरना ।

धमग वि [ध्मायक] धमनेवाला ।

धमण न [धमन] आग में तपाना । वायु-पूरण । वि. भस्त्रा, धमनी, भाथी ।

धमणि } स्त्री [धमनि, °नी] धौंकनी ।
धमणी } नाड़ी ।

धमधम अक [धमधमाय्] 'धम्-धम्' आवाज करना ।

धमास पुं. वृक्ष-विशेष ।

धमिअ वि [ध्मात] जिसमें वायु भर दिया गया हो वह । आग में तपाया हुआ ।

धम्म पुं [धर्म] एक देव-विमान । एक दिन का उपवास । पुंन. शुभ कर्म, कुशल जनक-अनुष्ठान, सदाचार । पुण्य । स्वभाव । गुण, पर्याय । एक अरूपी पदार्थ जो जीव को गति-क्रिया में सहायता पहुँचाता है । वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पनरहवें जिन-देव । एक वणिक् । स्थिति, मर्यादा । धनुष । एक जैन मुनि । 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन । आचार, रीति, व्यवहार । °उत्त पुं [°पुत्र] शिष्य । °उर न [°पुर] नगर-विशेष । °कंखिअ वि [°काङ्क्षित] धर्म की चाहवाला । °कहा स्त्री [°कथा] धर्म-सम्बन्धी बात । °कहि वि [°कथिन्] धर्म का उपदेशक । °कामय वि [°कामक] धर्म की चाहवाला । °काय पुं. धर्म का साधन-भूत शरीर । °क्खाइ वि [°ाख्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक । °क्खाइ वि [°ख्याति] धर्म से ख्यातिवाला, धर्मात्मा । °गुरु पुं. धर्माचार्य । °गुव वि [°गुप्] धर्म-रक्षक । °घोस पुं [°घोष] कई एक जैन मुनि और आचार्य का नाम । °चक्क न [°चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र । °चक्कवट्टि पुं [°चक्रवर्त्तिन्] जिन-देव । °चक्कि पुं [°चक्रिन्] जिन भगवान् । °जणणी स्त्री [°जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली स्त्री, धर्म-देशिका । °जस पुं [°यशस्] जैन मुनि-विशेष का नाम । °जागरिया स्त्री [°जागर्या] धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण । जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव । °ज्झय पुं [°ध्वज] धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज । ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें भावी जिन-देव । °ज्झाण न [°ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष । °ज्झाणि वि [°ध्यानिन्]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्म ध्यान से युक्त। °ट्ठि वि [°र्थिन्] धर्म का अभिलाषी। °णायग वि [°नायक] धर्म का नेता। °ण्णु वि [°ज्ञ] धर्म का ज्ञाता। °तित्थयर पुं [°तीर्थंकर] जिन भगवान्। °त्थ न [°स्त्र] एक प्रकार का हथियार। °त्थि देखो °ट्ठि। °त्थिकाय पुं [°स्तिकाय] गति-क्रिया में सहायता पहुँचानेवाला एक अरूपी पदार्थ। °दय वि. धर्म की प्राप्ति करानेवाला, धर्म-देशक। °दार न [°द्वार] धर्म का उपाय। °दार पुं. ब. धर्म-पत्नी। °दास पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य और उपदेशमाला का कर्ता। °देव पुं. एक प्रसिद्ध जैन। °देसग, °देसय वि [°देशक] धर्म का उपदेश करनेवाला। °धुरा स्त्री. धर्मरूप धुरा। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] धर्म की प्रतिज्ञा। धर्म का साधन-भूत शरीर। °पण्णत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] धर्म की प्ररूपणा। °पदिणी (शौ) स्त्री [°पत्नी] धर्म-पत्नी। °पिवासय वि [°पिपासक] धर्म के लिए प्यासा। °पिवासिय वि [पिपासित] धर्म की प्यासवाला। °पुरिस पुं [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष। °पलज्जण वि [°प्ररञ्जन] धर्म में आसक्त। °प्पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक। °प्पह पुं [°प्रभ] एक जैन आचार्य। °प्पावाउय वि [°प्रावादुक] धर्म-प्रवादी, धर्मोपदेशक। °बुद्धि वि. धार्मिक, धर्म-मति। पुं. एक राजा का नाम। °मित्त पुं [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम। °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म-देशक। °रुइ स्त्री [°रुचि] धर्म-प्रीति। वि. धर्म में रुचिवाला। पुं. एक जैन मुनि। वाराणसी का एक राजा। °लाभ पुं. धर्म की प्राप्ति। जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद। °लाभिअ वि. [°लाभित] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह। °लाह देखो °लाभ। °लाहण न [°लाभन] धर्म-लाभ-रूप आशीर्वाद देना। °लाहिअ देखो °लाभिअ। °वंत वि [°वत्] धर्मवाला। °वय पुं [°व्यय] धर्मार्थ दान, धर्मादा। °वि, °विउ वि [°वित्] धर्म का जानकार। °विज्ज पुं [°वैद्य] धर्माचार्य। °व्वय देखो °वय। °सद्धा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विश्वास। °सत्थ न [°शास्त्र] धर्म प्रतिपादक शास्त्र। °सन्ना स्त्री [संज्ञा] धर्म-विश्वास। धर्म-बुद्धि। °सारहि पुं [°सारथि] धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक। °साला स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान। °सील वि [°शील] धार्मिक। °सीह पुं [°सिंह] भगवान् अभिनन्दन का पूर्व-भवीय नाम। एक जैन मुनि। °सेण पुं [°सेन] एक बलदेव का पूर्वभवीय नाम। °ाइगर वि [°ादिकर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक। पुं. जिन-देव। °ाणुट्ठाण न [°ानुष्ठान] धर्म का आचरण। °ाणुण्ण वि [°ानुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करनेवाला। °ाणुय वि [°ानुग] धर्म का अनुसरण करनेवाला। °ायरिय पुं [°ाचार्य] धर्म-दाता गुरु। °ावाय पुं [°वाद] धर्म-चर्चा। बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद। °ाहिगरणिय पुं [°ाधिकरणिक] न्यायाधीश, न्यायकर्ता। °ाहिगारि वि [°ाधिकारिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त, धर्म-संगत।

धम्ममण पुं [दे] वृक्ष-विशेष।

धम्मय पुं [दे] चार अंगुल का हस्त-व्रण। चण्डी देवी की नर-बलि।

धम्मि वि [धर्मिन्] धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ। धर्म-परायण।

धम्मि वि [धर्मिन्] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध पक्ष।

धम्मिअ, धम्मिग } वि [धार्मिक] धर्म-तत्पर। धर्म-सम्बन्धी।

धम्मिट्ठ वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धर्म-प्रिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मिट्ठ वि [धर्मीष्ट] धार्मिक जन को प्रिय।

धम्मिल्ल, धम्मेल्ल } पुंन [धम्मिल्ल] संयत केश, बँधा हुआ केश, स्त्रियों के बाँधे हुए बाल की 'पटिया या जूड़ा', बीच में फूल रखकर ऊपर से मोतियों की या अन्य किसी रत्न की लड़ियों से बँधा हुआ केश-कलाप। पुं. एक जैन मुनि।

धम्मीसर पुं [धर्मेश्वर] अतीत उत्सर्पिणीकाल में भरतवर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव।

धम्मुत्तर वि [धर्मोत्तर] गुणी, गुणों से श्रेष्ठ। न. धर्म का प्राधान्य।

धम्मोवएसग, धम्मोवएसय } वि [धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देनेवाला।

धय सक [धे] पान करना, स्तन-पान करना।

धय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका। स्त्री. °या। °वड पुं [°पट] ध्वजा का वस्त्र।

धय पुं [दे] पुरुष।

धयण न [दे] घर।

धयरट्ठ पुं [धृतराष्ट्र] हंस पक्षी।

धर सक [धृ] धारण करना। पकड़ना।

धर सक [धरय्] पृथिवी का पालन करना।

धर न [दे] रूई।

धर पुं. भगवान् पद्मप्रभ का पिता। मथुरा नगरी का एक राजा। पर्वत।

°धर वि. धारण करनेवाला।

धरग्ग पुं [दे] कपास।

धरण पुं. नाग-कुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र। यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र। श्रेष्ठि-विशेष। न. धारण करना। सोलह तोले का एक परिमाण। धरना देना, लंघन-पूर्वक उपवेशन। तोलने का साधन। वि. धारण करनेवाला। °प्पभ पुं [°प्रभ] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत।

धरणा स्त्री. देखो धारणा।

धरणि स्त्री. पृथिवी। भगवान् अरनाथ की शासन-देवी। भगवान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या। °खील पुं [°कील] मेरु पर्वत। °चर पुं. मनुष्य। °धर पुं. पहाड़। अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा। °धरप्पवर पुं [°धरप्रवर] मेरु पर्वत। °धरवइ पुं [°धरपति] मेरु पर्वत। °धरा स्त्री. भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या। °यल न [°तल] भू-तल। वइ पुं [°पति] राजा। °वट्ठ न [°पृष्ठ] भूमि-तल। हर देखो धर।

धरणिंद पुं [धरणेन्द्र] नाग-कुमारों की दक्षिण दिशा का इन्द्र।

धरणिसिंग पुं [धरणिशृङ्ग] मेरु पर्वत।

धरणी देखो धरणि।

धरा स्त्री. पृथिवी। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत।

धराधीस पुं [धराधीश] राजा।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ। स्थापित।

धरिअ वि [धृत] धारणा किया हुआ। रोका हुआ।

धरिणी स्त्री [धरिणी] भूमि।

धरित्ती स्त्री [धरित्री] पृथिवी।

धरिम न. जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह। करजा। एक तरह का माप, तौल।

धरिस अक [धृष्] संहत होना, एकत्रित होना। प्रगल्भता करना, ढीठाई करना। मिलना, संबद्ध होना। सक. हिंसा करना, मारना। अमर्ष करना, सहन नहीं करना।

धरिस सक [धर्षय्] क्षुब्ध करना, विचलित करना।

धरिसण न [धर्षण] परिभव, अभिभव। संहति। असहिष्णुता। हिंसा, बन्धन, योजन। प्रगल्भता, धृष्टता, ढीठाई।

धव पुं. पति। वृक्ष-विशेष।

धवक्क अक [दे] धड़कना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना।

धवण न [धावन] चावल आदि का धावन-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जल ।

धवल पुं [दे] स्व-जाति में उत्तम ।

धवल न लगातार सोलह दिन का उपवास। श्वेत । पुं. उत्तम बैल । पुंन. छन्द-विशेष । °गिरि पुं. कैलास पर्वत । °गेह न. महल । चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन मुनि । °रव पुं. मंगलगीत । °हर न [°गृह] प्रासाद ।

धवल सक [धवलय्] सफेद करना ।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष ।

धवलण न [धवलन] सफेद करना ।

धवलसउण पुं [दे] हंस ।

धवला स्त्री. गैया ।

धवलाअ अक [धवलाय्] सफेद होना ।

धवलाइअ वि [धवलायित] उत्तम बैल की तरह जिसने कार्य किया हो वह । न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण ।

धवलिम पुंस्त्री [धवलिमन्] सफेदपन ।

धवली स्त्री [धवली] श्रेष्ठ गैया ।

धव्व पुं [दे] वेग ।

धस अक [धस्] धसना । नीचे जाना । प्रवेश करना । पुं. 'धस्' ऐसी आवाज, गिरने की आवाज ।

धसक्क पुं [दे] हृदय की घबराहट की आवाज ।

धसल वि [दे] विस्तीर्ण ।

धसिअ वि [धसित] धसा हुआ ।

धा सक [धा] धारण करना ।

धा सक [ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना ।

धा सक [धाव्] दौड़ना । शुद्ध करना, धोना ।

धाइअ वि [धावित] दौड़ा हुआ ।

धाइअसंड देखो धायइ-संड ।

धाई देखो धत्ती । धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिक्षा । छन्द-विशेष । °पिंड पुं [°पिण्ड] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिक्षा ।

धाई देखो धायई ।

धाउ पुं [धातु] सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता—ये सात वस्तु । गेरु, मनसिल आदि पदार्थ । शरीर-धारक वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र । पृथिवी, जल तेज और वायु—ये चार महाभूत । व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-योनि, 'भू', 'पच्' आदि । स्वभाव, प्रकृति । नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलत्तिका-विशेष । °य वि [°ज] धातु से उत्पन्न । वस्त्र-विशेष । नाम, शब्द । °वाइअ वि [°वादिक] औषधि आदि के योग से ताम्र आदि को सोना वगैरह बनानेवाला, किमियागर ।

धाउ पुं [धातु] पणपन्नि नामक व्यन्तर देवों का एक इन्द्र ।

धाउसोसण न [धातुशोषण] आयंबिल तप ।

धाड अक [निर् + सृ] बाहर निकलना ।

धाड सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना ।

धाड सक [ध्राट्] प्रेरणा करना । नाश करना ।

धाडय न [ध्राटन] बाहर निकलना । प्रेरणा । नाश ।

धाडय वि [दे. ध्राटक] डाका डालनेवाला ।

धाडाविअ वि [निस्सारित] बाहर निकाला हुआ, निर्वासित ।

धाडि वि [दे] निरस्त, निराकृत ।

धाडिअ वि [निःसृत] बाहर निकला हुआ ।

धाडिअ पुं [दे] बगीचा ।

धाडिअ वि [निस्सारित] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ ।

धाडी स्त्री [धाटी] डाकुओं का दल । हमला, आक्रमण, धावा ।

धाण देखो धण्ण = धन्य ।

धाणा स्त्री [धाना] धनिया, एक प्रकार का मसाला ।

धाणुक्क वि [धानुष्क] धणुर्धर, धनुर्विद्या में निपुण ।

धाणूरिअ न [दे] फल-भेद ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धाम पुंन [धामन्] अहंकार, गर्व। रस आदि में लम्पटता। वि. गर्व-युक्त। रस आदि में लम्पट।

धाम न [धामन्] बल, पराक्रम।

धामइ° } स्त्री [धातकी] धाय का पेड़। धायई } °खंड पुं [°खण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप। °संड पुं [°षण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप।

धाय वि [ध्रात] सन्तुष्ट। न. सुकाल।

धार सक [धारय्] धारण करना। करजा रखना।

धार न. धारा-सम्बन्धी जल। वि.धारण करनेवाला।

धार वि [दे] लघु, छोटा।

धारग वि [धारक] धारण करनेवाला।

धारण न [धारण] धारने की अवस्था। ग्रहण। रक्षण, रखना। परिधान करना। अवलम्बन।

धारणा स्त्री. मर्यादा, स्थिति। विषय-ग्रहण करनेवाली बुद्धि। ज्ञात विषय का अविस्मरण। अवधारण, निश्चय। मन की स्थिरता। घर का एक अवयव, धरनी या धरन। मकान का खम्भा। °ववहार पुं [व्यवहार] व्यवहार-विशेष।

धारणी स्त्री [धारणी] धारण करनेवाली। ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या। वसुदेव आदि अनेक राजाओं की रानी का नाम।

धारणीय देखो धार = धारय्।

धारय देखो धारग।

धारा स्त्री [दे] रण-भूमि का अग्रभाग।

धारा स्त्री. अस्त्र के आगे का भाग, धार। प्रवाह, पाली। अश्व की गति-विशेष। जल-धारा। वृष्टि। द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन। एक राज-पत्नी। मालव देश की एक नगरी। °कयंब पुं [°कदम्ब] कदम्ब की एक जाति जो वर्षा से फलती-फूलती है। °धर पुं. मेघ। °वारि न. धारा से गिरता जल। °वारिय वि [°वारिक] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह। °हय वि [°हत] वर्षा से सिक्त। °हर देखो °धर।

धारावास पुं [दे] मेढ़क। मेघ।

धारि वि [धारिन्] धारण करनेवाला।

धारिट्ठ न [धाष्टर्य] धृष्टता, उद्दण्डता, गर्व, साहस।

धारिणी देखो धारणी।

धारी देखो धत्ती।

धारी देखो धारा।

धाव सक. दौड़ना। शुद्ध करना, धोना।

धावणय पुं [धावनक] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाला।

धावणया स्त्री [धान] स्तन-पान करना।

धाविर वि [धावितृ] दौड़नेवाला।

धावी देखो धाई = धात्री।

धाहा स्त्री [दे] पुकार, चिल्लाहट।

धाहाविय न [दे] पुकार, चिल्लाहट।

धाहिय वि [दे] पलायित, भागा हुआ।

धि अ [धिक्] धिक्कार, छीः।

धिइ स्त्री [धृति] धीरज। धारण। धारणा, ज्ञात विषय का अविस्मरण। धरण, अवस्थान। अहिंसा। धैर्य की अधिष्ठायिका देवी। देवी की प्रतिमा-विशेष। तिगिच्छिद्रह की अधिष्ठायिका देवी। °कूड न [°कूट] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष। °धर पुं. एक अन्तकृद् महर्षि। 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन। °म, °मंत वि[°मत्]धीरज-वाला।

धिइ स्त्री [धृति] तेला, लगातार तीन दिन का उपवास।

धिक्कय वि [धिक्कृत] धिक्कारा हुआ। न. तिरस्कार।

धिक्करण न [धिक्करण] तिरस्कार, धिक्कार।

°धिक्करिय वि [धिक्कृत] धिक्कारा हुआ।

धिक्कार पुं [धिक्कार] धिक्कार, तिरस्कार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति ।
धिक्कार सक [धिक् + कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना ।
धिज्ज न [धैर्य] धीरज ।
धिज्ज वि [धेय] धारण करने-योग्य ।
धिज्ज वि [ध्येय] ध्यान-योग्य, चिन्तनीय ।
धिज्जाइ पुंस्त्री. [द्विजाति, धिग्जाति] ब्राह्मण ।
धिज्जाइय } पुंस्त्री [द्विजातिक, धिग्जातीय]
धिज्जाईय } ब्राह्मण ।
धिज्जीविय न [धिग्जीवित] निन्दनीय जीवन ।
धिट्ठ वि [धृष्ट] ढीठ, प्रगल्भ । निर्लज्ज ।
धिट्ठज्जुण्ण देखो धट्ठज्जुण्ण ।
धिट्ठिम पुंस्त्री [धृष्टत्व] ढीठाई ।
धिद्धी } अ [धिक् धिक्] छीः छीः ।
धिधी }
धिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना ।
धिय अ [धिक्] धिक्कार, छीः ।
धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो ।
धिसण पुं [धिषण] बृहस्पति ।
धिसि अ [धिक्] धिक्कार, छीः ।
धी देखो धीआ ।
धी स्त्री. बुद्धि । °धण वि [°धन] बुद्धिमान्, विद्वान् । पुं. एक मन्त्री का नाम । °म, °मंत वि [°मत्] विद्वान् ।
धी अ [धिक्] धिक्कार, छीः ।
धीआ स्त्री [दुहितृ] पुत्री ।
धीइ देखो धिइ ।
धीउल्लिया स्त्री [दे] पुतली ।
धीमल न [धिङ्मल] निन्दनीय मैल ।
धीर अक [धीरय्] धीरज धरना । सक. धीरज देना, आश्वासन देना ।
धीर वि. धैर्यवाला, सुस्थिर, अचञ्चल । बुद्धिमान्, विद्वान् । विवेकी, शिष्ट, सहिष्णु । पुं. परमेश्वर, जिन-देव । गणधर-देव ।
धीर न [धैर्य] धीरज ।
धीरव सक [धीरय्] सान्त्वना देना ।
धीराअ अक [धीराय्] धीर होना, धीरज धरना ।
धीरिअ देखो धीर = धैर्य ।
धीरिम पुंस्त्री [धीरत्व] धैर्य ।
धीवर पुं. मछलीमार । वि. उत्तम बुद्धिवाला ।
धुअ देखो धुव = धाव् ।
धुअ सक [धु] कंपाना । फेंकना । त्याग करना ।
धुअ वि धुव = ध्रुव । छन्द-विशेष ।
धुअ वि [धूत] कम्पित । न. कम्प ।
धुअ वि [धुत] कम्पित । त्यक्त । उच्छलित । न कर्म । मोक्ष, मुक्ति । त्याग, संगत्याग, संयम । °वाय पुं [°वाद] कर्म-नाश का उपदेश ।
धुअगाय पुं [दे] भौंरा ।
धुअण देखो धुवण ।
धुअराय पुं [दे] ऊपर देखो ।
धुंधुमार पुं [धुन्धुमार] नृप-विशेष ।
धुंधुमारा स्त्री [दे] इन्द्राणी ।
धुक्क अक [क्षुध्] भूख लगना ।
धुक्काधुक्क अक [कम्प्] काँपना, 'धुक्-धुक्' होना ।
धुक्कुद्धुअ } वि [दे] उल्लासयुक्त ।
धुक्कुद्धुगिअ }
धुक्कुधुअ देखो धुक्काधुक्क ।
धुक्कोडिअ न [दे] संशय ।
धुगुधुग अक [धुगधुगाय्] 'धुग्-धुग्' आवाज करना ।
धुट्ठुअ देखो धुद्धुअ ।
धुण सक [धू] कँपाना, हिलाना । दूर करना, हटाना । नाश करना । परित्याग करना ।
धुणाव सक [धूनय्] कँपाना, हिलाना ।
धुणि देखो झुणि ।
धुण्ण वि [धाव्य] दूर करने-योग्य । न. पाप ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्म ।

धुत्त वि [धूर्त] ठग । जुआ खेलनेवाला । पुं. धतूरे का पेड़ । लोहे की काट—मैल । लवण-विशेष ।

धुत्त वि [दे] विस्तीर्ण । आक्रान्त ।

धुत्त } सक [धूर्त्तय्] ठगना ।
धुत्तार }

धुत्ति स्त्री [धूर्त्ति] बुढ़ापा ।

धुत्तिम पुंस्त्री [धूर्त्तत्व] ठगाई ।

धुत्तीरय न [धत्तूरक] धतूरे का पुष्प ।

धुद्धुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना ।

धुप्प देखो धिप्प ।

धुम्म पुं [धूम्र] धुआँ । कपोत-वर्ण । वि. कपोत वर्णवाला । °क्ख पुं [°ाक्ष] एक राक्षस ।

धुर न. देखो धुरा ।

धुर पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष । ऋणी ।

धुरंधर वि [धुरन्धर] भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक । नेता, मुखिया । पुं. गाड़ी, हल आदि खींचनेवाला बैल ।

धुरा स्त्री [धुर्] गाड़ी वगैरह का अग्र भाग, धुरी । भार । चिन्ता । °धार वि. धुरा को वहन करनेवाला ।

धुरी स्त्री. अक्ष, गाड़ी का जूआ ।

धुरीण वि. धुरन्धर, मुखिया ।

धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना ।

धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना ।

धुव वि [ध्रुव] निश्चल, स्थिर । शाश्वत । अवश्यम्भावी । निश्चित, नियत । पुं. अश्व के शरीर का आवर्त्त । मोक्ष । इन्द्रियादि-निग्रह । संसार । न. मुक्ति का कारण, मोक्षमार्ग । कर्म । अतिशय । °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी । °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु । °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने-योग्य अनुष्ठान-विशेष । °मग्ग पुं [°मार्ग] मोक्ष-मार्ग । °राहु पुं. राहु-विशेष । °वण्ण पुं [°वर्ण] संयम । मोक्ष । शाश्वत यश । देखो धुअ = ध्रुव ।

धुवण न [धावन] प्रक्षालन । वि. कँपानेवाला ।

धुवण पुंन [धूपन] धूप देना । धूम-पान ।

धुविया स्त्री [ध्रुविता] कर्म-विशेष, ध्रुव-बन्धिनी कर्म-प्रकृति ।

धुव्व देखो धुअ = धाव् ।

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत ।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ = धुत ।

धूअ देखो धूव = धूप ।

धूअ न [धूत] पहले बँधा हुआ कर्म ।

धूआ स्त्री [दुहितृ] पुत्री ।

धूण पुं [दे] हाथी ।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित ।

धूम पुं. हींग आदि बघार । क्रोध । वि. क्रोधी । धूम, अग्नि-चिह्न । अप्रीति । °इंगाल पुंब. [°ाङ्गार] द्वेष और राग । °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष । अग्नि । अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज । °चारण पुं. धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्तिवाला मुनि-विशेष । °जोणि पुं [°योनि] बादल । °ज्झय देखो °द्धय । °दोस पुं [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना । °द्धय पुं [°ध्वज] वह्नि । °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी । °ल वि. धुआँवाला । °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह । °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्णवाला । °सिहा स्त्री [°शिखा] धुएँ का अग्रभाग ।

धूमंग पुं [दे] भमरा ।

धूमण न [धूमन] धूम-पान ।

धूमद्दार न [दे] झरोखा ।

धूमद्धय पुं [दे] तालाब । महिष ।

धूमद्धयमहिसी स्त्री. ब [दे] कृत्तिका नक्षत्र ।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त्त में डालकर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धूममहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा।
धूमरी स्त्री [दे] नीहार। हिम।
धूमसिहा, धूमा स्त्री [दे] कुहासा।
धूमा, धूमाअ अक [धूमाय्] धुआँ करना। जलाना। धूम की तरह आचरना।
धूमाभा स्त्री. पाँचवीं नरक-पृथिवी।
धूमिअ वि [धूमित] धूमयुक्त। छौंका हुआ (शाक आदि)।
धूमिआ स्त्री [दे] नीहार।
धूयरा देखो धूआ।
धूरिअ वि [दे] लम्बा।
धूरिअवट्ट पुं [दे] अश्व।
धूलडिआ (अप) देखो धूलि।
धूलि, धूली स्त्री. धूल, रज। °कंब, °कलंब पुं [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसनेवाला कदम्ब-वृक्ष। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह। °धूसर वि. धूल से लिप्त। °धोउ वि [°धोतृ] धूल को साफ करनेवाला। °पंथ पुं [°पथ] धूलि-बहुल मार्ग। °वरिस पुं [°वर्ष] धूल की वर्षा। °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह।
धूलिहडी स्त्री [दे] होली का पर्व।
धूलीवट्ट पुं [दे] घोड़ा।
धूव सक [धूपय्] धूप करना।
धूव पुं [धूप] सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम। सुगन्धि द्रव्य-विशेष। °घडी स्त्री [°घटी] धूप-पात्र। °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र।
धूवण न [धूपन] धूप देना। रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का पान। °वट्टि स्त्री [°वर्ति] अगरबत्ती।
धूविअ वि [धूपित] तापित। हींग आदि से छौंका हुआ। धूप दिया हुआ।
धूसर पुं. हलका पीला रंग। वि. धूसर रंगवाला।
धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्णवाला।
धे सक [धा] धारण करना।
धेअ, धेज्ज वि [ध्येय] ध्यान-योग्य।
धेउल्लिया देखो धीउल्लिया।
धेज्ज वि [धेय] धारण करने-योग्य।
धेज्ज न [धैर्य] धीरता।
धेणु स्त्री [धेनु] नव-प्रसूता गौ। सवत्सा गौ। दूधार गाय।
धेर देखो धीर = धैर्य।
धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष।
धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना।
धोअ वि [धौत] धोया हुआ।
धोअग वि [धावक] धोनेवाला। पुं. धोबी।
धोज्ज वि [धुर्य] धुरीण, भारवाहक। अगुआ, नेता।
धोरण न [दे] गति-चातुर्य।
धोरणि, धोरणी स्त्री. पंक्ति।
धोरिय देखो धोज्ज।
धोरुगिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री।
धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज।
धोव देखो धोअ = धाव्।
धोवय देखो धोअग।
ध्रुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अटल, स्थिर।

न देखो ण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प

प पुं. ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष । पाप-त्याग ।

प अ [प्र] इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रकर्ष । प्रारम्भ । उत्पत्ति । प्रसिद्धि । व्यवहार । चारों ओर से । प्रस्रवण, मूत्र । फिर-फिर । गुजरा हुआ, विनष्ट ।

प° वि [प्राच्] पूर्व तरफ स्थित ।

पअंगम पुं [प्लवङ्गम] छन्द-विशेष ।

पअंघ पुं [प्रजङ्घ] राक्षस-विशेष ।

पअब्भ देखो पगब्भ = प्रगल्भ ।

पइ अ [प्रति] अपेक्षा-सूचक । लक्ष्य, तरफ, ओर ।

पइ पुं [पति] भर्ता । मालिक । रक्षक । श्रेष्ठ, उत्तम । °घर न [°गृह] ससुराल । °वया, °व्वया स्त्री [°व्रता]पति-सेवा-परायणा स्त्री, कुलवती स्त्री, सती । °हर देखो °घर ।

पइ देखो पडि ।

पइअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत । न. पहिया ।

पइइ देखो पगइ = प्रकृति ।

पइउं पय = पच् का हेकृ. ।

पइउवचरण न [प्रत्युपचरण] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा ।

पइऊल देखो पडिकूल ।

पइंवया देखो पइ-वया ।

पइक (अप) देखो पाइक्क ।

पइकिदि देखो पडिकिदि ।

पइक्क देखो पाइक्क ।

पइगिइ देखो पडिकिदि ।

पइच्छन्न पुं [प्रतिच्छन्न] भूत-विशेष ।

पइज्ज (अप) वि [पतित] गिरा हुआ ।

पइज्ज (अप) वि [प्राप्त] मिला हुआ । लब्ध ।

पइज्जा देखो पइण्णा ।

पइट्ठ वि [दे] जिसने रस को जाना हो वह । विरल । पुं. रास्ता ।

पइट्ठ देखो पगिट्ठ ।

पइट्ठ वि [दे] प्रेषित ।

पइट्ठ पुं [प्रतिष्ठ] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम ।

पइट्ठ वि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो वह ।

पइट्ठव सक [प्रति-स्थापय्] मूर्ति आदि की विधि-पूर्वक स्थापना करना ।

पइट्ठवण देखो पइट्ठावण ।

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] आदर, सम्मान । कीर्त्ति । व्यवस्था । स्थापना । अवस्थान, स्थिति । मूर्त्ति में ईश्वर के गुणों का आरोपण । आश्रय, आधार । धारणा, वासना । समाधान शंका निरास-पूर्वक स्वपक्ष-स्थापन ।

पइट्ठाण पुं [प्रतिष्ठान] मूल प्रदेश । न. स्थिति, अवस्थान । आधार, आश्रय । महल आदि की नींव । नगर-विशेष ।

पइट्ठाण न [दे] नगर ।

पइट्ठावक, पइट्ठावग } देखो पइट्ठावय ।

पइट्ठावण न [प्रतिष्ठापन] संस्थापन । व्यव-स्थापन ।

पइट्ठावय वि [प्रतिष्ठापक] प्रतिष्ठा करने-वाला ।

पइट्ठिअ वि [प्रतिष्ठित] प्रतिबद्ध, रुका हुआ । स्थित, अवस्थित । आश्रित । व्यवस्थित । गौरवान्वित । प्रतिष्ठा-प्राप्त ।

पइणियय वि [प्रतिनियत] नियम-संगत, नियमित ।

पइण्ण वि [दे] विपुल, विस्तृत ।

पइण्ण वि [प्रतीर्ण] प्रकर्ष से तीर्ण ।

पइण्ण, पइण्णग } वि [प्रकीर्ण, °क] विक्षिप्त फेंका हुआ । अनेक प्रकार से मिश्रित । बिखरा हुआ । विस्तारित । न. तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य द्वारा बनाया हुआ ग्रन्थ । °कहा स्त्री [°कथा] उत्सर्ग, सामान्य नियम । °तव पुं [°तपस्] तपश्चर्या-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पइण्णा स्त्री [प्रतिज्ञा] शपथ। नियम। तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश।
पइण्णाद (शौ) वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह।
पइण्णि वि [प्रतिज्ञावत्] प्रतिज्ञावाला।
पइत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त।
पइत्त वि [प्रदीप्त] जला हुआ, प्रज्ज्वलित।
पइत्त देखो पवित्त = पवित्र।
पइदि (शौ) देखो पगइ।
पइदिण न [प्रतिदिन] हर रोज।
पइदियह न [प्रतिदिवस] हर रोज।
पइद्धिय वि [प्रदिग्ध] विलिप्त।
पइनियय वि [प्रतिनियत] मुकर्रर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ।
पइन्नग, पइन्नय देखो पइण्ण।
पइप्प देखो पलिप्प।
पइप्पईय न [प्रतिप्रतीक] हर अंग।
पइभय वि [प्रतिभय] प्रत्येक प्राणी को भय उपजानेवाला।
पइभा स्त्री [प्रतिभा] प्रत्युत्पन्न-मति।
पइभाणाण न [प्रतिभाज्ञान] प्रातिभ प्रत्यक्ष।
पइमुह वि [प्रतिमुख] सम्मुख।
पइर सक [वप्] बोना, वपन करना।
पइरिक्क वि [दे. प्रतिरिक्त] शून्य, रहित। विशाल, विस्तीर्ण। तुच्छ। प्रचुर। नितान्त। न. एकान्त स्थान।
पइल (अप) देखो पढम।
पइलाइया स्त्री [प्रतिलादिका] हाथ के बल चलनेवाली सर्प की एक जाति।
पइल्ल पुं. [दे. पदिक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष। रोग-विशेष, श्लीपद।
पइव पुं [प्रतिव] एक यादव का नाम।
पइवरिस न [प्रतिवर्ष] हर एक वर्ष।
पइवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिपक्षी।
पइविसिट्ठ वि [प्रतिविशिष्ट] विशेष-युक्त।
पइविसेस पुं [प्रतिविशेष] विशेष, भेद, भिन्नता।
पइस देखो पविस।
पइसमय न [प्रतिसमय] प्रतिक्षण।
पइसर देखो पविस।
पइसार सक [प्र + वेशय्] प्रवेश कराना।
पइहंत पुं [दे] इन्द्र का पुत्र जयन्त।
पइहा सक [प्रति + हा] त्याग करना।
पई° देखो पइ = पति।
पईअ वि [प्रतीत] विज्ञात। विश्वस्त। विख्यात।
पईअ न [प्रतीक] अंग, अवयव।
पईइ स्त्री [प्रतीति] विश्वास। प्रसिद्धि।
पईव देखो पलीव।
पईव पुं [प्रदीप] दीपक।
पईव वि [प्रतीप] प्रतिकूल। पुं. दुश्मन।
पईस (अप) देखो पइस।
पउ (अप) वि [पतित] गिरा हुआ।
पउअ देखो पागय = प्राकृत।
पउअ पुं [दे] दिवस।
पउअ न [प्रयुत] 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।
पउअंग न [प्रयुताङ्ग] 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह।
पउंज सक [प्र + युज्] जोड़ना, युक्त करना। उच्चारण करना। प्रवृत्त करना। प्रेरणा करना। व्यवहार करना। करना। प्रयोग करना।
पउंजग वि [प्रयोजक] प्रेरणा करनेवाला।
पउंजण वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला। देखो पओअण।
पउंजणया, पउंजणा स्त्री [प्रयोजना] प्रयोग।
पउंजित्तु वि [प्रयोक्तृ] प्रवृत्ति करनेवाला।
पउंजित्तु वि [प्रयोजयितृ] प्रवृत्ति करनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउज्ज देखो पउंज ।

पउट्ट अ [परिवृत्य] मार कर । °परिहार पुं. मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना ।

पउट्ट वि [परिवर्त] परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना । परिवर्तवाद ।

पउट्ठ वि [प्रवृष्ट] बरसा हुआ ।

पउट्ठ पुं [प्रकोष्ठ] हाथ का पहुँचा, कलाई और केहुनी के बीच का भाग ।

पउट्ठ वि [प्रजुष्ट] विशेष सेवित । न. अति उच्छिष्ट ।

पउट्ठ वि [प्रद्विष्ट] द्वेष-युक्त ।

पउढ न [दे] गृह । पुं. घर का पश्चिम प्रदेश ।

पउण अक [प्रगुणय्] तन्दुरुस्त होना, नीरोग होना ।

पउण पुं [दे] व्रण-प्ररोह । नियम-विशेष ।

पउण वि [प्रगुण] पटु, निर्दोष ।

पउणाड पुं [प्रपुनाट] पमाड का पेड़, चकवड़ ।

पउत्त अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना ।

पउत्त वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह । न. प्रयोग ।

पउत्त पुं [पौत्र] लड़के का लड़का, पोता ।

पउत्त न [प्रतोत्र] प्राजन, चाबुक, पैना ।

पउत्त वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह ।

पउत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्तन । वृत्तान्त । कार्य । °वाउय वि [°व्यापृत] कार्य में लगा हुआ ।

पउत्ति स्त्री [प्रयुक्ति] बात, हकीकत ।

पउत्तु [प्रयोक्तृ] प्रयोग-कर्त्ता । प्रेरणाकर्ता । कर्ता, निर्माता ।

पउत्थ न [दे] घर । वि. प्रवास में गया हुआ । °वइया स्त्री [°पतिका] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री ।

पउद्दव्व पउंज का कृ. ।

पउप्पय देखो पओप्पय ।

पउम न [पद्म] सूर्य-विकासी कमल । देव-विमान-विशेष । 'पद्मांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह । गन्ध-द्रव्य-विशेष । सुधर्मा सभा का एक सिंहासन । दिन का नववाँ मुहूर्त्त । दक्षिण-रुचक-पर्वत का एक शिखर । पुं. रामचन्द्र । आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई । इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्त्ती राजा राजा पद्मोत्तर का पुत्र । एक राजा का नाम । माल्यव नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव । भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ चक्रवर्त्ती राजा । भरत क्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव । चक्रवर्त्ती राजा का निधि जो रोग-नाशक सुन्दर वस्त्रों की पूर्ति करता है । राजा श्रेणिक का एक पौत्र । एक जैन मुनि का नाम । एक ह्रद । पद्मवृक्ष का अधिष्ठाता देव । महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा, एक भावी राजर्षि । °गुम्म न [°गुल्म] आठवें देव-लोक में स्थित एक देव-विमान का नाम । प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम । पुं. राजा श्रेणिक का एक पौत्र । एक भावी राजर्षि, महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा । °चरिय न [°चरित] राजा रामचन्द्र की जीवनी – चरित्र । प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रन्थ, जैन रामायण । °णाभ पुं [°नाभ] वासुदेव, बिष्णु । आगामी उत्सर्पिणीकाल में भरतक्षेत्र में होनेवाला प्रथम जिन-देव का नाम । कपिल-वासुदेव के एक माण्डलिक राजा का नाम । °दल न. कमल-पत्र । °द्दह पुं [°द्रह] विविध प्रकार के कमलों से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम । °द्धय पुं [°ध्वज] एक भावी राजर्षि जो महापद्म नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेगा । °नाह देखो °णाभ । °पुर न. एक दक्षिणात्य नगर जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है । °प्पभ पुं [°प्रभ] इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न षष्ठ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिन-देव का नाम। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] एक पुष्करिणी का नाम। °प्पह देखो °प्पभ। °भद्द पुं [°भद्र] राजा श्रेणिक का एक पौत्र। °मालि पुं [°मालिन्] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम। °मुह देखो पउमाणण। °रह पुं [°रथ] विद्याधर-वंश का एक राजा। मथुरा नगरी के राजा जय-सेन का पुत्र। °राय पुं [°राग] रक्त-वर्ण मणि-विशेष। °राय पुं [°राज] धातकीखण्ड की अपरकंका नगरी का एक राजा जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] उत्तर-कुरुक्षेत्र में स्थित एक वृक्ष। वृक्ष-सदृश बड़ा कमल। °लया स्त्री [°लता] कमलिनी। कमल के आकारवाली वल्ली। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] पद्मावती-देवी का सौधर्म नामक देवलोक में स्थित एक विमान। °वरवेइया स्त्री [°वरवेदिका] कमलों की श्रेष्ठ वेदिका। जम्बू द्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवों की एक भोग-भूमि। °वूह पुं [°व्यूह] सैन्य की पद्माकार रचना। °सर पुं [°सरस्] कमलों से युक्त सरोवर। °सिरी स्त्री [°श्री] अष्टम चक्र-वर्त्ती सुभूमराज की पटरानी। एक स्त्री का नाम। °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी। नागकुमार-जातीय एक देव का नाम। °सेहर पुं [°शेखर] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम। °ागर पुं [°ाकर] कमलों का समूह। सरोवर। °ासण न [°ासन] पद्माकार आसन।

पउमग पुंन [पद्मक] केसर।

पउमप्पह पुं [पद्मप्रभ] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य।

पउमा स्त्री [पद्मा] लक्ष्मी। देवी-विशेष। लवँग। कुसुम्भ-पुष्प। बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम। सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम। भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी। एक विद्याधर कन्या का नाम। रावण की एक पत्नी। वनस्पति-विशेष। चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम। सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी। दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम। लेश्या-विशेष।

पउमाड पुं [दे] पमाड़ का पेड़, चकवड़।

पउमाणण पुं [पद्मानन] एक राजा का नाम।

पउमाभ पुं [पद्माभ] षष्ठ तीर्थंकर का नाम।

पउमार [दे] देखो पउमाड।

पउमावई स्त्री [पद्मावती] जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहने-वाली एक दिक्कुमारी-देवी। भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी जो नागराज धरणेन्द्र की पटरानी है। श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम। भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी। शक्रेन्द्र की एक पटरानी। चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम। राजा कूणिक की एक पत्नी। अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी। तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी। कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी। शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी। राजा कूणिक के पुत्र कालकुमार की भार्या का नाम। राजा महाबल की भार्या का नाम। बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम। पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी। रम्यनामक विजय की राजधानी।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष।

पउमिणी स्त्री [पद्मिनी] कमल-लता। एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमुत्तर पुं [पद्मोत्तर] नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्मराज के पिता का नाम। मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत।

पउमुत्तरा स्त्री [पद्मोत्तरा] एक प्रकार की शक्कर।

पउर वि [प्रचुर] बहुत।

पउर वि [पौर] पुर-सम्बन्धी। नगर में रहने-वाला।

पउरव पुं [पौरव] पुरुनामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र।

पउराण (अप) देखो पुराण।

पउरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-कृत।

पउरिस } पुंन [पौरुष] पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पउरुस } वीरता।

पउल सक [पच्] पकाना।

पउलिअ वि [प्रज्ज्वलित] दग्ध।

पउल्ल देखो पउल।

पउल्ल वि [पक्क] पका हुआ।

पउल्लण न [पचनक] रसोई का पात्र।

पउविय वि [प्रकुपित] विशेष कुपित।

पउस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना।

पउसय वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न।

पउस्स देखो पउस।

पउहण (अप) देखो पवहण।

पऊढ न [दे] गृह।

पए अ [प्रगे] पहले, पूर्व।

पएणियार पुं [प्रैणीचार] व्याध की एक जाति जो हरिणों को पकड़ने के लिए हरिणी समूह को चराते एवं पालते हैं।

पएर पुं [दे] बाड़ का छिद्र। मार्ग। कंठदीनार नामक भूषण-विशेष। गले का छिद्र। आर्त्त-स्वर। वि. दुश्शील, दुराचारी।

पएस पुं [दे] पड़ोसी।

पएस पुं [प्रदेश] जिसका विभाग न हो सके ऐसा सूक्ष्म अवयव। कर्म-दल का संचय। स्थान, जगह। देश का एक भाग, प्रान्त। परिमाण-विशेष, निरंश-अवयव-परिमित माप। छोटा भाग। परमाणु। द्वयणुक। त्र्यणुक। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म। °ग्ग न [°ाग्र] कर्मों के दलिकों का परिमाण। °घण वि [°घन] निबिड प्रदेश। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष। °णाम पुं [°नाम] कर्म-द्रव्यों का परिणाम। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ सम्बन्धन। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव वाले कर्मों के रूप में परिणत करना।

पएसण न [प्रदेशन] उपदेश।

पएसय वि [प्रदेशक] उपदेशक, प्रदर्शक।

पएसि पुं [प्रदेशिन्] एक राजा जो श्रीपार्श्व-नाथ भगवान् के केशि नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था।

पएसिणी स्त्री [दे] पड़ोस में रहनेवाली स्त्री।

पएसिणी स्त्री [प्रदेशिनी] अंगुष्ठ के पास की उँगली, तर्जनी।

पएसिय देखो पदेसिय।

पओअ पुं [पयोद] मेघ।

पओअ देखो पओग।

पओअण न [प्रयोजन] निमित्त, कारण। कार्य। मतलब।

पओइद (शौ) वि [प्रयोजित] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह।

पओग पुं [प्रयोग] प्रयोजन। शब्द-योजना। जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न। प्रेरणा। उपाय। जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि। वाद-विवाद, शास्त्रार्थ। °कम्म न [°कर्मन्] मन आदि की चेष्टा से आत्मप्रदेशों के साथ बँधनेवाला कर्म। °करण न. जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी वस्तु का निर्माण। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मन आदि की चेष्टा। °फड्डय न [°स्पर्धक] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि-द्वारा कर्म-पर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणुओं में बढ़नेवाला रस । °बंध पुं [°बन्ध] जीव-प्रयत्न द्वारा होनेवाला बन्धन । °मइ स्त्री [°मति] वादविषयक-परिज्ञान । °संपया स्त्री [°संपत्] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य । °सा अ [प्रयोगेण] जीव-प्रयत्न से ।

पओज देखो पउंज = प्र + युज् ।

पओजग वि [प्रयोजक] विनिश्चायक, निर्णायक, गमक ।

पओट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ ।

पओत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, पैना । °धर पुं. बैलगाड़ी हांकनेवाला ।

पओद पुं [प्रतोद] ऊपर देखो ।

पओप्पय पुं [प्रपौत्रक] प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र । प्रशिष्य का शिष्य ।

पओप्पिय पुं [दे. प्रपौत्रिक] वंश-परम्परा । शिष्य-सन्तान ।

पओरासि पुं [पयोराशि] समुद्र ।

पओल पुं [पटोल] परवर, परोरा ।

पओली स्त्री [प्रतोली] नगर के भीतर का रास्ता । नगर का दरवाजा ।

पओवट्ठाव देखो पज्जवत्थाव ।

पओवाह पुं [पयोवाह] मेघ ।

पओस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना, वैर करना ।

पओस पुं [दे. प्रद्वेष] प्रद्वेष, प्रकृष्ट द्वेष ।

पओस पुंन [प्रदोष] सन्ध्याकाल । वि. प्रभूत दोषों से युक्त ।

पओहण (अप) देखो पवहण ।

पओहर पुं [पयोधर] स्तन । बादल । छन्द-विशेष ।

पंक पुंन [पङ्क] कीचड़ । पाप । असंयम, इन्द्रिय वगैरह का अनिग्रह । °आवलिआ स्त्री [°ावलिका] छन्द-विशेष । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-भूमि । °बहुल वि. कर्दम-प्रचुर । पाप-प्रचुर । पुंन. रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड । °य न [°ज] कमल । °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष ।

पंकज देखो पंक-य ।

पंका स्त्री [पङ्का] चौथी नरक-भूमि ।

पंकाभा स्त्री [पङ्काभा] चौथी नरक-पृथिवी ।

पंकावई स्त्री [पङ्कावती] पुष्कल नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी ।

पंकिय वि [पङ्कित] कीचवाला ।

पंकिल वि [पङ्किल] कर्दमवाला ।

पंकेरुह न [पङ्केरुह] कमल ।

पंख पुंस्त्री [पक्ष] पंख । पखवाड़ा । °ासण न [°ासन] आसन-विशेष ।

पंखि पुंस्त्री [पक्षिन्] पंखी, चिड़िया ।

पंखुडिआ, पंखुडी } स्त्री [दे] पंख, पत्र ।

पंग सक [ग्रह्] ग्रहण करना ।

पंगण न [प्राङ्गण] आंगन ।

पंगु वि [पङ्गु] लंगड़ा, लूला ।

पंगुर सक [प्रा + वृ] ढकना, आच्छादन करना ।

पंगुरण न [प्रावरण] वस्त्र ।

पंगुल वि [पङ्गुल] देखो पंगु ।

पंच त्रि. ब. [पञ्चन्] पाँच । °उल न [°कुल] पंचायत । °उलिय पुं [°कुलिक] पंचायत में बैठ कर विचार करनेवाला । °कत्तिय पुं [°कृत्तिक] भगवान् कुन्थुनाथ जिनके पाँचों कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे । °कप्प पुं [°कल्प] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत प्राचीन ग्रन्थ का नाम । °कल्लाणय न [°कल्याणक] तीर्थङ्कर का च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण । काम्पिल्यपुर, जहाँ तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचों कल्याणक हुए थे । तप-विशेष । °कोट्ठग वि [°कोष्ठक] पाँच कोष्ठों से युक्त । पुं. पुरुष । °गव्व न [°गव्य] पंचगव्य—दूध, दही, घृत, गोमय और मूत्र । °गाह न [°गाथ] गाथा छन्दवाले पाँच

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्म। °गुण वि. पाँचगुना। °चित्त पुं [°चित्र] षष्ठ जिनदेव श्रीपद्मप्रभ जिनके पाँचों कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए थे। °जाम न [°याम] अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग—ये पाँच महाव्रत। वि. जिसमें इन पाँच महाव्रतों का निरूपण हो वह। °णउइ स्त्री [°नवति] पंचानबे। °णउय वि [°नवत] ९५ वाँ। °तालीस (अप) स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] पैंतालीस। °तित्थी स्त्री [°तीर्थी] पाँच तीर्थों का समुदाय। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] पैंतीसवाँ। °दस त्रि. ब. [दशन्] पनरह। °दसम वि [°दशम] पनरहवाँ। °दसी स्त्री [°दशी] पनरहवीं। पूर्णिमा। अमावास्या। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ पनरहवाँ। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव और केवल—इन पाँचों ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ। °पव्वी स्त्री [°पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पंचमी—ये पाँच तिथियाँ। °पुव्वासाढ पुं [°पूर्वाषाढ] दसवें जिनदेव श्रीशीतलनाथ जिनके पाँचों कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे। °पूस पुं [°पुष्य] पनरहवें जिनदेव श्रीधर्मनाथ। °बाण पुं. कामदेव। °भूय न [°भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—ये पाँच पदार्थ। °भूयवाइ वि [°भूतवादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को न मानकर केवल पाँच भूतों को ही माननेवाला, नास्तिक। °महव्वइय वि [°महाव्रतिक] पाँच महाव्रतोंवाला। °महव्वय न [°महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का सर्वथा परित्याग। °महाभूय न [°महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—ये पाँच पदार्थ। °मुट्ठिय वि [°मुष्टिक] पाँच मुष्टियों का, पाँच मुष्टियों से पूर्ण किया जाता (लोच)। °मुह पुं [°मुख] सिंह, पंचानन। °यसी देखो °दसी। °रत्त, °राय पुं [°रात्र] पाँच रात। °रासिय न [°राशिक] गणित-विशेष। °रूविय वि [°रूपिक] पाँच प्रकार के वर्णवाला। °वत्थुग न [°वस्तुक] आचार्य हरिभद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष। °वरिस वि [°वर्ष] पाँच वर्ष की अवस्था-वाला। °विह वि [°विध] पाँच प्रकार का। °वीसइम वि [°विंशतितम] पचीसवाँ। °संगह पुं [°संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ। °संवच्छरिय वि [°सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाण-वाला, पाँच वर्ष की आयु-वाला। °सट्ठ वि [°षष्ट] पैंसठवाँ। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ। °समिय वि [°समित] पाँच समितियों का पालन करनेवाला। °सर पुं [°शर] कामदेव। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष। °सुण्ण न [°शून्य] पाँच प्राणिवध-स्थान। °सुत्तग न [°सूत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि-निर्मित एक जैन ग्रन्थ। °सेल, °सेलग, °सेलय पुं [°शैल, °क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों से विभूषित एक छोटा द्वीप। °सोगंधिअ वि [°सौगन्धिक]इलायची, लवंग, कपूर, कंक्कोल और जातीफल—जायफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओं से संस्कृत। °हत्तर वि [°सप्तत] पचहत्तरवाँ। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] संख्या-विशेष, ७५। जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे। °हत्थुत्तर पुं [°हस्तोत्तर] भगवान् महावीर जिनके पाँचों कल्याणक उत्तरा-फाल्गुनी-नक्षत्र में हुए थे। °ाउह पुं [°ायुध] कामदेव। °ाणाउइ स्त्री [°नवति] पंचानबे। जिनकी संख्या पंचानबे हो वे। °ाणउय वि [°नवत] पंचानवाँ। °ाणाण पुं [°ानन] सिंह। °ाणुव्वइय वि [°ाणुव्रतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्यागवाला। °ायाम देखो °जाम। °ास

स्त्रीन [°ाशत्] पचास। जिनको संख्या पचीस हो वे। °ासग न [°ाशक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिकृत एक जैन ग्रन्थ। °ासीइ स्त्री [°ाशीति] अस्सी और पाँच। जिनकी संख्या पचासी हो वे। °ासीइम वि [°ाशीतितम] पचासीवाँ।

पंचअण्ण देखो पंचजण्ण।

पंचंग न [पञ्चाङ्ग] दो हाथ, दो जानु और मस्तक—ये पाँच शरीरावयव। वि. पूर्वोक्त पाँच अंगवाला (प्रणाम आदि)।

पंचंगुलि पुं [दे] एरण्ड-वृक्ष।

पंचंगुलि पुं [पञ्चागुलि] हाथ।

पंचंगुलिआ स्त्री [पञ्चाङ्गुलिका] वल्ली-विशेष।

पंचग वि [पञ्चक] पाँच (रुपया आदि) की कीमत। न. पाँच का समूह।

पंचजण्ण पुं [पाञ्चजन्य] श्रीकृष्ण का शंख।

पंचत्त } न [पञ्चत्व] पाँचपन, पञ्चरूपता।
पंचत्तण } मौत।

पंचपुंड वि [पञ्चपुण्ड्र] पाँच स्थानों में पुण्ड्र-चिह्न (सफेदी) वाला।

पंचपुल पुंन [दे] मत्स्य-बन्धन-विशेष, मछली पकड़ने का जाल-विशेष।

पंचम वि [पञ्चम] पाँचवाँ। पुं. स्वर-विशेष। °धारा स्त्री. अश्व की एक तरह की गति।

पंचमहब्भूइअ वि [पाञ्चमहाभूतिक] पाँच महाभूतों को माननेवाला, सांख्यमत का अनुयायी।

पंचमासिअ वि [पाञ्चमासिक] पाँच मास की उम्र का। पाँच मास में पूर्ण होनेवाला (अभिग्रह आदि)।

पंचमिय वि [पाञ्चमिक] पाँचवाँ।

पंचमी स्त्री [पञ्चमी] पाँचवीं। पंचमी तिथि। व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति।

पंचयन्न देखो पंचजण्ण।

पंचलोइया स्त्री [पञ्चलौकिका] हाथ से चलने वाले सर्प-जातीय प्राणी की एक जाति।

पंचवडी स्त्री [पञ्चवटी] पाँच वट-वृक्षवाला एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्रजी ने अपने वनवास के समय आवास किया था।

पंचवयण पुं [पञ्चवदन] सिंह।

पंचामय न [पञ्चामृत] ये पाँच वस्तु—दही, दूध, घी, मधु तथा शक्कर।

पंचाल पुं [पाञ्चाल] कामशास्त्र-प्रणेता एक ऋषि।

पंचाल पुं.ब. [पञ्चाल, पाञ्चाल] पञ्जाब देश। पुं. पञ्जाब देश का राजा। छन्द-विशेष।

पंचालिआ स्त्री [पञ्चालिका] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा।

पंचालिआ स्त्री [पाञ्चालिका] द्रौपदी। गान का एक भेद।

पंचावण्ण स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन। जिनकी संख्या पचपन हो वे।

पंचावन्न वि [दे. पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ।

पंचिंदिय } वि [पञ्चेन्द्रिय] वह जीव
पंचिंद्रिय } जिसको त्वचा, जीभ, नाक, आँख और कान—ये पाँचों इन्द्रियाँ हों। न. त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ।

पंचिया स्त्री [पञ्चिका] पाँच की संख्या-वाला। पाँच दिन का।

पंचुंबर स्त्रीन [पञ्चोदुम्बर] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल।

पंचुत्तरसय वि [पञ्चोत्तरशततम] एक सौ पाँचवाँ।

पंचेडिय वि [दे] विनाशित।

पंचेसु पुं [पञ्चेषु] कामदेव।

पंछि पुं [पक्षिन्] पक्षी, चिड़िया।

पंजर पुंन [पञ्जर] आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक आदि मुनि-गण। उन्मार्ग-गमन-निषेध, सन्मार्ग-प्रवर्त्तन। स्वच्छन्दता-प्रतिषेध। न. पिंजरा।

पंजरिअ पुं [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष।

पंजल वि [प्राञ्जल] सीधा, ऋजु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंजलि पुंस्त्री [प्राञ्जलि] प्रणाम करने के लिए जोड़ा हुआ कर-सम्पुट, संयुक्त कर-द्वय। °उड पुं [°पुट] अञ्जलि-पुट। °उड, °कड वि [कृतप्राञ्जलि] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह।

पंजिअ न [दे] मुँह-माँगा दान।

पंड वि [पाण्ड्य] देश-विशेष में उत्पन्न।

पंड, पंडग, पंडय } पुं [पण्ड, °क] नपुंसक। न. मेरु पर्वत का एक वन।

पंडय देखो पंडव।

पंडर पुं [पाण्डर] क्षीरवर नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव। सफेद रंग। वि. श्वेतवर्ण-वाला। °भिक्खु पुं [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय का मुनि।

पंडर देखो पंडुर।

पंडरंग पुं [दे] महादेव।

पंडरंगु पुं [दे] गाँव का अधिपति।

पंडरिय देखो पंडुरिअ।

पंडव पुं [पाण्डव] राजा पाण्डु के पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, सहदेव और नकुल।

पंडव पुं [दे] अश्व-रक्षक (?)।

पंडविअ वि [दे] जलार्द्र।

पंडिअ वि [पण्डित] शास्त्रों के मर्म को जाननेवाला, बुद्धिमान्, तत्वज्ञ। संयत, साधु। °मरण न. साधु का मरण, शुभमरण-विशेष। °माण वि [°म्मन्य] विद्याभिमानी, निज को पण्डित माननेवाला, दुर्विदग्ध, अधपका, मूर्ख। °माणि वि [°मानिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ। °वीरिअ न [°वीर्य] संयत का आत्म-बल।

पंडिच्च, पंडित्त } न [पाण्डित्य] पण्डिताई, विद्वत्ता।

पंडिच्चमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] विद्वत्ता का घमण्ड।

पंडी देखो पंड = पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो पंडिअ।

पंडु पुं [पाण्डु] नृप-विशेष, पाण्डवों का पिता। पाण्डु-रोग। शुक्ल और पीत वर्ण। श्वेत वर्ण। वि. शुक्ल और पीत वर्णवाला। सफेद। पाण्डुकम्बला नामक शिला। °कंबल-सिला स्त्री [°कम्बलशिला] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला जिस पर जिन-देवों का जन्माभिषेक किया जाता है। °कंबला स्त्री [°कम्बला] वही पूर्वोक्त अर्थ। °तणय पुं [°तनय] पाण्डव। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि जो आर्य सम्भूति-विजय के शिष्य थे। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी। °महुरा स्त्री [°मथुरा] दक्षिण तरफ की एक नगरी। °राय पुं [°राज] राजा पाण्डु। °सुय पुं [°सुत] पाण्डव। °सेण पुं [°सेन] पाण्डवों का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र।

पंडुइय वि [पाण्डुकित] श्वेत रंग का किया हुआ।

पंडुग, पंडुय } पुं [पाण्डक] चक्रवर्ती का धान्यों की पूर्ति करनेवाला एक निधि। सर्प की एक जाति। न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक वन।

पंडुर पुं [पाण्डुर] सफेद रंग। पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण। वि. सफेद वर्णवाला। श्वेत-मिश्रित पीत वर्णवाला। °ज्जा स्त्री [°ार्या] एक जैन साध्वी का नाम। °त्थिय [°ास्थिक] एक गाँव का नाम।

पंडुरंग पुं [पाण्डुराङ्ग] संन्यासी की एक जाति, भस्म लगानेवाला संन्यासी।

पंडुरग, पंडुरय } पुं [पाण्डुरक] शिव-भक्त संन्यासियों की एक जाति। देखो पंडुर।

पंडुरिअ, पंडुल्लइय } वि [पाण्डुरित] पाण्डुर वर्ण-वाला बना हुआ।

पंडुल पुं. [पाण्डुर] देखो पंडुर।

पंत वि [प्रान्त] अन्तवर्त्ती, अन्तिम। अशोभन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्रिय-प्रतिकूल। असभ्य, अशिष्ट। अपसद, नीच, दुष्ट। दरिद्र। जीर्ण, फटा-टूटा। विनष्ट। नीरस, सूखा। भुक्तावशिष्ट। पर्युषित, बासी। °कुल न. नीच कुल। °चर वि. नीरस आहार की खोज करनेवाला तपस्वी। °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करनेवाला। °हार वि. रूखा-सूखा आहार करनेवाला।

पंताव सक [दे] मारना।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] कतार। जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पदाती हों—ऐसी सेना।

पंति स्त्री [दे] केश-रचना।

पंतिय स्त्रीन [पङ्क्ति] श्रेणी।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग।

पंथ पुं [पान्थ] मुसाफिर। °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीटकर मुसाफिरों को लूटना। °कोट्ट पुं [°कुट्ट] वही अर्थ। °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ।

पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि।

पंथाण देखो पंथ = पन्थ, पथिन्।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर।

पंथुच्छुहणी स्त्री [दे] श्वशुर-गृह से पहली बार आनीत स्त्री।

पंपुअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा।

पंफुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित।

पंफुल्लिअ वि [दे] गवेषित।

पंस सक [पांसय्] मलिन करना।

पंसण वि [पांसन] कलंकित करनेवाला, दूषण लगानेवाला।

पंसु पुं [पांसु, पांशु] धूली, रज। °कोलिय, °क्कीलिय वि [°क्रीडित] बचपन का दोस्त। °पिसाय पुंस्त्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह। °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष।

पंसु पुं [पर्शु] कुठार, फरसा।

पंसु देखो पसु।

पंसुखार पुं [पांशुक्षार] ऊषर लवण।

पंसुल पुं [दे] कोयल। जार। वि. रुद्ध।

पंसुल पुं [पांसुल] परस्त्री-लम्पट। वि. धूलि-युक्त।

पंसुला स्त्री [पांसुला] व्यभिचारिणी स्त्री।

पंसुलिआ स्त्री [दे. पांशुलिका] पार्श्व की हड्डी।

पंसुली स्त्री [पांसुली] कुलटा।

पकंथ देखो पगंथ।

पकंथग पुं [प्रकन्थक] अश्व-विशेष।

पकंप पुं [प्रकम्प] काँपना।

पकड वि [प्रकृत] प्रस्तुत, प्रक्रान्त, उपस्थित, असली, सच्चा। निर्मित।

पकड देखो पगड = प्रकट।

पकड्ढ देखो पगड्ढ।

पकड्ढ वि [प्रकृष्ट] प्रकर्ष-युक्त। खींचा हुआ।

पकड्ढण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव।

पकत्थ सक [प्र + कत्थ्] प्रशंसा करना।

पकप्प अक [प्र + क्लृप्] उपयोग में आना। काटना, छेदना।

पकप्प सक [प्र + कल्पय्] करना, बनाना। संकल्प करना।

पकप्प पुं [प्रकल्प] उत्तम आचरण। बाधक नियम। 'आचारांग' सूत्र का एक अध्ययन। व्यवस्थापन। कल्पना। प्ररूपणा। विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन। जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविरकल्प। एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष। °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र। °जइ पुं [°यति] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु। °धर वि. 'निशीथ' अध्ययन का जानकार। देखो पगप्प = प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] प्ररूपणा, व्याख्या। कल्पना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पकप्पधारि वि [प्रकल्पधारिन्] 'निशीथ' सूत्र का जानकार ।
पकप्पि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो ।
पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] संकल्पित । निर्मित । न. पूर्वोपार्जित द्रव्य । काटा हुआ ।
पकय वि [प्रकृत] कार्य में लगा हुआ ।
पकर सक [प्र+कृ] करने का प्रारम्भ करना । प्रकर्ष से करना । करना ।
पकर देखो पयर = प्रकर ।
पकरणया स्त्री [प्रकरणता] करण, कृति ।
पकहिअ वि [प्रकथित] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह ।
पकाम न [प्रकाम]अत्यर्थ, अत्यन्त । पुं. प्रकृष्ट अभिलाष ।
पकाव (अप) सक [पच्] पकाना ।
पकास देखो पयास = प्रकाश ।
पकिट्ठ देखो पगिट्ठ ।
पकिण्ण वि [प्रकीर्ण] उप्त, बोया हुआ । दत्त । पइण्ण = प्रकीर्ण ।
पकित्तिअ वि [प्रकीर्त्तित] वर्णित, कथित ।
पकिदि देखो पगइ = प्रकृति ।
पकिदि (शौ) देखो पइइ = प्रकृति ।
पकिरण न [प्रकिरण] देने के लिए फेंकना ।
पकुण देखो पकर = प्र+कृ ।
पकुप्प अक [प्र+कुप्] गुस्सा करना ।
पकुप्पित (चूपै) वि [प्रकुपित] क्रुद्ध, कुपित ।
पकुविअ ऊपर देखो ।
पकुव्व सक [प्र+कृ, प्र+कुर्व्] करने का प्रारम्भ करना । प्रकर्ष से करना । करना ।
पकुव्वि वि [प्रकारिन्, प्रकुर्विन्] करनेवाला, कर्ता । पुं. प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुरु ।
पकूविअ वि [प्रकूजित] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ ।
पकोट्ठ देखो पओट्ठ ।
पकोव पुं [प्रकोप] गुस्सा ।
पक्क वि [पक्व] पका हुआ ।
पक्क वि [दे] दृप्त, गर्वित । समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ ।
पक्कंत वि [प्रक्रान्त] प्रस्तुत ।
पक्कग्गाह पुं [दे] मगरमच्छ । पानी में बसनेवाला सिंहाकार जल-जन्तु ।
पक्कण वि [दे] असहिष्णु । समर्थ । पुं. चाण्डाल । एक अनार्य देश । पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य-जाति । पुं. एक नीच जाति का घर, शबर-गृह । °उल न [°कुल] चाण्डाल का घर । एक गर्हित कुल ।
पक्कणि वि [दे] अतिशय शोभमान । भग्न, भाँगा हुआ । प्रियभाषी ।
पक्कणिय पुंस्त्री. [दे] एक अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति ।
पक्कन्न न [पक्वान्न] केवल घी में बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि ।
पक्कम सक [प्र+कम्] प्रकर्ष से समर्थ होना ।
पक्कम सक [प्र+क्रम्] प्रकर्ष से जाना, चला जाना । अक. प्रयत्न होना । प्रवृत्ति होना ।
पक्कम पुं [प्रक्रम] प्रस्ताव, प्रसंग ।
पक्कमणी स्त्री [प्रक्रमणी] विद्या-विशेष ।
पक्कल वि [दे] शक्त । दर्प-युक्त, गर्वित । प्रौढ ।
पक्कस देखो वक्कस ।
पक्कसावअ पुं [दे] शरभ । व्याघ्र ।
पक्काइय वि [पक्वीकृत] पकाया हुआ ।
पक्किर सक [प्र+कृ] फेंकना ।
पक्कीलिय वि [प्रक्रीडित] जिसने क्रीड़ा का प्रारम्भ किया हो वह ।
पक्ख पुं [पक्ष] वेदिका का एक भाग । पखवारा । शुक्ल और कृष्ण पक्ष । पार्श्व, पाँजर, कन्धा के नीचे का भाग । पक्षियों का अवयव-विशेष, पंख । तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमाण का एक अवयव, साध्यवाली वस्तु। तरफ, ओर। जत्था, दल, टोली। मित्र। शरीर का आधा भाग। तरफदार। तीर का पंख। तरफदारी। °ग वि. पक्ष-गामी, पक्ष-पर्यन्त स्थायी। °पिंड पुंन [°पिण्ड] आसन-विशेष—जानु और जाँघपर वस्त्र बाँध कर बैठना। °य पुं [°क]पंख, तालवृन्त। °वंत वि [°वत्] तरफदारीवाला। °वाइल्ल वि [°पातिन्] पक्षपात करनेवाला, तरफदारी करनेवाला। °वाद पुं [°पात] तरफदारी। °वादि (शौ) देखो °वाइल्ल। °वाय देखो °वाद। °वाय पुं [°वाद] पक्ष-सम्बन्धी विवाद। °वाह पुं. वेदिका का एक देश-विशेष। °विडिअ वि [°पतित] पक्षपाती। °वाइया स्त्री [°वापिका] होम-विशेष।

पक्खंत न [पक्षान्त] अन्यतर इन्द्रिय-जात।

पक्खंतर न [पक्षान्तर] दूसरा पक्ष।

पक्खंद सक [प्र + स्कन्द्] आक्रमण करना। दौड़कर गिरना। अध्यवसाय करना।

पक्खंदोलग पुं [पक्ष्यन्दोलक] पक्षी का हिंडोला।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह।

पक्खडिअ वि [दे] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न।

पक्खर सक [सं + नाहय्] सन्नद्ध करना, अश्व को कवच से सज्जित करना।

पक्खर पुं [प्रक्षर] क्षरण, टपकना।

पक्खर पुं [दे] जहाज की रक्षा का एक उपकरण, सामग्री। पाखर, घोड़े का कवच।

पक्खरा स्त्री [दे] अश्व-संनाह।

पक्खल अक [प्र + स्खल्] गिरना, पड़ना, स्खलित होना।

पक्खाउज्ज न [पक्षातोद्य] पखावज, एक प्रकार का बाजा, मृदंग।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत।

पक्खारिण पुं [प्रक्षारिण] अनार्य देश-विशेष। पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय्] शुद्ध करना, धोना।

पक्खासण न [पक्ष्यासन] जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षियों का चित्र हो ऐसा आसन।

पक्खि पुंस्त्री [पक्षिन्] पक्षी। °बिराल पुंस्त्री. पक्षि-विशेष। °राय पुं [°राज] गरुड। नीचे देखो।

पक्खिअ पुंस्त्री [पक्षिक] ऊपर देखो। वि. पक्षपाती, तरफदारी करनेवाला।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] स्वजन, ज्ञाति का। पाख में होनेवाला। अर्धमास-सम्बन्धी। न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी। °पक्खिअ पुं [°पक्षिक] जिसको एक पाख में तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष में अल्प—ऐसा नपुंसक।

पक्खिकायण न [पाक्षिकायन] गोत्र-विशेष जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है।

पक्खिण देखो पक्खि।

पक्खित्त वि [प्रक्षिप्त] फेंका हुआ।

पक्खिनाह पुं [पक्षिनाथ] गरुड पक्षी।

पक्खिव वि [प्र + क्षिप्] फेंक देना। त्यागना। डालना।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, असम्पूर्ण।

पक्खुब्भ अक [प्र + क्षुभ्] क्षोभ पाना। वृद्ध होना, बढ़ना।

पक्खेव पुं [प्रक्षेप] शास्त्र में पीछे से किसी के द्वारा डाला या मिलाया हुआ वाक्य। °हार पुं. कवलाहार।

पक्खेव, पक्खेवग } पुं [प्रक्षेप, °क] क्षेपण, फेंकना। पूर्ति करनेवाला द्रव्य, पूर्ति के लिए पीछे से डाली जाती वस्तु।

पक्खोड सक [वि + कोशय्] खोलना। फैलाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पक्खोड सक [शद्] कँपाना। झाड़कर गिराना।

पक्खोड सक [प्र + छादय्] ढकना, आच्छादन करना।

पक्खोड सक [प्र + स्फोटय] खूब झाड़ना। बारम्बार झाड़ना। कँपाना।

पक्खोड पुं [प्रस्फोट] प्रमार्जन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष।

पक्खोभ सक [प्र + क्षोभय्] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना।

पक्खोलण न [शदन] स्खलित होनेवाला। वि. रुष्ट होनेवाला।

पखल वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र, तेज।

पखोड देखो पक्खोड = प्रस्फोट।

पगइ स्त्री [प्रकृति] स्वभाव। प्रस्तुत अर्थ। साधारण जन-समूह। कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य-जातियाँ। कर्मों का भेद। सत्व, रज और तम की साम्यावस्था। बलदेव के एक पुत्र का नाम। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में भिन्न-शक्तियों का पैदा होना। देखो पगडि।

पगंठ पुं [प्रकण्ठ] पीठ-विशेष। अन्त का अवनत प्रदेश।

पगंथ सक [प्र + कथय्] निन्दा करना।

पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला, स्पष्ट, प्रत्यक्ष।

पगड वि [प्रकृत] विनिर्मित।

पगड पुं [प्रगर्त्त] बड़ा गड्ढा या गड़हा।

पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना।

पगडि स्त्री [प्रकृति] भेद, प्रकार। देखो पगइ।

पगडीकय वि [प्रकटीकृत] व्यक्त किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ।

पगड्ढ सक [प्र + कृष्] खींचना।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + कल्पय्।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + क्लृप्।

पगप्प वि. [प्रकल्प] उत्पन्न होनेवाला। देखो पकप्प = प्रकल्प।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पित] प्ररूपित, कथित।

पगप्पित्तु वि [प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ] काटनेवाला।

पगब्भ अक [प्र + गल्भ्] धृष्टता करना। समर्थ होना।

पगब्भ वि [प्रगल्भ] धृष्ट, ढीठ। समर्थ।

पगब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढीठाई।

पगब्भणा स्त्री [प्रगल्भना] प्रगल्भता, धृष्टता।

पगब्भा स्त्री [प्रगल्भा] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या।

पगब्भिअ वि [प्रगल्भित] धृष्टता-युक्त।

पगब्भित्तु वि [प्रगल्भितृ] काटनेवाला।

पगय न [प्रकृत] प्रस्ताव, प्रसंग। पुं. गाँव का अधिकारी।

पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत।

पगय वि [प्रगत] प्राप्त। जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह, संगत। न. प्रस्ताव, अधिकार।

पगय न [दे] पाँव।

पगर पुं [प्रकर] समूह।

पगरण न [प्रकरण] अधिकार, प्रस्ताव। ग्रन्थ-खण्ड-विशेष। किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ।

पगरिअ वि [प्रगलित] कुष्ठ-विशेष की बीमारी-वाला।

पगरिस पुं [प्रकर्ष] उत्कर्ष, श्रेष्ठता। आधिक्य, अतिशय।

पगल अक [प्र + गल्] झरना, टपकना।

पगहिय वि [प्रगृहीत] ग्रहण किया हुआ।

पगाइय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह।

पगाढ वि [प्रगाढ] अत्यन्त गाढ़।

पगाम देखो पकाम।

पगामसो अ [प्रकामस्] अतिशय।

पगार पुं [प्रकार] भेद। रीति। वगैरह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगास देखो पयास = प्र + काशय् ।
पगास पुं [प्रकाश] प्रभा, चमक । ख्याति । आविर्भाव, प्रादुर्भाव । उद्‌द्योत, आतप । क्रोध । वि. प्रकट, व्यक्त ।
पगासग देखो पगासय ।
पगासण देखो पयासण ।
पगासणया स्त्री [प्रकाशनता] आलोक ।
पगासणा स्त्री [प्रकाशना] प्रकटीकरण ।
पगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला ।
पगिइ देखो पगइ ।
पगिज्झ अक [प्र + गृध्] आसक्ति का प्रारम्भ होना ।
पगिज्झिय देखो पगिण्ह ।
पगिट्ठ वि [प्रकृष्ट] मुख्य । उत्तम ।
पगिण्ह सक [प्र + ग्रह्]ग्रहण करना । उठाना । धारण करना । करना ।
पगीअ वि [प्रगीत] गाया हुआ । जिसकी गीत गाई गई हो वह ।
पगीय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह ।
पगुण देखो पउण ।
पगुणीकर सक [प्रगुणी + कृ] प्रगुण करना । सज्ज करना ।
पगे अ [प्रगे] सुबह ।
पग्ग सक [ग्रह्] ग्रहण करना ।
पग्गल वि [दे] पागल, उन्मत्त ।
पग्गह पुं [प्रग्रह] खाने के लिए उठाया हुआ भोजन-पान । उपधि, उपकरण । लगाम । पशुओं को नाक में लगाई जाती डोरी, नाथ । पशुओं को बाँधने की डोरी, रस्सी । मुखिया । ग्रहण, उपादान । योजन, जोड़ना ।
पग्गहिअ वि [प्रगृहीत] अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत । प्रकर्ष से गृहीत । उठाया हुआ ।
पग्गहिय वि [प्राग्रहिक] ऊपर देखो ।
पग्गिम } (अप) अ [प्रायस्] बहुधा ।
पग्गिम्व }
पग्गेज्ज पुं [दे] समूह ।
पघंस सक [प्र + घृष्] फिर-फिर घिसना ।
पघोल अक [प्र + घूर्णय्] मिलना, संगत होना ।
पघोस पुं [प्रघोष] उद्‌घोषणा ।
पच सक [पच्] पकाना ।
पच (अप) देखो पंच । °आलीस, °तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] पैंतालीस । पैंतालिस संख्या जिनकी हो वे ।
पचंकमणग न [प्रचङ्क्रमण, °क] पाँव से चलना ।
पचंकमावण न [प्रचङ्क्रमण]पाँव से संचारण, पाँव से चलाना ।
पचंड देखो पयंड ।
पचलिय देखो पयलिय = प्रचलित ।
पचार सक [प्र + चारय्] चलाना ।
पचार पुं [प्रचार] विस्तार, फैलाव । देखो पयार = प्रचार ।
पचाल सक [प्र + चालय्] खूब चलाना ।
पचिय वि [प्रचित] समृद्ध ।
पचीस (अप) स्त्रीन [पञ्चविंशति] पचीस की संख्या । जिसकी संख्या पचीस हो वे ।
पचुण्णिय वि [प्रचूर्णित] चूर-चूर किया हुआ ।
पचेलिम वि [पचेलिम] पक्व, पका हुआ ।
पचोइअ वि [प्रचोदित] प्रेरित ।
पच्चइग देखो पच्चइय = प्रत्ययिक ।
पच्चइय वि [प्रत्ययिक] विश्वासी । ज्ञानवाला, प्रत्ययवाला । न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान ।
पच्चइय वि [प्रत्ययित] विश्वस्त ।
पच्चइय वि [प्रात्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से संजात ।
पच्चंग न [प्रत्यङ्ग] हर एक अवयव ।
पच्चंगिरा स्त्री [प्रत्यङ्गिरा] विद्यादेवी-विशेष ।
पच्चंत पुं [प्रत्यन्त] अनार्यदेश । वि. समीपस्थ देश । भाग ।
पच्चंतिग देखो पच्चंतिय = प्रत्यन्तिक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चंतिय वि [प्रत्यन्तिक] समीप-देश में स्थित ।

पच्चंतिय वि [प्रात्यन्तिक] प्रत्यन्त देश से आया हुआ ।

पच्चक्ख न [प्रत्यक्ष] इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान । इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान । वि. प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय ।

पच्चक्ख } सक [प्रत्या + ख्या] त्याग करना,
पच्चक्खा } त्याग करने का नियम करना ।

पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] परित्याग करने की प्रतिज्ञा । जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ । निंद्य कर्मों से निवृत्ति । °वरण पुं. सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक क्रोध-आदि कषाय ।

पच्चक्खाणी स्त्री [प्रत्यख्यानी] भाषा-विशेष, प्रतिषेधवचन ।

पच्चक्खाय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त ।

पच्चक्खायय वि [प्रत्याख्यायक] त्याग करनेवाला ।

पच्चक्खाव सक [प्रत्या + ख्यापय्] त्याग कराना, किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना ।

पच्चक्खि वि [प्रत्यक्षिन्] प्रत्यक्ष ज्ञानवाला ।

पच्चक्खिय देखो पच्चक्खाय ।

पच्चक्खीकर सक [प्रत्यक्षी + कृ] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना ।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [प्रत्यक्षीकृत] प्रत्यक्ष किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ ।

पच्चक्खीभू अक [प्रत्यक्षी + भू] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना ।

पच्चक्खेय देखो पच्चक्खा का कृ. ।

पच्चग्ग वि [प्रत्यग्र] प्रधान, मुख्य । श्रेष्ठ, सुन्दर । नया ।

पच्चच्छिम देखो पच्चत्थिम ।

पच्चच्छिमा देखो पच्चत्थिमा ।

पच्चच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम दिशा-सम्बन्धी ।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो पच्चत्थिमुत्तरा ।

पच्चड अक [क्षर्] झरना, टपकना ।

पच्चड्ड सक [गम्] जाना, गमन करना ।

पच्चड्डिया स्त्री [दे. प्रत्यड्डिका] मल्लों का एक प्रकार का करण ।

पच्चणीय वि [प्रत्यनीक] विरोधी, दुश्मन ।

पच्चणुभव सक [प्रत्यनु + भू] अनुभव करना ।

पच्चणुहो देखो पच्चणुभव ।

पच्चत्त वि [प्रत्यक्त] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह ।

पच्चत्तर न [दे] खुशामद ।

पच्चत्थरण न [प्रत्यास्तरण] बिछौना । देखो पल्हत्थरण ।

पच्चत्थि वि [प्रत्यर्थिन्] प्रतिपक्षी, दुश्मन ।

पच्चत्थिम वि [पाश्चात्य, पश्चिम] पश्चिम दिशा तरफ का, पश्चिम का । न. पश्चिम दिशा ।

पच्चत्थिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा ।

पच्चत्थिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा का ।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [पश्चिमोत्तरा] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण ।

पच्चत्थुय वि [प्रत्यास्तृत] आच्छादित । बिछाया हुआ ।

पच्चद्ध न [पश्चार्ध] उत्तरार्ध ।

पच्चद्धचक्कवट्टि पुं [प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ।

पच्चप्पण न [प्रत्यर्पण] लौटा देना ।

पच्चप्पिण सक [प्रति + अर्पय्] वापस देना । सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना ।

पच्चबलोक्क वि [दे] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चब्भास पुं [प्रत्याभास] निगमन, प्रत्युच्चारण।

पच्चभिआण देखो पच्चभिजाण।

पच्चभिजाण सक [प्रत्यभि+ज्ञा] पहिचानना, पहिचान लेना।

पच्चभिजाणिअ वि [प्रत्यभिज्ञात] पहिचाना हुआ।

पच्चभिणाण न [प्रत्यभिज्ञान] पहिचान।

पच्चभिन्नाय देखो पच्चभिजाणिअ।

पच्चय पुं [प्रत्यय] प्रतीति, ज्ञान। निर्णय, निश्चय। हेतु। शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त-माष आदि का चर्वण वगैरह। ज्ञान का कारण। ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ। प्रत्यय-जनक। विश्वास, श्रद्धा। शब्द, आवाज। छिद्र। आधार, आश्रय। व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष।

पच्चल वि [दे] पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ। असहिष्णु।

पच्चलिउ } (अप) अ [प्रत्युत] वैपरीत्य,
पच्चल्लिउ } वरञ्च, वरन्।

पच्चवणद (शौ) वि [प्रत्यवनत] नमा हुआ।

पच्चवत्थय वि [प्रत्यवस्तृत] बिछाया हुआ। आच्छादित।

पच्चवत्थाण न [प्रत्यवस्थान] शङ्कापरिहार, समाधान। प्रतिवचन, खण्डन।

पच्चवर न [दे] मुसल।

पच्चवाय पुं [प्रत्यवाय] विघ्न, व्याघात। दोष, दूषण। पाप। दुःख, पीड़ा। नाश का कारण। अनर्थ।

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [प्रत्यवेक्षित] निरीक्षित।

पच्चह न [प्रत्यह] हररोज।

पच्चहिजाण } देखो पच्चभिजाण।
पच्चहियाण }

पच्चा स्त्री [दे] तृण-विशेष, बल्वज।

°पिच्चियय न [दे] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण।

पच्चा देखो पच्छा।

पच्चाअच्छ सक [प्रत्या+गम्] वापस आना।

पच्चाअद (शौ) देखो पच्चागय।

पच्चाइक्ख देखो पच्चक्ख = प्रत्या+ख्या।

पच्चाउट्टणया स्त्री [प्रत्यावर्त्तनता] अवाय—संशय-रहित निश्चयात्मक मति-ज्ञान।

पच्चाएस पुंन [प्रत्यादेश] दृष्टान्त। देखो पच्चादेस।

पच्चागय वि [प्रत्यागत] वापस आया हुआ। न. प्रत्यागमन।

पच्चाचक्ख सक [प्रत्या+चक्ष्] परित्याग करना।

पच्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापस ले आना।

पच्चाणि° } सक [प्रत्या+णी] वापस ले
पच्चाणी } आना।

पच्चाणीद (शौ) वि [प्रत्यानीत] वापस लाया हुआ।

पच्चाथरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर लड़ना।

पच्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत।

पच्चादेस पुं [प्रत्यादेश] निराकरण। देखो पच्चाएस।

पच्चापड अक [प्रत्या+पत्] लौटकर आ पड़ना।

पच्चामित्त पुंन [प्रत्यमित्र] दुश्मन। मित्र-शत्रु।

पच्चाय सक [ति+आयय्] प्रतीति कराना। विश्वास कराना। ज्ञान कराना।

पच्चाय° देखो पच्चाया।

पच्चायय वि [प्रत्यायक] निर्णय-जनक। विश्वास-जनक।

पच्चाया अक [प्रत्या+जन्] उत्पन्न होना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जन्म लेना ।

पच्चाया अक [प्रत्या + या] ऊपर देखो ।

पच्चायाइ स्त्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण ।

पच्चायाय वि [प्रत्यायात] उत्पन्न ।

पच्चार सक [उपा + लम्भ्] उलाहना देना ।

पच्चारण न [उपालम्भन] प्रतिभेद ।

पच्चारिअ वि [प्रचारित] चलाया हुआ ।

पच्चालिय वि [दे. प्रत्यार्दित] आर्द्र किया हुआ ।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रखकर खड़े रहनेवाले धानुष्क की स्थिति, धनुषधारियों का पैंतरा ।

पच्चावड पुं [प्रत्यावर्त्त] आवर्त्त के सामने का आवर्त्त, पानी का भँवर ।

पच्चावरण्ह पुं [प्रत्यापराह्ण] तीसरा पहर ।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित, सन्निकट ।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] सामीप्य ।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] अभिलाषा । निराशा के बाद की आशा । लोभ, लालच ।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त या क्य किया हुआ वस्तु का भक्षण करनेवाला ।

पच्चाह सक [प्रति + ब्रू] उत्तर देना ।

पच्चाहर सक [प्रत्या + हृ] उपदेश देना ।

पच्चाहुत्त क्रिवि [पश्चान्मुख] पीछे, पीछे की तरफ ।

पच्चिम देखो पच्छिम ।

पच्चुअ (दे) देखो पच्चुहिअ ।

पच्चुअआर देखो पच्चुवयार ।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन ।

पच्चुच्चार पुं [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण ।

पच्चुच्छुहणी स्त्री [दे] ताजी दारू ।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित ।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह ।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना ।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ ।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे आना ।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब ।

पच्चुत्थ वि [दे] फिर से बोया हुआ ।

पच्चुत्थय, पच्चुत्थुय } वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित ।

पच्चुद्धरिअ वि [दे] सम्मुखागत ।

पच्चुद्धार पुं [दे] सम्मुख आगमन ।

पच्चुप्पण्ण वि [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल-सम्बन्धी । पुं. वर्त्तमान काल । °नय पुं. वर्त्तमान वस्तु को ही सत्य माननेवाला पक्ष, निश्चय नय ।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापस आया हुआ ।

पच्चुब्भड वि [प्रत्युद्भट] अतिशय प्रबल ।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने ।

पच्चुल्लं अ [दे. प्रत्युत] उलटा ।

पच्चुवकार देखो पच्चुवयार ।

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना ।

पच्चुवगार, पच्चुवयार } पुं [प्रत्युपकार] उपकार के बदले उपकार ।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना । अवलोकन करना ।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्तुत, प्रक्षरित, अच्छी तरह चूने या टपकनेवाला ।

पच्चूढ न [दे] भोजन करने का पात्र, बड़ी थाली ।

पच्चूस [दे] देखो पच्चूह = (दे) ।

पच्चूस, पच्चूह } पुं [प्रत्यूष] प्रभात काल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चूह पुंन [प्रत्यूह] विघ्न।
पच्चूह पुं [दे] सूर्य।
पच्चेअ न [प्रत्येक] हर एक।
पच्चेड न [दे] मुसल।
पच्चेल्लिउ (अप) देखो पच्चल्लिउ।
पच्चोगिल सक [प्रत्यव + गिल्] आस्वादन करना।
पच्चोणामिणी स्त्री [प्रत्यवनामिनी] विद्या-विशेष जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं।
पच्चोणियत्त वि [प्रत्यवनिवृत्त] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ।
पच्चोणिवय अक [प्रत्यवनि + पत्] उछल कर नीचे गिरना।
पच्चोणी [दे] देखो पच्चोवणी।
पच्चोयड न [दे] तट के समीप का ऊँचा प्रदेश। वि. आच्छादित।
पच्चोयर सक [प्रत्यव + तॄ] नीचे उतरना।
पच्चोरुभ } सक [प्रत्यव + रुह्] नीचे
पच्चोरुह } उतरना।
पच्चोवणिअ वि [दे] सम्मुख आया हुआ।
पच्चोवणी स्त्री [दे] सम्मुख आगमन।
पच्चोसक्क अक [प्रत्यव + ष्वष्क्] नीचे उतरना। पीछे हटना।
पच्छ सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना।
पच्छ वि [पथ्य] रोगी का हितकारी आहार। हितकारक।
पच्छ न [पश्चात्] चरम, शेष। पीछे, पृष्ठ भाग। पश्चिम दिशा। °ओ अ [°तस्] पीछे, पीठ की ओर। °कम्म न [°कर्मन्] बाद की क्रिया। यतियों की भिक्षा का एक दोष, दातृ-कर्तृक दान देने के बाद की पात्र को साफ करना आदि क्रिया। °त्ताअ पुं [°ताप] अनुताप। °द्ध न [°अर्ध] उत्तरार्ध। °वत्थुक्क न [°वास्तुक] घर का पिछला हिस्सा। °याव पुं [°ताप] पश्चात्ताप। देखो पच्छा = पश्चात्।
पच्छइ } (अप) अ [पश्चात्] ऊपर देखो।
पच्छए } °ताव पुं [°ताप] अनुताप।
पच्छंद सक [गम्] जाना, गमन करना।
पच्छंभाग पुं [पश्चाद्भाग] दिवस का पिछला भाग। पुंन. चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र।
पच्छण स्त्रीन [प्रतक्षण] त्वक् का बारीक बिदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना।
पच्छण्ण वि [प्रच्छन्न] गुप्त, अप्रकट। °पइ पुं [°पति] जार।
पच्छद देखो पच्छय।
पच्छदण न [प्रच्छदन] आस्तरण, चादर—शय्या के ऊपर का आच्छादन वस्त्र।
पच्छय पुं [प्रच्छद] दुपट्टा, पिछौरी।
पच्छयण देखो पत्थयण।
पच्छलिउ (अप) देखो पच्चलिउ।
पच्छा अ [पश्चात्] अनन्तर। परलोक। पर-जन्म। पिछला भाग, पृष्ठ। चरम, शेष। पश्चिम दिशा। °उत्त वि [°आयुक्त] जिसका आयोजन पीछे से किया गया हो वह। °कड पुं [°कृत] साधुपन को छोड़कर फिर गृहस्थ बना हुआ। °कम्म देखो °पच्छकम्म। °णुताव पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप। °णुपुव्वी स्त्री [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम। °ताव पुं [°ताप] अनुताप। °ताविय वि [°तापिक] पश्चात्तापवाला। °निवाइ वि [निपातिन्] पीछे से गिर जानेवाला। चारित्र ग्रहण कर बाद में उससे च्युत होनेवाला। °भाग पुं पिछला भाग। °मुह वि [°मुख] पराङ्मुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह। °यव, °याव देखो °ताव। °यावि वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करनेवाला। °वाय पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन। पीछे का पवन। °संखडि स्त्री [दे. संस्कृति]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिछला संस्कार। मरण के उपलक्ष्य में ज्ञाति—कुटुम्बी वगैरह प्रभूत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई। °संथव पुं [°संस्तव] पिछला सम्बन्ध, स्त्री, पुत्री वगैरह का सम्बन्ध। जैन मुनियों के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष में अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना। °संथुय वि [°संस्तुत] पिछले सम्बन्ध से परिचित। °हुत्त वि [°दे] पीछे की तरफ का।

पच्छा स्त्री [पथ्या] हरीतकी।

पच्छाअ सक [प्र+छदय्] ढकना। छिपाना।

पच्छाअ वि [प्रच्छाय] प्रचुर छायावाला।

पच्छाग पुं [प्रच्छादक] पात्र बाँधने का कपड़ा।

पच्छाडिद (शौ) वि [प्रक्षालित] धोया हुआ।

पच्छाणिअ [दे] देखो पच्चोवणिअ।

पच्छाणुताविअ वि [पश्चादनुतापिक] पश्चात्ताप-युक्त, पछतावा करनेवाला।

पच्छायण न [पथ्यदन] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन।

पच्छायण न [प्रच्छादन] आच्छादन, ढकना। वि. आच्छादन करनेवाला। °या स्त्री [°ता] आच्छादन।

पच्छाल देखो पक्खाल।

पच्छि स्त्री [दे] पिटिका, पिटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष। °पिडय न [°पिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी।

पच्छि (अप) देखो पच्छइ।

पच्छित्त न [प्रायश्चित्त] पाप की शुद्धि करनेवाला कर्म। मन को शुद्ध करनेवाला कर्म।

पच्छित्ति वि [प्रायश्चित्तिन्] प्रायश्चित्त का भागी, दोषी।

पच्छिम न [पश्चिम] पश्चिम दिशा। वि. पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य। पिछला, बाद का। अन्तिम। °द्ध न [°ार्ध] उत्तरार्ध। °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल पर्वत।

पच्छिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा।

पच्छियापिडय देखो पच्छि-पिडय।

पच्छिल (अप) देखो पच्छिम।

पच्छुत्ताव पुं [पश्चादुत्ताप] पछतावा।

पच्छुत्ताविअ (अप)वि [पश्चात्तापित] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह।

पच्छेकम्म देखो पच्छ-कम्म।

पच्छेणय न [दे] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन-सामग्री, कलेवा।

पच्छोववण्णग } वि [पश्चादुपपन्न] पीछे से उत्पन्न।
पच्छोववन्नक }

पजंप सक [प्र+जल्प्] बोलना।

पजंपावण न [प्रजल्पन] बोलाना, कथन कराना।

पजणण वि [प्रजनन] उत्पादक। न. लिंग, पुरुष-चिह्न।

पजल अक [प्र+ज्वल्] अतिशय दग्ध होना। चमकना।

पजह सक [प्र+हा] त्याग करना।

पजाला स्त्री [प्रज्वाला] अग्नि-शिखा।

पजीवण न [प्रजीवन] आजीविका।

पजुत्त देखो पउत्त=प्रयुक्त।

पजूहिअ वि [प्रयूथिक] यूथ या समूह को दिया हुआ, याचक-गण को अर्पित।

पजेमण न [प्रजेमन] भोजन लेना।

पज्ज सक [पायय्] पिलाना, पान कराना।

पज्ज न [पद्य] छन्दो-बद्ध वाक्य।

पज्ज न [पाद्य] पाद-प्रक्षालन जल।

पज्ज देखो पज्जत्त।

पज्जंत पुं [पर्यन्त] सीमा, प्रान्त भाग।

पज्जण न [दे] पान, पीना।

पज्जणुओग } पुं [पर्यनुयोग] प्रश्न।
पज्जणुजोग }

पज्जण्ण देखो पजणण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जण्ण पुं [पर्जन्य] बादल ।

पज्जत वि [पर्याप्त] 'पर्याप्ति' वाला । समर्थ । लब्ध । यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय । न. तृप्ति । सामर्थ्य । निवारण । योग्यता । जिसके उदय से जीव अपनी अपनी 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म । °णाम न [°नामन्] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष ।

पज्जतर वि [दे] दलित, विदारित ।

पज्जत्त न [पर्याप्त] लगातार चौंतीस दिन का उपवास ।

पज्जत्तर [दे] देखो पज्जतर ।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] सामर्थ्य । जीव की वह शक्ति जिनके द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलों को ग्रहण करने तथा परिणमाने या पचाने की शक्ति । पूर्ण प्राप्ति । तृप्ति । पूर्त्ति, पूर्णता । अन्त, अवसान ।

पज्जन्न पुं [पर्जन्य] मेघ-विशेष जिसके एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिकनाहट रहती है ।

पज्जय पुं [दे. प्रार्यक] प्रपितामह ।

पज्जय पुं [पर्यय] उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म-निगोद के लब्धिअपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अंश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अंश बढ़ता है वह श्रुतज्ञान । देखो पज्जाय । °समास पुं. श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय ।

पज्जयण न [पर्ययन] निश्चय, अवधारण ।

पज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना ।

पज्जरय पुं [प्रजरक] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास । °मज्झ पुं [°मध्य] एक नरकावास । °ावट्ट पुं [°ावर्त्त] नरकावास-विशेष । °ासिट्ठ पुं [°ावशिष्ट] नरक-स्थान-विशेष ।

पज्जल देखो पजल ।

पज्जलण वि [प्रज्वलन] जलानेवाला ।

पज्जलिअ पुं [प्रज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान ।

पज्जलिय वि [प्रज्वलित] जलाया हुआ । देदीप्यमान ।

पज्जलीढ वि [प्रर्यवलीढ] भक्षित ।

पज्जव पुं [पर्यव] परिच्छेद, निर्णय । देखो पज्जाय । °कसिण न [°कृत्स्न] चतुर्दश पूर्व-ग्रन्थ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष । °जाय वि [°जात] भिन्न अवस्था को प्राप्त । ज्ञान आदि गुणोंवाला । न. विषयोपभोग का अनुष्ठान । °जाय वि [°यात] ज्ञान-प्राप्त । °ट्ठिय पुं [स्थित, °र्थिक, °ास्तिक] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़कर केवल पर्यायों को ही मुख्य माननेवाला पक्ष । °णय, पुं [°नय] वही अनन्तर उक्त अर्थ ।

पज्जवत्थाव सक [पर्यव + स्थापय्] अच्छी अवस्था में रखना । विरोध करना । प्रतिपक्ष के साथ वाद करना ।

पज्जवसाण न [पर्यवसान] अन्त, अवसान ।

पज्जवसिअ न [पर्यवसित] अवसान, अन्त ।

पज्जा देखो पण्णा ।

पज्जा स्त्री [पद्या] रास्ता ।

पज्जा स्त्री [दे] सीढ़ी ।

पज्जा स्त्री [पर्याय] अधिकार, प्रबन्ध-भेद ।

पज्जा देखो पया ।

पज्जाअर पुं [प्रजागर] जागरण, निद्रा का अभाव ।

पज्जाउल वि [पर्याकुल] व्याकुल ।

पज्जाभाय सक [पर्या + भाजय्] भाग करना ।

पज्जाय पुं [पर्याय] समान अर्थ का वाचक शब्द । पूर्ण प्राप्ति । पदार्थ धर्म, वस्तु-गुण । पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर । क्रम । प्रकार, भेद । अवसर । निर्माण । तात्पर्य, भावार्थ, रहस्य । देखो पज्जय तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जव।

पज्जाल सक [प्र+ज्वालय्] जलाना। सुलगाना।

पज्जिआ स्त्री [दे. प्रार्यिका] परनानी। परदादी।

पज्जुच्छुअ वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक।

पज्जुट्ठ वि [पर्युष्ट] फड़फड़ाया हुआ।

पज्जुणसर न [दे] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण।

पज्जुण्ण पुं [प्रद्युम्न] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। कामदेव। वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश। एक जैनमुनि। वि. श्रीमंत।

पज्जुत्त वि [प्रयुक्त] जटित, खचित। देखो पज्झुत्त।

पज्जुदास पुं [पर्युदास] निषेध।

पज्जुवट्ठा सक [पर्युप+स्था] उपस्थित होना।

पज्जुवट्ठिय वि [पर्युपस्थित] मौजूद, हाजिर, तत्पर।

पज्जुवास सक [पर्युप+आस्] सेवा करना। उपासना करना, भक्ति करना।

पज्जुवासय वि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला।

पज्जुसण
पज्जुसवण
पज्जुस्सवण
पज्जूसण } न. देखो पज्जुसणा।

पज्जुसणा स्त्री [पर्युषणा] देखो पज्जोसवणा।

पज्जुस्सुअ
पज्जूसुअ } वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक।

पज्जोअ पुं [प्रद्योत] प्रकाश, उद्द्योत। उज्जयिनी नगरी का एक राजा। °गर वि [°कर] प्रकाश-कर्त्ता।

पज्जोय सक [प्र+द्योतय्] प्रकाशित करना।

पज्जोयण पुं [प्रद्योतन] एक जैन आचार्य।

पज्जोसव अक [परि+वस्] वास करना, रहना। जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना।

पज्जोसवण न. देखो पज्जोसवणा।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्युषणा] एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना। वर्षा-काल। पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व। °कप्प पुं [°कल्प] पर्युषणा में करने-योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्योसवना, पर्युपशमना] ऊपर देखो।

पज्जोसविय वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ।

पज्झंझ अक [प्र+झञ्झ्] आवाज करना।

पज्झट्टिआ स्त्री [पज्झट्टिका] छन्द-विशेष।

पज्झर अक [क्षर्, प्र+क्षर्] झरना, टपकना।

पज्झर पुं [प्रक्षर] प्रवाह-विशेष।

पज्झल देखो पज्झर = क्षर्।

पज्झलिआ देखो पज्झट्टिआ।

पज्झाय न [प्रध्यात] अतिशय चिन्तन। वि. चिन्तित, सोचा हुआ।

पज्झुत्त वि [दे] खचित, जड़ित। देखो पज्जुत्त।

पझुंझ देखो पज्झंझ।

पटउडी स्त्री [पटकुटी] तम्बू, वस्त्र-गृह।

पटल देखो पडल = पटल।

पटह देखो पडह।

पटिमा (पै. चूपै) देखो पडिमा।

पटोला स्त्री. कोशातकी, क्षारवल्ली।

पट्ट सक [पा] पीना, पान करना।

पट्ट पुं. पहनने का कपड़ा। रथ्या, मुहल्ला। पाषाण आदि का तख्ता, फलक। ललाट पर से बाँधी जाती एक प्रकार की पगड़ी। पट्टा, किसी प्रकार का अधिकार-पत्र। रेशम। पाट, सन। रेशमी कपड़ा। सन का कपड़ा। सिंहासन, गद्दी, पाट। कलाबत्तू। पट्टी, फोड़ा आदि पर बाँधा जाता लम्बा वस्त्रांश, शाक-विशेष। °इल्ल पुं [°वत्] पटेल, गाँव का मुखिया। °उडी स्त्री [°कुटी] तम्बू,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्त्र-गृह। °करि पुं [°करिन्] प्रधान हस्ती। °कार पुं. तन्तुवाय, जुलाहा। °वासिआ स्त्री [°वासिता] एक शिरो-भूषण। °साला स्त्री [°शाला] उपाश्रय। °सुत्त न [°सूत्र] रेशमी सूता। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] प्रधान हाथी।

पट्टइल पुं [दे] पटेल, गाँव का मुखिया।

पट्टंसुअ न [पट्टांशुक] रेशमी वस्त्र। सन का वस्त्र।

पट्टग देखो पट्ट।

पट्टण न [पत्तन] नगर, शहर।

पट्टदेवी स्त्री [पट्टदेवी] पटरानी।

पट्टय देखो पट्ट।

पट्टसुत्त न [पट्टसूत्र] रेशमी वस्त्र।

पट्टाढा स्त्री [दे] पट्टा, घोड़े की पेटी, कसन।

पट्टिय वि [पट्टिक] पट्टे पर दिया जाता गाँव वगैरह।

पट्टिया स्त्री [पट्टिका] छोटा तख्ता, पाटी। देखो पट्टी।

पट्टिस पुं [दे. पट्टिश] एक प्रकार का हथियार।

पट्टी स्त्री. धनुर्यष्टि। हाथ पर की पट्टी।

पट्टुअ पुंन. देखो पट्टुया।

पट्टुया स्त्री [दे] पाद-प्रहार। देखो पड्डुआ।

पट्टुहिअ न [दे] कलुषित जल।

पट्ठ वि [प्रष्ठ] अग्रगामी। कुशल, निपुण। प्रधान, मुखिया।

पट्ठ वि[स्पृष्ट]जिसका स्पर्श किया गया हो वह।

पट्ठ न [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का भाग। तल, ऊपर का भाग। °चर वि. अनुयायी, अनुगामी।

पट्ठ वि [पृष्ट] जिसको पूछा गया हो वह। न. प्रश्न।

पट्ठव सक [प्र + स्थापय्] प्रस्थान कराना, भेजना। प्रवृत्ति कराना। प्रारम्भ करना। प्रकर्ष से स्थापना करना। प्रायश्चित्त देना। स्थिर करना। व्यवस्था करना।

पट्ठवग देखो पट्ठवय।

पट्ठवय वि [प्रस्थापक] प्रवर्त्तक। प्रारम्भ करनेवाला।

पट्ठविइया } स्त्री [प्रस्थापिता] प्रायश्चित-
पट्ठविया } विशेष, अनेक प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह।

पट्ठाअ देखो पट्ठाव।

पट्ठाण न [प्रस्थान] प्रयाण।

पट्ठाव देखो पट्ठव।

पट्ठि स्त्री. देखो पट्ठ = पृष्ठ। °मंस न [°मांस] पीठ का मांस।

पट्ठिअ वि [प्रस्थित] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात।

पट्ठिअ वि [दे] विभूषित।

पट्ठिउकाम वि [प्रस्थातुकाम] प्रयाण का इच्छुक।

पट्ठिसंग न [दे] ककुद, डिल्ला।

पट्ठी देखो पट्ठि।

पट्ठीवंस पुं [पृष्ठवंश] घर के मूल दो खम्भों पर तिरछा रखा जाता बड़ा खम्भा।

पठ देखो पढ।

पठग देखो पाढग।

पड अक [पत्] पड़ना, गिरना।

पड पुं [पट] वस्त्र। °कार देखो °गार। °कुडी स्त्री [°कुटी]तम्बू। °गार पुं [°कार] तन्तुवाय। °बुद्धि वि. प्रभूत सूत्रार्थों को ग्रहण करने में समर्थ बुद्धिवाला। °मंडव पुं [°मण्डप]तम्बू, वस्त्र-मण्डप। °मा वि [°वत्] पटवाला, वस्त्रवाला। °वास पुं. वस्त्र में डाला जाता कुंकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ। °साडय पुं [°शाटक] कपड़ा। धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र। धोती और दुपट्टा।

पडंचा स्त्री [दे. प्रत्यञ्चा] धनुष की डोरी।

पडंसुअ देखो पडिसुद।

पडंसुआ स्त्री [प्रतिश्रुत्] प्रतिध्वनि। प्रतिज्ञा।

पडंसुआ स्त्री [दे] धनुष की डोरी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडंसुत्त देखो पडिंसुद ।
पडच्चर पुं [दे] साला जैसा विदूषक आदि ।
पडच्चर पुं [पटच्चर] चोर ।
पडज्झमाण देखो पडह = प्र+दह् का कवकृ. ।
पडण न [पतन] पात, गिरना ।
पडणीअ वि [प्रत्यनीक] प्रतिपक्षी ।
पडपुत्तिया स्त्री [पटपुत्रिका] छोटा वस्त्र, रुमाल ।
पडम देखो पढम ।
पडल न [पटल] समूह । जैन साधुओं का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खण्ड ।
पडल न [दे] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाए जाते हैं ।
पडलग, पडलय } स्त्रीन [दे. पटलक] गठरी ।
पडवा स्त्री [दे] पट-कुटी, पट-मण्डप, तम्बू ।
पडह सक [प्र + दह्] जलाना ।
पडह पुं [पटह] नगाड़ा, ढोल ।
पडहत्थ वि [दे] पूर्ण भरा हुआ ।
पडहिय पुं [पाटहिक] ढोली ।
पडहिया स्त्री [पटहिका] छोटा ढोल ।
पडाअ देखो पलाय = परा + अय् ।
पडाइअ वि [पलायित] भागा हुआ ।
पडाइया स्त्री [पताकिका] छोटी पताका, अन्तर-पताका ।
पडाग पुं [पटाक, पताक] ध्वजा ।
पडागा, पडाया } स्त्री [पताका] ध्वज । °इपडाग पुं [°तिपताक] मत्स्य की एक जाति । पताका के ऊपर की पताका । °हरण न. विजय-प्राप्ति ।
पडागार न. नौका में लगनेवाला वस्त्र ।
पडायाण देखो पल्लाण ।
पडायाणिय वि [पर्याणित] जिस पर पर्याण बाँधा गया हो वह ।
पडाली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणी । घर के ऊपर की चटाई आदि की कच्ची छत ।
पडास देखो पलास ।
पडि वि [पटिन्] वस्त्रवाला ।
पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय— प्रकर्ष । सम्पूर्णता । विरोध । विशेष, विशिष्टता । वीप्सा, व्याप्ति । वापस, पीछे । सम्मुखता । प्रतिदान, बदला । फिर से । प्रतिनिधिपन । निषेध । प्रतिकूलता, विपरीतता । स्वभाव । सामीप्य । आधिक्य, अतिशय । सादृश्य । लघुता, छोटाई । श्लाघा । साम्प्रतिकता, वर्तमानता । निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है ।
पडि देखो परि ।
पडिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त ।
पडिअ वि [पतित] गिरा हुआ । जिसने चलने को प्रारम्भ किया हो वह ।
पडिअंकिअ वि [प्रत्यङ्कित] विभूषित । उपलिप्त ।
पडिअंतअ पुं [दे] नौकर ।
पडिअग्ग सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे जाना ।
पडिअग्ग सक [प्रति + जागृ] सम्हालना । भक्ति करना । शुश्रूषा करना ।
पडिअग्गिअ वि [दे] परिभुक्त । जिसको बधाई दी गयी हो वह । पालित, रक्षित ।
पडिअज्झअ पुं [दे] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु ।
पडिअट्टलिअ वि [दे] घिसा हुआ ।
पडिअत्त देखो परि + वत्त = परि + वृत् ।
पडिअत्तण न [परिवर्त्तन] फेरफार, हेरफेर ।
पडिअमित्त पुं [प्रत्यमित्र] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे से जो शत्रु हुआ हो वह ।
पडिअम्मिय वि [प्रतिकर्मित] विभूषित ।
पडिअर सक [प्रति + चर्] बीमार की सेवा करना । आदर करना । निरीक्षण करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिहार करना।

पडिअर सक [प्रति + कृ] बदला चुकाना। इलाज करना। स्वीकार करना।

पडिअर पुं [दे] चुल्हे का मूल भाग।

पडिअर पुं [परिकर] परिवार।

पडिअरग वि [प्रतिचारक] सेवा -शुश्रूषा करनेवाला।

पडिअरणा स्त्री[प्रतिचरणा] बीमार की सेवा-शुश्रूषा। भक्ति, आदर, सत्कार। आलोचना, निरीक्षण। प्रतिक्रमण, पाप-कर्म से निवृत्ति। सत्-कार्य में प्रवृत्ति।

पडिअलि वि [दे] त्वरित, वेग-युक्त।

पडिआइय सक [प्रत्या + पा] फिर से पान करना।

पडिआइय सक [प्रत्या + दा] फिर से ग्रहण करना।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] वापस आया हुआ, लौटा हुआ। न. प्रत्यागमन, वापस आना।

पडिआयण न [प्रत्यापन] फिर से पान।

पडिआयण न [प्रत्यादान] फिर से ग्रहण।

पडिआर पुं [प्रतिकार] चिकित्सा। बदला, शोध पूर्वाचरित कर्म का अनुभव।

पडिआर पुं [प्रत्याकार] तलवार की म्यान।

पडिआर पुं [प्रतिचार] सेवा-शुश्रूषा।

पडिआरय वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला।

पडिइ सक [प्रति + इ] पीछे लौटना, वापस आना।

पडिइ स्त्री [पतिति] पतन, पात।

पडिइंद पुं [प्रतीन्द्र] देव-राज इन्द्र। इन्द्र के तुल्य वैभववाला देव। वानर-वंश के एक राजा का नाम।

पडिइंधण न [प्रतीन्धन] इन्धनास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र।

पडिइक्क देखो पडिक्क।

पडिउंचण न [दे] अपकार का बदला।

पडिउंबण न [परिचुम्बन] संगम, संयोग।

पडिउच्चार सक [प्रत्युत् + चारय्] उच्चारण करना, बोलना।

पडिउज्जम अक [प्रत्युद् + यम्] सम्पूर्ण प्रयत्न करना।

पडिउट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह।

पडिउण्ण देखो परिपुण्ण।

पडिउत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब।

पडिउत्तरण न [प्रत्युत्तरण] पार उतरना।

पडिउत्ति स्त्री [दे] खबर, समाचार।

पडिउत्थ वि [पर्युषित] सम्पूर्ण रूप से अवस्थित।

पडिउद्ध वि [प्रतिबुद्ध] जागृत। प्रकाश-युक्त।

पडिउवयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का बदला, प्रतिफल।

पडिउस्सस अक [प्रत्युत् + श्वस्] पुनर्जीवित होना।

पडिऊल देखो पडिकूल।

पडिएत्तए देखो पडिइ का हेकृ.।

पडिएल्लिअ वि [दे] कृतार्थ।

पडिओसह न [प्रत्यौषध] एक औषध का प्रतिपक्षी औषध।

पडिंसुआ देखो पडंसुआ = प्रतिश्रुत्।

पडिंसुद वि [प्रतिश्रुत] स्वीकृत।

पडिकंटय वि [प्रतिकण्टक] प्रतिस्पर्धी।

पडिकंत देखो पडिक्कंत।

पडिकत्तु वि [प्रतिकर्तृ] इलाज करनेवाला।

पडिकप्प सक [प्रति + कृप्] सजावट करना।

पडिकम देखो पडिक्कम।

पडिकमय न. देखो पडिक्कमय।

पडिकम्म न [प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्] देखो परिकम्म।

पडिकय वि [प्रतिकृत] जिसका बदला चुकाया गया हो वह। न. प्रतीकार, बदला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिकाउं } पडिअर = प्रति + कृ के
पडिकाऊण } कृदन्त ।

पडिकामणा देखो पडिक्कामणा ।

पडिकाय पुं [प्रतिकाय] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा ।

पडिकिदि स्त्री [प्रतिकृति] इलाज । बदला । प्रतिबिम्ब, मूर्त्ति ।

पडिकिय न [प्रतिकृत] ऊपर देखो ।

पडिकिरिया स्त्री [प्रतिक्रिया] प्रतीकार, बदला ।

पडिकुट्ठ } वि [प्रतिकुष्ट] निषिद्ध ।
पडिकुट्ठिल्लग } प्रतिकूल ।

पडिकुट्ठेल्लग देखो पडिकुट्ठिल्लग ।

पडिकूड देखो पडिकूल = प्रतिकूल ।

पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना ।

पडिकूल वि [प्रतिकूल] विपरीत । अनभिमत । विपक्ष ।

पडिकूवग पुं [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप ।

पडिकेसव पुं [प्रतिकेशव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ।

पडिकोस सक [प्रति + क्रुश्] आक्रोश करना, कोसना, शाप या गाली देना ।

पडिकोह पुं [प्रतिक्रोध] गुस्सा ।

पडिक्क न [प्रत्येक] हर एक ।

पडिक्कंत वि [प्रतिक्रान्त] पीछे हटा हुआ । निवृत्त ।

पडिक्कम अक [प्रति + क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना ।

पडिक्कम पुं [प्रतिक्रम] देखो पडिक्कमण ।

पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] निवृत्ति, व्यावर्त्तन । प्रमाद-वश शुभ योग से गिर कर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना । अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन । मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान किए हुए पाप का पश्चात्ताप । जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान ।

पडिक्कमय वि [प्रतिक्रामक] प्रतिक्रमण करनेवाला ।

पडिक्कमिउं देखो पडिक्कम । °काम वि. प्रतिक्रमण करने की इच्छावाला ।

पडिक्कय पुं [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार ।

पडिक्कामणा स्त्री [प्रतिक्रमणा] देखो पडिक्कमण ।

पडिक्कूल देखो पडिकूल ।

पडिक्ख सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना । अक. स्थिति करना ।

पडिक्खअ वि [प्रतीक्षक] बाट जोहनेवाला ।

पडिक्खंभ पुं [प्रतिस्तम्भ] आगल ।

पडिक्खण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा ।

पडिक्खर वि [दे] क्रूर । प्रतिकूल ।

पडिक्खल अक [प्रति + स्खल्] हटना । गिरना । रुकना । सक. रोकना ।

पडिक्खलण न [प्रतिस्खलन] पतन । अवरोध ।

पडिक्खलिअ वि [प्रतिस्खलित] परावृत्त, पीछे हटा हुआ । रुका हुआ । देखो पडिखलिअ ।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] स्थापित ।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित ।

पडिखंध न [दे] जल-वहन, जल भरने का दृति आदि पात्र ।

पडिखंधी स्त्री [दे] ऊपर देखो ।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुआ ।

पडिखल देखो पडिक्खल ।

पडिखिज्ज अक [परि + खिद्] खिन्न होना, क्लान्त होना ।

पडिगमण न [प्रतिगमन] व्यावर्तन, पीछे लौटना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिगय पुं [प्रतिगज] प्रतिपक्षी हाथी ।
पडिगय पुं [प्रतिगत] पीछे लौटा हुआ ।
पडिगह देखो पडिग्गह ।
पडिगाह सक [प्रति + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना ।
पडिगाहग वि [प्रतिग्राहक] ग्रहण करनेवाला ।
पडिग्गह पुं [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] पात्र, भाजन । वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म-दल परिणत होता है । °धारि वि [°धारिन्] पात्र रखनेवाला ।
पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्] पात्रवाला ।
पडिग्गहिद (शौ) वि [प्रतिगृहित, परिगृहीत] स्वीकृत ।
पडिग्गाह देखो पडिगाह ।
पडिग्गाह सक [प्रति + ग्राहय्] ग्रहण कराना ।
पडिग्गाहय वि [प्रतिग्राहक] वापस लेनेवाला ।
पडिग्घाय पुं [प्रतिघात] निरोध, अटकाव । विनाश ।
पडिघाय पुं [प्रतिघात] नाश, विनाश । निराकरण, निरसन ।
पडिघायग वि [प्रतिघातक] प्रतिघात करनेवाला ।
पडिघोलिर वि [प्रतिघूर्णितृ] डोलनेवाला, हिलनेवाला ।
पडिचंद पुं [प्रतिचन्द्र] द्वितीय चन्द्र जो उत्पात आदि का सूचक है ।
पडिचक्क न [प्रतिचक्र] अनुरूप चक्र-समुदाय । देखो पडियक्क = प्रतिचक्र ।
पडिचर देखो पडिअर = प्रति = चर् ।
पडिचर सक [प्रति + चर्] परिभ्रमण करना ।
पडिचरग पुं [प्रतिचरक] जासूस ।
पडिचरणा देखो पडिअरणा ।
पडिचार पुं [प्रतिचार] कला-विशेष । ग्रह आदि की गति का परिज्ञान । रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान ।
पडिचारय पुंस्त्री [प्रतिचारक] नौकर ।
पडिचोइय वि [प्रतिचोदित] प्रेरित । प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह ।
पडिचोएत्तु वि [प्रतिचोदयितृ] प्रेरक ।
प्रतिचोय सक [प्रति + चोदय्] प्रेरणा करना ।
पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] प्रेरणा । निर्भर्त्सना, निष्ठुरता से प्रेरणा ।
पडिच्चारग देखो पडिचारय ।
पडिच्छ देखो पडिक्ख ।
पडिच्छ सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना ।
पडिच्छंद पुंन [प्रतिच्छन्द] मूर्त्ति, प्रतिबिम्ब । तुल्य, समान । °किय वि [°कृत] समान किया हुआ ।
पडिच्छंद पुं [दे] मुख ।
पडिच्छग वि [प्रत्येषक] ग्रहण करनेवाला ।
पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट ।
पडिच्छण न [प्रत्येषण] आदान । उत्सारण, विनिवारण ।
पडिच्छण्ण वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित, ढका हुआ ।
पडिच्छय पुं [दे] समय, काल ।
पडिच्छय देखो पडिच्छग ।
पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडिच्छायण ।
पडिच्छा स्त्री [प्रतीच्छा] ग्रहण, अंगीकार ।
पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन-वस्त्र । आच्छादन, आवरण ।
पडिच्छाया स्त्री [प्रतिच्छाया] परछाई ।
पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] गृहीत, स्वीकृत । विशेष रूप से वाञ्छित ।
पडिच्छिआ स्त्री [दे] प्रतिहारी । चिरकाल से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्यायी हुई भैंस।

पडिच्छिर वि [प्रतीक्षितृ] बाट देखनेवाला।

पडिच्छिय वि [प्रातीच्छिक] अपने दीक्षा-गुरु की आज्ञा लेकर दूसरे गच्छ के आचार्य के पास उनकी अनुमति से शास्त्र पढ़नेवाला मुनि।

पडिच्छिर वि [दे] सदृश।

पडिछंद देखो पडिच्छंद।

पडिछा स्त्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, बाट।

पडिछाया देखो पडिच्छाया।

पडिजंप सक [प्रति + जल्प्] उत्तर देना।

पडिजग्ग देखो पडिजागर = प्रति + जागृ।

पडिजग्गय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला।

पडिजग्गिय वि [प्रतिजागृत] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह।

पडिजागर सक [प्रति + जागृ] सेवा-शुश्रूषा करना, निर्वाह करना, निभाना। गवेषणा करना। चिकित्सा करना।

पडिजागर पुं [प्रतिजागर] सेवा-शुश्रूषा। चिकित्सा।

पडिजायणा स्त्री [प्रतियातना] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा।

पडिजुवइ स्त्री [प्रतियुवति] स्व-समान अन्य युवति।

पडिजोग पुं [प्रतियोग] कार्मण आदि योग का प्रतिघातक योग, चूर्ण-विशेष।

पडिट्ठ वि [पटिष्ठ] अत्यन्त निपुण।

पडिट्ठविअ वि [परिस्थापित] संस्थापित।

पडिट्ठविअ वि [प्रतिष्ठापित] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह।

पडिट्ठा देखो पइट्ठा।

पडिट्ठाव सक [प्रति + स्थापय्] प्रतिष्ठित करना।

पडिट्ठावअ देखो पइट्ठावय।

पडिट्ठाविद (शौ) देखो पइट्ठाविय।

पडिट्ठिअ देखो पइट्ठिय।

पडिठाण न [प्रतिस्थान] हर जगह।

पडिण देखो पडीण।

पडिणव वि [प्रतिनव] नया, नूतन।

पडिणिअंसण न [दे] रात में पहनने का वस्त्र।

पडिणिअत्त अक [प्रतिनि + वृत्] पीछे लौटना।

पडिणिअत्त } वि [प्रतिनिवृत्त] पीछे लौटा हुआ।
पडिणिउत्त }

पडिणिकास वि [प्रतिनिकाश] तुल्य।

पडिणिक्खम अक [प्रतिनिर् + क्रम्] बाहर निकलना।

पडिणिग्गच्छ अक [प्रतिनिर् + गम्] बाहर निकलना।

पडिणिज्जाय सक [प्रतिनिर् + यापय्] अर्पण करना।

पडिणिभ वि [प्रतिनिभ] सदृश, बराबर। वादी की प्रतिज्ञा का खण्डन करने के लिये प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति।

पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत्।

पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त।

पडिणिविट्ठ वि [प्रतिनिविष्ट] द्विष्ट, द्वेष-युक्त।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत्।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त।

पडिणिव्वत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत्।

पडिणिसंत वि [प्रतिनिश्रान्त] विश्रान्त। निलीन।

पडिणीय न [प्रत्यनीक] प्रतिपक्ष की सेना। वि. प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करनेवाला।

पडिण्णत्त वि [प्रतिज्ञप्त] उक्त, कथित।

पडिण्णा देखो पइण्णा।

पडिण्णाद देखो पइण्णाद।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडितंतवि[प्रतितन्त्र]स्व-शास्त्र में प्रसिद्ध अर्थ।
पडितणु स्त्री [प्रतितनु] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब।
पडितप्प सक [प्रतितर्पय्] भोजनादि से तृप्त करना।
पडितप्प अक [प्रति + तप्] चिन्ता करना। खबर रखना।
पडितुट्ठ देखो परितुट्ठ।
पडितुल्ल वि [प्रतितुल्य] समान।
पडित्त देखो पलित्त = प्रदीप्त।
पडित्ताण देखो परित्ताण।
पडित्थिर वि [दे] सदृश।
पडित्थिर वि [परिस्थिर] स्थिर।
पडिथद्ध वि [प्रतिस्तब्ध] गर्वित।
पडिदंड पुं [प्रतिदण्ड] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड।
पडिदंस सक [प्रति + दर्शय्] दिखलाना।
पडिदा सक [प्रति + दा] पीछे देना, दान का बदला देना।
पडिदासिया स्त्री [प्रतिदासिका] दासी।
पडिदिसा, पडिदिसि स्त्री [प्रतिदिश्] विदिशा विदिक्।
पडिदुगंछि वि [प्रतिजुगुप्सिन्] निन्दा करनेवाला। परिहार करनेवाला।
पडिदुवार न [प्रतिद्वार] हर एक द्वार। छोटा द्वार।
पडिधि देखो परिहि।
पडिनमुक्कार पुं [प्रतिनमस्कार] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम।
पडिनिक्खंत वि [प्रतिनिष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ।
पडिनियत्ति स्त्री [प्रतिनिवृत्ति] वापस लौटना, प्रत्यावर्त्तन।
पडिनिवेस पुं [प्रतिनिवेश] आग्रह, कदाग्रह। गाढ़ अनुशय, पश्चात्ताप।
पडिनिसिद्ध वि [प्रतिनिषिद्ध] निवारित, हटाया हुआ।
पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञपय्] कहना।
पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञापय्] प्रतिज्ञा कराना। नियम दिलाना।
पडिपंथपुं[प्रतिपथ]विपरीत मार्ग। प्रतिकूलता।
पडिपंथि वि [प्रतिपन्थिन्]प्रतिकूल, विरोधी।
पडिपक्ख देखो पडिवक्ख।
पडिपडिय वि[प्रतिपतित]फिर से गिरा हुआ।
पडिपत्ति, पडिपद्दि देखो पडिवत्ति।
पडिपह पुं [प्रतिपथ] उन्मार्ग, विपरीत रास्ता। न. अभिमुख, सम्मुख।
पडिपाअ सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, कथन करना।
पडिपाय पुं [प्रतिपाद] मुख्य पाद को सहायता पहुँचानेवाला पाद।
पडिपाहुड न [प्रतिप्राभृत] बदले की भेंट।
पडिपिडिअ वि [दे] बढ़ा हुआ।
पडिपिल्ल सक [प्रति + क्षिप,प्रतिप्र + ईरय्] प्रेरणा करना।
पडिपिल्लण न [प्रतिप्रेरण] प्रेरणा। ढक्कन, पिधान। वि. प्रेरणा करनेवाला।
पडिपिहा देखो पडिपेहा।
पडिपीलण न [प्रतिपीडन] विशेष पीडन, अधिक दबाव।
पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ्] पृच्छा करना। फिर से पूछना। प्रश्न का जवाब देना।
पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छन] नीचे देखो।
पडिपुच्छिअ वि [प्रतिपृष्ट] जिससे प्रश्न किया गया हो वह।
पडिपुज्जिय वि [प्रतिपूजित] पूजित, अर्चित।
पडिपुत्त पुं. [प्रतिपुत्र] पोता। देखो पडिपोत्तय।
पडिपुन्न वि [प्रतिपूर्ण] परिपूर्ण, सम्पूर्ण।
पडिपूइय देखो पडिपुज्जिय।
पडिपूयग, पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] पूजा करनेवाला।
पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] प्रत्युपकार-कर्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिपूरिय वि [प्रतिपूरित] पूर्ण किया हुआ।
पडिपेल्लण देखो पडिपिल्लण।
पडिपेल्लण न [परिप्रेरण] देखो पडिपिल्लण।
पडिपेल्लिय वि [प्रतिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह।
पडिपेहा सक [प्रतिपि + धा] ढकना, आच्छादन करना।
पडिपोत्तय पुं [प्रतिपुत्रक] नप्ता, नाती। देखो पडिपुत्तय।
पडिप्पह देखो पडिपह।
पडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला।
पडिप्फलणा स्त्री [प्रतिफलना] स्खलना। संक्रमण।
पडिप्फलिअ } वि [प्रतिफलित] प्रतिबिम्बित, संक्रान्त।
पडिफलिअ }
पडिबंध सक [प्रति + बन्ध्] रोकना, अटकाना। वेष्टन करना। सेकना।
पडिबंध पुं [प्रतिबन्ध] व्याप्ति, नियम। रुकावट। विघ्न, अन्तराय। बहुमान। स्नेह, प्रीति। आसक्ति। वेष्टन।
पडिबंधअ } वि [प्रतिबन्धक] रोकनेवाला।
पडिबंधग }
पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] संरुद्ध। उपजनित, उत्पादित। संसक्त, संबद्ध, संलग्न, आसक्त। सामने बँधा हुआ। व्यवस्थित। वेष्टित। समीप में स्थित। नियत, व्याप्त।
पडिबाह सक [प्रति + बाध्] रोकना।
पडिबाहिर न [प्रतिबाह्य] अनधिकारी, अयोग्य।
पडिबिंब न [प्रतिबिम्ब] परछाँही। प्रतिमा, प्रतिमूर्ति।
पडिबुज्झ अक [प्रति + बुध्] बोध पाना। जागृत होना।
पडिबुद्ध वि [प्रतिबुद्ध] बोध-प्राप्त। जागृत। न. प्रतिबोध। पुं. एक राजा का नाम।
पडिबूहणया स्त्री [प्रतिबृंहणा] उपचय, पुष्टि।
पडिबोध देखो पडिबोह = प्रतिबोध।
पडिबोह सक [प्रति + बोधय्] जगाना। बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना।
पडिबोहग वि [प्रतिबोधक] बोध देनेवाला। जगानेवाला।
पडिभंग पुं [प्रतिभंग] भंग, विनाश।
पडिभंज अक [प्रति + भञ्ज्] भाँगना, टूटना।
पडिभंड न [प्रतिभाण्ड] एक वस्तु को बेचकर उसके बदले खरीदी जाती चीज।
पडिभंस सक [प्रति + भ्रंशय्] भ्रष्ट करना। च्युत करना।
पडिभग्ग वि [प्रतिभग्न] पलायित।
पडिभड पुं [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा।
पडिभण सक [प्रति + भण्] उत्तर देना।
पडिभणिय वि [प्रतिभणित] निराकृत। न. प्रत्युत्तर, निराकरण।
पडिभम सक [प्रति, परि + भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना।
पडिभय न [प्रतिभय] भय, डर।
पडिभा अक [प्रतिभा] मालूम होना।
पडिभाग पुं [प्रतिभाग] अंश, भाग। प्रतिबिम्ब।
पडिभास अक [प्रति + भास्] मालूम होना।
पडिभास सक [प्रति + भाष्] उत्तर देना। बोलना, कहना।
पडिभिण्ण वि [प्रतिभिन्न] सम्बद्ध, संलग्न।
पडिभिन्न वि [प्रतिभिन्न] भेद-प्राप्त।
पडिभुअंग पुं [प्रतिभुजङ्ग] प्रतिपक्षी भुजंग—वेश्या लम्पट।
पडिभू पुं [प्रतिभू] जामिनदार।
पडिभेअ पुं [दे. प्रतिभेद] उपालम्भ, निन्दा।
पडिभोइ वि [प्रतिभोगिन्] परिभोग करनेवाला।
पडिम वि [प्रतिम] समान, तुल्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिम° देखो पडिमा। °ट्ठाइ वि [°स्थायिन्] कायोत्सर्ग में रहनेवाला। नियम-विशेष में स्थित।

पडिमंत सक [प्रति + मन्त्रय्] उत्तर देना।

पडिमल्ल पुं [प्रतिमल्ल] प्रतिपक्षी मल्ल।

पडिमा स्त्री [प्रतिमा] मूर्ति, प्रतिबिम्ब। कायोत्सर्ग। जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष। °गिह न [°गृह] मन्दिर। देखो पडिम°।

पडिमाण न [प्रतिमान] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण।

पडिमाण न [प्रतिमान] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब।

पडिमि } सक [प्रति + मा] तौल करना, पडिमिण } माप करना। गिनती करना।

पडिमुंच सक [प्रति + मुच्] छोड़ना।

पडिमुंडणा स्त्री[प्रतिमुण्डना]निषेध, निवारण।

पडिमुक्क वि [प्रतिमुक्त] छोड़ा हुआ।

पडिमोअणा स्त्री [प्रतिमोचना] छुटकारा।

पडिमोक्खण न [प्रतिमोचन] छुटकारा।

पडिमोयग वि[प्रतिमोचक]छुटकाराकरनेवाला।

पडिमोयण देखो पडिमोक्खण।

पडियक्क देखो पडिक्क।

पडियक्क न [प्रतिचक्र] युद्धकला-विशेष।

पडियग्गण न [प्रतिजागरण] सम्हाल, खबर।

पडियच्च देखो पत्तिअ = प्रति + इ।

पडियरण न [प्रतिकरण] प्रतीकार, इलाज।

पडियरिअ वि [प्रतिचरित] सेवित, सेवा किया हुआ।

पडिया स्त्री [प्रतिज्ञा] उद्देश्य। अभिप्राय।

पडिया स्त्री [पटिका] वस्त्र-विशेष।

पडियाइक्ख सक[प्रत्या + ख्या]त्याग करना।

पडियाणंद पुं [प्रत्यानन्द] बहुत आनन्द।

पडियाणय न [दे. पर्याणक] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण।

पडियाणय न [दे. पटतानक, पर्याणक] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुड़सवारी का उपकरण।

पडियारणा स्त्री [प्रतिवारणा] निषेध।

पडियासूर अक [दे] चिढ़ना, गुस्सा होना।

पडिरअ देखो पडिरव।

पडिरंजिअ वि [दे] भग्न, टूटा हुआ।

पडिरक्खिय वि [प्रतिरक्षित] जिसकी रक्षा की गयी हो वह।

पडिरव पुं [प्रतिरव] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।

पडिराय पुं [प्रतिराग] रक्तपन।

पडिरिग्गअ [दे] देखो पडिरंजिअ।

पडिरु अक [प्रति + रु] प्रतिध्वनि करना।

पडिरुंध } सक [प्रति + रुध्] रोकना। पडिरुंभ } व्याप्त करना।

पडिरुद्ध वि [प्रतिरुद्ध] अटकाया हुआ।

पडिरूअ } वि [प्रतिरूप] मनोहर। प्रशस्त पडिरूव } रूपवाला, श्रेष्ठ आकृतिवाला। नूतन रूपवाला। योग्य। सदृश, समान। समान रूपवाला। न. प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति। समान आकृति। पुं. भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र। विनय का एक भेद।

पडिरूवंसि वि [प्रतिरूपिन्] रमणीय।

पडिरूवग पुंन [प्रतिरूपक] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा।

पडिरूवणया स्त्री [प्रतिरूपणता] सादृश्य। समान वेष-धारण।

पडिरूवा स्त्री [प्रतिरूपा] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम।

पडिरोव पुं [प्रतिरोप] पुनरारोपण।

पडिरोह पुं [प्रतिरोध] रुकावट, रोकना।

पडिलंभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना, लाभ होना।

पडिलग्ग वि [प्रतिलग्न] लगा हुआ, सम्बद्ध।

पडिलग्गल न [दे] वल्मीक।

पडिलभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना।

पडिलाभ } सक [प्रति + लाभय्, लम्भय्] पडिलाह } साधु आदि को दान देना।

पडिलिहिअ वि [प्रतिलिखित] लिखा हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिलीण वि [प्रतिलीन] अत्यन्त लीन ।
पडिलेह सक [प्रति + लेखय्] निरीक्षण करना, देखना । विचार करना । निरूपण करना । अवलोकन करना ।
पडिलेहग देखो पडिलेहय ।
पडिलेहणी स्त्री [प्रतिलेखनी] साधु का एक उपकरण ।
पडिलेहय वि [प्रतिलेखक] निरीक्षक, देखनेवाला ।
पडिलोम वि [प्रतिलोम] प्रतिकूल । विपरीत । न. पश्चादानुपूर्वी, उलटा-क्रम । उदाहरण का एक दोष । अपवाद ।
पडिलोमइत्ता अ [प्रतिलोमयित्वा] वाद-विशेष, वादसभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ ।
पडिल्ली स्त्री [दे] वृति, बाड़ । यवनिका ।
पडिव देखो पलीव = प्र = दीपय् ।
पडिवइर न [प्रतिवैर] वैर का बदला ।
पडिवई देखो पडिवया ।
पडिवंचण न [प्रतिवञ्चन] बदला ।
पडिवंथ देखो पडिपंथ ।
पडिवंध देखो पडिबंध ।
पडिवंस पुं [प्रतिवंश] छोटा बाँस ।
पडिवक्क सक [प्रति + वच्] प्रत्युत्तर देना ।
पडिवक्ख पुं [प्रतिपक्ष] दुश्मन; विरोधी । छन्द-विशेष । विपर्यय, वैपरीत्य ।
पडिवक्खिय वि [प्रतिपक्षिक] विरुद्ध-पक्षवाला, विरोधी ।
पडिवग्ग सक [प्रति + व्रज्] वापस जाना ।
पडिवच्छ देखो पडिवक्ख ।
पडिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना । प्रतिपादन करना ।
पडिवज्जण न [प्रतिपादन] स्वीकार करवाना ।
पडिवज्जय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करनेवाला ।
पडिवज्जावण न[प्रतिपादन]स्वीकार कराना ।
पडिवट्टअ न [प्रतिपट्टक] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।
पडिवड्ढावअ वि [प्रतिवर्धापक] बधाई देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देनेवाला । बधाई के बदले में बधाई देनेवाला ।
पडिवण्ण वि [प्रतिपन्न] प्राप्त । अंगीकृत । आश्रित । जिसने स्वीकार किया हो वह ।
पडिवत्त पुं [परिवर्त्त] परिवर्त्तन ।
पडिवत्तण देखो पडिअत्तण ।
पडिवत्ति स्त्री [प्रतिपत्ति] परिच्छित्ति । प्रकृति, प्रकार । प्रवृत्ति, खबर । ज्ञान । आदर, गौरव । स्वीकार । प्राप्ति । मतान्तर । अभिग्रह-विशेष । भक्ति, सेवा । परिपाटी क्रम । श्रुत-विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना । °समास पुं. श्रुत-ज्ञान-विशेष—गति आदि दो चार द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान ।
पडिवत्तुं पडिवज्ज का हेकृ. ।
पडिवद्दि देखो पडिवत्ति ।
पडिवद्धावअ देखो पडिवड्ढावअ ।
पडिवन्निय (अप) देखो पडिवण्ण ।
पडिवय अक [प्रति + पत्] ऊँचे जाकर गिरना ।
पडिवय सक [प्रति + वच्] उत्तर देना ।
पडिवयण न [प्रतिवचन] प्रत्युत्तर, जवाब । आदेश, आज्ञा । पुं. हरिवंश के एक राजा का नाम ।
पडिवया स्त्री[प्रतिपत्] पक्ष की पहली तिथि ।
पडिवविय वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ ।
पडिवस अक [प्रति + वस्] निवास करना ।
पडिवसभ पुं [प्रतिवृषभ] मूल स्थान से दो कोस की दूरी पर स्थित गाँव ।
पडिवह सक [प्रति + वह्] वहन करना,

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

ढोना ।

पडिवह् देखो पडिपह् ।

पडिवह् पुं [प्रतिवध, परिवध] वध, हत्या ।

पडिवा देखो पडिवया ।

पडिवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवाद करनेवाला, वादी का विपक्षी ।

पडिवाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिपादन करनेवाला ।

पडिवाइ वि [प्रतिपातिन्] विनश्वर । फूंक से दीपक के प्रकाश के समान एकाएक नष्ट होनेवाला अवधिज्ञान ।

पडिवाइय देखो पडिवाइ = प्रतिपातिन् ।

पडिवाडि देखो परिवाडि ।

पडिवाद (शौ) सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना ।

पडिवादय वि [प्रतिपादक] प्रतिपादन करनेवाला ।

पडिवाय सक [प्रति + वाचय्] लिखने के बाद उसे पढ़ लेना । फिर से पढ़ लेना ।

पडिवाय सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना ।

पडिवाय पुं. [प्रतिपात] पुनः-पतन, फिर से गिरना । नाश ।

पडिवाय पुं [प्रतिवाद] विरोध ।

पडिवाय पुं [प्रतिवात] प्रतिकूल पवन ।

पडिवारय देखो परिवार ।

पडिवाल सक [प्रति + पालय्] प्रतीक्षा करना । रक्षण करना ।

पडिवास पुं [प्रतिवास] औषध आदि को विशेष उत्कृष्ट बनानेवाला चूर्ण आदि ।

पडिवासर न [प्रतिवासर] हर रोज ।

पडिवासुदेव पुं [प्रतिवासुदेव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा ।

पडिविक्किण सक [प्रतिवि + क्री] बेचना ।

पडिविज्जा स्त्री [प्रतिविद्या] विरोधी विद्या ।

पडिवित्थर पुं [प्रतिविस्तर] परिकर, विस्तार ।

पडिविद्धंसण न [प्रतिविध्वंसन] विनाश ।

पडिविप्पिय न [प्रतिविप्रिय] अपकार का बदला, बदले के रूप में किया जाता अनिष्ट ।

पडिविरइ स्त्री [प्रतिविरति] निवृत्ति ।

पडिविरय वि [प्रतिविरत] निवृत्त ।

पडिविसज्ज सक [प्रतिवि + सर्जय्] विसर्जन करना, विदा करना ।

पडिविहाण न [प्रतिविधान] प्रतीकार ।

पडिवुज्झमाण पडिवह् = प्रति + वह् का कवकृ. ।

पडिवुत्त वि [प्रत्युक्त] न. प्रत्युत्तर ।

पडिवुद (शौ) वि [परिवृत्त] परिकरित ।

पडिवूद पुं [प्रतिव्यूह] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष ।

पडिवूहण वि [प्रतिबृंहण] बढ़ानेवाला । न. वृद्धि, पुष्टि ।

पडिवेस पुं [दे] विक्षेप, फेंकना ।

पडिवेसिअ वि [प्रातिवेश्मिक] पड़ोसी ।

पडिवोह देखो पडिबोह ।

पडिसंका स्त्री [प्रतिशङ्का] भय, शंका ।

पडिसंखा सक [प्रतिसं + ख्या] व्यवहार करना, व्यपदेश करना ।

पडिसंखिव सक [प्रतिसं + क्षिप्] संक्षेप करना ।

पडिसंखेव सक [प्रतिसं + क्षेपय्] सकेलना, समेटना ।

पडिसंचिक्ख सक [प्रतिसम् + ईक्ष्] चिन्तन करना ।

पडिसंजल सक [प्रतिसं + ज्वालय्] उद्दीपित करना ।

पडिसंत वि [परिशान्त] शान्त, उपशान्त ।

पडिसंत वि [प्रतिश्रान्त] विश्रान्त ।

पडिसंत वि [दे] प्रतिकूल । अस्तमित ।

पडिसंध, पडिसंधया } सक [प्रतिसं + धा] फिर से साँधना । उत्तर देना । अनुकूल करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसंध } सक [प्रतिसं+धा] आदर
पडिसंधा } करना। स्वीकार करना।

पडिसंमुह न [प्रतिसम्मुख] सम्मुख।

पडिसंलाव पुं [प्रतिसंलाप] प्रत्युत्तर, जबाब।

पडिसंलीण वि [प्रतिसंलीन] सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन। निरोध करनेवाला संयत।

°पडिया स्त्री [°प्रतिमा] क्रोध आदि का निरोध करने की प्रतिज्ञा।

पडिसंविक्ख सक [प्रतिसंवि+ईक्ष्] विचार करना।

पडिसंवेद } सक [प्रतिसं+वेदय्] अनुभव
पडिसंवेय } करना।

पडिसंसाहणया स्त्री [प्रतिसंसाधना] अनुगमन।

पडिसंहर सक [प्रतिसं+हृ] निवृत्त करना। निरोध करना।

पडिसक्क देखो परिसक्क।

पडिसडण न [प्रतिशदन,परिशदन] सड़ जाना। विनाश।

पडिसडिय वि [परिशटित] जो सड़ गया हो, जो विशेष जीर्ण हुआ हो वह।

पडिसत्तु पुं [प्रतिशत्रु] प्रतिपक्षी, दुश्मन।

पडिसत्थ पुं [प्रतिसार्थ] प्रतिकूल यूथ।

पडिसद्द पुं [प्रतिशब्द] प्रतिध्वनि। प्रत्युत्तर।

पडिसद्दिय वि [प्रतिशब्दित] प्रतिध्वनियुक्त।

पडिसम अक [प्रति+शम्] विरत होना।

पडिसमाहर सक [प्रतिसमा+हृ] पीछे खींच लेना।

पडिसय पुं [प्रतिश्रय] उपाश्रय, साधु का निवास-स्थान।

पडिसर पुं [प्रतिसर] सैन्य का पश्चाद्भाग। हस्त-सूत्र, वह धागा जो विवाह से पहले वर-वधू के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं, कंकण।

पडिसरीर न [प्रतिशरीर] प्रतिमूर्ति।

पडिसलागा स्त्री [प्रतिशलाका] पल्य विशेष।

पडिसव सक [प्रति+शप्] शाप के बदले में शाप देना।

पडिसव सक [प्रति+श्रु] प्रतिज्ञा करना। स्वीकार करना। आदर करना।

पडिसवत्त वि [प्रतिसपत्न] विरोधी शत्रु।

पडिसा अक [शम्] शान्त होना।

पडिसा अक [नश्] भागना, पलायन होना।

पडिसाइल्ल वि [दे] जिसका गला बैठ गया हो, घर्घर कण्ठवाला।

पडिसाड सक [प्रति+शादय्, परिशाटय्] सड़ाना। पलटाना। नाश करना।

पडिसाडणा स्त्री [परिशाटना] च्युत करना, भ्रष्ट करना।

पडिसाम अक [शम्] शान्त होना।

पडिसाय वि [शान्त] शम-प्राप्त।

पडिसाय पुं [दे] घर्घर कण्ठ।

पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना।

पडिसार सक [प्रति+सारय्] सजाना।

पडिसार सक [प्रति+सारय्] खिसकाना, हटाना, अन्य स्थान में ले जाना।

पडिसार पुं [दे] पटुता। वि. निपुण, चतुर।

पडिसार पुं [प्रतिसार] सजावट। अपसरण। विनाश। पराङ्मुखता। अपसारण।

पडिसारी स्त्री [दे] परदा।

पडिसाह सक [प्रति+कथय्] उत्तर देना।

पडिसाहर सक [प्रतिसं+हृ] निवृत्त करना। विनाश करना। सकेलना, समेटना। वापस ले लेना। ऊँचे ले जाना।

पडिसिद्ध वि [दे] डरा हुआ। भग्न, त्रुटित।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] अनुरूप सिद्धि। प्रतिकूल सिद्धि।

पडिसिद्धि देखो पडिप्फद्धि।

पडिसिलोग पुं [प्रतिश्लोक] श्लोक के उत्तर में कहा गया श्लोक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसिविणअ पुं [प्रतिस्वप्नक] स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न।

पडिसीसअ, पडिसीसक न [प्रतिशीर्षक] शिरोवेष्टन। सिर के प्रतिरूप सिर, पिसान (आटा) आदि का बनाया हुआ सिर।

पडिसुइ पुं [प्रतिश्रुति] ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर। भरतक्षेत्र में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम।

पडिसुण सक [प्रति+श्रु] प्रतिज्ञा करना। स्वीकार करना।

पडिसुणण स्त्रीन [प्रतिश्रवण] सुनाना, सुनकर उसका जवाब देना, प्रत्युत्तर। श्रवण।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] अंगीकार, स्वीकार। मुनि-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोषवाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल।

पडिसुद्ध वि [परिशुद्ध] अत्यन्त शुद्ध।

पडिसुय वि[प्रतिश्रुत]अंगीकृत। न. स्वीकार। देखो पडिस्सुय।

पडिसुया देखो पडंसुआ = प्रतिश्रुत।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रवज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा।

पडिसुहड पुं [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा।

पडिसूयग पुं [प्रतिसूचक] नगर-द्वार पर रहनेवाला जासूस।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल।

पडिसूर पुं [प्रतिसूर्य] सूर्य के सामने देखा जाता उत्पातादि-सूचक द्वितीय सूर्य। इन्द्रधनुष।

पडिसेग पुं [प्रतिषेक] नख के नीचे का भाग।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रतिशय्या] उत्तर-शय्या।

पडिसेव सक [प्रति+सेव्] प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना। सहन करना। सेवा करना।

पडिसेवग देखो पडिसेवय।

पडिसेवय वि [प्रतिषेवक] प्रतिकूल सेवा करनेवाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला।

पडिसेवि वि [प्रतिषेविन्] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला।

पडिसेवित्तु वि [प्रतिषेवितृ] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करनेवाला।

पडिसेह सक [प्रति+सिध्] निषेध करना, निवारण करना।

पडिसेह पुं [प्रतिषेध] निषेध, निवारण।

पडिसेहग वि [प्रतिषेधक] निषेध-कर्ता।

पडिसोअ, पडिसोत्त पुं [प्रतिस्रोतस्] उलटा प्रवाह।

पडिसोत्त वि [दे] प्रतिकूल।

पडिस्संत देखो परिस्संत।

पडिस्संति स्त्री [परिश्रान्ति] परिश्रम।

पडिस्सय पुं [प्रतिश्रय] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय।

पडिस्सर देखो पडिसर।

पडिस्साव सक [प्रति+श्रावय्] प्रतिज्ञा कराना। स्वीकार कराना।

पडिस्सावि वि [प्रतिस्राविन्] झरनेवाला, टपकनेवाला।

पडिस्सुण सक [प्रति+श्रु] सुनना। अंगीकार करना।

पडिस्सुय वि [प्रतिश्रुत] प्रतिज्ञात। स्वीकृत। देखो पडिसुय।

पडिस्सुया देखो पडंसुआ।

पडिस्सुया देखो पडिसुया = प्रतिश्रुता।

पडिहच्छ वि [दे] पूर्ण। देखो पडिहत्थ।

पडिहट्टु अ [प्रतिहृत्य] अर्पण करके।

पडिहड पुं [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा।

पडिहण सक [प्रति+हन्] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना।

पडिहणिय देखो पडिभणिय।

पडिहत्थ वि [दे] पूर्ण, भरा हुआ। प्रतिक्रिया,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिकार, बदला। वचन, वाणी। अतिप्रभूत। अपूर्व, अद्वितीय।

पडिहत्थ सक [दे] प्रत्युपकार करना।

पडिहत्थ वि [प्रतिहस्त] तिरस्कृत।

पडिहत्थी स्त्री [दे] वृद्धि।

पडिहम्म देखो पडिहण।

पडिहय वि [प्रतिहत] प्रतिघात-प्राप्त।

पडिहर सक [प्रति+हृ] फिर से पूर्ण करना।

पडिहा अक [प्रति+भा] मालूम होना, लगना।

पड़िहा स्त्री [प्रतिभा] नूतन-नूतन उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि।

पडिहा देखो पडिहाय = प्रतिघात।

पडिहाण देखो पणिहाण।

पडिहाण न [प्रतिभान] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °व वि [°वत्] प्रतिभावाला।

पडिहाय देखो पडिहा = प्रति + भा।

पडिहाय पुं [प्रतिघात] घात का बदला। निरोध।

पडिहार पुं [प्रतिहार] इन्द्र-नियुक्त देव। पुंस्त्री. दरवान।

पडिहारिय देखो पाडिहारिय।

पडिहारिय वि [प्रतिहारित] अवरुद्ध।

पडिहास अक [प्रति+भास्] मालूम होना, लगना।

पडिहास पुं [प्रतिभास] प्रतिभास, प्रतिभान।

पडिहुअ, पडिहू } पुं [प्रतिभू] जामीन, जामीनदार।

पडिहू अक [परि+भू] पराभव करना।

पडी स्त्री [पटी] वस्त्र।

पडीआर पुं [प्रतीकार] देखो पडिआर।

पडीकर सक [प्रति+कृ] प्रतिकार करना।

पडीकार देखो पडिआर।

पडीच्छ देखो पडिच्छ = प्रति = इष्।

पडीण वि [प्रतीचीन] पश्चिम दिशा से सम्बन्ध रखनेवाला। °वाय पुं [°वात] पश्चिम की वायु।

पडीणा स्त्री [प्रतीची] पश्चिम दिशा।

पडीर पुं [दे] चोर-समूह।

पडीव वि [प्रतीप] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी।

पडु वि [पटु] निपुण, कुशल।

पडु (अप) देखो पडिअ = पतित।

पडुआलिअ वि [दे] निपुण बनाया हुआ। ताड़ित, पिटा हुआ। धारित।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप] वाद्य-ध्वनि। उत्थापन, उठान।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप] वाद्य-ध्वनि। क्षेपण, फेंकना।

पडुच्च, पडुच्चा } अ [प्रतीत्य] आश्रय करके। अपेक्षा करके। अधिकार करके। °करण न. किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति। °भाव पुं. सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु। °वयण न [°वचन] आपेक्षिक वचन। °सच्चा स्त्री [°सत्या] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन।

पडुजुवइ स्त्री [दे] युवति।

पडुत्तिया स्त्री [प्रत्युक्ति] प्रत्युत्तर, जवाब।

पडुप्पण्ण पुं [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान काल। वि. वर्तमान काल में विद्यमान। प्राप्त। उत्पन्न।

पडुल्ल न [दे] छोटी थाली। वि. चिरप्रसूत।

पडुवइअ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज।

पडुवत्ती स्त्री [दे] जवनिका।

पडुह देखो पड्डुह।

पडोअ वि [दे] बाल, लघु, छोटा।

पडोच्छन्न वि [प्रत्यवच्छन्न] आच्छादित।

पडोयार सक [प्रत्युप+चारय्] प्रतिकूल उपचार करना।

पडोयार पुं [दे] उपकरण।

पडोयार पुं [प्रत्युपचार] प्रतिकूल उपचार।

पडोयार पुं [प्रत्यवतार] अवतरण। आविर्भाव।

पडोयार पुं [पदावतार] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडोयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का उपकार।
पडोयार पुं [दे] सामग्री। परिकर।
पडोल पुंस्त्री [पटोल] लता-विशेष, परवल का गाछ।
पडोहर न [दे] घर का पीछला आँगन।
पड्ड वि [दे] धवल, सफेद।
पड्डुस पुं [दे] पहाड़ की गुफा।
पड्डुच्छी स्त्री [दे] भैंस।
पड्डुत्थी स्त्री [दे] बहुत दूधवाली। दोहनेवाली।
पड्डुय पुं [दे] भैंसा, पाड़ा।
पड्डुला स्त्री [दे] पाद-प्रहार।
पड्डुस वि [दे] सुसंयमित।
पड्डाविअ वि [दे] समापित।
पड्डिया स्त्री [दे] छोटी भैंस, पाड़ी। छोटी गौ, बछिया। प्रथमप्रसूता गौ। नव-प्रसूता महिषी। पड्डी स्त्री [दे] प्रथम-प्रसूता।
पड्डुआ स्त्री [दे] चरण-घात।
पड्डुह अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना।
पढ सक [पठ्] पढ़ना, अभ्यास करना। बोलना, कहना।
पढ पुं. भारतीय देश-विशेष।
पढग वि [पाठक] पढ़नेवाला।
पढम वि [प्रथम] पहला, आद्य। नूतन। प्रधान, मुख्य। °करण न. आत्मा का परिणाम-विशेष। °कसाय पुं [°कषाय] अनन्तानुबन्धी कषाय। °ट्ठाणि, °ठाणि वि [°स्थानिन्] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात। °पाउस पुं [°प्रावृष्] आषाढ़ मास। °समोसरण न [°समवसरण] वर्षा-काल। °सरय पुं [°शरत्] मार्गशीर्ष मास। °सुरा स्त्री. नयी दारू, शराब।
पढमा स्त्री [प्रथमा] प्रतिपदा तिथि, पड़वा। व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति।
पढमालिआ स्त्री [दे. प्रथमालिका] प्रथम भोजन।
पढाइद [शौ] नीचे देखो।
पढाव सक [पाठय्] पढ़ाना।
पढावअ वि [पाठक] अध्यापक।
पढाविअवंत वि [पाठितवत्] जिसने पढ़ाया हो वह।
पढाविउ वि [पाठयितृ] अध्यापक।
पढुक्क वि [प्रढौकित] भेंट के लिए उपस्थापित।
पढुम देखो पढम।
पढे देखो पढाव।
पण देखो पंच। °णउइ स्त्री [°नवति] पंचानबे। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] पैंतीस। °नुवइ देखो °णउइ। °रस त्रि. ब. [°दशन्] पनरह। °वन्निय वि [°वर्णिक] पाँच रंग का। °वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस। °वीसइ स्त्री [विंशति] वही अर्थ। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ। °सय न [°शत] पाँच सौ। °सीइ स्त्री [°शीति] पचासी। °सुन्न न [°सून] पाँच हिंसा-स्थान।
पण पुं. शर्त, होड़। प्रतिज्ञा। धन। विक्रेय वस्तु।
पण पुं [प्रण] प्रतिज्ञा।
पण } न [पञ्चक] पाँच का समूह। नीवी
पणग } तप।
पणअत्तिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ।
पणअन्न देखो पणपन्न।
पणइ स्त्री [प्रणति] प्रणाम।
पणइ वि [प्रणयिन्] प्रणयवाला, स्नेही, प्रेमी। पुं. पति। याचक, प्रार्थी। भृत्य, दास।
पणइणी स्त्री [प्रणयिनी] पत्नी, प्रिया।
पणइय वि [प्रणयिक, प्रणयिन्] देखो पणइ = प्रणयिन्।
पणंगणा स्त्री [पणाङ्गना] वेश्या, वारांगना।
पणग न [पञ्चक] पाँच का समूह।
पणग पुं [दे. पनक] शैवाल। काई, वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होनेवाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक प्रकार का जल-मैल। सूक्ष्म पंक। देखो पणय (दे)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी।

पणच्च अक [प्र+नृत्] नृत्य करना।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्तित] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह।

पणच्चिअ वि [प्रनर्त्तित] नचाया हुआ।

पणट्ठ वि [प्रनष्ट] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त।

पणद्ध वि [प्रणद्ध] परिगत।

पणपन्न स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन।

पणपन्नइम वि [दे. पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ।

पणपन्निय देखो पणवन्निय।

पणपन्निय पुं [पंचप्रज्ञप्तिक] व्यन्तर देवों की एक जाति।

पणम सक [प्र+नम्] प्रणाम करना, नमन करना।

पणमिअ वि [प्रणत] नमा हुआ। जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह। जिसको नमन किया गया हो वह। [प्रणमित] नमाया हुआ।

पणय सक [प्र+णी] स्नेह करना, प्रेम करना। प्रार्थना करना।

पणय वि [प्रणत] जिसको प्रणाम किया गया हो वह। जिसने नमस्कार किया हो वह। प्राप्त। निम्न, नीचा।

पणय पुं [प्रणय] स्नेह, प्रेम। प्रार्थना। °वंत वि [°वत्] स्नेहवाला, प्रेमी।

पणय पुं [दे] पंक।

पणय पुं [दे. पनक] सेवार, तृण-विशेष। काई, जल-मैल। सूक्ष्म कर्दम।

पणयाल वि [दे. पञ्चचत्वारिंश] पैंतालीसवाँ।

पणयाल, पणयालीस स्त्रीन [दे. पञ्चचत्वारिंशत्] पैंतालीस।

पणव देखो पणम।

पणव पुं [प्रणव] ओंकार।

पणव पुं. पटह, ढोल, वाद्य-विशेष।

पणवणिय देखो पणवन्निय।

पणवण्ण देखो पणपन्न।

पणवन्निय पुं [पणपन्निक] व्यन्तर देवों की एक जाति।

पणविय देखो पणमिअ = प्रणत।

पणवीसी स्त्री [पञ्चविंशतिका] पचीस का समूह।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल या कटहर।

पणसुंदरी स्त्री [पणसुन्दरी] वेश्या।

पणाम सक [अर्पय्] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना।

पणाम सक [प्र+नमय्] नमाना।

पणाम सक [उप+नी] उपस्थित करना।

पणाम पुं [प्रणाम] नमस्कार।

पणामणिआ स्त्री [दे] स्त्रीविषयक प्रणय।

पणामय वि [अर्पक] देनेवाला।

पणामय वि [प्रणामक] नमानेवाला। शब्द आदि विषय।

पणायक, पणायग वि [प्रणायक] ले जानेवाला।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरी।

पणालिआ स्त्री [प्रणालिका] परम्परा। पानी जाने का रास्ता।

पणाली स्त्री [प्रणाली] पानी जाने का रास्ता।

पणाली स्त्री [प्रनाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी।

पणास सक [प्र+नाशय्] विनाश करना।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाशकारक।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त।

पणिअ वि [प्रणीत] रचित।

पणिअ न [पणित] बेचने-योग्य वस्तु। व्यवहार। क्रय-विक्रय। शर्त, एक तरह का जुआ। °भूमि, °भूमी स्त्री. अनार्य देश-विशेष। विक्रेय वस्तु रखने का स्थान। °साला स्त्री [°शाला] हाट।

पणिअ न [पण्य] विक्रेय वस्तु। °गिह,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°घर न [°गृह] दूकान। °साला स्त्री. [°शाला] °हाट। °वण पुं [°पण] दूकान।

पणिअ वि [प्रणीत] सुन्दर। °भूमि स्त्री. मनोज्ञ भूमि।

पणिअट्ठ वि [पणितार्थ] चोर।

पणिअसाला स्त्री [पण्यशाला] गोदाम।

पणिआ स्त्री [दे] करोटिका। खोपड़ी।

पणिंदि } वि [पञ्चेन्द्रिय] त्वक्, जीभ,
पणिंदिय } नाक, आँख और कान—इन पाँचों इन्द्रियों वाला प्राणी।

पणिद्ध वि [प्रस्निग्ध] विशेष स्निग्ध।

पणिधाण देखो पडिहाण।

पणिधि पुंस्त्री [प्रणिधि] माया, छल। देखो पणिहि।

पणियत्थ वि [प्रणिवसित] पहना हुआ।

पणिलिअ वि [दे] हत, मारा हुआ।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] नत, नमा हुआ। जिसको नमस्कार किया गया हो वह।

पणिवय सक [प्रण + पत्] नमन करना, वन्दन करना।

पणिवाय पुं [प्रणिपात] वन्दन, नमस्कार।

पणिहा सक [प्रणि + धा] एकाग्र चिन्तन करना ध्यान करना। अपेक्षा करना। अवधान करना। अभिलाषा करना। चेष्टा करना, प्रयत्न करना। प्रयोग करना।

पणिहि पुंस्त्री [प्रणिधि] एकाग्रता, अवधान। कामना। पुं. चरपुरुष, दूत। चेष्टा, व्यापार। माया, कपट। व्यवस्थापन। बड़ा निधि।

पणिहिय वि [प्रणिहित] प्रयुक्त व्यापृत। व्यवस्थित।

पणीय वि [प्रणीत] निर्मित, कृत। स्निग्ध, घृत आदि स्नेह की प्रचुरतावाला। निरूपित, प्ररूपित, आख्यात। सुन्दर। सम्यग् आचरित।

पणीहाण देखो पणिहाण।

पणुल्ल देखो पणोल्ल।

पणुवीस स्त्रीन [पञ्चविंशति] पचीस की संख्या। जिनकी संख्या पचीस हो वे।

पणुवीसइम वि [पञ्चविंशतितम] पच्चीसवाँ।

पणोल्ल सक [प्र + णुद्] प्रेरणा करना। फेंकना। नाश करना।

पणोल्लय वि [प्रणोदक] प्रेरक।

पणोल्लि वि [प्रणोदिन्] प्रेरणा करनेवाला। पुं. प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी।

पण्ण वि [प्रज्ञ] जानकार, दक्ष, निपुण।

पण्ण वि [प्राज्ञ] प्रज्ञावाला, बुद्धिमान्, दक्ष। वि. प्राज्ञ-सम्बन्धी।

पण्ण न [पर्ण] पत्ता, पत्ती।

पण्ण देखो पणिअ = पण्य।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास।

पण्ण देखो पंच, पण °र। °रस त्रि. ब. [°दशन्] पनरह। °रसम वि [°दश] पनरहवाँ। °रसी स्त्री [°दशी] पनरहवीं। तिथि-विशेष। °रह देखो °रस। °रह वि [°दश] पनरहवाँ। देखो पन्न = पंच।

पण्ण वि [पार्ण] पर्ण-सम्बन्धी, पत्ते का।

पण्ण° देखो पण्णा°। °व वि [°वत्] प्रज्ञा-वाला।

पण्णई [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथ की शासन-देवी।

पण्णग पुं [पन्नग] सर्प। °ासन पुं [°ाशन] गरुड़ पक्षी। °रिउ पुं [°रिपु] गरुड़ पक्षी।

पण्णग वि [दे. पन्नक] दुर्गन्धी। °तिल पुं. दुर्गन्धी तिल।

पण्णट्ठि स्त्री [पञ्चषष्टि] पैंसठ।

पण्णत्त वि [प्रज्ञप्त] निरूपित, उपदिष्ट, कथित। प्रणीत, रचित। आसेवित।

पण्णत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] विद्यादेवी-विशेष। प्रकृष्ट ज्ञान। जिससे प्ररूपण किया जाय वह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवती सूत्र। सूर्य-प्रज्ञप्ति आदि उपांग-ग्रन्थ। विद्या-विशेष। प्ररूपण, प्रतिपादन। °खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद। °पक्खेवणी स्त्री [°प्रक्षेपणी] कथा का एक भेद।

पण्णपण्णिय पुं [पण्णपर्णि] व्यन्तर देवों की एक जाति।

पण्णय देखो पण्णग।

पण्णव सक [प्र+ज्ञापय्] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना।

पण्णवग वि [प्रज्ञापक] प्ररूपक, प्रतिपादक।

पण्णवण न [प्रज्ञापन] प्ररूपण, प्रतिपादन। शास्त्र, सिद्धान्त। वि. ज्ञापक, निरूपक।

पण्णवणा स्त्री [प्रज्ञापना] प्ररूपणा, प्रतिपादन। एक जैन आगम ग्रन्थ 'प्रज्ञापना' सूत्र।

पण्णवणी स्त्री [प्रज्ञापनी] अर्थबोधक भाषा।

पण्णवण्ण स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन।

पण्णवय देखो पण्णवग।

पण्णवेत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] प्रतिपादक, प्ररूपण करनेवाला।

पण्णा सक [प्र+ज्ञा] प्रकर्ष से जानना। अच्छी तरह जानना।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] मनुष्य की दस अवस्थाओं में पाँचवीं अवस्था। बुद्धि। ज्ञान। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] बुद्धि का गर्व न करना। बुद्धि के अभाव में खेद न करना। °मय पुं [°मद] बुद्धि का अभिमान। °वंत वि [°वत्] ज्ञानवान्।

पण्णाग वि [प्रज्ञ] विद्वान्।

पण्णाण न [प्रज्ञान] प्रकृष्ट ज्ञान। सम्यग् ज्ञान। आगम। °व वि [°वत्] ज्ञानवान्। शास्त्रज्ञ।

पण्णाराह (अप) त्रि. ब. [पञ्चदशन्] पनरह।

पण्णावीसा स्त्री [पञ्चविंशति] पचीस।

पण्णास स्त्रीन [दे. पञ्चाशत्] पचास।

पण्णासग वि [पञ्चाशक] पचास वर्ष की उम्र का।

पण्णुवीस देखो पणुवीस।

पण्ह पुंस्त्री [प्रश्न] पृच्छा। °वाहण न [°वाहन] जैन मुनि-गण का एक कुल। °वागरण न [°व्याकरण] ग्यारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ। देखो पसिण।

पण्हुअ अक [प्र+स्नु] झरना, टपकना।

पण्हुअ } पुं [दे. प्रस्नव] स्तन से दूध का
पण्हुव } झरना। झरना, टपकना।

पण्हव पुं [पह्लव] अनार्य देश-विशेष। वि. उस देश का निवासी।

पण्हुविअ देखो पण्हुअ।

पण्हि पुंस्त्री [पार्ष्णि] फीली का अधोभाग, गुल्फ का नीचला हिस्सा, एड़ी।

पण्हिया स्त्री [प्राश्निका] एड़ी, गुल्फ का अधो-भाग।

पण्हुअ वि [प्रस्नुत] क्षरित, झरा हुआ। जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह।

पण्हुइर वि [प्रस्नोतृ] झरनेवाला।

पण्होत्तर न [प्रश्नोत्तर] सवाल-जवाब।

पतणु देखो पयणु।

पतार सक [प्र+तारय्] ठगना।

पतारग वि [प्रतारक] वञ्चक।

पतिण्ण वि [प्रतीर्ण] पार पहुँचा हुआ, निस्तीर्ण।

पतुण्ण न [प्रतुन्न] वल्कल का बना हुआ वस्त्र।

पतेरस } वि [प्रत्रयोदश] प्रकृष्ट तेरहवाँ।
पतेलस } °वास न [°वर्ष] प्रकृत तेरहवाँ वर्ष। प्रकृत तेरहवाँ वर्ष। प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष।

पत्त वि [प्राप्त] मिला हुआ, पाया हुआ। °काल, °याल न [°काल] चैत्य-विशेष। वि. अवसरोचित।

पत्त न [पत्र] पत्ती, पत्ता, दल। पाँख।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कागज। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष। °मंत वि [°वत्] पत्रवाला। °रह पुं [°रथ] पक्षी। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्दनादि से पत्र के आकृतिवाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार। °वल्ली स्त्री. पत्रवाली लता। मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना। °विंट न [°वृन्त] पत्र का बन्धन। °विंटिय वि [°वृन्तक, °वृन्तीय] पत्र वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु। °विच्छुअ पुं [वृश्चिक] एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति। °वेंट देखो °विंट। °सगडिआ स्त्री [°शकटिका] पत्तों से भरी हुई गाड़ी। °समिद्ध वि [°समृद्ध] प्रभूत पत्तेवाला। °हार पुं. त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष। °हार पुं. पत्ती पर निर्वाह करनेवाला वानप्रस्थ।

पत्त न [पात्र] भाजन। आधार, आश्रय, स्थान। दान देने योग्य गुणी लोक। लगातार बत्तीस उपवास। °बंध पुं [°बन्ध] पात्रों को बाँधने का कपड़ा। देखो पाय = पात्र।

पत्त वि [प्रात्त] प्रसारित।

पत्तइअ वि [प्रत्ययित] विश्वस्त।

पत्तइअ वि [पत्रकित] अल्प पत्रवाला। कुत्सित पत्रवाला।

पत्तउर पुं [दे] वनस्पति-विशेष, एक प्रकार का गाछ।

पत्तच्छेज्ज न [पत्रच्छेद्य] बाण से पत्ती बेधने की कला। नक्काशी का काम, खोदने का काम।

पत्तट्ठ वि [दे. प्राप्तार्थ] बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल।

पत्तट्ठ वि [दे] मनोहर।

पत्तण देखो पट्टण।

पत्तण न [दे. पत्त्रण] बाण का फलक। पुंख, बाण का मूल भाग।

पत्तणा स्त्री [दे. पत्त्रणा] ऊपर देखो। पुंख में की जाती रचना-विशेष।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तियों की एक तरह की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय।

पत्तरक न [दे. प्रतरक] आभूषण-विशेष।

पत्तल वि [दे] तीक्ष्ण, तेज। पतला।

पत्तल वि [पत्रल] बहुत पत्तीवाला। पक्ष्मवाला।

पत्तल न [पत्र] पर्ण।

पत्तली स्त्री [दे] एक प्रकार का राज-देय।

पत्तहारय वि [पत्रहारक] पत्तों को बेचने का काम करनेवाला।

पत्ताण सक [दे] पताना, मिटाना।

पत्तामोड पुंन [आमोटपत्र] तोड़ा हुआ पत्र।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ।

पत्ति पुं. सेना-विशेष, जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों। पैदल चलनेवाली सेना।

पत्ति } सक [प्रति + इ] जानना।
पत्तिअ } विश्वास करना। आश्रय करना।

पत्तिअ वि [पत्रित] जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हों वह।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीतिवाला, विश्वस्त।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह।

पत्तिअ पुंन [प्रत्यय] विश्वास।

पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पर्ण।

पत्तिआअ देखो पत्तिअ = प्रति + इ।

पत्तिआव सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना।

पत्तिग देखो पत्तिअ = प्रीतिक।

पत्तिज्ज देखो पत्तिअ = प्रति + इ।

पत्तिज्जाव देखो पत्तिआव।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्ती स्त्री [दे] देखो पत्तपसाइआ।

पत्ती स्त्री [पत्नी] भार्या।

पत्ती स्त्री [पात्री] भाजन।

पत्तुं पाव = प्र + आप् का हेकृ.।

पत्तुवगद (शौ) वि [प्रत्युपगत] सामने गया हुआ। वापस गया हुआ।

पत्तेअ, पत्तेग न [प्रत्येक] हर एक। एक के सामने। न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है। पृथक्-पृथक्। पुं. वह जीव जिसका शरीर अलग हो। °णाम न [°नामन्] देखो ऊपर का तीसरा अर्थ। °निगोयय पुं [°निगोदक] जीव-विशेष। °बुद्ध पुं. अनित्यतादि भावना में कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि। °बुद्धसिद्ध पुं. प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव। °रस वि. विभिन्न रसवाला। °सरीर वि [°शरीर] विभिन्न शरीरवाला। न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर होता है। °सरीरनाम न [°शरीरनामन्] वही पूर्वोक्त अर्थ।

पत्तेय वि [प्रत्येक] बाह्य कारण।

पत्थ सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। अभिलाषा करना। रोकना।

पत्थ पुं [पार्थ] मध्यम पाण्डव अर्जुन। पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम। भद्दिलपुर नगर का एक राजा।

पत्थ पुं [प्रार्थ] प्रार्थन, प्रार्थना। दो दिनों का उपवास।

पत्थ देखो पच्छ = पथ्य।

पत्थ पुं [प्रस्थ] कुडव का एक परिमाण। सेतिका, एक कुडव का परिमाण।

पत्थग देखो पत्थय।

पत्थड पुं [प्रस्तर] रचना-विशेषवाला समूह। भवनों के बीच का अन्तराल भाग।

पत्थड वि [प्रस्तृत]बिछाया हुआ, फैला हुआ।

पत्थणया, पत्थणा स्त्री [प्रार्थना] वाञ्छा। याचना। विज्ञप्ति, निवेदन।

पत्थय वि [प्रार्थक] अभिलाषा करनेवाला।

पत्थयण न[पथ्यदन] शम्बल, पाथेय, कलेवा।

पत्थर सक [प्र + स्तृ] बिछाना। फैलाना।

पत्थर पुं [प्रस्तर] पत्थर।

पत्थर न [दे] पाद-ताडन, लात।

पत्थर देखो पत्थार।

पत्थरण न [प्रस्तरण] बिछौना।

पत्थरभल्लिअ न [दे] कोलाहल करना।

पत्थरा स्त्री [दे] चरण-घात, लात।

पत्थरिअ पुं [दे] पल्लव, कोपल।

पत्थव देखो पत्थाव।

पत्था अक [प्र + स्था] प्रस्थान करना, प्रवास करना।

पत्थार पुं [प्रस्तार] विस्तार। तृणवन। पल्लवादि-निर्मित शय्या। पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष। प्रायश्चित्त की रचना-विशेष। विनाश।

पत्थारी स्त्री [दे] समूह। शय्या।

पत्थाव सक [प्र + स्तावय्] प्रारम्भ करना।

पत्थाव पुं [प्रस्ताव] अवसर। प्रसंग, प्रकरण।

पत्थिअ वि [प्रस्थित] जिसने प्रयाण किया हो वह। न. प्रस्थान, गति, चाल।

पत्थिअ वि [प्रार्थित] जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह। जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह।

पत्थिअ वि [दे] शीघ्र, जल्दी करनेवाला।

पत्थिअ वि [प्रार्थिक] प्रार्थी।

पत्थिअ वि [प्रास्थित] प्रकृष्ट श्रद्धावाला।

पत्थिअ°, पत्थिआ स्त्री [दे] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष। °पिडग, °पिडय न [°पिटक] वही अर्थ।

पत्थिद देखो पत्थिअ = प्रस्थित, प्रार्थित।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

पत्थिव पुं [पार्थिव] राजा। वि. पृथिवी का विकार।
पत्थी स्त्री [दे. पात्री] पात्र, भाजन।
पत्थीण न [दे] मोटा कपड़ा। वि. स्थूल।
पत्थुय वि [प्रस्तुत] प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक। प्राप्त, लब्ध।
पत्थुर देखो पत्थर = प्र + स्तृ।
पत्थे = देखो पत्थ = प्र+अर्थय्।
पत्थोउ वि [प्रस्तोतृ] प्रस्ताव करनेवाला। प्रवर्तक।
पथम (पै) देखो पढम।
पदअ सक [गम्] जाना, गमन करना।
पदंसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ।
पदक्खिण वि [प्रदक्षिण] जिसने दक्षिण की तरफ से लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया हो वह। न. दक्षिणावर्त्त भ्रमण।
पदक्खिण सक [प्रदक्षिणय्] प्रदक्षिणा करना।
पदण न [पदन] प्रतीति कराना।
पदण (शौ) न [पतन] गिरना।
पदम (शौ) देखो पउम।
पदय देखो पयय = पतंग।
पदरिसिय देखो पदंसिअ।
पदहण न [प्रदहन] संताप, गरमी।
पदाइ वि [प्रदायिन्] देनेवाला।
पदाण न [प्रदान] दान, वितरण।
पदादि (शौ) पुं [पदाति] पैदल सैनिक।
पदायग वि [प्रदायक] देनेवाला।
पदाव देखो पयाव।
पदाहिण वि [प्रदक्षिण] प्रकृष्ट दक्षिण, प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित।
पदिकिदि (शौ) देखो पडिकिदि।
पदित्त देखो पलित्त।
पदिस° स्त्री [प्रदिश्] विदिशा, ईशान आदि।
पदिस्सा देखो पदेक्ख।
पदीव सक [प्र + दीपय्] जलाना। प्रकाश करना।
पदीव देखो पईव + प्रदीप।
पदीविआ स्त्री [प्रदीपिका] छोटा दिया।
पदुग्ग पुंन [प्रदुर्ग] कोट, किला।
पदुट्ठ वि [प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट] विशेष द्वेष को प्राप्त।
पदुब्भेइय न [पदोद्भेदक] पद-विभाग और शब्दार्थ मात्र का पारायण।
पदूमिय वि [प्रदावित, प्रदून] अत्यन्त पीड़ित।
पदूस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना।
पदूसणया स्त्री [प्रद्वेषणा, प्रदूषणा] द्वेष, मात्सर्य।
पदेक्ख सक [प्र + दृश्] प्रकर्ष से देखना।
पदेस देखो पएस = प्रदेश।
पदेस पुं [प्रद्वेष] द्वेष।
पदेसिअ वि [प्रदेशित] प्ररूपित, प्रतिपादित।
पदोस देखो पओस = दे, प्रद्वेष।
पदोस देखो पओस = प्रदोष।
पद्द न [दे] ग्राम-स्थान। छोटा गाँव।
पद्द न [पद्य] श्लोक, वृत्त, काव्य।
पद्देस देखो पदेस = प्रद्वेष।
पद्धइ स्त्री [पद्धति] रास्ता। पंक्ति, श्रेणी। परिपाटी। प्रक्रिया, प्रकरण।
पद्धंस पुं [प्रध्वंस] ध्वंस, नाश। °भाव पुं. अभाव विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह।
पद्धर वि [दे] ऋजु, सीधा। शीघ्र।
पद्धल वि [दे] दोनों पार्श्वों में अप्रवृत्त।
पद्धार वि [दे] जिसका पूँछ कट गया हो वह।
पधाइय देखो पधाविय।
पधाण देखो पहाण।
पधार देखो पहार = प्र + धारय्।
पधाव सक [प्र + धाव्] दौड़ना, अधिक वेग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से जाना।

पधावण न [प्रधावन] दौड़, वेग से गमन। कार्य की शीघ्र सिद्धि। प्रक्षालन।

पधूवण न [प्रधूपन] धूप देना। एक प्रकार का आलेपन द्रव्य।

पधूविय वि [प्रधूपित] जिसको धूप दिया गया हो वह।

पधोअ सक [प्र + धाव्] धोना।

पधोअ वि [प्रधौत] धोया हुआ।

पधोव सक [प्र + धाव्] धोना।

पन देखो पंच। °र, °रस त्रि. ब. [°दशन्] पनरह।

पन्नंगणा स्त्री [पण्याङ्गना] वेश्या।

पन्नत्तरि स्त्री [पञ्चसप्तति] पचहत्तर।

पन्नत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] आख्याता, प्रतिपादक।

पन्नपत्तिया स्त्री [प्रज्ञप्रत्यया] देखो पुन्न-पत्तिया।

पन्नपन्नइम देखो पणपन्न°।

पन्नया स्त्री [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी।

पन्नवग वि [प्रज्ञापक] प्रतिपादक, प्ररूपक।

पन्नाड सक [मृद्] मर्दन करना।

पन्नारस (अप) त्रि. ब. [पञ्चदशन्] पनरह।

पन्नास देखो पण्णास। °इम वि [°तम] पचासवाँ।

पन्हु (अप) देखो पण्हुअ = दे. प्रस्नव।

पपंच देखो पवंच।

पपलीण वि [प्रपलायित] भागा हुआ।

पपिआमह पुं [प्रपितामह] ब्रह्मा, विधाता। परदादा।

पपुत्त पुं [प्रपुत्र] पौत्र।

पपुत्त, पपोत्त पुं [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र।

पप्प सक [प्र + आप्] प्राप्त करना।

पप्पग न [दे. पर्पक] वनस्पति-विशेष।

पप्पड, पप्पडग पुंस्त्री [पर्पट] पापड़। पापड़ के आकारवाला शुष्क मृत्खण्ड। °पायय पुं [°पाचक] नरकावास-विशेष। °मोदय पुं [°मोदक] एक प्रकार की मिष्ट वस्तु।

पप्पडिया स्त्री [पर्पटिका] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु।

पप्पल देखो पप्पड।

पप्पीअ पुं [दे] चातक पक्षी, पपीहा।

पप्पुअ वि [प्रप्लुत] जलार्द्र। व्याप्त। न. कूदना, लाँघना।

पप्फंदण न [प्रस्पन्दन] प्रचलन, फरकना।

पप्फाड पुं [दे] अग्नि-विशेष।

पप्फिडिअ वि [दे] प्रतिफलित।

पप्फुअ वि [दे] दीर्घ। उड़ता।

पप्फुट्ट अक [प्र + स्फुट्] खिलना। फूटना।

पप्फुडिअ पुं [प्रस्फुटित] नरकावास-विशेष।

पप्फुय देखो पप्पुअ।

पप्फुर अक [प्र + स्फुर्] फरकना, हिलना। काँपना।

पप्फुल्ल अक [प्र + फुल्ल्] विकसना।

पप्फुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित, खिला हुआ।

पप्फुल्लिआ स्त्री [प्रफुल्लिका] देखो उप्फुल्लिआ।

पप्फुसिय न [प्रस्पृष्ट] उत्तम स्पर्श।

पप्फोड देखो पप्फुट्ट।

पप्फोड सक [प्र + स्फोटय्] झाड़ना। झाड़-कर गिराना। आस्फालन करना। प्रक्षेपण करना। प्रकृष्ट धूनन करना। तोड़ना।

पफुल्ल देखो पप्फुल्ल।

पबंध सक [प्र + बन्ध्] प्रबन्ध रूप से कहना। विस्तार से कहना।

पबंध पुं [प्रबन्ध] सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर अन्वित वाक्य-समूह। निरन्तरता।

पबंधण न [प्रबन्धन] प्रबन्ध, सन्दर्भ, अन्वित वाक्य-समूह की रचना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पबल वि [प्रबल] बलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर।

पबाहा स्त्री [प्रबाधा] विशेष पीड़ा।

पबुद्ध वि [प्रबुद्ध] प्रवीण, निपुण। जागा हुआ। जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह।

पबोध सक [प्र+बोधय्] जागृत करना। ज्ञान कराना।

पबोहय देखो पबोध।

पबोहय वि [प्रबोधक] प्रबोध-कर्त्ता।

पब्बल देखो पबल।

पब्बाल देखो पव्वाल = छादय्।

पब्बाल देखो पव्वाल = प्लावय्।

पब्बुद्ध देखो पबुद्ध।

पब्भ वि [प्रह्व] नम्र।

पब्भट्ठ, पब्भसिअ } वि [प्रभ्रष्ट] परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हुआ। विस्मृत। पुं. नरकावास-विशेष।

पब्भार पुं [दे. प्रागभार] संघात, समूह।

पब्भार पुं [दे] पर्वत-कन्दरा।

पब्भार पुं [प्राग्भार] प्रकृष्ट भार। ऊपर का भाग। थोड़ा नमा हुआ पर्वत का भाग। एक देश, एक भाग। उत्कर्ष, परभाग। पुंन. पर्वत के ऊपर का भाग। वि. थोड़ा नमा हुआ।

पब्भारा स्त्री [प्राग्भारा] दशा-विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था।

पब्भूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न।

पब्भोअ पुं [दे. प्रभोग] भोग, विलास।

पभ पुं [प्रभ] हरिकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल। द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव।

°पभ वि [प्रभ] सदृश, तुल्य।

°पभइ देखो °पभिइ।

पभंकर पुं [प्रभङ्कर] ग्रह-विशेष, ज्योतिष-देव-विशेष। पुंन. देव-विमान।

पभंकर वि [प्रभाकर] प्रकाशक।

पभंकरा स्त्री [प्रभङ्करा] विदेह-वर्ष की एक नगरी का नाम। चन्द्र की एक अग्रमहिषी का नाम। सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम।

पभंकरावई स्त्री [प्रभङ्करावती] विदेह वर्ष की एक नगरी।

पभंगुर वि [प्रभङ्गुर] अति विनश्वर।

पभंजण पुं [प्रभञ्जन] वायुकुमार-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र। लवण-समुद्र के एक पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव। मानुषोत्तर पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव। °तणअ पुं [°तनय] हनूमान्।

पभंसण न [प्रभ्रंशन] स्खलना।

पभकंत पुं [प्रभकान्त] विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम।

पभण सक [प्र+भण्] कहना, बोलना।

पभम सक [प्र+भ्रम्] भ्रमण करना, भटकना।

पभव अक [प्र+भू] समर्थ होना, पहुँचना। होना, उत्पन्न होना।

पभव पुं [प्रभव] उत्पत्ति, जन्म, प्रसूति, प्रसव। प्रथम उत्पत्ति का कारण। एक जैन-मुनि, जम्बु-स्वामी का शिष्य।

पभवा स्त्री [प्रभवा] तृतीय वासुदेव की पटरानी।

पभा स्त्री [प्रभा] कान्ति, तेज। प्रभाव।

पभाइअ, पभाय } पुंन [प्रभात] सुबह। वि. प्रकाशित। °तणय वि [°संबन्धिन्] प्रभात-सम्बन्धी।

पभार पुं [प्रभार] प्रकृष्ट भार।

पभाव देखो पहाव = प्र+भावय्।

पभावई स्त्री [प्रभावती] उन्नीसवें जिनदेव की माता का नाम। रावण की एक पत्नी का नाम। उदायन राजर्षि की पटरानी और चेड़ा नरेश की पुत्री का नाम। बलदेव के पुत्र निषध की भार्या। राजा बल की पत्नी।

पभावग वि [प्रभावक] प्रभाव बढ़ानेवाला,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शोभा की वृद्धि करनेवाला। उन्नति-कारक। गौरव जनक।
पभावय वि [प्रभावक] गौरव बढ़ानेवाला।
पभावाल पुं [प्रभावाल] वृक्ष-विशेष।
पभास सक [प्र+भाष्] बोलना, भाषण करना।
पभास अक [प्र+भास्] प्रकाशित होना।
पभास सक [प्र+भासय्] प्रकाशित करना।
पभास पुं [भास] भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम। एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव। एक जैन मुनि का नाम। एक चित्रकार का नाम। न. तीर्थ-विशेष। देव-विमान-विशेष। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दशा में स्थित एक तीर्थ।
पभासा स्त्री [प्रभासा] अहिंसा, दया।
पभिइ देखो पभिइं।
°पभिइ वि. ब. [°प्रभृति] इत्यादि, वगैरह।
पभिइं, पभिई, पभीइ, पभीइं अ [प्रभृति] प्रारम्भ कर, (वहाँ से) शुरू कर लेकर।
पभीय वि [प्रभीत] अत्यन्त डरा हुआ।
पभु पुं [प्रभु] इक्ष्वाकुवंश के एक राजा का नाम। स्वामी, मालिक। राजा। वि. समर्थ। योग्य, लायक।
पभुंज सक [प्र+भुज्] भोग करना।
पभुति (पै) देखो पभिइं।
पभुत्त वि [प्रभुक्त] जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह। जिसने भोजन किया हो वह।
पभूइ, पभूइं देखो पभिइं।
पभूय वि [प्रभूत] प्रचुर, बहुत।
पभोय (अप) देखो उवभोग।
पमइल वि [प्रमलिन] अति मलिन।
पमक्खण न [प्रम्रक्षण] अभ्यञ्जन, विलेपन। विवाह के समय किया जाता एक तरह का उबटन।
पमक्खिअ वि [प्रम्रक्षित] विलिप्त। विवाह के समय जिसको उबटन किया गया हो वह।
पमज्ज सक [प्र+मृज्, मार्ज्] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाड़ू आदि से धूलि वगैरह को दूर करना।
पमज्जणिया, पमज्जणी स्त्री [प्रमार्जनी] झाड़ू।
पमज्जय वि [प्रमार्जक] प्रमार्जन करनेवाला।
पमत्त वि [प्रमत्त] असावधान, प्रमादी। न. छठवाँ गुण-स्थानक। प्रमाद। °जोग पुं [°योग] प्रमाद-युक्त चेष्टा। °संजय पुं [°संयत] प्रमादी साधु।
पमद देखो पमय।
पमदा देखो पमया।
पमद्द सक [प्र+मृद्] मर्दन करना। विनाश करना। कम करना। चूर्ण करना। रुई की पूणी—पूनी बनाना।
पमद्द पुं [प्रमर्द] ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग। संघर्ष, संमर्द। वि. मर्दन करने-वाला। विनाशक।
पमद्दय वि [प्रमर्दक] प्रमर्दन-कर्ता।
पमय पुं [प्रमद] आनन्द। न. धतूरे का फल। °च्छी स्त्री [°क्षी] महिला। °वण न [°वन] राजा का अन्तःपुर-स्थित वह वन जहाँ राजा रानियों के साथ क्रीड़ा करे।
पमया स्त्री [प्रमदा] उत्तम स्त्री।
पमह पुं [प्रमथ] शिव का अनुचर। °णाह पुं [°नाथ] महादेव। °हिव पुं [°धिप] शिव।
पमा सक [प्र+मा] सत्य-सत्य ज्ञान करना।
पमा स्त्री [प्रमा] प्रमाण, परिमाण, न्याय।
पमा° देखो पमाय = प्रमाद।
पमाइ वि [प्रमादिन्] प्रमादी, बेदरकार।
पमाण सक [प्र+मानय्] विशेष रीति से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानना, आदर करना ।

पमाण न [प्रमाण] यथार्थ ज्ञान । सत्य ज्ञान का साधन । जिससे नाप किया जाय वह । परिमाण । संख्या । न्याय-शास्त्र । पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह । माननीय, आदरणीय । सच्चा, ठीक-ठीक । °वाय पुं [°वाद] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ।

पमाण सक [प्रमाणय्] प्रमाण रूप से स्वीकार करना ।

पमाणिआ } स्त्री [प्रमाणिका, प्रमाणी]
पमाणी } छन्द-विशेष ।

पमाणीकर अक [प्रमाणी+कृ] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना ।

पमाद देखो पमाय = प्र+मद् ।

पमाद देखो पमाय = प्रमाद ।

पमाय अक [प्र + मद्] प्रमाद करना ।

पमार पुं [प्रमार] मरण का प्रारम्भ । बुरी तरह मारना ।

पमिय वि [प्रमित] परिमित, नापा हुआ ।

पमिलाण वि [प्रम्लान] अतिशय मुरझाया हुआ ।

पमिलाय अक [प्र + म्लै] मुरझाना ।

पमिल्ल अक [प्र + मील्] विशेष संकोच करना , सकुचना ।

पमीय° देखो पमा = प्र + मा का कर्म. ।

पमील देखो पमिल्ल ।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त ।

पमुंच सक [प्र + मुच्] परित्याग करना ।

पमुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त।

°पमुक्ख देखो °पमुह ।

पमुच्छिय पुं [प्रमूर्च्छित] नरकावास ।

पमुत्त देखो पमुक्क ।

पमुदिय देखो पमुइअ ।

पमुद्ध वि [प्रमुग्ध] अत्यन्त मुग्ध ।

पमुह वि [प्रमुख] तल्लीन दृष्टिवाला । पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष । न. प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात ।

°पमुह वि. ब. [°प्रमुख] वगैरह, आदि । प्रधान, श्रेष्ठ मुख्य ।

पमुहर वि [प्रमुखर] वाचाल ।

पमेइल वि [प्रमेदस्विन्] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह ।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-पदार्थ ।

पमेह पुं [प्रमेह] मेह रोग, मूत्र-दोष, बहु-मूत्रता ।

पमोअ पुं [प्रमोद] आनन्द । राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति ।

पमोक्ख° देखो पमुंच ।

पमोक्ख पुंन [प्रमोक्ष] मुक्ति, निर्वाण । प्रत्युत्तर ।

पम्मलाअ अक [प्र+म्लै] अधिक म्लान होना ।

पम्माअ } वि [प्रम्लान] विशेष म्लान,
पम्माइअ } अत्यन्त मुरझाया हुआ । शुष्क ।

पम्माण वि [प्रम्लान] निस्तेज, मुरझाया हुआ । न. फीकापन, मुरझाना ।

पम्मि पुं [दे] हाथ ।

पम्मुक्क देखो पमुक्क ।

पम्मुह वि [प्राङ्मुख] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह ।

पम्ह पुंन [पक्ष्मन्] आँख के बाल । पद्म आदि का केसर । सूत्र आदि का अत्यल्प भाग । पाँख । केश का अग्र-भाग । अग्र-भाग । महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश । न. एक देव-विमान । °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान का नाम । °कूड पुं [°कूट] पर्वत-विशेष । न. ब्रह्मलोक नामक देवलोक का एक देव-विमान । पर्वत-विशेष का एक शिखर । °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष । °प्पभ न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवविमान। °लेस, °लेस्स न [°लेश्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान। °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ। °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ। °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ। °वित्त न [°वर्त्त] वही अर्थ।

पम्ह देखो पउम। °गंध वि [°गन्ध] कमल की गन्ध। वि. कमल के समान गन्धवाला। °लेस वि [°लेश्य] पद्मा नामक लेश्यावाला। °लेसा स्त्री [°लेश्या] पाँचवीं लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष। °लेस्स देखो °लेस।

पम्हअ सक [प्र + स्मृ] विस्मरण होना।

पम्हगावई स्त्री [पक्ष्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष।

पम्हट्ठ वि [प्रस्मृत] विस्मृत। जिसको विस्मरण हुआ हो।

पम्हट्ठ वि [दे] प्रभ्रष्ट, विलुप्त। प्रक्षिप्त।

पम्हय वि [पक्ष्मज] पक्ष्म से उत्पन्न। न. एक प्रकार का सूता।

पम्हर पुं [दे] अपमृत्यु, अकाल मरण।

पम्हल वि [पक्ष्मल] सुन्दर पक्ष्म युक्त।

पम्हल पुं [दे] किंजल्क, पद्म आदि का केसर।

पम्हलिय वि [दे. पक्ष्मलित] धवलित।

पम्हस सक [वि + स्मृ] भूल जाना।

पम्हा स्त्री [पद्मा] पद्म लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष। विजय क्षेत्र-विशेष।

पम्हार पुं [दे] बेमौत मरण।

पम्हावई स्त्री [पक्ष्मावती] विजय-विशेष की एक नगरी। पर्वत-विशेष।

पम्हुट्ठ वि [दे] नाश-प्राप्त। विस्मृत।

पम्हुत्तरवडिंसग न [पक्ष्मोत्तरावतंसक] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव-विमान।

पम्हुस सक [वि + स्मृ] भूलना।

पम्हुस सक [प्र + मृश्] स्पर्श करना।

पम्हुस सक [प्र + मुष्] चोरी करना।

पम्हुह सक [स्मृ] स्मरण करना।

पम्हुहण वि [स्मर्तृ] स्मरण करनेवाला।

पय सक [पच्] पकाना, पाक करना।

पय सक [पद्] जाना। जानना। विचारना।

पय पुंन [पयस्] दूध। जल। °हर देखो पओहर।

पय पुं [प्रज] प्राणी, जन्तु।

पय पुंन [पद] विभक्ति के साथ का शब्द। शब्द-समूह, वाक्य। पैर। पाद-चिह्न। पद्य का चौथा हिस्सा। निमित्त, कारण। स्थान। पदवी, अधिकार। शरण। प्रदेश। व्यवसाय। कूट, जाल-विशेष। °खेम न [°क्षेम] शिव, कल्याण। °त्थ पुं [°स्थ] पदाति, पैदल। °पास पुं [°पाश] वागुरा, जाल आदि बन्धन। °रक्ख पुं [°रक्ष] प्यादा। °विग्गह पुं [°विग्रह] पदविच्छेद। °विभाग पुं. उत्सर्ग और अपवाद का यथा-स्थान निवेश, सामाचारी-विशेष। °वीढ देखो पायवीढ। °समास पुं. पदों का समुदाय। °णुसारि वि [°ानुसारिन्] एक पद से अनेक अनुक्त पदों का भी अनुसन्धान करने की शक्तिवाला। °णुसारिणी स्त्री [°ानुसारिणी] एक पद के श्रवण से दूसरे अश्रुत पदों का स्वयं पता लगानेवाली बुद्धि।

पय (अप) देखो पत्त = प्राप्त।

पय° देखो पया = प्रजा। °पाल वि. प्रजा का पालक। पुं. नृप-विशेष।

°पय वि [°प्रद] देनेवाला।

पयइ स्त्री [प्रकृति] संधि का अभाव।

पयइ देखो पगइ।

पयइंद पुं [पतगेन्द्र, पदकेन्द्र] वानव्यन्तर-जातीय देवों का इन्द्र।

पयई देखो पयवी।

पयंग पुं [पतङ्ग] सूर्य। रंग-विशेष, रञ्जन-द्रव्य-विशेष। शलभ, फतिंगा। पयय = पतग,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पदक, पदग। °वीहिया स्त्री [°वीथिका] शलभ का उड़ना। भिक्षा के लिए पतंग की तरह चलना, बीच में दो चार घरों को छोड़ते हुए भिक्षा लेना। °वीही स्त्री [°वीथी] वही पूर्वोक्त अर्थ।

पयंचुल पुंन [प्रपञ्चुल] मत्स्यबन्धन-विशेष, मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल।

पयंड वि [प्रचण्ड] अत्युग्र, तीव्र, प्रखर। भयानक, भयंकर।

पयंड वि [प्रकाण्ड] अत्युग्र, उत्कट।

पयंप अक [प्र + कम्प्] अतिशय काँपना।

पयंप सक [प्र + जल्प्] कहना, बोलना। बकवाद करना।

पयंस सक [प्र + दर्शय्] दिखलाना।

पयक्क देखो पाइक्क।

पयक्ख सक [प्रत्या + ख्या] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना।

पयक्खिण देखो पदक्खिण।

पयक्खिणा देखो पदक्खिणा।

पयग देखो पयय = पतग, पदक, पदग।

पयच्छ सक [प्र + यम्] देना, अर्पण करना।

पयट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह। चलित।

पयट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करनेवाला।

पयट्टावअ वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला।

पयट्टाविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ।

पयट्टिअ वि [दे] किसी कार्य में लगाया हुआ।

पयट्ठाण देखो पइट्ठाण।

पयड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना। विख्यात होना।

पयडि देखो पगइ।

पयडि स्त्री [दे] मार्ग।

पयडिय वि [प्रपतित] गिरा हुआ।

पयडीकय वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया हुआ।

पयडीकर सक [प्रकटी + कृ] प्रकट करना।

पयडीभूअ } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट
पयडीहूअ } हुआ हो।

पयड्ढणी स्त्री [दे] प्रतीहारी। आकर्षण। महिषी।

पयण देखो पवण।

पयण देखो पडण।

पयण } न [पचन, °क] पाक, पकाना।
पयणग } पकाने का पात्र। °साला स्त्री [°शाला] एक-स्थान।

पयणु } वि [प्रतनु] कृश। सूक्ष्म। अल्प।
पयणुअ }

पयण्णय देखो पइण्णग।

पयत्त अक [प्र + यत्] प्रयत्न करना।

पयत्त देखो पयट्ट = प्र + वृत।

पयत्त पुं [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग।

पयत्त वि [प्रदत्त, प्रत्त] दिया हुआ। अनुज्ञात, सम्मत।

पयत्त देखो पयट्ट = प्रवृत्त।

पयत्ताविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ।

पयत्थ पुं [पदार्थ] शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ। तत्त्व। वस्तु, चीज।

पयन्न देखो पइण्ण = प्रकीर्ण।

पयन्ना देखो पइण्णा।

पयप्पण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार।

पयय देखो पायय = प्राकृत।

पयय वि [प्रयत] प्रयत्न-शील।

पयय पुं [पतग, पदक, पदग] वानव्यन्तर देवों की एक जाति। पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र। °वइ पुं [°पति] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र।

पयय न [दे] अनिश, निरन्तर।

पयर सक [स्मृ] स्मरण करना।

पयर अक [प्र + चर्] प्रचार होना। फैलना व्यापृत होना, काम में लगना।

पयर पुं [प्रकर] समूह, सार्थ, जत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयर पुं [प्रदर] योनि का रोग-विशेष। विदारण, भंग। शर, बाण।

पयर देखो पइर = वप्।

पयर देखो पयार = प्रकार।

पयर देखो पयार = प्रचार।

पयर पुंन [प्रतर] पत्रक, पत्रा, पतरा। वृत्त पत्राकार आभूषण-विशेष। गणित-विशेष, सूची से गुणी हुई सूची। भेद-विशेष, बाँस आदि की तरह पदार्थ का पृथग्भाव। °तप पुंन [तपस्] तप-विशेष। °वट्ट न [°वृत्त] संस्थान-विशेष।

पयर न [प्रतर] गणित-विशेष, श्रेणी से गुनी हुई श्रेणी।

पयरण न [प्रकरण] प्रस्ताव, प्रसंग। एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थ। एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थांश।

पयरण न [प्रतरण] प्रथम दातव्य भिक्षा।

पयरिस देखो पयंस।

पयरिस देखो पगरिस।

पयल अक [प्र + चल्] चलना। स्खलित होना।

पयल देखो पयड = प्र + कटय्।

पयल देखो पयड = प्रकट।

पयल (अप) सक [प्र + चालय्] चलाना। गिराना।

पयल वि [प्रचल] चलायमान, चलनेवाला।

पयल पुं [दे] नीड़।

पयल° } स्त्री [दे. प्रचला] नींद। बैठे-बैठे
पयला } और खड़े-खड़े जो नींद आती है वह। जिसके उदय से बैठे-बैठे और खड़े-खड़े नींद आती है वह कर्म। °पयला स्त्री [दे. प्रचला] जिसके उदय से चलते-चलते निद्रा आती है वह कर्म। चलते-चलते आनेवाली नींद।

पयला अक [प्रचलाय्] निद्रा लेना।

पयलाइअ न [प्रचलायित] नींद के कारण बैठे-बैठे सिर का डोलना।

पयलाइया स्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति।

पयलाय देखो पयला = प्रचलाय्।

पयलाय पुं [दे] महादेव। साँप।

पयलायण न [प्रचलायन] देखो पयलाइअ।

पयलायभत्त पुं [दे] मोर।

पयलिअ देखो पयडिअ।

पयलिय वि [प्रदलित] तोड़ा हुआ।

पयले सक [प्र = चालय्] चलायमान करना।

पयल्ल अक [प्र + सृ] पसरना, फैलना।

पयल्ल अक [क्रु] शिथिल करना, ढीला होना। लटकना।

पयल्ल वि [प्रसृत] फैला हुआ।

पयल्ल पुं [प्रकल्प] महाग्रह-विशेष।

पयव सक [प्र + तप्, तापय्] तपाना।

पयव सक [पा] पीना, पान करना।

पयवई स्त्री [दे] सेना, लश्कर।

पयवि स्त्री [पदवि] देखो पयवी।

पयवी स्त्री [पदवी] रास्ता। बिरुद, पदवी।

पयह सक [प्र + हा] त्याग करना, छोड़ना।

पयहिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिण।

पया सक [प्र + जनय्] प्रसव करना, जन्म देना।

पया सक [प्र + या] प्रस्थान करना।

पया स्त्री [दे] चुल्ली, चुल्हा।

पया स्त्री. ब. [प्रजा] वशवर्त्ती मनुष्य, रैयत। जन-समूह। जन्तु-समूह। सन्तान वाली स्त्री। सन्तान। °णंद पुं [°नन्द] एक कुलकर पुरुष का नाम। °नाह पुं [°नाथ] राजा। °पाल पुं. एक जैन मुनि जो पाँचवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे। °वइ पुं [°पति] विधाता। प्रथम वासुदेव के पिता का नाम। रोहिणी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव। दक्ष, कश्यप आदि ऋषि। नरेश। रवि। अग्नि। त्वष्टा। पिता। कीट-विशेष। जामाता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहोरात्र का उन्नीसवाँ मुहूर्त ।
पयाइ पुं [पदाति] पाँव से (पैदल) चलनेवाला सैनिक ।
पयाग पुंन [प्रयाग] तीर्थ-विशेष, जहाँ गंगा और यमुना का संगम है ।
पयाण न [प्रदान] दान, वितरण ।
पयाण न [प्रतान] विस्तार ।
पयाण न [प्रयाण] प्रस्थान, गमन ।
पयाम देखो पकाम ।
पयाम न [दे] अनुपूर्व, क्रमानुसार ।
पयाय देखो पयाग ।
पयाय वि [प्रयात] जिसने प्रयाण किया हो वह ।
पयाय वि [प्रजात] उत्पन्न, संजात ।
पयाय वि [प्रजात, प्रजनित] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह ।
पयाय देखो पयाव = प्रताप ।
पयार सक [प्र + चारय्] प्रचार करना ।
पयार सक [प्र + तारय्] ठगना ।
पयार पुं [प्रकार] भेद, किस्म । ढंग, रीति, तरह ।
पयार पुं [प्राकार] दुर्ग ।
पयार पुं [प्रचार] संचार, संचरण । प्रसार । प्रकर्ष-प्राप्ति । आचरण, आचार ।
पयाल पुं [पाताल] भगवान् अनन्तनाथजी का शासन-यक्ष ।
पयाव सक [प्र + तापय्] गरम करना ।
पयाव पुं [प्रताप] तेज, प्रखरता । प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा ।
पयावण न [पाचन] पकवाना, पाक करना ।
पयावण न [प्रतापन] तपाना । अग्नि ।
पयावि वि [प्रतापिन्] प्रताप-शाली । पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ।
पयास सक [प्र + काशय्] व्यक्त करना । चमकाना । प्रसिद्ध करना ।
पयास देखो पगास = प्रकाश ।
पयास पुं [प्रयास] प्रयत्न, उद्यम ।
पयास (अप) नीचे देखो ।
पयासग वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला ।
पयासण न [प्रकाशन] प्रकाश-करण । वि. प्रकाशक, प्रकाश करनेवाला ।
पयासय देखो पयासग ।
पयाहिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिण ।
पयाहिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिणय् ।
पयाहिणा देखो पदक्खिणा ।
पय्यवत्थाण (शौ) न [पर्यवस्थान] प्रकृति में अवस्थान ।
पर सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना ।
पर देखो प = प्र ।
पर वि. भिन्न, इतर । तत्पर, तल्लीन । श्रेष्ठ, प्रधान । प्रकृष्ट । उत्तरवर्ती । दूरवर्ती । अनात्मीय । पुं. शत्रु । न. फक्त । °उट्ठ वि [°पुष्ट] अन्य से पालित । पुं. कोकिल पक्षी । °उत्थिय वि [°तीर्थिक] भिन्न दर्शनवाला । °एस पुं [°देश] विदेश । °ओ अ [°तस्] बाद में, परली—दूसरी तरफ । इतर में । अन्य से । °गणिच्चय वि [°गणीय] भिन्न गण से सम्बन्ध रखनेवाला । °गरिहंझाण न [°गर्हाध्यान] इतर की निन्दा का विचार । °घाय पुं [°घात] दूसरे को आघात पहुँचाना । पुंन. जिसके उदय से जीव अन्य बलवानों की दृष्टि में भी अजेय समझा जाता है वह कर्म । °चित्तण्णु वि [°चित्तज्ञ] अन्य के मन के भाव को जाननेवाला । °च्छंद, °छंद पुं [°च्छन्द] अन्य का आशय । पराधीन । °जाणुअ वि [°ज्ञ] पर को जाननेवाला । प्रकृष्ट जानकार । °ट्ठ पुं [°र्थ] परोपकार । °ट्ठा स्त्री [°र्थ] दूसरे के लिए । °णिंदझाण न [°निन्दाध्यान] अन्य की निन्दा का चिन्तन । °ण्णुअ देखो °जाणुअ । °तंत वि [°तन्त्र] पराधीन । °तित्थिअ देखो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°उत्थिय। °तीर न. सामनेवाला किनारा। °त्त न [°त्व] पार्थक्य। वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध गुण-विशेष।°त्त अ[°त्र] परलोक में। न. जन्मान्तर। °त्थ अ [°त्र] जन्मान्तर में। °त्थ देखो °ट्ठ। °त्थी स्त्री [°स्त्री] परकीय स्त्री।°दार पुंन. परकीय स्त्री।°दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट। °पक्ख वि [°पक्ष] भिन्न धर्म का अनुयायी। °परिवाइय वि [°परिवादिक] पर-निन्दक। °परिवाय पुं [°परिवाद] पर के गुण-दोषों का विप्रकीर्ण वचन। इतर के दोषों का परिकीर्त्तन। अन्य के सद्गुणों का अपलाप। °परिवाय पुं [°परिपात] अन्य का पातन, दोषोद्घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना। °पुट्ठ देखो °उट्ठ। °भव पुं. आगामी जन्म। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म से सम्बन्ध रखनेवाला। °भाग पुं. श्रेष्ठ अंश। अन्य का हिस्सा। अत्यन्त उत्कर्ष। °महेला स्त्री.उत्तम स्त्री। परकीय स्त्री। °यत्त देखो °यत्त। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] इतर जन, स्वजन से भिन्न। जन्मान्तर। °वस वि [°वश] परतन्त्र। °वाइ पुं [°वादिन्] इतर दार्शनिक। °वाय पुं [°वाद] इतर दर्शन, भिन्न मत। श्रेष्ठ वादी। °वाय पुं [°वाच्] सज्जन। वि. श्रेष्ठ वाणीवाला। °वाय वि [°वाज] श्रेष्ठ गतिवाला। पुं. श्रेष्ठ अश्व। °वाय वि [°वाय] जानकार, ज्ञानी। °वाय वि [°पाक]सुन्दर रसोई बनानेवाला। पुं. रसोइया। °वाय पुं [°पात] जुआड़ी। अशुभ समय। °वाय पुं [°व्याद] ब्राह्मण। °वाय पुं [°वाय] धनाढ्य तन्तुवाय। °वाय वि [°व्रात] प्रकृष्ट समूहवाला। न. सुभिक्ष समय का धान्य। °वाय पुं [°वात] ग्रीष्म समय का जलधि-तट। °वाय पुं [°व्याच] धूर्त्त। °वाय वि [°पाय] अनीतिवाला। °वाय वि [°वाक] वेदज्ञ। °वाय वि [°पातृ] दयालु। खूब पान करनेवाला। खूब सूखनेवाला। पुं. प्रावृट् काल का यवास वृक्ष। मद्य-व्यसनी। °वाय वि [°वाद] सुस्थिर। °वाय वि [°व्यातृ] श्रेष्ठ आच्छादक। पुं. वस्त्र। °वाय वि [°वातृ] प्रकृष्ट वहन करनेवाला। पुं. उत्तम जुलाहा। महान् पवन। °वाय वि [°व्यागस्] गुरुतर अपराधी। °वाय वि [°व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला। °वाय वि [°वाक] जहाँ पर प्रकृष्ट बक-समूह हो वह स्थान। न. मत्स्यपरिपूर्ण सरोवर। °वाय वि [°व्याय] श्रेष्ठ वायुवाला। जहाँ पर पक्षियों का विशेष आगमन होता हो वह। पुं. अनुकूल पवन से चलता जहाज। सुन्दर घर। वन-प्रदेश। °वाय वि [°आवाय] जहाँ पानी का प्रकृष्ट आगमन हो वह। न. समुद्र का मुँह। पुं. महासागर। °वाय वि [°व्याज] अन्य के पास-विशेष गमन करनेवाला। प्रार्थना-परायण। °वाय वि [°पाय] अत्यन्त हीन-भाग्य। नित्य-दरिद्र। °वाय वि [°वाप] प्रकृष्ट वपनवाला। पुं. कृषक। °वाय वि [°पाप] महापापी। हत्या करनेवाला। °वाय पुं [°पाक] कुम्भकार। मुक्त जीव। पहली तीन नरक-भूमि। °वाय वि [°पाग] वृक्ष-रहित। °वाय वि [°वाज्] शत्रु-नाशक। °वाय पुं [°पाद] महान् वृक्ष, बड़ा पेड़। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पैरवाला। °वाय वि [°वाच] फलित शालि। °वाय वि [°आवाप] विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करनेवाला। पुं. अमात्य। योद्धा। °वाय वि [°आपात] जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह। °वाय वि [°आय]श्रेष्ठ विवाहवाला। °वाय वि [°पाय] जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह। अत्यन्त प्यासा। पुं. राजा। °वाय वि [°व्यात] इतर के पास विशेष गमन करने वाला। पुं. भिक्षुक, याचक। °वाय वि [°पायस्] दूसरे की रक्षा के लिए हथियार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रखनेवाला। पुं. सुभट। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या। °वाया स्त्री [°व्यागस्] कुलटा। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समुद्र की स्थिति। °वाया स्त्री [°पाता] धूर्त्त-मैत्री। °वाया स्त्री [°व्राया] नृप-कन्या। °वाया स्त्री [°पागा] मरु-भूमि। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष। °विएस पुं [°विदेश] परदेश। °व्वस देखो °वस। °संतिग वि [°सत्क] परकीय। °समय पुं. इतर दर्शन का सिद्धान्त। °हुअ वि [°भृत] अन्य से पालित। पुंस्त्री. कोयल। °घाय देखो °घाय। °धीण देखो °हीण। °यत्त वि [°यत्त] पराधीन। °हीण वि [°धीन] परतन्त्र।

पर° देखो परा = अ।

परं अ [परम्] किन्तु। उपरान्त। केवल।

परं अ [परुत्] आगामी वर्ष।

परंग सक [परि + अङ्ग्] गति करना।

परंगमण न [पर्यङ्गन] पाँव से चलना।

परंगामण न [पर्यङ्गन] चलाना।

परंतम वि [परतम] अन्य का हैरान-कर्ता।

परंतम वि [परतमस्] अन्य पर क्रोध करनेवाला। अन्य-विषयक अज्ञानी।

परंतु अ [परन्तु] किन्तु।

परंदम वि [परन्दम] अन्यपीड़क। अन्य को शान्त करनेवाला। अश्व आदि को सिखानेवाला।

परंपर, परंपरग, परंपरय } वि [परम्पर] भिन्न-भिन्न। व्यवहित। पुंन. परम्परा, अविच्छिन्न धारा।

परंपरा स्त्री [परम्परा] अनुक्रम, परिपाटी। अविच्छिन्न धारा, प्रवाह। निरन्तरता। व्यवधान।

परंभरि वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरनेवाला।

परंमुह वि [पराङ्मुख] विमुख।

परकीअ, परकेर, परक्क } वि [परकीय] अन्य-सम्बन्धी।

परक्क न [दे] छोटा प्रवाह।

परक्कंत वि [पराक्रान्त] जिसने पराक्रम किया हो वह। अन्य से आक्रान्त। न. पराक्रम, बल। उद्यम, प्रयत्न।

परक्कम अक [परा + क्रम्] पराक्रम करना। सक. जाना। आसेवन करना। अक. प्रवृत्ति करना।

परक्कम पुं[पराक्रम] गर्त आदि से भिन्न मार्ग। पुंन. वीर्य, बल, सामर्थ्य। उत्साह। चेष्टा, प्रयत्न। शत्रु का नाश करने की शक्ति। पर-आक्रमण, पर-पराजय। गमन, गति। मार्ग।

परग न [दे. परक] तृण-विशेष, जिससे फूल गूंथे जाते हैं। धान्य-विशेष।

परग वि [पारग] परग तृण का बना हुआ।

परगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला।

परग्घ वि [परार्घ्र] बहुमूल्य।

परज्ज (अप) सक [परा + जि] हराना।

परज्झ वि [दे] पर-वश।

परट्ट देखो परिअट्ट = परिवर्त।

परडा स्त्री [दे] सर्प-विशेष।

परदारिअ पुं [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट।

परद्ध वि [दे] पीड़ित, दुःखित। पतित। भीरु। व्याप्त।

परप्पर देखो परोप्पर।

परब्भवमाण देखो पराभव का वकृ.।

परभत्त वि [दे] डरपोक।

परभाअ पुं [दे] मैथुन।

परम वि. उत्कृष्ट, सर्वाधिक। सर्वोत्तम। अत्यन्त। मुख्य। पुं. मोक्ष। संयम, चारित्र। न. सुख। लगातार पाँच दिनों का उपवास। °ट्ठ पुं [°र्थ] सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ति। संयम, चारित्र। पुंन. देखो नीचे °त्थ = °ार्थ। °त्थ न [°ार्थ] तत्त्व, सत्य। देखो °ट्ठ। °त्थ न [°ास्त्र] सर्वोत्तम हथियार, अमोघ अस्त्र। °सि वि [°दर्शिन्]। मोक्ष-मार्ग का जानकार। °न्न न. खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन। एक दिन का उपवास। °पय न [°पद] मोक्ष। °प्प पुं [°ात्मन्] सर्वोत्तम आत्मा, परमेश्वर। °प्पय देखो °पय। °प्पय देखो °प्प। °प्पया स्त्री [°ात्मता] मुक्ति। °बोधिसत्त पुं [°बोधिसत्त्व] अर्हन् देव का परम भक्त। °संखिज्ज न [°संख्येय] संख्या-विशेष। °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यित] सर्वोत्तम मनवाला, सन्तुष्ट मनवाला। °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यिक] वही अर्थ। °हेला स्त्री उत्कृष्ट तिरस्कार। °ाउ न [°ायुस्] लम्बा आयुष्य। जीवित काल। °ाणु पुं. सर्व-सूक्ष्म वस्तु। °ाहम्मिय [°ाधार्मिक] असुर-विशेष, नारक जीवों को दुःख देनेवाले देवों की एक जाति। °ाहोहिअ वि [°ाधोवधिक] अवधि-ज्ञान-विशेषवाला।

परमाहम्मिय वि [परमधार्मिक] सुख का अभिलाषी।

परमिट्ठि पुं [परमेष्ठिन्] ब्रह्मा। अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि।

परमुक्क वि [परामुक्त] परित्यक्त।

परमुवगारि } वि [परमोपकारिन्] बड़ा
परमुवयारि } उपकार करनेवाला।

परमुह देखो परम्मुह।

परमेट्ठि देखो परमिट्ठि।

परमेसर पुं [परमेश्वर] सर्वैश्वर्य-सम्पन्न।

परम्मुह पुं [पराङ्मुख] विमुख, उदासीन।

परय न [परक] आधिक्य, अतिशय।

परलोइअ वि [पारलौकिक] जन्मान्तर-सम्बन्धी।

परवाय वि [प्ररवाज] प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करनेवाला। पुं. सारथि।

परवाय वि [प्ररवाय] श्रेष्ठ गाना गानेवाला। पुं. उत्तम गवैया।

परवाय पुं [प्ररपाज] वह घर जहाँ अनाज संगृहीत किया जाता है, कोठार, बखार।

परवाया स्त्री [प्ररवाप्] पहाड़ी नदी।

परस (अप) देखो फास = स्पर्श। °मणि पुं. रत्न-विशेष जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है।

परसण्ण (अप) देखो पसण्ण।

परसु पुं [परशु] अस्त्र-विशेष, कुठार, कुल्हाड़ी। °राम पुं. जमदग्नि ऋषि का पुत्र जिसने इक्कीस बार निःक्षत्रिय पृथिवी की थी।

परसुहत्त पुं [दे] वृक्ष, दरख्त।

परस्सर पुंस्त्री [दे. पराशर] गेंडा, पशु-विशेष।

परहुत्त वि [पराभूत] पराजित।

परा अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—सम्मुखता। त्याग। धर्षण। प्राधान्य। विक्रम। गति। भङ्ग। अनादर। तिरस्कार। प्रत्यावर्तन। अत्यन्त।

परा स्त्री [दे. परा] तृण-विशेष।

पराइ सक [परा + जि] हराना।

पराइअ वि [पराजित] पराभव-प्राप्त।

पराइअ (अप) वि [परागत] गया हुआ।

पराइण देखो पराजिण।

पराई स्त्री [परकीया] वह नायिका जो पर-पुरुष से प्रेम करे। देखो पराय = परकीय।

पराकम देखो परक्कम।

पराकय वि [पराकृत] निरस्त।

पराकर सक [परा + कृ] निराकरण करना।

पराजय पुं [पराजय] अभिभव।

पराजय } सक [परा + जि] पराजय
पराजिण } करना, हराना।

पराजिय देखो पराइअ = पराजित।

पराण देखो पाण = प्राण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पराणग वि [परकीय] दूसरे का ।
पराणिय वि [पराणीत] पहुँचा हुआ ।
पराणी सक [परा + णी] पहुँचाना ।
परानयण न [पराणयन] पहुँचाना ।
पराभव सक [परा + भू] हराना ।
परामट्ठ देखो परामुट्ठ ।
परामरिस सक [परा + मृश्] विचार करना, विवेचन करना । स्पर्श करना । आच्छादित करना । पोंछना । लोप करना ।
परामरिस पुं. [परामर्श] विवेचन, विचार । युक्ति, उपपत्ति । स्पर्श । न्यायशास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पक्ष का ज्ञान ।
परामिट्ठ, परामुट्ठ वि [परामृष्ट] विचारित, विवेचित । छुआ हुआ ।
परामुस देखो परामरिस ।
पराय अक [प्र + राज्] विशेष शोभना ।
पराय पुं [पराग] धूली । पुष्प-रज ।
पराय, परायग वि [परकीय] पर-सम्बन्धी ।
परायण वि. तत्पर ।
परारिं अ. आगमी तीसरा वर्ष ।
पराल देखो पलाल ।
पराव (अप) सक [प्र + आप्] प्राप्त करना ।
परावत्त अक [परा + वृत्] बदलना, पलटना । पीछे लौटना ।
परावत्त सक [परा + वर्तय्] फिराना । आवृत्ति करना ।
परासर पुं [पराशर] पशु-विशेष । ऋषि-विशेष ।
परासु वि. मृत ।
पराहव देखो पराभव = पराभव ।
पराहुत्त वि [दे. पराङ्मुख] विमुख ।
पराहुत्त, पराहूअ वि [पराभूत] हराया हुआ ।
परि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—सर्वतोभाव, चारों ओर । परिपाटी । पुनः-पुनः समीपता । विनिमय । अतिशय, विशेष । सम्पूर्णता । बाहरपन । ऊपर । बाकी । पूजा । व्यापकता । निवृत्ति । शोक । किसी प्रकार की प्राप्ति । आख्यान । सन्तोष-भाषण । अलंकरण । आलिंगन । नियम । प्रतिषेध । निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है ।
परि देखो पडि = प्रति ।
परि स्त्री [दे] गीति, गीत ।
परि सक [क्षिप्] फेंकना ।
परिअंज सक [परि + भञ्ज्] तोड़ना ।
परिअंत सक [श्लिष्] आलिंगन करना । संसर्ग करना ।
परिअंत देखो पज्जंत ।
परिअंतणा स्त्री [परियन्त्रणा] अतिशय यन्त्रणा ।
परिअंभिअ वि [परिजृम्भित] विकसित ।
परिअट्ट अक [परि + वृत्त] पलटना, बदलना । फिर-फिर होना ।
परिअट्ट सक [परि + वर्तय्] पलटाना, बदलाना । आवृत्ति करना, पठित पाठ को याद करना । फिराना, घुमाना ।
परिअट्ट सक [परि + अट्] संचरण करना । परिभ्रमण करना, घूमना ।
परिअट्ट पुं [दे] धोबी ।
परिअट्ट पुं [परिवर्त] पलटाव, बदला । समय का परिणाम-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल ।
परिअट्टग वि [परिवर्तक] परिवर्तन करनेवाला ।
परिअट्टण न [परिवर्तन] पलटाव, बदला करना । द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण ।
परिअट्टय वि [पर्यटक] परिभ्रमण करनेवाला ।
परिअट्टलिअ वि [दे] परिच्छिन्न ।
परिअट्टविअ वि [दे] परिच्छिन्न ।
परिअट्टिय वि [परिवर्तित] बदलाया हुआ । देखो परिअत्तिअ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिअड सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना ।

परिअडि स्त्री [दे] वृति, बाड़ । वि. मूर्ख ।

परिअड्डिअ वि [दे] प्रकटित ।

परिअड्ढ अक [परि + वृध्] बढ़ना ।

परिअड्ढ सक [परि + वर्धय्] बढ़ाना ।

परिअड्ढिअ वि [परिवर्धिन्, °क] बढ़ानेवाला ।

परिअड्ढिअ वि [पर्याढ्यक] परिपूर्ण ।

परिअड्ढिअ वि [परिकर्षिन्, °क] खींचनेवाला, आकर्षक ।

परिअड्ढिअ वि [परिकृष्ट] खींचा हुआ ।

परिअण पुं [परिजन] परिवार । अनुचर ।

परिअत्त देखो परिअंत = श्लिष् ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत् ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्तय् ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परिवर्त ।

परिअत्त वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ ।

परिअत्त वि [परिवृत्त] पलटा हुआ ।

परिअत्तण देखो परिअट्टण ।

परिअत्तमाणी स्त्री [परिवर्तमाना] वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या उदय को प्राप्त होती है ।

परिअत्ता स्त्री [परिवर्त्ता] ऊपर देखो ।

परिअत्तिअ वि [परिवर्तित] मोड़ा हुआ । देखो परिअट्टिय ।

परिअर सक [परि + चर्] सेवा करना ।

परिअर वि [दे] निमग्न ।

परिअर पुं [परिकर] कटि-बन्धन ।

परिअर पुं [परिचर] भृत्य ।

परिअरिय वि [परिकरित, परिवृत] परिवार-युक्त । परिवेष्टित ।

परिअल सक [गम्] जाना, गमन करना ।

परिअल, परिअलि } पुंस्त्री [दे] थाल, थलिया, भोजन-पात्र ।

परिअल्ल देखो परिअल ।

परिआरअ वि [परिचारक] सेवक, भृत्य ।

परिआल सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना ।

परिआल वि [दे] परिवृत, परिवेष्टित ।

परिआल देखो परिवार ।

परिआव देखो परिताव ।

परिआविअ सक [पर्या + पा] पीना ।

परिआसमंत (अप) अ [पर्यासमन्तात्] चारों ओर से ।

परिइ सक [परि + इ] पर्यटन करना ।

परिइण्ण वि [परिकीर्ण] व्याप्त ।

परिइद (शौ) वि [परिचित] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ ।

परिउंब सक [परि + चुम्ब्] सर्वतः चुम्बन करना ।

परिउट्ठ वि [परितुष्ट] विशेष तुष्ट ।

परिउत्थ वि [दे] प्रोषित, प्रवास-गत ।

परिउसिअ वि [पर्युषित] बासी, ठण्ढा, भाफ निकला हुआ (भोजन) ।

परिऊढ वि [दे. परिगूढ] क्षाम, कृश ।

परिऊरण न [परिपूरण] परिपूर्ति ।

परिएस देखो परिवेस = परि + विष् ।

परिएस देखो परिवेस = परिवेश ।

परिओस सक [परि + तोषय्] सन्तुष्ट करना, खुशी करना ।

परिओस पुं [परितोष] आनन्द, सन्तोष ।

परिओस पुं [दे. परिद्वेष] विशेष द्वेष ।

परिंत देखो परी = परि + इ का वकृ. ।

परिकंख सक [परि + काङ्क्ष्] विशेष अभिलाषा करना । प्रतीक्षा करना ।

परिकंद पुं [परिक्रन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट ।

परिकंपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय कँपानेवाला ।

परिकच्छिय वि [परिकक्षित] परिगृहीत ।

परिकट्ठलिअ वि [दे] एकत्र पिण्डीकृत ।

परिकड्ढ सक [परि + कृष्] पार्श्व भाग में खींचना । प्रारम्भ करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिकप्प सक [परि + कल्पय्] निष्पादन करना। कल्पना करना।
परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ। देखो परिगप्पिय।
परिकब्बुर न [परिकर्बुर] चितकबरा।
परिकम्म, परिकम्मण न [परिकर्मन्] गुण-विशेष का आधान, संस्कार-करण। संस्कार का कारण-भूत शास्त्र। गणित-विशेष। एक तरह की गणना। निष्पादन।
परिकर देखो परिअर = परिकर।
परिकलण न [परिकलन] उपभोग।
परिकलिअ वि [परिकलित] युक्त, सहित। व्याप्त। प्राप्त।
परिकवलणा स्त्री [परिकवलना] भक्षण।
परिकसण न [परिकर्षण] खींचाव।
परिकह सक [परि + कथय्] प्ररूपण करना, कहना। आख्यान करना।
परिकहा स्त्री [परिकथा] बातचीत। वर्णन।
परिकित्तिअ वि [परिकीर्त्तित] श्लाघित।
परिकिन्न वि [परिकीर्ण] वेष्टित।
परिकिलेस सक [परि + क्लेशय्] दुःखी करना, हैरान करना। बाधा करना।
परिकीलिर वि [परिक्रीडितृ] अतिशय क्रीड़ा करनेवाला।
परिकुंठिय वि [परिकुण्ठित] जड़ीभूत।
परिक्कंत वि [पराक्रान्त] पराक्रम-युक्त।
परिक्कम सक [परि + क्रम्] पाँव से चलना। समीप में जाना। पराभव करना। अक. पराक्रम करना।
परिक्कहि देखो परिकहि।
परिक्काम देखो परिक्कम = परि + कम्।
परिक्ख सक [परि + ईक्ष्] परखना।
परिक्खअ वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला।
परिक्खअ वि [परिक्षत] आहत।
परिक्खअ पुं [परिक्षय] क्रमशः हानि। नाश।

परिक्खण न [परीक्षण] परीक्षा।
परिक्खल अक [परि + स्खल्] स्खलित होना।
परिक्खा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच।
परिक्खाइअअ वि [दे] परिक्षीण।
परिक्खाम वि [परिक्षाम] अतिशय कृश।
परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] वेष्टित, घेरा हुआ। सर्वथा क्षिप्त। चारों ओर से व्याप्त।
परिक्खिव सक [परि + क्षिप्] वेष्टन करना। तिरस्कार करना। व्याप्त करना। फेंकना।
परिक्खेव वि [परिक्षेप] घेरा, परिधि।
परिखंध पुं [दे] कहार, जलादि-वाहक, नौकर।
परिखज्ज सक [परि + खर्ज्] खुजाना।
परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण।
परिखविय वि [परिक्षपित] परिक्षीण।
परिखित्त देखो परिक्खित्त।
परिखिव देखो परिक्खिव।
परिखेइय वि [परिखेदित] विशेष खिन्न किया हुआ।
परिगण सक [परि + गणय्] गणना करना। चिन्तन करना, विचार करना।
परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना।
परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह। देखो परिकप्पिय।
परिगम सक [परि + गम्] जाना, गमन करना। चारों ओर से वेष्टन करना। व्याप्त करना।
परिगमण न [परिगमन] गुण पर्याय। समन्ताद् गमन।
परिगमिर वि [परिगन्तृ] जानेवाला।
परिगय वि [परिगत] परिवेष्टित। व्याप्त।
परिगर पुं [परिकर] परिवार।
परिगरिय वि [परिकरित] देखो परिअरिय।
परिगल अक [परि + गल्] गल जाना, क्षीण होना। झरना, टपकना।
परिगह देखो परिग्गेण्ह।
परिगह देखो परिग्गह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिगा सक [परि + गै] गान करना ।
परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन ।
परिगिज्जमाण देखो परिगा का कृ. ।
परिगिज्झ } परिगेण्ह का कृ. ।
परिगिज्झिय }
परिगिण्ह देखो परिगेण्ह ।
परिगिला अक [परि + ग्लै] ग्लान होना ।
परिगुण सक [परि + गुणय्] परिगणन करना, गिनती करना । स्वाध्याय करना ।
परिगुव अक [परि + गुप्] व्याकुल होना । सक. सतत भ्रमण करना ।
परिगुव सक [परि + गु] शब्द करना ।
परिगुव्व अक [परि + गुप्] व्याकुल होना । सक. सतत भ्रमण करना ।
परिगू सक [परि + गू] शब्द करना ।
परिगेण्ह } सक [परि + ग्रह्] ग्रहण करना,
परिग्गह } स्वीकार करना ।
परिग्गय देखो परिगय ।
परिग्गह पुं [परिग्रह] ग्रहण, स्वीकार । धन आदि का संग्रह । ममत्व, मूर्च्छा । ममत्व-पूर्वक जिसका संग्रह किया जाय वह । °वेरमण न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति । °वंत वि [°वत्] परिग्रह-युक्त ।
परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-सम्बन्धी क्रिया ।
परिघग्घर वि [परिघर्घर] बैठी हुई (आवाज) ।
परिघट्ट सक [परि + घट्ट्] आघात करना ।
परिघट्टण न [परिघटन] निर्माण, रचना ।
परिघट्ठ वि [परिघृष्ट] घिसा हुआ ।
परिघाय देखो परीघाय ।
परिघास सक [परि + घासय्] जिमाना ।
परिघासिय वि [परिघर्षित] परिघर्ष-युक्त ।
परिघुम्मिर वि [परिघूर्णितृ] शनैः-शनैः काँपता, हिलता, डोलता ।
परिघेत्तुं देखो परिगेण्ह का हेकृ. ।
परिघोल सक [परि + घूर्ण्] डोलना । परि-भ्रमण करना ।
परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार ।
परिचअ देखो परियय = परिचय ।
परिचअ देखो परिच्चअ ।
परिचत्त देखो परिच्चत्त ।
परिचरणा स्त्री. [परिचरणा] सेवा, भक्ति ।
परिचारअ वि [परिचारक] सेवक ।
परिचारणा स्त्री. मैथुन-प्रवृत्ति ।
परिचिट्ठ अक [परि + स्था] रहना, स्थिति करना ।
परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिह्ला हुआ, पहिचाना हुआ ।
परिचुंब देखो परिउंब ।
परिच्चअ सक [परि + त्यज्] छोड़ देना ।
परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह ।
परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करने-वाला ।
परिच्चाग } पुं [परित्याग] त्याग, मोचन ।
परिच्चाय }
परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक ।
परिच्छिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ ।
परिच्छिअ देखो परिच्चिय ।
परिच्छ देखो परिक्ख ।
परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्त्ता ।
परिच्छण्ण वि [परिच्छन्न] आच्छादित । परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित ।
परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला ।
परिच्छिंद सक [परि + छिद्] निश्चय करना, निर्णय करना । काटना ।
परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] काटा हुआ । निर्णीत, निश्चित ।
परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] परिच्छेद, निर्णय । परीक्षा, जाँच ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिच्छूढ वि [दे. परिक्षिप्त] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। परित्यक्त।
परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निश्चय।
परिच्छेअ वि [दे. परिच्छेक] लघु, छोटा।
परिच्छेअग वि [परिच्छेदक] निश्चय-कर्ता।
परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य।
परिच्छेद देखो परिच्छेअ = परिच्छेद।
परिच्छेदग देखो परिच्छेअग।
परिच्छोय वि [परिस्तोक] अल्प।
परिछेज्ज देखो परिच्छेज्ज।
परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल।
परिजण देखो परिअण।
परिजव सक [परि + विच्] पृथक् करना।
परिजव सक [परि + जप्] जाप करना। बहुत बोलना, बकवाद करना।
परिजाइय वि [परियाचित] माँगा हुआ।
परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जीत, जिस पर पूरा काबू किया गया हो वह।
परिजुण्ण वि [परिजीर्ण] फटा-टूटा, अत्यन्त जीर्ण। दुर्बल। निर्धन।
परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित।
परिजुण्णा स्त्री [परिजीर्णा, परिद्यूना] दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा।
परिजुसिय देखो परिझुसिय।
परिजुसिय न [पर्युषित] रात्रि-परिवसन, रात का बासी रहना, बासी। देखो परिउसिअ।
परिजूर अक [परि + जॄ] सर्वथा जीर्ण होना।
परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण।
परिज्जय पुं [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष।
परिज्जुन्न देखो परिजूरिय।
परिज्झामिय वि [परिध्यामित] श्याम (काला) किया हुआ।
परिज्झुसिय, परिझुसिय, परिझूसिय } वि [परिजुष्ट] सेवित। प्रीत। परीक्षण।

परिट्ठव सक [परि + स्थापय्] परित्याग करना। संस्थापन करना।
परिट्ठवण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना।
परिट्ठा देखो पइट्ठा।
परिट्ठाइ वि [परिष्ठापिन्] परित्यागी।
परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग।
परिट्ठाव देखो परिट्ठव।
परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग करनेवाला।
परिट्ठिअ वि [परिस्थित] सम्पूर्ण रूप से स्थित।
परिट्ठिअ देखो पइट्ठिय।
परिठव देखो परिट्ठव।
परिठवण देखो परिट्ठवण = परिष्ठापन।
परिणि देखो परिणी।
परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम।
परिणंतु वि [परिणन्तृ] परिणत होनेवाला।
परिणंद सक [परि + नन्द्] वर्णन करना, श्लाघा करना।
परिणद्ध वि [परिणद्ध] परिगत, वेष्टित। न. वेष्टन।
परिणम सक [परि + णम्] प्राप्त करना। अक. रूपान्तर को प्राप्त होना। पूर्ण होना, पूरा होना।
परिणमण न [परिणमन] परिणाम।
परिणमिअ, परिणय } वि [परिणत] परिपक्व। वृद्ध-प्राप्त। अवस्थान्तर को प्राप्त। °वय वि [°वयस्] वृद्ध।
परिणयण न [परिणयन] विवाह।
परिणव देखो परिणम।
परिणाइ पुं [परिज्ञाति] परिचय।
परिणाम सक [परि + णमय्] परिणत करना।
परिणाम पुं. अवस्थान्तर-प्राप्ति, रूपान्तरलाभ। दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होनेवाला आत्म-धर्म-विशेष। स्वभाव, धर्म। अध्यवसाय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनो-भाव । वि. परिणत करनेवाला ।

परिणामणया } स्त्री [परिणामना] परि-
परिणामणा } णमाना, रूपान्तरकरण ।

परिणामय वि [परिणामक] परिणत करने-वाला ।

परिणामि वि [परिणामिन्] परिणत होने-वाला । °कारण न. कार्य-रूप में परिणत होने-वाला कारण, उपादान कारण ।

परिणामिअ वि [पारिणामिक] परिणाम से उत्पन्न । परिणाम-सम्बन्धी । पुं. परिणाम । भाव-विशेष ।

परिणामिआ स्त्री [पारिणामिकी] दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि ।

परिणाय वि [परिज्ञात] जाना हुआ, परि-चित ।

परिणाव सक [परि + णायय्] विवाह कराना ।

परिणाह पुं. लम्बाई, विस्तार । परिधि ।

परिणिज्जरा स्त्री [परिनिर्जरा] विनाश ।

परिणिज्जिय वि [परिनिर्जित] पराभूत ।

परिणिट्ठा स्त्री [परिनिष्ठा] सम्पूर्णता, समाप्ति ।

परिणिट्ठाण न [परिनिष्ठान] अन्त ।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] पूर्ण किया हुआ, समाप्त किया हुआ । पार-प्राप्त, निपुण । परि-ज्ञात ।

परिणिट्ठिया स्त्री [परिनिष्ठिता] कृषि-विशेष, जिसमें दो या तीन बार तृण-शोधन किया गया हो वह कृषि अर्थात् दो या तीन बार की सोहनी (निराई) की हुई खेत । दीक्षा-विशेष, जिसमें बारम्बार अतिचारों की आलो-चना की जाती हो वह दीक्षा ।

परिणिय वि [परिणीत] जिसका विवाह हुआ हो वह ।

परिणिव्वव सक [परिनिर् + वापय्] सर्व प्रकार से अतिशय परिणत करना ।

परिणिव्वा अक [परिनिर् + वा] शान्त होना । मोक्ष को प्राप्त करना ।

परिणिव्वाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष ।

परिणिव्वुइ स्त्री [परिनिर्वृति] ऊपर देखो ।

परिणिव्वुय देखो परिनिव्वुअ ।

परिणी सक [परि + णी] विवाह करना । ले जाना ।

परिणी अक [परि + गम्] बाहर निकलना ।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह किया गया हो वह ।

परिणील वि [परिनील] सर्वथा हरा रंग का ।

परिणे देखो परिणी ।

परिणेविय (अप) वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह ।

परिणेव्वुय देखो परिनिव्वुअ ।

परिण्ण वि [परिज्ञ] ज्ञाता, जानकार ।

परिण्ण देखो परिण्णा° ।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] जानना ।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] ज्ञान, जानकारी । विवेक । पर्यालोचन, विचार । ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान ।

परिण्णाय देखो परिण्णा = परि + ज्ञा का सं. कृ ।

परिण्णि वि [परिज्ञिन्] परिज्ञा-युक्त ।

परितंबिर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण वर्णवाला ।

परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना ।

परितड्डविय वि [परितत] खूब फैलाया हुआ ।

परितप्प अक [परि + तप्] सन्तप्त होना, गरम होना । पश्चात्ताप करना । दुःखी होना ।

परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उप-जाना ।

परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ ।

परितविय वि [परितप्त] परिताप युक्त ।

परिताण न [परित्राण] रक्षण । वागुरादि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बन्धन।
परिताव देखो परितप्प = परि + तापय्।
परिताव पुं [परिताप] सन्ताप, दाह। पश्चात्ताप। पीड़ा। °यर वि [°कर] दुःखोत्पादक।
परिताविअ वि [परितापित] सन्तापित। तला हुआ।
परितास पुं [परित्रास] अकस्मात् भय।
परितुट्टिर वि [परित्रुटितृ] टूटनेवाला।
परितुट्ठ वि [परितुष्ट] सन्तुष्ट।
परितुलिय वि [परितुलित] तौला हुआ।
परितेज्जि परित्तज का. सं. कृ.।
परितोल सक [परि + तोलय्] उठाना।
परितोस सक [परि + तोषय्] खुश करना। सन्तुष्ट करना।
परित्त वि [परीत] व्याप्त। प्रभ्रष्ट। संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा। अन्तवाला, परिमित, नियत परिमाणवाला। लघु, छोटा। तुच्छ, हलका। एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीववाला। एक जीववाला। °करण न. लघूकरण। °जीव पुं. एक शरीर में एकाकी रहनेवाला जीव। °णंत न [°ानन्त] संख्या-विशेष। °संसारिअ वि [°संसारिक] परिमित संसारवाला। °ासंख न [°ासंख्यात] संख्या-विशेष।
परित्तज देखो परिच्चय।
परित्ता } सक [परि + त्रै] रक्षण करना।
परित्ताअ }
परित्ताणंतय पुंन [परीतानन्तक] संख्या-विशेष।
परित्तास देखो परितास।
परित्तासंखेज्जय पुंन [परीतासंख्येयक] संख्या-विशेष।
परित्तीकय वि [परीतीकृत] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत।
परित्तीकर सक [परीती + कृ] लघु करना, छोटा करना।
परित्थोम न [परिस्तोम] मस्तक। वि. वक्र।
परित्थंभिअ वि [परिस्तम्भित] स्तब्ध।
परिथु सक [परि + स्तु] स्तुति करना।
परिदा सक [परि + दा] देना।
परिदाह पुं सन्ताप।
परिदिण्ण वि [परित्त] दिया हुआ।
परिदिद्ध वि [परिदिग्ध] उपलिप्त।
परिदेव अक [परि + देव] विलाप करना।
परिदो अ [परितस्] चारों ओर से।
परिधम्म पुं [परिधर्म] छन्द-विशेष।
परिधाम पुंन [परिधामन्] स्थान।
परिनट्ठ वि [परिनष्ट] विनष्ट।
परिनिक्खम देखो पडिनिक्खम।
परिनिय सक [परि + दृश्] देखना, अवलोकन करना।
परिनिविट्ठ वि [परिनिविष्ट] ऊपर बैठा हुआ।
परिनिव्वुअ } वि [परिनिवृत] मोक्ष को
परिनिव्वुड } प्राप्त। शान्त, ठण्ढा। स्वस्थ।
परिन्नाय वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह।
परिपंथग } वि [प्रतिपंथक] दुश्मन, विरोधी।
परिपंथिअ } वि [परिपन्थिक] प्रतिकूल।
परिपंथिग }
परिपाग पुं [परिपाक] विपाक, फल।
परिपाडल वि [परिपाटल] सामान्य लाल रंगवाला, गुलाबी रंग का।
परिपाल सक [परि + पालय्] रक्षण करना।
परिपासय [दे] देखो परिवास।
परिपिअ सक [परि + पा] पीना, पान करना।
परिपिंडिय वि [परिपिण्डित] एकत्र समुदित, इकट्ठा किया हुआ। न. गुरु-वन्दन का एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोष।

परिपिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष।

परिपिल्ल सक [परिप्र + ईरय्] प्रेरणा।

परिपीडिय वि [परिपीडित] जिसको पीड़ा पहुँचाई गई हो वह।

परिपुंगल वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम।

परिपुच्छिअ, परिपुट्ठ } वि [परिपृष्ट] पूछा हुआ।

परिपुस सक [परि + स्पृश्] संस्पर्श करना।

परिपूणग पुं [दे. परिपूर्णक] सुघरी नामक पक्षी का घोंसला। घी-दूध गालने का कपड़ा, छानना।

परिपूर सक [परि + पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना।

परिपेच्छ सक [परिप्र + ईक्ष्] देखना।

परिपेलव वि. सुकर, सहज, आसान। अदृढ़। निःसार। वराक, दीन।

परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण।

परिप्पव सक [परि + प्लु] तैरना, गोता लगाना।

परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्लुत, व्याप्त।

परिप्पुया स्त्री [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष।

परिप्फंद पुं [परिस्पन्द] रचना-विशेष। समन्तात् चलन। चेष्टा, प्रयत्न।

परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] प्रस्फोटन, भेदन। वि. फोड़नेवाला, विभेदक।

परिप्फुर अक [परि + स्फुर्] चलना।

परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त।

परिफुड देखो परिप्फुड = परिस्फुट।

परिबूहण न [परिबृंहण] वृद्धि, उपचय।

परिब्भंत वि [दे] निषिद्ध, निवारित। भीरु।

परिब्भंसिद (शौ) नीचे देखो।

परिब्भट्ठ वि [परिभ्रष्ट] पतित, स्खलित।

परिब्भम सक [परि + भ्रम्] पर्यटन करना, भटकना।

परिब्भीअ वि [परिभीत] भय-प्राप्त।

परिब्भूअ वि [परिभूत] पराभव-प्राप्त।

परिभट्ठ देखो परिब्भट्ठ।

परिभम देखो परिब्भम।

परिभव सक [परि + भू] पराजय करना, तिरस्कारना।

परिभवंत पुं [परिभवत्] पार्श्वस्थ साधु, शिथिलाचारी मुनि।

परिभाअ सक [परि + भाजय्] बाँटना, विभाग करना।

परिभाइय वि [परिभाजित] विभक्त किया हुआ।

परिभायण न [परिभाजन] बँटवा देना।

परिभाव सक [परि + भावय्] पर्यालोचन करना। उन्नत करना।

परिभावइत्तु वि [परिभावयितृ] प्रभावक, उन्नति-कर्ता।

परिभावि वि [परिभावित्] परिभव करनेवाला।

परिभास सक [परि + भाष्] प्रतिपादन करना, कहना। निन्दा करना।

परिभासा स्त्री [परिभाषा] संकेत। तिरस्कार। चूर्णि, टीका-विशेष।

परिभासि वि [परिभाषिन्] परिभव-कर्ता।

परिभुंज सक [परि + भुञ्ज्] खाना, भोजन करना। सेवन करना, सेवना। बारबार उपभोग में लेना।

परिभुंजण न [परिभोजन] परिभोग।

परिभुत्त वि [परिभुक्त] जिसका परिभोग किया गया हो वह।

परिभुत्त, परिभुय } वि [परिवृत] वेष्टित, परिकरित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ।

परिभूअ वि [परिभूत] अभिभूत, तिरस्कृत।

परिभोअ देखो परिभोग।

परिभोग पुं. बारबार भोग। जिसका बारबार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि। जिसका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक ही बार भोग किया जाय—जो एक ही बार काम में लाया जाय वह आहार, पान आदि। बाह्य वस्तुओं का भोग। आसेवन।
परिभोत्तु देखो परिभुंज का हेकृ.।
परिमइल सक [परि + मृज्] मार्जन करना।
परिमउअ वि [परिमृदुक] विशेष कोमल। अत्यन्त सुकर, सरल।
परिमउलिअ वि [परिमुकुलित] चारों ओर से संकुचित।
परिमंडण न [परिमण्डन] अलंकरण, विभूषा।
परिमंडल वि [परिमण्डल] वृत्त, गोलाकार।
परिमंडिय वि [परिमण्डित] विभूषित, सुशोभित।
परिमंद वि [परिमन्द] मन्द, अशक्त।
परिमग्ग सक [परि + मार्गय्] अन्वेषण करना। माँगना, प्रार्थना करना।
परिमट्ठ वि [परिमृष्ट] घिसा हुआ। आस्फालित। मार्जित, शोधित।
परिमद्द सक [परि + मर्दय्] मर्दन करना। मालिश करना। पैर दबाना।
परिमन्न सक [परि + मन्] आदर करना।
परिमल सक [परि + मल्, मृद्] घिसना। मर्दन करना।
परिमल पुं. कुंकुम-चन्दनादि का मर्दन। सुगन्ध।
परिमलण न [परिमलन] परिमर्दन। विचार।
परिमा (अप) देखो पडिमा।
परिमाइ स्त्री [परिमाति] परिमाण।
परिमाण न. मान, नाप।
परिमास पुं [परिमर्श] स्पर्श।
परिमास पुं [दे] नौका का काष्ठ-विशेष।
परिमिज्ज परिमिण का कृ.।
परिमिला अक [परि + म्लै] म्लान होना।
परिमुट्ठ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट।
परिमुस सक [परि + मृश्] स्पर्श करना, छूना।
परिमेय देखो परिमिण।
परिमोक्कल वि [दे. परिमुक्त] स्वैर।
परियंच सक [परि + अञ्च्] पास में जाना। स्पर्श करना। विभूषित करना।
परियंच सक [परि + अर्च्] पूजना।
परियंचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना। देखो पलियंचण।
परियंद सक [परि + वन्द्] स्तुति करना।
परियच्छ सक [दृश्] देखना। जानना।
परियच्छिय देखो परिकच्छिय।
परियच्छी देखो [परिकक्षी] परदा।
परियत्थि स्त्री [पर्यस्ति] देखो पल्हत्थिया।
परियप्प सक [परि + कल्पय्] कल्पना करना, चिन्तन करना।
परियय पुं [परिचय] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान।
परियय वि [परिगत] अन्वित, युक्त।
परियाइ सक [पर्या + दा] समन्तात् ग्रहण करना। विभाग से ग्रहण करना।
परियाइअ देखो परियाईय।
परियाइत्त वि [पर्याप्त] काफी।
परियाईय वि [पर्यायातीत] पर्याय को अतिक्रान्त।
परियाग देखो पज्जाय।
परियागय वि [पर्यागत] पर्याय से आगत। सर्वथा निष्पन्न।
परियाण सक [परि + ज्ञा] जानना।
परियाण न [परित्राण] रक्षण।
परियाण न [परिदान] विनिमय, बदला, लेनदेन। समन्तात् दान।
परियाण न [परियान] गमन। वाहन, यान। अवतरण।
परियाणिअ पुंन [परियानिक] यान, वाहन। विमान-विशेष।
परियादि देखो परियाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियाय देखो पज्जाय अभिप्राय । प्रव्रज्या । ब्रह्मचर्य । जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय । °थेर पुं [°स्थविर] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध ।
परियायंतकरभूमि स्त्री [पर्यायान्तकृद्भूमि] जिन-देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व प्रथम मुक्ति पानेवाले के बीच के समय का आन्तर ।
परियार सक [परि + चारय्] सेवा-शुश्रूषा करना । सम्भोग करना ।
परियार पुं [परिचार] मैथुन ।
परियारग वि [परिचारक] विषय-सेवन करनेवाला । सेवाशुश्रूषा करनेवाला ।
परियारणया } स्त्री [परिचारणा] ऊपर
परियारणा } देखो । °सद्द पुं [°शब्द] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द ।
परियाल देखो परिवार ।
परियालोयण न [पर्यालोचन] विचार, चिन्तन ।
परियाव देखो परिताव = परिताप ।
परियावज्ज अक [पर्या + पद्] पीडित होना । रूपान्तर में परिणत होना । सक. सेवना ।
परियावणा स्त्री [परितापना] परिताप, सन्ताप ।
परियावणिया स्त्री [परियापनिका] कालान्तर तक अवस्थान, स्थिति ।
परियावण्ण वि [पर्यापन्न] स्थित, अवस्थित । लब्ध, प्राप्त ।
परियावस सक [पर्या + वासय्] आवास कराना ।
परियावसह पुं [पर्यावसथ] मठ, संन्यासी का स्थान ।
परियासिय वि [परिवासित] बासी रखा हुआ ।
परिरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना ।
परिरंभ सक [परि + रभ्] आलिंगन करना ।
परिरक्ख सक [परि + रक्ष्] परिपालन करना ।
परिरद्ध वि [परिरब्ध] आलिङ्गित ।
परिरय पुं. परिधि, परिक्षेप । समानार्थक शब्द । परिभ्रमण, फिर कर जाना ।
परिरिंख सक [परि+रिङ्ख्] चलना, फरकना, हिलना ।
परिलग्ग वि [परिलग्न] लगा हुआ, व्यापृत ।
परिलिअ वि [दे] लीन, तन्मय ।
परिली अक [परि + ली] लीन होना ।
परिली स्त्री [दे] आतोद्य-विशेष, एक तरह का बाजा ।
परिलीण वि [परिलीन] निलीन ।
परिलेंत देखो परिली = परि + ली का वकृ. ।
परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन] अवलोकन, निरीक्षण । वि. देखनेवाला ।
परिल्ल देखो पर = पर ।
परिल्लवास वि [दे] अज्ञात-गति ।
परिल्ली देखो परिली = दे ।
परिल्ली देखो परिलो ।
परिल्हस अक [परि + स्रंस्] गिर पड़ना । सरक जाना ।
परिवइत्तु वि [परिव्रजितृ] गमन करने में समर्थ ।
परिवंकड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढ़ा ।
परिवंथि वि [परिपन्थिन्] विरोधी दुश्मन ।
परिवंदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा ।
परिवक्खिय देखो परिवच्छिय ।
परिवग्ग पुं [परिवर्ग] परिजन-वर्ग ।
परिवच्छ न [दे] अवधारण ।
परिवच्छिय देखो परिकच्छिय ।
परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना ।
परिवज्ज सक [परि + वर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना ।
परिवट्ट देखो परिवत्त = परि + वर्तय् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिवट्टि देखो परिवत्ति ।
परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार ।
परिवड अक [परि + पत्] पड़ना । गिरना ।
परिवत्त देखो परिअट्ट ।
परिवत्तण देखो पडिअत्तण ।
परिवत्तर (अप) वि [परिपक्त्रिम] पकाया गया, गरम किया गया ।
परिवत्थिय वि [परिवस्त्रित] आच्छादित ।
परिवन्न देखो पडिवन्न ।
परिवय अक [परि + वत्] तिर्यक् गिरना ।
परिवय सक [परि + वद्] निन्दा करना ।
परिवरिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित ।
परिवसण न [परिवसन] आवास ।
परिवसणा स्त्री [परिवसना] पर्युषण-पर्व ।
परिवह सक [परि + वह्] वहन करना, ढोना । अक, चालू रहना ।
परिवा अक [परि + वा] सूखना ।
परिवाइ वि [परिवादिन्] निन्दा करनेवाला ।
परिवाइय वि [परिवाचित] पढ़ा हुआ ।
परिवाई स्त्री [परिवाद] कलंक-वार्ता ।
परिवाड सक [घटय्] संगत करना । रचना, निर्माण करना ।
परिवाडल देखो परिपाडल ।
परिवाडि स्त्री [परिपाटि] पद्धति, रीति । पंक्ति, श्रेणि । क्रम, परम्परा । सूत्रार्थ-वाचना, अध्यापन ।
परिवाडी देखो परिवाडि ।
परिवाद पुं. निन्दा, दोष-कीर्तन ।
परिवादिणी स्त्री [परिवादिनी] वीणा-विशेष ।
परिवाय देखो परिवाद ।
परिवायग, परिवायय पुं [परिव्राजक] संन्यासी, बाबा ।
परिवायणी स्त्री [परिवादनी] सात तांतवाली वीणा ।
परिवार सक [परि + वारय्] वेष्टन करना । कुटुम्ब करना ।
परिवार पुं. घर के मनुष्य । न. म्यान ।
परिवारण न. निराकरण । आच्छादन ।
परिवारिअ वि [दे] घटित, रचित ।
परिवाल देखो परिआल ।
परिवाल सक [परि + पालय्] पालन करना ।
परिवाल देखो परिवार = परिवार ।
परिवाविय वि [परिवापित] उखाड़ कर फिर से बोया हुआ ।
परिवाविया स्त्री [परिवापिता] दीक्षा-विशेष । फिर से महाव्रतों का आरोपण ।
परिवास पुं [दे] खेत में सोनेवाला पुरुष ।
परिवास न [परिवासस्] कपड़ा ।
परिवासि वि [परिवासिन्] बसनेवाला ।
परिवाह सक [परि + वाहय्] वहन कराना । अश्वादि खेलाना, अश्वादि-क्रीड़ा करना ।
परिवाह पुं. जल का उछाल, बहाव ।
परिवाह पुं [दे] दुर्विनय, अविनय ।
परिविआल सक [परि + विश्] वेष्टन करना ।
परिविचिट्ठ अक [परिवि + स्था] उत्पन्न होना । रहना ।
परिविट्ठ वि [परिविष्ट] परोसा हुआ ।
परिवित्तस अक [परिवि + त्रस्] डरना ।
परिवित्ति स्त्री [परिवृत्ति] परिवर्तन ।
परिविद्ध वि [परिविद्ध] जो बिंधा गया हो वह ।
परिविद्धंस सक [परिवि + ध्वंसय्] विनाश करना । परिताप उपजाना ।
परिविद्धत्थ वि [परिविध्वस्त] विनष्ट । परि-तापित ।
परिविप्फुरिय वि [परिविस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त ।
परिविस सक [परि + विश्] वेष्टन करना ।
परिविस सक [परि + विष्] परोसना ।
परिवीढ न [परिपीठ] आसन-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिवील सक [परि + पीडय्] दबाना ।
परिवुड वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित ।
परिवुत्थ वि [पर्युषित] रहा हुआ । निवास । देखो परिवुसिअ ।
परिवुद देखो परिवुड ।
परिवुदि स्त्री [परिवृति] वेष्टन ।
परिवुसिअ वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ । गत, गुजरा हुआ ।
परिवूढ वि [परिवृढ] समर्थ ।
परिवूढ वि [परिवृद्ध] स्थूल । बलिष्ठ । माँसल, पुष्ट ।
परिवूहण देखो परिबूहण ।
परिवेय अक [परि + वेप्] काँपना ।
परिवेस सक [परि + विष्] परोसना ।
परिवेस पुं [परिवेश, °ष] वेष्टन । मंडल, मेघादि से सूर्य-चन्द्र का वेष्टनाकार । मंडल ।
परिवेसि [परिवेशिन्] समीप में रहनेवाला ।
परिव्वअ सक [परि + व्रज्] समंताद् गमन करना । दीक्षा लेना ।
परिव्वअ वि [परिवृत] परिवेष्टित ।
परिव्वअ वि [परिव्यय] विशेष व्यय ।
परिव्वय पुं [परिव्यय] खर्च करने का धन ।
परिव्वह सक [परि + वह्] वहन करना, धारण करना ।
परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] संन्यासिनी ।
परिव्वाज (शौ) पुं [परि + व्राज्] संन्यासी ।
परिव्वाजअ (शौ) पुं [परिव्राजक] संन्यासी ।
परिव्वाजिआ (शौ) देखो परिव्वाइया ।
परिव्वाय देखो परिव्वाज ।
परिव्वायग } पुं [परिव्राजक] संन्यासी,
परिव्वायय } साधु ।
परिव्वायय वि [परिव्राजक] परिव्राजक-सम्बन्धी ।
परिस देखो फरिस = स्पर्श ।
परिसंग पुं [परिष्वङ्ग] आलिङ्गन ।
परिसंगय वि [परिसंगत] युक्त, सहित ।
परिसंठव सक [परिसं + स्थापय्] संस्थापन करना ।
परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा हुआ ।
परिसंत वि [परिश्रान्त] थका हुआ ।
परिसंथविय वि [परिसंस्थापित]आश्वासित ।
परिसक्क सक [परि + ष्वष्क्] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना ।
परिसज्जिअ (अप) वि [परिष्वक्त] आलिंगित ।
परिसड अक [परि + शट्] उपयुक्त होना ।
परिसडिय वि [परिशटित] सड़ा हुआ, विनष्ट ।
परिसन्न वि [परिषण्ण] जो हैरान हुआ हो, पीडित ।
परिसप्पि वि [परिसर्पिन्] चलनेवाला । पुंस्त्री. हाथ और पैर से चलनेवाला जन्तु— नकुल, सर्प आदि प्राणिगण ।
परिसम देखो परिस्सम ।
परिसमाविय वि [परिसमापित] पूरा किया हुआ ।
परिसर पुं. नगर आदि के समीप का स्थान ।
परिसल्लिय वि [परिशल्यित] शल्य-युक्त ।
परिसह पुं [परिषह] देखो परीसह ।
परिसा स्त्री [परिषद्] सभा । परिवार ।
परिसाइ देखो परिस्साइ ।
परिसाइयाण देखो परिसाव ।
परिसाड सक [परि + शाटय्] त्याग करना । अलग करना ।
परिसाड सक [परि + शाटय्] इधर-उधर फेंकना । भरना । रखना ।
परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] वपन, बोना । पृथक्करण ।
परिसाडि वि [परिशाटिन्] परिशाटन-युक्त ।
परिसाडि वि[परिशाटि]परिशाटन, पृथक्करण ।
परिसाडि वि [परिशातित] गिराया हुआ ।
परिसाम अक [शम्] शान्त होना ।
परिसामल वि[परिश्यामल] काला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसाव सक [परि+स्रावय्] निचोड़ना। गालना।
परिसावि देखो परिस्सावि।
परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित, उक्त।
परिसिट्ठ वि [परिशिष्ट] अवशिष्ट।
परिसित्त वि [परिषिक्त] सींचा हुआ। न. परिषेक, सेचन।
परिसिल्ल वि [पर्षद्वत्] परिषद् वाला।
परिसीसग देखो पडिसीसअ।
परिसुस (अप) सक [परि+शोषय्] सुखाना।
परिसूअणा स्त्री [परिसूचना] सूचना।
परिसेय पुं [परिषेक] सेचन।
परिसेस पुं [परिशेष] अवशिष्ट। पारिशेषानुमान।
परिसेसिअ वि [परिशेषित] बाकी बचा हुआ। परिच्छिन्न, निर्णीत।
परिसेह पुं [परिषेध] प्रतिषेध, निवारण।
परिस्सअ सक [परि+स्वञ्ज्] आलिंगन करना।
परिस्संत देखो परिसंत।
परिस्सज (शौ) देखो परिस्सअ।
परिस्सम पुं [परिश्रम] मेहनत।
परिस्सम्म अक [परि+श्रम्] मेहनत करना। विश्राम लेना।
परिस्सव सक [परि+स्रु] चूना, झरना, टपकना।
परिस्सव पुं [परिस्रव] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण।
परिस्सह देखो परीसह।
परिस्साइ देखो परिस्सावि=परिस्राविन्।
परिस्साव देखो परिसाव।
परिस्सावि वि [परिस्राविन्] कर्म-बन्ध करनेवाला। चूनेवाला, टपकनेवाला। गुह्य बात को प्रकट कर देनेवाला।
परिस्सावि वि [परिश्राविन्] सुनानेवाला।
परिह सक [परि+धा] पहिरना, पहनना।
परिह पुं [दे] रोष।
परिह पुं [परिघ] अर्गला।
परिहच्छ वि [दे] दक्ष, निपुण। पुं. रोष। देखो परिहत्थ।
परिहच्छ देखो पडिहच्छ।
परिहट्ट सक [मृद्, परि+घट्टय्] मर्दन करना, चूर करना, कचरना, कुचलना।
परिहट्ट सक [वि+लुल्] मारना। मार कर गिरा देना। सामना करना। लूट लेना। अक. जमीन पर लोटना।
परिहट्टण न [परिघट्टन] अभिघात, आघात। घर्षण, घिसना।
परिहट्टि स्त्री [दे] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव।
परिहण न [दे. परिधान] वस्त्र।
परिहत्थ पुं [दे] जलजन्तु-विशेष। निपुण। देखो परिहच्छ, पडिहत्थ।
परिहर सक [परि+धृ] धारण करना।
परिहर सक [परि+हृ] त्याग करना, छोड़ना। करना। परिभोग करना, आसेवन करना।
परिहलाविअ पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी।
परिहव सक [परि+भू] पराभव करना। तिरस्कृत करना।
परिहस सक [परि+हस्] उपहास करना।
परिहा अक [परि+हा] हीन होना, कम होना।
परिहा सक [परि+धा] पहिरना।
परिहा स्त्री [परिखा] खाई।
परिहाइअ वि [दे] परिक्षीण।
परिहाण न [परिधान] कपड़ा। वि. पहननेवाला।
परिहाय वि [दे] क्षीण, दुर्बल।
परिहार पुं. करण, कृति। परित्याग, वर्जन। परिभोग, आसेवन। परिहार-विशुद्धि नामक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयम-विशेष। विषय। तप-विशेष। °विसुद्धिअ, °विसुद्धीअ न [°विशुद्धिक] चारित्र-विशेष, संयम-विशेष।

परिहारिअ वि [पारिहारिक] आचारवान् मुनि, उद्युक्त विहारी जैन साधु।

परिहारिणी स्त्री [दे] देर से ब्याई हुई भैंस।

परिहारिय वि [पारिहारिक] परित्याग के योग्य। परिहार नामक तप का पालक।

परिहाल पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी।

परिहाव सक [परि + धापय्] पहिराना।

परिहास पुं. उपहास, हँसी।

परिहासणा स्त्री [परिभाषणा] उपालम्भ।

परिहि पुंस्त्री [परिधि] परिवेष। परिणाह, विस्तार।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुआ।

परिहिंडिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त भटका हुआ।

परिहित्ता परिहा = परि + धा का संकृ.।

परिहीण वि [परिहीन] न्यून। विनष्ट। रहित। न. ह्रास।

परिहुत्त वि [परिभुक्त] जिसका भोग किया गया हो वह।

परिहूअ वि [परिभूत] पराजित।

परिहेरग न [दे. परिहार्यक] आभूषण-विशेष।

परिहो सक [परि + भू] पराभव करना।

परिहोअ देखो परिभोग।

परिह्लस (अप) अक [परि + ह्रस्] कम होना।

परी सक [परि + इ] जाना, गमन करना।

परी सक [क्षिप्] फेंकना।

परी सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना।

परीघाय पुं [परिघात] निर्घात, विनाश।

परीणम देखो परिणम = परि + णम्।

परीभोग देखो परिभोग।

परीमाण देखो परिमाण।

परीय देखो परित्त।

परीयल्ल पुं [दे. परिवर्त] वेष्टन।

परीरंभ पुं [परीरम्भ] आलिंगन।

परीवज्ज वि [परिवर्ज्य] वर्जनीय।

परीवाय देखो परिवाय = परिवाद।

परीवार देखो परीवार = परिवार।

परीसण न [परिवेषण] परोसना।

परीसम देखो परिस्सम।

परीसह पुं [परीषह] भूत आदि से होनेवाली पीड़ा।

परुइय वि [प्ररुदित] जो रोने लगा हो वह।

परुक्ख देखो परोक्ख।

परुण्ण देखो परुइय।

परुप्पर देखो परोप्पर।

परुब्भासिद (शौ) वि [प्रोद्भासित] प्रकाशित।

परुस वि [परुष] कठोर।

परूढ वि [प्ररूढ] उत्पन्न। बढ़ा हुआ।

परूव सक [प्र + रूपय्] प्रतिपादन करना।

परूवग वि [प्ररूपक] प्रतिपादक।

परूविअ वि [प्ररूपित] प्रतिपादित, निरूपित। प्रकाशित।

परेअ पुं [दे] पिशाच।

परेण अ. अनन्तर।

परेयम्मण देखो परिकम्मण।

परेवय न [दे] पाद-पतन।

परेव्व वि [परेद्युस्तन] परसों का, परसों होनेवाला।

परो° अ [पर] उत्कृष्ट।

परोइय देखो परुइय।

परोक्ख न [परोक्ष] प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण। वि. परोक्ष-प्रमाण का विषय। न. पीछे, आँखों की ओट में।

परोट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त।

परोप्पर, परोप्फर } वि [परस्पर] आपस में।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परोवआर पुं [परोपकार] दूसरे की भलाई।
परोवर देखो परोप्पर।
परोविय देखो परुइय।
परोह अक [प्र + रुह्] उत्पन्न होना। बढ़ना।
परोह पुं [प्ररोह] उत्पत्ति। वृद्धि। अंकुर, बीजोद्भेद।
परोहड न [दे] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग।
पल अक [पल्] जीना। खाना। देखो बल = बल्।
पल (अप) अक [पत्] पड़ना, गिरना।
पल (अप) सक [प्र + कटय्] प्रकट करना।
पल अक [परा + अय्] भागना।
पल न [दे] पसीना।
पल न. एक बहुत छोटी तोल, चार तोला। मांस।
पलंघ सक [प्र + लङ्घ्] अतिक्रमण करना।
पलंड पुं [पलगण्ड] राज, चूना पोतने का काम करनेवाला कारीगर।
पलंडु पुं [पलाण्डु] प्याज।
पलंब अक [प्र + लम्ब्] लटकना।
पलंब वि [प्रलम्ब] लटकनेवाला, लटकता। लम्बा, दीर्घ। पुं. एक महाग्रह। अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त्त। पुंन. आभरण-विशेष। एक तरह का धान का कोठा। मूल। रुचक पर्वत का एक शिखर। पुंन. फल। देव-विमान-विशेष।
पलक्क वि [दे] लम्पट।
पलक्ख पुं [प्लक्ष] बड़ का पेड़।
पलग न [पलक] फल-विशेष।
पलज्जण वि [प्ररञ्जन] रागी, अनुराग वाला।
पलट्ट अक [परि + अस्] पलटना, बदलना। सक. पलटाना, बदलाना।
पलत्त वि [प्रलपित] उक्त, प्रलाप-युक्त। न. प्रलाप, कथन।
पलय पुं [प्रलय] युगान्त, कल्पान्त-काल। जगत् का अपने कारण में लय। विनाश। चेष्टा-क्षय। खिपना। °क्क पुं [°र्क] प्रलय-काल का सूर्य। °घण पुं [°घन] प्रलय का मेघ। °लण पुं [°नल] प्रलय काल की आग।
पलल न. तिल-चूर्ण।
पललिअ न. [प्रललित] प्रक्रीडित। अंग-विन्यास।
पलव अक [प्र + लप्] बकवाद करना।
पलवण न [प्लवन] उछलना, उच्छलन।
पलविअ } वि [प्रलपित] अनर्थक कहा हुआ।
पलवित } न. अनर्थक भाषण।
पलस न [दे] कार्पास-फल। पसीना।
पलस (अप) न [पलाश] पत्र, पत्ती।
पलसु स्त्री [दे] सेवा, पूजा, भक्ति।
पलहि पुंस्त्री [दे] कपास।
पलहिअ वि [दे] विषम, असम। पुंन. आवृत जमीन का वास्तु।
पलहिअअ वि [दे. उपलहृदय] मूर्ख, पाषाण-हृदय।
पलहुअ वि [प्रलघुक] स्वल्प, थोड़ा। छोटा।
पला देखो पलाय = परा + अय्।
पलाइअ } वि [पलायित] भागा हुआ,
पलाण } नष्ट।
पलाण न [पलायन] भागना।
पलाणिअ वि [पलायनित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ।
पलात वि [प्रलात] गृहीत।
पलाय अक [परा + अय्] भाग जाना, नासना।
पलाय पुं [दे] चोर।
पलाय देखो पलाइअ = पलायित।
पलाल वि [प्रलाल] प्रकृत लालवाला।
पलाल न. तृण-विशेष, पुआल। °पीढय न [°पीठक] पलाल का आसन।
पलालग वि [पलालक] पलाल—पुआल का बना हुआ।
पलाव सक [नाशय्] भगाना, नष्ट करना।
पलाव पुं [प्लाव] पानी की बाढ़।
पलाव पुं [प्रलाप] अनर्थक भाषण, बकवाद।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलावण न [नाशन] नष्ट करना, भगाना।

पलाविअ वि [प्लावित] डुबाया हुआ, भिगाया हुआ।

पलाविअ वि [प्रलापित] अनर्थक घोषित करवाया हुआ।

पलाविर वि [प्रलपितृ] बकवाद करनेवाला।

पलास पुं [पलाश] किंशुक का वृक्ष, ढाक। राक्षस। पुंन. पत्र, पत्ता। भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट।

पलासि स्त्री [दे] भल्ली, शस्त्र-विशेष।

पलासिया स्त्री [दे. पलाशिका] छाल की बनी हुई लकड़ी।

पलाह देखो पलास।

पलि देखो परि।

पलिअ न [पलित] वृद्ध अवस्था के कारण बालों का पकना, केशों की श्वेतता। बदन की झुर्रियाँ। कर्म, कर्म-पुद्गल। घृणित अनुष्ठान। कर्म, काम। ताप। पंक। वि. शिथिल। वृद्ध। पक्व। जरा-ग्रस्त। °ट्ठाण, °ठाण न [°स्थान] कर्म-स्थान, कारखाना।

पलिअ न [पल] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा की नाप।

पलिअ देखो पल्ल = पल्य।

पलिअंक पुं [पर्यङ्क] पलंग, खाट। °आसण न [°आसन] आसन-विशेष।

पलिअंका स्त्री [पर्यङ्का] पद्मासन।

पलिउंच सक [परि + कुञ्च्] अपलाप करना। ठगना। छिपाना, गोपन करना।

पलिउंचणा स्त्री [परिकुञ्चना] सच्ची बात को छिपाना। माया कपट। प्रायश्चित्त-विशेष।

पलिउंचिय वि [परिकुञ्चित] वञ्चित। न. माया, कुटिलता। गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना।

पलिउच्छन्न देखो पलिओच्छन्न।

पलिउच्छूढ देखो पलिओछूढ।

पलिउज्जिय वि [परियोगिक] जानकार।

पलिऊल देखो पडिऊल।

पलिओच्छन्न वि [पलितावच्छन्न] कर्मावष्टब्ध, कुकर्मी।

पलिओच्छिन्न वि [पर्यवच्छिन्न] ऊपर देखो।

पलिओछूढ वि [पर्यवक्षिप्त] प्रसारित।

पलिओवम पुंन [पल्योपम] काल का एक दीर्घ परिमाण।

पलिचा (शौ) देखो पडिण्णा।

पलिकुंचणया देखो पलिउंचणा।

पलिक्खीण वि [परिक्षीण] क्षय-प्राप्त।

पलिगोव पुं [परिगोप] काँदो। आसक्ति।

पलिच्छण्ण वि [परिच्छिन्न] समन्ताद् व्याप्त। निरुद्ध, रोका हुआ।

पलिच्छाअ सक [परि + छादय्] ढकना।

पलिच्छिंद सक [परि + छिद्] छेदन करना, काटना।

पलिच्छिन्न वि [परिच्छिन्न] विच्छिन्न, काटा हुआ।

पलित्त वि [प्रदीप्त] ज्वलित।

पलिपाग देखो परिपाग।

पलिप्प अक [प्र + दीप्] जलना।

पलिबाहर } [परिबाह्य] हमेशा बाहर
पलिबाहिर } होनेवाला।

पलिभाग पुं [परिभाग, प्रतिभाग] निर्विभागी अंश। प्रतिनियत अंश। सादृश्य, समानता।

पलिभिंद सक [परि + भिद्] जानना। बोलना। भेदन करना, तोड़ना।

पलिभेय पुं [परिभेद] चूरना।

पलिमंथ सक [परि + मन्थ्] बाँधना।

पलिमंथ पुं [परिमन्थ] विनाश। स्वाध्याय-व्याघात। विघ्न, बाधा। व्यर्थ क्रिया।

पलिमंथग पुं [परिमन्थक] धान्य-विशेष, काला चना। गोल चना। विलम्ब।

पलिमंथु वि [परिमन्थु] सर्वथा घातक।

पलिमद्द देखो परिमद्द।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलिमद्द वि [परिमर्द] मालिश करनेवाला ।
पलियंचण न [पर्यञ्चन] परिभ्रमण । देखो परियंचण ।
पलियंत पुं [पर्यन्त] अन्त भाग । वि. अवसानवाला, अन्तवाला ।
पलियंत न [पल्यान्तर्] पल्योपम के भीतर ।
पलियस्स न [परिपार्श्व] समीप ।
पलिल देखो पलिअ = पलित ।
पलिव देखो पलीव ।
पलिवग देखो पलीवग ।
पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ ।
पलिविद्धंस अक [परिवि + ध्वंस्] नष्ट होना ।
पलिसय, पलिस्सय } सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन करना, स्पर्श करना, छूना ।
पलिह देखो परिह = परिघ ।
पलिहअ वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ ।
पलिहइ स्त्री [दे] क्षेत्र, खेत ।
पलिहस्स न [दे] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष ।
पलिहाय पुं [दे] देखो पलिहअ ।
पली सक [परि + इ] पर्यटन करना ।
पली अक [प्र + ली] लीन होना, आसक्ति करना ।
पलीण वि [प्रलीन] अति लीन । सम्बद्ध । प्रलय-प्राप्त, नष्ट । छिपा हुआ ।
पलीमंथ देखो पलिमंथ ।
पलीव अक [प्र + दीप्] जलना ।
पलीव सक [प्र + दीपय्] जलाना ।
पलीव पुं [प्रदीप] दीपक ।
पलीवग वि [प्रदीपक] आग लगानेवाला ।
पलुंपण न [प्रलोपन] प्रलोप ।
पलुट्ट वि [प्रलुठित] लेटा हुआ ।
पलुट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त ।
पलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध, जला हुआ ।
पलेमाण पली = प्र + ली का वकृ ।
पलेव पुं [प्रलेप] पाषाण-विशेष ।

पलोअ सक [प्र + लोक्, लोकय्] देखना, निरीक्षण करना ।
पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक ।
पलोइर वि [प्रलोकितृ] प्रेक्षक ।
पलोएंत, पलोएमाण } पलोअ का वकृ. ।
पलोघर [दे] देखो परोहड ।
पलोट्ट सक [प्रत्या + गम्] वापस आना ।
पलोट्ट सक [परि + अस्] फेंकना । मार गिराना । अक. पलटना । प्रवृत्ति करना । गिरना ।
पलोट्ट अक [प्र + लुठ्] जमीन पर लोटना ।
पलोट्ट वि [पर्यस्त] फेंका हुआ । हत । विक्षिप्त । पतित । प्रवृत्त ।
पलोट्टजीह वि [दे] रहस्य-भेदी ।
पलोट्टण न [प्रलोठन] ढुलकाना, लुढ़काना, गिराना ।
पलोभ सक [प्र + लोभय्] लालच देना ।
पलोव (अप) देखो पलोअ ।
पलोह (शौ) देखो पलो ।
पलोहर [दे] देखो परोहड ।
पल्ल पुंन [पल्य] गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र । काल-परिमाण-विशेष, पल्योपम । संस्थान-विशेष, पल्यंक संस्थान ।
पल्ल पुं [पल्ल] धान्य भरने का बड़ा कोठा ।
पल्लंक देखो पलिअंक ।
पल्लंक पुं [पल्यङ्क] शाक-विशेष, कन्द विशेष ।
पल्लंघण न [प्रलङ्घन] अतिक्रमण । गति ।
पल्लट्ट देखो पलट्ट = परि + अस् ।
पल्लट्ट पुं [दे] पर्वत-विशेष ।
पल्लट्ट पुं [दे. परिवर्त] अनन्त काल चक्रों का समय ।
पल्लट्ट, पल्लत्थ } देखो पलोट्ट = पर्यस्त ।
पल्लत्थि स्त्री [पर्यस्ति] आसन-विशेष, पलथी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पल्लल न [पल्वल] छोटा तलाव ।
पल्लव पुं. अंकुर । पत्र, पत्ता । देश-विशेष । विस्तार ।
पल्लव देखो पज्जव ।
पल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत ।
पल्लविअ वि [दे] लाक्षा-रक्त ।
पल्लविअ वि [पल्लवित] पल्लवाकार । अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न । पल्लव-युक्त ।
पल्लविल्ल वि [पल्लववत्] पल्लव-युक्त ।
पल्लस्स देखो पलोट्ट = परि + अस् ।
पल्लाण न [पर्याण] अश्व आदि का साज ।
पल्लाण सक [पर्याणय्] अश्व आदि को सजाना ।
पल्लि स्त्री. छोटा गाँव । चोरों के निवास का गहन स्थान । °नाह पुं [°नाथ] पल्ली का स्वामी । °वइ पुं [°पति] वही अर्थ ।
पल्लिअ वि [दे] आक्रान्त । ग्रस्त । प्रेरित ।
पल्लित्त वि [दे] पर्यस्त ।
पल्ली देखो पल्लि ।
पल्लीण वि [प्रलीन] विशेष लीन ।
पल्लोट्टजीह [दे] देखो पलोट्टजीह ।
पल्हत्थ देखो पलोट्ट = परि + अस् ।
पल्हत्थ सक [वि + रेचय्] बाहर निकालना ।
पल्हत्थ देखो पलोट्ट = पर्यस्त ।
पल्हत्थरण देखो पच्चत्थरण ।
पल्हत्थिया स्त्री [पर्यस्तिका] आसन-विशेष–दोनों जानु खड़ा कर पीठ के साथ चादर लपेटकर बैठना । जंघा पर वस्त्र लपेटकर बैठना ।°पट्ट पुं. योग-पट्ट ।
पल्हय, पल्हव } पुं [पह्लव] अनार्य देश । पुंस्त्री. पह्लव देश का निवासी ।
पल्हवि पुंस्त्री. [दे. पह्लवि] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपड़ा ।
पल्हाय सक [प्र + ह्लाद्] आनन्दित करना, खुशी करना ।
पल्हाय पुं [प्रह्लाद] आनन्द, खुशी । हिरण्यकशिपु नामक दैत्य का पुत्र । आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा । एक विद्याधर नरेश ।
पल्हायण न [प्रह्लादन] चित्त-प्रसन्नता, खुशी । वि. आनन्ददायक । पुं. रावण का एक सुभट ।
पल्हीय पुं.ब. [प्रह्लीक] देश-विशेष ।
पव सक [पा] पीना ।
पव अक [प्लु] फरकना । सक. उछल कर जाना । तैरना ।
पव पुं [प्लव]पूर । उच्छलन, कूदना । तैरना । मेढ़क । वानर । चाण्डाल, डोम । जल-काक । पाकुड़ का पेड़ । कारण्डव पक्षी । शब्द, आवाज । दुश्मन । मेंढा । जल-कुक्कुट । जल । जलचर पक्षी । नौका ।
पव स्त्रीन [प्रपा] पानीयशाला, प्याऊ ।
पवंग पुं [प्लवङ्ग] वानर । वानर-वंशीय मनुष्य । °नाह पुं [°नाथ] वानर-वंशीय राजा, बाली । °वइ पुं [°पति] वानरराज ।
पवंगम पुं [प्लवंगम] वानर । छन्द-विशेष ।
पवंच पुं [प्रपञ्च] विस्तार । संसार । ठगाई ।
पवंचा स्त्री [प्रपञ्चा] मनुष्य की दस दशाओं में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था ।
पवंछ सक [प्र + वाञ्छ्] वाञ्छना ।
पवंपुल पुंन [दे] मच्छी पकड़ने का जाल ।
पवक वि [प्लवक] उछल-कूद करनेवाला । तैरनेवाला । पुं. पक्षी । सुपर्णकुमार नामक देव-जाति ।
पवक्खमाण पवय = प्र + वच् का वकृ. ।
पवग देखो पवक ।
पवज्ज सक [प्र + पद्] स्वीकार करना ।
पवज्जा देखो पव्वज्जा ।
पवज्जिय वि [प्रवादित] जो बजने लगा हो ।
पवट्ट अक [प + वृत्] प्रवृत्ति करना ।
पवट्ट वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवत्ति करानेवाला ।

पवट्टि स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन ।

पवट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ ।

पवड अक [प्र + पत्] पड़ना, गिरना ।

पवडण न [प्रपतन] अधःपात ।

पवड्ढ अक [दे] पोढ़ना, सोना ।

पवड्ढ अक [प्र + वृध्] बढ़ना ।

पवड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढ़ा हुआ ।

पवण वि [प्रवण] तत्पर ।

पवण न [प्लवन] उछल कर गमन । तरण । °किच्च पुं [°कृत्य] नाव, डोंगी ।

पवण पुं [पवन] वायु । भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार । हनूमान् का पिता । °गइ पुं [°गति] हनूमान् का पिता । वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र । °चंड पुं [°चण्ड] व्यक्ति-वाचक नाम । °तणअ पुं [°तनय] हनूमान् । °नंदण पुं [°नन्दन] हनूमान् । °पुत्त पुं [°पुत्र] हनूमान् । °वेग पुं. हनूमान् का पिता । एक जैन मुनि । °सुअ पुं [°सुत] हनूमान् । °णंद पुं [°नन्द] हनूमान् ।

पवणंजअ पुं [पवनञ्जय] हनूमान् का पिता । एक श्रेष्ठि-पुत्र ।

पवत्त देखो पवट्ट = प्र + वत् ।

पवत्त सक [प्र + वर्त्तय्] प्रवृत्त करना ।

प्रवत्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त ।

पवत्तग वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला ।

पवत्तण न [प्रवर्त्तन] प्रवृत्ति । वि. प्रवृत्ति करानेवाला ।

पवत्तय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करनेवाला । वि. प्रवृत्त करानेवाला ।

पवत्ति स्त्री [°प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन । °वाउय वि [°व्यापृत] प्रवृत्ति में लगा हुआ ।

पवत्तिणी स्त्री [प्रवर्त्तिनी] साध्वियों की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी ।

पवत्तिया स्त्री [दे] संन्यासी का एक उपकरण ।

पवद देखो पवय = प्र + वद् ।

पवदि स्त्री [प्रवृति] ढकना, आच्छादन ।

पवद्ध देखो पवड्ढ = प्र + वृध् ।

पवद्ध पुं [दे] घन, हथौड़ा ।

पवन्न वि [प्रपन्न] अंगीकृत ।

पवमाण पुं [पवमान] पवन ।

पवय सक [प्र + वद्] बकवाद करना । वाद-विवाद करना ।

पवय सक [प्र + वच्] बोलना, कहना ।

पवय देखो पवक = प्लवक ।

पवय पुं [प्लवग] वानर । °वइ पुं [°पति] वानरों का राजा सुग्रीव । °हिव पुं [°धिप] वही पूर्वोक्त अर्थ ।

पवयण पुं [प्राजन] कोड़ा, चाबुक ।

पवयण न [प्रवचन] जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र । जैन संघ । आगम-ज्ञान । °माया स्त्री [°माता] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म ।

पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम ।

पवरंग न[दे. प्रवराङ्ग] मस्तक ।

पवरपुंडरीय पुंन [प्रवरपुण्डरीक] एक देव-विमान ।

पवरा स्त्री [प्रवरा] भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी ।

पवरिस सक [प्र + वृष्] बरसना ।

पवल देखो पबल ।

पवस अक [प्र + वस्] प्रयाण करना, विदेश जाना ।

पवह अक [प्र + वह्] बहना । सक. टपकना, झरना ।

पवह सक [प्र + हन्] मार डालना ।

पवह वि [प्रवह] बहनेवाला । टपकनेवाला, चूनेवाला ।

पवह पुं [प्रवाह] स्रोत, बहाव, जल-धारा । प्रवृत्ति । व्यवहार । उत्तम अश्व । प्रभाव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवहण पुंन [प्रवहण] नौका, जहाज। गाड़ी आदि वाहन।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त।

पवा स्त्री [प्रपा] प्याऊ।

पवाइ वि [प्रवादिन्] वादी। दार्शनिक।

पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ।

पवाइअ वि [प्रवादित] बजाया हुआ।

पवाड सक [प्र + पातय्] गिराना।

पवाण (अप) देखो पमाण = प्रमाण।

पवादि देखो पवाइ।

पवाय अक [प्र + वा] सुख पाना। बहना (हवा का)। सक. गमन करना। हिंसा करना।

पवाय पुं [प्रवाद] जनश्रुति। परम्परा-प्राप्त उपदेश। मत, दर्शन।

पवाय पुं [प्रपात] गर्त्त, गड्ढा। ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह। तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान। रात में पड़नेवाली धाड़, धारा। पतन। °द्दह पुं [°द्रह] वह कुण्ड जहाँ पर्वत पर से नदी गिरती हो।

पवाय पुं [प्रवात] प्रकृष्ट पवन। वि. बहा हुआ (पवन)। पवन-रहित।

पवायग वि [प्रवाचक] पाठक, अध्यापक।

पवायण न [प्रवाचन] प्रपठन, अध्ययन।

पवायय देखो पवायग।

पवाल पुंन [प्रवाल] नवांकुर, किसलय। मूँगा, विद्रुम। °मंत, °वंत वि [°वत्] प्रवाल-वाला।

पवालिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो।

पवास पुं [प्रवास] विदेश-गमन।

पवासि } वि [प्रवासिन्] मुसाफिर।
पवासु }

पवाह सक [प्र + वाहय्] बहाना, चलाना।

पवाह देखो पवह = प्रवाह।

पवाह पुं [प्रबाध] प्रकृष्ट पीड़ा।

पवाहण न [प्रवाहन] जल। बहाना।

पवि पुं [पवि] वज्र।

पविअंभिअ वि [प्रविजृम्भित] प्रोल्लसित, समुत्पन्न।

पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र।

पविइण्ण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ।

पविइण्ण वि [प्रविकीर्ण] व्याप्त। विक्षिप्त, निरस्त।

पविकत्थ सक [प्रवि + कत्थ्] आत्म-श्लाघा करना।

पविकसिय वि [प्रविकसित] प्रकर्ष से विकसित।

पविकिर सक [प्रवि + कृ] फेंकना।

पविक्खिअ वि [प्रवीक्षित] निरीक्षित, अवलोकित।

पविक्खिर देखो पविकिर।

पविग्घ वि [दे] विस्मृत।

पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त।

पविज्जल वि [प्रविज्वल] प्रज्वलित। रुधिराधि से व्याप्त।

पविट्ठ वि [प्रविष्ट] घुसा हुआ।

पविणी सक [प्रवि + णी] दूर करना।

पवित्त पुं [पवित्र] दर्भ, कुशा। वि. निर्दोष, शुद्ध, स्वच्छ।

पवित्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त।

पवित्त सक [पवित्रय्] पवित्र करना।

पवित्तय न [पवित्रक] अँगूठी।

पवित्ताविय वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ।

पवित्ति देखो पवत्ति = प्रवृत्ति।

पवित्तिणी देखो पवत्तिणी।

पवित्थर अक [प्रवि + स्तृ] फैलाना।

पवित्थरिल्ल वि [प्रविस्तरिन्] विस्तारवाला। देखो पविरल्लिय।

पविद्ध देखो पव्विद्ध।

पविद्धंस अक [प्रवि + ध्वंस्] विनाशाभिमुख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होना। विनष्ट होना।
पविद्धत्थ वि [प्रविध्वस्त] विनष्ट।
पविभत्ति स्त्री [प्रविभक्ति] पृथक्-पृथक् विभाग।
पविभाग पुं [प्रविभाग] ऊपर देखो।
पविमुक्क वि [प्रविमुक्त] परित्यक्त।
पविमोयण न [प्रविमोचन] परित्याग।
पविय वि [प्राप्त] प्राप्त।
पवियंभिर वि [प्रविजृम्भितृ] उल्लसित होनेवाला। उत्पन्न होनेवाला।
पवियक्किय न [प्रवितर्कित] विकल्प, वितर्क।
पवियक्खण वि [प्रविचक्षण] विशेष प्रवीण।
पवियार पुं [प्रवीचार] काया और वचन की चेष्टा-विशेष। काम-क्रीड़ा।
पवियारण न [प्रविचारण] संचार।
पवियास सक [प्रवि + काशय्] फाड़ना, खोलना।
पवियासिय वि [प्रविकासित] विकसित किया हुआ।
पविरइअ वि [दे] त्वरित, शीघ्रता-युक्त।
पविरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना।
पविरंजव वि [दे] स्निग्ध, स्नेह-युक्त।
पविरंजिअ वि [दे] स्निग्ध, स्नेह-युक्त। कृत-निषेध, निवारित।
पविरल वि [प्रविरल] अनिबिड। विच्छिन्न। अत्यन्त थोड़ा।
पविरल्लिय वि [दे] विस्तारवाला। देखो पवित्थरिल्ल।
पविरिक्क वि [प्रविरिक्त] एकदम शून्य।
पविरेल्लिय [दे] देखो पविरल्लिय।
पविलुंप सक [प्रवि + लुप्] बिलकुल नष्ट करना।
पविलुत्त वि [प्रविलुप्त] बिलकुल नष्ट।
पविस सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, घुसना।
पविसू सक [प्रवि + सू] उत्पन्न करना।
पविस्स देखो पविस।
पविहर सक [प्रवि + हृ] विहार करना।
पविहस अक [प्रवि + हस्] हसना।
पवीइय वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया हुआ।
पवीण वि [प्रवीण] निपुण, दक्ष।
पवीणी देखो पविणी।
पवील सक [प्र + पीडय्] दमन करना।
पवुच्च° देखो पवय = प्र + वच्।
पवुट्ठ वि [प्रवृष्ट] खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह।
पवुड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढ़ा हुआ, विशेष वृद्ध।
पवुड्ढि स्त्री [प्रवृद्धि] बढ़ाव।
पवुत्त वि [प्रोक्त] जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह।
पवुत्थ [दे] देखो पउत्थ।
पवुद वि [प्रवृत] प्रकर्ष से आच्छादित।
पवूढ वि [प्रव्यूढ] धारण किया हुआ। निर्गत।
पवेइय वि [प्रवेदित] निवेदित, प्रतिपादित। विज्ञात। भेंट किया हुआ।
पवेइय वि [प्रवेपित] कम्पित।
पवेज्ज सक [प्र + वेदय्] विदित करना। भेंट करना। अनुभव करना।
पवेढिय वि [प्रवेष्टित] घिरा हुआ, बेढ़ा हुआ।
पवेय देखो पवेज्ज।
पवेयण न [प्रवेदन] प्ररूपण, प्रतिपादन। ज्ञान, निर्णय। अनुभावन।
पवेविय वि [प्रवेपित] प्रकम्पित।
पवेविर वि [प्रवेपितृ] काँपनेवाला।
पवेस सक [प्र + वेशय्] घुसाना।
पवेस पुं [प्रवेश] भीत की स्थूलता। पैठ, घुसना। नाटक का एक हिस्सा।
पवेस पुं [प्रद्वेष] अधिक द्वेष।
पवेसण, पवेसणग, पवेसणय } पुंन [प्रवेशन,°क] प्रवेश, पैठ। विजातीय जन्मान्तर में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवोत्त पुं [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र।

पव्व पुंन [पर्वन्] ग्रन्थि, गाँठ। उत्सव। पूर्णिमा और अमावास्या तिथि। पूर्णिमा और अमावास्यावाला पक्ष। अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन। मेखला, गिरिमेखला। दंष्ट्रा-पर्वत। संख्या-विशेष। °बीय पुं [°बीज] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है। °राहु पुं. राहु-विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमशः चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है।

पव्वइ न [पर्वतिन्] गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न। देखो पव्वपेच्छइ।

पव्वइ° देखो पव्वई।

पव्वइअ वि [प्रव्रजित] दीक्षित, संन्यस्त। गत, प्राप्त।

पव्वइंद पुं [पर्वतेन्द्र] मेरु पर्वत।

पव्वइग देखो पव्वइअ।

पव्वइसेल्ल न [दे] बाल-मय कंडक—तावीज।

पव्वई स्त्री [पार्वती] शिव-पत्नी।

पव्वंग पुंन [पर्वाङ्ग] संख्या-विशेष।

पव्वक / पव्वग पुंन [पर्वक] वाद्य-विशेष। ईख जैसी ग्रन्थिवाली वनस्पति। तृण-विशेष।

पव्वग वि [पार्वक] पर्व—ग्रन्थि—गाँठ का बना हुआ।

पव्वज्ज पुं [दे] नख। बाण। बाल-मृग।

पव्वज्जा स्त्री [प्रव्रज्या] गमन, गति। दीक्षा, संन्यास।

पव्वणी स्त्री [पर्वणी] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि।

पव्वपेच्छइ न [पर्वप्रेक्षकिन्] देखो पव्वइ।

पव्वय सक [प्र+व्रज्] जाना, गति करना। दीक्षा लेना, संन्यास लेना।

पव्वय देखो पव्वग।

पव्वय देखो पव्वइअ।

पव्वय / पव्वयय पुंन [पर्वत, °क] पहाड़। पुं. द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम। एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम। एक राजा। एक राज-कुमार। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत। °विदुग्ग पुंन [°विदुर्ग] पहाड़-वाला प्रदेश।

पव्वयगिह न [पर्वतगृह] पर्वत की गुफा।

पव्वह सक [प्र+व्यथ्] पीड़ना, दुःख देना।

पव्वा स्त्री [पर्वा] लोकपालों की एक बाह्य परिषद्।

पव्वाइअ वि [प्रव्राजित] जिसको दीक्षा दी गई हो वह। न. दीक्षा देना।

पव्वाइअ वि [म्लान] विच्छाय, शुष्क।

पव्वाइआ स्त्री [प्रव्राजिका] संन्यासिनी।

पव्वाडि देखो पव्वालि।

पव्वाण वि [म्लान] सूखा।

पव्वाय देखो पवाय = प्र + वा।

पव्वाय सक [प्र+व्राजय्] दीक्षित करना।

पव्वाय अक [म्लै] सूखना।

पव्वाय वि [म्लान, प्रवाण] शुष्क, सूखा।

पव्वाय पुं [प्रवात] प्रकृष्ट पवन।

पव्वाल सक [छादय्] ढकना।

पव्वाल सक [प्लावय्] खूब भिजाना।

पव्वाव सक [प्र+व्राजय्] दीक्षित करना।

पव्वावण न [दे] प्रयोजन।

पव्वाह सक [प्र+वाहय्] बहाना।

पव्विद्ध वि [दे] प्रेरित।

पव्विद्ध वि [प्रवृद्ध] महान्, बड़ा।

पव्विद्ध न [प्रविद्ध] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को समाप्त किये बिना ही भागना।

पव्वीसग न [दे.पव्वीसग] वाद्य-विशेष।

पसइ स्त्री [प्रसृति] दो प्रसृति—पसर का एक परिमाण। पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल—अँजुरी मिला कर भरी हुई चीज।

पसंग पुंन [प्रसङ्ग] परिचय, उपलक्ष। संगति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्बन्ध। आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति। मैथुन। आसक्ति। प्रस्ताव, अधिकार।

पसंज अक [प्र + सञ्ज्] आसक्ति करना। आपत्ति होना अनिष्ट-प्राप्ति होना।

पसंडि न [दे] सुवर्ण।

पसंत वि [प्रशान्त] शम-प्राप्त। साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शान्त रस।

पसंति स्त्री [प्रशान्ति] नाश, विनाश।

पसंधण न [प्रसन्धान] सतत प्रवर्त्तन।

पसंस सक [प्रशंस्] श्लाघा करना।

पसंस वि [प्रशस्य] प्रशंसा-योग्य। पुं. लोभ।

पसंसय वि [प्रशंसक] प्रशंसा करनेवाला।

पसंसा स्त्री [प्रशंसा] श्लाघा, स्तुति, वर्णन।

पसज्ज° देखो पसंज।

पसज्झ, पसज्झं अ [प्रसह्य] खुले तौर से, प्रकट रीति से। बलात्कार।

पसज्झचेय न [प्रसह्यचेतस्] धर्म-निरपेक्ष चित्त, कदाग्रही मन।

पसढ वि [प्रसह्य] अनेक दिन रखकर खुला किया हुआ।

पसढ वि [प्रशठ] अत्यन्त शठ।

पसढं देखो पसज्झ।

पसढिल वि [प्रशिथिल] विशेष ढीला।

पसण्ण वि [प्रसन्न] खुश, स्वस्थ। निर्मल। °चंद पुं [°चन्द्र] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि।

पसण्णा स्त्री [प्रसन्ना] मदिरा।

पसत्त वि [प्रसक्त] चिपका हुआ। आसक्त। आपत्ति ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त।

पसत्थ वि [प्रशस्त] प्रशंसनीय। श्रेष्ठ।

पसत्थि स्त्री [प्रशस्ति] वंशवर्णन।

पसत्थु पुं [प्रशास्तृ] लेखाचार्य, गणित का अध्यापक। धर्म-शास्त्र का पाठक। मन्त्री।

पसप्प पुं [प्रसर्प] विस्तार, फैलाव।

पसप्पग वि [प्रसर्पक] प्रकर्ष से जानेवाला, मुसाफिरी करनेवाला। विस्तार को प्राप्त करनेवाला।

पसम अक [प्र + शम्] अच्छी तरह शान्त होना।

पसम पुं [प्रशम] प्रशान्ति, शान्ति। लगातार दो उपवास।

पसम पुं [प्रश्रम] विशेष मेहनत—खेद।

पसमण न [प्रशमन] प्रकृष्ट शमन। वि. प्रशान्त करनेवाला।

पसमिक्ख सक [प्रसम् + ईक्ष्] प्रकर्ष से देखना।

पसमिण वि [प्रशमिन्] प्रशान्त करनेवाला, नाश करनेवाला।

पसम्म देखो पसम = प्र + शम्।

पसय पुं [दे] मृग-विशेष। मृग-शिशु।

पसय वि [प्रसृत] फैला हुआ।

पसर अक [प्र + सृ] फैलना।

पसर पुं [प्रसर] विस्तार, फैलाव।

पसरेह पुं [दे] किंजल्क।

पसल्लिअ वि [दे] प्रेरित।

पसव सक [प्र + सू] जन्म देना,

पसव (अप) सक [प्र + विश्] प्रवेश करना। न. फूल।

पसव [दे] देखो पसय। °नाह पुं [°नाथ] सिंह। °राय पुं [°राज] सिंह।

पसवडक्क न [दे] विलोकन।

पसवण न [प्रसवन] प्रसूति।

पसविय वि [प्रसूत] जिसने जन्म दिया हो वह। देखो पसूअ = प्रसूत।

पसविर वि [प्रसवितृ] जन्म देनेवाला।

पसस्स देखो पसंस।

पसस्स वि [प्रशस्य] प्रभूत शस्यवाला।

पसाइअ वि [प्रसादित] प्रसन्न किया हुआ। प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ।

पसाइआ स्त्री [दे] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगड़ी।

पसाम वि [प्रशाम्] शान्त होनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसाय सक [प्र + सादय्] प्रसन्न करना ।
पसाय पुं [प्रसाद] प्रसन्नता, खुशी । कृपा, मेहरबानी । प्रणय ।
पसार सक [प्र + सारय्] पसारना, फैलाना ।
पसास सक [प्र + शासय्] शासन करना । शिक्षा देना । पालन करना ।
पसाह सक [प्र + साधय्] बस में करना । सिद्ध करना ।
पसाहग वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करनेवाला । °तम वि. उत्कृष्ट साधक । न. करण-कारक । देखो पसाहय ।
पसाहण न [प्रसाधन] सिद्ध करना, साधना । उत्कृष्ट साधन । अलंकार । भूषण आदि की सजावट ।
पसाहय देखो पसाहग । सजानेवाला ।
पसाहा स्त्री [प्रशाखा] शाखा की शाखा, छोटी शाखा ।
पसाहिल्ल वि [प्रशाखिन्] प्रशाखा-युक्त ।
पसिअ अक [प्र + सद्] प्रसन्न होना ।
पसिअ अक [प्र + सद्] प्रसन्न होना ।
पसिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तीर्ण ।
पसिअ न [दे] पूग-फल, सुपारी ।
पसिंच सक [प्र + सिच्] सेचन करना ।
पसिंडि (दे) देखो पसंडि ।
पसिक्खअ वि [प्रशिक्षक] सीखनेवाला ।
पसिज्जण न [प्रसदन] प्रसन्न होना ।
पसिढिल देखो पसढिल ।
पसिण पुंन [प्रश्न] पृच्छा । दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष । °विज्जा स्त्री [°विद्या] मन्त्रविद्या-विशेष । °पसिण न [°प्रश्न] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन ।
पसिणिय वि [प्रश्नित] पूछा हुआ ।
पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] विख्यात, विश्रुत । प्रकर्ष से मुक्ति को प्राप्त, मुक्त ।
पसिद्धि स्त्री [प्रसिद्धि] ख्याति । शंका का समाधान, आक्षेप का परिहार ।
पसिस्स देखो पसीस ।
पसीअ देखो पसिअ = प्र + सद् ।
पसीस पुं [प्रशिष्य] शिष्य का शिष्य ।
पसु पुं [पशु] जन्तु-विशेष, सींग पूँछवाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र । बकरा । °भूय वि[°भूत] पशु-तुल्य । °मेह पुं[°मेध] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ । °वइ पुं [°पति] महादेव ।
पसुत्त वि [प्रसुप्त] सोया हुआ ।
पसुत्ति स्त्री [प्रसुप्ति] कुष्ठ रोग । नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता ।
पसुव (अप) देखो पसु ।
पसुहत्त पुं [दे] वृक्ष ।
पसू सक [प्र + सू] जन्म देना, प्रसव करना ।
पसू वि [प्रसू] प्रसव-कर्ता, जन्म-दाता ।
पसूअ न [दे] फूल ।
पसूअ वि [प्रसूत] उत्पन्न ।
पसूअण न [प्रसवन] जन्म-दान ।
पसूइ स्त्री [प्रसूति] प्रसव, उत्पत्ति । एक कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का असंवेदन, चमड़ी का मर जाना । °रोग पुं. रोग-विशेष ।
पसूइय पुं [प्रसूतिक] वातरोग-विशेष ।
पसूण न [प्रसून] पुष्प ।
पसेअ पुं [प्रस्वेद] पसीना ।
पसेढि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर श्रेणि—पंक्ति ।
पसेण पुं [प्रसेन] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम ।
पसेणइ पुं [प्रसेनजित्] कुलकर-पुरुष । यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र ।
पसेणि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर जाति ।
पसेयग देखो पसेवय ।
पसेव सक [प्र + सेव्] विशेष सेवा करना ।
पसेवय पुं [प्रसेवक] कोथला, थैला ।
पसेविआ स्त्री [प्रसेविका] थैली, कोथली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पस्स सक [दृश्] देखना ।
पस्स (शौ) देखो पास = पार्श्व ।
पस्सओहर वि [पश्यतोहर] देखते हुए चोरी करनेवाला, सुनार, उचक्का ।
पस्सेय देखो पसेअ ।
पह वि [प्रह्व] नम्र । विनीत । आसक्त ।
पह पुं [पथिन्] मार्ग । °देसय वि [°देशक] मार्ग-दर्शक ।
पहएल्ल पुं [दे] अपूप, पुआ, खाद्य-विशेष ।
पहंकर देखो पभंकर ।
पहंकरा देखो पभंकरा ।
पहंजण पुं [प्रभञ्जन] वायु । देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति । एक राजा ।
पहकर [दे] देखो पहयर ।
पहट्ठ वि [दे] दृप्त, उद्धत । थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ ।
पहट्ठ वि [प्रहृष्ट] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त ।
पहण सक [प्र + हन्] मार डालना ।
पहण न [दे] कुल, वंश ।
पहणि स्त्री [दे]सामने आए हुए का अटकाव ।
पहत्थ पुं [प्रहस्त] रावण का मामा ।
पहद वि [दे] सदा दृष्ट ।
पहम्म सक [प्र + हम्म्] प्रकर्ष से गति करना ।
पहम्म न [दे] देव-कुण्ड । खात-जल, कुण्ड । छिद्र ।
पहम्मंत } देखो पहण = प्र + हन् का
पहम्ममाण } कवकृ. ।
पहय वि [प्रहत] घिसा हुआ । मार डाला गया, निहत ।
पहयर पुं [दे] समूह ।
पहर सक [प्र + हृ] प्रहार करना ।
पहर पुं [प्रहार] मार, प्रहार । जहाँ पर प्रहार किया हो वह स्थान ।
पहर पुं [प्रहर] तीन घंटे का समय ।
पहरण न [प्रहरण] आयुध । प्रहार-क्रिया ।
पहराइया देखो पहाराइया ।
पहराय पुं [प्रभराज] भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव ।
पहरिअ वि [प्रहृत] प्रहार करने के लिए उद्यत । जिस पर प्रहार किया गया हो वह ।
पहरिस पु [प्रहर्ष] आनन्द, खुशी ।
पहलादिद (शौ) [प्रह्लादित] आनन्दित ।
पहल्ल अक [घूर्ण्] घूमना, काँपना, डोलना ।
पहल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] घूमनेवाला, डोलता ।
पहव अक [प्र + भू]उत्पन्न होना । समर्थ होना ।
पहव पुं [प्रभव] उत्पत्ति-स्थान ।
पहव देखो पहाव = प्रभाव ।
पहव देखो पह = प्रह्व ।
पहव पुं [प्रभव] एक जैन महर्षि ।
पहस अक [प्र + हस्] हँसना । उपहास करना ।
पहसण न [प्रहसन] उपहास, परिहास । नाटक का एक भेद, हास्य-रस प्रधान नाटक, रूपक-विशेष ।
पहसिय वि [प्रहसित] जो हँसने लगा हो । जिसका उपहास किया हो वह । न. हास्य । पु. पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र ।
पहा सक [प्र + हा] त्याग करना । अक. कम होना, क्षीण होना ।
पहा स्त्री [प्रथा] रीति, व्यवहार । ख्याति, प्रसिद्धि ।
पहा स्त्री [प्रभा] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति । °मंडल देखो भामंडल । °यर पुं [°कर] सूर्य । रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजर्षि । °वई स्त्री [°वती] आठवें वासुदेव की पटरानी ।
पहाड सक [प्र + धाटय्] इधर-उधर भमाना, घुमाना ।
पहाण वि [प्रधान] नायक, मुखिया, मुख्य । उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन । स्त्रीन.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था। पुं. सचिव, मन्त्री।
पहाण पुं [पाषाण] पत्थर।
पहाण न [प्रहाण] अपगम, विनाश।
पहाम सक [प्र + भ्रमय्] फिराना, घुमाना।
पहाय देखो पहा = प्र + हा का संकृ.।
पहाय न [प्रभात] सबेरा। वि. प्रभायुक्त।
पहाय देखो पहाव = प्रभाव।
पहाया देखो वाहाया।
पहार सक [प्र + धारय्] चिन्तन करना, विचार करना। निश्चय करना।
पहार देखो पहर = प्रहार।
पहाराइया स्त्री [प्रहारातिगा] लिपि-विशेष।
पहारेत्तु वि [प्रधारयितृ] चिन्तन करनेवाला।
पहाव सक [प्र + भावय्] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। प्रसिद्धि करना।
पहाव (अप) अक [प्र + भू] समर्थ होना।
पहाव पुं [प्रभाव] शक्ति, सामर्थ्य। कोष और दण्ड का तेज। माहात्म्य।
पहाविअ वि [प्रधावित] दौड़ा हुआ।
पहाविर वि [प्रधावितृ] दौड़नेवाला।
पहास सक [प्र + भाष्] बोलना।
पहास अक [प्र + भास्] चमकना, प्रकाशना।
पहास पुं [प्रहास] अट्टहास आदि हास्य।
पहासा स्त्री [प्रहासा] देवी-विशेष।
पहिअ वि [पान्थ, पथिक] मुसाफिर। °साला स्त्री [°शाला] धर्मशाला।
पहिअ वि [प्रथित] विस्तृत। प्रसिद्ध। राक्षस वंश का एक लंका-पति।
पहिअ वि [प्रहित] भेजा हुआ, प्रेषित।
पहिअ वि [दे] मथित, विलोडित।
पहिंसय वि [प्रहिंसक] हिंसा करनेवाला।
पहिज्जमाण पहा = प्र + हा का वकृ.।
पहिट्ठ देखो पहट्ठ = प्रहृष्ट।
पहिर सक [परि + धा] पहनना।
पहिरावण न [परिधापन] पहिराना। पहिरावन, भेंट में—इनाम में दिया जाता वस्त्रादि।
पहिल वि [दे] प्रथम।
पहिल्ल अक [दे] पहल करना, आगे करना।
पहिल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] खूब हिलनेवाला।
पहिवी देखो पुहवी = पृथिवी।
पहीण वि [प्रहीण] परिक्षीण। भ्रष्ट, स्खलित।
पहु पुं [प्रभु] परमेश्वर। जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र। स्वामी। वि. समर्थ। अधिपति, नायक।
°पहुइ देखो °पभिइ।
पहुई देखो पहुवी।
पहुंक पुं [पृथुक] खाद्य पदार्थ-विशेष, चिउड़ा।
पहुच्च अक [प्र + भू] पहुँचना।
पहुट्ट देखो पप्फुट्ट।
पहुडि देखो पभिइ।
पहुण पुं [प्राघुण] अतिथि।
पहुणाइय न [प्राघुण्य] आतिथ्य,।
पहुत्त वि [प्रभूत] पर्याप्त, काफी। समर्थ। पहुँचा हुआ।
पहुदि देखो पभिइ।
पहुप्प } अक [प्र + भू] समर्थ होना, सकना।
पहुव } पहुँचना।
पहुवी स्त्री [पृथिवी] भूमि। °पहु पुं [°प्रभु] राजा। °वइ पुं [°पति] वही अर्थ।
पहुव्वंत देखो पहुव का कवकृ.।
पहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर। उद्गत। भूत। उन्नत।
पहेज्जमाण देखो पहा = प्र + हा का वकृ.।
पहेण न [दे] बधू को ले जाने पर पिता के घर दी जाती जमीन।
पहेण न [दे] खाद्य वस्तु की भेंट। उत्सव।
पहेरक न [प्रहेरक] आभरण-विशेष।
पहेलिया स्त्री [प्रहेलिका] गूढ़ आशयवाली कविता।
पहोअ सक [प्र + धाव्] प्रक्षालन करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहोइ वि [प्रधाविन्] धोनेवाला।
पहोइअ वि [दे] प्रवर्तित। प्रभुत्व।
पहोड सक [वि + लुल्] अन्दोलना।
पहोलिर वि [प्रघूर्णितृ] हिलनेवाला, डोलता।
पहोव देखो पधोव।
पा सक. पीना, पान करना। रक्षण करना।
पा सक [घ्रा] सूँघना।
पाइ वि [पातिन्] गिरनेवाला।
पाइ वि [पायिन्] पीनेवाला।
पाइअ न [दे] मुँह का फैलाव।
पाइअ देखो पागय = प्रकृत।
पाइंत पाए = पायय् का वकृ.।
पाइक्क पुं [पदाति] प्यादा, पैर से चलनेवाला सैनिक।
पाइडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र।
पाइण देखो पाईण।
पाइत्ता (अप) स्त्री [पवित्रा] छन्द-विशेष।
पाइद (शौ) वि [पाचित] पकवाया हुआ।
पाइन्न देखो पाईण।
पाइभ न [प्रातिभ] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष।
पाइम वि [पाक्य] पकाने-योग्य। काल-प्राप्त, मृत।
पाइम वि [पात्य] गिराने-योग्य।
पाई स्त्री [पात्री] भाजन-विशेष। छोटा पात्र।
पाईण वि [प्राचीन] पूर्वदिशा-सम्बन्धी। न. गोत्र-विशेष। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न।
पाईणा स्त्री [प्राचीना] पूर्व दिशा।
पाउ देखो पाउं = प्रादुस्।
पाउ पुं [पायु] गुदा।
पाउ पुंस्त्री [दे] भात, भोजन। इक्षु।
पाउअ न [दे] हिम। भक्त। इक्षु।
पाउअ देखो पाउड = प्रावृत।
पाउअ देखो पागय।
पाउआ स्त्री [पादुका] खड़ाऊँ, काष्ठ का जूता। पगरखी।
पाउं अ [प्रादुस्] प्रकट, व्यक्त।

पाउंछण न [प्रादप्रोञ्छन] जैन मुनि का एक उपकरण, रजोहरण।
पाउकर सक [प्रादुस् + कृ] प्रकट करना।
पाउकर वि [प्रादुष्कर] प्रादुर्भावक।
पाउकरण न [प्रादुष्करण]प्रादुर्भाव। वि. जो प्रकाशित किया जाय वह। जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा।
पाउक्क वि [दे] मार्गीकृत, मार्गित।
पाउक्करण देखो पाउकरण।
पाउक्खालय न [दे. पायुक्षालक] पाखाना। मलोत्सर्ग-क्रिया।
पाउग्ग वि [दे] सभासद।
पाउग्ग वि [प्रायोग्य] उचित, लायक।
पाउग्गह पुं [पतद्ग्रह] पात्र।
पाउग्गिअ वि [दे] जुआ खेलनेवाला। सहन किया हुआ।
पाउड देखो पागय।
पाउड वि [प्रावृत] आच्छादित। वस्त्र।
पाउण सक [प्रा + वृ] पहिरना।
पाउण सक [प्र + आप्] प्राप्त करना।
पाउण (अप) देखो पावण = पावन।
पाउत्त देखो पउत्त = प्रयुक्त।
पाउप्पभाय वि [प्रादुष्प्रभात] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त।
पाउब्भव अक [प्रादुस्+भू] प्रकट होना।
पाउब्भव वि [पापोद्भव] पाप से उत्पन्न।
पाउब्भुय, पाउब्भूय } वि [प्रादुर्भूत] उत्पन्न, संजात। प्रकटित।
पाउरण न [प्रावरण] वस्त्र।
पाउरण न [दे] कवच, वर्म।
पाउरिअ देखो पाउड = प्रावृत।
पाउल वि [पापकुल] जघन्य कुल में उत्पन्न।
पाउल्ल न. देखो पाउआ।
पाउव न [पादोद] पाद-प्रक्षालन-जल।
पाउस पुं [प्रावृष्] वर्षा ऋतु। °कीड पुं [°कीट] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष । °गम पुं. वर्षा-प्रारम्भ ।

पाउसिअ वि [प्रावृषिक] वर्षा-सम्बन्धी ।

पाउसिअ वि [प्रोषित, प्रवासिन्] प्रवास में गया हुआ ।

पाउसिआ स्त्री [प्राद्वेषिकी] द्वेष—मत्सर से होने वाला कर्म-बन्ध ।

पाउहारी स्त्री [दे. पाकहारी] भात-पानी ले आनेवाली ।

पाए अ [दे] प्रभृति, (वहां से) शुरू करके ।

पाए सक [पायय्] पिलाना ।

पाए सक [पादय्] गति कराना ।

पाए सक [पाचय्] पकवाना ।

पाओ अ [प्रातस्] प्रभात ।

पाओकरण देखो पाउकरण ।

पाओग देखो पाउग्ग ।

पाओगिय वि [प्रायोगिक] प्रयत्न-जनित, अस्वाभाविक ।

पाओग्ग देखो पाउग्ग ।

पाओपगम न [पादपोपगम] देखो पाओवगमण ।

पाओयर पुं [प्रादुष्कार] देखो पाउकरण ।

पाओवगमण न [पादपोपगमन] अनशन-विशेष, मरण-विशेष ।

पाओवगय वि [पादपोपगत] अनशन-विशेष से मृत ।

पाओस पुं [दे. प्रद्वेष] मत्सर, द्वेष ।

पाओसिय देखो पादोसिय ।

पाओसिया देखो पाउसिआ ।

पांडविअ वि [दे] जलार्द्र ।

पांडु देखो पंडु । °सुअ पुं [°सुत] अभिनय का एक भेद ।

पाक देखो पाग ।

पाकम्म न [प्राकाम्य] योग की आठ सिद्धियों में एक सिद्धि ।

पाकार पुं [प्राकार] दुर्ग ।

पाकिद (शौ) देखो पागय ।

पाखंड देखो पासंड ।

पाग पुं [पाक] पचन-क्रिया । दैत्य-विशेष । विपाक । बलवान् दुश्मन । °सासण पुं [°शासन] इन्द्र, देव-पति । °सासणी स्त्री [°शासनी] इन्द्रजाल-विद्या ।

पागइअ वि [प्राकृतिक] स्वाभाविक । पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक ।

पागड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना ।

पागड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला ।

पागड्ढि } वि [प्राकर्षिन्, °क] अग्र-
पागड्ढिक } गामी । प्रवर्त्तक ।

पागब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता ।

पागय वि [प्राकृत] स्वाभाविक । आर्यावर्त्त की प्राचीन लोक-भाषा । पुं. साधारण बुद्धि-वाला मनुष्य, सामान्य लोग । °भासा स्त्री [°भाषा] प्राकृत भाषा । °वागरण न [°व्याकरण] प्राकृत भाषा का व्याकरण ।

पागार पुं [प्राकार] दुर्ग ।

पाजावच्च पुं [प्राजापत्य] वनस्पति का अधिष्ठाता देव । वनस्पति ।

पाटप (चूपै) देखो वाडव ।

पाठीण देखो पाढीण ।

पाड देखो फाड = पाट्य ।

पाड सक [पातय्] गिराना ।

पाड देखो पाडय = पाटक ।

पाडच्चर वि [दे] आसक्त चित्तवाला ।

पाडच्चर पुं [पाटच्चर] चोर ।

पाडण न [पाटन] विदारण ।

पाडण न [पातन] गिराना । परिभ्रमण ।

पाडय पुं [पाटक] मुहल्ला ।

पाडय वि [पातक] गिरानेवाला ।

पाडल पुं [पाटल] श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग । वि. श्वेत-रक्त वर्णवाला । न. पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल । पाढल का फूल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाडल पुं [दे] हंस। बैल। कमल।
पाडलसउण पुं [दे] हंस।
पाडला स्त्री [पाटला] पाढल का पेड़, पाडरि।
पाडलि स्त्री [पाटलि] ऊपर देखो। °उत्त, °पुत्त न [°पुत्र] पटना नगर। °पुत्त वि [°पुत्र] पाटलिपुत्र-सम्बन्धी। °संड न [°षण्ड] नगर-विशेष।
पाडली देखो पाडलि। °पुर न., °वुत्त [°पुत्र] पटना नगर।
पाडव न [पाटव] पटुता।
पाडवण न [दे] पाद-पतन, प्रणाम-विशेष।
पाडहिअ वि [पाटहिक] ढोल बजानेवाला।
पाडहुक वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार।
पाडिअग्ग पुं [दे] विश्राम।
पाडिअज्झ पुं [दे] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जानेवाला।
पाडिआ देखो पाडय = पातक।
पाडिएक्क, पाडिक्क न [प्रत्येक] हर एक।
पाडिंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष।
पाडिच्चरण न [प्रतिचरण] सेवा, उपासना।
पाडिच्छय वि [प्रतीप्सक] ग्रहण करनेवाला।
पाडिपह न [प्रतिपथ] अभिमुख।
पाडिपहिअ देखो पडिपहिअ।
पाडिपिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा।
पाडिप्पवग पुं [पारिप्लवक] पक्षि-विशेष।
पाडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा-कर्ता।
पाडियंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष।
पाडियक्क देखो पाडिएक्क।
पाडिवय वि [प्रातिपद] पडवा तिथि का। पुं. एक भावी जैन आचार्य।
पाडिवया स्त्री [प्रतिपत्] पक्ष की पहली तिथि।
पाडिवेसिय वि [प्रातिवेश्मिक] पड़ोसी।
पाडिसार पुं [दे] निपुणता। वि. पटु।
पाडिसिद्धि देखो पडिसिद्धि = प्रतिसिद्धि।
पाडिसिद्धि स्त्री [दे] स्पर्धा। समुदाचार। वि सदृश।
पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता।
पाडिस्सुइय न [प्रातिश्रुतिक] अभिनय का एक भेद।
पाडिहच्छी, पाडिहत्थी स्त्री [दे] शिरो-माल्य।
पाडिहारिय वि [प्रातिहारिक] वापस देने योग्य वस्तु।
पाडिहेर न [प्रातिहार्य] देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देवकृत पूजा-विशेष। देव-सान्निध्य।
पाडी स्त्री [दे] भैंस की बछिया।
पाडुंकी स्त्री [दे] जखमवाले की पालकी।
पाडुंगोरि वि [दे] गुण-रहित। मद्य में आसक्त। स्त्री. मजबूत वेष्टन-वाली बाड़।
पाडुक्क पुं [दे] समालम्भन, चन्दन आदि का शरीर में उपलेप। वि. पटु, निपुण।
पाडुच्चिय वि [प्रातीतिक] किसी के आश्रय से होनेवाला, आपेक्षिक।
पाडुच्ची स्त्री [दे] घोड़े का सिंगार।
पाडुहुअ वि [दे] मनौतिया, जामिनदार।
पाडेक्क देखो पाडिक्क।
पाडोस पुं [दे] पड़ोस।
पाडोसिअ वि [दे] पड़ोसी।
पाढ सक [पाठय्] पढ़ाना, अध्ययन कराना।
पाढ पुं [पाठ] अध्ययन, पठन। शास्त्र, आगम। शास्त्र का उल्लेख। अध्यापन, शिक्षा।
पाढ देखो पाडय = पाटक।
पाढंतर न [पाठान्तर] भिन्न पाठ।
पाढग वि [पाठक] उच्चारण करनेवाला। अभ्यासी, अध्ययन करनेवाला। अध्यापक।
पाढय देखो पाढग।
पाढव वि [पार्थिव] पृथिवी का विकार,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृथिवी का।

पाढा स्त्री [पाठा] पाढ, पाठ का गाछ।

पाढाव सक [पाठय्] पढ़ाना।

पाढावअ वि [पाठक] अध्यापक।

पाढाविउ वि [पाठयितृ] पढ़ानेवाला।

पाढिआ स्त्री [पाठिका] पढ़नेवाली स्त्री।

पाढिउ वि [पाठयितृ] अध्यापक, पढ़ानेवाला।

पाढीण पुं [पाठीन] 'पोठिया' मछली।

पाढोआमास पुं [पृथगामर्श] बारहवें अंगग्रन्थ का एक भाग।

पाण सक [प्र + आनय्] जिलाना।

पाण पुंस्त्री [दे] चाण्डाल। °उडी स्त्री [°कुटी] चाण्डाल की झोंपड़ी। °विलया स्त्री [°वनिता] चाण्डाली। °डंबर पुं [°डम्बर] यक्ष-विशेष। °हिवइ पुं [°धिपति] चाण्डाल-नायक।

पाण न [पान] पीने की क्रिया। पीने की चीज, पानी आदि। पुं. गुच्छ-विशेष। °त्त न [°पात्र] पीने का भाजन, प्याला। °गार न [°गार] मद्य-गृह। °हार पुं. एकाशन तप।

पाण पुंन [प्राण] जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निःश्वास। समय-परिमाण-विशेष, उच्छ्वास-निःश्वास-परिमित काल। जन्तु, जीव। जीवन। °इत्त वि [°वत्] प्राणवाला। °च्चय पुं [°त्यय] प्राण-नाश। °च्चाय पुं [°त्याग] मौत। °जाइय वि [°जातिक] प्राणी, जन्तु। °नाह पुं [°नाथ] पति, स्वामी। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] पत्नी। °वह पुं [°वध] हिंसा। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] जीवन-निर्वाह। °सम पुं [°सम] पति, स्वामी। °सुहुम न [°सूक्ष्म] सूक्ष्म जन्तु। °हिय वि [°हृत्] प्राण-नाशक। °इंत वि [°वत्] प्राणी। °इवाइया स्त्री [°तिपातिकी] क्रिया-विशेष, हिंसा से होनेवाला कर्म-बन्ध। °इवाय पुं [°निपात] हिंसा। °उ पुंन [°युस्] बारहवाँ पूर्व ग्रन्थ। °पाण, °पाणु पुंन [°पान] उच्छ्वास और निःश्वास। °याम पुं. योगाङ्ग, रेचक, कुम्भक और पूरक नामक प्राणों को दमने का उपाय।

पाणंतकर वि [प्राणान्तकर] प्राण-नाशक।

पाणंतिय वि [प्राणान्तिक] प्राण-नाशवाला।

पाणग पुंन [पानक] पेय-द्रव्य-विशेष। वि. पान करनेवाला।

प्राणद्धि स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला।

पाणम अक [प्र + अण्] निःश्वास लेना।

पाणय पुं [प्राणत] दसवाँ देव-लोक। विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष। प्राणत स्वर्ग का इन्द्र। प्राणत देवलोक में रहनेवाला देव।

पाणहा स्त्री [उपानह्] जूता।

पाणाअ पुं [दे] चाण्डाल।

पाणाम पुं [प्राण] निःश्वास।

पाणामा स्त्री [प्राणामी] दीक्षा-विशेष।

पाणाली स्त्री [दे] दो हाथों का प्रहार।

पाणि पुं [प्राणिन्] जीव, आत्मा, चेतन।

पाणि पुं. हस्त। °गहण देखो °ग्गहण। °ग्गह पुं [°ग्रह] विवाह। °ग्गहण न [°ग्रहण] विवाह।

पाणिअ न [पानीय] पानी। °धारिया स्त्री [°धरिका] [°धरी]। °हारी पनिहारी।

पाणिणि पुं [पाणिनि] एक प्रसिद्ध व्याकरण-कार ऋषि।

पाणिणीअ वि [पाणिनीय] पाणिनि-सम्बन्धी, पाणिनि का।

पाणी देखो पाण = (दे)।

पाणी स्त्री [पानी] वल्ली-विशेष।

पाणीअ देखो पाणिअ।

पाणु पुंन [प्राण] प्राण-वायु। श्वासोच्छ्वास। समय-परिमाण-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पात } देखो पाय = पात्र । °बंधण न
पाद } [°बन्धन] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैनमुनि का एक उपकरण ।

पाद देखो पाय = पाद । °सम वि. गेय-विशेष । °ोट्ठपय न [°ोष्ठपद] बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय ।

पादव देखो पायव ।

पादु° देखो पाउं = प्रादुस् ।

पादो देखो पाओ = प्रातस् ।

पादोसिय वि [प्रादोषिक] प्रदोष-काल का ।

पाधन्न देखो पाहण्ण ।

पाधार सक [पाद + धारय्] पधारना ।

पाबद्ध वि [प्राबद्ध] विशेष बँधा हुआ ।

पाभाइय } वि[प्राभातिक] प्रभात-सम्बन्धी ।
पाभातिय }

पाम सक [प्र + आप्] प्राप्त करना ।

पामण्ण न [प्रामाण्य] प्रमाणता ।

पामद्दा स्त्री [दे] दोनों पैर से धान्य-मर्दन ।

पामर पुं. खेती करनेवाला । हलकी जाति का मनुष्य । मूर्ख, अज्ञानी ।

पामा स्त्री. खुजली ।

पामाड पुं [पद्माट] पमाड़, पमार, पवाड, चकवड़ वृक्ष ।

पामिच्च न [दे. अपमित्य] उधार लेना ।

पामुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त ।

पामूल न [पादमूल] पैर का मूल भाग ।

पामोक्ख देखो पमुह = प्रमुख ।

पामोक्ख पुं [प्रमोक्ष] मुक्ति ।

पाय पुं [दे] रथ का पहिया । साँप ।

पाय पुं [पाक] पाचन-क्रिया । रसोई ।

पाय वि [पाक्य] पाक-योग्य ।

पाय देखो पाव ।

पाय पुं [पात] पतन । सम्बन्ध ।

पाय पुं. पान, पीने की क्रिया ।

पाय पुं [पाद]गमन, गति । पैर । पद्य का चौथा हिस्सा । किरण । पर्वत का कटक । एकाशन तप । छः अंगुलों का एक नाप । °कंचणिया स्त्री [°काञ्चनिका] पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र । °कंबल पुंन [°कम्बल] पैर पोंछने का वस्त्रखण्ड । °कुक्कुड पुं[°कुक्कुट] कुक्कुट-विशेष । °घाय पुं [°घात] चरण-प्रहार । °चार पुं. पैर से गमन । [°जाल] न [°जाल] पैर का आभूषण-विशेष । °त्ताण न [°त्राण] जूता । °पलंब पुं [°प्रलम्ब] पैर तक लटकनेवाला एक आभूषण । °पीढ देखो °वीढ । °पुंछण न [°प्रोञ्छन] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण । °प्पडण न [°पतन] प्रणाम-विशेष । °मूल न. देखो पामूल । मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति । °लेहणिआ स्त्री [°लेखनिका] पैर पोंछने का जैन साधु का एक काष्ठमय उपकरण । °वंदय वि[°वन्दक] पैर पर गिरकर प्रणाम करनेवाला । °वडण न [°पतन] प्रणाम-विशेष । °वडिया स्त्री [°वृत्ति] पैर छूना, प्रणाम-विशेष । °विहार पुं. पैर से गति । °वीढ न [°पीठ] पैर रखने का आसन । °सीसग न [°शीर्षक] पैर के ऊपर का भाग । °ाउलअ न [°ाकुलक] छन्द-विशेष ।

पाय देखो पत्त = पात्र । °केसरिआ स्त्री [°केसरिका] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्रप्रमार्जन का कपड़ा । °ट्ठवण, °ठवण न [स्थापन] जैन मुनियों का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड । °णिज्जोग, °निज्जोग पुं [°निर्योग] जैन साधु का यह उपकरण-समूह—पात्र, पात्रबन्ध, पात्र-स्थापन, पात्रकेशरिका, पटल, रजस्त्राण और गुच्छक । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] पात्र-सम्बन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष । देखो पाद = पात्र ।

पाय (अप) देखो पत्त = प्राप्त ।

पाय° अ [प्रायस्] प्रायः, बहुत करके ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°पाय पुं. ब. [°पाद] पूज्य।

पायए पा = पा का हेकृ.।

पायं° देखो पाय°।

पायं अ [प्रातस्] प्रभात।

पायंगुट्ठ पुं [पादाङ्गुष्ठ] पैर का अंगूठा।

पायंजलि पुं [पातञ्जल] पातञ्जल योग-सूत्र।

पायंत न [पादान्त] गीत का एक भेद, पाद-वृद्धगीत।

पायंदुय पुं [पादान्दुक] पैर बाँधने का काष्ठ-मय उपकरण।

पायक देखो पायय = पातक।

पायक्क देखो पाइक्क।

पायक्खिण्ण न [प्रादक्षिण्य] प्रदक्षिणा।

पायग न [पातक] पाप।

पायच्छित्त पुंन [प्रायश्चित्त] पाप-नाशन कर्म।

पायड देखो पागड = प्र + कटय्।

पायड न [दे] आँगन।

पायड देखो पागड = प्रकट।

पायड देखो पागड = प्राकृत।

पायड वि [प्रावृत] आच्छादित।

पायण न [पायन] पिलाना, पान कराना।

पायत्त न [पादात] पदाति-समूह। °णिय न [°नीक] पदाति सैन्य।

पायपुंछण न [पादपुञ्छन] सकोरा।

पायप्पहण पुं [दे] कुक्कुट।

पायय न [पातक] पाप।

पायय देखो पाव = पाप।

पायय देखो पागय।

पायय देखो पायव।

पायय देखो पावय = पावक।

पायय देखो पाय = पाद।

पायरास पुं [प्रातराश] प्रातःकाल का भोजन।

पायल न [दे] आँख।

पायव पुं [पादप] वृक्ष।

पायस पुंन. दूध का मिष्टान्न, खीर।

पायार पुं [प्राकार] कोट।

पायाल न [पाताल] रसा-तल, अधो भुवन। °कलश पुं. समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु। °पुर न. नगर-विशेष। °मंदिर न [°मन्दिर]। °हर न [°गृह] पाताल-स्थित गृह।

पायाल न [पाददल] पादात्य, पैदल सैन्य।

पायालंकारपुर न [पाताललङ्कापुर] पाताल-लंका, रावण की राजधानी।

पायावच्च न [प्राजापत्य] अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त्त।

पायाविय वि [पायित] पिलाया हुआ।

पायाहिण न [प्रादक्षिण्य] वेष्टन, दक्षिण की ओर।

पायाहिणा देखो पयाहिणा।

पार अक [शक्] करने में समर्थ होना।

पार सक [पारय्] पार पहुँचना।

पार पुंन [पार] तट, पर्ला, किनारा। परलोक, आगामी जन्म। मनुष्य-लोकभिन्न नरक आदि। मोक्ष। °ग वि. पार जानेवाला। °गय वि [°गत] पार-प्राप्त। पुं. जिन-देव, भगवान् अर्हन्। °गामि वि [°गामिन्] पार पहुँचनेवाला। °पाणग न[°पानक] पेय द्रव्य। °विउ वि [°विद्] पार को जाननेवाला। °भोय वि [°भोग] पार-प्रापक।

पार देखो पायार।

पारंक न [दे] मदिरा नापने का पात्र।

पारंगम वि [पारगम] पार जानेवाला।

पारंगय वि [पारंगत] पार-प्राप्त।

पारंचि } वि [पाराञ्चि]। न [पाराञ्चिक]
पारंचिय } सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पारप्राप्ति। वि. सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करनेवाला।

पारंपज्ज } न [पारम्पर्य] परम्परा।
पारंपर }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारंपर पुं [दे] राक्षस ।

पारंभ सक [प्रा + रभ्]आरम्भ करना । हिंसा करना, मारना । पीड़ा करना ।

पारंभ पुं [प्रारम्भ] शुरू, उपक्रम ।

पारकेर, पारक्क वि [परकीय] पर का, अन्यदीय ।

पारज्झमाण देखो पारंभ = प्रा + रभ् का कवकृ. ।

पारण, पारणग न [पारण] व्रत या तप की समाप्ति के अनन्तर का भोजन ।

पारणा स्त्री. ऊपर देखो । °इत्त वि [°वत्] पारणावाला ।

पारतंत न [पारतन्त्र्य] पराधीनता ।

पारत्त अ[परत्र]परलोक या आगामी जन्म में ।

पारत्त वि [पारत्र, पारत्रिक] पारलौकिक, आगामी जन्म से सम्बन्ध रखनेवाला ।

पारत्ति स्त्री [दे] कुसुम-विशेष ।

पारदारिय वि [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट ।

पारद्ध वि [प्रारब्ध] जिसका प्रारम्भ किया गया हो । जो प्रारम्भ करने लगा हो ।

पारद्ध न [दे] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध । वि. शिकारी । पीड़ित ।

पारद्धि स्त्री [पापर्द्धि] शिकार ।

पारद्धिअ वि [पापर्द्धिक] शिकारी ।

पारमिया स्त्री [पारमिता] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत ।

पारम्म न [पारम्य] परमता, उत्कृष्टता ।

पारय वि [पारग] समर्थ ।

पारय पुं [पारद] पारा । °मद्दण न [°मर्दन] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायन-विशेष । वि. पार-प्रापक ।

पारय न [दे] दारू रखने का पात्र ।

पारय देखो पार-ग ।

पारय पुं [प्रावारक] पट । वि. आच्छादक ।

पारलोइअ वि [पारलौकिक]परलोक-सम्बन्धी, आगामी जन्म से सम्बन्ध रखनेवाला ।

पारवस्स न [पारवश्य] परवशता ।

पारस पुं. अनार्य, फारस देश, ईरान । मणि-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है । पारस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति । °उल न [°कुल] ईरान देश । वि. पारस देश का, ईरान का निवासी ।°कूल न. ईरान का किनारा या सीमा ।

पारसिय वि [पारसिक] फारस देश का ।

पारसी स्त्री. पारस देश की स्त्री । फारसी लिपि ।

पारसीअ वि [पारसीक] फारस-निवासी ।

पाराई स्त्री [दे] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की दंडाकार छोटी वस्तु ।

पाराय देखो पारावय ।

पारायण न. पार-प्राप्ति । पुराण-पाठ-विशेष ।

पारावय देखो पारेवय ।

पारावर पुं [दे] गवाक्ष ।

पारावार पुं. सागर ।

पाराविअ वि [पारित] जिसको पारण कराया ।

पारासर पुं [पाराशर] ऋषि-विशेष । न. गोत्र, वशिष्ठ गोत्र की शाखा । वि. उस गोत्र में उत्पन्न । पुं.भिक्षुक । कर्म-त्यागी संन्यासी ।

पारिओसिय वि [पारितोषिक] पुरस्कार ।

पारिच्छा देखो परिच्छा ।

पारिच्छेज्ज देखो परिच्छेज्ज ।

पारिजाय देखो पारिय = पारिजात ।

पारिट्ठावणिया स्त्री [पारिष्ठापनिकी] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग में सम्यक् प्रवृत्ति ।

पारिडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, कपड़ा ।

पारिणामिअ देखो परिणामिअ = पारिणामिक ।

पारिणामिआ, पारिणामिगी देखो पारिणामिआ ।

पारितावणिया स्त्री [पारितापनिकी] दूसरे को दुःख उपजाने से होनेवाला कर्म-बन्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारितावणी स्त्री [पारितापनी] ऊपर देखो।
पारितोसिअ देखो पारिओसिय।
पारित्त देखो पारत्त = परत्र।
पारिप्पव पुं [पारिप्लव] पक्षि-विशेष।
पारिभद्द पुं [पारिभद्र] फरहद का पेड़।
पारिय वि [पारित] पूर्ण किया हुआ।
पारिय पुं [पारिजात] देव-वृक्ष, कल्पतरु। फरहद का पेड़। न. फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है।
पारियत्त पुं [पारियात्र] देश-विशेष।
पारियल्ल न [दे. परिवर्त] पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि।
पारियाय देखो पारिय = पारिजात।
पारियावणिया देखो पारितावणिया।
पारियावणिया देखो परियावणिया।
पारियासिय वि [पारिवासित] बासी रखा हुआ।
पारिव्वज्ज न [पारिव्राज्य] संन्यास।
पारिव्वाई स्त्री [पारिव्राजी] संन्यासिनी।
पारिव्वाय वि [पारिव्राज] संन्यासी-सम्बन्धी।
पारिसज्ज वि [पारिषद्य] सभासद।
पारिसाडणिया स्त्री [पारिशाटनिकी] परिशाटन—परित्याग से होनेवाला कर्म-बन्ध।
पारिहच्छी स्त्री [दे] माला।
पारिहट्टी स्त्री [दे] प्रतिहारी। आकर्षण। बहुत देर से ब्यायी हुई भैंस।
पारिहत्थिय सि [पारिहस्तिक] निपुण।
पारिहारिय वि [पारिहारिक] परिहार नामक व्रत करनेवाला तपस्वी।
पारिहासय न [पारिहासक] जैन मुनियों के एक कुल का नाम।
पारी स्त्री [दे] दोहन-भाण्ड।
पारीण वि. पार-प्राप्त।
पारुअग्ग पुं [दे] विश्राम।
पारुअल्ल पुं [दे] पृथुक, चिउड़ा।
पारुसिय देखो फारुसिय।
पारुहल्ल वि [दे] मालीकृत, श्रेणी रूप से स्थापित।
पारेवय पुं [पारापत] कबूतर। वृक्ष-विशेष। न. फल-विशेष।
पारोक्ख वि [पारोक्ष] परोक्ष-सम्बन्धी।
पारोह देखो परोह।
पाल सक [पालय्] पालन-रक्षण करना।
पाल देखो पार = पारय्।
पाल पुं [दे] कलवार, शराब बेचनेवाला। वि. जीर्ण, फटा-टूटा।
पाल पुंन. आभूषण-विशेष, वि. पालन-कर्ता।
पालंक न [पालङ्क्य] पालक का शाक।
पालंगा स्त्री [पालङ्क्या] ऊपर देखो।
पालंब पुं [प्रालम्ब] अवलम्बन, सहारा। गले का आभूषण-विशेष। दीर्घ। पुंन. ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल।
पालक्का स्त्री [पालक्या] देखो पालंगा।
पालग देखो पालय।
पालण न [पालन] रक्षण। वि. रक्षक।
पालद्दुह पुं [दे] वृक्ष-विशेष।
पालप्प पुं [दे] प्रतिसार। वि. विप्लुत।
पालय वि [पालक] रक्षक। पुं सौधर्मेन्द्र का एक आभियौगिक देव। श्रीकृष्ण का एक पुत्र। भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवन्ती का एक राजा। देव-विमान-विशेष।
पालास पुं [पालाश] पलाश-सम्बन्धी। न. किंशुक-फल।
पालि स्त्री. तालाव आदि का बन्ध। प्रान्त भाग। देखो पाली = पाली।
पालि स्त्री [दे] धान्य मापने की नाप। पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष।
पालिआ स्त्री [दे] तलवार की मूठ।
पालिआ देखो पाली = पाली।
पालित्त पुं [पादलिप्त] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य।
पालित्ताण न [पादलिप्तीय] सौराष्ट्र देश का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राचीन नगर पालिताणा।
पालित्तिआ स्त्री [दे] राजधानी। मूलनीवी। भण्डार। भंगी, प्रकार।
पालियाय देखो पारिय = पारिजात।
पाली स्त्री. श्रेणि। देखो पालि।
पाली स्त्री [दे] दिशा।
पालीबंध पुं [दे] तालाब, सरोवर।
पालीहम्म न [दे] वृति, बाड़।
पालेव पुं [पादलेप] पैर में किया हुआ लेप।
पाव सक [प्र + आप्] प्राप्त करना।
पाव देखो पव्वाल = प्लावय्।
पाव पुंन [पाप] अशुभ कर्म-पुद्गल, कुकर्म। पापी, अधर्मी। °कम्म न [°कर्मन्] अशुभ कर्म। °कम्मि वि [°कर्मिन्] कुकर्म करनेवाला। °दंड पुं [°दण्ड] नरकावास-विशेष। °पगइ स्त्री [°प्रकृति] अशुभ कर्म-प्रकृति। °यारि वि [°कारिन्] दुराचारी। °समण पुं [°श्रमण] दुष्ट साधु। °सुमिण पुंन [°स्वप्न] दुष्ट स्वप्न। °सुय न [°श्रुत] दुष्ट शास्त्र।
पाव पुं [दे] सर्प।
पाव (अप) देखो पत्त = प्राप्त।
पावंस वि [पापीयस्] पापी, कुकर्मी।
पावक्खालय न [दे. पापक्षालक] देखो पाउक्खालय।
पावग वि [पावक] पवित्र करनेवाला। पुं. अग्नि।
पावग वि [प्रापक] पहुँचानेवाला।
पावग देखो पाव = पाप।
पावज्जा (अप) देखो पव्वज्जा।
पावडण देखो पाय-वडण = पाद-पतन।
पावड्ढि देखो पारद्धि।
पावण वि [पावन] पवित्र करनेवाला।
पावण न [प्लावन] पानी का प्रवाह। सराबोर करना।
पावण न [प्रापण] प्राप्ति, लाभ। योग की एक सिद्धि।
पावद्धि देखो पारद्धि।
पावय देखो पाव = पाप।
पावय वि [प्रावृत] आच्छादित।
पावय पुंन [दे] वाद्य-विशेष।
पावय देखो पावग = पावक।
पावयण देखो पवयण।
पावरअ देखो पावारय।
पावरण पुं [प्रावरण] एक म्लेच्छ जाति। न. वस्त्र।
पावरिय वि [प्रावृत] आच्छादित।
पावस देखो पाउस।
पावा स्त्री [पापा] नगरी-विशेष।
पावाइ वि [प्रवादिन्] वाचाट, दार्शनिक।
पावाइअ वि [प्राव्राजिक] संन्यासी।
पावाइअ वि [प्रावादिक] देखो पावाइ।
पावाइअ } वि [प्रावादुक] वाचाट, दार्शनिक।
पावादुय }
पावार पुं [प्रावार] रुँछावाला। मोटा कम्बल।
पावारय देखो पारय = प्रावारक।
पावालिआ स्त्री [प्रपापालिका] प्याऊ पर नियुक्त स्त्री।
पावासु वि [प्रवासिन्] प्रवास करनेवाला।
पाविअ वि [प्राप्त] लब्ध, मिला हुआ।
पाविअ वि [प्रापित] प्राप्त करवाया हुआ।
पाविअ वि [प्लावित] सराबोर किया हुआ।
पाविट्ठ वि [पापिष्ठ] अत्यन्त पापी।
पावीढ देखो पाय-वीढ।
पावीयंस देखो पावंस।
पावुअ वि [प्रावृत] आच्छादित।
पावेस वि [प्रावेश्य] प्रवेश के लायक।
पावेस पुं [प्रावेश] वस्त्र के दोनों तरफ लटकता रुंछा।
पास सक [दृश्] देखना। जानना।
पास पुं [पार्श्व] वर्तमान अवसर्पिणी-काल के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेईसवें जिन-देव। भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष। न. कन्धे के नीचे का भाग, पाँजर। निकट। °वच्चिज्ज वि [°ापत्यीय] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में संजात।

पास पुं [पाश] फाँसा।

पास न [दे] आँख। दाँत। कुन्त, प्रास। वि. विशोभ, कुडौल। पुंन. अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण।

°पास वि [°पाश] निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित।

पासंगिअ वि [प्रासङ्गिक] आनुषंगिक।

पासंड न [पासण्ड] पाखण्ड, असत्य धर्म। व्रत।

पासंदण न [प्रस्यन्दन] झरन, टपकना।

पासग वि [दर्शक] देखनेवाला।

पासग पुं [पाशक] फाँसा। पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष।

पासग न [प्राशक] कला-विशेष।

पासणिअ वि [दे] साक्षी।

पासणिअ वि [प्राश्निक] प्रश्न-कर्ता।

पासत्थ वि [पार्श्वस्थ] निकट-स्थित। शिथिलाचारी साधु।

पासत्थ वि [पाशस्थ] पाश में फँसा हुआ।

पासल्ल न [दे] द्वार। वि. तिर्यक्, वक्र।

पासल्ल अक [तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्] वक्र। पार्श्व घुमाना।

पासल्लइअ देखो पासल्लिअ।

पासल्लि वि [पार्श्विन्] पार्श्व-शयित।

पासल्लिअ वि [पार्श्वित, तिर्यक्त] पार्श्व में किया हुआ। टेढ़ा किया हुआ।

पासवण न [प्रस्रवण] मूत्र।

पासाईय देखो पासादीय।

पासाकुसुम न [पाशाकुसुम] पुष्प-विशेष।

पासाण पुं [पाषाण] पत्थर।

पासाणिअ वि [दे] साक्षी।

पासाद देखो पासाय।

पासादिय वि [प्रसादित] प्रसन्न किया हुआ। न. प्रसन्न करना।

पासादीय वि [प्रासादीय] प्रसन्नता-जनक।

पासादीय वि [प्रासादित] महलवाला।

पासाय पुंन [प्रासाद] महल। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] श्रेष्ठ महल।

पासायवडेंसग पुं [प्रासादावतंसक] श्रेष्ठतम महल, प्रासाद-विशेष।

पासाव पुं [दे] गवाक्ष। झरोखा।

पासासा स्त्री [दे] छोटा भाला।

पासि वि [पार्श्विन्] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु।

पासिद्धि देखो पसिद्धि।

पासिम वि [दृश्य] दर्शनीय, ज्ञेय।

पासिय वि [पाशिक] फाँसे में फँसानेवाला।

पासिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ।

पासिय वि [पाशित] पाश-युक्त।

पासिया स्त्री [पाशिका] छोटा पाश।

पासिया देखो पास = दृश्।

पासिल्ल वि [पार्श्विक] पास में रहनेवाला। पार्श्वशायी।

पासी स्त्री [दे] चूड़ा, चोटी।

पासु देखो पंसु।

पासुत्त देखो पसुत्त।

पासेइय वि [प्रस्वेदित] प्रस्वेद-युक्त।

पासेल्लिय वि [पार्श्ववत्] पार्श्व-शायी।

पासोअल्ल देखो पासल्ल = तिर्यञ्च्।

पाह (अप) सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना।

पाहंड देखो पासंड।

पाहण देखो पाहाण।

पाहणा देखो पाणहा।

पाहण्ण न [प्राधान्य] प्रधानता।

पाहर सक [प्रा + हृ] प्रकर्ष से लाना।

पाहरिय वि [प्राहरिक] पहरेदार।

पाहाउय देखो पाभाइय।

पाहाण पुं [पाषाण] पत्थर।

पाहिज्ज देखो पाहेज्ज।

पाहुड न [प्राभृत] उपहार। जैन ग्रन्थांश-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष, परिच्छेद, अध्ययन। प्राभृत का ज्ञान। °पाहुड न [°प्राभृत] ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश। प्राभृत-प्राभृत का ज्ञान। °पाहुडसमास पुंन [°प्राभृतसमास] अनेक प्राभृत-प्राभृतों का ज्ञान। °समास पुंन. अनेक प्राभृतों का ज्ञान।

पाहुड न [प्राभृत] कलह। दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्याय-विशेष। सावद्य कर्म। °छेय पुं [°च्छेद]बारहवें अंग-ग्रन्थ के पूर्वों का प्रकरण विशेष। °पाहुडिआ स्त्री [°प्राभृतिका] दृष्टिवाद का प्रकरण-विशेष।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] दृष्टिवाद का छोटा अध्याय। अर्चनिका, विलेपन आदि।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] भेंट। जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा।

पाहुण वि [दे] बेचने की वस्तु।

पाहुण पुं [प्राघुण] अतिथि।

पाहुणिअ पुं [प्राघुणिक] मेहमान।

पाहुणिअ पुं [प्राघुनिक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष।

पाहुणिज्ज वि [प्राहवनीय] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह।

पाहुण्ण न [प्राघुण्य] आतिथ्य।

पाहेअ, पाहेज्ज न [पाथेय] रास्ते में व्यय करने की सामग्री या भोजन।

पाहेणग (दे) देखो पहेण।

पि देखो अवि।

पिअ सक [पा] पीना।

पिअ पुं [प्रिय] पति। वि. इष्ट। °अम पुं [°तम] कान्त। °अमा स्त्री [°तमा] पत्नी। °अर वि [°कर] प्रीति-जनक। °कारिणी स्त्री. भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी। °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य। °जाअ वि [°जाय] जिसको पत्नी प्रिय हो वह। °जाआ स्त्री [°जाया] प्रेम-पात्र पत्नी। °दंसण वि [°दर्शन] जिसका दर्शन प्रीतिकर हो। पुं. देव-विशेष। °दंसणा स्त्री [°दर्शना] भगवान् महावीर की पुत्री। °धम्म वि [°धर्मन्] धर्म की श्रद्धावाला। पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला राजा। °भाउग पुं [°भ्रातृ] पति का भाई। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-वक्ता। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वासुदेव हुआ था। °मेलय वि [°मेलक] प्रिय का मेल—संयोग करानेवाला। न. एक तीर्थ। °उय वि [°ायुष्क] जीवित-प्रिय। °यग वि [°ायत, °त्मक] आत्म-प्रिय।

पिअ देखो पीअ।

पिअ° देखो पिउ। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर।

पिअआ देखो पिआ।

पिअइउ (अप) वि [प्रीणयितृ] प्रीतिकर।

पिअउल्लिय (अप) देखो पिआ।

पिअंकर वि [प्रियंकर] अभीष्ट-कर्ता। पुं. एक चक्रवर्ती राजा। रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम।

पिअंगु पुं [प्रियङ्गु] प्रियंगु का वृक्ष। ककूंदनी का पेड़। कंगु, मालकाँगनी का पेड़। स्त्री. एक स्त्री का नाम। °लइया स्त्री [°लतिका] एक स्त्री का नाम।

पिअंवय, पिअंवाइ वि [प्रियंवद] [प्रियवादिन्] मधुर-भाषी।

पिअण न [दे] दूध।

पिअण न [पान] पीना।

पिअणा स्त्री [पृतना] जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ प्यादें हों वह लश्कर।

पिअमा स्त्री [दे] प्रियंगु वृक्ष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिअमाहवी स्त्री [दे] कोकिला ।
पिअय पुं [प्रियक] विजयसार का पेड़ ।
पिअर पुंन [पितृ] माता-पिता । पुं. पिता ।
पिअरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना ।
पिअल (अप) देखो पिअ = प्रिय ।
पिआ स्त्री [प्रिया] पत्नी ।
पिआमह पुं [पितामह] ब्रह्मा । दादा । °तणअ पुं [°तनय] जाम्बवान्, वानर-विशेष । °त्थ न [°ास्त्र] ब्रह्मास्त्र ।
पिआमही स्त्री [पितामही] दादी ।
पिआर (अप) वि [प्रियतर] प्यारा ।
पिआरी (अप) स्त्री [प्रियतरा] प्रिया, पत्नी ।
पिआल पुं [प्रियाल] पियाल, चिरौंजी ।
पिआलु पुं [प्रियालु] खिरनी का गाछ ।
पिआसा देखो पिवासा ।
पिइ देखो पीइ ।
पिइ पुं [पितृ] पिता । मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव । °मेह पुं [°मेध] जिसमें बाप का होम किया जाय वह यज्ञ । °वण न [°वन] श्मशान । °हर न [°गृह] पिता का घर ।
पिइज्ज पुं [पितृव्य] चाचा ।
पिइय वि [पैतृक] पिता का, पितृ-सम्बन्धी ।
पिउ पुं [पितृ] पिता । पुंन. माँ बाप । °कम्म पुं [°क्रम] पितृ-कुल । °कुल न. पिता का वंश । °घर न [°गृह] पीहर । °च्छा, °च्छी स्त्री [°ष्वसृ] पिता की बहिन । °पिंड पुं [°पिण्ड] मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाता भोजन । °भगिणी स्त्री [°भगिनी] फूफी । °वइ पुं [°पति] यमराज । °वण न [°वन] श्मशान । °सिआ स्त्री [°ष्वसृ] फूफी । °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी । °स्सिया देखो °सिआ । °हर देखो °घर ।
पिउअ देखो पिइय ।
पिउच्छा स्त्री [दे. पितृष्वसृ] फूफी ।
पिउच्छा } स्त्री [दे] सखी ।
पिउच्छा }
पिउली स्त्री [दे] कपास । रूई की पूनी ।
पिंकार पुं [अपिकार] 'अपि' शब्द । अपि शब्द की व्याख्या ।
पिंखा स्त्री [प्रेङ्खा] हिंडोला ।
पिंखोल सक [प्रेङ्खोलय्] झूलना ।
पिंग देखो पंग = ग्रह् ।
पिंग पुं [पिङ्ग] कपिश वर्ण । वि. पीला । पुंस्त्री. कपिजल पक्षी ।
पिंगंग पुं [दे] मर्कट ।
पिंगल पुं [पिङ्गल] नील-पीत वर्ण । वि. नील-मिश्रित पीत-वर्णवाला । पुं. ग्रह-विशेष । एक यक्ष । चक्रवर्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करने-वाला एक निधान । कृष्ण पुद्गल-विशेष । प्राकृत-पिंगल का कवि । जैन उपासक । न. प्राकृत का छन्द-ग्रन्थ । °कुमार पुं. राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ से दीक्षा ली थी । °क्ख वि [°ाक्ष] नीली-पीली आँखवाला । पुं. पक्षि-विशेष ।
पिंगलायण न [पिङ्गलायन] कौत्स गोत्र की शाखा । पुंस्त्री. उस में उत्पन्न ।
पिंगलिअ वि [पैङ्गलिक] पिंगल-सम्बन्धी ।
पिंगा देखो पिंग ।
पिंगायण न [पिङ्गायन] मघा-नक्षत्र का गोत्र ।
पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ ।
पिंगिम पुंस्त्री. [पिङ्गिमन्] पीलापन ।
पिंगीकय वि [पिङ्गीकृत] पीला किया हुआ ।
पिंगुल पुं [पिङ्गुल] पक्षि-विशेष ।
पिंचु पुंस्त्री [दे] पक्व करीर ।
पिंछ } देखो पिच्छ ।
पिंछड }
पिंछी स्त्री [पिच्छी] साधु का एक उपकरण ।
पिंछोली स्त्री [दे] मुंह के पवन से बजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिंज सक [पिञ्ज्] पीजना, रूई का धुनना।

पिंजर पुं [पिञ्जर] पीत-रक्त वर्ण। वि. रक्त-पीत वर्णवाला।

पिंजर सक [पिञ्जरय्] रक्त-मिश्रित पीतवर्ण-युक्त करना।

पिंजरुड पुं [दे] भारुण्ड पक्षी।

पिंजिअ वि [पिञ्जित] पीजा हुआ।

पिंजिअ वि [दे] विधुत।

पिंड सक [पिण्डय्] एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। अक. मिलना।

पिंड पुं [पिण्ड] कठिन द्रव्यों का संश्लेष। संघात। गुड़ वगैरह की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ। भिक्षा में मिलता आहार। देह का एक देश। देह। घर का एक देश। अन्न का गोला जो पितरों के उद्देश से दिया जाता है। गन्ध-द्रव्य, सिह्लक। जपा-पुष्प। कवल। गज-कुम्भ। मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़। न. आजीविका। लोहा। श्राद्ध। वि. संहत। निबिड़। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेनेवाला। °गुला स्त्री. गुड़-विशेष, इक्षुरस का विकार-विशेष। °घर न [°गृह] कर्दम से बना हुआ घर। °त्थ पुं [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष। °त्थ पुं [°ार्थ] समुदायार्थ। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध। °पयडि स्त्री [°प्रकृति] अवान्तर भेदवाली प्रकृति। °वद्धण न [°वर्धन] कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन। °वद्धावण न [°वर्धन] आहार बढ़ाना। °वाय पुं [°पात] भिक्षा-लाभ। °वास पुं. सुहृज्जन। °विसुद्धि, °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] भिक्षा की निर्दोषता।

पिंडण न [पिण्डन] द्रव्यों का एकत्र संश्लेष। ज्ञानावरणीयादि कर्म।

पिंडरय न [दे] दाडिम।

पिंडलइय वि [दे] पिण्डाकार किया हुआ।

पिंडलग न [दे] पटलक, पुष्प का भाजन।

पिंडवाइअ वि [पिण्डपातिक, पैण्डपातिक] भक्त-लाभवाला, जिसको भिक्षा में आहार की प्राप्ति हो वह।

पिंडार पुं [पिण्डार] गोप।

पिंडालु पुं [पिण्डालु] कन्द-विशेष।

पिंडि° देखो पिंडी।

पिंडिम वि [पिण्डिम] पिण्ड से बना हुआ, बहल। पुद्गल-समूहरूप, संघाताकार।

पिंडिय वि [पिण्डित] एकत्रित। गुणित।

पिंडिया स्त्री [पिण्डिका] पिंडली, जानू के नीचे का अवयव। वर्तुलाकार वस्तु।

पिंडी स्त्री [पिण्डी] लुम्बी, गुच्छा। घर का आधारभूत काष्ठ-विशेष, पीढ़ा। वर्तुलाकार वस्तु, गोला। खर्जूर-विशेष।

पिंडी स्त्री [दे] मञ्जरी।

पिंडीर न [दे. पिण्डीर] अनार।

पिंडेसणा स्त्री [पिण्डैषणा] भिक्षा ग्रहण करने की रीति।

पिंडेसिय वि [पिण्डैषिक] भिक्षा-गवेषक।

पिंडोलगय, पिंडोलय } वि [पिण्डावलगक] भिक्षा से निर्वाह करनेवाला, भिक्षु।

पिंध (अप) सक [पि + धा] ढकना।

पिंसुली स्त्री [दे] मुँह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य।

पिक पुंस्त्री. कोकिल पक्षी।

पिक्क देखो पक्क = पक्व।

पिक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना।

पिक्खग वि [प्रेक्षक] निरीक्षक, द्रष्टा।

पिग देखो पिक।

पिचु पुं [पिचु] रूई। °लया स्त्री [°लता] रूई की पूनी।

पिचुमंद पुं [पिचुमन्द] नीम का पेड़।

पिच्च } अ [प्रेत्य] पर-लोक, आगामी जन्म।
पिच्चा } देखो पेच्च।

पिच्चा पिअ = पा का संकृ.।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिञ्चिय वि [दे. पिञ्चित] कूटी हुई छाल।
पिच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना।
पिच्छ न पंख का हिस्सा। मयूरपिच्छ। पाँख। पूँछ।
पिच्छण } न [प्रेक्षण] तमाशा।
पिच्छणय }
पिच्छल वि. स्निग्ध, स्नेहयुक्त। मसृण।
पिच्छा स्त्री [प्रेक्षा] निरीक्षण। °भूमि स्त्री. रंग-मण्डप, रंगमंच।
पिच्छिल वि [पिच्छिल] स्नेह-युक्त, स्निग्ध। मसृण, चिकना।
पिच्छिली स्त्री [दे] लज्जा, शरम।
पिच्छी स्त्री [दे] चूड़ा, चोटी।
पिच्छी स्त्री [पिच्छिका] पीछी।
पिच्छी स्त्री [पृथ्वी] धरती। बड़ी इलायची। पुनर्नवा। कृष्ण जीरक। हिंगुपत्री।
पिच्छोला स्त्री [दे] बीन बजाने की कम्बिका।
पिज्ज सक [पा] पीना।
पिज्ज पुंन [प्रेमन्] प्रेम।
पिज्जा स्त्री [पेया] यवागू।
पिट्ट सक [पीडय्] पीड़ा करना।
पिट्ट अक [भ्रंश्] नीचे गिरना।
पिट्ट सक [पिट्टय्] पीटना, ताड़न करना।
पिट्ट न [दे] पेट।
पिट्टावणया स्त्री [पिट्टना] ताड़न कराना।
पिट्ठ न [पिष्ट] तण्डुल का आटा, चूर्ण।
पिट्ठ न [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा। °करंडग न [°करण्डक] पृष्ठ-वंश, पीठ की बड़ी हड्डी। °चर वि. अनुयायी।
पिट्ठ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ। न. स्पर्श।
पिट्ठ वि [पृष्ट] पूछा हुआ। न. प्रश्न।
पिट्ठंत न [दे. पृष्ठान्त] गुदा।
पिट्ठखउरा स्त्री [दे] कलुष मदिरा।
पिट्ठखउरिआ स्त्री [दे] मदिरा।
पिट्ठायय पुंन [पिष्टातक] केसर आदि द्रव्य।
पिट्ठि स्त्री [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का भाग। °ग वि. पीछे चलनेवाला। °चम्पा स्त्री. चम्पा नगरी के पास की एक नगरी। °मंस न [°मांस] परोक्ष में अन्य के दोष का कीर्तन। °मंसिय वि [°मांसिक] पीछे निन्दा करनेवाला। °माइया स्त्री [°मातृका] एक अनुत्तर-गामिनी स्त्री।
पिट्ठी स्त्री [पैष्टी] आटा की बनी हुई मदिरा।
पिड पुं [पिट] वंश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष। कब्जा, अधीनता।
पिडग देखो पिडय = पिटक।
पिडच्छा स्त्री [दे] सखी।
पिडय न [पिटक] वंशमय पात्र-विशेष। दो चन्द्र और दो सूर्यों का समूह।
पिडय वि [दे] आविग्न।
पिडव सक [अर्ज्] पैदा–उपार्जन करना।
पिडिआ स्त्री [पिटिका] वंश-मय भाजन। छोटी मंजूषा, पेटी, पिटारी।
पिड्ड सक [पीडय्] पीड़ना।
पिड्ड अक [भ्रंश्] नीचे गिरना।
पिड्डइअ वि [दे] प्रशान्त।
पिढं अ [पृथक्] अलग।
पिढर पुंन [पिठर] स्थाली। गृह-विशेष। मुस्ता। मन्थान-दण्ड, मथनिया।
पिणद्ध सक [पि + नह्, पिनि + धा] ढकना। पहिनना। पहिराना। बाँधना।
पिणद्ध वि [पिनद्ध] पहना हुआ। बद्ध, यन्त्रित। पहनाया हुआ।
पिणाइ पुं [पिनाकिन्] महादेव।
पिणाई स्त्री [दे] आज्ञा, आदेश।
पिणाग पुंन [पिनाक] शिव-धनुष। महादेव का शूलास्त्र।
पिणाय देखो पिणाग।
पिणाय पुं [दे] बलात्कार।
पिणिद्ध वि [पिनद्ध, पिनिहित] देखो पिणद्ध = पिनद्ध।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिणिधा सक [पिनि + धा] देखो पिणद्ध = पि + नह्।

पिण्णिया स्त्री [दे. पिण्यिका] गन्ध-द्रव्य-विशेष, ब्यामक, गन्ध-तृण।

पिण्ही स्त्री [दे] क्षामा, कृश स्त्री।

पित्त पुंन, शरीर-स्थित तिक्त धातु-विशेष। °ज्जर पुं [°ज्वर] पित्त से होता बुखार। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] पित्त की प्रबलता से होनेवाली बेहोशी।

पित्तल न. धातु-विशेष, पीतल।

पित्तिज्ज } पुं [पितृव्य] चाचा, पिता का
पित्तिय } भाई।

पित्तिय वि [पैत्तिक] पित्त-सम्बन्धी।

पिधं अ [पृथक्] जुदा।

पिधाण देखो पिहाण।

पिन्नाग } पुं [पिण्याक] तिल आदि का
पिन्नाय } तेल निकालने पर बची हुई खली।

पिपीलिअ पुं [पिपीलक] चीऊँटा।

पिप्पड सक [दे] जो मन में आवे सो बकना।

पिप्पडा स्त्री [दे] ऊर्णा-पिपीलिका।

पिप्पडिअ वि [दे] न. बड़बड़ाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद।

पिप्पय पुं [दे] मशक। पिशाच, भूत। वि. उन्मत्त।

पिप्पर पुं [दे] हंस। वृषभ।

पिप्परी स्त्री [पिप्पली] पीपर का गाछ।

पिप्पल पुंन [पिप्पल] पीपल वृक्ष, अश्वत्थ वृक्ष। छुरा।

पिप्पलग वि [पैप्पलक] पीपल के पान का बना हुआ।

पिप्पलि } स्त्री [पिप्पलि, °ली] ओषधि-
पिप्पली } विशेष, पीपर।

पिप्पिडिअ देखो पिप्पडिअ।

पिप्पिया स्त्री [दे] दाँत का मैल।

पिब देखो पिअ = पा।

पिब्व न [दे] पानी।

पिम्म पुं [प्रेमन्] प्रीति।

पियाल पुं [प्रियाल] खिरनी का पेड़। न. फल-विशेष, खिरनी, खिन्नी।

पियास (अप) स्त्री [पिपासा] प्यास।

पिरिडी स्त्री [दे] शकुनिका, चिड़िया।

पिरिपिरिया देखो परिपिरिया।

पिरिली स्त्री. गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष। वाद्य-विशेष।

पिल देखो पील।

पिलंखु } पुं [प्लक्ष] पिलखन का पेड़।
पिलक्खु } एक तरह का पीपल का वृक्ष।

पिलण न [दे] पिच्छिल देश, चिकनी जगह।

पिला देखो पीला।

पिलाग न [पिटक] फोड़ा, फुनसी।

पिलिंखु देखो पिलंखु।

पिलिहा स्त्री [प्लीहा] अंग-विशेष।

पिलुअ न [दे] छींक।

पिलुंक } देखो पिलंखु।
पिलुक्ख }

पिलुंखु देखो पिलंखु।

पिलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध।

पिलोस पुं [प्लोष] दाह, दहन।

पिल्ल देखो पेल्ल = क्षिप्।

पिल्ल सक [प्र + ईरय्] प्रेरणा करना।

पिल्लग न [दे] पक्षी का बच्चा।

पिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष।

पिल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ।

पिल्लिरी स्त्री [दे] गण्डुत् तृण। चीरी, कीट-विशेष। घर्म, पसीना।

पिल्लुग (दे) देखो पिलुअ।

पिल्ह न [दे] छोटे पक्षी के तुल्य।

पिव देखो इव।

पिव सक [पा] पीना।

पिवासय वि [पिपासक] पीने का इच्छुक।

पिवासा स्त्री [पिपासा] प्यास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिवासिय वि [पिपासित] तृषित ।
पिवीलिआ देखो पिपीलिआ ।
पिव्व देखो पिब्ब ।
पिस सक [पिष्] पीसना ।
पिसंग पुं [पिशङ्ग] पिङ्गल वर्ण, मटियारा रँग । वि. पिंगल वर्णवाला ।
पिसंडि [दे] देखो पसंडि ।
पिसल्ल पुं [पिशाच] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवों की एक जाति ।
पिसाजि वि [पिशाचिन्] भूताविष्ट ।
पिसाय देखो पिसल्ल ।
पिसिअ न [पिशित] मांस ।
पिसुअ पुंस्त्री [पिशुक] क्षुद्र कीट-विशेष ।
पिसुण सक [कथय्] कहना ।
पिसुण पुं [पिशुन] खल, दुर्जन, चुगुलखोर ।
पिसुमय (पै) पुं [विस्मय] आश्चर्य ।
पिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना ।
पिह वि [पृथक्] भिन्न ।
पिहं अ [पृथक्] अलग ।
पिहंड पुं [दे] वाद्य-विशेष । वि. विवर्ण ।
पिहड देखो पिढर ।
पिहण न [पिधान] ढक्कन । आच्छादन ।
पिहय देखो पिह = पृथक् ।
पिहा सक [पि + धा] ढकना, आच्छादन करना । बन्द करना ।
पिहाण देखो पिहण ।
पिहाणिआ स्त्री [पिधानिका] ढकनी ।
पिहिअ वि [पिहित] ढका हुआ । बन्द किया हुआ । °ासव वि [°ास्रव] जिसने आस्रव को रोका हो । पुं. एक जैन मुनि का नाम ।
पिहिण देखो पिहण ।
पिहिमि° (अप) स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती । °पाल पुं. राजा ।
पिहीकय वि [पृथक्कृत] अलग किया हुआ ।
पिहु वि [पृथु] विस्तीर्ण । पुं. एक राजा का नाम । °रोम पुं. मत्स्य ।
पिहु देखो पिह = पृथक् ।
पिहु° देखो पिहुय ।
पिहुंड न [पिहुण्ड] नगर-विशेष ।
पिहुण [दे] देखो पेहुण । °हत्थ पुं [°हस्त] मयूर-पिच्छ का पंखा ।
पिहुत्त देखो पुहुत्त ।
पिहुय पुंन [पृथुक] खाद्य-विशेष, चिउड़ा ।
पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण ।
पिहुल न [दे] मुँह से बजाया जाता तृण-वाद्य ।
पिहे देखो पिहा ।
पिहो अ [पृथक्] अलग ।
पिहोअर वि [दे] तनु, कृश, दुर्बल ।
पी सक. पान करना ।
पीअ पुं [पीत] पीला रंग । वि. पीत वर्ण-वाला । जिसका पान किया गया हो वह । जिसने पान किया हो वह ।
पीअ वि [प्रीत] प्रीति-युक्त । संतुष्ट ।
पीअर (अप) नीचे देखो ।
पीअल देखो पीअ = पीत ।
पीअसी स्त्री [प्रेयसी] प्रेम-पात्र स्त्री ।
पीइ पुं [दे] अश्व ।
पीइ, पीई° स्त्री [प्रीति] अनुराग । रावण की एक पत्नी । °कर पुंन. आठवाँ ग्रैवेयक-विमान । °गम न. महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान । °दाण न [°दान] हर्ष के कारण दिया जाता दान । °धम्मिय न [°धार्मिक] जैन मुनियों का एक कुल । °मण वि [°मनस्] प्रीति-युक्त चित्तवाला । पुं. महाशुक्र देवलोक का एक यान-विमान । °वद्धण पुं [°वर्धन] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम ।
पीईय पुं [दे] वृक्ष-विशेष, एक गुल्म ।
पीऊस न [पीयूष] अमृत ।
पीड सक [पीडय्] हैरान करना । अभिभूत करना, व्याकुल करना । दबाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीडयर वि [पीडकर] पीड़ाकारक ।

पीडरइ स्त्री [दे] चोर की स्त्री ।

पीडा स्त्री. पीड़न, हैरानी, वेदना । °कर वि. पीड़ा-कारक ।

पीढ पुंन [पीठ] आसन, पीढ़ा। व्रती का आसन । तल । पुं. एक जैन महर्षि । °बंध पुं [°बन्ध] ग्रन्थ की अवतरणिका, भूमिका । °मद्द, °मइअ पुंस्त्री [°मर्दक] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक का समीपवर्त्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य-विशेष । °सप्पि वि [°सर्पिन्] पंगु-विशेष ।

पीढ न [दे] ईख पेरने का यन्त्र । समूह, यूथ । पीठ ।

पीढरखंड न [पीठरखण्ड] नर्मदा तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ ।

पीढाणिय न [पीठानीक] अश्व-सेना ।

पीढिआ स्त्री [पीठिका] आसन-विशेष, मञ्च । देखो पेढिया ।

पीढी स्त्री [दे. पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ ।

पीण सक [पीनय्] पुष्ट करना ।

पीण सक [प्रीणय्] खुश करना ।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण ।

पीण वि [पीन] पुष्ट, मांसल, उपचित ।

पीणाइय वि [दे. पैनायिक] गर्व से निर्वृत्त ।

पीणाया स्त्री [दे. पीनाया] अहंकार ।

पीणिअ वि [प्रीणित] तोषित। उपचित, परिवृद्ध । पुं. ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त ।

पीणिम पुंस्त्री [पीनता] पुष्टता, मांसलता ।

पीरिपीरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।

पील सक [पीडय्] पीलना, पेरना, दबाना । पीड़ा करना, हैरान करना ।

पीला देखो पीडा ।

पीलावय वि [पीडक] पेरनेवाला। पुं. तेली, यन्त्र से तेल निकालनेवाला ।

पीलिम वि [पीडावत्] दाबवाला, दाबने से बना हुआ (वस्त्र आदि की आकृति) ।

पीलु पुं. पीलु का पेड़ । हाथी । न. दूध ।

पीलुअ पुं [दे. पीलुक] शावक, बच्चा ।

पीलुट्ठ वि [दे. प्लुष्ट] देखो पिलुट्ठ ।

पीवर वि. उपचित, पुष्ट। °गब्भा स्त्री [°गर्भा] भविष्य में प्रसव करनेवाली स्त्री ।

पीवल देखो पीअ = पीत ।

पीस सक [पिष्] पीसना ।

पीसण न [पेषण] दलना । वि. पीसनेवाला ।

पीसय वि [पेषक] पीसनेवाला ।

पीह सक [स्पृह्, प्र + ईह्] चाहना ।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पिलाई जाती एक वस्तु ।

°पु स्त्री [पुर्] शरीर ।

पुअ न [प्लुत] तिर्यग् गति । झाँपना, झम्प-गति । °जुद्ध न [°युद्ध] अधम युद्ध का एक प्रकार ।

पुअंड पुं [दे] तरुण ।

पुआइ वि. [दे] युवा । उन्मत्त । पुं. पिशाच ।

पुआइणी वि. [दे] पिशाच-गृहीत स्त्री, उन्मत्त स्त्री । कुलटा ।

पुआव सक [प्लावय्] ले जाना ।

पुं° पुं [पुंस्] पुरुष, मर्द ।

पुंख पुं [पुङ्ख] बाण का अग्र भाग । न. देव-विमान-विशेष ।

पुंखणग न [दे प्रोङ्खणक] चुमाना, विवाह की एक रीति ।

पुंगल पुं [दे] श्रेष्ठ ।

पुंगव वि [पुङ्गव] उत्तम ।

पुंछ सक [प्र + उञ्छ्] पोंछना ।

पुंछ पुंन [पुच्छ] पूँछ ।

पुंछण न [प्रोञ्छन] मार्जन । रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंछणी स्त्री [प्रोञ्छनी] पोंछने का एक छोटा तृणमय उपकरण।

पुंज सक [पुञ्ज्, पुञ्जय्] इकट्ठा करना। फैलाना, विस्तार करना।

पुंज पुंन [पुञ्ज] ढेर, राशि।

पुंजय पुंन [दे] कतवार।

पुंजाय वि [दे] पिण्डाकार किया हुआ।

पुंड पुं [पुण्ड्र] विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग। इक्षु-विशेष। वि. पुण्ड्र-देशीय। धवल। पुंन. तिलक। देव-विमान-विशेष। °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष। देखो पोंड।

पुंड्इअ वि [दे] पिण्डाकार किया हुआ।

पुंडरिक देखो पुंडरीअ।

पुंडरिगिणी स्त्री [पुण्डरीकिणी] पुष्कलावती विजय की एक नगरी।

पुंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक, पौण्डरीक।

पुंडरीअ पुं [पुण्डरीक] ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र। एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र। व्याघ्र, शार्दूल। पुंन. तप-विशेष। श्वेत पद्म। कमल। देव-विमान। वि. सफेद। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान। °दह, °द्दह पुं [°द्रह] शिखरी पर्वत पर एक महाह्रद।

पुंडरीअ वि [पौण्डरीक] श्वेत-पद्म-सम्बन्धी। प्रधान। कान्त, श्रेष्ठ। न. सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन। देखो पोंडरीग।

पुंडरीया स्त्री [पुण्डरीका] देखो पोंडरी।

पुंडे अ [दे] जाओ।

पुंढ देखो पुंड।

पुंढ पुं [दे] गर्त, गड्हा, गढा।

पुंनाग पुं [पुन्नाग] वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुलाक, सुलतान चम्पक, पाटल का गाछ। श्रेष्ठ पुरुष। देखो पुन्नाम।

पुंपुअ पुं [दे] संगम।

पुंभ पुंन [दे] नीरस, दाड़िम का छिलका।

पुंवउ पुंन [पुंवचस्] पुंलिंग शब्द।

पुंवेय पुं [पुंवेद] पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष। उसका कारण-भूत कर्म।

पुंस सक [पुंस्, मृज्] मार्जन करना, पोंछना।

पुंस° देखो पुं°। °कोइल, °कोइलग पुं [°कोकिल] मरदाना कोयल, पिक।

पुंसद्द पुं [पुंशब्द] 'पुरुष' ऐसा नाम।

पुंसली स्त्री [पुंश्चली] कुलटा, व्यभिचारिणी।

पुंसिअ वि [पुंसित] पोंछा हुआ।

पुक्क, पुक्कर सक [पूत् + कृ] पुकारना, हाँकना, आह्वान करना।

पुक्कल देखो पुक्खल।

पुक्का स्त्री. देखो पुक्कार = पूत्कार।

पुक्कार देखो पुक्कर।

पुक्खर देखो पोक्खर = पुष्कर। °कण्णिया स्त्री [°कर्णिका] पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग। °क्ख पुं [°ाक्ष] विष्णु, श्रीकृष्ण। काश्मीर का एक राजा। °गय न [°गत] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष। °द्ध न [°ार्ध] पुष्करवर नामक द्वीप का आधा हिस्सा। °वर पुं. द्वीप-विशेष। °संवट्टग देखो पुक्खल-संवट्टय। °ावत्त देखो पुक्खलावट्टय।

पुक्खरिणी देखो पोक्खरिणी।

पुक्खरोअ, पुक्खरोद पुं [पुष्करोद] समुद्र-विशेष।

पुक्खल पुं [पुष्कर] एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम ओषधि है। पद्म, कमल। पद्म-केसर। °विभंग न [°विभङ्ग] पद्म-कन्द। °संवट्ट पुं [°संवर्त] मेघ-विशेष, जिसके बरसने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है। देखो पुक्खर।

पुक्खल पुं [पुष्कल] एक विजय, प्रदेश। अनार्य देश। पुंस्त्री. उस देश में उत्पन्न, रहने-वाला। वि. अत्यन्त। सम्पूर्ण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुक्खलच्छिभग } पुंन [दे] जल में होने-
पुच्छलच्छिभय } वाली वनस्पति। देखो पोक्खलच्छिलय।

पुक्खलावई स्त्री [पुष्करावती, पुष्कलावती] महाविदेह वर्ष का विजय—प्रान्त। °कूड पुंन [°कूट] एक-शैल पर्वत का शिखर।

पुक्खलावट्टय पुं [पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक] मेघ-विशेष।

पुक्खलावत्त पुं [पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त] महाविदेह का एक विजय—प्रान्त। °कूड पुं [°कूट] एकशैल पर्वत का शिखर।

पुगारिया स्त्री [दे] वस्त्रादि खादक जन्तु-विशेष।

पुग्ग पुंन [दे] वाद्य-विशेष।

पुग्गल पुं [पुद्गल] एक वृक्ष। न. एक फल। मांस।

पुग्गल देखो पोग्गल। °परट्ट, °परावत्त पुं [°परावर्त] देखो पोग्गल° परिअट्ट।

पुच्चड देखो पोच्चड।

पुच्छ सक [प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना।

पुच्छ देखो पुंछ = प्र + उञ्छ्।

पुच्छ देखो पुंछ = पुच्छ।

पुच्छअ } वि [प्रच्छक] पूछनेवाला, प्रश्न-
पुच्छग } कर्ता।

पुच्छणी स्त्री [प्रच्छनी] प्रश्न की भाषा।

पुच्छल (अप) देखो पुट्ठ = पृष्ट।

पुच्छा स्त्री [पृच्छा] प्रश्न।

पुछल देखो पुच्छल।

पुज्ज सक [पूजय्] पूजना, आदर करना।

पुज्ज देखो पूज = पूजय्।

पुज्जा स्त्री [पूजा] पूजा, अर्चा।

पुट्ट सक [प्र + उञ्छ्] पोंछना।

पुट्ट न [दे] पेट।

पुट्टल पुंन [दे] गट्ठर, गाँठ।

पुट्टलिया स्त्री [दे] छोटी गठरी, पोटली।

पुट्टिल पुं [पोट्टिल] भगवान् महावीर का शिष्य, जो भविष्य में तीर्थंकर होनेवाला है। अनुत्तर-देवलोकगामी जैन महर्षि।

पुट्ट वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ। न. स्पर्श।

पुट्ठ वि [पृष्ट] पूछा हुआ। न. प्रश्न। °लाभिय वि [°लाभिक] अभिग्रह-विशेष-वाला (मुनि)। °सेणियापरिकम्म पुंन [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक विषय।

पुट्ठ वि [पुष्ट] उपचित।

पुट्ठ देखो पिट्ठ = पृष्ठ।

पुट्ठव वि [स्पृष्टवत्] जिसने स्पर्श किया हो वह।

पुट्ठवई देखो पोट्ठवई।

पुट्ठवया स्त्री [प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष।

पुट्ठि स्त्री [पुष्टि] पोषण, उपचय। अहिंसा, दया। °म वि [°मत्] पुष्टिवाला। पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य।

पुट्ठि देखो पिट्ठि = पृष्ठ।

पुट्ठि स्त्री [पृष्टि] पृच्छा, प्रश्न। °य वि [°ज] प्रश्न-जनित।

पुट्ठि स्त्री [स्पृष्टि] स्पर्श। °य वि [°ज] स्पर्श-जनित।

पुट्ठिया स्त्री [पृष्टिका] प्रश्न से होनेवाली क्रिया – कर्मबन्ध।

पुट्ठिया स्त्री [स्पृष्टिका] स्पर्श से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध।

पुट्ठिल देखो पोट्टिल।

पुट्ठीया स्त्री [स्पृष्टीया] देखो पुट्ठिया = स्पृष्टिका।

पुट्ठीया स्त्री [पृष्टीया] पृच्छा से होनेवाली क्रिया — कर्मबन्ध।

पुड पुं [पुट] परिमाण-विशेष। पुटपरिमित वस्तु।

पुड पुंन [पुट] मिथः सम्बन्ध, परस्पर जोड़ान। खाल, ढोल आदि का चमड़ा। सम्बद्ध दल-द्वय। ओषधि पकाने का पात्र। दोना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आच्छादन। कमल। °भेयण न [°भेदन] नगर। °वाय पुं [°पाक] पुट-पात्रों से ओषधि का पाक-विशेष। पाक-निष्पन्न औषध।

पुड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र।

पुडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, एकत्रित।

पुडइणी स्त्री [दे. पुटकिनी] कमलिनी।

पुडग पुंन [पुटक] देखो पुट = पुट।

पुडपुडी स्त्री [दे] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज।

पुडम देखो पुढम।

पुडय देखो पुडग।

पुडिंग न [दे] मुँह। बिन्दु।

पुडिया स्त्री [पुटिका] पुड़ी, पुड़िया।

पुड्ड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र।

पुढं देखो पिहं।

पुढम वि [प्रथम] पहला।

पुढवि देखो पुढवी। °काइय, °क्काइय वि [°कायिक] पृथिवी शरीरवाला। °क्काय देखो पुढवी-काय।

पुढवी स्त्री [पृथिवी] धरती। काठिन्यादि गुणवाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष - मृत्तिका, पाषाण, धातु आदि। पृथिवीकाय का जीव। ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी। एक दिक्कुमारी देवी। भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता। °काइय देखो पुढवि-काइय। °काय वि. पृथिवी शरीरवाला (जीव)। °वइ पुं [°पति] राजा। °सत्थ न [°शस्त्र] पृथिवी रूप शस्त्र। पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि। देखो पुहई, पुहवी।

पुढीभूय वि [पृथग्भूत] जो अलग हुआ हो।

पुढुम वि [प्रथम] पहला, आद्य।

पुढो अ [पृथग्] अलग, भिन्न। °छंद वि [°छन्द] विभिन्न अभिप्रायवाला। °जण पुं [°जन] साधारण लोक। °जिय पुं [°जीव] विभिन्न प्राणी। °विमाय, °वेमाय वि [°विमात्र] बहुविध।

पुढोजग वि [दे. पृथग्जक] पृथग्भूत, भिन्न व्यवस्थित।

पुढोवम वि [पृथिव्युपम] पृथिवी की तरह सब सहन करनेवाला।

पुढोसिय वि [पृथिवीश्रित] पृथिवी से आश्रित।

पुण सक [पू] पवित्र करना। धान्य आदि को तुषरहित करना, साफ करना।

पुण अ [पुनर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— भेद, विशेष। अवधारण, निश्चय। अधिकार, प्रस्ताव। द्वितीय बार, बारान्तर। पक्षान्तर। समुच्चय। पादपूर्ति में प्रयोग। °करण न. फिर से बनाना। वि. जिसको फिर से बनावट की जाय। °ण्णव वि [°नव] फिर से नया बना, ताजा। °पुण अ [°पुनर्] फिर-फिर। °पुणक्करण न [°पुनःकरण] बारम्बार निर्माण। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, जन्म। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी। °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुनः आवर्त्तन। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ। °वि अ [°अपि] फिर भी। °व्वसु पुं [°वसु] नक्षत्र-विशेष। आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम।

पुण (अप) देखो पुण्ण = पुण्य। °मंत वि [°मत्] पुण्यशाली।

पुणअ सक [दृश्] देखना।

पुणइ पुं [दे] चाण्डाल।

पुणण वि [पवन] पवित्र करनेवाला।

पुणरुत्त, पुणरुत्तं } अ. कृत-करण, बारम्बार, फिर-फिर।

पुणा, पुणाइ, पुणाइं } अ. देखो पुण = पुनर्।

पुणु (अप) देखो पुण = पुनर्।

पुणो देखो पुण = पुनर्।

पुणोत्त देखो पुण-रुत्त, पुणरुत्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुणोल्ल सक [प्र + नोदय्] प्रेरणा करना। अत्यन्त दूर करना।

पुण्ण पुंन [पुण्य] शुभ कर्म, सुकृत। दो उपवास, बेला। वि. पवित्र। °कलसा स्त्री [°कलशा] लाट देश का एक गाँव। °घण पुं [°घन] विद्याधरों का एक राजा। °मंत, °मंत्त वि [°वत्] पुण्यवाला, भाग्यवान्।

पुण्ण वि [पूर्ण] सम्पूर्ण, भरपूर, पूरा। पुं. द्वीपकुमार देवों का दाक्षिणात्य इन्द्र। इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव। पक्ष की पाँचवीं, दसवीं और पनरहवीं तिथि। पुंन. शिखर-विशेष। °कलस पुं [°कलश] सम्पूर्ण घट। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष का भावी जिन-देव। °चंद पुं [°चन्द्र] सम्पूर्ण चन्द्रमा। विद्याधर वंश का एक राजा। °प्पभ पुं [°प्रभ] इक्षुवर द्वीप का अधिपति। °भद्द पुं [°भद्र] एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी। यक्ष-निकाय का एक इन्द्र। पुंन. अनेक कूट-शिखरों का नाम। यक्ष का चैत्य-विशेष। °मासी स्त्री. पूर्णिमा तिथि। °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी।

पुण्णमासिणी स्त्री [पौर्णमासी] तिथि-विशेष।

पुण्णवत्त न [दे] आनन्द से हृत वस्त्र।

पुण्णा स्त्री [पूर्णा] पक्ष की ५, १० और १५वीं तिथि। पूर्णभद्र और मणिभद्र इन्द्र की एक अग्र-महिषी।

पुण्णाग, पुण्णाम } देखो पुन्नाग।

पुण्णाली स्त्री [दे] असती, कुलटा।

पुण्णाह पुंन [पुण्याह] पुण्य दिन, शुभ दिवस। वाद्य-विशेष।

पुण्णिमसी स्त्री [पूर्णमासी] पूर्णिमा।

पुण्णिमा स्त्री [पूर्णिमा] तिथि-विशेष। °यंद पुं [°चन्द्र] पूर्णिमा चन्द्र।

पुण्णिमासिणी देखो पुण्णमासिणी।

पुत्त पुं [पुत्र] लड़का। °वई स्त्री [°वती] लड़कावाली स्त्री।

पुत्तंजीवय पुं [पुत्रंजीवक] पुतजीया, जियापोता का पेड़। न. जियापोता का बीज।

पुत्तरे पुंस्त्री [दे] योनि, उत्पत्ति-स्थान।

पुत्तलय पुं [पुत्रक] पूतला।

पुत्तलिया, पुत्तली } स्त्री [पुत्रिका] शालभञ्जिका, पूतली।

पुत्तह देखो पुत्त।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [पौत्रानुपुत्रिक] पुत्र-पौत्रादि के योग्य।

पुत्तिआ स्त्री [पुत्रिका] पुत्री। पूतली।

पुत्ती स्त्री [पुत्री] लड़की।

पुत्ती स्त्री [पोती] वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका। साड़ी, कटी-वस्त्र। देखो पोत्ती।

पुत्थ वि [दे] मृदु, कोमल।

पुत्थ, पुत्थय } पुंन [पुस्त, °क] लेप्यादि कर्म। पोथी, किताब। देखो पोत्थ।

पुथवी देखो पुढवी।

पुथुणी, पुथुवी } (पै) देखो पुढवी। °नाथ (पै) पुं. राजा।

पुध देखो पिद = पृथक्।

पुधं देखो पिधं।

पुधम, पुधुम } (पै) देखो पुढम, पुढुम।

पुन्न देखो पुण्ण = पुन्य। °कंखिअ वि [°काङ्क्षित, °काङ्क्षिन्] पुण्य की चाहवाला। °कलस पुं [°कलश] एक राजा। °जसा स्त्री [°यशस्] एक स्त्री। °पत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] जैन मुनि-शाखा। °पिवासय वि [°पिपासक] पुण्य की चाहवाला। °भागि वि [°भागिन्] पुण्य-शाली। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक ब्राह्मण। °सार पुं. एक श्रेष्ठी।

पुन्न देखो पुण्ण = पूर्ण। °तल्ल पुं [°तल]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन मुनि-गच्छ । °पाय वि [°प्राय] करीब-करीब सम्पूर्ण । °भद्द पुं [°भद्र] यक्ष-विशेष । यक्ष-निकाय एक इन्द्र । अन्तकृद् मुनि । जैन मुनि, आर्य श्री सम्भूतविजय का शिष्य ।

पुन्नयण पुं [पुण्यजन] यक्ष, देव-जाति ।

पुन्नाग
पुन्नाम } देखो पुंनाग । न. पुन्नाग का फूल ।
पुन्नाय

पुन्नालिया [दे] देखो पुण्णाली ।

पुप्पुअ वि [दे] पीन, पुष्ट, उपचित ।

पुप्फ न [पुष्प] कुसुम । एक विमानावास, देव-विमान । स्त्री का रज । विकास । आँख का रोग । कुबेर का विमान । °इरि पुं [°गिरि] एक पर्वत । °कंत न [°कान्त] देव-विमान । °करंडय पुं [°करण्डक] हस्तिशीर्ष नगर का उद्यान । °केउ पुं [°केतु] ऐरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर । ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष । °ग न [°क] मूल भाग । पुष्प । देखो नीचे °य । °चूला स्त्री. भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या । महासती, अग्निकाचार्य की शिष्या । सुबाहुकुमार की मुख्य पत्नी । °चूलिया स्त्री [°चूलिका] जैन ग्रन्थ । °च्चणिया स्त्री [°ार्चनिका] पुष्पों से पूजा । °च्चिणिया स्त्री [°चायिनी] फूल बिननेवाली । °छज्जिया स्त्री [°छादिका] पुष्प-पात्र । °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान । °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा । °दंत पुं [°दन्त] नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ । ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव । देव-विशेष । °दंती स्त्री [°दन्ती] दमयन्ती की माता, एक रानी । °नालिया स्त्री [°नालिका] पुष्प का बेंट—डंठल । °निज्जास पुं [°निर्यास] पुष्प-रस । °पुर न. पाटलिपुत्र । °पूरय पुं [°पूरक] पुष्प की रचना-विशेष । °प्पभ न [°प्रभ] देव-विमान । °बलि पुं. उपचार, पुष्प-पूजा । °बाण पुं. कामदेव । °भद्द स्त्रीन [°भद्र] पटना शहर । °मंत वि [°वत्] पुष्पवाला । °माल न. वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का नगर । °माला स्त्री [°माल] ऊर्ध्व लोक में रहने-वाली दिक्कुमारी देवी । °य पुं [°क] फेन । न. ईशानेन्द्र का पारियानिक विमान, देव-विमान । फूल । ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण । देखो ऊपर °ग । °लाई, °लावी स्त्री. फूल बिननेवाली । °लेस न [°लेश्य] देव-विमान । °वई स्त्री [°वती] ऋतुमती स्त्री । सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी । बीसवें जिनदेव की प्रमुख साध्वी । चैत्य-विशेष । °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान । °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान । °सिद्ध न. देव-विमान । °सुय पुं [°शुक] व्यक्तिवाचक नाम । °ावत्त न [°ावर्त्त] देव-विमान ।

पुप्फस न [दे] फेफसा ।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी ।

पुप्फिआ स्त्री [दे] देखो पुप्फा ।

पुप्फिआ स्त्री [पुष्पिता] जैन आगमग्रन्थ ।

पुप्फिम पुंस्त्री [पुष्पत्व] पुष्पपन ।

पुप्फी [दे] देखो पुप्फा ।

पुप्फुआ स्त्री [दे] करीष (गोयठा) का अग्नि ।

पुप्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] विमान । °वडिंसग न [°ावतंसक] देव-विमान ।

पुप्फुत्तरा
पुप्फोत्तरा } स्त्री [पुष्पोत्तरा] शक्कर की एक जाति ।

पुप्फोदय न [पुष्पोदक] पुष्प-रस से मिश्रित जल ।

पुप्फोवय
पुप्फोवा° } वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त करनेवाला, फूलनेवाला (वृक्ष) ।

पुम पुं [पुंस्] नर । पुरुष-वेद । °आणमणी स्त्री [°आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देनेवाली भाषा । °पन्नावणी स्त्री [प्रज्ञापनी] पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करनेवाली भाषा । °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द का उच्चा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रण ।

पुम्म (अप) सक [दृश्] देखना ।

पुयली स्त्री [दे] कमर के नीचे का भाग ।

पुर (अप) देखो पूर = पूरय् ।

पुर न. नगर । शरीर । °चंद पुं [°चन्द्र] विद्याधर वंश का राजा । °भेयण वि [°भेदन] नगर का भेदक । °वइ पुं [°पति] नगर का अधिपति । °वर न श्रेष्ठ नगर । °वाल पुं [°पाल] नगर-रक्षक, राजा ।

पुर देखो पुरं ।

पुरएअ } देखो पुरदेव ।
पुरएव

पुरओ अ [पुरतस्] आगे । पहले, पूर्व में ।

पुरं अ [पुरस्] पहले पूर्व में । समक्ष । °गम वि. अग्रगामी, पुरोवर्त्ती । देखो पुरे, पुरो ।

पुरंजय पुं [पुरञ्जय] विद्याधर राजा । °पुर न एक विद्याधर-नगर ।

पुरंदर पुं [पुरन्दर] देवराज इन्द्र । गन्ध-द्रव्य । चव्य का पेड़ । एक राजर्षि । मन्दर-कुञ्ज नगर का विद्याधर राजा । °जसा स्त्री [°यशस्] राज-कन्या । °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व दिशा ।

पुरंधि } स्त्री [पुरन्ध्री] बहु कुटुम्बवाली
पुरंधी } स्त्री । पति और पुत्रवाली स्त्री । अनेक काल पहले व्याही हुई स्त्री ।

पुरक्कड देखो पुरक्खड ।

पुरक्कार पुं [पुरस्कार] आगे करना, अग्रतः स्थापन । सम्मान ।

पुरक्खड वि [पुरस्कृत] आगे किया हुआ । पुरोवर्त्ती, आगामी ।

पुरच्छा देखो पुरत्था ।

पुरच्छिम देखो पुरत्थिम । °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण ।

पुरच्छिमा देखो पुरत्थिमा ।

पुरत्थ वि [पुरःस्थ] अग्रवर्त्ती, पुरस्सर ।

पुरत्थ } अ [पुरस्तात्] पहले, काल या
पुरत्थओ } देश की अपेक्षा से आगे ।
पुरत्था } पूर्वदिशा ।

पुरत्थिम वि [पौरस्त्य, पूर्व] पूर्व की तरफ का । न. पूर्व दिशा ।

पुरत्थिमा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा ।

पुरदेव पुं [पुरादेव] भगवान् आदिनाथ ।

पुरव देखो पुव्व ।

पुरस्सर वि. अग्रगामी ।

पुरा स्त्री [पुर्] नगरी ।

पुरा देखो पुरिल्ला = पुरा । °इय, °कय वि [°कृत] पूर्व काल में किया हुआ । °भव पु. पूर्व जन्म ।

पुराअण वि [पुरातन] प्राचीन ।

पुराकर सक [पुरा + कृ] आगे करना ।

पुराण वि. पुराना । न. व्यासादि मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र । °पुरिस पुं [°पुरुष] श्रीकृष्ण ।

पुरिकोबेर पुं. ब. [पुरीकौबेर] देश-विशेष ।

पुरित्थिमा देखो पुरत्थिमा ।

पुरिम देखो पुव्व = पूर्व । °ड्ढ पुंन [°र्ध] पूर्वार्ध । प्रत्याख्यान-विशेष । निर्विकृतिक तप । °ड्ढिय वि [°र्धिक] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करनेवाला ।

पुरिम वि [पौरस्त्य] अग्र-भव, अग्रेतन ।

पुरिम पुं [दे] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया ।

पुरिमताल न. नगर-विशेष ।

पुरिल पुं [दे] दैत्य, दानव ।

पुरिल्ल वि [पुरातन] पुरा-भव, पूर्ववर्त्ती ।

पुरिल्ल वि [पौरस्त्य] पुरो-भव, पुरो-वर्त्ती, अग्र-गामी ।

पुरिल्ल वि [पौर] पुर-भव, नागरिक ।

पुरिल्ल वि [दे] श्रेष्ठ ।

पुरिल्ल देखो पुरिल्ला = पुरा ।

पुरिल्लदेव पुं [दे] असुर ।

पुरिल्लपहाणा स्त्री [दे] साँप की दाढ़ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिल्ला अ [पुरा] निरन्तर क्रिया-करण। प्राचीन। पुराने समय में। भावी। निकट, सन्निहित। इतिहास, पुरावृत्त।

पुरिल्ला अ [पुरस्] आगे, अग्रतः।

पुरिस पुंन[पुरुष]मर्द। जीव। ईश्वर। शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक। पुरुष-शरीर। °कार, °क्कार, °गार पुं [°कार] पुरुषपन, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न। पुरुषत्व का अभिमान। °जाय पुं [°जात] पुरुष। पुरुष-जातीय। °जुग न [°युग] क्रम-स्थित पुरुष। °जेट्ठ पुं [°ज्येष्ठ] प्रशस्त पुरुष। °त्त, °त्तण न [°त्व] पौरुष। °त्थ पुं [°ार्थ] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप प्रयोजन। °पुंडरीअ पुं [°पुण्डरीक] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ वासुदेव। °प्पणीय वि [°प्रणीत] ईश्वर-निर्मित। जीव-रचित। °मेह पुं [°मेध] जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ। °यार देखो °कार। °लक्खण न [°लक्षण] पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला। °लिंग न [°लिङ्ग] पुरुष-चिह्न। °लिंगसिद्ध पुं [°लिङ्गसिद्ध] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द। °वर पुं.श्रेष्ठ पुरुष। °वरगंध-हत्थि पुं [°वरगन्धहस्तिन्] पुरुषों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य। जिन-देव। °वरपुंडरीय पुं [°वरपुण्डरीक] पुरुषों में श्रेष्ठ पद्म के समान। जिन-देव। °विजय पुं [°विचय, °विजय] ज्ञान-विशेष। °वेय पुं [°वेद] स्त्री-सम्भोग की इच्छा होती है वह कर्म। स्त्री-भोग की अभिलाषा। °सिह, °सीह पुं [°सिंह] पुरुषों में सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष। पुं. जिनदेव। भगवान् धर्मनाथ का प्रथम श्रावक। इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव। °सेण पुं [°सेन] भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मोक्ष पानेवाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वासुदेव के अन्यतम पुत्र थे। भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न होनेवाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे। °दाणिअ, °दाणीय पुं [°ादानीय] उपा-देय पुरुष, आप्त पुरुष।

पुरिसकारिआ स्त्री [पुरुषकारिका, °ता] पुरुषार्थ, प्रयत्न।

पुरिसाअ अक [पुरुषाय्] विपरीत मैथुन करना।

पुरिसुत्तम } पुं [पुरुषोत्तम] उत्तम पुरुष। पुरिसोत्तम } जिन-देव। चतुर्थ वासुदेव। भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक। श्रीकृष्ण।

पुरी स्त्री. नगरी। °नाह पुं [°नाथ] नगरी का अधिपति, राजा।

पुरीस पुंन [पुरीष] विष्ठा।

पुरु पुं. एक राजा। वि. प्रचुर।

पुरुपुरिआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा।

पुरुम देखो पुरिम।

पुरुव } देखो पुव्व = पूर्व। पुरुव्व }

पुरुस (शौ) देखो पुरिस।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो पुरिसोत्तम।

पुरुहूअ पुं [दे] घूक, उल्लू।

पुरुहूअ पुं [पुरुहूत] इन्द्र।

पुरुरव पुं [पुरूरवस्] चन्द्र-वंशीय राजा।

पुरे देखो पुरं। °कड वि [°कृत] आगे या पूर्व में किया हुआ। °कम्म न [°कर्मन्] पहले करने का काम या क्रिया। °क्कार पुं [°कार] सम्मान। °क्खड देखो °कड। °वाय पुं [°वात] सस्नेह वायु। पूर्व दिशा का पवन। °संखडि स्त्री [दे. संस्कृति] पहले ही किया जाता भोजनोत्सव। °संथुय वि [°संस्तुत] पूर्व-परिचित। स्व-पक्ष का सगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरेस पुं [पुरेश] नगर-स्वामी ।

पुरो देखो पुरं । °अ, °ग वि [°ग] अग्र-गामी । °गम वि. वही अर्थ । °भाइ वि [°भागिन्] दोष को छोड़ कर गुण-मात्र को ग्रहण करने वाला ।

पुरोकर सक [पुरस् + कृ] आगे करना । स्वीकार करना । सम्मान करना ।

पुरोत्तमपुर न. एक विद्याधर नगर का नाम ।

पुरोवग पुं [पुरोपक] वृक्ष-विशेष ।

पुरोह पुं [पुरोधस्] पुरोहित ।

पुरोहड वि [दे] विषम, असम । पुंन आवृत भूमि का वास्तु । अग्रद्वार, दरवाजा का अग्र-भाग । बाड़ा ।

पुरोहिअ पुं [पुरोहित] होम आदि से शान्ति-कर्म करनेवाला ब्राह्मण ।

पुल पुं [दे पुल] छोटा फोड़ा, फुनसी ।

पुल वि. समुच्छ्रित, उन्नत ।

पुल अक [पुल्] उन्नत होना ।

पुल } सक [दृश्] देखना ।
पुलअ }

पुलअ पुं [पुलक] रोमाञ्च । रत्न-विशेष । मणि की एक जाति । ग्राह का एक भेद । °कंड पुंन [°काण्ड] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड ।

पुलअण वि [दर्शन] देखनेवाला प्रेक्षक ।

पुलआअ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना, उल्लास पाना ।

पुलइज्ज अक [पुलकाय्] रोमाञ्चित होना ।

पुलइल्ल वि [पुलकिन्] रोमाञ्च-युक्त ।

पुलंधअ पुं [दे] भौंरा ।

पुलंपुल न [दे] निरन्तर ।

पुलक } देखो पुलअ = पुलक ।
पुलग }

पुलय पुंन [पुलक] कीट-विशेष ।

पुलाग } पुंन [पुलाक] असार अन्न । चना
पुलाय } आदि शुष्क अन्न । लहसुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य । दुष्ट रसवाला द्रव्य । पुं. शिथि-लाचारी साधुओं का एक भेद ।

पुलासिअ पुं [दे] अग्नि-कण ।

पुलिंद पुं [पुलिन्द] अनार्य देश-विशेष । पुंस्त्री. उस देश में रहनेवाला मनुष्य ।

पुलिण न [पुलिन] तट, किनारा । लगातार बाईस दिनों का उपवास ।

पुलिय न [पुलित] गति-विशेष ।

पुलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध ।

पुलोअ सक [दृश्, प्र + लोक्] देखना ।

पुलोम पुं [पुलोमन्] दैत्य-विशेष । °तणया स्त्री [°तनया] शची ।

पुलोमी स्त्री [पौलोमी] इन्द्राणी ।

पुलोव देखो पुलोअ ।

पुलोअ पुं [प्लोष] दाह दहन ।

पुल्ल [दे] देखो पोल्ल ।

पुल्लि पुंस्त्री [दे] व्याघ्र । सिंह ।

पुव } सक [प्लु] गति करना, चलना ।
पुव्व }

पुव्व° देखो पुण = पू ।

पुव्व वि [पूर्व] दिशा, अपेक्षा से पहले का, आद्य । पुरातन । समस्त । ज्येष्ठ भ्राता । पुंन. चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो उतने वर्ष । बारहवें अंग-ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, परिच्छेद । द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म । पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान । हेतु । °कालिय वि [°कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से सम्बन्ध रखनेवाला । °गय न [°गत] बारहवें अंग का विभाग-विशेष । °ण्ह पुं [°ाह्‌ण] सुबह से दो पहर तक का समय । 'पुरिमड्ढ' तप । °तव पुंन [°तपस्] वीतराग अवस्था के पहले का तप । °दारिअ वि [°द्वारिक] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र) । °द्ध पुंन [°ार्ध] पहला आधा । °धर वि. पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान । °पय न [°पद] उत्सर्ग-स्थान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°पुट्ठवया स्त्री [°प्रोष्ठपदा] नक्षत्र । °पुरिस पुं [°पुरुष] पूर्वज । °प्पओग पुं [°प्रयोग] पहले की क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न । °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] नक्षत्र । °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र । °भव पुं. अतीत जन्म । °भविय वि [°भविक] पूर्व-जन्म-सम्बन्धी । °य पुं [°ज] पूर्व पुरुष । °रत्त पुं [°रात्र] रात्रि का पूर्व भाग । °व न [°वत्] अनुमान प्रमाण का एक भेद । °विदेह पुं. महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा । °समास पुंन. एक से ज्यादा पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान । °सुय न [°श्रुत] पूर्व का ज्ञान । °सूरि पुं. पूर्वाचार्य । °हर देखो °धर । °ाणुपुव्वी स्त्री [°ानुपूर्वी] परिपाटी । °ण्ह देखो °ण्ह । °ाफग्गुणी देखो °फग्गुणी । °ाभद्दवया देखो °भद्दवया । °ासाढा स्त्री [°ाषाढा] नक्षत्र ।

पुव्वंग पुंन [पूर्वाङ्ग] चौरासी लाख वर्ष । पक्ष का पहला दिन ।

पुव्वंग वि [दे] मुण्डित ।

पुव्वा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा ।

पुव्वाड वि [दे] मांसल, पुष्ट ।

पुव्वामेव अ [पूर्वमेव] पहले ही ।

पुव्वावईणय न [पूर्वावकीर्णक] नगर-विशेष ।

पुव्वि वि [पूर्विन्] पूर्व-शास्त्र का जानकार ।

पुव्वि } क्रिवि [पूर्वम्] पहिले, पूर्व में । °संथव
पुव्विं } पुं [°संस्तव] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना ।

पुव्विम पुंस्त्री [पूर्वत्व] पहिलापन, प्रथमता ।

पुव्वुत्त वि [पूर्वोक्त] पहले कहा हुआ ।

पुव्वुत्तरा स्त्री [पूर्वोत्तरा] ईशान कोण ।

पुस सक [प्र+उञ्छ्, मृज्] शुद्ध करना, पोंछना ।

पुस देखो पुस्स ।

पुस पुं [पौष] पौष मास ।

पुसिअ पुं [पृषत] मृग-विशेष ।

पुस्स पुं [पुष्य] कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र । रेवती नक्षत्र का अधिपति देव । ऋषि-विशेष । °माणअ, °माणव पुं [°मानव] मागध, भाट-चारण आदि । देखो पूस = पुष्य ।

पुस्सदेवय न [पुष्यदैवत] जैनेतर शास्त्र ।

पुस्सायण न [पुष्यायण] गोत्र-विशेष ।

पुह } देखो पिह = पृथक् । °ब्भूय वि
पुहं } [°भूत] अलग, जो जुदा हो ।

पुहइ° } स्त्री [पृथिवी] तृतीय वासुदेव की
पुहई } माता । एक नगरी । भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता । देखो पुढवी, पुहवी । °धर पुं., °नाह पुं [°नाथ], °पहु पुं [°प्रभु], °पाल पुं. राजा । °राय पुं [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का राजा । °वइ पुं [°पति] । °वाल [°पाल] राजा ।

पुहईसर पुं [पृथिवीश्वर] राजा ।

पुहत्त न [पृथक्त्व] पार्थक्य । विस्तार । बहुत्व । वि भिन्न । °वियक्क न [°वितर्क] शुक्ल ध्यान का भेद । देखो पुहुत्त, पोहत्त ।

पुहत्तिय देखो पोहत्तिय ।

पुहय देखो पिह = पृथक् ।

पुहवि° } देखो पुढवी, पुहई । भगवान्
पुहवी } श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिविका । छन्द का नाम । °चंद पुं [°चन्द्र] राजा । °पाल पुं. राजकुमार । देखो पुहई-पाल । °पुर न. एक नगर ।

पुहवीस पुं [पृथिवीश] राजा ।

पुहु वि [पृथु] विशाल, विस्तीर्ण ।

पुहुत्त न [पृथक्त्व] दो से नव तक की संख्या । देखो पुहत्त ।

पुहुवी देखो पुहु-ई ।

पू° देखो पुं° । °सुअ पुं [°शुक] तोता ।

पूअ सक [पूजय्] पूजा करना ।

पूअ न [दे] दही ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूअ पुं [पूग] सुपारी का गाछ। न. सुपारी। देखो पूग। °प्फली, °फली स्त्री [°फली] सुपारी का पेड़।

पूअ न [पूर्त] तालाब, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य।

पूअ वि [पूत] पवित्र। न. लगातार छः दिनों का उपवास। वि. सूप आदि से साफ किया हुआ। छाना हुआ।

पूअ न [पूय] पीब, दुर्गन्ध रक्त।

पूअणा } स्त्री [पूतना] दुष्ट व्यन्तरी,
पूअणी } डाकिनी। भेड़ी।

पूअय वि [पूजक] पूजा करनेवाला।

पूअर देखो पोर = पूतर।

पूअल } पुं [पूप] पूआ, खाद्य-विशेष।
पूअलिया } स्त्री [पूपिका]।

पूआ स्त्री [दे] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री।

पूआ स्त्री [पूजा] पूजन, सेवा। °भत्त न [°भक्त] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन। °मह पुं. पूजोत्सव। °रह पुं [°रथ] राक्षस-वंश में उत्पन्न एक राजा, लंका-पति। °रिह, °रुह वि [°र्ह] पूजा-योग्य।

पूआहिज्ज वि [पूजाहार्य] पूजित-पूजक।

पूइ वि [पूति] दुर्गन्धी। अपवित्र। भिक्षा का दोष, पूति-कर्म। नासिका-रोग, नासा-कोथ। पीब। एकास्थिक वृक्ष की एक जाति। °कम्म पुन [°कर्मन्] मुनि-भिक्षा का दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु मिलाकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण। °म वि [°मत्] दुर्गन्धी। अपवित्र।

पूइ वि [पूति] सड़ा हुआ। °पिन्नाग पुंन [°पिण्याक] सरसों की खली।

पूइआलुग न [दे. पूत्यालुक] जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष।

पूइम वि [पूज्य] पूजा-योग्य, सम्माननीय।

पूइय वि [पूतिक] अपवित्र, दूषित। दुर्गन्धी। पूति नामक भिक्षा-दोष से युक्त।

पूइय देखो पोइय = (दे)।

पूंडरिअ न [दे] कार्य, काम, प्रयोजन।

पूग पुं. समूह। देखो पूअ = पूग।

पूगी स्त्री. सुपारी का पेड़। °फल न. सुपारी, कसैली।

पूज देखो पूअ = पूजय्।

पूजग देखो पूअय।

पूजा देखो पूआ = पूजा।

पूण पुं [दे] हाथी।

पूणिआ } स्त्री [दे] रुई की पूणी।
पूणी }

पूप देखो पूअल।

पूयइ पुं [पूपकिन्] हलवाई।

पूयली स्त्री [दे] रोटी।

पूयावणा स्त्री [पूजना] पूजा करना।

पूर सक [पूरय्] पूर्ति करना, भरना।

पूर पुं. जल-समूह, जल-धारा। खाद्य-विशेष। वि. पूर्ण।

पूरइत्तअ (शौ) वि [पूरयितृ] पूर्ण करनेवाला।

पूरंतिया स्त्री [पूरयन्तिका] राजा की एक परिषत्—परिवार।

पूरग वि [पूरक] पूर्ति करनेवाला।

पूरण न [पूरण] शूर्प, सूप।

पूरण न. पूर्त्ति। पालन। पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का पुत्र। एक गृह-पति। वि. पूर्ति करनेवाला।

पूरय देखो पूरग।

पूरिगा स्त्री [पूरिका] मोटा कपड़ा।

पूरिम वि [पूरिम] भरने से होनेवाला।

पूरिमा स्त्री. गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना।

पूरी स्त्री. तन्तुवाय का उपकरण।

पूरोट्टी स्त्री [दे] अवकर, कतवार, कूड़ा।

पूल पुंन. पूला, घास की अँटिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूव } देखो पूअल।
पूवल }

पूवलिआ } देखो पूअलिया।
पूविगा }

पूस अक [पुष्] पुष्ट होना।

पूस देखो पुस्स = पूष्य। °गिरि पुं. जैन मुनि। °फली स्त्री. वल्ली-विशेष। °माण, °माणग पुं [°माण, °मानव] मङ्गल-पाठक। °माणग पुं [°मानक] ज्योतिर्देवता, ग्रहाधिष्ठायक देव। °माणय देखो °माण। °मित्त पुं [°मित्र] जैन मुनि-त्रय—घृतपुष्यमित्र, वस्त्रपुष्यमित्र, दुर्बलिकापुष्यमित्र, आर्य रक्षितसूरि के शिष्य। एक राजा। °मित्तिय न [°मित्रीय] जैन मुनि-कुल।

पूस पुं [दे] राजा सातवाहन। तोता।

पूस पुं [पूषन्] सूर्य। मणि-विशेष।

पूसा स्त्री [पुष्या] कुण्ड-कोलिक की पत्नी।

पूसाण देखो पूस = पूषन्।

'पूह पुं [अपोह] मीमांसा। देखो अपोह।

पृथुम (पै) देखो पढम।

पेअ पुं [प्रेत] व्यन्तर देव-जाति। मृतक। °कम्म न [°कर्म्मन्] अन्त्येष्टि क्रिया। °करणिज्ज न [°करणीय] अन्त्येष्टि क्रिया। °काइय वि [°कायिक] प्रेत-योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष। °देवयकाइय वि [°देवता-कायिक] प्रेत-देवता का। °नाह पुं [°नाथ] यमराज। °भूमि, °भूमी स्त्री. श्मशान। °लोय पुं [°लोक] श्मशान। °वइ पुं[°पति] यम। °वण न [°वन] श्मशान। °हिव पुं [°धिप] जमराज।

पेअ वि [प्रेयस] अतिशय प्रिय।

पेआ स्त्री [पेया] यवागू, पीने की वस्तु।

पेआल न [दे] प्रमाण। विचार। सार, रहस्य। प्रधान।

पेआलणा स्त्री [दे] प्रमाण-करण।

पेआलुय वि [दे] विचारित।

पेइअ वि [पैतृक] पिता से आया हुआ। न. पीहर।

पेईहर न [पितृगृह, पैतृकगृह] पीहर।

पेऊस न [पीयूष] अमृत। °असण पुं [°शन] देव।

पेंखिअ वि [प्रेङ्खित] कम्पित।

पेंखोल अक [प्रेङ्खोलय्] झूलना, हिलना।

पेंड देखो पिंड = पिण्ड।

पेंड न [दे] खण्ड टुकड़ा। वलय।

पेंडधव पुं [दे] खड्ग, तलवार।

पेंडबाल वि [दे] देखो पेंडलिअ।

पेंडय पुं [दे] तरुण। नपुंसक।

पेंडल पुं [दे] रस।

पेंडलिअ वि [दे] पिण्डीकृत।

पेंडव सक [प्र + स्थापय्] रखना। प्रस्थान कराना।

पेंडार पुं [दे] ग्वाला। महिषी-पाल।

पेंडोली स्त्री [दे] क्रीड़ा।

पेंढा स्त्री [दे] पंकवाली मदिरा।

पेंत देखो पा = पा का वकृ.।

पेक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना।

पेक्खअ } वि [प्रेक्षक] देखनेवाला, निरीक्षक,
पेक्खग } द्रष्टा।

पेक्खणग } न [प्रेक्षणक] खेल, तमाशा,
पेक्खणय } नाटक।

पेखिल (अप) वि [प्रेक्षित] दृष्ट।

पेच्च } अ [प्रेत्य] परलोक, आगामी जन्म।
पेच्चा } °भव पुं. आगामी जन्म, परलोक। °भाविअ वि [°भाविक] जन्मान्तर-सम्बन्धी।

पेच्चा देखो पिअ = पा का संकृ।

पेच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना।

पेच्छ वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शक।

पेच्छ देखो पेक्ख।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसी को चाहनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेच्छा स्त्री [प्रेक्षा] तमाशा, नाटक । °घर न [°गृह] देखो °हर । °मंडव पुं [°मण्डप] नाट्य-गृह, प्रेक्षकों के बैठने का स्थान । °हर न. [°गृह] खेल तमाशा का स्थान ।

पेज्ज देखो पा = पा का कृ. ।

पेज्ज पुंन [प्रेमन्] अनुराग । °दंसि वि [°दर्शिन्] अनुरागी ।

पेज्ज वि [प्रेयस्] अत्यन्त प्रिय ।

पेज्ज वि [प्रेज्य] पूज्य ।

पेज्ज देखो पेर = प्र + ईरय् ।

पेज्जल न [दे] प्रमाण ।

पेज्जलिअ वि [दे] संघटित ।

पेज्जा देखो पेआ ।

पेज्जाल वि [दे] विपुल, विशाल ।

पेट } न [दे] उदर ।
पेट्ट }

पेट्ठ देखो पिट्ठ = पिष्ट ।

पेड देखो पेडय ।

पेडइअ पुं [दे] धान्य आदि बेचनेवाला ।

पेडक } न [पेटक] यूथ ।
पेडय }

पेडा स्त्री [पेटा] मञ्जूषा । पेटाकार चतुष्कोण गृह-पंक्ति में भिक्षार्थ-भ्रमण ।

पेडाल पुं [दे. पेटाल] बड़ी पेटी ।

पेडावइ पुं [पेटकपति] यूथ का नायक ।

पेडिआ स्त्री [पेटिका] मञ्जूषा ।

पेडु स्त्री पुं [दे] महिष ।

पेड्डा स्त्री [दे] भींत । दरवाजा । भैंस ।

पेढ देखो पीढ = पीठ ।

पेढाल वि [दे] विपुल । वर्तुल, गोलाकार ।

पेढाल वि [पीठवत्] पीठ-युक्त ।

पेढाल पुं. भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव । ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ । एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था । न. एक उद्यान । °पुत्त पुं [°पुत्र] भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव । भगवान् पार्श्वनाथ की सन्तान में उत्पन्न जैन मुनि । भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न जैन मुनि ।

पेढिया देखो पीढिआ प्रस्तावना ।

पेढी देखो पीढी ।

पेणी स्त्री [प्रैणी] हरिणी का एक भेद ।

पेदंड वि [दे] जुए में हार गया हो वह ।

पेम पुंन [प्रेमन्] प्रेम, स्नेह ।

पेमालुअ वि [प्रेमिन्] प्रेमी ।

पेम्म देखो पेम ।

पेम्मा स्त्री [प्रेमा] छन्द-विशेष ।

पेया स्त्री. वाद्य-विशेष, बड़ी काहला ।

पेर सक [प्र + ईरय्] पठाना, भेजना । धक्का लगाना, आघात करना । आदेश करना । किसी कार्य में जोड़ना । पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना । प्रेरणा करना । गिराना ।

पेरंत देखो पज्जंत । °चक्कवाल न [°चक्र-वाल] बाह्य परिधि । °वच्च न [°वर्चस्] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह ।

पेरग वि [प्रेरक] प्रेरणा करनेवाला, पूर्वपक्षी ।

पेरण न [दे] ऊर्ध्व स्थान । खेल, तमाशा ।

पेरिज्ज न [दे] साहाय्य, सहायता, मदद ।

पेरुल्लि वि [दे] पिण्डीकृत ।

पेलव वि. सुकुमार, मृदु । पतला, कृश । सूक्ष्म, लघु ।

पेलु स्त्री. रुई की पूणी । °करण न. पूणी बनाने का उपकरण, शलाका आदि ।

पेल्ल सक [क्षिप्] फेंकना ।

पेल्ल देखो पेर = प्र + ईरय् ।

पेल्ल सक [पीडय्] पीलना, दबाना, पीड़ना ।

पेल्ल सक [पूरय्] पूरना, भरना ।

पेल्ल पुंन [दे] बालक ।

पेल्लय पुं [पेल्लक] महावीर के पास दीक्षा ले अनुत्तर विमान में उत्पन्न जैन मुनि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेल्लव } देखो पेर।
पेल्लाव }

पेव्वे अ. आमन्त्रण-सूचक अव्यय।

पेस सक [प्र + एषय्] भेजना, पठाना।

पेस देखो पीस।

पेस पुंस्त्री [प्रेष्य] कर्मकर। वि. भेजने-योग्य।

पेस पुं [दे. पेश] सिन्ध देश में होनेवाली एक पशु-जाति।

पेस वि [दे. पैश] पेश नामक जानवर के चमड़े का बना हुआ (वस्त्र)।

पेसण न [दे] कार्य, प्रयोजन।

पेसण न [प्रेषण] पठाना, भेजना। नियोजन, व्यापारण। आज्ञा, आदेश।

पेसणआरी } स्त्री [दे] दूती।
पेसणआली }

पेसणा स्त्री [पेषण] पीसना, पेषण।

पेसल वि [पेशल] सुन्दर, मधुर, कोमल।

पेसल } न [दे] सिन्ध देश के पेश नामक
पेसलेस } पशु के चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र।

पेसव सक [प्र + एषय्] भेजवाना।

पेसविअ वि [प्रेषित] भेजवाया, प्रस्थापित।

पेसाय वि [पैशाच] पिशाच-सम्बन्धी।

पेसि स्त्री [पेशि] देखो पेसी।

पेसिआ स्त्री [पेशिका] खण्ड, टुकड़ा।

पेसिआर पुं [प्रेषितकार] नौकर।

पेसिदवंत (शौ) वि [प्रेषितवत्] जिसने भेजा हो वह।

पेसी स्त्री [पेशी] मांस-पिण्ड। देखो पेसिआ।

पेसुण्ण न [पैशुन्य] चुगली।

पेस्सिदवंत देखो पेसिदवंत।

पेह सक [प्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना। चिन्तन करना।

पेह सक [प्र + ईह्] इच्छा करना, चाहना। प्रार्थना करना।

पेहा स्त्री [प्रेक्षण] निरीक्षण। कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना। पर्यालोचन, चिन्तन। बुद्धि।

पेहुण न [दे] पिच्छ। मयूर-पिच्छ। देखो पिहुण।

पोअ सक [प्र + वे] पिरोना, गूंथना।

पोअ वि [प्रोत] पिराया हुआ।

पोअ पुं [पोत] जहाज, नौका। शिशु। न. वस्त्र।

पोअ पुं [दे] धव-वृक्ष। छोटा साँप।

पोअइया स्त्री [दे] निद्राकारी लता।

पोअंड वि [दे] भय-रहित। नामर्द।

पोअंत पुं [दे] शपथ।

पोअण न [प्रवयन, प्रोतन] पिरोना, गूँथना।

पोअणपुर न [पोतनपुर] नगर-विशेष।

पोअणा स्त्री [प्रवयना, प्रोतना] पिरोना।

पोअय वि [पोतज] पोत से उत्पन्न होनेवाला प्राणी—हस्ती आदि।

पोअलय पुं [दे] आश्विन मास का एक उत्सव, खाद्य-विशेष, पूआ। बाल वसन्त।

पोआई स्त्री [पोताकी] शकुनि को उत्पन्न करनेवाली विद्या। पक्षि-विशेष।

पोआउय वि [पोतायुज] देखो पोअय।

पोआय पुं [दे] गाँव का मुखिया।

पोआल पुं [दे] बलीवर्द।

पोआल [दे. पोतक] बच्चा, शिशु।

पोइअ पुं [दे] हलवाई। खद्योत। निमग्न। स्पन्दित।

पोइअ वि [प्रोत] पिरोया हुआ।

पोइअल्लय देखो पोइअ = प्रोत।

पोइआ } स्त्री [दे] निद्राकारी लता, वल्ली-
पोई } विशेष।

पोउआ स्त्री [दे] सूखे गोबर की अग्नि।

पोंग पुं [दे] पाक, पकना।

पोंगिल्ल वि [दे] परिपक्व, परिपाक-युक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोंड न [दे] फूल ।

पोंड देखो पुंड । °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष । °वद्धणिया स्त्री [°वर्धनिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा ।

पोंड पुं [दे] यूथ का अधिपति । फल । अविकसित कमल । कपास का सूता ।

पोंडरिगिणी देखो पुंडरिगिणी ।

पोंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक ।

पोंडरो स्त्री [पौण्ड्री, पुण्डरीका] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक की एक दिक्कुमारी ।

पोंडरीअ देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक ।

पोंडरीअ } न [पौण्डरीक] रज्जु-गणित ।
पोंडरीग } देखो पुंडरीअ = पौण्डरीक ।

पोक्क सक [व्या + हृ, पूत + कृ] पुकारना, आह्वान करना ।

पोक्क वि [दे] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका) ।

पोक्कण पुं [पोक्कण] अनार्य देश, उसमें बसनेवाली म्लेच्छ जाति ।

पोक्कर देखो पुक्कर ।

पोक्कार देखो पुक्कार = पूत्कार ।

पोक्खर न [पुष्कर] जल । पद्म । पद्म-कोष । अजमेर नगर के पास का जलाशय—तीर्थ । हाथी की सूँढ़ का अग्र-भाग । वाद्य-भाण्ड । दूकान । तलवार की म्यान । मुख । कुष्ठ रोग की ओषधि । द्वीप-विशेष । युद्ध । बाण । आकाश । पुं. नाग-विशेष । रोग-विशेष । सारस पक्षी । एक राजा । पर्वत-विशेष । वरुण-पुत्र । देखो पुक्खर ।

पोक्खर वि [पौष्कर] पुष्कर-सम्बन्धी । पद्माकार रचनावाला ।

पोक्खरिणी स्त्री [पुष्करिणी] जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी । कमलिनी । पद्म-समूह । पुष्कर-मूल । चौकोना जलाशय, पोखरी ।

पोक्खल देखो पुक्खल ।

पोक्खलच्छिलय } देखो पुक्खलच्छिभय ।
पोक्खलच्छिल्लय }

पोक्खलि पुं [पुष्कलिन्] एक जैन उपासक, जिसका दूसरा नाम शतक था ।

पोग्गर } पुंन [पुद्गल] रूपादि-विशिष्ट
पोग्गल } द्रव्य, मूर्त द्रव्य, रूपवाला पदार्थ । न. मांस । °त्थिआय पुं [°अस्तिकाय] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि । °परट्ट, °परियट्ट पुं [°परिवर्त] समस्त पुद्गल-द्रव्यों के साथ एक-एक परमाणु का संयोग-वियोग । समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय ।

पोग्गलिय वि [पौद्गलिक] पुद्गल-मय, पुद्गल-सम्बन्धी, पुद्गल का ।

पोच्च वि [दे] सुकुमार, कोमल ।

पोच्चड वि [दे] निस्सार । अतिनिबिड । मलिन ।

पोच्छल अक [प्रोत् + शल्] उछलना, ऊँचा जाना ।

पोच्छाहण न [प्रोत्साहन] उत्तेजन ।

पोच्छाहिअ वि [प्रोत्साहित] उत्तेजित ।

पोट्ट पुं [पुत्र] लड़का ।

पोट्ट न [दे] पेट । °साल पुं [°शाल] एक परिव्राजक । °सारणी स्त्री. अतीसार रोग ।

पोट्ट } न [दे] पोटला, गठरी ।
पोट्टल }

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी ।

पोट्टलिय वि [दे] गठरी-वाहक ।

पोट्टलिया [दे] देखो पोट्टलिगा ।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर-पेशी ।

पोट्टिल पुं [पोट्टिल] भारतवर्ष का भावी नौवाँ तीर्थंकर । भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम । भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम । जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नाम-कर्म बँधा था । जैन मुनि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव-विशेष। देखो पोट्टिल।

पोट्टिला स्त्री [पोट्टिला] एक स्त्री का नाम।

पोट्टिस पुं [पोट्टिस] एक कवि।

पोट्ठवई स्त्री [प्रौष्ठपदी] भाद्रपद मास की पूर्णिमा या अमावस्या।

पोट्ठिल पुं [पुष्ठिल] भगवान् महावीर से दीक्षा ले अनुत्तर-विमान में उत्पन्न जैन मुनि।

पोडइल न [दे] तृण-विशेष।

पोढ वि [प्रौढ] समर्थ। निपुण। प्रगल्भ। यौवन के बाद की अवस्थावाला। °वाय पुं [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान।

पोढा स्त्री [प्रौढा] तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री। नायिका का एक भेद।

पोढिम पुंस्त्री [प्रौढमन्] प्रौढता।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुवा।

पोत देखो पोअ = पोत।

पोतणया देखो पोअणा।

पोत्त पुं [पौत्र] पोता।

पोत्त न [पोत्र] प्रवहण, नौका।

पोत्त न [पोत] कपड़ा। धोती, कटी-वस्त्र। वस्त्र-खण्ड।

पोत्तय पुं [दे] फोता, अण्डकोश।

पोत्तिअ न [पौतिक] वस्त्र, सूती कपड़ा।

पोत्तिअ वि[पोतिक]वस्त्र-धारी। पुं. वानप्रस्थों का एक भेद।

पोत्तिआ स्त्री [पौत्रिका] पुत्र की लड़की।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

पोत्तिआ, पोत्ती } स्त्री [पोतिका, पोती] धोती, साड़ी। छोटा वस्त्र, वस्त्रखण्ड।

पोत्ती स्त्री [दे] काच।

पोत्तुल्लया देखो पोत्तिआ।

पोत्थ, पोत्थग, पोत्थय } पुंन [पुस्त, °क] वस्त्र। देखो पुत्थ।

पोत्था स्त्री [प्रोत्था] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति।

पोत्थार पुं [पुस्तककार] पोथी लिखनेवाला, पोथी बनानेवाला शिल्पी, जिल्दसाज।

पोत्थिया स्त्री [पुस्तिका] पोथी, पुस्तक।

पोप्फय पुंन [दे] हस्त-परिमर्षण, हाथ फिराना।

पोप्फल न [पूगफल] सुपारी।

पोप्फली स्त्री [पूगफली] सुपारी का पेड़।

पोम देखो पउम।

पोमर न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र।

पोमाड पुं [दे. पद्माट] पमाड, पमार, चकवड़ का पेड़। देखो पउमाड।

पोमावई स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष।

पोमिणी देखो पउमिणी।

पोम्म देखो पउम।

पोम्मा देखो पउमा।

पोम्ह देखो पम्ह = पक्ष्मन्।

पोर पुं [पूतर] जल में होनेवाला क्षुद्र जन्तु।

पोर वि [पौर] पुर में उत्पन्न, नागरिक।

पोर देखो पुर = पुरस्। °कव्व न [°काव्य] शीघ्रकवित्व।

पोर पुंन [दे. पर्वन्] गाँठ। °बीय वि [°बीज] पर्व-बीज से उगनेवाली वनस्पति, इक्षु आदि।

पोरग पुंन [पर्वक] पर्ववाली वनस्पति।

पोरच्छ पुं [दे] दुर्जन।

पोरच्छिम देखो पुरच्छिम।

पोरत्थ वि [दे] ईर्ष्यालु।

पोरय न [दे] क्षेत्र।

पोरव पुं [पौरव] राजा पुरु की सन्तान।

पोरवाड पुं [पौरवाट] जैन श्रावककुल।

पोराण देखो पुराण।

पोराण वि [पौराण] पुराण-सम्बन्धी। पुराण-शास्त्र का ज्ञाता।

पोराणिय वि [पौराणिक] पुराण-शास्त्र-सम्बन्धी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोरिस न [पौरुष] पुरुषत्व, पराक्रम ।
पोरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-जन्य ।
पोरिसिमंडल न [पौरुषीमण्डल] एक जैन शास्त्र ।
पोरिसिय देखो पोरिसीय ।
पोरिसी स्त्री [पौरुषी] पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया । प्रथम प्रहर । प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष ।
पोरिसीय वि [पौरुषिक] पुरुष-प्रमाण ।
पोरुस पुं [पुरुष] अत्यन्त वृद्ध पुरुष ।
पोरुस देखो पोरिस ।
पोरेकच्च } न [पौरस्कृत्य] पुरस्कार, कला-
पोरेगच्च } विशेष ।
पोरेवच्च न [पौरोवृत्य] पुरोवर्त्तित्व, अग्रेसरता ।
पोलंड सक [प्रोत + लङ्घ्] विशेष उल्लंघन करना ।
पोलच्चा स्त्री [दे] खेटित भूमि, कृष्ट जमीन ।
पोलास न. पोलासपुर । उद्यान-विशेष । °पुर न. नगर-विशेष ।
पोलासाढ न [पोलाषाढ] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य ।
पोलिअ पुं [दे] सौनिक, कसाई ।
पोलिआ स्त्री [दे. पौलिका] खाद्य-विशेष, पूरी ।
पोली देखो पओली ।
पोल्ल } वि [दे] पोला, खाली, रिक्त।
पोल्लड }
पोल्लर न [दे] निर्विकृतिक तप ।
पोस अक [पुष्] पुष्ट होना ।
पोस सक [पोषय्] पुष्ट करना । पालन करना ।
पोस वि [पोष] पोषक, पुष्टि-कारक । पुं पोषण, पुष्टि ।
पोस पुं. अपान-देश, गुदा । योनि । लिंग ।
पोस पुं [पौष] पौष मास ।
पोसग वि [पोषक] पोषक, पालक ।

पोसण न [पोसन] अपान, गुदा ।
पोसय देखो पोस = पोस ।
पोसय देखो पोसग ।
पोसह पुं [पोषध, पौषध] अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि में जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार-आदि के त्यागवाला अनुष्ठान । अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] जैन श्रावक का अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष । °वय न [°व्रत] वही अर्थ । °साला स्त्री [°शाला] पौषध-व्रत करने का स्थान । °वास पुं [°पवास] पर्वदिन में उपवास-पूर्वक जैन श्रावक का अनुष्ठान, जैन श्रावक का ग्यारहवाँ व्रत ।
पोसहिय वि [पौषधिक] पोषध-कर्त्ता ।
पोसिअ वि [दे] दरिद्र, दुःखी ।
पोसिअ वि [पुष्ट] पोषण-युक्त ।
पोसिद (शौ) वि [प्रोषित] प्रवास—विदेश में गया हुआ । °भत्तुआ स्त्री [°भर्तृका] जिसका पति प्रवास—परदेश में गया हो वह स्त्री ।
पोसी देखो [पौषी] पौषमास की पूर्णिमा । पौष मास की अमावस ।
पोह पुं [दे] बैल आदि की विष्ठा का ढेर ।
पोह पुं [प्रोथ] अश्व के मुख का प्रान्त भाग ।
पोहण पुं [दे] छोटी मछली ।
पोहत्त न [पृथुत्व] चौड़ाई ।
पोहत्त देखो पुहत्त ।
पोहत्तिय वि [पार्थक्त्विक] पृथक्त्व-सम्बन्धी ।
पोहल देखो पोप्फल ।
°प्प देखो प = प्र ।
°प्पआस देखो पयास = प्रयास ।
°प्पउत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त ।
°प्पच्चअ देखो पच्चय ।
°प्पडव (मा) अक [प्र + तप्] गरम होना ।
°प्पडिआर देखो पडिआर = प्रतिकार ।
°प्पडिहा देखो पडिहा = प्रतिभा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°प्पणइ देखो पणइ = प्रणयिन् ।
°प्पणाम देखो पणाम = प्रणाम ।
°प्पणास देखो पणास ।
°प्पण्णा देखो पण्णा = प्रज्ञा ।
°प्पत्था देखो पत्था ।
°प्पदेस देखो पदेस ।
°प्पफुर (शौ) देखो पप्फुर ।
°प्पबंध देखो पबंध ।
°प्पभिदि देखो °पभिइ ।
°प्पभूद (शौ) देखो पभूय ।
°प्पमत्त देखो पमत्त ।
°प्पमाण देखो पमाण ।
°प्पमुक्क देखो पमुक्क ।
°प्पमुह देखो पमुह ।
°प्पयर देखो पयर ।
°प्पयाव देखो पयाव ।
°प्पयास देखो पयास = प्रकाश ।
°प्पलाव देखो पलाव ।
°प्पवत्तण देखो पवत्तण ।
°प्पवह देखो पवह ।
°प्पवेस देखो पवेस ।
°प्पसर देखो पसर = प्र + सृ ।
°प्पसर देखो पसर = प्रसर ।
°प्पसव देखो पसव ।
°प्पसाय देखो पसाय = प्रसाद ।
°प्पसुत्त देखो पसुत्त ।
°प्पसूद (शौ) देखो पसूअ = प्रसूत ।
°प्पहर देखो पहर = प्रहार ।
°प्पहा देखो पहा ।
°प्पहाण देखो पहाण ।
°प्पहाय देखो पहाय = प्रभाव ।
°प्पहार देखो पहार ।
°प्पहाव देखो पहाव ।
°प्पहु देखो पहु ।
°प्पारंभ देखो पारंभ ।
°प्पिअ देखो पिअ = प्रिय ।
°प्पिआ देखो पिआ ।
°प्पिव देखो इव ।
°प्पेम देखो पेम ।
°प्पेम्म देखो पेम्म ।
°प्पोढ देखो पोढ ।
°प्फंस देखो फंस = स्पर्श ।
°प्फणा देखो फणा ।
°प्फद्धा देखो फद्ध ।
°प्फल देखो फल ।
°प्फाल सक [स्फालय्] आघात करना । पछाड़ना ।
°प्फालण न [स्फालन] आघात ।
°प्फुड देखो फुड ।
°प्फोड देखो फोड ।
प्रस्स (अप) देखो पस्स = दृश् ।
प्राइम्व, प्राइव, प्राउ (अप) देखो पाय = प्रायस् ।
प्रिय (अप) देखो पिअ = प्रिय ।
प्रेक्किअ न [दे] वृष-रटित, बैल की चिल्लाहट ।
प्रेयंड वि [दे] धूर्त्त ।

फ

फ पुं. ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ।
फंद अक [स्पन्द्] थोड़ा हिलना, फरकना ।
फंदिअ वि [स्पन्दित] कुछ हिला हुआ, फरका हुआ । ईषत् चालित ।
फंफ (अप) अक [उद् + गम्] उछलना ।
फंफसय पुं [दे] वल्ली-विशेष ।
फंफाइ (अप) वि [कम्पायित, कम्पित] कँपाया हुआ, कम्प-प्राप्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फंस अक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित होना, प्रमाण-विरुद्ध होना।
फंस सक [स्पृश्] छूना, स्पर्श करना।
फंसण वि [पांसन] अपसद, अधम।
फंपण वि [दे] युक्त, संयत। मलिन।
फंसुल वि [दे] मुक्त, त्यक्त।
फंसुली स्त्री [दे] नवमालिका, पुष्प वृक्ष।
फक्किया स्त्री [फक्किका] ग्रन्थ का विषम स्थान, कठिन स्थान।
फग्गु वि [फल्गु] असार, तुच्छ। स्त्री. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या। °मित्त पुं [°मित्र] जैन मुनि। °रक्खिय पुं [°रक्षित] जैन मुनि। °सिरी स्त्री [°श्री] इस अवसर्पिणी के पंचम आरे में होनेवाली अन्तिम जैन साध्वी।
फग्गु पुं [दे. फल्गु] वसन्त का उत्सव।
फग्गुण पुं [फाल्गुन] फागुन महिना। मध्यम पण्डुपुत्र अर्जुन।
फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी] फागुन मास की पूर्णिमा या अमावस्या। एक गृहपति की स्त्री।
फग्गुणी स्त्री [फल्गुनी] नक्षत्र-विशेष।
फट्ट अक [स्फट्] फटना, टूटना।
फड सक [स्फट्] खोदना। शोधना।
फड न [दे] साँप का सर्व शरीर।
फड पुंन [दे. फट] साँप की फणा।
फडही [दे] देखो फलही।
फडा स्त्री [फटा] साँप की फन। °ल वि [°वत्] फनवाला।
फडिअ, फडिग } देखो फलिह = स्फटिक।
फडिल्ल देखो फडा-ल।
फडिह पुं [परिघ] अर्गला। कुठार।
फडिहा देखो फलिहा = परिखा।
फड्ड, फड्डु } पुंन [दे. स्पर्ध] अंश, भाग, हिस्सा। सम्पूर्ण गण के अधिष्ठाता के वशवर्ती गण का एक लघुतर हिस्सा। द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर। अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान। समुदाय। वर्गणा-समदाय। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक।
फण पुं साँप की फणा।
फणग पुं [दे. फनक] कंधा।
फणज्जुय पुं [दे] वनस्पति-विशेष।
फणस पुं [पनस] कटहर का पेड़।
फणा स्त्री फन।
फणि पुं [फणिन्] साँप, नाग। दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा। पिंगलाचार्य। °चिंध पुं [°चिह्न] भगवान् पार्श्वनाथ। °पहु पुं [°प्रभु] धरणेन्द्र। शेषनाग। °राय पुं [°राज]शेषनाग। पिंगल-कर्ता। °लआ स्त्री [°लता] नागलता। °वइ पुं [°पति] धरणेन्द्र। नाग-राज। पिंगलकार। °सेहर पुं [°शेखर] प्राकृत-पिंगल का कर्ता।
फणिंद पुं [फणीन्द्र] शेषनाग। पिंगलकार।
फणिल्ल सक [चोरय्] चोरी करना।
फणिह पुं [दे. फणिह] कंधा।
फणीसर पुं [फणीश्वर] देखो फणि-वइ।
फणुज्जय देखो फणज्जुय।
फद्ध पु [स्पर्ध] स्पर्धा।
फर, फरअ } पुं [दे. फल, °क] काष्ठ आदि का तख्ता। ढाल। देखो फल।
फरअ पुंन [दे. स्फरक] अस्त्र-विशेष।
फरक्किद वि [दे] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित।
फरस देखो फरिस = स्पर्श।
फरसु पुं [परशु] फरसा। °राम पुं. जमदग्नि ऋषि का पुत्र।
फरहर अक [फरफराय्] फरफर आवाज करना।
फरित देखो फलिह = स्फटिक।
फरिस सक [स्पृश्] छूना।
फरिसण न [स्पर्शन्] त्वगिन्द्रिय।
फरिहा देखो फलिहा = परिखा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फरुस वि [परुष] कर्कश, कठिन। न. कुवचन, निष्ठुर वाक्य।

फरुस पुं [दे. परुष] कुम्भकार। °साला स्त्री [°शाला] कुम्भकार-गृह।

फरुसिया स्त्री [परुषता, पारुष्य] कर्कशता, निष्ठुरता।

फल अक [फल्] फलना, फलान्वित होना।

फल पुंन. वृक्षादि का शस्य। लाभ। कार्य। इष्टानिष्टकर्म का शुभ या अशुभ परिणाम। उद्देश्य। त्रिफला। जायफल। बाण का अग्रभाग। फाल। दान। मुष्क, अण्डकोष। ढाल। कक्कोल, गन्ध-द्रव्य-विशेष। अग्रभाग। °मंत, °व वि [°वत्] फलवाला। °वड्ढिय, °वद्धिय न[°वर्द्धिक] फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर। वहाँ का जैन-मन्दिर।

फलअ, फलग पुंन [फलक] काष्ठ आदि का तख्ता। जुए का एक उपकरण। ढाल। देखो फल। °सज्जा स्त्री [°शय्या] काष्ठ का तख्ता जिस पर सोया जाय।

फलण न [फलन] फलना।

फलह पुंन [फलह] फलक, काठ आदि का तख्ता।

फलहिआ, फलही स्त्री [फलहिका, फलही] काठ आदि का तख्ता।

फलही स्त्री [दे] कपास। कपास की लता।

फलाव सक [फलाय्] सफल करना।

फलावह वि [फलावह] फलप्रद।

फलासव पुं. मद्य-विशेष।

फलि पुं [दे] लिंग, चिह्न। वृषभ।

फलिअ न [दे] वायन, बायन, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार।

फलिआरी स्त्री [दे] दूर्वा, कुश तृण।

फलिणी स्त्री [फलिनी] प्रियंगु-वृक्ष।

फलिह पुं [परिघ] अर्गला। लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र। घर। काच-घट। ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग।

फलिह पुं [स्फटिक] स्फटिक मणि। देव-विमान-विशेष। रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिकमय काण्ड। गन्धमादन पर्वत का कूट। कुण्डल पर्वत का कूट। रुचक पर्वत का शिखर। °गिरि पुं. कैलास पर्वत।

फलिह पुं. काठ आदि का तख्ता।

फलिह पुंन [स्फटिक] आकाश।

फलिह न [दे] कपास का टेंटा।

फलिहंस पुं [फलिहंसक] वृक्ष-विशेष।

फलिहा स्त्री [परिखा] खाई, किले या नगर के चारों ओर की नहर।

फलिहि देखो परिहि।

फलिही देखो फलही = दे।

फली स्त्री. छोटी तख्ती।

फलोवय°, फलोवा वि [फलोपग] फल-प्राप्त, फल-सहित।

फल्ल वि [फल्य] सूती कपड़ा।

फव्वीह सक [लभ्] यथेष्ट लाभ होना।

फसल वि [दे] सार, चितकबरा। स्यासक।

फसलाणिअ, फसलिअ वि [दे] जिसने विभूषा की हो वह।

फसुल वि [दे] मुक्त।

फाइ स्त्री [स्फाति] वृद्धि।

फाईकय वि [स्फीतीकृत] फैलाया हुआ। प्रसिद्ध किया हुआ।

फागुण देखो फग्गुण।

फागुणी देखो फग्गुणी।

फाड सक [पाटय्, स्फाटय्] फाड़ना।

फाणिअ पुंन [फाणित] गुड़। गुड़ का विकार-विशेष, पानी से द्रावित गुड़। क्वाथ।

फाय वि [स्फीत] वृद्ध। विस्तीर्ण। ख्यात।

फार वि [स्फार] बहुत। विशाल, विपुल। विस्तृत।

फारक्क वि [दे. स्फारक] स्फरकास्त्र को धारण करनेवाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फारुसिय न [पारुष्य] कठोरता, कर्कशता।

फाल देखो °प्फाल।

फाल देखो फाड।

फाल पुंन. लोहे की लम्बी कील। फाल से की जाती दिव्य-परीक्षा, शपथ-विशेष। फलांग।

फाला स्त्री. फलाङ्ग, लाँफ।

फालि स्त्री [दे. फालि] फली। शाखा। फाँक, टुकड़ा।

फालिअ न [दे. फालिक] वस्त्र-विशेष।

फालिअ, फालिग, फालिह } पुं [स्फाटिक] रत्न-विशेष। वि. स्फटिक-रत्न का।

फालिहद्द पुं [पारिभद्र] फरहद का पेड़। देवदारु का पेड़। निम्ब का पेड़।

फास सक [स्पृश्, स्पर्शय्] स्पर्श करना। पालन करना।

फास पुंन [स्पर्श] छूना। ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष। दुःख-विशेष। शब्द आदि विषय। स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा। रोग। ग्रहण। युद्ध। जासूस। वायु। दान। 'क' से लेकर 'म' तक के अक्षर। वि. स्पर्श करनेवाला। °कीव पुं [°क्लीब] क्लीब का एक भेद। °णाम न [°नामन्] कर्कश आदि स्पर्श का कारणभूत कर्म। °मंत वि [°मत्] स्पर्श-वाला। °मय वि [°मय] स्पर्श-मय, स्पर्श से निर्वृत्त।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करनेवाला।

फासणया, फासणा } स्त्री [स्पर्शना] स्पर्श-क्रिया। प्राप्ति।

फासिअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ। प्राप्त।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करनेवाला।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय।

फासु, फासुअ } वि [प्रासु, °क] अचेतन जीव।

फिक्कर अक [फित् + कृ] प्रेत का चिल्लाना।

फिक्कि पुंस्त्री [दे] हर्ष।

फिञ्ज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, चूतर।

फिट्ट अक [भ्रंश्] नीचे गिरना। टूटना। ध्वस्त होना। पलायन करना।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट।

फिट्टा स्त्री [दे] मार्ग। मार्ग में किया जाता प्रणाम। °मित्त पुंन [°मित्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधिवाली मित्रता-वाला।

फिड देखो फिट्ट।

फिडिअ वि [भ्रष्ट, स्फटित] भ्रंश-प्राप्त। नष्ट, उल्लंघित।

फिड्ड वि [दे] वामन।

फिप्प वि [दे] कृत्रिम।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र—आँत स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना।

फिरक्क पुंन [दे] भार-वाहक गाड़ी।

फिलिअ देखो फिडिअ।

फिल्लुस अक [दे] खिसकना, गिरना।

फीअ देखो फाय।

फीणिया स्त्री [दे] एक मिठाई 'फेणी'।

फुंका स्त्री [दे] फूँक।

फुंकार पुं [फुङ्कार] फुफकार।

फुंटा स्त्री [दे] केश-बन्ध।

फुंद देखो फंद = स्पन्द।

फुंफमा, फुंफुआ, फुंफुगा, फुंफुमा } स्त्री [दे] वनकण्डे की आग। करीषाग्नि। कचवर-वह्नि।

फुंफुल, फुफुल्ल } सक [दे] उत्पाटन करना। कहना।

फुंस सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] पोंछना, साफ करना।

फुंस देखो फास।

फुक्क अक [फूत् + कृ] फूं-फूं आवाज करना। सक. मुँह से हवा निकालना, फूंकना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फुक्का स्त्री [दे] मिथ्या। फूंक।
फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार।
फुक्की स्त्री [दे] धोबिन।
फुग्ग स्त्रीन [दे. स्फिच्] कटि-प्रोथ।
फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोमवाला, परस्पर असम्बद्ध—बिखरे हुए केशवाला।
फुट } फुट्ट } अक [स्फुट्, भ्रंश] विकसना, प्रकट होना। फूटना, फटना। नष्ट होना।
फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] टूटा हुआ, विदीर्ण। भ्रष्ट, पतित। विनष्ट।
फुट्ठ देखो पुट्ठ = स्पृष्ट।
फुड देखो फुट्ट = स्फुट्, भ्रंश्।
फुड देखो पुट्ठ = स्पृष्ट।
फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, विशद।
फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष।
फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन।
फुडिअ वि [स्फुटित] विकसित। फूटा हुआ, विदीर्ण। विकृत।
फुडिअ (अप) देखो फुरिअ।
फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] फुनसी।
फुड्ड देखो फुट्ट।
फुन्न वि [दे. स्पृष्ट] छूआ हुआ।
फुप्फुस न [दे] फेफड़ा।
फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना।
फुम सक [दे. फूत् + कृ] फूंक मारना।
फुर अक[स्फुर्]फरकना, हिलना। तड़फड़ना। विकसना, खिलना। प्रकाशित होना, प्रकट होना, स्फूर्तियुक्त होना।
फुर सक [अ + हृ] अपहरण करना।
फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष।
फुर (अप) देखो फुड = स्फुट।
फुरफुर अक [पोस्फुराय्] खूब काँपना, थरथराना, तड़फड़ाना।
फुरिअ वि [स्फुरित] कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित। दीप्त।
फुरिअ वि [दे] निन्दित।
फुरुफुर देखो फुरफुर।
फुल देखो फुड = स्फुट्।
फुल (अप) देखो फुर = स्फुर्।
फुल (अप) देखो फुड = स्फुट।
फुल (अप) देखो फुल्ल = फुल्ल।
फुलिंग पुं [स्फुलिङ्ग] अग्नि-कण।
फुल्ल अक [फुल्ल्] फूलना, पुष्प-युक्त होना।
फुल्ल देखो कम = क्रम्।
फुल्ल न. पुष्प। पुष्पित। °मालिया स्त्री [°मालिका] मालिन। °वल्लि स्त्री. पुष्प-प्रधान लता।
फुल्लंधय पुं [पुष्पन्धय] भँवरा।
फुल्लंधुअ पुं [दे] भौंरा।
फुल्लग न [फुल्लक] ललाट का आभूषण।
फुल्लया स्त्री [फुल्ला, पुष्पा] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्वा, शतपुष्पा, सोया का गाछ।
फुल्लवड न [दे] मदिरा-वासक फूल।
फुल्लिम पुंस्त्री [फुल्लता] विकास, फूलन।
फुस सक [भ्रम्] भ्रमण करना। घूमाना।
फुस सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना।
फुस सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना।
फुसिअ पुंन [पृषत] बिन्दु, बिन्दु-पात।
फुसिआ स्त्री [दे] वल्ली-विशेष।
फुस्स देखो फुस = स्पृश्।
फूअ पुं [दे] लोहार।
फूम देखो फुम।
फूल देखो फुल्ल = फुल्ल।
फेक्कार पुं [फेत्कार] शृगाल की आवाज। चिल्लाहट।
फेड सक [स्फेटय्] विनाश करना। दूर हटाना। परित्याग करना। उद्घाटन करना।
फेडावणिय न [दे]विवाह-समय की एक रीति, वधू को प्रथम बार लज्जा-परिहार के वक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिया जाता उपहार।

फेण पुं [फेण, फेन] फेण झाग, जल-मल। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष।

फेणबंध } पुं [दे] वरुण।
फेणवड }

फेणाय अक [फेणाय्, फेनाय्] फेण—फेन का वमन करना, झाग निकालना।

फेप्फस } न [दे] देखो फिप्फिस, फुप्फुस।
फेफस }

फेरण न [दे] फेरना, घुमाना।

फेल सक [छिप्] फेंकना। दूर करना।

फेला स्त्री [दे] जूठन।

फेलाया स्त्री [दे] मामी।

फेल्ल पुं [दे] दरिद्र।

फेल्लुस सक [दे] फिसलना, खिसकना।

फेल्लुसण } न [दे] फिसलन, पतन। पिच्छिल
फेल्हसण } जमीन।

फेस पुं [दे] त्रास, डर। सद्भाव।

फोअ पुं [दे] उद्गम।

फोइअय वि [दे] मुक्त। विस्तारित।

फोंफा स्त्री [दे] डराने की आवाज।

फोड सक [स्फोटय्] फोड़ना, विदारण करना। राई आदि से शाक बघारना।

फोड पुं [स्फोट] फोड़ा, व्रण-विशेष। वर्ण-विशेष, शब्द-भेद। वि. भक्षक।

फोडव देखो फोडअ।

फोडाव सक [स्फोटय्] फोड़वाना। तोड़वाना। खुलवाना।

फोडि स्त्री [स्फोटि] विदारण, भेदन। °कम्म न [°कर्मन्] हल आदि से भूमि-दारण, कूप, तड़ाग आदि खोदने का काम। उक्त काम कर आजीविका चलाना।

फोडिअय वि [दे. स्फोटित, °क] राई से बघारा हुआ शाकादि।

फोडअय न [दे] रात के समय जंगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार।

फोडिया स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा।

फोडी स्त्री [स्फोटी, स्फौटी] देखो फोडि।

फोप्फस न [दे] शरीर का अवयव-विशेष।

फोफल न [दे] गन्ध-द्रव्य-विशेष, एक औषधि।

फोफस देखो फोप्फस।

फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्त्तन।

फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त।

फोस देखो फुस = स्पृश्।

फोस पुं [दे] उद्गम।

फोस पुं [दे. पोस] अपान-देश, गुदा।

ब

ब पुं. ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष।

बअर (शौ) न [बदर] बेर का फल। कपास का बीज।

बइट्ठ (अप) वि [उपविष्ट] बैठा हुआ।

बइल्ल पुं [दे] बैल, वृषभ।

बइस (अप) अक [उप + विश्] बैठना।

बइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन।

बइसार (अप) सक [उप + वेशय्] बैठाना।

बइस्स देखो वइस्स।

बईस (अप) देखो बइस।

बईस (अप) न [उपवेश] बैठ, बैठन बैठना।

बउणी स्त्री [दे] कर्पास-वल्ली।

बउल पुं [बकुल] मौलसरी का पेड़ या पुष्प। °सिरी स्त्री [°श्री] बकुल का पेड़ या पुष्प।

बउस पुं [बकुश] अनार्य देश। पुंस्त्री. उस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देश का निवासी । वि चितकबरा । मलिन चारित्रवाला, संयम को मलिन करनेवाला ।

बउहारी स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू ।

बंग पुं [बङ्ग] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र । बंगाल देश । बंग देश का राजा ।

बंगल (अप) पुं [बङ्ग] बंग देश का राजा ।

बंगाल पुं [बङ्गाल] बंगाल देश ।

बंझ देखो वंझ ।

बंडि पुं [दे] देखो बंदि = बन्दिन् ।

बंद न [दे] कैदी । °ग्गह पुं [°ग्रह] कैदी रूप से पकड़ना ।

बंदि स्त्री [बन्दि] देखो बंदी ।

बंदि, बंदिण पुं [बन्दिन्] स्तुति-पाठक, मंगल-पाठक, मागध ।

बंदिर न [दे] समुद्री बन्दर ।

बंदी स्त्री [बन्दी] बाँदी । कैदी । °कय वि [°कृत] बाँध कर आनीत ।

बंदुरा स्त्री [बन्दुरा] अश्व-शाला ।

बंध सक [बन्ध्] बाँधना, नियन्त्रण करना । कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना ।

बंध पुं [दे] नौकर ।

बंध पुं [बन्ध] कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना । बन्धन, संयमन । छन्द-विशेष । °सामि वि [°स्वामिन्] कर्म-बन्ध करनेवाला ।

बंधई स्त्री [बन्धकी] पुंश्चली, असती स्त्री ।

बंधग वि [बन्धक] बाँधनेवाला । कर्म-बन्ध करनेवाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलों का संयोग करनेवाला ।

बंधण न [बन्धन] संश्लेष का साधन, जिससे बाँधा जाय वह स्निग्धतादि गुण । जो बाँधा जाय । कर्म, कर्म-पुद्गल । कर्म-बन्ध-कारण । संयमन, नियन्त्रण । नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि । जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलों के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलों का आपस में सम्बन्ध हो वह कर्म ।

बंधणी स्त्री [बन्धनी] विद्या-विशेष ।

बंधय देखो बंधग ।

बंधव पुं [बान्धव] भ्राता । दोस्त । नातेदार, सम्बन्धी । माता । पिता । मामा, चाचा आदि ।

बंधाव (अशो) सक [बन्धय्] बँधाना ।

बंधु पुं [बन्धु] भाई । माता । पिता । मित्र । स्वजन । छन्द-विशेष । °जीव पुं. दुपहरिया का पेड़ । °दत्त पुं. एक श्रेष्ठी । एक जैन मुनि । °मई, °वई स्त्री [°मती] भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी । स्त्री-विशेष । °सिरी स्त्री [°श्री] श्रीदाम राजा की पत्नी ।

बंधुर वि [बन्धुर] सुन्दर । नम्र, अवनत ।

बंधुरिय वि [बन्धुरित] पिंडीकृत । नमा हुआ । मुकुटित । विभूषित ।

बंधुल पुं [बन्धुल] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र ।

बंधूय पुं [बन्धूक] दुपहरिया का पेड़ ।

बंधोल्ल पुं [दे] मेलक, संगति ।

बंभ पुं [ब्रह्मन्] ब्रह्मा । भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष । अप्काय का अधिष्ठायक देव । पाँचवें देवलोक का इन्द्र । बारहवें चक्रवर्ती का पिता । द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता । ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध योग । ब्राह्मण । चक्रवर्ती राजा का देव-कृत प्रासाद । दिन का नववाँ मुहूर्त । छन्द-विशेष । ईषत्प्राग्भारा पृथिवी । एक जैन मुनि । पुंन. देवविमान-विशेष । मोक्ष । ब्रह्मचर्य । सत्य अनुष्ठान । निर्विकल्प सुख । योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार । °कंत न [°कान्त] देव-विमान । °कूड पुं [°कूट] महाविदेह वर्ष का वक्षस्कार पर्वत । न. देवविमान । °चरण न. ब्रह्मचर्य । °चारि वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य पालन करनेवाला । पुं भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर । °चेर, °च्चेर न [°चर्य] मैथुन-विरति । जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन । °ज्झय न [ध्वज] देव-विमान । °दत्त पुं. भारतवर्ष का बारहवाँ चक्रवर्त्ती राजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °दीविया स्त्री [°द्वीपिका] जैन-मुनि गण की शाखा। °प्पभ न [°प्रभ] देव-विमान। °भूइ पुं [°भूति] द्वितीय वासुदेव का पिता। °यारि देखो °चारि। °रुइ पुं [रुचि] एक ब्राह्मण, नारद का पिता। °लेस न [°लेश्य] देव-विमान। °लोअ, लोग पुं [लोक] पाँचवाँ देवलोक। °लोगवडिसय न [लोकावतंसक] देव-विमान। °व, °वंत वि [°वत्] ब्रह्मचर्य-वाला। °वडिसय पुं [°ावतंसक] सिद्ध-शिला। °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान। °वय न [व्रत] ब्रह्मचर्य। °वि वि [°वित्] ब्रह्म-ज्ञानी। °व्वय देखो °वय। °संति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान। °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान। °सुत्त न [°सूत्र] यज्ञोपवीत। °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान। °ावत्त न [°ावर्त] देव-विमान। देखो बंभाण, बम्ह।

बंभंड न [ब्रह्माण्ड] जगत्, संसार।

बंभण पुं [ब्राह्मण]।

बंभणिआ स्त्री [ब्राह्मणिका] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष।

बंभणिआ, बंभणी } स्त्री [दे. ब्राह्मणिका] कीट-विशेष।

बंभण्ण, बंभण्णय } स्त्री [ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क] ब्राह्मण का हित। ब्राह्मण-सम्बन्धी। न. ब्राह्मण-समूह। ब्राह्मण-धर्म।

बंभद्दीविग वि [ब्रह्मद्वीपिक] ब्रह्मदीपिका-शाखा में उत्पन्न।

बंभद्दीविगा स्त्री [ब्रह्मद्वीपिका] एक जैन मुनि-शाखा।

बंभलिज्ज न [ब्रह्मलीय] जैन मुनि-कुल।

बंभहर न [दे] कमल।

बंभाण देखो बंभ। °गच्छ पुं. एक जैन-मुनि गच्छ।

बंभि°, बंभी } स्त्री [ब्राह्मी] ऋषभदेव की पुत्री। लिपि-विशेष। कल्प-विशेष। सरस्वती देवी।

बंभुत्तर पुं [ब्रह्मोत्तर] देव-विमान। °वडिसक न [°ावतंसक] देव-विमान।

बंहि पुं [बर्हिन्] मयूर।

बंहिण (अप) ऊपर देखो।

बक देखो बय।

बक्कर न [दे. बर्कर] परिहास।

बक्कस न [दे] अन्न-विशेष।

बग देखो बय।

बगदादि पुं [बगदादि] बगदाद देश।

बग्गड पुं [दे] देश-विशेष।

बज्झ वि [बाह्य] बाहर का, बहिरङ्ग।

बज्झ न [वन्ध] बन्धन, बाँधने का साधन।

बज्झ वि [बद्ध] बन्धनाकार व्यवस्थित। बँधा हुआ।

बठर पुं. मूर्ख छात्र।

बड (अप) वि [दे] बड़ा, महान्।

बडबड अक [वि + लप्] विलाप करना, बड़-बड़ाना।

बडहिला स्त्री [दे] धुरा के मूल में दी जाती कील, कीलक-विशेष।

बडिस देखो बलिस।

बडु, बडुअ } पुं [बटु, °क] लड़का, छोकड़ा।

बडुवास [दे] देखो वडुवास।

बत्तीस, बत्तिस, बत्तीस } (अप) स्त्रीन [द्वात्रिंशत्] बत्तीस। जिनकी संख्या बत्तीस हों वे।

बत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो। बद्धय न [°बद्धक] बत्तीस प्रकार की रचनाओं से युक्त। बत्तीस पात्रों से निबद्ध (नाटक)। °विह वि [°विध] बत्तीस प्रकार का।

बत्तीसइम वि [द्वात्रिंशत्तम] बत्तीसवाँ। न. पन्द्रह दिनों का लगातार उपवास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बत्तीसिया स्त्री [द्वात्रिंशिका] बत्तीस पद्यों का निबन्ध—ग्रन्थ। एक नाप।

बद्ध वि. बँधा हुआ, नियन्त्रित। संश्लिष्ट, संयुक्त। निबद्ध, रचित। °प्फल, °फल पुं [°फल] करञ्ज का पेड़। वि. फल-युक्त।

बद्धग पुं [बद्धक] तूण-वाद्य-विशेष।

बद्धय पुं [दे] कान का एक आभूषण।

बद्धेल्लग } देखो बद्ध।
बद्धेल्लय }

बप्प पुं [दे] योद्धा। पिता।

बप्पहट्टि पुं [बप्पभट्टि] एक जैन आचार्य।

बप्पीह पुं [दे] पपीहा।

बप्पुड वि [दे] बेचारा, अनुकम्पनीय।

बप्फ पुंन [बाष्प] भाफ, ऊष्मा।

बाप्फाउल वि [दे. बाष्पाकुल] अतिउष्ण।

बब्बर पुं [बर्बर] अनार्य देश। वि. उसका निवासी। °कूल न. उसका किनारा।

बब्बरी स्त्री [दे] केश-रचना।

बब्बूल पुं. बबूल का पेड़।

बब्भ पुं [दे] चर्म, चमड़े की रज्जु।

बब्भागम वि [बह्वागम] शास्त्रों का अच्छा जानकार।

बब्भासा स्त्री [दे] जिसके पूर से भावित पानी में धान्य आदि बोया जाता हो वह नदी।

बब्भिआयण न [बाभ्रव्यायन] गोत्र-विशेष।

बमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल।

बम्ह पुं [ब्रह्मन्] ज्योतिष्क देव-विशेष। देखो बंभ। °चरिअ देखो बंभ-चेर। °तरु पुं. पलाश का पेड़। °धमणी स्त्री [°धमनी] ब्रह्मनाड़ी।

बम्हज्ज (शौ) देखो बंभण्ण।

बम्हण देखो बंभण।

बम्हण्णय देखो बंभण्णय।

बम्हहर [दे] देखो बंभहर।

बम्हाल पुं [दे] अपस्मार, मृगी रोग।

बय पुं [बक] बगुला। कुबेर। महादेव। पुष्प-वृक्ष-विशेष, मल्लिका का गाछ। राक्षस-विशेष। बकासुर।

बयाला देखो बा-याला।

बरठ पुं [दे] धान्य-विशेष।

बरह न [बर्ह] मयूर-पिच्छ। पत्र। परिवार। देखो बरिह।

बरहि } पुं [बर्हिन्] मोर।
बरहिण }

बरिह देखो बरह। °हर पुं [°धर] मयूर।

बरिहि } देखो बरहि।
बरिहिण }

बरुअ न [दे] इक्षु-सदृश तृण।

बरुड पुं [दे] चटाई बनानेवाला शिल्पी।

बल अक [ज्वल्] जलना।

बल अक [बल्] जीना। सक. खाना।

बल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। देखो वल = ग्रह्।

बल पुं. बलदेव, हलधर। छन्द-विशेष। एक क्षत्रिय परिव्राजक। न. सामर्थ्य, पराक्रम। सैन्य। खाद्य-विशेष। अष्टम तप। एक शिखर। °च्छि वि [°च्छित्] बल का नाशक। न. जहर। °ण्णु देखो °न्न। °देव पुं. वासुदेव का बड़ा भाई, राम। °न्न वि [°ज्ञ] बल को जाननेवाला। °भद्द पुं [°भद्र] भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव। राजा भरत का प्रपौत्र। देवविमान-विशेष। देखो °हद्द। °भाणु पुं [°भानु] राजा बलमित्र का भागिनेय। °महणा स्त्री [°मथनी] विद्या-विशेष। °मित्त पुं [°मित्र] एक राजा। °व वि [°वत्] बलिष्ठ। प्रभूत सैन्यवाला। पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त। °वइ पुं [°पति] सेनाध्यक्ष। °वंत, °वग देखो °व। °वत्त न [°वत्त्व] बलिष्ठता। °वाउय वि [°व्यापृत] सैन्य में लगाया हुआ। °हद्द पुं [°भद्र] बलदेव। छन्द-विशेष। देखो °भद्द।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलकार } पुं [बलात्कार] जबरदस्ती।
बलक्कार }
बलद्द पुं [दे] बैल।
बलमड्डा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती।
बलमोडि देखो बलामोडि।
बलय पुं [दे] बैल।
बलया देखो बलाया।
बलवट्टि स्त्री [दे] सखी। व्यायाम को सहन करनेवाली स्त्री।
बलहट्टुया स्त्री [दे] चने की रोटी।
बला अ. स्त्री [बलात्] जबरदस्ती, बलात्कार।
बला स्त्री [बला] मनुष्य की दस दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था। योग की एक दृष्टि। भगवान् कुन्थुनाथ की शासन-देवी, अच्युता।
बलाका देखो बलाया।
बलाणय न [दे] उद्यान में बैठने के लिए बनाया जाता बेंच आदि। दरवाजा।
बलामोडि स्त्री [दे. बलामोटि] बलात्कार।
बलामोडिअ अ [दे. बलादामोट्य] बलात्कार से, जबरदस्ती से।
बलामोलि देखो बलामोडि।
बलाया स्त्री [बलाका] बक की एक जाति।
बलाहग पुं [बलाहक] मेघ।
बलाहगा देखो बलाहया।
बलाहय देखो बलाहग।
बलाहया स्त्री [बलाहका] बक-विशेष। अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम।
बलि पुं. असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र। एक राजा। सातवाँ प्रतिवासुदेव। एक दानव। पुंस्त्री. उपहार। पूजोपहार, नैवेद्य। भूत आदि को दिया जाता भोग। बलिदान। पूजा, अर्चा, सपर्या। राज-ग्राह्य भाग। चामर का दण्ड। उपप्लव। छन्द-विशेष। °उट्ठ पुं [°पुष्ट] कौआ। °कम्म न [°कर्मन्] पूजा की क्रिया। नैवेद्य की क्रिया। °चंचा स्त्री [°चञ्चा] बलीन्द्र की राजधानी। °मुह पुं [°मुख] कपि। °यम्म देखो °कम्म।
बलि वि [बलिन्] बलवान्। पुं. रामचन्द्र का एक सुभट।
बलिअ वि [दे] पीन, मांसल, स्थूल, मोटा। क्रिवि. गाढ़, बाढ़, अतिशय, अत्यर्थ।
बलिअ वि [बलिन्, बलिक] बलवान्, सबल, पराक्रमी। प्राणवाला।
बलिअ वि [बलित] जिसको बल उत्पन्न हुआ हो, सबल। पुं. छन्द-विशेष।
बलिअंक पुं [बलिताङ्क] छन्द-विशेष।
बलिआ स्त्री [दे. बलिका] सूर्प, सूप।
बलिट्ठ वि [बलिष्ठ] बलवान्।
बलिद्द पुं [दे. बलीवर्द] वृषभ।
बलिमड्डा स्त्री [दे] बलात्कार।
बलिवद्द देखो बलीवद्द।
बलिस न [वडिश] मछली पकड़ने का काँटा।
बलिस्सह पुं [बलिस्सह] आर्य महागिरि का एक शिष्य।
बलीअ वि [बलीयस्] अधिक बलवाला।
बलीवद्द पुं [बलीवर्द] बैल।
बलुल्लड (अप) देखो बल = बल।
बले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—निश्चय, निर्णय। निर्धारण।
बल्ल न [बाल्य] शिशुता।
बव सक [ब्रू] बोलना, कहना। देखो बुव, बू।
बव न. ज्योतिष प्रसिद्ध एक करण।
बव्वाड पुं [दे] दक्षिण हस्त।
बहड वि [बृहत्] बड़ा, महान्। °इच्च न [°ादित्य] नगर-विशेष।
बहत्तरी देखो बाहत्तरि।
बहप्पइ } देखो बहस्सइ।
बहप्फइ }
बहरिय देखो बहिरिय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहल न [दे] पंक। सुरा स्त्री. पंकवाली मदिरा।

बहल वि [बहल] निरन्तर, गाढ। स्थूल मोटा। पुष्कल, अत्यन्त।

बहलिम पुंस्त्री [बहलता] स्थूलता, मोटाई। सातत्य।

बहली स्त्री. भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश। बहली देश की स्त्री।

बहलीय वि [बहलीक] बहली-निवासी।

बहव देखो बहु।

बहस्सइ पुं [बृहस्पति] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह। देव-गुरु। पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव। राजनीति-प्रणेता एक ऋषि। नास्तिक मत का प्रवर्तक। एक पुरोहित-पुत्र। विपाकसूत्र का अध्ययन। °दत्त पुं. देखो अंत के दो अर्थ।

बहि अ [बहिस्] बाहर। °हुत्त वि [°दे] बहिर्मुख।

बहिअ वि [दे] विलोडित।

बहिं देखो बहि।

बहिणिआ } स्त्री [भगिनी] बहिन।
बहिणी } सखी। °तणअ पुं [°तनय] भागिनीपुत्र। °वइ पुं [°पति] बहनोई।

बहित्ता अ [बहिस्तात्] बाहर।

बहिद्धा अ [दे] बाहर। मैथुन।

बहिद्धा अ [बहिर्धा] बाहर की तरफ।

बहिया अ [बहिस्, बहिस्तात्] बाहर।

बहिर वि [बाह्य] बहिर्भूत, बाहर का।

बहिर वि [बधिर] बहरा।

बहु वि [बहु]प्रचुर, अनेक। स्त्री. °ई। क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय। °उदग पुं [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद। °चूड पुं. विद्याधर वंश का राजा। °जंपिर वि [°जल्पितृ] वाचाट। °जण पुं [°जन] अनेक लोग। न. आलोचना का प्रकार। °णाय न [°नाद] नगर-विशेष। °देसिअ वि [°देश्य] थोड़ा बहुत। °नड पुं [°नट] नट की तरह अनेक भेष धारण करनेवाला। °पडिपुण्ण वि [°परिपूर्ण] पूरा-पूरा। °पढिय वि [°पठित] अतिशय शिक्षित। °पलावि वि [°प्रलापिन्] बकवादी। °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहुपुत्रिका देवी का सिंहासन। °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] पूर्णभद्र नामक यक्षेन्द्र की अग्र-महिषी। सौधर्म देवलोक की देवी। °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म दल वाला। °फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक। °भंगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष। °मय वि [°मत] अत्यन्त अभीष्ट। अनुमोदित, संमत। °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी। °माण पुं [°मान] अतिशय आदर। °माय वि [°माय] अति कपटी। °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्। °रय वि [°रत] अत्यन्त आसक्त। जमालि का अनुयायी। न. जमालि का चलाया हुआ मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयों में ही माननेवाला मत। °रय न [°रजस्] चिउड़ा की तरह का एक प्रकार का खाद्य। °रव वि. यशस्वी। न. विद्याधर-नगर। °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप नामक भूतेन्द्र की अग्रमहिषी। °लेव पुं [°लेप] चावल आदि के चिकने माँड़ का लेप। °वयण न [°वचन] बहुत्व-बोधक प्रत्यय। °विह वि [°विध] नानाविध। °विहिय वि [°विधिक] अनेक तरह का। °संपत्त वि [°संप्राप्त] कुछ कम संप्राप्त। °सच्च पुं [°सत्य] अहोरात्र का दशवाँ मुहूर्त। °सो अ [°शस्] अनेक बार। °स्सुय वि [°श्रुत] शास्त्रज्ञ, पण्डित। °हा अ [°धा] अनेकधा।

बहुअ वि [बहु, °क] ऊपर देखो।

बहुआरिआ } स्त्री [दे] बुहारी, झाड़।
बहुआरी }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुखज्ज वि [बहुखाद्य] बहु-भक्ष्य । पृथुक—चिवड़ा बनाने-योग्य ।
बहुग देखो बहुअ ।
बहुजाण पुं [दे] तस्कर । ठग । जार ।
बहुण पुं [दे] चोर धूर्त ।
बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का ।
बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर ।
बहुमुह पुं [दे. बहुमुख] दुर्जन ।
बहुराणा स्त्री [दे] तलवार की धार ।
बहुरावा स्त्री [दे] शृगाली ।
बहुरिया स्त्री [दे] झाड़ू ।
बहुल वि. प्रचुर । बहुविध । व्याप्त । पुं. कृष्ण-पक्ष । एक ब्राह्मण ।
बहुल पुं. आचार्य महागिरि के शिष्य ।
बहुला स्त्री. गौ । एक स्त्री । °वण न [°वन] मथुरा नगरी का प्राचीन वन ।
बहुलि पुं [बहुलिन्] एक राज-पुत्र ।
बहुली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ ।
बहुल्लिआ स्त्री [दे] बड़े भाई की स्त्री ।
बहुल्ली स्त्री [दे] खेलने की पुतली ।
बहुवी देखो बहुई ।
बहुव्वीहि पुं [बहुव्रीहि] एक समास ।
बहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर ।
बहेडय पुं [बिभीतक] बहेड़ा का पेड़ । न. बहेड़ा का फल ।

बा° वि. ब. [द्वा°, द्वि] दो, दो की संख्या-वाला । °इस देखो °वीस । °ईस देखो °वीस । °णउइ स्त्री [°नवति] बानबे । °णउय वि [°नवत] ९२ वाँ । °णुवइ देखो °णउइ । °याल, °यालीस स्त्रीन. [°चत्वारिंशत्] बयालीस । स्त्री. °याला, °यालीसा । °यालीसइम वि [°चत्वारिंशत्तम] बयालीसवाँ । °र, °रस त्रि. ब. [°दशन्] बारह । °रस वि [°दश] बारहवाँ । °रसंग स्त्रीन [°दशाङ्ग] बारह जैन अंग-ग्रन्थ । °रसम वि [°दश] बारहवाँ । °रसमासिय वि [°दशमासिक] बारह मास का, बारह-मास-सम्बन्धी । °रसय न [°दशक] बारह का समूह । °रसवारिसिय वि [°दशवार्षिक] बारह वर्ष का । °रसविह वि [°दशविध] बारह प्रकार का । °रसाह न [°दशाह, °दशाख्य] बारहवाँ दिन । जन्म के बारहवें दिन किया जाता उत्सव । °रसी स्त्री [°दशी] द्वादशी । °रसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत] एक सौ बारहवाँ । °रह देखो °रस = दशन् । °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ । °वण (अप) देखो °वन्न । °वत्तर वि [°सप्तत] बहत्तरवाँ । °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] बहत्तर । °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] बावन । °वन्न वि [°पञ्चाश] बावनवाँ । °वीस स्त्रीन [°विंशति] बाईस । °वीस वि [°विंश] बाईसवाँ । °वीसइ देखो वीस = विंशति । °वीसइम वि [°विंशतितम] बाईसवाँ । दस दिन का उपवास । °वीसविह वि [°विंशतिविध] बाईस प्रकार का । °सट्ठ वि [°षष्ट] बासठवाँ । °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ । °सी, °सीइ स्त्री [°अशीति] बयासी । °सीइम वि [°अशीतितम] बयासीवाँ । °हत्तर (अप) देखो °हत्तरि । °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] बहत्तर ।

बाअ पुं [दे] शिशु ।
बाइया स्त्री [दे] माता ।

बाउल्लया
बाउल्लिआ } स्त्री [दे] ।
बाउल्ली

बाउस देखो बउस ।
बाउसिय वि [बाकुशिक] 'बकुश' चारित्री ।
बाढ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त, घना । °क्कार पुं [°कार] स्वीकार-सूचक उक्ति ।
बाण पुं [दे] पनस-वृक्ष । वि. सुभग ।
बाण पुंस्त्री. कटसरैया का गाछ । पुं. शर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाँच की संख्या। °त्त न [°पात्र] तूणीर।
बाध देखो बाह = बाध्।
बाधा स्त्री विरोध।
बाधिय वि [बाधित] विरोधवाला, प्रमाण-विरुद्ध।
बाम्हण देखो बम्हण।
बाय न [बाक] बक-समूह।
बायर न [बादर] स्थूल, मोटा। नववाँ गुण-स्थानक। नाम न [°नामन्] स्थूलता-हेतु कर्म।
बार न [द्वार] दरवाजा।
बारगा स्त्री [द्वारका] एक प्रसिद्ध नगरी।
बारवई स्त्री [द्वारवती] ऊपर देखो। भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा शिविका।
बाल पुं. केश। शिशु। वि. मूर्ख। नया। पुं. एक विद्याधर राजा। वि. असंयत। °कइ पुं [°कवि] तरुण या नया कवि। °क्क पुं [°ार्क] उदित होता सूर्य। °ग्गाह पुं [°ग्राह]। °ग्गाहि पुं [°ग्राहिन्] बालक की सार-सम्हाल करनेवाला नौकर। °घाय वि [°घात] बाल-हत्यारा। °तव पुंन [°तपस्] अज्ञानी की तपश्चर्या। वि. अज्ञानपूर्वक तप करनेवाला। °तवस्सि वि [°तपस्विन्] मूर्ख तपस्वी। °पंडिअ वि [°पण्डित] कुछ अंशों में त्यागी और कुछ में अत्यागी। °बुद्धि वि. अनभिज्ञ। °मरण न. असंयमी की मौत। °वियण, °वीयण पुंस्त्री [°व्यजन] चामर। °हार पुं [°धार] बालक का सार-सम्हाल करनेवाला नौकर।
बाल देखो बल।
बाल न [बाल्य] बचपन, मूर्खता।
बालअ देखो बाल = बाल।
बालअ पुं [दे] वणिक्-पुत्र।
बालग्गपोइआ स्त्री [दे] जल-मन्दिर। वलभी, अट्टालिका।
बाला स्त्री. कुमारी। मनुष्य की दस वर्ष तक की अवस्था। एक छन्द।
बालालुंबी स्त्री [दे] तिरस्कार, अवहेलना।
बालि वि [बालिन्] बाल या सुन्दर केश-वाला।
बालिआ स्त्री [बालिका] बाला।
बालिआ स्त्री [बालता] शिशुता। मूर्खता।
बालिस वि [बालिश] मूर्ख, बेवकूफ।
बाह सक [बाध्] विरोध करना। रोकना। पीड़ा करना। विनाश करना।
बाह पुं [बाष्प] आँसू।
बाह पुं [बाध] विरोध।
बाह देखो बाढ।
बाह पुं [बाहु] हाथ, भुजा।
बाहग वि [बाधक] रोकनेवाला। विरोधी।
बाहड पुं [वाग्भट] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री।
बाहण न [बाधन] विरोध। विराधन।
बाहर देखो बाहिर।
बाहल पुं. देश-विशेष।
बाहल्ल न [बाहल्य] स्थूलता, मोटाई।
बाहा स्त्री [बाधा] हरकत। विरोध। पीड़ा।
बाहा स्त्री [बाहु] हाथ, भुजा।
बाहा स्त्री [दे. बाहा] नरकावास-श्रेणी।
बाहिं } अ [बहिस्] बाहर।
बाहिं }
बाहिज्ज न [बाधिर्य] बधिरता।
बाहिर अ [बहिस्] बाहर।
बाहिर वि [बाह्य] बाहर का। °उद्धि पुं [°ऊर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पार्ष्णि मिलाकर और पैर को फैलाकर किया जाता कायोत्सर्ग।
बाहिरंग वि [बहिरङ्ग] बाहर का।
बाहिरिय वि [बाहिरिक, बाह्य] बाहर का।
बाहिरिया स्त्री [बाहिरिका] किले के बाहर की गृह-पंक्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला।
बाहु पुंस्त्री. हाथ, भुजा। °बलि पुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् आदिनाथ का पुत्र, तक्षशिला का राजा। बाहुबलि के प्रपौत्र का पुत्र। °मूल न. बगल।

बाहुअ पुं [बाहुक] एक ऋषि।

बाहुडिअ वि [दे] लज्जित। गत, चलित।

बाहुया स्त्री [बाहुका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष।

बाहुलग देखो बाहु।

बाहुलेय पुं [बाहुलेय] गो-वत्स, बैल।

बाहुलेर पुं [बाहुलेय] काली गाय का बछड़ा।

बाहुल्ल न [बाहुल्य] बहुलता, प्रचुरता।

बाहुल्ल वि [बाष्पवत्] अश्रुवाला।

बि वि. ब. [द्वि] दो। °जडि पुं [°जटिन्] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष। °दल न. चना आदि दो टुकड़े वाला धान्य। °याल देखो बा-याल। °यालसय पुंन [°चत्वारिंशच्छत] एक सौ बेआलीस। °विह वि [°विध] दो प्रकार का। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ। °सत्तरि, °सयरि स्त्री [°सप्तति] बहत्तर।

बि°, बिअ } वि [द्वितीय] दूसरा। °कसाय पुं [°कषाय] अप्रत्याख्यानावरण कषाय।

बिअ न [द्विक] दो का समुदाय, युग्म, युगल।

बिआया स्त्री [दे] संलग्न कीट-द्वय।

बिइअ देखो बिइज्ज।

बिइआ देखो बीआ।

बिइज्ज वि [द्वितीय] दूसरा। सहाय, मदद करनेवाला।

बिउण वि [द्विगुण] दुगुना। °यर वि [°कारक] दुगुना करनेवाला।

बिउण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना।

बिंट न [वृन्त] फलादि का बन्धन। °सुरा स्त्री. दारू।

बिंदिय वि [द्वीन्द्रिय] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हों वह।

बिंदु पुंन [बिन्दु] अल्प अंश। बिन्दी, शून्य, अनुस्वार। दोनों भ्रू का मध्य भाग। रेखा-गणित का एक चिह्न। °कला स्त्री. अनुस्वार, बिन्दी। °सार न. चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष। पुं. मौर्य वंश के राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र।

बिंद्रावण न [वृन्दावन] वैष्णव-तीर्थ।

बिंब सक [बिम्ब्] प्रतिबिम्बित करना।

बिंब न [बिम्ब] प्रतिमा। छन्दविशेष। न. कुन्दरुन का फल। प्रतिच्छाया। अर्थ-शून्य आकार। सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल।

बिंबवय न [दे] फल-विशेष, भिलावाँ।

बिंबिसार देखो भिंभिसार।

बिंबी स्त्री [बिम्बी] लता-विशेष, कुन्दरुन का गाछ। °फल न. कुन्दरुन का फल।

बिंबोवणय न [दे] क्षोभ। विकार। ओसीसा।

बिंह सक [बृंह्] पोषण करना।

बिग्गाइआ, बिग्गाई } स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न रहता कीट-युग्म।

बिज्ज देखो बीज।

बिज्जउर न [बीजपूर] एक तरह का नीबू।

बिज्जय (अप) देखो बिइज्ज।

बिट्ट पुं [दे] लड़का, पुत्र।

बिट्टी स्त्री [दे] पुत्री, लड़की।

बिट्ठ वि [दे. विष्ट] बैठा हुआ, उपविष्ट।

बिडाल, बिडालिआ, बिडाली } [बिडाल] स्त्री [बिडालिका, °ली] बिल्ली।

बिडिस देखो बडिस।

बिदिय देखो बिइअ।

बिन्ना स्त्री [बेन्ना] भारत की एक नदी।

बिब्बोअ पुं [विब्वोक] स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया। लीला। काम-विकार। न. उपधान, तकिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिब्बोइअ न [विब्बोकित] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद ।

बिब्बोयण न [दे] तकिया, ओसीसा ।

बिभेलय देखो बहेडय ।

बिराड पुं [बिडाल] मध्यलघुक पाँच मात्रा-वाला अक्षर-समूह । छन्द-विशेष ।

बिराल देखो बिडाल ।

बिरालिआ } देखो बिडालिआ । भुज-
बिराली } परिसर्प-विशेष ।

बिरालिया स्त्री [बिरालिका] स्थल-कन्द ।

बिरुद न [विरुद] इल्काब, पदवी ।

बिल न. रन्ध्र, विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान । कुआँ । °कोलीकारक वि [दे. °कोलीकारक] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलनेवाला । °पंतिया स्त्री [°पङ्क्तिका] खान की पद्धति ।

बिलाड } देखो बिडाल ।
बिलाल }

बिल्ल पुं [बिल्व] बेल का पेड़ न. बेल का फल ।

बिल्लल पुं [विल्वल] अनार्य देश । उसकी मनुष्य-जाति ।

बिस न. मृणाल । °कंठी स्त्री [°कण्ठी] बलाका ।

बिसि देखो बिसी ।

बिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी ।

बिसी स्त्री [बृषी] ऋषि का आसन ।

बिह अक [भी] डरना ।

बिह वि [बृहत्] बड़ा, महान् । °ण्णर पुं [°नल] छन्द-विशेष ।

बिहप्पइ }
बिहप्फइ } देखो बहस्सइ ।
बिहस्सइ }

बिहि देखो बिंहि ।

बिहेलग देखो बिभेलय ।

बीअ देखो बिइअ ।

बीअ न [बीज] बीज । मूल कारण । वीर्य । शुक्र । 'ह्रीं' अक्षर । °बुद्धि वि. मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों का निज बुद्धि से स्वयं जाननेवाला । °मंत वि [°वत्] बीजवाला । °रुइ स्त्री [°रुचि] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों का अनुसन्धान द्वारा फैलनेवाली रुचि । वि. उक्त रुचिवाला । °रुह वि. बीज से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति । °वाय पुं [°वाप] क्षुद्र जन्तु-विशेष । °सुहुम न [°सूक्ष्म] छिलके का अग्र भाग ।

बीअऊरय न [बीजपूरक] नीबू-विशेष ।

बीअजमण न [दे] खलिहान ।

बीअण } पुंन [दे. बीजक] असन वृक्ष,
बीअय } विजयसार का गाछ ।

बीअवावय पुं [बीजवापक] विकलेन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।

बीआ स्त्री [द्वितीया] दूज । द्वितीय विभक्ति ।

बीज देखो बीअ = बीज ।

बीडग } न [बीटक] बीड़ा, पान का बीड़ा ।
बीडि } स्त्री [बीटि, °टी] ।
बीडी }

बीभच्छ पुं [बीभत्स] एक साहित्यिक ।

बीभच्छ } वि [बीभत्स] घृणोत्पादक ।
बीभत्थ } भयंकर । पुं. रावण का एक सुभट ।

बीयत्तिय वि [दे. बीजयितृ] बीज बोनेवाला, वपन करनेवाला । पुं. पिता ।

बीलय पुं [दे] ताडंक, कर्णभूषण-विशेष ।

बीह अक [भी] डरना ।

बीहच्छ देखो बीभच्छ ।

बीहण वि [भीषण, °क] भय जनक ।

बुआव सक [वाचय्] बुलवाना ।

बुइअ वि [उक्त] कथित ।

बुंदि पुंस्त्री [दे] चुम्बन । सूअर ।

बुंदि स्त्री [दे] शरीर । देखो बोंदि ।

बुंदिणी स्त्री [दे] कुमारी-समूह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुंदीर पुं [दे] भैंसा। वि. महान्, बड़ा।
बुंध न [बुध्न] वृक्ष का मूल। मूलमात्र।
बुंबा } स्त्री [दे] चिल्लाहट, पुकार।
बुंबु }
बुंबुअ न [दे] समूह।
बुक्क वि [दे] विस्मृत।
बुक्क अक [गर्ज्, बुक्क्] गरजना।
बुक्क अक [भष्, बुक्क्] कुत्ता का भूँकना।
बुक्क पुंन [दे] तुष, छिलका। वाद्य-विशेष।
बुक्कण पुं [दे] कौआ।
बुक्कस देखो बोक्कस।
बुक्का स्त्री [दे] मुष्टि। व्रीहिमुष्टि। एक वाद्य।
बुक्कार पुं [दे. बूत्कार] गर्जन, गर्जना।
बुक्कास पुं [दे] तन्तुवाय, जुलाहा।
बुक्कासार वि [दे] भीरु, डरपोक।
बुज्झ सक [बुध्] जानना, समझना। जागना। जगाया गया।
बुडबुड अक [बुडबुडय्] बुडबुड आवाज करना।
बुड्ड अक [ब्रुड्, मस्ज्] डूबना।
बुड्ड वि [ब्रुडित, मग्न] डूबा हुआ, निमग्न।
बुड्डिर पुं [दे] महिष, भैंसा।
बुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा।
बुण्ण वि [दे] भीत, उद्विग्न।
बुत्ती स्त्री [दे] ऋतुमती स्त्री।
बुद्ध वि. विद्वान्, ज्ञाततत्त्व। जागृत। त्रिकाल का जानकार। विज्ञात। पुं. जिन-देव। भगवान् बुद्ध। आचार्य, सूरि। °पुत्त पुं [°पुत्र] आचार्य-शिष्य। °बोहिय वि [बोधित] आचार्य-बोधित। °माणि वि [°मानिन्] निज को पण्डित माननेवाला। °लय पुंन बुद्ध-मन्दिर।
बुद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त। बुद्ध-सम्बन्धी।
बुद्ध देखो बुज्झ।
बुद्ध देखो बुध।
बुद्धंत पुंन [बुध्नान्त] अधो-भाग।
बुद्धि स्त्री. मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा। देव-प्रतिमा-विशेष। महापुण्डरीक ह्रद की अधिष्ठात्री देवी। छन्द-विशेष। तीर्थंकरी। साध्वी। अहिंसा, दया। पुं. एक मन्त्री। °कूड न [°कूट] एक शिखर। °बोहिय वि [°बोधित] स्त्री. तीर्थंकर से प्रतिबोधित। सामान्य साध्वी से बोधित। °मंत वि [°मत्] बुद्धिवाला। °ल पुं. एक श्रेष्ठी। देखो °ल्ल। °ल्ल वि [°ल] बुद्धू, दूसरे की बुद्धि पर जीनेवाला। °वंत देखो °मंत। °सागर, °सायर पुं [°सागर] ग्यारहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य ग्रन्थकार। °सिद्ध पुं. बुद्धि में सिद्धहस्त। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्री-कन्या।
बुध देखो बुह।
बुब्बुअ अक [बुबूय्] 'बु' 'बु' आवाज करना, छाग—बकरा का बोलना।
बुब्बुअ पुं [बुद्बुद] पानी का बुलबुला।
बुभुक्खा स्त्री [बुभुक्षा] भूख।
बुय वि [ब्रुव] बोलनेवाला।
बुयाण देखो बुव का वकृ.।
बुल वि [दे] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ।
बुलंबुला } स्त्री [दे] बुलबुला, बुद्बुद।
बुलबुल } पुं.।
बुल्ल देखो बोल्ल।
बुव सक [ब्रू] बोलना।
बुस न. भूसा, यव आदि का कडंगर। तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य।
बुसि स्त्री [बृषि, °सि] मुनि का आसन। °म, °मंत वि [°मत्] संयमी, व्रती, मुनि।
बुसिआ स्त्री [बुसिका] भूसा।
बुह पुं [बुध] ग्रह-विशेष। एक ज्योतिष्क देव। वि. पण्डित।
बुहप्पइ }
बुहप्फइ } देखो बहस्सइ।
बुहस्सइ }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुहुक्ख सक [बुभुक्ष्] भूख लगना ।
बू सक [ब्रू] बोलना, कहना । देखो बव, बुव ।
बूर पुं. वनस्पति-विशेष । °णालिया स्त्री [°नालिका] बूर भरी नली ।
बूल वि [दे] मूक, वाचा-शक्ति से रहित ।
बूह सक [बृंह्] पुष्ट करना ।
बे देखो बि । °आसी (अप) स्त्री [°अशीति] बयासी । °इंदिय वि [°इन्द्रिय] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियवाला प्राणी । °हिय [द्वयाहिक] दो दिन का ।
बेंट देखो बिंट ।
बेंत देखो बू का वकृ. ।
बेंदि देखो बे-इंदिय ।
बेट्ठ देखो बिट्ठ ।
बेड, बेडा, बेडिया, बेडी — पुं [दे] । स्त्री [दे] नौका, जहाज ।
बेड्डा स्त्री [दे] दाढ़ी-मूँछ के बाल ।
बेदोणिय वि [द्वैद्रोणिक] दो द्रोण का ।
बेभेल पुं.विन्ध्याचल के नीचे का एक संनिवेश ।
बेमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का ।
बेल्लि स्त्री [दे] स्थूणा, खूँटा ।
बेल्ल देखो बिल्ल ।
बेल्लग पुं [दे] बलीवर्द ।
बेस अक [विश्, स्था] बैठना ।
बेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, रिपुता ।
बेसण न [दे] लोकनिन्दा ।
बेहिम वि [दे. द्वैधिक] दो टुकड़े करने-योग्य, खण्डनीय ।
बोंगिल्ल वि [दे] अलंकृत । पुं. आडम्बर ।
बोंटण न [दे] चूचुक, स्तन का अग्र भाग ।
बोंड न [दे] चूचुक, स्तन-वृन्त । कपास का फल । °य न [°ज] सूती कपड़ा ।
बोंद न [दे] मुख ।
बोंदि स्त्री [दे] रूप । मुँह । देह ।
बोंदिया स्त्री [दे] शाखा ।
बोकड, बोक्कड — पुं [दे] बकरा ।
बोक्कस पुं. अनार्य देश-विशेष । वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से अंबष्ठी की कुक्षि में उत्पन्न ।
बोक्कसालिय पुं [दे] तन्तुवाय ।
बोक्कार देखो बुक्कार ।
बोक्किय न [बूत्कृत] गर्जन, गर्जना ।
बोगिल्ल वि [दे] चितकबरा ।
बोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, जूठा करना ।
बोड वि [दे]धार्मिक, धर्मिष्ठ । तरुण, मुण्डित ।
बोडघेर न [दे] गुल्म-विशेष ।
बोडिय पुं [बोटिक] दिगम्बर जैन संप्रदाय । वि. उसका अनुयायी ।
बोडिय वि [दे] मुण्डित-मस्तक ।
बोड्डुर न [दे] दाढ़ी-मूँछ ।
बोड्डिआ स्त्री [दे] कपर्दिका, कौड़ी ।
बोदर वि [दे] विशाल ।
बोदि देखो बोंदि ।
बोद्दह [दे] देखो बोद्रह ।
बोद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त ।
बोद्धव्व बुज्झ का कृ. ।
बोद्रह वि [दे] जवान ।
बोधण न [बोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश ।
बोधि देखो बोहि । °सत्त पुं [°सत्त्व] सम्यग् दर्शन को प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव ।
बोब्बड वि [दे] मूक ।
बोर न [बदर] फल-विशेष, बेर ।
बोरी स्त्री [बदरी] बेर का गाछ ।
बोल सक [बोडय्] डुबाना ।
बोल अक [व्यति + क्रम्] पसार होना, गुजरना । सक. उल्लंघन करना । देखो वोल = गम् ।
बोल पुं [दे] कलकल, कोलाहल ।
बोलग पुंन [दे. ब्रोड] डूबना । खींचाव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बोलिंदी स्त्री [दे] ब्राह्मी लिपि का एक भेद ।
बोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना ।
बोल्लअ पुं [कथन] बोल, वचन ।
बोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाव-वाला ।
बोल्ला स्त्री [कथा] वार्त्ता, बात ।
बोल्लिअ वि [कथित] उक्त । न. उक्ति ।
बोव्व न [दे] क्षेत्र, खेत ।
बोह सक [बोधय्] समझाना, ज्ञान कराना । जगाना ।
बोह पुं [बोध] ज्ञान, समझ । जागरण ।
बोहग देखो बोहय ।
बोहय वि [बोधक] बोध देनेवाला, ज्ञानदाता ।
बोहहर पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक ।
बोहारी स्त्री [दे] झाड़ू ।
बोहि स्त्री [बोधि] शुद्ध धर्म का लाभ। अहिंसा, अनुकम्पा, दया ।
बोहिअ वि [बोधित] ज्ञापित, समझाया हुआ । विकासित, विबोधित ।
बोहिअ पुं [बोधिक] मनुष्य-चोर ।
बोहिग देखो बोहिअ = बोधिक ।
बोहित्थ पुंन [दे] जहाज, नौका ।
बोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित ।
°ब्भंस देखो भंस ।
°ब्भमर देखो भमर ।
°ब्भास देखो अब्भास ।
°ब्भि वि [भित्] भेदन या नाशकर्ता ।
ब्रो (अप) देखो बू ।

भ

भ पुं. ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन । आदि-गुरु और और दो ह्रस्व अक्षरों का भगण । न. नक्षत्र । °आर पुं [°कार] 'भ' अक्षर । भगण ।
भइ स्त्री [भृति] वेतन, तनखाह ।
भइअ वि [भक्त] विभक्त । खण्डित । विकल्पित । न. भागाकार ।
भइग वि [भृतिक] नौकर, चाकर ।
भइगि°, भइणिआ, भइणी स्त्री [भगिनी] बहिन । °वइ पुं [°पति] बहनोई । °सुअ पुं [°सुत] भानजा ।
भइरव वि [भैरव] भयंकर । पुं. नाट्यादि-प्रसिद्ध भयानक रस । महादेव । महादेव का एक अवतार । भैरव राग । नद-विशेष ।
भइरवी स्त्री [भैरवी] पार्वती ।
भइरहि पुं [भगीरथि] सगर चक्रवर्त्ती का एक पुत्र, भगीरथ ।
भइल वि [दे] भया, जात ।
भउम्हा (शौ) देखो भमुहा ।
भउहा (अप) देखो भमुहा ।
भंकार पुं[भङ्कार] भनकार, अव्यक्त आवाज ।
भंग पुं [भङ्ग] भाँगना, खण्ड, प्रकार, विकल्प । विनाश । रचना-विशेष । पराजय । पलायन । °रय न [°रत] मैथुन-विशेष ।
भंग पुं [भृङ्ग] आर्य देश-विशेष ।
भंग (अव) देखो भग्ग = भग्न ।
भंगरय पुं [भृङ्गरज, भृङ्गारक] भृङ्गराज । न. भँगरा का फूल ।
भंगा स्त्री [भङ्गा] पाट, कुष्टा । वाद्य-विशेष ।
भंगि स्त्री [भङ्गि]प्रकार । बहाना । विच्छित्ति, विच्छेद । पुंस्त्री. देश-विशेष ।
भंगिअ न [भङ्गिक, भाङ्गिक] भंगा-मय, पाट का बना हुआ कपड़ा । शास्त्र-विशेष ।
भंगिल्ल वि [भङ्गवत्] प्रकारवाला, भेद-पतित ।
भंगी स्त्री [भङ्गी] देखो भंगि ।
भंगी स्त्री [भृङ्गी] भांग, विजया । अतिविषा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिस का गाछ।

भंगुर वि [भङ्गुर] विनश्वर। कुटिल, वक्र।

भंछा देखो भत्था।

भंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। भगाना। पराजय करना। विनाश करना।

भंजअ, भंजग वि [भञ्जक] भाँगनेवाला। भंग करने वाला। पुं. वृक्ष।

भंजाविअ, भंजिअ वि [भञ्जित] तुड़वाया हुआ। भगाया हुआ। आक्रान्त।

भंड सक [भाण्डय्] भँडारा करना। इकट्ठा करना।

भंड सक [भण्ड्] भाँड़ना, गाली देना।

भंड पुं [भण्ड] विट, भाँड़, बहुरूपिया, निर्लज्ज।

भंड न [दे] बैंगन। पुं. स्तुति-पाठक। मित्र। दौहित्र। पुंन. मण्डन, आभूषण। वि. छिन्न, मूर्धा, सिर-कटा। न. क्षुर, छुरा। छुरे से मुण्डन।

भंड, भंडग पुंन [भाण्ड] बरतन, पात्र। बेचने की वस्तु। गृह, स्थान। घर का उपकरण।

भंडण न [दे. भण्डन] कलह, गुस्सा।

भंडवेआलिअ वि [भाण्डवैचारिक] करियाना बेचनेवाला।

भंडा स्त्री [दे] सम्बोधन-सूचक शब्द।

भंडाआर, भंडागार पुं [भाण्डागार] भंडार, कोठा, बखार।

भंडागारि पुंस्त्री [भाण्डागारिन्] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष।

भंडार देखो भंडागार।

भंडार पुं [भाण्डकार] बर्तन बनानेवाला।

भंडिअ पुं [भाण्डिक] भंडार का अध्यक्ष।

भंडिआ स्त्री [भाण्डिका] स्थाली, थलिया।

भंडिआ, भंडी स्त्री [दे] गाड़ी। शिरीष वृक्ष। जंगल। असती, कुलटा।

भंडीर पुं [भण्डीर] शिरीष वृक्ष। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] मथुरा नगरी का उद्यान। °वण न [°वन] मथुरा का वन। मथुरा का चैत्य।

भंडु न [दे] मुण्डन।

भंत वि [भ्रान्त] घुमा हुआ। भ्रान्ति-युक्त, भूला हुआ। अपेत, अनवस्थित। पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक।

भंत वि [भगवत्] भगवान्, ऐश्वर्य शाली।

भंत वि [भदन्त] कल्याण-कारक। पूज्य।

भंत वि [भजत्] सेवा करता।

भंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकता।

भंत वि [भवान्त] मुक्ति का कारण।

भंत वि [भयान्त] भय-नाशक।

भंति स्त्री [भ्रान्ति] भ्रम, मिथ्या-ज्ञान।

भंति (अप) स्त्री [भक्ति] भक्ति, प्रकार।

भंभल वि [दे] अप्रिय। मूर्ख, पागल।

भंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर के परम भक्त मगधाधिपति श्रेणिक विम्बसार।

भंभा स्त्री [दे. भम्भा] वाद्य-विशेष, भेरी। 'भाँ' 'भाँ' की आवाज।

भंभी स्त्री [दे] असती, नीति-विशेष।

भंस अक [भ्रंश्] नीचे गिरना। नष्ट होना। स्खलित होना।

भंसग वि [भ्रंशक] विनाशक।

भक्ख सक [भक्षय्] भक्षण करना, खाना।

भक्ख पुं [भक्ष्] भक्षण, भोजन।

भक्ख पुंन [भक्ष्य] खण्ड-खाद्य, मिठाई।

भक्खग वि [भक्षक] भक्षण करनेवाला।

भक्खर पुं [भास्कर] सूर्य। अग्नि। अर्क-वृक्ष।

भक्खराभ न. [भास्कराभ] गौतम गोत्र की शाखा। पुंस्त्री. उसमें उत्पन्न।

भग पुंन. ऐश्वर्य। रूप। श्री। यश। धर्म। प्रयत्न। सूर्य। माहात्म्य। वैराग्य। मुक्ति। वीर्य। इच्छा। ज्ञान। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र। स्त्री. योनि। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठाता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव, ज्योतिष्क देव-विशेष। गुदा और अण्ड-कोश के बीच का स्थान। °दत्त पुं. नृप-विशेष। °व देखो °वंत। °वई स्त्री [°वती] ऐश्वर्यादि-सम्पन्ना, पूज्या। पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ भगवती-सूत्र। °वंत वि [°वत्] ऐश्वर्यादिगुण-सम्पन्न। पुं. परमेश्वर।

भगंदर पुं [भगन्दर] गुदा के भीतर का फोड़ा।

भगंदल देखो भगन्दर।

भगिणी देखो बहिणी।

भगिरहि, भगीरहि पुं [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, भगीरथ।

भग्ग वि [भग्न] खण्डित। पराजित। भागा हुआ। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष।

भग्ग वि [दे] लिप्त, पोता हुआ।

भग्ग न [भाग्य] नसीब।

भग्गव पुं [भार्गव] शुक्र ग्रह। ऋषि-विशेष।

भग्गवेस न [भार्गवेश] गोत्र-विशेष।

भच्च पुं [दे] भानजा।

भच्छिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत।

भज देखो भय = भज्।

भज्ज सक [भ्रस्ज्] पकाना, भुनना।

भज्ज देखो भंज।

भज्ज देखो भय = भज्।

भज्जण न [भ्रज्जन] भुनन। भुनने का पात्र।

भज्जा स्त्री [भार्या] पत्नी।

भज्जि, भज्जिआ स्त्री [भर्जिका] भाजी, पत्राकार तरकारी। मार्ग-भोजन।

भज्जिम वि [भ्रज्जिम] भुनने-योग्य।

भट्ट पुं. एक मनुष्य-जाति। भाट। वेदाभिज्ञ पण्डित, ब्राह्मण, मालिकपन।

भट्टारग, भट्टारय पुं [भट्टारक] पूजनीय। नाटक की भाषा में राजा।

भट्टि देखो भत्तु = भर्तृ।

भट्टिअ पुं [दे] विष्णु, श्रीकृष्ण।

भट्टिणी स्त्री [भर्त्री] मालिकिन।

भट्टिणी स्त्री [भट्टिनी] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिषेक न किया गया हो।

भट्टु (शौ) देखो भट्टारय।

भट्ठ वि [भ्रष्ट] च्युत, स्खलित। नष्ट।

भट्ठ पुंन [भ्राष्ट्र] भुनने का बर्तन।

भट्ठि, भट्ठी स्त्री [दे] धूलि-रहित मार्ग।

भड पुं [भट] योद्धा। वीर। म्लेच्छों की जाति। वर्ण-संकर जाति। राक्षस। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष।

भडक्क पुंस्त्री [दे] आडम्बर, ठाठमाठ।

भडग पुं [भटक] अनार्य देश-विशेष। उस देश की म्लेच्छ जाति। देखो भड।

भडारय (अप) देखो भट्टारय।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि।

भडिल वि [दे] सम्बोधन-सूचक शब्द।

भण सक [भण्] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना।

भणग वि [भण, °क] प्रतिपादन करनेवाला।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना।

भत्त पुंन [भक्त] आहार। अन्न। ओदन। सात दिनों का उपवास। वि. भक्ति-युक्त। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा। °च्छंद °छंद पुं [°च्छन्द] भोजन की अरुचि, °पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] आहार-त्याग। मरण का एक प्रकार। °परिण्णा स्त्री [°परिज्ञा] ग्रन्थ-विशेष। °पाणय न [°पानक] खान-पान। °वेला स्त्री. भोजन-समय।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात।

भत्ति देखो भत्तु।

भत्ति स्त्री [भक्ति] सेवा, विनय, आदर। रचना। एकाग्र-वृत्ति-विशेष। कल्पना, उपचार। प्रकार। विच्छित्ति-विशेष। अनुराग। विभाग। अवयव। श्रद्धा। °मंत, °वंत वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°मत्] भक्त।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा।

भत्ती, भत्तु } पुं [भर्तृ] स्वामी, पति। अधिपति, अध्यक्ष। राजा। वि. पोषक। धारण करनेवाला।

भत्तोस न [भक्तोष] भुना हुआ अन्न। सुखादिका, खाद्य-विशेष।

भत्थ पुंस्त्री [दे] भाथा, तूणीर।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमड़े की धौंकनी, भाथी।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत।

भत्थी स्त्री [भस्त्री] चमड़े की धौंकनी।

भद सक [भद्] सुख या कल्याण करना।

भदंत वि [भदन्त] कल्याण-कारक। सुख-कारक। पूज्य।

भद्द न [दे] आमलक।

भद्द, भद्दअ } न [भद्र] मंगल, कल्याण। सुवर्ण। मुस्तक, नागरमोथा। दो उपवास। देव-विमान। शरासन। भद्रासन। वि. साधु, सरल, सज्जन। उत्तम। सुख-जनक, कल्याण-कारक। पुं. हाथी की उत्तम जाति। भारत-वर्ष का तीसरा भावी बलदेव। चौबीसवाँ भावी जिनदेव। अंगविद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष। द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि। छन्द-विशेष। एक जैन आचार्य। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैनाचार्य। °गुत्तिय न [°गुप्तिक] जैन-मुनि-कुल। °जस पुं [°यशस्] भगवान् पार्श्वनाथ का गणधर। एक जैन मुनि। °जसिय न [°यशस्क] जैन मुनि-कुल। °नंदि पुं [°नन्दिन्] राज-कुमार। °बाहु पुं. ग्रन्थकार जैनाचार्य। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] भद्रमोथा। °वया स्त्री [°पदा] नक्षत्र-विशेष। °साल न [°शाल] मेरु पर्वत का वन। °सेण पुं [°सेन] धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव। एक श्रेष्ठी। °स्स न [°श्व] नगर-विशेष। °सण न [°ासन] सिंहासन।

भद्ददारु न [भद्रदारु] देवदारु, उसकी लकड़ी।

भद्दव°, भद्दवय } पुं [भाद्रपद] भादों का महीना।

भद्दसिरी स्त्री [दे] श्रीखण्ड, चन्दन।

भद्दा स्त्री [भद्रा] रावण की पत्नी। प्रथम बलदेव की माता। तीसरे चक्रवर्ती की जननी। द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री। मेरु के पूर्व रुचक पर्वत की एक दिक्कुमारी देवी। एक प्रतिमा या व्रत। श्रेणिक की पत्नी। द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि। छन्द-विशेष। कामदेव श्रावक की भार्या। चुलनीपिता नामक उपा-सक की माता। एक सार्थवाहक स्त्री। गोशा-लक की माता। अहिंसा, दया। एक वापी। एक नगरी। अनेक स्त्रियों का नाम।

भद्दाकरि वि [दे] अति लम्बा।

भद्दिआ स्त्री [भद्रिका] शोभना। सुन्दर (स्त्री)। नगरी-विशेष।

भद्दिज्जिया स्त्री [भद्रीया, भद्रीयिका] एक जैन मुनि-शाखा।

भद्दिलपुर न[भद्दिलपुर] एक प्राचीन नगर।

भद्दुत्तरवडिंसग न [भद्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान।

भद्दुत्तर°, भद्दोत्तर°, भद्दोत्तरा } स्त्री [भद्रोत्तरा] प्रतिमा-विशेष, प्रतिज्ञा का एक भेद, एक तरह का व्रत।

भद्र देखो भद्द।

भप्प देखो भस्स = भस्मन्।

भम सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना।

भम पुं [भ्रम] भ्रमण। मोह, मिथ्या-ज्ञान।

भमग न [भ्रमक] लगातार एकतीस दिनों का उपवास।

भमड देखो भम = भ्रम्।

भममुह पुं [दे] आवर्त्त।

भमया स्त्री [भ्रू] भौंह।

भमर पुं [भ्रमर] भौंरा। पुं. छन्द-विशेष। विट, रंडीबाज। °रुअ पुं [°रुच] अनार्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देश-विशेष। °वलि स्त्री. छन्द-विशेष। भ्रमर-पंक्ति।

भमरटेंटा स्त्री [दे] भ्रमर जैसी अक्षिगोलक-वाली या अस्थिर आचरणवाली। शुष्क व्रण के दागवाली।

भमरिया स्त्री [भ्रमरिका] जन्तु-विशेष। बर्रे।

भमलिया, भमली स्त्री [भ्रमरीका, °री] पित्त से होनेवाला रोग।

भमस पुं [दे] ईख की तरह का घास।

भमाड, भमाव सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। देखो भम = भ्रम्।

भमाड पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर।

भमास [दे] देखो भमस।

भमि स्त्री [भ्रमि] आवर्त्त। चित्त-भ्रम करने की शक्ति। रोग-विशेष, चक्कर।

भमुह, भमुहा न. [भ्रू]। स्त्री. भौं।

भम्म, भम्मड देखो भम = भ्रम्।

भम्मर (अप) देखो भमर।

भय देखो भद।

भय अक [भज्] सेवा करना। विकल्प से करना। विभाग करना। ग्रहण करना।

भय न. डर, त्रास। °अर वि [°कर] भय-जनक। °जणणी स्त्री [°जननी] त्रास उत्पन्न करनेवाली। विद्या-विशेष। °वाह पुं. राक्षस-वंश का एक लंका-पति।

भय देखो भव।

भय देखो भग।

भयंकर वि. भय-जनक। हिंसा।

भयंत देखो भंत, भदंत।

भयंत, भयंतु वि [भयत्र] भय से रक्षा करनेवाला। [भयत्रातृ]।

भयंतु वि [भक्तृ] सेवक।

भयक, भयग पुं [भृतक] नौकर। वि. पोषित।

भयण न [भजन] सेवा। विकल्प। विभाग।

भयण देखो भवण।

भयप्पइ, भयप्फइ देखो बहस्सइ।

भयवग्गाम पुं [दे] मोढेरक गाँव।

भयाणय वि [भयानक] भय-जनक।

भयालि पुं. भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिन-देव का पूर्व-भवीय नाम।

भयालु वि [भीरु] भीरु।

भयावण, भयावह (अप) [भयानक] भय कारक।

भर सक [भृ] भरना। धारण करना। पोषण करना।

भर सक [स्मृ] स्मरण करना।

भर पुंन. समूह। बोझ। गुरुतर कार्य। प्रचुरता। कर की प्रचुरता। पूर्णता, सम्पूर्णता। मध्य भाग। जमावट।

भरअ देखो भरह।

भरड पुं [भरट] व्रती-विशेष।

भरण न. पूरना। पोषण। वस्त्र में बेल-बूटा बनाने का शिल्प।

भरणी स्त्री. नक्षत्र-विशेष।

भरध, भरह (शौ) पुं [भरत] आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती राजा। राजा रामचन्द्र का छोटा भाई। नाट्य-शास्त्र का कर्त्ता मुनि। भारतवर्ष। भारत वर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती। शबर। तन्तुवाय। नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र। भरत के वंशज राजा। नट। देव-विशेष। कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर। °खित्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष। °वास न [°वर्ष] भारतवर्ष, आर्यावर्त्त। °सत्थ न [°शास्त्र] भरतमुनि का नाट्यशास्त्र। °ाहिव पुं [°ाधिप] °हिवइ [°ाधिपति] भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती। भरत चक्रवर्ती।

भरहेसर पुं [भरतेश्वर] संपूर्ण भारतवर्ष का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा, चक्रवर्त्ती। चक्रवर्ती भरत।
भरिअ वि [भृत, भरित] पूर्ण, व्याप्त।
भरिउल्लट्ट वि [दे. भृतोल्लुठित] भर कर खाली किया हुआ।
भरिम वि. भर कर बनाया हुआ।
भरिया (अप) देखो भारिया।
भरिली स्त्री. चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष।
भरु पुं. अनार्य देश। अनार्य-जाति।
भरुअच्छ पुं. [भृगुकच्छ] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर।
भरोच्छय न [दे] ताल का फल।
भल देखो भर = स्मृ।
भल सक [भल्] सम्हालना।
भलंत वि [दे] स्खलित होता, गिरता।
भलि पुंस्त्री [दे] कदाग्रह।
भल्ल पुं [भल्ल] रीछ। पुंन. भाला।
भल्ल वि [भद्र] भला, उत्तम, अच्छा। °त्तण, °प्पण न [°त्व] भलाई।
भल्लाअय, भल्लातक, भल्लाय पुं [भल्लात, °क] भिलावा का पेड़। न. भिलावा का फल।
भल्लि स्त्री. देखो भल्ली।
भल्लिम पुंस्त्री [भद्रत्व] भलाई, भद्रता।
भल्ली स्त्री. भाला, अस्त्र-विशेष।
भल्लु पुंस्त्री [दे] भालू।
भल्लुंकी स्त्री [दे] शृगाली।
भल्लोड पुंन [दे] शर का अग्र भाग।
भव अक [भू] होना। सक. प्राप्त करना। देखो भव्व।
भव पुं. संसार। संसार का कारण। उत्पत्ति। नरकादि योनि, जन्म-स्थान। वि. भावी। उत्पन्न। न. देव-विमान-विशेष। °जिण वि [°जिन] रागादि जीतनेवाला। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] देव आदि योनि में उत्पत्ति की काल-मर्यादा। संसार में अवस्थान। °त्थ वि [°स्थ] संसार में स्थित। °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] जीवन्मुक्त। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त धारण करने योग्य शरीर। °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] नरकादि-योनि-हेतुक। न. अवधिज्ञान का भेद। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक कवि। °सिद्धिय, °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म में या बाद में मुक्ति-गामी। °ाभिणंदि, °ाहिणंदि वि [°ाभिनन्दिन्] संसार को पसंद करनेवाला। °ोवग्गाहि न [°ोपग्राहिन्] कर्म-विशेष।
भव देखो भव्व।
भव, भवंत पुं [भवत्] तुम, आप।
भवँ (अप) भम = भ्रम्।
भवण न [भवन] उत्पत्ति, जन्म। गृह, वसति। असुरकुमार आदि देवों का विमान। सत्ता। °वइ पुं [°पति], °वासि पुं [°वासिन्] एक देव-जाति। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी-विशेष। °ाहिव पुं [°ाधिप] एक देव-जाति।
भवर देखो भमर।
भवाणी स्त्री [भवानी] पार्वती। °कंत पुं [°कान्त] महादेव।
भवारिस वि [भवादृश] तुम्हारे जैसा।
भवि पुं [भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-गामी।
भविअ वि [भव्य] सुन्दर। श्रेष्ठ, उत्तम। मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी। भावी।
भविअ वि [भविक] मुक्ति-योग्य। संसारी।
°भविअ वि [°भविक] भव-सम्बन्धी।
भवित्ती स्त्री [भवित्री] होनेवाली।
भवियव्वया स्त्री [भवितव्यता] नियति।
भविल वि. निष्ठुर।
भविस (अप)। °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक।
भविस्स पुं [भविष्य] भविष्य काल। वि. भविष्य काल में होनेवाला।
भवीस (अप) ऊपर देखो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भव्व वि [भव्य] सुन्दर। उचित। उत्तम। वर्तमान। भावी। मुक्ति-योग्य। °सिद्धीय देखो भव-सिद्धीय।

भव्व पुं [दे] भागिनेय।

भस सक [भष्] भूँकना। श्वान का बोलना।

भसग पुं [भसक] एक राज-कुमार श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र।

भसण देखो भिसण।

भसण पुं [भषण] कुत्ता। न. उसका शब्द।

भसणअ (अप) वि [भषितृ] भूंकनेवाला।

भसम पुं [भस्मन्]। देखो भास = भस्मन्।

भसल देखो भमर।

भसुआ स्त्री [दे] सियारिन।

भसुम देखो भसम।

भसेल्ल पुंन [दे] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग।

भसोल न [दे. भसोल] एक नाट्य-विधि।

भस्थ (मा) देखो भट्ट।

भस्थालय (मा) देखो भट्टारय।

भस्स देखो भंस = भ्रंश्।

भस्स पुं [भस्मन्] ग्रह-विशेष। राख।

भस्सिअ वि [भस्मित] भस्म किया हुआ।

भा अक. चमकना, दीपना, प्रकाशना।

भा स्त्री. दीप्ति, कान्ति, तेज। °मंडल पुं [°मण्डल] राजा जनक का पुत्र। °वलय न. जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ पीछे का दीप्ति-मण्डल।

भा, भाअ } अक [भी] डरना।

भाअ सक [भायय्] डराना।

भाअ देखो भाव = भावय्।

भाअ पुं [भाग] योग्य-स्थान। एक देश। अंश, विभाग। भाग्य। °धेअ, °हेअ पुंन [°धेय] नसीब। राज-देय। दायाद, भागीदार। देखो भाग।

भाअ पुं [दे] ज्येष्ठ भगिनी का पति।

भाअ देखो भाव।

भाइ देखो भागि।

भाइ पुं [भ्रातृ] भाई, बन्धु। °बीया स्त्री [°द्वितीया] कार्तिक शुक्ल की भैयादूज। °सुअ पुं [°सुत] भतीजा। देखो भाउ।

भाइअ वि [भाजित] विभक्त किया हुआ, बाँटा हुआ। खण्डित।

भाइअ वि [भीत] डरा हुआ। न. भय।

भाइणिज्ज, भाइणेअ, भाइणेज्ज } पुंस्त्री [भागिनेय] भानजा।

भाइयव्व भा = भी का कृ.।

भाइर वि [भीरु] डरपोक।

भाइल्ल पुं [दे] किसान।

भाइहंड न [दे. भ्रातृभाण्ड] भाई, बहिन आदि स्वजन।

भाईरही स्त्री [भागीरथी] गंगा नदी।

भाउ पुं [भ्रातृ] भाई, बन्धु। °जाया, °ज्जाइया स्त्री [°जाया] भौजाई।

भाउअ देखो भाअ = (दे)।

भाउअ न [दे] आषाढ़ मास में मनाया जाता गौरी-पार्वती का एक उत्सव।

भाउज्जा स्त्री [दे] भाई की पत्नी।

भाउराअण पुं [भागुरायण] व्यक्ति-वाचक नाम।

भाग पुं. अंश। अचिन्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य। पूजा, भजन। भाग्य। प्रकार, भंगी। अवकाश। °धेअ, °धेज्ज, °हेअ देखो भाअहेअ। देखो भाअ = भाग।

भागवय वि [भागवत] भगवान्-सम्बन्धी। भगवान् का भक्त। न. एक ग्रन्थ।

भागि वि [भागिन्] भजनेवाला, सेवन करनेवाला। भागीदार।

भागिणेज्ज, भागिणेय } देखो भाइणेज्ज।

भागीरही देखो भाईरही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाज अक [भ्राज्] चमकना।
भाड पुंन [दे] भट्टी।
भाडय न [भाटक] किराया।
भाडिय वि [भाटकित] भाड़े पर लिया।
भाडिया } स्त्री [भाटिका, °टी] भाड़ा।
भाडी } °कम्म न [°कर्मन्] बैल, गाड़ी आदि भाड़े पर देने का काम—धन्धा।
भाण देखो भण = भण्।
भाण देखो भायण।
भाणिअ वि [भाणित] पढ़ाया हुआ, पाठित। कहलाया हुआ।
भाणु पुं [भानु] सूर्य। किरण। भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा। स्त्री. शक्र की एक अग्र-महिषी। °कण्ण पुं [°कर्ण] रावण का एक अनुज। °मई स्त्री [°मती] रावण की एक पत्नी। °मालिणी [°मालिनी] विद्या-विशेष। °मित्त न [°मित्र] उज्जयिनी के राजा बलमित्र का छोटा भाई। °वेग पुं. एक विद्याधर। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा बलमित्र की बहिन।
भाम देखो भमाड = भ्रमय्।
भामर न [भ्रामर] भ्रमरी का बनाया हुआ मधु। पुं. दोधक छन्द का एक भेद।
भामरी स्त्री [भ्रामरी] वीणा-विशेष। प्रदक्षिणा।
भामिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ। भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्तचित्त किया हुआ।
भामिणी स्त्री [भागिनी] भाग्यवाली।
भामिणी स्त्री [भामिनी] कोप-शीला स्त्री। महिला।
भाय देखो भाउ।
भायंत भा का वकृ.।
भायण पुंन [भाजन] पात्र। आधार। योग्य।
भायण न [भाजन] आकाश।
भायणंग पुं [भाजनाङ्ग] पात्र देनेवाले कल्प-वृक्ष की एक जाति।
भायणिज्ज देखो भाइणिज्ज।
भायर देखो भाउ।
भायल पुं [दे] उत्तम जाति का घोड़ा।
भार पुं. बोझा, गुरुत्व। भारवाली वस्तु। काम सम्पादन करने का अधिकार। परिमाण-विशेष। परिग्रह, धन-धान्य आदि का संग्रह। °ग्गसो अ [°ग्रशस्] भार-भार के परिमाण से। °वह वि. °विह वि. बोझा ढोनेवाला।
भारई स्त्री [भारती] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन। सरस्वती। देखो भारही।
भारदाय } न [भारद्वाज] गौतम गोत्र की
भारद्दाय } एक शाखा। पुं. उसमें उत्पन्न। पक्षि-विशेष। मुनिविशेष।
भारय देखो भार।
भारह न [भारत] भारतवर्ष। पाण्डव कौरवों का युद्ध। महाभारत। महाभारत ग्रन्थ। एक नाट्य-शास्त्र। वि. भारतवर्ष-सम्बन्धी। °खेत्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष।
भारहिय वि [भारतीय] भारत-सम्बन्धी।
भारही स्त्री [भारती]। देखो भारई।
भारिअ वि [भारिक] भारी, भारवाला, गुरु।
भारिअ वि [भारित] भारवाला, भारी। जिसपर भार लादा गया हो वह।
भारिआ देखो भज्जा।
भारिल्ल वि [भारवत्] भारी, बोझवाला।
भारुंड पुं [भारुण्ड] दो मुँह वाला पक्षी।
भाल न. ललाट।
भालुंकी [दे] देखो भल्लुंकी।
भाल्ल पुंन [दे] काम-पीड़ा।
भाव सक [भावय्] वासित करना, गुणाधान करना। चिन्तन करना।
भाव अक [भास्] दिखाना, लगना। पसन्द होना, उचित मालूम होना।
भाव पुं. पदार्थ, वस्तु। अभिप्राय, आशय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्त-विकार, मानस-विकृति। जन्म। पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम। धात्वर्थ-युक्त पदार्थ विवक्षित क्रिया का अनुभव करनेवाली वस्तु, पारमार्थिक पदार्थ। परमार्थ। स्वभाव, स्वरूप। सत्ता। ज्ञान, उपयोग। चेष्टा। क्रिया, धात्वर्थ। विधि, कर्तव्योपदेश। मन का परिणाम। अन्तरंग बहुमान, प्रेम। भावना, चिन्तन। नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चिन्तक पण्डित। आत्मा। अवस्था। °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष। °त्थ पुं [°ार्थ] तात्पर्य, रहस्य। °न्न, °न्नुय वि [°ज्ञ] अभिप्राय को जाननेवाला। °पाण पुं [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा का अन्तरंग गुण। °संजय पुं [°संयत]। °साहु पुं [°साधु] सच्चा साधु। °ासव पुं [°ास्रव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म का आगमन हो।

भाव पुं. महान् वादी, समर्थ विद्वान्।

भावअ वि [भावक] देखो भावग।

भावइया स्त्री [दे] धार्मिक-गृहिणी।

भावग वि [भावक] वासक पदार्थ, गुणाधायक वस्तु होनेवाला। देखो भावअ।

भावड पुं [भावक] एक जैन गृहस्थ।

भावण पुं [भावन] एक वणिक्। नीचे देखो।

भावणा स्त्री [भावना] वासना, गुणाधान, संस्कार-करण। अनुप्रेक्षा, चिन्तन। पर्यालोचन।

भावि वि [भाविन्] भविष्य में होनेवाला।

भाविअ वि [दे] गृहीत, उपात्त।

भाविअ न [भाविक] एक देव-विमान।

भाविअ वि [भावित] वासित। भाव-युक्त। निर्दोष। °प्प वि [°ात्मन्] वासित अन्तःकरणवाला। पुं. अहोरात्र का तेरहवाँ मुहूर्त। °प्पा स्त्री [°ात्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या।

भाविंदिअ न [भावेन्द्रिय] उपयोग, ज्ञान।

भाविर वि [भाविन्, भवितृ] अवश्यंभावी।

भाविल्ल वि [भाववत्] भाव-युक्त।

भाविस्स देखो भविस्स।

भावुक वि [दे] वयस्य।

भावुग } वि [भावुक] अन्य के संसर्ग की
भावुय } जिस पर असर हो वह वस्तु।

भास सक [भाष्] कहना, बोलना।

भास अक [भास्] शोभना। लगना, मालूम होना। प्रकाशना, चमकना।

भास सक [भीषय्] डराना।

भास पु पक्षि-विशेष। दीप्ति।

भास पुं [भस्मन्] ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष। भस्म। °रासि पुं [°राशि] ग्रह-विशेष।

भास न [भाष्य] पद्य-बद्ध टीका।

भास° देखो भासा। °ण्णु वि [°ज्ञ], °व वि [°वत्] भाषा के गुण-दोष का जानकार।

भासग वि [भाषक] प्रकाशक, वक्ता, प्रतिपादक।

भासण न [भाषण] कथन, प्रतिपादन।

भासय देखो भासग।

भासय वि [भासक] प्रकाशक।

भासल वि [दे] दीप्त, प्रज्वलित।

भासा स्त्री [भाषा] बोली। वाक्य, वाणी, वचन। °जड्ड वि [°जड] मूक। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को भाषा के रूप में परिणत करने की शक्ति। °विजय पुं [°विचय] भाषा का निर्णय। दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ। °विजय पुं. दृष्टिवाद। °समिअ वि [°समित] वाणी का संयमी। °समिइ स्त्री [°समिति] वाणी का संयम। देखो भास°।

भासा स्त्री [भास] प्रकाश, आलोक, दीप्ति।

भासिअ वि [भाषिन्, °क] वक्ता।

भासिअ वि [दे] दत्त, अर्पित।

भासिल्ल वि [भाषावत्] भाषा-युक्त, वाणी-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युक्त ।
भासीकय वि [भस्मीकृत] जलाकर राख किया हुआ ।
भासुंड अक [दे] बाहर निकलना ।
भासुर वि. भास्वर, चमकता । घोर । भीषण । एक देव-विमान । छन्द-विशेष ।
भि देखो °ब्भि ।
भिअप्पइ, भिअप्फइ, भिअस्सइ } देखो बहस्सइ ।
भिइ देखो भइ = भृति ।
भिउ पुं [भृगु] ऋषि-विशेष । पर्वत-सानु । शुक्र-ग्रह । महादेव । जमदग्नि । ऊँचा प्रदेश । भृगु का वंशज । रेखा, राजि । °कच्छ न. भड़ौच नगर ।
भिउड न [दे] शरीर का एक अंग ।
भिउडि, भिउडी } स्त्री [भृकुटि] भौं-भंग । पुं. भगवान् नेमिनाथ का शासनदेव ।
भिउर वि [भिदुर] विनश्वर ।
भिउव्व पुं [भार्गव] भृगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष ।
भिंग वि [दे] काला । नील, हरा । स्वीकृत ।
भिंग पुं [भृङ्ग] भ्रमर । पक्षि-विशेष । कीट-विशेष । अंगार, कोयला । कल्पवृक्ष की एक जाति । छन्द-विशेष । उपपति । भाँगरा का पेड़ । झारी । °णिभा स्त्री [°निभा] °प्पभा स्त्री [°प्रभा] पुष्करिणी-विशेष ।
भिंगा स्त्री [भृङ्गा] एक पुष्करिणी ।
भिंगार पुं [भृङ्गार] झारी । पक्षि-विशेष । स्वर्ण-मय । जल-पात्र ।
भिंगारी स्त्री [दे. भृङ्गारी] कीट-विशेष, चिरी, झिल्ली । मशक, डाँस ।
भिंजा स्त्री [दे] मालिश ।
भिंटिया स्त्री [दे. वृन्ताकी] भंटा का गाछ ।
भिंडिमाल, भिंभडवाल } पुं [भिन्दिपाल] शस्त्र-विशेष ।
भिंद सक [भिद्] तोड़ना । विभाग करना ।
भिंदिवाल (शौ) देखो भिंडिवाल ।
भिंभल देखो भिब्भल ।
भिंभसार पुं [भिम्भसार] देखो भंभसार ।
भिंभा स्त्री [भिम्भा] देखो भंभा ।
भिंभिसार पुं [भिम्भिसार] देखो भंभसार ।
भिंभी स्त्री [भिम्भी] वाद्य-विशेष, ढक्का ।
भिक्ख सक [भिक्ष्] भीख माँगना ।
भिक्ख न [भैक्ष] भीख । भिक्षा-समूह । °जीविअ वि [°जीविक] भिखमंगा ।
भिक्ख° देखो भिक्खा ।
भिक्खा स्त्री [भिक्षा] भीख, याचना । °यर वि [°चर] भिक्षुक । °यरिया स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिए पर्यटन । °लाभिय पुं [°लाभिक] भिक्षुक-विशेष ।
भिक्खाग, भिक्खाय } वि [भिक्षाक] भिक्षा से शरीर-निर्वाह करनेवाला ।
भिक्खु पुंस्त्री [भिक्षु] भिखारी । मुनि, संन्यासी, ऋषि । बौद्ध संन्यासी । स्त्री. °णी । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] साधु का अभिग्रह-विशेष । व्रत-विशेष । °पडिया स्त्री [°प्रतिज्ञा] साधु का उद्देश्य, साधु के निमित्त ।
भिक्खुंड देखो भिच्छुंड ।
भिक्खोंड देखो भिच्छुंड ।
भिखारि (अप) वि [भिक्षाकारिन्] भिखारी ।
भिगु देखो भिउ ।
भिगुडि देखो भिउडि ।
भिच्च पुं [भृत्य] नौकर । वि. अच्छी तरह पोषण करनेवाला । वि भरणीय, पोषणीय । °भाव पुं. नौकरी ।
भिच्छ° देखो भिक्ख° ।
भिच्छा देखो भिक्खा ।
भिच्छुंड वि [दे. भिक्षोण्ड] भिखारी । पुं. बौद्ध साधु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिज्ज न [भेद्य] कर-विशेष, दण्ड-विशेष ।
भिज्जा देखो भिज्झा ।
भिज्जिय देखो भिज्झिय ।
भिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ ।
भिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ का विषय, सुन्दर ।
भिट्ट सक [दे] भेंटना ।
भिट्टण } न [दे] भेंट, उपहार ।
भिट्टा } स्त्री. ।
भिड सक [दे] भिड़ना । मिलना, सटना ।
भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष ।
भिण्ण देखो भिन्न । °मरट्ठ (अप) पुं. [°महाराष्ट्र] एक छन्द ।
भित्त देखो भिच्च ।
भित्तग } न [दे. भित्तक] खण्ड, टुकड़ा ।
भित्तय } आधा हिस्सा ।
भित्तर न [दे] दरवाजा ।
भित्ति स्त्री. भीत । °संध न [°सन्ध] भीत—दीवार का संधान ।
भित्तिरूव वि [दे] टंक से छिन्न ।
भित्तिल न. एक देव-विमान ।
भित्तु वि [भेत्तृ] भेदन करनेवाला ।
भित्तु भिद का हेकृ ।
भित्तूण भिद का संकृ. ।
भिद देखो भिंद ।
भिन्न वि. विदारित, खण्डित । प्रस्फुटित । स्फोटित । विलक्षण । परित्यक्त । न्यून । °कहा स्त्री [°कथा] मैथुन-सम्बद्ध बात, रहस्यालाप । °पडवाइय वि [°पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञावाला । °मास पुं. पचीस दिन का महीना । °मुहुत्त न [°मुहूर्त्त] अन्तर्मुहूर्त्त ।
भिप्फ पुं [भीष्म] एक कुरुवंशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह । भयानक रस । वि. भय-जनक ।
भिब्भल वि [विह्वल] व्याकुल ।
भिब्भिस अक [भास् + यङ् = बाभास्य] अत्यन्त दीपना ।
भिमोर पुं [दे. हिमोर] हिम का मध्य भाग ।
भियग देखो भयग ।
भिलंग पुं [दे] म्रक्षण । देखो भिलिंज ।
भिलगा देखो भिलुगा ।
भिलिंग सक [दे] मालिश करना ।
भिलिंग } पुं [दे] धान्य-विशेष, मसूर ।
भिलिंगु }
भिलिंज पुं [दे] आपाद-मस्तक-तैल-मर्दन ।
भिलुंग पुं [दे. भिलुङ्क] हिंसक पक्षी ।
भिलुगा स्त्री [दे] फटी जमीन, भूमि की फाट ।
भिल्ल पुं. अनार्य देश या जाति ।
भिल्लमाल पुं. क्षत्रिय-वंश ।
भिल्लायई स्त्री [भल्लातकी] भिलावाँ का पेड़ ।
भिल्लिअ स्त्री [भिलित] खण्डित, तोड़ा हुआ ।
भिस देखो भास = भास् ।
भिस सक [प्लुष्] जलाना ।
भिस सक [भायय्] डराना ।
भिस न [भृश] अत्यन्त, अतिशय ।
भिस देखो बिस । °कंदय पुं [°कन्दक] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु । °मुणाली स्त्री [°मृणाली] कमलिनी ।
भिसअ पुं [भिषज्] वैद्य । भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर ।
भिसंत न [दे] अनर्थ ।
भिसग देखो भिसअ ।
भिसण सक [दे] फेंकना, डालना ।
भिसरा स्त्री [दे] मत्स्य पकड़ने का जाल ।
भिसाव सक [भायय्] डराना ।
भिसिआ } स्त्री [दे. बृषिका] आसन-
भिसिगा } विशेष, ऋषि का आसन ।
भिसिण देखो भिसण ।
भिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिसी स्त्री [बृषी] देखो भिसिआ।

भिसोल न [दे] नृत्य-विशेष।

भिह } अक [भी] डरना।
भी }

भी स्त्री. भय। वि. डरनेवाला।

भीअ वि [भीत] डरा हुआ। °भीय वि [°भीत] अत्यन्त डरा हुआ।

भीइ स्त्री [भीति]भय।

भीड [दे] देखो भिड।

भीतर [दे] देखो भित्तर।

भीम वि [भीम] भयंकर। पुं. पाण्डव भीमसेन। राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र। भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव। लंकापति, राक्षसवंश का राजा। सगर चक्रवर्त्ती का पुत्र। दमयंती का पिता। एक कुल-पुत्र। गुजरात का चालुक्य-वंशीय राजा भीमदेव। हस्तिनापुर नगर का कूटग्राह राजपुरुष। °एव पुं [°देव] गुजरात का चालुक्य राजा। °कुमार पुं. एक राज-पुत्र। °प्पभ पुं [°प्रभ] राक्षस-वंश का राजा, लंका-पति। °रह पुं [°रथ] राजा, दमयंती का पिता। °सेण पुं [°सेन] पाण्डव भीम। कुलकर पुरुष। °ावलि पुं. अंग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष। °ासुर न. शास्त्र-विशेष।

भीमासुरक्क न [भीमासुरोक्त, °रीय] एक जैनेतर प्राचीन शास्त्र।

भीरु वि [भीरु] डरपोक।

भीस सक [भीषय्] डराना।

भीसण वि [भीषण] भयंकर।

भीसय देखो भेसग।

भीसाव देखो भीस।

भीहृ अक [भी] डरना।

भुअ देखो भुंज।

भुअ न [दे] भूर्ज-पत्र। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] भूर्जपत्र का पेड़। °वत्त न [°पत्र] भोजपत्र।

भुअ पुंस्त्री [भुज] हाथ। गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष। °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] हाथ से चलनेवाला प्राणी, सर्पजाति। °मूल न. काँख। °मोयग पुं [°मोचक] रत्न की एक जाति। °सप्प पुं [°सर्प] देखो °परिसप्प। °ाल वि [°वत्] बलवान् हाथवाला।

भुअअ देखो भुअग।

भुअइंद पुं [भुजगेन्द्र] श्रेष्ठ सर्प। शेषनाग, वासुकि। °पुरेस पुं [°पुरेश] श्रीकृष्ण।

भुअईसर } पुं [भुजगेश्वर] ऊपर देखो।
भुअएसर } °णअरणाह पुं [°नगरनाथ] श्रीकृष्ण।

भुअंग पुं [भुजंग] साँप। विट, वेश्या-गामी। उपपति। जुआड़ी। चोर। बदमाश, ठग। °कित्ति स्त्री [°कृत्ति] कंचुक। °पआत (अप)। °प्पजाय न [°प्रयात] सर्प-गति। छन्द-विशेष। °राअ पुं [°राज], °वइ पुं [°पति] शेषनाग। °पआअ (अप) देखो °प्पजाय।

भुअंगम पुं [भुजंगम] सर्प। एक चोर।

भुअंगिणी } स्त्री [भुजङ्गी] विद्या-विशेष।
भुअंगी } नागिन।

भुअग पुं [भुजग] साँप। नाग-कुमार देव-जाति। वानव्यंतर, महोरग-जाति। रंडीबाज। वि. विलासी। °परिरिंगिअ न [°परिरिङ्गत] छन्द-विशेष। °वई स्त्री [°वती] इन्द्राणी, अतिकाय नामक महोरगेन्द्र की अग्र-महिषी। °वर पुं. द्वीप-विशेष।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक।

भुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, अति-काय इन्द्र की अग्र-महिषी।

भुअगीसर देखो भुअईसर।

भुअण देखो भुवण।

भुअप्पइ }
भुअप्फइ } देखो बहस्सइ।
भुअस्सइ }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुआ देखो भुअ = भुज।
भुइ स्त्री [भृति] पोषण। वेतन। मूल्य।
भुउडि देखो भिउडि।
भुंगल न [दे] वाद्य-विशेष।
भुंज सक [भुज्] भोजन करना। पालन करना। भोग करना। अनुभव करना।
भुंजग } वि [भोजक] भोजन करनेवाला।
भुंजय }
भुंजाव सक [भोजय्] भोजन कराना। पालन कराना। भोग कराना।
भुंजावय वि [भोजक] भोजन करानेवाला।
भुंड } पुंस्त्री [दे] सूकर, वराह।
भुंडीर }
भुंभल न [दे] मद्य-पात्र।
भुंहडि (अप) देखो भूमि।
भुक्क अक [बुक्क्] श्वान का भूंकना।
भुक्कण पुं [दे] कुत्ता। मद्य आदि का मान।
भुक्खा स्त्री [दे. बुभुक्षा] क्षुधा। °लु वि [°वत्] भूखा।
भुक्खिअ वि [दे. बुभुक्षित] भूखा।
भुगुभुग अक [भुगभुगाय्] 'भुग' 'भुग' आवाज करना।
भुग्ग वि [भुग्न] मोड़ा हुआ, वक्र, कुटिल। वि. भग्न। दग्ध। भूना हुआ।
भुज (अप) देखो भुंज।
भुजंग देखो भुअंग।
भुजग देखो भुअग = भुजग।
भुज्ज देखो भुंज।
भुज्ज पुं [भूर्ज] वृक्ष-विशेष। न. उस की छाल। °पत्त, °वत्त न [°पत्र] वही अर्थ।
भुज्ज देखो भुंज।
भुज्ज वि [भूयस्] प्रभूत।
भुज्जिय वि [दे. भुग्न] भूना हुआ धान्य।
भुज्जो अक [भूयस्] फिर।
भुण्ण पुं [भ्रूण] स्त्री का गर्भ। शिशु।
भुत्त वि [भुक्त] भक्षित। जिसने भोजन किया हो। सेवित। अनुभूत। न. भक्षण, भोजन। विष-विशेष। °भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगों का सेवन किया हो।
भुत्तव्व देखो भुंज का कृ.।
भुत्ति स्त्री [भुक्ति] भोजन। भोग। आजीविका के लिए दिया जाता गाँव, क्षेत्र आदि गिरास। °वाल पुं [°पाल] गिरासदार।
भुत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला।
भुत्तूण पुं [दे] भृत्य।
भुत्थल पुं [दे] बिल्ली को फेंका जाता भोजन।
भुम देखो भम = भ्रम्।
भुम° }
भुमया } स्त्री [भ्रू] भौं।
भुमा }
भुम्मि (अप) देखो भूमि।
भुरुंडिआ स्त्री [दे] शृगाली।
भुरुंडिय }
भुरुकुंडिअ } वि [दे] उद्धूलित, धूलि-लिप्त।
भुरुहुंडिअ }
भुल्ल अक [भ्रंश्] गिरना। भूलना।
भुल्ल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ।
भुल्लविअ वि [भ्रंशित] भ्रष्ट किया हुआ।
भुल्लुंकी [दे] देखो भल्लुंकी।
भुव देखो हुव = भू।
भुव देखो भुअ = भुज।
भुवइंद देखो भुअइंद।
भुवण न [भुवन] जगत्। जीव, प्राणी। आकाश। °क्खोहणी स्त्री [°क्षोभनी] विद्या-विशेष। °गुरु पुं. जगत् का गुरु। °नाह पुं [°नाथ] जगत् का त्राता। °पाल पुं. बारहवीं शताब्दी का गोपगिरि का राजा। °बंधु पुं [°बन्धु] जगत् का बन्धु। जिनदेव। °सोह पुं [°शोभ] सातवें बलदेव के दीक्षक जैन मुनि। °लंकार पुं. रावण का पट्ट-हस्ती।
भुवणा स्त्री [भुवना] विद्या-विशेष।
भुस्का (मा) देखो भुक्खा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुस देखो बुस ।

भुसुंढि स्त्री [दे. भुशुण्डि] शस्त्र-विशेष ।

भू देखो भुव = भू ।

भू स्त्री [भ्रू] भौं ।

भू स्त्री. पृथिवी । पृथ्वीकाय, पार्थिव शरीर-वाला जीव । °आर पुं [°दार] सूअर । °कंत पुं [°कान्त] राजा । °गोल पुं. गोलाकार भूमण्डल । °चंद पुं [°चन्द्र] पृथिवी का चन्द्र । °चर वि. भूमि पर चलने-फिरनेवाला मनुष्य आदि । °च्छत्त पुंन [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष । °तणग देखो °यणय । °धण पुं [°धन] राजा । °धर पुं नरपति । पर्वत । °नाह पुं [°नाथ] राजा । °मह पुं अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त्त । °यणय पुंन [°तृणक] वनस्पति-विशेष । °रुह पुं. वृक्ष । °व पुं [°प] । °वइ पुं [°पति] राजा । °वाल पुं [°पाल] राजा । व्यक्ति-वाचक नाम । °वित्त पुं [°वित्त] राजा । °वीढ न [°पीठ] भूमि-तल । °हर देखो °धर ।

भू° } पुं [भूयस्] । °गार पुं [°कार] कर्म-
भूअ } बन्ध का एक प्रकार । देखो भूओ-गार ।

भूअ पुं [दे] यन्त्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष ।

भूअ वि [भूत] वृत्त, संजात, बना हुआ । अतीत । प्राप्त । समान, सदृश । वास्तविक, सत्य । विद्यमान । उपमा, औपम्य । तदर्थ-भाव । न. प्रकृत्यर्थ । पुं. एक देव-जाति । पिशाच । समुद्र-विशेष । द्वीप-विशेष । पुंन. जन्तु, प्राणी । पृथिवी आदि पाँच महाभूत । पेड़, वनस्पति । °इंद पुं [°इन्द्र] भूत-देवों का इन्द्र । °ग्गह पुं [°ग्रह] भूत का आवेश । °ग्गाम पुं [°ग्राम] जीव-समूह । °त्थ वि [°ार्थ] यथार्थ । °दिन्न पुं [°दिन्न] एक जैन आचार्य । एक चाण्डाल-नायक । °दिन्ना स्त्री. एक अन्तकृत् स्त्री । महर्षि स्थूलभद्र की भगिनी । जैन साध्वी । °मंडलपविभत्ति न [°मण्डलप्रविभक्ति] नाट्य-विधि का भेद । °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष । °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] एक इन्द्राणी । एक राजधानी । °वाइ, °वाइय, °वादिय पुं [°वादिन्, °वादिक] एक देव-जाति । वि. भूत-ग्रह का उपचार करनेवाला, मन्त्र-तन्त्रादि का जानकार । °वाय पुं [°वाद] यथार्थवाद । दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ। °विज्जा, °वेज्जा स्त्री [°विद्या] आयुर्वेद की भूत-निग्रह-विद्या । °ाणंद पुं [°ानन्द] नागकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र । राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती । °ाणंदप्पह पुं [°ानन्दप्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत । °ावाय देखो °वाय ।

भूअण्ण पुं [दे] जोती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ ।

भूआ स्त्री [भूता] महर्षि स्थूलभद्र की भगिनी, जैन साध्वी । इन्द्राणी की एक राजधानी ।

भूइ स्त्री [भूति] सम्पत्ति । भस्म, राख । महादेव के अंग की भस्म । वृद्धि । जीव-रक्षा । °कम्म पुंन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपन-सूत्रबंधनादि । °पण्ण वि [°प्रज्ञ] जीव-रक्षा की बुद्धिवाला । ज्ञान की वृद्धिवाला, अनन्तज्ञानी । देखो °भूई ।

भूइंद पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र ।

भूइट्ठ वि [भूयिष्ठ] अत्यन्त ।

भूइट्ठा स्त्री [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि ।

भूई° देखो भूइ । °कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करनेवाला ।

भूओ अ [भूयस्] पुनः । फिर-फिर । °गार पुं [°कार] थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होनेवाला अधिक-प्रकृति-बन्ध ।

भूओद पुं [भूतोद] समुद्र-विशेष ।

भूओवघाइय वि [भूतोपघातिन्, °क] जीवों की हिंसा करनेवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूंहडी (अप) देखो भूमि।

भूज देखो भुज्ज = भूर्ज।

भूण देखो भुण्ण।

भूप देखो भू-व।

भूमआ देखो भुमया।

भूमणया स्त्री [दे] स्थगन, आच्छादन।

भूमि स्त्री. पृथिवी, क्षेत्र। स्थल, जमीन। काल। मंजिला। °कंप पुं [°कम्प] भू-कम्प। °गिह, °घर न [°गृह] भुंइघरा, तहखाना। °गोयरिय वि [°गोचरिक] स्थलचर, मनुष्य आदि। °च्छत्त न [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष। °तल न. धरा-पृष्ठ। °देव पुं. ब्राह्मण। °फोड पुं [°स्फोट] वनस्पति-विशेष। °फोडी स्त्री [°स्फोटी] एक प्रकार का जहरीला जन्तु। °भाग पुं. भूमि-प्रदेश। °रुह पुंन. भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष। °वई पुं [°पति]। °वाल पुं [°पाल] राजा। °सुअ पुं [°सुत] मंगल-ग्रह। °हर देखो °घर। देखो भूमी।

भूमिआ स्त्री [भूमिका] मंजिल, माल। नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण।

भूमिंद पुं [भूमीन्द्र] राजा।

भूमिपिसाय पुं [दे. भूमिपिशाच] ताड़ का पेड़।

भूमी देखो भूमि। [°तुडयकूड] न [°तुडग-कूट] एक विद्याधर-नगर। भुयंग पुं [°भुजङ्ग] राजा।

भूमीस पुं [भूमीश] राजा।

भूमीसर पुं [भूमीश्वर] राजा।

भूयिट्ठ देखो भूइट्ठ।

भूरि वि. प्रचुर, अत्यन्त। न. स्वर्ण। धन। °स्सव पुं[°श्रवस्]चन्द्रवंशीय राजा भूरिश्रवा।

भूस सक [भूषय्] शोभाना।

भूसण } न [भूषण] अलंकार, सजावट।
भूसा } स्त्री [भूषा]।

भूहरी स्त्री [दे] तिलक-विशेष।

भे अ [भोस्] आमन्त्रण-सूचक अव्यय।

भेअ पुंन [भेद] प्रकार। विशेष, पार्थक्य। एक राजनीति, फूट। घाव, आघात। मण्डल का अवान्तराल, बीच का भाग। विच्छेद, विदारण, विनाश। °कर वि. विच्छेद-कर्ता। °घाय पुं [°घात] मंडल के बीच में गमन। °समावन्न वि [°समापन्न] भेद-प्राप्त।

भेअग वि [भेदक] भेद-कारक।

भेअय देखो भेअग।

भेइल्ल वि [भेदवत्] भेद वाला।

भेउर देखो भिउर।

भेंडी स्त्री [भिण्डा, °ण्डी] एक वनस्पति।

भेंभल देखो भिंभल।

भेक देखो भेग।

भेक्खस पुं [दे] राक्षस का प्रतिपक्षी।

भेग पुं [भेक] मेंढक।

भेच्छ° देखो भिंद।

भेज्ज देखो भिज्ज।

भेज्ज }
भेज्जलय } वि [दे] भीरु।
भेज्जल्ल }

भेड वि [दे. भेर] भीरु।

भेडक देखो भेलय।

भेत्तु वि [भेत्तृ] भेदन-कर्ता।

भेत्तुआण } भिंद का संकृ.।
भेत्तूण }

भेद देखो भिंद।

भेद देखो भेअ।

भेदिअ वि [भेदित] भिन्न किया हुआ।

भेरंड पुं [भेरण्ड] देश-विशेष।

भेरव न [भैरव] भय। पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी। देखो भइरव। °णंद पुं [°नन्द] एक योगी।

भेरि } स्त्री. वाद्य-विशेष, ढक्का।
भेरी }

भेरुंड पुं [भेरुण्ड] भारुंड पक्षी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भेरुंड पुं [दे] चीता, श्वापद। निर्विष सर्प।
भेरुताल पुं. वृक्ष-विशेष।
भेल सक [भेलय्] मिश्रण करना, मिलाना।
भेलय पुं [दे. भेलक] बेड़ा, नौका।
भेलविय वि [भेलित] मिश्रित, युक्त।
भेली स्त्री [दे] आज्ञा। बेड़ा। नौका। दासी।
भेस सक [भेषय्] डराना।
भेसग पुं [भीष्मक] रुक्मिणी का पिता, कौण्डिन्य-नगर का एक राजा।
भेसज } न [भैषज]।
भेसज्ज } [भैषज्य] औषध, दवाई।
भेसण देखो भीसण।
भो देखो भुंज।
भो अ [भोस्] आमन्त्रण-द्योतक अव्यय।
भो° स [भवत्] तुम, आप।
भोअ सक [भोजय्] खिलाना, भोजन कराना।
भोअ पुं [दे. भोग] भाड़ा, किराया।
भोअ देखो भोग।
भोअ पुं [भोज],°राय पुं [°राज] उज्जयिनी नगरी का सुप्रसिद्ध राजा।
भोअ वि [भौत] भस्म से उपलिप्त।
भोअग वि [भोजक] खानेवाला, पालक।
भोअडा स्त्री [दे] कच्छ, लंगोट।
भोअण न [भोजन] भक्षण। भात आदि खाद्य वस्तु। सतरह दिनों का उपवास। उपभोग। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] भोजन देनेवाली एक कल्पवृक्ष-जाति।
भोअल (अप) पुं [दे. भोल] छन्द-विशेष।
भोइ वि [भोजिन्] भोजन करनेवाला।
भोइ देखो भोगि।
भोइ } पुं [दे. भोगिन्, °क] ग्राम का
भोइअ } मुखिया। महेश।
भोइअ वि [भोगिक] भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी। भोग-वंश में उत्पन्न।
भोइअ वि [भोजित] जिसे भोजन कराया हो।
भोइणी स्त्री [दे. भोगिनी] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी।
भोइया } स्त्री [भोग्या] भार्या। वेश्या।
भोई }
भोई देखो भो° = भवत्।
भोंड देखो भुंड।
भोक्ख° देखो भुंज।
भोग पुंन स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ। विषय-सेवा। मदन-व्यापार। विषयाभिलाष। विषय-सुख। भोजन। गुरु-स्थानीय। एक क्षत्रिय-कुल। अमात्य आदि गुरु-वंश में उत्पन्न। शरीर। सर्प की फणा। सर्प का शरीर। °करा देखो °भोगंकरा। °कुल न. पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष। °पुर न. नगर-विशेष। °पुरिस पुं [°पुरुष] भोग-तत्पर पुरुष। °भागि वि [°भागिन्] भोग-शाली। °भूम वि. भोग-भूमि में उत्पन्न। °भूमि स्त्री. देवकुरु आदि अकर्म-भूमि। °भाग पुंन [°भोग] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। °राय पुं [°राज] भोग-कुल का राजा। °वइया स्त्री [°वतिका] लिपि-विशेष। °वई स्त्री [°वती] अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। पक्ष की दूसरी, सातवीं और बारहवीं रात्रि-तिथि। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति।
भोगंकरा स्त्री [भोगंकरा] अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी।
भोगा स्त्री [भोगा] देवी-विशेष।
भोगि पुं [भोगिन्] सर्प। पुंन. शरीर। वि. भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी।
भोग्ग भुंज का कृ.।
भोच्चा भुंज का संकृ.।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोच्छ भुंज का भवि.।
भोज्ज भुंज का कृ.।
भोट्टंत पुं [भोटान्त] भोटान देश। वहाँ का रहनेवाला।
भोण देखो भोअण।
भोत्त देखो भुत्त।
भोत्तए भुंज का हेकृ.।
भोत्तव्व भुंज का कृ.।
भोत्ता भू = भुव = भू का संकृ.।
भोत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला।
भोत्तुं भुंज का हेकृ.।
भोत्तूण भुंज का संकृ.।
भोत्तूण देखो भुत्तूण।
भोदूण भू = भुव = भू का संकृ.।
भोम वि [भौम] भूमि-सम्बन्धी। भूमि में उत्पन्न। भूमि का विकार। पुं. मंगल-ग्रह। पुं. नगराकार विशिष्ट स्थान। नगर। भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र। अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त। °लिय न [°लीक] भूमि-सम्बन्धी मृषावाद।
भोमिज्ज देखो भोमेज्ज।
भोमिर देखो भमिर।
भोमेज्ज } वि [भौमेय] भूमि का विकार।
भोमेयग } पार्थिव। पुं. भवनपति देवजाति।
भोरुड पुं [दे] भारुंड पक्षी।
भोल सक [दे] ठगना।
भोल वि [दे] भद्र, सरल चित्तवाला।
भोलग पुं [भोलक] यक्ष-विशेष।
भोलव सक [दे] ठगना।
भोल्लय न [दे] प्रबन्ध-प्रवृत्त पाथेय।
भोवाल (अप) देखो भू-वाल।
भोहा (अप) देखो भू = भ्रू।
भ्रंत्रि (अप) भंति = भ्रान्ति।

म

म पुं. ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष।
म अ [मा] मत, नहीं।
मअआ स्त्री [मृगया] शिकार।
मइ स्त्री [मृति] मौत।
मइ स्त्री [मति] बुद्धि। इन्द्रिय और मन से होनेवाला ज्ञान। °अन्नाण न [°अज्ञान] विपरीत या मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान। °णाण, °ण्णाण न [°ज्ञान] ज्ञान-विशेष। °नाणावरण न [°ज्ञानावरण] मति-ज्ञान का आवरक कर्म। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति-ज्ञानवाला। °पत्तिया स्त्री [°पात्रिका] एक जैन मुनि-शाखा। °ब्भंस पुं [°भ्रंश] बुद्धि-विनाश। °म, °मंत, °वंत वि [°मत्] बुद्धिमान्।
मइ° देखो मई = मृगी।
मइअ वि [मत्त] मद-युक्त, उन्मत्त।
मइअ देखो मा = मा।
मइअ वि [दे. मतिक] भर्त्सित। न. बोये हुए बीजों के आच्छादन का काष्ठ-मय खेती का एक औजार। °मइअ वि [°मय] तद्धित-प्रत्यय, निवृत्त, बना हुआ।
मइआ स्त्री [मृगया] शिकार।
मइंद पुं [मैन्द] राम का एक सैनिक वानर।
मइंद पुं [मृगेन्द्र] सिंह। एक छन्द।
मइज्ज देखो मईअ = मदीय।
मइमोहणी } स्त्री [दे. मतिमोहनी] मदिरा। स्त्री [मदिरा]।
मइरा } न [मैरेय]।
मइरेय }
मइल वि [मलिन] मैला, मल, अस्वच्छ।
मइल पुं [दे] कलकल, कोलाहल।
मइल वि [दे. मलिन] तेज-रहित, फीका।
मइल सक [मलिनय्] मलिन बनाना।

कलंकित करना ।

मइल अक [दे. मलिनाय्] फीका लगना ।

मइलपुत्ती स्त्री [दे] पुष्पवती, रजस्वला स्त्री ।

मइल्ल वि [मृत] मरा हुआ ।

मइहर पुं [दे] ग्राम-प्रधान । देखो मयहर ।

मई स्त्री [दे] दारू ।

मई स्त्री [मृगी] हिरनी ।

मई° देखो मइ = मति ।

मईअ वि [मदीय] मेरा, अपना ।

मउ पुं [दे] पर्वत ।

मउ वि [°मृदु] कोमल, सुकुमार ।

मउअ वि [दे] गरीब ।

मउइअ वि [मृदुकित] जो मृदु बना हो ।

मउई देखो मउ = मृदु ।

मउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, श्रीकृष्ण । वाद्य-विशेष ।

मउक्क देखो माउक्क = मृदुत्व ।

मउड पुंन [मुकुट] शिरा-भूषण, किरीट ।

मउड, मउडि पुं [दे] धम्मिल्ल, कबरी, जूट, जूड़ा ।

मउण देखो मोण ।

मउर पुंन [मुकुर] फूल की कली, बौर । दर्पण । कुलाल-दण्ड । बकुल । मल्लिका, कोली या ग्रंथि पर्ण-वृक्ष, चोरक ।

मउर, मउरंद पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, ओंगा, लटजीरा, चिरचिरा ।

मउल देखो मउड = मुकुट ।

मउल पुंन [मुकुल] थोड़ी विकसित कली, कलिका, बौर । देह, आत्मा ।

मउल अक [मुकुलय्] संकुचित होना ।

मउलाअ अक [मुकुलय्] सकुचना । सक. संकुचित करना ।

मउलाव देखो मउलाअ ।

मउलावअ वि [मुकुलायक] संकुचित कर्ता ।

मउलि पुंस्त्री [दे] हृदय-रस का उच्छलन ।

मउलि पुं [मुकुलिन्] सर्प-विशेष ।

मउलि पुंस्त्री [मौलि] मुकुट । मस्तक । शिरो-वेष्टन, पगड़ी । जूड़ा, चोटी । संयत केश । पुं अशोक वृक्ष । स्त्री. भूमि ।

मउलिअ वि [मुकुलित] संकुचित । मुकुला-कार किया हुआ । एकत्र स्थित । कलिका-सहित ।

मउवी देखो मउई ।

मऊर पुंस्त्री [मयूर] मोर पक्षी । °माल न. एक नगर ।

मऊरा स्त्री [मयूरा] एक रानी, महापद्म चक्र-वर्ती की माता ।

मऊह पुं [मयूख] किरण । कान्ति, तेज । शिखा । शोभा । राक्षस वंश एक राजा लंका-पति ।

मए सक [मदय्] उन्मत्त बनाना ।

मएजारिस वि [मादृश] मेरे जैसा ।

मं (अप) देखो म । °कार पुं. 'मा' अव्यय ।

मंकड देखो मक्कड ।

मंकण पुं [मत्कुण] क्षुद्र कीट, खटमल ।

मंकण पुंस्त्री [दे. मर्कट] वानर ।

मंकाइ पुं [मङ्काति] एक अन्तकृद् महर्षि ।

मंकार पुं [मकार] 'म' अक्षर ।

मंकिअ न [मङ्कित] कूद कर जाना ।

मंकुण देखो मंकण = मत्कुण । °हत्थि पुं [°हस्तिन्] गण्डीपद प्राणि-विशेष ।

मंकुस [दे] देखो मंगुस ।

मंख देखो मक्ख = म्रक्ष् ।

मंख पुं [दे] अण्ड, वृषण ।

मंख पुं [मङ्ख] एक भिक्षुक-जाति जो चित्रपट दिखाकर जीवन-निर्वाह करता है । °फलय न [°फलक] मंख का तख्ता । निर्वाह-हेतुक चैत्य ।

मंखण न [म्रक्षण] मक्खन, मालिश ।

मंखलि पुं [मङ्खलि] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता । °पुत्त पुं [°पुत्र] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर का शिष्य था ।

मंग सक [मङ्ग्] जाना । साधना । जानना ।

मंग पुं [मङ्ग] धर्म । रंग के काम में आता एक द्रव्य ।

मंगइय देखो मगइय ।

मंगरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।

मंगल पुं [मङ्गल] अंगारक ग्रह । न. कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेय । विवाह सूत्र-बन्धन । विघ्न-क्षय । विघ्नक्षय के लिए इष्टदेव-नमस्कार आदि शुभ कार्य । विघ्न-क्षय का कारण । प्रशंसावाक्य । इष्टार्थ-सिद्धि । आयंबिल तप । आठ दिनों का उपवास । वि. इष्टार्थ-साधक । °ज्झय पुं [°ध्वज] मांगलिक ध्वज । °तूर न [°तूर्य] मंगल-वाद्य । °दीव पुं [°दीप] मन्दिर में आरती के बाद किया जाता दीपक । °पाढय पुं [°पाठक] मागध । °पाढिया स्त्री [°पाठिका] देवता के आगे सुबह और सन्ध्या में बजाई जाती वीणा ।

मंगल वि [दे] समान । न. अग्नि । डोरा बुनने का एक साधन । वन्दनमाला ।

मंगलग पुंन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक पदार्थ ।

मंगलसज्झ न [दे] वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो ।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता ।

मंगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी ।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस पर्वत का एक कूट ।

मंगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष ।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष । देव-विशेष । न. एक देव-विमान । एक शिखर ।

मंगलिअ, मंगलीअ } वि [माङ्गलिक] मंगल-जनक । प्रशंसा-वाक्य बोलनेवाला ।

मंगल्ल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगलकारी ।

मंगी स्त्री [मङ्गी] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ।

मंगु पुं [मङ्गु] जैन आचार्य आर्यमंगु ।

मंगुल न [दे] अनिष्ट । पाप । पुं. चोर । वि असुन्दर ।

मंगुस पुं [दे] नकुल, भुजपरिसर्प-विशेष ।

मंच पुं [दे] बन्ध ।

मंच पुं [मञ्च] मचान, उच्चासन । गणित-शास्त्र का तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मंचाकार से रहते हैं । °इमंच पुं [°ातिमञ्च] मचान के ऊपर का मंच । गणित-प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए मंचों के आकार से अवस्थित होते हैं ।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट ।

मंछुडु (अप) अ [मङ्क्षु] शीघ्र ।

मंजर पुं [मार्जार] मंजार, बिल्ला, बिलाव ।

मंजरि स्त्री [मञ्जरि] देखो मंजरी ।

मंजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त ।

मंजरिआ, मंजरी } स्त्री [मञ्जरिका, °री] नवोत्पन्न सुकुमार पल्लवाकार लता, बौर । °गुंडी स्त्री [°गुण्डी] वल्ली-विशेष ।

मंजार देखो मंजर ।

मंजिआ स्त्री [दे] तुलसी ।

मंजिट्ठ वि [माञ्जिष्ठ] मजीठ रंगवाला ।

मंजिट्ठा स्त्री [मञ्जिष्ठा] मजीठ, रंग-विशेष ।

मंजीर न [मञ्जीर] नूपुर । छन्द-विशेष ।

मंजीर न [दे] साँकल, जंजीर, सिकड़ ।

मंजु वि [मञ्जु] सुन्दर । कोमल । इष्ट ।

मंजुआ स्त्री [दे] तुलसी ।

मंजुल वि [मञ्जुल] रमणीय, मधुर । कोमल ।

मंजुसा, मंजूसा } स्त्री [मञ्जूषा] विदेह वर्ष की एक नगरी । छोटी संदूक ।

मंठ वि [दे] लुच्चा, बदमाश । पुं. बन्ध ।

मंड सक [मण्ड्] भूषित करना, सजाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंड सक [दे] आगे धरना। प्रारम्भ करना।

मंड पुंन [मण्ड] रस।

मंडअ देखो मंडव = मण्डप।

मंडअ } पुं [मण्डक] खाद्य-विशेष, माँडा, एक प्रकार की रोटी।
मंडग }

मंडग वि [मण्डक] शोभा बढ़ानेवाला।

मंडण न [मण्डन] भूषण। वि. शोभा बढ़ानेवाला। °धाई स्त्री [°धात्री] आभूषण पहनानेवाली दासी।

मंडल पुं [दे. मण्डल] श्वान।

मंडल न [मण्डल] समूह। देश। वृत्ताकार पदार्थ। गोल आकारसे वेष्टन। चन्द्र-सूर्य आदि आदि का चार-क्षेत्र। संसार। एक कुष्ठ रोग। एक वृत्ताकार दाद—दद्रु। बिम्ब। सुभटों का स्थान-विशेष। मण्डलाकार परिभ्रमण। इंगित क्षेत्र। पुं. नरकावास-विशेष। °व वि [°वत्] मण्डल में परिभ्रमण करनेवाला। °ाहिव पुं [°ाधिप]। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] मण्डलाधीश।

मंडल पुंन [मण्डल] योद्धा का युद्ध समय का आसन। °पवेस पुं [°प्रवेश] एक प्राचीन जैन शास्त्र।

मंडलग्ग पुंन [मण्डलाग्र] तलवार, खड्ग।

मंडलय पुं [मण्डलक] एक माप, बारह कर्म-माषकों का एक बाँट।

मंडलि पुं [मण्डलिन्] चक्र-वात, बवंडर। माण्डलिक राजा। सर्प की एक जाति। न. कौत्स गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न। °पुरी स्त्री. गुजरात का एक नगर।

मंडलिअ वि [मण्डलिक, माण्डलिक] मण्डलाकारवाला। पुं. मंडल रूप से स्थित पर्वत-विशेष। मण्डलाधीश, सामान्य राजा।

मंडली स्त्री [मण्डली] पंक्ति, समूह। अश्व की एक गति। वृत्ताकार मंडल—समूह।

मंडलीअ देखो मंडलिअ = मण्डलिक।

मंडव पुं [मण्डप] विश्राम-स्थान। वल्ली आदि से वेष्टित स्थान। स्नान आदि करने का गृह।

मंडव न [माण्डव्य] एक गोत्र, उसमें उत्पन्न।

मंडविआ स्त्री [मण्डपिका] छोटा मण्डप।

मंडव्वायण न [माण्डव्यायन] गोत्र-विशेष।

मंडावण न [मण्डन] विभूषित कराना। °धाई स्त्री [°धात्री] सजानेवाली दासी।

मंडावय वि [मण्डक] सजानेवाला।

मंडि° } वि [मण्डित] भूषित। पुं. भ० महावीर का षष्ठ गणधर। एक चोर। °कुच्छि पुंन [°कुक्षि] चैत्य-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] महावीर का छठवाँ गणधर।
मंडिअ }

मंडिअ वि [दे] रचित, बनाया हुआ। बिछाया हुआ। आगे धरा हुआ। आरब्ध।

मंडिल्ल पुं [दे] पूआ, पक्वान्न-विशेष।

मंडी स्त्री [दे] ढकनी। अन्न का अग्र रस। माँड़ी, कलप, लेई। °पाहुडिया स्त्री [°प्राभृतिका] अन्न के माँड़ को दूसरे पात्र में रखकर दी जाती भिक्षा-ग्रहण का दोष।

मंडुक } देखो मंडूअ।
मंडुक्क }

मंडुक्कलिया } स्त्री [मण्डूकिका] भेकी। शाक या वनस्पति-विशेष।
मंडुक्किया }

मंडुग } पुं [मण्डूक] मेंढक। श्योनाक। वृक्ष। सोनापाठा। बन्ध-विशेष। छन्द-विशेष। °प्पुअ न [°प्लुत] भेक की चाल। पुं. भेक की गति वाला ज्योतिष का योग।
मंडूअ }
मंडूक }
मंडूर }

मंडोवर न [मण्डोवर] नगर-विशेष।

मंत सक [मन्त्रय्] गुप्त परामर्श या मसलहत करना। आमन्त्रण या जाप करना।

मंत पुंन [मन्त्र] गुप्त बात या आलोचना। जाप करने-योग्य प्रणवादिक अक्षर-पद्धति। °जंभग पुं [°जृम्भक] एक देव-जाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°देवया स्त्री [°देवता] मन्त्राधिष्ठायक देव। °न्नु वि [°ज्ञ] मन्त्र का जानकार। °वाइ वि [°वादिन्] मान्त्रिक। °सिद्ध वि. सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हों। बहु-मन्त्र। प्रधान मन्त्रवाला।

मंत वि [मान्त्र] मन्त्र-सम्बन्धी, मान्त्रिक।

मंतक्ख न [दे] लज्जा। दुःख। अपराध।

मंतर देखो वंतर।

मंता अ [मत्वा] जानकर।

मंति पुं [मन्त्रिन्] मन्त्री, अमात्य, दीवान। वि. मन्त्रों का जानकार।

मंति पुं [दे] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्विद्।

मंतिअ वि [मान्त्रिक] मन्त्र का ज्ञाता।

मंतिण देखो मंति = मन्त्रिन्।

मंतु वि [मन्तृ] ज्ञाता। पुं जीव, प्राणी।

मंतु देखो मण्णु। °म वि [°मत्] क्रोधी।

मंतु पुंन [°मन्तु] अपराध।

मंतुआ स्त्री [दे] लज्जा, शरम।

मंतेल्लि स्त्री [दे] मैना।

मंथ सक [मन्थ्] विलोडन करना। मारना, हिंसा करना। अक. क्लेश पाना। घर्षण करना।

मंथ पुं [मन्थ] दही विलोने की मथनी। केवलि-समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश-समूह।

मंथ (अप) देखो मत्थ = मस्त।

मंथणिआ } स्त्री [मन्थनिका] मंथनी। मंथणी } दही महने की हँड़िया। स्त्री [मन्थनी]।

मंथर वि [मन्थर] मन्द। पुं. मन्थन-दण्ड।

मंथर वि [दे. मन्थर] वक्र। स्त्रीन. कुसुम्भ या कुसुम का पेड़।

मंथर वि [दे] बहु, प्रचुर, प्रभूत।

मंथाण पुं [मन्थान] विलोडन-दण्ड।

मंथु पुंन [दे] बदरादि-चूर्ण। चूर, बुकनी। दूध के मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था।

मंद पुं [मन्द] शनिश्चर ग्रह। हाथी की एक जाति। वि. अलस, धीमा, मृदु। अल्प, मूर्ख। नीच, खल। रोगी। °उण्णिया स्त्री [°पुण्यिका] देवी-विशेष। °भग्ग वि [°भाग्य], °भाअ वि [°भाग °भाग्य], °भाइ वि [°भागिन्] कमनसीब। °भाग देखो °भाअ।

मंद न [मान्द्य] रोग। बेवकूफी।

मंदक्ख न [मन्दाक्ष] लज्जा।

मंदग न [मन्दक] एक प्रकार का गान।

मंदर पुं [मन्दर] मेरु पर्वत। भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर। वानरद्वीप का राजा। मरुयकुमार का पुत्र। छन्द-भेद। मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव। °पुर न. नगर-विशेष।

मंदा स्त्री [मन्दा] मन्द-स्त्री। मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था।

मंदाइणी स्त्री [मन्दाकिनी] गंगा नदी। रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री।

मंदाय क्रिवि [मन्द] धीमे से।

मंदाय न [मन्दाय] गेय-विशेष।

मंदार पुं [मन्दार] एक कल्पवृक्ष। पारिभद्र वृक्ष। न. एक फूल।

मंदिअ वि [मान्दिक] मन्दता वाला, मन्द।

मंदिर न [मन्दिर] गृह। नगर-विशेष।

मंदिर वि [मान्दिर] मन्दिर-नगर का।

मंदीर न [दे] सांकल। मन्थान-दण्ड।

मंदुय पुं [दे. मन्दुक] जलजन्तु-विशेष।

मंदुरा स्त्री [मन्दुरा] अश्व-शाला।

मंदोदरी } स्त्री [मन्दोदरी] रावण-पत्नी। मंदोयरी } एक वणिक् पत्नी।

मंदोशण (मा)। वि [मन्दोष्ण] अल्प गरम।

मंधाउ पुं [मान्धातृ] हरिवंश का एक राजा।

मंधादण पुं [मन्धादन] मेष, गाडर।

मंधाय पुं [दे] श्रीमन्त।

मंभीस (अप) सक [मा + भी] डरने का निषेध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना, अभय देना।

मंस पुंन [मांस] मांस, गोश्त, पिशित। °इत्त वि [°वत्] मांस-लोलुप। °खल न. मांस सुखाने का स्थान। °चक्खु पुंन [°चक्षुस्] मांस-मय चक्षु। वि. ज्ञान-चक्षु-रहित। °ासण वि [°ाशन]। °ासि, °ासिण वि [°ाशिन्] मांस-भक्षक।

मंस न [मांस] फल का गर्भ।

मंसल वि [मांसल] पीन, पुष्ट, उपचित।

मंसी स्त्री [मांसी] गन्ध-द्रव्य-विशेष, जटामांसी।

मंसु पुंन [श्मश्रु] दाढ़ी-मूँछ।

मंसु देखो मंस।

मंसुंडग न [दे. मांसोन्दुक] मांस-खण्ड।

मंसुल्ल वि [मांसवत्] मांसवाला।

मक्कंडेअ पुं [मार्कण्डेय] ऋषि-विशेष।

मक्कड पुं [मर्कट] वानर। मकड़ा। कीड़ा। एक छन्द। °बंध पुं [°बन्ध] नाराच-बन्ध। °संताण पुं [°संतान] मकड़ा का जाल।

मक्कडबंध न [दे] शृंखलाकार ग्रीवा-भूषण।

मक्कल (अप) देखो मक्कड।

मक्कार पुं. [माकार] 'मा' वर्ण। निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति।

मक्कुण देखो मंकुण।

मक्कोड पुं [दे] यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि। पुंस्त्री. चींटा।

मक्ख सक [म्रक्ष्] चुपड़ना। स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना।

मक्खण न [म्रक्षण] नवनीत। मालिश।

मक्खर पुं [मस्कर] गति। ज्ञान। बाँस। छिद्रवाला बाँस।

मक्खिअ न [माक्षिक] मक्षिका-संचित मधु।

मक्खिआ स्त्री [मक्षिका] मक्खी।

मगइअ वि [दे] हाथ में बाँधा हुआ।

मगण पुं. तीन गुरु अक्षरों की संज्ञा।

मगदंतिआ स्त्री [दे] मालती का फूल। मोगरा का फूल।

मगदंतिआ स्त्री [दे. मगदन्तिका] मेंहदी का गाछ। मेंहदी की पत्ती।

मगर पुं [मकर] देखो मयर।

मगरिया स्त्री [मकरिका] वाद्य-विशेष।

मगसिर स्त्रीन [मृगशिरस्] नक्षत्र-विशेष।

मगह देखो मागह। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष।

मगह पुं. ब. [मगध] देश-विशेष। °वरच्छ [°वराक्ष] आभरण-विशेष। °पुर न[°पुर] नगर-विशेष। देखो मयह।

मगा अ [दे] पश्चात्, पीछे।

मगुंद देखो मउंद = मुकुन्द।

मग्ग सक [मार्गय्] माँगना। खोजना।

मग्ग अक [मग्] गमन करना, चलना।

मग्ग पुं [मार्ग] रास्ता। °ण्णु वि [°ज्ञ] मार्ग का जानकार। °त्थ वि [°स्थ] मार्ग में स्थित। सोलह से ज्यादा वर्ष की उम्रवाला। °दय वि. मार्ग-दर्शक। °विउ वि [°वित्] मार्ग का जानकार। °ह वि [°घ] मार्ग-नाशक। °ाणुसारि वि [°ानुसारिन्] मार्ग का अनुयायी।

मग्ग पुं [मार्ग] आकाश। आवश्यक-कर्म, सामयिक आदि षट्-कर्म।

मग्ग, मग्गअ } पुं [दे] पश्चात, पीछे।

मग्गअ वि [मार्गक] माँगनेवाला।

मग्गण पुं [मार्गण] याचक। बाण। न. अन्वेषण। मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन।

मग्गणया स्त्री [मार्गणा] ईहा-ज्ञान, ऊहापोह।

मग्गणिर वि [दे] अनुगमन करने की आदत-वाला।

मग्गसिर पुं [मार्गशिर] मगसिरमास, अग-हन।

मग्गसिरी स्त्री [मार्गशिरी] मगसिर मास की

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

पूर्णिमा। मगसिर की अमावस।
मग्गिल्ल वि [दे] पाश्चात्य, पीछे का।
मग्गु पुं [मद्गु] पक्षि-विशेष, जल काक।
मघ पुं [मघ] मेघ।
मघमघ अक [प्र + सृ] फैलना, गन्ध का पसरना।
मघव पुं [मघवन्] इन्द्र, देवराज। तृतीय चक्रवर्ती राजा।
मघवा स्त्री. छठवीं नरक-भूमि।
मघा स्त्री. ऊपर देखो। महा = मघा।
मघोण पुं [दे मघवन्] देखो मघव।
मच्च अक [मद्] गर्व करना।
मच्च (अप) देखो मंच।
मच्च न [दे] मल, मैल।
मच्च / मच्चिअ } पुं [मर्त्य] मनुष्य। °लोअ पुं [°लोक] मनुष्यलोक। °लोईय वि [°लोकीय] मनुष्य-लोक-सम्बन्धी।
मच्चिअ वि [दे] मल-युक्त।
मच्चु पुं [मृत्यु] मौत। यम, यमराज। रावण का एक सैनिक।
मच्छ पुं [मत्स्य] मछली। राहु। देश-विशेष। एक छन्द। °खल न. मत्स्यों को सुखाने का स्थान। °बंध पुं [°बन्ध] मच्छीमार।
मच्छ पुंन [मत्स्य] मत्स्य के आकार की एक वनस्पति।
मच्छंडिआ स्त्री [मत्स्यण्डिका] खण्डशर्करा।
मच्छंडी स्त्री [मत्स्यण्डी] शक्कर।
मच्छंत मंथ = मन्थ् का कवकृ.।
मच्छंध देखो मच्छ-बंध।
मच्छर पुं [मत्सर] ईर्ष्या। कोप। वि ईर्ष्यालु। क्रोधी। कृपण।
मच्छर न [मात्सर्य] द्वेष।
मच्छल देखो मच्छर = मत्सर।
मच्छिअ देखो मक्खिअ = माक्षिक।
मच्छिअ वि [मात्स्यिक] मच्छीमार।

मच्छिका (मा) देखो माउ = मातृ।
मच्छिगा / मच्छिया / मच्छी } स्त्री [मक्षिका] मक्खी।
मज्ज सक [मद्] अभिमान करना।
मज्ज अक [मस्ज्] स्नान करना। डूबना।
मज्ज सक [मृज्] साफ करना।
मज्ज न [मद्य] दारू। °इत्त वि [°वत्] मदिरा-लोलुप। °व वि [°प] मद्य-पान। °वीअ वि [°पीन] जिसने मद्य-पान किया हो।
मज्जग वि [माद्यक] मद्य-सम्बन्धी।
मज्जण न [मज्जन] स्नान। डूबना। °घर न [°गृह] स्नान-गृह। °धाई स्त्री [°धात्री] °पाली स्त्री. स्नान कराने-वाली दासी।
मज्जण न [मार्जन] साफ करना, शुद्धि। वि. मार्जन करनेवाला। °घर न [°गृह] शुद्धि-गृह।
मज्जर देखो मंजर।
मज्जा स्त्री [दे. मर्या] मर्यादा।
मज्जा स्त्री [मज्जा] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा।
मज्जाइल्ल वि [मर्यादिन्] मर्यादावाला।
मज्जाया स्त्री [मर्यादा] न्याय्य-पथ-स्थिति, व्यवस्था। सीमा, अवधि। किनारा।
मज्जार पुंस्त्री [मार्जार] बिलाव। वनस्पति-विशेष।
मज्जार पुं [मार्जार] वायु-विशेष।
मज्जिअ वि [दे] अवलोकित, निरीक्षित। पीत।
मज्जिआ स्त्री [मार्जिता] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर का श्रीखण्ड।
मज्जोक्क वि [दे] अभिनव, नूतन।
मज्झ न [मध्य] अन्तराल, बीच। शरीर का अवयव-विशेष। अन्त्य और परार्ध्य के बीच की संख्या। वि. मध्यवर्ती। °एस पुं [°देश]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त। °गय वि [°गत] बीच का, मध्य में स्थित। पुं. अवधिज्ञान का एक भेद। °गेवेज्जय न [°ग्रैवेयक] देवलोक-विशेष। °ट्ठिअ वि [°स्थित] तटस्थ। °ण्ण, °ण्ह पुं [°ाह्न] दोपहर। न. पूर्वार्ध तप। °ण्हतरु पुं [°ाह्नतरु] मध्याह्न में फूलनेवाला लाल फूलवाला वृक्ष। °त्थ वि [°स्थ] तटस्थ। बीच में रहा हुआ। 'देस देखो°एस। °म वि. मझला। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ। °रयणि स्त्री [°रजनि] मध्य रात्रि। °लोग पुं [°लोक] मेरु पर्वत। °वत्ति वि [°वर्तिन्] अन्तर्गत। °ावलिअ वि [°ावलित] बीच में मुड़ा हुआ। चित्त में कुटिल।

मज्झअ पुं [दे] नाई।

मज्झआर न [दे] मध्य।

मज्झंतिअ न [दे] मध्याह्न।

मज्झंदिण न [मध्यन्दिन] मध्याह्न।

मज्झंमज्झ न [मध्यमध्य] ठीक बीच।

मज्झगार देखो मज्झआर।

मज्झण्हिय वि [माध्याह्निक] मध्याह्न-सम्बन्धी।

मज्झत्थ न [माध्यस्थ्य] तटस्थता, मध्यस्थता।

मज्झिम वि [मध्यम] मध्य-वर्ती। पुं. स्वर-विशेष। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ, मध्य-रात्रि।

मज्झिमगंड न [दे] उदर।

मज्झिमा स्त्री [मध्यमा] बीच की उंगली। एक जैन मुनि-शाखा।

मज्झिमिल्ल वि [मध्यम] बीच का।

मज्झिमिल्ला देखो मज्झिमा।

मज्झिल्ल वि [माध्यिक, मध्यम] मझला।

मट्ट वि [दे] शृङ्ग-रहित।

मट्टिआ } स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी।
मट्टी } स्त्री [मृत्, मृत्तिका]।

मट्ठुहिअ न [दे] परिणीत स्त्री का कोप। वि. कलुष। अशुचि, मैला।

मट्ठ वि [दे] आलसी, मन्द, जड़।

मट्ठ वि [मृष्ट] मार्जित, शुद्ध। मसृण, चिकना। घिसा हुआ। न. मिरच।

मड वि [दे. मृत] मरा हुआ, निर्जीव। °इ वि [°ादिन्] निर्जीव वस्तु को खानेवाला। °ासय पुं [°ाश्रय] श्मशान।

मड पुं [दे] कंठ, गला।

मडंब पुंन [दे. मडम्ब] जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव।

मडक्क पुं [दे] गर्व। कलश।

मडक्किया स्त्री [दे] छोटा मटका।

मडप्प }
मडप्पर } पुं [दे] अहंकार।
मडप्फर }

मडभ वि. कुब्ज, वामन।

मडमड } अक [मडमडाय्] मड-मड
मडमडमड } आवाज करना। सक. मड-मड आवाज हो उस तरह मारना।

मडय न [मृतक] मुड़दा। °गिह न [°गृह] कब्र। °चेइअ न [°चैत्य] मृतक चैत्य—स्मारक-मन्दिर। °डाह पुं [°दाह] चिता। °थूभिया स्त्री [°स्तूपिका] मृतक का छोटा स्मारक-स्तूप।

मडय पुं [दे] बगीचा।

मडवोज्झा स्त्री [दे] शिबिका।

मडह वि [दे] लघु, छोटा। स्वल्प।

मडहर पुं [दे] अभिमान।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला।

मडुवइअ वि [दे] हत, विध्वस्त। तीक्ष्ण।

मड्ड सक [मृद्] मर्दन करना।

मड्डुय पुं [दे. मड्डुक] वाद्य-विशेष।

मड्डा स्त्री [दे] बलात्कार, हठ। आज्ञा।

मड्डुअ देखो मद्दुअ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मढ देखो मड्ड ।

मढ पुंन [मठ] व्रतियों-संन्यासियों का आश्रम ।

मढिअ वि [दे] खचित । परिवेष्टित ।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ ।

मण सक [मन्] मानना । जानना । चिन्तन करना ।

मण पुंन [मनस्] मन, अन्तःकरण, चित्त । °अगुत्ति स्त्री [°अगुप्ति] मन का असंयम । °करण न. चिन्तन, पर्यालोचन । °गुत्त वि [°गुप्त] मन का संयमी । °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] मन का संयम । °जाणुअ वि [°ज्ञ] मन का ज्ञाता । मनोहर । °जीविअ वि [°जीविक] मन को आत्मा माननेवाला । °जोअ पुं [°योग] मन की चेष्टा । °ज्ज, °ण्णु, °ण्णुअ देखो °जाणुअ । °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] मन को स्तब्ध करनेवाली विद्या । °नाण न [°ज्ञान] मनःपर्यव ज्ञान । °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति । °पज्जव पुं [°पर्यव] दूसरे के मन की अवस्था को जाननेवाला ज्ञान । °पसिणविज्जा स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या ।°बलिअ वि [बलिन्, °क] मनो-बलवाला । °मोहण वि [°मोहन] मन को मुग्ध करनेवाला । °योगि वि [°योगिन्] मन की चेष्टावाला । °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप में परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह । °वज्ज न [°वज्र] एक विद्याधर-नगर । °समिइ स्त्री [°समिति] मन का संयम । °समिय वि [°समित] मन को संयम में रखनेवाला । °हंस पुं. छन्द-विशेष । °हर वि. सुन्दर । °हरण पुंन. एक मात्रा-पद्धति । °भिराम वि [°अभिराम] मनोहर । °म वि [°आप] सुन्दर । देखो मणो° ।

मणं देखो मणयं ।

मणंसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मनवाला ।

मणंसिल° } स्त्री [मनःशिला] लाल वर्ण
मणंसिला } की एक उपधातु, मैनशिल ।

मणग पुं [मनक] शय्यंभवसूरि का पुत्र और बाल शिष्य । देखो मणय ।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका ।

मणय पुं [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक । देखो मणग ।

मणयं अ [मनाग्] अल्प, थोड़ा ।

मणस देखो मण = मनस् ।

मणसिल° } देखो मणंसिला ।
मणसिला }

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन में रखना ।

मणस्सि देखो मणंसि ।

मणा
मणाउ } देखो मणयं ।
मणाउं
मणागं

मणाल देखो मुणाल ।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] । देखो मुणालिआ ।

मणासिला देखो मणंसिला ।

मणि पुंस्त्री. मुक्ता आदि रत्न । °अंग पुं [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है । °आर पुं [°कार] जौहरी । °कंचण न [°काञ्चन] रुक्मि-पर्वत का एक शिखर । °कूड न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर । °खइअ वि [°खचित] रत्न-जटित । °चइया स्त्री [°चयिता] नगरी-विशेष । °चूड पुं. एक विद्या-धर नृप । °जाल न. मणि-माला । °तोरण न. नगर-विशेष । °प देखो °व । °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका । °प्पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर । °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि । °भूमि स्त्री. मणि-खचित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जमीन। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय। °रह पुं [°रथ] एक राजा। °व पुं [°प] यक्ष। सर्प, नाग। समुद्र। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष। °बंध पुं [°बन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव। °वालय पुं [°पालक, °वालक] समुद्र। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष। °हियय पुं [°हृदय] देव-विशेष।

मणिअ न [मणित] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द।

मणिअं देखो मणयं।

मणिअड (अप) पुं [मणि] माला का सुमेर।

मणिच्छिअ वि [मनईप्सित] मनोऽभीष्ट।

मणिट्ठ वि [मनइष्ट] मन को प्रिय।

मणिणायहर न [दे. मणिनागगृह] समुद्र।

मणिरइआ स्त्री [दे] कटीसूत्र।

मणीसा स्त्री [मनीषा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा।

मणीसि वि [मनीषिन्] बुद्धिमान्, पण्डित।

मणीसिद वि [मनीषित] वाञ्छित।

मणु पुं [मनु] स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष। प्रजा-पति-विशेष। न. एक देव-विमान।

मणुअ पुं [मनुज] मनुष्य। भगवान् श्रेयांसनाथ का शासन-यक्ष। वि. मनुष्य-सम्बन्धी।

मणुइंद पुं [मनुजेन्द्र] राजा।

मणुई स्त्री [मनुजी] नारी।

मणुएसर पुं [मनुजेश्वर] राजा।

मणुज्ज, मणुण्ण } वि [मनोज्ञ] सुन्दर।

मणुस, मणुस्स } पुंस्त्री [मनुष्य] मानव, मर्त्य। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्यलोक। °सेणियापरिकम्म पुं [°श्रेणिकापरि-कर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र।

मणुस्स वि [मानुष्य] मनुष्य-सम्बन्धी।

मणुस्सिद पुं [मनुष्येन्द्र] राजा, नर-पति।

मणूस देखो मणुस्स।

मणे अ [मन्ये] विमर्श-सूचक अव्यय।

मणो° देखो मण = मनस्। °गम न. देव-विमान-विशेष। °ज्ज वि [°ज्ञ] सुन्दर। पुं. गुल्म-विशेष। °ण्ण वि [°ज्ञ] मनोहर। °भव पुं. कामदेव। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक। भू° पुं. कन्दर्प। °मय वि. मानसिक। °माणसिय वि [°मानसिक] वचनसे अप्रकटित-मानसिक दुःख आदि। °रम वि रमणीय। पुं. एक विमा-नेन्द्रक। मेरु पर्वत। राक्षस-वंशका एक लंका-पति। किन्नर-देवों की एक जाति। रुचक द्वीप का अधिष्ठायक देव। तृतीय ग्रैवेयक-विमान। आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान। एक देव-विमान। मिथिला का एक चैत्य। उपवन-विशेष। °रमा स्त्री. चतुर्थ वासुदेव की पटरानी। भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका। शक्र की अञ्जुका नामक इन्द्राणी की एक राजधानी। °रह पुं [°रथ] मन का अभिलाष। पक्ष का तृतीय दिवस। °हंस पुं. छन्द-विशेष। °हर पुं. पक्ष का तृतीय दिवस। छन्द-विशेष। वि. सुन्दर। °हरा स्त्री. भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका। °हव देखो °भव। °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर।

मणोसिला देखो मणंसिला।

मण्ण देखो मण = मन्।

मण्णण न [मानन] मानना, आदर।

मण्णे देखो मणे।

मत्त वि. मद-युक्त। न. दारू। नशा। °जला स्त्री. नदी-विशेष।

मत्त देखो मेत्त = मात्र।

मत्त न [अमत्र, मात्र] भाजन। देखो मत्तय।

मत्त (अप) देखो मच्च = मर्त्य।

मत्तंगय पुं [मत्ताङ्गक, °द] मद्य देनेवाला कल्पतरु।

मत्तंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मत्तग न [दे] पेशाब।

मत्तग } पुंन [अमत्र, मात्रक] भाजन। छोटा पात्र।
मत्तय }

मत्तय देखो मत्तग = दे।

मत्तल्ली स्त्री [दे] बलात्कार।

मत्तवारण पुंन [मत्तवारण] बरामदा, दालान।

मत्तवाल पुं [दे] मदोन्मत्त।

मत्ता स्त्री [मात्रा] परिमाण। अंश, हिस्सा। समय का सूक्ष्म नाप। सूक्ष्म उच्चारण-कालवाला वर्णावयव। अल्प, लेश।

मत्ता अ [मत्वा] जानकर।

मत्तालंब पुं [दे. मत्तालम्ब] बरामदा।

मत्तिया स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी। °वई स्त्री [°वती] नारी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी।

मत्थ } पुंन [मस्त, °क] सिर। °त्थ वि [°स्थ] सिर में स्थित। °मणि पुं. शिरोमणि, प्रधान, मुख्य।
मत्थय }

मत्थय पुंन [मस्तक] गर्भ, फल आदि का।

मत्थयधोय वि [दे. धौतमस्तक] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ।

मत्थुलुंग } न [मस्तुलुङ्ग] मस्तक-स्नेह, सिर में से निकलता चिकना पदार्थ। मेद का फिप्फिस आदि।
मत्थुलुय }

मथ देखो मह।

मद देखो मय।

मदण देखो मयण।

मदणसला(गा) देखो मयणसलागा।

मदणा देखो मयणा = मदना।

मदणिज्ज वि [मदनीय] कामोद्दीपक।

मदि देखो मइ = मति।

मदीअ देखो मईअ।

मदुवी देखो मउई।

मदोली स्त्री [दे] दूती।

मद्द सक [मृद्] चूर्ण करना। मालिश करना, मसलना, मलना। मर्दन करना।

मद्दण न [मर्दन] अंग-चप्पी, मालिश। हिंसा करना। वि. मर्दन करनेवाला।

मद्दल पुं [मर्दल] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग।

मद्दलिअ वि [मार्दलिक] मृदंग बजानेवाला।

मद्दव न [मार्दव] मृदुता, नम्रता, विनय।

मद्दी स्त्री [माद्री] राजा शिशुपाल की माँ। राजा पाण्डु की एक स्त्री।

मद्दुअ पुं [मद्दुक] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक।

मद्दुग पुं [मद्गु, °क] देखो मग्गु।

मद्दुग देखो मुदुग।

मधु देखो महु।

मधुधाद पुं [मधुघात] एक म्लेच्छ-जाति।

मधुर देखो महुर।

मधुसित्थ देखो महुसित्थ।

मधूला स्त्री [दे. मधूला] पाद-गण्ड।

मन अ [दे] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं।

मन्न देखो माण = मानय्।

मन्ना स्त्री [मनन] मति, बुद्धि। आलोचन, चिन्तन।

मन्ना स्त्री [मान्या] अभ्युपगम, स्वीकार।

मन्नाय देखो माण = मानय्।

मन्नु पुं [मन्यु] क्रोध, दैन्य। अहंकार। शोक। यज्ञ।

मन्नुइय वि [मन्यवित] मन्यु-युक्त, कुपित।

मन्नुसिय वि [दे] उद्विग्न।

मप्प न [दे] माप, बाँट।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [माभैषीः] अभय-वचन।
मब्भीसा }

ममकार पुं [ममकार] ममत्व, मोह, प्रेम।

ममच्चय वि [मदीय] मेरा।

ममत्त } न [ममत्व] मोह, स्नेह। स्त्री [ममता]।
ममया }

ममा सक [ममाय्] ममता करना।

ममाय [दे] ग्रहण करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ममाय वि [ममाय] ममत्व करनेवाला।
ममि वि [मामक] मेरा, मदीय।
ममूर सक [चूर्णय्] चूरना।
मम्म पुंन [मर्मन्] जीवन-स्थान। सन्धि-स्थान। मरण का कारण-भूत वचन आदि। गुप्त बात। तात्पर्य। °य वि [°ग] मर्म-वाचक (शब्द)।
मम्मक्क पुं [दे] गर्व, अहंकार।
मम्मक्का स्त्री [दे] उत्कण्ठा।
मम्मण न [मन्मन] अव्यक्त वचन। वि. अव्यक्त वचन बोलनेवाला।
मम्मण पुं [दे] मदन। रोष।
मम्मणिआ स्त्री [दे] नील मक्षिका।
मम्मर पुं [मर्मर] शुष्क पत्तों की आवाज।
मम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव।
मम्मी स्त्री [दे] मामी।
मय न [मत] मनन, ज्ञान। अभिप्राय। दर्शन, धर्म। वि. माना हुआ। अभीष्ट। °न्नु वि [°ज्ञ] दार्शनिक।
मय पुं. ऊँट, खच्चर। एक विद्याधर-नरेश। °हर पुं [°धर] ऊँटवाला।
मय वि [मृत] मरा हुआ, जीव-रहित। °किच्च न [°कृत्य] मरण के उपलक्ष में किया जाता श्राद्ध आदि कर्म।
मय पुंन [मद] अभिमान। हाथी के गण्ड-स्थल से झरता प्रवाही। आमोद। कस्तूरी। मत्तता। नद। शुक्र। °करि पुं [°करिन्] मदवाला हाथी। °गल वि [°कल] मद से उत्कट। पुं. हाथी। छन्द-विशेष। °णासणी स्त्री [°नाशनी] विद्या-विशेष। °धम्म पुं [°धर्म] विद्याधर-वंश का एक राजा। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री। °वारण पुं. मदवाला हाथी।
मय पुं [मृग] हरिण। पशु। हाथी की एक जाति। नक्षत्र-विशेष। कस्तूरी। मकर-राशि। अन्वेषण। याचन। यज्ञ-विशेष। °च्छी स्त्री [°क्षी] हरिण के समान-नेत्र-वाली। °णाह पुं [°नाथ] सिंह। °णाहि पुंस्त्री [°नाभि] कस्तूरी। °तण्हा स्त्री [°तृष्णा]। °तण्हिआ स्त्री [°तृष्णिका]। °तिण्हा। °तिण्हिआ धूप में जल-भ्रान्ति। °धुत्त पुं [°धूर्त्त] सियार। °राय पुं [°राज] सिंह। °लंछण पुं [°लाञ्छन] चन्द्रमा। °लोअणा स्त्री [°रोचना] गोरोचन, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष। °ारि पुं. सिंह। °ारिदमण पुं [°ारिदमन] राक्षस-वंश का एक लंका-पति। °ाहिव पुं [°ाधिप] सिंह। देखो मिअ, मिग = मृग।
मयंक, मयंग } देखो मिअंक।
मयंग देखो मायंग = मातंग।
मयंग पुं [मृदङ्ग] वाद्य-विशेष।
मयंगय पुं [मतङ्गज] हाथी।
मयंगा स्त्री [मृतगङ्गा] जहाँ पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो।
मयंतर न [मतान्तर] अन्य मत।
मयंद देखो मइंद = मृगेन्द्र।
मयंध वि [मदान्ध] मद से अन्धा बना हुआ।
मयग वि [मृतक] मरा हुआ। न. मुर्दा। °किच्च न [°कृत्य] श्राद्ध आदि कर्म।
मयड पुं [दे] बगीचा।
मयण पुं [मदन] कन्दर्प। लक्ष्मण का एक पुत्र। एक वणिक्-पुत्र। छन्द का एक भेद। वि. मादक। न. मोम। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] रति। °तालंक पुं [°तालङ्क] छन्द-विशेष। °तेरसी स्त्री [°त्रयोदशी] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी। °दुम पुं [°द्रुम] वृक्ष-विशेष। °फल न. मैनफल। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री। एक श्रेष्ठि-कन्या। °रेहा स्त्री [°रेखा] एक युवराज की पत्नी। °वेय पुं [°वेग] पुरुष-विशेष। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] राजा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपाल की पत्नी । °हरा स्त्री [गृह] छन्द-विशेष । °हल देखो °फल ।

मयणंकुस पुं [मदनाङ्कुश] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश ।

मयणसलागा, मयणसलाया, मयणसाला } स्त्री [दे. मदनशलाका] सारिका । स्त्री [दे. मदन-शाला] ।

मयणा स्त्री [दे. मदना] मैना ।

मयणा स्त्री [मदना] वैरोचन बलीन्द्र की पटरानी । शक्र के लोकपाल की स्त्री ।

मयणाय पुं [मैनाक] एक द्वीप, एक पर्वत ।

मयणिज्ज देखो मदणिज्ज ।

मयणिवास पुं [दे] कामदेव ।

मयर पुं [मकर] राहु । मगर-मच्छ । मकर राशि । रावण का एक सुभट । छन्द-विशेष । °केउ पुं [°केतु] । °द्धय पुं [°ध्वज] । °लंछण पुं [°लाञ्छन] । °हर पुंन [°गृह] कंदर्प ।

मयरंद पुं [दे. मकरन्द] पुष्प-पराग ।

मयरंद पुं [मकरन्द] पुष्प-मधु ।

मयल देखो मइल=मलिन ।

मयल्लिगा स्त्री [मतल्लिका] प्रधान, श्रेष्ठ ।

मयह देखो मगह । °सामिय पुं [°स्वामिन्] मगध देश का राजा । °पुर न [°पुर] राज-गृह नगर । °हिवइ पुं[°धिपति] मगध देश का राजा ।

मयहर पुं [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया । वि. वडील, नायक ।

मयाई स्त्री [दे] शिरो-माला ।

मयार पुं [मकार] 'म' अक्षर । मकारादि अश्लील—अवाच्य शब्द ।

मयाल (अप) देखो मराल ।

मयालि पुं. एक अन्तकृद् मुनि । एक अनुत्तर-गामी मुनि ।

मयाली स्त्री [दे] निद्राकारी लता ।

मर अक [मृ] मरना ।

मर पुं [दे] मशक । उल्लू, घूक ।

मरअद, मरगय } पुंन [मरकत] नील वर्णवाला रत्न-विशेष, पन्ना ।

मरजीवय पुं [दे. मरजीवक] समुद्र के भीतर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह ।

मरट्ट पुं [दे] अहंकार ।

मरट्टा स्त्री [दे] उत्कर्ष ।

मरट्ठ (अप) देखो मरहट्ठ ।

मरढ देखो मरहट्ट ।

मरण पुंन. मौत ।

मरल सक. मराल =मराल, हंस ।

मरह सक [मृष्] क्षमा करना ।

मरहट्ठ पुंन [महाराष्ट्र] बड़ा देश । एक देश, मराठा । सुराष्ट्र । पुं. महाराष्ट्र देशवासी । छन्द-विशेष ।

मरहट्ठी स्त्री [महाराष्ट्री] महाराष्ट्र की रहने-वाली स्त्री । प्राकृत भाषा का एक भेद ।

मराल वि [दे] मन्द, आलसी ।

मराल पुं. हंस पक्षी । छन्द-विशेष ।

मराली स्त्री [दे] सारसी । दूती । सखी ।

मरिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ । विस्तीर्ण ।

मरिअ देखो मिरिअ ।

मरिइ देखो मरीइ ।

मरिस सक [मृष्] सहन या क्षमा करना ।

मरिसावणा स्त्री [मर्षणा] क्षमा ।

मरीइ पुं [मरीचि] भगवान् ऋषभदेव का पौत्र और भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था । पुंस्त्री. किरण ।

मरीइया स्त्री [मरीचिका] किरण-समूह । मृग-तृष्णा ।

मरीचि देखो मरीइ ।

मरीचिया देखो मरीइया ।

मरु पुं [मरुत्] पवन, देवता । सुगन्धी वृक्ष, मरुवा । हनुमान् का पिता । °णंदण पुं [°नन्दन] । °स्सुय पुं [°सुत] हनूमान् ।

मरु, मरुअ } पुं [मरु, °क] निर्जल देश । मारवाड़ । पर्वत, ऊँचा पहाड़ । ब्राह्मण । एक नृप-वंश । मरु-वंशीय राजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरु-निवासी। कंतार न [°कान्तार] निर्जल जंगल। °त्थली स्त्री [°स्थली]। °भू स्त्री. मरु-भूमि। °य वि [°ज] मरु देश में उत्पन्न।

मरुअ देखो मरु = मरुत्। एक देव-जाति। °कुमार पुं. वानरद्वीप का एक राजा। °वसभ पुं [°वृषभ] इन्द्र।

मरुआ स्त्री [मरुता] श्रेणिक की एक पत्नी।

मरुइणी स्त्री [मरुकिणी] ब्राह्मणी।

मरुंड देखो मुरुंड।

मरुकुंद पुं [दे. मरुकुन्द] मरुआ।

मरुदेव पुं [मरुदेव] ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव। एक कुलकर पुरुष।

मरुदेवा, मरुदेवी, मरुद्देवा स्त्री [मरुदेवा, °वी] भ. ऋषभदेव की माता। श्रेणिक की पत्नी, जिसने भ. महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी।

मरुल पुं [दे] भूत-पिशाच।

मरुव देखो मरुअ।

मरुस देखो मरिस।

मल सक [मल्] धारण करना।

मल देखो मड्ड।

मल पुं [दे] पसीना।

मल पुंन. मैल। पाप। कर्म।

मलपिअ वि [दे] अहंकारी।

मलय पुं [दे. मलक] आस्तरण-विशेष।

मलय पुं [दे. मलय] पहाड़ का एक भाग। उद्यान।

मलय पुं [मलय] दक्षिण का एक पर्वत। देश-विशेष। छन्द-विशेष। देवविमान-विशेष। न. श्रीखण्ड, चन्दन। पुंस्त्री. मलय का निवासी। °केउ पुं [°केतु] एक राजा। °गिरि पुं. एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक। °द्दि पुं [°ाद्रि] पर्वत-विशेष। °भव वि. मलय देश में उत्पन्न। न. चन्दन। °मई स्त्री [°मती] राजा मलयकेतु की स्त्री। °य [°ज] देखो °भव। °रुह पुं. चन्दन का पेड़। न. चन्दन-काष्ठ। °ाचल पुं. मलय-पर्वत। °ाणिल पुं [°ानिल] मलयाचल से बहता शीतल पवन। °ायल देखो °ाचल।

मलय वि [मालय] मलय देश में उत्पन्न। न. चन्दन।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि।

मलिअ न [दे] लघु-क्षेत्र। कुण्ड।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला।

मलेच्छ देखो मिलिच्छ।

मल्ल सक [मल्ल्] देखो मल = मल्।

मल्ल पुं. पहलवान। बाहु-योद्धा। पात्र। भीत का अवष्टम्भन-स्तम्भ। छप्पर का आधार-भूत काष्ठ। °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती। °दिन्न पुंन [°दत्त] एक राजकुमार। °वाइ पुं [°वादिन्] जैन आचार्य और ग्रन्थकार।

मल्ल न [माल्य] पुष्प। फूल की माला। मस्तक-स्थित पुष्पमाला। एक देव-विमान। बलि।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष।

मल्लग, मल्लय न [दे. मल्लक] पात्र-विशेष, शराव। चपक।

मल्लय न [दे] एक तरह का पूआ। वि. कुसुम्भ से रक्त।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी। मामी।

मल्लि स्त्री. उन्नीसवें जिन-देव का नाम। मोतिया का गाछ। °णाह पुं [°नाथ] उन्नी-सवें जिन-देव।

मल्लि स्त्री. पुष्प-विशेष।

मल्लिअज्जुण पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] पुष्प-वृक्ष-विशेष। पुष्प विशेष। छन्द-विशेष।

मल्लिहाण न [माल्याधान] पुष्प-बन्धन-स्थान। केश-कलाप।

मल्ली देखो मल्लि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्ह अक [दे] मौज मानना, लीला करना।
मव सक [मापय्] मापना, नापना।
मविय वि [मापित] मापा हुआ।
मश्चली (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली।
मस } पुं [मश, °क] शरीर पर का तिलाकार काला दाग, तिल। मच्छड़।
मसअ }
मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वयं आभाव्य विमान।
मसग देखो मसअ।
मसण वि [मसृण] स्निग्ध। सुकुमार, अकर्कश। मन्द, धीमा।
मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना।
मसाण न [श्मशान] मसान।
मसार पुं [दे. मसार] मसृणता-संपादक पाषाण-विशेष, कसौटी का पत्थर।
मसारगल्ल पुं. एक रत्न-जाति।
मसि स्त्री. काजल। स्याही।
मसिहार पुं [मसिहार] क्षत्रिय-परिव्राजक।
मसिण देखो मसण।
मसिण वि [दे] रम्य।
मसिणिअ वि [मसृणित] शुद्ध किया हुआ, मार्जित। स्निग्ध किया हुआ। विलुलित, विमर्दित।
मसी देखो मसि।
मसूर } पुंन [मसूर, °क] धान्य-विशेष, मसूरि। ओसीसा। वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन।
मसूरय }
मस्सु देखो मंसु।
मस्सूरग देखो मसूर।
मह सक [काङ्क्ष्] चाहना, वाञ्छना।
मह सक [मथ्] मथना, विलोड़न करना। मारना। घर्षण करना।
मह सक [मह्] पूजना।
मह पुंन. उत्सव।
मह पुं [मख] यज्ञ।
मह वि [महत्] बड़ा, वृद्ध। विपुल, विस्तीर्ण। उत्तम। स्त्री. °ई। °एवी स्त्री [°देवी] पटरानी। °कंतजस पुं [°कान्तयशस्] राक्षस वंश का एक लंका-पति। °कमलंग न [°कमलाङ्ग] ८४ लाख कमल की संख्या। °कव्व न [°काव्य] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रंथ। °काल देखो महा-काल। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश का एक लंकेश। °ग्गह देखो महा-गह। °ग्घ वि [°अर्घ] महा-मूल्य। °ग्घविअ वि [°अर्घित] महँगा, दुर्लभ। विभूषित। सम्मानित। °ग्घिम(अप) वि [अर्घित] बहु-मूल्य। °चंद पुं [°चंद्र] राजकुमार-विशेष। एक राजा। °च्च वि [°अर्च] बड़ा ऐश्वर्य-वाला। बड़ी पूजा—सत्कारवाला। °च्च वि [°अर्च्य] अति पूज्य। °च्छरिय न [°आश्चर्य] बड़ा आश्चर्य। °जक्ख पुं [°यक्ष] भ. अजित-नाथ का शासन देव। °जाला स्त्री [°ज्वाला] विद्यादेवी-विशेष। °ज्जुइय वि [°द्युतिक] महान् तेजवाला। °ड्ढि स्त्री [°ऋद्धि] महान् वैभव। °ड्ढीअ वि [°ऋद्धिक] विपुल वैभव वाला। °ण्णव पुं [°अर्णव] महा-सागर। °ण्णवा स्त्री [°अर्णवा] बड़ी नदी। °तुडियंग न [त्रुटिताङ्ग] ८४ लाख त्रुटित की संख्या। °त्तण न [°त्व] बड़ाई, महत्ता। °त्तर वि [°तर] बहुत बड़ा। मुखिया, प्रधान। अन्तःपुर का रक्षक। °त्थ वि [°अर्थ] महान् अर्थवाला। °त्थ न [°अस्त्र] बड़ा हथियार। °त्थिम पुंस्त्री [°र्थत्व] महार्थता। °दलिल्ल वि [°दलिल] बड़ा दलवाला। °द्दह पुं [°द्रह] बड़ा ह्रद। °द्दि स्त्री [°अद्रि] बड़ी याचना। परिग्रह। °द्दुम पुं [°द्रुम] महान् वृक्ष। वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति। °द्धि वि [°ऋद्धि] बड़ी ऋद्धिवाला। °धूम पुं. बड़ा धुआँ। °पाण न [°प्राण] ध्यान-विशेष। °पुंडरीअ पुं [°पुंडरीक] ग्रह-विशेष। °प्प पुं [°आत्मन्] महा-पुरुष। °प्फल वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°फल] महान् फलवाला। °बाहु पुं. राक्षस-वंशी एक लंका-पति। °बोह पुं [°अबोध] महा-सागर। °ब्बल पुं [°बल] एक राज-कुमार। वि. विपुल बलवाला। देखो महाबल। °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक। °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य। °मरुय पुं [°मरुत] एक अन्तकृद् मुनि-विशेष। °मास पुं [°अश्व] महान् अश्व। °यर देखो °त्तर। °रव पुं. राक्षसवंशी एक लंका-पति। °रिसि पुं [°ऋषि] महर्षि, महामुनि। °रिह वि [°अर्ह] बड़े के योग्य, बहु-मूल्य। °वाय पुं [°वात] महान् पवन। °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रतवाला। °व्वय पुंन [°व्रत] महान् व्रत। °व्वय पुं [°व्यय] विपुल खर्च। °सलाग स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप। °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता। °सुक्क देखो महासुक्क। °सेण पुं [°सेन] आठवें जिनदेव का पिता। एक राजा। एक यादव। न. वन-विशेष। देखो महा-सेण। देखो महा°।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक।

महइ° अ [महाति] अति बड़ा। अत्यन्त विपुल। °जड वि [°जट] अति बड़ी जटा-वाला। °महाइंदइ पुं [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा। °महापुरिस पुं [°महापुरुष] सर्वोत्तम पुरुष। जिनदेव। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त।

महई देखो मह = महत्।

महंग पुं [दे] ऊँट।

महंत देखो मह = महत्।

महच्च न [माहत्य] महत्त्व। महत्त्ववाला।

महण न [दे] पिता का घर।

महण पुं[महन]राक्षस वंश का एक लंका-पति।

महति° देखो महइ°।

महती स्त्री. सौ तांत वाली वीणा।

महत्थार न [दे] भाण्ड, भाजन। भोजन।

महप्पुर पुं [दे] माहात्म्य, प्रभाव।

महमह देखो मघमघ।

महम्मह देखो महमह।

महया° देखो महा°।

महर वि [दे] असमर्थ।

महलयपक्ख देखो महालवक्ख।

महल्ल वि [दे. महत्] वृद्ध, बड़ा। पृथुल, विशाल, विस्तीर्ण।

महल्ल वि [दे] मुखर, वाचाट। पुं. समुद्र। समूह।

महव देखो मघव।

महा स्त्री [मघा] नक्षत्र-विशेष।

महा° देखो मह = महत्। °अडड न [°अटट] ८४ लाख महाअटटांग की संख्या। °अडडंग न [°अटटाङ्ग] ८४ लाख अटट। °आल देखो °काल। °ऊह न. ८४ लाख महाऊहांग की संख्या। °कइ पुं [°कवि] श्रेष्ठ कवि। °कंदिय पुं [°क्रन्दित] व्यन्तर देवों की एक जाति। °कच्छ पुं. महाविदेह वर्ष का एक विजयक्षेत्र--प्रान्त। देव-विशेष। °कच्छा स्त्री. इन्द्र अतिकाय की अग्र-महिषी। °कण्ह पुं [°कृष्ण] श्रेणिक का पुत्र। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी। °कप्प पुं [°कल्प] जैन ग्रन्थ-विशेष। काल का एक परिमाण। °कमल न. चौरासी लाख महाकमलांग की संख्या। °कव्व देखो °मह-कव्व। °काय पुं. महोरग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र। वि. महान् शरीरवाला। °काल पुं. महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता। दक्षिणलवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधि-ष्ठायक देव। पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र। परमाधार्मिक देवों की एक जाति। वायु-कुमार देवों का एक लोकपाल। वेलम्ब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्र का एक लोकपाल। एक निधि, जो धातुओं की पूर्त्ति करता है। सातवीं नरक-भूमि का नरकावास। पिशाच देवों की एक जाति। उज्जयिनी नगरी का जैन मन्दिर। शिव। उज्जयिनी का एक श्मशान। श्रेणिक का पुत्र। न. एक देवविमान। °काली स्त्री. एक विद्या-देवी। भ. सुमतिनाथ की शासन-देवी। श्रेणिक की एक पत्नी। °किण्हा स्त्री [°कृष्णा] एक महा-नदी। °कुमुद, °कुमुय न [°कुमुद] एक देव-विमान। चौरासी लाख महाकुमुदांग की संख्या। °कुमुयअंग न [°कुमुदाङ्ग] कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। °कुम्म पुं [°कूर्म] कूर्मावतार। °कुल न. श्रेष्ठ कुल। वि. उसमें उत्पन्न। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] परिमाण-विशेष। °गह पुं [°ग्रह] सूर्य आदि ज्योतिष्क। °गह वि [°आग्रह] हठी। °गिरि पुं. एक जैन महर्षि। बड़ा पर्वत। °गोव पुं [°गोप] महान् रक्षक। जिन भगवान्। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत क्षेत्र के भावी जिनदेव। स्तनित कुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र। कुलकर पुरुष। परमाधार्मिक देव-जाति। न. देवविमान-विशेष। °चंद पुं [°चन्द्र] ऐरवत वर्ष के भावी तीर्थंकर। °जणिअ पुं [°जनिक] सार्थवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोग। °जलहि पुं [°जलधि] महा-सागर। °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का पौत्र। ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव। वि. महान् यशस्वी। °जाइ स्त्री [°जाति] गुल्म-विशेष। °जाण न [°यान] बड़ा यान। चारित्र, संयम। एक विद्याधर नगर। पुं. मोक्ष। °जुद्ध न[°युद्ध] बड़ी लड़ाई। °जुम्म पुंन [°युग्म] महान् राशि। °ण देखो °यण। °णई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी। °णंदियावत्त पुं [°नन्द्यावर्त] घोष नामक इन्द्र का लोकपाल। न. एक देवविमान। °णील न [°नील] रत्न-विशेष। वि. अति नील वर्णवाला। °णुभाअ, °णुभाग वि [°अनुभाग]। °णुभाव वि[°अनुभाव] महानुभाव, महाशय। °तमपहा स्त्री [°तमःप्रभा]। °तमा स्त्री. सप्तम नरक-पृथिवी। °तीरा स्त्री. नदी-विशेष। °तुडिय न [°त्रुटित] महात्रुटितांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। °दामट्ठि पुं [°दामास्थि]। °दामड्ढि पुं [°दामर्द्धि] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति। °दुम देखो मह-द्दुम। न. एक देव-विमान। °दुमसेण पुं [°द्रुमसेन] श्रेणिक का पुत्र जिसने महावीर के पास दीक्षा ली थी। °देव पुं. श्रेष्ठ देव, जिन-देव। गौरी-पति। °देवी स्त्री. पटरानी। °धण पुं [°धन] एक वणिक्। °धणु पुं [°धनुष्] बलदेव का एक पुत्र। °नई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी। °नंदिआवत्त देखो °णंदियावत्त। °नगर न. बड़ा शहर। °नय पुं [°नद] ब्रह्मपुत्र आदि बड़ी नदी। °नलिण न [°नलिन] महानलिनांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। एक देव-विमान। °नलिणंग न [°नलिनाङ्ग] नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। °निज्जामय पुं [°निर्यामक] श्रेष्ठ कर्णधार। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मृत्यु। °निनाद, °निनाय वि [°निनाद] प्रख्यात। °निसीह न [°निशीथ] एक जैन आगम-ग्रन्थ। °नीला स्त्री [°नीला] एक महानदी। °पउम पुं [°पद्म] भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर। पुंडरीकिणी नगरी का राजा और पीछे राजर्षि। भारतवर्ष का नववाँ चक्रवर्त्ती राजा। भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्त्ती राजा। एक राजा। एक निधि। एक द्रह। श्रेणिक का एक पौत्र। देव-विशेष। वृक्ष-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष। न. महापद्मांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। एक देव-विमान। °पउमअंग न [°पद्माङ्ग] पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। °पउमा स्त्री [°पद्मा] श्रेणिक की पुत्र-वधू। °पंडिय वि [°पण्डित] श्रेष्ठ विद्वान्। °पट्टण न [°पत्तन] बड़ा शहर। °पण्ण वि [°प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धि वाला। °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान। °पभा स्त्री [°प्रभा] एक राज्ञी। °पम्ह पुं [°पक्ष्म] महाविदेह वर्ष का एक प्रान्त। °परिण्णा स्त्री [°परिज्ञा] आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन। °पसु पुं [°पशु] मनुष्य। °पह पुं [°पथ] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग। °पाण न [°प्राण] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान। °पायाल पुं [°पाताल] बड़ा पाताल-कलश। °पालि स्त्री. बड़ा पल्य। सागरोपम-परिमित आयु। °पिउ पुं [°पितृ] पिता का बड़ा भाई। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] विशाल श्वेत कमल। पुं. ग्रह-विशेष। देव-विशेष। देखो पुंडरीअ। °पुर न. एक विद्याधर नगर। नगर-विशेष। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापक्ष्म-विजय की राजधानी। °पुरिस पुं [°पुरुष] श्रेष्ठ पुरुष। किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र। °पुरी देखो [°पुरा]। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान। देखो °पुंडरीय। °फल देखो मह-प्फल। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा स्थित कूट। °बल वि. महान् बलशाला। पुं. ऐरवत क्षेत्र का भावी तीर्थंकर। चक्रवर्त्ती भरत के वंश में उत्पन्न राजा। सोमवंशीय नर-पति। पाँचवें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम। भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव। °बाहु पुं. भारतवर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव। रावण का सुभट। अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न वासुदेव। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष। °भद्दपडिमा स्त्री [°भद्र-प्रतिमा]। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत। °भय देखो मह-ब्भय। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय। °भीम पुं. राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र। भारतवर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव। वि. बड़ा भयानक। °भीमसेण पुं [°भीम-सेन] एक कुलकर पुरुष। °भुअ पुं [°भुज] देव-विशेष। °भुअंग पुं [°भुजङ्ग] शेष-नाग। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी। °मउंद पुंन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] प्रधान-मन्त्री। हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस। °मच्च पुं [°अमात्य] प्रधान-मंत्री। °मत्त पुं [°मात्र] हस्तिपक। °मरुया स्त्री [°मरुता] श्रेणिक की एक पत्नी। °मह पुं [°मह] महोत्सव। °महंत वि [°महत्] अति बड़ा। °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष। °माउया स्त्री [°मातृका] माता की बड़ी बहन। °माढर पुं [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधि-पति। °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्यादेवी। °माहण पुं [ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण। °मुणि पुं [°मुनि] श्रेष्ठ साधु। °मेह पुं [°मेघ] बड़ा मेघ। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान्। °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा बेव-कूफ। °यण पुं [°जन] श्रेष्ठ लोग। °यस देखो °जस। °रक्खस पुं [राक्षस] धनवाहन का पुत्र, लंका नगरी का राजा। °रह पुं [°रथ] बड़ा रथ। वि. बड़ा रथ-वाला। बड़ा योद्धा, दस हजार योद्धाओं से अकेला जूझनेवाला। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३रा अर्थ। °राय पुं [°राज] बड़ा राजा, राजाधिराज। समान ऋद्धिवाला सामानिक देव। लोकपाल देव। °रिट्ठ पुं [°रिष्ठ] बलि नामक इन्द्र का एक सेनापति। °रिसि पुं [°ऋषि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु। °रिह, °रुह देखो मह-रिड्। °रोरु पुं, अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित नरकावास। °रोरुअ पुं [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का नरकावास। °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या। °लंजर पुं [°अलञ्जर] बड़ा जल-कुम्भ। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] एक श्रेष्ठि-भार्या। छन्द-विशेष। श्रेष्ठ लक्ष्मी। लक्ष्मी-विशेष। °लयंग न [°लताङ्ग] लता नामक संख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। °लया स्त्री [°लता] महालतांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या हो। °लोहिअक्ख पुं. [°लोहिताक्ष] बलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति। °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-सम्बद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय। °वच्छ पुं [°वत्स] विदेह वर्ष का एक प्रान्त। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही। °वण न [°वन] मथुरा के पास एक वन। °वण पुन [°आपण] बड़ी दूकान। °वप्प पुं [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष। °वय देखो मह-व्वय। °वराह पुं. विष्णु का एक अवतार। बड़ा सूअर। °वह देखो °पह। °वाउ पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति। °वाड पुं [°वाट] बड़ा बाड़ा, महान् गोष्ठ। °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार जनक। मधु, मांस, मद्य और माखन। °विजय वि. बड़ा विजयवाला। °विदेह पुं. वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष। °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह। °विल न [°बिल] कन्दरा आदि बड़ा विवर। °वीर पुं. वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर। वि. महान् पराक्रमी। °वीरिअ पुं [°वीर्य] इक्ष्वाकुवंश के एक राजा। °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] बड़ा बाजार। श्रेष्ठ-मार्ग। °वेग पुं. भूतों की एक प्रकार की देव-जाति। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] बड़ी पताका, विजय-पताका। °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री। °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री। °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] बड़ा श्रद्धावाला। °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी। °समुद्द पुं [°समुद्र] महासागर। °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक। °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान। °साल पुं [°शाल] एक युवराज। °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लड़ाई। °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता। °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिकीलिय न [°सिंहनिक्रीडित] तप-विशेष। °सीहसेण पुं [°सिंहसेन] महावीर के पास दीक्षा ले अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का पुत्र। °सुक्क पुं [°शुक्र] सातवाँ देवलोक। सातवें देवलोक का इन्द्र। न. एक देव-विमान। °सुमिण पुं [°स्वप्न] उत्तम फलसूचक स्वप्न। °सुर पुं [°असुर] बड़ा दानव। दानवों का राजा हिरण्यकशिपु। °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका। °सूला स्त्री [°शूला] फाँसी। °सेअ पुं [°श्वेत] कूष्माण्ड नामक वानव्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव। श्रेणिक का पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी। एक राजा। एक यादव। न. एक वन। देखो मह-सेण। °सेणकण्ह पुं [°सेनकृष्ण] श्रेणिक का पुत्र। °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] श्रेणिक की पत्नी। °सेल पुं [°शैल]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बड़ा पर्वत। न. नगर-विशेष। °सोआम, °सोदाम पुं [°सौदाम] वैरोचन बलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति। °हरि पुं. एक नर-पति, दसवें चक्रवर्ती का पिता। °हिमव, °हिमवंत पुं [°हिमवत्] पर्वत-विशेष। देव-विशेष।

महाअत्त वि [दे] आढ्य, श्रीमन्त।

महाइय पुं [दे] महात्मा।

महाणड पुं [दे. महानट] रुद्र, महादेव।

महाणस न [महानस] रसोई-घर।

महाणसिय वि [महानसिक] रसोइया।

महाबिल न [दे. महाबिल] आकाश।

महामंति पुं [महामन्त्रिन्] महावत।

महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा।

महाल पुं [दे] जार।

महालक्ख वि [दे] तरुण।

महालय देखो मह = महत्।

महालय पुंन. उत्सवों का स्थान। बड़ा आलय। बड़ा शरीरवाला।

महालवक्ख पुं [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन मास का कृष्णपक्ष।

महावल्ली स्त्री [दे] कमलिनी।

महाविजय पुं. एक देवविमान।

महासउण पुं [दे] उल्लू, घूक-पक्षी।

महासद्दा स्त्री [दे] शृगाली।

महासेल वि [माहाशैल] महाशैल नगर का। °महि देखो मही। °अल न[°तल]भूमि-पृष्ठ। °गोयर पुं [गोचर] मनुष्य। °पट्ट न [पृष्ठ] भूमितल। °पाल पुं. राजा। °मंडल न [मण्डल] भू-मण्डल। °रमण पुं [°रमण]राजा। °वइ पुं [°पति]राजा। °वट्ठ देखो °पट्ठ। °वल्लह पुं [°वल्लभ] राजा। °वाल पुं [°पाल] राजा। एक व्यक्ति। °वेढ पुं [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा। °हर पुं [°धर] पर्वत। राजा।

महिअ वि [महित] पूजित, सत्कृत। न. एक देव-विमान। पूजा, सत्कार।

महिअ वि [महीयस्] बड़ा, गुरु।

महिअद्दुअ न [दे] घी का किट्ट।

महिआ स्त्री [महिका] अल्प मेघ, सूक्ष्म वर्षा। धुन्ध, कुहरा, मेघ-समूह। देखो मिहिआ।

महिंद पुं [महेन्द्र] बड़ा इन्द्र। पर्वत-विशेष। अति महान्। एक राजा। ऐरवत वर्ष का भावी १५वाँ तीर्थंकर। पुंन. एक देव-विमान। °कंत न [कान्त] एक देव-विमान। °केउ पुं [°केतु] हनूमान के मातामह। °ज्झय पुं [°ध्वज] बड़ा ध्वज। इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज। बड़ा इन्द्र-ध्वज। न. एक देव-विमान। °दुहिया स्त्री [°दुहिता] अञ्जना-सुन्दरी, हनूमान की माता। °विक्कम पुं [°विक्रम] इक्ष्वाकुवंश का राजा। °सीह पुं [°सिंह] कुरु देश का राजा। सनत्कुमार चक्रवर्ती का मित्र।

महिंद वि [माहेन्द्र] महेन्द्र-सम्बन्धी। उत्पात-विशेष।

महिंदुत्तरवडिंसय न [महेन्द्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान।

महिगा देखो महिआ।

महिच्छ स्त्री [महेच्छा] महत्त्वाकांक्षी।

महिट्ठ वि [दे] तक्र-संस्कारित।

महिड्ढि, महिड्ढीय वि [महर्द्धि, °क] बड़ी ऋद्धि-वाला, महान् वैभववाला।

महिम पुंस्त्री [महिमन्] महत्त्व, माहात्म्य, योगी का एक ऐश्वर्य।

महिला देखो मिहिला।

महिला स्त्री [महिला] नारी। महिलिया स्त्री [महिलिका, महिला]। थूभ पुं [स्तूप] कूप आदि का किनारा।

महिलिया स्त्री [मिथिलिका] देखो मिहिला।

महिस पुं [महिष] भैंसा। °सुर पुं. एक दानव।

महिसंद पुं [दे] शिग्रु का पेड़।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महिसिअ वि [महिषिक] भैंसवाला, भैंस चराने वाला।

महिसिक्क न [दे] महिषी-समूह।

महिसी स्त्री [महिषी] राज-पत्नी।

महिस्सर पुं [महेश्वर] भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र। देखो महेसर।

मही स्त्री. पृथिवी। एक नदी। छन्द-विशेष। °नाह पुं [°नाथ]। °पहु पुं [°प्रभु]। °पाल पुं. राजा। °रुह पुं. वृक्ष। °व पुं [°पति] राजा। °वीढ न [°पीठ] भूमि-तल। °स पुं [°श]। °सक्क पुं [°शक्र] राजा। देखो महि°।

महु पुं [मधु] एक दैत्य। वसन्त ऋतु। चैत्र मास। पाँचवाँ प्रति-वासुदेव राजा। एक राजा। मथुरा का एक राज-कुमार। चक्रवर्ती का एक देव-कृत महल। महुआ का गाछ। अशोक-वृक्ष। न. दारू। शहद। पुष्प-रस। मधुर-रस। जल। छन्द-विशेष। मधुर, मिष्ट वस्तु। °अर पुंस्त्री [°कर] भ्रमर। °अरवित्ति स्त्री [°करवृत्ति] भिक्षा-वृत्ति। [°अरीगीय] न [°करीगीत] नाट्य विधि-विशेष। °आसव वि [°आश्रव] जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धिवाला। °गुलिया स्त्री [°गुटिका] शहद की गोली। °पडल न [°पटल] मधुपुडा। °भार पुं. छन्द-विशेष। °मक्खिया, °मच्छिआ स्त्री [°मक्षिका] शहद की मक्खी। °मय वि. मधु से भरा। °मह पुं [°मथ] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र। भ्रमर। °मह पुं. वसन्त का उत्सव। °महण पुं [°मथन] विष्णु। समुद्र। सेतु। °मास पुं. चैत मास। °मित्त पुंन [°मित्र] कामदेव। °मेहण न [°मेहन] मधु-प्रमेह। °मेहि पुं [°मेहिन्] मधु-प्रमेह रोगवाला। °राय पुं [°राज] एक राजा। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] जेठी मधु। ओषधि। इक्षु। °वक्क पुं [°पर्क] दधियुक्त मधु। षोडशोपचार पूजा का छठवाँ उपचार। °वार पुं. मद्य। °सिंगी स्त्री [°शृंगी] वनस्पति-विशेष। °सूयण पुं [°सूदन] विष्णु।

महुअ पुं [मधूक] महुआ वृक्ष (न. फल)।

महुअ पुं [दे] श्रीवद पक्षी। स्तुति-पाठक।

महुण सक [मथ्] देखो मह।

महुत्त (अप) देखो मुहुत्त।

महुप्पल न [महोत्पल] कमल।

महुमुह पुं [दे.मधुमुख] पिशुन, दुर्जन।

महुर पुं. अनार्य देश-विशेष। उस देश में रहने वाली अनार्य मनुष्य-जाति।

महुर वि [मधुर] मीठा। कोमल। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी।

महुरा स्त्री [मथुरा] भारत की एक नगरी। °मंगु पुं [°मङ्गु] एक जैनाचार्य। °हिव पुं [°धिप] मथुरा का राजा।

महुरालिअ वि [दे] परिचित।

महुरिम पुंस्त्री [मधुरिमन्] माधुर्य।

महुरेस पुं [मथुरेश] मथुरा का राजा।

महुला स्त्री [दे] रोग-विशेष, पाद-गण्ड।

महुसित्थ न [मधुसिक्थ] मदन, मोम। पंक-विशेष, स्त्री के पैर में लगा हुआ अलता तक लगनेवाला कादा। कला-विशेष।

महुस्सव देखो महूसव।

महूअ देखो महुअ = मधूक।

महूसव पुं [महोत्सव] बड़ा उत्सव।

महेंद देखो महिंद।

महेड्ड पुं [दे] पंक।

महेब्भ पुं [महेभ्य] बड़ा सेठ।

महेभ पुं [महेभ] बड़ा हाथी।

महेला स्त्री [महेला] स्त्री।

महेस } पुं [महेश]।
महेसर } [महेश्वर] महादेव। जिनदेव। श्रीमन्त। भूतवादी देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र। °दत्त पुं एक पुरोहित।

महेसि देखो मह-रिसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महोअर पुं [महोदर] रावण का एक भाई। वि. बहु-भक्षी।
महोअहि पुं [महोदधि] महासागर। °रव पुं. वानर-वंश का एक राजा।
महोच्छव देखो महूसव।
महोदहि देखो महोअहि।
महोरग पुं [महोरग] व्यन्तर देवों की एक जाति। बड़ा साँप। महा-काय सर्प की एक जाति। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष।
महोरगकंठ पुं [महोरगकण्ठ] रत्न-विशेष।
महोसव देखो महूसव।
महोसहि स्त्री [महौषधि] श्रेष्ठ औषधि।
मा अ. नहीं।
मा स्त्री. लक्ष्मी, दौलत। शोभा।
मा, माअ } अक [मा] समाना, अटना। सक. माप करना। निश्चय करना, जानना।
माअडि पुं [मातलि] इन्द्र का सारथि।
माअरा देखो माइ = मातृ।
माअलि देखो माअडि।
माअलिआ स्त्री [दे] मातृष्वसा।
माअही स्त्री [मागधी] काव्य की एक रीति। देखो मागहिआ।
माआरा, माइ } स्त्री [मातृ] जननी। देवता, देवी। नारी। माया। भूमि। विभूति। लक्ष्मी। रेवती। आखुकर्णी। जटामांसी। इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण। °घर न [°गृह] देवी-मन्दिर। °ट्ठाण, °ठाण न [°स्थान] माया-स्थान। माया, कपट-दोष। °मेह पुं [°मेध] जिसमें माता का वध किया जाय वह यज्ञ। °हर देखो °घर। देखो माउ, माया = मातृ।
माइ वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी।
माइ अ [मा] मत, नहीं।
माइ, माइअ } वि [दे] रोमवाला, प्रभूत बालों से युक्त। मयूरित, पुष्प-विशेषवाला।
माइअ वि [मायिक] मायावी।
माइअ वि [मात्रिक] मात्रा-युक्त, परिमित।
माइं देखो माइ = मा।
माइंगण न [दे] वृन्ताक।
माइंद [दे] देखो मायंद।
माइंद पुं [मृगेन्द्र] सिंह।
माइंदजाल, माइंदयाल } न [मायेन्द्रजाल] माया-कर्म, बनावटी प्रपञ्च।
माइंदा स्त्री [दे] आमलकी, आमला का गाछ।
माइण्हिआ स्त्री [मृगतृष्णिका] धूप में जल की भ्रान्ति।
माइलि वि [दे] मृदु, कोमल।
माइल्ल देखो माइ = मायिन्।
माइवाह, माईवाह } पुंस्त्री [दे. मातृवाह] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष।
माउ देखो माइ = मातृ। °ग्गाम पुं [°ग्राम] स्त्री-वर्ग। °च्छा देखो °सिआ। °पिउ पुं [°पितृ] माँ-बाप। °म्महो स्त्री [°मही] नानी। °सिआ, °सी, °स्सिआ स्त्री [°ष्वसृ] मौसी।
माउ, माउअ } वि [मातृ, °क] प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञानवाला। परिमाण-कर्ता, नापनेवाला। पुं. जीव। आकाश।
माउअ वि [मातृक] माता-सम्बन्धी।
माउअ पुंन [मातृक, °का] अकार आदि छयालीस अक्षर। स्वर। करण। नीचे देखो।
माउआ स्त्री [मातृका] माता। ऊपर देखो। °पय पुंन [°पद] शास्त्रों के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य।
माउआ स्त्री [दे. मातृका] दुर्गा, पार्वती, उमा।
माउआ स्त्री [दे] सहेली। मूंछ।
माउआपय न [मातृकापद] मूलाक्षर, 'अ' से 'ह' तक के अक्षर।
माउक्क वि [मृदु, °क] कोमल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माउक्क न [मृदुत्व] कोमलता ।
माउच्छा स्त्री [दे. मातृष्वसृ] देखो माउ-च्छा ।
माउच्छा स्त्री [दे] सखी ।
माउच्छ वि [दे] मृदु, कोमल ।
माउत्त देखो माउक्क = मृदुत्व ।
माउल पुं [मातुल] माँ का भाई, मामा ।
माउलिअ देखो मउलिअ ।
माउलिंग देखो माहुलिंग ।
माउलिंगा } स्त्री [मातुलिङ्गा, °ङ्गी]
माउलिंगी } बीजौरे का गाछ ।
माउलुंग देखो माहुलिंग ।
मागंदिअ पुं [माकन्दिक] °पुत्त पुं [°पुत्र] माकन्दिकपुत्र जैन-मुनि ।
मागसीसी स्त्री [मार्गशीर्षी] अगहन मास की पूर्णिमा । अगहन की अमावस्या ।
मागह } वि [मागध, °क] मगध देश में
मागहय } उत्पन्न, मगध देश का । पुं स्तुति-पाठक, चारण । °भासा स्त्री [°भाषा] देखो मागहिआ का पहला अर्थ ।
मागहिआ स्त्री [मागधिका] मगध देश की प्राकृत भाषा । कला-विशेष । छन्द-विशेष ।
माघवई } स्त्री [माघवती] सातवीं नरक-
माघवा } भूमि । [माघवा, °वी] ।
माघवी }
माज्जार देखो मज्जार ।
माडंबिअ पुं [माडम्बिक] 'मडंब' का अधिपति । सीमा-प्रान्त का राजा ।
माडंबिय वि [माडम्बिक] चित्र-मंडप का अध्यक्ष ।
माडिअ न [दे] गृह ।
माढर पुं [माठर] सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति । न. गोत्र-विशेष । शास्त्र-विशेष ।
माढर पुंस्त्री [माठर] माठर-गोत्र में उत्पन्न ।
माढरी स्त्री [माठरी] वनस्पति-विशेष ।
माढिअ वि [माठित] सन्नाह-युक्त, वर्मित ।

माढी स्त्री [माठी] कवच, वर्म, बख्तर ।
माण सक [मानय्] सम्मान करना । अनुभव करना ।
माण पुंन [मान] अहंकार । माप, परिमाण । नापने का साधन, बाट—बटखरा आदि । प्रमाण । आदर । पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र । °इंत, °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] मानवाला । °तुंग पुं [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि । °वई स्त्री [°वती] मानवाली स्त्री । रावण की एक पत्नी । °संघ न. एक विद्याधर-नगर । °वाइ वि [°वादिन्] अहंकारी ।
माण वि [मान] मान-सम्बन्धी ।
माण न [दे] दस सेर की नाप ।
माणंसि वि [दे] मायावी । स्त्री. चन्द्र-वधू ।
माणंसि देखो मणंसि ।
माणण न [मानन] आदर, सत्कार । मानना । अनुभव । सुख का अनुभव ।
माणय देखो माण = (दे) ।
माणव पुं [मानव] मनुष्य, मर्त्य । भगवान् महावीर का एक गण ।
माणवग } पुं [मानवक] अस्त्र-शस्त्रों की
माणवय } पूर्ति करनेवाली निधि । ज्योतिष्क महाग्रह । सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ ।
माणवी स्त्री [मानवी] एक विद्या-देवी ।
माणस न [मानस] सरोवर-विशेष । मन । वि. मन का । पुं. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक ।
माणसिअ वि [मानसिक] मन-सम्बन्धी ।
माणसिआ स्त्री [मानसिका] एक विद्या-देवी ।
माणि वि [मानिन्] मानवाला । पुं. रावण का एक सुभट । पर्वत-विशेष । कूट-विशेष ।
माणिअ वि [दे. मानित] अनुभूत ।
माणिक्क न [माणिक्य] रत्न-विशेष ।
माणिण देखो माणि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणिभद्द पुं [माणिभद्र] यक्ष-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र। यक्षदेवों की एक जाति। देव-विशेष। शिखर-विशेष। एक देव-विमान।

माणिम देखो माण = मानय्।

माणी स्त्री [मानिका] २५६ पलों का माप।

माणुस पुंन [मानुष] मनुष्य। वि. मनुष्य-सम्बन्धी।

माणुसी स्त्री [मानुषी] स्त्री-मनुष्य। मनुष्य से सम्बन्ध रखनेवाली।

माणुसुत्तर, माणुसोत्तर } पुं [मानुषोत्तर] मनुष्यलोक का सीमाकारक पर्वत। न. एक देव-विमान।

माणुस्स देखो माणुस।

माणुस्स, माणुस्सय } न [मानुष्य, °क] मनुष्यत्व।

माणुस्सी देखो माणुसी।

माणूस देखो माणुस।

माणेसर पुं [माणेश्वर] माणिभद्र यक्ष।

माणोरामा (अप) स्त्री [मनोरामा] छन्द-विशेष।

मातंग देखो मायंग।

मातंजण देखो मायंजण।

मातुलिंग देखो माहुलिंग।

मादलिआ स्त्री [दे] माता।

मादु देखो माउ = स्त्री।

माधवी देखो माहवी = माधवी।

माभाइ, माभीसिअ } पुंस्त्री [दे] अभय-दान, अभय। न [दे]।

माम अ. कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय।

माम पुं [दे] माँ का भाई।

मामग, मामय } वि [मामक] मदीय, मेरा। ममतावाला।

मामा स्त्री [दे] मामी।

मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' बोलनेवाला, निवारक।

मामास पुं [मामाष] अनार्य देश-विशेष। अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति।

मामि अ. सखी आमन्त्रण का अव्यय।

मामिया, मामी } स्त्री [दे] मामा की बहू।

माय वि [मात] समाया हुआ।

माय वि [मायावत्] कपटवाला।

माय देखो मेत्त = मात्र।

माय° देखो माया = माया।

माय° देखो मत्ता = मात्रा। °न्न वि [°ज्ञ] परिमाण का जानकार।

मायइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष।

मायंग पुं [मातङ्ग] भ. सुपार्श्वनाथ का शासन-यक्ष। भ. महावीर का शासन-यक्ष। हाथी। चाण्डाल, डोम।

मायंगी स्त्री [मातङ्गी] चाण्डालिन। एक विद्या।

मायंजण पुं [मातञ्जन] पर्वत-विशेष।

मायंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य।

मायंद पुं [दे. माकन्द] आम का पेड़।

मायंदिअ देखो मागंदिअ।

मायंदी स्त्री [माकन्दी] नगरी-विशेष।

मायंदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी।

मायण्हिया स्त्री [मृगतृष्णिका] किरण में जल की भ्रान्ति, मरु-मरीचिका।

मायण्हिय (अप) देखो मायण्हिया।

माया = देखो माइ = मातृ। °पिइ, °पिति पुंन [°पितृ] माँ-बाप। °मह पुं. माँ का बाप। °वित्त देखो °पिइ।

माया देखो मत्ता = मात्रा।

माया स्त्री [माया] कपट, धोखा। इन्द्रजाल। मन्त्राक्षर 'ह्रीँ'। छन्द-विशेष। °णर पुं. [°नर] पुरुष-वेश-धारी स्त्री-आदि। °बीय न [°बीज] 'ह्रीँ' अक्षर। °मोस पुंन [°मृषा] कपट-पूर्वक असत्य वचन। °वत्तिअ, °वत्तीय वि [°प्रत्ययिक] छल-मूलक। °वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि [°विन्] मायायुक्त।
मार सक [मारय्] ताड़न या हिंसा करना।
मार पुं ताड़न। मरण, मौत। यम। कामदेव। चौथा नरक का एक नरकावास। वि. मारनेवाला। °वहू स्त्री [°वधू] रति।
मार पुं. मणि का एक लक्षण।
मारग वि [मारक] मारनेवाला।
मारणअ (अप) वि [मारयितृ] मारनेवाला।
मारणंतिअ वि [मारणान्तिक] मरण के अन्त समय का।
मारय देखो मारग।
मारा स्त्री. प्राणि-वध का स्थान, सूना।
मारि स्त्री. मृत्यु-दायक रोग। मारण। मौत।
मारि मार = मारय् का संकृ.।
मारिज्ज पुं [मारीच] रावण का एक सुभट। ऋषि-विशेष।
मारिज्जि देखो मरिइ।
मारिलग्गा स्त्री [दे] कुत्सित स्त्री।
मारिव पुंन [दे] गौरव।
मारिस वि [मादृश] मेरे जैसा।
मारी स्त्री. देखो मारि।
मारीअ पुं [मारीच] देखो मारिज्ज।
मारीइ } मारीजि } पुं [मारीचि] एक विद्याधर सामन्त राजा। रावण का एक सुभट।
मारुअ पुं [मारुत] पवन। हनुमान का पिता। °तणय पुं [°तनय] हनूमान। °त्थ न [°अस्त्र] वातास्त्र।
मारुअ वि [मारुक] मरु देश का।
मारुइ पुं [मारुति] हनूमान।
माल अक [माल्] शोभना। वेष्टित होना।
माल पुं [दे] बगीचा। मञ्च, आसन-विशेष। वि. मञ्जु।
माल पुं [दे. माल] देश-विशेष। तला, मंजिल। वनस्पति-विशेष।
माल° देखो माला। °गार वि [°कार] माली।
मालइ° } मालई } स्त्री [मालती] लता-विशेष। पुष्प-विशेष। छन्द-विशेष।
मालंकार पुं [मालङ्कार] वैरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति।
मालव पुं. देश-विशेष। उसका निवासी। म्लेच्छ-विशेष, आदमी को उठा ले जानेवाली एक चोर जाति।
मालवंत पुं [माल्यवत्] पर्वत-विशेष। एक राजकुमार। °परियाग, °परियाय पुं [°पर्याय] पर्वत-विशेष।
मालविणी स्त्री [मालविनी] लिपि-विशेष।
माला स्त्री. फूल आदि का हार। पंक्ति। समूह। छन्द-विशेष। °इल्ल वि [°वत्] मालावाला। °कारि वि [°कारिन्]। °गार वि [°कार] माली। °धर पुं. प्रतिमा के ऊपर की रचना-विशेष। °यार, °र देखो °कार। °हरा स्त्री [°धरा] छन्द-विशेष।
माला स्त्री [दे] ज्योत्स्ना।
मालाकुंकुम न [दे] प्रधान कुंकुम।
मालि पुंस्त्री. वृक्ष-विशेष।
मालि } मालिअ } पुं [मालिन्] पाताल-लंका का राजा। [मालिक]। देश-विशेष। वि. माली। शोभनेवाला।
मालिआ स्त्री [मालिका, माला] देखो माला।
मालिज्ज न [मालीय] एक जैन मुनि-कुल।
मालिणी स्त्री [मालिनी] माली की स्त्री। शोभनेवाली। छन्द-विशेष। मालावाली।
मालिण्ण न [मालिन्य] मलिनता।
मालुग } मालुय } पुं [मालुक] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष। वृक्ष-विशेष।
मालुया स्त्री [मालुका] वल्ली। वल्ली-विशेष।
मालुहाणी स्त्री [मालुधानी] लता-विशेष।
मालूर पुं [दे. मालर] कपित्थ।
मालूर पुं. बेल का गाछ। न. बेल का फल।
माविअ वि [मापित] मापा हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मास देखो मंस = मांस।

मास पुं. महीना। काल। पर्व—वनस्पति-विशेष। °उस देखो °तुस। °कप्प पुं [°कल्प] एक स्थान में महीना तक रहने का आचार। °खमण न [°क्षपण] एक मास का उपवास। °गुरु न. एकाशन तप। °तुस पुं [°तुष] एक जैन मुनि। °पुरी स्त्री. भंगी या वर्त देश की राजधानी। °पूरिया स्त्री [°पूरिका] जैन मुनि-शाखा। °लहु न [°लघु] 'पुरिमड्ढ' तप।

मास पुं [माष] अनार्य-देश। उसकी मनुष्य-जाति। उड़द। परिमाण-विशेष, मासा। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति-विशेष।

मासल देखो मंसल।

मासाहस पुं [मासाहस] पक्षि-विशेष।

मासिअ पुं [दे] पिशुन, दुर्जन।

मासिअ वि [मासिक] मास-सम्बन्धी।

मासिआ स्त्री [मातृष्वसृ] माँ की बहिन।

मासु देखो मंसु = श्मश्रु।

मासुरी स्त्री [दे] दाढी-मूँछ।

माह पुं [माघ] माघ महीना। संस्कृत का एक कवि। शिशुपालवध काव्य।

माह न [दे] कुन्द का फूल।

माहण पुंस्त्री [माहन, ब्राह्मण] अहिंसक—मुनि, साधु, ऋषि। श्रावक, जैन-उपासक। ब्राह्मण। °कुंड न [कुण्ड] मगध देश का ग्राम।

माहप्प } पुंन [माहात्म्य] महत्त्व, गौरव।
माहप्पया } प्रभाव। स्त्री.।

माहय पुं [दे] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष।

माहव पुं [माधव] श्रीकृष्ण, नारायण। वसन्त ऋतु। वैशाख मास। °पणइणी स्त्री [°प्रणयिनी] लक्ष्मी।

माहविआ } स्त्री [माधविका] [माधवी]
माहवी } लता-विशेष। एक राज-पत्नी।

माहारयण न [दे] कपड़ा। वस्त्र-विशेष।

माहिंद पुं [माहेन्द्र] एक-देवलोक। उसका स्वामी। ज्वर-विशेष। दिन का एक मुहूर्त्त। वि. महेन्द्र-सम्बन्धी।

माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रयव।

माहिल पुं [दे] भैंस चरानेवाला।

माहिवाय पुं [दे] शिशिर या माघ का पवन।

माहिसी देखो महिसी।

माही स्त्री [माघी] माघ मास की पूर्णिमा। माघ की अमावस्या।

माहुर वि [माथुर] मथुरा का।

माहुर न [दे] शाक।

माहुर वि [माधुर] मधुर रसवाला।

माहुरिअ न [माधुर्य] मधुरता।

माहुलिंग पुं [मातुलिङ्ग] बीजपूर वृक्ष। न. बीजौरे का फल।

माहेसर वि [माहेश्वर] महेश्वर-भक्त। न. नगर-विशेष।

माहेसरी स्त्री [माहेश्वरी] लिपि-विशेष। नगरी-विशेष।

मि (अप) देखो अवि—अपि।

मि° स्त्री [मृत्] मिट्टी। °प्पिंड पुं [°पिण्ड] मिट्टी का पिंडा। °म्मय वि [°मय] मिट्टी का बना।

मिअ देखो मय = मृग। °चक्क न [°चक्र] ग्राम-प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन से शुभाशुभ फल जानने की विद्या। °णअणी, °नयणा स्त्री [°नयना] देखो मय-च्छी। °मय पुं [°मद] कस्तूरी। °रिउ पुं [°रिपु] सिंह। °वाहण पुं [°वाहन] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर।

मिअ पुं [मृग] हरिण के जैसा पशु जो हरिण से छोटा और जिसका पुच्छ लम्बा होता है। °लोमिअ वि [°लोमिक] उसके बालों से बना।

मिअ देखो मित्त = मित्र।

मिअ वि [दे] विभूषित।

मिअ वि [मित] परिमित। थोड़ा। °वाइ वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°वादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को परिमित माननेवाला ।
मिअ देखो मिव = इव ।
मिअ° देखो मिआ । °ग्गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष ।
मिअआ स्त्री [मृगया] शिकार ।
मिअंक पुं [मृगाङ्क] चाँद । चन्द्र-विमान । इक्ष्वाकुवंश का राजा । °मणि पुं. चन्द्रकान्त मणि ।
मिअंग देखो मयंग = मृदंग ।
मिअसिर देखो मगसिर ।
मिआ स्त्री [मृगा] राजा विजय या बलभद्र की पत्नी । °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा विजय का पुत्र । राजा बलभद्र का पुत्र, बलश्री । °वई स्त्री [°वती] प्रथम वासुदेव की माता । राजा शतानीक की पटरानी ।
मिइ स्त्री [मिति] मान, परिमाण ।
मिइ देखो मिउ = मृत् ।
मिइंग देखो मयंग = मृदंग ।
मिइंद देखो मइंद = मृगेन्द्र ।
मिउ स्त्री [मृद्] मिट्टी ।
मिउ वि [मृदु] कोमल । मनोज्ञ ।
मिंचण न [दे] मीचना ।
मिंज°, मिंजा, मिंजिय } स्त्री [मज्जा] हाड़ के बीच का अवयव-विशेष । मध्यवर्त्ती अवयव ।
मिंठ, मिंठिल } पुं [दे] हाथी का महावत । देखो मेंठ ।
मिंढ पुंस्त्री [मेढ्र] मेंढा, भेड़ । न. पुरुष-लिंग । °मुह पुं [°मुख] अनार्यदेश । न. एक नगर । देखो मेंढ ।
मिंढिय पुं [मेण्ढिक] ग्राम-विशेष ।
मिग देखो मय = मृग । °गंध पुं [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की जाति । °नाह पुं [°नाथ] । °वइ पुं [°पति] सिंह । °वालुंकी स्त्री [°वालुङ्की] वनस्पति-विशेष । °रि पुं. । °ाहिव पुं [°ाधिप] सिंह ।
मिगया, मिगव्व } स्त्री [मृगया] शिकार । न. [मृगव्य] ।
मिगसिर देखो मगसिर ।
मिगावई देखो मिआ-वई ।
मिगी स्त्री [मृगी] हरिणी । विद्या-विशेष । °पद न. स्त्री-योनि ।
मिच्चु देखो मच्चु ।
मिच्छ (अप) देखो इच्छ = इष् ।
मिच्छ पुं [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य । °पहु पुं [°प्रभु] म्लेच्छों का राजा । °पिय न [प्रिय]प्याज, लशुन । °ाहिव पुं [°ाधिप] यवनों का राजा ।
मिच्छ न [मिथ्य] असत्य वचन । वि. झूठा । मिथ्यादृष्टि, तत्त्व का अश्रद्धालु ।
मिच्छ° देखो मिच्छा । °कार पुं. मिथ्याकरण । °त्त न [°त्व] सत्य धर्म का अविश्वास । °द्दिट्ठि, °दिट्ठीय, °द्दिट्ठि, °द्दिट्ठिय वि [°दृष्टि, क°] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखनेवाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म माननेवाला ।
मिच्छा अ [मिथ्या] असत्य । मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म । प्रथम गुण-स्थानक । °दंसण न [°दर्शन] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा । असत्य धर्म । °नाण न [°ज्ञान] विपरीत ज्ञान, अज्ञान । °सुअ न [°श्रुत] असत्य-मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र ।
मिज्ज अक [मृ] मरना ।
मिज्झ वि [मेध्य] शुचि ।
मिट सक [दे] मिटाना, लोप करना ।
मिट्ठ वि [मिष्ट, मृष्ट] मीठा, मधुर ।
मिण सक [मा, मी] परिमाण करना । नापना, तोलना । जानना, निश्चय करना ।
मिणाय न. बलात्कार, जबरदस्ती ।
मिणाल देखो मुणाल ।
मित्त पुं [मित्र] सूर्य । अनुराधा नक्षत्र का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिष्ठायक देव। अहोरात्र का मुहूर्त। एक राजा। पुंन. दोस्त। °केसी स्त्री [°केशी] रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। °गा स्त्री. वैरोचन बलीन्द्र की अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा। °दाम पुं. एक कुलकर पुरुष। °देवा स्त्री. अनुराधा नक्षत्र। °व वि[°वत्] मित्रवाला। °सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र।

मित्त देखो मेत्त = मात्र।

मित्तल पुं [दे] कन्दर्प।

मित्ति स्त्री [मति] मान, परिमाण। सापेक्षता।

मित्तिआ स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी। °वई स्त्री [°वती] दशार्ण देश की राजधानी।

मित्तिज्ज अक [मित्रीय्] मित्र को चाहना।

मित्तिय न [मैत्रेय] वत्स गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उसमें उत्पन्न।

मित्तिवय पुं [दे] पति का बड़ा भाई।

मित्ती स्त्री [मैत्री] दोस्ती।

मिथुण देखो मिहुण।

मिदु देखो मिउ।

मिरिअ पुंन [मिरिच] मिरच, मिर्चा।

मिरिआ स्त्री [दे] झोंपड़ी।

मिरिइ
मिरी
मिरीइ } पुंस्त्री [मरीचि] किरण, प्रभा।
मिरीय

मिल अक [मिल्] मिलना। एकत्रित होना।

मिलक्खु पुंन. देखो मिच्छ = म्लेच्छ।

मिला
मिलाअ } अक [म्लै] म्लान होना, निस्तेज होना।

मिलाण वि [म्लान] निस्तेज, विच्छाय।

मिलाण न [दे] पर्याण (?)।

मिलाणि स्त्री [म्लानि] विच्छायता।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ। [मेलित] मिलाया हुआ।

मिलिच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ।

मिलिट्ठ वि [म्लिष्ट] अस्पष्ट वाक्यवाला। म्लान। न. अस्पष्ट वाक्य।

मिलिमिलिमिल अक [दे] चमकना।

मिलीण देखो मिलिअ।

मिल्ल सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना।

मिल्लाविअ वि [मोचित] छुड़ाया हुआ।

मिल्लिअ (अप) देखो मिलिअ।

मिल्ह देखो मिल्ल।

मिव देखो इव।

मिस सक [मिस्] शब्द करना।

मिस न [मिष] बहाना, छल, व्याज।

मिसमिस अक [दे] खूब जलना या चमकना।

मिसल (अप) सक [मिश्रय्] मिश्रण करना।

मिसल (अप) देखो मोस, मीसालिअ।

मिसिमिस देखो मिसमिस।

मिसिमिसिय वि [दे] उद्दीप्त, उत्तेजित।

मिस्स सक [मिश्रय्] मिश्रण करना।

मिस्स देखो मीस = मिश्र।

°मिस्स पुं [°मिश्र] पूज्य।

मिस्साकूर पुंन [मिश्राकूर] खाद्य-विशेष।

मिह अक [मिध्] स्नेह करना।

मिह देखो मिस = मिष।

मिह देखो मिहो।

मिहिआ स्त्री [दे] मेघ-समूह।

मिहिआ स्त्री [मिघिका], देखो महिआ।

मिहिर पुं. सूर्य।

मिहिला स्त्री [मिथिला] नगरी-विशेष।

मिहु
मिहुं } देखो मिहो।

मिहुण न [मिथुन] स्त्री-पुरुष का युग्म। ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि।

मिहो अ [मिथस्] आपस में।

मीअ न [दे] समकाल, उसी समय।

मीण पुं [मीन] मछली। राशि-विशेष।

मीत देखो मित्त = मित्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मीमंस सक [मीमांस्] विचार करना ।
मीमंसा स्त्री [मीमांसा] जैमिनीय दर्शन ।
मीरा स्त्री [दे] दीर्घ चुल्ली, बड़ा चुल्हा ।
मील अक [मील्] मीचाना, सकुचाना ।
मील देखो मिल ।
मीलच्छीकार पुं [मोलच्छीकार] यवन देश-विशेष । एक यवन राजा ।
मीस सक [मिश्रय्] मिश्रण करना ।
मीस वि [मिश्र] संयुक्त, मिला हुआ । न. लगातार तीन दिनों का उपवास ।
मीसालिअ वि [मिश्र] संयुक्त, मिला हुआ ।
मुअ सक [मोदय्] खुश करना ।
मुअ सक [मुच्] छोड़ना ।
मुअ वि [मृत] मरा हुआ । °वहण न [°वहन] शव यान, ठठरी, अरथी ।
मुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ ।
मुअंक देखो मिअंक ।
मुअंग देखो मिअंग ।
मुअंगी स्त्री [दे] कीटिका, चींटी ।
मुअग्ग पुं [दे] बाह्य और अभ्यन्तर पुद्‌गलों से बना आत्मा ऐसा मिथ्या-ज्ञान ।
मुअण न [मोचन] छुटकारा, छोड़ना ।
मुअल (अप) देखो मुअ = मृत ।
मुआ स्त्री [मृत्] मिट्टी ।
मुआ स्त्री [मुद्] हर्ष, आनन्द ।
मुआइणी स्त्री [दे] डोमिन, चाण्डालिन ।
मुइ वि [मोचिन्] छोड़नेवाला ।
मुइअ वि [मुदित] हर्षित । पुं. रावण का सुभट ।
मुइअ वि [दे] योनि-शुद्ध, निर्दोष मातावाला ।
मुइअंगा देखो मुअंगी ।
मुइंग देखो मिअंग । °पुक्खर पुंन [°पुष्कर] मृदंग का ऊपरवाला भाग ।
मुइंगलिया } स्त्री [दे] कीटिका, चींटी ।
मुइंगा }
मुइंगि वि [मृदङ्गिन्] मृदंग बजानेवाला ।
मुइंद देखो मइंद = मृगेन्द्र ।
मुइज्जंत मुअ = मोदय् का कवकृ. ।
मुइर वि [मोक्तृ] छोड़नेवाला ।
मुउ देखो मिउ ।
मुउंद पुं [मुचुकुन्द] नृप-विशेष । पुष्पवृक्ष-विशेष ।
मुउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण ।
मुउर देखो मउर = मुकुर ।
मुउल देखो मउल = मुकुल ।
मुंगायण न [मृङ्गायण] विशाखा नक्षत्र का गोत्र ।
मुंच देखो मुअ = मुच् ।
मुंज पुंन [मुञ्ज] मूंज तृण । °मेहला स्त्री [°मेखला] मूंज का कटिसूत्र ।
मुंजइ न [मौञ्जकिन्] गोत्र-विशेष । पुंस्त्री. गोत्र में उत्पन्न ।
मुंजकार पुं [मुञ्जकार] मूंज की रस्सी बनानेवाला शिल्पी ।
मुंजायण पुं [मौञ्जायन] ऋषि-विशेष ।
मुंजि पुं [मौञ्जिन्] ऊपर देखो ।
मुंट वि [दे] हीन शरीरवाला ।
मुंड सक [मुण्डय्] मूंडना । दीक्षा देना ।
मुंड पुंन [मुण्ड] सिर । वि दीक्षित । °परसु पुं [°परशु] नंगा या तीक्ष्ण कुठार ।
मुंडा स्त्री [दे] मृगी ।
मुंडी स्त्री [दे] नीरङ्गी, शिरो-वस्त्र, घूंघट ।
मुंढ } पुं [मूर्धन्] मस्तक । देखो मुद्ध =
मुंढाण } मूर्धन् ।
मुकलाव सक [दे] भेजवाना ।
मुकुर पुं. दर्पण, आईना ।
मुक्क (अप) सक [मुच्] छोड़ना ।
मुक्क वि [मूक] गूंगा ।
मुक्क देखो मुक्कल ।
मुक्क वि [मुक्त] त्यक्त । मोक्षप्राप्त । पाँच दिन का उपवास । देखो मुत्त = मुक्त ।
मुक्कय न [दे] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्त्रित कन्याओं का विवाह।

मुक्कल वि [दे] उचित। स्वैर, बन्धन-मुक्त।

मुक्कलिअ वि [दे] बन्धन-मुक्त। अनियन्त्रित।

मुक्कुंडी स्त्री [दे] जूट।

मुक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढेर।

मुक्केलय देखो मुक्क = मुक्त।

मुक्ख पुं [मोक्ष] निर्वाण। छुटकारा।

मुक्ख वि [मूर्ख] अज्ञानी, बेवकूफ।

मुक्ख वि [मुख्य] प्रधान, नायक।

मुक्ख पुंन [मुष्क] अण्डकोष। वृक्ष-विशेष। चोर। वि. मांसल, पुष्ट।

मुक्खणी स्त्री [मोक्षणी] स्तम्भन से छुटकारा करनेवाली विद्या-विशेष।

मुख देखो मुह = मुख।

मुख पुं. एक म्लेच्छ-जाति। गाड़ी के ऊपर का ढक्कन।

मुग देखो मुग्ग।

मुगुंद देखो मउंद = मुकुन्द।

मुगुंस पुंस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति। देखो मंगुस, मुग्गस।

मुग्ग पुं [मुद्ग] मूँग। रोग-विशेष। जल-काक। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति-विशेष। °सेल पुं [°शैल] कभी नहीं भींगने-वाला एक पर्वत।

मुग्गड पुं [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति-विशेष। व्यन्तर-विशेष। देखो मोग्गड।

मुग्गर न [मुद्गर] देखो मोग्गर।

मुग्गरय न [दे. मुग्धारत] मुग्धा के साथ रमण।

मुग्गल देखो मुग्गड।

मुग्गस पुं [दे] नकुल।

मुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना।

मुग्गिल } पुं [दे] पर्वत-विशेष।
मुग्गिल्ल }

मुग्गुसु देखो मुग्गस।

मुग्घड देखो मुग्गड।

मुग्घुरुड देखो मुक्कुरुड।

मुचकुंद देखो मुउकुंद।

मुच्छ अक [मूर्च्छ्] मूर्छित होना। आसक्त होना। बढ़ना।

मुच्छणा स्त्री [मूर्च्छना] गान का एक अंग।

मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] मोह। बेहोशी। गृद्धि, आसक्ति। मूर्च्छना, गीत का एक अंग।

मुच्छिअ वि [मूर्च्छित] मूर्च्छा-युक्त। पुं. नरकावास-विशेष।

मुच्छिम पुं [मूर्च्छिम] मत्स्य-विशेष।

मुज्झ अक [मुह्] मोह करना। घबड़ाना।

मुट्टिम पुंस्त्री [दे] गर्व। देखो मोट्टिम।

मुट्ठ वि [मुष्ट] जिसकी चोरी हुई हो।

मुट्ठि पुंस्त्री [मुष्टि] मूठी, मुक्का। °जुज्झ न [°युद्ध] मुष्टि की लड़ाई, मूका-मूकी। °पुत्थय न [°पुस्तक] चार अंगुल वृत्ताकार या चतुष्कोण पुस्तक।

मुट्ठिअ पुं [मौष्टिक] अनार्य-देश या मनुष्य-जाति। मुट्ठी-मल्ल। वि. मुष्टि-सम्बन्धी।

मुट्ठिअ पुं [मुष्टिक] मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था। अनार्य देश या मनुष्य-जाति।

मुट्ठिका स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी।

मुड्ढ देखो मुंढ।

मुड्ढ वि [मुग्ध, मूढ] मूर्ख, बेवकूफ।

मुण सक [ज्ञा, मुण्] जानना।

मुणमुण सक [मुणमुणाय्] बड़बड़ाना।

मुणाल पुंन [मृणाल] पद्मकन्द के ऊपर की लता। पद्मनाल। पद्म आदि के नाल का तन्तु। वीरण का मूल। कमल।

मुणालि पुं [मृणालिन्] पद्म-समूह। कमल-वाला स्थान।

मुणालिआ } स्त्री [मृणालिका, °ली] बिस-तन्तु, बिस का अंकुर। कमलिनी। देखो मणालिया।
मुणाली }

मुणि पुं [मुनि] राग-द्वेष-रहित मनुष्य, संत,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साधु, ऋषि, यति। अगस्त्य ऋषि। सात की संख्या। छन्द-विशेष। °चंद पुं [°चन्द्र] जैन आचार्य और ग्रंथकार, वादी देवसूरि के गुरु। एक राज-पुत्र। °नाह पुं [°नाथ] साधुओं का नायक। °पुंगव पुं [पुङ्गव] श्रेष्ठ-मुनि। °राय पुं [°राज]। °वइ पुं [°पति]मुनि-नायक। °वर पुं.। °वेजयंत पुं [वैजयन्त]। °सीह पुं [°सिंह]श्रेष्ठ मुनि। °सुव्वय पुं [°सुव्रत] वर्तमान काल के भारतवर्ष के बीसवें तीर्थंकर। भारतवर्ष के भावी तीर्थंकर।

मुणि पुं [दे. मुनि] अगस्ति-द्रुम।

मुणिअ वि [दे. मुणिक] ग्रह-गृहीत, पागल।

मुणिंद पुं [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि।

मुणीस } पुं [मुनीश] मुनि-नायक।
मुणीसर } [मुनीश्वर]।

मुणीसिम (अप) पुंन [मनुष्यत्व] मनुष्यपन। पुरुषार्थ।

मुत्त सक [मूत्रय्] पेशाब करना।

मुत्त देखो मुक्क = मुक्त। °लय पुंस्त्री. मुक्त जीवों की ईषत्प्राग्भारा पृथिवी।

मुत्त वि [मूर्त] मूर्तिवाला, रूपवाला, आकारवाला। कठिन। मूढ़। मूर्च्छा-युक्त। एक उपवास। एक प्राण।

मुत्त° देखो मुत्ता।

मुत्ता स्त्री [मुक्ता] मोती। °जाल न. मुक्ता-समूह या माला। °दाम न[°दामन] मोतियों की माला। °वलि, °वली स्त्री. मोती का हार। तप, द्वीप या समुद्र-विशेष। °सुत्ति स्त्री [°शुक्ति]मोती की सीप। मुद्रा-विशेष। °हल न [°फल] मोती। °हल्लिल वि [°फलवत्] मोतीवाला।

मुत्ति स्त्री [मूर्ति] रूप, आकार। प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, शरीर। काठिन्य। °मंत वि[°मत्] मूर्तिवाला, मूर्त, रूपी।

मुत्ति स्त्री [मुक्ति] मोक्ष। निर्लोभता, संतोष। ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी। निस्संगता।

मुत्ति वि [मूत्रिन्] बहु-मूत्र रोगवाला।

मुत्ति वि [मौक्तिन्] मोती पिरोने या गूँथने वाला।

मुत्तिअ न [मौक्तिक] देखो मोत्तिअ।

मुत्तोली स्त्री [दे] मूत्राशय। ऊपर नीचे संकीर्ण और मध्य में विशाल। छोटा कोठा।

मुत्थ त्रि [मुस्त] मोथा, नागरमोथा।

मुदग्ग देखो मुअग्ग।

मुदा स्त्री [मुद्] खुशी। °गर वि [°कर] हर्षजनक।

मुदुग पुं [दे] ग्राह-विशेष। जल-जन्तु-जाति।

मुद्द सक [मुद्रय्] मोहर लगाना। बन्द करना। अंकन करना।

मुद्दंग पुं [दे] उत्सव। सम्मान।

मुद्दग पुं [मुद्रिका] अँगूठी।

मुद्दा स्त्री [मुद्रा] मोहर, छाप। अँगूठी। अंग-विन्यास-विशेष।

मुद्दिअ वि [मुद्रित] जिस पर मोहर लगाई गई हो वह। बंद किया हुआ।

मुद्दिअ° } स्त्री [मुद्रिका] अँगूठी।
मुद्दिआ } °बंध पुं [°बन्ध] ग्रन्थि-बन्ध।

मुद्दिआ स्त्री [मृद्वीका] दाख, उसकी लता।

मुद्दी स्त्री [दे] चुम्बन।

मुद्दुय देखो मुदुग।

मुद्ध देखो मुंढ। °न्न वि [°न्य] मस्तक में उत्पन्न। मस्तक-स्थ, अग्रेसर। मूर्धस्थानीय रकार आदि वर्ण। °य पुं [°ज] केश। °सूल न [°शूल] मस्तक-पीड़ा।

मुद्ध वि [मुग्ध] मूढ़। सुन्दर, मोह-जनक।

मुद्धा स्त्री [मुग्धा] नायिका का एक भेद, काम-चेष्टा-रहित अंकुरित यौवना।

मुद्धा (अप) देखो मुहा।

मुद्धाण देखो मुंढ।

मुब्भ पुं [दे] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ।

मुमुक्खु वि [मुमुक्षु] मुक्ति की चाह-वाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुम्मुइ } वि [मूकमूक] अत्यन्त मूक।
मुम्मुय } अव्यक्तभाषी।
मुम्मुर सक [चूर्णय्] चूरना, चूर्ण करना।
मुम्मुर पुं [दे.मुर्मुर] करीष, गोइंठा। उसकी आग। तुषाग्नि। भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण।
मुम्मुही स्त्री [मुन्मुखी] मनुष्य की ८०से९० वर्ष तक नववीं अवस्था।
मुर अक [लड्] विलास करना। सक. उत्पीड़न करना। जीभ चलाना। उपक्षेप करना। व्याप्त करना। बोलना। फेंकना।
मुर अक [स्फुट्] खिलना।
मुर पुं [मुर] दैत्य-विशेष। °रिउ पुं[°रिपु]। °वेरिय पुं [°वैरिन्]। °रि पुं. श्रीकृष्ण।
मुरई स्त्री [दे] असती, कुलटा।
मुरय पुं [मुरज] मृदंग। देखो मुरव।
मुरल पुं. ब. दक्षिण, केरल देश।
मुरव देखो मुरय। गल-घण्टिका।
मुरवि स्त्री [दे. मुरजिन्] आभरण-विशेष।
मुरिअ वि [दे] त्रुटित। वक्र बना हुआ।
मुरिअ पुं [मौर्य] क्षत्रिय-वंश। उसमें उत्पन्न।
मुरुंड पुं[मुरुण्ड]अनार्य-देश। पादलिप्तसूरि के समय का राजा। पुंस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी।
मुरुक्कि स्त्री [दे] पक्वान्न-विशेष।
मुरुक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख।
मुरुमुंड पुं [दे] जूट, केशों की लट।
मुरुमुरिअ न [दे] रणरणक, उत्सुकता।
मुरुह देखो मुरुक्ख।
मुलासिअ पुं [दे] स्फुलिंग, अग्नि-कण।
मुल्ल (अप) देखो मुंच।
मुल्ल पुंन [मूल्य] कीमत।
मुव (अप) देखो मुअ = मुच्।
मुव्वह देखो उव्वह = उद् + वह्।
मुस सक [मुष्] चोरी करना।
मुसंढि देखो मुसुंढि।
मुसल पुंन. मूसल या मूसर। मान-विशेष। °धर पुं. बलदेव। °उह पुं [°युध] बलदेव।
मुसल वि [दे] मांसल, पुष्ट।
मुसलि पुं [मुसलिन्] बलदेव।
मुसली देखो मोसली।
मुसह न [दे] मन की आकुलता।
मुसा अ. स्त्री [मृषा] मिथ्या, असत्य भाषण। °वाद देखो °वाय। °वादि वि [°वादिन्] झूठ बोलनेवाला। °वाय पुं [°वाद] असत्य भाषण।
मुसुंढि पुंस्त्री [दे] एक शस्त्र-विशेष। एक वनस्पति।
मुसुमूर सक [भञ्ज्] भांगना, तोड़ना।
मुहु देखो मुज्झ।
मुह न [मुख] वदन। अग्र-भाग। उपाय। द्वार। आरम्भ। नाटक आदि का सन्धि-विशेष। नाटक आदि का शब्द-विशेष। आद्य। मुख्य। शब्द, आवाज। नाटक। वेद-शास्त्र। प्रवेश। पुं. बड़हल का गाछ। °णंतग, °णंतय न [°नन्तक] मुख-वस्त्रिका। °तूरय न [°तूर्य] मुंह से बजाया जाता वाद्य। °धोवणिया स्त्री [°धावनिका] मुंह धोने की सामग्री, दतवन आदि। °पत्ती स्त्री [°पत्री]। °पुत्तिया, °पोत्तिया, °पोत्ती स्त्री [°पोतिका] मुखवस्त्रिका। °फुल्ल न. बड़हल का फूल। चित्रा-नक्षत्र का संस्थान। °भंडग न [°भाण्डक] मुखाभरण। °मंगलिय, °मंगलीअ वि [°माङ्गलिक] खुशामदी। °मक्कडा, °मक्कडिया स्त्री [°मर्कटा, °टिका] गला पकड़ कर मुख का वक्रीकरण। °वंत वि [°वत्] मुँह-वाला। °वड पुं [°पट] मुँह के आगे रखने का वस्त्र। °वडण न [°पतन] मुँह से गिरना। °वण्ण पुं [°वर्ण] प्रशंसा। °वास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुं. पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनानेवाला पदार्थ। °वीणिया स्त्री [°वीणिका] मुँह से विकृत शब्द या वाद्य का शब्द करना। मुहड देखो मुहल। °सय न [°शय] एक नगर।

मुहत्थडी स्त्री[दे] मुँह से गिरना।

मुहर देखो मुहल = मुखर।

मुहरिय वि [मुखरित] वाचाल बना हुआ।

मुहरोमराइ स्त्री [दे] भौं।

मुहल न [दे] मुख।

मुहल वि [मुखर] वाचाट, बकवादी। पुं. कौआ। शंख। °रव पुं. कोलाहल।

मुहा अ. स्त्री [मुधा] व्यर्थ। °जीवि वि [°जीविन्] भिक्षा पर निर्वाह करनेवाला।

मुहिअ } न [दे] बिना मूल्य, मुफ्त में
मुहिआ } स्त्री [दे. मुधिका]।

मुहु } अ [मुहुस्] बार-बार।
मुहुं }

मुहुत्त } पुंन [मुहूर्त्त] दो घड़ी का काल,
मुहुत्ताग } अड़तालीस मिनट का समय।

मुहुमुहु देखो महुमुह।

मुहुल देखो मुहल = मुखर।

मूअ देखो मुक्क = मूक।

मूअ देखो मूअ = मृत।

मूअल } वि [दे. मूक] मूक, वाक्-शक्ति से
मूअल्ल } हीन।

मूइंगलिया } देखो मुइंगलिया।
मुइंगा }

मूइल्लअ } वि [मृत] मरा हुआ।
मूयल्लिअ }

मूड } पुं [दे] अन्न का एक दीर्घ परिमाण।
मूढ }

मूढ़ वि [मूढ] मूर्ख, मुग्ध। °नइय न [°नयिक] शास्त्र-विशेष। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष।

मूण न [मौन] चुप्पी।

मूयग पुं [दे.मूयक] मेवाड़ का एक तृण।

मूर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना।

मूरग वि [भञ्जक] भाँगनेवाला, चूरनेवाला।

मूल न.जड़। निबन्धन, कारण। आदि। आद्य-कारण। समीप। नक्षत्र-विशेष। व्रतों का पुनः स्थापन। पिप्पली-मूल। वशीकरण के लिए ओषधि-प्रयोग। आद्य। मुख्य। मूलधन। पैर। सूरण-कन्द। व्याख्येय ग्रन्थ। प्रायश्चित-विशेष। पुंन. मूली। °छेज्ज वि [°छेद्य] मूल नामक प्रायश्चित्त से नाशयोग्य। °दत्ता स्त्री. शाम्ब की एक पत्नी। °देव पुं. एक व्यक्ति। °देवी स्त्री. लिपि-विशेष। °नायग पुं [°नायक] मन्दिर की मुख्य-प्रतिमा। °प्पाडि वि [उत्पाटिन्] मूल उखाड़नेवाला। °बिंब न [°बिम्ब] मुख्य प्रतिमा। °राय पुं [°राज] गुजरात का चौलुक्य-वंशीय राजा। °वंत वि [°वत्] मूलवाला। °सिरि स्त्री [°श्री] शाम्बकुमार की पत्नी।

मूलग } न [मूलक] कन्द-विशेष, मूली,
मूलय } मुरई। शाक-विशेष।

मूलगत्तिआ स्त्री [मूलगत्तिका] मूले—मूली की पतली फाँक।

मूलवेलि स्त्री[दे. मूलवेलि] घर के छप्पर का आधार-भूत-स्तम्भ-विशेष।

मूलिगा स्त्री [मूलिका] ओषधि-विशेष।

मूलिय न [मौलिक] मूलधन, पूँजी।

मूलिल्ल वि [मूल,मौलिक] प्रधान, मुख्य।

मूलिल्ल वि [मूलवत्] मूलधनवाला।

मूली स्त्री. वशीकरण की एक ओषधि।

मूस देखो मुस = मुष्।

मूसग } पुं [मूषक, मूषिक] चूहा।
मूसय }

मूसरि वि [दे] भग्न, भाँगा हुआ।

मूसल वि [दे] उपचित।

मूसल देखो मुसल = मुसल।

मूसा देखो मुसा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूसा स्त्री [मूषा] मूस, धातु गलाने का पात्र ।
मूसा } स्त्री [दे] छोटा दरवाजा ।
मूसाअ } न. ।
मूसिय देखो मूसय । °रि पुं. मार्जार ।
मे अ. मेरा । मुझसे ।
मेअ पुं [मेद] अनार्य देश-विशेष या जाति । पुंस्त्री. चाण्डाल । स्त्री. मेई ।
मेअ वि [मेय] जानने-योग्य, प्रमेय, पदार्थ । नापने-योग्य । °न्न वि [°ज्ञ] पदार्थ-ज्ञाता ।
मेअ पुंन [मेदस्] शरीर-स्थित चर्बी ।
मेअज्ज न [दे] अन्न ।
मेअज्ज पु [मेदार्य] मेदार्य गोत्र में उत्पन्न ।
मेअज्ज पुं [मेतार्य] भगवान् महावीर का दसवाँ गणधर । एक जैन महर्षि ।
मेअय वि [मेचक] कृष्ण-वर्ण ।
मेअर वि [दे] असहिष्णु ।
मेअल पुं [मेकल] पर्वत-विशेष । °कन्ना स्त्री [°कन्या] नर्मदा नदी ।
मेअवाडय पुंन [मेदपाटक] मेवाड़ ।
मेइणि° } स्त्री [मेदिनी] पृथिवी । चाण्डा-
मेइणी } लिन । °नाह पुं [°नाथ] राजा । °पइ पुं [°पति] राजा । चाण्डाल । °सामि पुं [°स्वामिन्] । °सर पुं.[°श्वर] राजा ।
मेंठ पुं [दे] महावत । देखो मिंठ ।
मेंठी स्त्री [दे] मेषी, गड़रिया ।
मेंढ पुंस्त्री [मेढ्र] भेड़, गाड़र । °मुह पुं [°मुख]एक अन्तर्द्वीप । उसकी मनुष्य-जाति । °विसाणा स्त्री [°विषाणा] मेढाशिंगी वनस्पति । देखो मिंढ ।
मेखला देखो मेहला ।
मेघ देखो मेह । °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नन्दन वन के शिखर की एक दिक्कुमारी देवी । °वई स्त्री [°वती] एक दिक्कुमारी देवी । °वाहण पुं [°वाहन] एक विद्याधर राजकुमार ।
मेघंकरा स्त्री [मेघङ्करा] एक दिक्कुमारी देवी ।
मेच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ ।
मेज्ज न [मेय]मान-तौल, जिससे मापा जाय ।
मेज्ज देखो मेअ = मेय ।
मेज्झ देखो मिज्झ ।
मेट देखो मिट ।
मेडंभ पुं [दे] मृग-तन्तु ।
मेडय पुं [दे] मजला, तला ।
मेड्ढ देखो मेंढ ।
मेढ पुं [दे] वणिक् को मदद करनेवाला ।
मेढक पुं [दे] काष्ठ का छोटा डंडा ।
मेढि पुं [मेथि] खले के बीच का काष्ठ, जहाँ पशु बाँध कर धान्य-मर्दन किया जाता है । आधार, स्तम्भ । °भूअ वि [°भूत] आधार-सदृश । नाभि-भूत, मध्य में स्थित ।
मेणआ } स्त्री [मेनका] हिमालय की
मेणक्का } पत्नी । स्वर्ग की एक वेश्या ।
मेत्त न [मात्र] संपूर्णता । अवधारण ।
मेत्तल [दे] देखो मित्तल ।
मेत्ती स्त्री [मैत्री] दोस्ती ।
मेधुणिया देखो मेहुणिआ ।
मेर (अप) वि [मदीय] मेरा ।
मेरग पुं [मेरक, मैरेयक] तृतीय प्रतिवासुदेव राजा । पुंन.मद्य-विशेष । वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा ।
मेरा स्त्री [दे. मिरा] मर्यादा ।
मेरा स्त्री. तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई । दशवें चक्रवर्ती की माता ।
मेरु पुं. पर्वत-विशेष । छन्द-विशेष । कोई भी पहाड़ ।
मेल सक [मेलय्] मिलाना । इकट्ठा करना ।
मेल पुं. मिलाप, संयोग, मिलन ।
मेलय पुं [मेलक] सम्बन्ध, संयोग । मेला ।
मेलव सक [मेलय्, मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना ।
मेलाय अक [मिल्] एकत्रित होना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेलाव देखो मेलव ।
मेलाव पुंन [मेल] मिलाप, संगम ।
मेलावग देखो मेलय ।
मेलावड (अप) देखो मेलय ।
मेलावय देखो मेलावग ।
मेली स्त्री [दे] संहति, मेला ।
मेलीण देखो मिलीण ।
मेल्ल देखो मिल्ल ।
मेल्लाविय वि [मोचित] छुड़वाया हुआ ।
मेव देखो एव ।
मेवाड } देखो मेअवाडय ।
मेवाढ }
मेस पुं [मेष] मेंढा, भेड़ । राशि-विशेष ।
मेह पुं [मेघ] जलधर । कालागुरु सुगन्धी धूप-द्रव्य । भ. सुमतिनाथ का पिता । एक जैन-महर्षि । राजा श्रेणिक का एक पुत्र । एक देव-विमान । छन्द-विशेष । एक वणिक्-पुत्र । एक जैनमुनि । देव-विशेष । मुस्तक, ओषधि । एक राक्षस । राग-विशेष । एक विद्याधर-नगर । °कुमार पुं. श्रेणिक का पुत्र । °ज्झाण पुं [°ध्यान]राक्षसवंशीय लंकापति । °णाअ पुं [°नाद] रावण-पुत्र । °पुर न. वैताढ्य के दक्षिण का एक नगर । °मुह पुं [°मुख] देव-विशेष । एक अन्तर्द्वीप । उसका निवासी । °रव न. विन्ध्य-स्थली का जैन तीर्थ । °वाहण पुं[°वाहन]लंका का राजा । राक्षस-वंश का आदिपुरुष । रावण का पुत्र । °सीह पुं [°सिंह] विद्याधर-वंश का राजा । देखो मेघ ।
मेह पुं. सेचन । प्रमेह-रोग ।
मेहंकरा देखो मेघंकरा ।
मेहच्छीर न [दे] जल ।
मेहण न [मेहन] झरन । मूत्र । पुरुष-लिंग ।
मेहर पुं [दे] गाँव का मुखिया ।
मेहरि पुंस्त्री [दे] काष्ठ-कीट, घुन ।
मेहरिया } स्त्री [दे] गानेवाली स्त्री ।
मेहरी }
मेहलय पुं ब. [मेखलक] देश-विशेष ।
मेहला स्त्री [मेखला] काञ्ची, करधनी ।
मेहलिज्जिया स्त्री [मेखलिया] एक जैन मुनि-शाखा ।
मेहा स्त्री [मेघा] चमरेन्द्र की महिषी इन्द्राणी ।
मेहा स्त्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा । °अर वि [°कर] बुद्धि-वर्धक । पुं. छन्द-विशेष ।
मेहा स्त्री [मेधा] अवग्रह-ज्ञान ।
मेहावई देखो मेघ-वई ।
मेहावण्ण न [मेघावर्ण] विद्याधर-नगर ।
मेहावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ ।
मेहि देखो मेढि ।
मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करनेवाला ।
मेहिय न [मेधिक] एक जैन मुनि-कुल ।
मेहिल पुं [मेधिल] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि ।
मेहुण न [मैथुन] रति-क्रिया ।
मेहुणय पुं [दे] फूफा का लड़का ।
मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लड़का ।
मेहुणिया स्त्री [दे] साली । मामा की पुत्री ।
मेहुन्न देखो मेहुण ।
मेरेअ न [मैरेय] मद्य-विशेष ।
मो अ इन अर्थों का सूचक अव्यय—अवधारण, निश्चय । पाद-पूर्ति ।
मोअ सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना ।
मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना ।
मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी ।
मोअ वि [दे] अधिगत । पुं. चिर्भट आदि का बीजकोश । पेशाब । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] प्रस्रवण का नियम ।
मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष ।
मोअग वि [मोचक] मुक्त करनेवाला ।
मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिष्टान्न-विशेष । न. एक छन्द । देखो मोदअ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोअणा स्त्री [मोचना] परित्याग । छुटकारा । मुक्त कराना ।
मोअय देखो मोअग ।
मोआ स्त्री [मोचा] कदली वृक्ष ।
मोआव सक [मोचय्] छुड़वाना ।
मोइल पुं [दे] मत्स्य-विशेष ।
मोंड देखो मुंड = मुण्ड ।
मोक पुं [मोक] सर्प-कंचुक ।
मोकल्ल सक [दे] भेजना ।
मोक्क देखो मुक्क = मुक्त ।
मोक्कणिआ } स्त्री [दे] कृष्ण कर्णिका, कमल
मोक्कणी } का काला मध्य भाग ।
मोक्कल देखो मोकल्ल ।
मोक्कल देखो मुक्कल ।
मोक्कलिय वि [दे] प्रेषित । विसृष्ट ।
मोक्ख देखो मक्ख = मोक्ष ।
मोक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख ।
मोक्ख न [दे] वनस्पति-विशेष ।
मोग्गड पुं [दे] देखो मुग्गड ।
मोग्गर पुं [दे] मुकुल, कलिका, बौर ।
मोग्गर पुं [मुद्गर] मुगरा, मोगरी । कमरख का पेड़ । मोगरा पुष्प का गाछ । देखो मुग्गर । °पाणि पुं. एक जैन महर्षि ।
मोग्गरिअ वि [दे] संकुचित, मुकुलित ।
मोग्गलायण } न [मौद्गलायन, °ल्या°]
मोग्गल्लायण } गोत्र-विशेष । पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न ।
मोग्गाहु देखो मुग्गाहु ।
मोघ देखो मोह = मोघ ।
मोच देखो मोअ = मोचय् ।
मोच न [दे] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता ।
मोच देखो मोअ = (दे) ।
मोचग देखो मोअग = मोचक ।
मोट्टाइअ न [रत] रति-क्रीड़ा ।
मोट्टाइअ न [मोट्टायित] प्रियकथा आदि में भावना से उत्पन्न चेष्टा ।
मोट्टाय अक [रम्] क्रीड़ा करना ।
मोट्टिम न [दे] बलात्कार । देखो मुट्टिम ।
मोड सक [मोटय्] मोड़ना, टेढ़ा करना । भांगना ।
मोड पुं [दे] जूट, लट ।
मोडग वि [मोटक] मोड़नेवाला ।
मोढ पुं. एक वणिक्-कुल ।
मोढेरय न [मोढेरक] नगर-विशेष ।
मोण न [मौन] मुनिपन, चुप्पी । °चर वि. मौन व्रतवाला । °पय न [°पद] संयम, चारित्र ।
मोणावणा स्त्री [दे] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण ।
मोत्त देखो मुत्त = मुक्त ।
मोत्ता देखो मुत्ता ।
मोत्ति देखो मुत्ति = मुक्ति ।
मोत्तिअ देखो मुत्तिअ मोती ।°दाम न. छन्द-विशेष ।
मोत्तुं मुंच = मुच् का संकृ. ।
मोत्तूण मुंच का हेकृ. ।
मोत्थ देखो मुत्थ ।
मोदअ देखो मोअग = मोदक ।
मोब्भ [दे] देखो मुब्भ ।
मोर पुं [दे] चाण्डाल ।
मोर पुं. मयूर, छन्द-विशेष । °बंध पुं[°बन्ध] एक प्रकार का बन्धन ।°सिहा स्त्री [°शिखा] एक महौषधि ।
मोरउल्ला } अ. व्यर्थ ।
मोरकुल्ला }
मोरंड पुं [दे] तिल आदि का मोदक खाद्य ।
मोरग वि [मायूरक] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न ।
मोरत्तय पुं [दे] श्वपच ।
मोरिय पुं [मौर्य] क्षत्रिय-वंश । उसमें उत्पन्न । °पुत्त पुं [°पुत्र] महावीर का एक गणधर ।
मोरी स्त्री. मोरनी । विद्या-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोलग पुं [दे.मौलक] बाँधने का खूँटा ।
मोलि देखो मउलि ।
मोल्ल देखो मुल्ल ।
मोस पुं [मोष] चोरी । चोरी का माल ।
मोस पुंन [मृषा] झूठ, असत्य भाषण ।
मोसण वि [मोषण] चोरी करनेवाला ।
मोसलि } स्त्री [दे. मुशली, मौशली]
मोसली } वस्त्रादि निरीक्षण करते समय मूसल की तरह ऊँचे या नीचे भीत आदि स्पर्श करने का एक दोष ।
मोसा देखो मुसा ।
मोह सक [मोहय्] भ्रम में डालना । मुग्ध करना ।
मोह देखो मऊह ।
मोह वि [मोघ] निष्फल, निरर्थक । मिथ्या ।
मोह पुं. मूढ़ता । विपरीत ज्ञान । चित्त की व्याकुलता । राग । काम-क्रीड़ा । मूर्छा । मोहनीय कर्म ।
मोहण न [मोहन] मुग्ध करना । मन्त्र आदि से वश करना । वशीकरण मंत्र । काम का एक बाण । प्रेम । मैथुन । वि. व्याकुल बनाने वाला । मोहक ।
मोहणिज्ज वि [मोहनीय] मोहजनक । न. मोह का कारण-भूत कर्म ।
मोहणी स्त्री [मोहनी] एक महौषधि ।
मोहर न [मौखर्य] वाचाटता, बकवाद ।
मोहर } वि [मौखर] बकवादी ।
मोहरिअ } वि [मौखरिक] ।
मोहरिअ न [मौखर्य] वाचालता ।
मोहिणी स्त्री [मोहिनी] छन्द-विशेष ।
मोहिय वि [मोहित] मुग्ध किया हुआ । न. निधुवन, मैथुन ।
मोहुत्तिय वि [मौहूर्त्तिक] ज्योतिष का ज्ञाता ।
मौलिअ देखो मोरिय ।
म्मि अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त अव्यय ।
म्मिव देखो इव ।
म्हस देखो भंस = भ्रंश् ।

य

य पुं. तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार ।
य अ [च] हेतु-सूचक अव्यय । देखो च = अ ।
°य देखो °ज ।
°य वि [°द] देनेवाला ।
यउणा देखो जँउणा ।
°यंच सक [अञ्च्] गमन या पूजा करना ।
°यंत वि [यत] उद्योगी ।
°यंद देखो चंद ।
°यक्क देखो चक्क ।
°यड देखो तड = तट ।
°यण देखो जण = जन ।
यणद्दण (अप) देखो जणद्दण ।
°यण्ण देखो कण्ण = कर्ण ।
°यत्तिअ वि [यात्रिक] यात्रा करनेवाला ।
यदावि अ [यद्यपि] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात ।
यन्नोवइय देखो जण्णोवईय ।
यम देखो जम = यम ।
°यर देखो कर = कर ।
°यल देखो तल = तल ।
या देखो जा = या ।
याण सक [ज्ञा] जानना ।
याण देखो जाण = यान ।
°याल देखो काल ।
याव (अप) देखो जाव = यावत् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°यावदट्ठ वि [यावदर्थ] यथेष्ट।
°युत्त देखो जुत्त = युक्त।
येव } (पै. मा) देखो एव।
येव्व }
य्चिश (मा) } देखो चिट्ठ = स्था।
य्चिश्त (पै) } य्चि-शदि(शाकारी भाषा)
य्येव (शौ) देखो एव।
य्येव्व देखो येव।

र

र पुं. मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण। °गण पुं. मध्यलघु अक्षरवाले तीन स्वरों का समुदाय।
र अ. पाद-पूरक अव्यय।
र अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय।
रइ स्त्री [रति] काम-क्रीड़ा। कामदेव की स्त्री। प्रेम। कर्म-विशेष। पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या। पुं.भूतानन्द इन्द्र का एक सेनापति। °अर, °कर वि. रति-जनक। पुं. पर्वत-विशेष। °कीला स्त्री [°क्रीडा]। °केलि स्त्री. काम-क्रीडा। °घर न [°गृह] विलास-गृह। °णाह, °नाह पुं [°नाथ]। °पहु पुं [°प्रभु] कामदेव। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] किन्नर इन्द्र की अग्रमहिषी। °प्पिय पुं. [°प्रिय] कामदेव। एक इन्द्र। किन्नर देवों की एक जाति। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] वानव्यन्तरों के इन्द्र-विशेष की अग्र-महिषी। °भवण न [°भवन] कामक्रीडा-गृह। °मंत वि [°मत्] राग-जनक। पुं. कन्दर्प। मंदिर न [°मन्दिर] शयन-गृह। °रमण पुं. कामदेव। °लंभ पुं [°लम्भ] सुरत की प्राप्ति। कामदेव। °वइ पुं [°पति] कामदेव। °विद्धि स्त्री [°वृद्धि] विद्या-विशेष। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक राजकन्या। °सुहव पुं [°सुभग] कामदेव। °सेणा स्त्री [°सेना] किन्नरेन्द्र की अग्र-महिषी। °हर न [°गृह] शयन-गृह, सुरतमन्दिर।
रइ पुं [रवि] सूर्य।
रइअ वि [रचित] बनाया हुआ, निर्मित।
रइअ वि [रचित] महल की पीठ-भित्ति।
रइआव सक [रचय्] बनवाना।
रइगेल्ल वि [दे] अभिलषित।
रइगेल्ली स्त्री [दे] रति-तृष्णा।
रइज्जंत रय = रचय् का कवकृ.।
रइलक्ख न [दे] जघन, नितम्ब।
रइलक्ख न [दे. रतिलक्ष] मैथुन।
रइल्लिय वि [रजस्वल] रज से युक्त, रज-वाला।
रइवाडिया देखो राय-वाडिआ।
रईसर पुं [रतीश्वर] कामदेव।
रउताणिया स्त्री [दे] पामा, खुजली।
रउद्द देखो रोद्द = रौद्र।
रउरव वि [रौरव]भयंकर। °काल पुं. माता के उदर में पसार किया जाता समय-विशेष।
रउस्सल वि [रजस्वल] रजो-युक्त, धूलि-युक्त।
रओ° देखो रय = रजस्।
रंक वि [रङ्क] गरीब, दीन।
रंखोल अक [दोलय्] झूलना। हिलना, चलना, काँपना।
रंग अक [रङ्ग्] इधर-उधर चलना।
रंग सक [रञ्जय्] रँगना।
रंग वि [राङ्ग] रँगा हुआ।
रंग न [दे] राँगा, धातु-विशेष, सीसा।
रंग पुं [रङ्ग] राग। नाट्यशाला। युद्ध-मण्डप। संग्राम। लाली। वर्ण। रँगना, रंजन। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक। °वलि स्त्री [°आवलि] रंगोली।
रंगण न [रञ्जन] राग, रँगना। पुं. जीव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंगिल्ल वि [रङ्गवत्] रँगवाला।

रंज सक [रञ्जय्] रँग लगाना। खुशी करना। रागयुक्त करना।

रंजग वि [रञ्जक] रञ्जन करनेवाला।

रंजण न [रञ्जन] रँगना। खुशी करना। पुं. छन्द-विशेष। वि. खुशी करनेवाला, राग-जनक।

रंजण पुं [दे] घड़ा। कुण्डा, पात्र-विशेष।

रंडा स्त्री [रण्डा] राँड़, विधवा।

रंढुअ न [दे] रज्जु, रस्सी।

रंध सक [रध्, राधय्] राँधना, पकाना।

रंध न [रन्ध्र] छिद्र, विवर।

रंधण न [रन्धन, राधन] राँधना। पचन। रसोइघर। °घर न [°गृह] पाकगृह।

रंप सक [तक्ष्] छिलना, पतला करना।

रंफ देखो रंप।

रंभ अक [गम्] जाना।

रंभ देखो रंफ।

रंभ सक [आ + रभ्] आरम्भ करना।

रंभ पुं [दे] आन्दोलन, हिंडोले का तख्ता।

रंभा स्त्री [रम्भा] कदली। एक अप्सरा। वैरोचन बलीन्द्र की अग्र-महिषी। रावण की पत्नी।

रक्ख सक [रक्ष्] रक्षण या पालन करना।

रक्ख पुंन [रक्षस्] राक्षस।

रक्ख वि [रक्ष] रक्षक। पुं. एक जैन मुनि।

रक्खअ } वि [रक्षक] रक्षण-कर्ता।
रक्खग }

रक्खणिया स्त्री [दे] रखात।

रक्खवाल वि [दे] रखवाला।

रक्खस पुं [राक्षस] देवों की एक जाति। विद्याधर-मनुष्यों का एक वंश। उसमें उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधर जाति। निशाचर, क्रव्याद। अहोरात्र का तीसवाँ मुहूर्त। °उरी स्त्री [°पुरी]। °णअरी स्त्री [°नगरी] लंका नगरी। °णाह पुं [°नाथ] राक्षसों का राजा। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष। °दीव पुं [°द्वीप] सिंहल द्वीप। °नाह देखो °णाह। °वइ पुं [°पति]। °ाहिव पुं [°ाधिप] राक्षसों का मुखिया।

रक्खसिंद पुं [राक्षसेन्द्र] राक्षसों का राजा।

रक्खसी स्त्री [राक्षसी] राक्षस की स्त्री। लिपि-विशेष।

रक्खसेंद देखो रक्खसिंद।

रक्खा स्त्री [रक्षा] रक्षण, पालन। राख।

रक्खिअ वि [रक्षित] पालित। पुं. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि।

रक्खिआ देखो रक्खसी।

रक्खी स्त्री [रक्षी] भ० अरनाथ की मुख्य साध्वी।

रक्खोवग वि [रक्षोपग] रक्षण में तत्पर।

रगिल्ल [दे] देखो रइगेल्ल।

रग्ग देखो रत्त = रक्त।

रग्गय न [दे] कुसुम्भ-वस्त्र।

रघुस पुं [रघुष] हरिवंश का एक राजा।

रच्च अक [दे. रञ्ज्] राचना, आसक्त होना।

रच्छा देखो रक्खा।

रच्छा स्त्री [रथ्या] मुहल्ला।

रच्छामय पुं [दे. रथ्यामृग] श्वान।

रज देखो रय = रजस्।

रजग पुंस्त्री. धोबी। स्त्री. °की।

रजय देखो रयय = रजत।

रज्ज अक [रञ्ज्] अनुराग करना। रँगाना।

रज्ज न [राज्य] राज। शासन। °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा। °वइ पुं [°पति] राजा। °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य-लक्ष्मी। °ाहिसेय पुं [°ाभिषेक] राजगद्दी पर बैठाने का उत्सव।

रज्जव पुंन. नीचे देखो।

रज्जु स्त्री. रस्सी। एक प्रकार का नाप।

रज्जु वि [दे] लेखक। °सभा स्त्री. लेखक-गृह। शुल्क-गृह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रज्झिय देखो रहिअ = रहित ।

रट्ठ न [राष्ट्र] देश, जनपद । °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबेदार ।

रट्ठिअ वि [राष्ट्रिय] देश-सम्बन्धी । पुं. नाटक में राजा का साला ।

रट्ठिअ पुं [राष्ट्रिक] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबेदार ।

रड अक [रट्] रोना । चिल्लाना ।

रडरडिय न [रटरटित] वाद्य-विशेष की आवाज ।

रडिय न [रटित] रोना । आवाज करना, शब्द-करण । चीख । वि. झगड़ालू ।

रड्डु वि [दे] खिसक कर गिरा हुआ ।

रड्डा स्त्री [रड्डा] छन्द-विशेष ।

रण पुंन. संग्राम । पुं. आवाज । °खंभउर न [°स्तम्भपुर] अजमेर के समीप का प्राचीन नगर ।

रणक्कार पुं [रणत्कार] शब्द-विशेष ।

रणझण अक [रणझणाय्] 'रन्-झन्' आवाज करना ।

रणरण अक [रणरणाय्] 'रन्-रन्' आवाज करना ।

रणरण, रणरणय } पुं [दे. रणरणक] निःश्वास । उद्वेग, अधृति । उत्कण्ठा ।

रणिअ न [रणित] शब्द, आवाज ।

रणिर वि [रणितृ] आवाज करनेवाला ।

रण्ण न [अरण्य] जंगल ।

रत्त पुं [रक्त] लाल रंग । कुसुंभ । हिज्जल का पेड़ । न. कुंकुम । ताम्र । सिंदूर । हिंगुल । खून । राग । वि. रँगा हुआ । लाल रँग-वाला । अनुराग-युक्त । °कंबला स्त्री [°कम्बला] मेरु पर्वत के पण्डक वन की शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है । °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष । °कोरिंटय पुं [°कुरण्टक] वृक्ष-विशेष । °क्ख, °च्छ वि [°अक्ष] लाल आँखवाला । स्त्री °च्छी । पुं. महिष । °ट्ठ पुं [°ार्थ] विद्याधरवंशी राजा । °धाउ पुं [°धातु] कुण्डल पर्वत का शिखर । °पड पुं [°पट] परिव्राजक । °प्पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष । °प्पह पुं [°प्रभ] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर । °रयण न [°रत्न] पद्म-राग मणि रत्न । °वई स्त्री [°वती] एक नदी । °वड देखो °पड । °सुभद्दा स्त्री [°सुभद्रा] श्रीकृष्ण की भगिनी । °ासोग, °ासोय पुं [°ाशोक] लाल अशोक का पेड़ ।

°रत्त पुं [°रात्र] रात ।

रत्तंदण न [रक्तचन्दन] लाल चन्दन ।

रत्तक्खर न [दे] सीधु, मद्य-विशेष ।

रत्तच्छ पुं [दे] हंस । व्याघ्र ।

रत्तडि (अप) देखो रत्ति = रात्रि ।

रत्तय न [दे. रक्तक] बन्धूक वृक्ष का फूल ।

रत्ता स्त्री [रक्ता] एक नदी । °वइप्पवाय पुं [°वतीप्रपात] द्रह-विशेष ।

रत्ति स्त्री [दे] आज्ञा ।

रत्ति स्त्री [रात्रि] रात । °अंधय वि [°अन्धक] रात को नहीं देख सकनेवाला । °अर वि [°चर] रात में विहरनेवाला । पुं. राक्षस । °दिवह न [°दिवस] रात-दिन । देखो राइ = रात्रि ।

रत्तिचर देखो रत्ति = अर ।

रत्तिदिअह, रत्तिदिय, रत्तिदिव } न [रात्रिदिवस] रात-दिन । निरन्तर । न [रात्रिन्दिव] ।

रत्तिंध वि [रात्र्यन्ध] जो रात में न देख सकता हो वह ।

रत्तीअ पुं [दे] नापित, हजाम ।

रत्तुप्पल न [रक्तोत्पल] लाल कमल ।

रत्तोआ स्त्री [रक्तोदा] एक नदी ।

रत्तोप्पल देखो रत्तुप्पल ।

रत्था देखो रच्छा ।

रद्ध वि [रद्ध, राद्ध] राँधा हुआ, पक्व ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रड्ढि वि [दे] प्रधान, श्रेष्ठ ।
रप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना ।
रप्फ पुं [दे] वल्मीक । रोग-विशेष ।
रप्फडिआ स्त्री [दे] गोधा, गोह ।
रब्बा वि [दे] राब, यवागू ।
रभस देखो रहस = रभस ।
रम अक [रम्] क्रीड़ा या संभोग करना ।
रमण न. क्रीड़ा । संभोग । स्मर-कूपिका । पुं. जघन । पति । छन्द-विशेष ।
रमणिज्ज वि [रमणीय] सुन्दर । न. एक देव-विमान । पुं. नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि ।
रमणी स्त्री. नारी । एक पुष्करिणी ।
रमणीअ वि [रमणीय] मनोरम ।
रमा स्त्री. लक्ष्मी ।
रमिअ वि [रमित] रमाया हुआ ।
रम्म वि [रम्य] मनोरम । पुं. एक प्रान्त । चम्पक का गाछ । न. एक देव-विमान ।
रम्मग, रम्मय पुं [रम्यक] प्रान्त-विशेष । एक युगलिक-क्षेत्र, जम्बू-द्वीप का वर्ष-विशेष । न. एक देव-विमान । पर्वत-विशेष का एक कूट ।
रम्ह देखो रंफ ।
रय सक [रज्] रँगना ।
रय सक [रचय्] बनाना । निर्माण करना ।
रय पुंन [रजस्] धूल । पुष्प-रज । सांख्य-दर्शन में प्रकृति का एक गुण । बध्यमान कर्म । °त्ताण न [°त्राण] जैन मुनि का उपकरण । °स्सला स्त्री [°स्वला] ऋतुमती स्त्री । °हर पुंन. । °हरण न जैन मुनि का एक उपकरण ।
रय वि [रत] आसक्त । स्थित । न. रति-कर्म ।
रय पुं. वेग ।
रय देखो रव ।
रयग देखो रयय = रजक ।
रयण न [रजन] रँगना ।
रयण वि [रचन] करनेवाला, निर्माता ।
रयण पुं [रदन] दाँत ।
रयण पुंन [रत्न] माणिक्य, मणि आदि । स्वजाति में श्रेष्ठ । छन्द-विशेष । द्वीप-विशेष । पर्वत-विशेष का एक कूट । पुं. ब. रत्न-द्वीप का निवासी । °उर न [°पुर] नगर-विशेष । °चित्त पुं [°चित्र] विद्याधर वंश का राजा । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष । °निहि पुं [°निधि] समुद्र । °पुढवी स्त्री [°पृथ्वी] रत्नप्रभा नामक पहली नरक-पृथिवी । °पुर देखो °उर । °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पहली नरक-भूमि । भीम राक्षसेन्द्र की पटरानी । रत्न का तेज । °मय वि. रत्नों का बना हुआ । °माला स्त्री. छन्द-विशेष । °मालि पुं [°मालिन्] विद्याधर-वंश में उत्पन्न नमिराज का पुत्र । °मुस वि [°मुष्] रत्न चुरानेवाला । °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश का राजा । °रासि पुं [°राशि] समुद्र । °वई पुं [°पति] रत्नों का मालिक, धनी । °वई स्त्री [°वती] एक रानी । °वज्ज पुं [°वज्र] विद्याधर-वंशीय राजा । °वह वि. रत्नधारक । °संचय न. रुचक पर्वत का कूट । एक नगर । °संचया स्त्री. मंगलावती नामक विजय की राजधानी । ईशानेन्द्र की वसुन्धरा इन्द्राणी की राजधानी । °समया स्त्री. मंगलावती विजय की राजधानी । °सार पुं. एक राजा । एक सेठ । °सिंह पुं. संवेगचूलिका-कुलक के कर्ता जैन आचार्य । °सिंह पुं [°शिख] एक राजा । °सेहर पुं [°शेखर] एक राजा । पनरहवीं शताब्दी के जैन आचार्य और ग्रंथ-कार । °ाअर, °ागर पुं [°ाकर] रत्न की खान । समुद्र । °ाभा स्त्री [°ाभा] देखो °प्पभा । °ामय देखो °मय, °ायरसुअ पुं [°ाकरसुत] चन्द्रमा । एक वणिक्-पुत्र ।

°वलि, °वली स्त्री. रत्नों का हार। तप-विशेष। ग्रन्थ-विशेष। एक विद्याधर-राज-कन्या। °विह न. नगर-विशेष। °सव पुं [°स्रव] रावण का पिता। °सवसुअ पुं [°स्रवसुत] रावण। °हिय वि [°धिक] ज्येष्ठ।

रयणप्पभिय वि [रात्नप्रभिक] रत्नप्रभा-सम्बन्धी।

रयणा स्त्री [रचना] निर्माण, कृति।

रयणा स्त्री [रत्ना] रत्नप्रभा नरक-भूमि।

रयणि पुंस्त्री [रत्नि] एक हाथ का नाप, बद्धमुष्टि हाथ का परिमाण।

रयणि स्त्री [रजनि] देखो रयणी = रजनी। °अर पुं [°चर] राक्षस। °अर, °कर पुं. चन्द्रमा। °णाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा। °भत्त न [°भक्त] रात्रि में खाना। °रमण पुं.। °वल्लह पुं [°वल्लभ] चन्द्रमा। °विराम पुं. सुबह।

रयणिंद पुं [रजनीन्द्र] चन्द्रमा।

रयणिद्धय न [दे] कुमुद, कमल।

रयणी स्त्री [रत्नी] देखो रयणि = रत्नि।

रयणी स्त्री [रजनी] रात्रि। ईशानेन्द्र के लोकपाल की पटरानी। चमरेन्द्र की अग्र-महिषी। मध्यम ग्राम या षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना। °भोअण न [°भोजन] रात में खाना। °सार न. मैथुन। देखो रयणि = रजनि।

रयणी स्त्री [रजनी] औषधि-विशेष—पिंडदारु। हलदी।

रयणुच्चय } पुं [रत्नोच्चय] मेरु-पर्वत।
रयणोच्चय } कूट-विशेष।

रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुगुप्ता नामक इन्द्राणी की एक राजधानी।

रयत }
रयद } न [रजत] चाँदी। एक देव-विमान। हाथी का दाँत। हार। सुवर्ण। खून।
रयय } पर्वत। धवल वर्ण। शिखर-विशेष। वि. श्वेत। °गिरि पुं. पर्वत-विशेष। °वत्त न [°पात्र] चाँदी का बरतन। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ।

रयय पुं [रजक] धोबी।

रयवली स्त्री [दे] बाल्य।

रयवाडी देखो राय-वाडिआ।

रयाव सक [रचय्] बनवाना।

रल्ला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी।

रल्लि पुंस्त्री [दे] लम्बा मधुर शब्द।

रव सक [रु] कहना, बोलना। वध करना। गति करना। अक रोना। शब्द करना।

रव सक [रावय्] बुलवाना।

रव सक [दे] आर्द्र करना।

रव पुं. शब्द, आवाज। वि. मधुर शब्दवाला।

रव (अप) देखो रय = रजस्।

रवँण }
रवण } (अप) देखो रमण।

रवण्ण (अप) देखो रम्म = रम्य।

रवय पुं [दे] मन्थान-दण्ड।

रवरव अक [रोरूय्] खूब आवाज करना। बारंबार आवाज करना।

रवि वि [रविन्] आवाज करनेवाला।

रवि न. सूर्य। राक्षस-वंश का एक राजा। आक का पेड़। °तेअ पुं [°तेजस्] इक्ष्वाकु-वंश का राजा। राक्षस वंश का एक लंकेश। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या। °नंदण पुं [°नन्दन] शनि-ग्रह। °प्पभ पुं [°प्रभ] वानरद्वीप का राजा। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महौषधि। °भास पुं. सूर्यहास खड्ग-विशेष। °वार पुं. रविवार। °सुअ पुं [°सुत] शनिश्चर ग्रह। रामचन्द्र का सेनापति सुग्रीव। °हास पुं. सूर्यहास खड्ग।

रविगय न [रविगत] जिस पर सूर्य हो वह नक्षत्र।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, सन्देश-हारक।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना।

रस पुंन. जिह्वा का विषय। प्रकृति। साहित्य-

शास्त्र-प्रसिद्ध शृंगार आदि नव रस। पानी। सुख। आसक्ति, दिलचस्पी। प्रेम। मद्य आदि द्रव पदार्थ। पारा। भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष। कर्म-विशेष। छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष। माधुर्य आदि रसवाला पदार्थ। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष। °न्न वि [°ज्ञ] रस का जानकार। °भेइ वि [भेदिन्] रसवाली चीजों का भेल-सेल करनेवाला। °मंत वि [°वत्] रस-युक्त। °वई स्त्री [°वती] रसोई। °ाल, °ालु वि [°वत्] रसवाला। °ावण पुं [°ापण] मद्य की दूकान।

रस पुंन. सार, निचोड़।

रसण न [रसन] जीभ।

रसणा स्त्री [रसना] मेखला, कांची। जीभ। °ल वि [°वत्] रसनावाला।

रसद्द न [दे] चूल्हे का मूल भाग।

रसा स्त्री. पृथिवी।

रसाउ } पुं [दे.रसायुष्] भ्रमर।
रसाय } पुं [दे]।

रसायण न [रसायन] औषध-विशेष।

रसाल पुं. आम्र-वृक्ष।

रसाला स्त्री [दे.] मार्जिता, पेय-विशेष।

रसालु पुं [दे.] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड़ से बनता पाक।

रसि देखो रस्सि।

रसिअ त्रि [रसिक] रसज्ञ, शौकीन। रस-युक्त।

रसिआ स्त्री [दे. रसिका] पीब, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून। छन्द-विशेष।

रसिंद पुं [रसेन्द्र] पारा।

रसिग देखो रसिअ = रसिक।

रसोइ (अप) देखो रस-वई।

रस्सि पुंस्त्री [रश्मि] किरण। रज्जु।

रह अक [दे] रहना।

रह सक [रह्] छोड़ना।

रह पुं [रभस] उत्साह। देखो रहस = रभस।

रह पुंन [रहस्] एकान्त, निर्जन। प्रच्छन्न।

रह पुंन [रथ] यान-विशेष, स्यन्दन। पुं. एक जैन महर्षि। °कार पुं. बढ़ई। °चरिया स्त्री [°चर्या] रथ को हाँकना। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] उत्सव-विशेष। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष। °णेउरचक्कवाल न [°नूपुरचक्रवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर। °नेमि पुं. भगवान् नेमिनाथ का भाई। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाईसवाँ अध्ययन। °मुसल पुं. राजा कोणिक और राजा चेटक का संग्राम। °यार देखो °कार। °रेणु पुं. आठ त्रसरेणु का एक परिमाण। °वीरउर, °वीरपुर न. एक नगर।

रहइं अ [रभसा] वेग से।

रहंग पुंस्त्री [रथाङ्ग] चक्रवाक पक्षी। स्त्री. °गी। न. पहिया।

रहट्ट देखो अरहट्ट।

रहण न [दे] रहना, स्थिति, निवास।

रहण न [रहन] त्याग। विराम।

रहमाण पुं [दे] यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता। खुदा, परमेश्वर।

रहस पुं [रभस] औत्सुक्य। वेग। हर्ष। पूर्वापर का अविचार।

रहस देखो रहस्स = रहस्य।

रहसा अ [रभसा] वेग से।

रहस्स वि [रहस्य] गुह्य। एकान्त में उत्पन्न। न. तत्त्व, तात्पर्य। अपवाद-स्थान।

रहस्स वि [ह्रस्व] लघु। एकमात्रिक स्वर।

रहस्स न [ह्रास्व] लाघव। °मंत वि [°वत्] लघु।

रहस्सिय वि [राहसिक] प्रच्छन्न, गुप्त।

रहाविअ वि [दे] स्थापित, रखवाया हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहि } वि [रथिन्] रथ से लड़नेवाला योद्धा। रहिअ } रथ को हाँकनेवाला। वि [रथिक]।

रहिअ वि [रहित] परित्यक्त, शून्य, एकाकी।

रहिअ वि [दे] स्थित।

रहु पुं [रघु] सूर्य वंश का राजा। पुं. ब. रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय। पुं. श्रीरामचन्द्र। कालिदास-प्रणीत संस्कृत काव्य-ग्रन्थ। °आर पुं [°कार] रघुवंश संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्ता, कवि कालिदास। °णाह पुं [°नाथ]। °तणय पुं [°तनय] श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण। °तिलय पुं [°तिलक]। °त्तम पुं [°उत्तम]। °पुंगव पुं [°पुङ्गव]। °सुअ पुं [°सुत] श्रीरामचन्द्र।

रहो° देखो रह = रहस्। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार।

रा सक. देना, दान करना।

रा अक [रै] शब्द करना।

रा अक [ली] श्लेष करना, चिपकना।

राअला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी।

राइ देखो रत्ति। चमरेन्द्र की अग्र-महिषी। ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की पटरानी। °भत्त न [°भक्त]। °भोअण न [°भोजन] रात्रि-भोजन। देखो राई = रात्रि।

राइ स्त्री [राजि] पंक्ति। रेखा। राई। एक मसाला।

राइ वि [रागिन्] राग-युक्त। स्त्री. °णी।

राइ वि [राजिन्] शोभनेवाला।

राइ° देखो राय = राजन्।

राइअ वि [रात्रिक] रात्रि-सम्बन्धी।

राइआ स्त्री [राजिका] राई का गाछ। देखो राइगा।

राइंद पुं [राजेन्द्र] बड़ा राजा।

राइंदिअ पुं [रात्रिन्दिव] अहोरात्र।

राइक्क वि [राजकीय] राज-सम्बन्धी।

राइगा स्त्री [राजिका] राई।

राइणिअ वि [रात्निक] चारित्रवाला, संयमी। साधुत्व-प्राप्ति के पर्याय से ज्येष्ठ।

राइणिअ वि [राजकल्प] राजा के समान वैभववाला, श्रीमन्त।

राइण्ण पुं [राजन्य] राजवंशीय, क्षत्रिय।

राइलेऊण संकृ. चीरकर।

राइल्ल वि [रागिन्] राग-युक्त।

राई स्त्री [राजी] देखो राइ = राजि।

राई स्त्री [रात्रि] देखो राइ = रात्रि। °दिवस न. रात्रिदिवस।

राईमई स्त्री [राजीमती] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान् नेमिनाथ की पत्नी।

राईव न [राजीव] पद्म।

राईसर पुं [राजेश्वर] राजाओं के मालिक, महाराज। युवराज।

राउत्त पुं [राजपुत्र] राजपूत, क्षत्रिय।

राउल पुं [राजकुल] राज-समूह। राजा का वंश। राज-गृह, दरबार। देखो राओल।

राउलिय वि [राजकुलिक] राजकुल-सम्बन्धी।

राउल्ल देखो राइक्क।

राएसि पुं [राजर्षि] श्रेष्ठ राजा। ऋषि-तुल्य राजा।

राओ अ [रात्रौ] रात में।

राओल देखो राउल।

राग देखो राय = राग।

राघव देखो राहव। °घरिणी स्त्री [गृहिणी] सीता।

राच } [चूपै. पै] देखो राय = राजन्। राचि° }

राज देखो राय = राजन्।

राजस वि. रजो-गुण-प्रधान।

राडि स्त्री [राटि] बूम, चिल्लाहट।

राडि स्त्री [दे. राटि] संग्राम।

राढा स्त्री. विभूषा। भव्यता। बंगाल का एक प्रान्त। उसकी एक नगरी। °इत्त वि [°वत्] भव्य आत्मा। °मणि पुं. काच-मणि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राण सक [वि + नम्] विशेष नमना।
राण पुं [राजन्] राणा, राजा।
राणय पुं [राजक] राणा। छोटा राजा।
राणिआ } स्त्री [राज्ञिका, °ज्ञी] रानी।
राणी }
राम सक [रमय्] रमण कराना।
राम पुं. श्रीरामचन्द्र। परशुराम। क्षत्रिय पारिव्राजक-विशेष। बलदेव, वासुदेव का बड़ा भाई। वि. रमनेवाला। °कण्ह पुं [°कृष्ण] श्रेणिक का पुत्र। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] श्रेणिक की पत्नी। °गिरि पुं. पर्वत-विशेष। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक राजर्षि। °देव पुं. श्री रामचन्द्र। °पुत्त पुं[°पुत्र]एक जैन मुनि। °पुरी स्त्री. अयोध्या नगरी। °रक्खिआ स्त्री [रक्षिता] ईशानेन्द्र की पटरानी।
रामणिज्जअ न [रामणीयक] रमणीयता।
रामा स्त्री. स्त्री। नववें जिनदेव की माता। ईशानेन्द्र की पटरानी। छन्द-विशेष।
रामायण न. वाल्मीकि-कृत संस्कृत काव्यग्रन्थ। रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई।
रामेसर पुं [रामेश्वर] दक्षिण का हिन्दू-तीर्थ।
राय अक [राज्] चमकना, शोभना।
राय देखो रा = रै।
राय पुं [राग] प्रेम। द्वेष। रँगना। वर्णन। राजा। चाँद। लाल वर्ण। लाल वस्तु। वसन्त आदि स्वर।
राय पुं [राजन्] नरेश। एक महाग्रह। इन्द्र। क्षत्रिय। यक्ष। शुचि। श्रेष्ठ। इच्छा। छन्द-विशेष। °ईअ वि [°कीय] राज-सम्बन्धी। °उत्त पुं [°पुत्र] राजपूत। °उल देखो राउल। °कीअ देखो °ईअ। °कुल देखो °उल। °केर, °क्क वि [°कीय] राज-सम्बन्धी। °गिह न [°गृह]। °गिहि स्त्री [°गृही] मगध देश की राजधानी। 'राज-गीर'। °चंपय पुं [°चम्पक] उत्तम चम्पक-वृक्ष। °धम्म पुं [°धर्म] राजा का कर्तव्य। °धाणी स्त्री [°धानी] राजनगर, जहाँ राजा रहता हो। °पत्ती स्त्री [°पत्नी] रानी। °पसेणीय वि [°प्रश्नीय] एक जैन आगम-ग्रन्थ। °पह पुं [°पथ] राज-मार्ग। °पिंड पुं [°पिण्ड] राजा के घर की भिक्षा। °पुत्त देखो °उत्त। °पुर न. नगर-विशेष। °पुरिस पुं [°पुरुष] राज-कर्मचारी। °मग्ग पुं [°मार्ग] राजपथ। °मास पुं [°माष] धान्य-विशेष, बरबटी। °राय पुं [°राज] राजेश्वर। °रिसि देखो राएसि। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] राज-वैभव। °ललिय पुं [°ललित] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम। °वट्टय न [°वार्तक] राज-सम्बन्धी वार्त्ता-समूह। °वल्ली स्त्री. लता-विशेष। °वाडिआ, °वाडी, स्त्री [°पाटिका, °पाटी] राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी। °सद्दूल पुं [°शार्दूल] चक्रवर्त्ती राजा। सिट्ठि° पुं [°श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी। °सुअ पुं [°सुत] राजकुमार। °सुअ पुं [°शुक] उत्तम तोता। °सुअ पुं [°सूय] यज्ञ-विशेष। °सेण पुं [°सेन] छन्द-विशेष। °सेहर पुं [°शेखर] शिव। एक राजा। एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्त्ता। °हंस पुंस्त्री. उत्तम हंस पक्षी। श्रेष्ठ राजा। स्त्री. °सी। °हर न [°गृह] राजा का महल। °हाणी देखो °धाणी। °हिराय, °ाहिराय पुं [°अधि-राज]। °ाहिव पुं [°ाधिप] चक्रवर्त्ती राजा।
राय देखो राव = राव।
राय पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी।
राय पुं [रात्र] रात्रि।
राय° देखो राय = राज्।
रायंछुअ } पुंन [दे] बेतस या बेंत का
रायंबु } पेड़। पुं. शरभ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायंस पुं [राजांस] क्षय की व्याधि ।
रायगइ स्त्री [दे] जलौका, जोंक ।
रायग्गल पुं [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ।
रायणिअ देखो राइणिअ = रात्निक ।
रायणी स्त्री [राजादनी] खिरनी का पेड़ ।
रायण्ण देखो राइण्ण ।
रायनीइ स्त्री [राजनीति] शासन की रीति ।
रायमइया स्त्री [राजीमतिका] देखो राईमई ।
रायस देखो राजस ।
रायाण देखो राय = राजन् ।
राल, रालग पुंन [°क] धान्य-विशेष, एक प्रकार की कंगु ।
राला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी ।
राव सक [दे] आर्द्र करना ।
राव देखो रंज = रञ्जय् ।
राव सक [रावय्] पुकारना, आह्वान करना ।
राव पुं. कलकल । पुकार, आवाज ।
रावण पुं. एक लंकापति । गुल्म-विशेष ।
राविअ वि [दे] आस्वादित ।
रास पुं. एक नृत्य, जिसमें एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते गाते मंडलाकार फिरना होता है ।
रासभ देखो रासह ।
रासह पुंस्त्री [रासभ] गर्दभ । स्त्री. °ही ।
रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष ।
रासालुद्धय पुं [रासालुब्धक] छन्द-विशेष ।
रासि देखो रस्सि ।
रासि पुंस्त्री [राशि] समूह । ज्योतिष्क की बारह राशि । गणित-विशेष ।
राह पुं [राध] वैशाख मास । वसन्त ऋतु । एक जैन आचार्य ।
राह पुं [दे] दयित, प्रिय । वि. निरन्तर । शोभित । सनाथ । पलित । रुचिर ।
राहअ, राहव पुं [राघव] रघुवंश में उत्पन्न । श्रीरामचन्द्र ।
राहा, राहिआ, राही स्त्री [राधा] वृन्दावन की प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी । राधावेध में रखी जाता पुतली । शक्ति-विशेष । कर्ण की पालक माता । °मंडव पुं [°मण्डप] जहाँ पर राधावेध किया जाय । °वेह पुं [°वेध] एक वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार घूमती पुतली की वाम चक्षु बींधी जाती है । स्त्री [राधिका] ।
राहु पुं. ग्रह-विशेष । कृष्ण पुद्गल-विशेष । पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य ।
राहुहय न [राहुहत] जिसमें सूर्य और चन्द्र का ग्रहण हो वह नक्षत्र ।
राहेअ पुं [राधेय] राधा पुत्र, कर्ण ।
रि अ [रे] संभाषण-सूचक अव्यय ।
रि सक [ऋ] गमन करना ।
रिअ सक [री] गमन करना ।
रिअ सक [प्र + विश्] प्रवेश करना ।
रिअ न [ऋत] गमन । सत्य ।
रिअ वि [दे] काटा हुआ ।
रिउ देखो उउ ।
रिउ वि [ऋजु] सरल । न. विशेष पदार्थ । °सुत्त पुं [°सूत्र] नय-विशेष । देखो उज्जु ।
रिउ पुं [रिपु] शत्रु । °महण पुं [°मथन] राक्षस-वंश का राजा ।
रिउ स्त्री [ऋच्] वेद का नियत अक्षरवाला अंश । °व्वेय पुं [°वेद] एक वेद-ग्रन्थ ।
रिंख अक [रिङ्ख्] सर्पण या गति करना ।
रिंग देखो रिग ।
रिंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका ।
रिंगिअ न [दे] भ्रमण ।
रिंगिअ न [रिङ्गित] कच्छप की तरह हाथ के बल रेंगना । गुरु-वन्दन का एक दोष ।
रिंगिसिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।
रिंछ (अप) देखो रिच्छ = ऋक्ष ।
रिंछोली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिंडी स्त्री [दे] कन्थाप्राया, कन्था की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र ।
रिक्क वि [दे] थोड़ा ।
रिक्क देखो रित्त = रिक्त ।
रिक्किअ वि [दे] सड़ा हुआ ।
रिक्ख अक [रिङ्ख्] चलना ।
रिक्ख वि [दे] वृद्ध । पुं. वृद्धता ।
रिक्ख पुं [ऋक्ष] भालू, श्वापद । न. नक्षत्र । °पह पुं [°पथ] आकाश । °राय पुं [°राज] वानर वंश का राजा ।
रिक्खण न [दे] उपलम्भ, अधिगम । कथन ।
रिक्खा देखो रेहा = रेखा ।
रिंग } अक [रिङ्ग्] धीरे-धीरे जमीन से
रिग्ग } रगड़ खाते चलना । प्रवेश करना ।
रिच स्त्रीन. देखो रिउ = ऋच् । स्त्री °चा ।
रिच्छ वि [दे] वृद्ध ।
रिच्छ देखो रिक्ख = ऋक्ष । °ाहिव पुं [°ाधिप] राम का सेनापति जाम्बवान् ।
रिच्छभल्ल पुं [दे] भालू ।
रिजु देखो रिउ = ऋच् ।
रिजु देखो रिउ = ऋजु ।
रिज्ज देखो रिअ = री ।
रिज्जु देखो रिउ = ऋजु ।
रिज्झ अक [ऋध्] बढ़ना । खुशी होना ।
रिट्ठ पुं [दे. अरिष्ट] दुरित । दैत्य-विशेष । काक । °नेमि पुं. बाईसवें जिनदेव ।
रिट्ठ पुं [रिष्ट] रिष्ट नामक विमान का निवासी देव-विशेष । वेलम्ब और प्रभञ्जन नामक इन्द्रों के लोकपाल । एक दृप्त साँढ़, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था । पक्षि-विशेष । न. रत्न-विशेष । एक देव-विमान । पुंन. रीठा-फल । °पुरी स्त्री. कच्छावती-विजय की राजधानी । °मणि पुं. श्याम रत्न-विशेष ।
रिट्ठा स्त्री [रिष्टा] महाकच्छ विजय की राजधानी । पाँचवीं नरक-भूमि । दारू ।
रिट्ठाभ न [रिष्टाभ] एक देव-विमान । लोकान्तिक देवों का एक विमान ।
रिट्टि स्त्री [रिष्टि] तलवार । अशुभ । पुं. रम्भ्र ।
रिड सक [मण्डय्] विभूषित करना ।
रिण न [ऋण] करजा या कर्ज । जल । दुर्ग । दुर्ग-भूमि । फरज । देखो अण = ऋण ।
रिणिअ वि [ऋणित] करजदार ।
रिते अ [ऋते] सिवाय ।
रित्त वि [रिक्त] खाली । न. अभाव ।
रित्तूडिअ वि [दे] शातित, झड़वाया हुआ ।
रित्थ न [रिक्थ] धन ।
रिद्ध वि [ऋद्ध] ऋद्धि-संपन्न ।
रिद्ध वि [दे] पक्व, पक्का ।
रिद्धि पुंस्त्री [दे] समूह, राशि ।
रिद्धि स्त्री [ऋद्धि] संपत्ति, वैभव । वृद्धि । देव-विशेष । ओषधि-विशेष । छन्द-विशेष । °म, °ल्ल वि [°मत्] समृद्ध । °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक वणिक् कन्या ।
रिपु देखो रिवु ।
रिप्प न [दे] पृष्ठ ।
रिभिय न [रिभित] एक प्रकार का नाट्य । स्वर का घोलन ।
रिमिण वि [दे] रोने की आदतवाला ।
रिरंसा स्त्री. मैथुनेच्छा ।
रिरिअ वि [दे] लीन ।
रिल्ल अक [दे] शोभना ।
रिवु देखो रिउ = रिपु ।
रिसभ } पुं [ऋषभ] स्वर-विशेष । अहोरात्र का
रिसह } अठाईसवाँ मुहूर्त्त । संहत अस्थि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट । देखो उसभ ।
°रिसह पुं [°ऋषभ] श्रेष्ठ ।
रिसि पुं [ऋषि] मुनि, संत । °घाय पुं [°घात] मुनि-हत्या ।
रिह सक [प्र + विश्] प्रवेश करना ।
री } अक. आना, चलना ।
रीअ }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीइ स्त्री [रीति] प्रकार । पद्धति ।

रीड सक [मण्डय्] अलंकृत करना ।

रीढ स्त्रीन [दे] अनादर । स्त्री. °ढा ।

रीण वि क्षरित, स्नुत । पीडित ।

रीर अक [राज्] शोभना, चमकना ।

रीरी स्त्री. धातु-विशेष, पीतल ।

रु स्त्री [रुज्] रोग ।

रुअ अक [रुद्] रोना ।

रुअ न [रुत] शब्द, आवाज ।

रुअ देखो रूअ ।

रुअंती स्त्री [रुदती] वल्ली-विशेष ।

रुअंस देखो रूअंस ।

रुअग पुं [रुचक] कान्ति । पर्वत-विशेष । द्वीप-विशेष । एक समुद्र । एक देव-विमान । न. इन्द्रों का एक आभाव्य विमान । रत्न-विशेष । रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट । निषध पर्वत का आठवाँ कूट । °प्पभ न [°प्रभ] महाहिमवन्त पर्वत का एक कूट । °वर पुं. द्वीप-विशेष । पर्वत-विशेष । समुद्र-विशेष । रुचकवर समुद्र का अधिष्ठाता देव । °वरभद्द पुं [°वरभद्र] । °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] रुचकवर द्वीप का अधिष्ठायक देव । °वर-महावर पुं रुचकवर समुद्र का अधिष्ठाता देव । °वरावभास पुं. द्वीप-विशेष । समुद्र-विशेष । °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] । °वरावभासमहाभद्द पुं [°वरावभास-महाभद्र] रुचकवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव । °वरावभासमहावर पुं. । °वरावभासवर पुं. रुचकवरावभास समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । °वरोद पुं. समुद्र-विशेष । °वरोभास देखो °वरावभास । °ावई स्त्री [°ावती] एक इन्द्राणी । °ोद पुं. समुद्र-विशेष ।

रुअगिंद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष ।

रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष ।

रुअय देखो रुअग ।

रुअरुइआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा ।

रुआ स्त्री [रुज्] रोग ।

रुइ स्त्री [रुचि] तेज । प्रेम । आसक्ति । स्पृहा । शोभा । बुभुक्षा । गोरोचना ।

रुइअ वि [रुचित] पसन्द । पुंन. एक देव-विमान ।

रुइअ देखो रुण्ण = रुदित ।

रुइर वि [रुचिर] सुन्दर । कान्ति-युक्त । पुंन. देवविमान-विशेष ।

रुइल वि [°रुचिर, °ल] शोभन, सुन्दर । दीप्त । पुंन. एक देव-विमान ।

रुइल्ल न [रुचिर, रुचिमत्] । °कंत न [°कान्त] । °कूड न [°कूट] । °ज्झय न [°ध्वज] । °प्पभ न [°प्रभ] । °लेस न [°लेश्य] । °वण्ण न [°वर्ण] । °सिंग न [°शृङ्ग] । °सिट्ठ न [°सृष्ट] । °ावत्त न [°ावर्त्त] सभी देवविमान-विशेषों के नाम हैं ।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [रुचिरोत्तरावतंसक] एक देवविमान ।

रुंच सक [रुञ्च्] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना ।

रुंचणी स्त्री [दे] घरट्टी ।

रुंज अक [रु]आवाज, शब्द या गर्जना करना ।

रुंजग पुं [दे.रुञ्जक] वृक्ष, गाछ ।

रुंट देखो रुंज ।

रुंटणया स्त्री [दे] अवज्ञा ।

रुंटणिया स्त्री [दे. रवणिका] रोदन-क्रिया ।

रुंटिअ न [रुत] गुञ्जारव, आवाज ।

रुंड पुंन [रुण्ड] बिना सिर का धड़, कबन्ध ।

रुंढ पुं [दे] कितव, जुआड़ी ।

रुंढिअ वि [दे] सफल ।

रुंद वि [दे] विपुल । विशाल, विस्तीर्ण । स्थूल । वाचाल ।

रुंदी [दे] विस्तीर्णता, लम्बाई ।

रुंध सक [रुध्] रोकना, अटकाना ।

रुंप पुंन [दे] त्वचा । उल्लिखन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुंपण न [रोपण] रोपाना, वापन ।
रुंफ देखो रुंप ।
रुंभ देखो रुंध ।
रुंभय वि [रोधक] रोकनेवाला ।
रुंभाविअ वि [रोधित] रुकवाया हुआ, बन्द किया हुआ ।
रुक्क न [दे] बैल आदि की तरह शब्द करना ।
रुक्किणी देखो रुप्पिणी ।
रुक्ख पुंन [वृक्ष] पेड़ । संयम, विरति । °मूल न. पेड़ की जड़ । °मूलिय पुं [°मूलिक] वृक्ष के मूल में रहनेवाला वानप्रस्थ । °सत्थ न [°शास्त्र] । °ाउवेद पुं [°ायुर्वेद] वनस्पति-शास्त्र ।
रुक्खिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन ।
रुग्ग वि [रुग्ण] भग्न ।
रुच } सक [दे] पीसना ।
रुच्च }
रुचिर देखो रुइर ।
रुच्च अक [रुच्] पसन्द पड़ना ।
रुच्च सक [दे] व्रीहि आदि को यन्त्र में निस्तुष करना ।
रुच्चि देखो रुइ = रुचि ।
रुच्छ देखो रुक्ख ।
रुच्मि देखो रुप्पि ।
रुज्ज न [रोदन] रुदन ।
रुज्झ देखो रुंध ।
रुज्झ° देखो रुह = रुह् ।
रुट्टिया स्त्री [दे] रोटी ।
रुट्ठ वि [रुष्ट] रोष-युक्त । पुं. एक नरकावास ।
रुणरुण } अक [दे] करुण क्रन्दन करना ।
रुणुरुण }
रुण्ण न [रुदित] रोना ।
रुते देखो रिते ।
रुत्थिणी देखो रुप्पिणी ।
रुदिअ देखो रुण्ण ।
रुद्द पुं [रुद्र] शिव । शिव-मूर्त्ति-विशेष । जिन देव । परमाधार्मिक देवों की एक जाति । नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता । ज्योतिष्क देव-विशेष । अंग-विद्या का जानकार पुरुष । वि भयंकर । देखो रोद्द = रुद्र ।
रुद्द देखो रोद्द = रौद्र ।
रुद्दक्ख पुं [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष ।
रुद्दाणी स्त्री [रुद्राणी] शिव-पत्नी, दुर्गा ।
रुद्ध वि [रुद्ध] रोका हुआ ।
रुद्र देखो रुद्द ।
रुप्प सक [रोपय्] रोपना ।
रुप्प न [रुक्म] सोना । लोहा । धतूरा । नागकेसर । चाँदी ।
रुप्प न [रूप्य] चाँदी । °कूड पुं [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट । °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] द्रह-विशेष । °कूला स्त्री. एक महानदी । एक देवी । रुक्मि पर्वत का एक कूट । °मय वि. चाँदी का बना हुआ । °भास पुं. एक ज्योतिष्क महा-ग्रह ।
रुप्प वि [रौप्य] रूपा का, चाँदी का ।
रुप्पय देखो रुप्प = रूप्य ।
रुप्पि पुं [रुक्मिन्] कौण्डिन्य नगर का राजा, रुक्मिणी का भाई । कुणाल देश का राजा । एक वर्षधर-पर्वत । एक ज्योतिष्क महा-ग्रह । देव-विशेष । रुक्मि पर्वत का एक कूट । वि. सुवर्णवाला । चाँदीवाला । °कूड पुंन [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट ।
रुप्पिणी स्त्री [रुक्मिणी] द्वितीय वासुदेव की पटरानी । श्रीकृष्ण वासुदेव की अग्र-महिषी । एक श्रेष्ठि-पत्नी ।
रुप्पोभास पुं [रूप्यावभास] एक महाग्रह । वि. रजत की तरह चमकता ।
रुब्भंत } रुंध के कवकृ. ।
रुब्भमाण }
रुम्मिणी देखो रुप्पिणी ।
रुम्ह सक [म्लापय्] म्लान या मलिन करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुरु पुं. मृग-विशेष। वनस्पति-विशेष। एक अनार्य देश। एक अनार्य मनुष्य-जाति।

रुरुव अक [रोरूय्] खूब आवाज करना। बारम्बार चिल्लाना।

रुल अक [लुठ्] लेटना।

रुलुघुल अक [दे] निःश्वास डालना।

रुव देखो रुअ = रुद्।

रुवणा स्त्री [रोवणा] आरोपणा, प्रायश्चित्त का एक भेद।

रुविल देखो रुइल।

रुव्व देखो रुअ = रुद्।

रुस देखो रूस।

रुसा स्त्री [रोष] रोष।

रुह अक [रुह्] उत्पन्न होना। सक. घाव को सुखाना।

रुह वि. उत्पन्न होनेवाला।

रुहुण न [रोधन] निवारण।

रुहरुह अक [दे] मन्द मन्द बहना।

रुहुरुहय पुं [दे] उत्कण्ठा।

रूअ न [दे. रूत] रुई, तूल।

रूअ पुं [रूप] पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल। आकृति। वि. सदृश। °कंत पुं [°कान्त] पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का लोकपाल। °कंता स्त्री [°कान्ता] भूतानन्द इन्द्र की अग्र-महिषी। एक दिक्कुमारी-महत्तरिका। °प्पभ पुं [°प्रभ] पूर्णभद्र और विशिष्ट नाम का लोकपाल। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] भूतानन्द इन्द्र की अग्र-महिषी। एक दिक्कुमारी देवी। देखो रूव = रूप।

रूअंस पुं [रूपांश] पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल।

रूअंसा स्त्री [रूपांशा] भूतानन्द इन्द्र की अग्र-महिषी। एक दिक्कुमारी देवी।

रूअग } रूअय } पुंन [रूपक] रुपया। पुं. एक गृहस्थ। रूपा देवी का सिंहासन। °वडिंसय न [°ावतंसक] रूपा देवी का भवन। °सिरी स्त्री [°श्री] एक गृहस्थ स्त्री। °ावई स्त्री [°वती] भूतानन्द इन्द्र की अग्र-महिषी। देखो रूवय = रूपक।

रूअरुइआ [दे] देखो रुअरुइआ।

रूआ स्त्री [रूपा] भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी। एक दिक्कुमारी देवी।

रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छन्द-विशेष।

रूआर वि [रूपकार] मूर्त्ति बनानेवाला।

रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी।

रूढ वि. परम्परागत, सिद्ध। प्रसिद्ध। प्रगुण, तंदुरुस्त।

रूढ वि. उगा हुआ, उत्पन्न।

रूढि स्त्री. परम्परागत से प्रसिद्धि।

रूप पुं. पशु।

रूअ देखो = रूप।

रूपि पुं [रूपिन्] सौनिक, कसाई।

रूरुइय न [दे] उत्सुकता, रणरणक।

रूव पुंन [रूप] आकृति। सौन्दर्य। वर्ण। मूर्ति। स्वभाव। शब्द, नाम। श्लोक। नाटक। एक। रूपवाला। देखो रूअ = रूप। °कंता देखो रूअ-कंता। °जक्ख पुं [°यक्ष] धर्मपाठक। °धार वि. रूप-धारी। °प्पभा देखो रूअ-प्पभा। °मंत देखो °वंत। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द इन्द्र की अग्र-महिषी। सुरूप भूतेन्द्र की अग्र-महिषी। एक दिक्कुमारी महत्तरिका। °वंत, °स्सि वि [°वत्] रूपवाला।

रूवग पुंन [रूपक] रुपया। साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार। देखो रूअग = रूपक।

रूवमिणी स्त्री [दे] रूपवती स्त्री।

रूवय देखो रूवग।

रूवसिणी देखो रूवमिणी।

रूवा देखो रूआ।

रूवि पुंस्त्री [दे] अर्क-वृक्ष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूस अक [रुष्] गुस्सा करना ।
रे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—परिहास । अधिक्षेप । सम्भाषण । आक्षेप । तिरस्कार ।
रेअ पुं [रेतस्] वीर्य ।
रेअव सक [मुच्] छोड़ना ।
रेअविअ वि [दे. रेचित] क्षणीकृत, शून्य किया हुआ ।
रेआ स्त्री [रै] धन । सोना ।
रेइअ वि [रेचित] रिक्त किया हुआ ।
रेंकिअ वि [दे] आक्षिप्त । लीन । लज्जित ।
रेकार पुं 'रे' शब्द, 'रे' शब्द की आवाज ।
रेट्ठि देखो रिट्ठि ।
रेणा स्त्री. महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी ।
रेणि पुंस्त्री [दे] पङ्क ।
रेणु पुंस्त्री रज । पराग ।
रेणुया स्त्री. [रेणुका] औषधि-विशेष ।
रेभ पुं [रेफ] रकार । वि. दुष्ट । नीच । क्रूर । कृपण ।
रेरिज्ज अक [राराज्य्] अतिशय शोभना ।
रेल्ल सक [प्लावय्] सराबोर करना ।
रेल्लि स्त्री [दे] रेल, स्रोत, प्रवाह ।
रेवइनक्खत्त पुं [रेवतीनक्षत्र] आर्य नागहस्ती के शिष्य एक जैन मुनि ।
रेवइय पुं [रैवतिक] रैवत स्वर ।
रेवइय न [रेवतिक] एक उद्यान ।
रेवइया स्त्री [रेवतिका] भूत-ग्रह-विशेष ।
रेवई स्त्री [रेवती] बलदेव की स्त्री । एक श्राविका । एक नक्षत्र ।
रेवई स्त्री [दे. रेवती] मातृका, देवी ।
रेवंत पुं [रेवन्त] सूर्य का पुत्र । एक देव ।
रेवज्जिअ वि [दे] उपालब्ध ।
रेवण पुं. एक काव्य-ग्रन्थ का कर्ता ।
रेवय न [दे] प्रणाम ।
रेवय पुं [रैवत] गिरनार पर्वत ।
रेवय पुं [रैवत] स्वर-विशेष ।
रेवलिआ स्त्री [दे] धूल का आवर्त ।
रेवा स्त्री. नर्मदा नदी ।
रेसणिआ, रेसणी स्त्री [दे] करोटिका, एक कांस्य-भाजन । अक्षि-निकोच ।
रेसम्मि देखो रेसिम्मि ।
रेसि (अप) देखो रेंसि ।
रेसिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ ।
रेंसि (अप) नीचे देखो ।
रेसिम्मि अ. निमित्त, लिए, वास्ते ।
रेह अक [राज्] दीपना, चमकना ।
रेहा स्त्री [रेखा]चिह्न-विशेष, लकीर । श्रेणि । छन्द-विशेष ।
रेहा स्त्री [राजना] शोभा, दीप्ति ।
रेहिअ न [दे] कटी हुई पूँछ ।
रेहिर वि [रेखावत्] रेखावाला ।
रेहिर, रेहिल्ल वि [राजितृ] शोभनेवाला ।
रेहिल्ल देखो रेहिर = रेखावत् ।
रोअ देखो रुअ = रुद् ।
रोअ देखो रुच्च = रुच् ।
रोअ सक [रोचय्] रुचि करना । पसन्द करना, चाहना । निर्णय करना ।
रोअ पुं [रोच] रुचि ।
रोअ पुं [रोग] बीमारी ।
रोअग वि [रोचक] रुचि-जनक । न. सम्यक्त्व का एक भेद ।
रोअण पुं [रोचन] एक दिग्हस्ति-कूट । न. गोरोचन ।
रोअणा स्त्री [रोचना] गोरोचन ।
रोअणिआ स्त्री [दे] डाकिनी ।
रोअत्तअ देखो रोअ = रुद् का कृ. ।
रोइ वि [रोगिन्] रोगवाला, बीमार ।
रोइ देखो रुइ = रुचि ।
रोइअ वि [रोचित] पसंद आया हुआ । चिकीर्षित ।
रोंकण वि [दे] रंक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोंच सक [पिष्] पीसना ।
रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित ।
रोक्कणि } वि [दे] शृंगी । नृशंस,
रोक्कणिअ } निर्दय ।
रोग पुं.बीमारी । एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक ।
रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा ।
रोघस वि [दे] रंक ।
रोच्च देखो रोंच ।
रोज्झ पुं [दे] ऋश्य, पशु-विशेष ।
रोट्ट पुंन. [दे] चावल आदि का आटा ।
रोट्टग पुं [दे] रोटी ।
रोड सक [दे] रोकना । अनादर करना । हैरान करना ।
रोड न [दे] गृह-प्रमाण ।
रोडी स्त्री [दे] इच्छा । व्रणी की शिबिका ।
रोत्तव्व देखो रुअ = रुद् का कृ. ।
रोद्द पुं [रौद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त । एक नृपति, तृतीय बलदेव और वासुदेव का पिता, अलंकार-शास्त्र का एक रस । वि. दारुण । न. ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन ।
रोद्द पुं [रुद्र] । देखो रुद्द = रुद्र ।
रोद्ध वि [दे] कूणिताक्ष । न. मल ।
रोम पुंन [रोमन्] बाल । °कूव पुं [°कूप] लोम का छिद्र ।
रोम न. खान में होता लवण ।
रोमंच पुं [रोमाञ्च] भय या हर्ष से रोओं का उठ जाना, पुलक ।
रोमंथ } अक [रोमन्थय्] पगुराना,
रोमंथाअ } जुगाली करना ।
रोमग } पुं [रोमक] अनार्य देश-विशेष,
रोमय } रोम देश । उसकी मनुष्य-जाति ।
रोमय पुं [रोमज] रोम की पाँखवाला पक्षी ।
रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब ।
रोमलयासय न [दे] पेट, उदर ।
रोमस वि [रोमश] रोमवाला ।
रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब ।
रोर पुं. चौथे नरक का एक आवास ।
रोर वि [दे] रंक ।
रोरु पुं. सातवें नरक का एक नरकावास ।
रोरुअ पुं [रोरुक, रौरव] रत्नप्रभा नरक का दूसरा नरकेन्द्रक । रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक । सातवें नरक का एक नरकावास । चौथे नरक का एक नरकावास ।
रोल पुं [दे] कलह । रव, कोलाहल, कलकल आवाज ।
रोलंब पुं [दे. रोलम्ब] भ्रमर ।
रोला स्त्री. छन्द-विशेष ।
रोव देखो रुअ = रुद् ।
रोव पुं [दे. रोप] पौधा ।
रोवण न [रोपण] वपन ।
रोविअ वि [रोपित] बोया हुआ । स्थापित ।
रोविंदय न [दे] गेय-विशेष, एक गान ।
रोविर वि [रोपयितृ] बोनेवाला ।
रोस देखो रूस ।
रोस पुं [रोष] गुस्सा । °इत्त, °इंत वि [°वत्] रोषवाला ।
रोसविअ वि [रोषित] कोपित ।
रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना ।
रोह अक [रुह्] उत्पन्न होना ।
रोह देखो रुंध ।
रोह पुं [रोध] घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन । रुकावट । कैद ।
रोह पुं [रोधस्] तट ।
रोह पुं. एक जैन मुनि । प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना । वि. रोहक ।
रोह पुं [दे] प्रमाण । नमन । मार्गण ।
रोहग वि [रोधक] घेरा डालनेवाला, अटकाव ।
रोहग पुं [रोहक] एक नट-कुमार ।
रोहगुत्त पुं [रोहगुप्त] एक जैन मुनि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य ।

रोहण वि. चढ़ना । उत्पत्ति । पुं. पर्वत-विशेष । एक दिग्हस्ति-कूट ।

रोहिअ [दे] देखो रोज्झ ।

रोहिअ वि [रोहित] सुखाया हुआ । पुं. द्वीप-विशेष । पुं मत्स्य-विशेष । न. तृण-विशेष । कूट-विशेष ।

रोहिअंस पुं [रोहितांश] एक द्वीप ।

रोहिअंस° } स्त्री [रोहितांशा] एक नदी ।
रोहिअंसा } °पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष ।

रोहिअप्पवाय पुं [रोहिताप्रपात] द्रह-विशेष ।

रोहिआ स्त्री [रोहित्, रोहिता] एक नदी ।

रोहिंसा स्त्री [रोहिदंशा] एक नदी ।

रोहिणिअ पुं [रौहिणेय] एक प्रसिद्ध चोर ।

रोहिणी स्त्री. नक्षत्र-विशेष । चन्द्र की पत्नी । ओषधि-विशेष । भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थंकर होनेवाली एक श्राविका । नववें बल-देव की माता । एक विद्या देवी । शक्रेन्द्र की पटरानी । सत्पुरुष किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी । शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी । तप-विशेष । °रमण पुं. चन्द्रमा ।

रोहीडग न [रोहीतक] नगर-विशेष ।

ल

ल पुं. मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष ।

लइ अ. ले, अच्छा, ठीक ।

लइ देखो लय = ला ।

लइअ वि [दे. लगित] पहना हुआ ।

लइअल्ल पुं [दे] वृषभ ।

लइआ स्त्री [लतिका, लता] देखो लया ।

लइणा } स्त्री [दे] लता, वल्ली ।
लइणी }

लउअ पुं [लकुच] बड़हल का गाछ ।

लउड } पुं. [लकुट] लकड़ी, लाठी, डंडा ।
लउल }

लउस } पुं [लकुश] एक अनार्य-देश ।
लउसय } पुंस्त्री. उस देश का निवासी । स्त्री. °सिया ।

लंका स्त्री [लङ्का] सिंहलद्वीप की राजधानी । °लय वि. लंका-निवासी । °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान की पत्नी । °सोग पुं [°शोक] राक्षस वंश का राजा । °हिव पुं [°धिप] । °हिवइ पुं [°धिपति] लंका का राजा ।

लंका स्त्री [दे] शाखा ।

लंख } पुंस्त्री [लङ्ख] बड़े बाँस के ऊपर
लंखग } खेल करनेवाली नट-जाति । स्त्री. °खिगा ।

लंगल न [लाङ्गल] हल ।

लंगलि पुं [लाङ्गलिन्] बलभद्र, बलदेव ।

लंगलि° } स्त्री [लाङ्गली] शारदी लता ।
लंगली }

लंगिम पुंस्त्री [दे] जवानी । ताजापन, नवीनता ।

लंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ ।

लंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] पुच्छवाला, पशु ।

लंगोल देखो लंगूल ।

लंघ सक [लङ्घ्, लङ्घय्] लाँघना । भोजन नहीं करना ।

लंच पुं [दे] मुर्गा ।

लंचा स्त्री [लञ्चा] रिश्वत ।

लंचिल्ल वि [लाञ्चिक] घूसखोर ।

लंछ सक [लञ्छ] भाँगना । कलंकित करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लंछ पुं [लञ्छ] चोरों की एक जाति ।
लंछण न [लाञ्छन] चिह्न । नाम । अंकन ।
लंडुअ वि [दे.लण्डित] उत्क्षिप्त ।
लंतक, लंतग, लंतय पुं [लान्तक] छठवाँ देवलोक । उसके निवासी देव । उसका इन्द्र । एक देवविमान ।
लंद पुंन [लन्द] समय ।
लंदय पुंन [दे] गो आदि का खादन-पात्र ।
लंपड वि [लम्पट] लोलुप, लालची ।
लंपाग पुं [लम्पाक] देश-विशेष ।
लंपिक्ख पुं [दे] चोर ।
लंब सक [लम्ब्] सहारा लेना । अक. लटकना ।
लंब वि [लम्ब] लम्बा, दीर्घ ।
लंब पुं [दे] गोवाट ।
लंबअ न [लम्बक] नाभि-पर्यन्त लटकती माला ।
लंबणा स्त्री [लम्बना] रज्जु, रस्सी ।
लंबा स्त्री [दे] वल्लरी, लता । केश ।
लंबाली स्त्री [दे] पुष्प-विशेष ।
लंबिअ, लंबिअय वि [लम्बित] लटकता हुआ । पुं. वानप्रस्थ का एक भेद ।
लंबुअ वि [लम्बुक] लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला । भीत में लगा हुआ ईंटों का समूह ।
लंबुत्तर पुंन [लम्बोत्तर] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्टे को नाभि-मंडल से ऊपर रखकर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रखकर कायोत्सर्ग करना ।
लंबूस पुंन [दे.लम्बूष] कन्दुक के आकार का एक आभरण ।
लंबोदर, लंबोयर वि [लम्बोदर] बड़ा पेटवाला । पुं. गणेश ।
लंभ सक [लभ्] प्राप्त करना ।
लंभ सक [लम्भय्] प्राप्त कराना ।
लंभ पुं [लाभ] प्राप्ति । देखो लाह = लाभ ।
लंभण पुं [लम्भन] मत्स्य की एक जाति ।
लक्कुड न [दे. लकुट] लकड़ी, यष्टि, लाठी ।
लक्ख सक [लक्षय्] जानना । पहचानना । देखना । देखो लक्ख = लक्ष्य ।
लक्ख पुंन [दे] काय ।
लक्ख पुंन [लक्ष्] लाख की संख्या । °पाग पुं [°पाक] लाख रुपयों के व्यय से बनता एक पाक ।
लक्ख वि [लक्ष्य] पहचानने-योग्य । जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक, वेध्य ।
लक्ख° देखो लक्खा ।
लक्खग वि [लक्षक] पहचाननेवाला ।
लक्खण पुंन [लक्षण] भेद-बोधक चिह्न । वस्तु-स्वरूप । चिह्न । व्याकरण-शास्त्र । व्याकरण आदि का सूत्र । प्रतिपाद्य, विषय । पुं. लक्ष्मण । सारस पक्षी । °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ।
लक्खण पुं [लक्ष्मण] । देखो लखमण ।
लक्खण न [लक्षण] कारण, हेतु ।
लक्खणा स्त्री [लक्षणा] शब्द की एक शक्ति, जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है । एक महौषधि ।
लक्खणा स्त्री [लक्ष्मणा] आठवें जिन देव की माता । उसी जन्म में मुक्तिपानेवाली श्रीकृष्ण की पत्नी । एक अमात्य-स्त्री ।
लक्खणिय वि [लाक्षणिक, लाक्षण्य] लक्षणों का जानकार । लक्षण-युक्त ।
लक्खमण, लखमण पुं [लक्ष्मण] श्रीराम का छोटा भाई । बारहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि ग्रंथकार ।
लक्खा स्त्री [लाक्षा] लाख, चवड़ा । °रुणिय वि [°रुणित] लाख से रँगा हुआ ।
लग न [दे] निकट, पास ।
लगंड [लगण्ड] वक्र काष्ठ । °साइ वि [°शायिन्] वक्र काष्ठ की तरह सोनेवाला । °सण न [°सन] आसन-विशेष ।
लगुड देखो लउड ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लग्ग सक [लग्] लगना, सम्बन्ध करना ।

लग्ग न [दे] चिह्न । वि अघटमान, असम्बद्ध ।

लग्ग न [लग्न] मेष आदि राशि का उदय । वि. सम्बद्ध । पुं. स्तुति-पाठक ।

लग्गणय पुं [लग्नक] प्रतिभू करनेवाला ।

लग्गूण लग्ग = लग् का संकृ. ।

लघिम पुंस्त्री [लघिमन्] लघुता । एक योग-सिद्धि, जिससे मनुष्य छोटा बन सकता है । विद्या-विशेष ।

लचय न [दे] गण्डुत् तृण ।

लच्छ देखो लक्ख = लक्ष्य ।

लच्छ° लभ का भवि. का रूप ।

लच्छण देखो लक्खण = लक्षण ।

लच्छि° } स्त्री [लक्ष्मी] सम्पत्ति । धन ।
लच्छी } कान्ति । औषध विशेष । फलिनी वृक्ष । स्थल-पद्मिनी । हरिद्रा । मोती । शटी नामक ओषधि । शोभा । विष्णु-पत्नी । रावण की पत्नी । षष्ठ वासुदेव की माता । पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी । देव-प्रतिमा-विशेष । छन्द-विशेष । एक वणिक्-पत्नी । शिखरी पर्वत का एक कूट । °निलय पुं. वासुदेव । °मई स्त्री [°मती] छठवें वासुदेव की माता । ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न । °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष । °वइ पुं [°पति] श्रीकृष्ण । °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । °हर पुं [°धर] वासुदेव । छन्द-विशेष । न. नगर-विशेष ।

लजुक (अशो) देखो रज्जु = (दे) ।

लज्ज अक [लज्ज्] शरमाना ।

लज्जण } न [लज्जन] शरम । वि.
लज्जणय } लज्जाकारक ।

लज्जा स्त्री. लाज, शरम । छन्द-विशेष । संयम ।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयितृ] लजानेवाला ।

लज्जालु वि. लज्जावान्, शरमिंदा ।

लज्जालु } स्त्री [लज्जालु] लता-विशेष,
लज्जालुआ } छुईमुई । लज्जावाली स्त्री ।
लज्जालुइणी }

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री ।

लज्जालुइर } वि [लज्जालु] लज्जाशील ।
लज्जालुर }

लज्जु स्त्री [रज्जु] रस्सी, सरल । वि. सीधा ।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जावाला ।

लज्जु देखो रिज्जु = ऋजु ।

लज्झ° लभ का कर्म. का रूप ।

लट्ट } न [दे] खसखस आदि का तेल ।
लट्टय } कुसुम्भ ।

लट्टा स्त्री [दे] कुसुम्भ धान्य-विशेष ।

लट्टा स्त्री [लट्वा] वृक्ष-विशेष । कुसुम्भ । गौरैया पक्षी । भ्रमर । वाद्य-विशेष ।

लट्ठ वि [दे] अन्यासक्त । मनोहर । प्रियंवद । प्रधान, मुख्य । °दंत पुं [°दन्त] जैन मुनि । एक अन्तर्द्वीप । उसमें रहनेवाला मनुष्य ।

लट्ठुरी स्त्री [दे] सुन्दर, रमणीय ।

लट्ठि स्त्री [यष्टि] लाठी, छड़ी ।

लट्ठिअ न [दे] खाद्य-विशेष ।

लडह वि [दे]रम्य । सुकुमार । चतुर । प्रधान, मुख्य ।

लडहक्खमिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त ।

लडहा स्त्री [दे] विलासवती स्त्री ।

लडाल देखो णडाल ।

लड्डिय न [दे] लाड़, प्यार ।

लड्डुग पुं [लड्डुक] लड्डू, मोदक ।

लड्डुयार वि [लड्डुककार] हलवाई ।

लढ सक [स्मृ] याद करना ।

लण्ह वि[श्लक्ष्ण]चिकना । अल्प । न. लोहा ।

लत्त वि [लप्त, लपित] उक्त ।

लत्ता } स्त्री [दे] लात-प्रहार । आतोद्य-
लत्तिआ } विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लदण (मा) देखो रयण = रत्न ।
लद्द सक [दे] भार भरना, बोझ डालना ।
लद्दी स्त्री [दे] हाथी आदि की विष्ठा ।
लद्ध वि [लब्ध] प्राप्त ।
लद्धि स्त्री [लब्धि] क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति। सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति । अहिंसा । प्राप्ति । इन्द्रिय और मन से होनेवाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग । योग्यता । °पुलाअ पुं [°पुलाक] लब्धि-विशेष-सम्पन्न मुनि ।
लद्धिअ वि [लब्ध] प्राप्त ।
लद्धिल्ल वि [लब्धिमत्] लब्धि-युक्त ।
लद्धुं लभ का हेकृ ।
लद्धूण लभ का संकृ. ।
लप्पसिया स्त्री [दे] लपसी, एक पक्वान्न ।
लब्भ लभ का कृ. ।
लभ सक [लभ्] प्राप्त करना ।
लय सक [ला] ग्रहण करना । देखो ले = ला ।
लय न [दे] नव-दम्पति का आपस में नाम लेने का उत्सव ।
लय देखो लव = लव ।
लय पुं. श्लेष । मन की साम्यावस्था । लीनता । तिरोभाव । संगीत का एक अंग, स्वर-विशेष ।
लय पुं. तन्त्री का स्वर—ध्वनि-विशेष । °सम न. गेय काव्य का एक भेद ।
लय° देखो लया । °हरय न [°गृहक] लता-गृह ।
लयंग न [लताङ्ग] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व ।
लयण वि [दे] कृश, क्षाम । मृदु । न. लता ।
लयण न [लयन] तिरोभाव, छिपना । अव-स्थान । देखो लेण ।
लयणी स्त्री [दे] लता, वल्ली ।
लया स्त्री [लता] वल्ली । भेद । तप-विशेष । चौरासी लाख लतांग-परिमित संख्या । यष्टि । °जुद्ध न [°युद्ध] एक तरह का युद्ध ।
लयापुरिस पुं [दे] वह स्थान, जहाँ पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय ।
लल अक [लल, लड्] विलास करना, मौज करना । झूलना ।
ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी ।
ललाड देखो णडाल ।
ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक ।
ललिअ न [ललित] विलास, लीला । अंग-विन्यास-विशेष । प्रसन्नता । वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी । शोभा-युक्त, सुन्दर । मधुर । अभि-लषित । °मित्त पुं [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम । °वित्थरा स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का एक जैन ग्रन्थ ।
ललिअंग पुं [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार ।
ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष ।
ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री ।
लल्ल वि [दे] सस्पृह । न्यून ।
लल्ल वि. अव्यक्त आवाजवाला ।
लल्लक्क पुं. छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान ।
लल्लक्क वि [दे] भयंकर । पुं. ललकार ।
लल्लि स्त्री [दे] खुशामद ।
लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल ।
लव सक [लू] काटना ।
लव सक [लप्] बोलना, कहना ।
लव सक [प्र + वर्तय्] प्रवृत्ति कराना ।
लव वि. वाचाट ।
लव पुं. सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवाँ अंश । थोड़ा । न. कर्म । °सत्तम पुं [°सप्तम] अनुत्तर-विमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति ।
लवअ पुं [दे. लवक] गोंद, लासा, चेप,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्यास।

लवइअ वि [दे. लवकित]अंकुरित, पल्लवित।

लवंग पुंन [लवङ्ग]लौंग, उसका पेड़ या फूल।

लवण न [लवन] छेदन।

लवण न. नमक। पुं. क्षार रस। समुद्र-विशेष। सीता का पुत्र लव। मधुराज का पुत्र। °जल पुं.। °ोय पुं [°ोद] लवण समुद्र। देखो लोण।

लवणिम पुंस्त्री [लवणिमन्] लावण्य।

लवल न. पुष्प-विशेष।

लवली स्त्री. लता-विशेष।

लवव वि [दे] सोया हुआ।

लवित्त न [लवित्र] हँसुआ या हँसिया।

लस अक [लस्] श्लेष करना। चमकना। क्रीडा करना।

लसइ पुं [दे] कन्दर्प।

लसक न [दे] पेड़ का दूध।

लसण देखो लसुण।

लसुअ न [दे] तेल।

लसुण न [लशुन] लहसुन।

लह देखो लभ।

लहग पुं [दे] बासी अन्नज द्वीन्द्रिय कीट।

लहण न [लभन] लाभ। ग्रहण।

लहर पुं. एक वणिक्-पुत्र।

लहरि } स्त्री. तरंग, कल्लोल।
लहरी }

लहिम देखो लघिम।

लहु } वि [लघु] छोटा। हलका। तुच्छ,
लहुअ } श्लाघनीय। थोड़ा। मनोहर। स्त्री. °ई, °वी। न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य। वीरण-मूल। शीघ्र। स्पर्श-विशेष। लघुस्पर्श नामक एक कर्मभेद। पुं. एक मात्रिक अक्षर। °कम्म वि [कर्मन्] अल्प कर्म अवशिष्टवाला। °करण न. दक्षता। °परक्कम पुं [°पराक्रम] ईशानेन्द्र का पदाति-सेनापति। संखिज्ज न [°संख्येय] जघन्य संख्यात।

लहुअ सक [लघय्, लघु+कृ] लघु करना।

लहुअवड पुं [दे] न्यग्रोध-बरगद का पेड़।

लहुआइअ } वि [लघूकृत] लघु किया हुआ।
लहुइअ }

लाइअ वि [लागित] लगाया हुआ।

लाइअ वि [दे] गृहीत, स्वीकृत। घृष्ट। न. भूषा, मण्डन। भूमि को गोबर आदि से लीपना। चर्मार्ध।

लाइअव्व लाय=लावय् का कृ.।

लाइम वि [लव्य] काटने-योग्य।

लाइम वि [दे] लाजा या रोपण के योग्य।

लाइल्ल पुं [दे] वृषभ।

लाउ देखो अलाउ।

लाउल्लोइय न [दे] गोमय से भूमि का लेपन और खड़ी से भीत आदि का पोतना।

लाऊ देखो अलाऊ।

लाख (अप) देखो लक्ख=लक्ष।

लाग पुं [दे] चुंगी।

लाघव. न लघुता।

लाघवि वि [लाघविन्] लघुता-युक्त, लाघव-वाला।

लाघविअ न [लाघविक] लघुता, छोटापन।

लाज देखो लाय=लाज।

लाड पुं [लाट] देश-विशेष।

लाडी स्त्री [लाटी] लिपि-विशेष।

लाढ पुं. एक आर्य देश।

लाढ वि [दे] निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करनेवाला, आत्म-निग्रही। प्रधान। पुं. एक जैन आचार्य।

लाढ वि [दे] उत्तम।

लाण न [लान] ग्रहण, आदान।

लाबू देखो लाऊ।

लाभ पुं. नफा। प्राप्ति। ब्याज।

लाभंतराइय न [लाभान्तरायिक] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म।

लाभिय } वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ-
लाभिल्ल } वाला।
लाम वि [दे] रम्य।
लामंजय न [दे] उशीर तृण, खस—गाँडर घास की जड़।
लामा स्त्री [दे] डाकिनी।
लाय सक [लागय्] लगाना।
लाय सक [लावय्] कटवाना। काटना।
लाय देखो लाइअ = (दे)।
लाय वि [लात] गृहीत। न्यस्त, स्थापित। न. लग्न का एक दोष।
लाय पुंस्त्री [लाज] आर्द्र तण्डुल। ब. भृष्ट धान्य।
लायण्ण न [लावण्य] शरीरकान्ति। लवणत्व।
लाल सक [लालय्] स्नेह-पूर्वक पालना।
लालंप अक [वि + लप्] विलाप करना।
लालंपिअ न [दे] प्रवाल। खलीन।
लालंभ देखो लालंप।
लालप्प देखो लालंप।
लालप्प सक [लालप्य्] खूब बकना। बारबार बोलना। गर्हित बोलना।
लालम्भ } देखो लालंप।
लालम्ह }
लालय न [लालक] लाला।
लालस वि [दे] मृदु। स्त्रीन. इच्छा।
लालस वि. लम्पट।
लाला स्त्री. लार।
लालिअ देखो ललिअ।
लालिच (अप) पुं [नालिच] वृक्ष-विशेष।
लालिल्ल वि [लालावत्] लारवाला।
लाव सक [लापय्] बुलवाना, कहलाना।
लाव देखो लावग।
लावंज न [दे] सुगन्धी तृण, उशीर, खस।
लावक } पुं. पक्षि-विशेष। वि. काटनेवाला।
लावग }
लावणिअ वि [लावणिक] लवण से संस्कृत।
लावण्ण देखो लायण्ण।
लाविय (अप) वि [लात] लाया हुआ।
लाविया स्त्री [दे] उपलोभन।
लास सक [लासय्] नाचना।
लास न [लास्य] भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि। नृत्य। स्त्री का नाच। वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय।
लासक } पुं. रास गानेवाला। जय शब्द
लासग } बोलनेवाला।
लासय पुं [लासक, ह्लासक] अनार्य देश-विशेष। पुंस्त्री. वहाँ का रहनेवाला। स्त्री. °सिया। देखो ल्हासिय।
लासयविहय पुं [दे. लासकविहग] मयूर।
लाह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना।
लाह देखो लाभ।
लाहण न [दे] भोज्य-भेद, खाद्य-वस्तु की भेंट।
लाहल देखो णाहल।
लाहव देखो लाघव।
लिअ सक [लिप्] लीपना।
लिअ वि [लिप्त] लीपा हुआ। न. लेप।
लिआर पुं [ऌकार] 'ऌ' वर्ण।
लिंक पुं [दे] बाल, लड़का।
लिंकिअ वि [दे] आश्लिष्ट। लीन।
लिंखय देखो लंख।
लिंग सक [लिङ्ग्] जानना। गति करना। आलिंगन करना।
लिंग न [लिङ्ग] चिह्न। दार्शनिक और साधु का अपने धर्म के अनुसार वेष। अनुमान प्रमाण का साधक हेतु। पुंश्चिह्न। पुंलिंग आदि शब्द। °द्धय पुं [°ध्वज]। °जीव पुं. वेषधारी साधु।
लिंगि वि [लिङ्गिन्] साध्य हेतु से जानी जाती वस्तु। किसी धर्म के वेष को धारण करने-वाला साधु।
लिंगिय वि [लैंगिक] अनुमान प्रमाण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिंछ न [दे] चुल्ली-स्थान। अग्नि-विशेष। देखो लिच्छ।
लिंड न [दे] हाथी आदि की विष्ठा। शैवल-रहित पुराना पानी।
लिंडिया स्त्री [दे] बकरा आदि की विष्ठा।
लिंत ले = ला का. वकृ.।
लिंप सक [लिप्] लीपना।
लिंपाविय वि [लेपित] लेप कराया हुआ।
लिंब पुं [निम्ब] नीम का पेड़।
लिंब वि [दे] कोमल। नम्र।
लिंब पुं [दे. लिम्ब] आस्तरण-विशेष।
लिंबड (अप) देखो लिंब = निम्ब।
लिंबोहली स्त्री [दे] निम्ब-फल।
लिकार देखो लिआर।
लिक्क अक [नि + ली] छिपाना।
लिक्ख न [लेख्य] हिसाब। देखो लेक्ख।
लिक्ख स्त्रीन [दे] छोटा स्रोत। स्त्री. °क्खा।
लिक्खा स्त्री [लिक्षा] लघु यूका। परिणाम-विशेष।
लिखाप (अशो) सक [लेखय्] लिखवाना।
लिच्छ सक [लिप्स्] प्राप्त करने को चाहना।
लिच्छ देखो लिंछ।
लिच्छवि देखो लेच्छइ = लेच्छकि।
लिच्छु वि [लिप्सु] लाभ की चाहवाला।
लिज्जिअ (अप) वि [लात] गृहीत।
लिट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद। वि. लम्पट।
लिट्ठु देखो लेट्ठु।
लित्त वि [लिप्त] लेप-युक्त। संवेष्टित।
लित्ति पुंस्त्री [दे] खड्ग आदि का दोष।
लिप्प देखो लित्त।
लिप्प देखो लेप्प।
लिप्पासण न [लिप्यासन] मसी-भाजन।
लिब्भंत लिह = लिह् का कवकृ.।
लिल्लिर वि [दे] आर्द्र। हरा ग्वाला।
लिवि } स्त्री [लिपि, पी] अक्षर-लेखन-
लिवी } प्रक्रिया।

लिस अक [स्वप्] सोना।
लिस सक [श्लिष्] आलिंगन करना।
लिसय वि [दे] क्षीण।
लिस्स देखो लिस = श्लिष्।
लिह सक [लिख्] लिखना। रेखा करना।
लिह सक [लिह्] चाटना।
लिहण न [लेखन] लेख लिखवाना।
लिहा स्त्री [लेखा] देखो रेहा = रेखा।
लिहिअ वि [लिखित] लिखा हुआ। उल्लिखित। चित्रित।
लिल्लुअ (अप) वि [लात] लिया हुआ।
लीढ वि. चाटा हुआ। स्पृष्ट। युक्त।
लीण वि [लीन] लय-युक्त।
लील पुं [दे] यज्ञ।
लीला स्त्री विलास। क्रीड़ा। छन्द-विशेष। °वई स्त्री [°वती] विलासवती स्त्री। छन्द-विशेष। °वह वि. लीला-वाहक।
लीलाइअ न [लीलायित] क्रीड़ा। प्रभाव।
लीलाय सक [लीलाय्] लीला करना।
लीव पुं [दे] बाल।
लीहा देखो लिहा।
लुअ सक [लू] छेदना, काटना।
लुअ देखो लुंप।
लुअ वि [लून] काटा हुआ, छिन्न।
लुअ वि [लुप्त] जिसका लोप किया गया हो वह। न. लोप।
लुअंत वि [लूनवत्] जिसने छेदन किया हो वह।
लुंक वि [दे] सुप्त।
लुंकणी स्त्री [दे] छिपना।
लुंख पुं [दे] नियम।
लुंखाय पुं [दे] निर्णय।
लुंखिअ वि [दे] कलुष, मलिन।
लुंच सक [लुञ्च] बाल उखाड़ना। अपनयन करना।
लुंछ सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] मार्जन करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोंछना ।
लुंट सक [लुण्ट्] लूटना ।
लुंटाक वि [लुण्टाक] लुटेरा ।
लुंठग वि [लुण्ठक] खल ।
लुंठिअ वि [लुण्ठित] बलाद् गृहीत ।
लुंप सक [लुप्] लोप करना, विनाश करना, उत्पीड़न करना । अदृष्ट करना ।
लुंपइत्तु वि [लोपयितृ] लोप करनेवाला ।
लुंपणा स्त्री [लोपना] विनाश ।
लुंपित्तु वि [लोप्तृ] लोप करनेवाला ।
लुंबी स्त्री [दे. लुम्बी] फलों का गुच्छा । लता ।
लुक्क अक [नि + ली] छिपना ।
लुक्क अक [तुड्] टूटना ।
लुक्क वि [दे] सुप्त ।
लुक्क वि [निलीन] छिपा हुआ ।
लुक्क वि [रुग्ण] भग्न । रोगी ।
लुक्क वि [लुञ्चित] मुण्डित ।
लुक्ख पुं [रूक्ष] सूखा स्पर्श । वि. रूक्ष स्पर्श-वाला, स्नेह-रहित । देखो लूह = रूक्ष ।
लुग्ग वि [दे. रुग्ण] भग्न, रोगी ।
लुच्छ देखो लुंछ = मृज् ।
लुट्ट सक [लुण्ट्] लूटना ।
लुट्ट देखो लोट्ट = स्वप् ।
लुट्ट वि [लुण्टित] लूटा गया ।
लुट्ठ पुं [लोष्ट्र] रोड़ा, ईंट आदि का टुकड़ा ।
लुड्ढ देखो लुद्ध ।
लुढ अक [लुठ्] लुढ़कना, लेटना ।
लुण देखो लुअ = लू ।
लुत्त वि [लुप्त] लोप-प्राप्त ।
लुत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल ।
लुद्ध पुं [लुब्ध] व्याध । वि. लोलुप । न. लोभ ।
लुद्ध न [लोध्र] गन्ध-द्रव्य-विशेष । देखो लोद्ध = लोध्र ।
लुद्ध पुंन [लोध्र] क्षार-विशेष ।
लुब्भ } लुभ } अक [लुभ्] लोभ करना । आसक्ति करना ।
लुभ देखो लुह = मृज् ।
लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।
लुल देखो लुढ ।
लुलिअ वि [लुलित] घूर्णित, चलित ।
लुव देखो लुअ = लू ।
लुव्व॰ लुण का कर्मणि प्रयोग ।
लुह सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना ।
लूअ देखो लुअ = लून ।
लूआ स्त्री [दे] मृग-तृष्णा ।
लूआ स्त्री [लूता] एक वात-रोग मकड़ी ।
लूड [लुण्ट्] लूटना, चोरी करना ।
लूड वि [लुण्ट] लूटनेवाला । स्त्री, °डी ।
लूण देखो लूअ = लून ।
लूण न [लवण] नमक । पुं. वनस्पति-विशेष । देखो लवण ।
लूण न [लवण] लावण्य, सुन्दरता ।
लूर सक [छिद्] काटना ।
लूस सक [लूषय्] वध करना । पीड़ना । दूषित करना । चोरी करना । विनाश करना । अनादर करना । तोड़ना । छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा करना ।
लूसअ } लूसग } वि [लूषक] हिंसक । विनाशक । प्रकृति-क्रूर । भक्षक । दूषित करनेवाला । विराधक । हेतु-विशेष ।
लूसण वि [लूषण] ऊपर देखो ।
लूसय वि [लषक] परिताप-कर्ता । चोर ।
लूह सक [मृज्, रूक्षय्] पोंछना ।
लूह पुं [रूक्ष] मुनि, साधु, श्रमण ।
लूह वि [रूक्ष] सूखा, स्नेह-रहित । पुं. संयम, चारित्र । न. निर्विकृतिक तप । देखो लुक्ख ।
ले सक [ला] लेना । ग्रहण करना ।
लेक्ख न [लेख्य] व्यवहार, व्यापार । हिसाब ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेक्खा देखो लिहा।
लेख देखो लेह् = लेख।
लेच्छइ पुं [लेच्छकि] क्षत्रिय-विशेष। एक प्रसिद्ध राज-वंश।
लेच्छइ पुं [लिप्सुक, लेच्छकि] वणिक्। एक वणिग्-जाति।
लेच्छारिय वि [दे] खरण्टित, लिप्त।
लेज्झ लिह् = लिह् का कृ.।
लेट्ठु, लेडु, लेडुअ पुंन [लेष्टु] रोड़ा, ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा।
लेडुक्क पुं [दे] रोड़ा। वि. लम्पट।
लेढिअ न [दे] स्मरण।
लेढुक्क पुं [दे] रोड़ा।
लेण न [लयन] गिरि-वर्ती पाषाण-गृह। बिल, जन्तुगृह। °विहि पुंस्त्री [°विधि] कला-विशेष। देखो लयण = लयन।
लेप्प न [लेप्य] भित्ति।
लेप्पकार पुं [लेप्यकार] राजगीर, शिल्पी।
लेप्पा स्त्री [लेप्या] लेपन-क्रिया।
लेलु देखो लेडु।
लेव पुं [लेप] लेपन। नाभि-प्रमाण जल। पुं. भ० महावीर के समय का नालंदानिवासी गृहस्थ। °कड, °ड वि [°कृत] लेप-मिश्रित।
लेवाड वि [लेपकृत्] लेपकारक।
लेस पुं [लेश] अल्प। संक्षेप।
लेस वि [दे] लिखित। आश्वस्त। निःशब्द। पुं. निद्रा।
लेस पुं [श्लेष] संश्लेष, सम्बन्ध। मिलान।
लेसणी स्त्री [श्लेषणी] विद्या-विशेष।
लेसा स्त्री [लेश्या] तेज, ज्वाला। मंडल। किरण। देहसौन्दर्य। आत्मा का परिणाम-विशेष, कृष्णादि द्रव्यों के सान्निध्य से उत्पन्न होनेवाला आत्मा का शुभ या अशुभ परि-णाम। उसकी उत्पत्ति का निमित्त द्रव्य।
लेसुरुडयतरु पुं [दे] लसौड़ा।

लेस्सा देखो लेसा।
लेह् देखो लिह् = लिख्।
लेह् देखो लिह् = लिह्।
लेह् (अप) देखो लह् = लभ्।
लेह पुं [लेख] लिखना। पत्र। देव। लिपि। वि. लेख्य। लेखक। °वाह वि.। °वाहग, °वाहय वि [°वाहक] पत्र-वाहक। °साला स्त्री [°शाला] पाठशाला। °ारिय पुं [°ाचार्य] उपाध्याय।
लेहड वि [दे] लम्पट।
लेहणी स्त्री [लेखनी] कलम।
लेहल देखो लेहड।
लेहा देखो लिहा।
लेहुड पुं [दे] लोष्ठ, रोड़ा, ढेला।
लोअ देखो रोअ = रोचय्।
लोअ सक [लोक्, लोकय्] देखना।
लोअ पुं [लोक] धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत्, भुवन। जीव, अजीव आदि द्रव्य। समय, आवलिका आदि काल। गुण, पर्याय, धर्म। प्राणिवर्ग। आलोक, प्रकाश। °ग्ग° न [°ाग्र] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, मुक्त-स्थान। मुक्ति। °ग्गथूभिआ स्त्री [°ाग्रस्तूपिका] ईषत्प्राग्-भारा। °ग्गपडिबुज्झणा स्त्री [°ाग्रप्रति-बोधना] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी। °णाभि पुं [°नाभि] मेरु पर्वत। °प्पवाय पुं [°प्रवाद] जन-श्रुति। °मज्झ पुं [°मध्य] मेरु पर्वत। °वाय पुं [°वाद] जन-श्रुति। °ागास पुं [°ाकाश] लोक-क्षेत्र, अलोक-भिन्न आकाश। °ाहाणय न [°ाभाणक] कहावत। देखो लोग।
लोअ पुं [लोच] केशों का उत्पाटन।
लोअ पुं [लोप] अदर्शन, विध्वंस।
लोअंतिय पुं [लोकान्तिक] एक देव-जाति।
लोअग न [दे. लोचक] खराब अन्न।
लोअडी (अप) स्त्री [लोमपटी] कम्बल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोअण पुंन [लोचन] आँख । °वत्त न [°पत्र] अक्षि-लोम ।

लोअणिल्ल वि [लोचनवत्] आँखवाला ।

लोआणी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ।

लोइअ वि [लोकित] निरीक्षित, दृष्ट ।

लोइअ वि [लौकिक] लोक-सम्बन्धी ।

लोउत्तर } वि [लोकोत्तर] लोक-प्रधान । लोउत्तरिय } देखो लोगुत्तर । वि [लोकोत्तरिक] ।

लोंक वि [दे] सुप्त ।

लोग पुं [लोक] मान-विशेष, श्रेणी से गुणित प्रतर । °ायत देखो °यय ।

लोग देखो लोअ = लोक । न. एक देव-विमान । °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान । °कूड न [°कूट] एक देव-विमान । °ग्गचूलिआ स्त्री [°ाग्रचूलिका] सिद्धि-शिला । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] लोक-व्यवहार, रोजी । °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] लोक-व्यवस्था । °दव्व न [°द्रव्य] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह । °नाभि पुं. मेरु पर्वत । °नाह पुं [°नाथ] परमेश्वर । °परिपूरणा स्त्री. ईषत्प्राग्भारा पृथिवी । °पाल पुं. इन्द्रों के दिक्पाल । °प्पभ पुं [°प्रभ] एक देव-विमान । बिंदुसार पुंन [बिन्दुसार] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ । °मज्झावसिअ पुंन [मध्यावसित] । °मज्जावसाणिअ पुंन [°मध्यावसानिक] अभिनय-विशेष । °रूव न [°रूप] । °लेस न [°लेश्य] । °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमाम-विशेष । °वाल देखो °पाल । °वीर पुं. भगवान् महावीर । °सिंग न [°शृङ्ग] । °सिट्ठ न [°सृष्ट] । °हिअ न [°हित] देव-विमान-विशेष । °ायय न [°ायत] चार्वाक-दर्शन । °ालोग पुंन [°ालोक] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, सम्पूर्ण जगत् । °ावत्त न [°ावर्त्त] एक देव-विमान । °ाहाण न [°ाख्यान] लोकोक्ति ।

लोगंतिय देखो लोअंतिय ।

लोगिग देखो लोइअ = लौकिक ।

लोगुत्तर देखो लोउत्तर । °वडिंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान ।

लोगुत्तर पुं [लोकोत्तर] मुनि । जिन-शासन, जैन-सिद्धान्त ।

लोगुत्तरिअ वि [लोकोत्तरिक] साधु का । जिन शासन का ।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय ।

लोट्ट अक [स्वप्] लोटना, सोना ।

लोट्ट अक [लुठ्] लेटना । प्रवृत्त होना ।

लोट्ट } पुं [दे] कच्चा चावल । पुंस्त्री. लोट्टय } हाथी का छोटा बच्चा । स्त्री. °ट्टिया ।

लोट्टिअ वि [दे] उपविष्ट ।

लोट्ठु वि [दे] स्मृत ।

लोट्ठु पुं [लोष्ट] रोड़ा, ढेला ।

लोडाविअ वि [लोटित] घुमाया हुआ ।

लोढ सक [दे] कपास निकालना ।

लोढ पुं [दे] लोढ़ा, शिलापुत्रक, पीसने का पत्थर । ओषधि-विशेष, पद्मिनीकन्द । वि. स्मृत । शयित ।

लोढय पुं [दे. लोठक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र ।

लोढिअ वि [लोठित] सुलाया हुआ ।

लोण्ण न [लवण] नमक । लावण्य । पुं. वृक्ष-विशेष । देखो लवण ।

लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-सम्बन्धी ।

लोण्ण न [लावण्य] शरीर-कान्ति ।

लोत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल ।

लोद्ध पुं [लोध्र] वृक्ष-विशेष । देखो लुद्ध = लोध्र ।

लोद्ध देखो लुद्ध = लुब्ध ।

लोप्प देखो लुंप ।

लोभ सक [लोभय्] लालच देना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोभ पुं. लालच, तृष्णा। वि. लोभयुक्त।

लोभणय, लोभि, लोभिल्ल } वि [लोभनक] लोभी। वि [लोभिन्] लोभवाला।

लोम पुंन. रोम। °पक्खि पुं [पक्षिन्] रोम के पँखवाला पक्षी। °स वि [°श] लोम-युक्त। °हत्थ पुं [°हस्त] पींछी, लोम का झाड़ू। °हरिस पुं [°हर्ष] नरकावास-विशेष। रोमाञ्च। °हार पुं. मार कर धन लूटनेवाला चोर। °ाहार पुं. रूँगटों से लिया जाता आहार।

लोमंथिअ पुं [दे] नट।

लोमसी स्त्री [दे] खीरा। ककड़ी का गाछ।

लोय न [दे] सुन्दर भोजन, मिष्टान्न।

लोर पुंन [दे] नेत्र। अश्रु।

लोल अक [लुठ्] लेटना। सक. विलोडन करना।

लोल सक [लोठय्] लेटाना।

लोल वि. लम्पट, आसक्त। पुं. रत्न-प्रभा का नरकावास। शर्कराप्रभा का नववाँ नरकेन्द्रक। °मज्झ पुं [°मध्य]। °सिट्ठ पुं [°शिष्ट]। °ावत्त पुं [°ावर्त्त] नरकावास-विशेष।

लोलंठिअ न [दे] चाटु, खुशामद।

लोलपच्छ पुं [लोलपाक्ष] नरक-स्थान-विशेष।

लोलिक्क, लोलिम } न [लौल्य] लम्पटता। पुंस्त्री [लोलत्व]।

लोलुअ वि [लोलुप] लम्पट। पुं. रत्नप्रभा का नरकावास। °च्चुअ पुं [°ाच्युत] रत्नप्रभा का नरकस्थान।

लोलुंचाविअ वि [दे] जिसने तृष्णा की हो।

लोलुव देखो लोलुअ।

लोव सक [लोपय्] लोप, विध्वंस या विनाश करना।

लोह देखो लोभ = लोभ।

लोह पुंन. लोहा। कोई भी धातु। °कार पुं. लोहार। °जंघ पुं [°जङ्घ] भारत का द्वितीय प्रतिवासुदेव। राजा चण्डप्रद्योत का दूत। °जंघवण न [°जङ्घवन] मथुरा के समीप का एक वन।

लोह वि [लौह] लोहे का, लोह-निर्मित।

लोहंगिणी स्त्री [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष।

लोहल पुं. अव्यक्त शब्द।

लोहार पुं [लोहकार] लोहार।

लोहि°, लोहिअ° } देखो लोही।

लोहिअ पुं [लोहित] लाल। वि. रक्त वर्ण-वाला। न. रुधिर। कौशिक गोत्र की एक शाखा।

लोहिअंक पुं [लोहित्यक, लोहिताङ्क] अठासी महाग्रहों में तीसरा महाग्रह।

लोहिअक्ख पुं [लोहिताक्ष] एक महाग्रह। चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति। रत्न-जाति। एक देव-विमान। रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड। एक पर्वत-कूट।

लोहिआ, लोहिआअ } अक [लोहिताय्] लाल होना।

लोहिआमुह पुं [लोहितामुख] रत्नप्रभा का एक नरकावास।

लोहिच्च पुं [लोहित्य] आचार्य भूतदिन्न के शिष्य एक जैन मुनि।

लोहिच्च, लोहिच्चायण } न [लौहित्यायन] गोत्र-विशेष।

लोहिणी, लोहिणीहू } स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष।

लोहिल्ल वि [दे. लोभिन्] लम्पट।

लोही स्त्री [लौही] कराह, लोहे का भाजन।

ल्हस देखो लस = लस्।

ल्हस अक [स्रंस्] खिसकना, गिर पड़ना।

ल्हसिअ वि [दे] हर्षित।

ल्हसुण देखो लसुण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ल्हादि } स्त्री [ह्लादि] आह्लाद, खुशी ।
ल्हाय } पुं [ह्लाद] ऊपर देखो ।
ल्हासिय पुं [ल्हासिक] एक अनार्य जाति ।
ल्हिक्क अक [नि + ली] छिपना ।
ल्हिक्क वि [दे] नष्ट । गत ।

व

व पुं. अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष, जिसका उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ है । पुंन. वरुण ।
व अ. देखो इव ।
वं देखो वा = अ ।
व° देखो वाया = वाच् । °क्खेवअ वि [°क्षेपक] वचन का निरसन । °प्पइराय पुं [°पतिराज] 'गउडवहो' काव्य का कर्त्ता ।
वअणीआ स्त्री [दे] उन्मत्त या दुःशील स्त्री ।
वअल अक [प्र + सृ] फैलना ।
वआड देखो वायाड = वाचाट ।
वइ अ [वै] इन अर्थों का सूचक अव्यय— निश्चय । अनुनय । सम्बोधन । पादपूर्त्ति ।
वइ अ [दे] वदी, कृष्ण पक्ष ।
वइ वि [व्रतिन्] व्रती, संयमी । स्त्री. °णी ।
वइ स्त्री[वाच्]वाणी । °गुत्त वि [°गुप्त]वाणी का संयमी । °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] वाणी का संयम । °जोअ, °जोग पुं [°योग] वचन-व्यापार । °मंत वि [°मत्] वचनवाला । °मेत्त न [°मात्र] निरर्थक वचन । देखो वई ।
वइ स्त्री [वृति] बाड़, घेरा ।
°वइ देखो पइ = पति ।
वइ° देखो वय = वद् ।
वइ° देखो वय = व्रज् ।
वइअ वि [दे] जिसका पान किया गया हो । आच्छादित ।
वइअ वि [व्ययित] व्यय किया हुआ ।
वइअब्भ पुं [वैदर्भ] विदर्भ देश का राजा । वि. विदर्भ देश में उत्पन्न ।
वइअर पुं [व्यतिकर] प्रसङ्ग, प्रस्ताव ।
वइअव्व वय = व्रज् का कृ. ।
वइआ स्त्री [व्रजिका] छोटा गोकुल ।
वइआलिअ वि [वैतालिक] मंगल-स्तुति आदि से राजा को जगानेवाला मागध आदि ।
वइआलीअ पुंन [वैतालीय] छन्द-विशेष ।
वइएस वि [वैदेश] परदेशी ।
वइएह पुं [वैदेह] वणिक् । शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष । राजा जनक । वि. देह-रहित से सम्बन्ध रखने-वाला । मिथिला देश का ।
वइंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा ।
वइकच्छ पुं [वैकक्ष] उत्तरासंग ।
वइकल्लिअ न [वैकल्य] विकलता ।
वइकुंठ पुं [वैकुण्ठ] विष्णु । विष्णु का धाम ।
वइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत ।
वइक्कम पुं [व्यतिक्रम] विशेष उल्लंघन, व्रत-दोष-विशेष ।
वइगरणिय पुं [वैकरणिक] राज-कर्मचारी-विशेष ।
वइगा देखो वइआ ।
वइगुण्ण न [वैगुण्य] वैकल्य, अपरिपूर्णता । विपरीतपन, विपर्यय ।
वइचित्त न [वैचित्र्य] विचित्रता ।
वइजवण वि [वैजवन] गोत्र-विशेष में उत्पन्न ।
वइणी वइ = व्रतिन् का स्त्री. ।
वइतुलिय वि [वैतुलिक] तुल्यता-रहित ।
वइत्तए वय = वद् का हेकृ. ।
वइत्ता वय = वद् का संकृ. ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइत्ता वय = वच् का संकृ. ।
वइत्तु वि [वदितृ] बोलनेवाला ।
वइदब्भ देखो वइअब्भ ।
वइदिस पुं [वैदिश] अवन्ती-मालव देश । वि. विदिशा-सम्बन्धी ।
वइदेस देखो वइएस ।
वइदेसिअ वि [वैदेशिक] विदेशीय, परदेशी ।
वइदेह देखो वइएह ।
वइदेही स्त्री [वैदेही] राजा जनक की स्त्री, सीता की माता । सीता । हल्दी । पीपल । वणिक्-स्त्री ।
वइधम्म न [वैधर्म्य] विरुद्धधर्मता ।
वइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] संमिलित ।
वइर देखो वेर = वैर ।
वइर पुंन [वज्र] रत्न-विशेष, हीरा । इन्द्र का अस्त्र । एक देव-विमान । बिजली । पुं. एक जैन महर्षि । कोकिलाक्ष वृक्ष । श्वेत कुश । श्रीकृष्ण का प्रपौत्र । न. बालक । धात्री । काँजी । वज्रपुष्प । एक प्रकार का लोहा । अभ्र-विशेष । ज्योतिष का एक योग । कीलिका । °कंड न [काण्ड] रत्नप्रभा का एक वज्ररत्न-मय काण्ड । °कंत न [°कान्त] । °कूड न [°कूट] देव-विमान । देवी-विशेष का आवासभूत एक शिखर । °जंघ पुं [°जङ्घ] भरतक्षेत्र में उत्पन्न तृतीय प्रतिवासुदेव । पुष्कलावती विजय के लोहार्गल नगर का एक राजा । °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान । °मज्झा स्त्री [°मध्या] प्रतिमा-विशेष, एक प्रकार का व्रत । °रूव न [°रूप] । °लेस न [°लेश्य] । °वण्ण न [°वर्ण] । °सिंग न [°शृङ्ग] सब देव-विमान । °सिंह पुं. एक राजा । °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान । °सीह देखो सिंह । °सेण पुं [°सेन] एक जैन महर्षि, वज्रस्वामी के शिष्य । °सेणा स्त्री [°सेना] इन्द्राणी, दाक्षिणत्य वानव्यन्तरेन्द्र की अग्र-महिषी । एक दिक्कुमारी देवी । °हर पुं [°धर] इन्द्र । °मय वि [°मय] वज्र रत्नों का बना हुआ । स्त्री. °मई, °मती । °वत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान । °सभनाराय न [ऋषभनाराच] संहनन-विशेष । देखो वज्ज = वज्र ।
वइरा स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा ।
वइराग न [वैराग्य] विरक्ति, उदासीनता ।
वइराड पुं [वैराट] एक आर्य देश । न. प्राचीन मत्स्य देश की राजधानी ।
वइराय देखो वइराग ।
वइरि } वि [वैरिन्] दुश्मन, रिपु ।
वइरिअ }
वइरिक्क न [दे] विजन, एकान्त । देखो पइरिक्क ।
वइरित्त वि [व्यतिरिक्त] भिन्न, अलग ।
वइरी स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा ।
वइरुट्टा स्त्री [वैरोट्या] एक विद्या-देवी । मल्लिनाथ की शासन-देवी ।
वइरुत्तरवडिंसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान ।
वइरेअ } पुं [व्यतिरेक] अभाव । साध्य के
वइरेग } अभाव में हेतु का नितान्त अभाव ।
वइरोअण पुं [वैरोचन] अग्नि । बलि नामक इन्द्र । उत्तर दिशा में रहनेवाले असुर-निकाय के देव । पुंन. एक लोकान्तिक देव-विमान ।
वइरोअण पुं [दे] बुद्ध देव ।
वइरोड पुं [दे] जार, उपपति ।
वइवलय पुं [दे] दुन्दुभ सर्प, उसकी जाति ।
वइवाय पुं [व्यतीपात] ज्योतिष का एक योग ।
वइवेला स्त्री [दे] सीमा ।
वइस देखो वइस्स = वैश्य ।
वइसइअ वि [वैषयिक] विषय-सम्बन्धी ।
वइसंपायण पुं [वैशम्पायन] एक ऋषि, जो व्यास का शिष्य था ।
वइसम्म पुंन [वैषम्य] विषमता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइसवण पुं [वैश्रवण] कुबेर।
वइसस न [वैशस] रोमाञ्चकारी पाप-कृत्य।
वइसानर देखो वइस्साणर।
वइसाल देखो [वैशाल] विशाला में उत्पन्न।
वइसाह पुं [वैशाख] मास-विशेष। मन्थन-दण्ड। पुंन. योद्धा का स्थान-विशेष।
वइसाही देखो वेसाही।
वइसिअ वि [वैशिक] वेष से जीविका उपार्जन करनेवाला।
वइसिट्ठ न [वैशिष्ट्य] विशिष्टता, भेद।
वइसेसिअ न [वैशेषिक] कणाद-दर्शन। विशेष।
वइस्स पुंस्त्री [वैश्य] वर्ण-विशेष, वणिक्। महाजन।
वइस्स वि [द्वेष्य] अप्रीतिकर।
वइस्सदेव पुं [वैश्वदेव] अग्नि।
वइस्साणर पुं [वैश्वानर] अग्नि। चित्रक वृक्ष। सामदेव का अवयव-विशेष।
वई देखो वइ = वाच्। °मय वि. वचनात्मक।
वईअ वि [व्यतीत]अतीत।°सोग पुं [°शोक] एक जैन मुनि।
वईवय सक [व्यति + व्रज्] जाना।
वईवाय देखो वइवाय।
वउ पुंस्त्री [दे] लावण्य।
वउ न [वपुष] शरीर।
वउलिअ वि [दे] शूल-प्रोत।
वएमाण वय = वद् का कवकृ.।
वओ° देखो वय = वचस्। °मय न. वाङ्मय, शास्त्र।
वओ वय = वयस्।
वओवउप्फ } पुंन [दे] विषुवत्। समान
वओवत्थ } रात और दिन वाला काल।
वं° देखो वाया = वाच्। °नियम पुं. वाणी की मर्यादा।
वंक वि [वङ्क, वक्र] बाँका, कुटिल। नदी का बाँक।
वंक पुं [दे] कलंक, दाग।
°वंक देखो पंक।
वंकचूल } पुं [वङ्कचूल] एक प्रसिद्ध
वंकचूलि } राज-कुमार। पुं [वंकचूलि]।
वंकण न [वङ्कन, वक्रण] वक्रीकरण, कुटिल बनाना।
वंकिअ वि [वक्रित] बांका किया हुआ।
वंकिअ वि [पङ्कित] पंक-युक्त।
वंकिम पुंस्त्री [वक्रिमन्] वक्रता, कुटिलता।
वंकुड } देखो वंक = वंक।
वंकुण }
वंकुभ (शौ) ऊपर देखो।
वंग न [दे] वृन्ताक।
वंग वि [व्यङ्ग] विकृत अंग।
वंगच्छ पुं [दे] प्रथम, शिव का अनुचर-विशेष।
वंगण न [व्यङ्गन] क्षत।
वंगिय वि [व्यङ्गित] विकृत शरीरवाला।
वंगेवड्ड पुं [दे] सूकर।
वंच सक [वञ्च्] ठगना।
वंच (अप) देखो वच्च = व्रज्।
वंच सक [उद् + नमय्] ऊँचा उठाना।
वंच वि [वञ्च] धूर्त।
वंचण न [वञ्चन]प्रतारण। वि. ठग। °चण वि. ठगने में चतुर।
वंचिअ वि [वञ्चित] प्रतारित। रहित।
वंछा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, चाह।
वंज सक [वि + अञ्ज्] व्यक्त करना।
वंज देखो वंच = उद् + नमय्।
वंज देखो वंद = वन्द्।
वंजग देखो वंजय।
वंजण न [व्यञ्जन] वर्ण, अक्षर। क से ह तक वर्ण। शब्द। तरकारी, कढ़ी आदि रस-व्यञ्जक वस्तु। वीर्य। शरीर का मसा आदि चिह्न। उनके फल का उपदेशक शास्त्र। कक्षा आदि के बाल। प्रकाशन। श्रोत्रादि इन्द्रिय। शब्द आदि द्रव्य। द्रव्य और इंद्रिय

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

का सम्बन्ध । °वग्गह, °ग्गह पुं [°विग्रह] चक्षु और मन को छोड़ कर अन्य इन्द्रियों से होनेवाला ज्ञान-विशेष ।

वंजय वि [व्यञ्जक] व्यक्त करनेवाला ।

वंजर पुं [मार्जार] बिल्ला ।

वंजर न [दे] नीवी, कटी-वस्त्र ।

वंजुल पुं [वञ्जुल] अशोक वृक्ष । वेतस वृक्ष । पक्षि-विशेष ।

वंजुलि वि [वञ्जुलिन्] वेतस वृक्षवाला । स्त्री. °णी ।

वंझ वि [वन्ध्य] शून्य, वर्जित ।

वंझा स्त्री [वन्ध्या] अपुत्रवती स्त्री ।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तों का बन्धन ।

वंटग पुं [वण्टक] बाँट, विभाग ।

वंठ पुं [दे] अविवाहित । खण्ड, टुकड़ा । गण्ड । भृत्य । वि. निःस्नेह । धूर्त ।

वंठ वि [वण्ठ] खर्व, वामन, बौना ।

वंठण (अप) न [वण्टन] बाँटना, विभाजन ।

वंडइअ वि [दे] पीडित ।

°वंडु देखो पंडु ।

वंडुअ न [दे] राज्य ।

वंडुर देखो पंडुर ।

वंढ पुं [दे] बन्ध ।

वंत वि [वान्त] पतित, गिरा हुआ ।

वंत पुं [वान्त] जिसका वमन किया गया हो । पुंन. वमन ।

वंतर } पुं [व्यन्तर] एक देव-जाति ।
वंतरिणी } स्त्री [व्यन्तरी] व्यन्तर-जातीय देवी ।

वंता वम का संकृ. ।

°वंति देखो पन्ति ।

°वंथ देखो पन्थ ।

वंद सक [वन्द्] प्रणाम करना । स्तवन करना ।

वंद न [वृन्द] समूह ।

वंदअ } वि [वन्दक] वन्दन करनेवाला ।
वंदग }

वंदण न [वन्दन] प्रणाम । स्तवन । °कलस पुं [°कलश] । °घड पुं [°घट] मांगलिकघट । °माला, °मालिआ स्त्री. घर के द्वार पर मंगल के लिए जाती पत्र-माला । °वडिआ, °वत्तिआ स्त्री [°प्रत्यय] वन्दन-हेतु ।

वंदणिया स्त्री [दे] मोरी, नाला ।

वंदर देखो वंद = वृन्द ।

वंदाप (अशो) देखो वंदाव ।

वंदारय पुं [वृन्दारक] देव । वि. मनोहर । मुख्य ।

वंदारु वि [वन्दारु] वन्दन करनेवाला ।

वंदाव सक [वन्दय्] वन्दन करवाना ।

वंदावणग न [वन्दन] वन्दन ।

वंदिम वंद = वन्द् का कृ. ।

वंदुरा स्त्री [मन्दुरा] वाजिशाला, घुड़साल ।

वंद्र न [वन्द्र] समूह, यूथ ।

वंध पुं [वन्ध्य] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव ।

वंफ सक [काङ्क्ष्] चाहना ।

वंफ अक [वल्] लौटना ।

वंफि वि [वलिन्] लौटनेवाला । नीचे गिरनेवाला ।

वंफिअ वि [दे] भुक्त ।

वंस पुं [दे] कलंक, दाग ।

वंस पुं [वंश] बाँस । वाद्य-विशेष । कुल । सन्तान । पृष्ठावयव । वर्ग । इक्षु । सालवृक्ष । °इरि पुं. [°गिरि] पर्वत-विशेष । °करिल्ल, °गरिल्ल पुंन [°करील] वंशांकुर । °जाली, °याली स्त्री. बाँसों की गहन घटा । °रोअणा स्त्री [°रोचना] वंशलोचन ।

वंसकवेल्लुय पुंन [दे. वंशकवेल्लुक] छत के नीचे दोनों तरफ तिरछा रखा जाता बाँस ।

वंसग देखो वंसय ।

वंसप्फाल वि [दे] व्यक्त । ऋजु, सरल ।

वंसय वि [व्यंसक] धूर्त । पुं. दुष्ट हेतु-विशेष ।

वंसा स्त्री [वंशा] द्वितीय नरक-पृथिवी ।

वंसि° देखो वंसी = वंश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंसिअ वि [वांशिक] वंश-वाद्य बजानेवाला।
वंसिअ वि [व्यंसित] छलित।
वंसी स्त्री [वांशी] सुरा-विशेष। बाँस की जाली। °कलंका स्त्री [°कलङ्का] बाँस की जाली की बनी हुई बाड़। °पत्तिया स्त्री [°पत्रिका] वंशजाली के पत्र के आकार की योनि।
वंसी स्त्री [वंशी] मुरली। °णहिया स्त्री [°नखिका] वनस्पति-विशेष। °मुह पुं [°मुख] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष।
वंसी स्त्री [वंश] बाँस। °मूल न. बाँस की जड़।
वंसी स्त्री [दे] मस्तक पर स्थित माला।
वक्क न [वाक्य] पद-समुदाय।
वक्क न [वल्क] त्वचा, छाल। °बंध पुं [°बन्ध] वल्क-बन्धन।
वक्क देखो वंक = वंक।
वक्क न [वक्त्र] मुख।
वक्क न [दे] पिसान, आटा।
वक्कंत पुंन [वक्रान्त] प्रथम नरक-भूमि का दसवाँ नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष।
वक्कंत वि [अवक्रान्त] उत्पन्न।
वक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] उत्पत्ति।
वक्कड न [दे] दुर्दिन। निरन्तर वृष्टि।
वक्कडबंध न [दे] कर्णाभरण।
वक्कम अक [अव + क्रम्] उत्पन्न होना।
वक्कर (अप) देखो वक्क = वंक।
वक्कल न [वल्कल] वृक्ष की छाल। °चीरि पुं [°चीरिन्] एक महर्षि, राजा प्रसन्नचन्द्र के छोटे भाई।
वक्कलि } वि [वल्कलिन्] वृक्ष की छाल
वक्कलिण } पहननेवाला (तापस)।
वक्कल्लय वि [दे] पुरस्कृत।
वक्कस न [दे] पुराना धान का चावल। पुरातन सक्तु-पिण्ड। बहुत दिनों का बासी गोरस। गेहूँ का माँड।

वक्किद (शौ) देखो वंकिअ।
वक्ख देखो वच्छ = वृक्ष।
वक्ख देखो वच्छ = वक्षस्।
°वक्ख देखो पक्ख।
वक्खमाण वय = वच् का वकृ.।
वक्खल वि [दे] आच्छादित।
वक्खा सक [व्या + ख्या] विवरण करना। कहना।
वक्खा } स्त्री [व्याख्या] विवरण, विशद
वक्खाण } रूप से अर्थ-प्ररूपण। न [व्याख्यान]।
वक्खाण सक [व्याख्यानय्] विवरण करना। कहना।
वक्खाय वि [व्याख्यात] वर्णित। पुं. मोक्ष।
वक्खार पुं [दे] बखार। गोदाम।
वक्खार पुं [वक्षार, वक्षस्कार] गज-दन्त के आकार का पर्वत। भू-भाग।
वक्खारय न [दे] रति-गृह। अन्तःपुर।
वक्खाव सक [व्या + ख्यापय्] व्याख्यान कराना।
वक्खित्त वि [व्याक्षिप्त] व्यग्र। किसी कार्य में व्यापृत।
वक्खेव पुं [व्याक्षेप] व्यग्रता। कार्यबाहुल्य।
वक्खेव पुं [अवक्षेप] प्रतिषेध।
वक्खो° देखो वच्छ = वक्षस्। °रुह पुं. स्तन।
वक्नु (शौ) देखो वंक = वङ्क।
वखाण (अप) देखो वक्खाण बखाण।
वगडा स्त्री [दे] बाड़, परिक्षेप।
वग्ग अक [वल्ग्] जाना, गति करना। कूदना। बहु-भाषण करना। अभिमान-सूचक शब्द करना।
वग्ग पुं [वर्ग] सजातीय समूह। दो समान संख्या का परस्पर गुणन। अध्ययन, सर्ग। °मूल न. गणित-विशेष, जैसे १६ का वर्गमूल ४। °वग्ग पुं [°वर्ग] गणित-विशेष, वर्ग से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्ग का गुणन ।
वग्ग सक [वर्गय्] समान अंक से गुणना ।
वग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल ।
वग्ग देखो वक्क = वल्क ।
वग्ग देखो वक्क = वाक्य ।
वग्ग वि [वाल्क] वृक्ष-त्वचा ।
वग्गंसिअ न [दे] युद्ध ।
वग्गचूलिआ स्त्री [वर्गचूलिका] जैन ग्रन्थ ।
वग्गण न [वल्गन] कूदना ।
वग्गण न [वल्गन] बकवाद ।
वग्गणा स्त्री [वर्गणा] सजातीय समूह ।
वग्गय न [दे] वार्ता ।
वग्गा स्त्री [वल्गा] लगाम ।
वग्गावग्गि अ. वर्ग रूप से ।
वग्गि वि [वाग्मिन्] प्रशस्त वाक्य बोलनेवाला । पुं. बृहस्पति ।
वग्गिअ न [वल्गित] बकवाद । बड़ाई की आवाज, गति, चाल ।
वग्गिर वि [वल्गितृ] खूंखार आवाज करनेवाला । गति-विशेषवाला ।
वग्गु देखो वाया = वाच् ।
वग्गु देखो वग्ग = वर्ग ।
वग्गु वि[वल्गु]सुन्दर । पुं. विजय-क्षेत्र-विशेष । पुंन. वैश्रमण लोकपाल का विमान ।
वग्गुरा न [वागुरा] मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल । समूह ।
वग्गुरिय वि [वागुरिक] पारधि, पुं. नर्तक-विशेष ।
वग्गुलि पुंस्त्री [वल्गुलि] पक्षि-विशेष । रोग-विशेष ।
वग्गेज्ज वि [दे] प्रचुर ।
वग्गोअ पुं [दे] नकुल ।
वग्गोरमय वि [दे] रूक्ष ।
वग्गोल सक [रोमन्थय्] पगुराना ।
वग्घ वि [वैयाघ्र] व्याघ्र-चर्म का बना हुआ ।
वग्घ पुं [व्याघ्र] शेर । रक्त एरण्ड का पेड़ । करञ्ज वृक्ष । °मुह पुं [°मुख] एक अन्तर्द्वीप । उसकी मनुष्य-जाति ।
वग्घाअ पुं [दे] मदद । वि. विकसित ।
वग्घाडी स्त्री [दे] उपहास की आवाज ।
वग्घारिअ वि [व्याघारित] बघारा हुआ । व्याप्त । पिघला हुआ ।
वग्घारिअ वि [दे] प्रलम्बित ।
वग्घावच्च न [व्याघ्रापत्य] एक गोत्र, वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा ।
वग्घी स्त्री [व्याघ्री] बाघ की मादा । एक विद्या ।
वघाय देखो वाघाय ।
वचा स्त्री. पृथिवी । ओषधि-विशेष, बच । मैना । देखो वया = वचा ।
वच्च अक [व्रज्] जाना, गमन करना ।
वच्च सक [काङ्क्ष्] चाहना ।
वच्च पुंन [वर्चस्] पुरीष, विष्ठा । कूड़ा-करकट । चौथा नरक का चौथा नरकेन्द्रक । तेज, प्रभाव । °घर, °हर न [°गृह] पाखाना ।
वच्च देखो वय = वचस् ।
वच्चंसि वि [वचस्विन्] प्रशस्त वचनवाला ।
वच्चंसि वि [वर्चस्विन्] तेजस्वी ।
वच्चय पुं [व्यत्यय] विपर्यास । देखो वत्तअ ।
वच्चरा (अप) देखो वचा ।
वच्चा वय = वच् का संकृ. ।
वच्चामेलिय देखो विच्चामेलिय ।
वच्चास पुं [व्यत्यास] विपर्यास, विपर्यय ।
वच्चासिय वि [व्यत्यासित] उलटा किया हुआ ।
वच्चीसग पुं [वच्चीसक] वाद्य-विशेष ।
वच्चो° देखो वच्च = वर्चस् ।
वच्छ पुंन [वक्षस्] छाती । °त्थल न [°स्थल] उरःस्थल । °सुत्त न [°सूत्र] वक्षःस्थल में पहनने की सँकली ।
वच्छ पुं [वृक्ष] पेड़, शाखी, द्रुम ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वच्छ पुं [वत्स] बछड़ा। शिशु। वर्ष। छाती। ज्योतिष का एक चक्र। देश-विशेष। विजय-क्षेत्र-विशेष। न. गोत्र विशेष। वि. उसमें उत्पन्न। °दर पुंस्त्री [°तर] क्षुद्र वत्स। दमनीय बछड़ा आदि। स्त्री °री। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] अधोलोक या ऊर्ध्व-लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। °यर देखो °दर। [°राय] पुं [°राज] एक राजा। °वाल पुंस्त्री [°पाल] गोप। स्त्री. °ली।

वच्छ वि [वात्स्य] वात्स्य गोत्र का।

वच्छगावई स्त्री [वत्सकावती] एक विजय-क्षेत्र।

वच्छर पुंन [वत्सर] वर्ष।

वच्छल वि [वत्सल] स्नेही।

वच्छल्ल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुराग।

वच्छा स्त्री [वत्सा] विजय-क्षेत्र-विशेष। एक नगरी। लड़की।

वच्छाण पुं [उक्षन्] बैल।

वच्छावई स्त्री [वत्सावती] विजय-क्षेत्र-विशेष।

वच्छि° देखो वय = वच्।

वच्छिउड पुं [दे] गर्भाश्रय।

वच्छिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन।

वच्छिमय पुं [दे] गर्भशय्या।

वच्छीउत्त पुं [दे] नापित, हजाम।

वच्छीव पुं [दे] गोप।

वच्छुद्धलिअ वि [दे] प्रत्युद्धृत।

वच्छोम न [वत्सगुल्म] कुन्तल देश की प्राचीन राजधानी।

वच्छोमी स्त्री [वात्सगुल्मी] काव्य की एक रीति।

वज्ज अक [त्रस्] डरना।

वज्ज देखो वच्च = व्रज्।

वज्ज सक [वर्जय्] त्याग करना।

वज्ज अक [वद्] वाद्य आदि की आवाज होना।

वज्ज न [वाद्य] बाजा, वादित्र।

वज्ज वि [वर्य] श्रेष्ठ। प्रधान।

वज्ज वि [वर्ज] रहित। वर्जित। न. छोड़कर, सिवाय। पुं. हिंसा। प्राणिवध।

वज्ज देखो अवज्ज।

वज्ज देखो वइर = वज्र। हिंसा, प्राणिवध। कन्द-विशेष। न. बँधाता हुआ कर्म। पाप। °कंठ पुं [°कण्ठ] वानर-द्वीप का राजा। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान। °कंद पुं [°कन्द] एक प्रकार का कन्द। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान। °क्ख पुं [°क्ष]। °चूड पुं.। °जंघ पुं [°जङ्घ] सभी विद्याधर-वंशीय नरेश। °णाभ पुं [°नाभ] भ० अभिनन्दन-स्वामी के प्रथम गणधर। देखो °नाभ। °दत्त पुं. एक विद्याधर राजा। एक जैन मुनि। °द्धय पुं [°ध्वज] एक विद्याधर राजा। °धर देखो °हर। °नागरी स्त्री. एक जैन मुनि-शाखा। °नाभ पुं. एक जैन मुनि। देखो °णाभ। °पाणि पुं. इन्द्र। एक विद्याधर-नरपति। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान। °बाहु पुं. एक विद्याधर राजा। °भूमि स्त्री. लाट देश का एक प्रदेश। °म (अप) देखो °मय। °मज्झ पुं [°मध्य] एक लंकेश। रावणाधीन एक सामन्त राजा। °मज्झा स्त्री [°मध्या] एक प्रतिमा, व्रत-विशेष। °मय वि. वज्र का बना। स्त्री. °मई। °रिसहनाराय न [°ऋषभनाराच] संहनन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम बन्ध। °रूव न [°रूप]। °लेस न [°लेश्य] सभी देव-विमान। °वं (अप) देखो °म। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान। °वेग पुं. एक विद्याधर। °सिंखला स्त्री [°शृङ्खला] एक विद्या-देवी। °सिंग न [°शृङ्ग]। °सिट्ठ न [°सृष्ट] सभी देवविमान। °सुन्दर पुं [°सुन्दर]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°सुजण्हु पुं [°सुजह्नु] विद्याधर-वंश के राजा। °सेण पुं[°सेन]जैन मुनि, भ० ऋषभ-देव के पूर्व जन्म में गुरु। चौदहवीं शताब्दी के जैन आचार्य। °हर पुं [°धर] इन्द्र। वि. वज्र-धारक। °ाउह पुं [°ायुध] इन्द्र। एक विद्याधर राजा। °ाभ पुं. विद्याधर-वंशीय राजा। °ावत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान। °ास पुं [°ाश] एक विद्याधर-राजा।

वज्जंक पुं [वज्राङ्क] एक विद्याधर राजा।

वज्जंकुसी स्त्री [वज्राङ्कुशी] एक विद्या-देवी।

वज्जंधर पुं [वज्रन्धर] विद्याधर राजा।

वज्जघट्टिता स्त्री [दे] मन्द-भाग्य स्त्री।

वज्जणअ (अप) वि [वदितृ] बजनेवाला।

वज्जय वि [वर्जक] त्यागनेवाला।

वज्जर सक [कथय्] कहना।

वज्जर देखो वंजर = मार्जार।

वज्जर पुं [वर्जर] एक देश। वि. उसमें उत्पन्न।

वज्जरा स्त्री [दे] नदी।

वज्जा स्त्री [दे] अधिकार, प्रस्ताव।

वज्जाव (अप) सक [वाचय्] पढ़ाना।

वज्जाव सक [वादय्] बजाना।

वज्जि पुं [वज्रिन्] इन्द्र।

वज्जिअ वि [दे] इष्ट।

वज्जिअ वि [वादित] बजाया हुआ।

वज्जिअ वि [वर्जित] रहित।

वज्जियाव पुं [दे] शेलडी, ईख।

वज्जियावग पुं [दे] इक्षु।

वज्जिर वि [वदितृ] बजनेवाला।

वज्जुत्तरवडिंसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान।

वज्जोयरी स्त्री [वज्रोदरी] विद्या-विशेष।

वज्झ वि [वध्य] वध के योग्य। °नेवत्थिय वि [°नेपथ्यिक] मृत्यु-दण्ड-प्राप्त को पहनाया जाता वेष। °माला स्त्री. वध्य को पहनाई जाती माला, कनेर के फूलों की माला।

वज्झ वि [वाह्य] वहन करने-योग्य। न. अश्व आदि यान। °खेड्डु न [°खेल] कला-विशेष, यान की सवारी का इल्म।

वज्झा स्त्री [हत्या] वध, घात।

वज्झियायण न [वध्यायन] गोत्र-विशेष।

वञ्ञ (अप) देखो वच्च = व्रज्।

वट्ट अक [वृत्] वर्तना, होना। आचरण करना।

वट्ट सक [वर्त्तय्] बरतना। पिंड रूप से बांधना। परोसना। ढकना।

वट्ट वि [वृत्त] गोलाकार। अतीत। मृत। संजात। अधीत। दृढ़। पुं. कूर्म। न. वर्तन, वृत्ति, प्रवृत्ति। °क्खुर,°खुर पुं. श्रेष्ठ अश्व। °खेड, खेड्डु स्त्रीन [खेल] कला-विशेष। देखो वत्थखेड्डु। देखो वत्त, वित्त = वृत्त। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] पर्वत-विशेष।

वट्ट पुं [वर्त्मन्] बाट, रास्ता। °वाडण न [°पातन] मुसाफिरों को रास्ते में लूटना।

वट्ट पुंन [दे] प्याला। पुं. हानि। शिला-पुत्रक, लोढ़ा। खाद्य-विशेष, गाढ़ी कढ़ी।

वट्ट पुं [वर्त] देश-विशेष।

°वट्ट पुं [पट्ट] प्रवाह। देखो पट्ट।

वट्टक, वट्टग } देखो वट्टय = वर्तक।

वट्टण देखो वत्तण।

वट्टमग न [वर्त्मक] मार्ग, रास्ता।

वट्टमाण न [दे] शरीर। गन्ध-द्रव्य का एक तरह का अधिवास।

वट्टय देखो वट्ट = दे।

वट्टय पुं [वर्तक] बटेर पक्षी। बालकों के लिए चपड़े का बना गोल खिलौना।

°वट्टय देखो पट्ट।

वट्टा स्त्री [दे. वर्त्मन्] देखो वट्ट = वर्त्मन्।

वट्टा स्त्री [वार्त्ता] बात, कथा।

वट्टाव सक [वर्तय्] बरताना, काम में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लगाना ।
वट्टावय वि [वर्तक] बरतानेवाला, प्रवर्तक ।
वट्टावय वि [वर्तक] प्रतिजागरूक, शूश्रूषा-कर्ता ।
वट्टि स्त्री [वर्ति] बत्ती । सलाई । शरीर पर किया जाता एक लेप । लेख, लिखना । कलम, पीछी । देखो वत्ति, वित्ति ।
वट्टिअ वि [वर्त्तित] परिवर्तित । वलित । वर्तुल । प्रवर्तित ।
वट्टिआ स्त्री [वर्तिका] देखो वट्टि ।
वट्टिम वि [दे] अतिरिक्त ।
वट्टिय वि [दे] चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ ।
वट्टिव न [दे] पर-कार्य ।
वट्टी स्त्री. देखो वट्टि ।
°वट्टी स्त्री [पट्टी] पट्टा ।
वट्टु न [दे] पात्र-विशेष । °कर पुं. यक्ष-विशेष । °करी स्त्री. विद्या-विशेष ।
वट्टुल वि [वर्तुल] गोल । पुंन. पलाण्डु—प्याज के समान एक कन्दमूल ।
°वट्ठ देखो पट्ठ = पृष्ठ ।
°वट्ठि देखो सट्ठि ।
वड पुं [दे] दरवाजे का एक भाग । क्षेत्र । मत्स्य की एक जाति । विभाग । देखो वडु ।
वड पुं [वट] बरगद का पेड़ । न. वस्त्र-विशेष । °नयर न [°नगर] नगर-विशेष । °वद्द न[°पद्र] गुजरात का 'बड़ौदा' नगर । एक गोकुल । °सावित्ती स्त्री [°सावित्री] एक देवी ।
वड देखो पड = पत् ।
°वड देखो पड = पट ।
वडग न [वटक] खाद्य-विशेष, बड़ा ।
वडग देखो वड = वट ।
°वडण देखो पडण ।
वडप्प न [दे] लता-गहन । निरन्तर वृष्टि ।
वडभ वि. वामन, ह्रस्व । जिसका पृष्ठ-भाग बाहर निकला हो । नाभि के ऊपर का भाग जिसका टेढ़ा हो । पीछे या आगे का अंग जिसका बाहर निकला हो । जिसका पेट बड़ा होकर आगे निकला हो । स्त्री. °भी ।
वडय देखो वडग = वटक ।
°वडल देखो पडल ।
वडवग्गि पुं [वडवाग्नि] वडवानल ।
वडवड अक [वि + लप्] विलाप करना ।
वडवा स्त्री. घोड़ी । °णल, नल पुं. आग । °मुह न [°मुख] वही अर्थ । एक महा-पताल । °हुआस पुं [°हुताश] वडवानल ।
वडह देखो वडभ ।
वडह पुं [दे] पक्षि-विशेष ।
°वडह देखो पडह ।
वडही देखो वलही ।
°वडाआ देखो पडाया ।
°वडालि स्त्री [दे] श्रेणि ।
°वडाहा देखो पडाया ।
वडिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ ।
°वडिअ पडिअ पड का कमृकृ. ।
वडिंस पुं [वतंस] मेरु पर्वत । भूषण । एक दिग्हस्ति-कूट । प्रधान । श्रेष्ठ । कर्णपूर । देखो वडेंस, अवयंस ।
वडिणाय पुं [दे] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला ।
वडिया स्त्री [वृत्तिता] वर्तन ।
°वडिया देखो पडिया = प्रतिज्ञा ।
वडिवस्सअ वि [वरिवस्यक] पूजक ।
वडिसर न [दे] चूल्हे का मूल ।
वडिसाअ वि [दे] टपका हुआ ।
वडी स्त्री [दे] बड़ी, एक प्रकार का खाद्य ।
वडुमग / वडूमग } देखो वट्टमग ।
वडेंस पुं [वतंस]शेखर, मुकुट । देखो वडिंस ।
वडेंसा स्त्री [वतंसा] किन्नर नामक किन्नरेन्द्र की एक अग्रमहिषी ।
वडेंसिआ स्त्री [वतंसिका] अवतंस की तरह करना, मुकुटस्थानापन्न करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वड्डु वि [दे] महान् । °अत्थरग पुं [°आस्तरक] ऊँट की पीठ पर रखा जाता आसन । °त्तण न [°त्व] । °प्पण (अप) न [°त्व] महत्ता । °यर वि [°तर] विशेष बड़ा ।

वड्डुवास पुं [दे] मेघ, अभ्र ।

वड्डुहुलि पुं [दे] माली ।

वड्डार (अप) देखो वड्डु-यर ।

वड्डिम वि [दे] टपका हुआ ।

वड्डुअर देखो वड्ड-यर ।

वड्ढ अक [वृध्] बढ़ना ।

वड्ढ सक [वर्धय्] बढ़ाना, विस्तारना । बधाई देना । देखो वद्ध = वर्धय् ।

वड्ढइ पुं [वर्धकि] सुतार ।

वड्ढइअ पुं [दे] मोची ।

वड्ढणमिर वि [दे] पुष्ट ।

वड्ढणसाल वि [दे] जिसकी पूँछ कटी हो ।

वड्ढमाण } न [वर्धमान, °क] गुजरात का
वड्ढमाणय } 'वढवाण' नगर । अवधिज्ञान का एक भेद, उत्तरोत्तर बढ़ता जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्यों का ज्ञान । पुं. भ. महावीर । देखो वद्धमाण ।

वड्ढय देखो वट्ट = दे ।

वड्ढव सक [वर्धय्, वर्धापय्] वृद्धि करना । बधाई देना ।

वड्ढवअ वि [वर्धक] बढ़ानेवाला । बधाई देनेवाला ।

वड्ढवण न [दे] वस्त्र का आहरण ।

वड्ढवण न [दे. वर्धापन] बधाई । अभ्युदय । निवेदन ।

वड्ढार (अप) सक [वर्धय्] बढ़ाना ।

वड्ढाव देखो वड्ढव ।

वड्ढावअ देखो वड्ढवअ ।

वड्ढाविअ वि [दे] समापित ।

वड्ढि वि [वर्धिन्] बढ़नेवाला ।

वड्ढि स्त्री [वृद्धि] बढ़ती ।

वड्ढिअ वि [वर्धित] बढ़ाया हुआ । खण्डित किया हुआ, काटा हुआ ।

वड्ढिआ स्त्री [दे] कूपतुला, ढेंकुवा ।

वड्ढिम पुंस्त्री [वृद्धिमन्] वृद्धि ।

वढ देखो वड = वट ।

वढ वि [दे] वाक्-शक्ति से रहित ।

वढर } पुं [बठर] मूर्ख छात्र । ब्राह्मण
वढल } पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न सन्तान, अम्बष्ठ । वि. शठ, धूर्त । मन्द, अलस ।

वण सक [वन्] माँगना ।

वण पुं [दे] अधिकार । चांडाल ।

वण पुंन [व्रण] घाव । प्रहार, क्षत । °वट्ट पुं [°पट्ट] घाव पर बाँधी जाती पट्टी ।

वण न [वन] जंगल । पानी । निवास । आलय । वनस्पति । उद्यान । पुं. वानव्यंतर देव । वृक्ष-विशेष । °कम्म पुंन [°कर्मन्] जंगल को काटने या बेचने का काम । °कम्मंत न [°कर्मान्त] वनस्पति का कारखाना । °गय पुं [°गज] जंगली हाथी । °ग्गि पुं [°ग्नि] दावानल । °चर वि. बन में रहनेवाला । जंगली । स्त्री. °री देखो °यर । °छिंद वि [°च्छिद्] जंगल काटनेवाला । °त्थली स्त्री [°स्थली] अरण्य-भूमि । °दव पुं. दावानल । °पव्वय पुंन [°पर्वत] वनस्पति से व्याप्त पर्वत । °बिराल पुं [बिडाल] जंगली बिल्ला । °माल न. एक देवविमान । °माला स्त्री. पैर तक लटकनेवाली माला । एक राज-पत्नी । °य वि [°ज] वन में उत्पन्न । जंगली । °यर वि [°चर] बनैला । पुंस्त्री. व्यन्तर देव । स्त्री. °री । °राइ स्त्री [°राजि] वृक्ष-समूह । °राज, °राय पुं. आठवीं शताब्दी का गुजरात का एक राजा । सिंह । °लइया, °लया स्त्री [°लता] एक स्त्री । एक शाखावाला वृक्ष । °वाल वि [°पाल] उद्यान-पालक,

माली। °वास पुं. अरण्य में रहना। °वासी स्त्री. नगरी-विशेष। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] नानाविध वृक्षों का समूह। °विरोहि पुं [°विरोहिन्] आषाढ़ मास। °संड पुंन [षण्ड] अनेकविध वृक्षों की घटा। °हत्थि पुं [हस्तिन्] जंगल का हाथी। °लि, °लि स्त्री. वन-पंक्ति।

वणइ स्त्री [दे] वन-राजि।

वणण न [वनन] बछड़े को उसकी माता से भिन्न दूसरी गाय से लगाना।

वणण न [दे. व्यान] बुनना। °साला स्त्री [शाला] बुनने का कारखाना।

वणद्धि स्त्री [दे] गो-वृन्द।

वणनत्तडिअ वि [दे] पुरस्कृत।

वणपक्कसावअ पुं [दे] शरभ, श्वापद-विशेष।

वणप्फइ पुं [वनस्पति] फूल के बिना जिसमें फल लगता हो वह वृक्ष। लता, गुल्म, वृक्ष आदि कोई भी गाछ। न. फल। °काइअ वि [°कायिक] वनस्पति का जीव।

वणय पुं [वनक] दूसरी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान।

वणरसि (अप) देखो वाणारसी।

वणव पुं [दे] दावानल।

वणसवाई स्त्री [दे] कोयल।

वणस्सइ देखो वणप्फइ।

वणाथ वि [दे] व्याघ्र से व्याप्त।

वणार पुं [दे] दमनीय बछड़ा।

वणि, वणिअ पुं [वणिज्] बनिया। व्यापारी।

वणिअ वि [व्रणित] व्रण-युक्त, घाववाला।

वणिअ पुं [वनीपक] भिक्षुक।

वणिअ न [वणिज] ज्योतिष का एक करण।

वणिआ स्त्री [वनिका] वाटिका, बगीचा।

वणिआ स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला।

वणिज देखो वणिअ = वणिज्।

वणिज, वणिज्ज न [वाणिज्य] व्यापार। °रय वि [°कारक] व्यापारी।

वणिम, वणीमग देखो वणीमय। दरिद्र।

वणी स्त्री [वनी] भीख से प्राप्त धन। फली-विशेष, जिससे कपास निकलता है।

वणीमग, वणीमय पुं [वनीपक] याचक। भिक्षुक, भिखारी।

वणे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—निश्चय। विकल्प। अनुकम्पनीय। संभावना।

वणेचर देखो वण-यर।

वण्ण सक [वर्णय्] वर्णन करना। प्रशंसा करना। रंगना।

वण्ण पुं [वर्ण] प्रशंसा। यश। शुक्ल आदि रंग। अकार आदि अक्षर। ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति। गुण। अंगराग। सुवर्ण। विलेपन की वस्तु। व्रत-विशेष। वर्णन। विलेपन-क्रिया। गीत का क्रम। चित्र। शुक्ल आदि वर्ण का कारण-भूत कर्म। संयम। मोक्ष। न. कुंकुम। °णाम, °नाम पुंन [°नामन्] कर्म-विशेष। °मंत वि [°वत्] प्रशस्त वर्णवाला। °वाइ वि [°वादिन्] श्लाघा-कर्ता, प्रशंसक। °वाय पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा। °विास पुं. वर्णन-पद्धति। °विास पुं [°व्यास] वर्णन-विस्तार।

वण्ण पुं [वर्ण] पंचम आदि स्वर। °सम न. गेय काव्य का एक भेद।

वण्ण वि [दे] स्वच्छ। रक्त।

°वण्ण देखो पण्ण।

वण्णग देखो वण्णय।

वण्णण न [वर्णन] श्लाघा। विवेचन।

वण्णय पुंन [दे. वर्णक] चन्दन, श्रीखण्ड। पिष्टातक-चूर्ण, अंगराग।

वण्णय पुं [वर्णक] वर्णन-ग्रन्थ। वर्णन-प्रकरण।

वण्णिआ देखो वन्निआ।

वण्हि पुं [वृष्णि] राजा अन्धक-वृष्णि। एक अन्तकृद् महर्षि। अन्धकवृष्णि-वंश में उत्पन्न, यादव। °दसा स्त्री. ब. [°दशा] एक जैन आगम-ग्रन्थ। °पुंगव पुं. यादव-श्रेष्ठ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्हि पुं [वह्नि] अग्नि। लोकान्तिक देवों की एक जाति। चित्रक वृक्ष। भिलावाँ का पेड़। नीबू का गाछ।
वत देखो वय = व्रत।
वति देखो वइ = व्रतिन्।
वति देखो वइ = वृति।
वतु पुं [दे] निवह, समूह।
वत्त देखो वट्ट = वृत्।
वत्त देखो वट्ट = वर्तय्।
वत्त न [वार्त्त] आरोग्य।
वत्त वि [व्याप्त] फैला हुआ, भरपूर।
वत्त देखो वट्ट = वृत्त।
वत्त वि [व्यक्त] प्रकट।
वत्त न [वक्त्र] मुख।
°वत्त देखो पत्त = पत्र।
°वत्त देखो पत्त = पात्र।
वत्त° देखो वत्ता (भवि)। °यार वि [°कार] वार्ता कहनेवाला।
वत्तअ पुं [व्यत्यय] विपर्यय। उल्लंघन।
वत्तडिआ } (अप) देखो वत्ता।
वत्तडी }
वत्तण न [वर्त्तन] जीविका, निर्वाह। आवृत्ति। स्थिति। स्थापन। वर्तन, होना। वि. वृत्ति-वाला। रहनेवाला।
वत्तणी स्त्री [वर्त्तनी] मार्ग।
वत्तद्ध वि [दे] सुन्दर। बहु-शिक्षित।
वत्तमाण पुं. [वर्तमान] चलता काल। वि. विद्यमान। पुं. विद्यमानता।
°वत्तरि देखो सत्तरि।
वत्ता स्त्री [दे] सूत्र-वेष्टन-यन्त्र। देखो चत्ता = (दे)।
वत्ता स्त्री [वार्त्ता] कथा। वृत्तान्त। वृत्ति। दुर्गा। खेती। जनश्रुति। गन्ध का अनुभव। काल-कर्तृक भूतनाश। °लाव पुं [°लाप] बातचीत।
वत्तार वि [दे] गर्वित।
वत्ति स्त्री [दे] सीमा।
वत्ति देखो वट्टि।
वत्ति स्त्री [वृत्ति] प्रवृत्ति। देखो वित्ति।
वत्ति स्त्री [व्यक्ति] एकाकी वस्तु। °पइट्ठा स्त्री [°प्रतिष्ठा] विद्यमान तीर्थंकर के बिम्ब की प्रतिष्ठा।
वत्तिअ वि [वार्तिक] कथाकार। पुंन. टीका की टीका। ग्रन्थ की टीका।
वत्तिअ वि [वर्त्तित] गोल किया हुआ। आच्छादित।
°वत्तिअ देखो पच्चय = प्रत्यय।
वत्तिआ देखो वट्टिआ।
वत्तिणी स्त्री [वर्त्तिनी] मार्ग।
°वत्ती देखो पत्ती = पत्नी।
वत्तु वय = वच् का हेकृ.।
वत्तुकाम वि [वक्तुकाम] बोलने की चाह-वाला।
वत्तुल देखो वट्टुल।
वत्थ पुंन [वस्त्र] कपड़ा। °खेड्ड न [°खेल] कला-विशेष। °धोव वि [°धाव] वस्त्र धोनेवाला। °पूस पुं [°पुष्य] एक जैन मुनि। °पूसमित्त पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि। °विज्जा स्त्री [°विद्या] वस्त्र स्पर्श कराने से ही बीमार अच्छा हो जाय वह विद्या। °सोहग वि [°शोधक] वस्त्र धोनेवाला।
वत्थ वि [व्यस्त] पृथग्, भिन्न, जुदा।
वत्थउड पुं.[दे. वस्त्रपुट] तंबू। कपड़-कोट।
वत्थंग पुं [वस्त्राङ्ग] वस्त्रदायी कल्पवृक्ष।
°वत्थर देखो पत्थर = प्रस्तर।
वत्थलिज्ज न [वस्त्रलिय] दो जैन मुनि-कुल।
वत्थव्व वि [वास्तव्य] निवासी।
वत्थाणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष।
वत्थाणीअ पुंन [दे] खाद्य-विशेष।
वत्थि पुं [वस्ति] दृति, मसक। गुदा। छाते में शलाका बैठने का स्थान। °कम्म न[°कर्मन्]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिर आदि में चर्म-वेष्टन द्वारा किया जाता तैल आदि का पूरण। मल साफ करने के लिए गुदा में बत्ती आदि का किया जाता प्रक्षेप। °पुडग पुंन [°पुटक] पेट का भीतरी प्रदेश।

वत्थिय पुं [वास्त्रिक] वस्त्र बनानेवाला शिल्पी।

वत्थी स्त्री [दे] तापसों की पर्ण-कुटी।

वत्थु न [वस्तु] पदार्थ, चीज। पुंन. पूर्व-ग्रन्थों का अध्ययन—प्रकरण, परिच्छेद। °पाल, °वाल पुं. राजा वीरधवल का जैन मन्त्री।

वत्थु न [वास्तु] गृह। गृहादि-निर्माण-शास्त्र। शाक-विशेष। °पाढग वि [°पाठक] वास्तु-शास्त्र का अभ्यासी। °विज्जा स्त्री[°विद्या] गृह-निर्माण-कला।

वत्थुल } पुं [वस्तुल] गुच्छ और हरित
वत्थूल } वनस्पति-विशेष, शाक-विशेष। पुं [वस्तूल]।

वद देखो वय = वद्।

वद देखो वय = व्रत।

वदिसा देखो वडेंसा।

वदिकलिअ वि [दे] वलित, लौटा हुआ।

वदूमग देखो वडुमग।

वद्दल न [दे. वार्दल] बादल, घटा, दुर्दिन। पुं. छठवीं नरक का दूसरा नरकेन्द्रक।

वद्दलिया स्त्री [दे. वार्दलिका]बदली, दुर्दिन।

वद्ध देखो वड्ढ = वर्धय्।

वद्ध पुंन [वर्ध्र] चर्म-रज्जु।

वद्ध देखो विद्ध = वृद्ध।

वद्धण न [वर्धन] वृद्धि। वि. बढ़ानेवाला।

वद्धणिआ } स्त्री [वर्धनिका,°नी]संमार्जनी,
वद्धणी } झाड़ू।

वद्धमाण पुं [वर्धमान] भगवान् महावीर। एक जैनाचार्य। स्कन्धारोपित पुरुष। एक शाश्वत जिन-देव। एक शाश्वती जिन-प्रतिमा। न. गृह-विशेष। राजा रामचन्द्र का एक प्रेक्षा-गृह। देखो वड्ढमाण।

वद्धमाणग } पुं [वर्धमानक] अठासी महा-
वद्धमाणय } ग्रहों में एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष। एक देव-विमान। न. शराव। पुं. पुरुष पर आरूढ़ पुरुष। स्वस्तिक-पञ्चक। एक तरह का महल। अस्थिक ग्राम। वि. अभिमानी।

वद्धय वि [दे] मुख्य।

वद्धार सक [वर्धय्] बढ़ाना।

वद्धाव सक [वर्धय्, वर्धापय्] बधाई देना।

वद्धावय वि [वर्धापक] बधाई देनेवाला।

वद्धिअ पुं [दे] नपुंसक। छोटी उम्र में ही छेद देकर जिसका अण्डकोष गलाया गया हो वह, बधिया।

वद्धिअ देखो वड्ढिअ = वृद्ध।

वद्धी स्त्री [दे] आवश्यक कर्तव्य।

वद्धीसक } पुंन [दे. वद्धीसक] एक प्रकार
वद्धीसग } का बाजा।

वध देखो वह = वध।

वधय देखो वहय।

वधू देखो वहू।

वन्नग देखो वण्णय।

वन्निआ स्त्री [वर्णिका] वानगी, नमूना। लाल रंग की मिट्टी।

वपु देखो वउ = वपुस्।

वप्प सक [त्वच?] ढकना।

वप्प पुं [वप्र] जंबूद्वीप का एक प्रान्त, जिसकी राजधानी विजया है। पुंन. दुर्ग। केदार, खेत। किनारा। ऊँची-जमीन।

वप्प वि [दे] कृश। बलवान्। भूताविष्ट।

वप्पइराय देखो व-प्पइराय।

वप्पगा देखो वप्पा।

वप्पगावई स्त्री [वप्रकावती] जंबूद्वीप का विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी अपराजिता है।

वप्पा स्त्री [वप्र] ऊँची जमीन।

वप्पा स्त्री [वप्रा] भ० नमिनाथ की माता। दशवें चक्रवर्ती राजा हरिषेण की माता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वप्पिअ पुं [दे] खेत। नपुंसक-विशेष। राग-युक्त।
वप्पिण पुंन [दे] केदार, खेत। वि. उषित।
वप्पिण पुंन [दे]केदारवाला या तटवाला देश।
वप्पी देखो वप्पा = वप्र।
वप्पीअ पुं [दे] चातक पक्षी।
वप्पीडिअ न [दे] खेत।
वप्पीह पुं [दे] स्तूप आदि का कूट।
वप्पु देखो वउ = वपुस्।
वप्पे अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—उपहास-युक्त उल्लापन। विस्मय। आश्चर्य।
वप्फाउल देखो बप्फाउल।
वफर न [दे] शस्त्र-विशेष।
वब्भ पुं [वभ्र] पशु-विशेष।
वब्भ° देखो वह = वह्।
वब्भय न [दे] कमल का मध्य भाग।
वभिचरिअ वि [व्यभिचरित] व्यभिचार दोष से दूषित।
वभिचार देखो वहिचार।
वभिचारि वि [व्यभिचारिन्] न्यायशास्त्रोक्त दोष-विशेष से दूषित, ऐकान्तिक। परस्त्री-लम्पट।
वभियार देखो वहिचार।
वम सक [वम्] उलटी करना।
वमग वि [वामक] उलटी करनेवाला।
वमाल सक [पुञ्जय्] इकट्ठा करना। विस्तारना।
वमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल।
वमाल पुं [पुञ्ज] राशि, ढंग, ढेर।
वमालण न [पुञ्जन] इकट्ठा करना। विस्तार। वि. इकट्ठा करनेवाला। विस्तारने-वाला।
वम्म पुंन [वर्मन्] कवच।
वम्म देखो वम का कृ.।
वम्मथ, वम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव।
वम्मा देखो वामा।
वम्मिअ वि [वर्मित] कवचित, संनाह-युक्त।
वम्मिअ, वम्मीअ पुं [वल्मीक] कीट-विशेषकृत मिट्टी का स्तूप। डूह या भीटा, दीमकों के रहने की बाँबी।
वम्मीइ पुं [वाल्मीकि] रामायण-कर्ता मुनि।
वम्मीसर पुं [दे] कन्दर्प।
वम्ह न [दे] वल्मीक।
वम्ह पुं [ब्रह्मन्] पलाश का पेड़। देखो बंभ।
वम्हल न [दे] केसर, किंजल्क।
वम्हाण देखो बंभण।
वय सक [वच्] बोलना, कहना। देखो वयणिज्ज।
वय अक [वद्] बोलना, कहना।
वय अक [व्रज्] जाना, गमन करना।
वय पुं [वृक] पशु-विशेष, भेड़िया।
वय पुं [दे] गृध्र पक्षी।
वय पुं [वज] संस्कार-करण। गमन।
वय पुं [व्रज] देश विशेष। गोकुल, दस हजार गौओं का समूह। मार्ग। संस्कार-करण। गमन, गति। समूह।
वय पुं [व्यय] खर्च। हानि। देखो विअ = व्यय।
वय न [वचस्] वचन। °समिअ वि [°समित] वचन का संयमी।
वय पुं [वद] कथन, उक्ति।
वय पुंन [व्रत] धार्मिक प्रतिज्ञा। °मंत वि [°वत्] व्रती।
वय पुंन [वयस्] उम्र। पक्षी। °त्थ वि [°स्थ] तरुण। °परिणाम पुं. वृद्धता।
°वय पुं [पच] पचन, पाक।
°वय देखो पय = पद।
°वय देखो पय = पयस्।
वयंग न [दे] फल-विशेष।
वयंतरिअ वि [वृत्यन्तरित] बाड़ से तिरो-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हित ।
वयंस पुं [वयस्य] समान उमरवाला मित्र ।
वयंसि देखो वच्चंसि = वचस्विन् ।
वयड पुं [दे] वाटिका ।
वयण न [दे] मन्दिर, गृह । शय्या ।
वयण पुंन [वदन] मुख । न. कथन ।
वयण पुंन [वचन] उक्ति । संख्या-बोधक व्याकरण । प्रत्यय ।
वयणिज्ज वि [वचनीय] वाच्य । निन्दनीय । उपालम्भीय । न. वचन, शब्द । निन्दा ।
वयर वि [दे] चूर्णित ।
वयर देखो वइर = वज्र ।
°वयर देखो पयर = प्रकर ।
वयराड देखो वइराड ।
वयल वि [दे] विकसता । पुं. कलकल, कोलाहल ।
वयली स्त्री [दे] एक निद्राकरी लता ।
°वयस देखो वय = वयस् ।
वयस्स देखो वयंस ।
वया स्त्री [वपा] विवर, छिद्र । मेद ।
वया स्त्री [वचा] देखो वचा ।
वया स्त्री [व्यजा] ऊष खींचने के लिए रज्जु-बद्ध घट आदि डालने का मार्ग । प्रेरण-दण्ड ।
वर सक [वृ] सगाई करना । ढकना । याचना करना । सेवा करना ।
वर सक [वरय्] प्राप्त करने की इच्छा करना । संसृष्ट करना ।
वर पुं. पति । वरदान । वि. श्रेष्ठ । अभीष्ट । न. अच्छा । °दत्त पुं. भ० नेमिनाथजी का प्रथम शिष्य । एक राजकुमार ।°दाम न [°दामन्] एक तीर्थ । °धुण पुं [°धनुष्] एक मन्त्रि-कुमार, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का बाल-मित्र । °पुरिस पुं [°पुरुष]वासुदेव । °माल पुं. एक देव-विमान । °माला स्त्री. वर को पहनायी जाती माला । °रुइ पुं [°रुचि] राजा नन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण । °वरिया स्त्री [°वरिका] अभीष्ट वस्तु माँगने या दान देने की घोषणा । °सरक न. खाद्य-विशेष । °सिट्ठ पुंन [°शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान ।
वर देखो वार । °विलया स्त्री [°वनिता] वेश्या । °वर देखो पर ।
वरइअ वि [दे] धान्य-विशेष ।
वरइत्त पुं [दे. वरयितृ] दुलहा ।
वरई देखो वरय = वराक ।
वरउप्फ वि [दे] मृत ।
वरं देखो परं = परम् ।
वरंड पुं [वरण्ड] दीर्घ काष्ठ । भीत ।
वरंड पुं [दे] तृण पुञ्ज । प्राकार । गाल पर लगाई जाती कस्तूरी आदि की छटा । समूह ।
वरंडिया स्त्री [दे] बरामदा ।
वरक्ख न [वराख्य] सिल्हक गन्ध-द्रव्य ।
वरक्ख पुं [वराक्ष] योगी । यक्ष । वि. श्रेष्ठ इन्द्रियवाला ।
वरक्खा स्त्री [वराख्या] त्रिफला ।
वरग न [वरक] महामूल्य पात्र ।
वरट्ट पुं [दे] धान्य-विशेष ।
वरडा, वरडी } स्त्री [दे.वरटा] तैलाटी कीट-गंधोली । दंश-भ्रमर ।
वरण पुं. सगाई । तट । पूल । प्राकार । स्वीकार । देखो वीर-वरण । पुं. एक आर्य-देश । देखो वरुण ।
वरणय न [वरणक] तृण-विशेष ।
वरणसि (अप) देखो वाराणसी ।
वरणा स्त्री. काशी की वरुणा नदी । अच्छ देश की प्राचीन राजधानी । देखो वरुणा ।
वरत्त वि [दे] पीत । पतित । पेटित, संहत ।
वरत्ता स्त्री [वरत्रा] रज्जु ।
वरय पुं [वरक] सगाई करने वाला ।
वरय पुं [दे] एक तरह की शक्ति ।
वरय वि [वराक]दीन । बेचारा । स्त्री.°रई ।
वरला स्त्री. हंसपक्षी की मादा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरसि देखो वरिसि ।

वरहाड अक [निर् + सृ] बाहर निकलना ।

वराग देखो वराय ।

वराड पुं [वराट] दक्षिण का 'बरार' देश । कपर्दक । न. कौड़ियों का जूआ जिसे बालक खेलते हैं ।

वराडिया स्त्री [वराटिका] कपर्दिका ।

वराय देखो वरय = वराक । स्त्री. °राइआ, °राई ।

वरावड पुं. ब. [वरावट] देश-विशेष ।

वराह पुं. शूकर । भगवान् सुविधिनाथ का प्रथम शिष्य ।

वराही स्त्री. विद्या-विशेष ।

वरि अ [वरम्] अच्छा, ठीक ।

वरिअ देखो वज्ज = वर्य ।

वरिअ वि [वृत] स्वीकृत । सेवित । जिसकी सगाई की गई हो । न. सगाई करना ।

वरिट्ठ पुं [वरिष्ठ] भरत-क्षेत्र का भावी बारहवाँ चक्रवर्ती राजा । अति-श्रेष्ठ ।

वरिल्ल न [दे] वस्त्र-विशेष ।

वरिस सक [वृष्] बरसना, वृष्टि करना ।

वरिस पुंन [वर्ष] वृष्टि, संवत्सर । जंबूद्वीप का अंश-विशेष, भारत आदि क्षेत्र । मेघ । °अ वि [°ज] वर्षा में उत्पन्न । °कण्ह न [°कृष्ण] एक गोत्र । पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न । °धर पुं. अन्तःपुर-रक्षक षण्ड-विशेष । °वर पुं. वही अनन्तरोक्त अर्थ । देखो वास = वर्ष ।

वरिसविअ वि [वर्षित] बरसाया हुआ ।

वरिसा स्त्री [वर्षा] वृष्टि, वर्षा-काल । °काल पुं । °रत्त पुं [°रात्र] वर्षा-ऋतु । °ल देखो °काल । देखो वासा ।

वरिसिणी स्त्री [वर्षिणी] विद्या-विशेष ।

वरिसोलक पुं [दे वर्षोलक] पक्वान्न-विशेष ।

°वरिहरिअ देखो परिहरिअ ।

वरु } **वरुअ** } पुंन [दे] देखो वरुअ ।

वरुंट पुं [वरुण्ट] एक शिल्पि-जाति ।

वरुड पुं. एक अन्त्यज-जाति ।

वरुण पुं. चमर आदि इन्द्रों का पश्चिम दिशा का लोकपाल । बलि-आदि इन्द्रों का उत्तर दिशा का लोकपाल । लोकान्तिक देवों की एक जाति । भगवान् मुनिसुव्रत का शासनाधिष्ठायक यक्ष । शतभिषक् नक्षत्र का अधिष्ठाता देव । एक देव-विमान । वृक्ष की एक जाति । अहोरात्र का पनरहवाँ मुहूर्त । एक विद्याधरनरपति । एक श्रेष्ठि-पुत्र । छन्द-विशेष । वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव । पुं.ब. एक आर्य-देश । °काइय पुं[°कायिक] । °देवकाइय पुं [°देवकायिक] वरुण लोकपाल के भृत्य-स्थानीय देवों की एक जाति । °प्पभ पुं [°प्रभ] वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव । वरुण लोकपाल का उत्पात पर्वत । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वरुणप्रभ पर्वत की दक्षिण दिशा में स्थित वरुण लोकपाल की एक राजधानी । °वर पुं. एक द्वीप ।

वरुणा स्त्री. अच्छ देश की प्राचीन राजधानी । वरुणप्रभ पर्वत की पूर्व दिशा में स्थित वरुण नामक लोकपाल की एक राजधानी । एक राजपत्नी ।

वरुणी स्त्री. विद्या-विशेष ।

वरुणोअ } **वरुणोद** } पुं [वरुणोद] एक समुद्र ।

वरुल पुं. ब. देश-विशेष ।

वरूहिणी स्त्री [वरूथिनी] सेना ।

वरेइत्थ न [दे] फल ।

वल अक [वल्] लौटना । मुड़ना । उत्पन्न होना । सक. ढकना । जाना । साधना ।

वल सक [आ + रोपय्] ऊपर चढ़ाना ।

वल सक [ग्रह्] ग्रहण करना ।

वल पुं. रस्सी आदि को मजबूत करने के लिए दिया जाता बल ।

वलअंगी स्त्री [दे] वृतिवाली, बाड़वाली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वलइय वि [वलयित] वलय—कंगन की तरह गोलाकार किया हुआ । वेष्टित ।
वलंगणिआ स्त्री [दे] बाड़वाली ।
वलक्खिअ वि [दे] उत्संगित, उत्संग-स्थित ।
वलक्ख वि [वलक्ष] श्वेत ।
वलक्ख न [वलाक्ष] एक तरह का गले में पहनने का गहना ।
वलग्ग अक [आ + रुह्] आरोहण करना ।
वलग्ग वि [आरूढ] चढ़ा हुआ ।
वलग्गंगणी स्त्री [दे] वृति, बाड ।
वलण न[वलन] मोड़ना । प्रत्यावर्तन । वक्रता ।
वलण (शौ. मा) देखो वरण ।
वलणा स्त्री [वलना] देखो वलण = वलन ।
वलत्थ वि [दे] पर्यस्त ।
वलमय न [दे] शीघ्र ।
वलय पुंन. कंकण । पृथिवी-वेष्टन, घनवात आदि । वेष्टन । वर्तुल । नदी आदि के बाँक से वेष्टित भू-भाग । माया । झूठ । बलयकार वृक्ष, नारिकेल । °आर, °रअ पुं [°कार, °कारक] कंकण बनानेवाला शिल्पी ।
वलय वि [वलक] मोड़नेवाला ।
वलय न [दे] खेत । गृह ।
वलय देखो वल = वल् । °मयग वि [°मृतक] संयम से भ्रष्ट होकर मृत । भूख आदि से तड़फता हुआ मरा हो । °मरण न. संयम से च्युत का मरण ।
वलयणी स्त्री [दे] वृति, बाड़ ।
वलयबाहा } स्त्री [दे] दीर्घ काष्ठ, जिसपर
वलयबाहु } ध्वजा आदि बाँधा जाता है । हाथ का एक आभूषण, चूड़ा, कड़ा ।
वलया देखो वडवा । °णल पुं [°नल] वडवाग्नि । °मुह न [°मुख] बडवानल । पुं. एक बड़ा पाताल-कलश ।
वलया स्त्री [दे] समुद्र-कूल । °मुह न [°मुख] वेला का अग्रभाग ।
वलयाइअ वि [वलयायित] जो वलय की तरह गोल हुआ हो वह ।
वलवट्टि [दे] देखो बलवट्टि ।
वलवा देखो वडवा ।
वलवाडी स्त्री [दे] वृति, बाड़ ।
वलविअ न [दे] शीघ्र ।
वलहि स्त्री [दे] कपास ।
वलहि } स्त्री [वलभि, °भी] गृह-चूड़ा ।
वलही } छज्जा, बरामदा । महल का अग्रस्थ भाग । कठियावाड़ का प्राचीन नगर, आजकल का 'वळा' ।
वलाअ देखो पलाय = परा + अय् ।
वलाअ देखो पलाव = प्रलाप ।
°वलाअ देखो वल = वल् । °मरण देखो वलय-मरण ।
वलि स्त्री. पेट का अवयव-विशेष । नाभि के ऊपर पेट की त्रिवलि । जरा आदि से होती शिथिल चमड़ी ।
वलिअ वि [दे] भुक्त ।
वलिअ वि [वलित] मुड़ा हुआ । जिसको बल चढ़ाया गया हो वह (रस्सी आदि) ।
वलिअ देखो विलिअ = व्यलीक ।
वलिआ स्त्री [दे] धनुष की डोरी ।
°वलिच्छत्त देखो परिच्छन्न ।
°वलित्त देखो पलित्त ।
वलिमोडय पुं [वलिमोटक] वनस्पति में ग्रन्थि का चक्राकार वेष्टन ।
वली स्त्री. देखो वलि ।
वलुण देखो वरुण ।
वले अ. संबोधन-सूचक अव्यय । देखो बले ।
वल्ल देखो वल = वल् ।
वल्ल अक [वल्ल्] चलना, हिलना ।
वल्ल पुं [दे] शिशु, बालक ।
वल्ल पुं [दे] अन्न-विशेष, निष्पाव ।
वल्लई स्त्री [वल्लवी] गोपी ।
वल्लई स्त्री [दे] गो ।
वल्लई } स्त्री [वल्लकी] वीणा ।
वल्लकी }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वल्लट्ट वि [दे] पुनरुक्त ।

वल्लभ देखो वल्लह ।

वल्लर न [दे] वन, गहन । क्षेत्र, खेत । अरण्य-क्षेत्र । बालुका-युक्त क्षेत्र ।

वल्लर न [दे] अरण्य, अटवी । निर्जन देश । पुं. महिष । पवन । वि. युवा । वेष्टनशील । वेष्टित नामक आलिंगन-विशेष करने की आदत वाला । स्त्री. °री ।

वल्लरी स्त्री. वल्ली, लता ।

वल्लरी स्त्री [दे] केश ।

वल्लव पुंस्त्री. गोप, अहीर । स्त्री. °वी ।

वल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत ।

वल्लविअ वि [दे] लाक्षा से रंगा हुआ ।

वल्लह पुं [वल्लभ] पति । वि. प्रिय । °राय पुं [°राज] गुजरात का एक चौलुक्य-वंशीय राजा । दक्षिण के कुन्तल-देश का एक राजा ।

वल्लहा स्त्री [वल्लभा] दयिता, पत्नी ।

वल्लादय न [दे] आच्छादन, ढकने का वस्त्र ।

वल्लाय पुं [दे] श्येन पक्षी । नकुल ।

वल्लि स्त्री. लता ।

वल्लिर वि [वल्लितृ] हिलनेवाला ।

वल्ली स्त्री. लता ।

वल्ली स्त्री [दे] केश ।

वल्हीअ पुं [वाह्लीक] देश-विशेष । वि. वाह्लीक देश का ।

वव सक [वप्] बोना ।

वव सक [वप्] देना ।

ववइस सक [व्यप + दिश्] कहना, प्रतिपादन करना । व्यवहार करना ।

ववएस पुं [व्यपदेश] कथन, प्रतिपादन । व्यवहार । कपट ।

ववगम पुं [व्यपगम] नाश ।

ववगय वि [व्यपगत] दूर किया हुआ । मृत । नाश-प्राप्त ।

ववट्ठंभ पुं [व्यवष्टम्भ] अवलम्बन ।

ववट्ठावण देखो ववत्थावण ।

ववट्ठिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था-प्राप्त ।

ववण स्त्रीन [दे] कार्पास । स्त्री. °णी ।

ववत्थंभ पुं [दे] बल, पराक्रम ।

ववत्था स्त्री [व्यवस्था] मर्यादा, स्थिति । प्रक्रिया । प्रबन्ध । निर्णय । °पत्तय न [°पत्रक] दस्तावेज ।

ववत्थावण न[व्यवस्थापन]व्यवस्था करना ।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित]व्यवस्था-युक्त, जिसने व्यवस्था की हो ।

ववदेस देखो ववएस ।

ववधाण न [व्यवधान] अन्तर ।

ववरोव सक [व्यप + रोपय्] विनाश करना, मार डालना ।

ववस सक [व्यव + सो] करने की इच्छा करना । प्रयत्न करना । निर्णय करना ।

ववसाय पुं [व्यवसाय] निर्णय । अनुष्ठान । उद्यम । व्यापार, कार्य ।

ववसायसभा स्त्री [व्यवसायसभा] कार्यालय ।

ववसिअ न [दे] बलात्कार ।

ववसिअ, ववस्सिअ वि [व्यवसित] उद्यत । त्यक्त । निश्चयवाला । पराक्रमी । न. व्यवसाय, कर्म । चेष्टित । प्रयत्न ।

ववहर सक [व्यव + हृ] व्यापार करना । अक. वर्तना, आचरण करना ।

ववहरग वि [व्यवहारक] व्यापार करनेवाला, व्यापारी ।

ववहार पुं [व्यवहार] वर्तन । व्यापार । नय-विशेष । मुमुक्षु की प्रवृत्ति-निवृत्ति का कारण-भूत ज्ञान-विशेष । जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष । दोष के नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित्त । विवाद । फैसला । व्यवस्था । काम, काज । जीवराशि-विशेष । °व वि [°वत्] व्यवहार-युक्त । °रासिय वि [°राशिक] जीवराशि-विशेष में स्थित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ववहार पुं [व्यवहार] पूर्व-ग्रन्थ। जीतकल्प सूत्र। कल्पसूत्र। मार्ग। आचरण। ईप्सितव्य।

ववहारि पुं [व्यवहारिन्] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव। वि. व्यापारी। व्यवहार-क्रिया-प्रवर्तक।

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार सम्बन्धी।

ववहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त।

ववहिअ वि [दे] उन्मत्त।

ववाँल देखो वमाल।

ववेअ वि [व्यपेत] व्यपगत।

ववेक्खा स्त्री [व्यपेक्षा] विशेष अपेक्षा।

वव्वय पुं [वल्वज] तृण-विशेष।

वव्वर वि [वर्वर] पामर। मूर्ख।

वव्वा° देखो वव्वय।

वव्वाड पुं [दे] अर्थ। धन।

वव्वीस देखो वद्धीसग, वद्धीसक।

वशधि (मा) देखो वसहि = वसति।

वश्च (म) देखो वच्छ = वृक्ष।

वस अक [वस्] वास करना, रहना। सक. बांधना।

वस वि [वश] अधीन। पुंन. परतन्त्रता। प्रभुत्व। स्वामित्व। आज्ञा। बल, सामर्थ्य। °अ, °ग वि. वशीभूत, पराधीन। °ट्ट वि [°र्त] पराधीनता या इन्द्रिय आदि की परवशता से दुःखित। °ट्टमरण न [°र्तमरण] इन्द्रियादि-परवश की मौत। °वत्ति वि [°वर्तिन्]। °इत्त वि [°यत्त]। °णुग वि [°ानुग] वशीभूत, अधीन।

वस पुं [वृष] धर्म। बैल। देखो विस = वृष।

वसइ स्त्री [वसति] स्थान, आश्रय। रात्रि। गृह। निवास।

वसंत पुं [वसन्त] ऋतु-विशेष, चैत्र और वैशाख मास का समय। चैत्र मास। °उर न [°पुर] नगर-विशेष। °तिलअ पुं [°तिलक] हरिवंश में उत्पन्न एक राजा। न. एक उद्यान, जहाँ भगवान् ऋषभदेव ने दीक्षा ली थी। °तिलआ स्त्री [°तिलका] छन्द-विशेष।

वसंवय वि [वशंवद] निज को अधीन कहनेवाला।

वसण न [वसन] वस्त्र। निवास।

वसण पुं [वृषण] अण्ड-कोष।

वसण न [व्यसन] कष्ट, विपत्ति। राजादिकृत उपद्रव। द्यूत, मद्य-पान आदि खोटी आदत।

वसभ पुं [वृषभ] वृष राशि। ऋषभदेव। एक जैन मुनि, चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म के गुरु। ज्ञानी साधु। बैल। उत्तम। °करण न. वह स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हों। °क्खेत्त न. [°क्षेत्र]वर्षा-काल में आचार्य आदि जहाँ रहते हों वह स्थान। °ग्गाम पुं[°ग्राम] कुत्सित देश में नगर-तुल्य गाँव। °णुजाय पुं [°ानुजात] ज्योतिषशास्त्र का प्रथम योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र बैल के आकार से स्थित होते हैं। देखो उसभ, रिसभ, वसह।

वसभुद्ध पुं [दे] कौआ।

वसम देखो वसिम।

वसल वि [दे] दीर्घ।

वसह पुं [वृषभ] वैयावृत्त्य करनेवाला मुनि। लक्ष्मण का पुत्र। बैल। कान का छिद्र। औषध-विशेष। °इंध पुं [°चिह्न] शंकर। °केउ पुं [°केतु] इक्ष्वाकु-वंश का राजा। °वाहण पुं [°वाहन] ईशान देवलोक का इन्द्र। महादेव। °वीही स्त्री [°वीथी] शुक्र ग्रह का एक क्षेत्रभाग।

वसहि देखो वसइ।

वसा स्त्री. शरीरस्थ धातु-विशेष।

°वसारअ वि [प्रसारक] फैलानेवाला।

°वसाहअ देखो पसाहय।

°वसाहा स्त्री [प्रसाधा] अलंकार, आभूषण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसि देखो वसइ ।

वसिअ वि [उषित] रहा हुआ, जिसने वास किया हो वह । बासी ।

वसिट्ठ पुं [वशिष्ठ] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर । एक ऋषि ।

वसिट्ठ पुं [वशिष्ट] द्वीपकुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र ।

वसित्त न [वशित्व] योग की एक सिद्धि ।

वसिम न [दे] वसतिवाला स्थान ।

वसीकय वि [वशीकृत] वश में किया हुआ ।

वसीकरण न [वशीकरण] वश में करने के लिए किया जाता मन्त्र आदि का प्रयोग ।

वसीयरणी स्त्री [वशीकरणी] वशीकरण-विद्या ।

वसीहूअ वि [वशीभूत] जो अधीन हुआ हो ।

वसु न. धन । संयम, चारित्र । पुं. जिनदेव । वीतराग । संयत-साधु । आठ की संख्या । धनिष्ठा नक्षत्र का अधिपति देव । एक राजा । एक चतुर्दश-पूर्वी जैन महर्षि । एक छन्द । स्त्री. ईशानेन्द्र की पटरानी । न. लोकान्तिक देवों का विमान । सुवर्ण । °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] ईशानेन्द्र की पटरानी । °देव पुं. श्रीकृष्ण और बलदेव का पिता । °नंदय पुं [°नन्दक] एक उत्तम तलवार । °पुज्ज पुं [°पूज्य] एक राजा, वासुपूज्य का पिता । °बल पुं. इक्ष्वाकु-वंश में उत्पन्न राजा । °भाग पुं. एक नाम । °भागा स्त्री. ईशानेन्द्र की पटरानी । °भूइ पुं [°भूति] एक जैन मुनि । °म, °मंत वि [°मत्] श्रीमंत । संयमी, साधु । °मित्ता स्त्री [°मित्रा] ईशानेन्द्र की अग्र-महिषी । °सद्द पुं [°शब्द] छन्द-विशेष । °हारा स्त्री [°धारा] आकाश से देव-कृत सुवर्णवृष्टि । एक श्रेष्ठिनी ।

वसुआ } अक [उद्+वा] शुष्क होना ।
वसुआअ } सूखना ।

वसुआअ वि [उद्वात] शुष्क ।

वसुंधर पुं [वसुन्धर] एक जैन मुनि ।

वसुंधरा स्त्री [वसुन्धरा] पृथिवी । ईशानेन्द्र की अग्र-महिषी । चमरेन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की पटरानी । एक दिक्कुमारी देवी । नववें चक्रवर्ती राजा की पटरानी । रावण की पत्नी । एक श्रेष्ठि-पत्नी । °वइ पुं [°पति] राजा ।

वसुधा (शौ) देखो वसुहा ।

वसुपुज्ज देखो वासुपुज्ज ।

वसुमइ° } स्त्री [वसुमती] पृथिवी । भीम
वसुमई } नामक राक्षसेन्द्र की अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी । °णाह, °नाह पुं [°नाथ] राजा । °भवण न [°भवन] भूमि-गृह । °वइ पुं [°पति] राजा ।

वसुल पुंस्त्री [दे. वृषल] निष्ठुरता-बोधक आमन्त्रण शब्द । गौरव और कुत्सा-बोधक आमन्त्रण शब्द । स्त्री. °ली ।

वसुहा स्त्री [वसुधा] पृथिवी । °हिव पुं [°धिप] राजा ।

वसू स्त्री. ईशानेन्द्र की एक पटरानी ।

वसेरी स्त्री [दे] खोज ।

वस्स (शौ) देखो वरिस ।

वस्स वि [वश्य] अधीन, आयत्त ।

वस्सोक न [दे] एक प्रकार की क्रीड़ा ।

वह सक [वह्] पहुँचना । धारण करना । ले जाना । अक. चलना ।

वह सक [वध्, हन्] मार डालना ।

वह सक [व्यथ्] पीड़ा करना । प्रहार करना ।

वह (अप) देखो वरिस = वृष् ।

वह पुंस्त्री [वध] हत्या । स्त्री. °हा । °कारी स्त्री [°कारी] विद्या-विशेष ।

वह पुं [दे] कन्धे पर का व्रण । व्रण ।

वह पुं. वृष-स्कन्ध । पानी का प्रवाह ।

वह पुं [व्यथ] लकुट आदि का प्रहार ।

°वह देखो पह = पथिन् ।

वहइअ वि [दे] पर्याप्त ।

वहग वि [वधक] घातक, हिंसक ।
वहग वि [व्यथक] ताड़ना करनेवाला ।
वहड पुं [दे] दमनीय बछड़ा ।
वहढोल पुं [दे] वात्या, वात-समूह ।
वहण न [वहन] ढोना । पोत, जहाज । शकट आदि वाहन । वि. वहन करनेवाला ।
वहण (शौ) देखो पगय = प्रकृत ।
वहण (अप) देखो वसण = वसन ।
वहणया स्त्री [वहना] निर्वाह ।
वहणा स्त्री [वधना] वध, घात, हिंसा ।
वहण्णु पुं [व्यधज्ञ] एक नरक-स्थान ।
वहय देखो वहग = वधक ।
वहलीअ देखो बहलीय ।
वहा देखो वह = वध ।
वहाव सक [वाहय्] वहन कराना ।
वहाविअ वि [वधित] मरवाया हुआ ।
°वहाविअ देखो पहाविअ ।
वहिअ वि [दे] अवलोकित ।
वहिइअ देखो वहइअ ।
वहिचर अक [व्यभि + चर्] पर-पुरुष या पर-स्त्री से संभोग करना । सक. नियम-भंग करना ।
वहिचार पुं [व्यभिचार] पर-स्त्री या पर-पुरुष से संभोग । न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक हेतु-दोष ।
वहिया स्त्री [दे] हिसाब लिखने की बही ।
वहियाली देखो वाहियाली ।
वहिलग पुं [दे. वहिलक] ऊँट, बैल आदि पशु ।
वहिल्ल वि [दे] शीघ्र ।
वहु पुंस्त्री [दे] चिविढा, गन्ध-द्रव्य-विशेष ।
वहु° देखो वहू ।
वहुघारिणी स्त्री [दे] नवोढा ।
वहुण्णी स्त्री [दे] ज्येष्ठ-भार्या ।
वहुमास पुं [दे] रमण-विशेष, क्रीड़ा-विशेष, जिसमें खेलता हुआ पति नवोढा के घर से बाहर नहीं निकलता है ।
वहुरा स्त्री [दे] शिवा, सियारिन ।
वहुलिआ (अप) स्त्री [वधूटिका] अल्पवय वाली स्त्री, बहुरिया ।
वहुव्वा स्त्री [दे] छोटी सास ।
वहुहाडिणी स्त्री [दे] एक स्त्री के रहते हुए ब्याही जाती दूसरी स्त्री ।
वहू स्त्री [वधू] भार्या, नारी ।
वहोल } पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह ।
वहोलिया } स्त्री [दे] ।
वा अक. गति करना, चलना ।
वा अक [वै, म्लै] सूखना ।
वा सक [व्ये] बुनना ।
वा अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—विकल्प, अथवा, या । समुच्चय, और, तथा । अपि, भी । अवधारण । सादृश्य । उपमा । पाद-पूर्ति ।
वाअड पुं [दे] शुक ।
वाअड देखो वावड = व्यापृत ।
वाइ वि [वादिन्] वक्ता । शास्त्रार्थ में पूर्वपक्ष का प्रतिपादन करनेवाला । दार्शनिक,तीर्थिक ।
वाइ वि [वाचिन्] वाचक, अभिधायक, कहनेवाला ।
वाइ देखो वाजि ।
वाइअ वि [वाचिक] वचन-सम्बन्धी ।
वाइअ वि [वाचित] पाठित । पढ़ा हुआ ।
वाइअ वि [वातिक] वायु-जन्य । वात-रोगवाला । उत्कर्षवाला । पुं. नपुंसक का एक भेद ।
वाइअ वि [वादित] बजाया हुआ । वन्दित ।
वाइअ न [वाद्य] बाजा, वादित्र । बाजा बजाने की कला ।
वाइअ वि [वात] बहा हुआ, चला हुआ ।
वाइंगण न [दे] बैंगन ।
वाइंगणी } स्त्री [दे] बैंगन का गाछ,
वाइंगिणी } वृन्ताकी ।
वाइगा [दे] देखो वाइया ।
वाइत्त न [वादित्र] वाद्य, बाजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाइद्ध वि [व्याविद्ध] विपर्यय से उपन्यस्त। उलट-पुलट कर रखा हुआ।

वाइद्ध वि [व्यादिग्ध] उपलिप्त। वक्र।

वाईकरण देखो वाजीकरण।

वाउ पुं [वायु] पवन। वायु-शरीरवाला जीव। मुहूर्त-विशेष। सौधर्मेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव। स्वातिनक्षत्र का अधिपति देवता। °आय पुं [°काय] प्रचण्ड पवन। वायु शरीरवाला जीव। °काइय पुं [°कायिक] वायु शरीरवाला जीव। °काय देखो °आय। °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति। हनूमान का पिता। °क्कलिया स्त्री [°उत्कलिका] नीचे बहनेवाला वायु। °क्काइय देखो °काइय। °क्काय देखो °आय। °त्तरवडिंसग पुंन [°उत्तरावतंसक] एक देव-विमान। °पवेस पुं [°प्रवेश] गवाक्ष, वातायन। °प्पइट्ठाण वि [°प्रतिष्ठान] वायु के आधार से रहनेवाला। °भूइ पुं [°भूति] महावीर का एक गणधर।

वाउ पुं [दे] इक्षु।

°वाउड वि [प्रावृत] आच्छादित। न. कपड़ा।

वाउत्त पुं [दे] विट। जार।

वाउप्पइया स्त्री [दे. वातोत्पतिका] भुजपरिसर्प की एक जाति।

वाउब्भाम पुं [वातोद्भ्राम] अनवस्थित पवन।

वाउय वि [व्यापृत] किसी कार्य में लग्न।

वाउरा स्त्री [वागुरा] पशु फँसाने का जाल। देखो वग्गुरा।

वाउरिय वि [वागुरिक] व्याध।

वाउल वि [व्याकुल] घबड़ाया हुआ। पुं. क्षोभ। °ीहूअ वि [°ीभूत] व्याकुल बना हुआ।

वाउल वि [वातूल] वात-रोगी, उन्मत्त। पुं. वातसमूह।

वाउलग्ग न [दे] सेवा, भक्ति।

वाउलण न [व्यापरण] व्यावृत-क्रिया, व्यापार।

वाउलणा स्त्री [व्याकुलना] व्याकुल करना।

वाउलिअ वि [व्याकुलित] व्याकुल बना-हुआ। विलोलित, क्षोभ-प्राप्त।

वाउलिआ स्त्री [दे] छोटी खाई।

वाउल्ल देखो वाउल = व्याकुल।

वाउल्ल वि [दे. वातूल] वाचाट।

वाउल्लअ पुंन [दे] पुतला।

वाउल्लआ, वाउल्ली स्त्री [दे] देखो बाउल्लया, बाउल्ली।

वाऊल देखो वाउल = वातूल।

वाऊल देखो वाउल = व्याकुल।

वाऊलिअ वि [वातूलित] वातूल बना हुआ। नास्तिक।

वाए सक [वादय्] बजाना।

वाए सक [वाचय्] पढ़ाना। पढ़ना।

वाएरिअ वि [वातेरित] पवन-प्रेरित-कम्पित।

वाएसरी स्त्री [वागीश्वरी] सरस्वती देवी।

वाओलि, वाओली स्त्री [वातालि, °ली] पवन-समूह।

वाक, वाग देखो वक्क = वल्क।

वागड पुं. गुजरात का 'वागड' प्रान्त।

वागडिअ वि [व्याकृत] प्रकट किया हुआ। नास्तिक।

वागर सक [व्या + कृ] प्रतिपादन करना, कहना।

वागरण न [व्याकरण] कथन, प्रतिपादन, उपदेश। निर्वचन, उत्तर। शब्दशास्त्र।

वागरणी स्त्री [व्याकरणी] भाषा का एक भेद, प्रश्न के उत्तर की भाषा।

वागरिय वि [व्याकृत]। देखो वायड = व्याकृत।

वागल न [वल्कल] वृक्ष की छाल।

वागल वि [वाल्कल] वृक्ष की छाल से बना।

वागली स्त्री [दे] वल्ली-विशेष।

वागिल्ल वि [वाग्मिन्] बहु-भाषी, वाचाल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वागुर पुं [वागुरा] मृग-बन्धन, जाल, फन्दा ।
वागुरि } वि [वागुरिन्, °रिक] देखो
वागुरिय } वाउरिय ।
वाघाइय वि [व्याघातिक] व्याघात से उत्पन्न ।
वाघाइम वि [व्याघातिम] व्याघात से होनेवाला । न. सिंह, दावानल आदि से होनेवाली मौत ।
वाघाय पुं [व्याघात] स्खलना । विनाश । प्रतिबन्ध । सिंह, दावानल आदि से अभिभव ।
वाघारिय वि [व्याघारित] प्रलम्ब, लम्बा ।
वाघुण्णिय वि [व्याघूर्णित] दोलायमान ।
वाघेल पुं [दे] एक क्षत्रिय-वंश ।
वाच देखो वाय = वाचय् ।
वाचय देखो वायग = वाचक ।
वाज देखो वाय = व्याज ।
वाजि पुं [वाजिन्] अश्व ।
वाजीकरण न [वाजीकरण] वीर्य-वर्धक औषध । आयुर्वेद का एक अंग ।
वाड पुं [बाट] बाड । बाडवाली जगह । वृति आदि से परिवेष्टित गृह-समूह, रथ्या ।
वाडंतरा स्त्री [दे] कुटीर, झोपड़ा या झोपड़ी ।
°वाडण देखो पाडण ।
वाडव पुं. वड़वानल ।
वाडहाणग पुंन [वाटधानक] एक छोटा गाँव । वि. उस गाँव का निवासी ।
वाडि° देखो वाडी = वाटी ।
वाडिआ स्त्री [वाटिका] बगीचा ।
वाडिम पुं [दे] पशु-विशेष, गण्डक, गेंड़ा ।
वाडिल्ल पुं [दे] कृमि, कीट ।
वाडी स्त्री [दे] बाड़ ।
वाडी स्त्री [वाटी] बगीचा ।
वाढि पुं [दे] वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र ।
वाण सक [वि + नम्] नत होना ।
वाण वि [वान] वन में उत्पन्न, वन-सम्बन्धी । °पत्थ, °प्पत्थ पुं [°प्रस्थ] वनवासी तापस, तृतीय आश्रम में स्थित पुरुष । °मंत, °मंतर, °वंतर पुंस्त्री [°व्यन्तर] देवों की एक जाति । स्त्री. °री । °वासिआ स्त्री [°वासिका] छन्द-विशेष ।
°वाण देखो पाण = पान । °वत्त न [°पात्र] पीने का प्याला ।
वाणय पुं [दे] कंकण बनानेवाला शिल्पी ।
वाणर पुंन [वानर] बन्दर । विद्याधर मनुष्यों का वंश । वानर-वंश में उत्पन्न मनुष्य । °उरी स्त्री [°पुरी] किष्किन्धा नामक नगरी । °केउ पुं [°केतु] वानर-वंश का कोई भी राजा । °दीव पुं [°द्वीप]एक द्वीप । °द्धय पुं [°ध्वज] हनूमान । °वइ पुं[°पति] सुग्रीव, रामचन्द्र का एक सेनापति ।
वाणरिंद पुं [वानरेन्द्र] वानर-वंशीय पुरुषों का राजा, वाली ।
वाणवाल पुं [दे] इन्द्र ।
वाणहा देखो पाणहा, वाहणा = उपानह् ।
वाणा देखो वायणा = वाचना । °यरिअ पुं [°चार्य] अध्यापन करनेवाला शिक्षक ।
वाणारसी स्त्री [वाराणसी] प्राचीन नगरी, 'बनारस' ।
वाणि देखो वणि = वणिज् । °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] वैश्य-कुमार ।
वाणि स्त्री देखो वाणी ।
वाणिअ पुं [वाणिज] बनिया । एक गाँव ।
वाणिअ (अप) देखो वाणिज्ज ।
°वाणिअ देखो पाणिअ = पानीय ।
वाणिज्ज न [वाणिज्य] व्यापार । एक जैन मुनि-कुल ।
वाणिज्जा स्त्री [वणिज्या] व्यापार ।
वाणिज्जिय वि [वाणिजिक] व्यापारी ।
वाणी स्त्री. वचन, वाक्य । वाग्देवता, सरस्वती देवी । छन्द-विशेष ।
°वाणीअ देखो पाणीअ ।
वाणीर पुं [दे] जम्बू वृक्ष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाणीर पुं [वानीर] वेतस-वृक्ष।

वाणुंजुअ पुं [दे] वणिक्।

वात देखो वाय = वात।

वातिक } देखो वाइअ = वातिक।
वातिय }

वाद देखो वाय = वाद।

वादि देखो वाइ = वादिन्।

वापंफ देखो वावंफ।

वापिद (शो) देखो वावड = व्यापृत।

वाबाहा स्त्री [व्याबाधा] विशेष पीड़ा।

वाम सक [वमय्] वमन कराना।

वाम वि [दे] मृत। आक्रान्त।

वाम वि. सव्य, बाँया। प्रतिकूल। सुन्दर। न. सव्य पक्ष। बाँया शरीर। °लोअणा स्त्री [°लोचना] सुन्दर नेत्रवाली स्त्री। °लोकवादि, °लोगवादि पुं [°लोकवादिन्] जगत् को असत् माननेवाला दार्शनिक। °वट्ट वि [°वर्त]। °वत्त वि [°वर्त] प्रतिकूल आचरण करनेवाला।

वाम पुं [व्याम] परिमाण-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनों हाथों के बीच का अन्तराल।

वामण पुंन [वामन] संस्थान-विशेष, जिसमें हाथ, पैर आदि अवयव छोटे हों और छाती, पेट आदि पूर्ण या उन्नत हों। वि. उक्त आकार के शरीरवाला, ह्रस्व। स्त्री. °णी। पुं. श्रीकृष्ण का एक अवतार। एक यक्ष-देवता। न. जिसके उदय से वामन शरीर की प्राप्ति हो वह कर्म। °थली स्त्री [°स्थली] देश-विशेष।

वामणिअ वि [दे] नष्ट वस्तु—पलायित को फिर से ग्रहण करनेवाला।

वामणिआ स्त्री [दे] दीर्घ काष्ठ की बाड।

वामद्दण न [व्यामर्दन] एक व्यायाम, हाथ आदि अंगों का एक दूसरे से मोड़ना।

वामरि पुं [दे] सिंह।

वामलूर पुं. वल्मीक, दीमक।

वामा स्त्री. पार्श्वनाथ की माता।

वामिस्स देखो वामीस।

वामी स्त्री [दे] स्त्री।

वामीस वि [व्यामिश्र] मिश्रित, युक्त।

वामीसिय वि [व्यामिश्रित]।

वामुत्तय वि [व्यामुक्तक] परिहित। प्रलम्बित।

वामूढ वि [व्यामूढ] विमूढ, भ्रान्त।

वामोह पुं [व्यामोह] मूढ़ता, भ्रान्ति।

वामोहण वि [व्यामोहन] भ्रान्ति-जनक।

वाय सक [वाचय्] पढ़ना। पढ़ाना।

वाय अक [वा] बहना, गति करना, चलना।

वाय अक [वै, म्लै] सूखना।

वाय सक [वादय्] बजाना।

वाय वि [वान] शुष्क, म्लान।

वाय पुं [दे] वनस्पति-विशेष। न. गन्ध।

वाय पुं [व्रात] समूह, संघ।

वाय वि [व्यातृ] संवरण करनेवाला।

वाय वि [व्यागस्] प्रकृष्ट अपराधी।

वाय पुं [वातृ] पवन। जुलाहा।

वाय वि [व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला।

वाय पुं [वाक] ऋग्वेद आदि वाक्य।

वाय पुं [व्याय] गति, चाल। पक्षी का आगमन। विशिष्ट लाभ।

वाय पुं [व्याच] ठगाई।

वाय पुं [वाज] पंख। ऋषि। आवाज। वेग। न. घी। पानी। यज्ञ का धान्य।

वाय न [वाच] शुक-समूह।

वाय वि [वाज्] फेंकनेवाला। नाशक।

वाय पुं [व्याज] कपट, माया। बहाना, छल। विशिष्ट गति।

वाय देखो वाग = वल्क।

वाय पुं [व्राय] शादी।

वाय पुं [व्यात] विशिष्ट गमन।

वाय पुं [वाप] बोना। खेत।

वाय पुं. गमन, गति। सूंघना। जानना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छा। खाना।

वाय वि [व्याद] विशेष ग्रहण करनेवाला।

वाय वि [वाच्] वक्ता।

वाय पुं [वात] पवन। उत्कर्ष। पुंन. एक देव-विमान। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान। °कम्म न [°कर्मन्] अपान वायु का सरना। °कूड पुंन [°कूट] एक देव-विमान। °खंध पुं [°स्कन्ध] घनवात आदि वायु। °ज्झय पुंन [°ध्वज] एक देव-विमान। °णिसग्ग पुं [°निसर्ग] अपान वायु का सरना। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्ण-राजि। °प्पभ पुंन [°प्रभ] देव-विमान विशेष। °फलिह पुं [°परिघ] कृष्णराजि। °रुह पुं. वनस्पति-विशेष। °लेस्स पुंन [°लेश्य]। °वण्ण पुंन [°वर्ण]। °सिंग पुंन [°शृङ्ग]। °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट]। °वत्त पुंन [°वर्त] सभी देव-विमान।

वाय पुं [वाद] शास्त्रार्थ। उक्ति। नाम। बजाना। स्थैर्य। °त्थ पुं [°र्थ] तत्त्व-चर्चा। °त्थि वि [°र्थिन्] शास्त्रार्थ की चाहवाला।

°वाय पुं [°पाक] रसोई। बालक। दैत्य। देखो पाग।

°वाय पुं [°पात] पतन। गमन। उत्पतन। पक्षी। न. पक्षि-समूह।

°वाय वि [पातृ] रक्षा करनेवाला। पीनेवाला, सूखनेवाला।

°वाय देखो °बाय।

°वाय पुं [°पाद] पर्यन्त। पर्वत। पूजा। मूल। किरण। पैर। चौथा भाग। देखो पाय = पाद।

°वाय देखो पाव = पाप।

°वाय पुं [पाय] रक्षा। वि. पीनेवाला।

°वाय देखो अवाय = अपाय।

वायउत्त पुं [दे] विट, भँडुआ। जार।

वायंगण न [दे] बैंगन।

वायंतिय वि [वागन्तिक] वचन-मात्र में नियमित।

वायग पुं [वाचक] अभिधायक। उपाध्याय। पूर्व-ग्रन्थों का जानकार मुनि। तत्त्वार्थसूत्र का कर्ता श्री उमास्वातिजी। वि. कथक। पढ़ानेवाला।

वायग वि [वादक] बजानेवाला।

वायग पुं [वायक] तन्तुवाय, जुलाहा।

वायगवंस पुं [वाचकवंश] एक जैन मुनि-वंश।

वायड पुं [दे] एक श्रेष्ठि-वंश।

वायड वि [व्याकृत] स्पष्ट, उक्त।

वायडघड पुं [दे] दर्दुर नामक बाजा।

वायडाग पुं [दे] सर्प की एक जाति।

वायण न [वाचन] देखो वायणा।

वायण न [वादन] बजाना। बजानेवाला।

वायण न [दे] खाद्य पदार्थ का बाँटा जाता उपहार।

वायणया } स्त्री [वाचना] पठन, गुरु के
वायणा } समीप अध्ययन। अध्यापन। व्याख्यान। सूत्र-पाठ।

वायणिअ वि [वाचनिक] वचन-सम्बन्धी।

वायय देखो वायग = वायक।

वायरण देखो वागरण।

वायव वि. वातरोगी।

°वायव देखो पायव।

वायव्व वि [वायव्य] वायव्य कोण का।

वायव्व पुं [वायव्य] वायुदेवता-सम्बन्धी। न. गौ के खुर से उड़ी हुई धूलि।

वायव्वा स्त्री [वायव्या] वायव्य कोण।

वायस पुं. काक। कायोत्सर्ग में कौए की तरह दृष्टि को इधर-उधर घुमाना। °परिमंडल न [°परिमण्डल] कौए के स्वर और स्थान आदि से शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या।

वाया स्त्री [वाच्] वाचन, वाणी। सरस्वती। व्याकरणशास्त्र। देखो वइ = वाच्।

वायाड पुं [दे. वाचाट] शुक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायाड वि [वाचाट] वाचाल ।
वायाम सक [व्यायामय्] कसरत करना ।
वायायण पुंन [वातायन] गवाक्ष, झरोखा । पुं. राम का एक सैनिक ।
वायार पुं [दे] शिशिर-वात ।
वायाल वि [वाचाल] बकवादी ।
°वायाल देखो पायाल ।
वायाविअ वि [वादित] बजवाया हुआ ।
वायु देखो वाउ = वायु ।
वार सक [वारय्] रोकना ।
वार पुं [दे] चषक, पान-पात्र ।
वार पुं. समूह । अवसर । सूर्य आदि ग्रह से अधिकृत दिन, जैसे रविवार, सोमवार आदि । चौथे नरक का एक नरक-स्थान । बारी । परिपाटी । कुम्भ । वृक्ष-विशेष । न. फल-विशेष । °जुवइ स्त्री [°युवति] । °जोव्वणी स्त्री [°यौवना] । °तरुणी स्त्री । °वहू स्त्री [°वधू] । °विलया स्त्री [°वनिता] । °विलासिणी स्त्री [°विलासिनी] । °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] वेश्या ।
वार न [°द्वार] दरवाजा । °वई स्त्री [°वती] द्वारका नगरी । °वाल पुं [°पाल] दरबान ।
वारंवार न. फिर-फिर ।
वारग पुं [वारक] बारी, क्रम । छोटा घड़ा । वि. निवारक, निषेधक ।
वारडिय न [दे] रक्त वस्त्र ।
वारड्डु वि [दे] अभिपीडित ।
वारण न निषेध । निवारण । छत्र । वि. रोकनेवाला, निवारक । पुं. हाथी । छन्द का एक भेद ।
वारण देखो वागरण ।
वारत्त पुं. एक अन्तकृद् मुनि । एक ऋषि । एक अमात्य । न. एक नगर ।
वारबाण पुं. कञ्चुक, चोली ।
वारय देखो वारग ।
वारसिआ स्त्री [दे] मल्लिका, पुष्प-विशेष ।
वारसिय देखो वारिसिय ।
वारा स्त्री. विलम्ब । वेला, दफा ।
वाराणसी देखो वाणारसी ।
वाराविय वि [वारित] जिसका निवारण कराया गया हो वह ।
वाराह पुं. पाँचवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम । वि. शूकर के सदृश ।
वाराही स्त्री. विद्या-विशेष । वराहमिहिर का ज्योतिष-ग्रन्थ, वराह-संहिता ।
वारि न. पानी । स्त्री. हाथी को फँसाने का स्थान । °भद्दग पुं [°भद्रक] शैवलाशी भिक्षुक । °मय वि. पानी का बना हुआ । स्त्री. °ई । °मुअ पुं [°मुच्] मेघ । °य पुं [°द] पानी देनेवाला भृत्य । °रासि पुं [°राशि] समुद्र । °वाह पुं. अभ्र । °सेण पुं [°षेण] एक अन्तकृद् महर्षि, राजा वसुदेव के पुत्र जिन्होंने अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली थी । एक अनुत्तरगामी मुनि, राजा श्रेणिक के पुत्र । ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौबीसवें जिनदेव । एक शाश्वती जिन-प्रतिमा । °सेणा स्त्री [°षेणा] एक शाश्वती जिन-प्रतिमा । अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी । एक महानदी । ऊर्ध्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । °हर पुं [°धर] मेघ ।
वारिअ पुं [दे] हजाम, नापित ।
वारिअ वि [वारित] प्रतिषिद्ध । वेष्टित ।
वारिआ स्त्री [द्वारिका] छोटा दरवाजा, बारी ।
वारिज्ज पुंन [दे] शादी ।
वारिसा देखो वरिसा ।
वारिसिय वि [वार्षिक] वर्ष-सम्बन्धी । वर्षा-सम्बन्धी ।
वारी स्त्री [द्वारिका] बारी, छोटा दरवाजा ।
वारी स्त्री. हाथी फँसाने का स्थान ।
वारी° न [वारि] जल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वारुअ न [दे] शीघ्र। वि. शीघ्रता-युक्त।

वारुण न. जल। वि. वरुण-सम्बन्धी। °त्थ न [°स्त्र] वरुणाधिष्ठित अस्त्र। °पुर न. नगर-विशेष।

वारुणी स्त्री. मदिरा। लता-विशेष, इन्द्र-वारुणी। पश्चिम दिशा। सुविधिनाथ की प्रथम शिष्या। एक दिक्कुमारी देवी। कायोत्सर्ग का एक दोष—निष्पन्न होती मदिरा की तरह कायोत्सर्ग में 'बुड-बुड' आवाज करना। कायोत्सर्ग में मतवाला की तरह डोलते रहना।

वारुया } स्त्री [दे] हस्तिनी।
वारूया }

वारेज्ज देखो वारिज्ज।

वाल सक [वालय्] मोड़ना। वापस लौटाना।

वाल पुं [व्याल] दुष्ट। सर्प। दुष्ट हाथी। हिंसक पशु। देखो विआल = व्याल।

वाल न. कश्यप-गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न।

वाल देखो बाल = बाल। °य वि [°ज] केशों से बना हुआ। °वीयणी स्त्री [°वीजनी] चामर। °हि पुं [°धि] छोटा पंखा।

°वाल देखो पाल = पाल।

वालंफोस न [दे] सोना।

वालग न [वालक] गौ आदि के बालों का बना हुआ पात्र-विशेष।

वालगपोतिया } स्त्री [दे] देखो बालग्ग-
वालग्गपोइया } पोइआ।

वालप्प न [दे] पुच्छ।

वालय पुं [वालक] गन्ध-द्रव्य-विशेष।

वालवास पुं [दे] मस्तक का आभूषण।

वालवि पुं [व्यालपिन्] मदारी। सपेरा।

वालहिल्ल पुं [वालखिल्य] ऋतु से उत्पन्न पुलस्त्य कन्या के साठ हजार पुत्र, जो अंगुष्ठ-पर्व के देह-मानवाले थे। देखो वालिखिल्ल।

वाला पुंस्त्री कंगू, अन्न-विशेष।

वालि पुं. एक विद्याधर-राजा, कपिराज। °तणअ पुं [°तनय]। °सुअ पुं [°सुत] राजा वालि का पुत्र, अंगद।

वालि वि [वालिन्] वक्र।

वालि वि [वालिन्] केशवाला। पुं. कपिराज।

वालिआफोस न [दे] सुवर्ण।

वालिंद पुं [वालीन्द्र] एक विद्याधर राजा।

वालिखिल्ल पुं [वालिखिल्य] एक राजर्षि। देखो वालिहिल्ल।

वालिहाण न [वालधान] पुच्छ।

वालिहिल्ल देखो वालहिल्ल।

वाली स्त्री [दे] मुंह से बजाया जाता तृण-वाद्य।

°वाली स्त्री [पाली] गाल आदि पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा। देखो पाली।

वालुअ पुं [वालुक] परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो नरक-जीवों को तप्त वालुका में चने की तरह भूनते हैं। धूलि-सम्बन्धी।

वालुअ° } स्त्री [वालुका] धूलि, रेत, रज।
वालुआ } °पुढवी स्त्री [°पृथिवी]। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा]। °भा स्त्री. तीसरी नरक-भूमि।

वालुंक न [दे] एक तरह का पक्वान्न।

वालुंक न [वालुङ्क] ककड़ी, खीरा।

वालुंकी } स्त्री [वालुङ्की] ककड़ी का गाछ।
वालुक्की }

वालुग° देखो वालुअ°।

वाव सक [वि + आप्] व्याप्त करना।

वाव अ. अथवा।

वाव पुं [वाप] बोना।

वावइज्ज देखो वावज्ज।

वावंफ अक [कृ] श्रम करना।

वावज्ज अक [व्या + पद्] मर जाना।

वावड पुं [दे] कुटुम्बी, किसान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वावड वि [व्यापृत] व्याकुल। किसी कार्य में लगा हुआ।
वावड वि [व्यावृत्त] लौटाया हुआ।
वावडय स्त्रीन [दे] विपरीत मैथुन।
वावणग वि [वामनक] बौना।
वावणी स्त्री [दे] छिद्र, विवर।
वावण्ण वि [व्यापन्न] विनाश-प्राप्त।
वावत्ति स्त्री [व्यापत्ति] विनाश, मरण।
वावत्ति स्त्री [व्यापृत्ति] व्यापार।
वावत्ति स्त्री [व्यावृत्ति] निवृत्ति।
वावय पुं [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया।
वावर अक [व्या+पृ] काम में लगना। सक. काम में लगाना।
वावल्ल देखो वावड = व्यापृत।
वावल्ल पुंन [दे] शस्त्र-विशेष।
वावहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाला।
वावाअ (?) अक [अव+काश्] जगह प्राप्त करना।
वावाअ सक [व्या+पादय्] मार डालना, विनाश करना। विनाशित।
वावायग वि [व्यापादक] हिंसक।
वावायय देखो वावायग।
वावार सक [व्या+पारय्] काम में लगाना।
वावार पुं [व्यापार] व्यवसाय।
वावि अ [वापि] अथवा। स्त्री. देखो वावी।
वावि वि [व्यापिन्] व्यापक।
वाविअ वि [दे] विस्तारित।
वाविअ वि [वापित] प्रापित। बोया हुआ।
वाविअ वि [व्याप्त] भरा हुआ।
वावित्त वि [व्यावृत्त] व्यावृत्तिवाला, निवृत्त।
वावित्ति स्त्री [व्यावृत्ति] व्यावर्तन, निवृत्ति।
वाविद्ध देखो वाइद्ध = व्यादिग्ध, व्याविद्ध।
वाविर देखो वावर।
वावी स्त्री [वापी] चतुष्कोण जलाशय-विशेष।
वावुड } (शौ) देखो वावड = व्यापृत।
वावुद }

वावोणय न [दे] विकीर्ण।
वाशू (मा) स्त्री [वासू] नाटक में बाला।
वास देखो वरिस = वृष्।
वास अक [वाश्] तिर्यंचों का—पशु-पक्षियों का बोलना। आह्वान करना।
वास सक [वासय्] संस्कार डालना। सुगन्धित करना। वास करवाना।
वास देखो वरिस = वर्ष। °त्ताण न [°त्राण] छत्र, छाता। °धर, °हर पुं. पर्वत-विशेष।
वास पुं. निवास। सुगन्ध। सुगन्धी द्रव्य-विशेष या चूर्ण-विशेष। द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति। °घर न [°गृह]। °भवण न [°भवन]शयन-गृह। °रेणु पुं. सुगन्धी रज। °हर न [°गृह] शयन-गृह।
वास पुं [व्यास] पुराण-कर्ता एक मुनि। विस्तार।
वास न [वासस्] वस्त्र।
°वास देखो पास = पाश।
°वास देखो पास = पार्श्व।
वासंग पुं [व्यासङ्ग] आसक्ति, तत्परता।
वासंठ } (अप) पुं [वसन्त] छन्द का एक
वासंत } भेद।
वासंत पुं [वर्षान्त] वर्षा-काल का अन्तभाग।
वासंतिअ वि [वासन्तिक] वसन्त-सम्बन्धी।
वासंतिअ } स्त्री [वासन्तिका,°न्ती] लता-
वासंती } विशेष।
वासंदी स्त्री [दे] कुन्द का पुष्प।
वासग वि [वासक] रहनेवाला। वासना-कर्त्ता, संस्काराधायक। शब्द करनेवाला। पुं. द्वीन्द्रिय आदि जन्तु।
वासण न [दे] बरतन।
वासणा स्त्री [वासना] संस्कार।
°वासणा स्त्री [दर्शन] अवलोकन। देखो पासणया।
वासय देखो वासग। °सज्जा स्त्री. नायक की प्रतीक्षा में सज-धज कर बैठी नायिका।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासर पुंन. दिवस।

वासव पुं. इन्द्र। एक राजकुमार। °केउ पुं [°केतु] हरिवंश का राजा, जनक का पिता। °दत्त पुं. विजयपुर नगर का राजा। °दत्ता स्त्री. एक आख्यायिका। °धणु पुंन [°धनुष्] इन्द्रधनुष। °नयर न [°नगर]। °पुरी स्त्री. इन्द्र-नगरी। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का पुत्र, जयन्त।

वासवदत्ता स्त्री. राजा चंड-प्रद्योत की पुत्री और वत्सराज उदयन की पत्नी।

वासवार पुं [दे] तुरग। श्वान।

वासवाल पुं [दे] श्वान।

वासस न [वासस्] वस्त्र।

वासा देखो वरिसा। °रत्त स्त्री. देखो वरिसा-रत्त। °वास पुं. चतुर्मास में एक स्थान में किया जाता निवास। °वासिय वि [°वार्षिक] वर्षाकाल-सम्बन्धी। °हू पुं [°भू] मेढक।

वासाणिया स्त्री [दे. वासनिका] वनस्पति-विशेष।

वासाणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला।

वासि स्त्री. देखो वासी।

वासिक } वि [वार्षिक] वर्षाकाल-भावी।
वासिक्क }

वासिट्ठ न [वाशिष्ठ] गोत्र-विशेष। पुंस्त्री. उसमें उत्पन्न। स्त्री. °ट्ठा, °ट्ठी।

वासिट्ठिया स्त्री [वाशिष्ठिका] एक जैन मुनि-शाखा।

वासित्तु वि [वर्षितृ] बरसनेवाला।

वासिद } वि [वासित] निवासित। रखा
वासिय } हुआ (अन्न आदि)बासी। सुगन्धित किया हुआ। भावित, संस्कारित।

वासी स्त्री. बसूला, बढ़ई का एक अस्त्र। °मुह पुं [°मुख] बसूले के तुल्य मुंहवाला कीट, द्वीन्द्रिय जन्तु।

वासुइ } पुं [वासुकि] एक महा-नाग।
वासुगि }

वासुदेव पुं. श्रीकृष्ण, नारायण। अर्ध-चक्र-वर्ती। त्रिखण्ड भूमि का अधीश।

वासुपुज्ज पुं [वासुपूज्य] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवें जिन भगवान्।

वासुली स्त्री [दे] कुन्द का फूल।

वाह सक [वाहय्] वहन कराना, चलाना।

वाह पुंस्त्री [व्याध] लुब्धक, बहेलिया। स्त्री. °ही।

°वाह पुं. अश्व। जहाज। नौका। भारवहन। परिमाण-विशेष। आठ सौ आढ़क का एक मान। शाकटिक। °वाहिया स्त्री [°वाहिका] घुड़सवारी।

वाहगण पुं [दे] मन्त्री, अमात्य, प्रधान।

वाहड वि [दे] भृत, भरा हुआ।

वाहडिया स्त्री [दे] काँवर, बहँगी।

वाहण पुंन [वाहन] रथ आदि यान। जहाज, नौका। न. चलाना। शकट। भार लाद कर चलाना। °साला स्त्री [°शाला] यान रखने का घर।

वाहणा स्त्री [दे] ग्रीवा।

वाहणा स्त्री [उपानह्] जूता।

वाहणिय वि [वाहनिक] वाहन-सम्बन्धी।

वाहणिया स्त्री [वाहनिका] वहन कराना, चलाना।

वाहत्तु देखो वाहर का हेकृ.।

वाहय वि [वाहक] चलानेवाला।

वाहय वि [व्याहत] व्याघात-प्राप्त।

वाहर सक [व्या+हृ] बोलना, कहना। आह्वान करना।

वाहलार वि [दे. वात्सल्यकार] स्नेही। सगा।

वाहलिया } स्त्री [दे] क्षुद्र नदी, छोटा
वाहली } जल-प्रवाह।

वाहा स्त्री [दे] वालुका।

वाहाया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष।

वाहि देखो वाहर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाहि पुंस्त्री [व्याधि] रोग।
वाहिअ देखो वाहित्त = व्याहृत।
वाहिअ वि [व्याधित] रोगी, बीमार।
वाहिणी स्त्री [वाहिनी] नदी। सेना, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ प्यादे हों वह सैन्य-विशेष। °णाह पुं [°नाथ] सेना-पति। °स पुं [°श] वही।
वाहित्त वि [व्याहृत] उक्त। कथित। आहूत।
वाहित्ति स्त्री [व्याहृति] उक्ति, आह्वान।
वाहिप्प° देखो वाहर का कर्म.।
वाहिम देखो वाह = वाहय् का कृ.।
वाहियाली स्त्री [वाह्याली] अश्व खेलने की जगह।
वाहिल्ल वि [व्याधिमत्] रोगी।
वाहुडिअ वि [दे] देखो बाहुडिअ।
वाहुय देखो वाहित्त = व्याहृत।
वि देखो अवि = अपि।
वि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—विरोध, प्रतिपक्षता। विशेष। विविधता। खराबी। अभाव। महत्त्व। भिन्नता। ऊँचाई। पाद-पूर्ति। पुं. पक्षी। वि उद्दीपक। ज्ञापक।
वि देखो बि = द्वि।
वि वि [विद्] जानकार। °उच्छा स्त्री [°जुगुप्सा] विद्वान् या साधु की निन्दा।
वि° स्त्री [विष्] पुरीष, विष्ठा।
विअ सक [विद्] जानना।
विअ न [वियत्] आकाश। °च्चर वि. आकाश-विहारी। °च्चरपुर न. एक विद्याधर-नगर।
विअ वि [विद्] जानकार। विज्ञान।
विअ देखो इव।
विअ पुं [वृक] श्वापद-जन्तु-विशेष, भेड़िया।
विअ पुं [व्यय] विगम, विनाश।
विअ वि [विगत] विनष्ट, मृत। °च्चा स्त्री [°र्चा] मृत आत्मा का शरीर।
विअ देखो अविअ = अपिच।
विअइ वि [विजयिन्] जो जीत गया हो।
विअइ स्त्री [विगति] विगम, विनाश।
विअइ देखो विगइ = विकृति।
विअइत्ता विअत्त = वि + वर्त्तय् का संकृ.।
विअइल्ल पुं [विचकिल] पुष्प-वृक्ष-विशेष। न. पुष्प-विशेष। वि. विकसित।
विअओलिअ वि [दे] मलिन।
विअंग सक [व्यङ्गय्] अंग से हीन करना—हाथ, कान आदि को काटना।
विअंगिअ वि [दे] निन्दित।
विअंजण देखो वंजण = व्यञ्जन।
विअंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ।
विअंटूत वि [दे] अवरोपित। मुक्त।
विअंति स्त्री [व्यन्ति] अन्त क्रिया। °कारय वि [°कारक] अन्त-क्रिया करनेवाला, कर्मों का अन्त करनेवाला।
विअंभ अक [वि + जृम्भ्] उत्पन्न होना। विकसना। जँभाई खाना। प्रकाश करना।
विअंभ वि [विदम्भ] निष्कपट, सत्य।
विअंसण वि [विवसन] वस्त्र-रहित।
विअंसय पुं [दे] व्याध, बहेलिया।
विअक्क सक [वि + तर्कय्] विचारना, विमर्श करना।
विअक्ख सक [वि + ईक्ष्] देखना।
विअक्खण वि [विचक्षण] विद्वान्। पण्डित।
विअग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल।
विअग्घ देखो वग्घ = व्याघ्र।
विअग्घ पुं [वैयाघ्र] व्याघ्र-शिशु।
विअज्जास देखो विवज्जास।
विअट्ट सक [विसं + वद्] अप्रमाणित करना, असत्य साबित करना।
विअट्ट अक [वि + वृत्] विचरना।
विअट्ट वि [विवृत्त] निवृत्त, व्यावृत्त। °भोइ वि [°भोजिन्] प्रतिदिन भोजन करनेवाला।
विअट्ट पुं [विवर्त] प्रपञ्च।
विअट्ट } वि [विसंवदित] संवाद-रहित,
विअट्टिअ } अप्रमाणित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विअट्ठ वि [विकृष्ट] दूर-स्थित।
विअड सक [वि + कटय्] प्रकट करना। आलोचना करना।
विअड वि [व्यर्द] लज्जित, लज्जा-युक्त।
विअड वि [विवृत] खुला हुआ। °गिह न [°गृह] चारों तरफ खुला घर, स्थान-मण्डपिका। °जाण न [°यान] ऊपर से खुला यान।
विअड न [दे] जीव-रहित पानी। मद्य। निर्दोष आहार।
विअड वि [विकृत] विकार-प्राप्त।
विअड वि [विकट] प्रकट। विशाल, विस्तीर्ण। सुन्दर। प्रचुर। पुं. एक ज्योतिष्क महाग्रह। एक विद्याधर-राजा। °भोइ वि [°भोजिन्] दिन में ही भोजन करनेवाला। °वइ, °वाइ पुं. [°पातिन्] पर्वत-विशेष।
विअड अक [विकटय्] विस्तीर्ण होना।
विअडण स्त्रीन [विकटन] अतिचारों की आलोचना। स्वाभिप्राय-निवेदन।
विअडी स्त्री [वितटी] खराब किनारा। जंगल।
विअड्डि स्त्री [वितर्दि] हवन-स्थान। चौतरा।
विअड्ढ वि [विदग्ध] निपुण। पण्डित।
विअड्ढक वि [विकर्षक] खींचनेवाला।
विअड्ढा स्त्री [विदग्धा] नायिका-भेद।
वियड्ढिम पुंस्त्री [विदग्धता] निपुणता। पाण्डित्य।
विअण पुंन [व्यजन] बेना, पंखा।
विअण वि [विजन] निर्जन।
विअणा स्त्री [वेदना] ज्ञान। सुख-दुःख का अनुभव। विवाह। पीड़ा। संताप।
विअणिय वि [वितनित, वितत] विस्तीर्ण।
विअणिय वि [विगणित] तिरस्कृत।
विअण्ण वि [विपन्न] मृत।
विअण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित।
विअत्त अक [वि + वर्त्तय्] घूम कर जाना।
विअत्त वि [व्यक्त] परिस्फुट, स्पष्ट। अमुग्ध, विवेकी। वृद्ध। पुं. महावीर का चतुर्थ गणधर। गीतार्थ मुनि। °किच्च न [°कृत्य] गीतार्थ का अनुष्ठान।
विअत्त वि [विदत्त] विशेष रूप से दत्त।
विअत्त पुं [विवर्त] एक ज्योतिष्क महाग्रह।
विअद्द वि [वितर्द] हिंसक।
विअद्ध देखो विअड्ढ = विदग्ध।
विअन्नु देखो विन्नु।
विअप्प सक [वि + कल्पय्] विचार करना। संशय करना।
विअप्प पुं [विकल्प] विविध तरह की कल्पना। वितर्क, विचार, संशय। भेद। देखो विगप्प = विकल्प।
विअब्भ देखो विदब्भ।
विअम्ह देखो विअंभ = वि + जृम्भ्।
विअय देखो विजय = विजय।
विअय वि [वितत] विशाल। प्रसारित। °पक्खि पुं [°पक्षिन्] मनुष्य-लोक से बाहर की एक पक्षी जाति। देखो वितत = वितत।
विअर अक [वि + चर्] विहरना।
विअर सक [वि + तॄ] अर्पण करना।
विअर पुं [दे] नदी आदि जलाशय सूख जाने पर पानी निकालने के लिए उसमें किया जाता गर्त। खड्डा।
विअल सक [भुज्] मोड़ना, वक्र करना।
विअल अक [वि + गल्] गल जाना। क्षीण होना। टपकना।
विअल अक [ओजय्] मजबूत होना।
विअल वि [विकल] हीन, असंपूर्ण। रहित, वन्ध्य। विह्वल। देखो विगल = विकल।
विअल सक [विकलय्] विकल बनाना।
विअल देखो विअड = विकट।
विअल देखो विदल = द्विदल।
विअलंबल वि [दे] दीर्घ।
विअलिअ वि [विगलित] नाश-प्राप्त। पतित, टपक कर गिरा हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विअल्ल अक [वि + चल्] क्षुब्ध होना। अव्यवस्थित होना।
विअस अक [वि + कस्] खिलना।
विअसावय वि [विकासक] विकसित करनेवाला।
विअह देखो विजह = वि + हा।
विआउआ स्त्री [विपादिका] बिवाई-रोग।
विआउरी स्त्री [विजनयित्री] ब्यानेवाली।
विआगर देखो वागर।
विआघाय देखो वाघाय।
विआण सक [वि + ज्ञा] जानना, मालूम करना।
विआण न [विज्ञान]। देखो विन्नाण।
विआण न [वितान] विस्तार। वृत्ति-विशेष। अवसर। यज्ञ। पुंन. चन्द्रातप, आच्छादन-विशेष।
विआणग वि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ।
विआय सक [वि + जनय्] जन्म देना।
विआर सक [वि + कारय्] विकृत करना।
विआर सक [वि + चारय्] विचारना, विमर्श करना।
विआर सक [वि + दारय्] फाड़ना।
विआर पुं [विकार] विकृत, प्रकृतिभिन्न।
विआर पुं [विचार] तत्त्व-निर्णय। तत्त्व-निर्णय के अनुकूल शब्द-रचना। ब्याल। दिशा-फरागत के लिए बाहर जाना। गमन की अनुकूलता। विचरण। अवकाश। विमर्श, मीमांसा। मत। °धवल पुं. एक राजा। °भूमि स्त्री. दिशा-फरागत का स्थान।
विआरण देखो वागरण।
विआरण वि [वैदारण] विदारण-सम्बन्धी।
विआरणा स्त्री [वितारणा] ठगाई।
विआरय वि [विचारक] विचार करनेवाला।
विआरिअ वि [वितारित] दिया गया। ठगा हुआ, विप्रतारित।
विआरिआ स्त्री [दे] पूर्वाह्ण का भोजन।

विआरिल्ल } वि [विकारवत्] विकारवाला,
विआरुल्ल } विकारयुक्त। स्त्री. °ल्ला।
विआल देखो विआल = वि + चारय्।
विआल देखो विआर = वि + दारय्।
विआल पुं [विकाल] सन्ध्या। °चारि वि [°चारिन्] विकाल में घूमनेवाला।
विआल पुं [दे] चोर, तस्कर।
विआल वि [व्याल]। देखो वाल = व्याल।
विआल देखो विआर, विच्चाल।
विआलग देखो विआलय = विकालक।
विआलणा देखो विआरणा = विचारणा।
विआलय वि [विदारक] विदारण-कर्त्ता।
विआलय पुं [विकालक] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष।
विआलिउ न [दे] सायंकाल का भोजन।
विआलुअ वि [दे] असहिष्णु।
विआव सक [वि + आप्] व्याप्त करना।
विआवड देखो वावड = व्यापृत।
विआवत्त पुं [व्यावर्त्त] घोष और महाघोष इन्द्रों के दक्षिण दिशा के लोकपाल। ऋजुवालिका नदी के तीर पर स्थित एक प्राचीन चैत्य। पुंन. एक देव-विमान।
विआवाय पुं [व्यापात] भ्रंश, नाश।
विआविअ देखो वावढ = व्यापृत।
विआस पुं [विकाश] मुँह आदि की फाड़। खुलापन। अवकाश।
विआस पुं [विकास] प्रफुल्लता।
विआस देखो वास = व्यास।
विआसइत्तअ } (शौ) वि [विकासयितृक]
विआसग } विकसित करनेवाला। वि [विकासक]।
विआसर } वि [विकस्वर] विकसनेवाला,
विआसिल्ल } प्रफुल्ल। वि [विकासिन्]।
विआह सक [व्या + ख्या] व्याख्या करना। कहना। वर्णन करना।
विआह पुं [विवाह] शादी। विविध प्रवाह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशिष्ट प्रवाह। वि. विशिष्ट संतानवाला। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ।

विआह वि [विबाध] बाध-रहित। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ।

विआह° स्त्री [व्याख्या] विशद रूप से अर्थ का प्रतिपादन। वृत्ति, विवरण। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ।

विइ स्त्री [वृति] रज्जु-बन्धन। देखो वइ = वृति।

विइअ वि [विदित] ज्ञात।

विइइन्न देखो विइकिण्ण।

विइंचिअ वि [विविक्त] विनाशित।

विइंत सक [वि + कृत्] काटना, छेदना।

विइंत देखो विचिंत।

विइकिण्ण वि [व्यतिकीर्ण] व्याप्त।

विइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत।

विइगिंछा } देखो वितिगिंछा।
विइगिच्छा }

विइगिट्ठ वि [व्यतिकृष्ट] दूर-स्थित, विप्रकृष्ट।

विइगिण्ण देखो विइकिण्ण।

विइज्जंत देखो वीअ = वीजय् का कवकृ.।

विइज्जंत देखो विकिर का कवकृ.।

विइण्ण वि [विकीर्ण] बिखरा हुआ। विक्षिप्त। देखो विकिण्ण।

विइण्ण वि [वितीर्ण] दिया हुआ, अर्पित।

विइण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह।

विइत्त देखो विचित्त।

विइत्त देखो विवित्त।

विइत्ता } विअ = विद् का संकृ.।
विइत्ताणं }

विइत्तिद (शौ) देखो विचित्तिय।

विइत्तु देखो विअ = विद् का संकृ.।

विइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित।

विउ वि [विद्, विद्वस्] विद्वान्, पण्डित। °प्पकड स्त्री [°प्रकृत] विद्वान् द्वारा किया हुआ।

विउअ वि [वियुत] वियुक्त, रहित।

विउअ वि [विवृत] विस्तृत। व्याख्यात।

विउअ (अप) देखो विओअ = वियोग।

विउंचिआ स्त्री [दे. विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा रोग का एक भेद।

विउंज सक [वि + युज्] विशेष रूप से जोड़ना।

विउक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति।

विउक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति, व्यवक्रान्ति] मरण।

विउक्कम सक [व्युत् + क्रम्] परित्याग करना। उल्लंघन करना। अक. च्युत होना, नष्ट होना, मरना। उत्पन्न होना।

विउक्कस सक [व्युत् + कर्षय्] गर्व करना, बड़ाई करना।

विउच्छा देखो वि-उच्छा = विद्-जुगुप्सा।

विउच्छेअ पुं [व्यवच्छेद] विनाश।

विउज्जम अक [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम करना।

विउज्झ अक [वि + बुध्] जागना।

विउट्ट सक [वि + कुट्टय्] विच्छेद करना, विनाश करना।

विउट्ट सक [वि + त्रोटय्] तोड़ डालना।

विउट्ट अक [वि+वृत्] उत्पन्न होना। निवृत्त होना।

विउट्ट सक [वि+वर्तय्] विच्छेद करना। अक. घूमकर जाना।

विउट्ट देखो विअट्ट = विवृत्त।

विउट्टण न [विकुट्टन] विच्छेद। आलोचना, अतिचार-विच्छेद।

विउट्टणा स्त्री [विकुट्टना] विविध कुट्टन। पीड़ा, संताप।

विउट्ठिअ वि [व्युत्थित] विरोधी बना हुआ।

विउड सक [वि + नाशय्] विनाश करना।

विउण वि [विगुण] गुण-रहित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउत्त वि [वियुक्त] विरहित, वियोग-प्राप्त ।
विउत्ता देखो विअत्त = वि + वर्तय् का संकृ ।
विउत्थिअ देखो विउट्ठिअ ।
विउद देखो विउअ = विवृत ।
विउद्ध वि [विबुद्ध] जागृत । विकसित ।
विउप्पकड वि [व्युत्प्रकट] अति प्रकट ।
विउब्भाअ अक [व्युद् + भ्राज्] शोभना, चमकना ।
विउब्भाअ [व्युद् + भ्राजय्] शोभित करना ।
विउम वि [विद्वस्] विद्वान् ।
विउर देखो विदुर ।
विउल वि [विपुल] प्रभूत, प्रचुर । विस्तीर्ण । उत्तम । अगाध, गम्भीर । पुं. राजगिर के समीप का एक पर्वत । °जस पुं [°यशस्] एक जिनदेव । °मइ स्त्री [°मति] मनःपर्यव ज्ञान का एक भेद । वि. उक्त ज्ञानवाला । °ाअरी स्त्री [°ाकरी] विद्या-विशेष । देखो विपुल ।
विउव देखो विउव्व = वैक्रिय ।
विउवसिय देखो विओसिय = व्यवशमित ।
विउवाय पुं [व्युत्पात] हिंसा, प्राणि-वध ।
विउव्व सक [वि + कृ, वि + कुर्व्] बनाना—दिव्य सामर्थ्य से उत्पन्न करना । अलंकृत करना ।
विउव्व न [वैक्रिय] अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर-विशेष । वैक्रिय शरीर की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म-विशेष । वि. वैक्रिय शरीर से सम्बन्ध रखनेवाला ।
विउव्वणया, विउव्वणा स्त्री [विक्रिया, विकुर्वणा] शक्ति-विशेष से किया जाता वस्तु-निर्माण । वैक्रिय-करण की शक्ति ।
विउव्वाढ वि [दे] विस्तीर्ण । दुःख-रहित ।
विउव्विअ वि [वैक्रियिक] वैक्रिय शरीर से सम्बन्ध रखनेवाला । देखो वेउव्विअ ।
विउस सक [व्युत् + सृज्] फेंकना ।
विउस वि [विद्वस्] विज्ञ ।
विउसग्ग देखो विओसग्ग ।
विउसमण न [व्युपशमन, व्यवशमन] उपशम, उपक्षय । सुरत का अवसान । वि. विनाशक ।
विउसमणया स्त्री [व्यवशमना] उपशम, क्रोध-परित्याग ।
विउसमिय देखो विओसमिय ।
विउसरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग ।
विउसरणया स्त्री [व्युत्सर्जना] ।
विउसव देखो विओसव ।
विउसवण देखो विउसमण ।
विउसविय देखो विओसविय ।
विउसिज्जा देखो विओसिज्जा ।
विउसिरणया देखो विउसरणया ।
विउस्स सक [वि + उश्] विशेष बोलना ।
विउस्स अक [विद्वस्य्] विद्वान् की तरह आचरण करना ।
विउस्सग्ग देखो विओसग्ग ।
विउस्सित्त वि [व्युत्सित, व्युत्सिक्त] अभिनिविष्ट, कदाग्रह-युक्त ।
विउस्सिय वि [व्युषित] विशेष रूप से रहा हुआ ।
विउस्सिय वि [व्युच्छ्रित] विविध तरह से आश्रित ।
विउह वि [विबुध] प्रेरणा करना ।
विउह वि [विबुध] पण्डित । पुं. देव । देखो विबुह ।
विऊरिअ वि [दे] नष्ट ।
विऊसिर सक [व्युत् + सृज्] परित्याग करना ।
विऊह पुं [व्यूह] रचना-विशेष ।
विएअ वि [वितेजस्] महान् प्रकाश ।
विएऊण अ [दे] चुनकर ।
विएस पुं [विदेश] परदेश । खराब गाँव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बन्धन-स्थान।
विओअ पुं [वियोग] जुदाई, बिछोह।
विओग देखो विओअ।
विओज सक [वि + योजय्] अलग करना।
विओजय वि [वियोजक] वियोग-कारक।
विओदर पुं [वृकोदर] भीमसेन, एक पाण्डव।
विओरमण न [व्युपरमण] विराधना। विनाश।
विओल वि [दे] उद्वेग-युक्त।
विओवाय पुं [व्यवपात] भ्रंश, नाश।
विओसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] परित्याग। तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का त्याग।
विओसमण देखो विउसमण।
विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त किया हुआ।
विओसरणया देखो विउसरणया।
विओसव सक [व्यव + शमय्] उपशान्त करना। ठण्डा करना, दबा देना।
विओसिज्जा अ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर।
विओसिय देखो विओसमिय।
विओसिय वि [व्यवसित] समाप्त किया हुआ।
विओसिय वि [विकोशित] कोश-रहित, निरावरण।
विओसिर देखो विऊसिर।
विओह पुं [विबोध] जागरण, जागृति।
विंख न [दे] वाद्य-विशेष।
विंचिणिअ वि [दे] विदारित। धारा।
विंचुअ पुं [वृश्चिक] जन्तु-विशेष, बिच्छू।
विंछ अक [वि + घट्] अलग होना।
विंछिअ } देखो विंचुअ।
विंछुअ }
विंजण देखो वंजण।
विंजण देखो विअण = व्यजन।
विंझ पुं [विन्ध्य] विन्ध्याचल पर्वत। व्याध, बहेलिया। एक जैन मुनि। एक श्रेष्ठि-पुत्र।
विंट सक [वेष्टय्] लपेटना।
विंट न [वृन्त] फल-पत्र आदि का बन्धन।
विंटल } न [दे] वशीकरण-विद्या। निमित्त आदि का प्रयोग।
विंटलिअ }
विंटलिआ स्त्री [दे] पोटली।
विंटिया स्त्री [दे] पोटली। मुद्रिका।
विंतर पुं [व्यन्तर] बिच्छू आदि दुष्ट जन्तु। देव-जाति।
विंतागी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ।
विंद सक [विद्] जानना। प्राप्त करना।
विंद देखो वंद = वृन्द।
विंदारग } देखो वंदारय। °वर पुं॰ इन्द्र।
विंदारय }
विंदावण पुंन [वृन्दावन] मथुरा का एक वन।
विंदुरिल्ल वि [दे] उज्ज्वल। मंजुल घोष-वाला। म्लान। विस्तृत।
विंद्र देखो वंद्र।
विंद्रावण देखो विंदावण।
विंध सक [व्यध्] बींधना, छेदना, बेधना।
विंभय देखो विम्हय = विस्मय।
विंभर देखो विम्हर।
विंभल वि [विह्वल] व्याकुल।
विंभिअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित।
विंभिअ देखो विअंभिअ।
विंसदि (शौ) स्त्री [विंशति] बीस।
विकंथ सक [वि + कत्थ्] प्रशंसा करना।
विकंप अक [वि + कम्प्] हिल जाना।
विकंप सक [वि + कम्पय्] हिलाना, चलाना। छोड़ना। अपने मंडल से बाहर निकलना। भीतर प्रवेश करना।
विकच वि [विकच] विकसित।
विकट्ट सक [वि + कृत्] काटना।
विकट्ठु देखो विअट्टु।
विकड्ढ सक [वि + कृष्] खींचना।
विकत्त देखो विकट्ट।
विकत्तु वि [विकर्तितृ] विक्षेपक, विनाशक।
विकत्थ देखो विकंथ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकप्प देखो विअप्प ।
विकप्पण न [विकल्पन] छेदना, काटना ।
विकप्पिय देखो विगप्पिअ ।
विकय देखो विगय = विकृत ।
विकय देखो विकच ।
विकर सक [वि + कृ] विकार पाना ।
विकरण न [विकरण] विक्षेपण, विनाश ।
विकराल देखो विगराल ।
विकल देखो विअल = विकल । देखो विगल = विकल ।
विकस देखो विअस ।
विकहा देखो विगहा ।
विकारिण वि [विकारिन्] विकार-युक्त ।
विकासर देखो विआसर ।
विकिइ देखो विगइ = विकृति ।
विकिंचण देखो विगिंचण ।
विकिंचणया देखो विगिंचणया ।
विकिट्ठ वि [विकृष्ट] उत्कृष्ट । न. लगातार चार दिनों का उपवास । देखो विगिट्ठ ।
विकिण सक [वि + क्री] बेचना ।
विकिण्ण वि [विकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ । आकृष्ट । देखो विइण्ण, विकीर्ण ।
विकिदि देखो विगइ = विकृति ।
विकिय देखो विगिय ।
विकिर अक [वि + कृ] बिखरना । सक. फेंकना । हिलाना ।
विकिरण देखो विकरण ।
विकिरिया स्त्री [विक्रिया] विविध क्रिया । विशिष्ट क्रिया । देखो विक्किरिया ।
विकीण देखो विकिण ।
विकुच्छिअ वि [विकुत्सित] खराब, दुष्ट ।
विकुज्ज सक [विकुब्जय्] कुब्ज करना । दबाना ।
विकुप्प अक [वि + कुप्] कोप करना ।
विकुव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व् ।
विकुस पुं [विकुश] बल्वज आदि तृण ।
विकूड सक [वि + कूटय्] प्रतिघात करना ।
विकूण सक [वि + कूणय्] घृणा से मुंह मोड़ना ।
विकोअ पुं [विकोच] विस्तार ।
विकोव देखो विगोव ।
विकोवण न [विकोपन] विकास, प्रसार ।
विकोवणया स्त्री [विकोपना] विपाक ।
विकोविय वि [विकोविद] कुशल ।
विकोस वि [विकोश] कोश-रहित ।
विकोस, विकोसाय } अक [विकोशय्] कोश-रहित होना, विकसना । नंगा होना । फैलना ।
विक्क सक [वि + क्री] बेचना ।
विक्कअ पुं [विक्रय] बेचना ।
विक्कअ देखो विक्कव ।
विक्कइ वि [विक्रयिन्] बेचनेवाला ।
विक्कंत वि [विक्रान्त] पराक्रमी । पुं. पहली नरक-भूमि का बारहवाँ नरकेन्द्रक ।
विक्कंति स्त्री [विक्रान्ति] विक्रम, पराक्रम ।
विक्कंभ देखो विक्खंभ = विष्कम्भ ।
विक्कणण न [विक्रयण] बेचना ।
विक्कम अक [वि + क्रम्] पराक्रम करना ।
विक्कम पुं [विक्रम] पराक्रम । सामर्थ्य । एक राजा । राजा विक्रमादित्य । °जस पुं [°यशस्] एक राजा । °पुर न. एक नगर । °राय पुं [°राज] एक राजा । °सेण पुं [°सेन] एक राज-कुमार । °इच्च, °इत्त पुं [°आदित्य] एक राजा ।
विक्कमण पुं [दे] चतुर चालवाला घोड़ा ।
विक्कव वि [विक्लव] व्याकुल ।
विक्कि देखो विक्कइ ।
विक्किअ वि [दे] सुधारा हुआ ।
विक्किंत वि [विकृत्त] छिन्न, काटा हुआ ।
विक्किट्ठ देखो विकिट्ठ ।
विक्किण सक [वि + क्री] बेचना ।
विक्किय देखो विउव्व = वैक्रिय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विक्किर सक [वि + कृ] बिखेरना, छितराना ।

विक्किरिया स्त्री [विक्रिया] विकार । देखो विकिरिया ।

विक्कीय देखो विक्किय = विक्रीत ।

विक्के सक [वि + क्री] बेचना ।

विक्केणुअ वि [दे] बेचने-योग्य ।

विक्कोण पुं [विकोण] घृणा से मुँह सिकुड़ना ।

विक्कोस अक [वि + क्रुश्] चिल्लाना ।

विक्खंभ पुं [दे] जगह । बीच का भाग । विवर, छिद्र ।

विक्खंभ पुं [विष्कम्भ] विस्तार । चौड़ाई । बाहुल्य, स्थूलता, मोटाई । प्रतिबन्ध । नाटक का एक अंग । द्वार के दोनों तरफ के बीच का अंतर ।

विक्खंभिअ वि [विष्कम्भित] निरुद्ध, रोका हुआ ।

विक्खण न [दे] कार्य ।

विक्खय वि [विक्षत] व्रण-युक्त ।

विक्खर सक [वि + कृ] छितराना । फैलाना । इधर-उधर फेंकना ।

विक्खवण न [विक्षपण] विनाश । वि. विनाशक ।

विक्खाइ स्त्री [विख्याति] प्रसिद्धि ।

विक्खाय वि [विख्यात] प्रसिद्ध ।

विक्खास वि [दे] विरूप । खराब ।

विक्खिण्ण वि [दे] आयत । लम्बा । अवतीर्ण । न. जघन ।

विक्खिण्ण देखो विकिण्ण ।

विक्खित्त वि [विक्षिप्त] फेंका हुआ । भ्रान्त, पागल ।

विक्खिर देखो विक्खर ।

विक्खिव सक [वि + क्षिप्] दूर करना । प्रेरणा । फेंकना ।

विक्खेव पुं [विक्षेप] क्षोभ । उचाट, ग्लानि । ऊँचा फेंकना । फेंकना । शृंगार-विशेष । अवज्ञा से किया हुआ मण्डन । चित्त-भ्रम । विलंब । सैन्य ।

विक्खेवणी स्त्री [विक्षेपणी] कथा का एक भेद ।

विक्खेविया स्त्री [विक्षेपिका] व्याक्षेप ।

विक्खोड सक [दे] निन्दा करना ।

विखंडिय वि [विखण्डित] खण्डितकृत ।

विग देखो विअ = वृक ।

विगइ स्त्री [विकृति] विकार-जनक घृत आदि वस्तु । विकार ।

विगइ स्त्री [विगति] विनाश ।

विगइंगाल वि [विगताङ्गार] राग-रहित ।

विगइच्छ वि [विगतेच्छ] निःस्पृह ।

विगंच देखो विगिंच ।

विगच्छ अक [वि + गम्] नष्ट होना ।

विगज्झ देखो विगह = वि + ग्रह् ।

विगड देखो विअड = विकट ।

विगड देखो विअड = विवृत ।

विगण सक [वि + गणय्] निन्दा करना । घृणा करना ।

विगत्त सक [वि + कृत्] काटना, छेदना ।

विगत्त वि [विकृत्त] काटा हुआ, छिन्न ।

विगत्तग वि [विकर्तक] काटनेवाला ।

विगत्थय वि [विकत्थक] प्रशंसा करनेवाला । आत्मश्लाघा करनेवाला ।

विगप्प देखो विअप्प = वि + कल्पय् ।

विगप्प पुं [विकल्प] एक पक्ष में प्राप्ति । देखो विअप्प = विकल्प ।

विगप्पिअ वि [विकल्पित] उत्प्रेक्षित, कल्पित । चिन्तित, विचारित । काटा हुआ, छिन्न ।

विगम पुं. विनाश ।

विगय वि [विकृत] विकार-प्राप्त ।

विगय वि. [विगत] नाश-प्राप्त । पुं. एक नरक-स्थान । °धूम वि. द्वेष-रहित । °सोग पुं [°शोक] एक महा-ग्रह । ज्योतिष्क देव-विशेष । देखो वीअ-सोग । °सोगा स्त्री [°शोका] विजय-विशेष की एक नगरी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विगरण न [विकरण] परिष्ठापन, परित्याग ।
विगरह सक [वि + गर्ह्] निन्दा करना ।
विगराल वि [विकराल] भीषण ।
विगल अक [वि + गल्] टपकना । चूना ।
विगल पुं [विकल] विकलेन्द्रिय—दो, तीन या चार ज्ञानेन्द्रियवाला जन्तु । देखो विअल = विकल । °दिस पुं [°देश] नय-वाक्य ।
विगलिंदिय पुं [विकलेन्द्रिय] दो, तीन या चार इन्द्रियवाला जन्तु ।
विगस अक [वि + कस्] खिलना, फूलना ।
विगह सक [वि + ग्रह्] लड़ाई करना । वर्ग-मूल निकालना । समास आदि का समानार्थक वाक्य बनाना ।
विगह देखो विग्गह ।
विगहा स्त्री [विकथा] शास्त्र-विरुद्ध वार्ता । स्त्री आदि की अनुपयोगी बात ।
विगाढ वि. विशेष गाढ़ । चारों ओर से व्याप्त ।
विगाण न [विगान] । लोकापवाद । विरोध ।
विगार पुं [विकार] विकृति ।
विगाल देखो विआल = विकाल ।
विगालिय वि [विगालित] विलम्बित, प्रतीक्षित ।
विगाह अक [वि + गाह्] अवगाहन करना । प्रवेश करना ।
विगिंच सक [वि + विच्] पृथक् करना । परित्याग करना । विनाश करना ।
विगिंचण, विगिंचणया } न [विवेचन] परिष्ठापन, परित्याग । स्त्री [विवेचना] निर्जरा, विनाश ।
विगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संदेह, वहम ।
विगिट्ठ देखो विकिट्ठ । °खमग पुं [°क्षपक] तपस्वी साधु । °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार चार या उससे अधिक दिनों का उपवास करनेवाला ।
विगिय देखो विगय = विकृत ।
विगिला, विगिलाअ } अक [वि + ग्लै] खिन्न होना ।
विगुण वि. गुण-रहित । प्रतिकूल ।
विगुत्त वि [विगुप्त] तिरस्कृत, अवधीरित । जो खुला पड़ गया हो वह ।
विगुप्प° देखो विगोव ।
विगुव्व देखो विउव्व = विकुर्व ।
विगोइय वि [विगोपित] जिसका दोष प्रकट किया गया हो वह ।
विगोव सक [वि + गोपय्] प्रकाशित करना । तिरस्कार करना । फजीहत करना ।
विगोवण न [विकोपन] विकास ।
विग्गह पुं [विग्रह] वक्रता । शरीर । युद्ध । समास आदि के समान अर्थवाला वाक्य । विभाग । आकृति । °गइ स्त्री [°गति] गति, वक्र गति ।
विग्गहिय वि [वैग्रहिक] शरीर के अनुरूप ।
विग्गहीअ वि [विग्रहिक] युद्ध-प्रिय ।
विग्गाहा (अप) स्त्री [विगाथा] छन्द-विशेष ।
विग्गुत्त वि [दे] व्याकुल किया हुआ ।
विग्गुत्त देखो विगुत्त ।
विग्गोव देखो विगोव ।
विग्गोव पुं [दे] आकुलता ।
विग्घ पुंन [विघ्न] अन्तराय । प्रतिबन्ध । आत्मा के वीर्य, दान आदि शक्तियों का घातक कर्म । °कर वि. प्रतिबन्धकर्त्ता । °ह वि [°घ्न] विघ्न-नाशक । °वह वि. विघ्नवाला ।
विग्घर वि [विगृह] गृहरहित ।
विग्घुट्ठ वि [विघुष्ट] चिल्लाया हुआ । देखो विघुट्ठ ।
विघट्ट सक [वि + घट्टय्] वियुक्त करना । विनाश करना ।
विघड देखो विहड = वि + घट् ।
विघत्थ वि [विघस्त, विग्रस्त] विशेष रूप से भक्षित । व्याप्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विघर देखो विग्घर ।
विघाय पुं [विघात] विनाश ।
विघायग वि [विघातक] विनाशकर्ता ।
विघुट्ठ न [विघुष्ट] विरूप आवाज करना । देखो विग्घुट्ठ ।
विघुम्म अक [वि + घूर्णय्] डोलना ।
विचक्खु वि [विचक्षुष्क] चक्षु-रहित ।
विचच्चिया स्त्री [विचर्चिका] रोग-विशेष । पामा ।
विचलिर वि [विचलितृ] चलायमान होनेवाला ।
विचल्लिय वि [विचलित] चंचल बना हुआ।
विचार देखो विआर = वि + चारय् ।
विचारग वि [विचारक] विचार-कर्त्ता ।
विचालि न. अन्तराल ।
विचिअ वि [विचित] चुना हुआ ।
विचिंत सक [वि + चिन्तय्] विचार करना ।
विचिक्की स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।
विचिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संशय, धर्म-कार्य के फल की तरफ संदेह ।
विचिट्ठिअ वि [विचेष्टित] जिसकी कोशिश की गई हो । न. चेष्टा, प्रयत्न ।
विचिण } सक [वि + चि] खोज करना ।
विचिण्ण } फूल आदि चुनना ।
विचित्त वि[विचित्र] विविध । अद्भुत, आश्चर्य-कारक अनेक रंगवाला, शबल । अनेक चित्रों से युक्त । पुं. पर्वत-विशेष । वेणुदेव और वेणु-दारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल । °कूड पुं [°कूट] शीतोदा नदी के किनारे पर्वत-विशेष । °पक्ख पुं [°पक्ष] वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल । चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।
विचित्ता स्त्री [विचित्रा] ऊर्ध्व लोक या अधो-लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी ।
विचुणिद (शौ) देखो विचिअ ।
विचुन्नण न [विचूर्णन] चूर-चूर करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना ।
विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित ।
विचेल वि. वस्त्र-वर्जित ।
विच्च सक [वि + अय्] व्यय करना । देखो विव्व ।
विच्च पुंन [दे] व्यूत, बुनने की क्रिया ।
विच्च न [दे. वर्त्मन्] बीच । मार्ग ।
विच्च अक [दे] समीप में आना ।
विच्चवण न [विच्यवन] भ्रंश, विनाश ।
विच्चामेलिय वि [व्यत्याम्रेडित] भिन्न-भिन्न अंशों से मिश्रित । तोड़ कर साँधा हुआ ।
विच्चाय पुं [वित्याग] परित्याग ।
विच्चि स्त्री [वीचि] तरंग ।
विच्चु } देखो विंचुअ ।
विच्चुअ }
विच्चुइ स्त्री [विच्युति] भ्रंश, विनाश ।
विच्चोअय न [दे] उपधान, ओसीसा ।
विच्छ° देखो विअ = विद् ।
विच्छड्ड सक [वि + छर्दय्] परित्याग करना । फेंकना । आच्छादित करना ।
विच्छड्ड पुं [विच्छर्द] वैभव । विस्तार ।
विच्छड्ड पुं [दे] निवह, समूह । ठाटबाट, धूमधाम ।
विच्छड्डि स्त्री [विच्छर्दि] विशेष वमन । परित्याग । विस्तार । परित्यक्त । विक्षिप्त । आच्छादित ।
विच्छय वि [विक्षत] विविध तरह से पीड़ित । छिन्न, हत । देखो विक्खय ।
विच्छल देखो विब्भल ।
विच्छवि वि. विरूप आकृतिवाला । पुं. एक नरक-स्थान ।
विच्छाय सक [विच्छायय्] निस्तेज करना ।
विच्छिअ वि [दे] पाटित, विदारित । विचित, चुना हुआ । विरल ।
विच्छिअ देखो विंछिअ ।
विच्छिंद सक [वि + छिद्] तोड़ना, अलग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना ।

विच्छिण्ण वि [विच्छिन्न] अलग किया हुआ ।

विच्छित्ति स्त्री. विन्यास, रचना । प्रान्त भाग । अंगराग ।

विच्छिव सक [वि+स्पृश्] विशेष रूप से स्पर्श करना ।

विच्छिव सक [वि+क्षिप्] फेंकना ।

विच्छु } देखो विंचुअ ।
विच्छुअ }

विच्छुडिअ वि [विच्छुटित] विरहित । मुक्त ।

विच्छुरिअ वि [दे] अपूर्व ।

विच्छुरिअ वि [विच्छुरित] जड़ा हुआ । संबद्ध । व्याप्त ।

विच्छुह सक [वि+क्षिप्] फेंकना, दूर करना ।

विच्छुह अक [वि+क्षुभ्] विक्षोभ करना, चंचल हो उठना ।

विच्छूढ वि [विक्षिप्त] फेंका हुआ, दूर किया हुआ । प्रेरित ।

विच्छूढ वि [दे] विरहित, विघटित ।

विच्छूढव्व देखो विच्छुह = वि + क्षिप् का कृ. ।

विच्छेअ पुं [दे] विलास । जघन ।

विच्छेअ पुं [विच्छेद] विभाग । वियोग । अनुबन्ध-विनाश, प्रवाह-निरोध ।

विच्छेअय वि [विच्छेदक] विच्छेद-कर्ता ।

विच्छेइअ वि [विच्छेदित] विच्छिन्न किया हुआ ।

विच्छोइय वि [दे] विरहित ।

विच्छोड देखो विच्छोल ।

विच्छोम पुं [दे. विदर्भ] नगर-विशेष ।

विच्छोय पुं [दे] विरह । देखो विच्छोह ।

विच्छोल सक [कम्पय्] कँपाना ।

विच्छोलिअ वि [विच्छोलित] धोया हुआ ।

विच्छोव सक [दे] विरहित करना ।

विच्छोह पुं [दे] विरह ।

विच्छोह पुं [विक्षोभ] विक्षेप । चंचलता ।

विछल सक [वि+छलय्] छलित करना ।

विछोय देखो विच्छोव ।

विजइ वि [विजयिन्] विजेता ।

विजंभ देखो विअंभ = वि + जृम्भ् ।

विजढ वि [वित्यक्त] परित्यक्त ।

विजण देखो विअण = विजन ।

विजय सक [वि+जि] जीतना । अक. उत्कर्ष-युक्त होना ।

विजय पुं. निर्णय, शास्त्र के अर्थ का ज्ञान-पूर्वक निश्चय । अनुचिन्तन । आश्रय, स्थान । जीत । एक देव-विमान । उसके निवासी देवता । अहोरात्र का बारहवाँ या सत्रहवाँ मुहूर्त । भ. नेमिनाथजी के पिता । भारतवर्ष के बीसवें भावी जिनदेव । तृतीय चक्रवर्ती के पिता । आश्विन मास । भारतवर्ष में उत्पन्न द्वितीय बलदेव । भारतवर्ष का भावी दूसरा बलदेव । ग्यारहवें चक्रवर्ती राजा का पिता । एक राजा । एक क्षत्रिय । भगवान् चन्द्रप्रभ का शासन-देव । जंबूद्वीप का पूर्व द्वार । उस का अधिष्ठाता देव । लवण समुद्र का पूर्व द्वार । उस का अधिपति देव । महा-विदेह वर्ष का प्रान्त-तुल्य प्रदेश । उत्कर्ष । पराभव करके ग्रहण करना । प्रथम शताब्दी के एक जैन आचार्य । अभ्युदय । समृद्धि । धातकी खण्ड का पूर्व द्वार । कालोद समुद्र, पुष्कर-वरद्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का पूर्व द्वार । रुचक पर्वत का एक कूट । एक राज-कुमार । छन्द-विशेष । वि. जीतनेवाला । °चरपुर न. एक विद्याधर-नगर । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण । °ढक्का स्त्री. विजय-सूचक भेरी । °देव पुं. अठारहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य । °पुर न. नगर-विशेष । °पुरा, °पुरी स्त्री. पक्ष्मकावती नामक विजय-क्षेत्र की राजधानी । °माण पुं [°मान] एक जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य । °वंत वि [°वत्] विजयी । °वत्त न [°ावर्त] चैत्य-विशेष । °वद्धमाण पुंन [°वर्धमान] ग्राम-विशेष । °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] विजय-सूचक पताका । °सायर पुं [°सागर] एक सूर्यवंशी राजा । °सिंह, °सीह पुं. सुप्रसिद्ध जैनाचार्य । एक विद्याधर राजकुमार । °सूरि पुं. चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य । °सेण पुं [°सेन] जैन आचार्य जो आम्रदेव सूरि के शिष्य थे ।

विजयंता, विजयंती स्त्री [वैजयन्ती] पक्ष की आठवीं रात । एक रानी ।

विजया स्त्री. भ. शान्तिनाथ की दीक्षा-शिविका । भ. अजितनाथजी की माता का नाम । पाँचवें बलदेव की माता । अंगारक आदि ग्रहों की एक पटरानी । विद्या-विशेष । पूर्व-रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । पाँचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—स्त्री-रत्न । विजय नामक देव की राजधानी । वप्रा नामक विजय की राजधानी । पक्ष की सातवीं रात । एक श्रेष्ठिनी । भ. विमलनाथ-जी की शासन-देवी । भ. सुमतिनाथजी की दीक्षा-शिविका । एक पुष्करिणी ।

विजल वि. जल-रहित । न. जल-रहित पंक । देखो विज्जल ।

विजह सक [वि + हा] परित्याग करना ।

विजाइय वि [विजातीय] भिन्न जाति का ।

विजाण देखो विआण = वि + ज्ञा ।

विजाणग, विजाणय, विजाणुअ वि [विज्ञायक] जाननेवाला, विज्ञ । [विज्ञ, विज्ञायक] ऊपर देखो ।

विजादीअ (शौ) देखो विजाइय ।

विजाय न [दे] लक्ष्य, निशाना ।

विजिअ वि [विजित] पराभूत ।

विजुत्त वि [वियुक्त] विरहित ।

विजुरि (अप) स्त्री [विद्युत्] बिजली ।

विजेट्ठ वि [विज्येष्ठ] मध्यम ।

विजोज सक [वि + योजय्] वियोग करना, अलग करना ।

विजोयावइत्तु वि [वियोजयितृ] वियोजक ।

विजोहा स्त्री [विज्जोहा] छन्द-विशेष ।

विज्ज अक [विद्] होना ।

विज्ज सक [वीजय्] पंखा चलाना ।

विज्ज पुं [वैद्य] चिकित्सक, हकीम ।

विज्ज पुं. ब. [दे] देश-विशेष ।

विज्ज पुं [विद्वस्, विज्ञ] पण्डित, जानकार ।

विज्ज देखो वीरिअ ।

विज्ज° देखो विज्जा । °ज्झर (अप) देखो विज्जा-हर । °त्थि वि [°र्थिन्] अभ्यासी ।

विज्ज° देखो विज्जु ।

°विज्ज देखो पिज्ज ।

विज्जय न [वैद्यक] चिकित्सा ।

विज्जल पुं [विजल] एक नरक-स्थान । वि. जलरहित ।

विज्जल, विज्जुल न [दे. विजल] पंक, काँदो ।

विज्जलिया स्त्री [विद्युत्] बिजली ।

विज्जा स्त्री [विद्या] शास्त्र-ज्ञान । सम्यग् ज्ञान । मन्त्र । साधनावाला मंत्र । °अणुप्पवाय न [°अनुप्रवाद] जैन अंग ग्रन्थ । दसवाँ पूर्व । °चारण पुं. शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि । °चारणलद्धि स्त्री [चारणलब्धि] शक्ति-विशेष । °णुप्पवाय देखो °अणुप्पवाय । °णुवाय न [°नुवाद] दसवाँ पूर्व । °पिंड पुं °[पिण्ड] विद्या के बल से अर्जित भिक्षा । °मंत वि [°वत्] विद्या-सम्पन्न । °लय पुंन. पाठशाला । °सिद्ध वि. सभी विद्याओं से सम्पन्न । जिसको कम से कम एक महाविद्या सिद्ध हो वह । °हर पुं [°धर] क्षत्रियों का एक वंश । पुंस्त्री. उस वंश में उत्पन्न । स्त्री. °री । वि. शक्ति-विशेष-सम्पन्न । °हर-गोवाल पुं [°धरगोपाल] सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध आचार्य के शिष्य । °हरी स्त्री

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°धरी] एक जैन मुनि-शाखा। °हार (अप) न [°धर] छन्द-विशेष।

विज्जावच्च (अप) देखो वेयावच्च।

विज्जाहर वि [वैद्याधर] विद्याधर-सम्बन्धी।

विज्जिडिय देखो विज्झिडिय।

विज्जु पुं [विद्युत्] विद्याधर-वंश का राजा। भवनपति देवों का एक भेद। आमलकप्पा नगरी का एक गृहस्थ। एक नरक-स्थान। स्त्री. ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी। चमर नामक इन्द्र की एक पटरानी। सन्ध्या। वि. विशेष रूप से चमकनेवाला। °कार देखो °यार। °कुमार पुं. एक देव-जाति। °कुमारी स्त्री. विदिग्रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी। °जिज्झ (?)। °जिब्भ पुं [°जिह्व] अनुवेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत। °तेअ पुं [°तेजस्] विद्याधरवंश का राजा। °दंत पुं [°दन्त] एक अन्तर्द्वीप। उसमें रहने वाली मनुष्य-जाति। °दत्त पुं. विद्याधरवंश का राजा। °दाढ पुं [°दंष्ट्र] विद्याधर-वंश में उत्पन्न राजा। °पह, °प्पभ, °प्पह पुं [°प्रभ] एक वक्षस्कार पर्वत। विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत का अधिष्ठाता देव। अनुवेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत। उस पर्वत का निवासी देव। देवकुरुवर्ष में स्थित महाद्रह। न. एक विद्याधर-नगर। °मई स्त्री [°मती] एक स्त्री। °मालि पुं [°मालिन्] पंचशैल द्वीप का अधिपति यक्ष। रावण का सुभट। ब्रह्मदेवलोक का इन्द्र। °मुह पुं [°मुख] विद्याधर-वंश का राजा। एक अन्तर्द्वीप। उसका निवासी मनुष्य। °मेह पुं [°मेघ] विद्युत्प्रधान मेघ। बिजली गिरानेवाला मेघ। °यार पुं [°कार] विद्युद्-रचना। °लआ, °ल्लया स्त्री [°लता] विद्युत्। °ल्लेहाइद न [°लेखायित] बिजली की तरह आचरण। °विलसिअ न [°विलसित] छन्द-विशेष। बिजली का विलास। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक रानी।

विज्जुआ स्त्री [विद्युत्] बिजली। बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी। धरणेन्द्र की अग्रमहिषी।

विज्जुआइत्तु वि [विद्युत्कर्तृ] बिजली करनेवाला।

विज्जुला } देखो विज्जु = विद्युत्।
विज्जुली }

विज्जू देखो विज्जु। °माला स्त्री. छन्द-विशेष।

विज्जे अ [दे] मार्ग से। लिए।

विज्जोअ पुं [विद्योत] प्रकाश।

विज्जोइय } वि [विद्योतित] प्रकाशित।
विज्जोविय }

विज्झ सक [व्यध्] वेध करना।

विज्झ अक [वि + घट्] अलग होना।

विज्झ न [दे] बीझ, धक्का। ठेला।

विज्झ वि [विद्ध] बिधा हुआ।

विज्झडिय वि [दे] मिश्रित, व्याप्त।

विज्झल देखो विब्भल = विह्वल।

विज्झव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना, ठंढा करना।

विज्झा } अक [वि + ध्यै] बुझना, ठंढा
विज्झाअ } होना।

विज्झाअ } वि [विध्यात] बुझा हुआ,
विज्झाण } उपशान्त। संक्रम-विशेष।

विज्झाव देखो विज्झव।

विज्झिडिय पुं [दे] मत्स्य की एक जाति।

विटंक देखो विडंक।

विट्टाल सक [दे] अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना। दूषित करना।

विट्टी स्त्री [दे] गठरी। देखो विंटिया।

विट्ठ वि [वृष्ट] बरसा हुआ।

विट्ठ वि [विष्ट] प्रविष्ट। बैठा हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विट्ठ वि [दे] सो कर उठा हुआ ।
विट्ठअ न [विष्टप] जगत् ।
विट्ठंभ सक [वि + ष्टम्भय्] रोकना । स्थापित करना, रखना ।
विट्ठंभणया स्त्री [विष्टम्भना] स्थापना ।
विट्ठर पुंन [विष्टर] आसन ।
विट्ठा स्त्री [विष्ठा] बीट, पुरीष, मल । °हर न [°गृह] मलोत्सर्ग-स्थान ।
विट्ठि स्त्री [विष्टि] कर्म । ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण, अर्ध तिथि । बेगार । भद्रा नक्षत्र ।
विट्ठि स्त्री [वृष्टि] वर्षा । देखो वुट्ठि ।
विट्ठित्त वि [दे] अर्जित ।
विट्ठिय न [विस्थित] विशिष्ट स्थिति ।
विड पुं [विट] भँड़ुआ ।
विड न. एक तरह का नमक ।
विडंक पुंन [विटङ्क] कपोतपाली, प्रासाद आदि के आगे की ओर काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान, छतरी ।
विडंकिआ स्त्री [दे] वेदिका, चौतरा ।
विडंग देखो विडंक ।
विडंग पुंन [विडङ्ग] औषध-विशेष । वि. विदग्ध ।
विडंब सक [वि + डम्बय्] तिरस्कार करना । दुःख देना । नकल करना ।
विडंब सक [वि + डम्ब्रय्] विवृत करना ।
विडंब पुंन [विडम्ब] तिरस्कार । मायाजाल ।
विडंबग वि [विडम्बक] विडंबना-जनक ।
विडंबणा स्त्री [विडम्बना] तिरस्कार । दुःख । नकल । उपहास । कपट-वेष ।
विडज्झमाण वि [विदह्यमान] जो जलाया जाता हो वह, जलता हुआ ।
विडड्ढ देखो विदड्ढ ।
विडप्प } पुं [दे] राहु ।
विडय }
विडव पुं [विटप] पल्लव । शाखा । पल्लव-विस्तार । स्तम्ब गुच्छा ।
विडवि पुं [विटपिन्] वृक्ष । दरख्त ।
विडविड } सक [रचय्] बनाना ।
विडविड्ड }
विडिअ वि [व्रीडित] लज्जित ।
विडिंचिअ } वि [दे] विकराल । भीषण, भयंकर ।
विडिंचिर }
विडिम पुं [दे] बाल-मृग । गेंड़ा । वृक्ष । शाखा ।
विडिमा स्त्री [दे] शाखा ।
विडुच्छअ वि [दे] निषिद्ध ।
विडुविल्ल वि [दे] भीषण ।
विडूर पुं [विदूर] पर्वत-विशेष । देश-विशेष, जहाँ वैदूर्य रत्न पैदा होता है ।
विडोमिअ पुं [दे] गण्डक । मृग । गेंड़ा ।
विड्ड वि [दे] दीर्घ । प्रपंच । विस्तार ।
विड्ड वि [व्रीड, व्रीडित] लज्जित ।
विड्डर देखो विड्डिर ।
विड्डा स्त्री [व्रीडा] लज्जा । शरम ।
विड्डार न [विद्वार] देखो विड्डेर ।
विड्डिर न [दे] आभोग । आटोप । वि. रौद्र । भयंकर ।
विड्डिरिल्ला स्त्री [दे] रात्रि ।
विड्डुम देखो विद्दुम ।
विड्डुरिल्ल वि [वैडूर्यवत्] वैदूर्य रत्नवाला ।
विड्डुरी स्त्री [दे] आटोप ।
विड्डेर न [दे. विड्डेर] नक्षत्र-विशेष, पूर्व द्वारवाले नक्षत्रों में पूर्व दिशा से जाने के बदले पश्चिम दिशा से जाने पर पड़ता नक्षत्र । देखो विड्डार ।
विढज्ज (शौ) सक [वि + दह्] जलाना ।
विढणा स्त्री [दे] पार्ष्णि, कीली का नीचला भाग ।
विढत्त वि [अर्जित] उपार्जित ।
विढत्ति स्त्री [अर्जिति] उपार्जन ।
विढप्प अक [व्युत् + पद्] व्युत्पन्न होना ।
विढप्प° नीचे देखो ।
विढव सक [अर्ज्] उपार्जन करना ।
विढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ ।
विणइ वि [विनयिन्] दूर करनेवाला ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

विणइत्त वि [विनयवत्] विनयवाला ।
विणइत्तु वि [विनेतृ] विनीत बनानेवाला ।
विणइय वि [विनयित] शिक्षित किया हुआ ।
विणइल्ल देखो विणइत्त ।
विणट्ठ वि [विनष्ट] विनाश-प्राप्त ।
विणड सक [वि+नटय्, वि+गुप्] व्याकुल करना । विडम्बना करना ।
विणण न [वान] बुनना ।
विणभ सक [खेदय्] खिन्न करना ।
विणम सक [वि+नम्] विशेष नमना ।
विणमि देखो विनमि ।
विणय पुं [विनय] अभ्युत्थान । प्रणाम आदि भक्ति, शुश्रूषा, शिष्टता, नम्रता । संयम, चारित्र । एक नरक-स्थान । अपनयन । शिक्षा । अनुनय । वि. विनय-युक्त । निभृत, शान्त । क्षिप्त । जितेन्द्रिय । पुं. शास्त्रानुसार प्रजा का पालन । °मंत वि [°वत्] विनय-युक्त ।
विणय वि [विनत] विशेष रूप से नमा हुआ । पुंन. एक देव-विमान ।
विणय° देखो विणया । °तणय पुं [°तनय], °सुअ पुं [°सुत] गरुड पक्षी ।
विणयंधर पुं [विनयन्धर] एक सेठ का नाम ।
विणयण न [विनयन] विनय-शिक्षा ।
विणया स्त्री [विनता] गरुड की माता । °तणय पुं [°तनय] गरुड पक्षी ।
विणस देखो विणस्स ।
विणसिर वि [विनश्वर] नश्वर ।
विणस्स अक [वि+नश्] नष्ट होना ।
विणस्सर देखो विणसिर ।
विणा अ [विना] सिवाय ।
विणामिद (शौ)वि. [विनामित]नमाया हुआ ।
विणायग पुं [विनायक] यक्ष, एक देव-जाति । गणपति । गरुड । °त्थ न [°ास्त्र] गरुडास्त्र ।
विणास देखो विणस्स ।
विणास सक [वि+नाशय्] ध्वंस करना ।
विणास पुं [विनाश] विध्वंस ।
विणासग वि [विनाशक] विनाश-कर्ता ।
विणि° देखो विणी ।
विणिअंसण न [विनिदर्शन] खास उदाहरण ।
विणिअंसण वि [विनिवसन] वस्त्र-रहित ।
विणिइत्तु देखो विणइत्तु ।
विणिउत्त वि [विनियुक्त] कार्य में प्रवर्तित ।
विणिओग पुं [विनियोग] उपयोग, ज्ञान । कार्य में लगाना । लेन-देन ।
विणिओय सक [विनि+योजय्] जोड़ना ।
विणिकुट्टिय वि [विनिकुट्टित] कूटकर बैठाया हुआ ।
विणिक्कम देखो विणिक्खम ।
विणिक्कस सक [विनि+कृष्] खींच कर निकालना ।
विणिक्खंत वि [विनिष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ । जिसने गृह-त्याग किया हो ।
विणिक्खम अक [विनिस्+क्रम्] बाहर निकालना । संन्यास लेना ।
विणिक्खित्त वि [विनिक्षिप्त] फेंका हुआ ।
विणिगिण्ह सक [विनि+ग्रह्] निग्रह करना, दंड देना ।
विणिगूह सक [विनि+गूहय्] गुप्त रखना ।
विणिग्गम पुं [विनिर्गम] निःसरण ।
विणिग्गय वि [विनिर्गत] बाहर निकला हुआ, बाहर गया हुआ ।
विणिघाय पुं [विनिघात] मरण । भव-भ्रमण ।
विणिच्छ सक [विनिस्+चि] निश्चय करना ।
विणिच्छय पुं [विनिश्चय] निश्चय । परिज्ञान ।
विणिजुंज सक [विनि+युज्] जोड़ना, प्रवृत्त करना ।
विणिज्जंतण वि [विनियन्त्रण] नियन्त्रण-रहित । प्रकटित । कपट-रहित ।
विणिज्जरण } न [विनिर्जरण] निर्जरा,
विणिज्जरा } विनाश । स्त्री [विनिर्जरा] ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विणिज्जिअ वि [विनिर्जित] पराभूत ।
विणिद्द वि [विनिद्र] विकसित ।
विणिद्दलिय वि [विनिर्दलित] विदारित, तोड़ा हुआ ।
विणिद्धुण सक [विनिर् + धू] कँपाना ।
विणिप्फन्न वि [विनिष्पन्न] संसिद्ध, सम्पन्न ।
विणिप्फिडिअ वि [विनिस्फिटित] विनिर्गत ।
विणिबुड्ड देखो विणिवुड्ड ।
विणिब्भिन्न वि [विनिर्भिन्न] विदारित ।
विणिमीलिअ वि [विनिमीलित] मीचा हुआ ।
विणिमुक्क देखो विणिम्मुक्क ।
विणिमुय देखो विणिम्मुय ।
विणिम्मविअ वि [विनिर्मित] विरचित ।
विणिम्माण न [विनिर्माण] रचना ।
विणिम्मिअ देखो विणिम्मविअ ।
विणिम्मुक्क वि [विनिर्मुक्त] परित्यक्त ।
विणिम्मुय वि [विनिर् + मुच्] छोड़ना ।
विणिय देखो विणीअ ।
विणियट्ट देखो विणिवट्ट ।
विणियट्ट वि [विनिवृत्त] पीछे हटा हुआ । प्रणष्ट ।
विणियट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवृत्ति ।
विणियत्त देखो विणियट्ट ।
विणियत्ति स्त्री [विनिवृत्ति] निवृत्ति ।
विणिरोह पुं [विनिरोध] प्रतिबन्ध ।
विणिवट्ट अक [विनि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना ।
विणिवट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवर्तन, विराम ।
विणिवडिअ वि [विनिपतित] नीचे गिरा हुआ ।
विणिवत्ति देखो विणियत्ति ।
विणिवाइ वि [विनिपातिन्] मार गिरानेवाला ।
विणिवाइय न [विनिपातिक] एक तरह का नाटक ।
विणिवाइय वि [विनिपातित] मार गिराया हुआ, व्यापादित ।
विणिवाए सक [विनि+पातय्] मार गिराना ।
विणिवाडिअ देखो विणिवाइय ।
विणिवाद } पुं [विनिपात] निपात,
विणिवाय } विनाश । मरण । संसार ।
विणिवायण न [विनिपातन] मार गिराना ।
विणिवार सक [विन + वारय्] रोकना ।
विणिविट्ठ वि [विनिविष्ट] उपविष्ट । आसक्त ।
विणिवित्त देखो विणियट्ट ।
विणिवित्ति देखो विणियत्ति ।
विणिवुड्ड वि [विनिमग्न] निमग्न ।
विणिवेइअ वि [विनिवेदित] ज्ञापित ।
विणिवेस पुं [विनिवेश] स्थिति । रचना ।
विणिवेसिअ वि [विनिवेशित] स्थापित, रखा हुआ ।
विणिव्वर न [दे] पश्चात्ताप, अनुशय ।
विणिव्ववण न [विनिर्वपन] शान्ति, दाहोपशम ।
विणिस्सरिय वि [विनिःसृत] बाहर निकला हुआ ।
विणिस्सह वि [विनिस्सह] थका हुआ ।
विणिह° देखो विणिहण ।
विणिहट्टु देखो विणिहा का संकृ. ।
विणिहण सक [विनि + हन्] मार डालना ।
विणिहय वि [विनिहत] जो मारा गया हो ।
विणिहा सक [विनि+धा] व्यवस्था करना । स्थापन करना ।
विणिहाय देखो विणिघाय ।
विणिहिअ } वि [विनिहित] स्थापित ।
विणिहित्त }
विणिहित्तु देखो विणिहा का संकृ. ।
विणी अक [विनिर्+इ] बाहर निकलना ।
विणी सक [वि + नी] दूर करना । विनय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रहण कराना।
विणीअ वि [विनीत] दूर किया हुआ। विनय-युक्त। शिक्षित।
विणीआ स्त्री [विनीता] अयोध्या नगरी।
विणील वि [विनील] विशेष हरा रंग का।
विणु (अप) देखो विणा।
विणेअ वि [विनेय] शिक्षणीय, शिष्य।
विणोअ सक [वि + नोदय्] खण्डित करना। हटाना। खेल करना। कुतूहल करना।
विणोअ पुं [विनोद] क्रीडा। कौतुक।
विणोइअ वि [विनोदित] विनोद-युक्त-कृत।
विणोयक } वि [विनोदक] कुतूहल-जनक।
विणोयग
विण्ण देखो विण्णु।
विण्णत्त वि [विज्ञप्त] निवेदित।
विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] निवेदन। विनिर्णय। ज्ञान। विज्ञान।
विण्णय देखो विणइय।
विण्णय देखो विण्ण।
विण्णव सक [वि + ज्ञपय्] प्रार्थना करना। मालूम करना। कहना।
विण्णवणा स्त्री [विज्ञापना] विज्ञापन, निवेदन।
विण्णा सक [वि + ज्ञा] जानना।
विण्णाउ वि [विज्ञातृ] जाननेवाला।
विण्णाण देखो विन्नाण।
विण्णाण न [विज्ञान] अवाय-ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान।
विण्णाणि वि [विज्ञानिन्] निपुण, विचक्षण।
विण्णाय वि [विज्ञात] जाना हुआ। न. विज्ञान।
विण्णाव देखो विण्णव।
विण्णास वि [वि + न्यासय्] स्थापना करना, रखना।
विण्णास देखो [विन्यास] रचना, स्थापना।
विण्णु } वि [विज्ञ] विद्वान्।
विण्णुअ
विण्हावणक न [विस्नापनक] मन्त्र आदि द्वारा संस्कृत जल से कराया जाता स्नान।
विण्हि देखो वण्हि = वृष्णि।
विण्हु पुं [विष्णु] श्रेयांसनाथ के पिता। श्रवण नक्षत्र का अधिपति देव। राजा अन्धकवृष्णि का नववाँ पुत्र। जैन मुनि विष्णुकुमार। एक श्रेष्ठी। वासुदेव, नारायण श्रीकृष्ण। व्यापक। अग्नि। शुद्ध। एक स्मृति-कर्ता मुनि। आर्य जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि। स्त्री. ग्यारहवें जिनदेव की माता। °कुमार पुं. एक जैन मुनि। °सिरी स्त्री [°श्री] एक सार्थवाह-पत्नी। देखो विन्हु।
वितंड देखो वितड्ड।
वितण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित।
वितत पुं. वाद्य का एक प्रकार का शब्द। एक महाग्रह। देखो विअत्त। देखो विअय = वितत।
वितत न [दे] कार्य।
वितत्त वि [वितृप्त] विशेष तृप्त।
वितत्थ पुं [वित्रस्त] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष। वि. भयभीत।
वितत्था स्त्री [वितस्ता] एक महा-नदी।
वितड्ड वि [वितर्द] हिंसक। प्रतिकूल।
वितर देखो विअर = वि + तृ।
वितर (अप) सक [वि + स्तारय्] विस्तार करना।
वितरण देखो विअरण = वितरण।
वितल वि. शबल, चितकबरा।
वितह वि [वितथ] मिथ्या, असत्य।
वितिकिच्छिअ वि [विचिकित्सित] फल की तरफ संदेह वाला।
वितिकिण्ण देखो विइकिण्ण।
वितिक्कंत देखो विइक्कंत।
वितिगिंछ सक [वि + चिकित्स्] विचार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना। संशय करना। निन्दा करना।
वितिगिंछा देखो वितिगिच्छा।
वितिगिच्छ देखो वितिगिंछ।
वितिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संशय। चित्त-भ्रम। निन्दा।
वितिगिट्ठ देखो विइगिट्ठ।
वितिमिर वि. अन्धकार-रहित, विशुद्ध। अज्ञान-रहित। पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक विमान-प्रस्तट।
वितिरिच्छ वि [वितिर्यञ्च्] वक्र।
वित्त वि [दे] दीर्घ।
वित्त न द्रव्य। धन। वि. प्रसिद्ध। °म वि [°वत्] धनी।
वित्त न [वृत्त] छन्द, पद्य। आचरण। वि. उत्पन्न। अतीत। दृढ़। वर्तुल। अधीत। संसिद्ध। पूर्ण। °प्पाय वि [°प्राय] पूर्ण-प्राय। देखो वट्ट = वृत्त।
वित्त देखो वेत्त = वेत्र।
°वित्त देखो पित्त।
वित्तइ वि [दे] गर्वित। पुं.विलसित, विलास। गर्व।
वित्तंत पुं [वृत्तान्त] समाचार।
वित्तत्थ देखो व्रितत्थ।
वित्तविय देखो वट्टिअ, वत्तिअ = वर्तित।
वित्तास सक [वि + त्रासय्] डराना।
वित्तास पुं [वित्रास] भय, त्रास।
वित्ति पुं [वेत्रिन्] दरबान।
वित्ति स्त्री [वृत्ति] जीविका। टीका। आचरण, बर्तन। स्थिति। कौशिकी आदि रचना-विशेष। अन्तःकरण आदि का एक तरह का परिणाम। °अ वि [°द] वृत्ति देनेवाला। °आर वि [°कार] टीकाकार। °च्छेय, °छेय [°च्छेद] जीविका-विनाश। देखो वित्ती° = वृत्ति।
वित्तिअ वि [वित्तिक] धनवाला, वैभवशाली।
वित्ती° देखो वित्त = वृत्त। °कप्प वि [°कल्प] सिद्धप्राय, पूर्णप्राय।
वित्ती° देखो वित्ति = वृत्ति। °संखेव पुं [°संक्षेप] बाह्य तप का एक भेद—खाने, पीने और भोगने की चीजों को कम करना।
वित्तेस वि [वित्तेश] धनी, श्रीमन्त।
वित्थ पुंन [विस्त] सुवर्ण।
वित्थक्क अक [वि + स्था] स्थिर होना। विलम्ब करना। विरोध करना।
वित्थक्क देखो विथक्क।
वित्थड } वि [विस्तृत] विस्तार-युक्त।
वित्थय } संबद्ध।
वित्थर अक [वि + स्तृ] फैलना। बढ़ना।
वित्थर पुंन [विस्तर] विस्तार। शब्द-समूह।
वित्थर देखो वित्थड।
वित्थरण वि [विस्तरण] फैलानेवाला। वृद्धिजरेक।
वित्थार सक [वि + स्तारय्] फैलाना।
वित्थार पुं [विस्तार] फैलाव। प्रपञ्च। °रुइ वि [°रुचि] सब पदार्थों को विस्तार से जानने की चाहवाला सम्यक्त्वी।
वित्थारइत्तअ (शौ) वि [विस्तारयितृ] फैलानेवाला।
वित्थारग वि [विस्तारक] फैलानेवाला।
वित्थिण्ण वि [विस्तीर्ण] विस्तार-युक्त।
वित्थिय देखो वित्थड।
वित्थिर न [दे] विस्तार।
वित्थुय देखो वित्थड।
विथक्क वि [विष्ठित] विरोधी बना हुआ।
विद देखो विअ = विद्।
विदंड पुं [विदण्ड] कक्ष तक लम्बी लट्ठी।
विदंसग देखो विदंसय।
विदंसण न [विदर्शन] अन्धकार-स्थित वस्तु का प्रकाशन। देखो विदरिसण।
विदंसय वि [विदंशक] श्येन आदि हिंसक पक्षी।
विदड्ढ } वि [विदग्ध] पण्डित। विशेष
विदद्ध } दग्ध। अजीर्ण का एक भेद।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देखो विड्ड्ढ ।

विदब्भ पुंस्त्री [विदर्भ] देश-विशेष । सुपार्श्व-नाथ के गणधर । पुंस्त्री. विदर्भ की प्राचीन राजधानी, कुण्डिनपुर, आजकल 'नागपुर' ।

विदरिसण वि [विदर्शन] भय उत्पन्न हो वह वस्तु, विरूप आकारवाली विभीषिका आदि । देखो विदंसण ।

विदल न. वंश, बाँस ।

विदल न [द्विदल] चना आदि वह शुष्क धान्य जिसके दो टुकड़े समान होते हैं । वि. जिसके दो टुकड़े किए गए हों वह ।

विदलिद (शौ) वि [विदलित] खण्डित, चूर्णित ।

विदाअ देखो विद्दाय = विद्रुत ।

विदारग } वि [विदारक] विदारण-कर्ता ।
विदारय }

विदालण न [विदारण] विविध प्रकार से चीरना ।

विदिअ देखो विइअ ।

विदिण्ण देखो विइण्ण = वितीर्ण ।

विदिण्ण वि [विदीर्ण] फाड़ा हुआ ।

विदित्ता } विद = विद् का संकृ. ।
विदित्ताणं }

विदिस (अप) स्त्री [विदिशा] एक नगरी ।

विदिसा } स्त्री [विदिश्] उपदिशा, कोण ।
विदिसी° } विपरीत दिशा, असंयम ।

विदु देखो विउ ।

विदुगुंछा देखो विउच्छा ।

विदुग्ग न [विदुर्ग] समुदाय ।

विदुर वि. धीर । नागर । पुं. कौरवों के एक प्रख्यात मन्त्री ।

विदुलतंग न [विद्युल्लताङ्ग] हाहाहूहू की चौरासी लाख गुनी संख्या ।

विदुलता स्त्री [विद्युल्लता] विद्युल्लतांग की चौरासी लाख गुनी संख्या ।

विदुस देखो विदु ।

विदूसग } पुं [विदूषक] राजा के साथ
विदूसय } रहने वाला मुसाहब ।

विदेस देखो विएस = विदेश ।

विदेसिअ वि [वैदेशिक] परदेशी ।

विदेह पुं. राजा जनक । पुं. ब. बिहार का उत्तरीय प्रदेश 'तिरहुत' । पुंन. वर्ष-विशेष, महाविदेह-क्षेत्र । वि. विशिष्ट शरीरवाला । निर्लेप । पुं. अनंग । गृह-वास । निषध पर्वत का एक कूट । नीलवंत पर्वत का एक कूट । °जंबू स्त्री [°जम्बू] जम्बू वृक्ष-विशेष । °जच्च पुं [°जार्च, °यात्य] भगवान् महावीर । °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् महावीर की माता, रानी त्रिशला । °दुहिआ स्त्री [°दुहितृ] सीता । °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कूणिक ।

विदेहदिन्न पुं [वैदेहदत्त] भगवान् महावीर ।

विदेहा स्त्री. भगवान् महावीर की माता । त्रिशला देवी । जानकी ।

विदेहि पुं [वैदेहिन्] विदेह देश का अधिपति, तिरहुत का राजा ।

विदेही स्त्री [विदेही] राजा जनक की पत्नी, सीता की माता ।

विद्दंडिअ वि [दे] नाशित ।

विद्दड्ढ पुं [विदग्ध] एक नरक-स्थान ।

विद्दव सक [वि + द्रावय्] विनाश करना । हैरान करना । दूर करना । झरना ।

विद्दव पुं [विद्रव] उपद्रव । विनाश ।

विद्दा अक [वि + द्रा] खराब होना ।

विद्दाण वि [विद्राण] म्लान, निस्तेज । शोकातुर, दिलगीर ।

विद्दाय वि [विद्रुत] विनष्ट । पलायित । द्रव-युक्त ।

विद्दाय अक [विद्वस्य्]खुद को विद्वान् मानना ।

विद्दार देखो विड्डार ।

विद्दारण (अप) वि [विदारण] चीरनेवाला ।

विद्दुम पुं [विद्रुम] प्रवाल । उत्तम वृक्ष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°भ पुं. नववें बलदेव के पूर्व-जन्म के गुरु।
विद्दुय वि [विद्रुत] अभिभूत। पीड़ित।
विद्दूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम।
विद्देस पुं [विद्वेष] द्वेष। मत्सर।
विद्देस वि [विद्वेष्य] द्वेष्य-योग्य, अप्रिय।
विद्देसण न [विद्वेषण] एक अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर में शत्रुता होती है।
विद्देसिअ देखो विदेसिअ।
विदेसिअ वि [विद्वेषित] द्वेष-युक्त।
विद्ध सक [व्यध्] बींधना।
विद्ध वि [विद्ध] बींधा हुआ।
विद्ध देखो वुड्ढ = वृद्ध।
विद्धंस अक [वि + ध्वंस्] विनष्ट होना।
विद्धंस सक [वि + ध्वंसय्] विनष्ट करना।
विद्धत्थ वि [विध्वस्त] विनष्ट।
विद्धि स्त्री [वृद्धि] बढ़ती। समृद्धि। अभ्युदय। सम्पत्ति। अहिंसा। कलान्तर, सूद। व्याकरण-प्रसिद्ध स्वर का विकार। ओषधि-विशेष।
विद्धूण विद्ध = व्यध् का संकृ.।
विधम्म देखो विहम्म।
विधम्मिय वि [विधर्मित] तिरस्कृत।
विधवा देखो विहवा।
विधा अ [वृथा] मुधा, निरर्थक।
विधाण देखो विहाण = विधान।
विधाय देखो विहाय = विधातृ।
विधार सक [वि + धारय्] निवारण करना।
विधि (शौ) देखो विहि।
विधुर वि. देखो विहुर।
विधुव (शौ) देखो विहुण = वि + धू।
विधूण देखो विहुण = वि + धू।
विधूम पुं. अग्नि।
विधूय वि [विधूत] क्षुण्ण, सम्यक् स्पृष्ट। देखो विहूअ।
विनमि पुं भ० ऋषभदेव का पौत्र।
विनिज्झा सक [विनि + ध्यै] देखना।
विनिबद्ध वि [विनिबद्ध] सम्बद्ध, बँधा हुआ।
विनिमय पुं [विनिमय] व्यत्यय।
विनियट्ट देखो विणिवट्ट।
विनिरय वि [विनिरत] लीन, आसक्त।
विनिहन्न सक [विनि + हन्] मार डालना।
विनिहाय देखो विणिघाय।
विन्नप्प देखो विण्णव।
विन्नवणा स्त्री [विज्ञापना] प्रार्थना, विनती। महिला, नारी। देखो विण्णवणा।
विन्नविय वि [विज्ञापित] निवेदित।
विन्ना देखो विण्णा = वि + ज्ञा।
विन्ना देखो बिन्ना। °यड न [°तट] एक नगर का नाम।
विन्नाउ वि [विज्ञातृ] जाननेवाला।
विन्नाण न [विज्ञान] सद्बोध, ज्ञान। कला, शिल्प।
विन्नाणिय देखो विण्णाय।
विन्नाविय देखो विन्नविय।
विन्नासिअ (अप) [विनाशित] विनाश प्राप्त। निणासिअ।
विन्नेय देखो विन्ना = वि + ज्ञा।
विन्हु पुं [विष्णु] जैन मुनि, आर्य-जेहिल के शिष्य। देखो विण्हु। °पअ न [°पद] आकाश। °पदी स्त्री. गंगा नदी।
विपंची स्त्री [विपञ्ची] वाद्य-विशेष, वीणा।
विपक्क वि [विपक्व]। देखो विवक्क।
विपक्ख देखो विवक्ख।
विपक्खिअ वि [विपक्षिक] विरोधी, दुश्मन।
विपच्चइय न [विप्रत्ययिक] बारहवें जैन अंग ग्रन्थ का सूत्र-विशेष।
विपच्चमाण वि [विपच्यमान] जो पकाया जाता हो वह। जलता।
विपज्जय देखो विवज्जय।
विपज्जास देखो विवज्जास।
विपडिवत्ति देखो विप्पडिवत्ति।
विपडिसेह सक [विप्रति + सिध्] निषेध करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विपणोल्ल सक [विप्र + नोदय्] प्रेरणा करना।

विपण्ण देखो विवण्ण = विपन्न।

विपत्ति देखो विवत्ति = विपत्ति।

विपत्थाविद (शौ) वि [विप्रस्तावित] जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह।

विपरामुस सक [विपरा+मृश्] समारम्भ करना, हिंसा करना। पीड़ा उपजाना। हैरान करना। अक. उत्पन्न होना। देखो विप्परामुस।

विपराहुत्त वि [विपराङ्मुख] अतिशय उदासीन।

विपरिकम्म न [विपरिकर्मन्] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि क्रिया।

विपरिकुंचि वि [विपरिकुञ्चिन्] विपरिकुंचित नामक वन्दन-दोषवाला।

विपरिकुंचिय देखो विप्पलिउंचिय।

विपरिखल अक [विपरि + स्खल्] स्खलित होना। भूल करना।

विपरिणम अक [विपरि + णम्] बदलना। विपरीत होना।

विपरिणय वि [विपरिणत] रूपान्तर-प्राप्त।

विपरिणाम सक [विपरि + णमय्] विपरीत करना। बदलवाना।

विपरिणाम पुं [विपरिणाम] रूपान्तर-प्राप्ति। उलटा परिणाम, विपरीत अध्यवसाय।

विपरिधाव अक [विपरि + धाव्] इधर-उधर दौड़ना।

विपरियास देखो विप्परियास।

विपरिवसाव सक [विपरि + वासय्] रखना।

विपरीअ देखो विवरीअ।

विपलाअ अक [विपरा + अय्] दूर भागना।

विपल्हत्थ देखो विवल्हत्थ।

विपस्सि वि [विदर्शिन्] देखनेवाला।

विपाग देखो विवाग।

विपिक्ख देखो विप्पेक्ख।

विपिण देखो विविण।

विपित्त वि [दे] विकसित।

विपुल देखो विउल। °वाहण पुं [°वाहन] भारतवर्ष में होनेवाला बारहवाँ चक्रवर्ती राजा।

विप्प न [दे] पुच्छ।

विप्प पुं [विप्र] ब्राह्मण।

विप्प पुं [विप्रुष्, विप्र] मूत्र और विष्ठा के बिन्दु। विष्ठा और मूत्र।

विप्पइट्ठ देखो विप्पगिट्ठ।

विप्पइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ।

विप्पइर सक [विप्र+कॄ] बिखेरना।

विप्पउंज सक [विप्र + युज्] विरुद्ध प्रयोग करना। विशेष रूप से जोड़ना।

विप्पओअ } पुं [विप्रयोग] अलग, विरह।
विप्पओग }

विप्पकड वि [विप्रकट] विशेष रूप से प्रकट।

विप्पकिर देखो विप्पइर।

विप्पक्ख देखो विपक्ख।

विप्पगब्भिय वि [विप्रगल्भित] अत्यन्त धृष्ट।

विप्पगरिस पुं [विप्रकर्ष] दूरी, आसन्नता का अभाव।

विप्पगाल सक [नाशय्, विप्र + गालय्] नाश करना।

विप्पगिट्ठ वि [विप्रकृष्ट] दूरवर्ती। दीर्घ।

विप्पच्चय सक [विप्र + त्यज्] छोड़ना।

विप्पच्चय पुं [विप्रत्यय] संदेह। वि. अविश्वसनीय।

विप्पजढ वि [विप्रहीण] परित्यक्त।

विप्पजह सक [विप्र + हा] छोड़ देना।

विप्पजह न [विप्रहाण] परित्याग। °सेणिया स्त्री [°श्रेणिका] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक परिकर्म—अंश-विशेष।

विप्पजहणा } स्त्री [विप्रहाणि] प्रकृष्ट
विप्पजहन्ना } त्याग, परित्याग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विप्पजोग देखो विप्पओअ ।
विप्पडिइ अक [विपरि + इ] विपरीत होना ।
विप्पडिघाय पुं [विप्रतिघात] प्रतिबन्ध ।
विप्पडिपह पुं [विप्रतिपथ] विपरीत मार्ग ।
विप्पडिवण्ण वि [विप्रतिपन्न] जिसने विशेष रूप से स्वीकार किया हो वह । विरोध-प्राप्त ।
विप्पडिवत्ति स्त्री [विप्रतिपत्ति] विरोध । प्रतिज्ञा-भंग ।
विप्पडिवेअ, विप्पडिवेद } सक [विप्रति + वेदय्] जानना । विचारना ।
विप्पडिसिद्ध वि [विप्रतिषिद्ध] आपस में असंमत ।
विप्पडीव वि [विप्रतीप] प्रतिकूल ।
विप्पणट्ठ वि [विप्रनष्ट] पलायित, नाश-प्राप्त ।
विप्पणम, विप्पणव } सक [विप्र + णम्] नमना । अक. तत्पर होना ।
विप्पणस्स अक [विप्र + नश्] नष्ट होना ।
विप्पणास पुं [विप्रणाश] विनाश ।
विप्पतार सक [विप्र + तारय्] ठगना ।
विप्पदीअ, विप्पदीव } (शौ) देखो विप्पडीव ।
विप्पमाय पुं [विप्रमाद] विविध प्रमाद ।
विप्पमुंच सक [विप्र + मुच्] छोड़ना ।
विप्पमुक्क वि [विप्रमुक्त] विमुक्त ।
विप्पय न [दे] खल-भिक्षा । दान । वि. वापित । पुं. वैद्य ।
विप्पयार सक [विप्र + तारय्] ठगना ।
विप्परद्ध वि [दे] विशेष पीड़ित । देखो परद्ध ।
विप्परामुस देखो विपरामुस ।
विप्परिणम देखो विपरिणम ।
विप्परिणय देखो विपरिणय ।
विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरिणमय् ।
विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरिणाम ।
विप्परियास सक [विपरि + आसय्] व्यत्यय करना उलटा करना ।
विप्परियास पुं [विपर्यास] व्यत्यय । विपरीतता, परिभ्रमण ।
विप्परुद्ध वि [विप्ररुद्ध] तिरस्कृत ।
विप्पल देखो विप्प = विप्र ।
विप्पलंभ सक [विप्र + लभ्] ठगना ।
विप्पलंभ पुं [विप्रलम्भ] वञ्चना । शृङ्गार की एक अवस्था—जिसमें उत्कृष्ट अनुराग होने पर भी प्रिय समागम नहीं होता । विपर्यास । विरह ।
विप्पलंभअ वि [विप्रलम्भक] प्रतारक, ठगनेवाला ।
विप्पलद्ध वि [विप्रलब्ध] वञ्चित ।
विप्पलय पुंन [दे] विविधता । विचित्रता ।
विप्पलविद (शौ) न [विप्रलपित] बकवाद ।
विप्पलाअ देखो विपलाअ ।
विप्पलाअ, विप्पलाव } पुं [विप्रलाप] परिवेदन, रोना । बकवाद । विरहालाप ।
विप्पलिउंचिअ न [विपरिकुञ्चित] गुरु को सम्पूर्ण वन्दन न करके बीच में बातचीत करने का एक दोष ।
विप्पलुंपग वि [विप्रलोपक] लुटेरा ।
विप्पलोहण वि [विप्रलोभन] लुभानेवाला ।
विप्पव पुं [विप्लव] क्रान्ति । दूसरे राजा के राज्य आदि से भय । अस्वस्थता ।
विप्पवर न [दे] भल्लातक, भिलावा ।
विप्पवस अक [विप्र + वस्] प्रवास में जाना, देशान्तर जाना ।
विप्पसन्न वि [विप्रसन्न] विशेष प्रसन्न । प्रसन्न-चित्त का मरण ।
विप्पसर अक [विप्र + सृ] फैलना ।
विप्पसाय सक [विप्र + सादय्] प्रसन्न करना ।
विप्पसीअ अक [विप्र + सद्] प्रसन्न होना ।
विप्पहय वि [विप्रहत] आहत, जख्मी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विप्पहाइय वि [विप्रभाजित] विभक्त।
विप्पहीण } वि [विप्रहीण] रहित।
विप्पहूण }
विप्पावग वि [दे] हास्य-कर्ता।
विप्पिअ पुंन [विप्रिय] अप्रिय। अपराध। °आरय वि [°कारक] अप्रिय-कर्ता। अपराध-कर्ता।
विप्पिडिअ वि [दे] नाशित।
विप्पीइ स्त्री [विप्रीति] अप्रीति।
विप्पु स्त्री [विप्रुष्] बिन्दु, अवयव।
विप्पुअ वि [विप्लुत] उपद्रव-युक्त।
विप्पुस पुंन. देखो विप्पु।
विप्पेक्ख सक [विप्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना।
विप्पोसहि स्त्री [विप्रौषधि] आध्यात्मिक-शक्ति-विशेष, जिसके प्रभाव से योगी के विष्ठा और मूत्र का बिन्दु ओषधि का काम करता है।
विप्फंद अक [वि + स्पन्द्] इधर-उधर चलना, तड़फना।
विप्फरिस पुं [विस्पर्श] विरुद्ध स्पर्श।
विप्फाडग वि [विपाटक] चीरनेवाला।
विप्फाडिअ वि [दे. विपाटित] नाशित।
विप्फारिय वि [विस्फारित] विस्तारित। विकासित।
विप्फाल सक पुं [दे] पूछना। प्रश्न।
विप्फाल देखो विफाल।
विप्फालिय देखो विप्फारिय।
विप्फुड वि [विस्फुट] स्पष्ट।
विप्फुर अक [वि + स्फुर्] होना। विकसना। तड़फड़ना। फरकना, हिलना। विजृम्भना।
विप्फुल्ल वि [विफुल्ल] विकसित।
विप्फोडअ पुं [विस्फोटक] फोड़ा।
विफंद देखो विप्फंद।
विफाल सक [वि + पाटय्] विदारण करना। उखाड़ना।
विफुट्ट अक [वि + स्फुट्] फटना।
विफुर देखो विप्फुर।
विबंधक वि [विबन्धक] विशेष रूप से बांधनेवाला।
विबद्ध वि. विशेष बद्ध। माहित।
विबाहग वि [विबाधक] विरोधी, बाधक।
विबुद्ध वि. जागृत।
विबुध } (शौ) पुं [विबुध] देव। पण्डित।
विबुह } °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैनाचार्य। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र। °पुर न. स्वर्ग।
विबुहेसर पुं [विबुधेश्वर] इन्द्र।
विबोह पुं [विबोध] जागरण।
विबोहग देखो विबोहय।
विबोहण न [विबोधन] ज्ञान कराना।
विबोहय वि [विबोधक] विकासक। ज्ञानजनक।
विब्बोअ पुं [विव्वोक]। देखो बिब्बोअ।
विब्भंग देखो विभंग।
विब्भंत वि [विभ्रान्त] विशेष भ्रान्त। पुं. प्रथम नरक का सातवाँ नरकेन्द्रक।
विब्भंस पुं [विभ्रंश] अतिपात, हिंसा।
विब्भट्ठ वि [विभ्रष्ट] विशेष भ्रष्ट।
विब्भम पुं [विभ्रम] विलास। स्त्री की शृंगार के अंग-भूत चेष्टा-विशेष। चित्त-भ्रम। शृंगार-सम्बन्धी मानसिक अशान्ति। विशेष भ्रान्ति। संदेह। आश्चर्य। शोभा। भूषणों का स्थान-विपर्यय। रावण का एक सुभट। मैथुन, अब्रह्म। काम-विकार।
विब्भल वि [विह्वल] व्याकुल। व्यासक्त। पुं. विष्णु, नारायण।
विब्भवण न [दे] ओसीसा।
विब्भाडिय वि [दे] नाशित।
विब्भार देखो वेब्भार।
विब्भिडि पुं [दे] मत्स्य की एक जाति।
विब्भेइअ वि [दे] सूई से विद्ध।
विभंग पुं [विभङ्ग] विपरीत अवधिज्ञान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्यात्व-युक्त अवधिज्ञान। ज्ञान-विशेष। विराधना। मैथुन, अब्रह्म। देखो विहंग = विभंग।
विभंगु पुंस्त्री [दे] तृण-विशेष।
विभंगुर वि [विभङ्गुर] विनश्वर।
विभंज सक [वि + भञ्ज्] तोड़ना।
विभंतडो (अप) स्त्री [विभ्रान्ति] विशिष्ट भ्रम।
विभग्ग वि [विभग्न] भाँगा हुआ, खण्डित।
विभज सक [वि + भज्] बाँटना। पक्षतः प्राप्ति करना—विधान और निषेध करना।
विभज्ज देखो विभज। विभज्ज।
विभज्जवाद, विभज्जवाय पुं [विभज्यवाद] स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, जैन दर्शन।
विभत्त वि [विभक्त] विभाग-युक्त। न. विभाग।
विभत्ति स्त्री [विभक्ति] विभाग, भेद। व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष।
विभमण न [दे] ओसीसा।
विभय देखो विभज।
विभर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना।
विभव देखो विहव।
विभवण न [विभवन] खराब करना।
विभाइम वि [विभाज्य] विभाग-योग्य।
विभाइम वि [विभागिम] विभाग से बना।
विभाग पुं. अंश।
विभागिम देखो विभाइम = विभागिम।
विभाय देखो विभाग।
विभाय न [विभात] प्रकाश, कान्ति, तेज।
विभाय पुं [विभाव] परिचय।
विभाव सक [वि + भावय्] विचार करना। विवेक से ग्रहण करना। समझना।
विभाव देखो विभव।
विभावसु पुं. देखो विहावसु।
विभास सक [वि + भाष्] स्पष्ट कहना। व्याख्या करना। विकल्प से विधान करना।
विभासय न [विभाषक] व्याख्याता, व्याख्या-कर्ता।
विभासा स्त्री [विभाषा] विकल्प-विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विधि और निषेध का विधान। स्पष्टीकरण। निवेदन। विविध भाषण। विशेषोक्ति। परिभाषा, संकेत। एक महानदी।
विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित।
विभिण्ण देखो विहिण्ण = विभिन्न।
विभीसण पुं [विभीषण] रावण का एक छोटा भाई। विदेह वर्ष का एक वासुदेव।
विभीसावण वि [विभीषण] भय-जनक।
विभीसिया स्त्री [विभिषिका] भय-प्रदर्शन।
विभु पुं. प्रभु। स्वामी। इक्ष्वाकु वंश का एक राजा। वि. व्यापक।
विभूइ स्त्री [विभूति] ऐश्वर्य। धूमधाम। अहिंसा।
विभूसण न [विभूषण] अलंकार। शोभा।
विभूसा स्त्री [विभूषा] सिंगार की सजावट। शरीर-शोभा।
विभूसिय वि [विभूषित] अलंकृत।
विभेद, विभेय पुं भेदन, विदारण। भेद, प्रकार।
विभेयग वि [विभेदक] भेदनकर्ता।
विमइ स्त्री [विमति] छन्द-विशेष।
विमइअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत।
विमउल वि [विमुकुल] विकसित।
विमंतिय वि [विमन्त्रित] जिसके बारे में मसलहत—गुप्त युक्ति की गई हो वह।
विमंसिअ वि [विमृष्ट, विमर्शित] विचारित।
विमग देखो विमय।
विमग्ग सक [वि + मार्गय्] विचार करना। खोजना। प्रार्थना करना। इच्छा करना, चाहना। माँगना।
विमज्झ न [विमध्य] अन्तराल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमण वि [विमनस्] शोक-सन्तप्त। शून्य-चित्त। निराश। जिसका मन अन्यत्र गया हो वह।

विमद्द सक [वि + मर्दय्] संघर्ष करना। मर्दन करना।

विमद्द पुं [विमर्द] विनाश। संघर्ष।

विमन्न सक [वि + मन्] मानना, गिनना।

विमय पुं [दे] पर्व-वनस्पति-विशेष।

विमर (अप) नीचे देखो।

विमरिस पुं [वि + मृश्] विचारना।

विमरिस पुं [विमर्श] विकल्प, विचार।

विमल वि. विशुद्ध। पुं. इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न तेरहवें जिनदेव। भारतवर्ष में होनेवाले बाईसवें जिन भगवान्। एक प्राचीन जैन आचार्य और कवि, 'पउमचरिअ' नामक जैन रामायण के कर्ता। एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष। अजितनाथ का पूर्वजन्मीय नाम। पुंन. सहस्रार देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान। ब्रह्म-देवलोक में स्थित एक देव-विमान। एक ग्रैवेयक देव-विमान। छः दिनों का उपवास। सात दिनों का उपवास। पुं. अहिंसा, दया। °घोस पुं [°घोष] एक कुलकर पुरुष। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन आचार्य। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] शीतलनाथजी की दीक्षा-शिविका। °वर पुं. आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान। °वाहण पुं [°वाहन] भारतवर्ष के भावी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे नाम देवसेन तथा महापद्म होंगे। कुलकर पुरुष-विशेष। भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्ती राजा। भगवान् अभिनन्दन के पूर्व जन्म के गुरु। भ० सम्भवनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम। °सामि पुं [स्वामिन्] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] षष्ठ वासुदेव की पटरानी।

विमलण न [विमर्दन] मणि आदि को शाण पर घिसना।

विमलहर पुं [दे] कोलाहल।

विमला स्त्री. ऊर्ध्व दिशा। धरणेन्द्र के लोकपालों की अग्र-महिषियों के नाम। गीतरति और गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की अग्र महिषियों के नाम। चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका।

विमलिअ वि [विमर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो।

विमलिअ वि [दे] मत्सर से उक्त। शब्दवाला।

विमलेसर पुं [विमलेश्वर] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव।

विमलोत्तर पुं. ऐरवत वर्ष का एक भावी जिनदेव।

विमहिद (शौ) वि [विमथित] जिसका मथन किया गया हो वह।

विमाउ स्त्री [विमातृ] सौतेली माँ।

विमाण सक [वि + मानय्] अपमान करना, तिरस्कार करना।

विमाण पुंन [विमान] देव का निवास-भवन। देव-यान, आकाश-यान। अपमान। वि. मान-रहित, प्रमाण-शून्य। °पविभत्ति स्त्री [°प्रविभक्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष। °भवण न [°भवन] विमानाकार गृह। °वासि पुं [°वासिन्] देवों की एक उत्तम जाति, वैमानिक देव।

विमिस्स अ [विमृश्य] विचार करके। °गारि वि [°कारिन्] विचार-पूर्वक करनेवाला।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित।

विमिस्सण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट।

विमीसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित।

विमुउल देखो विमउल।

विमुंच सक [वि + मुच्] बन्धन-मुक्त करना। परित्याग करना।

विमुकुल देखो विमउल।

विमुक्क वि [विमुक्त] बन्धन-रहित। परि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यक्त। निःसंग।
विमुक्ख पुं [विमोक्ष] मुक्ति।
विमुच्छिअ वि [विमूर्च्छित] मूर्छा-प्राप्त।
विमुत्त देखो विमुक्क।
विमुत्ति स्त्री [विमुक्ति] मुक्ति। आचारांग सूत्र का अन्तिम अध्ययन। अहिंसा।
विमुयण न [विमोचन] परित्याग।
विमुह वि [विमुख] पराङ्मुख, उदासीन। पुं. एक नरक-स्थान। पुंन. आकाश।
विमुह अक [वि + मुह्] व्याकुल होना।
विमूढ वि. घबराया हुआ। अस्पष्ट।
विमूरण वि [विभञ्जक] खण्डनकर्ता।
विमोइय वि [विमोचित] छुड़ाया हुआ।
विमोक्ख देखो विमुक्ख।
विमोक्खय वि [विमोक्षक] छुटकारा पानेवाला।
विमोडण न [विमोटन] मोड़ना।
विमोय सक [वि + मोचय्] छुड़ाना।
विमोयग वि [विमोचक] छोड़नेवाला, दूर करनेवाला।
विमोह सक [वि + मोहय्] मुग्ध करना।
विमोह देखो विमोक्ख।
विमोह वि. मोह-रहित। पुं. विशेष मोह, घबराहट। आचारांग सूत्र का एक अध्ययन।
विमोहण न [विमोहन] मोह उपजाना। वि. मोह उपजानेवाला।
विम्ह न [वेश्मन्] गृह।
विम्हइअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित। चमत्कृत।
विम्हय अक [वि + स्मि] चमत्कृत होना, विस्मित होना।
विम्हय पुं [विस्मय] आश्चर्य, चमत्कार।
विम्हर सक [स्मृ] याद करना।
विम्हर सक [वि + स्मृ] भूल जाना।
विम्हराइअ वि [दे] मूछित। विस्मापित।
विम्हरावण वि [स्मरण] स्मरण करानेवाला।
विम्हल देखो विब्भल।
विम्हारिअ वि [विस्मारित] भुलाया हुआ।
विम्हाव सक [वि + स्मापय्] आश्चर्य-चकित करना।
विम्हावय वि [विस्मापक] विस्मय-जनक।
विम्हिअ वि [विस्मित] विस्मय-प्राप्त, चमत्कृत।
विम्हिय (अप) देखो विम्हय।
विम्हिर वि [विस्मेर] विस्मय पानेवाला, चमत्कृत होनेवाला।
वियच्चा देखो विअ-च्चा।
वियट्ट अक [वि + वृत्] बरतना, होना।
वियद्द पुं [व्यर्द, व्यट्ट] आकाश।
विर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना।
विर अक [गुप्] व्याकुल होना।
विर (अप) देखो वीर।
विरइ स्त्री [विरति] विराम। सावद्य—पाप कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग। छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध विश्राम-स्थान।
विरइअ वि [विरचित] निर्मित। सजाया हुआ।
विरइअ देखो विराइअ।
विरंचि पुं [विरञ्चि] ब्रह्मा।
विरज्ज } अक [वि + रञ्ज्] रिक्त होना,
विरञ्ज } उदासीन होना। रंग-रहित होना।
विरत्त वि [विरक्त] उदासीन, विराग-प्राप्त। विविध रंगवाला।
विरत्ति स्त्री [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता।
विरम अक [वि = रम्] निवृत्त होना, अटकना।
विरमाण सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना।
विरमाल सक [प्रति + ईक्ष्] राह देखना।
विरय सक [वि + रचय्] करना, बनाना। सजाना।
विरय वि [विरत] निवृत्त, रुका हुआ। पाप-कार्य से निवृत्त, संयमी, त्यागी। न. विरति। संयम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्याग। °विरय वि [°विरत] आंशिक संयम रखनेवाला, जैन उपासक।
विरय पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह, छोटी नदी।
विरय पुं [विरजस्] महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष। एक देव-विमान।
विरया स्त्री [विरजा] गो-लोक में स्थित राधा की एक सखी। उसके शाप से बनी हुई एक नदी।
विरल वि. अल्प। अनिबिड। विच्छिन्न।
विरलि स्त्री [दे] डोरी-वाला कपड़ा।
विरली देखो विराली।
विरल्ल सक [तन्] विस्तारना।
विरल्ल पुं [तान] विस्तार।
विरल्लिअ देखो विरलिअ।
विरल्लिअ वि [दे] भींजा हुआ।
विरस अक [वि + रस्] क्रन्दन करना।
विरस वि. रस-रहित, शुष्क। विरुद्ध रसवाला। पुं. राम-भ्राता भरत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा। निर्विकृतिक तप-विशेष।
विरस न [दे] बारह मास।
विरसमुह पुं [दे] कौआ।
विरह सक [वि + रह्] परित्याग करना। अलग करना।
विरह पुं. वियोग। व्यवधान। पुं. वृक्ष-विशेष। अभाव। विनाश। हरिवंश का एक राजा।
विरह वि [विरथ] रथ-रहित।
विरह पुंन [दे] एकान्त। विजन। कुसुंभ से रंगा हुआ कपड़ा।
विरहाल न [दे] कुसुम्भ से रंगा हुआ वस्त्र।
विरा अक [वि + ली] नष्ट होना। द्रवित होना। अटकना, निवृत्त होना।
विराइ वि [विरागिन्] विरागवाला। स्त्री. °णी (नाट)।
विराइ वि [विराजिन्]शोभनेवाला, चमकता।
विराइ वि [विराविन्] आवाजवाला।
विराइअ देखो विराय = विलीन।
विराइअ वि [विराजित] सुशोभित।
विराग पुं. वैराग्य। वि. राग-रहित।
विराड पुं [विराट] देश-विशेष। °नयर न. [°नगर] नगर-विशेष।
विराध (अप) पुं. एक राक्षस।
विराम पुं. निवृत्ति, अवसान।
विरामण न [विरमण] निवर्तन, विरमाना।
विराय अक [वि + राज्] शोभना, चमकना।
विराय वि [विलीन] विगलित, नष्ट। पिघला हुआ।
विराय देखो विराग।
विराल देखो बिराल।
विरालिआ स्त्री [बिरालिका] पलाश-कन्द। पर्ववाला कन्द। देखो बिरालिआ।
विराली स्त्री. वल्ली-विशेष। चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति। देखो बिराली।
विराव पुं. शब्द, आवाज।
विराह सक [वि + राधय्] खण्डन करना। तोड़ना।
विराहअ } वि [विराधक] खण्डन करनेवाला तोड़नेवाला, भंजक।
विराहग }
विराहिअ वि [विराधित] खण्डित। अपराद्ध। पुं. एक विद्याधर-नरेश।
विरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ, तोड़ा हुआ।
विरिअ देखो वीरिअ।
विरिंच सक [वि + भज्] भाग लेना, बाँट-लेना।
विरिंच पुं [विरिञ्च] ब्रह्मा।
विरिंचि पुं [विरिञ्चि] ऊपर देखो।
विरिंचिअ वि [दे] विमल। विरक्त।
विरिंचर पुं [दे] अश्व। वि. विरल।
विरिंचिरा स्त्री [दे] धारा, प्रवाह।
विरिक्क वि [दे] विदारित।
विरिक्क वि [विरिक्त] जो खाली हुआ हो।
विरिक्क वि [विभक्त] बाँटा हुआ। जिसने भाग बाँट लिया हो वह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरिक्का स्त्री [दे] बिन्दु, लव ।
विरिंचिर वि [दे] धारा से विरेचन कर्त्ता ।
विरिज्जय वि [दे] अनुचर, अनुगत ।
विरिल्ल सक [वि + स्तृ] विस्तारना ।
विरीअ (अप) देखो विवरीअ ।
विरीह सक [प्रति + पालय्] पालन करना । रक्षण करना ।
विरु } अक [वि + रु] रोना, चिल्लाना ।
विरुअ }
विरुअ न [विरुत] ध्वनि, पक्षी की आवाज ।
विरुअ वि [दे.विरूप] खराब । दुष्ट रूपवाला । विरुद्ध । देखो विरूअ ।
विरुट्ठ पुं [विरुष्ट] नरक-स्थान-विशेष ।
विरुद्ध वि. विरोधवाला । °यारि वि [°चारिन्] विपरीत आचरण करनेवाला ।
विरुव देखो विरूव ।
विरुह अक [वि + रुह्] विशेष रूप से उगना ।
विरुह देखो विरूह ।
विरूअ } वि [विरूप] कुरूप, भौंडा ।
विरूव } विरुद्ध । बहुविध ।
विरूह पुंन [विरूढ] अंकुरित द्विदल-धान्य ।
विरेअ सक [वि + रेचय्] मल को नीचे से निकालना । बाहर निकालना ।
विरेअण न [विरेचन] जुलाब । वि. भेदक, विनाशक ।
विरेल्लिअ देखो विरिल्लिअ ।
विरोयण पुं [विरोचन] अग्नि ।
विरोल सक [मन्थ्] विलोड़न करना ।
विरोल सक [वि + लग्] अवलम्बन करना । चढ़ना ।
विरोह सक [वि + रोधय्] विरोध करना ।
विरोह पुं [विरोध] विरुद्धता, वैर ।
विरोहय वि [विरोधक] विरोधकर्ता ।
विल अक [व्रीड्] लज्जा करना ।
विल न. नमक-विशेष ।
विलइअ वि [दे] धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ । गरीब । आरोपित ।
विलओलग पुं [दे] लुटेरा ।
विलओली स्त्री [दे] विस्वर वचन । विलोकना, तलाशी । देखो बिलकोली° ।
विलंघ सक [वि + लङ्घ्] उल्लंघन करना ।
विलंघल (अप) देखो विहलंघल ।
विलंघलिअ (अप) वि [विह्वलाङ्गित] व्याकुल शरीरवाला ।
विलंब देखो विडंब = वि + डम्बय् ।
विलंब अक [वि + लम्ब्] देरी करना । सक. लटकाना, धारण करना ।
विलंब पुं [विलम्ब] देरी । पूर्वार्धं तप-विशेष । न. सूर्य के द्वारा परिभोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र ।
विलंबग वि [विलम्बक] धारण करनेवाला ।
विलंबणा देखो विडंबणा ।
विलंबणा स्त्री [विडम्बना] निर्वर्तना, बनावट ।
विलंबि न [विलम्बिन्] सूर्य के द्वारा भोगकर छोड़ा हुआ नक्षत्र । सूर्य जिसपर हो उसके पीछे का तीसरा नक्षत्र ।
विलंबिअ वि [विलम्बित] विलम्ब-युक्त । न. नक्षत्र-विशेष । नाट्य-विशेष ।
विलक्ख वि [विलक्ष] लज्जित । मूढ ।
विलक्ख } न [वैलक्ष्य] विलक्षता,
विलक्खिम } लज्जा । पुंस्त्री. ।
विलग्ग सक [वि + लग्] अवलम्बन करना । चढ़ना । पकड़ना । चिपटना ।
विलग्ग वि [विलग्न] चिपटा हुआ । अवलम्बित । आरूढ ।
विलज्ज अक [वि + लस्ज्] शरमाना ।
विलट्ठि पुंस्त्री [वियष्टि] साढ़े तीन हाथ में चार अंगुल कम लट्ठी, जैन साधुओं का उप-करण-दंड ।
विलद्ध वि [विलब्ध] सुलब्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विलप्प पुं [विलात्ममन्] एक नरक-स्थान ।
विलभ सक [खेदय्] खिन्न करना ।
विलमा स्त्री [दे] धनुष की डोरी ।
विलय पुं [दे] सूर्य का अस्त होना ।
विलय पुं. विनाश । तल्लीनता । पुं.एक नरक-स्थान ।
विलया स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी ।
विलव अक [वि + लप्] रोना, चिल्लाना ।
विलवण वि [विलपन] रोनेवाला, चिल्लानेवाला । °या स्त्री [°ता] विलाप, क्रन्दन ।
विलस अक [वि + लस्] विलास करना । मौज करना । चमकना ।
विलसिय न [विलसित] चेष्टा-विशेष । दीप्ति ।
विला देखो विरा ।
विलाल देखो बिराल ।
विलाव पुं [विलाप] बिलख-बिलख कर रोना ।
विलास पुं स्त्री का नेत्र-विकार । अंग और क्रिया-सम्बन्धी स्त्री की चेष्टा-विशेष । दीप्ति । मौज । °पुर न. नगर-विशेष । °वई स्त्री [°वती] स्त्री, नारी ।
विलासिअ वि [विलासिक, °सित] विलास-युक्त ।
विलासिणी स्त्री. नारी, वेश्या ।
विलिअ न [व्यलीक] वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय । अकार्य । अप्रिय । अनृत । प्रतारणा । गति-विपर्यय । वि. अपराधी । अकार्य-कर्ता । विप्रिय-कर्ता । झूठ बोलनेवाला ।
विलिअ वि [व्रीडित] लज्जित ।
विलिअ न [दे. व्रीडित] लज्जा ।
विलिइअ वि [व्यलीकित] व्यलीक-युक्त ।
विलिंग सक [वि + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, स्पर्श करना ।
विलिंजरा स्त्री [दे] धाना, भुने हुए जौ ।
विलिंप सक [वि + लिप्] लेप करना ।
विलिज्ज अक [वि + ली] नष्ट होना । पिघलना ।
विलित देखो विलिअ = व्रीडित ।
विलित्त वि [विलिप्त] लिपा हुआ ।
विलिव्विली स्त्री [दे] नाजुक बदनवाली नारी ।
विलिह सक [वि + लिख्] रेखा करना । चित्र बनाना । खोदना ।
विलिह सक [वि + लिह्] चाटना । चुम्बन करना ।
विलीअ देखो विलिअ = व्रीडित ।
विलीअ देखो विलिअ = व्यलीक ।
विलीइर वि [विलेतृ] पिघलनेवाला ।
विलीण वि [विलीन] पिघला हुआ । विनष्ट । जुगुप्सित ।
विलुंगयाम वि [दे] निर्ग्रन्थ, अकिंचन, साधु ।
विलुंचण न [विलुञ्चन] जड़ से उखाड़ना ।
विलुंप सक [वि + लुप्] लूटना । काटना । विनाश करना ।
विलुंप सक [काङ्क्ष्] अभिलाष करना ।
विलुंपइत्तु वि [विलोप्तृ] विलोप-कर्ता, काटनेवाला ।
विलुंपय पुं [दे] कीड़ा ।
विलुंपिअ पुं [दे. विलुप्त] खाया हुआ । देखो विलुत्त ।
विलुंपित्तु देखो विलुंपइत्तु ।
विलुक्क [दे] छिपा हुआ ।
विलुक्क वि [विलुञ्चित] सर्वथा केश-रहित किया हुआ ।
विलुत्त वि [विलुप्त] काटा हुआ, छिन्न । लुटा हुआ । विनष्ट ।
विलुत्तहिअअ वि [दे] जो समय पर काम करने को न जानता हो वह ।
विलुलिअ वि [विलुलित] उपमर्दित ।
विलूण वि [विलून] काटा हुआ, छिन्न ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विलेवण न [विलेपन] शरीर पर लगाने का चन्दन, कुंकुम आदि पिष्ट द्रव्य। लेपन-क्रिया।
विलेविअ वि [विलेपित] विलेपन-युक्त।
विलेविआ स्त्री [विलेपिका] पान-विशेष।
विलेहिअ वि [विलेखित] चित्रित, कृत।
विलोअ सक [वि + लोक्] देखना। निरीक्षण करना।
विलोअ पुं [विलोक] आलोक, प्रकाश।
विलोअ देखो विलोव।
विलोअण पुंन [विलोचन] आँख।
विलोट्ट अक [विसं + वद्] अप्रमाणित होना। उलटा होना।
विलोट्ट, विलोट्टिअ वि [विसंवदित] जो झूठा साबित हुआ हो। प्रतिज्ञा-च्युत। विरुद्ध बना हुआ।
विलोड सक [वि + लोडय्] मंथन करना।
विलोभ सक [वि + लोभय्] लुब्ध करना। लालच देना। विस्मय उपजाना।
विलोल देखो विलोड।
विलोल अक [वि + लुठ्] लेटना।
विलोल वि. अस्थिर।
विलोव पुं [विलोप] लूट, डकैती।
विलोवय वि [विलोपक] लूटनेवाला।
विलोह देखो विलोभ।
विल्ल अक [वेल्ल्] चलना, हिलना।
विल्ल देखो बिल्ल।
विल्ल वि [दे] स्वच्छ। विलसित। पुंन. सुगंधी द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है।
विल्लय देखो चिल्लअ।
विल्लय देखो वेल्लग।
विल्लरी स्त्री [दे] बाल।
विल्लल देखो बिल्लल।
विल्लहल देखो वेल्लहल।
विल्ली स्त्री [विल्वी] गुच्छ-वनस्पति-विशेष।
विल्ह वि [दे] सफेद।
विव देखो इव।
विवइ स्त्री [विपद्] विपत्ति, दुःख। °गर वि [°कर] दुःख-जनक।
विवइ स्त्री [विवृति] व्याख्या, विवरण, टीका। विस्तार।
विवइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ।
विवंक वि [विवक्र] विशेष बाँका।
विवंचिआ स्त्री [विपञ्चिका] वीणा।
विवक्क वि [विपक्व] अच्छी तरह पूर्ण किया हुआ। प्रकर्ष को प्राप्त, अत्यन्त पका हुआ। उदय में आगत, फलाभिमुख।
विवक्ख पुं [विपक्ष] दुश्मन। न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध विरुद्ध पक्ष, वह वस्तु जहाँ साध्य आदि का अभाव हो। विपरीत धर्म। विसदृशता।
विवक्खा स्त्री [विवक्षा] कहने की इच्छा।
विवग्घ वि [विव्याघ्र] व्याघ्र-चर्म-युक्त।
विवच्चास पुं [विपर्यास] विपरीतता।
विवच्छा स्त्री [विवत्सा] एक महानदी। वत्स-रहित स्त्री।
विवज्ज अक [वि + पद्] मरना, नष्ट होना।
विवज्ज सक [वि + वर्जय्] परित्याग करना।
विवज्ज वि [विवर्ज] रहित। परित्याग, परिहार।
विवज्जग वि [विवर्जक] वर्जन करनेवाला।
विवज्जत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत।
विवज्जय पुं [विपर्यय] विपर्यास, वैपरीत्य।
विवज्जास पुं [विपर्यास] विपर्यय, व्यत्यय। भ्रम, मिथ्याज्ञान।
विवट्ट अक [वि + वृत्] बरतना, रहना।
विवडिय वि [विपतित] गिरा हुआ।
विवड्ढ अक [वि + वृध्] बढ़ना।
विवड्ढि स्त्री [विवृद्धि] बढ़ाव।
विवणि पुंस्त्री [विपणि] बाजार। दूकान।
विवणीय वि [व्यपनीत] दूर किया हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवण्ण वि [विपन्न] नाशप्राप्त, मृत ।
विवण्ण वि [विवर्ण] कुरूप । निस्तेज ।
विवण्ण वि [द्विपर्ण] दो पत्रवाला । पुं. वृक्ष ।
विवत्त पुं [विवर्त्त] एक महाग्रह, ज्योतिष्क-देव-विशेष ।
विवत्ति स्त्री [विपत्ति] विनाश । मरण । कार्य की असिद्धि । आपदा ।
विवत्तिअ वि [विवर्त्तित] फिराया हुआ ।
विवत्थ पुं [विवस्त्र] एक महाग्रह ।
विवदि स्त्री [विवृति] देखो विवइ ।
विवद्धण न [विवर्धन] वृद्धि ।
विवद्धि पुं [विवर्धि] देव-विशेष ।
विवय अक [वि + वद्] झगड़ा करना, विवाद करना ।
विवय वि [दे] विस्तीर्ण ।
विवया स्त्री [विपद्] कष्ट ।
विवर सक [वि + वृ] बाल सँवारना । विस्तारना । व्याख्या या टीका करना ।
विवर न. छिद्र । गुहा । एकान्त । पुंन. आकाश ।
विवरंमुह वि [विपराङ्मुख] विमुख ।
विवरामुह, विवराहुत्त } देखो विवरंमुह ।
विवरिअ, विवरीअ, विवरीर, विवरेर } (अप) वि [विपरीत] प्रतिकूल । °ण्णु वि [°ज्ञ] उलटा जाननेवाला । (अप) ।
विवरुक्ख, विवरोक्ख } वि [विपरोक्ष] परोक्ष । न. अभाव । परोक्षता ।
विवल अक [वि + वल्] मुड़ना, टेढ़ा होना ।
विवला, विवलाअ } अक [विपरा + अय्] पलायन करना, भाग जाना ।
विवलीअ देखो विवरीअ ।
विवल्हत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत ।
विवस वि [विवश] अधीन । लाचार ।
विवह सक [वि + वह्] विवाह करना ।
विवहण न [विध्वंधन] विनाश ।
विवाइअ व [विपादित] जो जान से मार डाला गया हो वह ।
विवाउग वि [विवादक] विवाद-कर्ता ।
विवाग पुं [विपाक] सुख-दुःखादि भोग रूप कर्मफल । प्रकर्ष । पाककाल । °विजय पुंन. [°विचय] धर्मध्यान का एक भेद, कर्म-फल का अनुचिन्तन । °सुय न [°श्रुत] ग्यारहवाँ जैन अङ्ग-ग्रन्थ ।
विवाद, विवाय } पुं. झगड़ा, कलह, जबानी लड़ाई ।
विवाय सक [वि + पादय्] मार डालना ।
विवाय देखो विवाग ।
विवाविड न [दे] अतिशय गौरव ।
विवाह सक [वि + वाहय्] लग्न करना ।
विवाह देखो विआह = विवाह । °गणय पुं [°गणक] ज्योतिषी । °जन्न पुं [°यज्ञ] विवाह-उत्सव ।
विवाह देखो विआह = विबाध ।
विवाह° देखो विआह° = व्याख्या ।
विवाहाविय वि [विवाहित] जिसकी शादी कराई गई हो वह ।
विविइसा स्त्री [विविदिषा] जिज्ञासा ।
विविक्क देखो विवित्त ।
विविच सक [वि + विच्] पृथक् करना ।
विविण न [विपिन] जंगल ।
विवित्त वि [विविक्त] रहित । पृथग्भूत । विविध । न. एकान्त ।
विवित्त वि [विविक्त] विवेक-युक्त । संविग्न, भव-भीरु ।
विविदिअ वि [विविदित] विशेषरूप से ज्ञात ।
विविदिसा देखो विविइसा ।
विविद्धि पुं [विवृद्धि] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव ।
विविह वि [विविध] अनेक प्रकार का ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवुअ वि [विवृत] विस्तृत। व्याख्यात।
विवुज्झ अक [वि + बुध्] जागना।
विवुड्ढि देखो विवड्ढि।
विवुद देखो विवुअ।
विवुदि देखो विवदि।
विवुह देखो विबुह।
विवेअ देखो विवेग। °न्नु वि [°ज्ञ] विवेक-ज्ञाता।
विवेअ पुं [विवेप] विशेष कंप।
विवेइ वि [विवेकिन्] विवेकवाला।
विवेग पुं [विवेक] परित्याग। ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय। प्रायश्चित्त। पृथक्करण (औप)।
विवेच सक [वि + वेचय्] ठीक-ठीक निर्णय करना। विवेक करना।
विवेयण न [विवेचन] विवेक, निर्णय।
विवोल पुं. [दे] विशेष कोलाहल।
विवोलिअ वि. [दे] गुजरा हुआ।
विवोह देखो विबोह।
विव्व सक [वि + अय्] व्यय करना। देखो विव्व = वि = अय्।
विव्वाय वि. [दे] अवलोकित। विश्रान्त।
विव्वोअ देखो बिब्बोअ।
विव्वोयण [दे] देखो बिव्वोयण।
विस अक [विश्] प्रवेश करना।
विस सक [वि + शृ] हिंसा करना। नष्ट करना।
विस पुंन [विष] जहर। पानी। °नंदि पुं [°नन्दिन्] प्रथम बलदेव का पूर्वभवीय नाम। °न्न [°ान्न] विष-मिश्रित अन्न। °मइअ, °मय वि. विष का बना हुआ। °व वि [°वत्] विषवाला। पुं. सर्प। °हर पुं [°धर] साँप। °हरवइ पुं [°धरपति]। °हरिंद पुं [°धरेन्द्र] शेषनाग। °हारिणी स्त्री. पनी-हारी।
विस देखो बिस।
विस पुं [वृष] बैल। ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि। चूहा। धर्म। बल-युक्त। ऋषभ नामक औषध। पुरुष-विशेष। कन्दर्प। वीर्य-युक्त। शृङ्गवाला कोई भी जानवर।
विसइ वि [विषयिन्] विषयवाला।
विसंक वि [विशङ्क] निःशंक।
विसंखल वि [विशृङ्खल] स्वच्छन्द, उद्धत।
विसंखल सक [विशृङ्खलय्] निरंकुश करना। अव्यवस्थित कर डालना।
विसंघट्टिय वि [विसंघट्टित] वियुक्त, विघटित।
विसंघड अक [विसं + घट्] अलग होना।
विसंघाइय वि [विसंघातित] संहृत किया हुआ।
विसंघाय सक [विसं + घातय्] संहृत करना।
विसंजुत्त वि [विसंयुक्त] जो अलग हुआ हो।
विसंजोअ सक [विसं + योजय्] वियुक्त करना।
विसंजोअ, विसंजोग पुं [विसंयोग] वियोग, विघटन, पृथग्भाव, जुदाई।
विसंठुल वि [विसंस्थुल] विह्वल। अव्यवस्थित।
विसंतव पुं [द्विषन्तप] शत्रु को तपानेवाला।
विसंथुल देखो विसंठुल।
विसंधि पुं [विसन्धि] एक महाग्रह ज्योतिष्क देव-विशेष। वि. बन्धन-रहित। °कप्प, °कप्पेल्लय पुं. [°कल्प] एक महाग्रह।
विसंनिविट्ठ न [विसंनिविष्ट] विविध रथ्या।
विसंभ देखो वीसंभ।
विसंभणया देखो विस्संभणया।
विसंभोइय वि [विसंभोगिक] जिसके साथ भोजन आदि का व्यवहार न किया जाय वह, मंडली-बाह्य, समाज-बाह्य।
विसंभोग पुं. [विसंभोग] साथ बैठकर भोजन आदि का अव्यवहार।
विसंवइय वि. [विसंवदित] सबूत-रहित। अप्रमाणित। विघटित, वियुक्त।
विसंवय अक [विसं + वद्] अप्रमाणित होना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विघटित होना, अलग होना। विपरीत होना।
विसंवयण न [विसंवदन] विसंवाद, सबूत का अभाव।
विसंवाइ वि [विसंवादिन्] विघटित होनेवाला, विच्छिन्न होनेवाला। अप्रमाणित होनेवाला।
विसंवाइअ वि [विसंवादित] विसंवाद-युक्त।
विसंवाद देखो विसंवाय = विसंवाद।
विसंवादण देखो विसंवायण।
विसंवादणा देखो विसंवायणा।
विसंवाय वि. [दे] मैला।
विसंवाय पुं [विसंवाद] सबूत का अभाव। विरुद्ध, सबूत। व्याघात। विचलता।
विसंवायग वि [विसंवादक] सबूत-रहित। ठगनेवाला।
विसंवायण न [विसंवादन] नीचे देखो।
विसंवायणा स्त्री [विसंवादना] असत्य कथन। वंचना।
विसंसरिय वि [विसंसृत] उठा हुआ।
विसंहणा देखो विस्संभणया।
विसकल } वि [विशकल]। वि [विश-
विसकलिय } कलित] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ, खण्डित।
विसग्ग पुं [विसर्ग] निसर्ग, त्याग। विसर्जन, छुटकारा। अक्षर-विशेष, विसर्जनीय वर्ण।
विसज्ज सक [वि + सृज्, सर्जय्] बिदा करना। त्यागना।
विसट्ट अक [दल्] फटना, टूटना, टुकड़े-टुकड़े होना।
विसट्ट अक [वि + कस्] विकसना।
विसट्ट सक [वि + कासय्] विकसित करना।
विसट्ट अक [पत्] गिरना, स्खलित होना।
विसट्ट वि [दे] विघटित, विश्लिष्ट। विकसित। दलित, खण्डित, जिसका टुकड़ा-टुकड़ा हुआ हो। उत्थित।
विसड } देखो विसम।
विसढ }
विसढ वि [दे] राग-रहित। नीरोग। सहन किया हुआ। विशीर्ण। आकुल।
विसढ वि [विशठ] अत्यंत दंभी, अतिशय मायावी। पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र।
विसण देखो वसण = वृषण।
विसण न [वेशन] प्रवेश।
विसण्ण वि [त्रिसंज्ञ] संज्ञा-रहित, चैतन्य-वर्जित।
विसण्ण वि [विषण्ण] खिन्न। आसक्त। निमग्न। पुं. असंयम।
विसत्त वि [विसत्त्व] सत्त्व-रहित।
विसत्थ देखो वीसत्थ।
विसद देखो विसय = विशद।
विसद्द पुं [विशब्द] विशिष्ट शब्द। वि. विशिष्ट शब्दवाला।
विसन्न देखो विस-न्न।
विसन्ना स्त्री [विसंज्ञा] विद्या-विशेष।
विसप्प अक [वि + सृप्] फैलना।
विसप्प पुं [विसर्प] एक नरक-स्थान।
विसम देखो वीसम = वि + श्रम्।
विसम वि [विषम] ऊँचा-नीचा। असमान, अतुल्य। एकी संख्या, जैसे—एक, तीन, पाँच, सात आदि। दारुण, कठिन। संकट। संकीर्ण। पुंन. आकाश। °क्खर वि [°ाक्षर] अपसिद्धान्तवाला, असत्य निर्णय-वाला। °लोअण पुं [°लोचन] महादेव। °वाण पुं [°बाण]। °सर पुं [°शर] कामदेव।
विसमय न [दे] भल्लातक, भिलावाँ।
विसमय देखो विस-मय।
विसमिअ वि [विषमित] बीच-बीच में विच्छेदित। विषम बना हुआ।
विसमिअ वि [विस्मृत] भूला हुआ।
विसमिअ [विश्रमित] विश्रान्त किया हुआ।
विसमिअ वि [दे] निर्मल। उत्थित।
विसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला। स्त्री. °री।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसम्म अक [वि + श्रम्] विश्राम करना ।
विसय वि [विशद] स्वच्छ । व्यक्त । धवल ।
विसय पुंन [विशय] गृह । सम्भव ।
विसय पुं [विषय] इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ । जनपद । काम-भोग, विलास । बाबत, प्रस्ताव । °ाविहइ पुं [°ाधिपति] देश का मालिक ।
विसर सक [वि + सृज्] त्याग करना । बिदा करना ।
विसर अक [वि + सृ] सरकना, धसना, नीचे गिरना ।
विसर सक [वि + स्मृ] भूल जाना ।
विसर पुं [दे] सैन्य ।
विसर पुं. समूह ।
विसरण न [विशरण] विनाश ।
विसरय पुंन [दे] वाद्य-विशेष ।
विसरा स्त्री. मच्छी पकड़ने का जाल ।
विसरिया स्त्री [दे] सरट, कृकलास, गिरगिट ।
विसरिस वि [विसदृश] असमान, विजातीय ।
विसलेस पुं [विश्लेष] जुदाई ।
विसल्ल वि [विशल्य] शल्य-रहित । °करणी स्त्री. विद्या-विशेष ।
विसल्ला स्त्री [विशल्या] एक महौषधि । लक्ष्मण की एक स्त्री ।
विसस सक [वि + शस्] वध करना ।
विसस देखो विस्सस = वि + श्वस् ।
विसह सक [वि + षह्] सहन करना ।
विसह देखो वसभ ।
विसाअ (अप) स्त्री [विश्वा] छन्द-विशेष ।
विसाइ वि [विषादिन्] विषाद-युक्त ।
विसाण न [विषाण] हाथी का दाँत । सींग । सूअर का दाँत । पुं. ब. देश-विशेष ।
विसाण सक [विशाणय्] घिसना, शाण पर चढ़ाना ।
विसाणि वि [विषाणिन्] सींगवाला । पुं. हाथी । सिंघाड़ा । ऋषभ नामक औषध ।
विसाय सक [वि + स्वादय्] विशेष चखना, खाना ।
विसाय पुं [विषाद] शोक, दिलगीरी । °वंत वि [°वत्] शोकग्रस्त ।
विसाय वि [विसात] सुख-रहित । पुंन. एक देव-विमान ।
विसाय वि [विस्वाद] स्वाद-रहित ।
विसार सक [वि + सारय्] फैलाना ।
विसार पुं [दे] सैन्य ।
विसार वि. सार-रहित ।
विसारण न [विशारण] खण्डन ।
विसारणिय वि [विस्मारणिक] जिसको याद न दिलाया गया हो वह ।
विसारय वि [दे] धृष्ट, ढीठ, साहसी ।
विसारय वि [विशारद] विद्वान्, पण्डित ।
विसारि पुं [दे] कमलासन. ब्रह्मा ।
विसाल वि [विशाल] बड़ा, विस्तीर्ण । पुं. एक ग्रह-देवता, अठासी महाग्रहों में एक महाग्रह । क्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र । पुंन. देव-विमान-विशेष । न. एक विद्याधर-नगर ।
विसालय पुं [दे] समुद्र ।
विसाला स्त्री [विशाला] एक नगरी, उज्जयिनी । भ० पार्श्वनाथ की दीक्षाशिबिका । जम्बूवृक्ष-विशेष, जिससे यह जम्बूद्वीप कहलाता है । राजधानी-विशेष । भ० महावीर की माता । एक पुष्करिणी ।
विसालिस देखो विसरिस ।
विसासण वि [विशासन] विनाशक ।
विसासिअ वि [विशासित] मारित । विशेष रूप से धर्षित । विश्लेषित । मार भगाया हुआ ।
विसाह पुं [विशाख] कार्तिकेय ।
विसाहा स्त्री [विशाखा] नक्षत्र-विशेष । एक स्त्री । एक विद्याधर-कन्या ।
विसाहिअ वि [विसाधित] सिद्ध किया गया ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

न. संसिद्धि।
विसाही स्त्री [वैशाखी] वैशाख मास की पूर्णिमा या अमावस।
विसि स्त्री [दे] करि-शारी, गज-पर्याण।
विसि देखो बिसि।
विसिट्ठ वि [विशिष्ट] प्रधान। विशेष-युक्त। सुसभ्य। युक्त। व्यतिरिक्त। पुं. द्वीपकुमार-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र। न. छः दिनों का उपवास। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] अहिंसा।
विसिट्ठि स्त्री [विसृष्टि] विपरीत क्रम।
विसिण वि [दे] प्रचुर रोमवाला।
विसिस सक [वि + शिष्] विशेषण-युक्त करना।
विसिह पुं [विशिख] बाण, तीर। वि. शिखा-रहित।
विसी देखो बिसी।
विसी स्त्री [विंशति] बीस, बीस का समूह।
विसीअ अक [वि + सद्] खेद करना। निमग्न होना।
विसीइय वि [विशीर्ण] जीर्ण, त्रुटित। न. जर्जरित होना।
विसील वि [विशील] व्यभिचारी। खराब स्वभाववाला, विरूप आचरणवाला।
विसुज्झ सक [वि + शुध्] शुद्धि करना।
विसुणिय वि [विश्रुत] विज्ञात।
विसुत्त वि [विस्रोतस्] प्रतिकूल। खराब, दुष्ट।
विसुत्तिया देखो विसोत्तिया।
विसुद्ध वि [विशुद्ध] निर्मल, निर्दोष। विशद, उज्ज्वल। पुं. ब्रह्मदेवलोक का एक प्रतर।
विसुद्धि स्त्री [विशुद्धि] निर्दोषता, निर्मलता।
विसुमर सक [वि + स्मृ] भूल जाना।
विसुराविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ।
विसुव न [विषुवत्] रात और दिन की समानतावाला काल।

विसूइया स्त्री [विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा।
विसूणिय वि [विशूनित] फूला हुआ। सूजा हुआ। काटा हुआ।
विसूर देखो विसुमर।
विसूर अक [खिद्] खेद करना।
विसूहिय पुंन [विष्वग्हित] एक देव-विमान।
विसेढि स्त्री [विश्रेणि] विदिशा-सम्बन्धी श्रेणि, वक्र रेखा। वि. विश्रेणि में स्थित।
विसेस सक [वि + शेषय्] गुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना, विशेषण से अन्वित करना।
विसेस पुंन. [विशेष] प्रभेद। भिन्नता। भेद। असाधारण, अमुक, व्यक्ति, खास। पर्याय, धर्म, गुण। अधिक। तिलक। साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध अलंकार-विशेष। वैशेषिक-प्रसिद्ध अन्त्य पदार्थ। °न्नु [°ज्ञ] विशेष जानने वाला। °ओ अ [°तस्] खास करके।
विसेस पुं [विश्लेष] पृथक्करण।
विसेसण न [विशेषण] दूसरे से भिन्नता बतानेवाला गुण आदि।
विसेसय पुंन [विशेषक] तिलक।
विसेसिअ वि [विशेषित] विशेषण-युक्त किया हुआ, भेदित। अतिशयित।
विसेस्स देखो विसेस।
विसोग वि [विशोक] शोक-रहित।
विसोत्तिया स्त्री [विस्रोतसिका] विमार्ग-गमन। दुष्ट चिन्तन। शंका।
विसोपग } पुंन [दे. विंशोपक] कौड़ी का
विसोवग } बीसवाँ हिस्सा।
विसोह सक [वि + शोधय्] शुद्ध करना। निर्दोष बनाना। त्याग करना।
विसोह वि [विशोभ] शोभा-रहित।
विसोहय वि [विशोधक] शुद्धि-कर्ता।
विसोहि स्त्री [विशोधि] विशुद्धता। अपराध के योग्य प्रायश्चित्त। आवश्यक, सामयिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदि षट् कर्म। भिक्षा का एक दोष, जिस दोषवाले आहार का त्याग करने पर शेष भिक्षा या भिक्षा-पात्र विशुद्ध हो वह दोष। °कोडि स्त्री [°कोटि] पूर्वोक्त विशोधि-दोष का प्रकार।

विसोहिय वि [विशोधित] शुद्ध किया हुआ। पुं. मोक्ष-मार्ग।

विस्स देखो विस = विश्।

विस्स न [विस्र] अपक्व मांस आदि की बू। वि. कच्ची गन्धवाला। °गंधि वि[°गन्धिन्] आमगन्धि, अपक्व मांस के समान गंधवाला।

विस्स पुं[विश्व]उत्तराषाढ़ा नक्षत्रका अधिष्ठाता देव। स. सर्व। पुंन. जगत्। °इ पुं [°जित्] यज्ञ-विशेष। °कम्म पुं [°कर्मन्] शिल्पी-विशेष, देव-वर्धकि। °पुर न. नगर-विशेष। °भूइ पुं [°भूति] प्रथम वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम। °यम्म देखो °कम्म। °वाइअ पुं [°वादिक] भ० महावीर का एक गण। °सेण पुं [°सेन] भ० शान्तिनाथजी का पिता, एक राजा। अहोरात्र का एक मुहूर्त। देखो वीस = विश्व।

विस्सअ (मा) देखो विम्हय = विस्मय।

विस्संत देखो वीसंत।

विस्संतिअ न [विश्रान्तिक] मथुरा का एक तीर्थ।

विस्संद अक [वि + स्यन्द्] टपकना, झरना। चूना।

विस्संभ सक [वि + श्रम्भ्] विश्वास करना।

विस्संभ पुं [विश्रम्भ] विश्वास, श्रद्धा। °घाइ वि [°घातिन्] विश्वास-घातक।

विस्संभर पुं [विश्वम्भर] भुजपरिसर्प की एक जाति। मूषक। इन्द्र। विष्णु, नारायण।

विस्संभरा स्त्री [विश्वम्भरा] पृथिवी।

विस्संभिय वि [विश्वभृत्] जगत्-पूरक।

विसत्थ देखो वीसत्थ।

विस्सद्ध देखो वीसद्ध।

विस्सम अक [वि + श्रम्] थाक लेना।

विस्सम पुं [विश्रम] विश्राम।

विस्सर सक [वि + स्मृ] भूलना।

विस्सर वि [विस्वर] खराब आवाजवाला।

विस्सस सक [वि + श्वस्] विश्वास करना।

विस्साणिय वि [विश्राणित] दिया हुआ।

विस्साम देखो वीसाम।

विस्सामण न [विश्रामण] अंग-मर्दन आदि भक्ति, वैयावृत्य।

विस्सार सक [वि + स्मृ] भूल जाना।

विस्सार सक [वि + स्मारय्] विस्मरण करवाना।

विस्सारण न [विसारण] विस्तारण।

विस्साव देखो विसाय = वि + स्वादय्।

विस्सावसु पुं [विश्वावसु] एक गन्धर्व, देव-विशेष।

विस्सास पुं [विश्वास] प्रतीति, श्रद्धा।

विस्साहल पुं [विश्वाहल] अंग-विद्या का जानकार चतुर्थ रुद्र-पुरुष।

विस्सुअ वि [विश्रुत] प्रसिद्ध।

विस्सुमरि देखो विसुमरि।

विस्सेणि } स्त्री [विश्रेणि, °णी] निःश्रेणि, सीढ़ी।
विस्सेणी }

विस्सेसर पुं [विश्वेश्वर] काशी में स्थित महादेव की एक मूर्त्ति।

विस्सोअसिआ देखो विसोत्तिआ।

विह सक [व्यध्] ताड़न करना।

विह देखो विस = विष।

विह पुंन [दे] मार्ग। अनेक दिनों में उल्लंघ-नीय मार्ग। अटवी-प्राय मार्ग।

विह पुंन [विहायस्] आकाश।

विह पुंस्त्री [विध] भेद। पुंन. आकाश।

विहई स्त्री [दे] बैंगन का गाछ।

विहंग पुं [विहङ्ग] पक्षी। °णाह पुं [°नाथ] गरुड़ पक्षी।

विहंग पुं [विभङ्ग] विभाग, टुकड़ा, अंश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देखो विभंग ।
विहंगम पुं. पक्षी ।
विहंज सक [वि + भञ्ज्] भाँगना, विनाश करना ।
विहंजिअ वि [विभक्त] बाँटा हुआ ।
विहंड सक [वि + खण्डय्] विच्छेद करना, विनाश करना ।
विहंडण वि [विभण्डन] भाँड़नेवाला, गालि-सूचक ।
विहग पुं. पक्षी । °हिव पुं [°धिप] गरुड़ पक्षी ।
विहग पुंन [विहायस्] आकाश । °गइ स्त्री [°गति] आकाश में गमन । आकाश में गति कर सकने में कारण-भूत कर्म ।
विहट्ट देखो विघट्ट ।
विहट्टिअ वि [विघट्टित] खण्डित, द्विधाभूत ।
विहड अक [वि + घट्] नियुक्त होना । अलग होना । टूट जाना ।
विहड सक [वि + घटय्] तोड़ना, खोलना ।
विहड देखो विहल = विह्वल ।
विहडण न [विघटन] अलग होना । अलग करना । खोलना ।
विहडण पुं [दे] अनर्थ ।
विहडप्फड वि [दे] व्याकुल । त्वरित ।
विहडा स्त्री [विघटा] विभेद । फाट-फुट ।
विहडाव सक [वि + घटय्] वियुक्त करना । अलग करना ।
विहण देखो विहन्न ।
विहणु वि [दे] संपूर्ण ।
विहण्ण न [दे] पींजना ।
विहत्त देखो विभत्त ।
विहत्ति देखो विभत्ति ।
विहत्तु देखो विहण का संकृ. ।
विहत्थ वि [विहस्त] व्याकुल । कुशल । विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ । क्लीब ।
विहत्थि पुंस्त्री [वितस्ति] बारह अंगुल का परिमाण-विशेष ।
विहदि स्त्री [विधृति] विशेष धैर्य । वि. धैर्य-रहित ।
विहन्न } सक [वि + हन्] मारना । नाश
विहम्म } करना । अतिक्रमण करना ।
विहम्म वि [विधर्मन्] भिन्न धर्मवाला, विभिन्न, विलक्षण ।
विहम्म सक [विधर्मय्] धर्म-रहित करना ।
विहम्म न [वैधर्म्य] विधर्मता । तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध, वैधर्म्य-दृष्टान्त ।
विहम्माणा स्त्री [विधर्मणा, विहनन] पीड़ा ।
विहय [दे] पिंजित ।
विहय वि [विहत] मारा हुआ । विनाशित ।
विहय देखो विहग = विहग ।
विहय देखो विहव = विभव ।
विहर अक [वि + हृ] क्रीड़ा करना । रहना । सक. गमन करना ।
विहर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना ।
विहर देखो विहार ।
विहरण न [विहरण] विहार ।
विहरिअ न [दे] सुरत, संभोग ।
विहल अक [वि + ह्वल्] व्याकुल होना ।
विहल देखो विहड = वि + घट् ।
विहल वि [विह्वल] व्याकुल, व्यग्र ।
विहल देखो विअल = विकल ।
विहल वि [विफल] निष्फल, असत्य ।
विहल सक [विफलय्] निष्फल बनाना ।
विहलंखल } वि [विह्वलाङ्ग] व्याकुल
विहलंघल } शरीरवाला ।
विहल्ल अक [वि + रु, वि + स्तृ ?] आवाज करना । सक. विस्तार करना ।
विहल्ल पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र ।
विहव पुं [विभव] समृद्धि, सम्पत्ति, ऐश्वर्य ।
विहवण न [विधवन] विनाश ।
विहवा स्त्री [विधवा] जिसका पति मर गया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो वह स्त्री।

विहव्व देखो विहव = विभव।

विहस अक [वि + हस्] विकसना, खिलना, प्रफुल्ल होना। हास्य करना।

विहसाव सक [वि + हासय्] हँसाना। विकसित करना।

विहसिव्विअ वि [दे] विकसित।

विहस्सइ देखो बिहस्सइ।

विहा अक [वि + भा] शोभना, चमकना।

विहा सक [वि + हा] परित्याग करना।

विहा अ [वृथा] निरर्थक, व्यर्थ, मुधा।

विहा स्त्री [विधा] प्रकार, भेद।

विहा° देखो विहग = विहायस्।

विहाइ वि [विधायिन्] कर्ता।

विहाउ वि [विधातृ] कर्ता, निर्माता। पुं. पणपन्नि-देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र।

विहाड सक [वि + घटय्] वियुक्त करना। विनाश करना। खोलना।

विहाड वि [विघाट] विकट।

विहाड वि [विहाट] प्रकाश-कर्ता।

विहाडण न [दे] अनर्थ।

विहाण पुं [दे] विधि, विधाता, दैव, भाग्य। प्रभात। पूजन।

विहाण न [विधान] शास्त्रोक्त रीति। निर्माण। प्रकार। व्याकरणोक्त विधि-विशेष। अवस्था-विशेष। रीति। क्रम।

विहाण न [विहाव] परित्याग।

विहाणिय (अप) वि [विधायिन्] कर्ता।

विहाय अक [वि + भा] शोभना। प्रकाशना।

विहाय पुं [विघात] अंत। विरोधी।

विहाय देखो विभाग।

विहाय वि [विभात] प्रकाशित। न. प्रभात।

विहाय देखो विहग = विहायस्।

विहाय विहा = वि + हा का संकृ.।

विहाय (अप) देखो विहिअ।

विहार सक [वि + धारय्] अपेक्षा करना। विशेष रूप से धारण करना।

विहार पुं. विचरण, गति। क्रीड़ा-स्थान। देव-मन्दिर। अवस्थिति। क्रीड़ा। मुनि-चर्या, साध्वाचार। °भूमि स्त्री. स्वाध्याय-स्थान। विचरण-भूमि। क्रीड़ा-स्थान। चैत्य की जगह।

विहाल देखो विहाडि।

विहाव देखो विभाव = वि + भावय्।

विहावण न [विधापन] करवाना।

विहावण न [विभावन] आलोचना।

विहावरी स्त्री [विभावरी] रात्रि।

विहावसु पुं [विभावसु] सूर्य। आग। रवि-वार। देखो विभावसु।

विहाविअ वि [विभावित] दृष्ट, निरीक्षित।

विहाविअ वि [विधावित] उल्लसित, प्रस्फुरित।

विहास पुं. उपहास।

विहास, विहासाव } देखो विहसाव।

विहि पुं [विधि] ब्रह्मा। पुंस्त्री. प्रकार। शास्त्रोक्त विधान। क्रम। रीति। आज्ञा। आज्ञा-सूचक वाक्य। व्याकरण का सूत्र-विशेष। कर्म। हाथी को खाने का अन्न। दैव। नीति। स्थिति, मर्यादा। कृति, करण। °न्नु वि [°ज्ञ] विधि का जानकार। °वयण न. [°वचन]। °वाय पुं [°वाद] विधि-वाक्य, विध्युपदेश।

विहिअ वि [विहित] कृत। अनुष्ठित। चेष्टित। शास्त्रोक्त।

विहिंस सक [वि + हिंस्] विविध उपायों से मारना, वध करना।

विहिंस वि. हिंसा करनेवाला।

विहिंसग वि [विहिंसक] वध करनेवाला।

विहिंसा स्त्री. विशेष हिंसा। विविध हिंसा।

विहिण्ण वि [विभिन्न] जुदा। खण्डित।

विहिम न [दे] जंगल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहिमिहिय वि [दे] विकसित ।
विहियव्व देखो विहे = वि + धा का कृ. ।
विहिविल्ल सक [वि + रचय्] बनाना ।
विहीण वि [विहीन] वर्जित । त्यक्त ।
विहीर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना ।
विहीर वि [प्रतीक्ष] प्रतीक्षा करनेवाला ।
विहीसण देखो विभीसण ।
विहीसिया देखो विभीसिया ।
विहु पुं [विधु] चन्द्र । विष्णु । ब्रह्मा । शंकर, महादेव । वायु । कपूर ।
विहुअ वि [विधुत] कम्पित । उन्मूलित । त्यक्त ।
विहुंडुअ पुं [दे] राहु, ग्रह-विशेष ।
विहुण सक [वि + धू] कँपाना । दूर करना । त्याग करना । पृथग् करना ।
विहुणण न [विधूनन] दूरीकरण । पंखा ।
विहुणिय वि [विधूत] देखो विहुअ ।
विहुर वि [विधुर] विकल, व्याकुल, पीडित । क्षीण । विसदृश, विलक्षण, विषम, विश्लिष्ट, वियुक्त । न. विह्वलता ।
विहुराइअ वि [विधुरायित] व्याकुल बना हुआ ।
विहुरिज्जमाण वि [विधुरायमाण] व्याकुल बनता ।
विहुरीकय वि [विधुरीकृत] व्याकुल किया हुआ ।
विहुल देखो विहुर ।
विहुल्ल वि [विफुल्ल] खिला हुआ । उत्साही ।
विहूअ वि [विधूत] कम्पित । वर्जित । देखो विधूय, विहुअ ।
विहूइ देखो विभूइ ।
विहूण देखो विहुण ।
विहूण देखो विहीण ।
विहूणय न [विधूनक] पंखा ।
विहूसण देखो विभूसण ।
विहूसा स्त्री [विभूषा] शोभा । अलंकार आदि से शरीर की सजावट ।
विहूसिअ वि [विभूषित] विभूषा-युक्त ।
विहे सक [वि + धा] करना । बनाना ।
विहेड सक [वि + हेटय्] मारना । हिंसा करना । पीड़ा करना ।
विहेडय वि [विहेटक] अनादर-कर्ता ।
विहेढणा स्त्री [विहेठना] पीड़ा ।
विहोड सक [ताडय्] ताड़न करना ।
विहोय (अप) देखो विहव ।
वी देखो वि = अपि, वि ।
वीअ सक [वीजय्] हवा डालना, पंखा करना ।
वीअ वि [दे] विधुर, व्याकुल । तत्काल उसी समय का ।
वीअ देखो बीअ = द्वितीय ।
वीअ वि [वीत] विगत, नष्ट । °कम्ह न [°कश्म ?] गोत्र-विशेष । पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न । °धूम वि. द्वेष-रहित । °भय, °भय न. सिन्धुसौवीर देश की प्राचीन राजधानी । वि. भय-रहित । °मोह वि. मोह-रहित । °राग, °राय वि. राग-रहित । °सोग पुं [°शोक] एक महाग्रह । °सोगा स्त्री [°शोका] सलिलावती नामक विजय-प्रान्त की राजधानी ।
वीअजमण देखो बीअजमण ।
वीअण न [वीजन] पंखा से हवा करना । स्त्रीन. पंखा । स्त्री. °णी ।
वीआविय वि [वीजित] जिसको पंखा से हवा कराई गई हो वह ।
वीइ पुंस्त्री [वीचि] तरंग । आकाश । संप्रयोग, सम्बन्ध । पृथग्-भाव, जुदाई । °दव्व न [°द्रव्य] प्रदेश से न्यून द्रव्य, अवयव-हीन-वस्तु ।
वीइ स्त्री [विकृति] विरूप कृति, दुष्ट क्रिया । वि. दुष्ट क्रियावाला । देखो विगइ ।
वीइंगाल वि [वीताङ्गार] राग-रहित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत। जिसने उल्लंघन किया हो वह।

वीइक्कम सक [व्यति + क्रम्] उल्लंघन करना।

वीइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित।

वीइय वि [वीजित] जिसको हवा की गई हो वह।

वीइवय अक [व्यति + व्रज्] परिभ्रमण करना। गमन करना। सक. उल्लंघन करना।

वीई स्त्री. देखो वीइ = वीचि।

वीई अ [विविच्य] पृथग् होकर।

वीई अ [विचिन्त्य] चिन्तन करके।

वीईवय देखो वीइवय।

वीचि देखो वीइ = वीचि।

वीचि स्त्री [दे] लघु रथ्या, छोटा मुहल्ला।

वीज देखो वीअ = वीजय्।

वीजण देखो वीअण।

वीजिय देखो वीइय।

वीडग } देखो वीडग।
वीडय }

वीडय पुं [व्रीडक] लज्जा।

वीडिअ वि [व्रीडित] लज्जित।

वीडिआ स्त्री [वीटिका] सजाया हुआ पान। देखो बीडी।

°वीढ देखो पीढ।

वीण सक [वि + चारय्] विचार करना।

°वीण देखो पीण।

वीणण न [दे] प्रकट करना। विदित करना।

वीणा स्त्री. वाद्य-विशेष। °यरिणी स्त्री [°करी] वीणा-नियुक्त दासी। °वायग वि [°वादक] वीणा बजानेवाला।

वीत देखो वीअ = वीत।

वीतिकंत } देखो वीइक्कंत।
वीतिक्कंत }

वीतिवय } देखो वीइवय।
वीतीवय }

वीमंस सक [वि + मृश्, मीमांस्] विचार करना, पर्यालोचन करना।

वीमंसय वि [विमर्शक] विचारकर्ता।

वीर पुं. भगवान् महावीर। छन्द-विशेष। साहित्य-प्रसिद्ध एक रस। वि. पराक्रमी। पुंन. एक देव-विमान। न. वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर। °कंत पुं. [°कान्त] एक देव-विमान। °कण्ह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी। °कूड पुंन [°कूट] एक देव-विमान। °गत पुंन. एक देव-विमान। °जस पुं. [°यशस्] भ० महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा। °ज्झय पुंन [ध्वज] एक देव-विमान। °धवल पुं. गुजरात का एक राजा। °निहाण न [°निधान] स्थान-विशेष। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान। °भद्द पुं [°भद्र] भ० पार्श्वनाथ का एक गणधर। °मई स्त्री [°मती] एक चोर-भगिनी। °लेस पुंन [°लेश्य] एक देवविमान। °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव-विमान। °वरण न. प्रतिसुभट से युद्ध का स्वीकार। °वरणी स्त्री. प्रतिसुभट से प्रथम शस्त्र-प्रहार की याचना। °वलय न. वीरत्व-सूचक कड़ा। °विराली स्त्री [°विराली] वल्ली-विशेष। °सिंग पुंन [°शृङ्ग]। °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] दोनों देव-विमान। °सेण पुं [°सेन] एक वीर यादव। °सेणिय पुंन [°सैनिक, °श्रेणिक]। °वित्त पुंन [°वित्त] देवविमान-विशेष। °ासण न [°ासन] नीचे पैर रखकर सिंहासन पर बैठने के जैसा अवस्थान। °ासणिय वि [°ासनिक] वीरासन से बैठने वाला।

वीरंगय पुं [वीराङ्गद] भ० महावीर के पास दीक्षित एक राजा। एक राजकुमार।

वीरण स्त्रीन. खस तृण, उशीर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरल्ल पुं. श्येन पक्षी ।
वीरिअ पुं [वीर्य]भ० पार्श्वनाथ का एक मुनि-संघ । भ० पार्श्वनाथ का एक गणधर । पुंन. शक्ति । आत्म-बल । पराक्रम । एक देव-विमान । शरीर-स्थित एक धातु । तेज ।
वीरुणी स्त्री. पर्व-वनस्पति-विशेष ।
वीरुत्तरवडिंसग पुंन [वीरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान ।
वीरुहा स्त्री [वीरुधा] विस्तृत लता ।
वीलण वि [दे] पिच्छिल, स्निग्ध ।
वीलय देखो बीलय ।
वीली स्त्री [दे] तरंग । वीथी, श्रेणी ।
वीवाह देखो विवाह = विवाह ।
वीवाहिग वि [वैवाहिक] विवाह-सम्बन्धी ।
वीवी स्त्री [दे] तरंग ।
वीस देखो विस्स = विस्र ।
वीस देखो विस्स = विश्व । °उरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष । °सअ वि [°सृज्] जगत्कर्ता । °सेण पुं [°सेन] चक्रवर्ती राजा । पुं. अहोरात्र का १८ वाँ मुहूर्त ।
वीस° } स्त्री [विंशति] बीस । °म वि.
वीसइ } बीसवाँ । न. नव दिनों का उपवास । °हा अ [°धा] बीस प्रकार से ।
वीसंत वि [विश्रान्त] विश्राम-प्राप्त ।
वीसंदण न [विस्यन्दन] दही की तर और आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य ।
वीसंभ देखो विस्संभ ।
वीसज्ज देखो वीसज्ज = विसज्ज ।
वीसत्थ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त ।
वीसद्ध [विश्रब्ध] विश्वास-युक्त ।
वीसम देखो विस्सम = वि + श्रम् ।
वीसम देखो विस्सम = विश्रम ।
वीसम देखो वीस-म ।
वीसर देखो विस्सर = वि + स्मृ ।
वीसर देखो विस्सर = विस्वर ।
वीसरणालु वि [विस्मर्तृ] भूल जानेवाला ।
वीसव (अप) सक [वि + श्रमय्] विश्राम करवाना ।
वीसस देखो विस्सस ।
वीससा अ [विस्रसा] स्वभाव, प्रकृति ।
वीससिय वि [वैस्रसिक] स्वाभाविक ।
वीसा देखो वीसइ ।
वीसा स्त्री [विश्वा] पृथिवी, धरती ।
वीसाण पुं [विष्वाण] आहार, भोजन ।
वीसाम पुं [विश्राम] विराम । चालू क्रिया का अंत ।
वीसाय देखो विसाय = वि + स्वादय् ।
वीसार देखो विस्सार = वि + स्मृ ।
वीसाल सक [मिश्रय्] मिलाना ।
वीसावँ (अप) देखो वीसाम ।
वीसास देखो विस्सास ।
वीसिया स्त्री. [विंशिका] बीस संख्यावाला ।
वीसु न [दे] युतक, पृथग् ।
वीसुं अ [विष्वक्] सब ओर से । समस्तपन ।
वीसुंभ देखो वीसंभ = वि + श्रम्भ् ।
वीसुंभ अक [दे] पृथग् होना ।
वीसुय देखो विस्सुअ ।
वीसेढि } देखो विसेढि ।
वीसेणि }
वीहि पुंन [व्रीहि] धान्य-विशेष ।
वीहि } स्त्री [वीथि,°का,°थी] मार्ग ।
वीहिया } श्रेणी । क्षेत्र-भाग । बाजार ।
वीही }
वुअ वि [दे] बुना हुआ । बुनवाया हुआ ।
वुअ } वि [वृत] प्रार्थित । प्रार्थना आदि
वुइय } से नियुक्त । वेष्टित ।
वुइय वि [उक्त] कथित ।
वुंज (?) सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना ।
वुंताकी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ ।
वुंद देखो वंद = वृन्द ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुंदारय देखो वंदारय ।
वुंदावण देखो विंदवण ।
वुंद्र देखो वंद्र ।
वुक्क देखो बुक्क = दे ।
वुक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ । विध्वस्त । निष्क्रान्त । देखो वोक्कंत ।
वुक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति ।
वुक्कम पुं [व्युत्क्रम] वृद्धि । उत्पत्ति ।
वुक्कस सक [व्युत् + कृष्] पीछे खींचना, वापस लौटाना ।
वुक्कार देखो बुक्कार ।
वुक्कार सक [दे॰ बूङ्कारय्] गर्जन करना ।
वुग्गह पुं [व्युद्ग्रह] कलह । लड़ाई । डाका । बहकाव । मिथ्याभिनिवेश ।
वुग्गहअ वि [व्युद्ग्राहक] कलह-कारक ।
वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्रहिक] कलह-सम्बन्धी ।
वुग्गाह सक [व्युद् + ग्राहय्] बहकाना ।
वुच्च° देखो वय = वच् ।
वुच्चमाण वि [उच्यमान] जो कहा जाता हो ।
वुच्चा अ [उक्त्वा] कह कर ।
वुच्छ देखो वच्छ = वृक्ष ।
वुच्छ° देखो वोच्छ° ।
वुच्छ° देखो वोच्छिंद ।
वुच्छिण्ण देखो वुच्छिन्न ।
वुच्छित्ति देखो वोच्छित्ति ।
वुच्छिन्न वि [व्युच्छिन्न, व्यवच्छिन्न] अपगत, हटा हुआ । विनष्ट । न. लगातार चौदह दिनों का उपवास ।
वुच्छेअ देखो वोच्छेअ ।
वुच्छेयण देखो वोच्छेयण ।
वुज्ज अक [त्रस्] डरना । देखो वोज्ज ।
वुज्जण न [दे] स्थगन, आच्छादन ।
वुज्झंत वि [उह्यमान] पानी के वेग से खींचा जाता । बह जाता । देखो वह = वह् ।
वुज्झण देखो वुज्जण ।
वुत्र (अप) देखो वच्च = व्रज् ।
वुट्ठ अक [व्युत् + स्था] खड़ा होना ।
वुट्ठ वि [वृष्ट] बरसा हुआ । न. वृष्टि ।
वुट्ठि देखो विट्ठि = वृष्टि । °काय पुं. बरसता जल-समूह ।
°वुड देखो पुड = पुट ।
वुड्ढ अक [वृध्] बढ़ना ।
वुड्ढ सक [वर्धय्] बढ़ाना ।
वुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा । बड़ा, महान् । वृद्धि-प्राप्त । अनुभवी, कुशल । पंडित । निभृत, शान्त, निर्विकार । पुं. तापस । एक जैन मुनि । °त्त, °त्तण न [°त्व] बुढ़ापा । °वाइ पुं [°वादिन्] सिद्धसेन दिवाकर के गुरु । °वाय पुं [°वाद] किंवदन्ती । °सावग पुं [°श्रावक] ब्राह्मण । °णुग वि [°नुग] वृद्ध का अनुयायी ।
वुड्ढ वि [दे] विनष्ट ।
वुड्ढि स्त्री. [वृद्धि] । बढ़ाव । अभ्युदय । समृद्धि । व्याकरण-प्रसिद्ध ऐकार आदि वर्णो की एक संज्ञा । समूह । कलान्तर, सूद । ओषधि-विशेष । पुं. गन्धद्रव्य-विशेष । °कर वि. वृद्धि-कर्ता । °धम्मय वि [°धर्मक] बढ़नेवाला । °म वि [°मत्] वृद्धिवाला ।
वुणण न [दे] बुनना ।
वुणिय वि [दे] बुना हुआ ।
वुण्ण वि [दे] भीत, त्रस्त । उद्विग्न ।
वुत्त वि [उक्त] कथित ।
वुत्त वि [उप्त] बोया हुआ ।
वुत्त न [वृत्त] छन्द, पद्य । देखो वट्ट = वृत्त ।
°वुत्त देखो पुत्त ।
वुत्तंत पुं [वृत्तान्त] हकीकत ।
वुत्ति देखो वत्ति = वृत्ति ।
वुत्थ वि [उषित] बसा हुआ । रहा हुआ ।
वुद देखो वुअ = वृत ।
वुदास पुं [व्युदास] निरास ।
वुदि देखो वइ = वृति ।
वुद्ध देखो वुड्ढ = वृद्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुद्धि देखो वुड्ढि ।
वुप्पंत वि [उप्यमान] बोया जाता ।
वुप्पाय सक [व्युत् + पादय्]व्युत्पन्न करना, होशियार करना ।
वुप्फ न [दे] शेखर, शिरःस्थित ।
वुब्भ° वह् = वह्. का कर्मणि रूप ।
वुब्भमाण देखो वुज्झमाण ।
°वुर देखो पुर ।
°वुरिस देखो पुरिस = पुरुष ।
वुल्लाह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति ।
वुसह देखो वसभ ।
वुसि स्त्री [वृषि] मुनि का आसन । °राइ, राइअ वि [°राजिन्] संयमी, साधु । देखो बुसि, वुसी ।
वुसि वि [वृषिन्] संविग्न, साधु, संयमी ।
वुसिम वि [वश्य] अधीन होनेवाला ।
वुसी स्त्री [वृषी] मुनि का आसन । °म वि [°मत्] संयमी, साधु । देखो बुसि ।
वुस्सग्ग देखो विओसग्ग ।
वूढ देखो वुड्ढ = वृद्ध
वूढ वि [व्यूढ] धारण किया हुआ । ढोया हुआ । बहा हुआ । उपचित, पुष्ट । निःसृत ।
वूणक पुंन [दे] बालक ।
वूय वि [दे] बुना हुआ । देखो वुअ = (दे) ।
वूह पुंन [व्यूह] युद्ध के लिए की जाती सैन्य की रचना-विशेष । समूह ।
वे देखो वइ = वै ।
वे अक [वि + इ] नष्ट होना ।
वे } सक [व्ये] संवरण करना ।
वेअ }
वेअ सक [वेदय्] अनुभव करना । भोगना । जानना ।
वेअ अक [वि + एज्] विशेष काँपना ।
वेअ अक [वेप्] काँपना ।
वेअ पुं [वेद] ऋग्वेद आदि शास्त्र-ग्रन्थ । मोहनीय कर्म का एक भेद, जिसके उदय से मैथुन की इच्छा होती है । आचारांग आदि जैन-ग्रन्थ । विज्ञ । °व वि [°वत्] । °वि, °विउ वि [°विद्] वेदों का जानकार । °वत्त न [°व्यक्त] चैत्य-विशेष । °वत्त न [°ावर्त] देखो °वत्त ।
वेअ न [वेद्य] सुख तथा दुःख का कारण-भूत कर्म ।
वेअ पुं [वेग] शीघ्र गति, दौड़, तेजी । प्रवाह । रेतस् । मूत्र आदि निःसारण-यन्त्र । संस्कार-विशेष ।
वेअंत पुं [वेदान्त] उपनिषद् का विचार करनेवाला दर्शन-विशेष ।
वेअग वि [वेदक] भोगनेवाला । न. सम्यक्त्व का एक भेद । वि. सम्यक्त्व-विशेषवाला जीव । °छहिय वि [छिन्नवेदक] जिसका पुरुष-चिह्न आदि काटा गया हो वह ।
वेअच्छ न [वैकक्ष] छाती में यज्ञोपवीत की तरह पहना जाता वस्त्र, माला आदि । बन्ध-विशेष, मर्कट-बन्ध । कन्धे के नीचे लटकना ।
वेअड सक [खच्] जड़ना ।
वेअडिअ वि [दे] फिर से बोया हुआ ।
वेअडिअ पुं [दे. वैकटिक] मोती वेधनेवाला शिल्पी, जौहरी ।
वेअड्डि देखो विअड्डि ।
वेअड्ढ न [दे] भिलावाँ ।
वेअड्ढ पुं [वैताढ्य] पर्वत-विशेष ।
वेअड्ढ न [वैदग्ध्य] विदग्धता ।
वेअण न [वेतन] मजूरी का मूल्य, तनखाह ।
वेअणा देखो विअणा ।
वेअणिज्ज } वि [वेदनीय] भोगने-योग्य ।
वेअणिय } न. सुख-दुःख आदि कारण-भूत कर्म ।
वेअय देखो वेअग ।
वेअरणी स्त्री [वैतरणी] नरक-नदी । परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो वैतरणी की विकुर्वणा करके उसमें नरक-जीवों को डालता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। विद्या-विशेष।
वेअल्ल देखो वेइल्ल = विचकिल।
वेअल्ल वि [दे] मृदु। न. असामर्थ्य।
वेअल्ल न [वैकल्य] व्याकुलता।
वेअस पुं [वेतस] बेंत का पेड़।
वेआगरण वि [वैयाकरण] व्याकरण-सम्बन्धी, संदेह-निराकरण से सम्बन्ध रखनेवाला।
वेआर सक [दे] ठगना।
वेआरणिय वि [वैदारणिक] विदारण से उत्पन्न।
वेआरणिय वि [दे] प्रतारण-सम्बन्धी, ठगने से उत्पन्न।
वेआरणिय वि [वैचारणिक] विचार-संबंधी।
वेआरिअ वि [दे] ठगा हुआ। पुं. केश।
वेआल पुं [वेताल] विकृत पिशाच, प्रेत। छन्द-विशेष।
वेआल वि [दे] अन्धा। पुं. अंधकार।
वेआलग वि [विदारक] विदारण-कर्ता।
वेआलग न [विदारण] चीरना।
वेआलि पुं [वैतालिन्] स्तुति-पाठक।
वेआलिअ देखो वइआलिअ।
वेआलिय वि [वैक्रिय] विक्रिया से उत्पन्न।
वेआलिय वि [वैकालिक] विकाल-सम्बन्धी, अपराह्ण में बना हुआ।
वेआलिय न [विदारक] विदारण-क्रिया।
वेआलिय देखो वइआलिअ।
वेआलिया स्त्री [वैतालिकी] वीणा-विशेष।
वेआली स्त्री [वैताली] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से अचेतन काष्ठ भी उठ खड़ा होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है। नगरी-विशेष।
वेइ स्त्री [वेदि] परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा।
वेइ वि [वेदिन्] जाननेवाला। अनुभव करनेवाला।
वेइअ वि [वेदित] अनुभूत। ज्ञात।
वेइअ देखो वेविअ = वेपित।
वेइअ वि [वैदिक] वेद-संबन्धी। वेदों का जानकार।
वेइअ वि [वेगित] वेग-युक्त।
वेइअ वि [व्येजित] कम्पित। कँपाया हुआ।
वेइआ स्त्री [दे] पनीहारी।
वेइआ स्त्री [वेदिका] परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा। अँगूठी। वर्जनीय प्रतिलेखन का एक भेद, प्रत्युपेक्षणा का एक दोष।
वेइज्ज अक [वि + एज्] काँपना।
वेइद्ध वि [दे] ऊँचा किया हुआ। विसंस्थुल। आविद्ध। शिथिल।
वेइल्ल देखो विअइल्ल।
वेउंठ देखो वेकुंठ।
वेउट्टिया स्त्री [दे] पुनः पुनः।
वेउव्व देखो विउव्व = वि+कृ, कुर्व्।
वेउव्व वि [वैक्रिय] विकृत। देखो विउव्व = वैक्रिय। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य।
वेउव्विअ वि [वैक्रिय, वैक्रियिक, वैकुर्विक] अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर। वैक्रिय शरीर बनाने की शक्तिवाला। विकुर्वणा से बनाया हुआ। वैक्रिय शरीरवाला, वैक्रिय शरीर से संबंध रखनेवाला। विभूषित। °लद्धिअ वि [°लब्धिक] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने की शक्तिवाला। समुग्घाय पुं [°समुद्घात] वैक्रिय शरीर बनाने के लिए आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालना।
वेउव्विया स्त्री [दे] पुनः पुनः।
वेंकड पुं [वेङ्कट] दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत। °णाह पुं [°नाथ] विष्णु की वेंकटाद्रि पर स्थित मूर्ति।
वेंगी स्त्री. [दे] बाड़वाली।
वेंजण देखो वंजण।
वेंट देखो विंट = वृन्त।
वेंटल देखो विंटल।
वेंटली देखो विंटलिआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेंटिआ देखो विंटिया ।
वेंड पुं [वेतण्ड] हाथी । देखो वेयंड ।
वेंढसुरा स्त्री [दे] कलुष मदिरा ।
वेंढि पुं [दे] पशु ।
वेंढिअ वि [दे] वेष्टित, लपेटा हुआ ।
वेंभल देखो विंभल ।
वेकक्ख देखो वेअच्छ ।
वेकच्छिया } देखो वेगच्छिया ।
वेकच्छी }
वेकिल्लिअ न [दे] चबी हुई चीज को फिर से चबाना ।
वेकुंठ पुं [वैकुण्ठ] विष्णु, नारायण । देवाधीश । गरुड पक्षी । अर्जक वृक्ष, सफेद बर्बरी का गाछ । विष्णु का धाम । पुंन. मथुरा का एक वैष्णव तीर्थ ।
वेग देखो वेअ = वेग । °वई स्त्री [°वती] एक नदी । °वंत वि [°वत्] वेगवाला ।
वेगच्छ देखो वेअच्छ ।
वेगच्छिया } स्त्री [वैकक्षिका, °क्षा] उत्तरासंग ।
वेगच्छी }
वेगड स्त्रीन [दे] एक तरह का जहाज ।
वेगर पुं [दे] द्राक्षा, लोंग आदि से मिश्रित चीनी आदि ।
वेगुन्न देखो वइगुण्ण ।
वेग्ग देखो विअग्ग ।
वेग्ग देखो वेग ।
वेग्गल वि [दे] दूर-वर्ती ।
वेचित्त देखो वइचित्त ।
वेच्च देखो विच्च = वि + अय् ।
वेच्छ° देखो विअ = विद् ।
वेच्छा देखो वेगच्छिया । °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत की तरह पहनी जाती साँकली ।
वेजयंत पुंन [वैजयन्त] एक अनुत्तर देवविमान । जंबू-द्वीप, लवण समुद्र, धातकीखण्ड, कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का दक्षिण द्वार । पुं. उपर्युक्त द्वारों के अधिष्ठाता देव । एक अनुत्तर देवविमान का निवासी देव । जंबू-मन्दर के उत्तर रुचक पर्वत का एक शिखर । वि. प्रधान ।
वेजयंती स्त्री [वैजयन्ती] ध्वजा । षष्ठ बलदेव की माता । अंगारक आदि महाग्रहों की एक-एक अग्रमहिषी । पूर्व रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । विजय-विशेष की राजधानी । एक विद्याधर-नगरी । रामचन्द्रजी की एक सभा । भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका । उत्तर अंजनगिरि की दक्षिण दिशा में स्थित एक पुष्करिणी । पक्ष की आठवीं रात्रि । भ० कुन्थुनाथ की दीक्षा-शिबिका ।
वेज्ज वि [वेद्य] भोगने या अनुभव करने-योग्य ।
वेज्ज पुं [वैद्य] चिकित्सक । वृक्ष-विशेष । वि. पण्डित । °सत्थ न [°शास्त्र] चिकित्सा-शास्त्र ।
वेज्जग } न [वैद्यक] चिकित्सा-शास्त्र ।
वेज्जय } वैद्य-कर्म ।
वेज्झ वि [वेध्य] बींधने-योग्य ।
वेट्ठ देखो वेढ ।
वेट्ठणग पुं [वेष्टनक] सिर पर बाँधी जाती एक पगड़ी । कान का एक आभूषण ।
वेट्ठया देखो विट्ठा ।
वेट्ठि देखो विट्ठि ।
वेट्ठिद (शौ) वेढ का भूकृ. ।
वेड [दे] देखो बेड ।
वेडइअ पुं [दे] व्यापारी ।
वेडंबग देखो विडंबग ।
वेडस पुं [वेतस] बेंत का गाछ ।
वेडिअ पुं [दे] मणिकार, जौहरी ।
वेडिकिल्ल वि [दे] संकट, कमचौड़ा ।
वेडिस देखो वेडस ।
वेडुब्भ } वि [दे] नृपादि कुल में उत्पन्न ।
वेडुब्ग }
वेडुज्ज } देखो वेरुलिअ ।
वेडुरिअ }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेडुल्ल वि [दे] गर्वित ।
वेड्ढ देखो वेढ = वेष्ट् ।
वेड्ढय पुं [वेष्टक] छन्द-विशेष ।
वेढ सक [वेष्ट्] लपेटना ।
वेढ पुं [वेष्ट] छन्द-विशेष । लपेटन । एक वस्तु-विषयक वाक्य-समूह, वर्णन-ग्रन्थ ।
°वेढ देखो पीढ ।
वेढिम वि [वेष्टिम] वेष्टन से बना हुआ । पुंस्त्री. खाद्य-विशेष ।
वेण पुं [दे] नदी का विषम घाट ।
वेण (अप) देखो वयण = वचन ।
वेणइअ न [वैनयिक] विनय, नम्रता । मिथ्यात्व-विशेष, सभी देवों और धर्मों को सत्य मानना । वि. विनय-संबन्धी । विनय-वादी । °वाद पुं. विनय को ही मुख्य माननेवाला दर्शन ।
वेणइगी, वेणइया } स्त्री [वैनयिकी] विनय से प्राप्त होनेवाली बुद्धि ।
वेणइया स्त्री [वैणकिया] लिपि-विशेष ।
वेणा स्त्री. स्थूलभद्र का एक भगिनी ।
वेणि स्त्री [वेणी] बालों की गूँथी हुई चोटी । वाद्य-विशेष । गंगा और यमुना का संगम-स्थान । °वच्छराय पुं [°वत्सराज] एक राजा ।
वेणिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद ।
वेणी स्त्री. देखो वेणि ।
वेणु पुं. बाँस । एक राजा । बंसी । °दालि पुं. सुपर्णकुमार देवों का उत्तरदिशा का इन्द्र । °देव पुं. सुपर्णकुमारनामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र । देव-विशेष । गरुड-पक्षी । °याणुजाय पुं [°कानुजात] गणित-शास्त्र का द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र वंशाकार से अवस्थान करते हैं ।
वेणुणास, वेणुसाअ } पुं [दे] भ्रमर ।
वेण्ण वि [दे] आक्रान्त ।
वेण्णा स्त्री [वेन्ना] नदी-विशेष । °यड न [°तट] नगर-विशेष ।
वेण्हु देखो विण्हु ।
वेताली स्त्री [दे] तट, किनारा । गली ।
वेत्त न [दे] स्वच्छ वस्त्र ।
वेत्त पुं [वेत्र] बेंत का गाछ । °ासण न [°ासन] बेंत का बना हुआ आसन ।
वेत्तव्व वि [वेत्तव्य] जानने-योग्य ।
वेत्तिअ पुं [वैत्रिक] द्वारपाल, चपरासी ।
वेद देखो वेअ = वेदय् ।
वेद देखो वेअ = वेद ।
वेदंत देखो वेअंत ।
वेदक, वेदग } देखो वेअग ।
वेदणा देखो विअणा ।
वेदब्भी स्त्री [वैदर्भी] प्रद्युम्न की एक स्त्री ।
वेदस (शौ) देखो वेडिस ।
वेदि देखो वेइ = वेदि ।
वेदिग पुं [वैदिक] एक इभ्य मनुष्य-जाति ।
वेदिस न [वैदिश] विदिशा की तरफ का नगर ।
वेदुलिय देखो वेरुलिय ।
वेदूणा स्त्री [दे] लज्जा ।
वेदेसिय देखो वइदेसिअ ।
वेदेह पुं [वैदेह] एक इभ्य मनुष्य-जाति । देखो वइदेह ।
वेदेहि पुं [विदेहिन्] विदेह देश का राजा ।
वेधम्म देखो वइधम्म ।
वेधव्व देखो वेहव्व ।
वेप्प वि [दे] भूत आदि से गृहीत, पागल ।
वेप्पुअ न [दे] बचपन । वि. भूताविष्ट ।
वेफल्ल न [वैफल्य] निष्फलता ।
वेब्भल वि [विह्वल] व्याकुल ।
वेब्भार, वेभार } पुं [वैभार] राजगृही के समीप का एक पहाड़ ।
वेम देखो वेमय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेम पुं [वेमन्] तन्तुवाय का एक उपकरण।
वेमणस्स न [वैमनस्य] भीतरी द्वेष, दीनता।
वेमय सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना।
वेमाउअ } वि [वैमातृक] विमाता की
वेमाउग } संतान।
वेमाणि पुंस्त्री [विमानिन्] विमान-वासी देवता, उत्तम देव-जाति। °णिणी।
वेमाणिअ पुं [वैमानिक] एक उत्तम देव-जाति, विमानवासी देवता।
वेमाया स्त्री [विमात्रा] अनियत परिमाण।
वेम्मि क्रि [वच्मि] मैं कहता हूँ।
वेयंड पुं [वेतण्ड] हस्ती। देखो वेंड।
वेयावच्च } न [वैयावृत्य, वैयापृत्य]
वेयावडिय } सेवा, शुश्रूषा।
वेर न [वैर] शत्रुता।
वेर न [द्वार] दरवाजा।
वेरग्ग न [वैराग्य] विरागता, उदासीनता।
वेरग्गिअ वि [वैराग्यिक] वैराग्य-युक्त।
वेरज्ज न [वैराज्य] वैरि-राज्य। राजा विद्यमान न हो वह राज्य। प्रधान आदि राजा से रिक्त रहते हों वह राज्य।
वेरत्तिय वि [वैरात्रिक] रात्रि के तृतीय पहर का समय।
वेरमण न [विरमण] विराम, निवृत्ति।
वेराड पुं [वैराट] अलवर तथा उसके चारों ओर का प्रदेश।
वेराय (अप) पुं [विराग] वैराग्य, उदासीनता।
वेरि } देखो वइरि।
वेरिअ }
वेरिज्ज वि [दे] असहाय, एकाकी। न. सहायता।
वेरुलिअ पुंन [वैडूर्य] रत्न की एक जाति। विमानावास-विशेष। शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान। महाहिमवन्त पर्वत या रुचक पर्वत का एक शिखर। वि. वैडूर्य रत्नवाला। °मय वि [°मय] वैडूर्य रत्नों का बना हुआ।
वेरोयण देखो वइरोअण = वैरोचन।
वेल न [दे] दाँत के मूल का मांस।
वेलंधर पुं [विलन्धर] एक देव-जाति, नाग-राज-विशेष। पर्वत-विशेष। न. नगर-विशेष।
वेलंधर पुं [वैलन्धर] वेलन्धर-सम्बन्धी।
वेलंब पुं [वेलम्ब] वायुकुमार नामक देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र। पाताल-कलश का अधिष्ठाता देव-विशेष।
वेलंब पुं [दे. विडम्ब] विडम्बना। वि. विडम्बना-कारक।
वेलंबग पुं [विडम्बक] विदूषक। वि. विडम्बना करनेवाला।
वेलक्ख न [वैलक्ष्य] लज्जा।
वेलणय न [दे. व्रीडनक] लज्जा। पुं. लज्जा-जनक वस्तु के दर्शन आदि से उत्पन्न होने-वाला एक रस।
वेलव सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना। कँपाना। व्याकुल करना। व्यावृत्त करना।
वेलव सक [वञ्च्] ठगना। पीड़ा करना।
वेला स्त्री. [दे] दाँत के मूल का मांस।
वेला स्त्री. समय। ज्वार, समुद्र के पानी की वृद्धि। समुद्र का किनारा। मर्यादा। वार। °उल न [°कुल] जहाजों के ठहरने का स्थान। °वासि पुं [°वासिन्] समुद्र-तट के समीप रहनेवाला वानप्रस्थ।
वेलाइअ वि [दे] मृदु। गरीब।
वेलाव (अप) सक [वि + लम्बय्] देरी करना।
वेलिल्ल वि [वेलावत्] बेला-युक्त।
वेली स्त्री [दे] निद्राकरी लता। घर के चार कोणों में रखा जाता छोटा स्तम्भ।
वेलु देखो वेणु।
वेलु पुं [दे] चोर। मुसल।
वेलुंक वि [दे] विरूप, खराब, कुत्सित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेलुग } पुंन [वेणुक] बेल का गाछ या
वेलुय } फल। बाँस। बाँसकरिला, वनस्पति-विशेष।

वेलुरिअ } देखो वेरुलिअ।
वेलुलिअ }

वेलूणा स्त्री [दे] लज्जा।

वेल्ल अक [वेल्ल्] काँपना। लेटना। सक. कँपाना। प्रेरना।

वेल्ल अक [रम्] क्रीड़ा करना।

वेल्ल पुं [दे] केश। पल्लव। विलास। काम-पीड़ा। वि. मूर्ख। न. देखो वेल्लग।

वेल्लग न [दे] ऊपर से ढकी हुई एक तरह की गाड़ी। गाड़ी के ऊपर का तला।

वेल्लण न [वेल्लन] प्रेरणा।

वेल्लय देखो वेल्लग।

वेल्लरिअ पुं [दे] केश, बाल।

वेल्लरिआ स्त्री [दे] वल्ली, लता।

वेल्लरी स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना।

वेल्लविअ देखो वेल्लिअ

वेल्लविअ वि [दे] विलिप्त, पीता हुआ।

वेल्लहल } वि [दे] कोमल। विलासी।
वेल्लहल्ल } सुन्दर।

वेल्ला स्त्री [दे. वल्ली] लता, वल्ली।

वेल्लालअ वि [दे] संकुचित।

वेल्लि देखो वल्लि।

वेल्लिअ वि [वेल्लित] कँपाया हुआ। प्रेरित।

वेल्ली देखो वेल्लि।

वेव अक [वेप्] काँपना।

वेवज्झ न [वैवाह्य] शादी।

वेवण्ण न [वैवर्ण्य] फीकापन।

वेवय पुंन [वेपक] रोग-विशेष, कम्प।

वेवाइअ वि [दे] उल्लास-प्राप्त।

वेवाहिअ वि [वैवाहिक] सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धवाला।

वेविअ वि [वेपित] कम्पित। पुं. एक नरक-स्थान।

वेव्व अ [दे] आमन्त्रण-सूचक अव्यय।

वेव्व अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—भय। वारण, रुकावट। विषाद। आमन्त्रण।

वेस पुं [वेष] शरीर पर वस्त्र आदि की सजावट।

वेस वि [व्येष्य] विशेष रूप से वांछनीय।

वेस पुं [वेष] विरोध, वैर, घृणा।

वेस वि [वेष्य] वेषोचित।

वेस वि [द्वेष्य] अप्रीतिकर। विरोधी।

वेस देखो वइस्स = वैश्य।

वेसइअ वि [वैषयिक] विषय से सम्बन्धी।

वेसंपायण देखो वइसंपायण।

वेसंभ पुं [विश्रम्भ] विश्वास।

वेसंभरा स्त्री [दे] छिपकली।

वेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, विरोध, दुश्मनाई।

वेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद।

वेसण न [वेषण] जीरा आदि मसाला।

वेसण न [वेसन] चना आदि का आटा।

वेसमण पुं [वैश्रमण] यक्षराज, कुबेर। इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकपाल। एक विद्याधर-नरेश। एक राजकुमार। एक सेठ। अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त। एक देव-विमान। क्षुद्र हिमवान् आदि पर्वतों के शिखरों का नाम। °काइय पुं [°कायिक] वैश्रमण की आज्ञा में रहनेवाली एक देव-जाति। °दत्त पुं. एक राजा। °देवकाइय पुं [देवकायिक] वैश्रमण के अधीनस्थ एक देव-जाति। °प्पभ पुं [°प्रभ] वैश्रमण का उत्पात-पर्वत। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि।

वेसम्म न [वैषम्य] विषमता, असमानता।

वेसर पुंस्त्री. पक्षि-विशेष। अश्वतर, खच्चर।

वेसलग पुं [वृषल] शूद्र, अधम-जातीय मनुष्य।

वेसवण पुं [वैश्रवण] देखो वेसमण।

वेसवाडिय पुं [वेशवाटिक] एक जैन-मुनि-गण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेसवार पुं. धनिया आदि मसाला ।
वेसा देखो वेस्सा ।
वेसाणिय पुं [वैषाणिक] एक अन्तर्द्वीप । अन्तर्द्वीप-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति ।
वेसानर देखो वइसानर ।
वेसायण देखो वेसियायण ।
वेसालिअ वि [वैशालिक] समुद्र में उत्पन्न । विशालाख्य जाति में उत्पन्न । विशाल । पुं. भ० ऋषभदेव । भ० महावीर ।
वेसाली स्त्री [वैशाली] एक नगरी ।
वेसास देखो वीसास ।
वेसासिअ वि [वैश्वासिक, विश्वास्य] विश्वसनीय, विश्वास-पात्र ।
वेसाह देखो वइसाह ।
वेसाही स्त्री [वैशाखी] वैशाख मास की पूर्णिमा या अमावस ।
वेसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करनेवाला ।
वेसिअ देखो वइसिअ ।
वेसिअ पुंस्त्री [वैशिक] वैश्य । न जैनेतर शास्त्र-विशेष, काम शास्त्र ।
वेसिअ वि [वैषिक] वेष सम्बन्धी ।
वेसिअ वि [व्येषित] विशेष रूप या विविध प्रकार से अभिलषित ।
वेसिट्ठ देखो वइसिट्ठ ।
वेसिणी स्त्री [दे] वेश्या, गणिका ।
वेसिया देखो वेस्सा ।
वेसियायण पुं [वैश्यायन] एक बाल तापस ।
वेसी स्त्री [वैश्या] वैश्य जाति की स्त्री ।
वेसुम पुं [वेश्मन्] गृह ।
वेस्स देखो वइस्स = वैश्य ।
वेस्स देखो वेस = द्वेष्य ।
वेस्स देखो वेस = वेष्य ।
वेस्सा स्त्री [वेश्या] गणिका । ओषधि-विशेष, पाढ़ का गाछ ।
वेस्सासिअ देखो वेसासिअ ।
वेह सक [प्र + ईक्ष्] देखना ।
वेह सक [व्यध्] बींधना, छेदना ।
वेह पुं [वेध] वेधन, छेद । अनुबोध, अनुगम, मिश्रण । द्यूत-विशेष । अनुशय, अत्यन्त द्वेष ।
वेह पुं [वेधस्] विधि, विधाता ।
वेहम्म देखो वइधम्म ।
वेहल्ल पुं [विहल्ल] श्रेणिक का एक पुत्र ।
वेहव सक [वञ्च्] ठगना ।
वेहव न [वैभव] विभूति, ऐश्वर्य ।
वेहविअ पुं [दे] अनादर । वि. क्रोधी ।
वेहविअ वि [वञ्चित] प्रतारित ।
वेहव्व न [वैधव्य] विधवापन ।
वेहाणस देखो वेहायस ।
वेहाणसिय वि [वैहायसिक] फाँसी आदि से लटक कर मरनेवाला ।
वेहायस वि [वैहायस] आकाश में होनेवाला । फाँसी लगा कर मरना । पुं राजा श्रेणिक का एक पुत्र ।
वेहारिय वि [वैहारिक] विहार-सम्बन्धी ।
वेहास न [विहायस्] आकाश । अन्तराल ।
वेहास देखो वेहायस ।
वेहिम वि [वैधिम, वेध्य] तोड़ने-योग्य, दो टुकड़े करने-योग्य ।
वैउंठ देखो वेकुंठ ।
वैभव देखो वेहव ।
वोअण देखो वोक्कस ।
वोइय वि [व्यपेत] वर्जित, रहित ।
वोंट देखो विंट = वृन्त ।
वोकिल्ल वि [दे] गृह-शूर । झूठा-शूर ।
वोकिल्लिअ न [दे] चबी हुई चीज को पुनः चबाना ।
वोक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना ।
वोक्क सक [व्या + हृ, उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना ।
वोक्क सक [उद् + नट्] अभिनय करना ।
वोक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] विपरीत क्रम से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थित। अतिक्रान्त। देखो वुक्कंत।
वोक्कस सक [व्यप+कृष्] ह्रास प्राप्त करना, कमी करना।
वोक्कस देखो बोक्कस।
वोक्कस देखो वुक्कस = व्युत्+कृष्।
वोक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष। देखो वुक्का।
वोक्का स्त्री [व्याहृति] पुकार।
वोक्कार देखो बोक्कार।
वोक्ख देखो वोक्क = उद्+नद्।
वोक्खंदय पुं [अवस्कन्द] आक्रमण।
वोक्खारिय वि [दे] विभूषित।
वोगड वि [व्याकृत] कहा हुआ, प्रतिपादित। परिस्फुट।
वोगडा स्त्री[व्याकृता] प्रकट अर्थवाली भाषा।
वोगसिअ वि [व्युत्कर्षित] निष्कासित।
वोच } सक [वद्] बोलना, कहना।
वोच्च
वोच्चत्थ वि [व्यत्यस्त] विपरीत।
वोच्चत्थ न [दे] विपरीत रत।
वोच्छ° वय = वच् का भवि. रूप।
वोच्छिद सक [व्युत्, व्यव+छिद्] तोड़ना। खण्डित करना। विनाश करना। परित्याग करना।
वोच्छिण्ण देखो वोच्छिन्न।
वोच्छित्ति स्त्री [व्यवच्छित्ति] विनाश। °णय पुं [°नय] पर्याय-नय।
वोच्छिन्न देखो वुच्छिन्न।
वोच्छेअ } पुं [व्युच्छेद, व्यवच्छेद] उच्छेद। अभाव, व्यावृत्ति। प्रतिबन्ध। विभाग।
वोच्छेद
वोच्छेयण न [व्युच्छेदन] विनाश। परित्याग।
वोज्ज देखो वुज्ज।
वोज्ज सक [वीजय्] हवा करना।
वोज्जिर वि [त्रसितृ] डरनेवाला।
वोज्झ देखो वह का कवकृ. का रूप।
वोज्झ } पुं [दे] बोझ।
वोज्झमल्ल
वोज्झर वि [दे] अतीत। भीत, त्रस्त।
वोट्टि वि [दे] सक्त, लीन।
वोड वि [दे] दुष्ट। छिन्न-कर्ण। देखो बोड।
वोडही स्त्री [दे] तरुणी। कुमारी। देखो वोद्रह।
वोड्ड वि [दे] मूर्ख।
वोढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ।
वोढ वि [दे] देखो वोड।
वोढव्व वह = वह् का कृ.।
वोढु वि [वोढ] वहन-कर्ता।
वोढुं वह = वह् का हेकृ.।
वोढूण अ [उड्ढ्वा] वहन कर।
वोत्तव्व वय = वच् का कृ.।
वोत्तुआण अ [उक्त्वा] कह कर।
वोत्तुं वय का हेकृ.।
वोत्तूण वय = वच् का संकृ.।
वोदाण न [व्यवदान] कर्मों का विनाश। शुद्धि, विशेष रूप से कर्म-विशोधन। तप। वनस्पति-विशेष।
वोद्रह वि [दे] तरुण स्त्री. °ही।
वोभीसण वि [दे] वराक। गरीब।
वोम न [व्योमन्] आकाश। °बिन्दु पुं. एक राजा का नाम।
वोमज्झ पुं [दे] अनुचित वेष।
वोमिल पुं [व्योमिल] एक जैन मुनि।
वोमिला स्त्री [व्योमिला] एक जैन मुनि-शाखा।
वोय पुं [वोक] एक देश का नाम।
वोरच्छ वि [दे] तरुण।
वोरमण न [व्युपरमण] हिंसा, प्राणि-वध।
वोरल्ली स्त्री [दे] श्रावण मास की शुक्ला चतुर्दशी। उसमें होनेवाला एक उत्सव।
वोरविअ वि [व्यपरोपित] जो मारा गया हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वोरुट्टी स्त्री [दे] रुई से भरा हुआ वस्त्र ।

वोल अक [गम्] गति करना । गुजारना । सक. अतिक्रमण करना । अक. गुजरना । देखो बोल = व्यति + क्रम् ।

वोल देखो बोल = दे ।

वोलट्ट अक [व्युप + लुट्] छलकना ।

वोलाविअ वि [गमित] अतिक्रामित ।

वोलिअ } वि [गत] गया हुआ । व्यतीत ।
वोलीण } अतिक्रान्त ।

वोल्ल सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना ।

वोल्लाह पुं. देश-विशेष । देश-विशेष में उत्पन्न ।

वोवाल पु [दे] वृषभ ।

वोसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] परित्याग ।

वोसग्ग } अक [वि + कस] विकसना ।
वासट्ट } बढ़ना ।

वोसट्ट सक [वि + कासय्] विकास करना । बढ़ाना ।

वोसट्ट वि [विकसित] विकास-प्राप्त ।

वोसट्ट वि [दे] भर कर खाली किया हुआ ।

वोसट्ठ वि [व्युत्सृष्ट] परित्यक्त । परिष्कार-रहित । कायोत्सर्ग में स्थित ।

वोसमिय वि [व्यवशमित] उपशमित ।

वोसर } सक [व्युत् + सृज्] परित्याग
वोसिर } करना ।

वोसिर वि [व्युत्सर्जन] छोड़नेवाला ।

वोसेअ वि [दे] उन्मुख-गत ।

वोहार न [दे] जल-वहन ।

वोहित्त न [वहित्र] जहाज, नौका । देखो बोहित्थ ।

व्युड पुं [दे] विट, भडुआ ।

व्रंद देखो वंद = वृन्द ।

व्रत्त (अप) वय = व्रत ।

व्राक्रोस (अप) पुं [व्याक्रोश] शाप । निन्दा । विरुद्ध चिन्तन ।

व्रागरण (अप) देखो वागरण ।

व्राडि (अप) पुं [व्याडि] संस्कृत व्याकरण और कोष का कर्ता एक मुनि ।

व्रास देखो वास = व्यास ।

व्व देखो इव ।

व्व देखो वा = अ ।

°व्वअ देखो वय = व्रत ।

व्ववसिअ देखो ववसिय = व्यवसित ।

°व्वाज देखो वाय = व्याज ।

°व्वावार देखो वावार = व्यापार ।

°व्वावुड देखो वावुड ।

°व्वाहि देखो वाहि ।

व्विव देखो इव ।

व्वे अ [दे] संबोधन सूचक अव्यय ।

श

शिआल (मा) पुं [श्याल] बहू का भाई ।

श्चिट (मा) देखो चिट्ठ स्था ।

स

स पुं. व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान दाँत होने से यह दन्त्य कहा जाता है । °अण, °गण पुं. पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम दो ह्रस्व और तीसरा गुरु अक्षर होता है । गार° पुं [°कार] 'स' अक्षर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स देखो सं = सम् ।

स पुं [श्वन्] श्वान । °पाग पुं [°पाक] चाण्डाल । °मुहि पुंस्त्री [°मुखि] कुत्ते की तरह आचरण । °वच पुं [°पच] चाण्डाल । °वाग, °वाय देखो °पाग ।

स अ [स्वर्] स्वर्ग ।

स वि [सत्] श्रेष्ठ । विद्यमान । °उरिस पुं [°पुरुष] श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन । °क्कय वि [°कृत] सम्मानित । देखो °क्किअ । °क्कह वि [°कथ] सत्य-वक्ता । °क्किअ न [°कृत] सत्कार, सम्मान । देखो °क्कय । °गइ स्त्री [°गति] उत्तम गति— स्वर्ग । मुक्ति । °ज्जण पुं [°ज्जन] सत्पुरुष । °त्तम वि. सज्जनों में अतिश्रेष्ठ । °त्थाम न [°स्थामन्] प्रशस्त बल । °धम्मिअ वि [°धार्मिक] श्रेष्ठ-धार्मिक । °न्नाण न [°ज्ज्ञान] उत्तम ज्ञान । °प्पभ वि [°प्रभ] सुन्दर प्रभावाला । °प्पुरिस पुं [°पुरुष] सज्जन, किंपुरुष-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र । श्रीकृष्ण । °प्फल वि [°फल] श्रेष्ठ फलवाला । °ब्भाव पुं [°भाव] सम्भव, उत्पत्ति । सत्व, अस्तित्व । चित्त का अच्छा अभिप्राय । भावार्थ । विद्यमान पदार्थ । °ब्भावदायणा स्त्री [°भाव-दर्शन] प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुर्वादि के समक्ष प्रकटीकरण । °ब्भाविअ वि [°भावित] सद्भाव-युक्त । °ब्भूअ वि [°भूत] सत्य, वास्तविक । विद्यमान । °याचार पुं [°आचार] प्रशस्त आचरण । °रूव वि [°रूप] प्रशस्त रूपवाला । °ल्लग पुं [°लग] प्रशस्त संवरण, इन्द्रिय-संयम । °वाय पुं [°वाद] प्रशस्त वाद । °वाया स्त्री [°वाच्] प्रशस्त वाणी ।

स पुं [स्व] आत्मा, खुद । ज्ञाति । वि. आत्मीय । न. धन । कर्म । °कडब्भि, °गडब्भि वि [°कृतभिद्] निज के किये हुए कर्मों का विनाशक । °जण पुं [°जन] ज्ञाति, सगा । आत्मीय लोग । °तंत वि [°तन्त्र] स्वाधीन । न. स्वकीय सिद्धान्त । °त्थ वि [°स्थ] तंदुरुस्त । सुख से अवस्थित । °पक्ख पुं [°पक्ष] साधर्मिक । तरफदार । अपना पक्ष । °पाय न [°पात्र] निज का नाम । °प्पभ वि [°प्रभ] निज से ही शोभनेवाला । °ब्भाव, °भाव पुं. प्रकृति, निसर्ग । °भावन्नु वि [°भावज्ञ] स्वभाव का जानकार । °यण देखो °जण । °रूय, °रूव न [°रूप] स्वभाव । °संवेयण न [°संवेदन] स्वप्रत्यक्षज्ञान । °हाअ, °हाव देखो °भाव । °हाववाद पुं [°भाववाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत । °हिअ न [°हित] निज का भला । वि. स्वहितकर ।

स° वि. सहित । समान । °अण्ह वि [°तृष्ण] उत्कण्ठित । °अर वि [°कर] कर-सहित । °अर वि [°गर] विष-युक्त । °इण्ह देखो °अण्ह । °उण वि [°गुण] गुण-युक्त । °उण्ण वि [°पुण्य] पुण्य-शाली । °ओस वि [°तोष] सन्तुष्ट । °ओस वि [°दोष] दोष-युक्त । °काम वि. मनोरथ-युक्त । °कामणिज्जरा स्त्री [°कामनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक भेद । °काममरण न. पण्डित-मरण । °केय वि [°केत] गृहस्थ । प्रत्या-ख्यान-विशेष । °क्खर वि [°क्षर] विद्वान् । °गार वि [°गार] गृहस्थ । °गार वि [°कार] आकार-युक्त । °गुण वि. गुणी । °ग्ग वि [°ग्र] श्रेष्ठ । °ग्गह वि [°ग्रह] उपरक्त, ग्रहण-युक्त, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त । °घिण वि [°घृण] दयालु । °चक्खु, °चक्कुअ वि [°चक्षुष, °चक्षुष्क] नेत्रवाला, देखता । °चित्त, °चेयण वि [°चेतन] चेतनावाला, सजीव । °च्चित्त देखो °चित्त । °जिय देखो °ज्जीअ । °जोइ वि [°ज्योतिष्] प्रकाश-युक्त । °जोणिय वि [°योनिक]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्पत्ति-स्थानवाला, संसारी। °ज्जीअ, °ज्जीव वि [°जीव] धनुष की डोरीवाला। सचेतन। न. कला-विशेष, मृत धातु वगैरह को सजीवन करने का ज्ञान। °ड्ढ वि [°ार्ध] डेढ़। °ड्ढकाल पुं [°ार्धकाल] पुरिमड्ढ तप। °णप्पय, °णप्फद, °णप्फय वि [°नखपद] नख-युक्त पैरवाला, सिंह आदि श्वापद जन्तु। °णाह वि [°नाथ] स्वामीवाला। °त्तण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त, उत्कण्ठित। °त्तर वि [°त्वर] त्वरा-युक्त, वेगवाला। न. शीघ्र। °द्ध वि [°ार्ध] डेढ़। °धवा स्त्री. सौभाग्यवती स्त्री। °नय वि. न्याययुक्त। °पक्ख वि [°पक्ष] पाँखवाला। सहायक, मित्र। समान पार्श्ववाला, दक्षिण आदि तरफ से जो समान हो वह। °पुन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली। °प्पभ वि [°प्रभ] प्रभायुक्त। °प्परिआव, °प्परिताव वि [°परिताप] सन्ताप से युक्त। °प्पिसल्लग वि [°पिशाचक] पिशाच-गृहीत, पागल। °प्पिवास वि [°पिपास] तृषातुर। °प्पिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला। °प्फंद वि[°स्पन्द] चलायमान। °प्फल, °फल वि. सार्थक। °ब्बल वि [°बल] बलवान्। °भल देखो °फल। °मण वि [°मनस्]। °मणक्ख वि [°मनस्क] मनवाला, विवेक-बुद्धिवाला। समान मनवाला, राग-द्वेष आदि से रहित। °मय वि [°मद] मद-युक्त। °महिड्ढिअ वि [°महर्द्धिक] महान् वैभववाला। °मिरिईअ, °मिरीय वि [°मरीचिक] किरण-युक्त। °मेर वि [°मर्याद] मर्यादा-युक्त। °यण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त। °याण वि [°ज्ञान] सयाना, जानकार। °योगि वि [°योगिन्] व्यापार-युक्त, योगवाला। न. तेरहवाँ गुण-स्थानक। °रय वि [°रत] कामी। °रहस वि [°रभस] वेग-युक्त, उतावला। °राग वि. राग-सहित। °रागसंजत, °रागसंजय वि [°रागसंयत] वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो। °रूव वि [°रूप] समान रूपवाला। °लूण वि [°लवण] लावण्य-युक्त। °लोग वि [°लोक] समान। °लोण देखो °लूण। स्त्री. °लोणी। °वक्ख देखो °पक्ख। °वण वि [°व्रण] घाववाला। °वय वि [°वयस्] समान उम्रवाला। °वय वि [°व्रत] व्रती। °वाय वि [°पाद] सवा। °वाय वि [°वाद] वाद-सहित। °वास वि. समान वासवाला, एक देश का रहनेवाला। °विज्ज वि [°विद्य] विद्यावान्। °व्वण देखो °वण। °व्ववेक्ख वि [°व्यपेक्ष] दूसरे की परवाह रखनेवाला, सापेक्ष। °व्वाव वि [°व्याप] व्याप्ति-युक्त। व्यापक। °व्विवर वि [°विवर] विवरण-युक्त, सविस्तर। °संक वि [°शङ्क]। °संकिअ वि [°शङ्कित] शंका-युक्त। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] सगर्भा। °सिरिय, °सिरीय वि [°श्रीक] शोभा-युक्त। °सिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला। °सिह वि [°शिख] शिखा-युक्त। °सूग वि [°शूक] दयालु। °सेस वि [°शेष] सावशेष। शेषनाग-सहित। °सोग, °सोगिल्ल वि [°शोक] दिलगीर, शोक-युक्त। °स्सिरिअ, °स्सिरीअ देखो °सिरिय।

सअ सक [स्वद्] प्रीति करना। चखना।

सअ न [सदस्] सभा।

सअअ न [दे] शिला। वि. घूर्णित।

सअक्खगत्त पुं [दे] कितव, जुआरी।

सअज्झिअ } पुंस्त्री [दे] प्रातिवेश्मिक,
सअज्झिअ } पड़ोसी। स्त्री. °आ। देखो सइज्झिअ।

सअडिआ देखो सगडिआ।

सअढ पुं [दे] लम्बा केश।

सअढ पुं [शकट] दैत्य-विशेष। पुंन. गाड़ी। °ारि पुं [°ारि] नरसिंह, श्रीकृष्ण। देखो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सगड।
सअर देखो स-अर = स-कर, स-गर।
सअर देखो सगर।
सआ अ [सदा] हमेशा। °चार पुं. निरन्तर गति।
सआ स्त्री [स्रज्] माला।
सइ देखो सआ = सदा।
सइ अ [सकृत्] एक बार।
सइ स्त्री [स्मृति] स्मरण, चिन्तन। °काल पुं. भिक्षा मिलने का समय।
सइ देखो स = स्व।
सइ देखो सय = शत। °कोडि स्त्री [°कोटि] एक अरब।
सइ देखो सइं = स्वयम्।
सइ° देखो सई = सती।
सइअ वि [शतिक] सौ का परिमाणवाला। देखो सइग।
सइअ वि [शयित] सुप्त।
सइएल्लय देखो स = स्व।
सइं देखो सइ = सकृत्।
सइं देखो सयं = स्वयम्।
सइग वि [शतिक] सौ (रुपया आदि) की कीमत का।
सइज्झ, सइज्झिअ पुंस्त्री [दे] पड़ोसी। स्त्री. °आ।
सइज्झिअ न [दे] पड़ोसीपन।
सइण्ण न [सैन्य] सेना।
सइत्तए सय = शी का हेक्ृ.।
सइदंसण, सइदिट्ठ वि [दे. स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट, विचार में प्रतिभासित। वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो।
सइम वि [शततम] १०० वाँ।
सइर न [स्वैर] स्वेच्छा, स्वच्छन्दता। वि. मन्द, अलस। स्वैरी।
सइरवसह पुं [दे. स्वैरवृषभ] स्वच्छन्दी साँड़, धर्म के लिए छोड़ा जाता बैल।
सइरिणी स्त्री [स्वैरिणी] व्यभिचारिणी स्त्री।
सइल देखो सेल।
सइलंभ वि [दे. स्मृतिलम्भ] देखो सइ-दंसण।
सइलासअ, सइलासिअ पुं [दे] मयूर।
सइव पुं [सचिव] प्रधान, मन्त्री। सहाय। मददकर्ता। काला धतूरा।
सइसिलिंब पुं [दे] कार्तिकेय।
सइसुह वि [दे.स्मृतिसुख] देखो सइदंसण।
सई स्त्री [शची] इन्द्राणी। स° पुं [°श] इन्द्र। देखो सची।
सई स्त्री [सती] पतिव्रता स्त्री।
°सई स्त्री [°शती] सौ।
सईणा स्त्री [दे] अन्न-विशेष, तुवरी।
सउ, सउं (अप) देखो सहु।
सउंत पुं [शकुन्त] पक्षी। भास-पक्षी।
सउंतला, सउंदला स्त्री [शकुन्तला] विश्वामित्र ऋषि की पुत्री और राजा दुष्यन्त की पत्नी। (शौ)।
सउण वि [दे] रूढ़, प्रसिद्ध।
सउण पुंन [शकुन] शुभाशुभ-सूचक बाहु-स्पन्दन, काक-दर्शन आदि निमित्त। पुं. पक्षी। पक्षि-विशेष। °विउ वि [°विद्] सगुन का जानकार। °रुअ न [°रुत] पक्षी की आवाज। सगुन के परिज्ञान की कला।
सउण देखो स-उण = स-गुण।
सउणि पुं [शकुनि] पक्षी। चील पक्षी। ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिरकरण जो कृष्ण चतुर्दशी की रात में सदा अवस्थित रहता है। नपुंसक-विशेष, चटक की तरह बारबार मैथुन-प्रसक्त क्लीब। दुर्योधन का मामा।
सउणिअ देखो साउणिअ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सउणिआ } स्त्री [शकुनिका, °नी] पक्षी
सउणिगा } की मादा। पक्षि-विशेष की
सउणी } मादा।

सउण्ण देखो स-उण्ण = सपुण्य।

सउत्ती स्त्री [सपत्नी] सौत।

सउम पुं. [सद्मन्] गृह। जल।

सउमार वि [सुकुमार] कोमल।

सउर पुं [सौर] शनैश्चर। यम। उदुम्बर का पेड़। वि. सूर्य का उपासक। सूर्य-सम्बन्धी।

सउरि पुं [शौरि] विष्णु, श्रीकृष्ण।

सउरिस देखो स-उरिस = सत्पुरुष।

सउल पुं [शकुल] मत्स्य।

सउलिअ वि [दे] प्रेरित।

सउलिआ } स्त्री [दे. शकुनिका, °नी]
सउली } चील पक्षी की मादा। एक महौषधि। °विहार पुं. गुजरात के भरोच शहर का एक प्राचीन जैन मन्दिर।

सउह पुं [सौध] राज-महल। न. चाँदी। पुं. पाषाण-विशेष। वि. सुधा-सम्बन्धी, अमृत का।

सएज्झिअ देखो सइज्झिअ।

सओस देखो स-ओस = सन्तोष, सदोष।

सं अ [शम्] सुख, शर्म।

सं अ [सम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रकर्ष। संगति। सुन्दरता, शोभनता। समुच्चय। योग्यता।

संक सक [शङ्क्] संशय करना। अक. डरना।

संकंत वि [संक्रान्त] प्रतिबिम्बित। प्रविष्ट। प्राप्त। संक्रमणकर्ता। संक्रांति-युक्त। पिता आदि से दाय रूप से प्राप्त स्त्री का धन।

संकंति स्त्री [संक्रान्ति] संक्रमण, प्रवेश। सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

संकंदण पुं [संक्रन्दन] इन्द्र।

संकट्टिअ वि [संकर्तित] काटा हुआ।

संकट्ठ वि [संकष्ट] व्याप्त।

संकट्ठ देखो संकिट्ठ।

संकड वि [संकट] संकीर्ण, कम चौड़ा, अल्प अवकाशवाला। विषम, गहन। न. दुःख।

संकडिल्ल वि [दे] निश्छिद्र।

संकड्ढिय वि [संकर्षित] आकर्षित।

संकप्प पुं [संकल्प] अध्यवसाय, मनःपरिणाम। संगत आचार, सदाचार। अभिलाष। °जोणि पुं [°योनि] कामदेव।

संकम अक [सं + क्रम्] प्रवेश करना। गति करना।

संकम पुं [संक्रम] सेतु। संचार। जीव जिस कर्म-प्रकृति को बाँधता हो उसी रूप से अन्य प्रकृति के दल को प्रयत्न द्वारा परिणमाना।

संकमग वि [संक्रामक] संक्रमण-कर्ता।

संकमण न [संक्रमण] प्रवेश। संचार। चारित्र, संयम। देखो संकम का तीसरा अर्थ। प्रतिबिम्बन।

संकर पुं [दे] रथ्या, मुहल्ला।

संकर पुं [शङ्कर] शिव। वि. सुख करनेवाला।

संकर पुं. मिलावट। न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष। शुभाशुभ-रूप मिश्र भाव। अशुचि-पुंज।

संकरण न. अच्छी कृति।

संकरिसण पुं [संकर्षण] भारतवर्ष का भावी नववाँ बलदेव।

संकरी स्त्री [शङ्करी] विद्या-विशेष। देवी-विशेष। सुख करनेवाली।

संकल सक [सं + कलय्] संकलन करना, जोड़ना।

संकल पुंन [शृङ्खल] सांकल, निगड़। बेड़ी। सिकड़ी, आभूषण-विशेष।

संकलण न [संकलन] मिश्रता, मिलावट।

संकला स्त्री [शृङ्खल] देखो संकल =

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शृङ्खल।

संकलिअ वि [संकलित] एकत्र-किया हुआ। युक्त। योजित, जोड़ा हुआ। संगृहीत। न. संकलन, कुल जोड़।

संकलिआ स्त्री [संकलिका] परम्परा। संकलन। सूत्रकृतांग सूत्र का पनरहवाँ अध्ययन।

संकलिआ } स्त्री [शृङ्खलिका, °ली] सांकल, सिकड़ी, जंजीर, निगड़।
संकली }

संकहा स्त्री [संकथा] संभाषण, वार्तालाप।

संका स्त्री [शङ्का] संशय। भय। °लुअ वि [°वत्] शंकावाला।

संकाम देखो संकम = सं + क्रम्।

संकाम सक [सं + क्रमय्] संक्रम करना, बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-दलों को प्रक्षिप्त कर उस रूप से परिणत करना।

संकामण न [संक्रमण] संक्रम-करण। प्रवेश कराना। एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना।

संकामणा स्त्री [संक्रमणा] संक्रमण, पैठ।

संकामणी स्त्री [संक्रमणी] जिससे एक से दूसरे में प्रवेश किया जा सके वह विद्या।

संकामिय वि [संक्रमित] एक स्थान से दूसरे स्थान में नीत।

संकार देखो सक्कार = संस्कार।

संकास वि [संकाश]समान। पुं. एक श्रावक।

संकासिया स्त्री [संकाशिका] एक जैन मुनि-शाखा।

संकिट्ठ वि [संकृष्ट] विलिखित, जोता हुआ। खेती किया हुआ।

संकिट्ठ देखो संकिलिट्ठ।

संकिण्ण वि [संकीर्ण] सँकरा, तंग, अल्पावकाशवाला। व्याप्त। मिश्रित। पुं. हाथी की एक जाति।

संकित्तण न [संकीर्तन] उच्चारण।

संकिलिट्ठ वि [संक्लिष्ट] संक्लेश-युक्त।

संकिलिस्स अक [सं + क्लिश्] क्लेश पाना, दुःखी होना। मलिन होना।

संकिलेस पुं [संक्लेश] असमाधि, दुःख, कष्ट, हैरानी। मलिनता।

संकीलिअ वि [संकीलित] कील लगाकर जोड़ा हुआ।

संकु पुं [शङ्कु] शल्य अस्त्र। कीलक। °कण्ण न [°कर्ण] एक विद्याधर-नगर।

संकुइय वि [संकुचित] सकुचा हुआ, संकोच-प्राप्त। न. संकोच।

संकुक पुं [शङ्कुक] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी का एक विद्याधर-निकाय।

संकुका स्त्री [शङ्कुका] विद्या-विशेष।

संकुच अक [सं + कुच्] सकुचना, संकोच करना।

संकुड वि [संकुट] सँकरा, संकुचित।

संकुद्ध वि [संक्रुद्ध] क्रोध-युक्त।

संकुय देखो संकुच।

संकुल वि. व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ।

संकुलि } देखो सक्कुलि।
संकुली° }

संकुसुमिअ वि [संकुसुमित] सुपुष्पित।

संकेअ सक [सं + केतय्] इशारा करना। मसलहत करना।

संकेअ पुं [संकेत] इशारा, इंगित। प्रिय-समागम का गुप्त स्थान। वि. चिह्न-युक्त। न. प्रत्याख्यान-विशेष।

संकेअ वि [साङ्केत] संकेत-सम्बन्धी। न. प्रत्याख्यापन-विशेष।

संकेल्लिअ वि [दे] सकेला हुआ।

संकेस देखो संकिलेस।

संकोअ सक [सं + कोचय्] समेटना, संकुचित करना।

संकोड पुं [संकोट] सकोड़ना, संकोच।

संख पुंन [शङ्ख] शंख। पुं. ज्योतिष्क ग्रह-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष। महाविदेह वर्ष का प्रान्त-विशेष, विजय क्षेत्र-विशेष। नव निधि में एक निधि, जिसमें विविध तरह के बाजों की उत्पत्ति होती है। लवण समुद्र में स्थित वेलन्धर-नागराज का एक आवास-पर्वत। उसका अधिष्ठाता देव। भ० मल्लिनाथ के समय काशी का राजा। भ० महावीर के पास दीक्षित एक काशी-नरेश। तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जित करनेवाला भ० महावीर का एक श्रावक। नववें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम। एक राजा। एक राज-पुत्र। रावण का एक सुभट। छन्द-विशेष। एक द्वीप। एक समुद्र। शंखवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव। पुंन. ललाट की हड्डी। नखी नाम का एक गन्ध-द्रव्य। कान के समीप की एक हड्डी। एक नाग-जाति। हाथी के दाँत का मध्य भाग। दस निखर्व की संख्यावाला। आँख के समीप का अवयव। °उर देखो °पुर। °णाभ पुं [°नाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष। °णारी स्त्री [°नारी] छन्द-विशेष। °धमग पुं [°ध्मायक] वानप्रस्थ की एक जाति। °धर पुं. श्रीकृष्ण, विष्णु। °पाल देखो °वाल। °पुर न. एक विद्याधर-नगर। गुजरात का संखेश्वर नगर। °पुरी स्त्री. कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी, अहिच्छत्रा। °माल पुं. वृक्ष की एक जाति। °वण न [°वन] एक उद्यान। °वण्णाभ पुं [°वर्णाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष। °वन्न पुं [°वर्ण] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष। °वन्नाभ देखो °वण्णाभ। °वर पुं. एक द्वीप। एक समुद्र। °वरोभास पुं [°वरावभास]एक द्वीप। एक समुद्र। °वाल पुं [°पाल] नाग-कुमार-देवों के धरण और भूतानन्द नामक इन्द्रों के एक लोकपाल। °वालय पुं [°पालक] जैनेतर दर्शन का एक अनुयायी। आजीविक मत का एक उपासक। °लग वि [°वत्] शंखवाला। °वई स्त्री [°वती] नगरी-विशेष।

संख वि [संख्य] संख्यात।

संख न [सांख्य] कपिलमुनि-प्रणीत दर्शन। वि. सांख्य मत का अनुयायी।

संख पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक।

संखइअ वि [संख्येय] जिसकी संख्या हो सके वह।

संखड न [दे] कलह, झगड़ा।

संखडि स्त्री [दे] विवाह आदि में नातेदार आदि को दिया जाता भोज, जेवनार।

संखडि स्त्री [संस्कृति] ओदन-पाक।

संखणग पुं [शङ्खनक] छोटा शंख।

संखद्रह पुं [दे] गोदावरी ह्रद।

संखबइल्ल पुं [दे] कृषक के इच्छानुसार उठ कर खड़ा होनेवाला बैल।

संखम वि [संक्षम] समर्थ।

संखय पुं [संक्षय] क्षय, विनाश।

संखय वि [संस्कृत] संस्कार-युक्त।

संखलय पुं [दे]शम्बूक, शुक्ति के आकारवाला जल-जन्तु-विशेष।

संखला देखो संकला।

संखलि पुंस्त्री [दे] कर्ण-भूषण-विशेष, शंख-पत्र का बना हुआ ताडंक।

संखव सक [सं + क्षपय्] विनाश करना।

संखा सक [सं + ख्या] गिनती करना। जानना।

संखा अक [सं + स्त्यै] आवाज करना। संहत होना, सान्द्र होना, निबिड़ बनना।

संखा स्त्री. [संख्या] प्रज्ञा। ज्ञान। निर्णय। गिनती। व्यवस्था। °ईअ वि[°तीत]असंख्य। °दत्तिय वि [°दत्तिक] उतनी ही भिक्षा लेने का व्रतवाला संयमी, जितनी कि अमुक गिने हुए प्रक्षेपों से प्राप्त हो जाय।

संखाण न [संख्यान] गिनती, संख्या। गणित-शास्त्र।

संखाय वि [संस्त्यान] सान्द्र, निबिड़।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवाज करनेवाला। संहृत करनेवाला। न. स्नेह। निबिड़पन। संहति, संघात। आलस्य। प्रतिशब्द।

संखाय संखा = सं + ख्या का संकृ.।

संखाय वि. संख्या-युक्त।

संखायण न [शाङ्खायन] गोत्र-विशेष।

संखाल पुं [दे]हरिण की एक जाति। साँबर।

संखाविय वि [संख्यापित] जिसकी गिनती कराई गई हो वह।

संखिग देखो संखिय = शाङ्खिक।

संखिज्ज देखो संखा = सं + ख्या का कृ.।

संखिज्जइ वि [संख्येयतम] संख्यातवाँ।

संखित्त वि [संक्षिप्त] संक्षेप-युक्त।

संखिय वि [शाङ्खिक] मंगल के लिए चन्दन-गर्भित शंख को हाथ में धारण करनेवाला। शंख बजानेवाला।

संखिय देखो संख = संख्य।

संखिया स्त्री [शङ्खिका] छोटा शंख।

संखुड्ड अक [रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना।

संखुत्त
संखुद्ध
संखुभिअ
संखुहिअ } (अप)। वि [संक्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त। [संक्षुब्ध, संक्षुभित]।

संखेज्ज देखो संखा = सं + ख्या का कृ.।

संखेज्जइ
संखेज्जइम } देखो संखिज्जइ।

संखेत्त देखो संखित्त।

संखेव पुं [संक्षेप] अल्प। पिंड, संहति। स्थान। सामायिक, सम-भाव से अवस्थान।

संखेवण न [संक्षेपण] अल्प करना, न्यून करना।

संखेविय वि [संक्षेपिक] संक्षेप-युक्त। °दसा स्त्री. ब. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष।

संखोभ
संखोह } सक [सं + क्षोभय्] क्षुब्ध करना। भय से व्यग्र करना।

संग न [शृङ्ग] सींग। उत्कर्ष। शिखर। प्रधानता। वाद्य-विशेष। काम का उद्रेक। देखो सिंग = शृङ्ग।

संग न [शार्ङ्ग] शृङ्ग-सम्बन्धी।

संग पुंन [सङ्ग] सम्पर्क, सम्बन्ध। सोहबत। आसक्ति। कर्म, कर्म-बन्ध। बन्धन।

संगइ स्त्री [संगति] औचित्य। मेल। नियति।

संगइअ वि [साङ्गतिक] नियति-कृत, नियति-सम्बन्धी। परिचित।

संगंथ पुं [संग्रन्थ] स्वजन का स्वजन। सम्बन्धी, श्वशुर-कुल से जिसका सम्बन्ध हो वह।

संगच्छ सक [सं + गम्] स्वीकार करना। अक. संगत होना, मेल रखना।

संगम पुं. मेल, मिलाप। प्राप्ति। नदियों का आपस में मिलान। एक देव। सम्भोग। एक जैन मुनि।

संगमय पुं [संगमक] भ० महावीर को उपसर्ग करनेवाला एक देव।

संगमी स्त्री. एक दूती।

संगय वि [दे] मसृण, चिकना।

संगय न [संगत] मैत्री। संग। पुं. एक जैन मुनि। वि. युक्त। मिलित।

संगयय न [संगतक] छन्द-विशेष।

संगर देखो संकर = संकर।

संगर न. युद्ध, रण।

संगरिगा स्त्री [दे] फली-विशेष, साँगरी।

संगल सक [सं + घटय्] मिलना, संघटित करना।

संगल अक [सं + गल्] गल जाना, हीन होना।

संगलिया स्त्री [दे] फली, छीमी।

संगह सक [सं + ग्रह्] संचय करना। स्वीकार करना। आश्रय देना। पकड़ना।

संगह पुं [दे] घर के ऊपर का तिरछा काठ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगह पुं [संग्रह] संचय। संक्षेप, समास। उपधि, वस्त्र आदि का परिग्रह। नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण, सामान्य रूप से वस्तु को देखना। स्वीकार। कष्ट आदि में सहायता करना। वि. संग्रह करनेवाला। न. दुष्ट ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र।

संगहण न [संग्रहण] संग्रह। °गाहा स्त्री [°गाथा] संग्रह-गाथा।

संगहणि स्त्री [संग्रहणि] संक्षिप्त रूप से पदार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थ, सार-संग्राहक ग्रन्थ।

संगहिअ वि [संग्रहिक] संग्रहवाला, संग्रह-नय को माननेवाला।

संगा सक [सं+गै] गान करना।

संगा स्त्री [दे] घोड़े की लगाम।

संगाम सक [सङ्ग्रामय्] लड़ाई करना।

संगाम पुं [सङ्ग्राम] युद्ध। °सूर पुं [°शूर] एक राजा।

संगामिय वि [साङ्ग्रामिक] संग्राम-सम्बन्धी।

संगामिया स्त्री [साङ्ग्रामिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की लड़ाई की खबर देने की भेरी।

संगामुड्डामरी स्त्री [सङ्ग्रामोड्डामरी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से लड़ाई में आसानी से विजय मिलती है।

संगार पुं [दे] संकेत।

संगाहि वि [संग्राहिन्] संग्रह-कर्ता।

संगिण्ह देखो संगह = सं + ग्रह्।

संगिण्हण न [संग्रहण] आश्रय-दान। देखो संगहण।

संगिल्ल वि [सङ्गवत्] बद्ध, संग-युक्त।

संगिल्ल देखो संगेल्ल।

संगिल्ली देखो संगेल्ली।

संगिह देखो संगह = सं-ग्रह्।

संगीअ न [संगीत] गाना। वि. जिसका गान किया गया हो वह।

संगुण सक [सं+गुणय्] गुणकार करना।

संगुण वि. गुणित।

संगुत्त वि [संगुप्त] छिपाया हुआ। गुप्ति-युक्त, अकुशल प्रवृत्ति से रहित।

संगेल्ल पुं [दे] समूह।

संगेल्ली स्त्री [दे] परस्पर अवलम्बन। समूह।

संगोढण वि [दे] व्रणित।

संगोप्फ, **संगोफ** पुं [संगोफ] मर्कटबन्ध रूप गुम्फन।

संगोल्ल न [दे] संघात, समूह।

संगोव सक [सं+गोपय्] छिपाना। रक्षण करना।

संगोवग वि [संगोपक] रक्षण-कर्ता।

संगोवाव देखो संगोव।

संगोवित्तु, **संगोवेत्तु** वि [संगोपयितृ] संरक्षण-कर्ता।

संघ सक [कथ्] कहना।

संघ पुं. साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं का समुदाय। समान धर्मवालों का समूह। समूह। प्राणि-समूह। °दास पुं. एक जैन मुनि और ग्रन्थ-कर्ता। °पालिय, °वालिय पुं [°पालित] आर्यवृद्ध मुनि के शिष्य।

संघअ वि [संहत] निबिड़, सान्द्र।

संघंस पुं [संघर्ष] घिसाव, रगड़। आघात।

संघट्ट सक [सं+घट्ट] छूना। अक. आघात लगाना। संमर्दन करना।

संघट्ट पुं [संघट्ट] आघात, संघर्ष। अर्ध जंघा तक का पानी। दूसरा नरक का छठवाँ नर-केन्द्रक। भीड़। स्पर्श।

संघट्ट वि [संघट्टित] संलग्न।

संघट्टणा स्त्री [संघट्टना] संचलन।

संघट्टा स्त्री [संघट्टा] वल्ली-विशेष।

संघड अक [सं+घट्] प्रयत्न करना। सम्बद्ध होना। सक. निर्माण करना। गढ़ना।

संघड वि [संघट] निरन्तर।

संघडण देखो संघयण।

संघदि (शौ) स्त्री [संहति] समूह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संघयण न [दे.संहनन] शरीर। अस्थि-रचना, शरीर का बाँध। अस्थिरचना का कारण-भूत कर्म।

संघयणि वि [दे.संहननिन्] संहननवाला।

संघरिस देखो संघंस।

संघस } सक [सं + घृष्] संघर्ष करना।
संघस्स }

संघाइअ } [संघातित] संघात रूप से
संघाइम } [संघातम] निष्पन्न। जोड़ा हुआ। इकट्ठा किया हुआ।

संघाड देखो संघाय = संघात।

संघाड } पुं [दे.संघाट] युग्म। प्रकार।
संघाडग } ज्ञाताधर्म-कथा का दूसरा अध्ययन।

संघाडग देखो सिंघाडग।

संघाडणा स्त्री [संघटना] संबन्ध। रचना।

संघाडी स्त्री [दे. संघाटी] युग्म। उत्तरीय वस्त्र-विशेष।

संघाणय पुं [शिङ्घानक] श्लेष्मा।

संघातिम देखो संघाइम।

संघाय सक [सं+घातय्] संहत करना, इकट्ठा करना, मिलाना। हिंसा करना।

संघाय पुं [संघात] संहति, निबिड़ता। समूह, जत्था। वज्रऋषभ-नाराच नामक शरीर-बन्ध। श्रुतज्ञान का एक भेद। संकोच। न. नामकर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीरयोग्य पुद्गल पूर्व-गृहीत पुद्गलों पर व्यवस्थित रूप से स्थापित होते हैं। °समास पुं. श्रुतज्ञान का एक भेद।

संघायणा स्त्री [संघातना] संहति। °करण न. प्रदेशों को परस्पर संहृत रूप से रखना।

संघार पुं [संहार] प्रलय। नाश। संक्षेप। विसर्जन। नरक-विशेष। भैरव-विशेष।

संघार (अप) देखो संहर = सं + हृ।

संघासय पुं [दे] स्पर्धा, बराबरी।

संघिअ देखो संधिअ = संहित।

संघिल्ल वि [संघवत्] संघ-युक्त, समुदित।

संघोडी स्त्री [दे] व्यतिकर, सम्बन्ध।

संच (अप) देखो संचिण।

संच (अप) पुं [संचय] परिचय।

संचइ } वि [संचयिन्] संचयवाला।
संचइग }

संचक्कार पुं [दे] अवकाश।

संचत्त वि [संत्यक्त] परित्यक्त।

संचय पुं. संग्रह। समूह। संकलन, जोड़। °मास पुं. प्रायश्चित-सम्बन्धी मास-विशेष।

संचर अक [सं + चर्] चलना। सम्यग् गति करना। धीरे-धीरे चलना।

संचलण न [संचलन] संचार, गति।

संचलिअ वि [संचलित] चला हुआ।

संचल्ल सक [सं + चल्] चलना, गति करना।

संचल्ल (अप) देखो संचलिय।

संचाय अक [सं + शक्] समर्थ होना।

संचाय पुं [संत्याग] परित्याग।

संचार सक [सं + चारय्] संचार या गति कराना।

संचारिम वि [संचारिम] संचार-योग्य।

संचारी स्त्री. [दे] दूत-कर्म करनेवाली स्त्री।

संचाल सक [सं + चालय्] चलाना।

संचिअ वि [संचित] संगृहीत।

संचिंतण न [संचिन्तन] चिन्तन, विचार।

संचिक्ख अक [सं + स्था] रहना, ठहरना, अच्छी तरह रहना, समाधि से रहना।

संचिट्ठ देखो संचिक्ख।

संचिट्ठण न [संस्थान] अवस्थान।

संचिण सक [सं + चि] संग्रह करना। उपचय करना।

संचिन्न वि [संचीर्ण] आचरित।

संचुण्ण सक [सं + चूर्णय्] चूर-चूर करना। खंड-खंड करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना।

संचेयणा स्त्री [संचेतना] भान।

संचोइय वि [संचोदित] प्रेरित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संछइय }
संछण्ण } वि [संछन्न] ढका हुआ ।
संछाय सक [सं + छादय्] ढकना ।
संछुह सक [सं + क्षिप्] एकत्रित कर छोड़ना, इकट्ठा करना ।
संछोभ पुं [संक्षेप] अच्छी तरह फेंकना ।
संछोभग वि [संक्षेपक] प्रक्षेपक ।
संछोभण न [संक्षेपण] परावर्तन ।
संजइ पुंस्त्री [संयति] उत्तम साधु ।
संजई स्त्री [संयती] साध्वी ।
संजणग वि [संजनक] उत्पन्न करनेवाला ।
संजणण न [संजनन] उत्पत्ति । वि. उत्पन्न करनेवाला । स्त्री. °णी ।
संजणय देखो संजणग ।
संजणिय वि [संजनित] उत्पादित ।
संजत्त सक [दे] तैयार करना ।
संजत्ता स्त्री [संयात्रा] जहाज की मुसाफिरी ।
संजत्ति स्त्री [दे] तैयारी । देखो संजुत्ति ।
संजत्तिअ वि [दे] तैयार किया हुआ ।
संजत्तिअ }
संजत्तिग } वि [सांयात्रिक] जहाज से यात्रा करनेवाला, समुद्र-मार्ग का मुसाफिर ।
संजत्थ वि [दे] कुपित । पुं. क्रोध ।
संजद देखो संजय = संयत ।
संजम अक [सं + यम्] निवृत्त होना । प्रयत्न करना । व्रत-नियम करना । सक. बाँधना । काबू में करना ।
संजम सक [दे] छिपाना ।
संजम पुं [संयम] चारित्र, व्रत, विरति, हिंसादि पाप-कर्मों से निवृत्ति । शुभ अनुष्ठान । रक्षा, अहिंसा । इन्द्रिय-निग्रह । बन्धन । काबू । °ासंजम पुं [°ासंयम] श्रावक-व्रत ।
संजय अक [सं + यत्] सम्यक् प्रयत्न करना । सक. अच्छी तरह प्रवृत्त करना ।
संजय वि [संयत] साधु, व्रती । °पंता स्त्री [°प्रान्ता] साधु को उपद्रव करनेवाली देवी आदि । °भद्दिगा स्त्री [°भद्रिका] साधु के अनुकूल रहनेवाली देवी आदि । °ासंजय वि [°ासंयत] किसी अंश में व्रती और किसी अंश में अव्रती, श्रावक ।
संजय पुं. भ० महावीर के पास दीक्षित एक राजा ।
संजयंत पुं [संजयन्त] एक जैन मुनि । °पुर न. नगर-विशेष ।
संजर पुं [संज्वर] ज्वर ।
संजल अक [सं + ज्वल्] जलना । आक्रोश करना । क्रुद्ध होना ।
संजलण वि [संज्वलन] प्रतिक्षण क्रोध करनेवाला । पुं. कषाय-विशेष ।
संजलिअ पुं [संज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान ।
संजल्ल (अप) देखो संजल ।
संजव देखो संजम = सं + यम् ।
संजव देखो संजम = (दे) ।
संजा देखो संणा ।
संजाणय वि [संज्ञायक] विज्ञ, जानकार
संजात }
संजाद } वि [संजात] उत्पन्न ।
संजाय }
संजाय अक [सं + जन्] उत्पन्न होना ।
संजीवणी स्त्री [संजीवनी] मरते हुए को जीवित करनेवाली औषधि । जीवित-दात्री नरक-भूमि ।
संजीवि वि [संजिविन्] जीवित करनेवाला ।
संजुअ वि [संयुत] सहित, संयुक्त ।
संजुअ न [संयुग] लड़ाई । नगर-विशेष ।
संजुंज सक [सं + युज्] जोड़ना ।
संजुत न [संयुत] छन्द-विशेष । संजुअ = संयुत ।
संजुता स्त्री [संयुता] छन्द-विशेष ।
संजुत्त वि [संयुक्त] संयोगवाला ।
संजुत्ति स्त्री [दे] तैयारी । देखो संजत्ति ।
संजुद्ध वि [दे] स्पन्द-युक्त, फरकनेवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजूह पुं [संयूथ] उचित समूह। सामान्य। संक्षेप, समास। ग्रन्थरचना। दृष्टिवाद के अठासी सूत्रों में एक सूत्र।

संजोअ सक [सं + योजय्] संयुक्त करना, सम्बद्ध करना, मिश्रण करना।

संजोअ सक [सं + दृश्] निरीक्षण करना।

संजोअ पुं [संयोग] सम्बन्ध, मेल-मिलाप, मिश्रण।

संजोअण न [संयोजन] जोड़ना। वि. जोड़नेवाला। कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धि नामक क्रोधादि-चतुष्क। °धिकरणिया स्त्री [°धिकरणिकी] खड्ग आदि को उसकी मूठ आदि से जोड़ने की क्रिया।

संजोअणा स्त्री [संयोजना] मिलान। भिक्षा का एक दोष, स्वाद के लिए भिक्षा-प्राप्त चीजों को आपस में मिलाना।

संजोग देखो संजोअ = संयोग।

संजोगेत्तु वि [संयोजयितृ] जोड़नेवाला।

संजोत्त (अप) देखो संजोअ = सं + योजय्।

संझ° नीचे देखो। °च्छेयावरण वि [°च्छेदावरण] सन्ध्याविभाग का आवारक। पुं. चन्द्र। °प्पभ पुंन [°प्रभ] शक्र के सोम-लोकपाल का विमान।

संझा स्त्री [सन्ध्या] साँझ। दिन और रात्रि का संधि-काल। नदी-विशेष। ब्रह्मा की एक पत्नी। मध्याह्नकाल। °गय न [°गत] जिस नक्षत्र में सूर्य अनन्तर काल में रहने-वाला हो वह नक्षत्र। सूर्य जिसमें हो उससे चौदहवाँ या पनरहवाँ नक्षत्र। जिसके उदय होने पर सूर्य उदित हो वह नक्षत्र। सूर्य के पीछे के या आगे के नक्षत्र के बाद का नक्षत्र। °छेयावरण देखो संझ-च्छेयावरण। °णुराग पुं [°नुराग] साँझ के बादल का रंग। °वली स्त्री. एक विद्याधर-कन्या। °विगम पुं. रात्रि। °विराग पुं. साँझ का समय।

संझाअ सक [सं + ध्यै] ख्याल करना, चिन्तन करना, ध्यान करना।

संझाअ अक [संध्याय्] संध्या की तरह आचरण करना।

संटंक पुं [संटङ्क] अन्वय, सम्बन्ध।

संठ वि [शठ] धूर्त, मायावी।

संठ (चूपै) देखो संढ।

संठप्प } सक [सं + स्थापय्] रखना,
संठव } स्थापना करना। आश्वासन देना। उद्वेग-रहित करना।

संठा अक [सं + स्था] रहना, अवस्थान करना। स्थिति करना।

संठाण न [संस्थान] आकृति। जिसके उदय से शरीर का शुभ या अशुभ आकार होता है वह कर्म। संनिवेश, रचना।

संठाव देखो संठव।

संठिअ वि [संस्थित] रहा हुआ, सम्यक् स्थित। न. आकार।

संठिइ स्त्री [संस्थिति] व्यवस्था। अवस्था। स्थिति।

संड पुं [शण्ड, षण्ड] वृषभ। पुंन. पद्म आदि का समूह, वृक्ष आदि की निबिड़ता। पुं. नपुंसक।

संडास पुंन. [संदंश] यन्त्र-विशेष, सँड़सी, चिमटा। जाँघ और ऊरु के बीच का भाग। °तोंड पुं [°तुण्ड] सँड़सी की तरह मुखवाला पाँखी।

संडिज्झ } न [दे] बालकों का क्रीड़ा-स्थान।
संडिब्भ }

संडिल्ल पुं [शाण्डिल्य] देश-विशेष। एक जैन मुनि। एक ब्राह्मण का नाम। देखो संडेल्ल।

संडी स्त्री [दे] वल्गा, लगाम।

संडेय पुं [षाण्डेय] षंढ-पुत्र, षंढ, नपुंसक।

संडेल्ल न [शाण्डिल्य] गोत्र-विशेष। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न। देखो संडिल्ल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संडेव पुं [दे] पानी में पैर रखने के लिए रखा जाता पाषाण आदि।
संडेवय (अप) देखो संडेय।
संडोलिअ वि [दे] अनुगत, अनुयात।
संढ पुं [षण्ढ] नपुंसक।
संढो स्त्री [दे] साँढ़नी, ऊँटनी।
संढोइय वि [संढौकित] उपस्थापित।
संण वि [संज्ञ] जानकार।
संणक्खर देखो संनक्खर।
संणज्ज न [सांनाय्य] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घी वगैरह।
संणज्झ अक [सं+नह्] कवच धारण करना। अक. तैयार होना।
संणडिअ वि [संनटित] व्याकुल किया हुआ, विडम्बित।
संणद्ध वि [संनद्ध] संनाह-युक्त, कवचित।
संणय देखो संनय।
संणवणा स्त्री. [संज्ञापना] संज्ञप्ति, विज्ञापन।
संणा स्त्री. [संज्ञा] आहार आदि का अभिलाष। मति। संकेत। आख्या, नाम। सूर्य की पत्नी। गायत्री। विष्ठा, पुरीष। सम्यग् दर्शन। सम्यग् ज्ञान। °इअ वि [°कृत] फरागत गया हुआ। °भूमि स्त्री. पुरीषोत्सर्जन की जगह।
संणामिय वि [संनामित] अवनत-कृत।
संणाय वि [संज्ञात] ज्ञात, नात का आदमी। स्वजन, सगा। पहिचाना हुआ।
संणास पुं [संन्यास] संसार-त्याग, चतुर्थ आश्रम।
संणाह सक [सं+नाहय्] युद्ध-सज्ज करना।
संणाह पुं [संनाह] युद्ध की तैयारी। कवच। °पट्ट पुं. शरीर पर बाँधने का वस्त्र-विशेष।
संणाहिय वि [सांनाहिक] युद्ध की तैयारी से सम्बन्ध रखनेवाला।
संणि वि [संज्ञिन्] संज्ञावाला। मनवाला प्राणी। श्रावक। सम्यक्त्वी, जैन। न. वासिष्ठ गोत्र की शाखा। पुंस्त्री. उस गोत्रमें उत्पन्न।
संणिक्खित्त देखो संनिक्खित्त।
संणिगास देखो संणियास।
संणिगास देखो संनिगास = संनिकर्ष।
संणिचय देखो संनिचय।
संणिचिय देखो संनिचिय।
संणिज्झ देखो संनिज्झ।
संणिणाय देखो संनिनाय।
संणिधाइ देखो संणिहाइ।
संणिधाण देखो संनिहाण।
संणिपडिअ वि [संनिपतित] गिरा हुआ।
संणिभ देखो संनिभ।
संणिय वि [संज्ञित] जिसको इशारा किया गया हो वह।
संणियास पुं [संनिकाश] देखो संनियास।
संणिरुद्ध वि [संनिरुद्ध] रुका हुआ। नियन्त्रित।
संणिरोह पुं [संनिरोध] रुकावट।
संणिवय अक [संनि+पत्] पड़ना।
संणिवाय पुं [संनिपात] सम्बन्ध। संयोग।
संणिविट्ठ देखो संनिविट्ठ।
संणिवेस देखो संनिवेस।
संणिसिज्जा, संणिसेज्जा } देखो संनिसिज्जा।
संणिह देखो संनिह।
संणिहाइ वि [संनिधायिन्] समीप-स्थायी।
संणिहाण देखो संनिहाण।
संणिहि देखो संनिहि।
संणिहिअ वि [संनिहित] सहायता के लिए समीप-स्थित, निकट-वर्ती। पुं. अणपन्नि देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र।
संणेज्झ देखो संनेज्झ।
संत देखो स = सत्।
संत वि [शान्त] क्रोध-रहित। पुं. रस-विशेष।
संत वि [श्रान्त] थका हुआ।
संतइ स्त्री [संतति] संतान, अपत्य। अवि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्छिन्न धारा, प्रवाह।
संतच्छण न [संतक्षण] छिलना।
संतच्छिअ वि [संतक्षित] छिला हुआ।
संतट्ठ वि [संत्रस्त] डरा हुआ।
संतति देखो संतइ।
संतत्त वि [संतत] निरन्तर। बिस्तीर्ण।
संतत्त वि [संतप्त] संताप-युक्त।
संतत्थ देखो संतट्ठ।
संतप्प अक [सं+तप्] तपना। पीड़ित होना।
संतप्पिअ वि [संतप्त] संताप-युक्त। न. सन्ताप।
संतमस न. अन्धेरा। अन्ध-कूप।
संतय देखो संतत्त = संतत।
संतर सक [सं+तॄ] तैर कर पार करना।
संतस अक [सं+त्रस्] भय-भीत होना। उद्विग्न होना।
संता स्त्री [शान्ता] सातवें जिन-भगवान् का शासन-देवता।
संताण पुं [संतान] वंश। अविच्छिन्न धारा। तन्तु-जाल, मकड़ी आदि का जाल।
संताण न [संत्राण] परित्राण।
संतार वि. तारनेवाला। पुं. संतरण।
संतारिअ वि [संतारित] पार उतारा हुआ।
संतारिम वि. तैरने-योग्य।
संताव सक [सं+तापय्] गरम करना। हैरान करना।
संताव पुं. मन का खेद। ताप।
संतावय वि [संतापक] संताप-जनक।
संतास सक [सं+त्रासय्] डराना।
संतास पुं [संत्रास] भय।
संतासि वि [संत्रासिन्] त्रास-जनक।
संति स्त्री [शान्ति] क्रोध आदि का उपशम। मुक्ति। अहिंसा। उपद्रव-निवारण। विषयों से मन को रोकना। चैन, आराम। स्थिरता। दाहोपशम, ठंढाई। देवी-विशेष। पुं. सोलहवें जिनदेव। °उदअ न [°उदक] शान्ति के लिए मस्तक में दिया जाता मन्त्रित पानी। °कम्म न [°कर्मन्] उपद्रव-निवारण के लिए किया जाता होम आदि कर्म। °कम्मंत न [°कर्मान्त] जहाँ शान्ति-कर्म किया जाता हो वह स्थान। °गिह न [°गृह] शान्ति-कर्म करने का स्थान। °जल न. देखो °उदअ। °जिण पुं [°जिन] सोलहवें जिन-देव। °मई स्त्री [°मती] एक श्राविका। °य वि [°द] शान्ति-प्रदाता। °सूरि पुं. एक जैनाचार्य और ग्रन्थकार। °सेणिय पुं [°श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि। °हर न [°गृह] भगवान् शान्तिनाथजी का मन्दिर। °होम पुं. शान्ति के लिए किया जाता हवन।
संतिअ } वि [दे. सत्क] सम्बन्धी।
संतिग }
संतिज्जाघर देखो संति-गिह।
संतिण्ण वि [संतीर्ण] पार-प्राप्त।
संतुट्ठ वि [संतुष्ट] सन्तोष-प्राप्त।
संतुयट्ट वि [संत्वग्वृत्त] जिसने पार्श्व घुमाया हो वह, लेटा हुआ।
संतुलणा स्त्री [संतुलना] तुलना, तुल्यता।
संतुस्स अक [सं+तुष्] प्रसन्न होना। तृप्त होना।
संतेज्जाघर देखो संतिज्जाघर।
संतो अ [अन्तर्] मध्य, बीच।
संतोस सक [सं+तोषय्] प्रसन्न करना। तृप्त करना।
संतोस पुं [संतोष] तृप्ति, लोभ का अभाव।
संतोसि स्त्री [संतोषि] सन्तोष, तुष्टि, तृप्ति।
संतोसि वि [संतोषिन्] सन्तोष-युक्त, लोभ-रहित, निर्लोभी, तृप्त।
संतोसिअ पुं [संतोषिक] संतोष, तृप्ति।
संथ वि [संस्थ] संस्थित।
संथड } वि [संस्तृत] परस्पर के संश्लेष से आच्छादित। घन। व्याप्त।
संथडिय } समर्थ। तृप्त। एकत्रित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संथण अक [सं + स्तन्] आक्रन्द करना।

संथर सक [सं + स्तृ] बिछौना करना, बिछाना। निस्तार पाना, पार जाना। निर्वाह करना। अक. समर्थ होना। तृप्त होना। होना, विद्यमान होना।

संथर देखो संथार।

संथव सक [सं + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना। परिचय करना।

संथव पुं [संस्तव] स्तुति, श्लाघा। परिचय, संसर्ग। वि. स्तुति-कर्ता।

संथव = देखो संठव।

संथवय वि [संस्तावक] स्तुति-कर्ता।

संथार } पुं [संस्तार] दर्भ—कुश आदि
संथारग } की शय्या, बिछौना। कमरा। उपाश्रय। संस्तार-कर्ता।

संथाव देखो संठाव।

संथिद (शौ) देखो संठिअ।

संथुअ वि [संस्तुत]सम्बद्ध, संगत। परिचित। जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित।

संथुइ स्त्री [संस्तुति] स्तुति, श्लाघा।

संथुण सक [सं + स्तु] स्तुति या श्लाघा करना।

संथुल वि [संस्थुल] रमणीय।

संथुव्वंत देखो संथुण का कवकृ.।

संद अक [स्यन्द्] झरना, टपकना।

संद पुं [स्यन्द] झरन, प्रस्रव। रथ।

संद वि [सान्द्र] घन, निबिड़।

संदंस पुं [संदंश] दक्षिण हस्त।

संदंसण न [संदर्शन] दर्शन, देखना, साक्षात्कार।

संदट्ठ वि [संदष्ट] जो काटा गया हो वह, जिसको दंश लगा हो वह।

संदट्ट } वि [दे] संलग्न, संयुक्त। सम्बद्ध।
संदट्टय } न. संघट्ट, संघर्ष।

संदड्ढ वि [संदग्ध] अति जला हुआ।

संदण पुं [स्यन्दन] रथ। भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न तेइसवाँ जिनदेव। न. क्षरण, प्रस्रव। बहना। जल।

संदब्भ पुं [संदर्भ] रचना, ग्रंथन।

संदमाणिया } स्त्री [स्यन्दमानिका, °नी]
संदमाणी } एक प्रकार का वाहन, एक तरह की पालकी।

संदाण सक [कृ] अवलम्बन करना।

संदाणिअ } [संदानित] बद्ध, नियन्त्रित।
संदामिय } [संदामित]

संदाव देखो संताव = सन्ताप।

संदाव पुं [संद्राव] समूह, समुदाय।

संदिट्ठ वि [संदिष्ट] जिसका या जिसको सन्देशा दिया गया हो, उपदिष्ट, कथित। जिसको आज्ञा दी गई हो। छंटा हुआ, छिलका निकाला हुआ (चावल आदि)।

संदिद्ध वि [संदिग्ध] संशय-युक्त।

संदिन्न न [संदत्त] उनतीस दिनों का लगातार उपवास।

संदिस सक [सं + दिश्] सन्देशा देना, समाचार पहुँचाना। आज्ञा देना। अनुज्ञा देना। दान के लिए संकल्प करना। उपदेश देना।

संदीण पुं [संदीन] पक्ष या मास आदि में पानी से सराबोर होता द्वीप। अल्पकाल तक रहनेवाला दीपक। श्रुतज्ञान। क्षोभणीय।

संदीवग वि [संदीपक] उत्तेजक।

संदीवण न [संदीपन] उत्तेजना, उद्दीपक। वि. उत्तेजन का कारण।

संदीविय वि [संदीपित] उत्तेजित, उद्दीपित।

संदुक्ख अक [प्र + दीप्] जलना।

संदुट्ठ वि [संदुष्ट] अतिशय दुष्ट।

संदुम अक [प्र + दीप्] जलना, सुलगना।

संदेव पुं [दे] सीमा, मर्यादा। नदी-मेलक, नदी-संगम।

संदेस पुं [संदेश] संदेशा।

संदेह पुं. संशय, शंका।

संदोह पुं. समूह, जत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संध सक [सं + धा] साँधना, जोड़ना। अनुसन्धान करना, खोज करना। वाँछना। वृद्धि करना। करना।

संध° देखो संझ°।

संधय वि. [संधक] सन्धान-कर्ता।

संधया देखो संध = सं + धा। संधयाती।

संधा स्त्री. प्रतिज्ञा, नियम।

संधाण न [संधान] दो हाड़ों का संयोग-स्थान। सन्धि। मद्य। संयोग। नींबू आदि का अचार।

संधारण न [संधारण] सान्त्वना।

संधारिअ वि [दे] योग्य।

संधारिअ वि [संधारित] रखा हुआ, स्थापित।

संधाव सक [सं + धाव्] दौड़ना।

संधि पुंस्त्री. छिद्र, विवर। संधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान। व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरों के संयोग से होनेवाला वर्ण-विकार। सेंध, चोरी के लिए भीत में किया जाता छेद। दो हाड़ों का संयोग-स्थान। मत। कर्म, कर्म-सन्तति। सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति। चारित्र-मोहनीय कर्म का क्षयोपशम। अवसर, समय। मिलन। दो पदार्थों का संयोग-स्थान। सुलह। ग्रंथ का प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद। °गिह न [°गृह] दो भीतों के बीच का प्रच्छन्न स्थान। च्छेयग, °छेयग वि [°च्छेदक] सेंध लगा कर चोरी करनेवाला। °पाल, °वाल वि. दो राज्यों की सुलह का रक्षक।

संधिअ वि [दे] दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला।

संधिअ वि [संधित] प्रसारित।

संधिआ देखो संहिया।

संधिविग्गहिअ पुं [सान्धिविग्रहिक] राजा की सन्धि और लड़ाई के कार्य में नियुक्त मन्त्री।

संधीर सक [सं + धीरय्] आश्वासन देना।

संधीरविय वि [संधीरित] आश्वासित।

संधुक्क अक [प्र + दीप्, सं + धुक्ष्] जलना। सक. जलाना। उत्तेजित करना।

संधुक्कण न [संधुक्षण] सुलगानेवाला।

संधुच्छिद (शौ) प्रज्ज्वलित, उत्तेजित।

संधुम देखो संदुम।

संधे देखो संध = सं + धा।

संनक्खर न [संज्ञाक्षर] अकार आदि अक्षरों की आकृति।

संनण न[संज्ञान]इशारा करना, संज्ञा करना।

संनय, संनत वि [संनत] नमा हुआ। अवनत।

संनव सक [सं + ज्ञापय्] संभाषण से संतुष्ट करना।

संनह देखो संणज्झ।

संनहण न [संनहन] संनाह।

संनहिय देखो संणद्ध।

संनाहिय वि [संनाहित] तैयार किया हुआ, सजाया हुआ।

संनिकास देखो संनिगास।

संनिकिट्ठ वि [संन्निकृष्ट] आसन्न।

संनिक्खित्त वि [संनिक्षिप्त] डाला हुआ, रखा हुआ।

संनिगास वि [संनिकाश] समान, तुल्य, सदृश। पुं. अपवाद। पुंन. समीप।

संनिगास पुं [संनिकर्ष] संयोग।

संनिचय पुं. समूह। संग्रह।

संनिचिय वि [सनिचित] निबिड़ किया हुआ।

संनिजुंज सक [संनि + युज्] अच्छी तरह जोड़ना।

संनिज्झ न [सांनिध्य] सहायता करने के लिए समीप में आगमन, निकटता।

संनिनाय पुं [संनिनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।

संनिभ देखो संनिह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संनिमहिअ वि [संनिमहित] व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ। पूजित।

संनियट्ट वि [संनिवृत्त] रुका हुआ, विरत। °यारि वि [°चारिन्] प्रतिषिद्ध का वर्जन करनेवाला।

संनिलयण न [संनिलयन] आश्रय। आधार।

संनिवाइ वि [संनिवादिन्] संगत बोलनेवाला, व्याजबी कहनेवाला।

संनिवाइय वि [सांनिपातिक] संनिपात रोग से सम्बन्ध रखनेवाला। अनेक भावों के संयोग से बना हुआ भाव। पुं. संनिपात, मेल, संयोग।

संनिवाइय वि [संनिपातिक] देखो संनिवाइ।

संनिवाडिय वि [संनिपातित] विध्वस्त किया हुआ।

संनिविट्ठ न [संनिविष्ट] मोहल्ला। वि. जिसने पड़ाव डाला हो वह। संहृत और स्थिर आसन से बैठा हुआ।

संनिवेस पुं [संनिवेश] नगर के बाहर का प्रदेश। गाँव, नगर आदि स्थान। यात्री आदि का डेरा, मार्ग का वास-स्थान, पड़ाव। ग्राम। रचना।

संनिवेसणया स्त्री [संनिवेशना] संस्थापन।

संनिवेसिल्ल वि [संनिवेशिन्] रचनावाला।

संनिसन्न वि [संनिषण्ण] बैठा हुआ, सम्यक्।

संनिसिज्जा, संनिसेज्जा स्त्री [संनिषद्या] आसन-विशेष, पीठ आदि आसन।

संनिह वि [संनिभ] समान, सदृश।

संनिहाण न [संनिधान] ज्ञानावरणीय आदि कर्म। अधिकरण कारक, आधार। सान्निध्य। °सत्थ न [°शस्त्र] संयम, त्याग। °सत्थ न [°शास्त्र] कर्म-शास्त्र।

संनिहि पुंस्त्री [संनिधि] उपभोग के लिए स्थापित वस्तु। संस्थापन। सुन्दर निधि। समीपता। संचय।

संनेज्झ देखो संनिज्झ।

संपअ, संपइ (अप) देखो संपया।

संपइ अ [संप्रति] इस समय, अधुना, अब। पुं. जैन राजा, सम्राट् अशोक का पौत्र। °काल पुं. वर्तमान काल।

संपइण्ण वि [संप्रकीर्ण] व्याप्त।

संपउत्त वि [संप्रयुक्त] सम्बद्ध, जोड़ा हुआ।

संपओग पुं [संप्रयोग] संयोग, सम्बन्ध।

संपकर देखो संपगर।

संपक्क पुं [संपर्क] सम्बन्ध।

संपक्खाल पुं [संप्रक्षाल] तापस का एक भेद जो मिट्टी वगैरह घिस कर शरीर का प्रक्षालन करते हैं।

संपक्खालिय वि [संप्रक्षालित] धोया हुआ।

संपक्खित्त वि [संप्रक्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ।

संपगर सक [संप्र + कृ] करना।

संपगाढ वि [संप्रगाढ] अत्यन्त आसक्त। व्याप्त। स्थित, व्यवस्थित।

संपगिद्ध वि [संप्रगृद्ध] अति आसक्त।

संपग्गहिअ वि[संप्रगृहीत] खूब प्रकर्ष से गृहीत, विशेष अभिमान-युक्त।

संपज्ज अक [सं + पद्] सम्पन्न होना। मिलना।

संपज्जलिअ पुं [संप्रज्वलित] तीसरा नरक का नववाँ नरकेन्द्रक, नरकावास-विशेष।

संपट्ठिअ देखो संपत्थिअ = संप्रस्थित।

संपड अक [सं + पद्] प्राप्त होना, सिद्ध होना, निष्पन्न होना।

संपडिबूह सक [संप्रति + बृंह] प्रशंसा करना।

संपडिलेह सक [संप्रति + लेखय्] प्रति-जागरण करना, प्रत्युपेक्षण करना, अच्छी तरह निरीक्षण करना।

संपडिवज्ज सक [संप्रति + पद्] स्वीकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना।
संपडिवत्ति स्त्री [संप्रतिपत्ति] स्वीकार।
संपडिवाइअ वि [संप्रतिपादित] स्थित। स्थापित।
संपडिवाय सक [संप्रति + पादय्] संपादन करना, प्राप्त करना।
संपणदिय } देखो संपणाइय।
संपणद्दिय }
संपणा देखो संपण्णा।
संपणाइय } वि [संप्रणादित] समीचीन
संपणादिय } शब्दवाला।
संपणाम सक [संप्र + नामय्] अर्पण करना।
संपणिपाअ } पुं [सप्रणिपात] प्रणाम,
संपणिवाय } समीचीन नमस्कार।
संपणुण्ण वि [संप्रनुन्न] प्रेरित, उत्तेजित।
संपणुल्ल } सक [संप्र + नुद्] प्रेरणा
संपणोल्ल } करना।
संपण्ण देखो संपन्न।
संपण्णा स्त्री [दे] घेवर या घीवर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने का गेहूँ का आटा।
संपत्त वि [संप्राप्त] सम्यक् प्राप्त। समागत।
संपत्त पुन [संपात्र] सुपात्र।
संपत्ति स्त्री [संपत्ति] समृद्धि। संसिद्धि। पूर्ति।
संपत्ति स्त्री [संप्राप्ति] लाभ, प्राप्ति।
संपत्तिआ स्त्री [दे] बाला। पिप्पली-पत्र।
संपत्थिअ न [दे] शीघ्र।
संपत्थिय } वि [संप्रस्थित] जिसने प्रयाण
संपत्थित } किया हो वह, प्रयात, प्रस्थित। उपस्थित।
संपदं अ [सांप्रतम्] युक्त, उचित। अब।
संपदत्त वि [संप्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित।
संपदाण देखो संपयाण।
संपदाय पुं [संप्रदाय] गुरु-परंपरागत उपदेश, आम्नाय।
संपदावण न [संप्रदापन, संप्रदान] कारक-विशेष।
संपदि देखो संपइ = सम्प्रति।
संपदि देखो संपत्ति = संपत्ति।
संपधार देखो संपहार = संप्र+धारय्।
संपधारणा स्त्री [संप्रधारणा] व्यवहार-विशेष, धारणा-व्यवहार।
संपधारिय वि [संप्रधारित] निश्चित, निर्णीत।
संपधूमिय वि [संप्रधूमित] धूप-वासित।
संपन्न वि. सम्पत्ति-युक्त। संसिद्ध।
संपप्प देखो संपाव।
संपबुज्झ अक [संप्र + बुध्] सत्य ज्ञान को प्राप्त करना।
संपमज्ज सक [संप्र + मृज्] मार्जन करना।
संपमार सक [संप्र + मारय्] मूर्च्छित करना।
संपय वि [सांप्रत] विद्यमान वर्तमान।
संपयं देखो संपदं।
संपयट्ट अक [संप्र + वृत्] सम्यक् प्रवृत्ति करना।
संपयट्ट वि [संप्रवृत्त] सम्यक् प्रवृत्त।
संपया स्त्री [संपद्] समृद्धि, सम्पत्ति, लक्ष्मी। वाक्यों का विश्राम-स्थान। प्राप्ति। एक वणिक्-स्त्री।
संपयाण न [संप्रदान] सम्यक् प्रदान, समर्पण। चतुर्थी-कारक, जिसको दान दिया जाय वह।
संपयावण देखो संपदावण।
संपराइग } वि [सांपरायिक] सम्पराय-
संपराइय } सम्बन्धी, सम्पराय में उत्पन्न।
संपराय पुं. संसार, जगत्। क्रोध आदि कषाय। स्थूल कषाय। कषाय का उदय। युद्ध।
संपरिकित्ति पुं [संपरिकीर्त्ति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति।
संपरिक्ख सक [संपरि + ईक्ष्] सम्यक् परीक्षा करना।
संपरिक्खित्त } वि [संपरिक्षिप्त] वेष्टित।
संपरिखित्त }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपरिफुड वि [संपरिस्फुट] सुस्पष्ट ।
संपरिवुड वि [संपरिवृत] सम्यक् परिवृत, परिवार-युक्त । वेष्टित ।
संपरी अक [संपरी + इ] पर्यटन करना ।
संपल (अप) अक [सं + पत्] आ गिरना ।
संपलग्ग वि [संप्रलग्न] संयुक्त । जो लड़ाई के लिए भिड़ गया हो ।
संपलत्त वि [संप्रलपित] उक्त, प्रतिपादित ।
संपललिय वि [संप्रललित] जिसका अच्छी तरह लालन हुआ हो वह ।
संपलिअ पुं [संपलित] एक जैन महर्षि ।
संपलिअंक पुं [संपर्यङ्क] पद्मासन ।
संपलित्त वि [संप्रदीप्त] प्रज्ज्वलित ।
संपलिमज्ज सक [संपरि + मृज्] प्रमार्जन करना ।
संपली अक [संपरि + इ] गति करना ।
संपवेय } अक [संप्र + वेप्] काँपना ।
संपवेव }
संपवेस पुं [संप्रवेश] प्रवेश, पैठ ।
संपव्वय अक [संप्र + व्रज्] गमन करना ।
संपसार पुं [संप्रसार] इकट्ठा होना । विस्तार ।
संपसारग } वि [संप्रसारक] विस्तारक । पर्यालोचनकर्ता ।
संपसारय }
संपसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] अत्यन्त प्रसिद्ध ।
संपस्स सक [सं + दृश्] अच्छी तरह देखना । विचार करना ।
संपहार सक [संप्र + धारय्] चिन्तन करना । निर्णय करना ।
संपहार पुं [संप्रधार] निश्चय, निर्णय ।
संपहार पुं [संप्रहार] युद्ध ।
संपहाव अक [संप्र + धाव्] दौड़ना ।
संपहिट्ठ वि [संप्रहृष्ट] हर्षित, प्रमुदित ।
संपा स्त्री [दे] काँची, मेखला, करधनी ।
संपाइअव वि [संपादितवत्] जिसने सम्पादन किया हो वह ।
संपाइम वि [संपातिम] भ्रमर, कीट, पतंग आदि उड़नेवाला जन्तु । गति-कर्ता ।
संपाइय वि [संपातित] आगत । मिलित ।
संपाइय वि [संपादित] साधित ।
संपाऊण सक [संप्र + आप्] अच्छी तरह प्राप्त करना ।
संपाओ अ [संप्रातर्] प्रातःकाल । हर प्रभात ।
संपागड वि [संप्रकट] प्रकट । खुला ।
संपाड सक [सं + पादय्] सिद्ध करना, निष्पन्न करना । प्रार्थित वस्तु देना, दान करना । प्राप्त करना । अर्पण करना ।
संपाडग वि [संपादक] कर्ता, निर्माता ।
संपाडण न [संपादन] निष्पादन । करण, निर्माण ।
संपातो देखो संपाओ ।
संपाद (शौ) देखो संपाड = सं + पादय् ।
संपादइत्तअ (शौ) वि [संपपादवितृ] संपादन-कर्ता । संपादक ।
संपादिअवद (शौ) देखो संपाइअव ।
संपाय पुं [संपात] सम्यक्पतन । सम्बन्ध, संयोग । निरर्थक असत्य-भाषण । संग । आगमन । चलन, हिलन ।
संपाय देखो संपाओ ।
संपायग वि [संपादक] सम्पादन-कर्ता ।
संपायग वि [संप्रापक] प्राप्त करनेवाला । प्राप्त करानेवाला ।
संपायण देखो संपाडण ।
संपाल सक [सं + पालय्] पालन करना ।
संपाव सक [संप्र + आप्] प्राप्त करना ।
संपाव सक [संप्र + आपय्] प्राप्त करवाना ।
संपाविअ वि [संप्रापित] जो ले जाया गया ।
संपासंग वि [दे] दीर्घ, लम्बा ।
संपिंडण न [संपिण्डन] द्रव्यों का परस्पर संयोजन । समूह ।
संपिंडिअ वि [संपिण्डित] पिण्डाकार किया हुआ, एकत्र किया हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपिक्ख देखो संपेह = संप्र + ईक्ष् ।
संपिट्ठ वि [संपिष्ट] पिसा हुआ ।
संपिणद्ध वि [संपिनद्ध] नियन्त्रित । बँधा हुआ ।
संपिहा सक [समपि+धा] ढकना ।
संपीड पुं. संपीडन, दबाना । देखो संपील ।
संपीणिअ वि [संप्रीणित] खुश किया हुआ ।
संपील पुं [संपीड] संघात, समूह ।
संपीला स्त्री [संपीडा] पीड़ा, दुःखानुभव ।
संपुच्छ सक [सं + प्रच्छ्] प्रश्न करना । स्त्री. °णी ।
संपुच्छणी स्त्री [संपुच्छनी] झाड़ू ।
संपुज्ज वि [संपूज्य] संमाननीय, आदरणीय ।
संपुड पुं [संपुट] जुड़े हुए दो समान अंश वाली वस्तु, दो समान अंशों का एक दूसरे से जुड़ना । संचय । °फलग पुं. [°फलक] दोनों तरफ जिल्द बँधी पुस्तक ।
संपुड सक [संपुटय्] जोड़ना, दोनों हिस्सों को मिलाना ।
संपुण्ण वि [संपूर्ण] पूर्ण । न. दस दिनों का लगातार उपवास ।
संपूअ सक [सं + पूजय्] सम्मान करना । अभ्यर्चना करना । पूजन करना ।
संपूरिय वि [संपूरित] पूर्ण किया हुआ ।
संपेल्ल पुं [संपीड] दबाव ।
संपेस सक [संप्र + इष्] भेजना ।
संपेह सक [संप्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना ।
संपेहा स्त्री [संप्रेक्षा] पर्यालोचन ।
संफ न [दे] कुमुद, चन्द्र-कमल ।
संफाल सक [सं + पाटय्] फाड़ना ।
संफाली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणि ।
संफास सक [सं + स्पृश्] स्पर्श करना ।
संफास पुं [संस्पर्श] स्पर्श ।
संफिट्ट पुं [दे] संयोग, मेलन ।
संफुल्ल वि. विकसित ।
संफुसिय वि [संमृष्ट] प्रमार्जित ।
संब पुं [शाम्ब] श्रीकृष्ण का एक पुत्र । राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ ।
संब पुंन [शम्ब] वज्र, इन्द्र का आयुध ।
संबंध सक [सं + बन्ध्] जोड़ना । संसर्ग करना, मेल करना । नाता करना ।
संबर पुं [शम्बर] हरिण की एक जाति ।
संबल पुंन [शम्बल] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन । एक नागकुमार देव ।
संबलि देखो सिंबलि = शिम्बलि ।
संबलि पुंस्त्री [शाल्मलि] सेमल का पेड़ ।
संबाधा देखो संबाहा ।
संबाह सक [सं + बाध्] पीड़ा करना । दबाना, चप्पी करना ।
संबाह पुं [संबाध] नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण आदि चारों वर्णों की प्रभूत बस्ती हो । पीड़ा । वि. संकीर्ण, सकरा । देखो संवाह ।
संबाहणी स्त्री [संबाधनी] विद्या-विशेष ।
संबाहा स्त्री [संबाधा] पीड़ा । अंग-मर्दन ।
संबुक्क पुं [शम्बूक] शंख । रावण का भागिनेय—खरदूषण का पुत्र । एक गाँव । °वट्टा स्त्री [°वर्ता] शंख के आवर्त के समान भिक्षाचर्या । देखो संबूअ ।
संबुज्झ सक [सं + बुध्] समझना, ज्ञान पाना ।
संबुद्ध वि [संबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त ।
संबुद्धि स्त्री [संबुद्धि] ज्ञान, बोध ।
संबूअ पुं [शम्बूक] जल-शुक्ति । शुक्ति के आकार का जल जन्तु विशेष ।
संबोधि स्त्री. सत्य धर्म की प्राप्ति ।
संबोह सक [सं + बोधय्] समझाना, बुझाना । आमन्त्रण करना । विज्ञप्ति करना ।
संबोह पुं [संबोध] ज्ञान, बोध, समझ ।
संबोहि देखो संबोधि ।
संभंत वि [संभ्रान्त] भीत । त्रस्त । पुंन. प्रथम नरक का पाँचवाँ नरकेन्द्रक ।
संभंति स्त्री [संभ्रान्ति] संभ्रम, उत्सुकता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संभंतिय वि [सांभ्रान्तिक] संभ्रम-निर्मित ।

संभग्ग वि [संभग्न] चूर्णित ।

संभण सक [सं + भण्] कहना ।

संभम अक [सं + भ्रम्] अतिशय भ्रमण करना । अक. भय-भीत होना ।

संभम पुं [संभ्रम] आदर । भय, घबराहट, क्षोभ । उत्सुकता ।

संभर सक [सं + भृ] धारण करना । पोषण करना । संक्षेप या संकोच करना ।

संभर सक [सं + स्मृ] स्मरण करना ।

संभराविअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ ।

संभल सक [सं + स्मृ] याद करना ।

संभल सक [सं + भल्] सुनना । अक. सम्भलना । सावधान होना ।

संभली स्त्री [दे] दूती । कुट्टनी । स्त्री ।

संभव अक [सं + भू] उत्पन्न होना । संभावना होना, उत्कट संशय होना ।

संभव पुं. उत्पत्ति । संभावना । वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न तीसरे जिनदेव । एक जैन मुनि, दूसरे वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु । कला-विशेष ।

संभव पुं [दे] प्रसूति-जन्य बुढ़ापा ।

संभव (अप) देखो संभम = संभ्रम ।

संभव्व देखो संभव = सं + भू ।

संभाणय न [संभाणक] गुजरात का एक प्राचीन नगर ।

संभार सक [सं + भारय्] मसाला से संस्कृत करना, वासित करना ।

संभार पुं. समूह, जत्था । शाक आदि में ऊपर डाला जाता मसाला । परिग्रह, द्रव्य-संचय । अवश्यतया कर्म का वेदन ।

संभारिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ ।

संभारिअ वि [संस्मारित]याद कराया हुआ ।

संभाल सक [सं + भालय्] संभालना । खोज करना ।

संभाव सक [सं + भावय्] संभावना करना । प्रसन्न नजर से देखना ।

संभाव अक [लुभ्] लोभ करना, आसक्ति करना ।

संभास सक [सं + भाष्] बातचीत करना ।

संभासि वि [संभाष] संभाषण ।

संभिडण न [संभेदन] आघात ।

संभिण्ण वि [संभिन्न] परिपूर्ण । किंचिद् न्यून । व्याप्त । बिलकुल भिन्न । खंडित । °सोअ वि [°श्रोतस्, °श्रोतृ] शरीर के कोई भी अंग से शब्द को स्पष्ट रूप से सुनने की लब्धिवाला ।

संभिन्न न [दे] आघात ।

संभिय वि [संभृत] पुष्ट । संस्कार-युक्त ।

संभु पुं. [शम्भु] शिव । रावण का एक सुभट । छन्द-विशेष । °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] गौरी ।

संभुंज सक [सं + भुज्] साथ भोजन करना । एक मण्डली में बैठकर भोजन करना ।

संभुल्ल वि [दे] दुर्जन ।

संभूअ वि [संभूत] उत्पन्न । पुं. एक जैन मुनि, प्रथम वासुदेव के पूर्वजन्म के गुरु । एक जैन महर्षि, स्थूलभद्र मुनि के गुरु । व्यक्ति-वाचक नाम । °विजय पुं. एक जैन महर्षि ।

संभूइ स्त्री [संभूति] उत्पत्ति । श्रेष्ठ विभूति ।

संभूस सक [सं + भूष्] अलंकृत करना ।

संभोअ पुं. देखो संभोग ।

संभोइअ वि [सांभोगिक] समान सामाचारी-क्रियानुष्ठान होने के कारण जिसके साथ खान-पान आदि का व्यवहार हो सके ऐसा साधु ।

संभोग पुं. समान सामाचारीवाले साधुओं का एकत्र भोजनादि-व्यवहार । सुन्दर भोग ।

संमइ स्त्री [संमति] अनुमति । पुं. वायुकाय, पवन । वायुकाय का अधिष्ठाता देव ।

संमज्ज पुं. [संमार्ज] संमार्जन, साफ करना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संमज्जग पुं [संमज्जक] वानप्रस्थ तापसों की एक जाति ।
संमज्जणी स्त्री [संमार्जनी] झाड़ू ।
संमट्ठ वि [संमृष्ट] प्रमार्जित । पूर्ण भरा हुआ ।
संमड्ड पुं [संमर्द] युद्ध । परस्पर संघर्ष ।
संमद्द सक [सं + मृद्] मर्दना करना ।
संमद्द देखो संमड्ड ।
संमद्दा स्त्री [संमर्दा] प्रत्युपेक्षणा-विशेष, वस्त्र के कोनों को मध्य भाग में रखकर अथवा उपधि पर बैठकर जो प्रत्युपेक्षणा--निरीक्षण की जाय वह ।
संमय वि [संमत] अनुमत । अभीष्ट ।
संमविय वि [संमापित] नापा हुआ ।
संमा अक [सं + मा] समाना, अटना ।
संमाण सक [सं + मानय्] आदर करना, गौरव करना ।
संमिद (शौ) वि [संमित] तुल्य । समान परिमाणवाला ।
संमिल अक [सं + मिल्] मिलना ।
संमिल्ल अक [सं + मील्] सकुचाना । संकोच करना ।
संमिस्स वि [संमिश्र] मिला हुआ, युक्त । उखड़ी हुई छालवाला ।
संमील देखो संमिल्ल ।
संमीस देखो संमिस्स ।
संमुइ पुं [संमुचि] भारतवर्ष में भविष्य में होनेवाला एक कुलकर पुरुष ।
संमुच्छ अक [सं + मूर्च्छ्] स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना ही यूकादि की तरह जीवों का उत्पन्न होना ।
संमुच्छिम वि [संमूर्च्छिम] स्त्री-पुरुष के समागम के बिना उत्पन्न होनेवाला प्राणी ।
संमुज्झ अक [सं + मुह्] मोह करना, मुग्ध होना ।
संमुस सक [सं + मृश्] पूर्ण स्पर्श करना ।
संमुह वि [संमुख] सामने आया हुआ ।
संमूढ वि. जड़, विमूढ ।
संमेअ पुं [संमेत] आजकल का 'पारसनाथ पहाड़' । राम का एक सुभट ।
संमेल पुं. परिजन या मित्रों का जिमनवार ।
संमोह पुं. मूढता, मोह । मूर्च्छा । दुःख, कष्ट । संनिपात रोग ।
संमोह न [सांमोह] मिथ्यात्व का एक भेद—रागी को देव, संगी—परिग्रही को गुरु और हिंसा को धर्म मानना । वि. संमोह-संबन्धी ।
संमोहा स्त्री. छन्द-विशेष ।
संरंभ पुं [संरम्भ] हिंसा करने का संकल्प । आटोप । उद्यम । क्रोध ।
संरक्खग वि [संरक्षक] सुरक्षा करनेवाला ।
संरक्खण न [संरक्षण] समीचीन रक्षण ।
संरक्खय देखो संरक्खग ।
संरद्ध सक [सं + राध्] पकाना ।
संरुंध सक [सं + रुध्] रोकना ।
संरोह पुं [संरोध] अटकाव ।
संरोहणी स्त्री [संरोहणी] घाव को रुझानेवाली औषधि-विशेष ।
संलक्ख सक [सं + लक्षय्] पहिचानना ।
संलग्ग वि [संलग्न] लगा हुआ । संयुक्त ।
संलत्त वि [संलपित] संभाषित, उक्त । कथित ।
संलप्प, **संलव** } सक [सं + लप्] वार्तालाप या संभाषण करना ।
संलाव सक [सं + लापय्] बातचीत करना ।
संलाविअ वि [संलापित] उक्त । कहलवाया हुआ ।
संलिद्ध वि [संश्लिष्ट] संयुक्त ।
संलिह सक [सं + लिख्] निर्लेप करना । तप से शरीर आदि का शोषण करना । घिसना । रेखा करना ।
संलीढ वि. संलेखना-युक्त ।
संलीण वि [संलीन] इन्द्रिय तथा कषाय आदि को काबू में किया हो वह, संवृत ।
संलीणया स्त्री [संलीनता] तप-विशेष,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शरीर आदि का संगोपन।

संलुंच सक [सं + लुञ्च्] काटना।

संलेहणा } स्त्री [संलेखना] शरीर, कषाय
संलेहा } [संलेखा] आदि का शोषण, अनशन-व्रत से शरीर-त्याग का अनुष्ठान। °सुअ न [°श्रुत] ग्रन्थ-विशेष।

संलोअ पुं [संलोक] दर्शन, अवलोकन। दृष्टि-पात। जगत्। प्रकाश। वि. दृष्टि-प्रचार-वाला।

संलोक सक [सं + लोक्] देखना।

संवइयर पुं [संव्यतिकर] व्यतिसंबन्ध, विपरीत प्रसंग।

संवग्ग पुं [संवर्ग] गुणाकार। गुणित।

संवच्छर पुं [संवत्सर] वर्ष। °पडिलेहणग न [°प्रतिलेखनक] वर्षगाँठ।

संवच्छरिय पुं [सांवत्सरिक] ज्योतिषी। वि. संवत्सर-संबन्धी।

संवच्छल देखो संवच्छर।

संवट्ट सक[सं + वर्तय्] एक स्थान में रखना। संकुचित करना।

संवट्ट पुं [संवर्त] पीड़ा। भयभीत लोगों का समवाय। तृण को उखाड़ने-वाला वायु। अपवर्तन। घेरा। बहुत गाँवों के लोग एकत्रित हो कर रहें वह स्थान, दुर्ग आदि। देखो संवत्त।

संवट्टइअ वि [संवर्तकित] तूफान में फँसा।

संवट्टग पुं [संवर्तक] वायु-विशेष। अपवर्तन।

संवट्टण न [संवर्तन] अनेक मार्ग मिलते हों वह स्थान। अपवर्तन।

संवट्टय पुं [संवर्तक]। देखो संवट्टग।

संवट्टिअ वि [दे. संवर्तित] संवृत, संकोचित।

संवट्टिअ वि [संवर्तित] पिंडीभूत, एकत्रित। संवर्त-युक्त।

संवड्ढ अक [सं + वृध्] बढ़ना।

संवत्त पुं [संवर्त] प्रलय काल। वायु-विशेष। मेघ। मेघ का अधिपति-विशेष। बहेड़ा का पेड़। एक स्मृतिकार मुनि। देखो संवट्ट = संवर्त।

संवत्तण देखो संवट्टण।

संवत्तय वि [संवर्तक] अपवर्तन-कर्ता। पुं. बलदेव। वडवानल।

संवत्तुवत्त पुं [संवर्तोद्वर्त] उलट-पुलट।

संवद्धण न [संवर्धन] वृद्धि। वि. वृद्धि करनेवाला।

संवय सक [सं + वद्] बोलना, कहना। प्रमाणित करना।

संवय वि [संवृत] आवृत्त, आच्छादित।

संवर सक [सं + वृ] निरोध करना। कर्म को रोकना। बन्द करना। ढकना। गोपन करना।

संवर पुं. नूतन कर्मबन्ध का अटकाव। भारत-वर्ष में होनेवाले अठारहवें जिनदेव। चौथे जिनदेव के पिता। एक जैन-मुनि। पशु-विशेष। दैत्य-विशेष। मत्स्य की एक जाति।

संवरण न. निरोध। गोपन। संकोचन। प्रत्याख्यान, परित्याग। श्रावक के बारह व्रतों का अंगीकार। अनशन। विवाह। वि. रोकनेवाला।

संवरिअ वि [संवृत] आसेवित आराधित। संकोचित। आच्छादित।

संवलण न [संवलन] मिलन।

संवलिअ वि [संवलित] व्याप्त। युक्त, मिलित। मिश्रित।

संववहार पुं [संव्यवहार] व्यवहार।

संवस अक [सं + वस्] साथ में रहना। वास करना। संभोग करना।

संवह सक [सं + वह्] वहन करना। अक. सज्ज होना।

संवहणिय वि [संवाहनिक] देखो संवाहणिय।

संवहिअ वि [संव्यूढ] जो सज्ज हुआ हो।

संवाद } पुं. पूर्वज्ञान को सत्य साबित करने-
संवाय } वाला ज्ञान। सबूत। विवाद।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवाय सक [सं + वादय्] खबर देना। प्रमाणित करना।
संवायय पुं [दे] नकुल। श्येन पक्षी।
संवास सक [सं+वासय्] साथ में रहने देना। मैथुन के लिए स्त्री के साथ रहना।
संवासिय (अप) वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह।
संवाह सक [सं + वाहय्] वहन करना। तैयारी करना। अंग-मर्दन करना।
संवाह पुं. दुर्ग-विशेष, जहाँ कृषक-लोग धान्य आदि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते हैं। विवाह। गिरिशिखरस्थ ग्राम।
संवाहण न [संवाहन] अंग-मर्दन। सम्बाधन, बिनाश। पुं. एक राजा। वि. वहन करनेवाला।
संवाहणिय वि [सांवाहनिक] भार-वहन करने के काम में आता वाहन (उवा)।
संवाहय वि [संवाहक] चप्पी करनेवाला।
संविकिण्ण वि [संविकीर्ण] अच्छी तरह व्याप्त।
संविक्ख सक [संवि + ईक्ष्] सम भाव से देखना।
संविग्ग वि [संविग्न] संवेग-युक्त, भव-भीरु, मुक्ति का अभिलाषी, उत्तम साधु।
संविचिण्ण वि [संविचीर्ण] संविचरित, आसेवित।
संविज्ज अक [सं + विद्] विद्यमान होना।
संविट्ठ सक [सं + वेष्टय्] वेष्टन करना। पोषण करना।
संविढत्त वि [संमर्जित] उपार्जित।
संविणीय वि [संविनीत] विनय-युक्त।
संवित्त देखो संवीअ।
संवित्त वि [संवृत्त] संजात। वि. अच्छा आचरणवाला। बिलकुल गोल।
संवित्ति स्त्री [संवित्ति] संवेदन, ज्ञान।
संविद सक [सं + विद्] जानना।
संविद्ध वि [संविद्ध] संयुक्त। अभ्यस्त। दृष्ट।
संविधा स्त्री. संविधान, रचना।
संविधुण सक [संवि+धू] दूर करना। परित्याग करना। अवगणना।
संविभत्त वि [संविभक्त] बाँटा हुआ।
संविभाअ } पुं [संविभाग] विभाग करना,
संविभाग } बाँट। आदर, सत्कार।
संविभागि वि [संविभागिन्] दूसरे को देकर भोजन करनेवाला।
संविभाव सक [संवि + भावय्] पर्यालोचन करना, चिन्तन करना।
संविराय अक [संवि + राज्] शोभना।
संविल्ल देखो संवेल्ल।
संविह पुं [संविध] गोशाल का एक उपासक।
संविहाण न [संविधान] रचना।
संवीअ वि [संवीत] व्याप्त। पहना हुआ।
संवुअ देखो संवुड।
संवुट्ट देखो संवुत्त।
संवुड वि [संवृत] संकट, सकड़ा, अविवृत्त। संवर-युक्त, सावद्य प्रवृत्ति से रहित। निरुद्ध। आवृत। संगोपित। न. कषाय और इन्द्रियों का नियन्त्रण।
संवुड्ढ वि [संवृद्ध] बढ़ा हुआ।
संवुत्त वि [संवृत्त] संजात। बना हुआ।
संवुद देखो संवुड।
संवुदि स्त्री [संवृत्ति] संवरण।
संवूढ त्रि [संव्यूढ] सज्जित। बह कर किनारे लगा हुआ।
संवेअ वि [संवेद्य] अनुभव-योग्य।
संवेअ } पुं [संवेग] भय आदि के कारण
संवेग } से त्वरा। भव-वैराग्य। मुमुक्षा।
संवेयण न [संवेदन] ज्ञान। वि. बोध-जनक।
संवेयण } वि [संवेजन] संवेग-जनक।
संवेयण } [संवेगन]।
संवेल्ल सक [सं + वेल्ल्] चालित करना, कँपाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवेल्ल सक [संवेष्ट्] लपेटना।
संवेल्ल सक [दे] संकेलना। संकुचित करना। संवृत करना।
संवेह पुं [संवेध] संयोग।
संस अक [स्रंस्] खिसकना, गिरना।
संस सक [शंस्] कहना। प्रशंसा करना। आस्वाद लेना।
संस वि [सांश] अंश-युक्त, सावयव।
संसइअ न [सांसयिक] मिथ्यात्व-विशेष।
संसग्ग पुंस्त्री [संसर्ग] संबन्ध, संग।
संसज्ज अक [सं+सञ्ज्]संबन्ध करना, संसर्ग करना।
संसज्जिम वि [संसक्तिमत्] बीच में गिरे हुए जीवों से युक्त।
संसट्ठ वि [संसृष्ट] खरण्टित, विलिप्त। न. खरण्टित हाथ से दी जाती भिक्षा आदि। देखो संसिट्ठ।
संसत्त वि [संसक्त] संसर्ग-युक्त, सम्बद्ध। श्वापद-जन्तु-विशेष।
संसत्ति स्त्री [संसक्ति] संसर्ग।
संसद्द पुं [संशब्द] शब्द, आवाज।
संसप्पग वि [संसर्पक] चलने-फिरनेवाला। पुं. चींटी आदि प्राणी।
संसप्पिअ न [दे. संसर्पित] कूद कर चलना।
संसमण न [संशमन] उपशम, शान्ति।
संसय पुं [संशय] संदेह, शंका।
संसया स्त्री [संसत्] परिषत्, सभा।
संसर अक [सं+सृ] परिभ्रमण करना।
संसरण न [संस्मरण] स्मृति, याद।
संसवण न [संश्रवण] श्रवण, सुनना।
संसह सक [सं + सह्] सहन करना।
संसा स्त्री [शंसा] प्रशंसा, श्लाघा।
संसाअ वि [दे] आरूढ। चूर्णित। पीत। उद्विग्न।
संसार पुं. एक जन्म से जन्मान्तर में गमन। जगत्। °वंत वि [°वत्] संसारवाला, संसार-स्थित जीव।
संसारिय वि [संसारिक] संसार से सम्बन्ध रखनेवाला।
संसारिय वि [संसारित] एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थापित।
संसाहण स्त्रीन [दे] अनुगमन।
संसाहण न [संकथन] कथन।
संसाहिय वि [संसाधित] सिद्ध किया हुआ।
संसिअ वि [संश्रित] आश्रित।
संसिंच सक [सं+सिच्] पूरना, भरना। बढ़ाना। सिंचन करना।
संसिज्झ अक [सं+सिध्] अच्छी तरह सिद्ध होना।
संसिट्ठ देखो संसट्ठ। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] खरण्टित हाथ अथवा भाजन से दी जाती भिक्षा को ही ग्रहण करने के नियमवाला मुनि।
संसित्त वि [संसिक्त] सींचा हुआ।
संसिद्धिअ वि [सांसिद्धिक] स्वभाव-सिद्ध।
संसिलेस देखो संसेस।
संसीव सक [सं+सिव्] सीना।
संसुद्ध वि [संशुद्ध] विशुद्ध। न. लगातार उन्नीस दिन का उपवास।
संसूयग वि [संसूचक] सूचना-कर्ता।
संसेइम वि [संसेकिम] संसेक से बना हुआ। उबाली हुई भाजी जिस ठंढे जल से सिची जाय वह पानी। तिल की धोवन। पिष्टोदक।
संसेइम वि [संस्वेदिम] पसीने से उत्पन्न होनेवाला।
संसेय अक [सं + स्विद्] बरसना।
संसेय पुं [संस्वेद] पसीना। °य वि [°ज] पसीने से उत्पन्न।
संसेय पुं [संसेक] सिंचन।
संसेविय वि [संसेवित] आसेवित।
संसेस पुं [संश्लेष] सम्बन्ध, संयोग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसेसिय वि [संश्लेषिक] संश्लेषवाला।
संसोधण न [संशोधन] शुद्धि-करण, जुलाब।
संसोधित वि [संशोधित] सुशुद्ध किया हुआ।
संसोय सक [सं+शोचय्] शोक करना।
संसोहण न. देखो संसोधण।
संसोहा स्त्री [संशोभा] शोभा।
संसोहि वि [संशोभिन्] शोभनेवाला।
संसोहिय देखो संसोधित।
संह देखो संघ, संध।
संहडण देखो संघयण।
संहदि स्त्री [संहृति] संहार।
संहय वि [संहत] मिला हुआ।
संहर सक [सं+हृ] अपहरण करना। विनाश करना। मारना, संवरण करना, संकेलना। ले जाना।
संहर पुं [संभार] समुदाय। संघात।
संहार देखो संभार = सं + भारय्।
संहार देखो संघार।
संहारण न [संधारण] धारण, टिकाना।
संहाव देखो संभाव = सं + भावय्।
संहिच्च अ [संहत्य] साथ में मिलकर।
संहिदि देखो संहदि।
संहिया स्त्री [संहिता] चिकित्सा आदि शास्त्र। अस्खलित रूप से सूत्र का उच्चारण।
संहुदि स्त्री [संभृति] अच्छी तरह पोषण।
सक देखो सग = शक।
सकण्ण वि [सकर्ण] विद्वान्, जानकार।
सकथ न. तापसों का एक उपकरण।
सकधा देखो सकहा।
सकयं अ [सकृत्] एक बार।
सकल देखो सयल = सकल।
सकहा स्त्री [सक्थिन्] अस्थि, हाड़।
सकाम देखो स-काम = सकाम।
सकुंत पुं [शकुन्त] पक्षी।
सकुण देखो सक्क = शक्।
सकेय देखो स-केय = सकेत।
सक्क अक [शक्] सकना, समर्थ होना।
सक्क अक [सृप्] जाना, गति करना।
सक्क अक [ष्वष्क्] गति करना, जाना।
सक्क न [शल्क] छाल।
सक्क वि [शक्त] समर्थ, शक्ति-युक्त।
सक्क पुं [शक्र] सौधर्म नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र। कोई भी देवेन्द्र। एक विद्याधर-राजा। छन्द-विशेष। °गुरु पुं. बृहस्पति। °प्पभ पुं [°प्रभ] शक्र का एक उत्पात-पर्वत। °सार न. एक विद्याधर-नगर। °ावदार (शौ) न [°ावतार] तीर्थ-विशेष। °ावयार न [°ावतार] चैत्य-विशेष।
सक्क पुं [शाक्य] बुद्ध देव। वि. बौद्ध।
सक्क (अप) देखो सग = स्वक।
सक्कंदण पुं [संक्रन्दन] इन्द्र।
सक्कणो (शौ) देखो सकुण।
सक्कय देखो स-क्कय = सस्कृत।
सक्कय वि [संस्कृत] संस्कार-युक्त। स्त्रीन. संस्कृत भाषा।
सक्कर न [शर्कर] खण्ड, टुकड़ा।
सक्कर° देखो सक्करा। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी]। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] दूसरी नरक-भूमि।
सक्करा स्त्री [शर्करा] चीनी। उपलखण्ड। कंकड़। बालु। °भ न. गौतम गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उस में उत्पन्न। °भा स्त्री. दूसरी नरक-पृथिवी।
सक्कार पुं [सत्कार] सम्मान, आदर, पूजा।
सक्कार पुं [संस्कार] गुणान्तर का आधान। स्मृति का कारण-भूत एक गुण। वेग। शास्त्राभ्यास से उत्पन्न होती व्युत्पत्ति। गुण-विशेष, स्थिति-स्थापन। व्याकरण के अनुसार शब्द-सिद्धि का प्रकार। गर्भाधान आदि के समय की जाती धार्मिक क्रिया। पाक, पकाना।
सक्कार सक [सत्कारय्] सम्मान करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्कारिय वि [संस्कारित] संस्कार-युक्त-कृत ।
सक्काल देखो सक्कार = संस्कार ।
सक्किअ देखो सक्क = शाक्य ।
सक्किअ वि [स्वकीय] निज का, आत्मीय ।
सक्किअ देखो स-क्किअ = सत्कृत ।
सक्किरिआ स्त्री[संस्क्रिया]संस्कार, संस्कृति ।
सक्कुण देखो सकुण ।
सक्कुलि स्त्री [शष्कुलि] कर्ण-विवर । तिल-पापड़ी । °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप । उसकी मनुष्य जाति ।
सक्ख न [सख्य] मैत्री, दोस्ती ।
सक्ख न [साक्ष्य] साक्षिपन, गवाही ।
सक्ख° देखो सक्क = शक् ।
सक्खं अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, प्रकट ।
सक्खय देखो सक्कय = संस्कृत ।
सक्खर देखो स-क्खर = साक्षर ।
सक्खा देखो सक्खं ।
सक्खि वि [साक्षिन्] साक्षी, साखी ।
सक्खिअ देखो सक्ख = सख्य ।
सक्खिज्ज न [साक्षित्व] गवाही, साख ।
सक्खिण देखो सक्खि ।
सग [स्वक] देखो स = स्व ।
सग देखो सत्त = सप्तन् । °वण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] सत्तावन । °वीस स्त्रीन [विंशति] सत्ताईस । °सयरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर । °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी ।
सग देखो सत्तम ।
सग पुं [शक] अफगानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश । उस देश का निवासी । एक सुप्रसिद्ध राजा जिसका शक-सम्वत् चलता है । °कूल न. एक म्लेच्छ-देश का किनारा ।
सग° स्त्री [स्रज्] माला ।
सगड न [शकट] गाड़ी । पुं. एक सार्थवाह-पुत्र । °भद्दिआ स्त्री [°भद्रिका] जैनेतर ग्रन्थ-विशेष । °मुह न [°मुख] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन उद्यान । °वूह पुं [°व्यूह] कला-विशेष, गाड़ी के आकार से सैन्य की रचना । देखो सअढ ।
सगडब्भि देखो स-गडब्भि = स्वकृतभिद् ।
सगडाल पुं [शकटाल] राजा नन्द का सुप्रसिद्ध मंत्री और महर्षि स्थूलभद्र का पिता ।
सगडिया स्त्री [शकटिका] छोटी गाड़ी ।
सगडी स्त्री [शकटी] गाड़ी ।
सगण देखो स-गण = स-गण ।
सगन्न देखो सकण्ण ।
सगय न [दे] श्रद्धा, विश्वास ।
सगर पुं. एक चक्रवर्ती राजा ।
सगल्ल देखो सयल = सकल ।
सगसग अक [सगसगाय्] 'सग-सग' आवाज करना ।
सगार देखो स-गार = सागार, साकार ।
सगार देखो स-गार = स-कार ।
सगास न [सकाश] पास, निकट, समीप ।
सगुण देखो स-गुण = स-गुण ।
सगुणि देखो सउणि ।
सगुत्त वि [सगोत्र] समान गोत्रवाला ।
सगेद्द न [दे] निकट, समीप ।
सगोत्त देखो सगुत्त ।
सग्ग पुंन [स्वर्ग] देवों का आवास-स्थान । °तरु पुं. कल्पवृक्ष । °सामि पुं [°स्वामिन्] इन्द्र । °वहू स्त्री [°वधू] देवांगना, देवी ।
सग्ग पुं [सर्ग] मुक्ति, ब्रह्म । सृष्टि, रचना ।
सग्ग देखो स-ग्ग = साग्र ।
सग्ग देखो सग = स्वक ।
सग्गइ देखो स-ग्गइ = सद्गति ।
सग्गह वि [दे] मुक्त । मुक्ति-प्राप्त ।
सग्गह देखो स-ग्गह = स-ग्रह ।
सग्गीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी ।
सग्गु देखो सिग्गु ।
सग्गोकस पुं [स्वर्गौकस्] देव, देवता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सग्घ सक [कथ्] कहना ।
सग्घ वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय ।
सघिण देखो स-घिण = स-घृण ।
सचक्खु देखो स-चक्खु = स-चक्षुष् ।
सचित्त देखो स-चित्त = स-चित्त ।
सचिव देखो सइव ।
सची देखो सई = शची । °वर पुं. इन्द्र ।
सचेयण देखो स-चेयण = स-चेतन ।

सच्च न [सत्य] यथार्थ भाषण, अमृषा-कथन । शपथ । सत्य युग । सिद्धान्त । वि. यथार्थ, सच्चा । पुं. संयम, चारित्र । जिनागम, जैन-सिद्धान्त । अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त । एक वणिक्-पुत्र । °उर न [°पुर] एक प्राचीन नगर, आजकल का 'साचोर' । °उरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ । °णेमि, °नेमि पुं. भ. अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ले मुक्ति पानेवाला राजा समुद्रविजय का पुत्र । °प्पवाय न [°प्रवाद] छठवाँ पूर्व ग्रन्थ । °भामा स्त्री. श्रीकृष्ण की एक पत्नी । °वाइ वि [°वादिन्] सत्य-वक्ता । °संध वि [°सन्ध] प्रतिज्ञा-निर्वाहक । °सिरी स्त्री [°श्री] पाँचवें आरे की अन्तिम श्राविका । °सेण पुं [°सेन] ऐरवत वर्ष में होनेवाला एक जिनदेव । °हामा देखो °भामा । °ावाइ देखो °वाइ ।

सच्चइ पुं [सत्यकि] आगामी काल में बारहवाँ तीर्थंकर होनेवाला एक साध्वी-पुत्र । विषय-लम्पट एक विद्याधर । श्रीकृष्ण का एक सम्बन्धी । °सुय पुं [°सुत] ग्यारह रुद्रों में अन्तिम रुद्र ।

सच्चंकार वि [सत्यंकार] सत्य साबित करने-वाला, लेन-देन की सच्चाई के लिए दिया जाता बहाना ।
सच्चव सक [दृश्] देखना । निरीक्षण करना ।
सच्चव सक [सत्यापय्] सत्य साबित करना ।
सच्चवय वि [दर्शक] द्रष्टा ।
सच्चविअ वि [दे] अभिप्रेत, इष्ट ।

सच्चा स्त्री [सत्या] सत्य वचन । श्री कृष्ण की पत्नी, सत्यभामा । इन्द्राणी । °मोस वि [°मृषा] सत्य से मिला हुआ झूठ वचन ।
सच्चित्त देखो स-च्चित्त = स-चित्त ।
सच्चीसय पुं [दे. सच्चीसक] वाद्य-विशेष ।
सच्चेविअ वि [दे] रचित, निर्मित ।
सच्छ वि [स्वच्छ] अति निर्मल ।
सच्छंद वि [स्वच्छन्द] स्वाधीन । न. स्वेच्छा-नुसार । °गामि वि [°गामिन्] स्वैरी । स्त्री. °णी । °चारि, °यारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी । स्त्री. °णी ।
सच्छर सक [दृश्] देखना ।
सच्छह वि [दे.सच्छाय] सदृश, समान ।
सच्छाय वि. समान छायावाला, तुल्य । अच्छी कान्तिवाला । सुन्दर छायावाला ।
सच्छाह वि [सच्छाय] जिसकी छाँही सुन्दर हो । छाँहीवाला । समान छायावाला, तुल्य ।
सछत्ता स्त्री [सच्छत्रा] वनस्पति-विशेष ।
सजण देखो स-जण = स्व-जन ।
सजिय देखो सज्जीव ।
सजुत्त देखो संजुत्त ।
सजोइ देखो स-जोइ = स-ज्योतिष् ।
सजोगि वि [सयोगिन्] मन आदि का व्या-पारवाला । पुंन. तेरहवाँ गुण-स्थानक ।
सजोणिय देखो स-जोणिय = स-योनिक ।
सज्ज अक [सञ्ज्] आसक्ति करना । सक. आलिंगन करना ।
सज्ज अक [सस्ज्] तय्यार होना । सक. तय्यार करना, सजाना ।
सज्ज पुं [सर्ज] वृक्ष-विशेष ।
सज्ज पुं [षड्ज] स्वर-विशेष ।
सज्ज वि. तय्यार, प्रगुण ।
सज्ज } अ [सद्यस्] तुरन्त, जल्दी ।
सज्जं }
सज्जंभव पुं [शय्यम्भव] एक जैन महर्षि ।
सज्जण देखो स-ज्जण = सज्जन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सज्जा देखो सेज्जा ।
सज्जिअ वि [सर्जित] बनाया हुआ ।
सज्जिअ पुं [दे] नापित, नाई । रजक । वि. पुरस्कृत, आगे किया हुआ । दीर्घ ।
सज्जिआ स्त्री [सर्जिका] साजी खार ।
सज्जीअ } सज्जीव } देखो स-ज्जीअ = स-जीव ।
सज्जीहव अक [सज्जी + भू] सज्ज होना ।
सज्जो देखो सज्ज = सद्यस् ।
सज्जोक्क वि [दे] प्रत्यग्र, नूतन, ताजा ।
सज्झ वि [साध्य] साधनीय । वश में करने योग्य । तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमेय पदार्थ, जैसे धूम से ज्ञातव्य वह्नि । पुं. साध्यवाला, पक्ष । देवगण-विशेष । योग-विशेष । मन्त्र-विशेष ।
सज्झ पुं [सह्य] पर्वत-विशेष । वि. सहन-योग्य ।
सज्झंतिय पुं [दे] ब्रह्मचारी ।
सज्झंतिया स्त्री [दे] भगिनी ।
सज्झंतेवासि पुं [स्वाध्यायान्तेवासिन्] विद्या-शिष्य ।
सज्झमाण वि [साध्यमान] जिसकी साधना की जाती हो वह ।
सज्झव सक [दे] तन्दुरुस्त करना ।
सज्झस न [साध्वस] भय ।
सज्झाइय वि [स्वाध्यायिक] जिसमें पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्रोक्त देश, काल आदि । न. शास्त्र-पठन आदि ।
सज्झाय पुं [स्वाध्याय] शोभन अध्ययन, शास्त्र-का पठन, आवर्तन आदि ।
सज्झाराय वि [साह्यराज] सह्याचल के राजा से सम्बन्ध रखनेवाला, सह्याद्रि के राजा का ।
सज्झिलग } सज्झिल्लग } पुं [दे] भ्राता ।
सट्ट पुंस्त्री [दे] सट्टा, विनिमय । वि. सटा हुआ ।
सट्ट } सट्टय } पुंन [सट्टक] एक तरह का नाटक । खाद्य-विशेष ।
सट्ठ न [शाठ्य] शठता, धूर्तता ।
सट्ठ (शौ) देखो छट्ठ ।
सट्ठि स्त्री [षष्टि] साठ । साठ संख्यावाला । °तंत, °यंत न [°तन्त्र] सांख्य-शास्त्र । °म वि [°तम] साठवाँ ।
सट्ठिक्क } सट्ठिय } सट्ठीअ } वि [षष्टिक] साठ वर्ष की वय-वाला । पुंन. एक प्रकार का चावल ।
सड अक [सद्] सड़ना । विशीर्ण होना । विषाद करना । अक. गति करना, जाना ।
सड अक [शट्] सड़ना । खेद करना । रोगी होना । अक. जाना ।
सडंग न [षडङ्ग] शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष । °वि वि [°विद्] छः अंगों का जानकार ।
सडा देखो सढा ।
सडिअग्गिअ वि [दे] वर्धित । प्रेरित ।
सड्ढ सक [शद्]विनाश करना । कृश-करना ।
सड्ढ पुंस्त्री [श्राद्ध] श्रावक । वि. श्रद्धेय वचनवाला । देखो सद्ध = श्राद्ध ।
सड्ढ देखो स-ड्ढ = सार्ध ।
सड्ढइ पुं [श्राद्धकिन्] वानप्रस्थ तापस की एक जाति ।
सड्ढा स्त्री [श्रद्धा] स्पृहा, अभिलाष । धर्म आदि में विश्वास, प्रतीति । आदर । शुद्धि । चित्त की प्रसन्नता । देखो सद्धा ।
सड्ढि वि [श्रद्धिन्] श्रद्धालु, श्रद्धावान् ।
सड्ढिअ वि [श्राद्धिक] देखो सड्ढ = श्राद्ध ।
सड्ढी देखो सड्ढ = श्राद्ध ।
सढ वि [शठ] धूर्त, मायावी, कपटी । कुटिल, वक्र । पुं. धतूरा । मध्यस्थ पुरुष ।
सढ पुं [दे] पाल, जहाज का बादबान । केश । स्तम्ब, गुच्छा । वि. विषम ।
सढय न [दे] कुसुम ।

सढा स्त्री [सटा] सिंह आदि की केसरा। जटा। व्रती का केश-समूह। शिखा।

सढाल पुं [सटाल] सटावाला, सिंह।

सढि पुं [दे.सटिन्] सिंह।

सढिल वि [शिथिल] ढीला।

सण पुंन [शण] धान्य-विशेष। तृण-विशेष, पाट, जिसके तंतु रस्सी आदि बनाने के काम में लाए जाते हैं। °बंधण न [°बन्धन] सन का पुष्प-वृन्त। °वाडिआ स्त्री [°वाटिका] सन का बगीचा।

सण पुं [स्वन] शब्द, आवाज।

सणंकुमार पुं [सनत्कुमार] एक-चक्रवर्ती राजा। तीसरा देवलोक। उसका इन्द्र। °वडिंसय पुंन [°ावतंसक] एक देव-विमान।

सणप्पय, सणप्फद, सणप्फय } देखो स-णप्पय = स-नखपद।

सणा अ [सना] सदा। °तण, °यण वि [°तन] शाश्वत।

सणाण न [स्नान] नहान, अवगाहन।

सणाह देखो स-णाह = स-नाथ।

सणाहि पुं [सनाभि] स्वजन, ज्ञाति। समान।

सणि पुं [शनि] शनैश्चर-ग्रह। शनिवार।

सणिअ पुं [दे] साक्षी। ग्राम्य।

सणिअं अ [शनैस्] धीरे।

सणिच्चर पुं [शनैश्चर] शनिग्रह। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष।

सणिचरि, सणिचारि } पुं [शनैश्चारिन्] युगलिक मनुष्यों की एक जाति।

सणिच्चर, सणिच्छर } देखो सणिच्चर।

सणिद्ध देखो सिणिद्ध।

सणिप्पवाय पुं [शनैःप्रपात] जीवों से भरी हुई पौद्गलिक वस्तु-विशेष।

सणेह पुं [स्नेह] प्रेम। घृत, तैल आदि स्निग्ध रस। चिकनाई।

सण्ण वि [सन्न] क्लान्त। अवसन्न, मग्न। खिन्न।

सण्णज्ज न [सान्नाय्य] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घृत आदि।

सण्णत्तिअ वि [दे] परितापित।

सण्णविअ वि [दे] चिन्तित। न. सांनिध्य, मदद के लिए समीप-गमन।

सण्णिअ वि [दे] आर्द्र।

सण्णिर देखो सन्निर।

सण्णुम देखो सन्नुम।

सण्णुमिअ वि [दे] संनिहित। मापित। अनु-नय-युक्त।

सण्णेज्झ पुं [दे] यक्ष-देवता।

सण्ह वि [श्लक्ष्ण] मसृण, चिकना। छोटा, बारीक। न. लोहा। पुं. वृक्ष-विशेष। °करणी स्त्री. पीसने की शिला। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मछली की एक जाति। °सण्हिआ स्त्री [°श्लक्ष्णिका] आठ उच्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिका का एक नाप।

सण्ह वि [सूक्ष्म] छोटा, बारीक। न. कैतव। अध्यात्म। अलंकार-विशेष। देखो सुहम, सुहुम।

सण्हाई स्त्री [दे] दूती।

सत देखो सय = शत। °क्कतु पुं [°क्रतु] इन्द्र। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] अस्त्र-विशेष। °दु स्त्री [°द्रु] एक महानदी। °भिसया स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष। °रिसभ पुं [ऋषभ] अहोरात्र का इक्कीसवाँ मुहूर्त। °वच्छ पुं [°वत्स] पक्षि-विशेष। °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

सत देखो सत्त = सप्तन्। °र त्रि [°दशन्] सतरह। °रसय न [°दशशत] एक सौ सतरह।

सतंत देखो स-तंत = स्व-तन्त्र।

सतत देखो सयय = सतत।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सतय देखो **सयय** = शतक ।

सतर न. दधि ।

सति देखो **सइ** = स्मृति ।

सती देखो **सई** = सती ।

सतीणा देखो **सईणा** ।

सतेरा स्त्री [शतेरा] विदिग् रुचक पर रहने वाली एक विद्युत्कुमारी देवी ।

सत्त वि [शक्त] समर्थ ।

सत्त वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, आक्रोश-प्राप्त ।

सत्त देखो **सच्च** = सत्य ।

सत्त वि [सक्त] आसक्त, गृद्ध ।

सत्त पुंन [सत्र] सदाव्रत । यज्ञ । °साला स्त्री [°शाला] सदाव्रत-स्थान, दान-क्षेत्र । °गार न [°गार] वही अर्थ ।

सत्त वि [दे] गत ।

सत्त पुंन [सत्त्व] प्राणी, जीव, चेतन । अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त । न. बल, पराक्रम । मानसिक उत्साह । विद्यमानता । सात दिनों का उपवास ।

सत्त वि [सप्तन्] सात । °खित्ती, °खेत्ती स्त्री [°क्षेत्री] जिन-चैत्य, जिन-बिम्ब, जैन आगम, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका—ये सात धन-व्यय-स्थान । °ग न [°क] सात का समुदाय । °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] ४७ वाँ । °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] ४७ । °च्छय पुं [°च्छद] सतवन का पेड़ । °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] सड़सठ । सड़सठ संख्यावाला । °ट्ठिधा अ [°षष्टिधा] सड़सठ प्रकार का । °णउइ देखो °ाणउइ । °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] ३७ वाँ । °तंतु पुं [°तन्तु] यज्ञ । °दस त्रि [°दशन्] १७ । °पण्ण देखो वण्ण । °भूम वि. । °भूमिय वि [°भूमिक] सात तलावाला प्रासाद । °म वि. ७ वाँ । स्त्री. °मा । °मासिअ वि [°मासिक] सात मास का । °मासिआ स्त्री [°मासिकी] सात मास में पूर्ण होनेवाली एक साधु-प्रतिज्ञा । °मिया, °मी स्त्री [°मिका, °मी] सातवीं । सातवीं विभक्ति । °य देखो °ग । °र वि [°त] ७० वाँ । °र त्रि [दशन्] सतरह । °रत्त पुं [°रात्र] सात रातदिन का समय । °रस त्रि [°दशन्] सतरह । °रस, °रसम वि [°दश] सतरहवाँ । °रह देखो °रस = °दशन् । °रि स्त्री [°ति] सत्तर । रिसि पुं [°ऋषि] सात नक्षत्रों का मंडल-विशेष । °वण्ण पुं [°पर्ण] वृक्ष-विशेष, सतौना । देव-विशेष । °वन्नवडिसय पुं [°पर्णावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान । °विह वि [°विध] सात प्रकार का । °वीसइ, °वीसा स्त्री [°विंशति] सताईस । °सइय वि [°शतिक] सात सौ की संख्यावाला । °सट्ठ वि [°षष्ट] सड़सठवाँ ।°सट्ठि देखो °ट्ठि ।°सत्तमिया स्त्री [°सप्तमिका] प्रतिज्ञा-विशेष, नियम-विशेष । °सिक्खावइय वि [°शिक्षाव्रतिक] सात शिक्षाव्रतवाला ।°हत्तर वि[°सप्तत]७७वाँ । °हत्तरि स्त्री[°सप्तति]७७ । सतहत्तर संख्यावाला । °हा अ [°धा] सप्तविध । °हुत्तरि देखो °हत्तरि । °ाईस (अप) देखो °ावीसा । °ाणउइ स्त्री [°नवति] ९७ । °ाणउय वि [°नवत] ९७वाँ । जिसमें सत्तानबे अधिक हो वह । °ारह(अप)देखो °रह । °ावण्ण,°ावन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] ५७ । सतावन संख्या वाला । स्त्री. °ण्णा । °ावन्न वि [°पञ्चाश] सतावनवाँ ।°ावीस न[°विंशति] । °ावीसइ स्त्री [°विंशति] सताईस । सताईस की संख्यावाला । °ावीसइम वि [°विंशतितम] सताईसवाँ । °ावीसइविह वि [°विंशतिविध] सताईस प्रकार का । °ावीसा स्त्री. देखो °ावीस । °ासीइ स्त्री [°ाशीति]८७ । °ासीइम वि [°ाशीतितम] ८७ वाँ ।

सत्तंग वि [सप्ताङ्ग] राजा, मन्त्री, मित्र, कोश-भंडार, देश, किला तथा सैन्य—ये सात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज्याङ्गवाला। न. हस्ति-शरीर के चार पैर, सूढ पुच्छ और लिंग।

सत्तण्ह देखो स-त्तण्ह = स-तृष्ण।

सत्तत्थ वि [दे] अभिजात, कुलीन।

सत्तम देखो सत्तम = सत्-तम।

सत्तर देखो सत्त-र = सप्त-दशन्, दश।

सत्तल न [सप्तल] पुष्प-विशेष।

सत्तला } स्त्री [सप्तला] नवमालिका का
सत्तली } गाछ।

सत्तल्ली स्त्री [दे. सप्तला] लता-विशेष, शेफालिका का गाछ।

सत्तवीसंजोयण देखो सत्तावीसंजोअण।

सत्ता स्त्री. सद्भाव, अस्तित्व। आत्मा के साथ लगे हुए कर्मों का अस्तित्व, कर्मों का स्वरूप से अप्रच्यव—अवस्थान।

सत्तावरी स्त्री [शतावरी] कन्द-विशेष।

सत्तावीसंजोअण पुं [दे] चन्द्र।

सत्ति स्त्री [दे] तिपाई। घड़ा रखने का पलंग की तरह ऊँचा काष्ठ-विशेष।

सत्ति स्त्री [शक्ति] अस्त्र-विशेष। त्रिशूल। सामर्थ्य। विद्या-विशेष। °म, °मंत वि [°मत्] शक्तिवाला।

सत्ति पुं [सप्ति] अश्व।

सत्तिअ वि [सात्त्विक] सत्त्व-युक्त।

सत्तिअणा स्त्री [दे] आभिजात्य, कुलीनता।

सत्तिवण्ण देखो सत्त-वण्ण।

सत्तु पुं [शत्रु] रिपु। °इ वि [°जित्] शत्रु को जीतनेवाला। पुं. एक राजा। °ग्घ वि [°घ्न] रिपु को मारनेवाला। °निहण [°निघ्न] पुं. रामचन्द्र का एक छोटा भाई। °मद्दण वि [°मर्दन] शत्रु का मर्दन करनेवाला। °सेण पुं [°सेन] एक अन्तकृद् मुनि। °हण देखो °ग्घ।

सत्तु } पुं [सक्तु] सत्तू, भूजे हुए यव
सत्तुअ } आदि का चूर्ण।

सत्तुंज न [शत्रुञ्ज] एक विद्याधर-नगर। पुं. रामचन्द्रजी का एक छोटा भाई, शत्रुघ्न।

सत्तुंजय पुं [शत्रुञ्जय] पालीताना के पास का पर्वत, जैनों का सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ। एक राजा।

सत्तुंदम पुं [शत्रुन्दम] एक राजा।

सत्तुग देखो सत्तुअ।

सत्तुत्तरि स्त्री [सप्तसप्तति] सतहत्तर।

सत्थ वि [शस्त] प्रशस्त, श्लाघनीय।

सत्थ न [शस्त्र] हथियार, प्रहरण। °कोस पुं [°कोश] शस्त्र—औजार रखने का थैला। °वज्झ वि [°वध्य] हथियार से मारने-योग्य। °ावाडण न [°ावपाटन] शस्त्र से चीरना।

सत्थ वि [दे] गत।

सत्थ देखो स-त्थ = स्व-स्थ।

सत्थ न [स्वास्थ्य] स्वस्थता।

सत्थ पुं [सार्थ] व्यापारी मुसाफिरों का समूह। प्राणि-समूह। वि. अन्वर्थ, यथार्थनामा। °वह, °वाह पुंस्त्री [°वाह]। °वाहिक पुं [°वाहिन्]। °ाह देखो °वाह। °ाहिव पुं [°ाधिप]। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] सार्थ का मुखिया, संघ-नायक।

सत्थ पुंन [शास्त्र] हितोपदेशक ग्रन्थ, तत्त्व-ग्रंथ। °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्र का जानकार। °गार वि [°कार] शास्त्र-प्रणेता। °त्थ पुं [°ार्थ] शास्त्र-रहस्य। °यार देखो °गार। °वि वि [°विद्] शास्त्र-ज्ञाता।

सत्थइअ वि [दे] उत्तेजित।

सत्थर पुं [दे] निकर, समूह।

सत्थर पुंन [स्रस्तर] शय्या, बिछौना।

सत्थव देखो संथव = संस्ताव।

सत्थाम देखो स-त्थाम = स-स्थामन्।

सत्थाव देखो संथव = संस्तव।

सत्थि अ. स्त्री [स्वस्ति] आशीर्वाद। कल्याण, मंगल। पुण्य आदि का स्वीकार। °मई स्त्री [°मती] विप्र क्षीरकदम्बक उपाध्याय की

स्त्री। एक नगरी। संनिवेश-विशेष। देखो सोत्थि।
सत्थिअ पुं [स्वस्तिक] मंगल के लिए की जाती एक प्रकार की चावल आदि की रचना-विशेष। स्वस्तिक के आकार का आसन-बन्ध। एक देव-विमान। °पुर न. एक नगर। देखो सोत्थिअ।
सत्थिअ वि [सार्थिक] सार्थ-सम्बन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि। पुं. सार्थ का मुखिया।
सत्थिअ न [सक्थिक] ऊरु, जांघ।
सत्थिआ स्त्री [शस्त्रिका] छुरी।
सत्थिग देखो सत्थिअ = स्वस्तिक।
सत्थिल्ल देखो सत्थिअ = सार्थिक।
सत्थु वि [शास्तृ] सीख देने-वाला।
सत्थुअ देखो संथुअ।
सदा देखो सआ = सदा।
सदावरी देखो सयावरी = सदावरी।
सदिस (शौ) देखो सरिस = सदृश।
सद्द अक [शब्दय्] आवाज करना। सक. आह्वान करना, बुलाना।
सद्द पुंन [शब्द] ध्वनि। पुं. नय-विशेष। छन्द-विशेष। नाम। प्रसिद्धि। °वेहि वि [°वेधिन्] शब्द के अनुसार निशाना मारनेवाला। °ावाइ पुं [°ापातिन्] एक वृत्त वैताढ्य पर्वत।
सद्दल न [शाद्वल] हरित, हरा घास।
सद्दलिय वि [शाद्वलित] हरा घासवाला प्रदेश।
सद्दह सक [श्रद् + धा] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना।
सद्दहा देखो सड्ढा = श्रद्धा।
सद्दहाण देखो सद्दह।
सद्दाइद (शौ) वि [शब्दायित] आहूत।
सद्दाण देखो संदाण।
सद्दाल वि [शब्दवत्] शब्दवाला।
सद्दाल न [दे] नूपुर। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक

जैन उपासक।
सद्दाव सक [शब्दय्, शब्दायय्] आह्वान करना, बुलाना।
सद्दिअ वि [शब्दित] प्रसिद्ध। आहूत। वार्तित, जिसको बात कही गई हो वह।
सद्दिअ वि [शाब्दिक] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता।
सद्दूल पुं [शार्दूल] श्वापद पशु की एक जाति, बाघ। छन्द-विशेष। °विक्कीडिअ न [°विक्रीडित] उन्नीस अक्षरों के पादवाला एक छन्द। °सट्ट पुंन [°साटक] छन्द-विशेष।
सद्ध देखो स-द्ध = सार्ध।
सद्ध न [श्राद्ध] पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण, पिण्ड-दानादि। वि. श्रद्धालु। देखो सड्ढ = श्राद्ध।
°पक्ख पुं [°पक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष।
सद्ध देखो सज्झ = साध्य।
सद्धड पुं [श्राद्ध] व्यक्ति-वाचक नाम।
सद्धरा स्त्री [स्रग्धरा] एक्कीस अक्षरों के चरणवाला एक छन्द।
सद्धल पुं. एक प्रकार का हथियार, कुन्त, बर्छा। देखो सब्बल।
सद्धस देखो सज्झस।
सद्धा देखो सड्ढा। °ल वि [°वत्]। °लु वि [°लु] श्रद्धावाला। स्त्री. °लुणी।
सद्धिअ वि [श्रद्धिक] श्रद्धावाला।
सद्धिं अ [सार्धम्] सहित, सार्थ।
सद्धेय वि [श्रद्धेय] श्रद्धास्पद।
सधम्म वि [सधर्मन्] समान धर्मवाला।
सधम्मिअ देखो स-धम्मिअ = सद्-धार्मिक।
सधम्मिणी स्त्री [सधर्मिणी] पत्नी।
सधवा देखो स-धवा = स-धवा।
सनय देखो स-नय = स-नय।
सन्नाण देखो स-न्नाण = सज्ज्ञान।
सन्नाम सक [आ + दृ] आदर करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्निअत्थ वि [दे] परिहित, पहना हुआ।
सन्निउ (अप) देखो सणिअं।
सन्निर न [दे] पत्र-शाक, भाजी।
सन्नुम सक [छादय्] आच्छादन करना।
सप देखो सव = शप्।
सपक्ख देखो स-पक्ख = स-पक्ष। स्व-पक्ष।
सपक्खिं अ [सपक्षम्] अभिमुख, सामने।
सपक्खी स्त्री [सपक्षी] एक महौषधि।
सपज्जा स्त्री [सपर्या] पूजा।
सपडिदिसिं अ [सप्रतिदिक्] अत्यन्त संमुख।
सपत्तिअ वि [सपत्रित] बाण से अतिव्यथित।
सपह देखो सवह।
सपाग देखो स-पाग = श्व-पाक।
सपिसल्लग देखो सप्पिसल्लग।
सप्प अक [सृप्] जाना, गमन करना, चलना, आक्रमण करना।
सप्प पुंस्त्री [सर्प] साँप। स्त्री. °प्पी। पुं. अश्लेषा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव। एक नरक-स्थान। छन्द-विशेष। °सिर पुं [°शिरस्] वह हाथ जिसकी उँगलियाँ और अंगूठा मिला हुआ हो और तला नीचा हो। °सुगंधा स्त्री [°सुगन्धा] वनस्पति-विशेष।
सप्प देखो सव = शप्।
सप्पभ देखो स-प्पभ = स्व-प्रभ, सत्-प्रभ, स-प्रभ।
सप्परिआव } देखो स-प्परिआव = सपरि-
सप्परिताव } ताप।
सप्पि न [सर्पिस्] घृत। °आसव, °यासव वि [°आस्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसका वचन घी की तरह मधुर होता है।
सप्पि वि [सर्पिन्] जानेवाला, गति करनेवाला। हाथ में लकड़ी के सहारे चल सकनेवाला रोगी-विशेष।
सप्पिसल्लग देखो स-प्पिसल्लग = स-पिशाचक।
सप्पी देखो सप्प = सर्प।
सप्पुरिस देखो स-प्पुरिस = सत्-पुरुष।
सप्फ न [शष्प] बाल-तृण, नया घास।
सप्फ न [दे] कुमुद, कैरव।
सप्फंद देखो स-प्फंद = स-स्पन्द।
सप्फल देखो स-प्फल = स-फल। सत्-फल।
सफर देखो सभर = शफर।
सफर पुंन [दे] मुसाफिरी।
सफल देखो स-फल = स-फल।
सफल सक [सफलय्] सार्थक करना। सफल करना।
सब (अप) देखो सव्व = सर्व।
सबर पुं [शबर] एक अनार्य देश। उस देश की अनार्य जाति, किरात, भील। °णिवसण न [°निवसन] तमालपत्र।
सबरी स्त्री [शबरी] भिल्ल जाति की स्त्री। कायोत्सर्ग का एक दोष, हाथ से गुह्य-प्रदेश को ढककर कायोत्सर्ग करना।
सबल पुं [शबल] परमाधार्मिक देवों की एक जाति। वि. कर्बुर, चितकबरा। न. दूषित चारित्र। वि. दूषित चारित्रवाला मुनि।
सबलीकरण न [शबलीकरण] सदोष करना, चारित्र को दूषित बनाना।
सब्ब (अप) देखो सव्व = सर्व।
सब्बल पुंन [दे] शस्त्र-विशेष।
सब्बल देखो स-ब्बल = स-बल।
सब्भ वि [सभ्य] सभासद। सभोचित, शिष्ट।
सब्भाव देखो स-ब्भाव = सद्-भाव।
सब्भाव देखो स-ब्भाव = स्व-भाव।
सब्भाविय वि [साद्भाविक] पारमार्थिक, वास्तविक।
सभ न. देखो सभा।
सभर पुंस्त्री [शफर] मत्स्य। स्त्री. °री।
सभर पुं [दे] गृध्र पक्षी।
सभराइअ न [शफरायित] जिसने मत्स्य की तरह आचरण किया हो वह।
सभल देखो स-भल = स-फल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभा स्त्री. परिषद् । गाड़ी के ऊपर की छत—ढक्कन ।
सभाज सक [सभाजय्] पूजन करना ।
सभाव देखो स-भाव = स्व-भाव ।
सम अक [शम्] शान्त होना, उपशान्त होना । नष्ट होना । आसक्त होना ।
सम सक [शमय्] उपशान्त करना, दबाना । नाश करना ।
सम पुं [श्रम] परिश्रम, आयास । खेद, थकावट । °जल न. पसीना ।
सम पुं [शम] शान्ति, क्रोध आदि का निग्रह ।
सम वि. समान । तटस्थ, राग-द्वेष से रहित । स. सब । पुंन. एक देव-विमान । सामायिक । आकाश । °चउरंस न [°चतुरस्र] संस्थान-विशेष, चारों कोणों के समान शरीर की आकृति-विशेष । °चक्कवाल न [°चक्रवाल] गोलाकार । °ताल न. कला-विशेष । वि. समान तालवाला । °धम्मिअ वि [°धर्मिक] समान धर्मवाला । °पादपुत पुंन. आसन-विशेष, जिसमें दोनों पैर मिलाकर जमीन में लगाए जाते हैं । °पासि वि [°दर्शिन्] समदर्शी । °प्पभ पुंन [°प्रभ] एक देव-विमान । °भाव पुं. समता । °या स्त्री [°ता] राग-द्वेष का अभाव, मध्यस्थता । °वत्ति पुं [°वर्तिन्] यमराज । °सरिस वि [°सदृश] अत्यन्त तुल्य, सदृश । °सहिय वि [°सहित] युक्त । °सुद्ध पुं [°शुद्ध] एक राजा, छठवें केशव का पिता ।
समइअ वि [सामयिक] समय-सम्बन्धी ।
समइअ वि [समयित] संकेतित ।
समइअ न [समयिक] सामायिक नामक संयम-विशेष ।
समइंछिअ देखो समइच्छिअ ।
समइक्कंत वि [समतिक्रान्त] व्यतीत ।
समइच्छ सक [समति + क्रम्] उल्लंघन करना । अक. गुजरना ।
समईअ वि [समतीत] गुजरा हुआ । पुं. भूत काल ।
समईअ देखो समइअ = समयिक ।
समउ } (अप) अ [समम्] साथ, सह ।
समं }
समंजस वि [समञ्जस] उचित । योग्य ।
समंत° देखो समंता ।
समंत देखो सामन्त ।
समंत (अप) देखो समत्थ = समस्त ।
समंतओ } अ [समन्ततस्] सर्वतः । चारों तरफ । अ [समन्तात्] ।
समंता }
समंतेण }
समक्कंत वि [समाक्रान्त] जिसपर आक्रमण किया गया हो वह । अवरुद्ध ।
समक्ख न [समक्ष] देखो समच्छ ।
समक्खाय } वि [समाख्यात] उक्त ।
समक्खिअ }
समगं देखो समयं = समकम् ।
समग्ग वि [समग्र] सकल । युक्त ।
समग्गल वि [समर्गल] अत्यधिक ।
समग्गल (अप) देखो समग्ग ।
समग्घ वि [समर्घ] सस्ता ।
समच्चण न [समर्चन] पूजन ।
समच्चिअ वि [समर्चित] पूजित ।
समच्छ अक [सम् + आस्] बैठना । सक. अवलम्बन करना । अधीन रखना ।
समच्छ वि [समक्ष] प्रत्यक्ष का विषय । न. नजर के सामने ।
समच्छायग वि [समाच्छादक] ढकनेवाला ।
समज्ज } सक [सम् + अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना ।
समज्जिण }
समज्झासिय वि [समध्यासित] अधिष्ठित ।
समट्ठ वि [समर्थ] संगत अर्थ, व्याजबी । शक्त, शक्तिमान् ।
समण न [शमन] उपशमन, शान्त करना । पथ्यानुष्ठान । एक दिन का उपवास । वि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपशमन करनेवाला ।
समण देखो स-मण = स-मनस् ।
समण देखो सवण = श्रवण ।
समण पुं. सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला, मुनि ।
समण पुं [श्रमण] भगवान् महावीर । पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ मुनि, साधु, यति, भिक्षु, संन्यासी, तापस । °सीह पुं [°सिंह] एक जैन मुनि जो दूसरे बलदेव के पूर्वभवीय गुरु थे । श्रेष्ठ मुनि । °ोवासग, °ोवासय पुंस्त्री [°ोपासक] श्रावक । स्त्री °सिया ।
समणंतरु (अप) न [समनन्तरम्] अनन्तर ।
समणक्ख देखो स-मणक्ख = स-मनस्क ।
समणुगच्छ, समणुगम सक [समनु + गम्] अनुसरण करना । अच्छी तरह व्याख्या करना । अक. सम्बद्ध होना ।
समणुगय वि [समनुगत] अनुसृत । अनुविद्ध, जुड़ा हुआ ।
समणुचिण्ण वि [समनुचीर्ण] आचरित, विहित ।
समणुजाण सक [समनु + ज्ञा] अनुमोदन करना । अधिकार प्रदान करना ।
समणुजाय वि [समनुजात] उत्पन्न, संजात ।
समणुनाय वि [समनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित ।
समणुन्न वि [समनुज्ञ] अनुमोदन-कर्ता ।
समणुन्न वि [समनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर । सुन्दर वेष आदिवाला । संविग्न, संवेग-युक्त मुनि । समान समाचारीवाला—सांभोगिक मुनि ।
समणुन्ना स्त्री [समनुज्ञा] अनुमति, अधिकार-प्रदान ।
समणुन्नाय देखो समणुनाय ।
समणुपत्त वि [समनुप्राप्त] सम्प्राप्त ।
समणुबद्ध वि [समनुबद्ध] निरन्तर व्याप्त ।
समणुभूअ वि [समनुभूत] अच्छी तरह जिसका अनुभव किया गया हो वह ।
समणुवत्त वि [समनुवृत्त] संवृत्त, संजात ।
समणुवास सक [समनु + वासय्] वासना-युक्त करना । सिद्ध करना । परिपालन करना ।
समणुसट्ठ वि [समनुशिष्ट] अनुज्ञात, अनुमत ।
समणुसास सक [समनु + शासय्] सम्यग् सीख देना, अच्छी तरह सिखाना ।
समणुसिट्ठ वि [समनुशिष्ट] अच्छी तरह शिक्षित । देखो समणुसट्ठ ।
समणुहो सक [समनु + भू] अनुभव करना ।
समण्णागय वि [समन्वागत] समन्वित, सहित । संप्राप्त ।
समण्णाहार पुं [समन्वाहार] समागमन ।
समण्णिय वि [समन्वित] युक्त, सहित ।
समतिक्कंत देखो समइक्कंत ।
समतुरंग सक [समतुरंगाय्] समान अश्व की तरह आपस में आरोहण करना, आश्लेष करना ।
समत्त वि [समस्त] सम्पूर्ण । सकल । समास-युक्त । मिलित ।
समत्त वि [समाप्त] पूर्ण, सिद्ध, हो चुका ।
समत्ति स्त्री [समाप्ति] पूर्णता ।
समत्थ सक [सम् + अर्थय्] साबित करना । पुष्ट करना । पूर्ण करना ।
समत्थ देखो समत्त = समस्त ।
समत्थ वि [समर्थ] देखो समट्ठ ।
समत्थि वि [समर्थिन्] प्रार्थक, चाहनेवाला ।
समद्धासिय वि [समाध्यासित] अधिष्ठित ।
समद्धि देखो समिद्धि ।
समन्नि सक [समनु + इ] अनुसरण करना । अक. एकत्रित होना ।
समन्ने° देखो समन्नि ।
समप्प सक [सम् + अर्पय्] अर्पण करना । दान करना, देना ।
समप्प° देखो समाव = सम् + आप् ।
समब्भस सक [समभि + अस्] अभ्यास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना।

समब्भहिअ वि [समभ्यधिक] अत्यन्त अधिक।

समब्भास पुं [समभ्यास] निकट, पास।

समब्भिडिय वि [दे] भिड़ा हुआ, लड़ा हुआ।

समभिआवण्ण वि [समभ्यापन्न] संमुख आया हुआ।

समभिजाण सक [समभि+ज्ञा] निर्णय करना। प्रतिज्ञा-निर्वाह करना।

समभिद्दव सक [समभि = द्रु] हैरान करना।

समभिधंस सक [समभि+ध्वंसय्] नष्ट करना।

समभिपड सक [समभि+पत्] आक्रमण करना।

समभिभूअ वि [समभिभूत] अत्यन्त पराभूत।

समभिरूढ पुं. नय-विशेष।

समभिलोअ सक [समभि+लोक्] देखना, निरीक्षण करना।

समय अक [सम्+अय्] समुदित होना, एकत्रित होना।

समय पुं. वक्त, अवसर। दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा सूक्ष्म काल। मत, दर्शन। सिद्धान्त, शास्त्र, आगम। पदार्थ, चीज। संकेत। समीचीन परिणति, सुन्दर परिणाम। आचार, रिवाज। एकवाक्यता। सामायिक, संयम-विशेष। °क्खेत्त, °खेत्त न [°क्षेत्र] कालोपलक्षित भूमि, मनुष्य-लोक। °ज्ज, °ण्ण वि [°ज्ञ] समय का जानकार।

समय देखो स-मय = स-मद।

समयं } अ [समकम्] युगपत्, एक साथ।
समयं } सह।

समया देखो सम-या।

समया अ. पास, नजदीक।

समर सक [स्मृ] याद करना।

समर देखो सबर। स्त्री. °री।

समर पुंन. युद्ध। छन्द-विशेष। लोहकार-शाला। °इच्च पुं [°आदित्य] अवन्ती-देश का एक राजा।

समर वि [स्मार] कामदेव-सम्बन्धी।

समरइत्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता।

समरसद्दहय पुं [दे] समान उम्रवाला।

समराइअ वि [दे] पिष्ट, पिसा हुआ।

समरेत्तु देखो समरइत्तु।

समलंकर } सक [समलम्+कृ]। सक
समलंकार } [समलम्+कारय्] विभूषित करना।

समलद्ध (अप) वि [समालब्ध] विलिप्त।

समल्लिअ अक [समा+ली] संबद्ध होना। लीन होना। सक. आश्रय करना।

समल्लीण वि [समालीन] अच्छी तरह लीन।

समवइण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण।

समवट्ठाण } न [समवस्थान] सम्यग् अव-
समवट्ठिइ } स्थिति। स्त्री [समवस्थिति]।

समवत्ति देखो सम-वत्ति = सम-वर्तिन्।

समवय° देखो समवे।

समवसर देखो समोसर = समव+सृ।

समवसेअ वि [समवसेय] जानने-योग्य।

समवाय पुं. गुण-गुणी आदि का सम्बन्ध। सम्बन्ध। समूह। एकत्र करना। जैन अंग-ग्रन्थ-विशेष, चौथा अंग-ग्रन्थ।

समवे अक [समव+इ] शामिल होना। सम्बद्ध होना।

समवेद (शौ) वि [समवेत] एकत्रित।

समसम अक [समसमाय्] 'सम्' 'सम्' आवाज करना।

समसरिस देखो सम-सरिस।

समसाण देखो मसाण।

समसीस वि [दे] सदृश। निर्भर। न. स्पर्धा।

समसीसिआ } स्त्री [दे] स्पर्धा।
समसीसी }

समस्सअ सक [समा+श्रि] आश्रय करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समस्सस अक [समा + श्वस्] सान्त्वना मिलना।

समस्ससिद (शौ) देखो समासत्थ।

समस्सा स्त्री [समस्या] बाकी का भाग जोड़ने के लिए दिया जाता श्लोक-चरण।

समस्सास सक [समा + श्वासय्] सान्त्वना करना। आश्वासन देना।

समस्सिअ वि [समाश्रित] आश्रित।

समहिअ वि [समधिक] विशेष ज्यादा।

समहिगय वि [समधिगत] प्राप्त। ज्ञात।

समहिट्ठ सक [समधि + स्था] काबू में रखना, अधीन रखना।

समहिट्ठाउ वि [समधिष्ठातृ] अध्यक्ष, मुखिया।

समहिट्ठिअ वि [समधिष्ठित] आश्रित।

समहिड्ढिय देखो स-महिड्ढिय = स-महर्द्धिक।

समहिणंदिय वि [समभिनन्दित] आनन्दित किया हुआ।

समहिल वि [समखिल] सकल, समस्त।

समहुत्त वि [दे] सम्मुख, अभिमुख।

समा स्त्री. वर्ष। समय।

समाअम देखो समागम।

समाइच्छ सक [समा + गम्] सामने आना। समादर करना, सत्कार करना।

समाइट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ।

समाइड्ढ वि [समाविद्ध] वेध किया हुआ।

समाइण्ण वि [समाकीर्ण] व्याप्त।

समाइण्ण वि [समाचीर्ण] अच्छी तरह आचरित।

समाउट्ट अक [समा + वृत्] होना, नम्र नमना, अधीन होना।

समाउट्ट वि [समावृत्] विनम्र।

समाउत्त वि [समायुक्त] युक्त। सहित।

समाउल वि [समाकुल] संमिश्र, मिश्रित। व्याप्त। आकुल, व्याकुल।

समाएस पुं [समादेश] आज्ञा। विवाह आदि के उपलक्ष्य में किए हुए जीमन में बचा हुआ वह खाद्य जिसको निर्ग्रन्थों में बाँटने का संकल्प किया गया हो।

समाओग पुं [समायोग] स्थिरता।

समाओसिय वि [समातोषित] सन्तुष्टीकृत।

समाकरिस सक [समा + कृष्] खींचना।

समाकार सक [समा + कारय्] आह्वान करना, बुलाना।

समागच्छ° देखो समागम = समा + गम्।

समागत देखो समागय।

समागम अक [समा + गम्] सामने आना। आगमन करना। सक. जानना।

समागम पुं [समा + गम] संयोग, सम्बन्ध। प्राप्ति।

समागय वि [समागत] आया हुआ।

समागूढ वि. समाश्लिष्ट, आलिंगित।

समाज पुं. समूह। देखो समाय = समाज।

समाजुत्त न [समायुक्त] संयोजन, जोड़ना।

समाढत्त वि [समारब्ध] आरब्ध। जिसने आरम्भ किया हो वह।

समाण सक [भुज्] भोजन करना।

समाण सक [सम् + आप्] समाप्त करना। पूरा करना।

समाण वि [समान] सदृश। मान-सहित, अहंकारी। पुंन. एक देव-विमान।

समाण वि [सत्] विद्यमान। स्त्री. °णी।

समाण देखो संमाण = सम्मान।

समाणअ वि [समापक] समाप्त करनेवाला।

समाणत्त वि [समाज्ञप्त] जिसको हुकुम दिया गया हो वह।

समाणिअ वि [समानीत] आनीत।

समाणिअ वि [दे] म्यान किया हुआ।

समाणिआ स्त्री [समानिका] छन्द-विशेष।

समाणी सक [समा + नी] ले आना।

समाणु (अप) देखो समं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समादह सक [समा+दह्] जलाना ।
समादा सक [समा + दा] ग्रहण करना ।
समादिट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ ।
समादिस सक [समा+दिश्] आज्ञा करना ।
समादेस देखो समाएस ।
समाधारणया स्त्री [समाधारणा] समान भाव से स्थापन ।
समाधि देखो समाहि ।
समापणा स्त्री [समापना] समाप्ति ।
समाभरिअ वि [समाभरित] आभरण-युक्त ।
समाय पुं [समाज] सभा, परिषत् । पशु-भिन्न अन्यों का समूह, संघात । हाथी ।
समाय पुं. सामायिक, संयम-विशेष ।
समाय देखो समवाय ।
समायं देखो समयं ।
समायण्ण सक [समा + कर्णय्] सुनना ।
समायय सक [समा + दद्] ग्रहण करना ।
समायय देखो समागय ।
समायर सक [समा + चर्] आचरण करना ।
समाया देखो समादा ।
समायाय वि [समायात] समागत ।
समायार पुं [समाचार] आचरण । सदाचार । वि. आचरण करनेवाला ।
समार सक [समा + रचय्] दुरुस्त करना । करना, बनाना ।
समार सक [समा + रभ्] प्रारंभ करना ।
समार वि [समारचित] बनाया हुआ ।
समारंभ सक [समा + रभ्] प्रारम्भ करना । हिंसा करना । पर-परिताप देना । हिंसा । प्रारंभ ।
समारचण } न [समारचन] दुरुस्त
समारण } करना । वि. विधायक, कर्ता ।
समारद्ध देखो समाढत्त ।
समारभ } देखो समारंभ = समा + रभ् ।
समारह }
समारिय वि [समारचित] । देखो समार ।
समारुह अक [समा + रुह्] आरोहण करना ।
समारूढ वि [समारूढ] चढ़ा हुआ ।
समारोव सक [समा + रोपय्] चढ़ाना ।
समालंकार } देखो समलंकार = समलं +
समालंके } कारय् ।
समालंब पुं [समालम्ब] आलम्बन, सहारा ।
समालंभण न [समालम्भन] अलंकरण, विभूषा करना । देखो समालभण ।
समालत्त वि [समालपित] उक्त, कथित ।
समालभण न [समालभन] विलेपन । देखो समालंभण ।
समालव सक [समा + लप्] विस्तार से कहना ।
समालवणी स्त्री [समालपनी] वाद्य-विशेष ।
समालह सक [समा + लभ्] विलेपन करना । विभूषा करना, अलंकार पहनना ।
समालाव पुं [समालाप] बातचीत, संभाषण ।
समालिंगिय } वि [समालिङ्गित] आलि-
समालीढ } गित । वि [समाश्लिष्ट] ।
समालोच पुं. विचार, विमर्श ।
समालोयण न [समालोचन] सामान्य अर्थ का दर्शन ।
समाव सक [सम् + आप्] पूरा करना ।
समावज्जिय वि [समावर्जित] प्रसन्न किया हुआ ।
समावड अक [समा+पत्] संमुख आकर पड़ना । लगना । सम्बन्ध करना ।
समावडिय वि [समापतित] संमुख आकर गिरा हुआ । बद्ध । जो होने लगा हो वह ।
समावण्ण वि [समापन्न] संप्राप्त ।
समावत्ति स्त्री [समावाप्ति] समाप्ति, पूर्णता ।
समावद सक [समा + वद्] बोलना, कहना ।
समावय देखो समावद ।
समावय देखो समावड ।
समास अक [सम्+आस्] बैठना । रहना । बैठाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समास सक [समा+अस्] अच्छी तरह फेंकना ।

समास पुं. संक्षेप, संकोच । सामायिक, संयम-विशेष । व्याकरण-प्रसिद्ध अनेक पदों के मेल करने की रीति । समीप ।

समासंग पुं [समासङ्ग] संयोग ।

समासंगय वि [समासंगत] संगत, सम्बद्ध ।

समासज्ज देखो समासाद का संकृ. ।

समासत्थ वि [समाश्वस्त] आश्वासन-प्राप्त । स्वस्थ बना हुआ ।

समासय पुं [समाश्रय] आश्रय, स्थान ।

समासव सक [समा + स्रु] आना ।

समासस देखो समस्सस ।

समासाद (शौ) सक [समा + सादय्] प्राप्त करना ।

समासासिय वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह ।

समासि सक [समा + श्रि] सम्यग् आश्रय करना ।

समासिज्ज देखो समासाद का संकृ. ।

समासिय वि [समाश्रित] आश्रय-प्राप्त ।

समासीण वि [समासीन] बैठा हुआ ।

समाहट्टु = समाहर का संकृ. ।

समाहड वि [समाहृत] विशुद्ध । निर्मल । स्वीकृत ।

समाहय वि [समाहत] आघात-प्राप्त, आहत ।

समाहर सक [समा + हृ] ग्रहण करना । एकत्रित करना ।

समाहविअ वि [समाहूत] बुलाया हुआ ।

समाहाण न [समाधान] समाधि । औत्सुक्य-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति ।

समाहार पुं. समूह । °दंद पुं [°द्वन्द्व] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष ।

समाहारा स्त्री. दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । पक्ष की बारहवीं रात्रि ।

समाहि पुंस्त्री [समाधि] चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव । स्वस्थता । धर्म । शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था । समता, राग आदि का अभाव । श्रुतज्ञान । चारित्र, संयमानुष्ठान । पुं. भरत-क्षेत्र के सत्तरहवें भावी तीर्थंकर । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष । °पाण न [°पान] शक्कर आदि का पानी । °मरण न. समाधि-युक्त मौत ।

समाहिअ वि [समाहित] समाधि-युक्त । अच्छी तरह व्यवस्थापित । उपशमित । समर्पित । शोभन, सुन्दर । अबीभत्स । निर्दोष ।

समाहिअ वि [समाहृत] गृहीत ।

समाहिअ वि [समाख्यात] सम्यग्-कथित ।

समाहुत्त } (अप) । वि [समाहूत] बुलाया
समाहूअ } हुआ, आकारित ।

समाहे सक [समा + धा] स्वस्थ करना ।

समि स्त्री [शमि] देखो समी ।

समि } वि [शमिन्, °क] शम-युक्त । पुं.
समिअ } साधु, मुनि ।

समिअ देखो संत = शान्त ।

समिअ वि [समित] सम्यक् प्रवृत्ति करनेवाला । राग-आदि से रहित । उपपन्न । सम्यग्-गत । सन्तत । सम्यग्-व्यवस्थित ।

समिअ वि [सम्यञ्च्] सम्यक् प्रवृत्तिवाला । अच्छा । शोभन, समीचीन ।

समिअ वि [श्रमित] श्रम-युक्त ।

समिअ वि [समिक] सम, राग-द्वेष-रहित ।

समिअ न [साम्य] समता, रागादि का अभाव ।

समिअ वि [संमित] प्रमाणोपेत ।

समिअ वि [सामित] गेहूँ के आटा का बना हुआ पक्वान्न-विशेष, मण्डक ।

समिअ अ [सम्यग्] अच्छी तरह ।

समिआ स्त्री [समिता] गेहूँ का आटा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समिआ स्त्री [समिका, शमिका, शमिता] चमर आदि इन्द्रों की अभ्यन्तर परिषद् ।
समिइ स्त्री [समिति] उपयोग-पूर्वक गमन-भाषण आदि क्रिया । सभा, परिषद् । युद्ध । निरन्तर मिलन ।
समिइ स्त्री [स्मृति] स्मरण । शास्त्र-विशेष, मनुस्मृति आदि ।
समिइम वि [समितिम] गेहूँ के आटे की बनी हुई मंडक आदि वस्तु ।
समिंजग पुं [समिञ्जक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।
समिक्ख सक [सम + ईक्ष्] आलोचना करना, गुणदोष-विचार करना । चिन्तन करना । निरीक्षण करना ।
समिच्च देखो समे ।
समिच्छण न [समीक्षण] समीक्षा ।
समिच्छिअ देखो समिक्खिअ ।
समिज्झा अक [सम् + इन्ध्] चारों तरफ से चमकना ।
समिता देखो समिआ = समिका ।
समिद्ध वि [समृद्ध] अतिशत सम्पत्तिवाला । बढ़ा हुआ ।
समिद्धि स्त्री [समृद्धि] अतिशय सम्पत्ति । वृद्धि । °ल वि. समृद्धिवाला ।
समिर पुं. पवन, वायु ।
समिरिईअ } देखो स-मिरिईअ = समरीचिक ।
समिरीय }
समिला स्त्री [शमिला, सम्या] युग-कीलक, गाड़ी की धोंसरी में दोनों ओर डाला जाता लकड़ी का खील ।
समिल्ल देखो संमिल्ल ।
समिहा स्त्री [समिध्] काष्ठ, लकड़ी ।
समी स्त्री [शमी] छोंकर का पेड़ । शिंबा, छिमी, फली । °खल्लय न [दे] छोंकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट ।
समीअ देखो समीव ।

समीकय वि [समीकृत] समान किया हुआ ।
समीचीण वि [समीचीन] साधु, सुन्दर ।
समीर अक [सम् + ईरय्] प्रेरणा करना ।
समीर पुं. पवन, वायु ।
समील देखो संमील ।
समीव वि [समीप] निकट ।
समीह सक [सम + ईह्] वांछा करना ।
समीहा स्त्री. इच्छा ।
समीहिय देखो समिक्खिअ ।
समुआचार पुं[समुदाचार]समीचीन आचरण ।
समुइअ वि [समुचित] योग्य ।
समुइअ वि [समुदित] परिवृत । एकत्रित ।
समुइन्न वि [समुदीर्ण] उदय-प्राप्त ।
समुईर देखो समुदीर ।
समुक्कस देखो समुक्करिस ।
समुक्कत्तिय वि [समुत्कर्तित] काटा हुआ ।
समुक्करिस [समुत्कर्ष] अतिशय उत्कर्ष ।
समुक्कस सक [समुत् + कृष्] उत्कृष्ट बनाना । अक. गर्व करना ।
समुक्किट्ठ वि [समुत्कृष्ट] उत्कृष्ट ।
समुक्कित्तण न [समुत्कीर्तन] उच्चारण ।
समुक्खअ वि [समुत्खात] उखाड़ा हुआ ।
समुक्खण सक [समुत् + खन्] उखाड़ना ।
समुक्खित्त वि [समुत्क्षिप्त] उठा कर फेंका हुआ ।
समुक्खिव सक [समुत् + क्षिप्] उठा कर फेंकना ।
समुग्ग पुं [समुद्ग] डिब्बा, संपुट । पक्षि-विशेष ।
समुग्गद (शौ) वि [समुद्गत] समुद्भूत ।
समुग्गम पुं [समुद्गम] समुद्भव ।
समुग्गिअ वि [दे] प्रतीक्षित ।
समुग्गिण्ण वि [समुद्गीर्ण] उगामा हुआ । उत्तोलित, ऊपर उठाया हुआ ।
समुग्गिर सक [समुद् + गॄ] ऊपर उठाना । उगाना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुग्घडिअ वि [समुद्घाटित] खुला हुआ।
समुग्घाइअ वि [समुद्घातित] विनाशित।
समुग्घाय पुं [समुद्घात] कर्म-निर्जरा-विशेष, जिस समय आत्मा वेदना, कषाय आदि से परिणत होता है उस समय वह अपने प्रदेशों से वेदनीय, कषाय आदि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जरा—विनाश करता है वह; ये समुद्घात सात हैं—वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवलिक।
समुग्घायण न [समुद्घातन] विनाश।
समुग्घुट्ठ वि [समुद्घोषित] उद्घोषित।
समुघाय देखो समुग्घाय।
समुच्चय पुं. विशिष्ट राशि, ढग, समूह।
समुच्चर सक [समुत्+चर्] उच्चारण करना, बोलना।
समुच्चलिअ वि [समुच्चलित] चला हुआ।
समुच्चिण सक [समुत्+चि] इकट्ठा करना।
समुच्चिय वि [समुच्चित] एक क्रिया आदि में अन्वित।
समुच्छ सक [समुत्+छिद्] उन्मूलन करना, उखाड़ना। दूर करना।
समुच्छइय वि [समवच्छादित] सतत आच्छादित।
समुच्छणी स्त्री [दे] संमार्जनी।
समुच्छल अक [समुत्+शल्] उछलना, ऊपर उठना। विस्तीर्ण होना।
समुच्छारण न [समुत्सारण] दूर करना।
समुच्छिअ वि [दे] तोषित। समारचित। न. अंजलि-करण, नमन।
समुच्छिद (शौ) वि [समुच्छ्रित] अतिउन्नत।
समुच्छिन्न वि. क्षीण, विनष्ट।
समुच्छुंगिय वि [समुच्छृङ्गित] टोच पर चढ़ा हुआ।
समुच्छुग वि [समुत्सुक] अति-उत्कण्ठित।
समुच्छेद } पुं [समुच्छेद] सर्वथा विनाश।
समुच्छेय } °वाइ वि [°वादिन्] पदार्थ को प्रतिक्षण सर्वथा विनश्वर माननेवाला।
समुज्जम अक [समुद्+यम्] प्रयत्न करना।
समुज्जम पुं [समुद्यम] समीचीन उद्यम। वि. समीचीन उद्यमवाला।
समुज्जल वि [समुज्ज्वल] अत्यन्त उज्ज्वल।
समुज्जाय वि [समुद्यात] निर्गत। ऊँचा गया हुआ।
समुज्जोअ अक [समुद्+द्युत्] चमकना, प्रकाशना।
समुज्जोअ पुं [समुद्द्योत] प्रकाश, दीप्ति।
समुज्जोवय सक [समुद्+द्योतय्] प्रकाशित करना।
समुज्झ सक [सम्+उज्झ्] त्याग करना।
समुट्ठा अक [समुत्+स्था] उठना। प्रयत्न करना। उत्पन्न होना। सक. ग्रहण करना।
समुट्ठाइ वि [समुत्थायिन्] सम्यग् यत्न करनेवाला।
समुट्ठाइअ देखो समुट्ठिअ।
समुट्ठाण न [समुपस्थान] फिर से वास करना। °सुय न [°श्रुत]जैन शास्त्र-विशेष।
समुट्ठाण न [समुत्थान] सम्यग् उत्थान। निमित्त, कारण। देखो समुत्थाण।
समुट्ठिअ वि [समुत्थित] सम्यक् प्रयत्न-शील। उपस्थित। प्राप्त। जो खड़ा हुआ हो वह। अनुष्ठित, विहित। उत्पन्न। आश्रित।
समुड्डीण वि [समुड्डीन] उड़ा हुआ।
समुण्णइय देखो समुत्तइय।
समुत्त न [संमुक्त] गोत्र-विशेष। पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न। देखो संमुत्त।
समुत्तइय वि [दे] गर्वित।
समुत्तर सक [समुत्+तॄ] पार जाना। अक. नीचे उतरना। अवतीर्ण होना।
समुत्ताराविय वि [समुत्तारित]पार पहुँचाया हुआ। कूप आदि से बाहर निकाला हुआ।
समुत्तास सक [समुत्+त्रासय्] अतिशय भय उपजाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुत्तिण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण।
समुत्तुंग वि [समुत्तुङ्ग] अति ऊँचा।
समुत्तुण वि [दे] गर्वित।
समुत्थ वि उत्पन्न।
समुत्थय सक [समुत् + स्थगय्] ढकना।
समुत्थय वि [समवस्तृत] आच्छादित।
समुत्थल्ल वि [समुच्छलित] उछला हुआ।
समुत्थाण न [समुत्थान] देखो समुट्ठाण।
समुत्थिय देखो समुट्ठिअ।
समुदय पुं. समुदाय, संहति। समुन्नति, अभ्युदय।
समुदाआर } देखो समुआचार।
समुदाचार }
समुदाण न [समुदान] भिक्षा। भिक्षा-समूह। प्रयोग-गृहीत कर्मों को प्रकृति-स्थित्यादि-रूप से व्यवस्थित करनेवाली क्रिया-विशेष। समुदाय। °चर वि. भिक्षा की खोज करनेवाला।
समुदाण सक [समुदानय्] भिक्षा के लिए भ्रमण करना।
समुदाणिअ देखो सामुदाणिय।
समुदाणिया स्त्री [सामुदानिकी] क्रिया-विशेष। समुदान-क्रिया।
समुदाय पुं. समूह।
समुदाहिय वि [समुदाहृत] प्रतिपादित, कथित।
समुदिअ देखो समुइअ = समुदित।
समुदिण्ण देखो समुइन्न।
समुदीर सक [समुद् + ईरय्] प्रेरणा करना। कर्मों को खींच कर उदय में लाना, उदीरणा करना।
समुद्द पुं [समुद्र] सागर। अन्धकवृष्णि का ज्येष्ठ पुत्र। आठवें बलदेव और वासुदेव के पूर्वजन्म के धर्म-गुरु। वेलन्धर नगर का एक राजा। शाण्डिल्य मुनि के शिष्य एक जैन मुनि। वि. मुद्रा-सहित। °दत्त पुं. चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम। एक मच्छीमार। [°दत्ता] स्त्री. हरिषेण वासुदेव की एक पत्नी। समुद्रदत्तमच्छीमार की भार्या। °लिक्खा स्त्री [°लिक्षा] द्वीन्द्रिय जंतु की एक जाति। °विजयी पुं. चौथे चक्रवर्ती राजा का पिता। भगवान् अरिष्टनेमि का पिता। °सुआ स्त्री [°सुता] लक्ष्मी। देखो समुद्र।
समुद्दणवणीअ न [दे. समुद्रनवनीत] अमृत, सुधा। चन्द्रमा।
समुद्दव सक [समुद् = द्रावय्] भयंकर उपद्रव करना। मार डालना।
समुद्दहर न [दे] पानीय-गृह, पानी-घर।
समुद्दाम वि. अतिउद्दाम, प्रखर।
समुद्दिस सक [समुद् + दिश्] पाठ को स्थिर-परिचित करने के लिए उपदेश देना। व्याख्या करना। प्रतिज्ञा करना। आश्रय लेना। अधिकार करना।
समुद्देस पुं [समुद्देश] पाठ को स्थिर-परिचित करने का उपदेश। व्याख्या, सूत्र के अर्थ का अध्यापन। ग्रन्थ का एक विभाग, अध्ययन, प्रकरण, परिच्छेद। भोजन।
समुद्देस वि [सामुद्देश] देखो समुद्देसिय।
समुद्देसिय वि [समुद्देशिक] समुद्देश-सम्बन्धी। विवाह आदि के उपलक्ष्य में किये गये जीमन में बचे हुए वे खाद्य पदार्थ जिनको सब साधु-संन्यासियों में बाँट देने का संकल्प किया गया हो।
समुद्धर सक [समुद् + हृ] मुक्त करना। जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। उद्धार करना।
समुद्धाइअ वि [समुद्धावित] समुत्थित।
समुद्धाय अक [समुद् + धाव्] उठना।
समुद्धिअ देखो समुद्धरिअ।
समुद्धुर वि. दृढ़, मजबूत।
समुद्धुसिअ वि [समुद्धुषित] पुलकित।
समुद्र पुं [समुद्र] एक देव-विमान। देखो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुद्द।

समुन्नइ स्त्री [समुन्नति] अभ्युदय।

समुन्नद्ध वि [समुन्नद्ध] संनद्ध, सज्ज।

समुन्नय वि [समुन्नत] अति ऊँचा।

समुपेह सक [समुत्प्र + ईक्ष्] अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। पर्यालोचन करना, विचार करना।

समुप्पज्ज अक [समुत् + पद्] उत्पन्न होना।

समुप्पण्ण वि [समुत्पन्न] उत्पन्न।

समुप्पयण न [समुत्पतन] ऊँचा जाना, उड्डयन।

समुप्पाअअ वि [समुत्पादक] उत्पत्तिकर्ता।

समुप्पाड सक [समुत् + पादय्] उत्पन्न करना।

समुप्पाय पुं [समुत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव।

समुप्पिजल न [दे] अयश। रज, धूलि।

समुप्पित्थ वि [दे] उत्त्रस्त, भय-भीत।

समुप्पेक्ख } समुपेह। देखो समुवेक्ख।
समुप्पेह }

समुप्फालय वि [समुत्पाटक] उठाकर लानेवाला।

समुप्फालिय वि [समुत्फालित] आस्फालित।

समुप्फुंद सक [समा + क्रम्] आक्रमण करना।

समुप्फोडण न [समुत्स्फोटन] आस्फालन।

समुब्भड वि [समुद्भट] प्रचंड।

समुब्भव अक [समुद् + भू] उत्पन्न होना।

समुब्भिय वि [समूर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ।

समुब्भुय } (अप) वि [समुद्भूत] उत्पन्न।
समुब्भूअ }

समुयाण देखो समुदाण।

समुयाय देखो समुदाय।

समुल्लव सक [समुत् + लप्] बोलना, कहना।

समुल्लस अक [समुत् + लस्] उल्लसित होना, विकसना।

समुल्लालिय वि [समुल्लालित] उछाला हुआ।

समुल्लाव पुं [समुल्लाप] आलाप, संभाषण।

समुल्लास पुं. विकास।

समुवइट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ।

समुवउत्त वि [समुपयुक्त] उपयोग-युक्त, सावधान।

समुवगय वि [समुपगत] समीप आया हुआ।

समुवज्जिय वि [समुपार्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ।

समुवत्थिय वि [समुपस्थित] हाजिर।

समुवयंत देखो समुवे।

समुवविट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ।

समुवसंपन्न वि [समुपसंपन्न] समीप में समागत।

समुवहसिअ वि [समुपहसित] जिसका खूब उपहास किया गया हो।

समुवागय वि [समुपागत] समीप में आगत।

समुवे अक [समुपा + इ] पास में आना। सक. प्राप्त करना।

समुवेक्ख } सक [समुत्प्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना। व्यवहार करना, काम में लाना।
समुवेह }

समुव्वत्त वि [समुद्वृत्त] ऊँचा किया हुआ।

समुव्वत्तिय वि [समुद्वर्तित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ।

समुव्वह सक [समुद् + वह्] धारण करना। ढोना।

समुव्विग्ग वि [समुद्विग्न] अत्यन्त उद्वेगवाला।

समुव्वूढ वि [समुद्व्यूढ] विवाहित। उत्तानित, ऊँचा किया हुआ।

समुव्वेल्ल वि [समुद्वेल्लित] अत्यन्त कँपाया हुआ, संचालित।

समुसरण देखो समोसरण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुस्सय पुं [समुच्छ्रय] ऊँचाई। उन्नति, उत्तमता। कर्मों का उपचय। संघात, समूह, राशि, ढग।

समुस्सविय वि [समुच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ।

समुस्सस वि [समुच्छ्वस्] देखो समूसस।

समुस्सिअ वि [समुच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित।

समुस्सिणा सक [समुत् + श्रु] निर्माण करना, बनाना। संस्कार करना, सँवारना, जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना।

समुस्सुग } देखो समूसुअ।
समुस्सुय }

समुह देखो संमुह।

समुहय वि [समुद्धत] समुद्घात-प्राप्त।

समुहि देखो स-मुहि = श्व-मुखि।

समूसण न [समूषण] त्रिकटुक– सूँठ, पीपल तथा मरिच।

समूसवय देखो समुस्सविय।

समूसस अक [समुत् + श्वस्] ऊँचा जाना। उल्लसित होना। ऊर्ध्व श्वास लेना।

समूससिअ न [समुच्छ्वसित] निःश्वास।

समूसिअ देखो समुस्सिअ।

समूसुअ वि [समुत्सुक] अति उत्कंठित।

समूह पुंन. समुदाय, राशि, संघात।

समूह (अप) देखो समुह।

समे सक [समा + इ] जानना। प्राप्त करना। अक. संहत होना, इकट्ठा होना। आगमन करना, सम्मुख आना।

समेअ } वि [समेत] समागत, समायात। युक्त।
समेत }

समेर देखो स-मेर स मर्याद।

समोअर अक [समव + तृ] समाना, अन्तर्भाव होना। नीचे उतरना। जन्म-ग्रहण करना।

समोआर पुं [समवतार] अन्तर्भाव।

समोइन्न वि [समवतीर्ण] नीचे उतरा हुआ।

समोगाढ वि [समवगाढ] सम्यग् अवगाढ।

समोच्छइअ वि [समवच्छादित] आच्छादित। अतिशय ढका हुआ।

समोणम अक [समव + नम्] सम्यग् नमना—नीचा होना।

समोणय वि [समवनत] अति नमा हुआ।

समोत्थइअ } वि [समवस्थगित] आच्छादित। [समवस्तृत]।
समोत्थय }

समोत्थर सक [समव + स्तृ] आच्छादन करना, ढकना। आक्रमण करना।

समोयार पुं [समवतार] अन्तर्भाव, समावेश।

समोलइय वि [दे] समुत्क्षिप्त।

समोलुग्ग वि [समवरुग्ण] रोगी।

समोवअ अक [समव + पत्] सामने आना। नीचे उतरना।

समोसड्ढ } वि [समवसृत] समागत, पधारा हुआ।
समोसढ }

समोसर अक [समव + सृ] पधारना, आगमन करना। नीचे गिरना।

समोसर अक [समप + सृ] पीछे हटना। पलायन करना।

समोसरण पुंन [समवसरण] एकत्र मिलन, मेला। समुदाय, समवाय। साधु-समुदाय। जहाँ पर उत्सव आदि के प्रसंग में अनेक साधु लोग इकट्ठे होते हों वह स्थान। परतीर्थिकों या जैनेतर दार्शनिकों का समवाय। धर्म या आगम-विचार। 'सूत्रकृताङ्ग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कन्ध का बारहवाँ अध्ययन। पधारना, आगमन। जिन-भगवान् उपदेश देते हैं वह स्थान। °तव पुं [°तपस्] तप-विशेष।

समोसव सक [दे] टुकड़ा-टुकड़ा करना।

समोसिअ अक [समव + सद्] क्षीण होना, नाश पाना।

समोसिअ पुं [दे] पड़ोसी। प्रदोष। वि. वध्य।

समोहण सक [समुद् + हन्] समुद्घात करना, आत्म-प्रदेशों को बाहर निकाल कर उनसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्म-निर्जरा करना ।

समोहय वि [समुद्धत] जिसने समुद्घात किया हो वह ।

समोहय वि [समवहत] आघात-प्राप्त ।

सम्म अक [श्रम्] खेद पाना । थकना ।

सम्म अक [शम्] शान्त या ठण्ढा होना ।

सम्म न [शर्मन्] सुख ।

सम्म वि [सम्यञ्च्] सत्य । अविपरीत । प्रशंसनीय । शोभन । संगत, उचित । न. सम्यग्-दर्शन । °त्त न [°त्व] समकित, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा । सत्य, परमार्थ । °दिट्ठिय, °दिट्ठीय वि [°दृष्टिक] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला । °द्दंसण न [°दर्शन] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा । °दिट्ठि वि [°दृष्टि] देखो °दिट्ठिय । °न्नाण न [°ज्ञान] सत्य ज्ञान । °सुय न [°श्रुत] सत्य शास्त्र । सत्य शास्त्र-ज्ञान । °मिच्छदिट्ठि वि [°मिथ्यादृष्टि] मिश्र दृष्टिवाला, सत्य और असत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला । °वाय पुं [°वाद]अविरुद्ध वाद । दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ । सामायिक ।

सम्मइ देखो सम्मुइ = सन्मति, स्वमति ।

सम्मइग देखो सामाइय ।

सम्मं अ [सम्यग्] अच्छी तरह ।

सम्मुइ स्त्री [सन्मति] संगत मति । विशद बुद्धि । पुं. एक कुलकर पुरुष ।

सम्मुइ स्त्री [स्वमति] स्वकीय बुद्धि ।

सम्हरिअ वि [संस्मृत] अच्छी तरह याद किया हुआ ।

सय अक [शी, स्वप्] सोना ।

सय अक [स्वद्] पचना, माफिक आना ।

सय अक [स्रु] झरना, टपकना ।

सय सक [श्रि] सेवा करना ।

सय देखो स = सत् ।

सय देखो स = स्व ।

सय देखो सग = सप्तन् । °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर ।

सय अ [सदा] हमेशा । °काल न. हमेशा ।

सय पुंन [शत] संख्या-विशेष, १०० । सौ की संख्यावाला । बहुत । अध्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण, ग्रन्थांश-विशेष । °कंत न [°कान्त] रत्न-विशेष । वि. शतकान्त रत्नों से बना हुआ । °कित्ति पुं [°कीर्ति] एक भावी जिन-देव । °गुणिअ वि[°गुणित] सौगुना । °ग्घी स्त्री [°घ्नी] यन्त्र-विशेष, पाषाण-शिला-विशेष । चक्की, जाँता । °ज्जल न [°ज्वल] वरुण का विमान । देखो सयंजल । रत्न की एक जाति । वि. शतज्वल-रत्नों का बना हुआ । पुंन. विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर । °दुवार न [°द्वार] एक नगर । °धणु पुं [°धनुष्] ऐरवत वर्ष में होनेवाला एक कुलकर पुरुष । भारतवर्ष में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष । °पई स्त्री [°पदी] क्षुद्र जन्तु की एक जाति । °पत्त देखो °वत्त । °पाग न [°पाक] एक सौ औषधिओं से बनता उत्तम तेल । °पुप्फा स्त्री [°पुष्पा] सोया का गाछ । °पोर न [°पर्वन्] इक्षु । °बाहु पुं. एक राजर्षि । °भिसया, °भिसा स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष । °यम वि [°तम] सौवाँ । °रह पुं [°रथ] एक कुलकर पुरुष । °रिसह पुं [°वृषभ] अहोरात्र का तेईसवाँ मुहूर्त । °वई देखो °पई । °वत्त न [°पत्र] पद्म, कमल । सौ पत्तोंवाला कमल । पुं. पक्षि-विशेष, जिसका दक्षिण दिशा में बोलना अपशुकन माना जाता है । °सहस्स पुंन [°सहस्र] लाख । °सहस्सइम वि [°सहस्रतम] लाखवाँ । °साहस्स वि [°साहस्र] लाख-संख्या का परिमाणवाला । लाख रुपया मूल्यवाला । °साहस्सि वि [°सहस्रिन्] लखपति । °साहस्सिय वि[°साहस्रिक]देखो°साहस्स । °साहस्सी स्त्री[°सहस्री] लाख ।°सिक्कर वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°शर्कर] शत खंडवाला। °हा अ [°धा] सौ प्रकार से, सौ टुकड़ा हो ऐसा। °हुत्तं अ [°कृत्वस्] सौ बार। °ाउ पुं [°ायुष्] एक कुलकर पुरुष। मदिरा-विशेष। °ाणिय, °ाणीअ पुं [°ानीक] एक राजा।

सय° देखो सयं = स्वयं।

सयं देखो सइं = सकृत्।

सयं अ [स्वयम्] खुद। °कड वि [°कृत] खुद किया हुआ। °गाह पुं [ग्राह°] जबरदस्ती ग्रहण करना। विवाह-विशेष। वि. स्वयं ग्रहण करनेवाला। °पभ पुं [°प्रभ] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष। भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी या आगामी उत्सर्पिणी का चौथा कुलकर पुरुष। आगामी उत्सर्पिणी के भारतवर्ष के चौथे जिन-देव। एक जैन मुनि, भ० संभवनाथ के पूर्वजन्म के गुरु। एक हार। मेरु पर्वत। नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पश्चिम-दिशा-स्थित एक अंजन-गिरि। न. राजा रावण के लिए कुबेर द्वारा बनाया हुआ एक नगर। वि. आप से प्रकाश करनेवाला। °पभा स्त्री [°प्रभा] प्रथम वासुदेव की पटरानी। एक रानी। °पह देखो °पभ। °बुद्ध वि. अन्य के उपदेश के बिना जिसको तत्त्व-ज्ञान हुआ हो। °भु पुं.ब्रह्मा। भारत में उत्पन्न तीसरा वासुदेव। सतरहवें जिनदेव का गणधर। जीव, आत्मा, चेतन। स्वयंभूरमण समुद्र। पुंन. एक देव विमान। देखो °भू। °भुगेहिणी स्त्री [°भुगेहिनी] सरस्वती देवी। °भुरमण पुं. देखो °भूरमण। °भुव, °भू पुं. अनादि-सिद्ध सर्वज्ञ। ब्रह्मा। तीसरा वासुदेव। रावण का एक योद्धा। भ० विमल-नाथ का प्रथम श्रावक। स्तन। देखो °भु। °भूरमण पुं. समुद्र-विशेष। द्वीप-विशेष। एक देवविमान। °भूरमणभद्द पुं [°भूरमणभद्र]। भूरमणमहाभद्द पुं [°भूरमणमहाभद्र] स्वयंभूरमण। द्वीप का एक अधिष्ठाता देव। °भूरमणमहावर पुं. ।°भूरमणवर पुं स्वयं-भूरमण-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव। °वर पुं. कन्या का स्वेच्छानुसार वरण। निमन्त्रित विवाहार्थियों में से इच्छानुसार वरण करने-वाली। °संबुद्ध वि. स्वयं ज्ञात-तत्त्व।

सयंजय पुं [शतञ्जय] पक्ष का तेरहवाँ दिवस।

सयंजल पुं [शतञ्जल] एक कुलकर पुरुष। वरुण लोकपाल का विमान। देखो सय-ज्जल। ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौदहवें जिनदेव।

सयंभरी स्त्री [शाकम्भरी] देश-विशेष।

सयग देखो सयय।

सयग्घी स्त्री [दे] जाँता, चक्की।

सयड पुंन [शकट] गाड़ी। न. नगर-विशेष। °मुह न [°मुख] उद्यान-विशेष, जहाँ ऋषभदेव को केवलज्ञान हुआ था।

सयडाल देखो सगडाल।

सयण देखो स-यण = स्व-जन।

सयण न [सदन] गृह। अंग-ग्लानि।

सयण न [शयन] वसति, स्थान। शय्या, बिछौना। निद्रा। स्वाप।

सयणिज्ज न [शयनीय] शय्या, बिछौना।

सयणिज्जग देखो स-यण = स्व-जन।

सयणीअ देखो सयणिज्ज।

सयण्ण देखो सकण्ण।

सयण्ह देखो स-यण्ह = स-तृष्ण।

सयत्त वि [दे] मुदित।

सयन्न देखो सकण्ण।

सयय वि [सतत] निरन्तर।

सयय पुं [शतक] वर्तमान अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव। आगामी उत्सर्पिणी में भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम, जो भगवान् महावीर का श्रावक था। न. सौ का समुदाय।

सयर देखो सायर = सागर।

सयरहं देखो सयराहं ।
सयरा देखो सक्करा ।
सयराहं } अ [दे] शीघ्र । युगपत् ।
सयराहा } अकस्मात् ।
सयरि देखो सत्त-रि = सप्तति ।
सयरी स्त्री [शतावरी] शतावर का गाछ ।
सयल न [शकल] खंड, टुकड़ा ।
सयल न [सकल] संपूर्ण । सब । °चंद पुं [°चन्द्र] 'श्रुतास्वाद' का कर्ता एक जैन मुनि । °भूसण पुं [°भूषण] एक केवलज्ञानी मुनि । °देश पुं [°देश] सर्वापेक्षी वाक्य, प्रमाणवाक्य ।
सयलि पुं [शकलिन्] मछली ।
सयहत्थिय वि [सौवहस्तिक] स्व-हस्त से उत्पन्न । न. शस्त्र-विशेष ।
सयाचार देखो स-याचार = सदाचार ।
सयाचार देखो सआ-चार = सदा-चार ।
सयाण देखो स-याण = स-ज्ञान ।
सयालि पुं [शतालि] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम । देखो भयालि ।
सयालु वि [शयालु] सोने की आदतवाला, आलसी ।
सयावरी स्त्री [सदावरी] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ।
सयावरी देखो सयरी = शतावरी ।
सयास देखो सगास = सकाश ।
सयासव वि [शताश्रव, सदाश्रव] सूक्ष्म छिद्रवाला ।
सय्यं देखो सज्जं = सद्यस् ।
सय्यंभव देखो सज्जंभव ।
सय्ह देखो सज्झ = सह्य ।
सर सक [सृ] सरना, खिसकना । अवलम्बन करना । अनुसरण करना ।
सर सक [स्मृ] याद करना ।
सर सक [स्वर्] आवाज करना ।
सर पुंन [शर] बाण । तृण-विशेष । छन्द-विशेष । पाँच की संख्या । °पण्णी स्त्री [°पर्णी] मुञ्ज का घास । °पत्त न [°पत्र] अस्त्र-विशेष । °पाय न [°पात] । °ासण पुंन [°ासन] धनुष । °ासणपट्टी, °ासणवट्टिया स्त्री [°ासनपट्टी, °ासनपट्टिका] धनुर्यष्टि । धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधा जाता चर्मपट्ट । °ासरि न [°ाशरि] बाण-युद्ध ।
सर पुं [स्मर] कामदेव ।
सर वि. गमन-कर्ता ।
सर पुं [स्वर] 'अ' से 'औ' तक के अक्षर । गीत आदि की ध्वनि, आवाज, नाद । स्वर के अनुरूप फलाफल को बतानेवाला शास्त्र ।
सर पुंन [सरस्] तड़ाग । °पंति स्त्री [°पङ्क्ति] तड़ाग-पद्धति । °रुह न. कमल । °सरपंतिया स्त्री [°सरःपङ्क्ति] श्रेणि-बद्ध अनेक तालाब ।
सर देखो सरय = शरद् । °दिंदु पुं [°इन्दु] शरद् ऋतु का चन्द्र ।
सरऊ स्त्री [सरयू] नदी-विशेष ।
सरंग (अप) पुं [सारङ्ग] छन्द-विशेष ।
सरंब पुं [शरम्ब] हाथ से चलनेवाली सर्प-जाति ।
सरक्ख सक [सं + रक्ष्] अच्छी तरह रक्षण करना ।
सरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] शैव-धर्मी-शिव-भक्त, भौत । वि. रजो-युक्त ।
सरक्ख पुंन [सद्रजस्] धूलि, रज । भस्म ।
सरग देखो सरय = शरक ।
सरग वि [शारक] शर-तृण से बना हुआ (शूर्प आदि) ।
सरग्गिका (अप) स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष ।
सरड पुं [सरट] कृकलास, गिरगिट ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरडु } न [शलाटु, °क] वह फल जिसमें
सरडुअ } अस्थि—गुठली न बँधी हो।

सरण पुंन [शरण] त्राण। त्राणस्थान। गृह, आश्रय, स्थान। °दय वि. त्राण-कर्ता। °ागय वि [°ागत] शरणापन्न।

सरणि पुंस्त्री. मार्ग। क्यारी।

सरण्ण वि [शरण्य] शरण-योग्य।

सरत्ति अ [दे] शीघ्र, सहसा।

सरद देखो सरय = शरत्।

सरभ देखो सरह = शरभ।

सरभेअ वि [दे] स्मृत।

सरमय पुं ब. [शर्मक] देश-विशेष।

सरय पुंन [शरद्] आश्विन तथा कार्तिक का महीना। °चंद पुं [°चन्द्र] शरद् ऋतु का चाँद। देखो सर = शरद्।

सरय पुं [शरक] अग्नि उत्पन्न करने के लिए अरणि का काष्ठ जिससे घिसा जाता है वह।

सरय पुंन [सरक] गुड़ तथा धातकी का बना हुआ दारू। मद्य-पान।

सरय देखो स-रय = स-रत।

सरय (अप) पुं [सरस] छन्द-विशेष।

सरल पुं. वृक्ष-विशेष। ऋतु, माया-रहित। सीधा, अवक्र।

सरली स्त्री [दे] चीरिका, क्षुद्र कीट, झींगुर।

सरलीआ स्त्री [दे] साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं। एक जाति का कीड़ा।

सरव पुं [शरप] भुजपरिसर्प का एक प्रकार।

सरस वि. रस-युक्त। °रण्ण पुं [°ारण्य] समुद्र।

सरसिज } न [सरसिज] कमल, पद्म।
सरसिय }
सरसिरुह } न [सरसिरुह]।

सरसी स्त्री. बड़ा तालाब। °रुह न. कमल।

सरस्सई स्त्री [सरस्वती] वाणी, भाषा। वाणी की अधिष्ठात्री देवी। गीतरति नामक इन्द्र की एक पटरानी। एक राज-पत्नी। एक जैन साध्वी, कालकाचार्य की बहिन।

सरह पुं [शरभ] शिकारी पशु की एक जाति। हरिवंश का एक राजा। लक्ष्मण का एक पुत्र। एक सामन्त नरेश। एक वानर। छन्द-विशेष।

सरह पुं [दे] वेतस या बेंत का पेड़। सिंह।

सरह (अप) वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय।

सरहस देखो स-रहस = स-रभस।

सरहा स्त्री [सरघा] मधु-मक्षिका।

सरहि पुंस्त्री [शरधि] तीर रखने का भाथा।

सरा स्त्री [दे] माला।

सराग देखो सराग = स-राग।

सराडि स्त्री [शराटि] पक्षी की एक जाति।

सराव पुं [शराव] मिट्टी का सकोरा।

सरासण देखो सर-ासण = शरासन।

सराह वि [दे] दर्पोद्धुर।

सराहय पुं [दे] सर्प।

सरि वि [सदृश्] सदृश, तुल्य।

सरि स्त्री [सरित्] नदी। °नाह पुं [°नाथ] समुद्र।

सरिअ देखो सरि = सदृश्।

सरिअं न [सृतम्] अलं, पर्याप्त।

सरिआ स्त्री [सरित्] नदी। °वइ पुं [°पति] समुद्र।

सरिआ स्त्री [दे] माला, हार।

सरिक्ख } वि [सदृक्ष] सदृश, समान।
सरिच्छ }

सरित्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता।

सरिभरी स्त्री [दे] समानता, सरीखाई।

सरिर देखो सरीर।

सरिवाय पुं [दे] आसार, वेगवाली वृष्टि।

सरिस वि [सदृश] समान, तुल्य।

सरिस पुंन [दे] सह, साथ।

सरिसरी देखो सरिभरी।

सरिसव पुं [सर्षप] सरसों।

सरिसाहुल वि [दे] समान, सदृश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरिस्सव देखो सरीसव ।
सरी स्त्री [दे] माला, हार ।
सरीर पुंन [शरीर] देह । °णाम, °नाम पुंन. [°नामन्] शरीर का कारण-भूत कर्म-विशेष । °बंधण न [°बन्धन] कर्म-विशेष । °संघायण न [°संघातन] नाम कर्म का एक भेद ।
सरीरि पुं [शरीरिन्] जीव, आत्मा ।
सरीसव, सरीसिव पुं [सरीसृप] सर्प । सर्प की तरह पेट से चलनेवाला प्राणी ।
सरूय, सरूव देखो स-रूय = स्व-रूप ।
सरूव देखो स-रूव = सद्-रूप, स-रूप ।
सरूवि पुं [स्वरूपिन्] जीव, प्राणी ।
सरेअव्व देखो सर = सृ, स्मृ का कृ. ।
सरेवय पुं [दे] हंस । घर का जलप्रवाह, मोरी ।
सरोअ, सरोरुह न [सरोज] कमल ।
सरोवर न. बड़ा तालाब ।
सलभ देखो सलह = शलभ ।
सलली स्त्री [दे] सेवा ।
सलह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना ।
सलह पुं [शलभ] पतङ्ग । एक वणिक्-पुत्र ।
सलहत्थ पुं [दे] कुड़छी आदि का हाथा ।
सलाग न [शालाक्य] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें श्रवण आदि शरीर के ऊर्ध्व भाग के सम्बन्ध में चिकित्सा का प्रतिपादन हो ।
सलागा, सलाया स्त्री [शलाका] सली, सलाई । पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप । °पुरिस पुं [°पुरुष] २४ जिनदेव, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव तथा ९ बलदेव ये ६३ महापुरुष ।
सलाह देखो सलह = श्लाघ् ।
सलिल पुंन. पानी । °णिहि पुं [°निधि] । °नाह पुं [°नाथ] सागर । °बिल न. भूमि-निर्झर । °रासि पुं [°राशि] समुद्र । °वाह पुं । °हर पुं [°धर] मेघ । °वई, °वती स्त्री [°वती] विजय-क्षेत्र-विशेष । °वत्त न [°वर्त] वैताढ्य पर्वत पर उत्तर दिशा-स्थित एक विद्याधर-नगर ।
सलिला स्त्री. महानदी ।
सलिलुच्छय वि [सलिलोच्छय] प्लावित, डुबोया हुआ ।
सलिस अक [स्वप्] सोना ।
सलूण देखो स-लूण = स-लवण ।
सलोग पुं [श्लोक] । देखो सिलोग ।
सलोग देखो स-लोग = स-लोक ।
सलोण देखो स-लोण = स-लवण ।
सलोय देखो सलोग = श्लोक ।
सल्ल पुंन [शल्य] अस्त्र-विशेष, तोमर, साँग । शरीर में घुसा हुआ काँटा, तीर आदि । पापानुष्ठान । पापानुष्ठान से लगनेवाला कर्म । पुं. भरत के साथ दीक्षा लेनेवाले एक राजा । न. छन्द-विशेष । °ग वि [°क] शल्यवाला, शूल आदि शल्य से पीडित । °ग न. परिज्ञान ।
सल्ल पुंस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय जन्तु की एक जाति ।
सल्लई स्त्री [सल्लकी] वृक्ष-विशेष ।
सल्लग देखो सल्ल-ग = शल्य-क, शल्य-ग ।
सल्लग्ग देखो स-ल्लग्ग = सत्-लग्न ।
सल्लहत्त पुंन [शाल्यहत्य] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें शल्य निकालने का प्रतिपादन किया गया हो ।
सल्ला स्त्री [शल्या] एक महौषधि ।
सल्लिह देखो संलिह = सं + लिख् ।
सल्लुद्धरण न [शल्योद्धरण] शल्य को बाहर निकालना । आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए गुरु के पास दूषण-निवेदन ।
सल्लेहणा देखो संलेहणा ।
सल्लेहिय वि [संलेखित] क्षीण ।
सव सक [शप्] शाप देना, आक्रोश करना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाली देना। आह्वान करना।
सव सक [सू] उत्पन्न करना, जन्म देना।
सव देखो सो = सु।
सव अक [स्रु] झरना, चूना।
सव पुं [श्रवस्] कान। ख्याति।
सव न [शव] मुरदा, मृत शरीर।
सवंती स्त्री [स्रवन्ती] नदी।
सवक्की देखो सवत्ती।
सवक्ख देखो स-वक्ख = स-पक्ष।
सवग्गीय वि [सवर्गीय] सवर्ग-संबन्धी।
सवच्च देखो स-पच्च = श्व-पच।
सवज्झा देखो सपज्झा।
सवडंमुह, सवडहुत्त } वि [दे] अभिमुख, संमुख।
सवण देखो समण = श्रमण।
सवण पुं [श्रवण] कर्ण। नक्षत्र-विशेष। एक ऋषि। न. सुनना।
सवण देखो स-वण = स-व्रण।
सवण न [सवन] कर्मों में प्रेरणा।
सवणता, सवणया } स्त्री [श्रवणता] सुनना। अव-ग्रह-ज्ञान।
सवण्ण वि [सवर्ण] समान वर्णवाला।
सवण्ण न [सावर्ण्य] समान-वर्णता।
सवत्त पुं [सपत्न] दुश्मन। वि. विरुद्ध। समान।
सवत्तिणी देखो सवत्ती।
सवत्तिया, सवत्ती } स्त्री [सपत्निका]। स्त्री [सपत्नी] पति की दूसरी स्त्री।
सवय देखो स-वय = स-वयस्, स-व्रत।
सवर देखो सबर।
सवरिआ देखो सपज्झा।
सवल देखो सबल।
सवलिआ स्त्री [दे] भरोच का एक प्राचीन जैन मन्दिर।
सवह पुं [शपथ] आक्रोश-वचन, गाली। सौगन्ध। दिव्य, दोषारोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि।
सवाग, सवाय } देखो स-वाग = श्व-पाक।
सवाय पुं [दे] श्येन पक्षी।
सवाय पुं [दे] स-वाय = स-पाद, स-वाद, सद्-वाच्।
सवार न [दे] सुबह।
सवास पुं [दे] ब्राह्मण।
सवास देखो स-वास = स-वास।
सविअ वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, आक्रुष्ट।
सविउ पुं [सवितृ] सूर्य। हस्त-नक्षत्र का अधिपति देव। हस्त नक्षत्र।
सविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा रखनेवाला।
सविज्ज देखो स-विज्ज = स-विद्य।
सविट्ठा स्त्री [श्रविष्ठा] धनिष्ठा नक्षत्र।
सविण देखो सुमिण = स्वप्न।
सवितु देखो सविउ।
सविस न [दे] सुरा।
सविह न [सविध] पास।
सव्व वि [सव्य] वाम।
सव्व वि [श्रव्य] श्रवण-योग्य।
सव्व स [सर्व] समस्त। सम्पूर्ण। °ओ अ [°तस्] सबसे। सब ओर से। °ओभद्द वि [°तोभद्र] सब प्रकार से सुखी। न. सब प्रकार से सुख। शुभाशुभ के ज्ञान का साधन-भूत एक चक्र। महाशुक्र देवलोक में स्थित एक विमान। पाँचवाँ ग्रैवेयक विमान। एक नगर। अच्युतेन्द्र का एक पारियानिक विमान। दृष्टिवाद का एक सूत्र। पुं. यक्ष की एक जाति। देव-विमान-विशेष। °ओभद्दा स्त्री [°तोभद्रा] प्रतिमा-विशेष, एक व्रत। °कामसमिद्ध पुं [°कामसमृद्ध] षष्ठी तिथि। °कामा स्त्री. विद्या-विशेष, जिसकी साधना से सर्व इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। °गय वि [°गत] व्यापक। °गा स्त्री. उत्तर रुचक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैन मुनि। °ज्ज वि [°ज्ञ] सर्व पदार्थों का जानकार। पुं. जिन भगवान्। बुद्धदेव। महादेव। परमेश्वर। °ट्ठ पुं [°ार्थ] अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त। पुंन. सहस्रार देवलोक का एक विमान। अनुत्तर देवलोक का सर्वार्थसिद्ध नामक एक विमान। पुं. सब अर्थ। °ट्ठसिद्ध पुंन [°ार्थसिद्ध] अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त। अनुत्तर देवलोक का पाँचवाँ और सर्व-श्रेष्ठ विमान। पुं. ऐरवत वर्ष में उत्पन्न होनेवाले छठवें जिनदेव। °ट्ठसिद्धा स्त्री [°ार्थसिद्धा] भ० धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका। °ट्ठसिद्धि स्त्री [°ार्थसिद्धि] एक देव-विमान। °ण्णु देखो °ज्ज। °त्त देखो °त्थ। °त्तो देखो °ओ। °त्थ अ [°त्र] सब स्थान में, सब में। °दंसि, °दरिसि वि [°दर्शिन्] सब वस्तुओं को देखनेवाला। पुंन. जिन भगवान्। °देव पुं. एक प्रसिद्ध जैन आचार्य। राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ। °द्दंसि देखो °दंसि। °द्धा स्त्री [°ाद्धा] सब काल, अतीत आदि सर्व समय। °धत्ता स्त्री. व्यापक, सर्व-ग्राहक। °न्नु देखो °ज्ज। °प्पग वि [°ात्मक] व्यापक। पुं. लोभ। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। °भक्ख वि [°भक्ष] सर्व-भोजी। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] प्रतिज्ञा-विशेष, व्रत-विशेष। °भावविउ पुं [°भावविद्] आगामी काल में भारत वर्ष में होनेवाले बारहवें जिनदेव। °य वि [°द] सब देनेवाला। °या अ [°दा] हमेशा। °रयण पुं [°रत्न] एक महा-निधि। पुंन. पर्वत-विशेष का एक शिखर। °रयणा स्त्री [°रत्ना] ईशानेन्द्र की वसुमित्रा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी। °रयणामय वि [°रत्नमय] सब रत्नों का बना हुआ। चक्रवर्ती का एक निधि। °विग्गहिअ वि [°विग्रहिक] सर्व-संक्षिप्त। °विरइ स्त्री [°विरति] पाप-कर्म से सर्वथा निवृत्ति। °संगय [°सङ्गत] मृत्यु। °संजम पुं [°संयम] पूर्ण संयम। °सह वि. सब सहन करनेवाला। °सिद्धा स्त्री. पक्ष की चौथी, नववीं और चौदहवीं रात्रि-तिथि। °सो अ [°शस्] सब ओर से, सब प्रकार से। °स्स न [°स्व] सकल द्रव्य। °हा अ [°था] सब प्रकार से। °ाणंद पुं [°ानन्द] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव। °ाणुभूइ पुं [°ानुभूति] भारत वर्ष में होनेवाले पाँचवें जिन भगवान्। भ० महावीर का एक शिष्य। °ारुहा स्त्री [°ारुहा] विद्या-विशेष। °ाव वि [°ाप] संपूर्ण। °ासण पुं [°ाशन] अग्नि।

सव्वंकस वि [सर्वंकष] सर्वातिशायी। न. पाप।

सव्वंग वि [सर्वाङ्ग] संपूर्ण। सर्व-शरीर-व्यापी। °सुंदर वि [°सुन्दर] सर्व अंगों में श्रेष्ठ। पुंन. तप-विशेष।

सव्वंगिअ, सव्वंगीण वि [सर्वाङ्गीण] सर्व अवयवों में व्याप्त।

सव्वण देखो स-व्वण = स-व्रण।

सव्वराइअ वि [सार्वरात्रिक] संपूर्ण रात्रि से सम्बन्ध रखनेवाला, सारी रात का।

सव्वरी स्त्री [शर्वरी] रात्रि।

सव्वल पुं [दे.शर्वल] कुन्त, बर्छा। देखो सद्धल।

सव्वला स्त्री [दे.शवला] कुशी, लोहे का एक हथियार।

सव्ववेक्ख देखो स-व्ववेक्ख = स-व्यपेक्ष।

सव्वाव देखो सव्व-াव = सर्वाप।

सव्वाव देखो स-व्वाव = स-व्याप।

सव्वावंति अ [दे] सर्व, संपूर्ण।

सव्विड्ढि स्त्री [सर्वर्द्धि] संपूर्ण वैभव।

सव्विवर देखो स-व्विवर = स-विवर।

सव्वोसहि स्त्री [सर्वौषधि] लब्धि-विशेष,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसके प्रभाव से शरीर की कफ आदि सब चीज औषधि का काम करती है। वि. लब्धि-विशेष को प्राप्त।

सस अक [श्वस्] श्वास लेना।

सस पुं [शश] खरगोश। °इंध पुं [°चिह्न]। °हर पुं [°धर] चन्द्रमा।

ससंक पुं [शशाङ्क] चन्द्रमा। नृप-विशेष। °धम्म पुं [°धर्म] विद्याधर-वंश का एक राजा।

ससंक देखो स-संक = स-शङ्क।

ससंग देखो ससंक = शशाङ्क।

ससंवेयण देखो स-संवेयण = स्व-संवेदन।

ससक्ख वि [ससाक्ष्य] साक्षीवाला।

ससग पुं [शशक] देखो सस = शश।

ससण पुं [श्वसन] शुण्डा-दण्ड, हाथी की सूँड। वायु, पवन। न. निःश्वास।

ससत्ता देखो स-सत्ता = स-सत्त्वा।

ससरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] रजोयुक्त, धूलिवाला। पुं. बौद्ध मत का साधु।

ससराइअ वि [दे] निष्पिष्ट, पिसा हुआ।

ससा स्त्री [स्वसृ] बहन।

ससि पुं [शशिन्] चन्द्रमा। एक विद्यार्थी। चन्द्र नाड़ी, वाम नाड़ी। एक देव-विमान। छन्द-विशेष। एक राजा। दक्षिण रुचक पर्वत का एक कूट। °अंत पुं [°कान्त] चन्द्रकान्त मणि। °अला स्त्री [°कला] चन्द्र की कला, सोलहवाँ भाग। °कंत देखो °अंत। °पभ, °पह पुं [°प्रभ] आठवें जिनदेव, चन्द्रप्रभ। इक्ष्वाकु वंश का एक राजा। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] एक रानी, कर्पूरमंजरी की माता। °मणि पुंस्त्री. चन्द्रकान्त मणि। लेहा स्त्री [°लेखा] चन्द्र की कला। °वक्कय न [°वल्कक] आभूषण-विशेष। °वेग पुं. एक राज-कुमार। °सेहर पुं [°शेखर] महादेव।

ससिण देखो ससि।

ससिणिद्ध वि [सस्निग्ध] स्नेहयुक्त।

ससित्थ न [ससिक्थ] आटा आदि से लिप्त हाथ या बरतन आदि का धोवन।

ससिरिय, ससिरीय } देखो स-सिरिय = स-श्रीक।

ससिह देखो स-सिह = स-स्पृह, स-शिख।

ससुर पुं [श्वसुर] ससुर।

ससूग देखो स-सूग = स-शूक।

ससेस देखो स-सेस = स-शेष।

ससोग, ससोगिल्ल } देखो स-सोग = स-शोक।

सस्स न [शस्य] देखो सास = शस्य।

सस्सवण वि [सश्रवण] सकर्ण, निपुण।

सस्सिय पुं [शस्यिक] कृषीवल।

सस्सिरिअ देखो स-स्सिरिअ = स-श्रीक।

सस्सिरिली देखो सिस्सिरिली।

सस्सिरीअ देखो स-स्सिरीअ = स-श्रीक।

सस्सू स्त्री [श्वश्रू] सास।

सह अक [राज्] शोभना, विराजना।

सह सक [सह्] सहन करना।

सह सक [आ + ज्ञा] हुकुम करना।

सह वि [दे] योग्य। सहाय। मदद-कर्ता।

सह वि [स्वक] देखो स = स्व। °देस पुं [°देश] स्वदेश। °संबुद्ध वि. निज से ही ज्ञान को प्राप्त। पुं. जिन-देव।

सह वि. समर्थ। सहिष्णु। पुं. युगलिक मनुष्य की एक जाति। अ. साथ। युगपत्। °कार पुं. आम का पेड़। साथ मिलकर काम करना। मदद। °कारि वि [°कारिन्] साहाय्यकर्ता। कारण-विशेष। °गत, °गय वि. संयुक्त। °गारि, °गारिअ देखो °कारि। °चर देखो °यर। °चरण न. सहचर, मेलाप। °ज पुं. स्वभाव। वि. स्वाभाविक। °जाय वि [°जात] एक साथ उत्पन्न। °देव पुं. एक पाण्डव, माद्री-पुत्र। राजगृह नगर का एक राजा। °देवा स्त्री. ओषधि-विशेष। °देवी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्री. चतुर्थ चक्रवर्ती की माता। एक महौषधि। °धम्मआरिणी स्त्री [°धर्मचारिणी] पत्नी। °पंसुकीलिअ वि [°पांशुक्रीडित] बाल-मित्र। °य देखो °ज। °यर वि [°चर] सहाय, साहाय्य-कर्ता। वयस्य, दोस्त। अनुचर। °यरी स्त्री [°चरी]। °यार देखो °कार। °राग वि. राग-सहित। °र देखो °कार।

सह° देखो सहा = सभा।

सहउत्थिया स्त्री [दे] दूती।

सहगुह पु [दे] घूक, उल्लू, पक्षि-विशेष।

सहडामुह न [शकटामुख] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक-विद्याधर-नगर।

सहण अ [दे] सह, साथ में।

सहण न [सहन] तितिक्षा। वि. सहिष्णु।

सहर पुस्त्री [शफर] मत्स्य।

सहर वि [दे] साहाय्य-कर्ता, सहाय।

सहल वि [सफल] सार्थक।

सहस देखो सहस्स। °किरण पुं. सूर्य। °क्ख पुं [°ाक्ष] इन्द्र। रावण का एक योद्धा। छन्द-विशेष।

सहसक्कार पुं [सहसाकार] विचार किये बिना करना। आकस्मिक क्रिया। वि. विचार किये बिना करनेवाला।

सहसत्ति अ. अकस्मात्, शीघ्र।

सहसा अ. अकस्मात्, शीघ्र। °वित्तासिय न [°वित्रासित] अकस्मात् स्त्री के नेत्र-स्थगन आदि क्रीड़ा।

सहस्स पुंन [सहस्र] संख्या-विशेष, १०००। वि. हजार की संख्यावाला। °किरण पुं. सूर्य। एक राजा। °क्ख पुं [°ाक्ष]। °णयण, °नयण पुं [°नयन] इन्द्र। एक विद्याधर राज-कुमार। °पत्त अ [°पत्र] हजार दलवाला कमल। °पाग पुंन [°पाक] हजार ओषधि से बनता एक प्रकार का तैल। °रस्सि पुं [°रश्मि] सूर्य। °लोयण पुं [°लोचन] इन्द्र। °सिर वि [°शिरस्] प्रभूत मस्तकवाला। पुं. विष्णु। °वत्त देखो °पत्त। °सो अ [°शस्] अनेक हजार। °हा अ [°धा] सहस्र प्रकार से। °हुत्तं अ [°कृत्वस्] हजार बार। देखो सहस, सहास।

सहस्संबवण न [सहस्राम्रवण] एक उद्यान, आम के प्रभूत पेड़ोंवाला वन।

सहस्सार पुं [सहस्रार] आठवाँ देवलोक। आठवें देवलोक का इन्द्र। एक देव-विमान। °वडिंसय पुंन. [°ावतंसक] एक देव-विमान।

सहा स्त्री [सभा] समिति, परिषत्। °सय वि [°सद] सभ्य, सदस्य।

सहा देखो साहा = शाखा।

सहाअ देखो स-हाअ = स्व-भाव।

सहाअ } पुं [सहाय] सहाय्य-कर्ता। वि
सहाइ } [साहाय्यिन्]।

सहाइया स्त्री [सहायिका] मदद करनेवाली।

सहार देखो सह-ार = सह-कार।

सहाव देखो स-हाव = स्वभाव।

सहास देखो सहस्स। °हुत्तो अ [°कृत्वस्] हजार बार।

सहासय देखो सहा-सय = सभा-सद।

सहि वि [सखि] मित्र। देखो सही°।

सहि° देखो सही।

सहिअ वि [सोढ] सहन किया हुआ।

सहिअ वि [सहित] युक्त। हित-युक्त। पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष।

सहिअ पुं [सभिक] द्यूत-कारक, जुआ खेलनेवाला।

सहिअ देखो स-हिअ = स्व-हित।

सहिअ देखो सह = सह्।

सहिअ } वि [सहृदय] सुन्दर चित्तवाला।
सहिअय } परिपक्व बुद्धिवाला।

सहिआ देखो सही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहिज्ज वि. देखो सहाअ = सहाय। स्त्री. °ज्जी।
सहिण देखो सण्ह + श्लक्ष्ण।
सहिण्हु } वि [सहिष्णु] सहन करने की
सहिर } आदतवाला।
सही स्त्री [सखी] सहेली।
सही° देखो सहि। °वाय पुं [°वाद] मित्रता-सूचक वचन।
सहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्व-वश।
सहु वि [सह] समर्थ, शक्तिमान्।
सहु (अप) देखो संघ।
सहुं (अप) अ [सह] साथ, संग।
सहेज्ज देखो सहिज्ज।
सहेर (अप) पुं [शेखर] षट्पद छन्द का एक भेद।
सहेल वि. हेला-युक्त, अनायास होनेवाला, सरल।
सहोअर वि [सहोदर] तुल्य। पुं. सगा भाई।
सहोअरी स्त्री [सहोदरी] सगी बहिन।
सहोढ वि [सहोड] चोरी के माल से युक्त, स-मोष।
सहोदर देखो सहोअर।
सहोसिअ वि [सहोषित] एक-स्थान-वासी।
साअड्ढ सक [कृष्] चाष करना, कृषि करना, खींचना।
साअद (शौ) देखो सागद।
साइ वि [शायिन्] सोनेवाला।
साइ वि [सादि] आदि-सहित। न. संस्थान-विशेष, जिस शरीर में नाभि से नीचे के अवयव पूर्ण और नाभि के ऊपर के अवयव हीन हों ऐसी शरीराकृति। सादिसंस्थान की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म।
साइ न [साचि] सेमल का पेड़। संस्थान-विशेष। देखो साइ।
साइ पुंस्त्री [स्वाति] नक्षत्र-विशेष। पुं. भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव का पूर्व-जन्मीय नाम। एक जैन मुनि। हैमवत-वर्ष के शब्दापाती पर्वत का अधिष्ठायक देव।
साइ पुं [सादिन्] घुड़सवार।
साइ पुंस्त्री [साति] उत्तम वस्तु के साथ हीन वस्तु की मिलावट। अविश्वास। असत्य वचन। अपेक्षा-कृत अच्छी चीज। °जोग पुं [°योग]। °संपओग पुं [°संप्रयोग] मोहनीय कर्म। अच्छी चीज से हीन चीज की मिलावट।
साइ पुंस्त्री [दे] केसर।
साइज्ज सक [स्वाद्, सात्मी + कृ] स्वाद लेना, खाना। अभिलाष करना। स्वीकार करना। आसक्ति करना। अनुमोदन करना।
साइज्जण न [स्वादन] अभिष्वङ्ग, आसक्ति।
साइज्जणया स्त्री [स्वादना] उपभोग, सेवा।
साइज्जिअ वि [दे] अवलम्बित।
साइज्जिअ वि [स्वादित] उपभुक्त। उप-भुक्त-सम्बन्धी। स्त्री. °या।
साइम वि [स्वादिम] पान, सुपारी आदि।
साइय वि [सादिक] आदिवाला।
साइय देखो सागय = स्वागत।
साइय न [दे] संस्कार।
साइयंकार वि [दे] स-प्रत्यय, विश्वस्त।
साइरेग वि [सातिरेक] साधिक, सविशेष।
साइसय वि [सातिशय] अतिशयवाला।
साई देखो सई = शची।
साउ वि [स्वादु] स्वादवाला, मधुर।
साउग वि [स्वादुक] स्वादिष्ट भोजनवाला।
साउज्ज न [सायुज्य] सहयोग, साहाय्य।
साउणिअ वि [शाकुनिक] पक्षियों का शिकारी। शकुन-शास्त्र का जानकार। श्येन पक्षी द्वारा शिकार करनेवाला।
साउय देखो साउग।
साउय वि [सायुष्] आयुवाला, प्राणी।
साउल वि [संकुल] व्याप्त, भरपूर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साउलय वि [साकुलत] आकुलता-युक्त।

साउली स्त्री [दे]। देखो साहुली।

साउल्ल पुं [दे] अनुराग।

साएज्ज देखो साइज्ज।

साएय न [साकेत]। °पुर न.। °पुरी स्त्री. अयोध्या नगरी।

साएया स्त्री [साकेता] अयोध्या नगरी।

सांतवण न [सान्तपन] व्रत-विशेष।

साक देखो साग।

साकेय न [साकेत] नगर-विशेष, अयोध्या। वि. गृहस्थ-सम्बन्धी। म. प्रत्याख्यान-विशेष।

साकेय वि [साङ्केत] संकेत-सम्बन्धी। न. प्रत्याख्यान का एक भेद।

साग पुं [शाक] वृक्ष-विशेष। तक्र-सिद्ध बड़ा आदि खाद्य। शाक।

सागडिअ वि [शाकटिक] गाड़ीवान्।

सागय न [स्वागत] प्रशस्त आगमन। अतिथि-सत्कार, बहु-मान। कुशल।

सागर पुं. समुद्र। एक राज-पुत्र। राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र। एक वणिक्-व्यापारी। सातवें बलदेव तथा वासुदेव के पूर्व भव के धर्म-गुरु। पुंन. कूट-विशेष। समय-परिमाण-विशेष, दश-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल। एक देव-विमान। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन आचार्य। एक व्यक्ति। °चित्त पुंन [°चित्र] कूट-विशेष। °दत्त पुं. एक जैन मुनि। तीसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम। एक श्रेष्ठि-पुत्र। एक सार्थवाह। हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र। °दत्ता स्त्री. भ० धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका। भ० विमलनाथजी की दीक्षा-शिबिका। °देव पुं. हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र। °वूह पुं [°व्यूह] सैन्य की रचना-विशेष। देखो सायर = सागर।

सागरिअ देखो सागारिय।

सागरोवम पुंन [सागरोपम] दस-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल।

सागार वि [साकार] आकार-सहित। विशेषांश को ग्रहण करने की शक्ति, विशेष-ग्रहण, ज्ञान। अपवाद-युक्त। °पस्सि वि [°दर्शिन्] ज्ञानवाला।

सागार वि. गृह-युक्त, गृहस्थ।

सागारि } वि [सागारिन्, °रिक] गृह
सागारिय } का मालिक, उपाश्रय का मालिक, साधु को स्थान देनेवाला गृहस्थ, शय्यातर। सूतक, प्रसव और मरण की अशुद्धि, अशौच। गृहस्थ से युक्त। न. मैथुन। वि. मैथुन। वि. शय्यातर गृहस्थ का, उपाश्रय के मालिक से सम्बन्ध रखनेवाला।

सागेय देखो साकेय = साकेत।

साड सक [शाटय्, शातय्] सड़ाना, विनाश करना। छेदन करना।

साड पुं [शाट, शात] शाटन, विनाश। शाटक, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर। वस्त्र।

साडअ } पुंन [शाटक] वस्त्र, कपड़ा।
साडग }

साडणा स्त्री [शाटना, शातना] खण्ड-खण्ड होकर गिराने का कारण, विनाश-कारण।

साडिअ वि [शाटित, शातित] सड़ाकर गिराया हुआ, विनाशित।

साडिआ स्त्री [शाटिका] वस्त्र।

साडिल्ल देखो साड = शाट।

साडी स्त्री [शाटी] वस्त्र।

साडी स्त्री [शकटी] गाड़ी। °कम्म पुंन [°कर्मन्] गाड़ी बनाना, बेचना, चलाना आदि शकट-जीविका।

साडीया देखो साडिआ।

साडोल्लय देखो साडअ।

साण सक [शाणय्] शाण पर चढ़ाना, तीक्ष्ण करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साण पुंस्त्री [श्वान] कुत्ता। स्त्री. पुं. छन्द-विशेष।
साण वि [श्यान] निबिड, घनीभूत।
साण पुं [शाण, शान] शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यन्त्र।
साण वि [शाण] सन या पाट का।
साण देखो सासायण।
साणइअ वि [दे. शाणित] उत्तेजित।
साणय } न [शाणक] सन का बना वस्त्र।
साणि } स्त्री [शाणि]।
साणिअ वि [दे] शान्त।
साणी स्त्री [शाणी] देखो साणि।
साणु पुंन [सानु] पर्वत का समान भूमि-वाला प्रदेश। °मंत पुं [°मत्] पर्वत। °लट्ठिया स्त्री [°यष्टिका] ग्राम-विशेष।
साणुक्कोस वि [सानुक्रोश] दयालु।
साणुप्पग न [सानुप्रग] प्रातःकाल, प्रभात।
साणुबंध वि [सानुबन्ध] निरन्तर, अविच्छिन्न प्रवाहवाला।
साणुबीय वि [सानुबीज] जिसमें उत्पादन-शक्ति नष्ट न हुई हो वह बीज।
साणुवाय वि [सानुवात] अनुकूल पवनवाला।
साणुसय वि [सानुशय] अनुताप-युक्त।
साणूर न [दे] देव-गृह।
सात न. सुख। वि. सुखवाला। स्त्री. °ता। °वियणिज्ज न [°वेदनीय] सुख का कारण-भूत कर्म।
साति देखो साइ = स्वाति, सादि, साचि, साति।
सातिज्जणया देखो साइज्जणया।
साद पुं. अवसाद, खेद।
सादिव्व वि [सदैव] देवता-प्रयुक्त, देव-कृत।
सादिव्व देखो सादेव्व।
सादीअ देखो साइय = सादिक।
सादीणगंगा स्त्री [सादीनगङ्गा] आजीविक मत में उक्त एक परिमाण।
सादेव्व न [सादिव्य] देव का अनुग्रह—सांनिध्य।

साद्दूलसट्ठ (अप) देखो सद्दूल-सट्ठ।
साध देखो साह = साधय्।
साधग देखो साहग।
साधम्म देखो साहम्म।
साधम्मिअ देखो साहम्मिअ।
साधारण देखो साहारण = साधारण।
साधारणा स्त्री [संधारणा] वासना, धारणा, स्मरणशक्ति।
साधीण देखो साहीण।
सापद (शौ) देखो सावय = श्वापद।
साफल्ल } देखो साहल्ल।
साफल्लया }
साबाह वि [साबाध] आबाधा-सहित।
साभरग पुं [दे. साभरक] रुपया, सोलह आने का सिक्का।
साभव्व देखो साहव्व।
साभाविक } देखो साहाविअ।
साभाविय }
साम पुंन [सामन्] शत्रु को वश करने का उपाय-विशेष, एक राज-नीति। प्रिय वाक्य। एक वेद-शास्त्र। मैत्री, शर्करा आदि मिष्ट वस्तु। सामायिक। °कोट्ठ पुं [°कोष्ठ] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक्कीसवें जिनदेव। देखो सामि-कुट्ठ।
साम पुं [श्याम] कृष्ण वर्ण। हरा वर्ण। नीला रंग। वि. काला वर्णवाला। हरा वर्णवाला। पुं. परमाधमी देवों की एक जाति। एक जैन मुनि, श्यामार्य। न. गन्ध-तृण। पुंन. आकाश। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] भ० महावीर का शिष्य एक मुनि।
सामइअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह।
सामइअ देखो सामाइअ।
सामइअ } पुं [सामयिक] एक गृहस्थ।
सामइग } वि. समय-सम्बन्धी। सिद्धान्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का जानकार। आगम-आश्रित, सिद्धान्त-आश्रित। बौद्ध विद्वान्।

सामइग देखो सामाइअ।

सामंत पुंन [सामन्त] निकट। पुं. अधीन राजा। समीप देश का राजा।

सामंती स्त्री [दे] सम-भूमि।

सामंतोवणिवाइय न [सामन्तोपनिपातिक] अभिनय का एक भेद।

सामंतोवणिवाइया, सामंतोवणीआ } स्त्री [सामन्तोपनिपातिकी] क्रिया-विशेष, चारों तरफ से इकट्ठे हुए जन-समुदाय में होनेवाली क्रिया—कर्म-बन्ध का कारण।

सामंतोवायणिय पुंन [सामन्तोपपातनिक] अभिनय-विशेष।

सामक्ख देखो समक्ख।

सामग देखो सामय = श्यामाक।

सामग्ग सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना।

सामग्ग, सामग्गिअ } न [सामग्र्य] सामग्री, संपूर्णता, सकलता।

सामग्गिअ वि [दे] चलित। अवलम्बित। पालित, रक्षित।

सामग्गी स्त्री [सामग्री] समस्तता। कारण-समूह।

सामच्छ सक [दे] मन्त्रणा करना, पर्यालोचन करना।

सामच्छ न [सामर्थ्य] समर्थता, शक्ति।

सामज्ज न [साम्राज्य] सार्वभौम राज्य।

सामण, सामणिय } वि [श्रामण °णिक] श्रमण-संबन्धी।

सामणिय देखो सामण्ण = श्रामण्य।

सामणेर पुं [श्रामणि] साधु की संतान।

सामण्ण न [श्रामण्य] श्रमणता, साधुपन।

सामण्ण पुं [सामान्य] अणपन्नी देवों का एक इन्द्र। न. वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ। वि. साधारण।

सामत्थ देखो सामच्छ।

सामय सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना।

सामय पुं [श्यामाक] धान्य-विशेष, साँवा।

सामरि पुंस्त्री [दे.शाल्मलि] शाल्मली वृक्ष।

सामरिस वि [सामर्ष] ईर्ष्यालु, असहिष्णु।

सामल वि [श्यामल] काला। पुं. एक वणिक्।

सामलय वि [श्यामलक] काला। काला पानीवाला। पुं. वनस्पति-विशेष।

सामला स्त्री [श्यामला]कृष्ण वर्णवाली स्त्री। सोलह वर्ष की स्त्री।

सामलि पुंस्त्री [शाल्मलि] सेमल का गाछ।

सामली देखो सामला।

सामलेर पुं [शाबलेय] काबरचित गौ—चितकबरी गाय का वत्स।

सामा स्त्री [श्यामा]तेरहवें जिनदेव की माता। तृतीय जिनदेव की प्रथम शिष्या। रात्रि। शक्र की एक अग्र-महिषी। प्रियंगु वृक्ष। एक महौषधि। साम-लता। सोम-लता। नारी। श्याम वर्णवाली स्त्री। सोलह वर्ष की स्त्री। सुन्दर स्त्री। यमुना नदी। नील या गुग्गुल का गाछ। गुडूची, गला। गुन्द्रा। कृष्णा। अम्बिका। कस्तूरी। वटपत्री। वन्दा की लता। हरी पुनर्नवा। पिप्पली का गाछ। हरिद्रा। नील दूर्वा। तुलसी। पद्मबीज। गौ। छाया। सीसम का पेड़। पक्षि-विशेष। °स पुं [°श] रात्रि-भोजन।

सामाइअ न [सामायिक] संयम-विशेष, सम-भाव। राग-द्वेष-रहित अवस्थान।

सामाइअ वि [सामाजिक] समाज का, समूह से संबन्ध रखनेवाला, सभ्य।

सामाइअ वि [श्यामायित] रात्रि-सदृश।

सामाग पुं [श्यामाक] भ० महावीर के समय का एक गृहस्थ, जिसके ऋजुवालिका नदी के किनारे पर स्थित क्षेत्र में महावीर को केवल ज्ञान हुआ था।

सामाजिअ देखो सामाइअ = सामाजिक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामाण देखो समाण = समान।
सामाण पुंन [सामान] एक देव-विमान।
सामाणिअ वि [सामानिक] संनिहित, निकट-वर्ती। पुं. इन्द्र के समान ऋद्धिवाले देवों की एक जाति।
सामाय अक [श्यामाय्] काला होना।
सामाय देखो सामय = श्यामाक।
सामाय पुं. संयम-विशेष, सामायिक।
सामायारि वि [सामाचारिन्] आचरण करनेवाला।
सामायारी स्त्री [सामाचारी] साधु का आचार।
सामास देखो सामा-स = श्यामा-श।
सामासिय वि [सामासिक] समास-संबन्धी।
सामि, सामिअ वि [स्वामिन्] नायक, अधिपति। ईश्वर, मालिक। स्त्री. °णी। पुं. प्रभु। राजा। भर्ता। °कुट्ठ पुं [°कुष्ठ] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक्कीसवें जिन-देव। देखो साम-कोट्ठ। °त्त न [°त्व] मालकियत, आधिपत्य। न. नगर-विशेष।
सामिअ वि [दे] दग्ध।
सामिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ।
सामिद्धि स्त्री [समृद्धि] अति संपत्ति। वृद्धि।
सामिधेय न [सामिधेय] काष्ठ-समूह।
सामिली न [स्वामिलिन्] वत्स गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उस में उत्पन्न।
सामिसाल देखो सामि।
सामिहेय देखो सामिधेय।
सामीर वि समीर-संबन्धी।
सामुंडअ पुं [दे] बरु तृण, जिसकी कलम की जाती है।
सामुग्ग वि [सामुद्ग] संपुटाकारवाला।
सामुच्छेइय वि [सामुच्छेदिक] वस्तु को एकान्त क्षणिक माननेवाला एक मत और उसका अनुयायी।
सामुदाइय वि [सामुदायिक] समुदाय का, समुदाय से संबन्ध रखनेवाला।
सामुदाणिय वि [सामुदानिक] भिक्षा-संबन्धी, भिक्षा से लब्ध। भिक्षा, भैक्ष।
सामुद्द पुं [दे] इक्षु-समान तृण-विशेष।
सामुद्द, सामुद्दय वि [सामुद्र,°क] समुद्र-सम्बन्धी, सागर का। न. छन्द-विशेष।
सामुद्दिअ न [सामुद्रिक] शरीर पर के चिह्नों का शुभा-शुभ फल बतलानेवाला शास्त्र। शरीर की रेखा आदि चिह्न। वि. सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता।
सामुयाणिय देखो सामुदाणिय।
साय देखो साइज्ज = स्वाद्, सात्मी + कृ।
साय देखो साग = शाक।
साय न [सात] सुख। सुख का कारण-भूत कर्म। एक देव-विमान। °वाइ वि [°वादिन्] सुख-सेवन से ही सुख की उत्पत्ति मानने-वाला। °वाहण पुं [°वाहन] एक प्रसिद्ध राजा। °गारव पुंन [°गौरव] सुख-शीलता। सुख का गर्व। °सुक्ख न [°सौख्य] अतिशय सुख। देखो सात = सात।
साय पुं [स्वाद] रस का अनुभव।
साय न [दे] महाराष्ट्र देश का एक नगर। दूर।
सायं अ [सायम्] सन्ध्या-समय। सत्य। °कार पुं. सत्य। सत्य-करण। °तण वि [°तन] सन्ध्या-समय का।
सायंदूर न [दे] नगर-विशेष।
सायंदूला स्त्री [दे] केतकी, केवड़े का गाछ।
सायकुंभ न [शातकुम्भ] सुवर्ण। वि. सुवर्ण का बना हुआ।
सायग पुं [सायक] बाण, तीर।
सायग वि [स्वादक] स्वाद लेनेवाला।
सायणा स्त्री [शातना] खण्डन, छेदन।
सायणी स्त्री [शायनी, स्वापनी] मनुष्य की दसवीं ९० से १०० वर्ष की दशा।
सायत्त वि [स्वायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सायय देखो सायग ।

सायर पुं [सागर] समुद्र । ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौथे जिन-देव । मृग-विशेष । संख्या विशेष । एक सेठ । °घोस पुं [°घोष] एक जैन मुनि जो आठवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे। °भद्द पुं [°भद्र] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा । देखो सागर = सागर ।

सायर वि [सादर] आदर-युक्त ।

सायार देखो सागार = साकार ।

सार सक [प्र + हृ] प्रहार करना ।

सार सक [स्मारय्] याद दिलाना ।

सार सक [सारय्] दुरुस्त करना । प्रख्यात करना । प्रेरणा करना । उन्नत करना, उत्कृष्ट बनाना । सिद्ध करना । खोजना । सरकाना, खिसकाना, अन्य स्थान में ले जाना ।

सार सक [स्वरय्] बुलवाना । उच्चारण-योग्य करना ।

सार वि [शार] चितकबरा । पुं. सार, पासा ।

सार पुंन. धन । न्याययुक्त । बल, पराक्रम । परमार्थ । प्रकर्ष । फल । परिणाम । रस, निचोड़ । एक देव-विमान । स्थिर अंश । पुं. वृक्ष-विशेष । छन्द-विशेष । वि. श्रेष्ठ । °कंता स्त्री [°कान्ता] षड्ज ग्राम की एक मूर्छना । °य वि [°द] सार देनेवाला । °वई स्त्री [°वती] छन्द-विशेष । °वंत वि [°वत्] सार-युक्त । °वंती देखो °वई ।

सारइय वि [शारदिक] शरद् ऋतु का ।

सारंग वि [शार्ङ्ग] सींग का बना हुआ । न. धनुष । आर्द्रक, आदी । विष्णु का धनुष । °पाणि पुं. विष्णु ।

सारंग पुं. सिंह । चातक पक्षी । हरिण । हाथी । भ्रमर । छत्र । राजहंस । चित्र-मृग । वाद्य-विशेष । शंख । मयूर । धनुष । केश । आभरण, अलंकार । वस्त्र । पद्म । चन्दन । कपूर । फूल । कोयल । मेघ । °रूअक्क, °रूपक (अप) पुंन छन्द-विशेष ।

सारंग न [साराङ्ग] प्रधान दल, श्रेष्ठ अवयव ।

सारंगि पुं [शार्ङ्गिन्] विष्णु, श्रीकृष्ण ।

सारंगिका } स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष ।
सारंगिक्का }

सारंगी स्त्री [सारङ्गी] हरिणी । वाद्य-विशेष ।

सारंभ देखो संरंभ ।

सारकल्लाण पुं [सारकल्याण] वलयाकार वनस्पति-विशेष । देखो सालकल्लाण ।

सारक्ख सक [सं + रक्ष्] परिपालन करना, अच्छी तरह रक्षण करना ।

सारक्खेत्तु वि [संरक्षितृ] संरक्षण-कर्ता ।

सारग देखो सारय = स्मारक ।

सारज्ज न [स्वाराज्य] स्वर्ग का राज्य ।

सारण पुं. एक यादव-कुमार । रावणाधीन एक सामन्त राजा । रावण का मन्त्री । रावण का एक सुभट । न. ले जाना, प्रापण ।

सारण न [स्मारण] याद कराना । वि. याद दिलानेवाला । स्त्री. °णिया, °णी ।

सारणा न [स्मारणा] याद दिलाना ।

सारणि } स्त्री [सारणि, °णी] आलवाल,
सारणी } नीक, कियारी । परम्परा ।

सारत्थ न [सारथ्य] सारथिपन ।

सारदा देखो सारया ।

सारदिअ देखो सारइय ।

सारमिअ वि [दे] याद कराया हुआ ।

सारमेअ पुं [सारमेय] श्वान ।

सारय वि [शारद] शरद् ऋतु का ।

सारय वि [सारक] श्रेष्ठ कर्ता । साधक ।

सारय वि [स्मारक] याद करनेवाला । याद दिलानेवाला ।

सारय वि [स्वारत] आसक्त, खूब लीन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारय देखो सार-य ।
सारया स्त्री [शारदा] सरस्वती देवी ।
सारव देखो सार = सारय् ।
सारव सक [समा + रच] साफ करना, दुरुस्त करना ।
सारव सक [समा + रभ्] शुरुआत करना ।
सारवण न [समारचन] सम्मार्जन ।
सारस पुं. पक्षि-विशेष । छन्द-विशेष ।
सारसी स्त्री. षड्ज ग्राम की एक मूर्छना । मादा सारसपक्षी । छन्द-विशेष ।
सारस्सय पुं [सारस्वत] लोकान्तिक देवों की एक जाति ।
सारह न [सारघ] मधु, शहद ।
सारहि पुं [सारथि] रथ हाँकनेवाला ।
साराडि पुस्त्री [दे] शरारि पक्षी ।
साराय अक [साराय्] सार-रूप होना ।
साराव सक [सारय्] चिपकवाना, लगवाना, सील कराना ।
सारि स्त्री [शारि] मैना । पासा खेलने का रंग-बिरंगा साँचा । युद्ध के लिए गज-पर्याण ।
सारि देखो सारी (दे) ।
सारिअ वि [सारिक] सारवाला ।
सारिअ वि [सारित] चिपकाया हुआ, सील किया हुआ ।
सारिआ } स्त्री [सारिका] मैना, पक्षि-
सारिइआ } विशेष ।
सारिक्ख न [सादृक्ष्य] समानता, सरीखाई ।
सारिक्ख } वि [सदृक्ष] समान, सरीखा ।
सारिच्छ }
सारिच्छ देखो सारिक्ख = सादृक्ष्य ।
सारिच्छिआ स्त्री [दे] दूर्वा, दूब ।
सारिस देखो सरिस = सदृश ।
सारिस } न [सादृश्य] समानता, सरी-
सारिस्स } खाई ।
सारी स्त्री [दे] ऋषि का आसन । मिट्टी ।
सारी स्त्री [शारी] देखो सारि = शारि ।
सारीर } वि [शारीर]शरीर का, शरीर-
सारीरिय } सम्बन्धी । वि [शारीरिक] ।
सारूवि } पुं [सारूपिन्, °क] जैन साधु-
सारूविअ } के समान वेष को धारण करने-वाला रजोहरण-वर्जित स्त्री-रहित गृहस्थ, साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला जैन पुरुष ।
सारूविअ न [सारूप्य] समान-रूपता ।
सारेच्छ देखो सारिच्छ = सादृक्ष्य ।
सारोहि वि [संरोहिन्] संरोहण-कर्ता ।
साल पुं [शाल] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष । साखू का पेड़ । वृक्ष । किला, प्राकार । एक राजा । पक्षि-विशेष । पुंन. एक देव-विमान । °कोट्ठय न [°कोष्ठक] चैत्य-विशेष । °वाहण, °हण [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा ।
साल देखो सार = सार । °इय वि [°चित] सार-युक्त ।
साल न [शाला] घर ।
साल पुं [श्याल] साला, बहू का भाई ।
साल पुं. देखो साला = (दे) । °मंत वि [°वत्] शाखावाला ।
साल° देखो साला = शाला । °गिह, °घर न [°गृह] भित्ति-रहित या बरामदावाला घर ।
सालइय देखो सारइय = शारदिक ।
सालंकायण न [शालङ्कायन] कौशिक की एक शाखा-गोत्र । पुंस्त्री. उस गोत्रवाला ।
सालंकी स्त्री [दे] सारिका, मैना ।
सालंगणी स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणी ।
सालंब वि [सालम्ब] अवलम्बन-युक्त ।
सालकल्लाण पुं [शालकल्याण] वृक्ष-विशेष । देखो सारकल्लाण ।
सालक्किआ स्त्री [दे] सारिका, मैना ।
सालग न [दे] वृक्ष को बाहरी छाल । लम्बी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाखा । रस ।

सालणय न [सारणक] कढ़ी के समान एक तरह का खाद्य ।

सालभंजी देखो सालहंजी ।

सालस वि. आलसी ।

सालहंजिया } स्त्री [शालभञ्जिका, °ञ्जी]
सालहंजी } काष्ठ आदि की बनाई हुई पुतली ।

सालहिआ } स्त्री [दे] सारिका, मैना ।
सालही }

साला स्त्री [शाला] गृह । भित्ति-रहित घर । छन्द-विशेष ।

साला स्त्री [दे] शाखा ।

सालाइय देखो सलाग ।

सालाणय वि [दे] स्तुत । स्तुत्य ।

सालाहण देखो साल-हण = शाल-वाहन ।

सालि पुंन [शालि] व्रीहि । वलयाकार वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष । °भद्द पुं [°भद्र] एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने भ० महावीर के पास दीक्षा ली थी । °भसेल, °भसेल्ल पुं [दे] धान के कणिश—बाल का तीक्ष्ण अग्रभाग । °रक्खिआ स्त्री [°रक्षिका] धान का रक्षण करनेवाली स्त्री, कलम-गोपी । °वाहण पुं [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा । देखो सालवाहण । °सच्छिय पुं [°साक्षिक] मत्स्य की एक जाति । °सित्थ पुं [°सिक्थ] मत्स्य-विशेष ।

°सालि वि [°शालिन्] शोभनेवाला ।

सालिआ स्त्री [शालिका] घर का कमरा ।

सालिआ देखो साडिआ ।

सालिणिआ } स्त्री [शालिनिका, °नी]
सालिणी } शोभनेवाली । छन्द-विशेष ।

सालिभंजिया स्त्री [शालिभञ्जिका] पुतली ।

सालिय पुं [शालिक] जुलाहा ।

सालिय वि [शाल्मलिक] सेमल के गाछ का ।

सालिस देखो सारिस = सदृश ।

सालिहीपिउ पुं [शालिहीपितृ] एक जैन गृहस्थ ।

साली स्त्री [श्याली] पत्नी-भगिनी ।

सालुअ पुंन [शालूक] कमल-कन्द ।

सालुअ न [दे] शम्बूक, शंख । सूखे यव आदि धान्य का अग्र भाग ।

सालूर पुंस्त्री [शालूर] मेंढक । न. छन्द-विशेष ।

साव सक [श्रावय्] सुनाना ।

साव पुं [शाप] सराप, आक्रोश । शपथ ।

साव पुं [शाव] बालक, बच्चा ।

साव पुं [स्वाप] स्वपन, शयन, सोना ।

साव (अप) देखो सव्व = सर्व ।

सावइज्ज देखो सावएज्ज ।

सावइत्तु वि [श्रावयितृ] सुनानेवाला ।

सावएज्ज न [स्वापतेय] धन, द्रव्य ।

सावक्क वि [सापत्न्य] सपत्नीपन, सौतिनपन ।

सावक्क वि [सापत्न] सौतेली माँ की सन्तान ।

सावक्का स्त्री [सपत्नी] सौतेली माँ, विमाता ।

सावग पुंन [श्रावक] जैन उपासक, अर्हद्-भक्त-गृहस्थ । ब्राह्मण । वृद्ध श्रावक । वि. सुनने-वाला । सुनानेवाला । °धम्म पुं. [°धर्म] प्राणातिपात-विरमण आदि बारह व्रत, जैन गृहस्थ का धर्म ।

सावज्ज वि [सावद्य] पाप-युक्त ।

सावण न [श्रावण] सुनना । पुं. सावन का महीना । वि. श्रवणेन्द्रिय-सम्बन्धी । जो कान से सुना जाय वह ।

सावणा स्त्री [श्रावणा] सुनाना ।

सावणी स्त्री [स्वापनी] देखो सायणी ।

सावतेज्ज } देखो सावएज्ज ।
सावतेय }

सावत्त देखो सावक्क ।

सावत्थिगा स्त्री [श्रावस्तिका] जैन मुनि-शाखा ।

सावत्थी स्त्री [श्रावस्ती] कुणाल देश की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राचीन राजधानी ।

सावन्न (अप) देखो सामण्ण = सामान्य ।

सावय देखो सावग ।

सावय पुं [श्वापद] शिकारी पशु ।

सावय पुं [दे] शरभ, श्वापद पशु । बालों की जड़ में होनेवाला एक क्षुद्र कीट ।

सावय पुं [शावक] बालक, बच्चा, शिशु ।

सावरी स्त्री [शावरी] विद्या-विशेष ।

सावसेस वि [सावशेष] अवशिष्ट ।

सावहाण वि [सावधान] सचेत ।

साविअ वि [शापित] जिसको शाप या सौगन्ध दिया गया हो वह ।

साविआ स्त्री [श्राविका] जैन गृहस्थ-धर्म पालनेवाली स्त्री ।

साविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा-युक्त ।

साविगा देखो साविआ ।

साविट्ठी स्त्री [श्राविष्ठी] श्रावण मास की पूर्णिमा । श्रावण की अमावस ।

सावित्ती स्त्री [सावित्री] ब्रह्मा की पत्नी ।

साविह पुं [श्वाविध] श्वापद पशु, साही ।

सावेक्ख देखो साविक्ख ।

सास सक [शास्] सजा करना । सीख देना । हुकुम करना ।

सास सक [कथय्] कहना ।

सास पुं [श्वास] साँस । श्वास-रोग । °हरा स्त्री [°धरा] जीवन धारण करनेवाली ।

सास पुंन [शस्य, सस्य] क्षेत्र-गत धान्य । वृक्ष आदि का फल । वि. वध-योग्य । प्रशंसनीय । देखो सस्स = शस्य ।

सासग पुंन [सस्यक] रत्न की एक जाति ।

सासग पुं. [सासक] बीयक नाम का पेड़ ।

सासण न [शासन] द्वादशांगी, बारह जैन अंग-ग्रन्थ, आगम, सिद्धान्त, शास्त्र । प्रतिपादन । शिक्षा । आज्ञा । ग्रास, निर्वाह-साधन । वि. प्रतिपादक । प्रतिपाद्य । °देवी स्त्री. । °सुरा स्त्री [°सुरी] शासन की अधिष्ठात्री देवी ।

सासण देखो सासायण ।

सासणा स्त्री [शासना] शिक्षा ।

सासणावण न [शासन] आज्ञापन ।

सासय वि [शाश्वत] नित्य ।

सासय पुं [स्वाश्रय] निज का आधार ।

सासव पुं [सर्षप] सरसों । °नालिया स्त्री [°नालिका] कन्द-विशेष ।

सासवूल पुं [दे] एक पेड़, कौंछ, कवाछ ।

सासाण / सासायण } न [सास्वादन] द्वितीय गुण-स्थान । वि. उस में वर्तमान जीव ।

सासि वि [श्वासिन्] श्वास-रोगवाला ।

सासिदु (शौ) वि [शासितृ] शासन-कर्ता, शिक्षा-कर्ता ।

सासुया देखो सासू ।

सासुर न [श्वाशुर] श्वशुर-गृह ।

सासुर (अप) देखो ससुर = श्वशुर ।

सासू स्त्री [श्वश्रू] सासू ।

सासूय वि [सासूय] असूया-युक्त, मत्सरी ।

सासेरा स्त्री [दे] यन्त्र की बनी नर्तकी ।

साह सक [कथय्, शास्] कहना ।

साह देखो सलाह = श्लाघ् ।

साह सक [साध्] सिद्ध करना, बनाना ।

साह पुं. [दे] बालू । उलूक । दही की मलाई । प्रिय, पति ।

साह (अप) देखो सव्व = सर्व ।

साहंजण / साहंजय } पुं [दे] गोक्षुर, गोखरू ।

साहंजणी स्त्री [साभाञ्जनी] नगरी-विशेष ।

साहग वि [साधक] सिद्धि करनेवाला ।

साहग वि [शासक, कथक] कहनेवाला ।

साहज्ज न [साहाय्य] सहायता ।

साहट्ट सक [सं + वृ] संवरण करना, समेटना । पिंडीभूत करना ।

साहट्टु अ [संहृत्य] समेट या संकुचित कर ।

साहट्ठ वि [संहृष्ट] पुलकित ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहण सक [सं + हन्] संघात करना, संहत करना, चिपकाना।

साहण न [साधन] उपाय, कारण। सैन्य। वि. सिद्ध करनेवाला।

साहणण न [संहनन] संघात, अवयवों का आपस में चिपकाना।

साहणिअ पुं [साधनिक] सेना-पति।

साहत्थिं अ [स्वहस्तेन] अपने हाथ से। साक्षात्।

साहत्थिया } साहत्थी } स्त्री [स्वाहस्तिकी] क्रिया-विशेष, अपने हाथ से गृहीत जीव आदि द्वारा हिंसा करने से होनेवाला कर्म-बन्ध।

साहम्म न [साधर्म्य] समान धर्म। सादृश्य।

साहम्मि } साहम्मिअ } साहम्मिग } वि [सधर्मिन्, सार्धर्मिन्] समान धर्मवाला। एक-धर्मी। स्त्री.°णी। वि [सार्धर्मिक]।

साहय देखो साहग।

साहय वि [संहृत] संक्षिप्त, समेटा हुआ।

साहर सक [सं + वृ] संवरण करना।

साहर सक [सं + हृ] संकोच करना। संक्षेप करना। स्थानान्तर में ले जाना। अन्यत्र फेंकना। प्रवेश कराना। छिपाना। व्यापार-रहित करना।

साहरय वि [दे] गत-मोह।

साहल्ल न [साफल्य] सफलता।

साहव देखो साहु = साधु।

साहव न [साधव] साधुता।

साहव्व न [स्वाभाव्य] स्वभावता।

साहस न. बिना विचार किया जाता काम। पुं. विद्याधर नरेन्द्र, साहस-गति। °गइ पुं [°गति] वही अर्थ।

साहस देखो साहस्स = साहस्र।

साहसिअ वि [साहसिक] साहस कर्म करनेवाला।

साहस्स वि [साहस्र] जिसका मूल्य हजार (मुद्रा, रुपया आदि) हो। हजार का परिमाणवाला। न हजार। °मल्ल पुं. व्यक्तिवाचक नाम।

साहस्सिय वि [साहस्रिक] हजार का परिमाणवाला। हजार आदमी के साथ लड़नेवाला मल्ल।

साहस्सी स्त्री [साहस्री] हजार।

साहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा।

साहा अ [स्वाहा] देवता के उद्देश से द्रव्य-त्याग का सूचक अव्यय, आहुति-सूचक शब्द।

साहा स्त्री [शाखा] एक ही आचार्य की संतति में उत्पन्न अमुक मुनि की सन्तान-परम्परा। वृक्ष की डाल। वेद का एक देश। °भंग पुं [°भङ्ग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव। °मय, °मिअ, °मिग पुं [°मृग] वानर। °र, ल वि [°वत्] शाखावाला। पुं. वृक्ष।

साहाणुसाहि पुं [दे] शक देश का सम्राट्।

साहार सक [सं + धारय्] अच्छी तरह धारण करना।

साहार पुं [सहकार] आम का गाछ।

साहार पुं [दे. साधुकार] साहुकार।

साहार पुं [सदाधार, सहकार] अच्छा आधार, अवलम्बन, मदद, उपकार।

साहार वि [साहकार] आम के गाछ से उत्पन्न, आम्र-वृक्ष-सम्बन्धी।

साहार } साहारण } पुंन [साधारण] जहाँ एक शरीर में अनन्त जीव हों वह वनस्पति, कन्द आदि। जिसके उदय से साधारण-वनस्पति में जन्म हो वह कर्म। कारण। पुं साधारण वनस्पति-काय का जीव। वि. सामान्य। समान। पुंन. उपकार, सहायता। °सरीरनाम न [°शरीरनामन्] ऊपर का दूसरा अर्थ।

साहारण न [संधारण] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना।

साहारण न [स्वाधारण] सहारा करना, उपकार करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहारण न [संहरण] संकोचन, समेटन।
साहाविअ वि [स्वाभाविक] स्वभाव-सिद्ध, नैसर्गिक।
साहि पुं [शाखिन्] वृक्ष।
साहि पुं [दे] शक देश का सामन्त राजा। देखो साहि।
साहि (अप) सामि = स्वामिन्।
साहिअ वि [साधिक] सविशेष।
साहिअ वि [स्वाहित] स्वहित से विरुद्ध।
साहिकरण वि [साधिकरण] अधिकरणयुक्त, झगड़ला।
साहिकरणि वि [साधिकरणिन्] अधिकरण-युक्त, शरीर आदि अधिकरणवाला।
साहिगरण देखो साहिकरण।
साहिगरणि देखो साहिकरणि।
साहिज्ज देखो साहज्ज।
साहिण (अप) वि [कथिन्] कहनेवाला।
साहित्त न [साहित्य] अलंकार-शास्त्र।
साहिप्पंत / साहियमाण / साहिय्यंत } साह = कथय् का कवकृ.।
साहिलय न [दे] मधु।
साही स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला। मार्ग। राज-मार्ग। खिड़की, छोटा दरवाजा।
साहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त।
साहीय देखो साहिअ = साधिक।
साहु पुं [साधु] मुनि, यति। सज्जन। वि. सुन्दर, शोभन। °कम्म न [°कर्मन्] निर्वि-कृतिक तप। °कार, °क्कार पुं. धन्यवाद, प्रशंसा। °नाह पुं [°नाथ] श्रेष्ठ मुनि, आचार्य। °वाय पुन [°वाद] प्रशंसा।
साहुई / साहुणी } स्त्री [साध्वी] स्त्री-साधु, श्रमणी, यतिनी। सती स्त्री। अच्छी।
साहुलिआ / साहुली } स्त्री [दे] वस्त्र, वस्त्राञ्चल। शिरोवस्त्र-खण्ड। डाली। भ्रू। भुज। कोयल। सदृश। सखी, सहचरी। मयूर-पिच्छ।
साहेज्ज देखो साहज्ज।
साहेज्ज वि [दे] अनुगृहीत।
सिअ देखो सिव = शिव।
सिअ वि [श्रित] आश्रित।
सिअ देखो सिआ = स्यात्।
सिअ वि [शित] तीक्ष्ण धारवाला।
सिअ वि [स्वित] अच्छी तरह प्राप्त।
सिअ पुं [सित] शुक्ल वर्ण। वि. श्वेत। न. एक श्वेत-वर्ण का कारण-भूत नाम-कर्म। °किरण पुं. चन्द्र। °गिरि पुं. वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर। °ज्झाण न [°ध्यान] सर्व-श्रेष्ठ या शुक्ल ध्यान। °पक्ख पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष। °यर पुं [°कर] चन्द्रमा। °वड पुं [°पट] पाल, जहाज का बादवान। °वास पुं [°वासस्] श्वेताम्बर जैन।
सिअ (अप) देखो सिरी = श्री। °वंत वि [°मत्] लक्ष्मी-सम्पन्न।
सिअअ देखो सित्तय।
सिअंग पुं [दे] वरुण देवता।
सिअंबर पुं [श्वेताम्बर] जैनों का एक सम्प्र-दाय, श्वेताम्बर जैन।
सिअल्लि पुंस्त्री [दे] देखो सीअल्लि।
सिआ देखो सिवा = शिवा।
सिआ अ [स्यात्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रशंसा। सत्ता। संशय। प्रश्न। अवधारण, निश्चय। विवाद। विचारणा। अनेकान्त, अनिश्चय, कदाचित्। °वाइ पुं [°वादिन्] जिनदेव। °वाय पुं [°वाद] अनेकान्त-जैन दर्शन।
सिआ स्त्री [सिता] शुक्ल-लेश्या। द्राक्षा आदि का संग्रह।
सिआल पुं [शृगाल, सृगाल] सियार। दैत्य-विशेष। वासुदेव। निष्ठुर। दुर्जन।
सिआली स्त्री [दे] डमर, देश का भीतरी या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाहरी उपद्रव।

सिआलीस स्त्रीन [षट्चत्वारिंशत्] छेआ-लीस।

सिआसिअ पुं [सितासित] बलभद्र। वि. श्वेत और कृष्ण।

सिइ पुं [शिति] हरा वर्ण। वि. हरा वर्ण-वाला। °**पावरण** पुं. [°प्रावरण] बलराम।

सिइ पुं [दे. शिति] सीढ़ी, निःश्रेणि।

सिउं (अप) देखो **समं**।

सिउंठा स्त्री [दे. असिकुण्ठा] साधारण वनस्पति-विशेष।

सिएअर वि [सितेतर] काला।

सिंकला देखो **संकला**।

सिंखल न [दे] नूपुर।

सिंखला देखो **संकला**।

सिंग न [शृङ्ग] छब्बीस दिनों के उपवास। देखो **संग** = शृङ्ग। °**णाइय** न [°नादित] प्रधान काज। °**पाय** न [°पात्र] सींग का बना पात्र। °**माल** पुं. वृक्ष-विशेष। °**वंदण** न [°वन्दन] ललाट से नमन। °**वेर** न. आर्द्रक। शुण्ठी।

सिंग वि [दे] कृश।

सिंगय वि [दे] तरुण।

सिंगरीडी देखो **सिंगिरीडी**।

सिंगा स्त्री [दे] फली।

सिंगार पुं [शृङ्गार] नाट्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष। वेष भूषण आदि की सजावट। लवङ्ग। सिन्दूर। चूर्ण। काला अगरु। आर्द्रक। हाथी का भूषण। अलंकार। वि. अतिशय शोभावाला।

सिंगार सक [शृङ्गारय्] सिंगार करना, सजावट करना।

सिंगारिअ वि [शृङ्गारिक] शृङ्गार-युक्त।

सिंगि वि [शृङ्गिन्] सींगवाला। पुं. मेष, भेड़। पर्वत। भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत। मुनि-विशेष। वृक्ष।

सिंगिणी स्त्री [दे] गो।

सिंगिया स्त्री [शृङ्गिका] पिचकारी।

सिंगिरीडी स्त्री [शृङ्गिरीटी] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

सिंगी स्त्री [शृङ्गी] देखो **सिंगिया**।

सिंगेरिवम्म न [दे] वल्मीक।

सिंघ सक [शिङ्घ्] सूँघना।

सिंघ देखो **सिंह**।

सिंघल देखो **सिंहल**।

सिंघाडग, **सिंघाडय** पुंन [शृङ्गाटक] सिंघाड़ा, पानी-फल। त्रिकोण मार्ग। पुं राहु।

सिंघाण पुंन [शिङ्घाण] नासिका-मल, श्लेष्मा। पुं. काला पुद्गल-विशेष।

सिंघासण देखो **सिंहासण**।

सिंघुअ पुं [दे] राहु।

सिंच सक [सिच्] सींचना, छिड़कना।

सिंचाण पुं [दे] श्येन पक्षी।

सिंज अक [शिञ्ज्] अस्फुट आवाज करना।

सिंजण न [शिञ्जन] अस्पष्ट शब्द, भूषण की आवाज। वि. अस्पष्ट आवाज करनेवाला।

सिंजा स्त्री [शिञ्जा] भूषण का शब्द।

सिंजिणी स्त्री [शिञ्जिनी] धनुष की डोरी।

सिंझ पुंन [सिध्मन्] कुष्ठ रोग-विशेष।

सिंड वि [दे] मोड़ा हुआ।

सिंढ पुं [दे] मयूर।

सिंढा स्त्री [दे] नाक की आवाज।

सिंदाण न [दे] विमान।

सिंदी स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का गाछ।

सिंदीर न [दे] नूपुर।

सिंदु स्त्री [दे] रज्जु।

सिंदुरय न [दे] रज्जु। राज्य।

सिंदुवण पुं [दे] अग्नि।

सिंदुवार पुं [सिन्दुवार] वृक्ष-विशेष, निर्गुण्डी, सम्हालु का गाछ।

सिंदूर न [दे] राज्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंदूर न [सिन्दूर] रक्त-वर्ण, चूर्ण-विशेष। पुं. वृक्ष-विशेष।

सिंदोल न [दे] खजूर।

सिंदोला स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का पेड़।

सिंधव न [सैन्धव] सिंध देश का लवण। पुं. घोड़ा।

सिंधविया स्त्री [सैन्धविका] लिपि-विशेष।

सिंधु स्त्री [सिन्धु] सिन्धु नदी। नदी। सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी। पुं. समुद्र। सिन्धदेश। द्वीप-विशेष। पद्म-विशेष। °णद न [°नद] नगर-विशेष। °णाह पुं [°नाथ] समुद्र। °देवी स्त्री. सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी। °देवीकूड पुं [°देवीकूट] क्षुद्र हिमवंत पर्वत का एक शिखर। °प्पवाय पुंन [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ पर्वत से सिन्धु नदी गिरती है। °राय पुं [°राज] सिन्ध देश का राजा। °वइ पुं [°पति] समुद्र। सिन्ध देश का राजा। °सोवीर पुं [°सौवीर] सिन्धु नदी के समीप का देश।

सिंधुर पुं [सिन्धुर] हाथी।

सिंप देखो सिंच।

सिंपुअ वि [दे] पागल, भूताविष्ट।

सिंबल पुं [शाल्मल] सेमल का गाछ।

सिंबलि देखो संबलि = शाल्मलि।

सिंबलि स्त्री [शिम्बलि, शिम्बा] कलाय आदि की फली, छीमी, फलियाँ। °थालग पुंन [°स्थालक] फली की थाली। फली का पाक। देखो संबलि।

सिंबलिका स्त्री [सिम्बलिका] टोकरी।

सिंबा स्त्री [शिम्बा] फली, छीमी।

सिंबाडी स्त्री [दे] नाक की आवाज।

सिंबीर न [दे] पलाल, घास।

सिंभ पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ।

सिंभलि देखो सिंबलि = शाल्मलि।

सिंभि वि [श्लेष्मिन्] श्लेष्म-रोगी।

सिंभिय वि [श्लैष्मिक] श्लेष्म-सम्बन्धी।

सिंह पुं. मृगराज, केसरी। एक राज-कुमार। एक राजा। भ० महावीर का एक शिष्य, मुनि-विशेष। व्रत-विशेष, त्रिविधाहार की संलेखना—परित्याग। °अलोअण (अप) न [°विलोकन] सिंह की तरह पीछे देखना। छन्द-विशेष। °उर न [°पुर] पंजाब देश का एक प्राचीन नगर। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष। °केसर पुं. एक प्रकार का उत्तम मोदक। °दत्त पुं. एक व्यक्ति। वि. सिंह से दिया हुआ। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार। °विलोक पुं. सिंह की तरह पीछे की तरफ देखना। छन्द-विशेष। °सण न [°सन] राज-गद्दी। देखो सीह।

सिंहल पुं. सिंहल-द्वीप। पुंस्त्री. उस का निवासी।

सिंहलिआ स्त्री [दे] शिखा।

सिंहिणी स्त्री [सिंहिनी] छन्द-विशेष।

सिंहीभूय न [सिंहीभूत] व्रत-विशेष, चतुर्विध आहार की संलेखना—परित्याग।

सिकता } स्त्री. रेत।
सिकया }

सिक्क पुं [सृक्क] होठ का अन्त भाग।

सिक्कग पुंन [शिक्यक] सिकहर, सीका, छींका।

सिक्कड पुंन [दे] खटिया, मचिया।

सिक्कय देखो सिक्कग।

सिक्करा स्त्री [शर्करा] खंड, टुकड़ा।

सिक्करिअ न [सीत्कृत] अनुराग की आवाज।

सिक्करिआ स्त्री [दे श्रीकरी] जहाज का आभरण-विशेष।

सिक्कार पुं [सीत्कार] अनुराग की आवाज। हाथी की चिल्लाहट।

सिक्किआ स्त्री [शिक्या, शिक्यिका] चढ़ने के लिए रस्सी की बनी हुई एक चीज।

सिक्ख सक [शिक्ष्] सीखना, पढ़ना। अभ्यास, करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिक्ख देखो सिक्खाव ।
सिक्खग वि [शिक्षक] शिक्षा-कर्ता ।
सिक्खग पुं [शैक्षक] नूतन शिष्य ।
सिक्खण न [शिक्षण] अभ्यास, पाठ । सीख, उपदेश । अध्यापन, पाठन ।
सिक्खव देखो सिक्खाव ।
सिक्खवअ वि [शिक्षक] शिक्षा देनेवाला । पढ़ानेवाला ।
सिक्खा स्त्री [शिक्षा] सजा । वेद का एक अङ्ग, वर्णों के उच्चारण-सम्बन्धी ग्रंथ-विशेष, अक्षरों के स्वरूप को बतलानेवाला शास्त्र । शास्त्र और आचार-सम्बन्धी शिक्षण, अभ्यास, उपदेश । °वय न [°व्रत] जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत । °वय न [°पद] शिक्षा-स्थान ।
सिक्खा (अप) स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष ।
सिक्खाण न [शिक्षाण] आचार-सम्बन्धी उपदेश देनेवाला शास्त्र ।
सिक्खाव सक [शिक्षय्] सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना ।
सिक्खावअ देखो सिक्खवअ ।
सिक्खावण न [शिक्षण] सिखाना, सीख, हितोपदेश ।
सिक्खिअ वि [शिक्षित] सीखा हुआ, जानकार, विद्वान् ।
सिखा स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष ।
सिखि देखो सिहि = शिखिन् ।
सिगया देखो सिकया ।
सिगाल देखो सिआल ।
सिग्ग वि [दे] श्रान्त । पुंन. परिश्रम, थकावट ।
सिग्गु पुं [शिग्रु] सहिंजना का पेड़ ।
सिग्घ न [शीघ्र] जल्दी । वि. शीघ्रता-युक्त ।
सिचय पुं. वस्त्र, कपड़ा ।
सिच्छा स्त्री [स्वेच्छा] स्वच्छन्द ।
सिज्ज अक [स्विद्] पसीना होना ।
सिज्ज° देखो सिज्जा ।
सिज्जंभण पुं [शय्यंभण] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि ।
सिज्जंस देखो सेज्जंस = श्रेयांस ।
सिज्जा स्त्री [शय्या] बिछौना । उपाश्रय, वसति । °तरी, °यरी° स्त्री. उपाश्रय की मालकिन । °वाली स्त्री [°पाली] बिछौना का काम करनेवाली दासी । देखो सेज्जा ।
सिज्जिअ (अप) वि [सृष्ट] उत्पन्न किया हुआ, बनाया हुआ ।
सिज्जिर वि [स्वेत्तृ] पसीनावाला ।
सिज्जूर न [दे] राज्य ।
सिज्झ अक [सिध्] निष्पन्न होना । पकना । मुक्त होना । मंगल होना । गति करना, जाना । सक. शासन करना ।
सिज्झ देखो सिंझ ।
सिज्झणया } स्त्री [सेधना] सिद्धि, मुक्ति,
सिज्झणा } निर्वाण । निष्पत्ति, साधना ।
सिट्ठ वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम ।
सिट्ठ वि [सृष्ट] रचित, निर्मित । युक्त । निश्चित । भूषित । बहुल । त्यक्त ।
सिट्ठ वि [शिष्ट] कथित, उपदिष्ट । सज्जन, प्रतिष्ठित । °यार पुं [°चार] भलमनसी, सदाचार ।
सिट्ठ वि [दे] सो कर उठा हुआ ।
सिट्ठि स्त्री [सृष्टि] विश्व-निर्माण । निर्माण । स्वभाव । जिसका निर्माण होता हो वह । सीधा क्रम ।
सिट्ठि पुं [दे. श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ । °पय न [°पद] नगर-सेठ की पदवी । देखो सेट्ठि ।
सिट्ठिणी स्त्री [श्रेष्ठिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, सेठानी ।
सिड्ढी स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणि ।
सिढिल वि [शिथिर, शिथिल] श्लथ, ढीला । अदृढ़ । मन्द ।
सिढिल सक [शिथिलय्] शिथिल करना ।
सिढिलाविअ वि [शिथिलित] शिथिल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कराया हुआ ।
सिढिलीकय वि [शिथिलीकृत] शिथिल किया हुआ ।
सिढिलीभूय वि [शिथिलीभूत] शिथिल बना हुआ ।
सिण देखो सण = शण ।
सिणगार देखो सिंगार = शृङ्गार ।
सिणा अक [स्ना] नहाना । अवगाहन करना ।
सिणाउ पुंस्त्री [स्नायु] वायु वहन करनेवाली नाड़ी ।
सिणात देखो सिणाय = स्नात ।
सिणाय देखो सिणा ।
सिणाय, सिणायग, सिणायय } वि [स्नात, °क] प्रधान, श्रेष्ठ । केवलज्ञान प्राप्त मुनि, केवली भगवान् । बुद्ध शिष्य, बोधि सत्त्व ।
सिणाव सक [स्नपय्] स्नान करना ।
सिणि स्त्री [सृणि] अंकुश ।
सिणिज्झ सक [स्निह्] प्रीति करना ।
सिणिद्ध वि [स्निग्ध] प्रीति-युक्त । आर्द्र, रस-युक्त । मसृण, कोमल । चिकना । न. भात का माँड़ ।
सिणेह देखो सणेह ।
सिणेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेहवाला ।
सिण्ण वि [स्विन्न] स्वेद-युक्त ।
सिण्ण [शीर्ण] जीर्ण, गला हुआ ।
सिण्ह पुंन [शिश्न] पुरुष-लिंग ।
सिण्हा स्त्री [दे] हिम । अवश्याय, कुहरा ।
सिण्हालय पुंन [दे] फल-विशेष ।
सिति देखो सिइ = (दे) ।
सित्त वि [सिक्त] सींचा हुआ ।
सित्तुंज देखो सेत्तुंज ।
सित्थ न [दे] धनुष की डोरी ।
सित्थ न [सिक्थ] धान्य-कण । मोम । ओषधि विशेष, नीली, नील । पुंन. कवल, ग्रास ।
सित्था स्त्री [दे] लाला । धनुष की डोरी ।
सित्थि पुं [दे] मत्स्य ।
सिद्ध वि [दे] परिपाटित, विदारित ।
सिद्ध वि [सिद्ध] मुक्त, निर्वाण-प्राप्त । निष्पन्न बना हुआ । पका हुआ । शाश्वत । प्रतिष्ठित, लब्ध-प्रतिष्ठ । निश्चित, निर्णीत । विख्यात, साध्य-विलक्षण शब्द-विशेष । साबित किया हुआ । प्रतीत, ज्ञात । पुं. विद्या, मंत्र, कर्म, शिल्प आदि में जिसने पूर्णता प्राप्त की हो वह पुरुष । समय-परिमाण-विशेष, स्तोक-विशेष । न. लगातार पनरह दिनों के उपवास । पुंन. महाहिमवंत आदि अनेक पर्वतों के शिखरों का नाम । °क्खर पुंन [°क्षर] 'नमो अरिहंताणं' यह वाक्य । °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] सिद्ध-संबन्धी एक ग्रन्थ-प्रकरण । °चक्क न [°चक्र] अर्हन् आदि नव पद । °न्न न [°ान्न] पकाया हुआ अन्न । [°पुत्त] पुं [°पुत्र] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला पुरुष । °मणोरम पुं [°मनोरम] पक्ष का दूसरा दिन । °राय पुं [°राज] बारहवीं शताब्दी का गुजरात का सिद्धराज जयसिंह । °वाल पुं [°पाल] । बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक जैन कवि । °सेण पुं [°सेन] एक प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य । °सेणिया स्त्री [°श्रेणिया] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश । [°सेल] पुं [°शैल] शत्रुञ्जय पर्वत, जैन महातीर्थ । °हेम न [°हैम] आचार्य हेमचन्द्र का व्याकरण-ग्रन्थ ।
सिद्धंत पुं [सिद्धान्त] आगम, शास्त्र । निश्चय ।
सिद्धत्थ पुं [दे] रुद्र, देव-विशेष ।
सिद्धत्थ वि [सिद्धार्थ] कृतार्थ । पुं. भ० महावीर के पिता । ऐरवत वर्ष के भावी दूसरे जिनदेव । एक जैन मुनि, नववें बलदेव के दीक्षा-गुरु । वृक्ष-विशेष । सरसों । भ० महावीर के कान से कील निकालनेवाला वणिक् । एक देव-विमान । यक्ष-विशेष । पाटलिसंड नगर का एक राजा । एक गाँव । °पुर न. अंग देश का एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राचीन नगर। °वण न [°वन] वन-विशेष।

सिद्धत्था स्त्री [सिद्धार्था] भ० अभिनन्दन-स्वामी की माता। एक विद्या। भ० संभवनाथ जी की दीक्षा-शिविका।

सिद्धत्थिआ स्त्री [सिद्धार्थिका] मिष्ट-वस्तु-विशेष। रण-विशेष, सोने की कंठी।

सिद्धय पुं [सिद्धक] सिदुआर या शाल वृक्ष।

सिद्धा स्त्री [सिद्धा] भ० महावीर की शासन-देवी, सिद्धायिका। मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला।

सिद्धाइया स्त्री [सिद्धायिका] भ० महावीर की शासन-देवी।

सिद्धाययण पुंन [सिद्धायतन] शाश्वत मन्दिर। जिन-मन्दिर। अमुक पर्वतों के शिखरों का नाम।

सिद्धालय स्त्रीन [सिद्धालय] मुक्त-स्थान। सिद्ध-शिला। स्त्री. °या।

सिद्धि स्त्री [सिद्धि] सिद्ध-शिला, जहाँ मुक्त जीव रहते हैं। मुक्ति, निर्वाण। कर्म-क्षय। अणिमा आदि योग की शक्ति। कृतार्थता। निष्पत्ति। छन्द-विशेष। °गइ स्त्री [°गति] मुक्तिस्थान में गमन। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] ग्रन्थ-प्रकरण-विशेष। °पुर न. नगर-विशेष।

सिन्न स्त्रीन [सैन्य] हाथी घोड़ा की सेना आदि।

सिप्प देखो सिप।

सिप्प न [दे] पलाल, तृण-विशेष।

सिप्प न [शिल्प] कारु-कार्य, कारीगरी, चित्रादि-विज्ञान, कला, क्रिया-कुशलता। तेजस्काय, अग्नि-संघात। अग्नि का जीव। पुं. तेजस्काय का अधिष्ठाता देव। °सिद्ध पुं. कला में अतिकुशल। °ाजीव वि. कारीगर, कलाकार।

सिप्पा स्त्री [सिप्रा] उज्जैन के पास की नदी।

सिप्पि वि [शिल्पिन्] कारीगर, कलाकार। चित्र आदि कला में कुशल।

सिप्पि स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा।

सिप्पिअ वि [शिल्पिक] शिल्पी, कारीगर।

सिप्पिर न [दे] तृण-विशेष, पलाल, पुआल।

सिप्पी स्त्री [दे] सूची, सूई।

सिप्पीर देखो सिप्पिर।

सिबिर देखो सिविर।

सिब्भ देखो सिभ।

सिभा स्त्री [शिफा] वृक्ष का जटाकार मूल।

सिम स. सर्व।

सिम° देखो सीमा।

सिमसिम } अक [सिमसिमाय्] 'सिम सिम' आवाज करना।
सिमसिमाय }

सिमिण देखो सुमिण।

सिमिर (अप) देखो सिविर।

सिमिसिम } देखो सिमसिम।
सिमिसिमाअ }

सिमिसिमिय वि [सिमिसिमितृ] 'सिम-सिम' आवाज करनेवाला।

सिर सक [सृज्] बनाना, छोड़ना।

सिर न [शिरस्] मस्तक। प्रधान, श्रेष्ठ। अग्र भाग। °क्क न [°क]। °ताण, °त्ताण न [°त्राण] शिरस्त्राण। °बत्थि स्त्री [°बस्ति] सिर में चर्म-कोश देकर उसमें संस्कृत तैल आदि पूरने का उपचार। °मणि देखो सिरो-मणि। °य पुं [°ज] केश। °हर न [°गृह] मकान के ऊपर की छत। देखो सिरो°।

सिर° देखो सिरा।

°सिरय } देखो सिर = शिरस्।
°सिरस }

सिरसावत्त वि [शिरसावर्त, शिरस्यावर्त] मस्तक पर प्रदक्षिणा करनेवाला।

सिरा स्त्री [शिरा] नस, धारा।

सिरि° देखो सिरी। °उत्त पुं [°पुत्र] भारत-वर्ष का भावी चक्रवर्ती राजा। °उर न [°पुर] नगर-विशेष। °कंठ पुं [°कण्ठ]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिव। वानरद्वीप का एक राजा। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान। °कंता स्त्री [°कान्ता] एक राज-पत्नी। एक कुलकर-पत्नी। एक राजकन्या। एक पुष्करिणी। °कंदलग पुं [°कन्दलक] एक-खुरा जानवर की एक जाति। °करण न. न्यायालय। फैसला। °करणीय वि. श्री करण-संबन्धी। °कूड पुंन [°कूट] हिमवंत पर्वत का एक शिखर। °खंड न [°खण्ड] चन्दन। °गरण देखो °करण। °गीव पुं [°ग्रीव] राक्षस-वंशीय। एक लंका-पति। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैन महर्षि। °घर न [°गृह] भंडार। °घरिअ वि [°गृहिक] भंडारी, खजानची। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैनाचार्य और ग्रन्थ-कार। ऐरवत क्षेत्र के भावी जिनदेव। आठवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम। °चंदा स्त्री [°चन्द्रा] एक पुष्करिणी। एक राज-पत्नी। °ड्ढ पुं [°आढ्य] एक जैन मुनि, °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधरनगर। देखो °नयर। °णिकेतण न [°निकेतन] वैताढ्य की उत्तर-श्रेणी का एक विद्याधर-नगर। °णिलय न [°निलय] वैताढ्य पर्वत की दक्षिण-श्रेणि में स्थित एक नगर। देखो °निलय। °णिलया स्त्री [°निलया] एक पुष्करिणी। °णिहुवय पुं [°कामक] विष्णु, श्रीकृष्ण। °ताली स्त्री. वृक्ष-विशेष। °दत्त पुं. ऐरवत वर्ष में उत्पन्न पाँचवें जिन-देव। °दाम न [°दामन्] शोभावाली माला। आभरण-विशेष। पुं. एक राजा। °दामकंड, °दामगंड पुंन [°दामकाण्ड] शोभावाली मालाओं का समूह। एक देव-विमान। °दामगंड पुंन [°दामगण्ड] शोभावाली मालाओं का दण्डाकार समूह। °देवी स्त्री. देवी-विशेष। लक्ष्मी। °देवीनंदण पुं [°देवीनन्दन]। °नंदण पुं [°नन्दन] कामदेव। वि. श्री से समृद्ध। °नयर न [°नगर] दक्षिण देश का एक शहर। देखो °णयर। °निलय पु. वासुदेव। देखो °णिलय। °पट्ट पुं [°पट्ट] नगर-सेठाई का सूचक एक राज-चिह्न। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष। °पह पुं [°प्रभ] एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार। °पाल देखो °वाल। °फल पुं बिल्व-वृक्ष। देखो °हल। °भूइ पुं [°भूति] भारतवर्ष के भावी छठवें चक्रवर्ती राजा। °म देखो °मंत। °मई स्त्री [°मती] इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी, एक राजपत्नी। एक सार्थवाह-कन्या। °मंगल पुं [°मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश। °मंत वि [°मत्] शोभावाला। पुं. तिलक वृक्ष। अश्वत्थ वृक्ष। विष्णु। शिव। श्वान। °मलय न. वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधर-नगर। °महिअ पुंन [°महिक] एक देव-विमान। °महिआ स्त्री [°महिता] एक पुष्करिणी। °माल पुं. एक प्रसिद्ध वंश। °मालपुर न एक नगर। °यंठ देखो °कंठ। °यंदल देखो °कंदलग। °वइ पुं. [°पति] श्रीकृष्ण। वासुदेव। °वच्छ पुं [°वत्स] जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा अवयवाकार चिह्न। महेन्द्र देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान। एक देव-विमान। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] भ० श्रेयांसनाथ की शासन-देवी। °वडिंसय न [°अवतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान। °वण न [°वन] एक उद्यान। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] वृक्ष-विशेष। °वत्त (अप) देखो °मंत। °वद्धण पुं [°वर्धन] एक राजा। °वय पुं [°वद] पक्षि-विशेष। °वारिसेण पुं [°वारिषेण] ऐरवत वर्ष के भावी चौबीसवें जिनदेव। °वाल पुं [°पाल] एक जैन राजा। राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि। °संभूआ स्त्री [°संभूता] पक्ष की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छठवीं रात। °सिचय पुं. ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिनदेव। °सेण पुं [°षेण] एक राजा। °सेल पुं [°शैल] हनूमान। °सोम पुं. भारतवर्ष के भावी सातवाँ चक्रवर्ती राजा। °सोमणस पुंन [°सौमनस] एक देव-विमान। °हर न [°गृह] भंडार। °हर पुं [°धर] भ० पार्श्वनाथ का एक मुनिगण। भ० पार्श्वनाथ का एक गणधर। भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न सातवें जिनदेव। ऐरवत वर्ष में वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न बीसवें जिनदेव। वासुदेव। °हर वि. श्री को हरण करनेवाला। °हल न [°फल] बिल्व फल। देखो °फल।

सिरिअ पुं [श्रीक, श्रीयक] स्थूलभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक मन्त्री।

सिरिअ न [स्वैर्य] स्वच्छन्दता।

सिरिंग पुं [दे] विट, लम्पट, कामुक।

सिरिद्दह पुंस्त्री [दे] पक्षियों का पान-पात्र।

सिरिमुह वि [दे] जिसके मुह में मद हो।

सिरिया देखो सिरी।

सिरिली स्त्री [दे श्रीली] कन्द-विशेष।

सिरिवच्छीव पुं [दे] गोपाल, ग्वाला।

सिरिवय पुं [दे] हंस पक्षी।

सिरिवय देखो सिरि-वय।

सिरिस पुं [शिरीष] सिरसा का पेड़। न सिरसा का फूल।

सिरी स्त्री [श्री] लक्ष्मी, कमला। सम्पत्ति। शोभा। पद्महृद की अधिष्ठात्री देवी। उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। देव-प्रतिमा-विशेष। भ० कुन्थुनाथ जी की माता। एक श्रेष्ठि-पत्नी। देव, गुरु आदि के नाम के पूर्व में लगाया जाता आदर-सूचक शब्द। वाणी। वेष-रचना। धर्म आदि पुरुषार्थ। प्रकार। साधन। बुद्धि। अधिकार। प्रभा। कीर्ति। सिद्धि। वृद्धि। विभूति। लवंग। सरल वृक्ष। बिल्व-वृक्ष। ओषधि-विशेष। पद्म। देखो सिअ, सिरि°, सी = श्री।

सिरीस देखो सिरिस।

सिरीसिव पुं [सरीसृप] सर्प।

सिरो° देखो सिर = शिरस्। °धरा (शौ) देखो °हरा। °मणि पुं [°मणि] प्रधान, अग्रणी। °रुह पुं. केश। °विअणा स्त्री [°वेदना] सिर की पीड़ा। °वत्थि देखो सिर-वत्थि। °हरा स्त्री [°धरा] ग्रीवा।

सिल° देखो सिला। °प्पवाल न [°प्रवाल] विद्रुम।

सिलंब देखो सिलिंब।

सिलय पुं [दे] गिरे हुए अन्न-कणों का ग्रहण।

सिला स्त्री [शिला] सिल, चट्टान, पत्थर। ओला। °जउ पुंन [°जतु] शिलाजित।

सिलाइच्च पुं [शिलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा।

सिलागा देखो सलागा।

सिलाघ } (शौ) नीचे देखो। सक
सिलाह } [श्लाघ्] प्रशंसा करना।

सिलिंद पुं [शिलिन्द] धान्य-विशेष।

सिलिंध पुंन [शिलीन्ध्र] छत्रक वृक्ष, भूमिस्फोट वृक्ष। पुं. पर्वत-विशेष। °निलय पुं पर्वत-विशेष।

सिलिंब पुं [दे] शिशु।

सिलिट्ठ वि [श्लिष्ट] मनोज्ञ, सुन्दर। संगत, सुयुक्त। आलिङ्गित। संसृष्ट। संबद्ध। श्लेषालंकार-युक्त।

सिलिपइ देखो सिलिवइ।

सिलिम्ह पुंस्त्री [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ। देखो सेम्ह।

सिलिया स्त्री [शिलिका] चिरैता आदि तृण, ओषधि-विशेष। शस्त्र को तीक्ष्ण करने का पाषाण।

सिलिवइ वि [श्लीपदिन्] श्लीपद रोगी। जिसका पैर फूला हुआ और कठिन होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिलिसिअ देखो सिलिट्ठ ।
सिलीमुह पुं [शिलीमुख] बाण । रावण का एक योद्धा ।
सिलीस देखो सिलेस = श्लिष् ।
सिलुच्चय पुं [शिलोच्चय] मेरु पर्वत । पर्वत ।
सिलेच्छिय पुं [शिलैक्षिक] मत्स्य-विशेष ।
सिलेम्ह देखो सिलिम्ह (षड्) ।
सिलेस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना ।
सिलेस पुं [श्लेष] वज्रलेप आदि संधान । आलिङ्गन, भेंट । संसर्ग । दाह । एक शब्दालंकार ।
सिलेस देखो सिलिम्ह ।
सिलोअ, सिलोग पुं [श्लोक] कविता । यश । काव्य बनाने की कला । प्रशंसा ।
सिलोच्चय देखो सिलुच्चय ।
सिल्ल पुं [दे] कुन्त, बरछा । एक जहाज ।
सिल्ला देखो सिला । °र पुं [°कार] शिला-पट, पत्थर गढ़नेवाला ।
सिल्हग न [सिह्लक] गन्ध-द्रव्य-विशेष ।
सिल्हा स्त्री [दे] शीत, जाड़ा ।
सिव न [शिव] मङ्गल । सुख । अहिंसा । पुं. मुक्ति । वि. मङ्गल-युक्त, उपद्रव-रहित । पुं. महादेव । जिनदेव । भ० महावीर के पास दीक्षित एक राजर्षि । पाँचवें वासुदेव तथा बलदेव का पिता । देव-विशेष । पौष मास का लोकोत्तर नाम । एक देव-विमान । छन्द-विशेष । °कर न. शैलेशी अवस्था की प्राप्ति । मुक्ति-मार्ग । °गइ स्त्री[°गति] मुक्ति । वि. मुक्त । पुं. भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न चौदहवें जिन-देव । °तित्थ न [°तीर्थ] काशी । °नंदा स्त्री [°नन्दा] आनन्द-श्रावक की पत्नी । °भूइ पुं [°भूति] एक जैन महर्षि । बोटिक मत—दिगंबर जैन सम्प्रदाय का स्थापक एक मुनि । °रत्ति स्त्री [°रात्रि] फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी । °सेण पुं [°सेन] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक अर्हन ।
सिवंकर पुं [शिवङ्कर] पाँचवें केशव का पिता ।
सिवक, सिवय पुं [शिवक] घड़ा तैयार होने के पूर्व की एक अवस्था । वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत ।
सिवा स्त्री[शिवा]भ० नेमिनाथ जी की माता । सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक अग्र-महिषी । पनरहवें जिनदेव की प्रवर्तिनी । शृगाली । पार्वती ।
सिवाणंदा देखो सिव-नंदा ।
सिवासि पुं [शिवाशिन्] भरतक्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न बारहवें जिनदेव ।
सिविण देखो सुमिण ।
सिविया स्त्री [शिविका] सुखासन, पालकी ।
सिविर न [शिविर] छावनी । सैन्य ।
सिव्व सक [सीव्] सीना, साँधना ।
सिव्व देखो सिव = शिव ।
सिव्विणी, सिव्वी स्त्री [दे] सूई ।
सिस देखो सिलेस = श्लिष् ।
सिसिर न [दे] दधि ।
सिसिर पुं [शिशिर] ऋतु-विशेष, माघ तथा फागुन का महीना । माघ मास का लोकोत्तर फागुन मास । वि. जड़, ठंडा । हलका । न. हिम । °किरण पुं. चन्द्रमा । °महीहर पुं [°महीधर] हिमालय पर्वत ।
सिसिरली देखो सिस्सिरिली ।
सिसु पुंन [शिशु] बालक । °आल पुं [°काल] बाल काल । °नाग पुं. क्षुद्र कीट, अलस । °पाल पुं [°पाल] एक राजा । °यव पुंन. तृण-विशेष । °वाल देखो °पाल ।
सिस्स पुंस्त्री [शिष्य] चेला, छात्र । स्त्री. °स्सिणी ।
सिस्स देखो सीस = शीर्ष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिस्सिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष ।
सिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना ।
सिह पुं [दे] भुजपरिसर्प की एक जाति ।
सिहंड पुं [शिखण्ड] शिखा, चूल, चोटी ।
सिहंडइल्ल पुं [दे] बालक । दधिसर । मोर ।
सिहंडहिल्ल पुं [दे] बालक ।
सिहंडि वि [शिखण्डिन्] शिखाधारी । पुं. मयूर-पक्षी । विष्णु ।
सिहण देखो सिहिण ।
सिहर न [शिखर] पर्वत के ऊपर का भाग शृङ्ग । अग्रभाग । अठाईस दिनों का उपवास । °अण वि [°चण] शिखरों से प्रसिद्ध ।
सिहरि पुं [शिखरिन्] पहाड़ । वर्षधर पर्वत-विशेष । पुंन. कूट-विशेष । °वइ पुं [°पति] हिमालय ।
सिहरिणी, सिहरिल्ला स्त्री [दे. शिखरिणी] दही-चीनी आदि का एक मिष्ट खाद्य ।
सिहली, सिहा स्त्री [शिखा] मस्तक के बालों की चोटी । अग्नि-ज्वाला ।
सिहाल वि [शिखावत्] शिखावाला ।
सिहि पुं [शिखिन्] अग्नि । मयूर । रावण का एक सुभट । पर्वत । ब्राह्मण । मुर्गा । केतु । ग्रह । वृक्ष । अश्व । चित्रक-वृक्ष । मयूरशिखा वृक्ष । बकरे का रोम । वि. शिखा-युक्त ।
सिहि पुं [दे] मुर्गा ।
सिहिअ वि [स्पृहित] अभिलषित ।
सिहिण पुंन [दे] स्तन ।
सिहिणी स्त्री [शिखिनी] छन्द-विशेष ।
सिही (अप) स्त्री [सिंही] छन्द-विशेष ।
सी (अप) स्त्री [श्री] छन्द-विशेष । देखो सिरी ।
सीअ अक [सद्] विषाद करना । थकना । पीड़ित होना । फलना, फल लगना ।
सीअ न [दे] सिक्थक, मोम ।
सीअ वि [स्वीय] स्वकीय, निज ।
सीअ देखो सिअ = सित ।
सीअ पुंन [शीत] ठंढा स्पर्श । हिम । तुहिन । शीत-काल । ठंढ । शीत स्पर्श का कारण-भूत कर्म-विशेष । वि. शीतल । पुं. प्रथम नरक का एक नरक-स्थान । न. आयंबिल तप । वि. अनुकूल । न. सुख । °घर न [°गृह] चक्रवर्ती का वर्धकि-निर्मित वह घर जहाँ सर्व ऋतु में स्पर्श की अनुकूलता होती है । °च्छाय वि. शीतल छायावाला । °परीसह पुं [परीषह] शीत को सहना । °फास पुं [°स्पर्श] ठंढ । सर्दी । °सोआ स्त्री [°श्रोता, स्रोता] नदी-विशेष । °ालोअअ पुं[°ालोकक] चन्द्रमा । शीतकाल, हिम-ऋतु ।
सीअ° देखो सीआ = शीता । °प्पसाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष, जहाँ शीता नदी पहाड़ पर से गिरती है ।
सीअ° देखो सीआ = सीता ।
सीअउरय पुं [दे. शीतोरस्क] गुल्म-विशेष ।
सीअण न [सदन] हैरानी ।
सीअणय न [दे] दुग्ध-पारी । श्मशान ।
सीअर पुं [शीकर] पवन से क्षिप्त जल, फुहार, जल-कण । वायु, पवन ।
सीअल पुं [शीतल] वर्तमान अवसर्पिणी काल के दसवें जिन-देव । कृष्ण पुद्गल-विशेष । वि. ठंढा ।
सीअलिया स्त्री [शीतलिका] ठंढी, शीतला । लता-विशेष ।
सीअल्लि पुंस्त्री [दे] हिमकाल का दुर्दिन । वृक्ष-विशेष ।
सीआ स्त्री[शीता]एक महा-नदी । ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी, सिद्ध-शिला । शीताप्रपात द्रह की अधिष्ठात्री देवी । नील पर्वत का एक शिखर । माल्यवत् पर्वत का एक कूट । पश्चिम रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी । °मुह न [°मुख] एक वन ।
सीआ स्त्री [सीता] जनक-सुता, राम-पत्नी । चतुर्थ वासुदेव की माता । लाङ्गल-पद्धति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेत में हल चलाने से होती भूमि-रेखा। नील तथा माल्यवत् पर्वतों के शिखर-विशेष। एक दिक्कुमारी देवी।
सीआ देखो सिविया।
सीआण देखो मसाण = श्मशान।
सीआर देखो सिक्कार।
सीआला स्त्री [सप्तचत्वारिंशत्] सैंतालीस।
सीआलीस स्त्रीन. ऊपर देखो। स्त्री. °सा।
सीआव सक [सादय्] शिथिल करना।
सीइआ स्त्री [दे] झड़ी, वृष्टि।
सीइय वि [सन्न] खिन्न, परिश्रान्त।
सीई स्त्री [दे] सीढ़ी।
सीउग्गय वि [दे] सुजात।
सीउट्ट न [दे] हिम-काल का दुर्दिन।
सीउण्ह न [शीतोष्ण] ठंढा तथा गरम। अनुकूल तथा प्रतिकूल।
सीउल्ल देखो सीउट्ट।
सीओअ° देखो सीओआ। °प्पवाय पुं [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ शीतोदा नदी पहाड़ से गिरती है। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष।
सीओआ स्त्री [शीतोदा] एक महा-नदी। निषध पर्वत का एक कूट।
सीकोत्तरी स्त्री [दे] नारी, स्त्री, महिला।
सीत देखो सीअ = शीत।
सीता देखो सीआ = शीता, सीता।
सीतालीस देखो सीआलीस।
सीतोद° देखो सीओअ°।
सीतोदा, सीतोया } देखो सीओआ।
सीदण न [सदन] शैथिल्य, प्रमत्तता।
सीधु देखो सीहु।
सीभर देखो सीअर।
सीभर वि [दे] समान।
सीमआ स्त्री [सीमन्] मर्यादा। अवधि। स्थिति। क्षेत्र। वेला। अण्डकोष। देखो सीमा।
सीमंकर पुं [सीमङ्कर] इस अवसर्पिणी में उत्पन्न एक कुलकर। ऐरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलकर। वि. मर्यादाकर्ता।
सीमंत पुं [सीमन्त] बालों में बनाई हुई रेखा-विशेष। अपर काय।
सीमंत पुं [सीमान्त] सीमा का अन्त भाग, गाँव का पर्यन्त भाग। हद।
सीमंत सक [दे. सीमान्तय्] बेचना।
सीमंतग, सीमंतय } पुं [सीमन्तक] प्रथम नरक-भूमि का एक नरकावास। °प्पभ पुं [°प्रभ] सीमन्तक नरकावास की पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास। °मज्झिम पुं [°मध्यम] सीमन्तक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास। °ावसिट्ठ पुं [°ावशिष्ट] सीमन्तक की दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास। °ावत्त पुं [°ावर्त] सीमन्तक की पश्चिम तरफ का एक नरकावास।
सीमंतय न [दे] सीमंत—बालों की रेखा-विशेष में पहना जाता अलंकार-विशेष।
सीमंतिअ वि [सीमन्तित] खण्डित, छिन्न।
सीमंतिणी स्त्री [सीमन्तिनी] स्त्री, नारी।
सीमंधर पुं [सीमन्धर] भारतवर्ष में उत्पन्न एक कुलकर। ऐरवत वर्ष का एक भावी कुलकर। पूर्व-विदेह में वर्तमान एक अर्हन् देव। जैन मुनि, भ० सुमतिनाथ के पूर्वजन्म के गुरु। भ० शीतलनाथ का मुख्य श्रावक। वि. मर्यादा-धारक।
सीमा स्त्री. देखो सीमआ। °गार पुं [°कार] जलजन्तु, ग्राह का एक भेद। °धर वि. मर्यादा-धारक। °ल वि. सीमा के पास का।
सीर पुंन. हल। °धारि पुं [°धारिन्]। °पाणि पुं. बलदेव, बलभद्र, राम। °सीमंत पुं [°सीमन्त] हल से फाड़ी हुई जमीन की रेखा।
सीरि पुं [सीरिन्] बलभद्र, बलदेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीरिअ वि [दे] भिन्न।

सील सक [शीलय्] अभ्यास करना, आदत डालना। पालन करना। देखो सीलाव।

सील न [शील]चित्त का समाधान। ब्रह्मचर्य। प्रकृति। सदाचार, चारित्र। चरित्र, वर्तन। अहिंसा। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक का एक भेद। °ड्ढ वि [°ाढ्य] शील-पूर्ण। °परिघर पुंन [°परिगृह] चारित्र-स्थान। अहिंसा। °मंत, °व वि [°वत्] शील-युक्त। °व्वय न [°व्रत] अणुव्रत, जैन श्रावक के पाँच व्रत। °सालि वि [°शालिन्] शील से शोभनेवाला।

सीलाव सक [शीलय्] तंदुरुस्त करना।

सीलुट्ट न [दे] त्रपुस, खीरा, ककड़ी।

सीव सक [सीव्] सीना। साँधना।

सीवणी स्त्री [दे] सूची। देखो सिव्विणी।

सीवण्णी } स्त्री [श्रीपर्णी] वृक्ष-विशेष।
सीवन्नी }

सीस सक [शिष्] वध करना। शेष करना। विशेष करना।

सीस सक [कथय्] कहना।

सीस न. धातु-विशेष, सीसा।

सीस देखो सिस्स = शिष्य।

सीस पुंन [शीर्ष] मस्तक। स्तबक, गुच्छा। छन्द-विशेष। °अ न [°क] शिरस्त्राण। °घडी स्त्री [°घटी] सिर की हड्डी। °पकंपिअ न [°प्रकम्पित] महालता की चौरासी लाख गुनी संख्या। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] शीर्षप्रहेलिकांग की चौरासी लाख गुनी संख्या। स्त्री. °आ। °पहेलियंग न [प्रहेलिकाङ्ग] चूलिका की चौरासी लाख गुनी संख्या। °पूरग, °पूरय पुं [°पूरक] मस्तक का आभरण। °रूपक, °रूअ (अप) पुंन [°रूपक]छन्द-विशेष। °वेढ पुं [°वेष्ट] गीले चमड़े आदि से मस्तक को लपेटना।

सीस° देखो सास = शास्।

सीसक्क न [दे. शीर्षक] शिरस्त्राण।

सीसम पुंन [दे] सीसम का गाछ, शिंशपा।

सीसय वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ।

सीसय न [सीसक] देखो सीस = सीस।

सीसवा स्त्री [शिंशपा] सीसम का गाछ।

सीह देखो सिग्घ = शीघ्र।

सीह पुं [सिंह] सहिंजने का पेड़। मेष से पाँचवीं राशि। एक अनुत्तर देवलोक-गामी जैन मुनि। एक जैन मुनि, आर्य धर्म के शिष्य। भ० महावीर का शिष्य एक मुनि। एक विद्याधर सामन्त राजा। एक श्रेष्ठि-पुत्र। एक देव-विमान। एक जैन आचार्य, रेवती-नक्षत्र आचार्य के शिष्य। छन्द-विशेष। °उर न [°पुर] नगर-विशेष। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान। °कडि पुं [°कटि] रावण का एक योद्धा। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] कन्द-विशेष। °केसर पुं. आस्तरण-विशेष, जटिल कम्बल। मोदक-विशेष। °गइ पुं [°गति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल। °गिरि पुं. एक जैन महर्षि। °गुहा स्त्री. एक चोर-पल्ली। °चूड पुं. विद्याधर-वंशीय राजा। °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र। °णाय पुं [°नाद] सिंहगर्जन, उसके तुल्य आवाज। °णिक्कीलिय न [°निक्रीडित] सिंह की गति। तप-विशेष। °णिसाइ देखो °निसाइ। °दुवार न [°द्वार] राजद्वार। °द्धय पुं [°ध्वज] विद्याधरवंशीय राजा। हरिषेण चक्रवर्ती के पिता। °नाय देखो °णाय। °निकीलिय, °निक्कीलिय देखो °णिक्कीलिय। °निसाइ वि [°निषादिन्] सिंह की तरह बैठनेवाला। °णिसिज्जा स्त्री [°निषद्या] भरत चक्रवर्ती द्वारा अष्टापद पर्वत पर बनवाया हुआ जैन मन्दिर। °पुच्छ न. पीठ की चमड़ी। °पुच्छण न [°पुच्छन] पुरुष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिंगत्रोटन। °पुच्छिय वि [°पुच्छित]जिसका पुरुष-चिह्न तोड़ दिया गया हो वह। जिसकी कृकाटिका से लेकर पुत-प्रदेश—नितम्ब तक की चमड़ी उखाड़ कर सिंह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह। °पुरा, °पुरी स्त्री. विजय-क्षेत्र की एक राजधानी। °मुख पुं [°मुख] अन्तर्द्वीप-विशेष। उसकी मनुष्य-जाति। °रव पुं. सिंह-गर्जना। °रह पुं [°रथ] गन्धार देश के पुंड्रवर्धन नगर का एक राजा। °वाह पुं. विद्याधर-वंशीय राजा। °वाहण पुं [°वाहन]राक्षस-वंशीय राजा। °वाहणा स्त्री [°वाहना] अम्बिका देवी। °विक्कमगइ पुं [विक्रमगति] अमितगति तथा अमितवाहन इन्द्र का एक-एक लोकपाल। °वीअ पुं[°वीत] एक देव-विमान। °सेण पुं [°सेन] चौदहवें जिनदेव का पिता, एक राजा। भ० अजितनाथ का एक गणधर। राजा श्रेणिक का एक पुत्र। राजा महासेन का एक पुत्र। ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव। °सोआ स्त्री. [°स्रोता] एक नदी। °वलोइअ न [°वलोकित] सिंहावलोकन, सिंह की तरह चलते हुए पीछे की तरफ देखना। °सण न [°सन] सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन। देखो सिंह।

सीह वि [सैंह] सिंह-संबन्धी। स्त्री. °हा।

°सीह पुं [°सिंह] श्रेष्ठ।

सीहंडय पुं [दे] मछली।

सीहणही स्त्री [दे] करौंदी का गाछ।

सीहपुर वि [सैंहपुर] सिंहपुर-संबन्धी।

सीहर देखो सीअर।

सीहरय पुं [दे] आसार, जोर की वृष्टि।

सीहल देखो सिंहल।

सीहलय पुं [दे] वस्त्र आदि को धूप देने का यन्त्र।

सीहलिआ स्त्री[दे]शिखा, चोटी। नवमालिका, नवारी का गाछ।

सीहलिपासग पुंन [दे] ऊन का बना कंकण, जो वेणी बाँधने के काम आता है।

सीही स्त्री [सिंही] स्त्री-सिंह।

सीहु पुंन [सीधु] मद्य। मद्य-विशेष।

सु अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—प्रशंसा, श्लाघा। अतिशय। समीचीनता। अतिशय-योग्यता। पूजा। कष्ट। अनुमति। समृद्धि। अनायास। निम्न अर्थों का बोध करानेवाला उपसर्ग—उत्तम, सुन्दर, अच्छा, भला, अच्छी तरह, सुख से, शुभ, प्रशस्त, अति, बहुत, अत्यन्त, दृढ़, बिलकुल।

सुअ अक [स्वप्] सोना।

सुअ सक [श्रु] सुनना।

सुअ पुं [सुत] पुत्र।

सुअ पुं [शुक] तोता। रावण का मन्त्री। रावणाधीन एक सामंत राजा। एक परि-व्राजक। एक अनार्य देश।

सुअ वि [श्रुत] सुना हुआ। न. ज्ञान-विशेष, शब्द-ज्ञान, शास्त्र-ज्ञान। शब्द, ध्वनि। क्षयोपशम, श्रुतज्ञान के आवरक कर्मों का नाश-विशेष। आत्मा। आगम, शास्त्र, सिद्धान्त। अध्ययन, स्वाध्याय। श्रवण। °केवलि पुं [°केवलिन्] चौदह पूर्व-ग्रन्थों का जानकार मुनि। °क्खंध, °खंध पुं[°स्कन्ध] अंगग्रन्थ का अध्ययन-समूहात्मक महान् अंश। बारह अंग-ग्रन्थों का समूह। बारहवाँ अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद। °णाण देखो °नाण। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] शास्त्र-ज्ञान-संपन्न। °णिस्सिय न [°निश्रित] मति-ज्ञान का एक भेद। °तिहि स्त्री [°तिथि] शुक्ल पंचमी तिथि। °थेर पुं [°स्थविर] तृतीय और चतुर्थ अंग-ग्रन्थ का जानकार मुनि। °देवया स्त्री [°देवता]। °देवी स्त्री. जैनशास्त्रों की अधिष्ठात्री देवी। °धम्म पुं [°धर्म] जैन-अंग-ग्रंथ। शास्त्र-ज्ञान। आगमों का अध्ययन। °धर वि. शास्त्रज्ञ। °नाण पुंन [°ज्ञान]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्रज्ञान। °नाणि देखो °णाणि। °निस्सिय देखो °णिस्सिय। °पंचमी स्त्री [°पञ्चमी] कार्तिक मास की शुक्ल पाँचवीं तिथि। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले सुना हुआ। °सागर पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव।

सुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ।

सुअंध पुं [सुगन्ध] खुशबू। वि. सुगन्धी।

सुअंधि वि [सुगन्धि] सुन्दर गन्धवाला। देखो सुगंधि।

सुअक्खाय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ।

सुअच्छ वि [स्वच्छ] निर्मल, विशुद्ध।

सुअण पुं [सुजन] सज्जन, भला।

सुअणा स्त्री [दे] अतिमुक्तक, वृक्ष-विशेष।

सुअणु वि [सुतनु] सुन्दर शरीरवाला। स्त्री. नारी।

सुअण्ण देखो सुवण्ण।

सुअम वि [सुगम] सुबोध।

सुअर वि [सुकर] सरल।

सुअर पुं [शूकर] वराह।

सुअरिअ न [सुचरित] सदाचार।

सुआ (शौ) अक [शी] सोना।

सुआ स्त्री [स्रुच्] यज्ञ का उपकरण-विशेष, घी आदि डालने को कड़छी।

सुआइक्ख वि [स्वाख्येय] सुख से—अनायास से कहने-योग्य।

सुइ पुं [शुचि] पवित्रता, निर्मलता। वि. श्वेत। पवित्र, निर्मल। स्त्री शक्र की एक अग्र-महिषी।

सुइ स्त्री [श्रुति] श्रवण। कर्ण। वेद-शास्त्र। शास्त्र, सिद्धान्त।

सुइ स्त्री [स्मृति] स्मरण।

सुइअ देखो सूइअ = सूचिक।

सुइण देखो सुमिण।

सुइदि स्त्री [सुकृति] पुण्य। मङ्गल। सत्-कर्म।

सुइयाणिया स्त्री [दे. सूतिकारिणी] सूति-कर्म करनेवाली स्त्री।

सुइर न [सुचिर] अत्यन्त दीर्घ काल।

सुइल देखो सुक्क = शुक्ल।

सुइव्व वि [श्वस्तन] आगामी कल से सम्बन्धी।

सुई स्त्री [दे] बुद्धि, मति।

सुई स्त्री [शुकी] मैना।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुकार] सुसंयमी।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुचार] अतिशय सरल आचरणवाला।

सुउमार } देखो सुकुमाल।
सुउमाल }

सुउरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन।

सुए अ [श्वस्] आगामी कल।

सुंक न [शुल्क] मूल्य। चुंगी। वर-पक्ष के पास से कन्या पक्षवालों को लेने-योग्य धन। °ठाण न [°स्थान] चुंगी-घर। °पालय वि [°पालक] चुंगी पर नियुक्त राज-पुरुष। देखो सुक्क = शुल्क।

सुंकअ } पुंन [दे] किशारु, धान्य आदि का
सुंकल } अग्र भाग।

सुंकलि पुंन [दे] तृण-विशेष।

सुंकविय वि [शुल्कित] जिसकी चुंगी दी गई हो वह।

सुंकाणिअ पुं [दे] नाव का डांड़ खेनेवाला।

सुंकार पुं [सूत्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष।

सुंकिअ वि [शौल्किक] शुल्क लेनेवाला।

सुंख देखो सुक्ख = शुष्क।

सुंग देखो सुक्क = शुल्क।

सुंगायण न [शौङ्गायन] गोत्र-विशेष।

सुंघ सक [दे] सूँघना।

सुंचल न [दे] काला नमक।

सुंठ पुंन [शुण्ठ] पर्व-वनस्पति-विशेष।

सुंठय पुंन [शुण्ठक] भाजन-विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुंठी स्त्री [शुण्ठी] सूँठ या सोंठ ।

सुंड वि [शौण्ड] मत्त, मद्यप । दक्ष । देखो सोंड ।

सुंडा देखो सोंडा ।

सुंडिअ पुं [शौण्डिक] दारू बेचनेवाला ।

सुंडिआ स्त्री [शौण्डिका] मदिरा-पान में आसक्ति ।

सुंडिक देखो सुंडिअ ।

सुंडिकिणी स्त्री [सौण्डिकी] कलवार की स्त्री ।

सुंडीर देखो सोंडीर ।

सुंद पुं [सुन्द] खरदूषण का पुत्र ।

सुंदर वि [सुन्दर] मनोहर । पुं. एक सेठ । तेरहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम । न. तीन दिनों का उपवास । °बाहु पुं. सातवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम ।

सुंदरिअ देखो सुंदेर ।

सुंदरिम पुंस्त्री. देखो सुंदेर ।

सुंदरी स्त्री [सुन्दरी] उत्तम स्त्री । भ. ऋषभदेव की एक पुत्री । रावण की एक पत्नी । छन्द-विशेष । मनोहरा, शोभना ।

सुंदेर, सुंदेरिम } न [सौन्दर्य] सुन्दरता, शरीर का मनोहरपन ।

सुंब न [शुम्ब] तृण-विशेष । उसकी डोरी—रस्सी ।

सुंभ पुं [शुम्भ] शुम्भा नामक इन्द्राणी का पूर्व-जन्म का गृहस्थ पिता । दानव-विशेष । °वडेंसय न [°ावतंसक] शुम्भा देवी का एक भवन । °सिरी स्त्री [°श्री] शुम्भा देवी की पूर्व-जन्मीय माता ।

सुंभा स्त्री [शुम्भा] बलि इन्द्र की पटरानी ।

सुंसुमा स्त्री [सुंसुमा] धन सार्थवाह की कन्या ।

सुंसुमार पुं [शिशुमार] जलचर प्राणी की एक जाति । द्रह-विशेष । पर्वत-विशेष । न. एक अरण्य । देखो सुंसु-मार ।

सुक देखो सुअ = शुक । °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भ० सुविधिनाथ की दीक्षा-शिबिका ।

सुकंठ वि [सुकण्ठ] सुन्दर कण्ठवाला । पुं. एक वणिक्-पुत्र । एक चोर-सेनापति ।

सुकच्छ पुं. विजय-क्षेत्र-विशेष । °कूड पुंन [°कूट] शिखर-विशेष ।

सुकड देखो सुकय ।

सुकण्ह पुं [सुकृष्ण] एक राज-पुत्र ।

सुकण्हा स्त्री [सुकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी ।

सुकद देखो सुकय ।

सुकम्माण वि [सुकर्मन्] अच्छा कर्म करनेवाला ।

सुकय न [सुकृत] पुण्य । उपकार । वि. अच्छी तरह निर्मित । °जाणुअ, °ण्णु, °ण्णुअ वि [°ज्ञ] सुकृत का जानकार या कदर करनेवाला ।

सुकयत्थ वि [सुकृतार्थ] अत्यन्त कृतकृत्य ।

सुकर देखो सुगर ।

सुकाल पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र ।

सुकाली स्त्री. राजा श्रेणिक की एक पत्नी ।

सुकिअ देखो सुकय ।

सुकिट्ठि पुं [सुकृष्टि] एक देव-विमान ।

सुकिदि वि [सुकृतिन्] पुण्य-शाली । सत्कर्मकारी ।

सुकिल, सुकिल्ल } देखो सुक्क = शुक्ल ।

सुकुमार, सुकुमाल } वि. अति कोमल । सुन्दर कुमार अवस्थावाला ।

सुकुमालिअ वि [दे] सुघटित, सुन्दर बना हुआ ।

सुकुसुम न. सुन्दर फूल । वि. सुन्दर फूलवाला ।

सुकोसल पुं [सुकोशल] ऐरवत-वर्ष के एक भावी जिनदेव । एक जैन मुनि ।

सुकोसला स्त्री [सुकोशला] एक राज-कन्या ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुक्क अक [शुष्] सूखना।

सुक्क वि [शुष्क] सूखा हुआ।

सुक्क न [शुल्क] चुंगी। स्त्री-धन-विशेष। वर पक्ष से कन्या-पक्षवालों को लेने-योग्य धन। स्त्री को सम्भोग के लिए दिया जाता धन। मूल्य। देखो सुंक।

सुक्क पुं [शुक्र] ग्रह-विशेष। पुंन एक देव-विमान। न वीर्य, शरीरस्थ धातु-विशेष।

सुक्क पुं [शुक्ल] सफेद रंग। सफेद वर्णमाला। न. शुभ ध्यान-विशेष। वि. जिसका संसार अर्ध पुद्गल-परावर्त काल से कम रह गया हो वह। °ज्झाण, °झाण न [°ध्यान] शुभ ध्यान-विशेष। °पक्ख पुं [°पक्ष] जिसमें चन्द्र की कला क्रमशः बढ़ती है वह आधा महीना। हंस पक्षी। काक। बगुला। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] वह आत्मा जिसका संसार अर्ध पुद्गल-परावर्त से कम रह गया हो। °लेस देखो °लेस्स। °लेसा देखो °लेस्सा। °लेस्स वि [°लेश्या] शुक्ल लेश्यावाला। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शुभतम आत्म-परिणाम।

सुक्कड, सुक्कय देखो °सुकय।

सुक्कव सक [शोषय्] सुखाना।

सुक्काणय न [दे] जहाज के आगे का ऊँचा काष्ठ।

सुक्काभ न [शुक्राभ] एक लोकान्तिक देव-विमान। वैताढ्य पर्वत की दक्षिण श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर।

सुक्किय देखो सुकय।

सुक्किय देखो सुक्कीअ।

सुक्किल, सुक्किल्ल देखो सुक्क = शुक्ल।

सुक्कीअ वि [सुक्रीत] अच्छी तरह खरीदा हुआ।

सुक्ख देखो सुक्क = शुष्।

सुक्ख देखो सुक्क = शुष्क।

सुक्ख न [सौख्य] सुख।

सुक्खव देखो सुक्कव।

सुक्खिय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ, प्रतिज्ञात।

सुखम (पै) देखो सण्ह = सूक्ष्म।

सुग देखो सुअ = शुक।

सुगइ स्त्री [सुगति] अच्छी गति। सन्मार्ग। वि. अच्छी गति को प्राप्त।

सुगंध देखो सुअंध।

सुगंधा स्त्री [सुगन्धा] पश्चिम विदेह का एक विजयक्षेत्र।

सुगंधि देखो सुअंधि। °पुर न. वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर।

सुगण वि [सुगण] अच्छी तरह गिननेवाला।

सुगम वि. सुख-गम्य। सुबोध।

सुगय वि [सुगत] अच्छी गतिवाला। सुस्थ। धनी। गुणी। पुं. बुद्धदेव।

सुगय वि [सौगत] बौद्ध।

सुगर वि [सुकर] सुख-साध्य।

सुगिम्ह पुं [सुग्रीष्म] चैत्र मास की पूर्णिमा। फाल्गुन का उत्सव।

सुगिर वि. अच्छी वाणीवाला।

सुगिहिय, सुगिहीय वि [सुगृहीत] विख्यात।

सुगुत्त पुं [सुगुप्त] एक मंत्री।

सुग्ग न [दे] आत्म-कुशल। वि. निर्विघ्न। विसर्जित।

सुग्गइ देखो सुगइ।

सुग्गय देखो सुगय = सुगत।

सुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना।

सुग्गीव पुं [सुग्रीव] नागकुमार देवों के इन्द्र भूतानन्द के अश्व-सैन्य का अधिपति। भारत-वर्ष का भावी नववाँ प्रतिवासुदेव। राक्षस-वंश का एक लङ्कापति। नववें जिनदेव के पिता। राजा बालि का छोटा भाई। एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा । न. नगर-विशेष ।

सुघ (अप) देखो सुह = सुख ।

सुघट्ठ वि [सुघृष्ट] अच्छी तरह घिसा हुआ ।

सुघरा स्त्री [सुगृहा] मादा-पक्षी की एक जाति जो खूब सुन्दर घोंसला बनाती है ।

सुघोस पुं [सुघोष] एक कुलकर । एक पुरोहित । पुंन. सनत्कुमार देवलोक का एक विमान । लान्तक नामक देवलोक का एक विमान । वि. सुन्दर आवाजवाला । एक नगर ।

सुघोसा स्त्री [सुघोषा] गीतरति नामक गन्धर्वेन्द्र की एक पटरानी । गीतयश नामक गन्धर्व की एक पटरानी । सुधर्मेन्द्र का प्रसिद्ध घंटा । वाद्य-विशेष ।

सुचंद पुं [सुचन्द्र] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिन-देव ।

सुचिण्ण वि [सुचीर्ण] सम्यग् आचरित ।

सुचोइअ वि [सुचोदित] प्रेरित ।

सुच्च वि [शोच्य] अफसोस करने-योग्य ।

सुच्चा देखो सुण = श्रु ।

सुजंपिय न [सुजल्पित] आशीर्वाद ।

सुजड पुं [सुजट] एक विद्याधर-नरेश ।

सुजस पुं [सुयशस्] एक जिनदेव का नाम । वि. यशस्वी ।

सुजसा स्त्री [सुयशस्] चौदहवें जिनदेव की माता । एक राजपत्नी ।

सुजह वि [सुहान] सुख से जिसका त्याग हो ।

सुजाइ वि [सुजाति] प्रशस्त जातिवाला ।

सुजाण वि [सुज्ञ] सयाना, अच्छा जानकार ।

सुजाय वि [सुजात] सुन्दर जाति में उत्पन्न, कुलीन, खानदानी । अच्छी तरह उत्पन्न, सुन्दर रूप से उत्पन्न । न. सुन्दर जन्म । पुं. एक राज कुमार । पुंन. एक देव-विमान ।

सुजाया स्त्री [सुजाता] कालवाल आदि लोकपालों की पटरानियों के नाम । राजा श्रेणिक की एक पत्नी ।

सुजिट्ठा स्त्री [सुज्येष्ठा] एक महासती राजकुमारी, जो चेटकराज की पुत्री थी ।

सुजेट्ठा देखो सुजिट्ठा ।

सुजोसिअ वि [सुजोषित] सुष्ठु क्षपित, सम्यग् विनाशित ।

सुज्ज पुं [सूर्य] सूरज । आक का पेड़ । दैत्य-विशेष । पुंन. एक देव-विमान । °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान । °ज्झय पुंन [°ध्वज] देव-विमान-विशेष । °प्पभ पुंन [°प्रभ] एक देव-विमान । °लेस पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान । °वण्ण पुंन [°वर्ण] देव-विमान-विशेष । °सिंग पुंन [°शृङ्ग] एक देव-विमान । °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] एक देव-विमान । °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मण-कन्या । °सिव पुं [°शिव] एक ब्राह्मण । °हास पुं. तलवार की एक उत्तम जाति । °भ न. वैताढ्य की उत्तर-श्रेणि का एक विद्याधर-नगर । °वत्त पुंन [°ावर्त] एक देव-विमान । देखो °सूर, °सूरिअ = सूर, सूर्य ।

सुज्जाण वि [सुज्ञान] सयाना ।

सुज्जुत्तरवडिंसग पुंन [सूर्योत्तरावतंसक] एक देव-विमान ।

सुज्झ अक [शुध्] होना ।

सुज्झंत वि [दृश्यमान] सूझता, दीख पड़ता, मालूम होता ।

सुज्झय न [दे] चाँदी । पुं. धोबी ।

सुज्झरय पुं [दे] धोबी ।

सुज्झवण न [शोधन] शुद्धि, प्रक्षालन ।

सुज्झाइ वि [सुध्यायिन्] शुभ ध्यानी ।

सुज्झाइय वि [सुध्यात] अच्छी तरह चिन्तित ।

सुट्ठिअ वि [सुस्थित] सम्यक् स्थित । पुं. लवण समुद्र का अधिष्ठायक देव । आर्यसुहस्ति आचार्य का शिष्य एक जैन महर्षि ।

सुट्ठु } अ [सुष्ठु] अच्छा, शोभन ।
सुट्ठुं } अतिशय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुठिअ देखो सुढिअ ।

सुढ सक [स्मृ] याद करना ।

सुढिअ वि [दे] श्रान्त । संकुचित अंगवाला ।

सुण सक [श्रु] सुनना ।

सुणंद पुं [सुनन्द] एक राजर्षि । भ० वासुपूज्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ । पुंन. एक देव-विमान । देखो सुनंद ।

सुणंदा स्त्री [सुनन्दा] भ० पार्श्वनाथ की मुख्य श्राविका । तृतीय चक्रवर्ती की पटरानी—तीसरा स्त्री-रत्न । भूतानन्द आदि इन्द्रों के लोकपालों की अग्रमहिषियाँ ।

सुणक्खत्त पुं [सुनक्षत्र] एक जैन मुनि । भ० महावीर का शिष्य एक मुनि ।

सुणक्खत्ता स्त्री [सुनक्षत्रा] पक्ष की दूसरी रात ।

सुणग देखो सुणय ।

सुणण न [श्रवण] सुनना ।

सुणय, सुणह } पुंस्त्री [शुनक] कुत्ता । पुं. छन्द-विशेष ।

सुणहिल्लया स्त्री [शुनकी] कुत्ती ।

सुणावण न [श्रावण] सुनाना ।

सुणाविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ ।

सुणासीर पुं [सुनासीर] इन्द्र, देव-राज ।

सुणाह देखो सुनाभ ।

सुणिअ पुं [शौनिक] कसाई ।

सुणुसुणाय अक [सुनसुनाय्] 'सुन्'-'सुन्' आवाज करना ।

सुण्ण न [शून्य] निर्जन स्थान । वि. रिक्त । निष्फल, निष्प्रयोजन । न. एकाशन-व्रत । देखो सुन्न ।

सुण्णआर देखो सुण्णार ।

सुण्णइअ, सुण्णविअ } वि [शून्यित] शून्य किया हुआ ।

सुण्णार पुं [सुवर्णकार] सोनी ।

सुण्ह देखो सण्ह = सूक्ष्म ।

सुण्हसिअ वि [दे] सोने की आदतवाला ।

सुण्हा स्त्री [सास्ना] गौ का गल-कम्बल । °ल पुं. बैल । °लचिंध पुं [°लचिह्न] भ० ऋषभदेव । महादेव ।

सुण्हा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू ।

सुतणु स्त्री [सुतनु] नारी, स्त्री ।

सुतरं अ [सुतराम्] निश्चित अर्थ के अतिशय का सूचक अव्यय ।

सुतवसिय न [सुतपसित] तपश्चर्या का सुन्दर अनुष्ठान ।

सुतार वि. अत्यन्त निर्मल । अतिशय ऊँचा । अच्छा तैरनेवाला । अत्युच्च आवाजवाला ।

सुतारया, सुतारा } स्त्री. भ० सुविधिनाथ की शासन-देवी । सुग्रीव की पत्नी । आभूषण विशेष ।

सुतोसअ वि [सुतोष्य] सुख से तुष्ट करने योग्य ।

सुत्त सक [सूत्रय्] बनाना ।

सुत्त देखो सुअ = श्रुत ।

सुत्त देखो सोत्त = स्रोतस् । श्रोत्र ।

सुत्त वि [सुप्त] सोया, शयित ।

सुत्त वि [सूक्त] सुचारु रूप से कहा हुआ । न. सुभाषित ।

सुत्त न [सूत्र] धागा, वस्त्र-तन्तु । नाटक का प्रस्ताव । शास्त्र-विशेष । °आर पुं [°कार] ग्रन्थकार । °कंठ पुं [°कण्ठ] विप्र । °कड न [°कृत] द्वितीय जैन आगम-ग्रन्थ । °ग न [°क] यज्ञोपवीत । °धार पुं. देखो °हार । °फासियणिज्जुत्ति स्त्री [°स्पर्शिकनिर्युक्ति] सूत्र की व्याख्या । °रुइ स्त्री [°रुचि] शास्त्र-श्रद्धा । °हार पुं [°धार] प्रधान नट, बढ़ई ।

सुत्ति स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा । °मई स्त्री [°मती] चेदि देश की प्राचीन राजधानी ।

सुत्ति स्त्री [सूक्ति] सुन्दर वचन । °वत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा ।

सुत्तिय देखो सोत्तिअ = सौत्रिक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत्तिय वि [सूत्रित] सूत्र-निबद्ध ।
सुत्थ वि [सुस्थ] स्वस्थ । सुखी ।
सुत्थ न [सौस्थ्य] स्वस्थता । सुखिपन ।
सुत्थिय देखो सुट्ठिअ ।
सुत्थिर वि [सुस्थिर] अतिशय स्थिर ।
सुदंती स्त्री. सुन्दर दाँतवाली ।
सुदंसण पुं [सुदर्शन] भ० अरनाथ के पिता । तीसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु । भारतवर्ष का भावी पाँचवाँ बलदेव । धरणेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति । एक अन्तकृद् मुनि । मेरु पर्वत । एक विख्यात श्रेष्ठी । देव-विशेष । विष्णु का चक्र । भ० अरनाथ एवं पार्श्वनाथ का पूर्वजन्मीय नाम । पुंन. एक देव-विमान । वि. जिसका दर्शन सुन्दर हो वह । न. पश्चिम रुचक पर्वत का एक शिखर ।
सुदंसणा स्त्री [सुदर्शना] जम्बू नामक वृक्ष, जिससे यह जम्बूद्वीप कहलाता है । भ० महावीर की ज्येष्ठ बहिन । धरण आदि इन्द्रों के काल-वाल आदि लोकपालों की और काल तथा महाकाल-नामक पिशाचेन्द्रों की अग्रमहिषियों के नाम । भ० ऋषभदेव की दीक्षा-शिबिका । चतुर्थ बलदेव की माता ।
सुदरिसण देखो सुदंसण ।
सुदाम पुं. अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा कुलकर पुरुष ।
सुदारुण पुं [दे] चंडाल ।
सुदीह, सुदीहर वि [सुदीर्घ] अत्यन्त लम्बा । °कालीय वि [°कालिक] सुदीर्घ-काल-सम्बन्धी । °दंसि वि [°दर्शिन्] परिणाम का विचार कर कार्य करनेवाला ।
सुदुम्मणिआ स्त्री [दे] रूपवती स्त्री ।
सुद्द पुं [शूद्र] मनुष्य की अधम जाति । चतुर्थ वर्ण ।
सुद्दय पुं [शूद्रक] एक राजा का नाम ।
सुद्दिणी (अप) स्त्री [शूद्रा] शूद्रजातीय स्त्री ।
सुद्ध पुं [दे] ग्वाला ।
सुद्ध वि [शुद्ध] शुक्ल । पवित्र । निर्दोष । निर्मल । केवल । न. सेंधा नून । मरिच । १८ दिनों के उपवास । पुं. छन्द-विशेष । °गंधारा स्त्री [°गन्धारा] गन्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना । °दंत पुं [°दन्त] भारतवर्ष के भावी चौथे जिनदेव । एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि । एक अन्तर्द्वीप । उसकी एक मनुष्य-जाति । °पक्ख पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष । °प्प पुं [°ात्मन्] पवित्र आत्मा । °प्पवेस वि [°प्रवेश्य] पवित्र और प्रवेश के लिए उचित । °प्पवेस वि [°ात्मवेश्य] पवित्र तथा वेशोचित । °वाय पुं [°वात] मन्द पवन । °वियड न [°विकट] उष्ण जल । °सज्जा स्त्री [°षड्जा] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ।
सुद्धंत पुं [शुद्धान्त] अन्तःपुर ।
सुद्धवाल वि [दे] शुद्ध और पवित्र ।
सुद्धि स्त्री [शुद्धि] शुद्धता, निर्दोषता । पता, खोई हुई चीज की प्राप्ति ।
सुद्धेसणिअ वि [शुद्धैषणिक] निर्दोष आहार की खोज करनेवाला ।
सुद्धोअण पुं [शुद्धोदन] बुद्धदेव के पिता । °तणय पुं [°तनय] । °पुत्त पुं [°पुत्र] बुद्ध देव ।
सुद्धोअणि पुं [शौद्धोदनि] बुद्धदेव ।
सुद्धोदण देखो सुद्धोअण ।
सुधम्म पुं [सुधर्मन्] भ० महावीर का पट्टधर शिष्य । एक जैन मुनि । तीसरे बलदेव के गुरु । एक जैन मुनि, सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म के गुरु । एक जैनाचार्य । देखो सुहम्म ।
सुधा देखो छुहा = सुधा ।
सुनंद पुं [सुनन्द] भारतवर्ष के भावी दसवें जिनदेव के पूर्वभव का नाम । एक जैन मुनि । देखो सुणंद ।
सुनयण पुं [सुनयन] राजा रावण के अधीनस्थ एक विद्याधर सामन्त राजा । वि. सुन्दर लोचनवाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनाभ पुं. अमरकंका नगरी के राजा पद्मनाभ का पुत्र।

सुनिउण वि [सुनिगुण] अतिशय निश्चित गुणवाला।

सुनिग्गल वि [सुनिर्गल] चिर-स्थायी।

सुनीविआ स्त्री [सुनीविका] सुन्दर नीवी—वस्त्र ग्रन्थिवाली स्त्री।

सुनेत्ता स्त्री [सुनेत्रा] पाँचवें वासुदेव की पटरानी।

सुन्न न [शून्य] बिन्दी। देखो सुण्ण। °पत्तिया स्त्री [°प्रत्ययिका, °पत्रिका] एक जैन मुनिशाखा।

सुप सक [मृज्] मार्जन या शोधन करना।

सुपइट्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] न्याय-मार्ग में स्थित। प्रतिज्ञा-शूर। अतिशय प्रसिद्ध। जिसकी स्थापना विधिपूर्वक की गई हो। पुं. भ० महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक गृहस्थ। अंग विद्या का जानकार पाँचवाँ रुद्र। भ० सुपार्श्वनाथ के पिता। भाद्रपद मास का लोकोत्तर नाम। पात्र-विशेष। न. एक नगर। °भ पुंन. एक देव-विमान।

सुपइट्ठिय वि [सुप्रतिष्ठित] अच्छी तरह प्रतिष्ठा-प्राप्त।

सुपडाय वि [सुपताक] सुन्दर ध्वजावाला।

सुपडिबुद्ध वि [सुप्रतिबुद्ध] सुन्दर रीति से प्रतिबोध को प्राप्त। पुं. एक जैन महर्षि।

सुपडिवत्त वि [सुपरिवृत्त] जो अच्छी तरह हुआ हो वह।

सुपणिहिय वि [सुप्रणिहित] सुन्दर प्रणिधान-वाला।

सुपण्ण वि [सुप्रज्ञ] सुन्दर बुद्धिवाला।

सुपण्ण पुं [सुवर्ण] गरुड पक्षी।

सुपभ देखो सुप्पभ।

सुपम्ह पुं [सुपक्ष्मन्] एक विजय-क्षेत्र। पुंन. एक देव-विमान।

सुपव्व पुं [सुपर्वन्] देव। न. सुन्दर पर्व।

सुपसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] अति विख्यात।

सुपस्स वि [सुदर्श] सुख से देखने-योग्य।

सुपास पुं [सुपार्श्व] भारत में उत्पन्न सातवें जिन भगवान्। भ० महावीर के पिता का भाई। एक कुलकर पुरुष। भारतवर्ष के भावी तीसरे जिनदेव। ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव एवं आगामी उत्सर्पिणी-काल में होने-वाले अठारहवें जिनदेव। भारतवर्ष के भावी दूसरे जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम।

सुपासा स्त्री [सुपार्श्वा] एक जैन साध्वी।

सुपीअ पुं [सुपीत] पाँचवाँ मुहूर्त।

सुपुंख पुं [सुपुङ्ख] एक देव-विमान।

सुपुंड पुंन [सुपुण्ड्र] एक देव-विमान।

सुपुप्फ पुंन [सुपुष्प] एक देव-विमान।

सुपुरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन, साधु पुरुष।

सुप्प अक [स्वप्] सोना।

सुप्प पुंन [सूर्प] सूप, छाज। °णह वि [°नख] सूप के जैसे नखवाला। °णहा, °णही स्त्री [°नखा] रावण की बहिन।

सुप्पइट्ठ देखो सुपइट्ठ।

सुप्पट्ठिय देखो सुपइट्ठिय।

सुप्पइण्णा स्त्री [सुप्रतिज्ञा] दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी।

सुप्पइत्तिय न. शीतहारक वस्त्र-विशेष।

सुप्पंजल वि [सुप्राञ्जल] अत्यन्त ऋजु।

सुप्पडिआणंद वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के किये हुए उपकार को माननेवाला।

सुप्पडिआर न [सुप्रतिकार] प्रत्युपकार।

सुप्पडिबुद्ध देखो [सुपडिबुद्ध]।

सुप्पडिलग्ग वि [सुप्रतिलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ, अवलम्बित।

सुप्पणिहाण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान।

सुप्पणिहिय देखो सुपणिहिय।

सुप्पन्न वि [सुप्रज्ञ] सुन्दर बुद्धिवाला।

सुप्पबुद्ध पुन [सुप्रबुद्ध] एक ग्रैवेयक-विमान।

सुप्पबुद्धा स्त्री [सुप्रबुद्धा] दक्षिण रुचक पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी ।

सुप्पभ पुं [सुप्रभ] वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न एवं आगामी उत्सर्पिणी में होनेवाला चौथा बलदेव । भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष । हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक-एक लोकपाल । पुंन. एक देव-विमान । °कंत पुं [°कान्त] हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक-एक लोकपाल ।

सुप्पभा स्त्री [सुप्रभा] तीसरे बलदेव की माता । धरण आदि दक्षिण श्रेणी के कई इन्द्रों के लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी । घनवाहन नामक विद्याधर-नरेश की पत्नी । भ० अजितनाथ की दीक्षा-शिबिका ।

सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] अति प्रचुर ।

सुप्पसण्ण वि [सुप्रसन्न] अत्यन्त प्रसादयुक्त ।

सुप्पसार वि [सुप्रसारित] सुख से पसारने योग्य ।

सुप्पसारिय वि [सुप्रसारित] अच्छी तरह पसारा हुआ (औप) ।

सुप्पसिद्ध देखो सुपसिद्ध ।

सुप्पसूय वि [सुप्रसूत] सम्यग् उत्पन्न ।

सुप्पहूव (अप) देखो सुप्पभूय ।

सुप्पाडोस पुं [दे] अच्छा पड़ोस ।

सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय ।

सुप्पुरिस देखो सुपुरिस ।

सुफणि स्त्रीन. जिसमें तक्र आदि उबाला जाय ऐसा बटुवा आदि पात्र ।

सुबंधु पुं [सुबन्धु] दूसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम । भावी सातवाँ कुलकर ।

सुबंभ पुंन [सुब्रह्मन्] एक देव-विमान ।

सुबल पुं. सोम-वंश का एक राजा । पहले बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम ।

सुबाहु पुं. एक राज-कुमार । स्त्री. रुक्मिराज की एक कन्या ।

सुबुद्धि स्त्री. सुन्दर प्रज्ञा । पुं. राम-भ्राता भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा । एक मन्त्री ।

सुब्भ वि [शुभ्र] सफेद । न. एक प्रकार की चाँदी ।

सुब्भ न [शौभ्रय] सफेदी ।

सुब्भि पुं [सुरभि] सुगन्ध । वि. सुगन्धी । मनोहर, मनोज्ञ ।

सुब्भिक्ख न [सुभिक्ष] सुकाल ।

सुब्भु स्त्री [सुभ्रू] नारी ।

सुभ पुं [शुभ] भ० पार्श्वनाथ का प्रथम गणधर । भ० नमिनाथ का प्रथम गणधर । एक मुहूर्त । न. नाम-कर्म का एक भेद । मंगल । वि. मांगलिक । °घोस पुं [°घोष] भ० पार्श्वनाथ का द्वितीय गणधर । °णुधम्म पुं [°नुधर्मन्] राक्षस-वंश का एक राजा । देखो सुह = शुभ ।

सुभंकर न [शुभंकर] वरुण नामक लोकान्तिक देवों का विमान । देखो सुहंकर ।

सुभग वि. आनन्द-जनक । सौभाग्य-युक्त, वल्लभ, जन-प्रिय । न. पद्म-विशेष । कर्म-विशेष ।

सुभगा स्त्री. लता-विशेष । सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी ।

सुभग्ग वि [सुभाग्य] भाग्यशाली ।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन-कुशल ।

सुभद्द पुं [सुभद्र] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा । दूसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु । पुंन. एक देव-विमान । नगर-विशेष ।

सुभद्दा स्त्री [सुभद्रा] दूसरे बलदेव की माता । प्रथम स्त्री-रत्न, भरत चक्रवर्ती की अग्र-महिषी । बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी । भूतानन्द आदि इन्द्रों के कालवाल नामक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी । प्रतिमा-विशेष, एक व्रत । राम के भाई भरत की पत्नी । राजा कोणिक की स्त्री । राजा श्रेणिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की एक स्त्री। एक सती स्त्री। एक सार्थवाह-पत्नी। जम्बूवृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जंबू-द्वीप कहलाता है।

सुभय देखो सुभग।

सुभा स्त्री [शुभा] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी। एक विजय-क्षेत्र। रावण की एक पत्नी।

सुभिक्ख देखो सुब्भिक्ख।

सुभीसण पुं [सुभीषण] रावण का एक सुभट।

सुभूम पुं. भारतवर्ष में उत्पन्न आठवाँ चक्रवर्ती राजा। भारतवर्ष का भावी दूसरा कुलकर। भ० अरनाथ का प्रथम श्रावक।

सुभूसण पुं [सुभूषण] विभीषण का एक पुत्र।

सुभोगा स्त्री. अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी।

सुभोयण न [सुभोजन] व्रत-विशेष, एकाशन।

सुम न. फूल। °सर पुं [°शर] कामदेव।

सुमइ पुं [सुमति] पाँचवाँ जिन भगवान्। ऐरवत क्षेत्र में होनेवाला दसवाँ कुलकर। एक जैन उपासक। वि. शुभ बुद्धिवाला। पुं. एक नैमित्तिक विद्वान्।

सुमंगल पुं [सुमङ्गल] ऐरवत वर्ष में होने वाले प्रथम जिनदेव।

सुमंगला स्त्री [सुमङ्गला] ऋषभदेव की एक पत्नी। सूर्यवंशीय राजा विजयसागर की पत्नी।

सुमण } न [सुमनस्] पुष्प। पुं. देव।
सुमणस } वि सुन्दर मनवाला, सज्जन। हर्षवान्, सुखी। पुंन. एक देव-विमान। °भद्द पुं [°भद्र] महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक गृहस्थ। आर्य संभूति-विजय के एक शिष्य, मुनि।

सुमणसा स्त्री [सुमनस्] वल्ली-विशेष।

सुमणा स्त्री [सुमनस्] भ० चन्द्रप्रभ की प्रथम शिष्या। भूतानन्द आदि इन्द्रों के लोकपालों की एक-एक अग्र-महिषी। राजा श्रेणिक की एक पत्नी। एक जम्बू वृक्ष। शक्र की पद्मा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी। मालती का फूल।

सुमणो° देखो सुमण।

सुमर सक [स्मृ] याद करना।

सुमर पुं [स्मर] कामदेव।

सुमराव सक [स्मारय्] याद दिलाना।

सुमरुया स्त्री [सुमरुत्] भ० महावीर के पास दीक्षित मुक्तिप्राप्त राजा श्रेणिक की एक पत्नी।

सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्त मनवाला, सज्जन।

सुमालि पुं [सुमालिन्] एक राज-कुमार।

सुमिण पुंन [स्वप्न] स्वप्न। स्वप्न का फल बतानेवाला शास्त्र। °पाढय वि [°पाठक] स्वप्न का फल बतानेवाला। देखो सुविण।

सुमित्त पुं [सुमित्र] भ० मुनिसुव्रत स्वामी का पिता—एक राजा। द्वितीय चक्रवर्ती का पिता। चतुर्थ बलदेव का पूर्व जन्म। छठवें बलदेव के धर्मगुरु। एक वणिक्। अच्छा मित्र। भ० शान्तिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाला एक गृहस्थ।

सुमित्ता स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता और राजा दशरथ की एक पत्नी। °तणय पुं [°तनय] लक्ष्मण।

सुमित्ति पुं [सौमित्रि] सुमित्रा-पुत्र लक्ष्मण।

सुमुखी देखो सुमुही।

सुमुह पुं [सुमुख] भ० नेमिनाथ के पास दीक्षित मुक्तिप्राप्त एक राज-कुमार। राक्षस-वंश का एक लंका-पति। न. छन्द-विशेष।

सुमुही स्त्री [सुमुखी] छन्द-विशेष।

सुमेघा स्त्री. ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी।

सुमेरु पुं. मेरु-पर्वत।

सुमेहा देखो सुमेघा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुम्मंत सुण = श्रु का कवकृ ।

सुम्ह पुं. ब. [सुह्म] देश-विशेष ।

सुर पुं. देव । एक राजा । °अण न [°वन] नन्दन-वन । °अरु पुं [°तरु] कल्प वृक्ष । °करडि पुं [°करटिन्] । °करि पुं [°करिन्] । °कुंभि पुं [°कुम्भिन्] ऐरावण हाथी । °कुमर पुं [°कुमार] भ० वासुपूज्य का शासन-यक्ष । °कुसुम न. लवंग । °गय पुं [°गज] इन्द्र-हस्ती । °गिरि पुं. मेरु पर्वत । °गिह देखो °घर । °गुरु पुं. बृहस्पति । नास्तिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य । °गोव पुं [°गोप] कीट-विशेष, इन्द्रगोप । °घर न [°गृह] देव-मन्दिर । देव-विमान । °चमू स्त्री. देव-सेना । °चाव पुं [°चाप] इन्द्र-धनुष । °जाल न. इन्द्र-जाल । °णई स्त्री [°नदी] गंगा नदी । °णाह पुं [°नाथ] इन्द्र । °तरंगिणि स्त्री [°तरङ्गिणी] गंगा नदी । °तरु देखो °अरु । °ताण पुं [°त्राण] यवननृप, सुल्तान । °दारु न. देवदार की लकड़ी । °धंसी स्त्री [°ध्वंसिनी] विद्या-विशेष । °धणु, °धणुह न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष । °नई देखो °णई । °नाह देखो °णाह । °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र । °पुर न. । °पुरी स्त्री. स्वर्ग । °प्पिअ पुं [°प्रिय] एक यक्ष । °बंदी स्त्री [°बन्दी] देवी । °भवण न [°भवन] देव-प्रासाद । °मंति पुं [°मन्त्रिन्] बृहस्पति । °मंदिर न [°मन्दिर] मन्दिर । देव-विमान । °मुणि पुं [°मुनि] नारद-मुनि । °रमण न. रावण का एक बगीचा । °राय पुं [°राज] इन्द्र । °रिउ पुं [°रिपु] दैत्य । °लोअ पुं [°लोक] स्वर्ग । °लोइय वि [°लौकिक] स्वर्गीय । °लोग देखो °लोअ । °वइ पुं [°पति] इन्द्र । इन्द्र नामक एक विद्याधर-नरेश । °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव-विमान । °वधू देखो °वहू । °वन्नी स्त्री [°पर्णी] पुंनाग वृक्ष । °वर पुं. उत्तम देव । °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] इन्द्र । °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना । °वारण पुं. ऐरावण हस्ती । °संगीय न [°संगीत] नगर-विशेष । °सरि स्त्री [°सरित्] गङ्गा नदी । °सिहरि पुं [°शिखरिन्] मेरु पर्वत । °सुंदर पुं [°सुन्दर] रथचक्रवाल-नगर का एक विद्याधर-नरेश । °सुंदरी स्त्री [सुन्दरी] देव-वधू । एक राजकुमारी । °सुरहि स्त्री [°सुरभि] कामधेनु । °सेल पुं [°शैल] मेरु-पर्वत । °हत्थि पुं [°हस्तिन्] ऐरावण हाथी । °ाउह न [°ायुध] वज्र । °ादेव पुं. एक श्रावक । °ादेवी स्त्री. पश्चिम रुचक पर रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी । °ारि पुं. राक्षस-वंश का एक लंका-पति । °ालय पुंन [°ालय] स्वर्ग । [°ाहिराय] पुं [°ाधिराज] । °ाहिव पुं. [°ाधिप] । °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] वही इन्द्र ।

सुरइ स्त्री [°सुरति] सुख ।

सुरंगणा स्त्री [सुराङ्गना] देव-वधू ।

सुरंगा स्त्री [°सुरङ्गा] जमीन का भीतरी मार्ग ।

सुरंगि पुंस्त्री [दे] सहिजना का गाछ ।

सुरजेट्ठ पुं [दे] वरुण देवता ।

सुरट्ठ पुं. ब. [सुराष्ट्र] आजकल का काठियावाड़ ।

सुरणुचर वि [स्वनुचर] सुख से करने-योग्य ।

सुरत, सुरद } देखो सुरय ।

सुरभि पुंस्त्री. वसन्त ऋतु । स्त्री. गौ । वि. सुगन्ध-युक्त । पुंन. एक देव-विमान । °गंध वि [°गन्ध] सुगन्धी । °पुर न. नगर-विशेष । देखो सुरहि ।

सुरय न [सुरत] मैथुन, स्त्री-सम्भोग ।

सुरस वि. सुन्दर रसवाला । न. तृण-विशेष । °लया स्त्री [°लता] तुलसी-लता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरसुर पुं. 'सुर-सुर' आवाज ।
सुरह सक [सुरभय्] सुगन्धित करना ।
सुरह पुंन [सौरभ] सुन्दर गन्ध, खुशबू ।
सुरह पुं [सुरथ] साकेतपुर का एक राजा ।
सुरहि पुंस्त्री [सुरभि] वसंत ऋतु । चैत्र मास । शल्लकी वृक्ष । स्त्री. गौ । न. नाम-कर्म का एक भेद । वि. सुगन्ध-युक्त । देखो सुरभि ।
सुरा स्त्री. दारू । °रस पुं. समुद्र-विशेष ।
सुरिंद पुं[सुरेन्द्र] इन्द्र । एक विद्याधर नरेश । °दत्त पुं. एक राज-कुमार ।
सुरिंदय पुं [सुरेन्द्रक] देव-विमान-विशेष ।
सुरी स्त्री. देवी ।
सुरुंगा देखो सुरंगा ।
सुरुग्घ पुं [स्रुघ्न] देश-विशेष । °ज वि. देश-विशेष में उत्पन्न ।
सुरूया स्त्री [सुरूपा] । देखो सुरूवा ।
सुरूव पुं [सुरूप] भूत-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र । न. सुन्दर रूप । वि. सुन्दर रूप-वाला ।
सुरूवा स्त्री [सुरूपा] एक इन्द्राणी । सुरूप तथा प्रतिरूप भूतेन्द्रों की एवं भूतानन्द इन्द्र की एक-एक अग्र-महिषी । एक दिशा-कुमारी देवी । एक कुलकर-पत्नी । सुन्दर रूपवाली ।
सुरेस पुं [सुरेश] इन्द्र । उत्तम देव ।
सुरेसर पुं [सुरेश्वर] इन्द्र ।
सुलद्ध वि [सुलब्ध] सम्यक् प्राप्त ।
सुलस पुं. पर्वत-विशेष ।
सुलस न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र ।
सुलसमंजरी, सुलसा } स्त्री [दे] तुलसी ।
सुलसा स्त्री. नववें जिनदेव की प्रथम शिष्या । भ० महावीर की एक श्राविका, आगामी तीर्थंकर । नाग गृहपति की स्त्री । शक्र की अग्रमहिषी, एक इन्द्राणी । शंखपुर के राजा सुन्दर की पत्नी ।
सुली स्त्री [दे] उल्का ।
सुलुसुल, सुलुसुलाय } अक [सुलसुलाय्] 'सुल' 'सुल' आवाज करना ।
सुलोअ देखो सिलोअ = श्लोक ।
सुलोयण पुं [सुलोचन] एक विद्याधर-नरेश ।
सुलोल वि. अति चपल ।
सुल्ल न [शूल्य] शूला-प्रोत मांस ।
सुव अक [स्वप्] सोना ।
सुव देखो स = स्व ।
सुव (अप) देखो सुअ = श्रुत, सुत ।
सुवग्गु पुं [सुवल्गु] एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी खड्गपुरी है ।
सुवच्छ पुं [सुवत्स] व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र । एक विजय-क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी कुंडला नगरी है ।
सुवच्छा स्त्री [सुवत्सा] अधोलोक में रहने-वाली एक दिशा-कुमारी देवी । सौमनस पर्वत पर रहनेवाली एक देवी ।
सुवज्ज पुं [सुवज्र] एक विद्याधर-वंशीय राजा । पुंन. एक देव-विमान ।
सुवण न [स्वपन] शयन ।
सुवण्ण पुं [सुपर्ण] गरुड़ पक्षी । भवनपति देवों की एक जाति । सूर्य । °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक जाति ।
सुवण्ण पुं [दे] अर्जुन वृक्ष ।
सुवण्ण न [सुवर्ण] सोना । पुं. भवनपति देवों की एक जाति । सोलह कर्म-माषक का एक बाँट । सुन्दर वर्ण । वि. सुन्दर वर्णवाला । °आर, °कार पुं. सोनी । °कुंभ पुं[°कुम्भ] प्रथम बलदेव के धर्म-गुरु । °कुसुम न. सुवर्ण-यूथिका लता का फूल । °कूला स्त्री. नदी-विशेष । °गुलिया स्त्री [°गुलिका] एक दासी । °सिला स्त्री [°शिला] एक महौ-षधि । °गर पुं [°ाकर] सोने की खान । °ार पुं[°कार] सोनी । देखो सुवन्न = सुवर्ण ।

सुवण्णबिंदु पुं [दे] विष्णु।

सुवण्णिअ वि [सौवर्णिक] सुवर्ण-मय, सोने का बना हुआ।

सुवत्त देखो सुव्वत्त।

सुवन्न न [सुवर्ण] सोना। वि. सुन्दर अक्षर-वाला। °कुमार पुं. भवनपति देवों की एक जाति। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँ से सुवर्णकूला नदी बहती है। °गार पुं [°कार] सोनी। °जूहिया स्त्री [°यूथिका] लता विशेष। °यार देखो °गार। सुवण्ण = सुवर्ण।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का बना हुआ।

सुवन्नालुगा स्त्री [दे] दतवन करने का पात्र–लोटा आदि।

सुवप्प पुं [सुवप्र] एक विजय-क्षेत्र।

सुवर } (अप) देखो सुमर।
सुवँर }

सुवहु देखो सुबहु।

सुवाय पुंन [सुवात] एक देव-विमान।

सुवास पुं [सुवर्ष] सुन्दर वृष्टि। छन्द-विशेष।

सुवासणी देखो सुवासिणी।

सुवासव पुं एक राज-कुमार।

सुवासिणी स्त्री [दे. सुवासिनी] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री।

सुवाहा अ [स्वाहा] देवता को हविष आदि अर्पण का सूचक अव्यय।

सुविअज्जिअ वि [सुव्यर्जित] विशेष रूप से उपार्जित।

सुविक्कम पुं [सुविक्रम] भूतानन्द नामक इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति।

सुविगा स्त्री [सुकिका, शुकी] मैना।

सुविण देखो सुमिण। °न्नु वि [°ज्ञ] स्वप्न-शास्त्र का जानकार।

सुविधि देखो सुविहि।

सुविवेइय वि [सुविवेचित] सम्यग् विवेचित।

सुविसत्थ पुं [दे] व्यभिचारी पुरुष।

सुविसाय पुंन [सुविसात] एक देव-विमान।

सुविहाणा स्त्री [सुविधाना] विद्या-विशेष।

सुविहि पुं [सुविधि] नववाँ जिन भगवान्। पुंस्त्री. सुन्दर अनुष्ठान। न. रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक यान।

सुविहिअ वि [सुविहित] सदाचारी।

सुवीर पुं. यदुराज का एक पौत्र। पुंन. एक देव-विमान।

सुवुण्णा स्त्री [दे] संकेत।

सुवुरिस देखो सुपुरिस।

सुवे अ [श्वस्] आगामी कल।

सुवेल पुं. पर्वत-विशेष। न. नगर-विशेष।

सुवो देखो सुवे।

सुव्व न [शुल्व] ताँबा। रज्जु। जल-समीप। आचार। यज्ञ का कार्य।

सुव्वंत सुण का कवकृ.।

सुव्वत देखो सुव्वय।

सुव्वत्त वि [सुव्यक्त] स्फुट।

सुव्वमाण सुण का कवकृ.।

सुव्वय पुं [सुव्रत] भारतवर्ष में उत्पन्न बीसवें जिनदेव, मुनिसुव्रत स्वामी। ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव। छठवें जिनदेव के गणधर। तीसरे बलदेव के पूर्व जन्म के धर्म गुरु। आठवें बलदेव के धर्म-गुरु। भ० पार्श्वनाथ का मुख्य श्रावक। एक ज्योतिष्क महा-ग्रह। एक दिवस का नाम। न. एक गोत्र। वि. सुन्दर व्रतवाला। °ग्गि पुं [°ग्नि] एक दिवस का नाम।

सुव्वया स्त्री [सुव्रता] भ० धर्मनाथ की माता। एक जैन साध्वी।

सुव्विआ स्त्री [दे] माता।

सुस देखो सूस।

सुसंगद वि [सुसंगत] अति-सम्बद्ध।

सुसंढिआ स्त्री [दे] शूला-प्रोत मांस।

सुसंतय वि [सुसतक] अति सुन्दर।

सुसंपरिग्गहिय वि [सुसंपरिगृहीत] खूब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ।

सुसंभिअ वि [सुसंभृत] अच्छी तरह संस्कृत।

सुसंवुअ } वि [सुसंवृत] परिगत, व्याप्त। सुसंवुड } अच्छी तरह पहना हुआ। जितेन्द्रिय। रुका हुआ।

सुसंहय वि [सुसंहत] अतिशय संश्लिष्ट।

सुसण्णप्प वि [सुसंज्ञाप्य] सुख-बोध्य।

सुसद्द वि [सुशब्द] सुन्दर आवाजवाला। प्रसिद्ध।

सुसमदुस्समा } स्त्री [सुषमदुष्षमा] अव-सुसमदूसमा } सर्पिणी-काल का तीसरा और उत्सर्पिणी का चौथा आरा।

सुसमसुसमा स्त्री [सुषमसुषमा] अवसर्पिणी का पहला और उत्सर्पिणी का छठवाँ आरा।

सुसमा स्त्री [सुषमा] अवसर्पिणी का दूसरा और उत्सर्पिणी का पाँचवाँ आरा। छन्द-विशेष।

सुसर पुंन [सुस्वर] एक देव-विमान। न. नामकर्म का एक भेद। देखो सुस्सर, सुसूर।

सुसा स्त्री [स्वसृ] बहिन।

सुसा देखो सुण्हा = स्नुषा।

सुसागर पुंन. एक देव-विमान।

सुसाण न [श्मशान] मुर्दघाट।

सुसाय वि [सुस्वाद] स्वादिष्ठ।

सुसाल पुंन [सुशाल] एक देव-विमान।

सुसावग } पुं [सुश्रावक] अच्छा श्रावक—सुसावय } जैन गृहस्थ।

सुसाहय देखो सुसंहय।

सुसिअ वि [शुष्क] सूखा हुआ।

सुसिअ वि [शोषित] सुखाया हुआ।

सुसित्थ देखो सुत्थ = स्वास्थ्य।

सुसिर वि [शुषिर] पोला, खाली। पुंन. एक देव-विमान।

सुसीम न. नगर-विशेष।

सुसीमा स्त्री. भ० पद्मप्रभ की माता। कृष्ण वासुदेव की एक पत्नी। वत्स नामक विजय-क्षेत्र की एक राजधानी।

सुसील न [सुशील] उत्तम स्वभाव। वि. उत्तम स्वभाववाला, सदाचारी। °वंत वि [°वत्] सदाचारी।

सुसु पुं [शिशु] बच्चा। °मार पुं. जलचर प्राणी की एक जाति, महिषाकार मत्स्य-विशेष। °मारिया स्त्री [°मारिका] वाद्य-विशेष। देखो सुंसुमार।

सुसुज्ज पुंन [सुसूर्य] एक देव-विमान।

सुसुमार पुं. जलचर जन्तु की एक जाति। देखो सुसु-मार।

सुसुर देखो ससुर।

सुसुहंकर पुं [सुशुभङ्कर] छन्द का एक भेद।

सुसूर पुंन. एक देव-विमान।

सुसेण पुं [सुषेण] सुग्रीव का श्वसुर। एक मंत्री। भरत चक्रवर्ती का मन्त्री।

सुसेणा स्त्री [सुषेणा] एक बड़ी नदी।

सुसोह वि [सुशोभ] अच्छी शोभावाला।

सुस्स अक [शुष्] सूखना।

सुस्समण पुं [सुश्रमण] उत्तम साधु।

सुस्सर वि [सुस्वर] सुन्दर आवाजवाला। देखो सुसर।

सुस्सरा स्त्री [सुस्वरा] गीतरति तथा गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की एक-एक अग्रमहिषी।

सुस्सार वि [सुसार] सार-युक्त।

सुस्सावग } देखो सुसावग। सुस्सावय }

सुस्सील देखो सुसील।

सुस्सुय देखो सूसुअ।

सुस्सुयाय अक [सुसुकाय्, सूत्कारय्] सु-सु आवाज करना, सूत्कार करना।

सुस्सू स्त्री [श्वश्रू] सासू।

सुस्सूस सक [शुश्रूष्] सेवा करना।

सुस्सूसअ वि [शुश्रूषक] सेवा करनेवाला।

सुह देखो सोह = शुभ्।

सुह सक [सुखय्] सुखी करना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुह देखो सुभ । °अ वि [°द] मंगलकारी । °कम्मिय वि [°कर्मिक]पुण्यशाली । °काम वि. मङ्गल की चाहवाला । °गर वि [°कर] मङ्गल-जनक । °णामा स्त्री [°नामा] पक्ष की पाँचवीं, दसवीं तथा पनरहवीं रात्रि । °त्थि वि [°र्थिन्] शुभेच्छक । शुभ अर्थ-वाला । °द देखो °अ ।

सुह न [सुख] आनन्द, चैन । आराम, शान्ति । निर्वाण । वि जितेन्द्रिय । सुख-प्रद । अनुकूल । सुखी । °अ वि [°द] सुखदायक । °इत्तअ वि [°वत्] सुखी । °कर वि. सुख-जनक । °कामि वि [°कामिन्] । °त्थि वि [°र्थिन्]सुखाभिलाषी । °द वि., °दाय वि. सुख-दाता । °फंस वि [°स्पर्श] कोमल । °यर देखो °कर । °संझा स्त्री [°सन्ध्या] सुख-जनक सायंकाल । °वह वि. सुख-जनक । पुंन. एक पर्वत-शिखर । °ासण न [°ासन] आसन-विशेष, पालकी । °ासिया स्त्री [°ासिका] सुख से बैठना ।

सुहउत्थिआ स्त्री [दे] दूती ।

सुहंकर वि [सुखकर] सुख-कारक ।

सुहकर वि [शुभकर] शुभकारक । पुं. एक वणिक् का नाम ।

सुहंभर वि [सुखम्भर] सुखी ।

सुहग देखो सुभग ।

सुहड पुं [सुभट] योद्धा ।

सुहत्थ वि [सुहस्त] अच्छा हाथवाला, हाथ से शीघ्र-शीघ्र काम करनेवाला । दाता ।

सुहत्थि पुं [सुहस्तिन्] गन्ध-हस्ती । एक जैन महर्षि ।

सुहद्द न [सौहार्द] स्नेह । मित्रता ।

सुहम न [सूक्ष्म] फूल । देखो सण्ह, सुहुम = सूक्ष्म ।

सुहम्म पुं [सुधर्मन्] भ० महावीर का पट्टधर शिष्य । बारहवें जिनदेव का प्रथम शिष्य । एक यक्ष । °सामि पुं [°स्वामिन्] भ० महावीर का पट्टधर शिष्य । देखो सुधम्म ।

सुहम्म° देखो सुहम्मा । °वइ पुं [°पति] इन्द्र ।

सुहम्ममाण वि [सुहन्यमान] जो अच्छी तरह मारा जाता है वह ।

सुहम्मा स्त्री [सुधर्मा] इन्द्रों की देव-सभा ।

सुहय देखो सुह-अ = सुख-द, शुभ-द ।

सुहय देखो सुभग ।

सुहर वि [सुभर] सुख से भरने-योग्य ।

सुहरअ देखो सुहराय ।

सुहरा स्त्री [दे. सुगृहा] पक्षि-विशेष, सुघरी ।

सुहराय पुं [दे] वेश्या का घर । गौरैया पक्षी ।

सुहल्ली स्त्री [दे] सुख, आनन्द ।

सुहव देखो सुभग ।

सुहा अक [सु + भा] अच्छा लगना ।

सुहा देखो छुहा = सुधा । °कम्मंत न [°कर्मान्त] चूना का कारखाना । °हार पुं. देव ।

सुहा, सुहाअ, सुहाव अक [सुखाय्] सुख पाना । सक. सुखी करना ।

सुहाव देखो सहाव = स्वभाव ।

सुहावण, सुहावय वि [सुखायन] सुख-जनक । वि [सुखायक] ।

सुहासिय वि [सुभाषित] सम्यग् उक्त । न. सुन्दर वचन, सूक्त ।

सुहि वि [सुखिन्] सुख-युक्त ।

सुहि, सुहिअ पुं [सुहृद्] मित्र ।

सुहिअ वि [सुहित] तृप्त । सुन्दर हितवाला ।

सुहिर देखो सुसिर ।

सुहिरण्णा, सुहिरण्णिया स्त्री [सुहिरण्या, °ण्यिका] वनस्पति-विशेष, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष ।

सुहिरीमण वि [सुह्रीमनस्] अत्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लज्जालु ।

सुहिल्लिया देखो सुहेल्लि ।

सुही वि [सुधी] पंडित ।

सुहुम वि [सूक्ष्म] बारीक । तीक्ष्ण । पुं. भारत वर्ष के एक भावी कुलकर । एकेन्द्रिय जीव-विशेष । न. कर्म-विशेष । °संपराग, °संपराय पुंन. चारित्र-विशेष । दशवाँ गुण-स्थानक । देखो सण्ह, सुहम = सूक्ष्म ।

सुहेल्लि स्त्री [दे. सुखकेलि] सुख, आनन्द ।

सुहेसि वि [सुखैषिन्] सुखाभिलाषी ।

सू अ. निन्दा सूचक अव्यय ।

सूअ सक [सूचय्] सूचना करना । जानना । लक्ष करना ।

सूअ पुं [सूद] रसोइया ।

सूअ पुं [सूत] सारथि । वि. प्रसूत । °गड पुंन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ ।

सूअ पुं [शूक] धान्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ।

सूअ वि [शून] फूला हुआ, सूजनवाला ।

सूअ पुं [सूप] दाल । °गार, °यार, °आर पुं [°कार] रसोइया । °ारिणी स्त्री [°कारिणी] रसोई बनानेवाली स्त्री ।

सूअ देखो सुत्त = सूत्र । °गड पुंन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ ।

सूअअ, सूअग } वि [सूचक] सूचना करनेवाला । पुं. पिशुन, खल, दुर्जन । जासूस ।

सूअग, सूअय } न [सूतक] जनन और मरण की अशुद्धि ।

सूअर पुं [शूकर] वराह । °वल्ल पुं. अनन्त-काय वनस्पति-विशेष ।

सूअरिअ वि [दे] यन्त्र-पीड़ित ।

सूअरिया, सूअरी } स्त्री [दे] यन्त्र-पीड़ना ।

सूअल न [दे] किशारु, धान्य का तीक्ष्ण अग्र-भाग ।

सूआ स्त्री [सूचा] सूचना । °कर वि. सूचक ।

सूआ, सूइ } स्त्री [सूति] प्रसव, जन्म । °कम्म न [°कर्मन्] प्रसव-क्रिया । °हर न [°गृह] प्रसूतिगृह ।

सूइ स्त्री [सूचि] देखो सूई ।

सूइअ वि [सूचित] जिसको सूचना की गई हो वह । उक्त । व्यञ्जनादि-युक्त ।

सूइअ वि [सूत] प्रसूत, व्यायी हो वह ।

सूइअ पुं [सूचिक] दरजी ।

सूइअ पुं [दे] चण्डाल ।

सूइय न [सुप्त] निद्रा ।

सूइय वि [दे सूप्य, सूपिक] भीजा हुआ (खाद्य) ।

सूइया स्त्री [सूतिका] प्रसूति-कर्म करनेवाली ।

सूई स्त्री [सूची] कपड़ा सीने की सलाई, सूई । परिमाण-विशेष, एक अंगुल लम्बी एक प्रदेशवाली श्रेणी । दो तख्तों को जोड़ने के काम में आती एक तरह की पतली कील । °फलय न [°फलक] तख्ते का वह हिस्सा, जहाँ सूची-कीलक लगाया गया हो । °मुह पुं [°मुख] पक्षि-विशेष । द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति । न. जहाँ सूची-कीलक तख्ते का छेद कर भीतर घुसता है उसके समीप की जगह ।

सूई स्त्री [दे] मंजरी ।

सूई° देखो सूइ = सूति ।

सूड सक [भञ्ज्, सूद्] भाँगना, तोड़ना, विनाश करना ।

सूण वि [शून] सूजा हुआ, सूजन से फूला हुआ ।

सूण°, सूणा } स्त्री [सूना] वध-स्थान । °वइ पुं [°पति] कसाई ।

सूणिय वि [शूनिक] सूजन का रोगवाला । न. सूजन ।

सूणु पुं [सूनु] पुत्र ।

सूतक देखो सूअय = सूतक ।

सूप देखो सूअ = सूप ।

सूभग देखो सुभग ।

सूभग्ग देखो सोभग्ग ।

सूमाल देखो सुउमाल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूर सक [भञ्ज्] तोड़ना, भाँगना।

सूर वि [शूर] पराक्रमी। पुं. एक राजा। पुंन. एक देव-विमान। °सेण पुं [°सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजधानी मथुरा थी। ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव। एक जैनाचार्य। भ० आदिनाथ का एक पुत्र।

सूर पुं [सूर्य] सूर्य। सतरहवें जिन-देव का पिता। इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा। एक लंकापति। एक द्वीप। एक राजा। छन्द का एक भेद। पुन. एक देव-विमान। °अंत, °कंत पुं [°कान्त] मणि-विशेष। पुंन. एक देव-विमान। °कूड पुंन [°कूट] एक देव-विमान—देव-भवन। °ज्झय पुंन [°ध्वज] एक देव-विमान। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष। °देव पुं. आगामी उत्सर्पिणी के भारतवर्ष के दूसरे जिनदेव। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति]एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ। °परिवेस पुं [°परिवेष] मेघ आदि से होता सूर्य का वलयाकार मण्डल। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष। °पाया स्त्री [°पाका] सूर्य के किरण से होनेवाली रसोई। °प्पभ पुंन [°प्रभ] एक देव-विमान। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] सूर्य की एक अग्र-महिषी। ग्यारहवें और आठवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका। °मल्लिया स्त्री [°मल्लिका] वनस्पति-विशेष। °मालिया स्त्री[°मालिका] आभरण-विशेष। °लेस पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान। °वक्कय न [°वक्रण] आभूषण-विशेष। °वर पुं. एक द्वीप। एक समुद्र। °वरोभास पुं [°वरावभास] द्वीप-विशेष। समुद्र-विशेष। °वल्ली स्त्री. लता-विशेष। °वेग पुं. एक राज-कुमार। °सिग पुंन [°शृङ्ग]। °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] एक-एक देव-विमान। °सिरी स्त्री [°श्री] सातवें चक्रवर्ती की स्त्री। °सुअ पुं [°सुत] शनैश्चर-ग्रह। °ाभ पुंन. °ावत्त पुंन [°ावर्त] एक एक देव-विमान। देखो सुज्ज।

सूरंग पुं [दे] दीपक।

सूरंगय पुं [सुराङ्गज] एक राजा।

सूरण पुं [दे] कन्द-विशेष, सूरन।

सूरद्धय पुं [दे] दिवस।

सूरल्लि पुंस्त्री [दे] मध्याह्न। मशक के समान एक कीट। ग्रामणी नामक तृण-विशेष।

सूरि पुं. आचार्य।

सूरिअ देखो सुज्ज। °कंत पुं [°कान्त] प्रदेशि-नामक राजा का पुत्र। °कंता स्त्री [°कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी। °पाग पुंस्त्री [°पाक] सूर्य के ताप से होनेवाली रसोई। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] सूर्य की प्रभा। °ाभ पुं. प्रथम देवलोक का एक देव। पुंन. एक देव-विमान। न. सूर्याभ देव का सिंहासन। °ावत्त पुं [°ावर्त]। °ावरण पुं. मेरु पर्वत।

सूरिल पुं [दे] श्वशुर पक्ष।

सूरिस देखो सुउरिस।

सूरुत्तरवडिंसग पुंन [सूरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान।

सूरुल्लि देखो सूरल्लि।

सूरोद पुं. एक समुद्र।

सूरोदय न. नगर-विशेष।

सूरोवराग पुं [सूरोपराग] सूर्य-ग्रहण।

सूल पुंन [शूल] लोहे का सुतीक्ष्ण काँटा। त्रिशूल। रोग-विशेष। बबूल आदि का तीक्ष्ण काँटा। पुं. ब. देश-विशेष। °पाणि पुं. यक्ष-विशेष। °धर पुं. शिव।

सूलच्छ न [दे] पल्वल, छोटा तालाब।

सूलत्थारी स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती।

सूला स्त्री [शूला] सुतीक्ष्ण लोह-कंटक। °इय वि [°चित, °तिग] शूली पर चढ़ाया हुआ।

सूला स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना।

सूलि वि [शूलिन्] शूल-रोगवाला। पुं. शिव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूलिया स्त्री [शूलिका] शूली (वध्य के लिए)।
सूव पुं [सूप] दाल। °कार, °यार पुं [°कार] रसोइया।
सूस अक [शुष्] सूखना
सूसर वि [सुस्वर] सुन्दर आवाजवाला। न. नामकर्म का एक भेद। °परिवादिणी स्त्री [°परिवादिनी] एक तरह की वीणा।
सूसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वासवाला।
सूसिय वि [शोषित] सुखाया हुआ।
सूसुअ वि [सुश्रुत] अच्छी तरह सुना हुआ। अच्छी तरह ज्ञात। पुं. वैद्यक ग्रन्थ-विशेष।
सूहअ } देखो सुभग।
सूहव }
से अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— वाक्य का उपन्यास। प्रश्न। प्रस्तुत वस्तु का परामर्श। अनन्तरता।
से } अक [शी] सोना।
सेअ }
से° देखो सेअ = श्वेत। °वड पुं [°पट] श्वेताम्बर जैन।
सेअ सक [सिच्] सींचना
सेअ पुं [दे] गणपति।
सेअ पुं [सेय] कर्दम, कांदो, पंक। एक अधम मनुष्य-जाति।
सेअ पुं [स्वेद] पसीना।
सेअ पुं [सेक] सेचन, सींचना।
सेअ न [श्रेयस्] शुभ। धर्म। मुक्ति। वि. अति प्रशस्त। पुं. अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त।
सेअ वि [सैज] सकम्प, कम्प-युक्त।
सेअ वि [श्वेत] सफेद। पुं. कुभंड-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र। शक्र की नट सेना का अधिपति। भ० महावीर के पास दीक्षित आमलकल्पा नगरी का राजा। °कंठ पुं [°कण्ठ] भूतानन्द इन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति। °पड, °वड पुं [°पट] श्वेताम्बर जैन, एक संप्रदाय।
सेअ वि [एष्यत्] आगामी, भविष्य। °ल पुं [°काल] भविष्यकाल।
सेअंकर पुं [श्रेयस्कर] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष।
सेअंकार पुं [श्रेयस्कार] श्रेयःकरण, 'श्रेयम्' का उच्चारण।
सेअंबर पुं [श्वेताम्बर] एक जैन संप्रदाय। न. सफेद वस्त्र।
सेअंस पुं [श्रेयांस] एक राज-कुमार। चतुर्थ वासुदेव तथा बलदेव के पूर्व जन्म के धर्म-गुरु। देखो सेज्जंस।
सेअंस देखो सेअ = श्रेयस्।
सेअण न [सेचन] सेक, सींचना। °वह पुं [°पथ] नीक।
सेअणग } पुं [सेचनक] राजा श्रेणिक का
सेअणय } एक हाथी। वि. सींचनेवाला। देखो सेचणय।
सेअविय वि [सेवनीय] सेवा-योग्य।
सेअविया स्त्री [श्वेतविका] केकयार्ध देश की प्राचीन राजधानी।
सेआ स्त्री [श्वेतता] सफेदपन।
सेआ देखो सेवा।
सेआल देखो सेवाल = शैवाल।
सेआल देखो सेअ-ल = एष्यत् काल।
सेआल पुं [दे] गाँव का मुखिया। सांनिध्य करनेवाला यक्ष आदि। कृषक।
सेआली स्त्री [दे] दूर्वा, दूब, दूभ।
सेआलुअ पुं [दे] मनौती की सिद्धि के लिए उत्सृष्ट बैल।
सेइअ न [स्वेदित] पसीना।
सेइआ } स्त्री [सेतिका] परिणाम-विशेष,
सेइगा } दो प्रसृति की एक नाप।
सेउ पुंन [सेतु] पुल। कियारी, थाँवला। कियारी के पानी सींचने-योग्य खेत। मार्ग। °बंध पुं [°बन्ध] पुल बाँधना। °वह पुं [°पथ] पुलवाला मार्ग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेउ वि [सेक्तृ] सेचक ।

सेउय वि [सेवक] सेवा-कर्ता ।

सेंदूर देखो सिंदूर ।

सेंधव देखो सिंधव ।

सेंभ देखो सिंभ ।

सेंवाडय पुं [दे] चुटकी की आवाज ।

सेचणय न [सेचनक] सिंचन, छिड़काव । देखो सेअणय ।

सेचाण (अप) पुं [श्येन] छन्द-विशेष । देखो सेण = श्येन ।

सेज्ज न [शैत्य] शीतपन ।

सेज्ज देखो सेज्जा । °वइ पुं [°पति] वसतिस्वामी गृहस्थ ।

सेज्जंभव देखो सिज्जंभव ।

सेज्जंस पुं [श्रेयांस] ग्यारहवें जिनदेव । एक राज-पुत्र, जिसने भ० आदिनाथ को इक्षु-रस से प्रथम पारणा कराया था । मार्ग-शीर्ष मास का लोकोत्तर नाम । भ० महावीर का पिता, राजा सिद्धार्थ । देखो सिज्जंस, सेअंस = श्रेयांस ।

सेज्जंस देखो सेअंस = श्रेयांस ।

सेज्जा स्त्री [शय्या] सेज । घर, वसति उपाश्रय । °यर पुं [°तर] गृह-स्वामी, उपाश्रय का मालिक, साधु को रहने के लिए स्थान देनेवाला गृहस्थ । °वाल पुं [°पाल] शय्या का काम करनेवाला चाकर । देखो सिज्जा ।

सेज्जारिअ न [दे] अन्दोलन, हिंडोले में झूलना ।

सेट्ठि पुं [दे.श्रेष्ठिन्] गाँव का मुखिया, सेठ, महाजन ।

सेडिय न [दे] तृण-विशेष ।

सेडिया स्त्री [दे.सेटिका] सफेद मिट्टी, खड़ी ।

सेढि स्त्री [श्रेणि] देखो सेढी = श्रेणी ।

सेढिया } देखो सेडिया ।
सेढी }

सेढी स्त्री [श्रेणी] पंक्ति । राशि । असंख्य योजन-कोटाकोटी । देखो सेणि ।

सेण पुं [श्येन] पक्षि-विशेष । विद्याधर-वंश का एक राजा ।

सेण देखो सेणा ।

सेणा स्त्री [सेना] भ० संभवनाथ की माता । लश्कर । जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की बहिन । ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ प्यादों वाला लश्कर । °णिय, °णी, °णीय पुं [°नी] सेनापति । °मुह न [°मुख] ९ हाथी ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ प्यादों वाली सेना । °वइ पुं [°पति] । °हिवइ पुं [°धिपति] सेनानायक ।

सेणावच्च न [सेनापत्य] सेनापतिपन ।

सेणि स्त्री [श्रेणि] । पंक्ति । समूह । कुम्भकार आदि मनुष्य-जाति ।

सेणिअ पुं [श्रेणिक] मगध देश का एक प्रख्यात राजा । एक जैन मुनि ।

सेणिआ स्त्री [श्रेणिका] एक जैन मुनिशाखा ।

सेणिआ } स्त्री [सेनिका] छन्द का एक
सेणिका } भेद ।

सेणिग देखो सेणिअ ।

सेणिग पुं [सैनिक] लश्करी सिपाही ।

सेणी स्त्री [श्रेणी] । देखो सेणि ।

सेण्ण देखो सिन्न = सैन्य ।

सेत्त देखो सित्त = सिक्त ।

सेत्त (अप) देखो सेअ = श्वेत ।

सेत्तुंज पुं [शत्रुञ्जय] एक प्रसिद्ध पर्वत ।

सेद देखो सेअ = स्वेद ।

सेध देखो सेह = सेह ।

सेन्न देखो सिन्न = सैन्य ।

सेप्फ } देखो सेम्ह ।
सेफ }

सेफ पुंन [शेफ] पुरुष-चिह्न, लिंग ।

सेभालिआ स्त्री [शेफालिका] लता-विशेष ।

सेमुसी } स्त्री [शेमुषी] मेधा, बुद्धि ।
सेमुही }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेम्ह पुंस्त्री [श्लेष्मन्] कफ ।
सेर वि [स्वैर] स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र ।
सेर वि [स्मेर] विकस्वर ।
सेर पुं [दे] सेर, परिमाण-विशेष ।
सेरंधी स्त्री [सैरन्ध्री] अन्य के घर में रहकर शिल्पकार्य करनेवाली स्वतन्त्र स्त्री ।
सेराह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति ।
सेरिभ पुं [दे] धुर्य वृषभ ।
सेरिभ देखो सेरिह ।
सेरिय पुंस्त्री [दे] वाद्य-विशेष ।
सेरियय पुं [दे] गुल्म-विशेष ।
सेरिह पुंस्त्री [सैरिभ] महिष । स्त्री. °ही ।
सेरी स्त्री [दे] लम्बी आकृति । भद्र आकृति । रथ्या । यन्त्र-निर्मित नर्तकी ।
सेरीस पुंन [सेरीश] एक गाँव ।
सेल पुं [शैल] पर्वत । पाषाण । न. पत्थरों का समूह । °कार पुं. पत्थर घड़नेवाला शिल्पी । °गिह न [°गृह] पर्वत में बना घर । °जाया स्त्री. पार्वती । °त्थंभ पुं [°स्तम्भ] पाषाण का खम्भा । °पाल, °बाल पुं. धरण तथा भूतानन्द इन्द्रों का एक-एक लोकपाल । एक जैनेतर धर्मावलम्बी । °स न. वज्र । °सिहर न [°शिखर] पर्वत का शिखर । °सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती ।
सेलग, सेलय पुं [शैलक] एक राजर्षि । एक यक्ष । °पुर न. एक नगर ।
सेलयय न [शैलकज] एक गोत्र ।
सेला स्त्री [शैला] तीसरी नरक-पृथिवी ।
सेलाइच्च पुं [शैलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा ।
सेलु पुं [शैलु] श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष ।
सेलूस पुं [दे] कितव, जुआड़ी ।
सेलेय वि [शैलेय] पर्वत में उत्पन्न, पर्वतीय ।
सेलेस पुं [शैलेश] मेरु पर्वत ।
सेलेसी स्त्री [शैलेशी] मेरु की तरह निश्चल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था ।
सेलोदाइ पुं [शैलोदायिन्] एक जैनेतर धर्मावलम्बी गृहस्थ ।
सेल्ल देखो सेल = शैल ।
सेल्ल पुं [दे] मृग-शिशु । बाण । कुन्त, बर्छा ।
सेल्ल पुं [शैल्य] एक राजा ।
सेल्लग पुं [शैल्यक] भुजपरिसर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष ।
सेल्लि स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी ।
सेव सक [सेव्] आराधन करना । आश्रय करना । उपभोग करना ।
सेवग देखो सेवय ।
सेवड देखो °से = श्वेत ।
सेवण न [सेवन] सिलाई करना । सेवा ।
सेवय त्रि [सेवक] सेवा-कर्ता । पुं. नौकर ।
सेवल न [शैवल] नदियों में लगती घास ।
सेवा स्त्री. भजन, पर्युपासना, भक्ति । उपभोग । आश्रय । आराधन ।
सेवाड, सेवाल न [शैवाल] सेवाल घास-विशेष । पुं. एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था । °दाइ पुं [°दायिन्] भ० महावीर के समय का एक अर्जैन ।
सेवाल पुं [दे] पङ्क, कादा ।
सेवालि पुं [शैवालिन्] एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था ।
सेवालिय वि [शैवालिक, °त] सेवालवाला ।
सेवित्त वि [सेवितृ] सेवा-कर्त्ता ।
सेव्वा देखो सेवा ।
सेस पुं [शेष] शेष-नाग । छन्द का एक भेद । वि. अवशिष्ट । °मई, °वई स्त्री [°वती] सातवें वसुदेव की माता । दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी । वल्ली-विशेष । भ० महावीर की दौहित्री । °व न [°वत्] अनुमान का एक भेद । °राअ पुं [°राज] छन्द-विशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेसव न [शैशव] बाल्यावस्था ।
सेसा स्त्री [शेषा] निर्माल्य ।
सेसिअ वि [शेषित] बाकी बचाया हुआ । अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ ।
सेसिअ वि [श्लेषित] संबद्ध किया हुआ, चिपकाया हुआ ।
सेह अक [नश्] पलायन करना, भागना ।
सेह सक [शिक्षय्] सिखाना, सीख देना । सजा करना ।
सेह पुं [दे.] भुजपरिसर्प की एक जाति, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं ।
सेह पुं [शैक्ष] नव-दीक्षित साधु । जिसको दीक्षा दी जानेवाली हो । शिष्य ।
सेह पुं [सेध] सिद्धि ।
सेहंब वि [सेधाम्ल] वह खाद्य जिसमें पकने पर खटाई का संस्कार किया जाय ।
सेहणा स्त्री [शिक्षणा] शिक्षा, सजा ।
सेहर पुं [शेखर] शिखा । छन्द-विशेष । मस्तक-स्थित माला ।
सेहरय पुं [दे] चक्रवाक पक्षी ।
सेहालिआ देखो सेभालिआ ।
सेहाली स्त्री [शेफाली] लता-विशेष ।
सेहाव देखो सेह = शिक्षय् ।
सेहि देखो सिद्धि ।
सेहिअ वि [सैद्धिक] मुक्ति या निष्पत्ति-संबन्धी ।
सेहिऊ वि [दे] गत ।
सो सक [सु] दारू बनाना । पीड़ा करना । मन्थन करना । अक. स्नान करना ।
सो } अक [स्वप्] सोना, सूतना ।
सोअ }
सोअ सक [शुच्] शोक या शुद्धि करना । देखो सोच ।
सोअ न [शौच] शुद्धि, पवित्रता, निर्मलता । चोरी का अभाव ।
सोअ पुं [शोक] अफसोस, दिलगीरी ।

सोअ न [श्रोत्र] कान । °मय वि [°मय] श्रोत्रेन्द्रिय-जन्य ।
सोअ पुंन [स्रोतस्] प्रवाह । छिद्र । वेग ।
सोअण न [स्वपन] शयन ।
सोअण न [शोचन] शोक । शुद्धि, प्रक्षालन ।
सोअमल्ल न [सौकुमार्य] सुकुमारता ।
सोअर पुं [सोदर] सगा भाई ।
सोअरिअ वि [शौकरिक] शूकरों का शिकार करनेवाला । शिकारी । कसाई ।
सोअरिअ वि [सोदर्य] सहोदर ।
सोअल्ल देखो सोअमल्ल ।
सोअविय स्त्री [शौच] शुद्धि, पवित्रता ।
सोअव्व का कृ. ।
सोआमणी } स्त्री [सौदामनी, °मिनी]
सोआमिणी } विद्युत् । एक दिक्कुमारी देवी ।
सोइअ न [शोचित] । देखो सोचिय ।
सोइंदिय न [श्रोत्रेन्द्रिय] कान ।
सोइंधिअ देखो सोगंधिअ ।
सोउ वि [श्रोतृ] सुननेवाला ।
सोउणिअ देखो सोवणिअ ।
सोउमल्ल देखो सोअमल्ल ।
सोंड देखो सुंड । °मगर पुं [°मकर] मगर की एक जाति ।
सोंडा स्त्री [शुण्डा] सुरा । सूंढ ।
सोंडिअ पुं [शौण्डिक] दारू बेचनेवाला ।
सोंडिया स्त्री [शुण्डिका] दारू का पात्र ।
सोंडीर वि [शौण्डीर] शूर, वीर । गर्वित ।
सोंडीर न [शौण्डीर्य] पराक्रम । गर्व ।
सोंडीरिम पुंस्त्री [शौण्डीरिमन्] ऊपर देखो ।
सोंदज्ज (शौ) देखो सुंदेर ।
सोक्क देखो सुक्क = शुष्क ।
सोक्ख देखो सुक्ख = सौख्य ।
सोक्ख देखो सुक्ख = शुष्क ।
सोग देखो सोअ = शोक ।
सोगंध } न [सौगन्ध्य] चौबीस दिनों
सोगंधिअ } के उपवास । सुगन्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोगंधिअ न [सौगन्धिक] रत्न-विशेष। रत्नप्रभा नरक का एक सौगन्धिक-रत्न-मय काण्ड। कह्लार, पानी में होनेवाला श्वेत कमल। पुं. अपने लिंग को सूँघनेवाला नपुंसक। पुंन. एक देव-विमान। वि.सुगन्धी।

सोगंधिया स्त्री [सौगन्धिका] नगरी-विशेष।

सोगमल्ल देखो सोअमल्ल।

सोग्गइ देखो सुग्गइ।

सोग्गाह (?) अक [प्र + सृ] पसरना।

सोच देखो सोअ = शुच्।

सोचिय वि [शोचित] शुद्ध किया हुआ, प्रक्षालित। न. चिन्ता, विचार।

सोच्च देखो सोच।

सोच्चं, सोच्चा } सुण का संकृ.।

सोच्छ° सुण का भवि. रूप।

सोञ्छिअ देखो सोत्थिअ।

सोजण्ण न [सौजन्य] सुजनता। भलमनसी।

सोज्ज देखो सोरिअ = शौर्य।

सोज्जि (अप) अ [स एव] वही।

सोज्झ वि [शोध्य] शुद्धि योग्य, शोधनीय।

सोज्झय पुं [दे] रजक। देखो सुज्झय।

सोडिअ देखो सोंडिअ।

सोडीर वि[शौटीर]देखो सोंडीर = शौण्डीर।

सोडीर वि[शौटीर्य]देखो सोंडीर = शौण्डीर्य।

सोढ वि. सहन किया हुआ।

सोढव्व सह का कृ.।

सोढुं सह का हेकृ।

सोण वि [शोण] लाल, रक्त वर्णवाला।

सोणंद न [दे. सौनन्द] त्रिकाष्ठिका, तिपाई।

सोणहिअ वि [शौनकिक] श्वान-पालक। कुत्तों से शिकार करनेवाला।

सोणार देखो सुण्णार।

सोणि स्त्री [श्रोणि] कटी, कमर। °सुत्तग न [सूत्रक] कटी-सूत्र, करधनी।

सोणिअ पुं [शौनिक] कसाई।

सोणिअ न [शोणित] रुधिर।

सोणिम पुंस्त्री [शोणिमन्] रक्तता।

सोणी स्त्री [श्रोणी] देखो सोणि।

सोणीअ देखो सोणिअ = शोणित।

सोण्ण न [स्वर्ण] सुवर्ण।

सोण्ह देखो सुण्ह = सूक्ष्म।

सोण्हा देखो सुण्हा = स्नुषा।

सोत्त न [श्रोत्र] कान।

सोत्त देखो सोअ = स्रोतस्।

सोत्ति देखो सुत्ति = शुक्ति।

सोत्तिअ पुं [श्रोत्रिय] वेदाभ्यासी ब्राह्मण।

सोत्तिअ वि [सौत्रिक] सूत्र-निर्मित, सूत का बना हुआ। सूत का व्यापारी।

सोत्तिअ पुं [शौक्तिक] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष।

सोत्तिअमई, सोत्तिअवई } स्त्री [शुक्तिकावती] केकय देश की प्राचीन राजधानी।

सोत्ती स्त्री [दे] नदी।

सोत्थि पुंन [स्वस्ति] एक देव-विमान। देखो सत्थि।

सोत्थिअ पुं [स्वस्तिक] एक हरित वनस्पति। देखो सत्थिअ, सोवत्थिअ = स्वस्तिक।

सोदाम पुं [सौदाम] देखो सोदामि।

सोदामणी देखो सोआमणी।

सोदामि पुं [सौदामिन्] चमरेन्द्र के अश्वसैन्य का अधिपति।

सोदामिणी देखो सोआमिणी।

सोदास पुं [सौदास] एक राजा।

सोध (शौ) देखो सउह = सौध।

सोपार, सोपारय } पुं. ब. [सोपार, °क] देश-विशेष। न. नगर-विशेष।

सोबंधव वि [सौबन्धव] सुबन्धुकृत ग्रन्थ।

सोभ अक [शुभ्] शोभना, चमकना।

सोभ सक [शोभय्] शोभाना।

सोभग वि [शोभक] शोभनेवाला। शोभानेवाला।

सोभग्ग देखो सोहग्ग।

सोभा देखो सोहा = शोभा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोम पुं. चन्द्र। भ० पार्श्वनाथ का पाँचवाँ गणधर। एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश। चतुर्थ बलदेव और वासुदेव का पिता। एक विद्याधर नर-पति, ज्योतिःपुर का स्वामी। एक सेठ। एक ब्राह्मण। चमरेन्द्र, बलीन्द्र, सौधर्मेन्द्र तथा ईशानेन्द्र के एक-एक लोकपाल। सोमलता। उसका रस। अमृत। आर्यसुहस्ति सूरि का एक शिष्य। पुंन. देव-विमान-विशेष। वि. कीत्तिमान्। °काइय पुं [°कायिक] सोम लोकपाल का आज्ञाकारी देव। °ग्गहण न [°ग्रहण] चन्द्र-ग्रहण। °चंद पुं [°चन्द्र] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न सातवें जिन-देव। आचार्य हेमचन्द्र का दीक्षा समय का नाम। °जस पुं [°यशस्] एक राजा। °णाह देखो °नाह। °दत्त पुं. एक ब्राह्मण। एक जैन मुनि, भद्रबाहु-स्वामी का शिष्य। भ० चन्द्रप्रभ स्वामी को प्रथम भिक्षा-दाता। राजा शतानीक का एक पुरोहित। °देव पुं. सोम लोकपाल का सामानिक देव। भ० पद्मप्रभ को प्रथम भिक्षा-दाता। °नाह पुं [°नाथ] सौराष्ट्र देश को सुप्रसिद्ध महादेव-मूर्ति। °प्पभ, °प्पह पुं [°प्रभ] क्षत्रियों के सोमवंश का आदि पुरुष, बाहुबलि का एक पुत्र। तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार। चमरेन्द्र के सोम-लोकपाल का उत्पात-पर्वत। °भूइ पुं [°भूति] एक ब्राह्मण। °भूइय न [°भूतिक] एक कुल। °य न [°क] कौत्स गोत्र की शाखा। °व, °वा वि [°प, °पा] सोमरस पीनेवाला। °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मणी। °सुंदर पुं [°सुन्दर] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य तथा ग्रन्थकार। °सूरि पुं. आराधना-प्रकरण का कर्ता एक जैनाचार्य।

सोम वि [सौम्य] अरौद्र। नीरोग। प्रशस्त, श्लाघ्य। प्रिय-दर्शन। मनोहर। शान्त आकृतिवाला। शोभा-युक्त, दीप्तिमान्। देखो सोम्म।

सोमइअ वि [दे] सोने की आदतवाला।

सोमंगल पुं [सौमङ्गल] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।

सोमणंतिय वि [स्वापनान्तिक, स्वाप्नान्तिक] सोने के बाद या स्वप्न-विशेष में किया जाता प्रतिक्रमण।

सोमणस पुं [सौमनस] महाविदेह-वर्ष का एक वक्षस्कार-पर्वत। उस पर रहनेवाला एक महर्द्धिक देव। पक्ष का आठवाँ दिन। पुंन. सनत्कुमार नामक इन्द्र का एक पारियानिक विमान। छठवाँ ग्रैवेयक-विमान। सौमनस-पर्वत का एक शिखर। न. मेरु-पर्वत का एक वन।

सोमणस न [सौमनस्य] सुन्दर मन, संतुष्ट मन। प्रशस्त मन।

सोमणसा स्त्री [सौमनसा] जम्बू-वृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है। एक राजधानी। सौमनस वन की एक वापी। पक्ष की पाँचवीं रात्रि।

सोमणसिय वि [सौमनस्यित] संतुष्ट मन-वाला। प्रशस्त मनवाला।

सोमणस्स देखो सोमणस = सौमनस्य।

सोमणस्सिय देखो सोमणसिय।

सोमल्ल देखो गोअमल्ल।

सोमहिंद न [दे] उदर।

सोमहिड्ड पुं [दे] पंक, कादा।

सोमा स्त्री. शक्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी। सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या। सोम लोकपाल की राजधानी।

सोमा स्त्री [सौम्या] उत्तर दिशा।

सोमाण न [श्मशान] मशान, मरघट।

सोमाणस पुं [सौमानस] सातवाँ ग्रैवेयक विमान।

सोमार } देखो सुकुमार।
सोमाल }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमाल न [दे] माँस।

सोमित्ति पुं [सौमित्रि] राम-भ्राता लक्ष्मण।

सोमित्ति स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता। °पुत्त पुं [°पुत्र]। °सुय पुं [°सुत] लक्ष्मण।

सोमिल पुं. एक ब्राह्मण।

सोमेत्ति देखो सोमित्ति = सौमित्रि।

सोमेसर पुं [सोमेश्वर] सौराष्ट्र का सोमनाथ महादेव।

सोम्म वि [सौम्य] रमणीय। ठंढा। शान्त स्वभाववाला। प्रिय-दर्शन। जिसका अधिष्ठाता सोम-देवता हो। भास्वर। पुं. बुध ग्रह। शुभ ग्रह। वृष आदि सम राशि। उदुम्बर वृक्ष। द्वीप-विशेष। सोम-रस पीनेवाला ब्राह्मण। देखो सोम = सौम्य।

सोरट्ठ पुं [सौराष्ट्र] काठियावाड़। वि. सोरठ देश का निवासी। न. छन्द-विशेष।

सोरट्ठिया स्त्री [सौराष्ट्रिका] एक प्रकार की मिट्टी, फिटकिरी। एक जैन मुनि-शाखा।

सोरब्भ, सोरंभ, सोरभ } न [सौरभ] सुगन्ध।

सोरसेणी स्त्री [शौरसेनी] शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद।

सोरह देखो सोरभ।

सोरिअ न [शौर्य] शूरता, पराक्रम।

सोरिअ न [शौरिक] कुशावर्त देश की प्राचीन राजधानी। एक यक्ष। °दत्त पुं [°दत्त] एक मच्छीमार का पुत्र। एक राजा। °पुर न. एक नगर। °वडिंसग न [°वतंसक] एक उद्यान।

सोलस त्रि. ब. [षोडशन्] सोलह। सोलह संख्यावाला। वि. १६ वाँ। °म वि [°श] १६ वाँ। सात दिनों के उपवास। °य न [°क] सोलह का समूह। °विह वि [°विध] सोलह प्रकार का।

सोलसिआ स्त्री [षोडशिका] रस-मान-विशेष, सोलह पलों की एक नाप।

सोलह देखो सोलस।

सोलहावत्तय पुं [दे] शंख।

सोल्ल सक [पच्] पकाना।

सोल्ल सक [क्षिप्] फेंकना।

सोल्ल सक [ईर्, सम् + ईर्] प्रेरणा करना।

सोल्ल न [दे] माँस। देखो सुल्ल = शूल्य।

सोल्ल वि [पक्व] पकाया हुआ।

सोल्लिय वि [पक्व] पकाया हुआ। न. पुष्प-विशेष।

सोव देखो सुव = स्वप्।

सोवकम, सोवक्कम } वि [सोपक्रम] निमित्त-कारण से जो नष्ट या कम हो सके वह कर्म, आयु, आपदा आदि।

सोवचिय वि [सोपचित] उपचय-युक्त, स्फीत, पुष्ट।

सोवच्चल पुन [सौवर्चल] काला नमक।

सोवण न [दे] वास-गृह, शय्या-गृह, रति-मन्दिर। स्वप्न। पुं. मल्ल।

सोवण (अप) देखो सोवण्ण।

सोवणिअ वि [शौवनिक] श्वान-पालक। कुत्तों से शिकार करनेवाला।

सोवणी स्त्री [स्वापनी] विद्या-विशेष।

सोवण्ण वि [सौवर्ण] स्वर्ण-निर्मित।

सोवण्णमक्खिआ स्त्री [दे] एक तरह की शहद की मक्खी।

सोवण्णिअ, सोवण्णिग } वि [सौवर्णिक] सोने का। °पव्वय पुं [°पर्वत] मेरु पर्वत।

सोवण्णेअ पुंस्त्री [सौपर्णेय] गरुडपक्षी।

सोवत्थ न [दे] उपकार। वि. उपभोग्य।

सोवत्थि, सोवत्थिअ } वि [सौवस्तिक] माङ्गलिक वचन बोलनेवाला, मागध। पुं. ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष। त्रीन्द्रिय जन्तु की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक जाति ।

सोवत्थिअ पुं [स्वस्तिक] साथिया । पुंन. विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत या रुचक-पर्वत का एक शिखर । एक देव-विमान । देखो सत्थिअ, सोत्थिअ = स्वस्तिक ।

सोवरिअ देखो सोअरिअ = शौकरिक ।

सोवरी स्त्री [शाम्बरी] विद्या-विशेष ।

सोववत्तिअ वि [सोपपत्तिक] सयुक्तिक ।

सोवाअ वि [सोपाय] उपाय-साध्य ।

सोवाग पुं [श्वपाक] चाण्डाल । डोम ।

सोवागी स्त्री [श्वापाकी] विद्या-विशेष ।

सोवाण न [सोपान] सीढ़ी । पैड़ी ।

सोवासिणी देखो सुवासिणी ।

सोविअ वि [स्वापित] सुलाया हुआ ।

सोवियल्ल पुंस्त्री [सौविदल्ल] अन्तःपुर का रक्षक । स्त्री. °ल्ली ।

सोवीर पुंब. [सौवीर]देश-विशेष । न. कांजी । सौवीर देश में होता सुरमा । मद्य-विशेष ।

सोवीरा स्त्री [सौवीरा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ।

सोव्व वि [दे] पतित-दन्त ।

सोस सक [शोषय्] सुखाना, शोषण करना ।

सोस देखो सुस्स ।

सोस पुं [शोष] शोषण । दाह-रोग ।

सोसण पुं [दे] पवन, वायु ।

सोसण न [शोषण] सुखाना । कामदेव का एक बाण । वि. शोषण-कर्ता, सुखानेवाला ।

सोसणी स्त्री [दे] कटी ।

सोसविअ वि [शोषित] सुखाया हुआ ।

सोसाव देखो सोस = शोषय् ।

सोसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वास-युक्त ।

सोसिअ वि [सोच्छ्रित] ऊँचा किया हुआ ।

सोसिल्ल वि [शोफवत्] सूजन रोगवाला ।

सोह अक [शुभ्] शोभना, चमकना ।

सोह सक [शोभय्] शोभा-युक्त करना ।

सोह सक [शोधय्] शुद्धि करना । खोज करना । संशोधन करना ।

सोह देखो सउह = सौध ।

सोहंजण पुं [दे शोभाञ्जन] सहिंजने का पेड़ ।

सोहग देखो सोभग ।

सोहग पुं [शोधक] धोबी । देखो सोहय = शोधक ।

सोहग्ग न [सौभाग्य] सुभगता, लोकप्रियता । पति-प्रियता । सुन्दर भाग्य । °कप्परुक्ख पुं [°कल्पवृक्ष] तप-विशेष । °गुलिया स्त्री [°गुटिका] सौभाग्य-जनक मन्त्र-विशेष से संस्कृत गोली ।

सोहग्गंजण न [सौभाग्याञ्जन] सौभाग्य-जनक अंजन ।

सोहग्गिअ वि [सौभागित] भाग्य-शाली ।

सोहण पुं [शोभन] एक प्रसिद्ध जैन-मुनि । वि. शोभा-युक्त, सुन्दर । °वर न. वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर ।

सोहण न [शोधन] शुद्धि । वि. शुद्धि-जनक ।

सोहणी स्त्री [दे] झाड़ू ।

सोहद न [सौहृद] मित्रता । बन्धुता ।

सोहम्म देखो सुधम्म, सुहम्म = सुधर्मन् ।

सोहम्म पुं [सौधर्म] प्रथम देवलोक । °कप्प पुं [°कल्प] वही अर्थ । °वइ पुं [°पति] प्रथम देवलोक का स्वामी, शक्रेन्द्र । °वडिंसय पुन [°ावतंसक] एक देव-विमान । °सामि पुं [°स्वामिन्] प्रथम देवलोक का इन्द्र ।

सोहम्म° देखो सुहम्मा ।

सोहम्मण देखो सोहण = शोधन ।

सोहम्मिंद पुं [सौधर्मेन्द्र] शक्र, प्रथम देव-लोक का स्वामी ।

सोहम्मिय वि [सौधर्मिक]सौधर्म-देवलोक का ।

सोहय वि [शोधक] शुद्धि-कर्ता । देखो सोहग = शोधक ।

सोहय देखो सोहग = शोभक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोहल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त ।
सोहा स्त्री [शोभा] दीप्ति । छन्द-विशेष ।
सोहाव सक [शोधय्] सफा कराना ।
सोहि स्त्री [शुद्धि, शोधि] निर्मलता । आलोचना, प्रायश्चित्त ।
सोहि वि [शोधिन्] शुद्धि-कर्त्ता ।
सोहि वि [शोभिन्] शोभनेवाला ।
सोहि पुंस्त्री [दे] भूतकाल । भविष्यकाल ।
सोहिअ न [दे] पिष्ट, आटा ।
सोहिद देखो सोहद ।
सोहिल्ल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त ।
सौंअरिअ न [सौन्दर्य] सुन्दरता ।
सौअरिअ देखो सोअरिअ = सौन्दर्य ।
सौह देखो सउह = सौध ।
°स्स देखो स = स्व ।
°स्सास देखो सास = श्वास ।
°स्सिरी देखो सिरी = श्री ।
°स्सेअ देखो सेअ = स्वेद ।

ह

ह पुं. कंठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष । अ इन अर्थों का सूचक अव्यय — सम्बोधन । नियोग । क्षेप, निन्दा । निग्रह । प्रसिद्धि । पादपूर्ति ।
ह देखो हा = अ ।
हइ स्त्री [हति] वध, मारण ।
हं अ. [हम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—क्रोध । असम्मति ।
हंजय पुं [दे] शरीर-स्पर्श-पूर्वक किया जाता शपथ—सौगंध ।
हंजे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—दासी का आह्वान । सखी का आमन्त्रण ।
हंड देखो खंड ।
°हंडण देखो भंडण ।
हंत देखो हंता ।
हंता हण का संकृ. ।
हंता अ [हन्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—अभ्युपगम, स्वीकार । कोमल आमन्त्रण । वाक्य का आरम्भ । प्रत्यवधारण । संप्रेषण । खेद । निर्देश । हर्ष । अनुकम्पा । सत्य ।
हंतु वि [हन्तृ] मारनेवाला ।
हंदि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—विषाद । विकल्प । पश्चात्ताप । निश्चय । सत्य । 'ग्रहण करो' । आमन्त्रण, सम्बोधन । उपदर्शन ।
हंभो देखो हंहो ।
हंस देखो हस्स = ह्रस्व ।
हंस पुं. पक्षि-विशेष । धोबी । संन्यासि-विशेष । सूर्य । मणि-विशेष । छन्द का एक भेद । निर्लोभी राजा । विष्णु । परमेश्वर । मत्सर । मन्त्र-विशेष । शरीर-स्थित वायु की चेष्टा-विशेष । मेरु पर्वत । शिव । अश्व की एक जाति । श्रेष्ठ । अगुआ । विशुद्ध । मन्त्र-वर्ण-विशेष । पतंग, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष । °गब्भ पुं [°र्भ] रत्न की एक जाति । °तूली स्त्री. बिछौने की गद्दी । °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष । °लक्खण वि [°लक्षण] सफेद । विशद, निर्मल ।
हंसय पुंन [हंसक] नूपुर ।
हंसल पुं [दे] आभूषण-विशेष ।
हंसी स्त्री. छन्द का एक भेद ।
हंसुलय पुं [हंस] अश्व की एक उत्तम जाति ।
हंहो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संबोधन, आमन्त्रण । तिरस्कार । दर्प । दंभ, कपट । प्रश्न ।
हकुव न. फल-विशेष ।
हक्क सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना ।
हक्क सक [दे] हाँकना—पुकारना, आह्वान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करना । प्रेरणा करना । खदेड़ना ।

हक्कार सक [आ + कारय्] पुकारना, आह्वान करना ।

हक्कार सक [दे] ऊँचे फैलाना ।

हक्कार पुं [हाकार] युगलिकों के समय की एक दण्डनीति । हाँकने की आवाज ।

हक्किअ वि [दे] हाँका हुआ—खदेड़ा हुआ । आहूत । प्रेरित । उन्नत ।

हक्कोद्ध वि [दे] अभिलषित ।

हक्खुत्त वि [दे] उत्पाटित, उत्क्षिप्त ।

हक्खुव सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा करना । फेंकना । उखाड़ना ।

हच्चा स्त्री [हत्या] वध, घात ।

हट्ट पुं. बाजार । दूकान । °गाई, °गावी स्त्री [°गवी] कुलटा ।

हट्टिगा, हट्टी स्त्री [हट्टिका] छोटी दूकान ।

हट्ठ वि [हृष्ट] हर्ष-युक्त । विस्मित । नीरोग । शक्तिशाली । जवान, दृढ़ ।

°हट्ठ देखो भट्ठ ।

हट्ठमहट्ठ वि [दे] नीरोग । दक्ष । स्वस्थ युवा ।

हड वि [दे. हृत] जिसका हरण किया हो ।

हडक, हडक्क (मा) देखो हिअय = हृदय ।

हडप्प, हडप्फ पुं [दे] ताम्बूल आदि का पात्र । आभरण का करण्डक ।

हडहड पुं [दे] प्रेम । ताप ।

हडहड पुं. 'हड-हड' आवाज ।

हडाहड वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त ।

हडि पुं [हडि] काठ की बेड़ी ।

हड्ड न [दे] अस्थि ।

हढ पुं [हठ] बलात्कार । जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी, काई ।

हण सक [हन्] वध करना । अक. जाना, गति करना ।

हण सक [श्रु] सुनना ।

हण वि [दे] दूर ।

हण देखो हणण ।

°हण देखो धण = धन ।

हणण न [हनन] मारण, वध । विनाश । वि. वध-कर्ता । स्त्री. °णी ।

हणिद देखो हिणिद ।

हणिहणि, हणिहणिं अ [अहन्यहनि] प्रतिदिन । सर्वथा ।

हणु वि [दे] सावशेष ।

हणु पुंस्त्री [हनु] चिबुक । °अ, °म, °मंत, °यंत पुं [°मत्] हनुमान्, रामचन्द्रजी का एक प्रख्यात अनुचर, पवन तथा अञ्जनासुन्दरी का पुत्र । °रुह, °रूह न. नगर-विशेष । °व, °वंत देखो °म ।

हणुया स्त्री [हनुका] ठुडडी, दाढ़ी । दंष्ट्रा-विशेष ।

हणू स्त्री [हनू] देखो हणु ।

हण्णु हण = हन् का कवकृ. ।

हत्त देखो हय = हत ।

°हत्तरि देखो सत्तरि ।

हत्तु वि [हर्तृ] हरण-कर्ता ।

हत्तूण हण = हन् का संकृ. ।

हत्थ वि [दे] शीघ्र । क्रिवि. जल्दी ।

हत्थ पुंन [हस्त] हाथ । पुं. नक्षत्र-विशेष । चौबीस अंगुल का एक परिमाण । हाथी की सूँढ । एक जैन मुनि । °कप्प न [°कल्प] नगर-विशेष । °कम्म न [°कर्मन्] हस्त-क्रिया, दुश्चेष्टा-विशेष । °ताड, °ताल पुं. हाथ से ताड़न । °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] शीर्षप्रकम्पित का चौरासी लाख गुणा । °प्पाहुड न [°प्राभृत] हाथ से दिया हुआ उपहार । °मालय न [°मालक] आभरण-विशेष । °लहुत्तण न [°लघुत्व] हस्त-लाघव । चोरी । °सीस न [°शीर्ष] नगर-विशेष । °ाभरण न [°ाभरण] हाथ का गहना । °ायाल पुं [°ाताड] देखो °ताड । °ालंब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुं [°लम्ब] मदद।
हत्थंकर पुं [हस्तङ्कर] वनस्पति-विशेष।
हत्थंदु } पुंन [हस्तान्दुक] हाथ बाँधने
हत्थंदुय } का काठ आदि का बन्धन-विशेष।
हत्थच्छुहणी स्त्री [दे] नवोढ़ा।
हत्थड (अप) देखो हत्थ।
हत्थय न [हस्तक] कलाप-समूह।
हत्थल पुं [दे] क्रीड़ा के लिए हाथ में ली हुई चीज। वि चञ्चल हाथवाला।
हत्थल वि [हस्तल] खराब हाथवाला। पुं. चोर।
हत्थलिज्ज देखो हत्थिलिज्ज।
हत्थल्ल वि [दे] क्रीड़ा से हाथ में लिया हुआ।
हत्थल्लिअ वि [दे] हाथ से हटाया हुआ।
हत्थल्ली स्त्री [दे] हस्त-बूसी, हाथ में स्थित आसन-विशेष।
हत्थार न [दे] मदद।
हत्थारोह पुं [हस्त्यारोह] हस्तिपक।
हत्थावार न [दे] मदद।
हत्थाहत्थि स्त्री [हस्ताहस्तिका] हाथोहाथ।
हत्थि पुंस्त्री [हस्तिन्] हाथी। स्त्री. °णी। पुं. नृप-विशेष। °आरोह पुं. हाथी का महावत। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। वि. उसका निवासी। °कप्प न [°कल्प] देखो हत्थ-कप्प। °गुलगुलाइय न [°गुलगुलायित] हाथी का शब्द-विशेष। °णागपुर न [°नागपुर] हस्तिनापुर। °तावस पुं [°तापस] बौद्ध साधु-विशेष, हाथी को मारकर उसके माँस से जीवन-निर्वाह करने के सिद्धान्तवाला संन्यासी। °नायपुर देखो °नागपुर। °पाल पुं. भ० महावीर के समय का पावापुरी का राजा। °पिप्पली स्त्री. वनस्पति-विशेष। °मुह पुं [°मुख] एक अन्तर्द्वीप। वि. उसका निवासी। °रयण न [°रत्न]। °राय पुं [°राज] उत्तम हाथी। °वाउय पुं [°व्यापृत] महावत। °वाल देखो °पाल। °विजय न. वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर। °सीस न [°शीर्ष] एक नगर, राजा दमदन्त की राजधानी। °सुंडिया देखो °सोंडिगा। °सोंड पुं [°शौण्ड] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष। °सोंडिगा स्त्री [°शुण्डिका] आसन-विशेष।
हत्थिअचक्खु न [दे] वक्र अवलोकन।
हत्थिच्चग वि [हस्तीय, हस्त्य] हाथ का।
हत्थिणउर } न [हस्तिनापुर] नगर-विशेष।
हत्थिणाउर }
हत्थिणी देखो हत्थि।
हत्थिमल्ल पुं [दे] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण हाथी।
हत्थियार न [दे] हथियार।
हत्थिलिज्ज न [हस्तिलीय] एक जैन-मुनि-कुल।
हत्थिवय पुं [दे] ग्रह-भेद।
हत्थिहरिल्ल पुं [दे] वेष।
हत्थुत्तरा स्त्री [हस्तोत्तरा] उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र।
हत्थोडी स्त्री [दे] हस्ताभरण। हस्त-प्राभृत।
हथलेव पुं [दे] हस्त-ग्रहण, पाणिग्रहण।
हद देखो हय = हत।
हद } पुं [दे] बालक का मल-मूत्रादि।
हद्द }
हद्धय पुं [दे] हास, विकास।
हद्धि } अ [हा-धिक्] खेद। अनुताप।
हद्धी }
हमार (अप) वि [अस्मदीय] हमारा।
हमिर देखो भमिर।
हम्म सक [हन्] वध करना।
हम्म अक [हम्म्] जाना।
हम्म न [हर्म्य] क्रीड़ा-गृह।
हम्म° हण = हन् का कर्मणि रूप।
हम्मार देखो हमार।
हम्मिअ न [दे. हर्म्य] गृह, प्रासाद।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हम्मीर पुं. एक मुसलमान राजा।
हय वि [हत] जो मारा गया हो। °माकोड पुं [°मत्कोट] एक विद्याधर-नरेश। °स वि [°श] निराश।
हय पुं. अश्व। °कंठ पुं [°कण्ठ] अश्व के कंठ जितना बड़ा रत्न। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। वि. उसका निवासी। एक अनार्य देश। °मुह पुं [°मुख] एक अनार्य देश।
हय देखो हिअ = हृत।
हय देखो हर = ह्रद। °पोंडरीय पुं [पुण्डरीक] पक्षि-विशेष।
°हय देखो भय।
हयमार पुं [दे.हतमार] कणेर का गाछ।
हर सक [हृ] हरण करना, छीनना। प्रसन्न करना।
हर सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना।
हर अक [ह्रद्] आवाज करना।
हर पुं. महादेव। छन्द-विशेष। °मेहल न [°मेखल] कला-विशेष। °वल्लहा स्त्री [°वल्लभा] गौरी।
हर पुं [ह्रद] द्रह, बड़ा जलाशय।
हर देखो घर = गृह।
हर देखो धर = धृ।
हर देखो भर = भर।
°हर वि. हरण-कर्ता।
°हर वि [°धर] धारण करनेवाला।
हरअई } स्त्री [हरीतकी] हर्रे का गाछ।
हरडई } फल-विशेष, हर्रे।
हरण न. छीनना। वि. छीननेवाला।
हरण न [ग्रहण] स्वीकार।
हरण न [स्मरण] स्मृति।
°हरण देखो भरण।
हरतणु पुं [हरतनु] खेत में बोये हुए गेहूँ, जौ आदि की बालों पर होता जल-बिन्दु।
हरद देखो हरय।

हरपच्चुअ वि [दे] स्मृत। नाम के उद्देश्य से दिया हुआ।
हरय पुं [ह्रद] बड़ा जलाशय, द्रह।
हरहरा स्त्री [दे] युक्त प्रसंग, उचित प्रस्ताव।
हरहराइय न [हरहरायित] 'हर-हर' आवाज।
हराविअ वि [हारित] हराया हुआ।
हरि पुं [दे] शुक।
हरि पुं. विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र। एक महाग्रह। इन्द्र। विष्णु, श्रीकृष्ण। रामचन्द्र। सिंह। वानर। अश्व। भरत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा। ज्योतिषशास्त्र का एक योग। एक छन्द। सर्प। मण्डूक। चन्द्र। सूर्य। वायु। यम। महादेव। ब्रह्मा। किरण। वर्ष-विशेष। मयूर। कोकिल। भर्तृहरि। पीला। पिंगल। हरा रंग। वि. पीत या पिंगल। हरा वर्ण वाला। पुंन. महाहिमवंत पर्वत या विद्युत्प्रभ पर्वत या निषध पर्वत का एक शिखर। हरि-वर्ष-क्षेत्र का मनुष्य-विशेष। °अंद पुं [°श्चन्द्र] एक राजा। °अंदण न [°चन्दन] चन्दन की एक जाति। पुं एक कल्प-वृक्ष। देखो °चंदण। °अण्ण देखो °अंद। °आल पुंन [°ताल] पीत वर्णवाली उपधातु-विशेष, हरताल। पुं. पक्षि-विशेष। देखो °ताल। °एस पुं [°केश] चंडाल। एक चण्डाल मुनि। °एसबल पुं [°केशबल] चण्डालकुलोत्पन्न एक मुनि। °एसिज्ज वि [°केशीय] चण्डाल-संबन्धी। हरिकेशबल मुनि का। °कंखि न [°काङ्क्षिन्] नगर-विशेष। °कंत पुं [°कान्त] विद्युत्कुमार देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र। °कंतपवाय, °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] एक द्रह। °कंता स्त्री [°कान्ता] एक महानदी। महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर। °केलि पुं. भारतीय देश-विशेष। °केसबल देखो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°एसबल। °केसि पुं [°केशिन्] एक जैन मुनि। °गीअ न [°गीत] एक छन्द। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] एक राक्षस राजा। °चंद पुं [°चन्द्र] एक विद्याधर राजा। एक विद्याधर कुमार। °चंदण पुं [°चन्दन] एक अन्तकृद् जैन मुनि। देखो °अंदण। °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण श्रेणि का एक विद्याधर नगर। °ताल पुं. द्वीप-विशेष। देखो °आल। °दास पुं. एक वणिक्। °धणु न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष। °पुरी स्त्री. इन्द्रपुरी। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार। °मंथ पुं [°मन्थ] काला चना। °मेला स्त्री. वृक्ष-विशेष। °वइ पुं [°पति] वानरपति, सुग्रीव। °वंस पुं [°वंश] एक क्षत्रिय-कुल। °वस्स, °वास पुं [°वर्ष] क्षेत्र-विशेष। पुंन. महाहिमवान् या निषध पर्वत का एक शिखर। °वाहण पुं [°वाहन] मथुरा का एक राजा। नन्दीश्वर द्वीप के अपरार्ध का अधिष्ठाता देव। °सह देखो °स्सह। °सेण पुं [°षेण] दसवाँ चक्रवर्ती राजा। भ० नमिनाथजी का प्रथम श्रावक। °स्सह पुं [°सह] विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र। माल्यवन्त पर्वत का एक शिखर।

हरि पुं [हरित्] हरा रंग। वि. हरा रंगवाला। स्त्री. एक महा-नदी। षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना। °पवात, °प्पवाय पुं [°प्रपात] एक द्रह, जहाँ से हरित् नदी निकलती है।

हरि° देखो हिरि°।

हरिअ पुं [°हरित] हरा। वि. हरा वर्णवाला। पुं. एक आर्य मनुष्यजाति। पुंन. हरा तृण, सब्जी।

हरिअग } न [हरितक] जीरा आदि के
हरिअय } पत्तों से बना हुआ भोज्य-विशेष।

हरिआ स्त्री [हरिता] दूर्वा, दूब, तृण-विशेष।

हरिआ देखो हिरि।

हरिआल देखो हरि-आल।

हरिआली स्त्री [दे. हरिताली] दूर्वा, दूब।

हरिएस देखो हरि-एस।

हरिचंदण देखो हरि-चंदण।

हरिचंदण न [दे. हरिचन्दन] कुंकुम, केसर।

हरिडय पुं [हरितक] कोंकण देश-प्रसिद्ध वृक्ष-विशेष।

हरिण पुं. हिरन। एक छन्द। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] सुन्दर नेत्रवाली स्त्री। °ारि पुं [°ारि]। °ाहिव पुं [°ाधिप] सिंह।

हरिणंक पुं [हरिणाङ्क] चन्द्र।

हरिणंकुस पुं [हरिणाङ्कुश] चौथे बलदेव के गुरु। एक जैन मुनि।

हरिणगवेसि देखो हरिणेगमेसि।

हरिणी स्त्री. हिरनी। छन्द-विशेष।

हरिणेगमेसि पुं [हरिनैगमैषिन्] शक्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव।

हरिद्दा देखो हलिद्दा।

हरिमंथ पुं [दे] काला चना, अन्न-विशेष।

हरिमिग्ग पुं [दे] लगुड, लाठी, डण्डा।

हरियंदपुर न [हरिश्चन्द्रपुर] गंधर्वनगर।

हरिली देखो हिरिली।

°हरिल्ल वि [°भरवत्] भारवाला।

हरिस अक [हृष्] खुशी होना।

हरिस सक [हर्ष] हर्ष से रोम खड़ा करना।

हरिस पुं [हर्ष] सुख। आनन्द, प्रमोद। आभूषण-विशेष। °उर पुं [°पुर] एक जैन गच्छ। °ाल वि [°वत्] हर्ष-युक्त।

हरिसण पुं [हर्षण] एक ज्योतिष योग।

हरिसाइय वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त।

हरिसाल देखो सरिस-ाल = हर्ष-वत्।

हरी देखो हिरी।

हरीडई देखो हरडई।

हरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—आक्षेप, निन्दा। संभाषण। रति-कलह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरेडगी देखो हरीडई ।
हरेणुया स्त्री [हरेणुका] प्रियंगु, मालकांगनी ।
हरेस अक [ह्रेष्] गति करना ।
हल न. हर, जिससे खेत जोतते हैं । °उत्तय पुंन [°युक्तक] हल जोतना । °कुड्डाल, °कुद्दाल पुं. हल के ऊपर का भाग । °धर पुं । °धारण पुं. बलभद्र, राम । °वाहग वि [°वाहक] हल जोतनेवाला । °हर देखो °धर । °ाउह पुं [°ायुध] बलभद्र, राम ।
°हल देखो फल = फल ।
हलअ (मा) देखो हिअय = हृदय ।
हलउत्तय देखो हल-उत्तय ।
हलद्दा } देखो हलिद्दा ।
हलद्दी }
हलप्प वि [दे] बहु-भाषी, वाचाल ।
हलबोल पुं [दे] कलकल, शोरगुल, कोलाहल ।
हलहर देखो हल-हर = हल-धर ।
हलहल देखो हडहड = (दे) ।
हलहल } पुंन [दे] तुमुल, कोलाहल ।
हलहलअ } कौतुक । त्वरा । औत्सुक्य ।
हलहलिअ वि [दे] कम्पित ।
हला अ. सखी का आमन्त्रण, हे सखि ।
हलाहल न. एक उग्र जहर ।
हलाहला स्त्री [दे] बाम्हनी, एक जन्तु ।
हलि पुं [हलिन्] बलराम, बलभद्र ।
हलिअ वि [हालिक] हल जोतनेवाला ।
°हलिअ देखो फलिअ ।
हलिआ स्त्री [हलिका] छिपकली ।
हलिआर देखो हरि-आल = हरि-ताल ।
हलिद्द पुं [हरिद्र, हारिद्र] वृक्ष-विशेष । पीला रंग । न. नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का शरीर हल्दी के समान पीला होता है । °पत्त पुं [°पत्र] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति । °मच्छ पुं [°मत्स्य] मछली की एक जाति ।
हलिद्दा } स्त्री [हरिद्रा] औषधि-विशेष,
हलिद्दी } हल्दी ।
हलीसागर पुं [हलिसागर] मत्स्य की एक जाति ।
हलुअ वि [लघुक] हलका ।
हलूर वि [दे] सतृष्ण, सस्पृह ।
हले अ. हे सखि, सखी का संबोधन ।
हल्ल अक [दे] हिलना, चलना ।
हल्ल पुं. एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि ।
हल्लअ न [हल्लक] पद्म-विशेष, रक्त कह्लार ।
हल्लपविअ वि [दे] शीघ्र ।
हल्लप्फल न [दे] हड़बड़ी, औत्सुक्य, त्वरा । आकुलता । वि. कम्पनशील, चञ्चल । व्याकुलपन ।
हल्लफल देखो हल्लप्फल ।
हल्लाविय वि [दे] हिलाया हुआ ।
हल्लीस पुं [दे] रासक, मण्डलाकार होकर स्त्रियों का नाच ।
हल्लुत्ताल } न [दे] शीघ्रता ।
हल्लुत्तावल }
हल्लुप्फल देखो हल्लप्फल ।
हल्लोहल देखो हल्लप्फल ।
हल्लोहलिय पुस्त्री [दे] सरट, गिरगिट ।
हव अक [भू] होना । सक. प्राप्त करना ।
°हव देखो भव = भव ।
हवण न [हवन] होम ।
हवि पुंन [हविस्] घी । हवनीय वस्तु ।
हविअ वि [दे] म्रक्षित, चुपड़ा हुआ ।
हव्व वि [हव्य] हवनीय पदार्थ । °वह पुं. । वाह पुं. अग्नि ।
हव्व वि [अर्वाच्] अवर । न. शीघ्र । न. गृहवास ।
°हव्व देखो भव्व = भव्य ।
हस अक [हस्] हँसना । सक. उपहास करना ।
हस अक [ह्रस्] हीन होना, कम होना ।
हस पुं [हास] हास्य । स्त्री. °णा ।
हसहस अक [हसहसाय्] उत्तेजित होना । सुलगना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसिरिआ स्त्री [दे] हँसी ।
हस्स अक [ह्रस्] कम होना । क्षीण होना ।
हस्स देखो हस = हस् ।
हस्स न [हास्य] हँसी । पुं. महाक्रन्दित नामक देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र । °गय न [°गत] कला-विशेष । °रइ पुं [°रति] महाक्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ।
हस्स वि [ह्रस्व] लघु । वामन, खर्व । अल्प । पुं. एक मात्रावाला स्वर ।
हस्सण वि [हर्षण] हर्ष-कारक ।
हहह, हहहा } अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय — आश्चर्य ।
हहा पुं. गन्धर्व देवों की एक जाति । अ. खेद-सूचक अव्यय ।
हा अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय–विषाद । शोक, दिलगीरी । पीड़ा । कुत्सा, निन्दा । °कंद पुं [°क्रन्द] । °रव पुं. हाहाकार ।
हा सक [हा] क्षीण करना, कम करना, त्याग करना । अक. गति करना ।
°हा देखो भा—स्त्री ।
हाअ देखो हा—सक ।
हाअ सक [हादय्] अतिसार रोग को उत्पन्न करना ।
°हाअ देखो भाअ = भाग ।
°हाअ देखो घाय = घात ।
°हाअ देखो भाव = भाव ।
हाउ देखो भाउ ।
हांसल देखो हंसल ।
हाकंद देखो हा-कंद ।
हाकलि स्त्री. छन्द का एक भेद ।
हाडहड न [दे] तत्काल ।
हाडहडा स्त्री [दे] आरोपणा का एक भेद, प्रायश्चित-विशेष ।
हाणि स्त्री [हानि] क्षति, अपचय, ह्रास ।
हाम अ [दे] इस तरह, इस प्रकार, एवं ।
हायण पुं [हायन] वर्ष, संवत्सर ।
हायणी स्त्री [हायनी] मनुष्य की दस दशाओं में छठवीं अवस्था ।
हार सक [हारय्] नाश करना । हारना ।
हार पुं. माला, अठारह सर की मोती आदि की माला । अपहरण । द्वीप-विशेष । समुद्र-विशेष । हरण-कर्ता । °पुड पुंन [°पुट] लोहा । °भद्द पुं [°भद्र] हार-द्वीप का अधिष्ठाता एक देव । °महाभद्द पुं [°महाभद्र] हारद्वीप का एक अधिष्ठाता देव । °महावर पुं. हार-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव । °वर पुं. हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । द्वीप-विशेष । समुद्र-विशेष । हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । °वरभद्द पुं [°वरभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव । °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] हारवरद्वीप का अधिष्ठाता देव । °वरमहावर पुं. हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव । °वरावभास पुं. एक द्वीप । एक समुद्र । °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] हारवराभासद्वीप का एक अधिष्ठाता देव । °वरावभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहभद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव । °वरावभासमहावर पुं. हारवराभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव । °वरावभासवर पुं. हारवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ।
°हार देखो भार ।
हारअ वि [हारक] नाश-कर्ता ।
हारण वि. ऊपर देखो ।
हारव देखो हार = हारय् ।
हारा स्त्री [दे] लिक्षा, जन्तु-विशेष ।
°हारा देखो धारा ।
हारि स्त्री. पराजय । पंक्ति । छन्द-विशेष ।
हारि वि [हारिन्] हरण-कर्ता । मनोहर, चित्ताकर्षक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारिअ न [हारीत] कौत्स गोत्र की एक शाखा। पुंस्त्री. उसमें उत्पन्न। °मालागारी स्त्री [°मालाकारी] एक जैन मुनि-शाखा।
हारिअ वि [हारित] हारा हुआ, द्यूत आदि में पराजित। खोया हुआ।
हारियंद वि[हारिचन्द्र]हरिचन्द्र का, हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुआ।
हारिया स्त्री [हारीता] एक जैन मुनि-शाखा। देखो हारिअ-मालागारी।
हारियायण न [हारितायन] एक गोत्र।
हारी स्त्री. देखो हारि = हारि।
हारीय पुं [हारीत] मुनि-विशेष। न. गोत्र-विशेष। °बंध पुं [°बन्ध] छन्द-विशेष।
हारोस पुं [हारोष] अनार्य देश-विशेष। वि. उस देश का निवासी।
हाल पुं [दे] राजा सातवाहन, गाथासप्तशती का कर्ता।
हाला स्त्री. मदिरा।
हालाहल पुं [दे] मालाकार, माली।
हालाहल पुंस्त्री. जन्तु-विशेष, ब्रह्मसर्प, बाम्हनी। स्त्री. °ला। त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष। पुंन. स्थावर विष-विशेष। पुं. रावण का एक सुभट।
हालाहला स्त्री. एक आजीविक-मतानुयायिनी कुम्हारिन।
हालिअ देखो हलिअ = हालिक।
हालिज्ज न [हालीय] एक जैन मुनि-कुल।
हालिद्द पुं [हारिद्र] हल्दी के तुल्य रंग। वि. पीला। पुंन. एक देव-विमान।
हालिया स्त्री [हालिका] देखो हलिआ।
हालुअ वि [दे] क्षीब, मत्त।
हाव सक [हापय्] हानि करना। त्याग करना। परिभव करना। लोप करना। कम करना, हीन करना।
हाव पुं. मुख का विकार-विशेष।
हाव वि [दे] जंघाल, द्रुतगामी।
°हाव देखो भाव = भाव।
हाविर वि [दे] जंघाल, द्रुतगामी। दीर्घ। मन्थर। विरत।
हास देखो हस = हस्।
हास सक [हासय्] हँसाना।
हास पुं. हास्य। कर्म-विशेष, जिसके उदय से हँसी आवे। अलंकार-शास्त्रोक्त रस-विशेष। °कर वि.। °कारि वि [°कारिन्] हास्य-कारक।
हास पुं [ह्रास] क्षय, हानि।
हास देखो हरिस = हर्ष।
हासंकर देखो हास-कर।
हासकुहय वि [हास्यकुहक] हास्य-जनक कौतुक-कर्ता।
हासण वि [हासन] हास्य करानेवाला।
हासा स्त्री. एक देवी।
हासाविअ, हासिअ } वि [हासित] हँसाया हुआ।
हासि वि [हासिन्] हास्य-कर्ता।
हासिअ वि [हास्य] हँसने-योग्य।
°हासिअ देखो भासिअ = भाषित।
हासिअ न [दे. हास्य] हँसी।
हाहक्कार देखो हाहा-कार।
हाहा पुं. गन्धर्व देवों की एक जाति। अ. विलाप, हाहाकार। °कय न[°कृत]। °कार पुं. हाहाकार, शोक-शब्द। °भूअ वि [°भूत] हाहाकार को प्राप्त। °रव पुं. हाहाकार। °हूहू 'हाहाहूहूअंग' की चौरासी लाख गुनी संख्या। °हूहूअंग न [°हूहूअङ्ग] 'अमम' की चौरासी लाख गुनी संख्या।
हि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—अव-धारण। हेतु। एवम्, इस तरह। विशेष। प्रश्न। संभ्रम। शोक। असूया। पाद-पूरण।
हिअ वि [हृत] अपहृत। नीत। विनष्ट, स्फोटित। आकृष्ट।
हिअ न [हित] मङ्गल। उपकार। वि. हित-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारक। स्थापित, निहित। °कर वि. हित-कारक। पुं. दो उपवास। एक वणिक्। °कार वि. हित-कारक। °यर देखो °कर। °हिअ देखो हिअय = हृदय। °इट्ठ वि [°इष्ट] मनःप्रिय। °उड्डावण वि [°उड्डायन] चित्ताकर्षण का साधन। चित्त को शून्य बनानेवाला।

°हिअ न [घृत] घी।

हिअंकर पुं [हितंकर] राम-पुत्र कुश के पूर्व-जन्म का नाम।

हिअड (अप) देखो हिअय = हृदय।

हिअय न [हृदय] अन्तःकरण, मन। वक्षस्। पर ब्रह्म। °गमणीअ त्रि [°गमनीय] हृदयंगम। °हारि वि [°हारिन्] चित्ताकर्षक।

हिअय देखो हिअ = हित।

हिअयंगम वि [हृदयंगम] मनोहर, चित्ता-कर्षक।

हिआली स्त्री [हृदयाली] काव्य-समस्या-विशेष, गूढार्थक काव्य-विशेष।

हिइ स्त्री [हृति] अपहरण। न. स्थानान्तर में ले जाना।

हिएसय } वि [हितैषक] हितेच्छु। वि
हिएसि } [हितैषिन्]।

हिओ अ [ह्यस्] गत कल।

हिंग पुं [दे] जार।

हिंगु पुंन [हिङ्गु] हींग का गाछ। हींग। °सिव पुं [°शिव] व्यन्तर देव-विशेष।

हिंगुल } पुंन [हिङ्गुल] पार्थिव धातु-
हिंगुलु } विशेष, हिंगुल, सिंगरफ। पुंन [हिङ्गुलु]।

हिंगोल पुंन [दे] मृतक-भोजन, किसी के मरण के उपलक्ष्य में दिया जाता जीमन, श्राद्ध। यक्ष आदि की यात्रा के उपलक्ष्य में किया जाता जीमनवार।

हिंचिअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीड़ा।

हिंजीर न [हिञ्जीर] सिकरी, साँकल।

हिंड अक [हिण्ड्] भ्रमण करना। जाना, चलना। पर्यटन करना।

हिंडग वि [हिण्डक] भ्रमण करनेवाला। चलनेवाला।

हिंडि स्त्री [हिण्डि] परिभ्रमण, पर्यटन।

हिंडि पुं [हिण्डिन्] रावण का एक सुभट।

हिंडुअ पुं [दे.हिण्डुक] आत्मा, जीव, जन्मा-न्तर माननेवाला आत्मा, हिन्दु।

हिंडोल न [दे] खेत में पशुओं को रोकने की आवाज। क्षेत्र की रक्षा का यन्त्र।

हिंडोल देखो हिंदोल।

हिंडोलण न [दे] रत्नावली। क्षेत्र की रक्षा की आवाज।

हिंताल पुं [हिन्ताल] वृक्ष-विशेष।

हिंद सक [ग्रह्] स्वीकार या ग्रहण करना।

हिंदोल अक [हिन्दोलय्] झूलना।

हिंदोल पुं [हिन्दोल] हिंडोला, झूला।

हिंबिअ न[दे]एक पैर से चलने की बालक्रीडा।

हिंस सक [हिंस्]वध करना। पीड़ा करना।

हिंस वि [हिंस्र] हिंसक। °प्पदाण,°प्पयाण न [°प्रदान] हिंसा के साधन-भूत खड्ग आदि का दान।

हिंस° देखो हिंसा। °प्पेहि वि [°प्रेक्षिन्] हिंसा को देखनेवाला।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करनेवाला।
हिंसग }

हिंसा स्त्री [हिंसा] वध, घात। वध, बन्धन आदि से जीव को की जाती पीड़ा।

हिंसा स्त्री [हेषा] अश्व का शब्द।

हिंसिय न [हेषित] अश्व-शब्द।

हिंसी स्त्री [हिंसी] लता-विशेष।

हिंहु पुं [दे] हिन्दू, हिन्दुस्तान का निवासी।

हिक्का स्त्री [दे] धोबिन।

हिक्का स्त्री. रोग-विशेष, हिचकी।

हिक्कास पुं [दे] पङ्क।

हिक्किअ न [दे] अश्व-शब्द।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिज्जा हर = हृ का कृ.।
हिज्ज° ह्रा का कर्मणि रूप।
हिज्जा } अ [दे. ह्यस्] गत कल।
हिज्जो }
हिज्जो अ [दे] आगामी कल।
हिट्ठ वि [दे] आकुल।
हिट्ठ देखो हेट्ठ।
हिट्ठ देखो हट्ठ = हृष्ट।
हिट्ठाहिड वि [दे] आकुल।
हिट्ठिम देखो हेट्ठिम।
हिंट्ठिल्ल देखो हेट्ठिल्ल।
हिंडिब स्त्री [हिडिम्ब] एक विद्याधर राजा। एक राक्षस। देश-विशेष।
हिंडिबा स्त्री [हिडिम्बा] एक राक्षसी, हिडिम्ब राक्षस की बहिन।
हिडोलणय देखो हिंडोलण।
हिड्ड वि [दे] वामन, खर्व।
हिणिद वि [भणित] उक्त, कथित।
हिण्ण सक [ग्रह्] ग्रहण करना।
हिण्ण (अप) देखो हीण।
°हिण्ण देखो भिण्ण।
हितअ } (पै) देखो हिअअ = हृदय।
हितप }
हित्थ वि [दे] लज्जित। त्रस्त। हिंसित।
हित्था स्त्री [दे] लज्जा।
हिदि अ [हृदि] हृदय में।
हिद्ध वि [दे] स्रस्त, खिसका हुआ, खिसक कर गिरा हुआ।
हिम न. तुषार। चन्दन, श्रीखण्ड। शीत। बर्फ। पुं. छठवीं नरकपृथिवी का पहला नरकेन्द्रक। मार्गशीर्ष तथा पौष का महीना। °कर पुं. चन्द्रमा। °गिरि पुं.। °धाम पुं [°धामन्]। °नग पुं. हिमाचल पर्वत। °यर देखो °कर। °व, °वंत पुं [°वत्] वर्षधर पर्वत-विशेष। हिमाचल पर्वत। राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र। स्कन्दिलाचार्य के शिष्य। °वाय पुं [°पात] तुषार-पतन। °सीयल पुं [°शीतल] कृष्ण पुद्गल-विशेष। °सेल पुं [°शैल] हिमालय पर्वत। °गम पुं [°गम] हेमन्त ऋतु। °णी स्त्री [°नी] हिमसमूह। °यल पुं [°चल]। °लय पुं. हिमालय पर्वत।
हिर देखो किर = किल।
हिरडी स्त्री [दे] चील पक्षी की मादा।
हिरण्ण न [हिरण्य] चाँदी। सोना। द्रव्य, धन। °क्ख पुं [°क्ष] एक दैत्य। °गब्भ पुं [°गर्भ] ब्रह्मा। प्रथम जिन भगवान्।
हिरि अक [ह्री] लज्जित होना।
हिरि पुं. भालूक, भालू का शब्द।
हिरि° देखो हिरी। °म वि [°मत्] लज्जालु। °बेर पुं. तृण-विशेष, सुगन्धवाला।
हिरिअ वि [ह्रीत] लज्जित।
हिरिआ स्त्री [ह्रीका] लज्जा, शरम।
हिरिब न [दे] क्षुद्र तलाव।
हिरिमंथ पुं [दे] चना।
हिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष।
हिरिवंग पुं [दे] लगुड, लट्ठी।
हिरि स्त्री [ह्री] लज्जा। महापद्म-ह्रद की अधिष्ठात्री देवी। उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी। सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी। महाहिमवान् पर्वत का एक कूट। देवप्रतिमा-विशेष।
हिरीअ देखो हिरिअ।
हिरे देखो हरे।
हिला स्त्री [दे] भुजा।
हिला } स्त्री [दे] रेती।
हिल्ला }
हिल्लिय पुंस्त्री [दे] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति।
हिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल।
हिल्लूरी स्त्री [दे] लहरी, तरङ्ग।
हिल्लोडण न [दे] खेत में पशुओं को रोकने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की आवाज ।

हिव देखो हुव = भू ।

हिसोहिसा स्त्री [दे] स्पर्धा ।

ही अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—विस्मय । दुःख । विषाद । शोक, दिलगीरी । वितर्क । कन्दर्प का अतिरेक । प्रशान्त-भाव का अतिशय ।

ही देखो हिरी । °म वि [°मत्] लज्जाशील ।

ह्रीं अ [ह्रीँ] मंत्राक्षर-विशेष, मायाबीज ।

हीण वि [हीन] न्यून । रहित । अधम । निन्द्य । पुं. प्रतिवादि-विशेष । °जाइल्ल वि [°जातिक] अधम जाति का । °वाइ पुं [°वादिन्] वादि-विशेष ।

हीण वि [ह्रीण] भीत ।

हीमाणहे } (शौ) अ. विस्मय । निर्वेद ।
हीमादिके

हीयमाण देखो हा का कवकृ. ।

हीयमाणग } न [हीयमानक] अवधिज्ञान का एक भेद, क्रमशः कम होता जाता अवधिज्ञान ।
हीयमाणय

हीर हर = हृ का कर्मणि रूप ।

हीर पुं. विषम भंग, असमान छेद । बारीक कुत्सित तृण, कन्द आदि में होती बारीक रेखा । पुंन. हीरा । छन्द-विशेष । दाढ़ा का अग्रभाग ।

हीर पुंन [दे] सूई की तरह तीक्ष्ण मुँहवाला काष्ठ आदि पदार्थ । भस्म । प्रान्त, अन्त भाग ।

हीरणा स्त्री [दे] लाज ।

हील सक [हेलय्] अवज्ञा करना । निन्दा करना । पीड़ना ।

हीसमण न [दे. हेषित] घोड़े का शब्द ।

हीही } (शौ) अ. विदूषक का हर्ष-सूचक अव्यय ।
हीहीभो

हु अ [खलु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—निश्चय । ऊह, वितर्क । संशय । संभावना । विस्मय । किन्तु । अपि । वाक्य की शोभा । पादपूर्ति ।

हु } देखो हुव = भू ।
हुअ

हुअ देखो हुण—हु ।

हुअ वि [हुत] होमा हुआ । न. हवन । °वह पुं । °स पुं [°श] । °सन पुं [°शन] अग्नि ।

हुअ देखो हूअ—भूत ।

हुअंग देखो भुअंग ।

°हुअग देखो भुअग ।

हुं अ [हुम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—दान । पृच्छा । निवारण । निर्धारण । स्वीकार । हुङ्कार । अनादर ।

हुंकय पुं [दे] अंजलि, प्रणाम ।

हुंकार पुं [हुङ्कार] अनुमति-प्रकाशक-शब्द, हाँ । 'हुं' ऐसा शब्द ।

हुंकुरव पुं [दे] अंजलि, प्रणाम ।

हुंड न [हुण्ड] शरीर की आकृति-विशेष, शरीर का बेढब अवयव । कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर का अवयव असंपूर्ण बेढब—प्रमाण-शून्य अव्यवस्थित हो । वि. बेढब अंगवाला । °वसप्पिणी स्त्री [°ावसर्पिणी] बर्तमानहीन समय ।

हुंडी स्त्री [दे] घटा ।

हुंबउट्ठ पुं [दे] वानप्रस्थ तापस की एक जाति ।

हुंहुय अक [हुंहुं + कृ] 'हुं'-'हुं' आवाज करना ।

°हुच्च देखो पहुच्च = प्र + भू ।

हुट्ठ देखो होट्ठ ।

हुड पुं [दे] मेष, मेढ़ा । श्वान ।

हुडुअ पुं [दे] प्रवाह ।

हुडुक्क पुंस्त्री [दे. हुडुक्क] वाद्य-विशेष ।

हुडुम पुं [दे] पताका ।

हुड्ड पुंस्त्री [दे] होड़, पण, शर्त । स्त्री.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°ड्डा ।
हुण सक [हु] होम करना ।
हुत्त वि [दे] अभिमुख, सम्मुख ।
हुत्त देखो हूअ = हूत ।
°हुत्त देखो हूअ = भूत ।
°हुमआ देखो भुमआ ।
हुर देखो फुर = स्फुर् ।
हुरड पुंस्त्री [दे] तृण आदि से कुछ-कुछ पकाया हुआ चना आदि धान्य, होला—होरहा ।
हुरत्था अ [दे] बाहर ।
हुरुडी स्त्री [दे] विपादिका, रोग-विशेष ।
हुल सक [क्षिप्] फेंकना ।
हुल सक [मृज्] मार्जन-करना ।
हुलण वि [मार्जन] सफा करनेवाला ।
हुलिअ वि [दे] शीघ्र, वेग-युक्त ।
हुलुभुलि स्त्री [दे] कपट, दम्भ ।
हुलुव्वी स्त्री [दे] प्रसव-परा ।
°हुल्ल देखो फुल्ल = फुल्ल ।
हुव देखो हुण = हु ।
हुव देखो हव = भू ।
हुव (अप) देखो हूअ = भूत ।
हुव (अप) देखो हुअ = हुत ।
हुव्व °देखो हुण = हु ।
°हुव्व देखो धुव्व = धुव = धाव् ।
हुस्स देखो हस्स = ह्रस्व ।
हुहुअ पुंन [हुहुक] देखो हूहूअ ।
हुहुअंग पुंन [हुहुकाङ्ग] देखो हूहूअंग ।
हुहुरु अ. अनुकरण-शब्द-विशेष ।
हूअ देखो भूअ = भूत ।
हूअ वि [हूत] आहूत, आकारित ।
हूअ देखो हुअ = हुत ।
हूण पुं. एक अनार्य देश । वि. उसका निवासी मनुष्य ।
हूण देखो हीण = हीन ।
हूम पुं [दे] लोहार ।
हूसण देखो भूसण ।
हूहू पुं. गन्धर्व देवों की जाति ।
हूहूअ पुंन [हूहूक] 'हूहूअंग' की चौरासी लाख गुनी संख्या ।
हूहूअंग पुंन [हूहूकाङ्ग] 'अवव' की चौरासी लाख गुनी संख्या ।
हे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संबोधन । आह्वान । असूया ।
हेअ देखो हा = हा का कृ. ।
°हेअ देखो भेअ = भेद ।
हेअंगवीण न [हैयङ्गवीन] नवनीत । ताजा घी ।
हेआल पुं [दे] साँप के फण की तरह किए हुए हाथ से निवारण ।
हेउ पुं [हेतु] कारण, निमित्त । अनुमान-वाक्य । अनुमान का साधन । प्रमाण । °वाय पुं [°वाद] बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ दृष्टिवाद । तर्कवाद ।
हेउअ वि [हैतुक] हेतुवादी, तर्कवादी । हेतु से सम्बन्ध रखनेवाला । स्त्री. °उई ।
हेच्च, हेच्चाणं } हा = हा का संकृ. ।
हेज्ज हर = हृ का कृ. ।
हेट्ठ स्त्री [अधस्] नीचे । स्त्री. °ट्ठा । °मुह वि [°मुख] अवाङ्मुख । °वणि वि [°अवनी] महाराष्ट्र देश का निवासी ।
हेट्ठिम, हेट्ठिल्ल } वि [अधस्तन] नीचे का ।
हेडा स्त्री [दे] घटा, समूह । द्यूत आदि खेलने का स्थान, अखाड़ा ।
हेडिस, हेदिस } (अशो) देखो एरिस ।
हेपिअ वि [दे] उन्नत ।
हेम न. सोना । धतूरा । मासे का परिमाण । पुं. काला घोड़ा । वि. पंडित । पुं. एक विद्याधर राजा । °चंद पुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[°चन्द्र] बारहवीं शताब्दी के दो जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार। पनरहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि। °जाल न. सुवर्ण की माला। °तिलय पुं [°तिलक] चौदहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य। °पुर न. एक विद्याधर-नगर। °मय वि. सोने का बना हुआ। °महिहर पुं [°महिधर] मेरु पर्वत। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] एक दिक्कुमारी देवी। °व पुं [°वत्] फाल्गुन मास। °विमल पुं. एक जैन आचार्य। °भ पुं. चौथी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान।

हेमंत पुं [हेमन्त] ऋतु-विशेष, मगसिर या अगहन तथा पोस या पूस महिना। शीतकाल।

हेमंत } वि [हैमन्त] हेमन्त ऋतु में
हेमंतिअ } उत्पन्न। वि. [हैमन्तिक]।

हेमग वि [हैमक] हिम का, हिम-संबन्धी।

हेमवइ } पुंन [हैमवत] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-
हेमवय } विशेष। हिमवंत पर्वत का एक शिखर। कूट-विशेष। वि. हिमवंत पर्वत का। पुं. हैमवत क्षेत्र का अधिष्ठाता देव।

हेम्म देखो हेम।

हेर सक [दे] निरीक्षण करना। खोजना।

हेरंब पुं [दे] महिष। डिण्डिम वाद्य।

हेरण्णवय पुंन [हैरण्यवत] वर्ष-विशेष, एक युगलिकक्षेत्र। रुक्मि पर्वत या शिखरी पर्वत का एक शिखर।

हेरण्णिअ पुं [हैरण्यिक] सुवर्णकार।

हेरिअ पुं [हेरिक] जासूस।

हेरिंब पुं [दे. हेरम्ब] गणेश।

हेरुयाल सक [दे] क्रुद्ध करना।

हेला स्त्री. स्त्री की शृङ्गार-सम्बन्धी चेष्टा-विशेष। अनादर। अनायास।

हेला स्त्री [दे] वेग, शीघ्रता।

हेलिय पुं [हैलिक] एक तरह की मछली।

हेलुअ न [दे] क्षुत, छींक।

हेलुक्का स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी।

हेल्लि (अप) अ [हले] सखी का आमन्त्रण।

हेवं (अशो) देखो एवं।

हेवाग पुं [हेवाक] स्वभाव, आदत।

हेसमण वि [दे] उन्नत।

हेसा स्त्री [हेषा] अश्व-शब्द।

हेसिअ न [हेषित] ऊपर देखो।

हेसिअ न [दे. हेषित] रसित, चीत्कार।

हेहंभूअ वि [दे] गुण-दोष के ज्ञान से रहित और निर्दम्भ, अज्ञ किन्तु निखालस।

हेहय पुं [हैहय] एक राजा। °डिंब पुं [°डिम्ब] एक विद्याधर राजा।

हो देखो हव = भू।

हो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—विस्मय। संबोधन, आमन्त्रण।

होउ वि [होतृ] होम-कर्ता।

होंड देखो हुंड।

होट्ठ पुं [ओष्ठ] होंठ।

होड्ड देखो हुड्ड।

होढ पुं [होड] मोष, चोरी की वस्तु।

होण देखो हूण = हूण।

होत्तिय पुं [होत्रिक] अग्निहोत्रिक वानप्रस्थ। न. तृण-विशेष।

होम पुं. हवन।

होम सक [होमय्] होम करना।

होरंभा स्त्री [होरम्भा] महाढक्का वाद्य।

होरण न [दे] वस्त्र।

होरा स्त्री. खड़ी या खली से की हुई रेखा। ज्योतिष-शास्त्र में उक्त लग्न। होराज्ञापक शास्त्र।

होल पुंस्त्री [दे] वाद्य-विशेष। पक्षि-विशेष। एक तरह की गाली, मूर्ख। °वाय पुं [°वाद] दुर्वचन बोलना, गाली-प्रदान।

होलिया स्त्री [होलिका] होली। फागुन मास का पर्व-विशेष।

होस° हो = भू का भवि. रूप।

ह्रद देखो दह।

ह्रस्स देखो रहस्स = ह्रस्व।

ह्रास देखो हास = ह्रास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org